RPSC 2026

राजस्थान प्रशासनिक सेवा प्रारंभिक परीक्षा

अर्थव्यवस्था
ECONOMY

खंड-5

भाग-I : आर्थिक अवधारणाएँ एंव भारतीय अर्थव्यवस्था

भाग-II : राजस्थान की अर्थव्यवस्था

NODIA

अध्यायवार MCQs

Nodia

Scan QR for Demo PDF

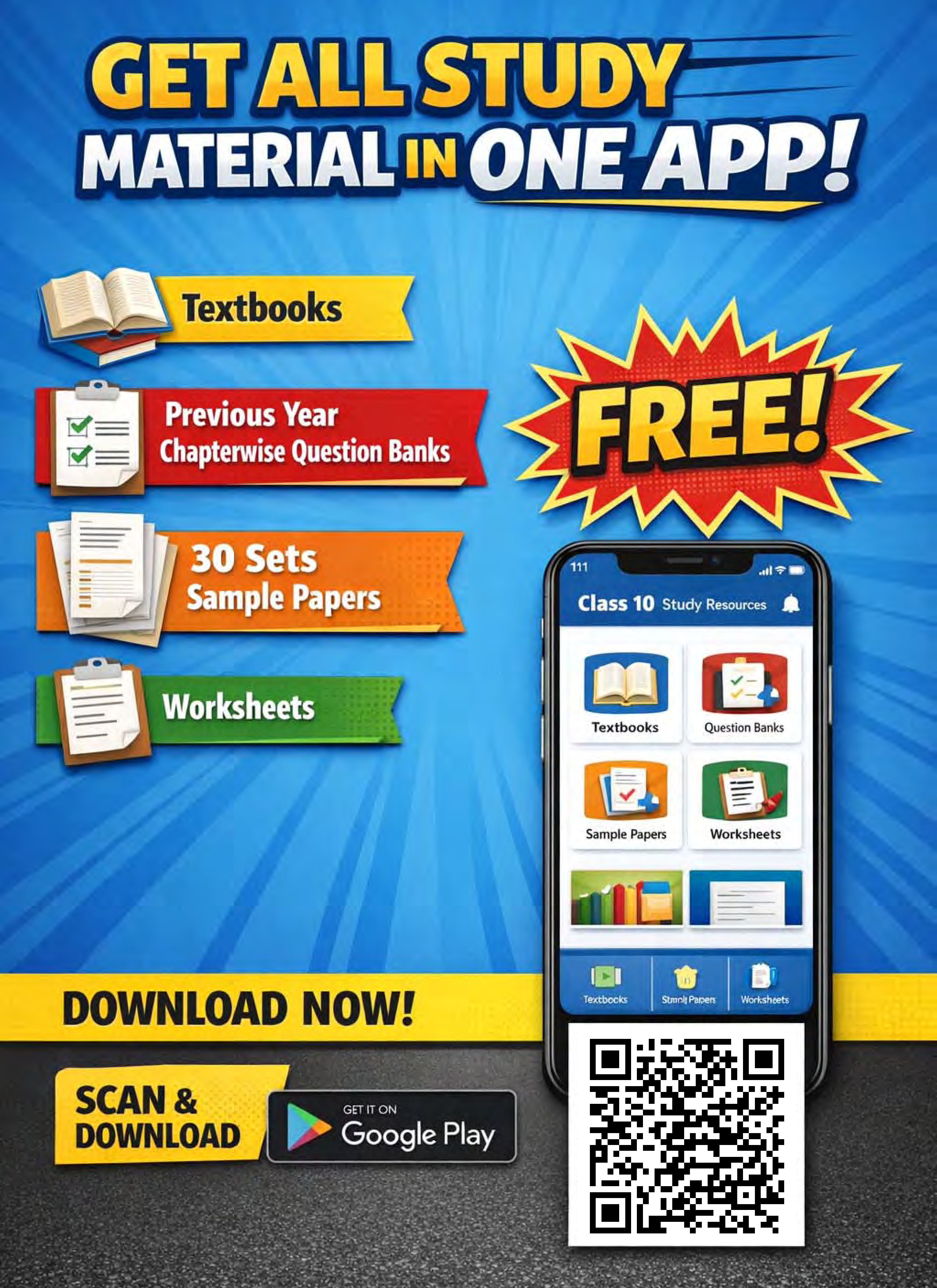
GET ALL STUDY
MATERIAL IN ONE APP!
Textbooks
Previous Year
Chapterwise Question Banks
30 Sets
Sample Papers
Worksheets
FREE!
Class 10 Study Resources
Textbooks
Question Banks
Sample Papers
Worksheets
DOWNLOAD NOW!
SCAN & DOWNLOAD
GET IT ON
Google Play

राजस्थान लोक सेवा आयोग

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

प्रारंभिक परीक्षा 2026

सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान

खंड 5

अर्थव्यवस्था

भाग I : आर्थिक अवधारणाएँ एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

भाग II : राजस्थान की अर्थव्यवस्था

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक

आयोग द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

NODIA

Downloaded from www.pdf.tube

RPSC प्रारंभिक परीक्षा खंड 5
Edition May 2026
Published by :NODIA
An Imprint of NODIA EDITIONS LLP

Information contained in this book has been obtained by author, from sources believes to be reliable. However, neither NODIA nor its author guarantee the accuracy or completeness of any information herein and NODIA nor its author shall be responsible for any error, omissions, or damages arising out of use of this information. This book is published with the understanding that NODIA and its author are supplying information but are not attempting to render engineering or other professional services.

© NODIA EDITIONS LLP

MRP ₹540.00

available at amazon

NODIA

This book is available on amazon and flipkart only and not available in market.

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9001005245
email : mail@nodia.in

विषय-सूची

भाग I : आर्थिक अवधारणाएँ एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

अध्याय 1.	आर्थिक वृद्धि, विकास एवं सतत विकास	9
अध्याय 2.	विकास का मापन : मानव विकास सूचकांक एवं संबंधित सूचकांक	33
अध्याय 3.	मौद्रिक एवं राजकोषीय नीति, केंद्रीय बजट एवं संसाधन जुटाव	57
अध्याय 4.	राजकोषीय संघवाद एवं वित्त आयोग	80
अध्याय 5.	कृषि विकास : संस्थागत एवं तकनीकी पहलू तथा सुधार	104
अध्याय 6.	औद्योगिक वृद्धि, नीतिगत सुधार एवं एल.पी.जी.	129
अध्याय 7.	सेवा क्षेत्र : भूमिका, चुनौतियाँ एवं अवसर	154
अध्याय 8.	ऊर्जा, परिवहन एवं संचार	178
अध्याय 9.	कौशल विकास एवं रोजगार सृजन	202
अध्याय 10.	सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण	228

भाग II : राजस्थान की अर्थव्यवस्था

अध्याय 11.	राजस्थान की अर्थव्यवस्था एवं राज्य बजट का व्यापक अवलोकन	254
अध्याय 12.	राजस्थान में कृषि : स्थिति, समस्याएँ एवं पहलें	277
अध्याय 13.	राजस्थान में उद्योग : स्थिति, समस्याएँ एवं पहल	300
अध्याय 14.	राजस्थान में सेवा क्षेत्र : स्थिति, समस्याएँ एवं पहल	324
अध्याय 15.	राजस्थान में ऊर्जा अवसंरचना	348
अध्याय 16.	परिवहन एवं संचार अवसंरचना	372
अध्याय 17.	ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज	398
अध्याय 18.	राज्य वित्त आयोग एवं राजकोषीय विकेंद्रीकरण	423
अध्याय 19.	राजस्थान में शिक्षा	448
अध्याय 20.	राजस्थान में स्वास्थ्य	474
अध्याय 21.	राजस्थान सरकार की प्रमुख कल्याणकारी योजनाएं	503

****

Click Here to Buy book on Amazon

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएँ संयुक्त प्रतियोगी (प्रारम्भिक) परीक्षा

—:परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम:—

दिनांक 09.01.2026

प्रारम्भिक परीक्षा में नीचे विनिर्दिष्ट विषय पर एक प्रश्न—पत्र होगा, जो वस्तुनिष्ठ प्रकार का होगा और अधिकतम 200 अंको का होगा।

परीक्षा का उद्देश्य केवल स्क्रीनिंग परीक्षण करना है। प्रश्नपत्र का स्तरमान स्नातक डिग्री स्तर का होगा। ऐसे अभ्यर्थियों द्वारा, जो मुख्य परीक्षा में प्रवेश के लिए अर्हित घोषित किये गये हो, प्रारम्भिक परीक्षा में प्राप्त अंको को उनका अंतिम योग्यता क्रम अवधारित करने के लिए संगणित नहीं किया जायेगा।

NODIA

विषय	अधिकतम अंक	समय
सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान	200	तीन घण्टे

नोट:—

1. प्रश्न पत्र में बहुविकल्पीय प्रकार के 150 प्रश्न होंगे व सभी प्रश्न समान अंक के होंगे।
2. मूल्यांकन में ऋणात्मक अंकन किया जाएगा, जिसमें प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 1/3 अंक काटे जाएंगे।

राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत

- राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल – पुरापाषाण काल से लेकर ताम्रपाषाण काल तक और कांस्य युग, प्राचीन राजस्थान का समाज और संस्कृति
- राजस्थान इतिहास के स्रोतः पुरातात्विक, अभिलेखीय, साहित्यिक और मुद्राशास्त्रीय
- राजस्थान के मुख्य राजवंशों के प्रमुख शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियाँ, केंद्रीय सत्ता के साथ सहयोग एवं प्रतिरोध, मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था
- 18वीं–19वीं शताब्दी में राजनीतिक और सामाजिक स्थिति, 20वीं शताब्दी में किसान और आदिवासी आंदोलन, प्रजा मंडल आंदोलन और जन जागृति, राजस्थान का एकीकरण
- राजस्थान की स्थापत्य परंपराएँ – मंदिर, किले, महल, स्मारक,मानव निर्मित जलाशय, चित्रकला और हस्तशिल्प की विभिन्न शैलियाँः प्रदर्शन कलाएँः लोक नृत्य और नाटक, संगीत (शास्त्रीय और लोक) और वाद्ययंत्र
- भाषा एवं साहित्यः राजस्थानी भाषा की बोलियाँ, राजस्थानी भाषा का साहित्य और लोक साहित्य, धार्मिक जीवनः राजस्थान में धार्मिक समुदाय, संत और संप्रदाय, राजस्थान के लोक देवता और धार्मिक प्रथाएँ
- राजस्थान में सामाजिक जीवनः मेले और त्यौहार; सामाजिक रीति–रिवाज और परंपराएँ, वेशभूषा और आभूषण
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व

भारत का इतिहास

प्राचीनकाल एवं मध्यकाल :–

- भारत के सांस्कृतिक आधार – सिंधु और वैदिक युगः छठी शताब्दी ईसा पूर्व के धार्मिक विचार – आजीवक, बौद्ध और जैन धर्म।
- मुख्य राजवंशों के प्रमुख शासकों की उपलब्धियाँः मौर्य, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य, पल्लव और चोल।
- प्राचीन भारत में कला एवं स्थापत्य कला एवं वैज्ञानिक विकास
- भारतीय ज्ञान एवं मूल्य व्यवस्थाः वर्णाश्रम, पुरुषार्थ, संस्कार, दर्शन एवं शिक्षा व्यवस्था।
- सल्तनत कालः प्रमुख राजवंशों की उपलब्धियाँ, विजयनगर साम्राज्य की राजनीतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियाँ।
- मुगल कालः प्रशासन एवं विभिन्न नीतियांः मराठा
- मध्यकाल में कला एवं वास्तुकला, साहित्य, चित्रकला और संगीत का विकास।
- धार्मिक आंदोलन और भक्ति एवं सूफी आंदोलन का योगदान।

आधुनिक काल (प्रारम्भिक 19वीं शताब्दी से 2000 तक) :–

- ब्रिटिश साम्राज्यवाद और प्रतिरोध – मराठा, मैसूर, सिख।
  1857 का विद्रोह।
  ब्रिटिश राजनीतिक, आर्थिक और प्रशासनिक नीतियाँ। राष्ट्रवाद का उदय, सामाजिक–धार्मिक आंदोलन।
- स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन– विकास, चरण और प्रमुख घटनाएँ। क्रांतिकारी और विभिन्न क्षेत्रीय आंदोलन। स्वतंत्रता और विभाजन की ओर।
- स्वातंत्रोत्तर राष्ट्र निर्माण (2000 तक), राज्य पुनर्गठन, नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, योजना एवं आर्थिक सुधार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास

Downloaded from www.pdf.tube

विश्व एवं भारत का भूगोल

विश्व का भूगोल :–

- भौतिक स्वरूपः– पर्वत, पठार, मैदान एवं मरूस्थल
- प्रमुख नदियाँ एवं झीलें
- प्राकृतिक वनस्पति
- कृषि : प्रकार, वितरण तथा प्रमुख फसलें
- प्रमुख औद्योगिक प्रदेश तथा प्रमुख उद्योग
- परिवहन तन्त्र
- पर्यावरणीय मुद्दे – मरूस्थलीकरण, वनोन्मूलन, जलवायु परिवर्तन एवं ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक तापन), ओजन अवक्षय

भारत का भूगोलः–

- भौतिक विभाग
- जलवायु
- प्रमुख नदियाँ एवं झीलें
- सिंचाई
- कृषि : प्रमुख फसलें
- खनिजः धात्विक और अधात्विक
- प्रमुख औद्योगिक प्रदेश तथा प्रमुख उद्योग

राजस्थान का भूगोल

- राजस्थानः– अवस्थिति, विस्तार तथा भौतिक विभाग
- नदियाँ एवं झीलें
- जलवायु की विशेषताएं
- प्राकृतिक वनस्पति, जैव विविधता तथा संरक्षण
- मृदा
- कृषि
- पशुधन
- सिंचाई
- जनसंख्या– वृद्वि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात
- नगरीकरण
- जनजातियाँ
- खनिज– धात्विक एवं अधात्विक
- पर्यटन

NODIA

भारतीय संविधान, राजनीतिक व्यवस्था और शासन

- संविधान का निर्माण, उद्देशिका, नागरिकता, मौलिक अधिकार, राज्य की नीति के निदेशक तत्व और मौलिक कर्तव्य
- संघीय सरकार– कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका
- संघ राज्य संबंध, आपातकालीन प्रावधान
- शहरी और ग्रामीण स्थानीय सरकार
- निर्वाचन आयोग, संघ लोक सेवा आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग और नीति आयोग
- लोक नीति, नागरिक चार्टर, सामाजिक अंकेक्षण और शिकायत निवारण प्रणाली
- लोकपाल, केंद्रीय सतर्कता आयोग, केंद्रीय सूचना आयोग

राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

- राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं मंत्रिपरिषद, राजस्थान विधान सभा, राजस्थान उच्च न्यायालय, अधीनस्थ न्यायालय एवं अन्य न्यायिक निकाय, महाधिवक्ता
- मुख्य सचिव, राज्य सचिवालय, विभिन्न विभागों के निदेशालय, संभागीय आयुक्त, जिला कलेक्टर / जिला मजिस्ट्रेट, पुलिस अधीक्षक, उप–खण्ड अधिकारी, तहसीलदार
- राजस्थान लोक सेवा आयोग, राजस्थान राज्य निर्वाचन आयोग, राजस्थान सूचना आयोग, राजस्थान राज्य महिला आयोग, राजस्व मंडल, लोकायुक्त
- राजस्थान में पंचायती राज एवं नगर पालिकाओं का प्रशासन

आर्थिक अवधारणाएँ एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

- आर्थिक संवृद्धि और विकास। पर्यावरण क्षरण और सतत् विकास।
- विकास के मापक– पारंपरिक माप, मानव विकास सूचकांक और अन्य संबंधित सूचकांक।
- आर्थिक विकास में मौद्रिक और राजकोषीय नीति की भूमिका। भारत सरकार का नवीनतम बजट और संसाधन संग्रहण।
- राजकोषीय संघवाद– केन्द्र– राज्य वित्तीय संबंध और वित्त आयोग।
- कृषिगत विकास– संस्थागत और तकनीकी पहलू। भारतीय कृषि में सुधार–चुनौतियां और सरकारी पहल।
- औद्योगिक वृद्धि, स्वरूप, नीति और औद्योगिक सुधार– उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण।
- आर्थिक वृद्धि में सेवा क्षेत्र की भूमिका– चुनौतियां और अवसर। ऊर्जा, परिवहन और संचार।
- कौशल विकास और रोजगार संवर्द्धन– कार्यक्रम और नीतियां। सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण

राजस्थान की अर्थव्यवस्था

- अर्थव्यवस्था का वृहत् परिदृश्य और राज्य बजट।
- कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र की मौजूदा स्थिति, मुद्दे और सरकारी पहल।
- आधारभूत संरचना का विकासः ऊर्जा, परिवहन और संचार।
- ग्रामीण विकास, पंचायती राज और राज्य वित्त आयोग।
- मूलभूत सामाजिक सेवाएं– शिक्षा और स्वास्थ्य।
- राजस्थान सरकार की मुख्य कल्याणकारी योजनाएं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

- दैनिक जीवन में विज्ञान के मूलभूत तत्व।
- कम्प्यूटर्स; सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी।
- रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी भारत के विशेष संदर्भ में।
- वंशागति एवं विभिन्नता; अनुवांशिक–अभियांत्रिकी; जैव–प्रौद्योगिकी एवं नैनो–प्रौद्योगिकी।
- मानव स्वास्थ्य देखभाल; आहार एवं पोषण; रोग एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रम।
- पर्यावरणीय तथा पारिस्थितिकीय परिवर्तन एवं उनका प्रभाव मूल्यांकन।
- जैव–विविधता; प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संतत् विकास।
- राजस्थान के विशेष संदर्भ में कृषि–विज्ञान, उद्यान–विज्ञान, वानिकी एवं पशुपालन।
- राजस्थान तथा भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रमुख सरकारी कार्यक्रम एवं नीतियां।
- अभिनव वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी प्रगति; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भारतीयों का योगदान; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का स्वदेशीकरण।

Click Here to Buy book on Amazon

तार्किक विवेचन एवं मानसिक योग्यता

तार्किक दक्षता (निगमनात्मक, आगमनात्मक, अपवर्तनात्मक):–

- कथन एवं मान्यताएं
- कथन एवं तर्क
- कथन एवं निष्कर्ष
- कथन–कार्यवाही
- विश्लेषणात्मक तर्कक्षमता/विवेचनात्मक तर्कक्षमता

मानसिक योग्यता :–

- संख्या/ अक्षर अनुक्रम
- कूटवाचन (कोडिंग–डीकोडिंग)
- संबंधों से संबंधित समस्याएं
- दिशा ज्ञान परीक्षण
- तार्किक वेन आरेख
- रैंकिंग एवं बैठक व्यवस्था
- आकार और उनके उपविभाजन

आधारभूत संख्यात्मक दक्षता :–

- अनुपात–समानुपात तथा साझा, लाभ एवं हानि
- प्रतिशत
- साधारण एवं चक्रवृद्धि ब्याज
- समतलीय चित्रों के परिमाप एवं क्षेत्र
- आंकडों का विश्लेषण (सारणी, दण्ड–आरेख, रेखीय आलेख, पाई–चार्ट)
- माध्य (समांतर, गुणोत्तर एवं हरात्मक), माध्यिका एवं बहुलक
- क्रमचय एवं संचय
- प्रायिकता (सरल समस्याएं)

समसामयिक घटनाएँ एवं मुद्दे (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

- महत्वपूर्ण व्यक्तित्व, स्थान और प्रासंगिक समकालीन मुद्दे
- कल्याण और विकास से संबंधित नई योजनाएँ, कार्यक्रम और पहल
- प्रमुख आर्थिक और राजनीतिक घटनाक्रम
- खेल और क्रीड़ा से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएँ एवं उपलब्धियाँ
- प्रमुख पुरस्कार, प्रकाशन और प्रतिष्ठित लेखक
- राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (भर्ती में अनुचित साधनों की रोकथाम के अध्युपाय) अधिनियम, 2022

अजमेर **मुख्य परीक्षा नियंत्रक**

दिनांक 09.01.2026

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 01

आर्थिक वृद्धि, विकास एवं सतत विकास

1. निम्नलिखित में से कौन सा आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास के बीच मूलभूत अंतर का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) आर्थिक संवृद्धि उत्पादन का पूरी तरह से मात्रात्मक माप है, जबकि विकास सामाजिक प्रगति का विशुद्ध रूप से गुणात्मक मूल्यांकन है।
(2) संवृद्धि मात्रात्मक (सकल घरेलू उत्पाद) है, जबकि विकास गुणात्मक (जीवन की गुणवत्ता और संस्थान) है।
(3) आर्थिक संवृद्धि मुख्य रूप से कुल राष्ट्रीय उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करती है, जबकि विकास सामूहिक धन के न्यायसंगत वितरण पर ध्यान केंद्रित करता है।
(4) आर्थिक संवृद्धि की गणना में मानव विकास सूचकांक शामिल होता है, जबकि विकास केवल प्रति व्यक्ति आय के स्तर को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास का आकलन करते समय निम्नलिखित में से किस संकेतक के उपयोग की संभावना सबसे कम है?
(1) शुद्ध नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) विस्तार
(2) शिशु मृत्यु दर
(3) वयस्क साक्षरता दर
(4) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. आर्थिक सिद्धांतों के संदर्भ में, 'विकास रहित संवृद्धि' एक ऐसी घटना है जहाँ:
(1) एक देश उच्च जीवन स्तर प्राप्त करता है लेकिन अपनी भौतिक पूंजी के भंडार को बढ़ाने में विफल रहता है।
(2) अर्थव्यवस्था की संरचना पूरी तरह से कृषि से सेवाओं की ओर स्थानांतरित हो जाती है।
(3) निर्धनता या असमानता को कम किए बिना वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।
(4) जनसंख्या वृद्धि दर राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर से अधिक हो जाती है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. आर्थिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक, संस्थागत और गुणात्मक परिवर्तन शामिल हैं।
II. यह आर्थिक संवृद्धि की तुलना में एक संकीर्ण अवधारणा है।
III. यह बढ़े हुए उत्पादन के साथ-साथ आय के न्यायसंगत वितरण पर बल देता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

5. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (अवधारणाएं)
A. आर्थिक संवृद्धि
B. आर्थिक विकास
C. मानव विकास
D. सतत विकास
सूची II: (विशेषताएं)
i. केवल अर्थव्यवस्था की समृद्धि के बजाय मानव जीवन की समृद्धि के विस्तार पर ध्यान केंद्रित करता है।
ii. भावी पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने पर बल देता है।
iii. एक बहुआयामी प्रक्रिया जिसमें सामाजिक संरचनाओं, जन दृष्टिकोणों और राष्ट्रीय संस्थानों में व्यापक परिवर्तन शामिल हैं।
iv. आमतौर पर वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में वार्षिक प्रतिशत वृद्धि के रूप में मापा जाता है।
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) को किसके कुल बाजार मूल्य के रूप में सबसे अच्छी तरह परिभाषित किया गया है?
(1) एक वर्ष में भौगोलिक स्थिति की परवाह किए बिना, किसी देश के सभी नागरिकों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुएं और सेवाएं।
(2) किसी दिए गए वर्ष के दौरान किसी राष्ट्र की घरेलू सीमा के भीतर उत्पादित अंतिम वस्तुएं और सेवाएं।
(3) एक वर्ष के दौरान किसी देश की सीमाओं के भीतर उत्पादित मध्यवर्ती और अंतिम वस्तुएं।

(4) किसी दिए गए वर्ष के दौरान किसी देश की घरेलू सीमा के भीतर उपभोग की जाने वाली अंतिम वस्तुएं और सेवाएं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. नाममात्र जीडीपी और वास्तविक जीडीपी के बीच मुख्य अंतर यह है कि वास्तविक जीडीपी को किसके लिए समायोजित किया जाता है?
(1) वार्षिक जनसंख्या वृद्धि
(2) पूंजीगत संपत्तियों का मूल्यह्रास
(3) विदेशों से शुद्ध कारक आय
(4) मूल्य स्तर में परिवर्तन (मुद्रास्फीति)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. सकल घरेलू उत्पाद की गणना की मूल्यवर्धित विधि में, दोहरी गणना से बचने के लिए उत्पादन के मूल्य में से निम्नलिखित में से किसे घटाया जाता है?
(1) मध्यवर्ती उपभोग मूल्य
(2) अप्रत्यक्ष व्यावसायिक कर
(3) पूंजीगत मूल्यह्रास
(4) सरकारी सहायता (सब्सिडी)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की गणना के तरीकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आय विधि उत्पादन प्रक्रिया में अर्जित सभी कारक आय को जोड़कर जीडीपी की गणना करती है।
II. व्यय विधि उपभोग, निवेश, सरकारी खर्च और शुद्ध निर्यात को जोड़कर जीडीपी की गणना करती है।
III. मूल्यवर्धित विधि में घरेलू सीमा के भीतर सभी उद्यमों द्वारा जोड़े गए सकल मूल्य को जोड़ना शामिल है।
IV. जीडीपी की गणना के तीन तरीकों से प्राप्त परिणाम सैद्धांतिक रूप से चुने गए आधार वर्ष के आधार पर भिन्न होते हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. मूल्यवर्धित विधि का उपयोग करके राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने में शामिल चरणों के सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) उत्पादक उद्यमों की पहचान → प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में वर्गीकरण → सकल मूल्यवर्धन का अनुमान → राष्ट्रीय आय प्राप्त करने के लिए विदेशों से शुद्ध कारक आय को जोड़ना।
(2) सकल मूल्यवर्धन का अनुमान → प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में वर्गीकरण → उत्पादक उद्यमों की पहचान → राष्ट्रीय आय प्राप्त करने के लिए विदेशों से शुद्ध कारक आय को जोड़ना।
(3) प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में वर्गीकरण → उत्पादक उद्यमों की पहचान → विदेशों से शुद्ध कारक आय को जोड़ना → सकल मूल्यवर्धन का अनुमान।
(4) विदेशों से शुद्ध कारक आय को जोड़ना → उत्पादक उद्यमों की पहचान → क्षेत्रों में वर्गीकरण → सकल मूल्यवर्धन का अनुमान।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) किसे शामिल करने के कारण सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) से भिन्न होता है?
(1) पूंजी उपभोग भत्ता
(2) अप्रत्यक्ष व्यावसायिक कर
(3) सरकारी हस्तांतरण भुगतान
(4) विदेशों से शुद्ध कारक आय
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में से निम्नलिखित में से किसे घटाकर शुद्ध घरेलू उत्पाद (एनडीपी) प्राप्त किया जाता है?
(1) सरकारी सहायता (सब्सिडी)
(2) मूल्यह्रास
(3) शुद्ध निर्यात
(4) विदेशों से शुद्ध कारक आय
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. राष्ट्रीय आय स्पष्ट रुप से निम्नलिखित में से किस समष्टि आर्थिक समुच्चय के बराबर है?
(1) बाजार मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद
(2) कारक लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद
(3) कारक लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद
(4) बाजार मूल्य पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. राष्ट्रीय आय लेखांकन से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कारक लागत पर जीडीपी में अप्रत्यक्ष कर शामिल हैं लेकिन सब्सिडी शामिल नहीं है।
II. यदि विदेशों से प्राप्त शुद्ध कारक आय ऋणात्मक है, तो जीएनपी, जीडीपी से कम हो सकता है।
III. बाजार मूल्य पर एनएनपी मूल्यह्रास घटाने के बाद उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है।
IV. व्यक्तिगत आय में परिवारों द्वारा प्राप्त हस्तांतरण भुगतान शामिल होते हैं।
V. व्यक्तिगत प्रयोज्य आय, व्यक्तिगत आय में से व्यक्तिगत प्रत्यक्ष करों को घटाने के बाद प्राप्त होती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

15. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (राष्ट्रीय आय समुच्चय)
A. बाजार मूल्य पर जीएनपी
B. बाजार मूल्य पर एनडीपी
C. कारक लागत पर एनएनपी
D. कारक लागत पर जीडीपी
सूची II: (सूत्र)
i. बाजार मूल्य पर जीडीपी - मूल्यह्रास
ii. बाजार मूल्य पर एनएनपी - अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी
iii. बाजार मूल्य पर जीडीपी - अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी
iv. बाजार मूल्य पर जीडीपी + विदेशों से शुद्ध कारक आय
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

16. किसी देश की प्रति व्यक्ति आय की गणना उसकी राष्ट्रीय आय को किससे विभाजित करके की जाती है?
(1) कार्यशील आयु वाली जनसंख्या
(2) कुल जनसंख्या
(3) परिवारों की कुल संख्या
(4) कुल श्रम शक्ति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. आर्थिक विकास के संकेतक के रूप में प्रति व्यक्ति आय का उपयोग करने की एक प्रमुख सीमा किसे माना जाता है?
(1) कुल जनसंख्या के आकार की उपेक्षा
(2) आय वितरण की उपेक्षा
(3) मुद्रास्फीति समायोजन को शामिल करना
(4) गैर-मौद्रिक लेनदेन को शामिल करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. प्रति व्यक्ति आय की अक्सर मानव कल्याण की वास्तविकता को छिपाने के लिए आलोचना की जाती है क्योंकि इसमें किसे शामिल नहीं किया जाता है?
(1) अवैतनिक घरेलू कार्य और विश्राम का समय।
(2) देश के भीतर विदेशी निगमों द्वारा उत्पादित वस्तुएं।
(3) औद्योगिक क्षेत्र में उत्पन्न उत्पादन।
(4) रक्षा पर सरकारी व्यय।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, अभिकथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): किसी देश में उच्च प्रति व्यक्ति आय का अर्थ अनिवार्य रूप से मानव विकास का उच्च स्तर नहीं है।
कारण (R): प्रति व्यक्ति आय की गणना में आय असमानता, पर्यावरणीय क्षरण, या बुनियादी स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा तक पहुंच को ध्यान में नहीं रखा जाता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

20. नाममात्र जीडीपी डेटा से वास्तविक प्रति व्यक्ति आय की गणना करने के लिए निम्नलिखित चरणों को तार्किक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. वास्तविक जीडीपी को कुल जनसंख्या से विभाजित करें।
II. वर्तमान वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल बाजार मूल्य को संकलित करें।
III. मूल्य तुलना के लिए एक आधार वर्ष चुनें।
IV. मुद्रास्फीति के लिए नाममात्र जीडीपी को समायोजित करने के लिए जीडीपी अवस्फीतिक कारक लागू करें।
निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रम दर्शाता है?
(1) II, III, IV, I
(2) III, II, I, IV
(3) II, IV, III, I
(4) III, I, II, IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. आर्थिक संवृद्धि को निर्धारित करने वाले कारकों के संदर्भ में, भौतिक पूंजी संचयन मुख्य रूप से किसके द्वारा आर्थिक संवृद्धि की ओर ले जाता है?
(1) श्रम शक्ति के आकार में वृद्धि।
(2) नई तकनीक की आवश्यकता में कमी।
(3) बेहतर उत्पादकता और क्षमता।
(4) समग्र बचत दर को कम करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

22. अंतर्जात संवृद्धि सिद्धांत के अनुसार दीर्घकालिक सतत आर्थिक संवृद्धि के लिए निम्नलिखित में से किस कारक को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है?
(1) तीव्र जनसंख्या वृद्धि
(2) तकनीकी नवाचार
(3) प्राकृतिक संसाधनों का निष्कर्षण
(4) कठोर आयात प्रतिस्थापन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. निम्न वृद्धिशील पूंजी-उत्पाद अनुपात (ICOR) क्या दर्शाता है?
(1) अर्थव्यवस्था अपनी पूंजी का अत्यधिक अक्षम तरीके से उपयोग कर रही है।
(2) उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए बड़ी मात्रा में पूंजी की आवश्यकता होती है।
(3) देश की समग्र तकनीकी प्रगति में कमी।
(4) अर्थव्यवस्था उपलब्ध पूंजी के साथ अधिक कुशलता से उत्पादन कर रही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. आर्थिक संवृद्धि में श्रम की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. शिक्षा और स्वास्थ्य के माध्यम से मानव पूंजी निर्माण श्रम उत्पादकता में सुधार करता है।

II. कार्यशील आयु वाली बढ़ती जनसंख्या रोजगार सृजन की परवाह किए बिना स्वतः आर्थिक संवृद्धि की गारंटी देती है।

III. जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त करने के लिए सहायक आर्थिक नीतियों की आवश्यकता होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (संवृद्धि के कारक)

A. मानव पूंजी
B. भौतिक पूंजी
C. तकनीक
D. संस्थागत कारक

सूची II: (उदाहरण/तंत्र)

i. संपत्ति के अधिकारों और विधि के शासन का कार्यान्वयन
ii. एक नई कुशल विनिर्माण प्रक्रिया का आविष्कार
iii. राजमार्गों और दूरसंचार नेटवर्क का निर्माण
iv. तकनीकी प्रशिक्षण और सार्वजनिक स्वास्थ्य में निवेश

(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. आर्थिक संवृद्धि के चरणों वाले मॉडल में, "टेक-ऑफ" (take-off) चरण की विशेषता क्या है?

(1) निवेश में उछाल और स्वतः संवृद्धि।
(2) कृषि निर्वाह समाज।
(3) सेवा क्षेत्र का प्रभुत्व।
(4) कल्याणकारी राज्य और जन उपभोग।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. आर्थिक संवृद्धि के चरणों वाले मॉडल में, वह चरण जहाँ आधुनिक तकनीक पूरी अर्थव्यवस्था में व्याप्त हो जाती है और पुराने उद्योगों का स्थान लेने के लिए कई नए उद्योग विकसित होते हैं, उसे किस रूप में जाना जाता है?

(1) पारंपरिक समाज
(2) टेक-ऑफ के लिए पूर्व-शर्तें
(3) उच्च जन उपभोग का युग
(4) परिपक्वता की ओर अग्रसर (Drive to maturity)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

28. आर्थिक संवृद्धि मॉडल में "टेक-ऑफ के लिए पूर्व-शर्तें" चरण की प्राथमिक विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?

(1) व्यापक टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएं
(2) नए उद्यमी और बुनियादी ढांचा
(3) कृषि क्षेत्र का पूर्ण उन्मूलन
(4) निवेश का 5 प्रतिशत पर स्थिर होना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

29. आर्थिक संवृद्धि के चरणों वाले मॉडल से संबंधित निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:

I. पारंपरिक समाज की विशेषता सीमित तकनीक के कारण उत्पादकता की एक सीमा है।

II. टेक-ऑफ चरण के दौरान, शुद्ध निवेश राष्ट्रीय आय के लगभग 5% से बढ़कर 10% से अधिक हो जाता है।

III. परिपक्वता की ओर अग्रसर तब होता है जब एक अर्थव्यवस्था वह सब कुछ उत्पादित कर सकती है जिसे वह उत्पादित करना चाहती है।

IV. उच्च जन उपभोग मुख्य रूप से भारी उद्योगों और पूंजीगत वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. आर्थिक संवृद्धि के चरणों वाले मॉडल का कौन सा चरण आगे पूंजी संचयन के बजाय सामाजिक कल्याण और सुरक्षा की दिशा में संसाधनों के आवंटन पर बल देता है?

(1) टेक-ऑफ के लिए पूर्व-शर्तें
(2) टेक-ऑफ
(3) परिपक्वता की ओर अग्रसर
(4) उच्च जन उपभोग का युग
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. विकास के क्षमता दृष्टिकोण में, "प्रकार्य" (functionings) शब्द का अर्थ है:

(1) मूल्यवान 'होना' (beings) और 'करना' (doings)।
(2) कुल मौद्रिक धन।
(3) सामुदायिक बुनियादी ढांचा।
(4) संवैधानिक कानूनी अधिकार।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

32. विकास के क्षमता दृष्टिकोण में, "क्षमताओं" (capabilities) को किसके रूप में सबसे अच्छी तरह समझा जाता है?

(1) वास्तविक घरेलू उपभोग।
(2) प्रकार्यों को प्राप्त करने की स्वतंत्रता।
(3) उत्पादक पूंजी का भंडार।
(4) अंतर्निहित आनुवंशिक गुण।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

33. क्षमता दृष्टिकोण विकास अर्थशास्त्र के ध्यान को कहाँ से स्थानांतरित करता है?
(1) मानवाधिकारों से पूंजी की ओर।
(2) आय से वास्तविक स्वतंत्रताओं की ओर।
(3) निर्धनता से औद्योगिक उत्पादन की ओर।
(4) व्यापार से घरेलू संरक्षण की ओर।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. विकास के क्षमता दृष्टिकोण से संबंधित निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
I. यह आय को केवल एक साधन के रूप में देखता है, स्वयं में साध्य नहीं।
II. यह तर्क देता है कि विकास का मूल्यांकन मानवीय स्वतंत्रताओं के विस्तार द्वारा किया जाना चाहिए।
III. यह विकास में शारीरिक स्वास्थ्य और शिक्षा की भूमिका को पूरी तरह से अनदेखा करता है।
IV. इसने मानव विकास सूचकांक (HDI) के लिए सैद्धांतिक आधार प्रदान किया।
V. यह एजेंसी पर बल देता है, जिससे व्यक्ति कार्य कर सकें और परिवर्तन ला सकें।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (अवधारणाएं)
A. प्रकार्य (Functionings)
B. क्षमता समुच्चय (Capability Set)
C. एजेंसी (Agency)
D. अस्वतंत्रता (Unfreedom)
सूची II: (विवरण)
i. स्वास्थ्य सेवा या राजनीतिक स्वतंत्रता जैसी आधारभूत आवश्यकताओं तक पहुंच की कमी।
ii. 'होने' और 'करने' के वैकल्पिक संयोजन जो एक व्यक्ति प्राप्त कर सकता है।
iii. किसी व्यक्ति की उन लक्ष्यों को पाने और साकार करने की क्षमता जिन्हें वह महत्व देता है।
iv. 'होने' और 'करने' की प्राप्त स्थितियाँ, जैसे कि पर्याप्त रूप से पोषित होना।
(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

36. आर्थिक विकास के संदर्भ में, समावेशी विकास मौलिक रूप से किसे संदर्भित करता है?
(1) औपचारिक औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि।
(2) पर्यावरण संरक्षण रणनीति।
(3) विदेशी निवेश संचालित विस्तार।
(4) समानता के साथ व्यापक आधार वाली संवृद्धि।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. विकासशील अर्थव्यवस्था में समावेशी विकास प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित में से किसे प्राथमिक तंत्र माना जाता है?
(1) अत्यधिक प्रतिगामी कराधान प्रणालियों को लागू करना।
(2) सार्वजनिक स्वास्थ्य और शिक्षा पर सरकारी खर्च कम करना।
(3) वित्तीय समावेशन और सूक्ष्म ऋण तक पहुंच को बढ़ावा देना।
(4) विकास को विशेष रूप से शहरी महानगरीय केंद्रों पर केंद्रित करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

38. समावेशी विकास की अवधारणा निम्नलिखित में से किन दो आर्थिक चुनौतियों पर सीधे प्रहार का संकेत देती है?
(1) मुद्रास्फीति और भुगतान संतुलन घाटा
(2) निर्धनता और बढ़ती आर्थिक असमानता
(3) मुद्रा अवमूल्यन और सार्वजनिक ऋण
(4) जनसंख्या वृद्धि और प्रतिभा पलायन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

39. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, अभिकथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): किसी देश की दीर्घकालिक राजनीतिक और सामाजिक स्थिरता के लिए समावेशी विकास आवश्यक माना जाता है।
कारण (R): उच्च आर्थिक असमानता प्रायः सामाजिक अशांति की ओर ले जाती है, जिससे निवेश कम होता है और निरंतर आर्थिक विस्तार में बाधा आती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. निम्नलिखित में से कौन सा सामान्यतः समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए फोकस क्षेत्र नहीं है?
(1) कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण
(2) सार्वभौमिक बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करना
(3) मुख्य न्यायिक कार्यों का निजीकरण करना
(4) हाशिए पर रहने वाले समुदायों और महिलाओं को सशक्त बनाना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

41. पर्यावरणीय कुज़नेट वक्र परिकल्पना करता है कि जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था विकसित होती है, बाजार की शक्तियां पहले:
(1) आर्थिक असमानता को घटाती हैं और फिर बढ़ाती हैं।
(2) पर्यावरणीय क्षरण को घटाती हैं और फिर बढ़ाती हैं।
(3) पर्यावरणीय क्षरण को बढ़ाती हैं और फिर घटाती हैं।
(4) जनसंख्या वृद्धि को बढ़ाती हैं और फिर घटाती हैं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. अर्थशास्त्र में, "साझा संसाधनों की त्रासदी" उस स्थिति को संदर्भित करती है जहाँ:
(1) साझा संसाधन समाप्त हो जाते हैं।
(2) संसाधनों का कम उपयोग होता है।
(3) सफल हस्तक्षेप होता है।
(4) कमी का उन्मूलन होता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. पर्यावरणीय क्षरण का एक प्रमुख आर्थिक कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) प्राकृतिक संसाधनों का उचित मूल्य निर्धारण जो उनके वास्तविक कमी मूल्य को दर्शाता हो।
(2) उत्पादक फर्मों द्वारा नकारात्मक बाह्यताओं का पूर्ण आंतरीकरण।
(3) व्यापक संपत्ति अधिकारों का कठोर प्रवर्तन।
(4) बाजार की विफलता जिसके कारण सामान्य संपत्ति संसाधनों का गलत आवंटन होता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. पर्यावरणीय क्षरण के आर्थिक संबंधों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पर्यावरणीय क्षरण प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभावों के माध्यम से श्रम उत्पादकता को कम कर सकता है।
II. प्राकृतिक पूंजी की कमी भविष्य की आर्थिक संवृद्धि पर अंकुश लगाती है।
III. पर्यावरणीय नियमों के परिणामस्वरूप सदैव अर्थव्यवस्था में कुल नौकरियों का शुद्ध नुकसान होता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल I और II
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पर्यावरणीय आर्थिक अवधारणाएं)
A. नकारात्मक बाह्यता
B. सकारात्मक बाह्यता
C. फ्री राइडर समस्या
D. प्राकृतिक पूंजी
सूची II: (विवरण)
i. प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र का भंडार जो मूल्यवान पारिस्थितिकी तंत्र वस्तुओं या सेवाओं का प्रवाह प्रदान करता है।
ii. वे व्यक्ति जो किसी सार्वजनिक वस्तु का भुगतान किए बिना उसका लाभ उठाते हैं।
iii. किसी आर्थिक लेनदेन के परिणामस्वरूप तीसरे पक्ष द्वारा सहा जाने वाला नुकसान।
iv. किसी आर्थिक लेनदेन के परिणामस्वरूप तीसरे पक्ष द्वारा प्राप्त किया जाने वाला लाभ।
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

46. उपभोग में सकारात्मक बाह्यता का सबसे उपयुक्त उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) एक कारखाना समीपवर्ती नदी में अनुपचारित रासायनिक अपशिष्ट बहा रहा है।
(2) एक व्यक्ति संक्रामक रोग के विरुद्ध टीकाकरण करवा रहा है।
(3) एक यात्री भीड़भाड़ वाले शहर में उच्च उत्सर्जन वाला वाहन चला रहा है।
(4) एक उपभोक्ता आयातित विलासिता की वस्तुएं खरीद रहा है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. जब किसी वस्तु के उत्पादन में नकारात्मक बाह्यता मौजूद होती है, तो मुक्त बाजार आमतौर पर:
(1) वस्तु की सामाजिक रूप से इष्टतम मात्रा से अधिक उत्पादन करेगा।
(2) वस्तु की बिल्कुल सामाजिक रूप से इष्टतम मात्रा का उत्पादन करेगा।
(3) वस्तु की सामाजिक रूप से इष्टतम मात्रा से कम उत्पादन करेगा।
(4) ऐसी कीमत निर्धारित करेगा जो सामाजिक रूप से इष्टतम कीमत से अधिक हो।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. पिगोवियन कर को बाजार की विफलता को किसके द्वारा ठीक करने के लिए डिज़ाइन किया गया है?
(1) नकारात्मक बाह्यताओं के लिए सब्सिडी।
(2) सीमांत बाहरी लागत के बराबर कर।
(3) एकाधिकार शक्ति के लिए कर छूट।
(4) सार्वजनिक वस्तुओं के कराधान की रणनीति।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. सार्वजनिक वस्तुओं और बाजार की विफलता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सार्वजनिक वस्तुओं की विशेषता उपभोग में गैर-अपवर्ज्यता और गैर-प्रतिद्वंद्विता है।
II. फ्री-राइडर समस्या निजी बाजारों के लिए सार्वजनिक

Click Here to Buy book on Amazon

वस्तुओं की कुशलतापूर्वक आपूर्ति करना कठिन बनाती है।
III. राष्ट्रीय रक्षा और स्ट्रीट लाइटिंग सार्वजनिक वस्तुओं के मानक उदाहरण हैं।
IV. बाजार तंत्र सरकारी हस्तक्षेप के बिना सदैव सार्वजनिक वस्तुओं की इष्टतम मात्रा प्रदान करते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. एक नकारात्मक पर्यावरणीय बाह्यता (बाजार की विफलता) को ठीक करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप के संदर्भ में निम्नलिखित चरणों को क्रमिक रूप से व्यवस्थित कीजिए:
I. प्रदूषण के कारण होने वाली सीमांत बाहरी लागत का अनुमान लगाना।
II. नकारात्मक बाह्यता की पहचान (उदाहरण के लिए, एक कारखाने से वायु प्रदूषण)।
III. पिगोवियन कर या उत्सर्जन सीमा का कार्यान्वयन।
IV. उत्पादित मात्रा को सामाजिक रूप से इष्टतम स्तर तक कम करना।

निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रम दर्शाता है?
(1) II, I, III, IV
(2) I, II, III, IV
(3) III, II, I, IV
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. सतत विकास की व्यापक रूप से स्वीकृत परिभाषा "विकास जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है" किसके द्वारा प्रस्तुत की गई थी?
(1) क्योटो प्रोटोकॉल समझौता
(2) रियो पृथ्वी शिखर सम्मेलन
(3) 1987 ब्रंटलैंड कमीशन रिपोर्ट
(4) पेरिस समझौता ढांचा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. सतत विकास के संदर्भ में, "अंतर-पीढ़ीगत समानता" की अवधारणा मुख्य रूप से किसे संदर्भित करती है?
(1) वर्तमान संसाधन वितरण
(2) राजनीतिक आयु प्रतिनिधित्व
(3) राष्ट्रों के बीच आय अंतर
(4) भविष्य की पीढ़ियों के प्रति समानता।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

53. निम्नलिखित में से कौन सतत विकास में "अंतः-पीढ़ीगत समानता" का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) भविष्य के संसाधनों का संरक्षण
(2) भविष्य के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण
(3) वर्तमान आबादी के भीतर समानता।
(4) दशकीय आर्थिक संवृद्धि दर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. आमतौर पर सतत विकास से जुड़े निम्नलिखित सिद्धांतों पर विचार कीजिए:
I. जैव विविधता का संरक्षण।
II. आर्थिक योजना में पर्यावरणीय विचारों का एकीकरण।
III. बिना किसी पारिस्थितिक सीमा के आर्थिक संवृद्धि का प्रयास।
IV. सामाजिक समानता और निर्धनता उन्मूलन को बढ़ावा देना।
V. तीव्र औद्योगिकीकरण के लिए गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और V
(3) केवल I, II, III और IV
(4) केवल I, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम)
A. स्टॉकहोम सम्मेलन (1972)
B. 1987 आयोग की रिपोर्ट
C. रियो पृथ्वी शिखर सम्मेलन (1992)
D. जोहान्सबर्ग शिखर सम्मेलन (2002)

सूची II: (प्रमुख परिणाम/विषय)
i. 21वीं सदी में सतत विकास के लिए एजेंडा 21 तैयार किया गया।
ii. पर्यावरण को एक प्रमुख मुद्दा बनाने वाला पहला वैश्विक सम्मेलन।
iii. सतत विकास की मानक परिभाषा गढ़ी।
iv. सतत विकास और निर्धनता उन्मूलन के लिए साझेदारी पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया।

(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

56. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म क्रमशः सतत विकास लक्ष्य (SDG) 1 और SDG 2 को सही ढंग से दर्शाता है?
(1) निर्धनता की समाप्ति; शून्य भुखमरी
(2) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा; लैंगिक समानता
(3) स्वच्छ जल; सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा
(4) सम्मानजनक कार्य; असमानताओं में कमी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को सभी संयुक्त राष्ट्र सदस्य राज्यों द्वारा लोगों और ग्रह के लिए शांति और समृद्धि के साझा खाके के रूप में अपनाया गया था। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने का लक्षित वर्ष क्या है?
(1) 2025
(2) 2040
(3) 2030
(4) 2050
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

58. सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (MDGs) और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के बीच एक बड़ा अंतर यह है कि:
(1) SDGs का सार्वभौमिक अनुप्रयोग है।
(2) MDGs का विकसित देशों पर ध्यान था।
(3) SDGs की संख्या कम (8) है।
(4) SDGs में जलवायु परिवर्तन का बहिष्करण है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, अभिकथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को अक्सर अविभाज्य और एकीकृत के रूप में वर्णित किया जाता है।
कारण (R): एक SDG में प्रगति स्वाभाविक रूप से दूसरों में प्रगति से जुड़ी होती है, जिसका अर्थ है कि आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय आयामों को एक साथ संतुलित किया जाना चाहिए।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. SDG 13 एक विशिष्ट वैश्विक चुनौती से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई का आह्वान करता है। निम्नलिखित में से कौन सा SDG 13 का फोकस है?
(1) जल के नीचे जीवन
(2) जलवायु कार्रवाई
(3) उत्तरदायी उपभोग और उत्पादन
(4) शांति, न्याय और सशक्त संस्थान
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. "ग्रीन जीडीपी" की अवधारणा पारंपरिक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) को किसके लिए लेखांकन द्वारा समायोजित करती है?
(1) कुल कृषि क्षेत्र का उत्पादन
(2) नवीकरणीय ऊर्जा राजस्व प्रवाह
(3) प्राकृतिक संसाधन/पर्यावरणीय हानि।
(4) विदेशी पर्यावरणीय निवेश
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. ग्रीन जीडीपी के सटीक मापन में निम्नलिखित में से कौन सी एक महत्वपूर्ण चुनौती है?
(1) कारखानों के सटीक भौतिक उत्पादन का निर्धारण करना।
(2) गैर-बाजार पर्यावरणीय वस्तुओं और सेवाओं के लिए मौद्रिक मूल्य निर्धारित करना।
(3) केंद्रीय बैंक द्वारा निर्धारित नाममात्र ब्याज दर की गणना करना।
(4) निर्यात और आयात लेनदेन की कुल मात्रा को मापना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. पर्यावरणीय-आर्थिक लेखांकन की प्रणाली (SEEA) एक अंतरराष्ट्रीय सांख्यिकीय मानक है जिसका उपयोग किसके लिए किया जाता है?
(1) आर्थिक-पर्यावरणीय एकीकरण।
(2) जलवायु जोखिम गणना।
(3) संयुक्त राष्ट्र कार्बन कर निर्देश।
(4) प्रसन्नता सूचकांक प्रतिस्थापन।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

64. पर्यावरणीय लेखांकन से संबंधित निम्नलिखित चरों पर विचार कीजिए:
I. पारंपरिक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी)
II. प्राकृतिक संसाधनों की कमी का मौद्रिक मूल्य
III. पर्यावरणीय प्रदूषण की मौद्रिक लागत
निम्नलिखित में से कौन सा ग्रीन जीडीपी के लिए सही गणितीय संबंध दर्शाता है?
(1) ग्रीन जीडीपी = I + II + III
(2) ग्रीन जीडीपी = I - (II + III)
(3) ग्रीन जीडीपी = I + II - III
(4) ग्रीन जीडीपी = I - II + III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (समष्टि आर्थिक संकेतक)
A. नाममात्र जीडीपी
B. वास्तविक जीडीपी
C. ग्रीन जीडीपी
D. शुद्ध घरेलू उत्पाद (एनडीपी)
सूची II: (प्रमुख विशेषताएं)
i. मानव निर्मित पूंजी के मूल्यह्रास का लेखा-जोखा रखता है।
ii. मुद्रास्फीति के लिए समायोजन किए बिना वर्तमान बाजार कीमतों पर मूल्यांकित।
iii. मूल्य स्तरों में परिवर्तन (मुद्रास्फीति) के लिए समायोजित।
iv. जैव विविधता की हानि और प्रदूषण की लागत के लिए समायोजित।
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv

NODIA

(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. "कार्बन पदचिह्न" (carbon footprint) मूलभूत रूप से किसका माप है?
(1) प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन।
(2) कार्बन अवशोषण के लिए भूमि।
(3) ओजोन परत की मोटाई का स्तर।
(4) मौद्रिक कार्बन क्रेडिट लागत।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. "पारिस्थितिक पदचिह्न" (ecological footprint) एक अवधारणा है जो प्रकृति पर मानवीय मांग की तुलना पृथ्वी की संसाधनों को पुनर्जीवित करने की क्षमता से करती है। इसे आमतौर पर निम्नलिखित में से किस इकाई में मापा जाता है?
(1) CO_2 समकक्ष के टन
(2) ग्लोबल हेक्टेयर (gha)
(3) प्रति व्यक्ति मेगावाट
(4) ताजे जल के घन मीटर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. पारिस्थितिक पदचिह्न विश्लेषण में, "जैव-क्षमता" (biocapacity) शब्द का अर्थ है:
(1) अधिकतम टिकाऊ शहरी घनत्व
(2) शेष जीवाश्म ईंधन भंडार
(3) कृषि फसल आनुवंशिक विविधता
(4) पारिस्थितिकी तंत्र की अपशिष्ट/संसाधन क्षमता।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. पारिस्थितिक और कार्बन पदचिह्न के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यदि किसी देश का पारिस्थितिक पदचिह्न उसकी जैव-क्षमता से अधिक है, तो उस देश का पारिस्थितिक घाटा (ecological deficit) होता है।
II. कार्बन पदचिह्न कुल पारिस्थितिक पदचिह्न का एक उप-घटक है।
III. अर्थ ओवरशूट डे (Earth Overshoot Day) उस तिथि को चिह्नित करता है जब एक वर्ष में पारिस्थितिक संसाधनों के लिए मानवता की मांग उस वर्ष में पृथ्वी द्वारा पुनर्जीवित किए जा सकने वाले संसाधनों से अधिक हो जाती है।
IV. जीवाश्म ईंधन के उपयोग में वृद्धि सामान्यतः कार्बन पदचिह्न को कम करती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. जब किसी राष्ट्र का पारिस्थितिक पदचिह्न उसकी जैव-क्षमता से कम होता है, तो उस राष्ट्र को पारिस्थितिक रूप से क्या कहा जाता है?
(1) घाटा (Deficit)
(2) आरक्षित (Reserve)
(3) ओवरशूट (Overshoot)
(4) थकावट (Exhaustion)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

71. जलवायु परिवर्तन और आर्थिक विकास के बीच "ट्रेड-ऑफ" बहस मुख्य रूप से इस तर्क के इर्द-गिर्द केंद्रित है कि:
(1) तीव्र वैश्विक आर्थिक संवृद्धि सुनिश्चित करने के लिए विकासशील देशों को जलवायु शमन की अधिकांश लागत वहन करनी चाहिए।
(2) जलवायु परिवर्तन का कोई मापने योग्य आर्थिक प्रभाव नहीं है, जिससे शमन नीतियां पूरी तरह से निरर्थक हो जाती हैं।
(3) आर्थिक विकास स्वाभाविक रूप से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में स्वतः कमी की ओर ले जाता है।
(4) संवृद्धि बनाम शमन बाधाएं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. जलवायु अर्थशास्त्र के संदर्भ में, "शमन" (mitigation) रणनीतियाँ उन कार्यों को संदर्भित करती हैं जो किसके लिए डिज़ाइन किए गए हैं:
(1) ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना या रोकना।
(2) वास्तविक या अपेक्षित भविष्य की जलवायु और उसके प्रभावों के अनुसार समायोजन करना।
(3) प्राकृतिक आपदाओं के कारण हुए नुकसान के लिए व्यक्तियों को वित्तीय रूप से क्षतिपूर्ति करना।
(4) संवेदनशील आबादी को तटीय क्षेत्रों से दूर स्थानांतरित करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. "जलवायु वित्त" (climate finance) का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित में से क्या है?
(1) वैकल्पिक ग्रह अन्वेषण वित्तपोषण
(2) तेल और कोयला उद्योग सहायता
(3) विकासशील देशों के लिए जलवायु कार्रवाई सहायता।
(4) सैन्य बुनियादी ढांचे का विस्तार
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. जलवायु परिवर्तन अर्थव्यवस्था को किन तरीकों से प्रभावित कर सकता है, इस पर विचार कीजिए:
I. बदलते मौसम के पैटर्न के कारण कृषि पैदावार में कमी।
II. चरम मौसम की घटनाओं की रिकवरी से संबंधित बढ़ती लागत।
III. अत्यधिक गर्मी की लहरों के कारण श्रम उत्पादकता की हानि।
IV. वैश्विक स्तर पर समुद्र के स्तर में एकसमान वृद्धि के परिणामस्वरूप सकारात्मक आर्थिक प्रभाव।

Downloaded from www.pdf.tube

V. तटीय बुनियादी ढांचे का विनाश।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

75. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (जलवायु अर्थशास्त्र शब्द)

A. अनुकूलन (Adaptation)
B. शमन (Mitigation)
C. कार्बन मूल्य निर्धारण (Carbon Pricing)
D. न्यायसंगत संक्रमण (Just Transition)

सूची II: (परिभाषाएं)

i. कटौती को प्रोत्साहित करने के लिए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के साथ एक वित्तीय लागत जोड़ना।
ii. देखे गए जलवायु प्रभावों के उत्तर में पारिस्थितिक, सामाजिक या आर्थिक प्रणालियों को समायोजित करना।
iii. यह सुनिश्चित करना कि हरित अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव निष्पक्ष हो और कोई भी श्रमिक या समुदाय पीछे न छूटे।
iv. ग्रीनहाउस गैसों के स्रोतों को कम करने या उनके सिंक (sinks) को बढ़ाने के लिए हस्तक्षेप।

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. पेरिस समझौते (2015) का मुख्य उद्देश्य इस शताब्दी में वैश्विक तापमान वृद्धि को किससे काफी नीचे रखकर जलवायु परिवर्तन के खतरे के प्रति वैश्विक प्रतिक्रिया को सुदृढ़ करना है?

(1) 1 डिग्री सेल्सियस से कम वृद्धि
(2) 2 डिग्री सेल्सियस से काफी नीचे।
(3) 3 डिग्री सेल्सियस से कम वृद्धि
(4) 4 डिग्री सेल्सियस से कम वृद्धि
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. अंतरराष्ट्रीय जलवायु समझौतों के संदर्भ में, CBDR-RC सिद्धांत का अर्थ क्या है?

(1) व्यापक बोझ वितरण और संसाधन रिकवरी क्षमता
(2) जलवायु आधारभूत निर्धारण और क्षेत्रीय संरक्षण
(3) सामान्य लेकिन विभेदित जिम्मेदारियां और संबंधित क्षमताएं
(4) सामूहिक जैव-क्षमता रिक्तीकरण और बहाली प्रतिबद्धताएं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. पेरिस समझौता ढांचे के तहत अद्यतन भारत के 'राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान' (NDCs) का एक प्रमुख घटक निम्नलिखित में से कौन सा है?

(1) 2025 तक कोयला पूरी तरह से बंद करना
(2) औद्योगिक विनिर्माण बंद करना
(3) सार्वभौमिक इलेक्ट्रिक वाहन जनादेश
(4) 2030 तक 50% गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, अभिकथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें।

अभिकथन (A): पेरिस समझौता क्योटो प्रोटोकॉल से एक बदलाव का प्रतीक है क्योंकि इसमें केवल विकसित देशों के बजाय सभी देशों को उत्सर्जन कटौती लक्ष्य प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है।

कारण (R): पेरिस समझौते के तहत, लक्ष्य ऊपर से थोपे जाने के बजाय 'राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान' (NDCs) के माध्यम से नीचे से ऊपर (bottom-up) की ओर निर्धारित किए जाते हैं।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. निम्नलिखित प्रमुख वैश्विक पर्यावरणीय समझौतों को उनके अपनाने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. पेरिस समझौता
II. क्योटो प्रोटोकॉल
III. रियो में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) का अपनाना

निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रम दर्शाता है?

(1) II, III, I
(2) III, I, II
(3) III, II, I
(4) I, II, III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

81. एक चक्रीय अर्थव्यवस्था (circular economy) पारंपरिक रैखिक अर्थव्यवस्था से मौलिक रूप से किस प्रकार भिन्न है?

(1) पारंपरिक 'लो-बनाओ-फेंको' मॉडल।
(2) अपशिष्ट को समाप्त करने वाला डिजाइन और सामग्रियों का निरंतर उपयोग।
(3) सीमित मूल संसाधनों पर निर्भरता।
(4) नियोजित अप्रचलन को अधिकतम करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

82. सतत उत्पादन के संदर्भ में, "पालने से कब्र तक" से "पालने से पालने तक" में संक्रमण क्या दर्शाता है?

(1) नए जीवन चक्रों के लिए पुनर्चक्रण (Recycling)।

NODIA

(2) सुरक्षित लैंडफिल में निपटान।
(3) गैर-सिंथेटिक जैविक वस्तुओं का उपयोग।
(4) हस्तचालित उत्पादन पर निर्भरता।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

83. निम्नलिखित में से कौन चक्रीय अर्थव्यवस्था की अंतर्निहित विशेषता नहीं है?
(1) उच्च संसाधन दक्षता
(2) अपशिष्ट न्यूनीकरण का लक्ष्य
(3) कच्चे माल का शोषण।
(4) सामग्री मूल्य प्रतिधारण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

84. चक्रीय अर्थव्यवस्था को अपनाने के लाभों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मूल सामग्री निष्कर्षण की आवश्यकता को कम करके ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करता है।
II. यह निर्माताओं के लिए कच्चे माल की कीमतों की अस्थिरता को बढ़ाता है।
III. यह नवाचार को बढ़ावा देता है और पुनर्चक्रण तथा पुनर्विनिर्माण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर सृजित करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

85. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (चक्रीय अर्थव्यवस्था के सिद्धांत)
A. कम करना (Reduce)
B. पुनः उपयोग (Reuse)
C. पुनर्चक्रण (Recycle)
D. पुनः प्राप्ति (Recover)
सूची II: (विवरण)
i. संभावित रूप से उपयोगी सामग्रियों की बर्बादी को रोकने के लिए अपशिष्ट सामग्रियों को नए उत्पादों में संसाधित करना।
ii. उत्पादन और उपभोग चरणों में कम सामग्री या ऊर्जा का उपयोग करना।
iii. उन अपशिष्ट सामग्रियों से ऊर्जा प्राप्त करना जिनका अन्यथा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
iv. किसी उत्पाद के भौतिक स्वरूप को बदले बिना उसी या किसी भिन्न उद्देश्य के लिए फिर से उपयोग करना।
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

86. "हिंदू विकास दर" शब्द किसे संदर्भित करता है?
(1) सुधार के बाद का तीव्र विस्तार
(2) निम्न स्थिर संवृद्धि (1950-1980 के दशक)।
(3) हरित क्रांति लक्षित दरें
(4) प्राचीन धार्मिक बंदोबस्ती वृद्धि
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

87. भारत में 1991 के आर्थिक सुधारों ने किसके द्वारा राष्ट्र के आर्थिक प्रक्षेपवक्र को मौलिक रूप से बदल दिया?
(1) निजी क्षेत्र के बैंकों का राष्ट्रीयकरण करना
(2) कठोर आयात प्रतिस्थापन नीतियां
(3) घरेलू सेवाओं को समाप्त करना
(4) उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (एलपीजी) मॉडल के माध्यम से वैश्विक एकीकरण।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

88. कई पूर्वी एशियाई देशों की तुलना में भारत के 1991 के बाद के आर्थिक विकास पथ की एक अनूठी विशेषता यह है कि भारत का विकास मुख्य रूप से किसके नेतृत्व में था?
(1) सेवा क्षेत्र, विशेष रूप से आईटी (IT) और आईटीईएस (ITES)
(2) पारंपरिक कृषि क्षेत्र
(3) कम-कौशल वाले श्रम-गहन विनिर्माण
(4) कच्चे तेल का निष्कर्षण और निर्यात
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

89. भारत के आर्थिक विकास पथ के निम्नलिखित चरणों पर विचार कीजिए:
I. स्वतंत्रता के बाद का युग जो राज्य के नेतृत्व वाले औद्योगिकीकरण और केंद्रीय योजना द्वारा चिह्नित था।
II. 1980 का दशक आंशिक नियंत्रणमुक्ति और ऋण-आधारित संवृद्धि द्वारा चिह्नित था।
III. 1991 के सुधार संरचनात्मक समायोजन और बाजार उदारीकरण की ओर ले गए।
IV. 2000 के बाद का समय उच्च विकास दर लेकिन रोजगारहीन संवृद्धि (jobless growth) की महत्वपूर्ण चुनौतियों द्वारा चिह्नित था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

90. हाल के वर्षों में भारत के सकल मूल्यवर्धन (GVA) में उनके प्रतिशत योगदान के आधार पर, तीन मुख्य आर्थिक क्षेत्रों के सही अवरोही क्रम का चयन कीजिए:
(1) कृषि > उद्योग > सेवाएं
(2) सेवाएं > उद्योग > कृषि
(3) उद्योग > सेवाएं > कृषि
(4) सेवाएं > कृषि > उद्योग

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

91. नीति आयोग के 'एसडीजी इंडिया इंडेक्स' में, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को उनके स्कोर के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। 65 से 99 के स्कोर वाले राज्य को किस रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(1) आकांक्षी (Aspirant)
(2) परफॉर्मर (Performer)
(3) अचीवर (Achiever)
(4) फ्रंट रनर (Front Runner)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

92. नीति आयोग द्वारा विकसित 'एसडीजी इंडिया इंडेक्स' का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) वार्षिक केंद्रीय बजट आवंटन
(2) राज्य/केंद्र शासित प्रदेश की एसडीजी प्रगति को मापना।
(3) पारंपरिक जीडीपी मापदंडों का स्थान लेना
(4) निजी कार्बन पदचिह्न की रैंकिंग करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

93. नीति आयोग के 'एसडीजी इंडिया इंडेक्स' के संदर्भ में, हाल के कई लगातार संस्करणों में कौन सा राज्य सूचकांक में शीर्ष पर रहा है?
(1) बिहार
(2) राजस्थान
(3) केरल
(4) उत्तर प्रदेश
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

94. 'एसडीजी इंडिया इंडेक्स' की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. इसे नीति आयोग द्वारा संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से विकसित किया गया है।
II. यह प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश के लिए सभी 17 एसडीजी पर लक्ष्य-वार स्कोर की गणना करता है।
III. 100 के स्कोर का तात्पर्य है कि राज्य/केंद्र शासित प्रदेश ने 2030 के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है।
IV. यह सतत विकास प्राप्त करने के लिए राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धी संघवाद को बढ़ावा देता है।
V. यह सामाजिक और आर्थिक मापदंडों की उपेक्षा करते हुए विशेष रूप से पर्यावरणीय लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

95. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (नीति आयोग एसडीजी इंडेक्स वर्गीकरण)
A. आकांक्षी (Aspirant)
B. परफॉर्मर (Performer)
C. फ्रंट रनर (Front Runner)
D. अचीवर (Achiever)
सूची II: (स्कोर रेंज)
i. स्कोर: 100
ii. स्कोर: 65–99
iii. स्कोर: 50–64
iv. स्कोर: 0–49
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

96. पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) को व्यवस्थित रूप से किस रूप में परिभाषित किया गया है?
(1) पूर्वव्यापी क्षति अध्ययन।
(2) निर्णय से पूर्व प्रभाव मूल्यांकन।
(3) प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों के लिए कराधान।
(4) कुल पारिस्थितिक पदचिह्न की गणना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

97. भारत में पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) प्रक्रिया के दौरान, "जन सुनवाई" (Public Hearing) चरण का उद्देश्य मुख्य रूप से क्या है?
(1) स्थानीय परियोजना पूंजी एकत्र करना।
(2) स्थानीय हितधारकों की चिंताओं को दर्ज करना।
(3) शून्य पर्यावरणीय प्रभाव सिद्ध करना।
(4) वैज्ञानिक मूल्यांकन की उपेक्षा करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

98. EIA प्रक्रिया में, वह चरण जो मूल्यांकन अध्ययन में संबोधित किए जाने वाले विस्तार और विशिष्ट मुद्दों को निर्धारित करता है, तथा 'संदर्भ की शर्तें' (ToR) निर्धारित करता है, उसे किस रूप में जाना जाता है?
(1) स्कोपिंग (Scoping)
(2) स्क्रीनिंग (Screening)
(3) शमन (Mitigation)
(4) मूल्यांकन (Appraisal)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

99. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, अभिकथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) को प्राय: सतत विकास प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में देखा जाता है।
कारण (R): EIA किसी परियोजना के नियोजन और डिज़ाइन चरणों में पर्यावरणीय विचारों को एकीकृत करता है, जिससे गंभीर पारिस्थितिक क्षति और बाद के महंगे उपचारात्मक

उपायों को रोका जा सकता है।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

100. EIA के संदर्भ में, "परियोजना-पश्चात निगरानी" (Post-project monitoring) क्या सुनिश्चित करती है?

(1) परियोजना वित्त अभिलेखों का अंकेक्षण करना।
(2) विस्तार के लिए भूमि अधिग्रहित करना।
(3) निरंतर सहायता प्राप्त करना।
(4) शमन उपायों का प्रभावी कार्यान्वयन।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) संवृद्धि मात्रात्मक (सकल घरेलू उत्पाद) है, जबकि विकास गुणात्मक (जीवन की गुणवत्ता और संस्थान) है।
आर्थिक संवृद्धि एक संकुचित अवधारणा है जो केवल अर्थव्यवस्था में उत्पादन और आय की मात्रात्मक वृद्धि, जैसे सकल घरेलू उत्पाद, से संबंधित होती है। इसके विपरीत, आर्थिक विकास एक अत्यंत व्यापक प्रक्रिया है जिसमें मात्रात्मक संवृद्धि के साथ-साथ जीवन की गुणवत्ता, साक्षरता, स्वास्थ्य सेवाओं और संस्थागत ढांचे में होने वाले गुणात्मक सुधार शामिल होते हैं। संवृद्धि विकास के लिए आवश्यक है, परंतु यह स्वयं में पूर्ण मानवीय विकास को सुनिश्चित नहीं करती, जिसके लिए न्यायसंगत वितरण अनिवार्य है।

2. (1) शुद्ध नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) विस्तार
आर्थिक विकास का आकलन करने के लिए केवल आय का स्तर पर्याप्त नहीं होता, क्योंकि यह सामाजिक कल्याण की उपेक्षा करता है। शिशु मृत्यु दर, वयस्क साक्षरता दर और जन्म के समय जीवन प्रत्याशा जैसे संकेतक स्वास्थ्य और शिक्षा के वास्तविक स्तर को दर्शाते हैं, जो विकास के अभिन्न अंग हैं। नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद का विस्तार केवल मौद्रिक मूल्य में वृद्धि को मापता है, जो विकास के वास्तविक सामाजिक, मानवीय और गुणात्मक पहलुओं को स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं करता।

3. (3) निर्धनता या असमानता को कम किए बिना वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।
विकास रहित संवृद्धि उस स्थिति को संदर्भित करती है जिसमें किसी देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय में तो निरंतर वृद्धि होती है, लेकिन समाज के निचले स्तर तक इसका लाभ नहीं पहुँचता। इसमें निर्धनता और आर्थिक असमानता में कोई सुधार नहीं होता, जिससे संवृद्धि का कोई व्यापक सकारात्मक सामाजिक प्रभाव नहीं पड़ता। यह दर्शाता है कि धन का संचय कुछ ही हाथों में केंद्रित है और बुनियादी जीवन स्तर में सुधार का पूर्ण अभाव है, जो समावेशी प्रगति हेतु बाधक है।

4. (2) केवल I और III
आर्थिक विकास एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें आर्थिक संवृद्धि के साथ-साथ सामाजिक, संस्थागत और संरचनात्मक परिवर्तन शामिल होते हैं। यह केवल उत्पादन बढ़ाने पर ही ध्यान केंद्रित नहीं करता, बल्कि बढ़ी हुई आय के न्यायसंगत वितरण और समाज के समग्र कल्याण पर भी बल देता है। यह संवृद्धि की तुलना में अधिक व्यापक है, क्योंकि इसमें मानव विकास, जीवन की गुणवत्ता और क्षमताओं के विस्तार जैसे गुणात्मक पहलुओं को समाहित किया जाता है। यह राष्ट्र की प्रगति का वास्तविक प्रतिबिंब है।

5. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
आर्थिक संवृद्धि का मापन मुख्य रूप से वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में होने वाली वार्षिक प्रतिशत वृद्धि के आधार पर किया जाता है। आर्थिक विकास एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक संरचनाओं और संस्थानों में व्यापक सुधार शामिल होते हैं। मानव विकास का मुख्य केंद्र बिंदु मानव जीवन की समृद्धि और मानवीय क्षमताओं का विस्तार करना है। सतत विकास भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान जरूरतों को पूरा करने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।

6. (2) किसी दिए गए वर्ष के दौरान किसी राष्ट्र की घरेलू सीमा के भीतर उत्पादित अंतिम वस्तुएं और सेवाएं।
सकल घरेलू उत्पाद एक निश्चित समय अवधि, सामान्यतः एक वर्ष, के दौरान किसी देश की घरेलू भौगोलिक सीमा के भीतर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल बाजार मूल्य होता है। इसमें केवल वे उत्पाद शामिल किए जाते हैं जो अंतिम उपभोग के लिए पूरी तरह तैयार हैं, ताकि मूल्य की दोहरी गणना से बचा जा सके। यह राष्ट्र की कुल आर्थिक गतिविधियों और उसकी उत्पादन क्षमता का एक महत्वपूर्ण मात्रात्मक मापक है, जो देश की आर्थिक शक्ति को दर्शाता है।

7. (4) मूल्य स्तर में परिवर्तन (मुद्रास्फीति)
नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद की गणना वर्तमान बाजार मूल्यों पर की जाती है, जो मूल्य वृद्धि या मुद्रास्फीति के कारण आर्थिक वास्तविकता को स्पष्ट नहीं करती। इसके विपरीत, वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की गणना एक निश्चित आधार वर्ष की स्थिर कीमतों पर की जाती है। यह प्रक्रिया मूल्य स्तर में होने वाले परिवर्तनों के प्रभाव को पूरी तरह हटा देती है, जिससे अर्थव्यवस्था के वास्तविक उत्पादन और संवृद्धि की सटीक तुलना करना संभव हो जाता है। यह आर्थिक विकास का अधिक विश्वसनीय और यथार्थवादी सूचक है।

8. (1) मध्यवर्ती उपभोग मूल्य
मूल्यवर्धित विधि का उपयोग करते समय राष्ट्रीय आय की सटीक गणना सुनिश्चित करने के लिए दोहरी गणना की समस्या को रोकना अनिवार्य होता है। इसके लिए उत्पादन के कुल बाजार मूल्य में से मध्यवर्ती उपभोग का मूल्य, जैसे कच्चे माल और ईंधन की लागत, को घटाया जाता है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि उत्पादन के प्रत्येक चरण में केवल जोड़े गए शुद्ध मूल्य को ही शामिल किया जाए, जिससे अंतिम परिणाम केवल वास्तविक उत्पादन को दर्शाता है। यह विधि अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के योगदान को स्पष्ट करती है।

NODIA

9. (1) केवल I, II और III
सकल घरेलू उत्पाद की गणना के लिए तीन मुख्य विधियों का उपयोग किया जाता है: आय विधि, व्यय विधि और मूल्यवर्धित विधि। आय विधि सभी उत्पादन कारकों द्वारा अर्जित आय को जोड़ती है, जबकि व्यय विधि अर्थव्यवस्था में होने वाले कुल उपभोग और निवेश खर्चों का योग करती है। मूल्यवर्धित विधि प्रत्येक क्षेत्र द्वारा उत्पादन में किए गए योगदान को मापती है। सैद्धांतिक रूप से, ये तीनों विधियां उचित गणना के बाद एक ही समान परिणाम प्रदान करती हैं। इनका चयन उपलब्ध आंकड़ों और गणना की सुविधानुसार किया जाता है।

10. (1) उत्पादक उद्यमों की पहचान → प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में वर्गीकरण → सकल मूल्यवर्धन का अनुमान → राष्ट्रीय आय प्राप्त करने के लिए विदेशों से शुद्ध कारक आय को जोड़ना।
मूल्यवर्धित विधि के माध्यम से राष्ट्रीय आय की गणना करने के लिए सर्वप्रथम देश के भीतर सभी उत्पादक उद्यमों की पहचान की जाती है। इसके पश्चात उन्हें प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जाता है ताकि प्रत्येक क्षेत्र द्वारा किए गए सकल मूल्यवर्धन का सटीक अनुमान लगाया जा सके। अंत में, शुद्ध घरेलू उत्पाद में विदेशों से प्राप्त शुद्ध कारक आय को जोड़कर राष्ट्र की कुल राष्ट्रीय आय का आधिकारिक मूल्य प्राप्त होता है। यह प्रक्रिया देश की आर्थिक संरचना को समझने में सहायक होती है।

11. (4) विदेशों से शुद्ध कारक आय
सकल राष्ट्रीय उत्पाद और सकल घरेलू उत्पाद के बीच का मुख्य अंतर भौगोलिक सीमा और स्वामित्व के आधार पर होता है। सकल घरेलू उत्पाद किसी देश की सीमाओं के भीतर होने वाले उत्पादन को मापता है। इसके विपरीत, सकल राष्ट्रीय उत्पाद में विदेशों से प्राप्त शुद्ध कारक आय को शामिल किया जाता है। इसका अर्थ है कि इसमें देश के नागरिकों द्वारा विदेशों में अर्जित आय को जोड़ा जाता है और विदेशी निवासियों द्वारा देश में अर्जित आय को घटाया जाता है। यह राष्ट्र की कुल आर्थिक आय को दर्शाता है।

12. (2) मूल्यह्रास
शुद्ध घरेलू उत्पाद प्राप्त करने के लिए सकल घरेलू उत्पाद में से पूंजीगत वस्तुओं के मूल्यह्रास को घटाया जाता है। मूल्यह्रास उस राशि को दर्शाता है जो उत्पादन प्रक्रिया के दौरान उपयोग की गई मशीनों, उपकरणों और अन्य अचल संपत्तियों के घिसावट या उनके पुराने होने के कारण मूल्य में होने वाली कमी के लिए रखी जाती है। यह गणना अर्थव्यवस्था की वास्तविक उत्पादन क्षमता और शुद्ध संपत्ति वृद्धि को समझने में सहायता प्रदान करती है। यह निरंतर उत्पादन बनाए रखने के लिए आवश्यक निवेश का अनुमान लगाने में भी सहायक है।

13. (3) कारक लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद
अर्थशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार, राष्ट्रीय आय स्पष्ट रूप से कारक लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद के बराबर होती है। इसमें उत्पादन के सभी कारकों, जैसे भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यमिता, को दिए जाने वाले पारिश्रमिक का योग शामिल होता है। इसकी गणना बाजार मूल्य पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में से शुद्ध अप्रत्यक्ष करों को घटाकर और राजसहायता को जोड़कर की जाती है। यह राष्ट्र के निवासियों द्वारा अर्जित कुल आय का सबसे सटीक और आधिकारिक मापक माना जाता है, जो वास्तविक आर्थिक स्थिति को दर्शाता है।

14. (2) केवल II, III, IV और V
राष्ट्रीय आय लेखांकन में, यदि विदेशों से प्राप्त शुद्ध कारक आय ऋणात्मक है, तो सकल राष्ट्रीय उत्पाद सकल घरेलू उत्पाद से कम होता है। बाजार मूल्य पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद मूल्यह्रास के बाद की कुल उत्पादन स्थिति को दर्शाता है। व्यक्तिगत आय में परिवारों को प्राप्त होने वाले हस्तांतरण भुगतान शामिल होते हैं, जबकि व्यक्तिगत प्रयोज्य आय वह शेष राशि है जो प्रत्यक्ष करों के भुगतान के बाद उपभोग या बचत के लिए उपलब्ध होती है। ये सभी संकेतक आर्थिक कल्याण के विभिन्न स्तरों का विश्लेषण करते हैं।

15. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
बाजार मूल्य पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद की गणना सकल घरेलू उत्पाद में विदेशों से प्राप्त शुद्ध कारक आय जोड़कर की जाती है। शुद्ध घरेलू उत्पाद प्राप्त करने के लिए सकल घरेलू उत्पाद में से मूल्यह्रास घटाया जाता है। कारक लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद निकालने के लिए बाजार मूल्य पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में से अप्रत्यक्ष कर घटाकर राजसहायता जोड़ी जाती है। इसी प्रकार, कारक लागत पर सकल घरेलू उत्पाद, बाजार मूल्य से शुद्ध अप्रत्यक्ष कर घटाकर प्राप्त होता है। ये सूत्र राष्ट्रीय लेखांकन के आधार हैं।

16. (2) कुल जनसंख्या
किसी देश की प्रति व्यक्ति आय उस राष्ट्र के औसत आर्थिक स्तर को दर्शाती है। इसकी गणना करने के लिए देश की कुल राष्ट्रीय आय को उसकी कुल जनसंख्या से विभाजित किया जाता है। यह सूचकांक विभिन्न देशों के बीच आर्थिक तुलना करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है। हालांकि, यह केवल औसत आय को दर्शाता है और यह नहीं बताता कि धन का वितरण समाज के विभिन्न वर्गों के बीच किस प्रकार किया गया है। यह जीवन स्तर के आकलन का प्राथमिक मापदंड है।

17. (2) आय वितरण की उपेक्षा
प्रति व्यक्ति आय आर्थिक विकास का एक सामान्य मापदंड है, परंतु इसकी एक गंभीर सीमा यह है कि यह समाज के भीतर आय के वितरण की पूरी तरह उपेक्षा करती है। एक उच्च प्रति व्यक्ति आय वाला देश भी अत्यधिक आर्थिक असमानता का शिकार हो सकता है, जहाँ अधिकांश धन कुछ ही लोगों के पास केंद्रित होता है। यह सूचकांक निर्धन वर्ग की वास्तविक स्थिति या बुनियादी सुविधाओं तक उनकी पहुँच के बारे में कोई जानकारी प्रदान नहीं करता। अतः यह विकास का अपूर्ण मापक माना जाता है।

Click Here to Buy book on Amazon

18. (1) अवैतनिक घरेलू कार्य और विश्राम का समय।
प्रति व्यक्ति आय की गणना केवल बाजार में होने वाले मौद्रिक लेन-देन पर आधारित होती है, इसलिए यह मानव कल्याण के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को नहीं दर्शाती। इसमें अवैतनिक घरेलू कार्यों, जैसे गृहणियों द्वारा दी जाने वाली सेवाएं, और जीवन की गुणवत्ता के लिए आवश्यक विश्राम के समय को शामिल नहीं किया जाता। यह उन गैर-मौद्रिक गतिविधियों की उपेक्षा करती है जो मानव प्रसन्नता और समाज के सुचारु संचालन के लिए अत्यंत आवश्यक और मूल्यवान मानी जाती हैं। यह आर्थिक गणनाओं की एक प्रमुख सीमा है।

19. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उच्च प्रति व्यक्ति आय किसी राष्ट्र की समृद्धि का संकेत तो हो सकती है, परंतु यह अनिवार्य रूप से उच्च मानव विकास को सुनिश्चित नहीं करती। इसका कारण यह है कि प्रति व्यक्ति आय एक औसत मूल्य है जो आय की असमानता, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, शिक्षा के निम्न स्तर और पर्यावरणीय क्षति जैसे गंभीर मुद्दों को छिपा सकता है। मानव विकास के लिए केवल मौद्रिक धन पर्याप्त नहीं है, बल्कि संसाधनों तक समान पहुँच और जीवन की गुणवत्ता अनिवार्य है। यह व्यापक विकास की आवश्यकता को दर्शाता है।

20. (1) II, III, IV, I
वास्तविक प्रति व्यक्ति आय की गणना करने के लिए सबसे पहले वर्तमान वर्ष के दौरान उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल बाजार मूल्य संकलित किया जाता है। इसके पश्चात, तुलना के लिए एक उपयुक्त आधार वर्ष का चयन किया जाता है और मुद्रास्फीति के प्रभाव को दूर करने के लिए सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीतिक कारक लागू किया जाता है। अंत में, प्राप्त वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद को देश की कुल जनसंख्या से विभाजित करके सटीक परिणाम प्राप्त किया जाता है। यह प्रक्रिया आर्थिक संवृद्धि की सही माप सुनिश्चित करती है।

21. (3) बेहतर उत्पादकता और क्षमता।
भौतिक पूंजी संचयन, जिसमें मशीनों, कारखानों और बुनियादी ढांचे में निवेश शामिल है, आर्थिक संवृद्धि का एक प्रमुख चालक है। यह उत्पादन प्रक्रिया में आधुनिक तकनीक के समावेश के माध्यम से श्रम की उत्पादकता और कुल उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि करता है। जब श्रमिकों के पास बेहतर उपकरण और उच्च तकनीक उपलब्ध होती है, तो वे समान समय में अधिक उत्पादन कर सकते हैं, जिससे अंततः राष्ट्र की कुल आय और संवृद्धि की दर में सुधार होता है। यह दीर्घकालिक समृद्धि का आधार है।

22. (2) तकनीकी नवाचार
अंतर्जात संवृद्धि सिद्धांत के अनुसार, दीर्घकालिक और सतत आर्थिक संवृद्धि केवल बाहरी कारकों पर निर्भर नहीं होती, बल्कि यह अर्थव्यवस्था के भीतर होने वाले तकनीकी नवाचार और मानव पूंजी विकास का परिणाम है। यह सिद्धांत तर्क देता है कि ज्ञान, अनुसंधान और विकास में निवेश करने से उत्पादकता में निरंतर वृद्धि होती है, जो घटते प्रतिफल की समस्या को दूर करती है। तकनीकी प्रगति ही वह इंजन है जो आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं को भविष्य में निरंतर गतिशील बनाए रखती है। यह शिक्षा और नवाचार के महत्व को रेखांकित करता है।

23. (4) अर्थव्यवस्था उपलब्ध पूंजी के साथ अधिक कुशलता से उत्पादन कर रही है।
निम्न वृद्धिशील पूंजी-उत्पाद अनुपात यह दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था अपनी उपलब्ध पूंजी का उपयोग अत्यंत कुशलतापूर्वक कर रही है। इसका अर्थ है कि उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए बहुत कम मात्रा में नई पूंजी के निवेश की आवश्यकता होती है। यह स्थिति उच्च तकनीकी प्रगति और बेहतर संसाधन प्रबंधन का स्पष्ट सूचक है। इसके विपरीत, उच्च अनुपात पूंजी की अक्षमता और निम्न उत्पादकता को दर्शाता है, जो आर्थिक विकास के मार्ग में एक बड़ी बाधा सिद्ध होता है।

24. (2) केवल I और III
आर्थिक संवृद्धि में श्रम की गुणवत्ता अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा और स्वास्थ्य के माध्यम से मानव पूंजी का निर्माण करने से श्रमिकों की दक्षता और उत्पादकता में सुधार होता है। हालांकि, केवल कार्यशील आयु वाली जनसंख्या का बढ़ना ही संवृद्धि की गारंटी नहीं देता। इस जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने के लिए सही आर्थिक नीतियों, कौशल विकास और पर्याप्त रोजगार सृजन की आवश्यकता होती है, अन्यथा बढ़ती जनसंख्या अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ी चुनौती बन सकती है। यह मानव संसाधन के प्रभावी उपयोग पर बल देता है।

25. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
मानव पूंजी विकास के लिए तकनीकी प्रशिक्षण और सार्वजनिक स्वास्थ्य में निरंतर निवेश आवश्यक है। भौतिक पूंजी का निर्माण राजमार्गों और दूरसंचार नेटवर्क जैसे बुनियादी ढांचे के माध्यम से किया जाता है। तकनीक के क्षेत्र में नई विनिर्माण प्रक्रियाओं और आविष्कारों के माध्यम से उत्पादकता बढ़ाई जाती है। संस्थागत कारक, जैसे संपत्ति के अधिकार और विधि का शासन, एक स्थिर आर्थिक वातावरण प्रदान करते हैं जो निवेश और विकास को प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक है। ये सभी तत्व मिलकर संतुलित संवृद्धि का आधार बनते हैं।

26. (1) निवेश में उछाल और स्वतः संवृद्धि।
डब्लू. डब्लू. रोस्टोव के आर्थिक संवृद्धि के चरणों वाले मॉडल में, "टेक-ऑफ" वह महत्वपूर्ण चरण है जहाँ अर्थव्यवस्था अपनी पारंपरिक जड़ता को तोड़ती है। इस दौरान निवेश की दर में भारी उछाल आता है और आधुनिक उद्योगों का तेजी से विस्तार होता है। यह चरण स्वतः संवृद्धि की शुरुआत को चिह्नित करता है, जिससे अर्थव्यवस्था एक निरंतर विकास पथ पर अग्रसर हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप समाज में व्यापक संरचनात्मक और तकनीकी परिवर्तन आने लगते हैं, जो आर्थिक आधुनिकता का प्रतीक हैं।

27. (4) परिपक्वता की ओर अग्रसर (Drive to maturity)
"परिपक्वता की ओर अग्रसर" वह चरण है जिसमें आधुनिक तकनीक पूरी अर्थव्यवस्था में गहराई से व्याप्त हो जाती है।

Downloaded from www.pdf.tube

इस अवधि के दौरान, देश केवल पुराने उद्योगों पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि कई नए और जटिल उद्योग विकसित होते हैं जो पुराने क्षेत्रों का स्थान ले लेते हैं। अर्थव्यवस्था की अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भागीदारी बढ़ती है और यह वह सब कुछ उत्पादित करने की क्षमता हासिल कर लेती है जिसकी उसे आवश्यकता होती है, जिससे आत्मनिर्भरता बढ़ती है। यह चरण औद्योगिक विविधीकरण की पराकाष्ठा को दर्शाता है।

28. (2) नए उद्यमी और बुनियादी ढांचा
"टेक-ऑफ के लिए पूर्व-शर्तें" चरण में समाज एक पारंपरिक कृषि आधारित अर्थव्यवस्था से आधुनिक अर्थव्यवस्था में बदलने की तैयारी करता है। इसकी मुख्य विशेषता नए उद्यमियों का उदय और परिवहन तथा संचार जैसे बुनियादी ढांचे में बढ़ता निवेश है। इस चरण में वैज्ञानिक ज्ञान का अनुप्रयोग बढ़ता है और आर्थिक गतिविधियों का विस्तार होने लगता है। यह स्थिति भविष्य में होने वाली तीव्र औद्योगिक क्रांति और स्वतः संवृद्धि के लिए एक मजबूत आधार तैयार करने का कार्य करती है। यह सामाजिक-आर्थिक संक्रमण का दौर है।

29. (1) केवल I, II और III
पारंपरिक समाज में सीमित तकनीक के कारण उत्पादन की एक निश्चित सीमा होती है। टेक-ऑफ चरण में, शुद्ध निवेश राष्ट्रीय आय के 5% से बढ़कर 10% से अधिक हो जाता है, जिससे तीव्र विकास होता है। परिपक्वता की ओर अग्रसर होने पर अर्थव्यवस्था विविध उत्पादन क्षमता हासिल कर लेती है। हालांकि, उच्च जन उपभोग का चरण मुख्य रूप से भारी उद्योगों के बजाय उपभोक्ता वस्तुओं, सेवाओं और सामाजिक कल्याण के व्यापक विस्तार पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है। यह विकास के विभिन्न चरणों की क्रमिक यात्रा को दर्शाता है।

30. (4) उच्च जन उपभोग का युग
उच्च जन उपभोग का युग रोस्टोव के मॉडल का अंतिम चरण है। इस स्तर पर समाज की प्राथमिक चिंता केवल उत्पादन बढ़ाना या पूंजी संचय करना नहीं रह जाती। इसके बजाय, संसाधनों का बड़ा हिस्सा सामाजिक कल्याण, सुरक्षा और लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में आवंटित किया जाता है। इस चरण में टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की मांग बढ़ती है, और सरकारें एक कल्याणकारी राज्य के रूप में नागरिकों को अधिक सुविधाएं प्रदान करती हैं। यह आर्थिक विकास की उच्चतम अवस्था है।

31. (1) मूल्यवान 'होना' (beings) और 'करना' (doings)।
अमर्त्य सेन द्वारा प्रतिपादित विकास के क्षमता दृष्टिकोण में "प्रकार्य" उन विभिन्न स्थितियों और कार्यों को संदर्भित करते हैं जिन्हें एक व्यक्ति अपने जीवन में प्राप्त करना चाहता है। इसमें स्वस्थ रहना, पर्याप्त रूप से पोषित होना, शिक्षित होना और समाज में सम्मानित महसूस करना जैसे मूल्यवान 'होना' और 'करना' शामिल हैं। यह अवधारणा जीवन की गुणवत्ता को केवल मौद्रिक आय से ऊपर उठाकर वास्तविक मानवीय उपलब्धियों और गरिमापूर्ण जीवन के अनुभवों के धरातल पर दृढ़ता से केंद्रित करती है।

32. (2) प्रकार्यों को प्राप्त करने की स्वतंत्रता।
क्षमता दृष्टिकोण में "क्षमताओं" का अर्थ उन वैकल्पिक प्रकार्यों के समुच्चय से है जिन्हें प्राप्त करने की वास्तविक स्वतंत्रता एक व्यक्ति के पास होती है। यह केवल इस बात पर ध्यान नहीं देता कि व्यक्ति क्या उपभोग करता है, बल्कि इस पर भी कि उसके पास जीवन के विभिन्न विकल्पों को चुनने के कितने अवसर उपलब्ध हैं। क्षमताएं व्यक्ति की एजेंसी और उसकी उन लक्ष्यों को प्राप्त करने की शक्ति को दर्शाती हैं जिन्हें वह अपने जीवन में महत्व देता है। यह विकास को स्वतंत्रता के विस्तार के रूप में देखता है।

33. (2) आय से वास्तविक स्वतंत्रताओं की ओर।
क्षमता दृष्टिकोण विकास अर्थशास्त्र के केंद्र बिंदु को पारंपरिक आय-आधारित मापदंडों से हटाकर वास्तविक मानवीय स्वतंत्रताओं के विस्तार की ओर ले जाता है। यह तर्क देता है कि विकास का अंतिम लक्ष्य केवल राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ाना नहीं, बल्कि लोगों के उन विकल्पों और अवसरों को बढ़ाना है जो उनके जीवन को अर्थपूर्ण बनाते हैं। यह दृष्टिकोण आय को केवल एक साधन मानता है और मानवीय क्षमताओं तथा स्वतंत्रताओं के संवर्धन को ही विकास का वास्तविक साध्य और लक्ष्य मानता है।

34. (2) केवल I, II, IV और V
क्षमता दृष्टिकोण आय को केवल एक साधन मानता है और विकास का मूल्यांकन मानवीय स्वतंत्रताओं के विस्तार द्वारा करता है। यह शिक्षा और स्वास्थ्य की भूमिका पर विशेष बल देता है क्योंकि ये मानवीय क्षमताओं को बढ़ाने के प्राथमिक आधार हैं। इस दृष्टिकोण ने मानव विकास सूचकांक के लिए आवश्यक सैद्धांतिक आधार प्रदान किया। यह व्यक्तिगत एजेंसी को प्रोत्साहित करता है, जिससे लोग सक्रिय रूप से अपने जीवन और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के योग्य बन सकें। यह विकास की एक मानवीय और समावेशी व्याख्या है।

35. (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
प्रकार्य व्यक्ति द्वारा प्राप्त की गई 'होने' और 'करने' की वास्तविक स्थितियाँ हैं। क्षमता समुच्चय उन सभी विकल्पों का समूह है जो एक व्यक्ति प्राप्त कर सकता है। एजेंसी किसी व्यक्ति की उन लक्ष्यों को पाने की सक्रिय क्षमता है जिन्हें वह मूल्यवान समझता है। अस्वतंत्रता का अर्थ है बुनियादी आवश्यकताओं, जैसे स्वास्थ्य सेवा या राजनीतिक अधिकारों, तक पहुँच का अभाव होना। ये सभी तत्व मिलकर विकास की व्यापक मानवीय और सामाजिक प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं, जो केवल आर्थिक संवृद्धि से बहुत अधिक है।

36. (4) समानता के साथ व्यापक आधार वाली संवृद्धि।
समावेशी विकास का अर्थ एक ऐसी आर्थिक संवृद्धि प्रक्रिया है जो समाज के सभी वर्गों के लिए अवसर सृजित करती है और विकास के लाभों को न्यायसंगत तरीके से साझा करती है। यह केवल उच्च विकास दर प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करता है कि निर्धन, वंचित और हाशिए पर रहने वाले समुदायों की भी इसमें सक्रिय भागीदारी हो। इसका मुख्य

NODIA

उद्देश्य आर्थिक असमानता को कम करना और सभी के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है। यह सामाजिक न्याय का एक अनिवार्य अंग है।

37. (3) वित्तीय समावेशन और सूक्ष्म ऋण तक पहुंच को बढ़ावा देना।
समावेशी विकास प्राप्त करने के लिए वित्तीय समावेशन को एक अत्यंत प्रभावी उपकरण माना जाता है। बैंकिंग सेवाओं और सूक्ष्म ऋण तक पहुँच प्रदान करने से समाज के निर्धन और निम्न आय वाले वर्गों को अपने छोटे व्यवसाय शुरू करने और आय बढ़ाने के अवसर मिलते हैं। यह उन्हें औपचारिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा बनाता है और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ाता है। इस प्रकार, वित्तीय सशक्तिकरण के माध्यम से ही विकास के लाभों का व्यापक और न्यायपूर्ण वितरण संभव हो पाता है, जो सशक्तिकरण का आधार है।

38. (2) निर्धनता और बढ़ती आर्थिक असमानता
समावेशी विकास की अवधारणा सीधे तौर पर निर्धनता के उन्मूलन और बढ़ती आर्थिक असमानता की चुनौतियों का समाधान करने का प्रयास करती है। यह इस विचार पर आधारित है कि संवृद्धि तब तक अधूरी है जब तक कि यह समाज के सबसे निर्धन तबके के जीवन स्तर में सुधार न करे। विकास की प्रक्रिया को समावेशी बनाकर ही धन के असमान वितरण को रोका जा सकता है और एक अधिक संतुलित, न्यायपूर्ण और स्थिर समाज का निर्माण सुनिश्चित किया जा सकता है। यह सतत सामाजिक प्रगति के लिए अपरिहार्य है।

39. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
समावेशी विकास किसी राष्ट्र की दीर्घकालिक राजनीतिक और सामाजिक स्थिरता के लिए अपरिहार्य है। जब आर्थिक विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों को समान रूप से नहीं मिलता, तो उच्च असमानता के कारण असंतोष और सामाजिक अशांति उत्पन्न होती है। ऐसी अशांति निवेश के माहौल को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है और निरंतर आर्थिक विस्तार के मार्ग में बड़ी बाधाएं पैदा करती है। अतः, सामाजिक सद्भाव और सतत प्रगति के लिए न्यायसंगत विकास की नीतियां और उनका क्रियान्वयन अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

40. (3) मुख्य न्यायिक कार्यों का निजीकरण करना
समावेशी विकास का मुख्य ध्यान कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण, बुनियादी स्वास्थ्य सेवा और वंचित समुदायों के सशक्तिकरण पर होता है ताकि सभी नागरिक आर्थिक गतिविधियों में भाग ले सकें। मुख्य न्यायिक कार्यों का निजीकरण करना समावेशी विकास का हिस्सा नहीं है, क्योंकि न्याय प्रदान करना राज्य का एक मौलिक और संवैधानिक उत्तरदायित्व है। निष्पक्ष और सुलभ न्याय प्रणाली सभी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करती है, जो सामाजिक न्याय और समावेशी समाज के निर्माण का वास्तविक आधार है।

41. (3) पर्यावरणीय क्षरण को बढ़ाती हैं और फिर घटाती हैं।
पर्यावरणीय कुज़नेट वक्र परिकल्पना के अनुसार, आर्थिक विकास के प्रारंभिक चरणों में प्रति व्यक्ति आय बढ़ने के साथ औद्योगिकीकरण के कारण पर्यावरणीय क्षरण में वृद्धि होती है। विकास के एक निश्चित स्तर पर पहुँचने के पश्चात, उन्नत तकनीक, बेहतर नियमों और बढ़ती जन-जागरुकता के कारण पर्यावरणीय गुणवत्ता में धीरे-धीरे सुधार होने लगता है। यह वक्र आय और पर्यावरण के मध्य एक उलटे 'यू' आकार के संबंध को प्रदर्शित करता है, जो विकास की दिशा और पर्यावरणीय जिम्मेदारी को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

42. (1) साझा संसाधन समाप्त हो जाते हैं।
"साझा संसाधनों की त्रासदी" एक आर्थिक सिद्धांत है जो ऐसी स्थिति का वर्णन करता है जहाँ व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए साझा संसाधनों का अत्यधिक दोहन करते हैं। चूंकि ये संसाधन सभी के लिए खुले होते हैं और कोई स्पष्ट व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं होता, इसलिए सामूहिक रूप से उनके विनाश या समाप्ति की संभावना बढ़ जाती है। यह स्थिति चरागाहों, मत्स्य पालन क्षेत्रों और स्वच्छ जल जैसे संसाधनों के संदर्भ में देखी जाती है, जहाँ निजी स्वार्थ अंततः अपूरणीय सार्वजनिक नुकसान का प्रमुख कारण बनता है।

43. (4) बाजार की विफलता जिसके कारण सामान्य संपत्ति संसाधनों का गलत आवंटन होता है।
पर्यावरणीय क्षरण का एक प्रमुख आर्थिक कारण बाजार की विफलता है, जहाँ बाजार की कीमतें प्राकृतिक संसाधनों की वास्तविक कमी या उनके उपयोग की सामाजिक लागत को प्रदर्शित नहीं करती हैं। जब संपत्ति के अधिकार स्पष्ट नहीं होते, तो वायु और जल जैसे साझा संसाधनों का निःशुल्क दोहन किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप संसाधनों का गलत आवंटन और अत्यधिक उपभोग होता है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र को अपूरणीय क्षति पहुँचती है। इस दोष को दूर करने के लिए उचित नियामक हस्तक्षेप और नीतियों की आवश्यकता होती है।

44. (2) केवल I और II
पर्यावरणीय क्षरण स्वास्थ्य समस्याओं के माध्यम से श्रम उत्पादकता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है, जिससे राष्ट्र की आर्थिक क्षमता कम हो जाती है। साथ ही, प्राकृतिक पूंजी जैसे वनों और जल संसाधनों की कमी भविष्य की आर्थिक संवृद्धि की संभावनाओं को सीमित कर देती है। हालांकि, यह कहना पूर्णतः गलत है कि पर्यावरणीय नियमों से हमेशा नौकरियों का नुकसान होता है; वास्तव में, हरित प्रौद्योगिकियों और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्रों में निवेश करने से रोजगार के कई नए, आधुनिक और स्थायी अवसर भी सृजित होते हैं।

45. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
नकारात्मक बाह्यता किसी आर्थिक गतिविधि के कारण तीसरे पक्ष को होने वाला अनैच्छिक नुकसान है। इसके विपरीत, सकारात्मक बाह्यता वह लाभ है जो किसी लेन-देन के परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष रूप से दूसरों को प्राप्त होता है। फ्री राइडर वे व्यक्ति होते हैं जो किसी सार्वजनिक वस्तु का भुगतान किए बिना उसका लाभ उठाते हैं। प्राकृतिक पूंजी हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का वह बहुमूल्य भंडार है जो जीवन और

Click Here to Buy book on Amazon

अर्थव्यवस्था के लिए अनिवार्य वस्तुओं और सेवाओं का निरंतर प्रवाह सुनिश्चित करता है, जो जीवन का आधार है।

46. (2) एक व्यक्ति संक्रामक रोग के विरुद्ध टीकाकरण करवा रहा है।
सकारात्मक बाह्यता तब उत्पन्न होती है जब किसी व्यक्ति या फर्म की गतिविधि से दूसरों को बिना किसी मौद्रिक भुगतान के लाभ मिलता है। टीकाकरण इसका एक सर्वोत्तम उदाहरण है; जब कोई व्यक्ति टीका लगवाता है, तो वह न केवल स्वयं सुरक्षित होता है, बल्कि समाज में बीमारी फैलने की संभावना को भी कम करता है। जनता को मिलने वाला यह अतिरिक्त सुरक्षा लाभ उपभोग की सकारात्मक बाह्यता कहलाता है, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण और लाभदायक है।

47. (1) वस्तु की सामाजिक रूप से इष्टतम मात्रा से अधिक उत्पादन करेगा।
जब किसी वस्तु के उत्पादन में नकारात्मक बाह्यता, जैसे प्रदूषण, शामिल होती है, तो निजी फर्में इसकी वास्तविक सामाजिक लागत की उपेक्षा करती हैं। इसके परिणामस्वरूप मुक्त बाजार ऐसी वस्तुओं का उत्पादन उस मात्रा से अधिक करता है जो समाज के लिए वास्तव में इष्टतम या वांछनीय है। यह असंतुलन संसाधनों के अकुशल आवंटन की ओर ले जाता है। इसे ठीक करने के लिए करों या कठोर नियमों के माध्यम से बाहरी लागत को निजी उत्पादन लागत में शामिल करना अनिवार्य होता है ताकि पर्यावरण सुरक्षित रहे।

48. (2) सीमांत बाहरी लागत के बराबर कर।
पिगोवियन कर एक ऐसा कर है जिसे उन आर्थिक गतिविधियों पर लगाया जाता है जो नकारात्मक बाह्यताएं उत्पन्न करती हैं। इस कर की राशि को उस गतिविधि से होने वाली सीमांत बाहरी लागत के बराबर रखने का प्रयास किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य उत्पादकों को उनकी गतिविधियों के वास्तविक सामाजिक और पर्यावरणीय नुकसान के लिए उत्तरदायी बनाना है। यह कर प्रदूषकों को अपने उत्सर्जन को कम करने के लिए प्रोत्साहित करता है और बाजार की विफलता को सुधारने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

49. (1) केवल I, II और III
सार्वजनिक वस्तुएं उपभोग में गैर-अपवर्ज्यता और गैर-प्रतिद्वंद्विता की विशेषता रखती हैं, जिसका अर्थ है कि किसी को भी इनके लाभ से वंचित नहीं किया जा सकता। फ्री-राइडर समस्या के कारण निजी कंपनियां इन वस्तुओं की आपूर्ति करने में कठिनाई महसूस करती हैं क्योंकि लोग इनके लिए भुगतान करने से बचते हैं। राष्ट्रीय रक्षा और सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था इसके प्रमुख उदाहरण हैं। बाजार तंत्र इन वस्तुओं को पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराने में विफल रहता है, इसलिए सरकारी हस्तक्षेप और सार्वजनिक वित्तपोषण अनिवार्य हो जाता है।

50. (1) II, I, III, IV
नकारात्मक पर्यावरणीय बाह्यता को ठीक करने के लिए सर्वप्रथम प्रदूषण के स्रोत की सटीक पहचान की जाती है। इसके पश्चात, उस प्रदूषण से समाज और पारिस्थितिकी तंत्र को होने वाली सीमांत बाहरी लागत का वैज्ञानिक मूल्यांकन किया जाता है। इस लागत के आधार पर सरकार पिगोवियन कर या उत्सर्जन की सीमाएं निर्धारित और क्रियान्वित करती है। इन उपायों के परिणामस्वरूप, प्रदूषित वस्तु की उत्पादित मात्रा धीरे-धीरे कम होकर सामाजिक रूप से इष्टतम और सुरक्षित स्तर पर पहुँच जाती है, जिससे प्रभावी पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित होता है।

51. (3) 1987 ब्रंटलैंड कमीशन रिपोर्ट
सतत विकास की सबसे प्रसिद्ध और व्यापक रूप से स्वीकृत परिभाषा 1987 में जारी ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट 'अवर कॉमन फ्यूचर' में प्रस्तुत की गई थी। यह परिभाषा स्पष्ट करती है कि विकास की प्रक्रिया को वर्तमान की जरूरतों को इस तरह पूरा करना चाहिए कि भविष्य की पीढ़ियों के हितों और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ कोई समझौता न हो। इस ऐतिहासिक रिपोर्ट ने वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाने की अनिवार्यता को मजबूती से स्थापित किया।

52. (4) भविष्य की पीढ़ियों के प्रति समानता।
सतत विकास के ढांचे में "अंतर-पीढ़ीगत समानता" का सिद्धांत वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के बीच न्यायपूर्ण संसाधन वितरण पर केंद्रित है। इसका मूल अर्थ यह है कि वर्तमान पीढ़ी को पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करना चाहिए कि वे आगामी पीढ़ियों के लिए भी पर्याप्त मात्रा और गुणवत्ता में उपलब्ध रहें। यह सिद्धांत भविष्य के प्रति हमारी नैतिक जिम्मेदारी और पारिस्थितिक तंत्र को अक्षुण्ण बनाए रखने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, जो मानवता के दीर्घकालिक अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

NODIA

53. (3) वर्तमान आबादी के भीतर समानता।
सतत विकास में "अंतः-पीढ़ीगत समानता" का तात्पर्य समाज के वर्तमान सदस्यों के बीच संसाधनों, अवसरों और लाभों के न्यायसंगत वितरण से है। यह सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि विकास के लाभ केवल एक संपन्न वर्ग तक सीमित नहीं होने चाहिए, बल्कि विश्व भर के सभी लोगों, विशेष रूप से निर्धन और वंचितों की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा किया जाना चाहिए। यह वर्तमान वैश्विक आबादी के भीतर व्याप्त गरीबी और आर्थिक असमानता को मिटाने के प्रयासों को प्राथमिकता देता है, जो न्यायपूर्ण है।

54. (1) केवल I, II और IV
सतत विकास के प्रमुख सिद्धांतों में जैव विविधता का संरक्षण, आर्थिक योजना में पर्यावरणीय चिंताओं का समावेश और सामाजिक न्याय के माध्यम से निर्धनता उन्मूलन शामिल हैं। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि आर्थिक संवृद्धि पारिस्थितिक सीमाओं के भीतर ही होनी चाहिए। इसलिए, बिना किसी सीमा के अनियंत्रित संवृद्धि का प्रयास करना या गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर अत्यधिक निर्भरता इस मॉडल के पूर्णतः विपरीत है। सतत विकास का लक्ष्य भविष्य की सुरक्षा के साथ आर्थिक प्रगति का सामंजस्य बिठाना है।

55. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
स्टॉकहोम सम्मेलन (1972) पर्यावरण को वैश्विक कार्यसूची पर लाने वाला प्रथम प्रमुख आयोजन था। 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट ने सतत विकास की मानक परिभाषा प्रस्तुत की। रियो पृथ्वी शिखर सम्मेलन (1992) में भविष्य के लिए 'एजेंडा 21' को अपनाया गया। जोहान्सबर्ग शिखर सम्मेलन (2002) ने मुख्य रूप से सतत विकास के माध्यम से निर्धनता उन्मूलन और वैश्विक साझेदारी पर ध्यान केंद्रित किया। ये सभी अंतरराष्ट्रीय प्रयास वैश्विक पर्यावरणीय शासन और सतत मानवीय प्रगति की दिशा में महत्वपूर्ण मील के पत्थर साबित हुए हैं।

56. (1) निर्धनता की समाप्ति; शून्य भुखमरी
संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्यों में प्रथम लक्ष्य (SDG 1) विश्व के सभी हिस्सों से हर प्रकार की निर्धनता को पूर्णतः समाप्त करना है। द्वितीय लक्ष्य (SDG 2) शून्य भुखमरी का आह्वान करता है, जिसका उद्देश्य खाद्य सुरक्षा प्राप्त करना, पोषण में सुधार लाना और सतत कृषि को बढ़ावा देना है। ये दोनों लक्ष्य आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं और किसी भी समाज के बुनियादी विकास, स्थिरता और मानवीय गरिमा को सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिक आधार प्रदान करते हैं।

57. (3) 2030
सतत विकास लक्ष्यों को वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों द्वारा सर्वसम्मति से अपनाया गया था। इन 17 महत्वाकांक्षी और एकीकृत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए वर्ष 2030 तक की वैश्विक समय-सीमा निर्धारित की गई है। यह व्यापक एजेंडा गरीबी, असमानता, जलवायु परिवर्तन और शांति जैसे गंभीर संकटों के समाधान के लिए एक ठोस रुपरेखा प्रदान करता है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सभी राष्ट्रों, निजी क्षेत्रों और नागरिक समाज के बीच सामूहिक प्रयास और अटूट सहयोग अनिवार्य है।

58. (1) SDGs का सार्वभौमिक अनुप्रयोग है।
सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (MDGs) और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के बीच एक प्रमुख अंतर उनकी व्यापकता और अनुप्रयोग में निहित है। जहाँ MDGs मुख्य रूप से केवल विकासशील देशों में गरीबी कम करने पर केंद्रित थे, वहीं SDGs सार्वभौमिक हैं और विकसित तथा विकासशील दोनों प्रकार के देशों पर समान रूप से लागू होते हैं। SDGs आर्थिक संवृद्धि के साथ-साथ पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक न्याय के आयामों को अधिक व्यापक और एकीकृत तरीके से संबोधित करते हैं, जो एक महत्वपूर्ण वैश्विक बदलाव है।

59. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सतत विकास लक्ष्यों को अविभाज्य और एकीकृत माना जाता है क्योंकि वे पूर्णतः एक-दूसरे पर निर्भर हैं। किसी एक लक्ष्य में की गई प्रगति अक्सर अन्य लक्ष्यों की सफलता को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य में सुधार के लिए स्वच्छ जल और शिक्षा की आवश्यकता होती है, और निरंतर आर्थिक विकास के लिए प्रभावी जलवायु कार्रवाई अनिवार्य है। यह एकीकरण सुनिश्चित करता है कि आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय आयामों के बीच एक न्यायपूर्ण संतुलन बना रहे, जो मानवता के भविष्य हेतु आवश्यक है।

60. (2) जलवायु कार्रवाई
सतत विकास लक्ष्य 13 (SDG 13) जलवायु परिवर्तन और इसके विनाशकारी प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल और ठोस कार्रवाई करने का आह्वान करता है। इसके तहत राष्ट्रों को जलवायु शमन और अनुकूलन रणनीतियों को अपनी राष्ट्रीय नीतियों में शामिल करने, शिक्षा और जागरुकता बढ़ाने तथा ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह लक्ष्य वैश्विक तापमान वृद्धि को नियंत्रित करने और भविष्य के जोखिमों को कम करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग और प्रतिबद्धता पर विशेष बल देता है।

61. (3) प्राकृतिक संसाधन/पर्यावरणीय हानि।
ग्रीन जीडीपी एक महत्वपूर्ण आर्थिक मापक है जो पारंपरिक सकल घरेलू उत्पाद की गणना में पर्यावरणीय नुकसान को समायोजित करता है। इसमें उत्पादन प्रक्रिया के दौरान होने वाले प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण और पर्यावरण को पहुँचने वाली क्षति की मौद्रिक लागत को कुल उत्पादन मूल्य में से घटाया जाता है। यह राष्ट्र की आर्थिक प्रगति का अधिक पारदर्शी, यथार्थवादी और न्यायपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है, क्योंकि यह केवल तात्कालिक धन सृजन को ही नहीं, बल्कि भविष्य के संसाधनों की सुरक्षा को भी मापता है।

62. (2) गैर-बाजार पर्यावरणीय वस्तुओं और सेवाओं के लिए मौद्रिक मूल्य निर्धारित करना।
ग्रीन जीडीपी के सटीक मापन में सबसे बड़ी चुनौती उन पर्यावरणीय वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य निर्धारित करना है जिनका बाजार में कोई सीधा मौद्रिक लेन-देन नहीं होता। स्वच्छ वायु, जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र की सेवाओं की वास्तविक आर्थिक कीमत तय करना वैज्ञानिक और सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यंत जटिल कार्य है। चूंकि इन संसाधनों के लिए कोई स्पष्ट बाजार मूल्य उपलब्ध नहीं है, इसलिए उनकी हानि का सटीक आकलन करना और उसे राष्ट्रीय आय लेखांकन में शामिल करना एक कठिन प्रक्रिया बनी हुई है।

63. (1) आर्थिक-पर्यावरणीय एकीकरण।
पर्यावरणीय-आर्थिक लेखांकन की प्रणाली (SEEA) एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत सांख्यिकीय मानक है। इसका प्राथमिक उपयोग अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के बीच के जटिल अंतर्संबंधों को मापने और उनका विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह ढांचा प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग और पर्यावरण पर आर्थिक गतिविधियों के प्रभावों को राष्ट्रीय आय लेखांकन के साथ एकीकृत करता है। यह नीति निर्माताओं को सतत विकास की दिशा में अधिक सटीक निर्णय लेने और संसाधनों के कुशल, पारदर्शी प्रबंधन में अत्यंत महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है।

64. (2) ग्रीन जीडीपी = I - (II + III)
ग्रीन जीडीपी की गणना के लिए पारंपरिक सकल घरेलू उत्पाद में से दो मुख्य पर्यावरणीय लागतों को घटाया जाता है। पहली

Downloaded from www.pdf.tube

लागत प्राकृतिक संसाधनों की कमी का मौद्रिक मूल्य है और दूसरी लागत पर्यावरणीय प्रदूषण से होने वाला सामाजिक नुकसान है। इस प्रकार, ग्रीन जीडीपी राष्ट्र की उस शुद्ध आर्थिक संवृद्धि को दर्शाता है जो पारिस्थितिक संतुलन को ध्यान में रखती है। यह सूत्र स्पष्ट करता है कि वास्तविक विकास वही है जो पर्यावरण की कीमत पर प्राप्त नहीं किया गया हो, बल्कि उसके साथ हो।

65. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
नाममात्र जीडीपी वर्तमान बाजार कीमतों पर आधारित होता है, जबकि वास्तविक जीडीपी को मुद्रास्फीति के लिए समायोजित किया जाता है। ग्रीन जीडीपी में जैव विविधता की हानि और प्रदूषण की लागत को घटाकर विकास का वास्तविक पारिस्थितिक मूल्य निकाला जाता है। शुद्ध घरेलू उत्पाद (एनडीपी) वह मापक है जो उत्पादन प्रक्रिया में उपयोग की गई मशीनों और अन्य मानव निर्मित पूंजी के मूल्यह्रास का लेखा-जोखा रखता है। ये सभी संकेतक अर्थव्यवस्था के विभिन्न सूक्ष्म और व्यापक पहलुओं को गहराई से समझने में मदद करते हैं।

66. (1) प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन।
"कार्बन पदचिह्न" किसी व्यक्ति, संगठन, कार्यक्रम या उत्पाद द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्पन्न की गई ग्रीनहाउस गैसों, विशेष रूप से कार्बन डाइऑक्साइड, की कुल मात्रा का माप है। इसे आमतौर पर कार्बन डाइऑक्साइड के समतुल्य भार के रूप में व्यक्त किया जाता है। यह संकेतक यह समझने में मदद करता है कि हमारी जीवनशैली और आर्थिक गतिविधियाँ ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन में कितना योगदान दे रही हैं। कार्बन पदचिह्न को वैज्ञानिक रूप से कम करना वैश्विक पर्यावरणीय स्थिरता के लिए अनिवार्य है।

67. (2) ग्लोबल हेक्टेयर (gha)
पारिस्थितिक पदचिह्न एक वैज्ञानिक अवधारणा है जो प्रकृति पर मानवीय मांग की तुलना पृथ्वी की संसाधनों को पुनर्जीवित करने की क्षमता से करती है। इसे मापने के लिए "ग्लोबल हेक्टेयर" नामक मानक इकाई का उपयोग किया जाता है। यह इकाई उस भूमि और जल क्षेत्र को दर्शाती है जो मनुष्य के उपभोग के लिए आवश्यक संसाधनों के उत्पादन और उसके द्वारा उत्पन्न अपशिष्ट को अवशोषित करने के लिए चाहिए। यह राष्ट्रों की पारिस्थितिक आत्मनिर्भरता और संसाधनों के उपयोग के वास्तविक स्तर को स्पष्ट रूप से प्रकट करती है।

68. (4) पारिस्थितिकी तंत्र की अपशिष्ट/संसाधन क्षमता।
पारिस्थितिक पदचिह्न विश्लेषण में "जैव-क्षमता" का अर्थ किसी क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र की उस जैविक उत्पादकता से है जो मानव उपयोग हेतु संसाधनों का निरंतर उत्पादन कर सके और उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट, विशेष रूप से कार्बन डाइऑक्साइड, को प्राकृतिक रूप से अवशोषित कर सके। यह प्रकृति की पुनर्योजी क्षमता का एक वैज्ञानिक माप है। यदि किसी समाज की मांग उसकी जैव-क्षमता से अधिक हो जाती है, तो वह संसाधनों का अनसस्टेनेबल दोहन करने लगता है, जिससे भविष्य के लिए पारिस्थितिक संकट उत्पन्न हो सकता है।

69. (3) केवल I, II और III
जब किसी देश की संसाधनों की मांग उसकी जैव-क्षमता से अधिक होती है, तो वह पारिस्थितिक घाटे की स्थिति में होता है। कार्बन पदचिह्न कुल पारिस्थितिक पदचिह्न का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। 'अर्थ ओवरशूट डे' वह वार्षिक तिथि है जब मानवता उस वर्ष के लिए पृथ्वी की कुल पुनर्योजी क्षमता का उपयोग कर लेती है। जीवाश्म ईंधन के उपयोग में निरंतर वृद्धि कार्बन पदचिह्न को बढ़ाती है, न कि उसे कम करती है। अतः संधारणीय जीवन के लिए हमें अपने पारिस्थितिक पदचिह्न को सीमित रखना होगा।

70. (2) आरक्षित (Reserve)
जब किसी राष्ट्र का पारिस्थितिक पदचिह्न उसकी उपलब्ध जैव-क्षमता से कम होता है, तो उसे पारिस्थितिक रूप से "आरक्षित" या अधिशेष स्थिति में माना जाता है। इसका अर्थ है कि वह राष्ट्र अपने संसाधनों का उपयोग उनकी प्राकृतिक पुनर्योजी क्षमता के भीतर ही कर रहा है और उसके पास पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाए भविष्य के लिए अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध हैं। ऐसी स्थिति पर्यावरणीय स्थिरता और पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत सकारात्मक मानी जाती है, जो राष्ट्र के दीर्घकालिक और स्थायी विकास को मजबूती प्रदान करती है।

71. (4) संवृद्धि बनाम शमन बाधाएं।
जलवायु परिवर्तन और आर्थिक विकास के बीच के द्वंद्व की बहस इस चिंता पर केंद्रित है कि उत्सर्जन को कम करने के प्रयास आर्थिक विकास की गति को धीमा कर सकते हैं। विकासशील देशों के लिए यह एक बड़ी चुनौती है क्योंकि उन्हें गरीबी मिटाने के लिए तीव्र औद्योगिक विस्तार की आवश्यकता है, जिसके लिए अक्सर ऊर्जा की उच्च खपत होती है। यह संतुलन बनाने की एक जटिल प्रक्रिया है जहाँ देशों को संवृद्धि के लक्ष्यों और जलवायु सुरक्षा की सीमाओं के बीच सामंजस्य बिठाना पड़ता है।

72. (1) ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना या रोकना।
जलवायु अर्थशास्त्र में "शमन" रणनीतियों का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के मूल कारणों को दूर करना है। इसमें मुख्य रूप से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने या उनके अवशोषण के लिए सिंक, जैसे वनों के क्षेत्र को बढ़ाने के प्रयास शामिल हैं। नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाना, ऊर्जा दक्षता में सुधार करना और व्यापक वनीकरण इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण है जो ग्लोबल वार्मिंग की दर को सीमित करने और भविष्य के गंभीर जलवायु जोखिमों को कम करने के लिए अनिवार्य माना जाता है।

73. (3) विकासशील देशों के लिए जलवायु कार्रवाई सहायता।
"जलवायु वित्त" का प्राथमिक उद्देश्य उन विकासशील देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील हैं। यह वित्त पोषण उन्हें कम कार्बन वाली प्रौद्योगिकियों को अपनाने (शमन) और जलवायु परिवर्तन के परिणामों के अनुकूल होने (अनुकूलन) में मदद करता है। यह अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं का एक हिस्सा है, जिसके तहत विकसित देश संसाधनों और धन का

NODIA

हस्तांतरण करते हैं ताकि वैश्विक स्तर पर जलवायु लक्ष्यों को अधिक प्रभावी ढंग से और न्यायपूर्ण तरीके से प्राप्त किया जा सके।

74. (1) केवल I, II, III और V
जलवायु परिवर्तन कृषि पैदावार में कमी, चरम मौसम की घटनाओं की बढ़ती लागत, श्रम उत्पादकता की हानि और तटीय बुनियादी ढांचे के विनाश के माध्यम से अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान पहुँचाता है। समुद्र के स्तर में वृद्धि से कोई भी सकारात्मक आर्थिक प्रभाव नहीं होता, बल्कि यह लाखों लोगों के विस्थापन और भारी संपत्ति के नुकसान का कारण बनता है। ये सभी विनाशकारी कारक मिलकर जीडीपी की संवृद्धि दर को धीमा करते हैं और समाज की समग्र आर्थिक एवं सामाजिक स्थिरता के लिए बड़ा खतरा उत्पन्न करते हैं।

75. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
अनुकूलन जलवायु प्रभावों के अनुसार प्रणालियों और समाज को समायोजित करना है। शमन उत्सर्जन के स्रोतों को कम करने का सक्रिय प्रयास है। कार्बन मूल्य निर्धारण उत्सर्जन पर वित्तीय लागत लगाकर कटौती को प्रोत्साहित करता है। न्यायसंगत संक्रमण यह सुनिश्चित करता है कि हरित अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव के दौरान श्रमिकों और स्थानीय समुदायों के हितों की पूरी रक्षा हो। ये सभी अवधारणाएं मिलकर जलवायु परिवर्तन के प्रति एक संतुलित, वैज्ञानिक और मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं, जो वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के समाधान हेतु आवश्यक है।

76. (2) 2 डिग्री सेल्सियस से काफी नीचे।
पेरिस समझौते का मुख्य लक्ष्य वैश्विक औसत तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों की तुलना में 2 डिग्री सेल्सियस से काफी नीचे रखना है। इसके साथ ही, तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के और भी अधिक महत्वाकांक्षी प्रयास करने का संकल्प लिया गया है। यह समझौता जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी प्रभावों को रोकने के लिए एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय कानूनी ढांचा प्रदान करता है। इसे प्राप्त करने के लिए सभी देशों को अपने राष्ट्रीय उत्सर्जन को तेजी से और प्रभावी ढंग से कम करने की आवश्यकता है।

77. (3) सामान्य लेकिन विभेदित जिम्मेदारियां और संबंधित क्षमताएं
यह सिद्धांत स्वीकार करता है कि यद्यपि जलवायु परिवर्तन से लड़ना सभी राष्ट्रों की 'सामान्य' जिम्मेदारी है, परंतु ऐतिहासिक उत्सर्जन और विकास के स्तर के आधार पर उनकी जिम्मेदारियां 'विभेदित' होनी चाहिए। इसके अनुसार विकसित देशों को अधिक नेतृत्व और संसाधन प्रदान करने चाहिए, जबकि विकासशील देशों को उनकी 'संबंधित क्षमताओं' के अनुसार कार्रवाई करनी चाहिए। यह सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय जलवायु वार्ताओं में न्याय, निष्पक्षता और ऐतिहासिक उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने का एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण आधार स्तंभ माना जाता है।

78. (4) 2030 तक 50% गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता।
भारत के अद्यतन 'राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान' का एक प्रमुख और महत्वाकांक्षी लक्ष्य 2030 तक अपनी कुल बिजली उत्पादन क्षमता का 50% गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित स्रोतों, जैसे सौर और पवन ऊर्जा, से प्राप्त करना है। यह भारत की नवीकरणीय ऊर्जा के प्रति दृढ़ वैश्विक प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह कदम न केवल उत्सर्जन की तीव्रता को कम करेगा, बल्कि देश की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने और हरित भविष्य की दिशा में एक क्रांतिकारी बदलाव लाने में भी सहायक सिद्ध होगा।

79. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पेरिस समझौता क्योटो प्रोटोकॉल से मौलिक रूप से भिन्न है क्योंकि यह सभी देशों को उत्सर्जन कम करने के लक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए अनिवार्य बनाता है, न कि केवल विकसित देशों को। क्योटो में लक्ष्य ऊपर से थोपे जाते थे, जबकि पेरिस समझौते में 'नीचे से ऊपर' का दृष्टिकोण अपनाया गया है, जहाँ प्रत्येक देश अपनी परिस्थितियों के अनुसार 'राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान' स्वयं तय करता है। यह भागीदारी और लचीलेपन को बढ़ाकर वैश्विक जलवायु सहयोग को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाता है।

80. (3) III, II, I
अंतरराष्ट्रीय जलवायु समझौतों के इतिहास में सबसे पहले 1992 में रियो पृथ्वी शिखर सम्मेलन के दौरान संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) को अपनाया गया था। इसके बाद, 1997 में क्योटो प्रोटोकॉल को अपनाया गया, जिसने विकसित देशों के लिए उत्सर्जन कटौती के कानूनी रूप से बाध्यकारी लक्ष्य निर्धारित किए। अंत में, 2015 में पेरिस समझौते को अपनाया गया, जो एक नया और सार्वभौमिक ढांचा प्रदान करता है। यह क्रम जलवायु परिवर्तन के प्रति बढ़ती वैश्विक जागरुकता और सामूहिक संकल्प को दर्शाता है।

81. (2) अपशिष्ट को समाप्त करने वाला डिजाइन और सामग्रियों का निरंतर उपयोग।
चक्रीय अर्थव्यवस्था एक ऐसी आधुनिक प्रणाली है जो पारंपरिक रैखिक 'लो-बनाओ-फेंको' मॉडल को चुनौती देती है। इसका प्राथमिक उद्देश्य वस्तुओं के डिजाइन में सुधार करके अपशिष्ट को पूरी तरह समाप्त करना और कच्चे माल तथा सामग्रियों को यथासंभव लंबे समय तक उपयोग में बनाए रखना है। यह मरम्मत, पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण के सिद्धांतों पर आधारित है। यह मॉडल न केवल संसाधनों की दक्षता बढ़ाता है, बल्कि प्राकृतिक पर्यावरण पर पड़ने वाले अत्यधिक दबाव को भी काफी हद तक कम करने में सहायक होता है।

82. (1) नए जीवन चक्रों के लिए पुनर्चक्रण (Recycling)।
"पालने से पालने तक" का सिद्धांत उत्पादन की एक ऐसी संधारणीय पद्धति को दर्शाता है जहाँ वस्तुओं के जीवन के अंत को एक नए चक्र की शुरुआत के रूप में देखा जाता है। पारंपरिक "पालने से कब्र तक" मॉडल में वस्तुएं उपयोग के बाद कचरा बन जाती हैं, लेकिन इस नए दृष्टिकोण में उन्हें इस

Click Here to Buy book on Amazon

तरह डिज़ाइन किया जाता है कि उनके घटकों को पूरी तरह से पुनर्चक्रित या पुनर्जीवित किया जा सके। यह शून्य-अपशिष्ट अर्थव्यवस्था की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है जो संसाधनों का दीर्घकालिक संरक्षण सुनिश्चित करता है।

83. (3) कच्चे माल का शोषण।
चक्रीय अर्थव्यवस्था उच्च संसाधन दक्षता, अपशिष्ट न्यूनीकरण और सामग्रियों के मूल्य प्रतिधारण पर केंद्रित होती है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध और अनियंत्रित दोहन को कम करना है ताकि पर्यावरण की रक्षा हो सके। कच्चे माल का शोषण इस मॉडल की विशेषता नहीं है, बल्कि यह इसके पूर्णतः विपरीत कार्य करता है। यह प्रणाली पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण को बढ़ावा देकर नए संसाधनों के निष्कर्षण की आवश्यकता को न्यूनतम करती है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र पर बोझ कम होता है और स्थिरता बढ़ती है।

84. (2) केवल I और III
चक्रीय अर्थव्यवस्था नए कच्चे माल की आवश्यकता को कम करके ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को घटाने में मदद करती है, क्योंकि पुनर्चक्रण में निष्कर्षण की तुलना में कम ऊर्जा लगती है। यह विनिर्माण और पुनर्चक्रण क्षेत्रों में नवाचार और नए कुशल रोजगार के अवसर भी पैदा करती है। इसके अतिरिक्त, यह निर्माताओं के लिए कच्चे माल की कीमतों की अस्थिरता को कम करती है क्योंकि वे पुरानी सामग्रियों को ही पुनः उपयोग में लाते हैं। अतः यह आर्थिक और पर्यावरणीय दोनों दृष्टिकोणों से अत्यंत लाभप्रद और टिकाऊ है।

85. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
'कम करना' का अर्थ है उत्पादन और उपभोग के दौरान न्यूनतम संसाधनों का उपयोग करना। 'पुनः उपयोग' में वस्तुओं को उनके मूल स्वरूप में ही फिर से उपयोग में लाया जाता है। 'पुनर्चक्रण' वह प्रक्रिया है जिसमें अपशिष्ट को नए कच्चे माल या उत्पादों में बदला जाता है। 'पुनः प्राप्ति' का उद्देश्य उन अपशिष्टों से ऊर्जा निकालना है जिन्हें पुनर्चक्रित नहीं किया जा सकता। ये चार सिद्धांत मिलकर चक्रीय अर्थव्यवस्था के आधारभूत स्तंभ बनते हैं, जो अपशिष्ट प्रबंधन को वैज्ञानिक और प्रभावी बनाते हैं।

86. (2) निम्न स्थिर संवृद्धि (1950-1980 के दशक)।
"हिंदू विकास दर" शब्द का प्रयोग प्रोफेसर राज कृष्ण ने 1950 के दशक से 1980 के दशक के दौरान भारत की निम्न औसत आर्थिक संवृद्धि दर, जो लगभग 3.5% थी, को वर्णित करने के लिए किया था। यह शब्द उस दौर की धीमी प्रगति और नियंत्रित अर्थव्यवस्था की ओर संकेत करता था, जहाँ संवृद्धि की दर जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में बहुत कम थी। यह सुधार पूर्व युग की आर्थिक जड़ता और योजनाबद्ध विकास की सीमाओं का एक प्रतीकात्मक उल्लेख माना जाता है, जो अब इतिहास है।

87. (4) उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (एलपीजी) मॉडल के माध्यम से वैश्विक एकीकरण।
वर्ष 1991 के ऐतिहासिक आर्थिक सुधारों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक बंद व्यवस्था से वैश्विक बाजार की ओर मोड़ दिया। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों के माध्यम से अनावश्यक सरकारी नियंत्रणों को हटाया गया और निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाई गई। इन सुधारों ने विदेशी निवेश के द्वार खोले और व्यापारिक बाधाओं को कम किया। इसके परिणामस्वरुप भारत की आर्थिक संवृद्धि दर में तीव्र वृद्धि हुई और देश वैश्विक अर्थव्यवस्था के मुख्य केंद्र के रुप में उभरा। यह आधुनिक भारत की नींव है।

88. (1) सेवा क्षेत्र, विशेष रुप से आईटी (IT) और आईटीईएस (ITES)
भारत का आर्थिक विकास पथ कई अन्य देशों से भिन्न रहा है क्योंकि इसने विनिर्माण क्षेत्र के बड़े विस्तार से पहले ही सेवा क्षेत्र में असाधारण सफलता प्राप्त की। विशेष रुप से सूचना प्रौद्योगिकी और संबंधित सेवाओं ने भारतीय अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। कुशल मानव संसाधन और वैश्विक मांग के मेल ने भारत को "विश्व का कार्यालय" बना दिया। इस सेवा-आधारित संवृद्धि ने देश के सकल घरेलू उत्पाद और निर्यात में सबसे अधिक योगदान दिया है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था की एक अनूठी विशेषता है।

NODIA

89. (4) I, II, III और IV
भारत का आर्थिक इतिहास विभिन्न महत्वपूर्ण चरणों से गुजरा है। स्वतंत्रता के बाद का समय सार्वजनिक क्षेत्र की प्रधानता वाला था। 1980 के दशक में धीरे-धीरे नियंत्रणों में ढील दी गई। 1991 के सुधारों ने अर्थव्यवस्था की संरचना को पूरी तरह बदल दिया और बाजार की शक्तियों को प्रभावी बनाया। 2000 के बाद, हालांकि संवृद्धि दर ऊँची रही, लेकिन रोजगार सृजन की दर उस अनुपात में नहीं बढ़ी, जिसे "रोजगारहीन संवृद्धि" कहा गया। ये सभी चरण भारत की विकास यात्रा की जटिलताओं को दर्शाते हैं।

90. (2) सेवाएं > उद्योग > कृषि
वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के योगदान को देखा जाए, तो सेवा क्षेत्र का सकल मूल्यवर्धन में सबसे बड़ा हिस्सा है, जो लगभग 50% से अधिक है। इसके बाद उद्योग क्षेत्र का स्थान आता है, जबकि कृषि क्षेत्र का योगदान प्रतिशत के मामले में सबसे कम है, यद्यपि यह अभी भी देश में रोजगार का सबसे बड़ा स्रोत बना हुआ है। यह अवरोही क्रम एक आधुनिक अर्थव्यवस्था की ओर सफल संक्रमण को दर्शाता है जहाँ सेवाओं की भूमिका निरंतर महत्वपूर्ण और निर्णायक होती जा रही है।

91. (4) फ्रंट रनर (Front Runner)
नीति आयोग के 'एसडीजी इंडिया इंडेक्स' में राज्यों की प्रगति को मापने के लिए एक विस्तृत स्कोरिंग प्रणाली का उपयोग किया जाता है। जब कोई राज्य या केंद्र शासित प्रदेश 65 से 99 के बीच स्कोर प्राप्त करता है, तो उसे 'फ्रंट रनर' की श्रेणी में रखा जाता है। यह श्रेणी इंगित करती है कि संबंधित राज्य ने सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है और वह पूर्ण लक्ष्य प्राप्ति के काफी करीब है। यह वर्गीकरण राज्यों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करता है।

92. (2) राज्य/केंद्र शासित प्रदेश की एसडीजी प्रगति को मापना।
'एसडीजी इंडिया इंडेक्स' का प्राथमिक उद्देश्य भारत के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में की गई प्रगति का व्यापक और वैज्ञानिक मूल्यांकन करना है। यह सूचकांक विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय संकेतकों पर आधारित है। इसके माध्यम से नीति आयोग राज्यों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है और उन्हें अपनी कमजोरियों की पहचान करने तथा लक्षित नीतियों के माध्यम से सुधार करने के लिए प्रेरित करता है, जो संतुलित राष्ट्रीय विकास हेतु आवश्यक है।

93. (3) केरल
नीति आयोग द्वारा जारी 'सतत विकास लक्ष्य भारत सूचकांक' में केरल ने निरंतर अपना शीर्ष स्थान बनाए रखा है। स्वास्थ्य, शिक्षा, लैंगिक समानता और बुनियादी ढांचे जैसे प्रमुख सामाजिक मानकों पर केरल के उत्कृष्ट प्रदर्शन ने इसे सूचकांक में सबसे आगे रखा है। यह राज्य की प्रभावी सामाजिक नीतियों और सार्वजनिक सेवाओं के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का स्पष्ट प्रमाण है। केरल का यह सफल मॉडल सतत विकास के लक्ष्यों को स्थानीय स्तर पर लागू करने का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

94. (1) केवल I, II, III और IV
'एसडीजी इंडिया इंडेक्स' नीति आयोग और संयुक्त राष्ट्र का एक सामूहिक प्रयास है जो सभी 17 लक्ष्यों पर राज्यों के प्रदर्शन को मापता है। 100 का स्कोर पूर्ण लक्ष्य प्राप्ति का सूचक है। यह सूचकांक राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धी संघवाद को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता है। यह केवल पर्यावरणीय लक्ष्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें निर्धनता, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे सामाजिक तथा आर्थिक मापदंडों को भी समान महत्व दिया गया है। यह विकास की एक व्यापक और संतुलित तस्वीर प्रस्तुत करता है।

95. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
नीति आयोग के वर्गीकरण के अनुसार, 0 से 49 के स्कोर वाले राज्यों को 'आकांक्षी' माना जाता है, जिन्हें काफी सुधार की आवश्यकता है। 50 से 64 का स्कोर 'परफॉर्मर' श्रेणी को दर्शाता है। 65 से 99 के बीच स्कोर करने वाले राज्य 'फ्रंट रनर' कहलाते हैं, जो उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। 100 का स्कोर प्राप्त करने वाला राज्य 'अचीवर' की श्रेणी में आता है, जिसका अर्थ है कि उसने 2030 के लिए निर्धारित लक्ष्यों को पूरी तरह से प्राप्त कर लिया है। यह प्रगति की विभिन्न अवस्थाओं को दर्शाता है।

96. (2) निर्णय से पूर्व प्रभाव मूल्यांकन।
पर्यावरणीय प्रभाव आकलन एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी भी प्रस्तावित विकास परियोजना के संभावित पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन करती है। यह मूल्यांकन परियोजना के निर्माण या निर्णय लेने के चरण से पहले किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य नकारात्मक प्रभावों को कम करना, वैकल्पिक योजनाओं पर विचार करना और यह सुनिश्चित करना है कि विकास की प्रक्रिया सतत और पर्यावरण के अनुकूल हो। यह निर्णय निर्माताओं को एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है जिससे वे संतुलित और दूरदर्शी निर्णय ले सकें।

97. (2) स्थानीय हितधारकों की चिंताओं को दर्ज करना।
भारत में पर्यावरणीय प्रभाव आकलन प्रक्रिया में "जन सुनवाई" एक अनिवार्य और लोकतांत्रिक चरण है। इसका प्राथमिक उद्देश्य उस क्षेत्र के स्थानीय लोगों और हितधारकों की राय, आपत्तियों और चिंताओं को प्रत्यक्ष रूप से सुनना और दर्ज करना है जहाँ परियोजना प्रस्तावित है। यह सुनिश्चित करता है कि परियोजना के संभावित सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों के बारे में जनता को पूरी जानकारी हो और उनके अधिकारों की रक्षा की जा सके। यह प्रक्रिया विकास कार्यों में पारदर्शिता और लोकतांत्रिक जवाबदेही को बढ़ावा देती है।

98. (1) स्कोपिंग (Scoping)
पर्यावरणीय प्रभाव आकलन की प्रक्रिया में "स्कोपिंग" वह महत्वपूर्ण चरण है जिसमें यह निर्धारित किया जाता है कि मूल्यांकन अध्ययन में किन विशिष्ट पर्यावरणीय मुद्दों और प्रभावों को गहराई से संबोधित किया जाएगा। इसी स्तर पर 'संदर्भ की शर्तें' तैयार की जाती हैं, जो पूरे अध्ययन के लिए एक निश्चित रूपरेखा प्रदान करती हैं। स्कोपिंग यह सुनिश्चित करती है कि अध्ययन केवल सबसे महत्वपूर्ण और प्रासंगिक प्रभावों पर केंद्रित रहे, जिससे उपलब्ध संसाधनों और समय का अत्यंत प्रभावी ढंग से उपयोग संभव हो सके।

99. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पर्यावरणीय प्रभाव आकलन को सतत विकास का एक अनिवार्य उपकरण माना जाता है क्योंकि यह नियोजन के प्रारंभिक चरणों में ही पर्यावरणीय सुरक्षा को एकीकृत करता है। ऐसा करने से भविष्य में होने वाली गंभीर पारिस्थितिक क्षति को समय रहते रोका जा सकता है, जो बाद में अत्यंत महंगी या अपूरणीय साबित हो सकती है। यह प्रक्रिया परियोजनाओं को अधिक टिकाऊ बनाती है और यह सुनिश्चित करती है कि आर्थिक प्रगति का मार्ग पर्यावरण और समाज के हितों के साथ सामंजस्य बिठाते हुए ही आगे बढ़े। यह संतुलन हेतु आवश्यक है।

NODIA

100. (4) शमन उपायों का प्रभावी कार्यान्वयन।
पर्यावरणीय प्रभाव आकलन के संदर्भ में "परियोजना-पश्चात निगरानी" एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंतिम चरण है। इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि परियोजना के क्रियान्वयन और संचालन के दौरान उन सभी शमन उपायों और सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन किया जा रहा है जिनका अनुबंध किया गया था। यह निरंतर निगरानी संभावित नकारात्मक प्रभावों को समय रहते नियंत्रित करने और पर्यावरणीय क्षति को न्यूनतम रखने में मदद करती है। यह सतत विकास की दीर्घकालिक निगरानी के लिए एक अनिवार्य और वैज्ञानिक तंत्र है।

अध्याय 02

विकास का मापन : मानव विकास सूचकांक एवं संबंधित सूचकांक

1. निम्नलिखित में से किसे देश के विकास के माप के रूप में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की एक प्राथमिक सीमा माना जाता है?
(1) यह बाज़ार के कुल लेन-देन की मात्रा की गणना करने में विफल रहता है
(2) यह जनसंख्या के बीच आय के वितरण को नहीं दर्शाता है
(3) यह अपनी गणना में त्रुटिपूर्ण ढंग से मध्यवर्ती वस्तुओं को शामिल करता है
(4) यह औद्योगिक उत्पादन के मूल्य को मापने में असमर्थ है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. सतत विकास का नकारात्मक संकेतक होने के बावजूद, निम्नलिखित में से कौन सी आर्थिक गतिविधि सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की गणना में शामिल की जाती है?
(1) पर्यावरणीय आपदाओं के निवारण हेतु सफाई की लागत
(2) परिवार के सदस्यों द्वारा किया गया अवैतनिक घरेलू श्रम
(3) स्वैच्छिक आधार पर की गई सामुदायिक सेवा
(4) ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में वस्तु-विनिमय आधारित लेन-देन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
कथन I: प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद किसी देश के सभी नागरिकों के औसत जीवन स्तर का एक विश्वसनीय संकेतक है।
कथन II: सकल घरेलू उत्पाद की गणना प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण को दर्ज नहीं करती है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. विकास के माप के रूप में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की सीमाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह जनसंख्या के बीच आय के वितरण का विवरण नहीं देता है।
II. यह पर्यावरणीय पूंजी के मूल्यह्रास का सटीक मूल्यांकन करता है।
III. इसमें अवैतनिक घरेलू कार्यों के मूल्य को शामिल नहीं किया जाता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

5. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें:
सूची I: (आर्थिक अवधारणा)
A. वास्तविक जीडीपी
B. प्रति व्यक्ति जीडीपी
C. ग्रीन जीडीपी
D. नाममात्र जीडीपी
सूची II: (विशेषता/सीमा)
i. पर्यावरणीय क्षति की लागत को घटाता है
ii. मुद्रास्फीति को ध्यान में नहीं रखता है
iii. अत्यधिक आय असमानताओं को छुपाता है
iv. सामान्य मूल्य स्तर में परिवर्तनों के लिए समायोजित
विकल्प:
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. मानव विकास सूचकांक के निर्माण का मुख्य श्रेय किस प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री को दिया जाता है?
(1) अमर्त्य सेन
(2) महबूब उल हक
(3) जोसेफ स्टिग्लिट्ज़
(4) पॉल क्रुगमैन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. निम्नलिखित में से कौन सा कथन मानव विकास सूचकांक की वैचारिक उत्पत्ति का गलत वर्णन करता है?
(1) इसे राष्ट्रीय आय से ध्यान हटाकर जन-केंद्रित नीतियों पर

Downloaded from www.pdf.tube

केंद्रित करने के लिए तैयार किया गया था
(2) इसे 1990 में प्रकाशित पहली मानव विकास रिपोर्ट में प्रस्तुत किया गया था
(3) 'क्षमता दृष्टिकोण' (Capability approach) ने इसके सैद्धांतिक ढांचे को प्रभावित किया
(4) इसे विश्व बैंक के तत्वावधान में विकसित किया गया था
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
कथन I: संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) 1990 से प्रतिवर्ष मानव विकास रिपोर्ट प्रकाशित कर रहा है।
कथन II: मानव विकास सूचकांक का उद्देश्य मानव विकास के तीन बुनियादी आयामों में दीर्घकालिक प्रगति को दर्ज करना है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. मानव विकास सूचकांक की उत्पत्ति और अवधारणा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसे पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब उल हक द्वारा विकसित किया गया था।
II. अमर्त्य सेन ने सूचकांक के वैचारिक ढांचे में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
III. पहली मानव विकास रिपोर्ट अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा प्रकाशित की गई थी।
IV. इसे यह प्रदर्शित करने के लिए बनाया गया था कि आर्थिक विकास स्वतः ही मानव विकास में परिवर्तित नहीं होता है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. निम्नलिखित में से कौन सा इन विकास पैमानों के वैश्विक स्तर पर पहली बार प्रस्तुत किए जाने का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) सकल घरेलू उत्पाद, भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक, मानव विकास सूचकांक, बहुआयामी गरीबी सूचकांक
(2) भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक, सकल घरेलू उत्पाद, बहुआयामी गरीबी सूचकांक, मानव विकास सूचकांक
(3) सकल घरेलू उत्पाद, मानव विकास सूचकांक, भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक, बहुआयामी गरीबी सूचकांक
(4) भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक, मानव विकास सूचकांक, सकल घरेलू उत्पाद, बहुआयामी गरीबी सूचकांक
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. मानव विकास सूचकांक के तीन मूलभूत आयाम क्या हैं?
(1) स्वास्थ्य, शिक्षा और राजनीतिक स्वतंत्रता
(2) आय, बुनियादी ढांचा और शिक्षा
(3) जीवन स्तर, जीवन प्रत्याशा और पर्यावरणीय गुणवत्ता
(4) स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

12. निम्नलिखित में से कौन सा मानव विकास सूचकांक के आयामों को मापने के लिए उपयोग किया जाने वाला संकेतक नहीं है?
(1) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा
(2) शिशु मृत्यु दर
(3) स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष
(4) प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. मानव विकास सूचकांक में आय आयाम को लघुगणक (Logarithm) का उपयोग करके क्यों रूपांतरित किया जाता है?
(1) विभिन्न दशकों में मूल्य मुद्रास्फीति को समायोजित करने के लिए
(2) विविध स्थानीय मुद्राओं को अमेरिकी डॉलर में बदलने के लिए
(3) आय की घटती सीमांत उपयोगिता को ध्यान में रखने के लिए
(4) आय सूचकांकों को सीधे राष्ट्रीय आर्थिक विकास से जोड़ने के लिए
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. मानव विकास सूचकांक के आयामों और गणना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. स्वास्थ्य आयाम का आकलन पूर्णतः जन्म के समय जीवन प्रत्याशा द्वारा किया जाता है।
II. शिक्षा आयाम में 25 वर्ष और उससे अधिक आयु के वयस्कों के लिए स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष शामिल हैं।
III. शिक्षा आयाम में स्कूल जाने की आयु के बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष शामिल हैं।
IV. जीवन स्तर के आयाम को प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद द्वारा मापा जाता है।
V. समग्र सूचकांक की गणना इसके तीन आयामी सूचकांकों के गुणोत्तर माध्य (Geometric mean) के रूप में की जाती है।
उपर्युक्त में से कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) I, II और III
(2) II, III और V
(3) केवल IV
(4) केवल I और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें:

सूची I: (एचडीआई आयाम)
A. लंबा और स्वस्थ जीवन
B. ज्ञान (वयस्क)
C. ज्ञान (बच्चे)
D. सभ्य जीवन स्तर
सूची II: (उपयोग किया गया संकेतक)
i. स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष
ii. प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय
iii. स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष
iv. जन्म के समय जीवन प्रत्याशा
विकल्प:
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

16. एचडीआई के लिए शिक्षा सूचकांक की गणना में, स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्षों और स्कूली शिक्षा के औसत वर्षों के लिए क्रमशः कौन से अधिकतम लक्ष्य-मान (Goalpost values) निर्धारित किए गए हैं?
(1) 15 वर्ष और 10 वर्ष
(2) 18 वर्ष और 15 वर्ष
(3) 20 वर्ष और 15 वर्ष
(4) 16 वर्ष और 12 वर्ष
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. एचडीआई के घटकों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) जीवन प्रत्याशा सूचकांक तब 1 होता है जब जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 85 वर्ष होती है
(2) एचडीआई स्कोर 1 से 100 के बीच होता है
(3) सकल राष्ट्रीय आय को क्रय शक्ति समता (पीपीपी) के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है
(4) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा के लिए न्यूनतम लक्ष्य-मान 20 वर्ष निर्धारित है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
कथन I: एचडीआई किसी देश के निवासियों द्वारा प्रतिधारित आय को दर्शाने के लिए सकल घरेलू उत्पाद के बजाय सकल राष्ट्रीय आय का उपयोग करता है।
कथन II: विदेशों से प्राप्त प्रेषण (Remittances) को सकल राष्ट्रीय आय की गणना में शामिल किया जाता है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): अंतिम मानव विकास सूचकांक की गणना समांतर माध्य के बजाय तीन आयामी सूचकांकों के गुणोत्तर माध्य का उपयोग करके की जाती है।
कारण (R): गुणोत्तर माध्य आयामों के बीच प्रतिस्थापन के स्तर को कम करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि एक आयाम में खराब प्रदर्शन की भरपाई दूसरे आयाम में अच्छे प्रदर्शन से पूरी तरह से नहीं की जा सकती।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

20. अंतिम एचडीआई की गणना करने से पहले घटकों (जीवन प्रत्याशा, शिक्षा, आय) के मूल्यों को 0 और 1 के बीच के पैमाने पर सामान्य करने (Normalize) के लिए किस सांख्यिकीय तकनीक का प्रयोग किया जाता है?
(1) मानक विचलन विधि
(2) Z-स्कोर सामान्यीकरण
(3) लॉजिस्टिक रिग्रेशन
(4) न्यूनतम-अधिकतम स्केलिंग (Min-Max scaling)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. मानक अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण के अनुसार भारत वर्तमान में किस मानव विकास श्रेणी में आता है?
(1) निम्न मानव विकास
(2) मध्यम मानव विकास
(3) उच्च मानव विकास
(4) अत्यधिक उच्च मानव विकास
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

22. पिछले तीन दशकों में भारत के एचडीआई प्रदर्शन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा रुझान ऐतिहासिक रूप से सटीक नहीं है?
(1) भारत में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है
(2) भारत में स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष बिना किसी वृद्धि के स्थिर रहे हैं
(3) भारत की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय में निरंतर वृद्धि देखी गई है
(4) भारत के समग्र एचडीआई मूल्य ने सामान्यतः ऊपर की ओर रुझान बनाए रखा है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. भारत के निकटतम पड़ोसियों में से किस देश ने हाल के वर्षों में भारत की तुलना में लगातार उच्च एचडीआई श्रेणी में स्थान प्राप्त किया है?
(1) पाकिस्तान

Click Here to Buy book on Amazon

(2) नेपाल
(3) म्यांमार
(4) श्रीलंका
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. भारत की एचडीआई रैंकिंग और रुझानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. भारत उच्च मानव विकास श्रेणी से संबंधित है।
II. सुधारों के बावजूद, कोविड-19 महामारी के वर्षों के दौरान भारत के एचडीआई स्कोर में अस्थायी गिरावट आई।
III. भारत में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा वर्तमान में 65 वर्ष से अधिक है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें:
सूची I: (देश)
A. नॉर्वे
B. भारत
C. श्रीलंका
D. नाइजर
सूची II: (सामान्य एचडीआई प्रदर्शन स्तर)
i. निम्न मानव विकास
ii. अत्यधिक उच्च मानव विकास
iii. मध्यम मानव विकास
iv. उच्च मानव विकास
विकल्प:
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. लिंग विकास सूचकांक (GDI) मानव विकास उपलब्धियों में लैंगिक अंतराल को कैसे मापता है?
(1) महिला एचडीआई का पुरुष एचडीआई से अनुपात निकाल कर
(2) पुरुष एचडीआई में से महिला एचडीआई को घटा कर
(3) दोनों लिंगों के एचडीआई मूल्यों का औसत निकाल कर
(4) मानक एचडीआई को मातृ मृत्यु दर से गुणा कर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा पहली बार लिंग विकास सूचकांक किस वर्ष प्रस्तुत किया गया था?
(1) 1990
(2) 1995
(3) 2010
(4) 2015
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

28. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
कथन I: लिंग विकास सूचकांक उन्हीं तीन बुनियादी आयामों का उपयोग करता है जिनका उपयोग मानक मानव विकास सूचकांक में किया जाता है।
कथन II: लिंग विकास सूचकांक जीवन स्तर के आयाम को मापने के लिए महिलाओं और पुरुषों के लिए अनुमानित अर्जित आय का अलग-अलग आकलन करता है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

29. लिंग विकास सूचकांक (GDI) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. 1.000 का लिंग विकास सूचकांक मूल्य पूर्ण लैंगिक समानता को दर्शाता है।
II. यह प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय संसद में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का आकलन करता है।
III. यह लैंगिक समानता से पूर्ण विचलन के आधार पर देशों को पांच समूहों में विभाजित करता है।
IV. यह जीवन प्रत्याशा, स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष और स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष के लिए लिंग-विभाजित आंकड़ों का उपयोग करता है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा निम्नलिखित सूचकांकों को उनके प्रथम प्रकाशन के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. मानव गरीबी सूचकांक (HPI)
II. बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI)
III. मानव विकास सूचकांक (HDI)
IV. लिंग विकास सूचकांक (GDI)
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनें:
(1) III, I, IV, II
(2) III, IV, I, II
(3) I, III, IV, II
(4) IV, III, II, I
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. लैंगिक असमानता सूचकांक (GII) द्वारा मापे जाने वाले तीन आयाम क्या हैं?
(1) प्रजनन स्वास्थ्य, सशक्तीकरण और श्रम बाज़ार भागीदारी
(2) राष्ट्रीय आय, सार्वजनिक बुनियादी ढांचा और साक्षरता
(3) राजनीतिक भागीदारी, आर्थिक भागीदारी और बुनियादी शिक्षा
(4) मातृ स्वास्थ्य, बाल मृत्यु दर और आय संतुलन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

32. निम्नलिखित में से कौन सा लैंगिक असमानता सूचकांक (GII) की गणना में उपयोग किया जाने वाला संकेतक नहीं है?
(1) मातृ मृत्यु अनुपात
(2) जन्म के समय महिला जीवन प्रत्याशा
(3) प्रत्येक लिंग के पास संसदीय सीटों का हिस्सा
(4) किशोर जन्म दर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

33. लैंगिक असमानता सूचकांक (GII) में 0 का मान क्या दर्शाता है?
(1) पूर्ण लैंगिक असमानता
(2) पूर्ण लैंगिक समानता
(3) श्रम बल में महिलाओं की शून्य भागीदारी
(4) विशेष रुप से शून्य मातृ मृत्यु अनुपात
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. लैंगिक असमानता सूचकांक (GII) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह महिला और पुरुष उपलब्धियों के बीच असमानता के कारण संभावित मानव विकास में होने वाली हानि को दर्शाता है।
II. सशक्तीकरण को महिलाओं द्वारा प्राप्त संसदीय सीटों के अनुपात से मापा जाता है।
III. सशक्तीकरण को कम से कम माध्यमिक शिक्षा प्राप्त 25 वर्ष और उससे अधिक आयु के वयस्क महिलाओं और पुरुषों के अनुपात द्वारा भी मापा जाता है।
IV. श्रम बाज़ार आयाम को पुरुषों और महिलाओं के बीच वेतन अंतराल (Wage gap) द्वारा मापा जाता है।
V. इसे पुराने लैंगिक असमानता मापों को बदलने के लिए 2010 में शुरु किया गया था।
उपर्युक्त में से कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और V
(2) केवल II और III
(3) केवल IV
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें:
सूची I: (सूचकांक)
A. मानव विकास सूचकांक
B. लैंगिक असमानता सूचकांक
C. बहुआयामी गरीबी सूचकांक
D. लिंग विकास सूचकांक
सूची II: (उपयोग किया गया विशिष्ट संकेतक)
i. किशोर जन्म दर
ii. महिला से पुरुष एचडीआई का अनुपात
iii. प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय
iv. खाना पकाने के ईंधन से वंचना
विकल्प:
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

36. वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा किस संस्थान के सहयोग से विकसित किया गया था?
(1) विश्व आर्थिक मंच
(2) लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स
(3) विश्व बैंक समूह
(4) ऑक्सफोर्ड पावर्टी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट इनिशिएटिव
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. मानव गरीबी सूचकांक (HPI) को प्रतिस्थापित करने के लिए वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक किस वर्ष प्रारंभ किया गया था?
(1) 2005
(2) 2010
(3) 2015
(4) 1997
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

38. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
कथन I: बहुआयामी गरीबी सूचकांक उन तीव्र और परस्पर वंचनाओं को दर्ज करता है जिनका लोग एक ही समय में सामना करते हैं।
कथन II: बहुआयामी गरीबी सूचकांक गरीबी की सीमा निर्धारित करने के लिए पूर्णतः आय के स्तर पर निर्भर करता है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

39. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): बहुआयामी गरीबी सूचकांक की गणना अल्किरे-फोस्टर पद्धति का उपयोग करके की जाती है जो द्वि-सीमा (Dual-cutoff) दृष्टिकोण अपनाती है।
कारण (R): इस पद्धति के अनुसार, किसी व्यक्ति को

Downloaded from www.pdf.tube

बहुआयामी रूप से गरीब माने जाने के लिए पहले विशिष्ट संकेतकों में वंचित होना आवश्यक है, और फिर सामूहिक रूप से भारित संकेतकों के कम से कम एक-तिहाई भाग में वंचित होना आवश्यक है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक ढांचे के तहत, किसी व्यक्ति को "गंभीर बहुआयामी गरीबी" में रहने वाले के रूप में वर्गीकृत किया जाता है यदि उनका वंचना स्कोर कम से कम कितना हो:
(1) 20%
(2) 33.3%
(3) 50%
(4) 75%
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

41. निम्नलिखित में से कौन सा वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक में स्वास्थ्य आयाम का आकलन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले दो संकेतकों की सही पहचान करता है?
(1) जीवन प्रत्याशा और मातृ मृत्यु दर
(2) टीकाकरण और स्वच्छता
(3) पोषण और बाल मृत्यु दर
(4) पेयजल और कैलोरी का सेवन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. निम्नलिखित में से कौन सा वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक में जीवन स्तर के आयाम का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाने वाला संकेतक नहीं है?
(1) इंटरनेट पहुंच
(2) खाना पकाने का ईंधन
(3) बिजली
(4) आवास
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. निम्नलिखित में से कौन सा कथन वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक की भारण प्रणाली (Weighting system) का गलत वर्णन करता है?
(1) तीनों आयामों को समान रूप से 1/3 भार दिया गया है
(2) दो शिक्षा संकेतकों में से प्रत्येक को 1/6 भार दिया गया है
(3) दो स्वास्थ्य संकेतकों में से प्रत्येक को 1/6 भार दिया गया है
(4) जीवन स्तर के छह संकेतकों में से प्रत्येक को 1/12 भार दिया गया है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक में वंचना की सीमाओं (Deprivation cutoffs) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यदि किसी वयस्क या बच्चे को कुपोषित पाया जाता है, तो वह परिवार पोषण के मामले में वंचित है।
II. यदि सर्वेक्षण से पहले के पांच वर्षों में परिवार में किसी बच्चे की मृत्यु हुई है, तो वह परिवार बाल मृत्यु दर के मामले में वंचित है।
III. यदि स्वच्छता सुविधा अन्य परिवारों के साथ साझा की जाती है, तो वह परिवार स्वच्छता के मामले में वंचित है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें:
सूची I: (MPI आयाम)
A. स्वास्थ्य
B. शिक्षा
C. जीवन स्तर
D. जीवन स्तर में व्यक्तिगत संकेतक
सूची II: (सूचकांक में कुल भार)
i. 1/3
ii. 1/3
iii. 1/3
iv. 1/18
विकल्प:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

46. भारत के लिए राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक ढांचे के तहत, हाल के वर्षों में लाखों लोगों को गरीबी से बाहर निकालने के प्राथमिक कारक कौन से क्षेत्र रहे हैं?
(1) सार्वभौमिक इंटरनेट पहुंच और मोबाइल कनेक्टिविटी
(2) मातृ मृत्यु दर में कमी और उच्च शिक्षा
(3) मानकीकृत शहरी आवास और ग्रामीण मजदूरी
(4) पोषण, स्कूली शिक्षा, स्वच्छता और ईंधन पहुंच
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. नीति आयोग द्वारा आधारभूत राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक की गणना के लिए उपयोग किया जाने वाला प्राथमिक डेटा स्रोत है:
(1) राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS)
(2) आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS)
(3) भारत की जनगणना
(4) घरेलू उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
कथन I: नीति आयोग द्वारा विकसित भारत के राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक में बिना किसी परिवर्तन के वैश्विक MPI के समान 10 संकेतक शामिल हैं।
कथन II: नीति आयोग ने राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ तालमेल बिठाने के लिए राष्ट्रीय MPI ढांचे में "मातृ स्वास्थ्य" और "बैंक खाता" संकेतकों को जोड़ा है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. बहुआयामी गरीबी में भारत की प्रगति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की तुलना में गरीबी के अनुपात (Headcount ratio) में तीव्र गिरावट दर्ज की गई है।
II. उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश में बहुआयामी गरीबों की संख्या में सर्वाधिक पूर्ण गिरावट दर्ज की गई।
III. हाल की राष्ट्रीय रिपोर्टों के अनुसार पूरे भारत में गरीबी का प्रसार घटकर एक अंक के प्रतिशत में आ गया है।
IV. राजस्थान उन शीर्ष दस राज्यों में शामिल था जिन्होंने बहुआयामी गरीबों के अनुपात में महत्वपूर्ण गिरावट दर्ज की।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. प्रारंभिक आधारभूत राष्ट्रीय MPI रिपोर्ट के अनुसार, निम्नलिखित राज्यों को उनके बहुआयामी गरीबी हेडकाउंट अनुपात के अवरोही क्रम (अधिक से कम) में व्यवस्थित करें:
I. उत्तर प्रदेश
II. बिहार
III. केरल
IV. झारखंड
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनें:
(1) II, IV, I, III
(2) I, II, IV, III
(3) II, I, IV, III
(4) IV, II, I, III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. वैश्विक भूख सूचकांक (GHI) भूख को 100-बिंदु पैमाने पर मापता है जहां शून्य का स्कोर क्या दर्शाता है?
(1) भूख का उच्चतम संभव स्तर
(2) एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट
(3) शून्य भूख (कोई भूख नहीं)
(4) खाद्य सहायता पर पूर्ण निर्भरता
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. निम्नलिखित में से कौन सा वैश्विक भूख सूचकांक (GHI) के चार घटक संकेतकों में से एक नहीं है?
(1) अल्पपोषण (Undernourishment)
(2) बाल ठिगनापन (Child stunting)
(3) बाल दुबलापन (Child wasting)
(4) मातृ अल्पपोषण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

53. वैश्विक भूख सूचकांक रिपोर्ट किन दो संगठनों द्वारा संयुक्त रुप से प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाती है?
(1) विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ (UNICEF)
(2) खाद्य एवं कृषि संगठन और विश्व खाद्य कार्यक्रम
(3) कन्सर्न वर्ल्डवाइड और वेल्टहंगरहाइल्फ (Welthungerhilfe)
(4) विश्व बैंक और ऑक्सफैम इंटरनेशनल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. वैश्विक भूख सूचकांक (GHI) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसकी गणना मुख्य रुप से खाद्य एवं कृषि संगठन और यूनिसेफ के डेटा का उपयोग करके की जाती है।
II. 'बाल दुबलापन' (Child wasting) उन बच्चों को संदर्भित करता है जिनका वजन उनकी लंबाई के अनुपात में कम होता है।
III. 'बाल ठिगनापन' (Child stunting) उन बच्चों को संदर्भित करता है जिनकी लंबाई उनकी आयु के अनुपात में कम होती है।
IV. 'अल्पपोषण' अपर्याप्त कैलोरी सेवन वाली जनसंख्या के हिस्से को मापता है।
V. भारत लगातार सबसे कम भूख के स्तर वाले शीर्ष 20 देशों में बना हुआ है।
उपर्युक्त में से कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और IV
(2) II, III और V
(3) केवल IV और V
(4) केवल I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें:
सूची I: (GHI संकेतक)
A. अल्पपोषण
B. बाल ठिगनापन
C. बाल दुबलापन
D. बाल मृत्यु दर
सूची II: (मापी गई अंतर्निहित स्थिति)

Click Here to Buy book on Amazon

i. तीव्र कुपोषण (लंबाई के मुकाबले कम वजन)
ii. दीर्घकालिक कुपोषण (आयु के मुकाबले कम लंबाई)
iii. सामान्य जनसंख्या के लिए अपर्याप्त खाद्य आपूर्ति
iv. अस्वस्थ वातावरण और अपर्याप्त पोषण जिसके घातक परिणाम होते हैं

विकल्प:
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. मानव गरीबी सूचकांक (HPI) को पहली बार संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा किस वर्ष की मानव विकास रिपोर्ट में प्रस्तुत किया गया था?
(1) 1990
(2) 1997
(3) 2000
(4) 2010
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. निम्नलिखित में से कौन सा यूएनडीपी द्वारा विकसित HPI-1 और HPI-2 के बीच उचित रूप से अंतर करता है?
(1) ग्रामीण और शहरी गरीबी स्तरों का माप
(2) आय संपत्तियों और तरल पूंजी पर ध्यान केंद्रित करना
(3) विकासशील और उच्च आय वाले ओईसीडी (OECD) देशों के लिए भेद
(4) वार्षिक और दशकीय गणना की आवृत्ति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

58. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
कथन I: मानव गरीबी सूचकांक ने उन्हीं तीन आयामों में वंचनाओं को मापा जिन्हें मानव विकास सूचकांक में मापा जाता था।
कथन II: मानव गरीबी सूचकांक को अंततः बंद कर दिया गया और इसके स्थान पर बहुआयामी गरीबी सूचकांक को लाया गया।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): वैश्विक स्तर पर मानव गरीबी सूचकांक (HPI) को काफी हद तक बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI) द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया है।
कारण (R): मानव गरीबी सूचकांक व्यापक स्तर के औसत (Macro-level averages) का उपयोग करता था और यह पहचान नहीं कर सकता था कि कौन से विशिष्ट व्यक्ति या परिवार कई परस्पर वंचनाओं का सामना कर रहे हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा अपनाए गए गरीबी मापन दृष्टिकोणों के विकास को दर्शाने वाले सही कालानुक्रमिक अनुक्रम को चुनें:
(1) बहुआयामी गरीबी सूचकांक, मानव गरीबी सूचकांक, मानव विकास सूचकांक
(2) मानव विकास सूचकांक, मानव गरीबी सूचकांक, बहुआयामी गरीबी सूचकांक
(3) मानव गरीबी सूचकांक, बहुआयामी गरीबी सूचकांक, मानव विकास सूचकांक
(4) मानव विकास सूचकांक, बहुआयामी गरीबी सूचकांक, मानव गरीबी सूचकांक
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक (IHDI) मानव विकास के स्तर को निर्धारित करता है जब:
(1) लिंग आधारित अवसर अंतरालों का उन्मूलन हो
(2) सबसे गरीब 20% नागरिकों का मूल्यांकन किया जाए
(3) वितरण आधारित असमानताओं को ध्यान में रखा जाए
(4) प्रेषण (Remittances) और विदेशी सहायता कोष को बाहर रखा जाए
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. यदि किसी देश का असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक (IHDI) उसके मानक मानव विकास सूचकांक (HDI) के बिल्कुल बराबर है, तो यह क्या दर्शाता है?
(1) देश में वार्षिक राष्ट्रीय आय शून्य दर्ज की गई है
(2) आयामों के वितरण में पूर्ण समानता विद्यमान है
(3) देश अत्यधिक पूर्ण असमानता का सामना कर रहा है
(4) अधिकतम मानव विकास प्राप्त कर लिया गया है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक (IHDI) आयामों के औसत मूल्यों में कटौती करने के लिए मुख्य रूप से किस गणितीय असमानता माप पर निर्भर करता है?
(1) एटकिंसन असमानता माप (Atkinson inequality measure)
(2) गिनी गुणांक (Gini Coefficient)
(3) थील सूचकांक (Theil Index)
(4) हूवर सूचकांक (Hoover Index)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

64. असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक (IHDI) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. इस सूचकांक का उद्देश्य असमानता के कारण संभावित मानव विकास में होने वाली हानि को दर्ज करना है।

II. उच्च असमानता वाले देशों में, असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक का मूल्य मानक एचडीआई मूल्य की तुलना में काफी कम होता है।

III. यह उनके आंतरिक वितरण की परवाह किए बिना सभी देशों पर एक समान छूट दर लागू करता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें:

सूची I: (विशिष्ट यूएनडीपी सूचकांक)

A. मानक एचडीआई
B. आईएचडीआई (IHDI)
C. जीडीआई (GDI)
D. एमपीआई (MPI)

सूची II: (मुख्य अवधारणा/समायोजन फोकस)

i. मानव विकास उपलब्धियों में लैंगिक अंतराल
ii. घरेलू स्तर पर परस्पर वंचनाएं
iii. असमान वितरण के कारण मानव विकास में हानि
iv. बुनियादी मानव विकास आयामों में औसत उपलब्धियां

विकल्प:

(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. हैप्पी प्लैनेट इंडेक्स (Happy Planet Index) निम्नलिखित में से किन घटकों का उपयोग करके मानव कल्याण और पर्यावरणीय प्रभाव को मापता है?

(1) कल्याण, जीवन प्रत्याशा और पारिस्थितिक पदचिह्न (Ecological footprint)
(2) प्रति व्यक्ति जीडीपी, जीवन प्रत्याशा और कार्बन उत्सर्जन
(3) प्रसन्नता स्कोर, साक्षरता और वनों की कटाई की दर
(4) मानसिक स्वास्थ्य सूचकांक, आय और नवीकरणीय ऊर्जा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट (World Happiness Report) के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) यह मुख्य रूप से 'गैलप वर्ल्ड पोल' के आंकड़ों पर निर्भर करती है
(2) फिनलैंड हाल के वर्षों में रिपोर्ट में लगातार शीर्ष पर रहा है
(3) यह संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाती है
(4) रैंकिंग जीवन मूल्यांकन स्कोर के तीन वर्ष के औसत पर आधारित होती है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

68. विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट में 'व्यक्तिपरक जीवन मूल्यांकन' घटक का आकलन करने के लिए गैलप वर्ल्ड पोल में किस विशिष्ट उपकरण का उपयोग किया जाता है?

(1) मायर्स-ब्रिग्स टाइप इंडिकेटर
(2) रोर्शा परीक्षण
(3) लिकर्ट संतुष्टि पैमाना
(4) कैंट्रिल लैडर (Cantril Ladder)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. यह प्रति व्यक्ति जीडीपी और सामाजिक समर्थन सहित छह प्रमुख चरों का उपयोग करके प्रसन्नता में भिन्नता की व्याख्या करती है।

II. स्वस्थ जीवन प्रत्याशा और जीवन के चुनाव करने की स्वतंत्रता विश्लेषण किए गए मुख्य चरों में से हैं।

III. पूर्वाग्रह को रोकने के लिए उदारता और भ्रष्टाचार की धारणाओं को विश्लेषण से बाहर रखा गया है।

IV. भारत ऐतिहासिक रूप से इस सूचकांक में अपेक्षाकृत निचले स्थान पर रहा है, और प्रायः अपने कुछ पड़ोसियों से पीछे रहा है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

कथन I: हैप्पी प्लैनेट इंडेक्स उन देशों को भारी दंड देता है जिनका पारिस्थितिक पदचिह्न (Ecological footprint) बड़ा है, भले ही उनकी जीवन प्रत्याशा उच्च हो।

कथन II: विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट केवल व्यक्तिपरक कल्याण पर ध्यान केंद्रित करती है और जीडीपी जैसे वस्तुनिष्ठ आर्थिक संकेतकों को पूर्णतः अनदेखा करती है।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

71. भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक (PQLI) 1970 के दशक में किस प्रमुख विद्वान द्वारा विकसित किया गया था?

(1) साइमन कुज़नेट्स

(2) आर्थर लुईस
(3) जॉन मेनार्ड कीन्स
(4) मॉरिस डी. मॉरिस
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. निम्नलिखित में से कौन सा संकेतक भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक (PQLI) का घटक नहीं है?
(1) प्रति व्यक्ति आय
(2) बुनियादी साक्षरता दर
(3) शिशु मृत्यु दर
(4) एक वर्ष की आयु में जीवन प्रत्याशा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक के निर्माता ने जानबूझकर इसकी गणना से सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) को क्यों बाहर रखा?
(1) विकासशील देशों के लिए आय डेटा की कमी
(2) सीमा पार मुद्रास्फीति दरों के कारण उत्पन्न विकृति
(3) आर्थिक विकास का सामाजिक परिणामों में परिवर्तन को न दर्शा पाना
(4) क्रय शक्ति समता माप की अनुपस्थिति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक (PQLI) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसे 1970 के दशक में मॉरिस डी. मॉरिस द्वारा विकसित किया गया था।
II. इसकी गणना इसके तीन घटकों का अभारित औसत (Unweighted average) लेकर की जाती है।
III. यह जन्म के समय जीवन प्रत्याशा के बजाय एक वर्ष की आयु में जीवन प्रत्याशा का उपयोग करता है।
IV. सूचकांक घटकों को 1 से 100 के पैमाने पर रखा गया है, जहां 100 सर्वोत्तम परिणाम को दर्शाता है।
V. इसने आधुनिक आर्थिक आकलनों में मानव विकास सूचकांक को पूर्णतः प्रतिस्थापित कर दिया है।
उपर्युक्त में से कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल V
(4) केवल II, III और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

75. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें:
सूची I: (विद्वान/संस्थान)
A. मॉरिस डी. मॉरिस
B. महबूब उल हक
C. OPHI और यूएनडीपी
D. कन्सर्न वर्ल्डवाइड और वेल्टहंगरहाइल्फ
सूची II: (संबद्ध विकास सूचकांक)
i. मानव विकास सूचकांक
ii. वैश्विक भूख सूचकांक
iii. भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक
iv. बहुआयामी गरीबी सूचकांक
विकल्प:
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' सूचकांक, जो प्रत्यक्ष रूप से व्यवसायों को प्रभावित करने वाले नियमों को मापता था, बंद होने से पहले किस अंतरराष्ट्रीय संगठन द्वारा प्रकाशित किया जाता था?
(1) विश्व आर्थिक मंच
(2) विश्व बैंक समूह
(3) अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष
(4) विश्व व्यापार संगठन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' सूचकांक ने किसी व्यवसाय के जीवन चक्र को विनियमित करने वाले कितने प्राथमिक मानकों या विषयों के स्कोर को एकत्रित किया?
(1) 5
(2) 10
(3) 15
(4) 20
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. निम्नलिखित में से कौन सा 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' सूचकांक में मापा जाने वाला मानक नहीं था?
(1) व्यवसाय शुरु करना
(2) निर्माण परमिट के साथ व्यवहार करना
(3) अनुबंधों को लागू करना
(4) पर्यावरणीय स्थिरता अनुपालन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' रिपोर्ट का प्रकाशन आधिकारिक तौर पर 2021 में बंद कर दिया गया था।
कारण (R): आंतरिक ऑडिट में पिछली रिपोर्टों में विशिष्ट देशों के डेटा हेरफेर के संबंध में डेटा अनियमितताओं और नैतिक चिंताओं का खुलासा हुआ।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

Click Here to Buy book on Amazon

कथन I: 2014 और 2019 के बीच 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' सूचकांक में भारत की रैंकिंग में काफी सुधार हुआ।
कथन II: दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (IBC) की शुरुआत जैसे सुधारों ने भारत के व्यावसायिक वातावरण के मानकों को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

81. वैश्विक नवाचार सूचकांक (Global Innovation Index) प्रतिवर्ष कॉर्नेल विश्वविद्यालय, इनसीड (INSEAD) और किस अंतरराष्ट्रीय संगठन द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित किया जाता है?
(1) विश्व व्यापार संगठन
(2) विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO)
(3) अंतरराष्ट्रीय दूरसंचार संघ
(4) संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

82. वैश्विक नवाचार सूचकांक अपने समग्र स्कोर की गणना किन दो प्राथमिक उप-सूचकांकों के औसत के आधार पर करता है?
(1) नवाचार इनपुट (Innovation Input) और नवाचार आउटपुट (Innovation Output)
(2) वैज्ञानिक आउटपुट और आर्थिक इनपुट
(3) अनुसंधान व्यय और व्यावसायीकरण
(4) पेटेंट पंजीकरण और शैक्षणिक प्रकाशन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

83. हाल के वर्षों में वैश्विक नवाचार सूचकांक में भारत के प्रदर्शन के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) भारत ने वैश्विक स्तर पर लगातार शीर्ष 40 रैंकिंग में स्थान प्राप्त किया है
(2) भारत सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) सेवाओं के निर्यात संकेतक में असाधारण रूप से उत्तम प्रदर्शन करता है
(3) पिछले दशक में भारत की रैंकिंग में निरंतर गिरावट देखी गई है
(4) भारत को निम्न-मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्थाओं के बीच एक 'नवाचार उपलब्धि हासिल करने वाले' देश के रूप में मान्यता प्राप्त है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

84. वैश्विक नवाचार सूचकांक (GII) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह नवाचार को मापने के लिए वस्तुनिष्ठ सांख्यिकीय डेटा और व्यक्तिपरक सर्वेक्षण डेटा दोनों का उपयोग करता है।
II. संस्थान, मानव पूंजी और अनुसंधान, तथा बुनियादी ढांचा 'नवाचार आउटपुट' उप-सूचकांक के स्तंभ हैं।
III. ज्ञान और प्रौद्योगिकी आउटपुट 'नवाचार आउटपुट' उप-सूचकांक के स्तंभ हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

85. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें:
सूची I: (वैश्विक सूचकांक)
A. वैश्विक नवाचार सूचकांक
B. विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट
C. ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सूचकांक
D. मानव विकास सूचकांक
सूची II: (प्रकाशन संस्थान/भागीदार)
i. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम
ii. विश्व बौद्धिक संपदा संगठन
iii. विश्व बैंक समूह
iv. संयुक्त राष्ट्र सतत विकास समाधान नेटवर्क
विकल्प:
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

86. गिनी गुणांक (Gini Coefficient) एक व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला सांख्यिकीय माप है जो किसे दर्शाता है?
(1) आर्थिक विकास की दर
(2) किसी राष्ट्र के भीतर आय या धन की असमानता
(3) किसी मुद्रा की क्रय शक्ति समता
(4) पर्यावरणीय क्षरण का कुल मूल्य
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

87. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
कथन I: 0 का गिनी गुणांक जनसंख्या के भीतर पूर्ण आय समानता को दर्शाता है।
कथन II: 1 का गिनी गुणांक पूर्ण आय असमानता को दर्शाता है, जहां एक ही व्यक्ति के पास संपूर्ण आय होती है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

88. ज्यामितीय रूप से, गिनी गुणांक की गणना लोरेंज़ वक्र और पूर्ण समानता की रेखा के बीच के क्षेत्रफल और किस क्षेत्र के अनुपात के रूप में की जाती है?
(1) पूर्ण समानता की रेखा के नीचे का कुल क्षेत्रफल
(2) लोरेंज़ वक्र के नीचे का कुल क्षेत्रफल
(3) पूर्ण असमानता की रेखा के नीचे का कुल क्षेत्रफल
(4) संपूर्ण ग्राफ का कुल क्षेत्रफल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

89. गिनी गुणांक के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसका उपयोग आय असमानता और धन असमानता दोनों को मापने के लिए किया जा सकता है।
II. घटता हुआ गिनी गुणांक इंगित करता है कि आय का वितरण अधिक असमान होता जा रहा है।
III. यह 'गुमनामी के सिद्धांत' (Principle of anonymity) को संतुष्ट करता है, जिसका अर्थ है कि इससे अंतर नहीं पड़ता कि उच्च और निम्न आय वाले लोग कौन हैं।
IV. यह प्रत्यक्षतः लोरेंज़ वक्र से व्युत्पन्न होता है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

90. चार राष्ट्रों के निम्नलिखित काल्पनिक गिनी गुणांक मूल्यों को सबसे समान आय वितरण से सबसे असमान आय वितरण के क्रम में व्यवस्थित करें:
I. 0.85
II. 0.25
III. 0.45
IV. 0.65
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनें:
(1) II, III, IV, I
(2) I, IV, III, II
(3) II, IV, III, I
(4) IV, III, II, I
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

91. आय वितरण का प्रतिनिधित्व करने वाले लोरेंज़ वक्र ग्राफ में, x-अक्ष और y-अक्ष क्रमशः किसे दर्शाते हैं?
(1) संचयी कुल आय और संचयी जनसंख्या
(2) कुल जनसंख्या का आकार और प्रति व्यक्ति आय
(3) आय के दशमक (Deciles) और पूर्ण जीडीपी मूल्य
(4) संचयी जनसंख्या और संचयी आय
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

92. लोरेंज़ वक्र के ग्राफिकल प्रतिनिधित्व में, 45-डिग्री की विकर्ण रेखा क्या दर्शाती है?
(1) पूर्ण असमानता की रेखा
(2) पूर्ण समानता की रेखा
(3) गरीबी रेखा
(4) मध्यम आय सीमा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

93. लोरेंज़ वक्र के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) इसे मैक्स ओ. लोरेंज़ द्वारा 1905 में विकसित किया गया था
(2) वक्र विकर्ण रेखा से जितना दूर झुकता है, असमानता उतनी ही अधिक होती है
(3) सामान्य आर्थिक परिस्थितियों में वक्र 45-डिग्री की विकर्ण रेखा से ऊपर जा सकता है
(4) यह धन या आय वितरण का एक दृश्य प्रतिनिधित्व प्रदान करता है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

94. लोरेंज़ वक्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह जनसंख्या के संचयी प्रतिशत को आय के संचयी प्रतिशत के विरुद्ध रेखांकित करता है।
II. एक पूर्णतः समान समाज में लोरेंज़ वक्र 45-डिग्री रेखा के साथ पूर्णतः मेल खाएगा।
III. लोरेंज़ वक्र और पूर्ण समानता की रेखा के बीच के क्षेत्रफल का उपयोग गिनी गुणांक की गणना के लिए किया जाता है।
IV. यदि देश A के लिए लोरेंज़ वक्र देश B की तुलना में विकर्ण रेखा के अधिक समीप है, तो देश A में असमानता अधिक है।
V. यह केवल वितरण को दर्शाता है और पूर्ण आय मूल्य प्रदान नहीं करता है।
उपर्युक्त में से कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और V
(3) केवल IV
(4) I, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

95. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें:
सूची I: (असमानता अवधारणा)
A. 0 का गिनी गुणांक
B. 1 का गिनी गुणांक
C. लोरेंज़ वक्र विकर्ण के साथ मेल खाता है
D. लोरेंज़ वक्र अत्यधिक झुकता है
सूची II: (व्याख्या)
i. उच्च आय असमानता
ii. पूर्ण आय असमानता
iii. पूर्ण समानता वितरण
iv. पूर्ण आय समानता
विकल्प:
(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i

Downloaded from www.pdf.tube

(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

96. भारत में उप-राष्ट्रीय स्तर पर समग्र विकास और वैश्विक लक्ष्यों की दिशा में प्रगति को मापने के लिए, नीति आयोग नियमित रूप से निम्नलिखित में से कौन सा सूचकांक प्रकाशित करता है?
(1) राज्य मानव विकास सूचकांक
(2) एसडीजी (SDG) इंडिया इंडेक्स
(3) उप-राष्ट्रीय सकल प्रसन्नता सूचकांक
(4) राष्ट्रीय जीवन गुणवत्ता सूचकांक
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

97. नीति आयोग एसडीजी इंडिया इंडेक्स वर्गीकरण में, 65 और 99 के बीच स्कोर वाले राज्य को किस श्रेणी में रखा गया है?
(1) आकांक्षी (Aspirant)
(2) अच्छा प्रदर्शन करने वाला (Performer)
(3) अग्रणी (Front Runner)
(4) लक्ष्य प्राप्त करने वाला (Achiever)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

98. निम्नलिखित में से कौन सा नीति आयोग एसडीजी इंडिया इंडेक्स में राज्यों के लिए निर्धारित प्रदर्शन श्रेणी नहीं है?
(1) आकांक्षी (Aspirant)
(2) अच्छा प्रदर्शन करने वाला (Performer)
(3) अग्रणी (Front Runner)
(4) पिछड़ा (Laggard)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

99. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): भारत केवल वैश्विक विकास रिपोर्टों पर निर्भर रहने के बजाय राष्ट्रीय MPI और एसडीजी इंडिया इंडेक्स जैसे अनुकूलित राष्ट्रीय सूचकांकों पर विशेष बल देता है।
कारण (R): वैश्विक रिपोर्टों में राष्ट्रीय औसत प्रायः भारतीय राज्यों में गंभीर क्षेत्रीय असमानताओं को छिपा देते हैं, और स्थानीय सूचकांक लक्षित उप-राष्ट्रीय नीतिगत हस्तक्षेपों को सुगम बनाते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

100. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
कथन I: विकास को मापने के भारत के दृष्टिकोण में जीडीपी वृद्धि जैसे पूर्ण मानक और राष्ट्रीय MPI जैसे बहुआयामी पहलू दोनों सम्मिलित हैं।
कथन II: भारत में राज्य गरीबी उन्मूलन योजनाओं के लिए बजट आवंटन का मार्गदर्शन करने हेतु बहुआयामी मापदंडों का उपयोग करते हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

www.nodia.in

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) यह जनसंख्या के बीच आय के वितरण को नहीं दर्शाता है
सकल घरेलू उत्पाद केवल किसी देश की भौगोलिक सीमा के भीतर उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के कुल मौद्रिक मूल्य को मापता है। इसकी एक प्रमुख सीमा यह है कि यह समाज में व्याप्त आय की असमानता पर ध्यान नहीं देता है। एक राष्ट्र सांख्यिकीय रूप से प्रगति कर सकता है, लेकिन यदि धन का संकेंद्रण केवल कुछ ही हाथों में है, तो यह आम नागरिकों की वास्तविक समृद्धि को सही ढंग से प्रतिबिंबित नहीं करता है।

2. (1) पर्यावरणीय आपदाओं के निवारण हेतु सफाई की लागत
आर्थिक गणना के दौरान सकल घरेलू उत्पाद केवल बाजार में होने वाले औपचारिक लेन-देन के मूल्य को दर्ज करता है। पर्यावरणीय आपदाओं के बाद होने वाली सफाई की लागत को इसमें इसलिए शामिल किया जाता है क्योंकि इसमें सेवाओं और संसाधनों का मौद्रिक विनिमय होता है। हालांकि यह गतिविधि सतत विकास के लिए नकारात्मक है, फिर भी इसे उत्पादन के मूल्य में जोड़ा जाता है क्योंकि यह तात्कालिक आर्थिक गतिविधियों और व्यय को बढ़ाने का कार्य करती है।

3. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद को औसत आय के रूप में देखा जाता है, लेकिन यह आय की असमानता के कारण जीवन स्तर का पूरी तरह विश्वसनीय संकेतक नहीं है। दूसरी ओर, पारंपरिक गणना में प्राकृतिक संसाधनों के दोहन या पर्यावरणीय क्षति को दर्ज नहीं किया जाता है। इसलिए, पहला कथन औसत की सीमाओं के कारण गलत है, जबकि दूसरा कथन आर्थिक लेखांकन की वर्तमान पद्धति के अनुसार सही है, जो केवल बाजार मूल्य पर केंद्रित है।

4. (2) केवल I और III
आर्थिक विकास के माप के रूप में सकल घरेलू उत्पाद की कई सीमाएं हैं। यह जनसंख्या के विभिन्न वर्गों के बीच आय के वितरण का कोई विवरण प्रदान नहीं करता है। इसके अतिरिक्त, घरों में किए जाने वाले अवैतनिक कार्यों और सेवाओं के मूल्य को इसकी गणना से बाहर रखा जाता है। यह प्राकृतिक पूंजी के मूल्यह्रास का भी सही मूल्यांकन नहीं करता है, इसलिए केवल पहला और तीसरा कथन इसकी सीमाओं को बिल्कुल सही ढंग से दर्शाता है।

5. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद को मुद्रास्फीति के प्रभाव को दूर करने के लिए सामान्य मूल्य स्तर के साथ समायोजित किया जाता है। प्रति व्यक्ति आय अक्सर समाज में विद्यमान गंभीर असमानताओं को छिपा देती है क्योंकि यह केवल औसत दर्शाती है। हरित सकल घरेलू उत्पाद की गणना में उत्पादन के दौरान होने वाली पर्यावरणीय क्षति की लागत को घटाया जाता है। नाममात्र का सकल घरेलू उत्पाद चालू कीमतों पर आधारित होता है और यह मुद्रास्फीति को समायोजित नहीं करता है।

6. (2) महबूब उल हक
मानव विकास सूचकांक की अवधारणा का विकास मुख्य रूप से पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब उल हक द्वारा किया गया था। उन्होंने विकास के मापन को केवल आय से हटाकर मानव कल्याण पर केंद्रित किया। उनके इस कार्य में भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने भी महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया था। इस सूचकांक को पहली बार 1990 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा अपनी आधिकारिक रिपोर्ट के माध्यम से वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया गया था।

7. (4) इसे विश्व बैंक के तत्वावधान में विकसित किया गया था
मानव विकास सूचकांक का निर्माण जन-केंद्रित नीतियों को बढ़ावा देने के लिए किया गया था ताकि विकास का मूल्यांकन केवल राष्ट्रीय आय के आधार पर न हो। इसकी सैद्धांतिक नींव अमर्त्य सेन के 'क्षमता दृष्टिकोण' पर आधारित है। इसे 1990 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा शुरु किया गया था, न कि विश्व बैंक द्वारा। यह सूचकांक मानव जीवन के बुनियादी आयामों में होने वाली औसत प्रगति को मापने का एक महत्वपूर्ण वैश्विक पैमाना है।

8. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम वर्ष 1990 से नियमित रूप से वार्षिक मानव विकास रिपोर्ट जारी करता आ रहा है। मानव विकास सूचकांक इसी रिपोर्ट का एक अभिन्न हिस्सा है जिसे मानव विकास के तीन बुनियादी आयामों में प्रगति को मापने के लिए बनाया गया है। इन आयामों में स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर शामिल हैं। यह सूचकांक देशों को उनकी उपलब्धियों के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत करने का एक मानक ढांचा प्रदान करता है।

9. (3) केवल I, II और IV
मानव विकास सूचकांक को महबूब उल हक द्वारा विकसित किया गया था, जिसमें अमर्त्य सेन ने सैद्धांतिक योगदान दिया था। इसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना था कि केवल आर्थिक वृद्धि ही स्वतः मानव कल्याण में परिवर्तित नहीं होती है। यह रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रकाशित की जाती है, न कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा। अतः पहले, दूसरे और चौथे कथन इसकी उत्पत्ति और इसके पीछे की वैचारिक अवधारणा का बिल्कुल सटीक वर्णन करते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

10. (1) सकल घरेलू उत्पाद, भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक, मानव विकास सूचकांक, बहुआयामी गरीबी सूचकांक
विकास के मापों का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया रही है। सकल घरेलू उत्पाद का उपयोग सबसे पहले आर्थिक विकास मापने के लिए शुरु हुआ। इसके बाद 1970 के दशक में भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक प्रस्तुत किया गया। 1990 में संयुक्त राष्ट्र ने मानव विकास सूचकांक की शुरुआत की, जिसने विकास की परिभाषा बदल दी। अंततः 2010 में अधिक व्यापक विश्लेषण के लिए बहुआयामी गरीबी सूचकांक पेश किया गया, जो गरीबी के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पहलुओं को दर्शाता है।

11. (4) स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर
मानव विकास सूचकांक को तीन मुख्य आधारों पर मापा जाता है जो मानव जीवन की गुणवत्ता को निर्धारित करते हैं। पहला आयाम स्वास्थ्य है, जिसे जन्म के समय जीवन प्रत्याशा द्वारा देखा जाता है। दूसरा आयाम ज्ञान या शिक्षा है, जो साक्षरता और स्कूली शिक्षा पर आधारित है। तीसरा आयाम जीवन स्तर है, जिसे क्रय शक्ति के आधार पर मापा जाता है। ये तीनों आयाम मिलकर किसी देश के समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास का स्तर बताते हैं।

12. (2) शिशु मृत्यु दर
मानव विकास सूचकांक की गणना में तीन विशिष्ट संकेतकों का उपयोग किया जाता है। स्वास्थ्य के लिए जन्म के समय जीवन प्रत्याशा को मानक माना जाता है। शिक्षा आयाम के मूल्यांकन हेतु स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष और औसत वर्ष देखे जाते हैं। जीवन स्तर को मापने के लिए प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय का प्रयोग किया जाता है। शिशु मृत्यु दर का प्रत्यक्ष उपयोग इस सूचकांक में नहीं होता है, हालांकि यह स्वास्थ्य का एक अन्य महत्वपूर्ण सहायक संकेतक है।

13. (3) आय की घटती सीमांत उपयोगिता को ध्यान में रखने के लिए
अर्थशास्त्र के अनुसार, जैसे-जैसे आय बढ़ती है, उसकी अतिरिक्त इकाई से प्राप्त होने वाली संतुष्टि या सीमांत उपयोगिता कम होती जाती है। मानव विकास सूचकांक में आय को लघुगणक के रूप में रूपांतरित किया जाता है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि बहुत उच्च आय का मानव विकास पर प्रभाव सीमित होता है। यह विधि सुनिश्चित करती है कि अत्यधिक धनी देशों की आय उनके समग्र स्कोर को अवास्तविक रूप से बहुत ऊपर न ले जाए और संतुलन बना रहे।

14. (3) केवल IV
मानव विकास सूचकांक के आयामों की गणना में विशिष्ट मानकों का पालन किया जाता है। स्वास्थ्य को जीवन प्रत्याशा से और शिक्षा को स्कूली शिक्षा के वर्षों से मापा जाता है। समग्र सूचकांक के लिए गुणोत्तर माध्य का उपयोग होता है। जीवन स्तर के आयाम को मापने के लिए प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय का उपयोग होता है, न कि सकल घरेलू उत्पाद का। इसलिए, चौथा कथन गलत है क्योंकि वह आय के मापन के गलत आधार का उल्लेख करता है।

15. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
मानव विकास के स्वास्थ्य आयाम को जन्म के समय जीवन प्रत्याशा के माध्यम से मापा जाता है। शिक्षा के स्तर को समझने के लिए वयस्कों के संदर्भ में स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष और बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्षों का उपयोग किया जाता है। एक सभ्य जीवन स्तर का आकलन करने हेतु प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय को आधार बनाया जाता है। यह वर्गीकरण विभिन्न आयामों और उनके संबंधित संकेतकों के बीच सही संबंध को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

16. (2) 18 वर्ष और 15 वर्ष
मानव विकास सूचकांक की गणना के लिए शिक्षा सूचकांक में विशिष्ट अधिकतम लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्षों के लिए अधिकतम सीमा 18 वर्ष रखी गई है, जो उच्च शिक्षा तक की पूर्ण अवधि को दर्शाती है। वहीं, 25 वर्ष से अधिक आयु के वयस्कों के लिए स्कूली शिक्षा के औसत वर्षों का अधिकतम लक्ष्य-मान 15 वर्ष निर्धारित किया गया है। ये मान विभिन्न देशों के शैक्षिक प्रदर्शन को सामान्य करने में मदद करते हैं।

17. (2) एचडीआई स्कोर 1 से 100 के बीच होता है
मानव विकास सूचकांक का मूल्य हमेशा 0 और 1 के बीच होता है, जहां 1 सर्वोत्तम स्थिति को दर्शाता है। जीवन प्रत्याशा सूचकांक के लिए अधिकतम आयु 85 वर्ष और न्यूनतम 20 वर्ष निर्धारित है। सकल राष्ट्रीय आय की गणना करते समय विभिन्न देशों की मुद्रा की क्रय शक्ति समता को ध्यान में रखा जाता है। अतः यह कहना गलत है कि सूचकांक 1 से 100 के बीच होता है, क्योंकि यह एक दशमलव आधारित अनुपातिक स्कोर होता है।

18. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
मानव विकास सूचकांक के लिए आय माप में सकल राष्ट्रीय आय का उपयोग किया जाता है क्योंकि यह देश के निवासियों द्वारा वास्तव में अर्जित आय को दर्शाता है। इसमें घरेलू उत्पादन के साथ-साथ विदेशों से प्राप्त होने वाली शुद्ध आय भी शामिल होती है। विदेशों में काम करने वाले नागरिकों द्वारा भेजे गए धन प्रेषण भी सकल राष्ट्रीय आय का हिस्सा होते हैं। इसलिए, ये दोनों कथन आय की गणना और इसके घटकों के संबंध में पूरी तरह सटीक हैं।

19. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मानव विकास सूचकांक की गणना में गुणोत्तर माध्य का उपयोग इसलिए किया जाता है क्योंकि यह आयामों के बीच असंतुलन को दंडित करता है। यदि कोई देश केवल एक आयाम, जैसे आय में बहुत अच्छा है लेकिन स्वास्थ्य में बहुत खराब, तो गुणोत्तर माध्य उसका कुल स्कोर कम कर देगा। यह पद्धति सुनिश्चित करती है कि सभी क्षेत्रों में संतुलित विकास हो। समांतर माध्य की तुलना में यह विधि अधिक सटीक है क्योंकि यह असंतुलन को उजागर करती है।

NODIA

20. (4) न्यूनतम-अधिकतम स्केलिंग (Min-Max scaling)
मानव विकास सूचकांक के विभिन्न घटकों की इकाइयां अलग-अलग होती हैं, जैसे वर्ष और मुद्रा मूल्य। इन्हें एक समान पैमाने पर लाने के लिए न्यूनतम-अधिकतम मापन तकनीक का उपयोग किया जाता है। इस विधि के तहत, प्रत्येक संकेतक के वास्तविक मूल्य को उसके निर्धारित न्यूनतम और अधिकतम लक्ष्य-मानों के आधार पर 0 से 1 के बीच एक स्कोर में बदल दिया जाता है। इसके बाद ही तीनों आयामों का अंतिम औसत निकालकर समग्र सूचकांक प्राप्त किया जाता है।

21. (2) मध्यम मानव विकास
संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के मानकों के अनुसार, देशों को उनके स्कोर के आधार पर चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है। भारत का वर्तमान मानव विकास सूचकांक मूल्य उसे मध्यम मानव विकास की श्रेणी में रखता है। हालांकि भारत ने पिछले दशकों में स्वास्थ्य, शिक्षा और आय के मानकों पर निरंतर सुधार किया है, लेकिन वैश्विक तुलना में यह अभी भी उच्च श्रेणियों से पीछे है। यह श्रेणी देश की वर्तमान सामाजिक-आर्थिक स्थिति को दर्शाती है।

22. (2) भारत में स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष बिना किसी वृद्धि के स्थिर रहे हैं
पिछले तीन दशकों में भारत ने मानव विकास के लगभग सभी संकेतकों में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की है। जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में सुधार हुआ है और प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय में भी निरंतर बढ़ोतरी देखी गई है। यह दावा करना गलत है कि स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष स्थिर रहे हैं, क्योंकि शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर प्रयासों और बढ़ती जागरुकता के कारण इन वर्षों में भी क्रमिक और महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की गई है।

23. (4) श्रीलंका
दक्षिण एशियाई पड़ोसियों में श्रीलंका ने ऐतिहासिक रुप से मानव विकास के संकेतकों पर भारत की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में लंबे समय से किए गए निवेश के कारण श्रीलंका लगातार उच्च मानव विकास श्रेणी में बना रहा है। पाकिस्तान, नेपाल और म्यांमार जैसे अन्य पड़ोसी देश सामान्यतः भारत के समान या उससे नीचे की श्रेणियों में आते हैं। श्रीलंका की यह उपलब्धि बेहतर सामाजिक बुनियादी ढांचे के कारण संभव हुई है।

24. (2) केवल II और III
भारत वर्तमान में मध्यम मानव विकास श्रेणी में आता है, न कि उच्च श्रेणी में। कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न स्वास्थ्य संकट और आर्थिक व्यवधानों के चलते भारत सहित कई देशों के स्कोर में अस्थायी गिरावट आई थी। भारत में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में पिछले दशकों में काफी सुधार हुआ है और यह अब 65 वर्ष के स्तर को पार कर चुकी है। अतः दूसरा और तीसरा कथन भारत के विकास रुझानों के संबंध में सही जानकारी देते हैं।

25. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
नॉर्वे को वैश्विक स्तर पर अत्यधिक उच्च मानव विकास श्रेणी वाले देशों में गिना जाता है। भारत अपनी वर्तमान प्रगति के आधार पर मध्यम मानव विकास श्रेणी में स्थान रखता है। श्रीलंका ने दक्षिण एशिया में बेहतर प्रदर्शन करते हुए उच्च मानव विकास की श्रेणी प्राप्त की है। दूसरी ओर, नाइजर जैसे अफ्रीकी देश अपनी गंभीर चुनौतियों के कारण अभी भी निम्न मानव विकास श्रेणी में आते हैं। यह मिलान राष्ट्रों के विकास स्तरों की वास्तविक स्थिति स्पष्ट करता है।

26. (1) महिला एचडीआई का पुरुष एचडीआई से अनुपात निकाल कर
लिंग विकास सूचकांक का मुख्य उद्देश्य मानव विकास की उपलब्धियों में महिलाओं और पुरुषों के बीच के अंतर को मापना है। इसकी गणना करने के लिए पहले महिलाओं के लिए अलग से और पुरुषों के लिए अलग से सूचकांक निकाला जाता है। इसके बाद महिला स्कोर को पुरुष स्कोर से विभाजित करके अनुपात प्राप्त किया जाता है। यह सूचकांक स्पष्ट करता है कि किसी देश में विकास के लाभ दोनों लिंगों तक कितनी समानता के साथ पहुँच रहे हैं।

27. (2) 1995
संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने लैंगिक मुद्दों को विकास के मुख्य ढांचे में शामिल करने के लिए 1995 की मानव विकास रिपोर्ट में लिंग विकास सूचकांक को पहली बार प्रस्तुत किया था। इस पहल का उद्देश्य यह दिखाना था कि कोई भी समाज तब तक वास्तव में विकसित नहीं हो सकता जब तक कि वह अपनी आधी आबादी यानी महिलाओं के विकास पर ध्यान न दे। तब से यह सूचकांक लैंगिक समानता की प्रगति मापने का प्रमुख उपकरण है।

28. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
लिंग विकास सूचकांक मानक मानव विकास सूचकांक के उन्हीं तीन बुनियादी आयामों का उपयोग करता है, जिनमें स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर शामिल हैं। यह सूचकांक इन तीनों क्षेत्रों में लैंगिक असमानता को पकड़ने के लिए महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग आंकड़ों का विश्लेषण करता है। विशेष रुप से जीवन स्तर के लिए दोनों लिंगों की अनुमानित अर्जित आय की गणना अलग से की जाती है। इस प्रकार, ये दोनों कथन इस सूचकांक की संरचना को सही ढंग से स्पष्ट करते हैं।

29. (3) केवल I, III और IV
लिंग विकास सूचकांक में 1.000 का मूल्य पूर्ण लैंगिक समानता का प्रतीक है। यह देशों को समानता से उनके विचलन के आधार पर पांच अलग-अलग समूहों में वर्गीकृत करता है। गणना के लिए जीवन प्रत्याशा और शिक्षा के लिंग-विभाजित आंकड़ों का प्रयोग किया जाता है। हालांकि, यह सूचकांक प्रत्यक्ष रुप से संसद में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का मापन नहीं करता है, क्योंकि यह कार्य लैंगिक असमानता सूचकांक द्वारा किया जाता है। अतः पहला, तीसरा और चौथा कथन सही हैं।

NODIA

30. (2) III, IV, I, II
संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा सूचकांकों के प्रकाशन का एक निश्चित ऐतिहासिक क्रम है। सबसे पहले 1990 में मानव विकास सूचकांक को पेश किया गया था। इसके बाद 1995 में लिंग विकास सूचकांक को लाया गया। वर्ष 1997 में पहली बार मानव गरीबी सूचकांक को रिपोर्ट में शामिल किया गया था। अंत में, 2010 में अधिक सटीक मापन के लिए बहुआयामी गरीबी सूचकांक प्रस्तुत किया गया। यह क्रम वैश्विक विकास मापन की बदलती प्राथमिकताओं को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

31. (1) प्रजनन स्वास्थ्य, सशक्तीकरण और श्रम बाज़ार भागीदारी
लैंगिक असमानता सूचकांक मानव विकास में महिलाओं और पुरुषों के बीच होने वाली हानि को तीन महत्वपूर्ण आयामों के माध्यम से मापता है। प्रजनन स्वास्थ्य को मातृ मृत्यु और किशोर जन्म दर से देखा जाता है। सशक्तीकरण का मूल्यांकन संसदीय प्रतिनिधित्व और शैक्षिक स्तर के आधार पर होता है। श्रम बाज़ार भागीदारी को दोनों लिंगों की कार्यबल में उपस्थिति के माध्यम से मापा जाता है। ये तीनों आयाम मिलकर समाज में व्याप्त लैंगिक भेदभाव की गहराई को प्रदर्शित करते हैं।

32. (2) जन्म के समय महिला जीवन प्रत्याशा
लैंगिक असमानता सूचकांक में स्वास्थ्य आयाम के लिए विशेष रूप से प्रजनन स्वास्थ्य से संबंधित संकेतकों का उपयोग किया जाता है। इसमें मातृ मृत्यु अनुपात और किशोर जन्म दर को शामिल किया जाता है ताकि महिलाओं की विशिष्ट स्वास्थ्य चुनौतियों को समझा जा सके। सशक्तीकरण के लिए संसदीय सीटों और शिक्षा के स्तर को देखा जाता है। जन्म के समय महिला जीवन प्रत्याशा का उपयोग मानक सूचकांकों में होता है, लेकिन इसे इस विशिष्ट सूचकांक की गणना में शामिल नहीं किया जाता है।

33. (2) पूर्ण लैंगिक समानता
लैंगिक असमानता सूचकांक में स्कोर की व्याख्या अन्य सूचकांकों से भिन्न होती है। इसमें 0 का मान उस आदर्श स्थिति को दर्शाता है जहां पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई असमानता नहीं है, यानी पूर्ण लैंगिक समानता प्राप्त कर ली गई है। इसके विपरीत, 1 का मान अधिकतम लैंगिक असमानता का संकेत देता है। यह स्कोर जितना कम होगा, उस देश में लैंगिक भेदभाव के कारण होने वाली मानवीय विकास की हानि उतनी ही कम मानी जाती है और स्थिति बेहतर होती है।

34. (3) केवल IV
लैंगिक असमानता सूचकांक के विभिन्न घटक समानता और सशक्तीकरण के पहलुओं को मापते हैं। श्रम बाज़ार आयाम को केवल पुरुषों और महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी दर के आधार पर मापा जाता है, न कि उनके बीच होने वाले वेतन अंतराल के द्वारा। चूंकि वेतन अंतराल का डेटा वैश्विक स्तर पर समान रूप से उपलब्ध नहीं है, इसलिए इसे इस सूचकांक में शामिल नहीं किया गया है। अन्य सभी कथन इस सूचकांक के उद्देश्यों और संकेतकों का सही वर्णन करते हैं।

35. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
मानव विकास सूचकांक प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय को एक प्रमुख आधार मानता है। लैंगिक असमानता सूचकांक में किशोर जन्म दर को प्रजनन स्वास्थ्य के संकेतक के रूप में उपयोग किया जाता है। बहुआयामी गरीबी सूचकांक में घरेलू स्तर पर खाना पकाने के ईंधन से वंचना जैसे मानकों को देखा जाता है। लिंग विकास सूचकांक मूल रूप से महिला और पुरुष सूचकांकों के बीच के अनुपात को व्यक्त करता है। यह मिलान विकास मापन के विभिन्न दृष्टिकोणों को स्पष्ट करता है।

36. (4) ऑक्सफोर्ड पावर्टी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट इनिशिएटिव
वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक का विकास संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम और ऑक्सफोर्ड पावर्टी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट इनिशिएटिव के बीच एक संयुक्त सहयोग का परिणाम है। इस साझेदारी ने गरीबी को केवल आय के बजाय स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर के माध्यम से व्यापक रूप से देखने का तरीका विकसित किया। यह सूचकांक 2010 से प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जा रहा है और दुनिया भर में तीव्र वंचनाओं की पहचान करने के लिए एक विश्वसनीय वैश्विक मानक माना जाता है।

37. (2) 2010
वर्ष 2010 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने मानव गरीबी सूचकांक के पुराने मॉडल को हटाकर वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक की शुरुआत की थी। इसका मुख्य कारण यह था कि पुराना सूचकांक केवल औसत स्तर की वंचनाओं को मापता था, जबकि नया सूचकांक व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर एक साथ होने वाली विभिन्न वंचनाओं को दर्ज करने में सक्षम है। यह बदलाव गरीबी मापन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रगति थी जिसने नीति-निर्माण के लिए सटीक डेटा प्रदान किया।

38. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
बहुआयामी गरीबी सूचकांक की विशेषता यह है कि यह उन कई वंचनाओं को एक साथ मापता है जिनका सामना एक ही परिवार स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर के क्षेत्रों में करता है। यह सूचकांक केवल आय पर निर्भर रहने के बजाय गैर-आय संकेतकों पर ध्यान केंद्रित करता है क्योंकि केवल आय से गरीबी की पूरी तस्वीर स्पष्ट नहीं होती है। इसलिए, पहला कथन इसके बुनियादी सिद्धांत को सही बताता है, जबकि दूसरा कथन इसकी कार्यप्रणाली के संबंध में गलत है।

39. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बहुआयामी गरीबी सूचकांक की गणना अल्किरे-फोस्टर पद्धति पर आधारित है, जो यह निर्धारित करने के लिए दोहरे कट-ऑफ का उपयोग करती है कि कौन गरीब है। पहले, व्यक्ति को दस विशिष्ट संकेतकों में से प्रत्येक में उसकी स्थिति के आधार पर परखा जाता है। इसके बाद, यदि उसके कुल भारित वंचनाओं का योग 33.3% या उससे अधिक होता है, तो उसे आधिकारिक तौर पर बहुआयामी रूप से गरीब माना जाता है। यह वैज्ञानिक पद्धति गरीबी की तीव्रता का सटीक आकलन करती है।

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

40. (3) 50%
बहुआयामी गरीबी सूचकांक के अंतर्गत गरीबी की गंभीरता को मापने के लिए अलग-अलग स्तर निर्धारित किए गए हैं। यदि किसी व्यक्ति का भारित वंचना स्कोर 33.3% और 50% के बीच है, तो वह बहुआयामी गरीबी की श्रेणी में आता है। हालांकि, यदि यह स्कोर 50% या उससे अधिक हो जाता है, तो उस व्यक्ति को "गंभीर बहुआयामी गरीबी" में रहने वाला माना जाता है। यह वर्गीकरण उन समूहों की पहचान करने में मदद करता है जिन्हें तत्काल सरकारी हस्तक्षेप की सर्वाधिक आवश्यकता है।

41. (3) पोषण और बाल मृत्यु दर
वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक में स्वास्थ्य के आयाम का मूल्यांकन करने के लिए दो महत्वपूर्ण संकेतकों का चयन किया गया है। पहला संकेतक 'पोषण' है, जो यह देखता है कि परिवार का कोई भी सदस्य कुपोषित तो नहीं है। दूसरा संकेतक 'बाल मृत्यु दर' है, जो पिछले पांच वर्षों के दौरान परिवार में किसी बच्चे की मृत्यु की घटना को दर्ज करता है। ये दोनों मिलकर परिवार के बुनियादी स्वास्थ्य और जीवन की सुरक्षा की स्थिति को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करते हैं।

42. (1) इंटरनेट पहुंच
जीवन स्तर के आयाम को मापने के लिए इस सूचकांक में छह संकेतकों का उपयोग किया जाता है जो दैनिक जीवन की बुनियादी जरूरतों से जुड़े हैं। इनमें खाना पकाने का ईंधन, स्वच्छता, पेयजल, बिजली, आवास और संपत्ति का स्वामित्व शामिल हैं। हालांकि इंटरनेट पहुंच आधुनिक युग में महत्वपूर्ण है, लेकिन इसे वर्तमान में वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक के मुख्य संकेतकों में शामिल नहीं किया गया है। यह सूचकांक मुख्य रूप से मानव जीवन के लिए आवश्यक भौतिक बुनियादी ढांचे पर केंद्रित है।

43. (4) जीवन स्तर के छह संकेतकों में से प्रत्येक को 1/12 भार दिया गया है
बहुआयामी गरीबी सूचकांक की भारण प्रणाली के अनुसार स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर तीनों आयामों को 1/3 का समान भार दिया गया है। शिक्षा और स्वास्थ्य के दो-दो संकेतकों में से प्रत्येक को 1/6 भार मिलता है। जीवन स्तर के आयाम में कुल छह संकेतक होते हैं, इसलिए प्रत्येक व्यक्तिगत संकेतक को 1/18 भार दिया जाता है ताकि उस आयाम का कुल योग 1/3 बना रहे। अतः चौथा कथन भार के वितरण के संबंध में गणितीय रूप से गलत है।

44. (4) I, II और III
वंचना की सीमाओं के अनुसार, यदि परिवार का कोई भी सदस्य कुपोषित है, तो पूरा परिवार पोषण के मामले में वंचित माना जाता है। इसी तरह, सर्वेक्षण से पहले पांच वर्षों में हुई किसी भी बच्चे की मृत्यु उस परिवार को बाल मृत्यु दर में वंचित श्रेणी में डाल देती है। स्वच्छता के लिए, यदि सुविधा अधूरी है या अन्य परिवारों के साथ साझा की जाती है, तो उसे वंचना माना जाता है। ये तीनों कथन इस सूचकांक के तहत गरीबी की पहचान करने वाले मानकों का वर्णन करते हैं।

45. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
बहुआयामी गरीबी सूचकांक की संरचना में संतुलन बनाए रखने के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर के प्रत्येक मुख्य आयाम को कुल स्कोर का एक-तिहाई भाग या 1/3 भार प्रदान किया गया है। जीवन स्तर के आयाम के भीतर मौजूद छह अलग-अलग व्यक्तिगत संकेतकों में से प्रत्येक को बराबर महत्व देने के लिए 1/18 का भार आवंटित किया गया है। यह स्पष्ट विभाजन सुनिश्चित करता है कि गरीबी के विभिन्न पहलुओं का समग्र सूचकांक में उचित और न्यायसंगत प्रतिनिधित्व हो सके।

NODIA

46. (4) पोषण, स्कूली शिक्षा, स्वच्छता और ईंधन पहुंच
भारत में राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक के विश्लेषण से पता चलता है कि गरीबी में बड़ी गिरावट बुनियादी सेवाओं तक पहुंच बढ़ने के कारण आई है। विशेष रूप से पोषण के स्तर में सुधार, बच्चों के स्कूल जाने की दर में वृद्धि, स्वच्छ भारत मिशन के तहत स्वच्छता सुविधाओं का विस्तार और उज्ज्वला योजना जैसी पहलों के माध्यम से खाना पकाने के स्वच्छ ईंधन तक पहुंच ने लाखों लोगों को गरीबी के जाल से बाहर निकालने में निर्णायक भूमिका निभाई है।

47. (1) राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS)
नीति आयोग भारत के राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक की गणना करने के लिए मुख्य रूप से राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़ों पर निर्भर करता है। यह सर्वेक्षण व्यापक स्तर पर स्वास्थ्य, पोषण और घरेलू बुनियादी ढांचे से संबंधित विस्तृत डेटा प्रदान करता है, जो बहुआयामी वंचनाओं की पहचान के लिए आवश्यक है। चूंकि यह सर्वेक्षण नियमित अंतराल पर होता है, यह समय के साथ विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में गरीबी के रुझानों की निगरानी करने का सबसे विश्वसनीय साधन है।

48. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
भारत के राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक में वैश्विक मॉडल के 10 संकेतकों के स्थान पर कुल 12 संकेतक शामिल हैं। नीति आयोग ने भारतीय संदर्भ और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए इसमें 'मातृ स्वास्थ्य' और 'बैंक खाता' जैसे दो अतिरिक्त संकेतकों को जोड़ा है। यह समावेशन देश की विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का बेहतर चित्रण करने के लिए किया गया है। इसलिए, पहला कथन संकेतकों की संख्या के संबंध में गलत है, जबकि दूसरा कथन इन बदलावों के कारण को स्पष्ट करता है।

49. (2) केवल I, II और IV
भारत में बहुआयामी गरीबी में उल्लेखनीय कमी आई है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों ने शहरी क्षेत्रों की तुलना में तेजी से प्रगति की है। उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश जैसे बड़े राज्यों ने गरीबों की संख्या घटाने में सबसे बड़ी उपलब्धि हासिल की है। राजस्थान भी उन राज्यों में शामिल है जहां गरीबी अनुपात में भारी गिरावट आई। हालांकि, प्रगति के बावजूद भारत में गरीबी अभी भी एक अंक के प्रतिशत तक नहीं पहुंची है, इसलिए तीसरा कथन वर्तमान आंकड़ों के अनुसार सटीक नहीं है।

50. (1) II, IV, I, III
प्रारंभिक राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी रिपोर्ट के अनुसार, बिहार में गरीबी का अनुपात सबसे अधिक था, उसके बाद झारखंड और फिर उत्तर प्रदेश का स्थान था। केरल इस सूची में सबसे नीचे था, जिसका अर्थ है कि वहां बहुआयामी गरीबों की संख्या सबसे कम थी। यह क्रम भारत के भीतर मौजूद क्षेत्रीय विषमताओं को उजागर करता है, जहां कुछ उत्तरी और पूर्वी राज्यों में वंचना अधिक है, जबकि दक्षिण के राज्य मानव विकास के संकेतकों पर बहुत आगे निकल चुके हैं।

51. (3) शून्य भूख (कोई भूख नहीं)
वैश्विक भूख सूचकांक में स्कोरिंग की प्रणाली इस प्रकार बनाई गई है कि कम स्कोर बेहतर स्थिति को दर्शाता है। इस 100-बिंदु पैमाने पर 0 का स्कोर सर्वोत्तम संभव स्थिति है, जिसका अर्थ है कि उस देश में कोई भी व्यक्ति भूख या कुपोषण का सामना नहीं कर रहा है। इसके विपरीत, 100 का स्कोर भूख के उच्चतम और सबसे भयावह स्तर को प्रदर्शित करता है। देशों को उनके स्कोर के आधार पर 'निम्न' से लेकर 'अत्यंत भयावह' श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है।

52. (4) मातृ अल्पपोषण
वैश्विक भूख सूचकांक की गणना चार विशिष्ट संकेतकों पर आधारित होती है जो कुपोषण के विभिन्न रूपों को मापते हैं। इनमें सामान्य जनसंख्या के लिए अल्पपोषण, और पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए ठिगनापन, दुबलापन और मृत्यु दर शामिल हैं। हालांकि माताओं का पोषण अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन 'मातृ अल्पपोषण' को इस सूचकांक के प्रत्यक्ष चार मुख्य संकेतकों में शामिल नहीं किया गया है। यह सूचकांक मुख्य रूप से बच्चों के स्वास्थ्य और कैलोरी आपूर्ति पर केंद्रित रहता है।

53. (3) कन्सर्न वर्ल्डवाइड और वेल्टहंगरहाइल्फ (Welthungerhilfe)
वैश्विक भूख सूचकांक रिपोर्ट दो प्रमुख गैर-सरकारी संगठनों, कन्सर्न वर्ल्डवाइड और वेल्टहंगरहाइल्फ द्वारा संयुक्त रूप से तैयार और प्रकाशित की जाती है। कन्सर्न वर्ल्डवाइड आयरलैंड का एक संगठन है, जबकि वेल्टहंगरहाइल्फ जर्मनी का है। ये दोनों संस्थाएं वैश्विक स्तर पर भूख के विरुद्ध जागरुकता बढ़ाने और नीतिगत परिवर्तनों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिवर्ष रैंकिंग जारी करती हैं। यह रिपोर्ट भूख की स्थिति का आकलन करने के लिए एक महत्वपूर्ण नागरिक समाज आधारित दस्तावेज माना जाता है।

54. (2) II, III और V
वैश्विक भूख सूचकांक में 'बाल दुबलापन' और 'बाल ठिगनापन' बच्चों में कुपोषण की स्थिति को लंबाई और वजन के अनुपात में परिभाषित करते हैं। भारत के संदर्भ में यह कहना गलत है कि वह लगातार शीर्ष 20 देशों में बना हुआ है, क्योंकि भारत की रैंकिंग अक्सर इस सूचकांक में गंभीर श्रेणी में रहती है। अतः दूसरा, तीसरा और पांचवां कथन या तो परिभाषा के संदर्भ में या भारत की रैंकिंग की वास्तविकता के संदर्भ में त्रुटिपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करते हैं।

55. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
अल्पपोषण जनसंख्या के उस हिस्से को मापता है जिसे पर्याप्त कैलोरी नहीं मिल पा रही है। बाल ठिगनापन दीर्घकालिक कुपोषण का संकेत है, जहां आयु के अनुसार लंबाई कम रह जाती है। बाल दुबलापन तीव्र कुपोषण को दर्शाता है, जिसमें लंबाई के मुकाबले वजन कम होता है। बाल मृत्यु दर अस्वास्थ्यकर वातावरण और अपर्याप्त पोषण के घातक परिणामों का प्रतिबिंब है। यह मिलान प्रत्येक संकेतक द्वारा मापी जाने वाली विशिष्ट मानवीय स्थिति को सही ढंग से परिभाषित और स्पष्ट करता है।

56. (2) 1997
मानव गरीबी सूचकांक को संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने पहली बार 1997 की मानव विकास रिपोर्ट में शामिल किया था। इसे मानव विकास सूचकांक के पूरक के रूप में बनाया गया था ताकि केवल औसत उपलब्धियों को मापने के बजाय समाज के सबसे वंचित वर्गों की स्थिति पर ध्यान दिया जा सके। यह सूचकांक आय आधारित गरीबी से हटकर जीवन के बुनियादी अवसरों से वंचित रहने की स्थिति को मापने का एक प्रारंभिक प्रयास था, जिसे बाद में बहुआयामी मॉडल द्वारा प्रतिस्थापित किया गया।

57. (3) विकासशील और उच्च आय वाले ओईसीडी (OECD) देशों के लिए भेद
मानव गरीबी सूचकांक को दो अलग-अलग रूपों में लागू किया गया था ताकि विभिन्न आर्थिक परिवेशों की चुनौतियों को समझा जा सके। HPI-1 विशेष रूप से विकासशील देशों में होने वाली वंचनाओं को मापने के लिए बनाया गया था। इसके विपरीत, HPI-2 का उपयोग विकसित या उच्च आय वाले औद्योगिक देशों के लिए किया जाता था, जिसमें सामाजिक बहिष्कार जैसे अतिरिक्त पहलुओं को भी शामिल किया गया था। यह भेद यह स्वीकार करता था कि गरीबी के रूप विभिन्न समाजों में भिन्न हो सकते हैं।

58. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
मानव गरीबी सूचकांक ने उन्हीं तीन बुनियादी क्षेत्रों—स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर—में वंचनाओं का आकलन किया जिनका उपयोग मानव विकास सूचकांक में प्रगति मापने के लिए किया जाता था। हालांकि, समय के साथ यह महसूस किया गया कि गरीबी के आकलन के लिए अधिक सूक्ष्म डेटा की आवश्यकता है। इसीलिए 2010 में इसे बंद करके बहुआयामी गरीबी सूचकांक द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया। ये दोनों कथन इस सूचकांक के वैचारिक ढांचे और इसके ऐतिहासिक विकास को सही ढंग से स्पष्ट करते हैं।

59. (1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
मानव गरीबी सूचकांक की एक बड़ी कमी यह थी कि यह केवल राष्ट्रीय स्तर के औसत आंकड़ों का उपयोग करता था, जिससे यह पता नहीं चल पाता था कि कौन सा विशिष्ट परिवार कई समस्याओं से एक साथ जूझ रहा है। बहुआयामी गरीबी सूचकांक ने इस समस्या को दूर किया क्योंकि यह व्यक्तिगत स्तर पर डेटा का विश्लेषण करता है। इसीलिए वैश्विक स्तर

Click Here to Buy book on Amazon

पर पुराने मॉडल को हटाकर नए मापन को अपनाया गया, जो नीति-निर्माण के लिए कहीं अधिक उपयोगी साबित हुआ है।

60. (2) मानव विकास सूचकांक, मानव गरीबी सूचकांक, बहुआयामी गरीबी सूचकांक
संयुक्त राष्ट्र द्वारा गरीबी और विकास के मापन का एक क्रमिक विकास हुआ है। सबसे पहले 1990 में मानव विकास सूचकांक शुरू हुआ जो औसत उपलब्धियों पर केंद्रित था। इसके बाद 1997 में गरीबी के वंचना पहलू को मापने के लिए मानव गरीबी सूचकांक लाया गया। अंततः 2010 में अधिक सटीक और विस्तृत पारिवारिक स्तर के विश्लेषण के लिए बहुआयामी गरीबी सूचकांक अपनाया गया। यह अनुक्रम वैश्विक स्तर पर विकास की परिभाषा को व्यापक बनाने की यात्रा को दर्शाता है।

61. (3) वितरण आधारित असमानताओं को ध्यान में रखा जाए
असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक किसी देश में स्वास्थ्य, शिक्षा और आय के वितरण की वास्तविक स्थिति को दर्शाता है। यदि इन तीनों आयामों का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच रहा है, तो यह सूचकांक उस देश के कुल स्कोर में कटौती कर देता है। यह इस विचार पर आधारित है कि विकास का मूल्य तब कम हो जाता है जब वह अत्यधिक असमान होता है। यह मापन केवल औसत विकास के बजाय न्यायसंगत विकास की तस्वीर पेश करता है।

62. (2) आयामों के वितरण में पूर्ण समानता विद्यमान है
किसी भी समाज में यदि मानव विकास के लाभ सभी नागरिकों को बिल्कुल बराबर मिल रहे हैं, तो उसका मानक सूचकांक और असमानता-समायोजित सूचकांक समान होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब कोई असमानता नहीं होती, तो समायोजन के दौरान स्कोर में कोई कटौती नहीं की जाती है। व्यवहार में ऐसा होना अत्यंत कठिन है, लेकिन सैद्धांतिक रूप से इन दोनों मूल्यों की समानता एक ऐसे आदर्श समाज का संकेत देती है जहाँ स्वास्थ्य, शिक्षा और आय का वितरण पूरी तरह न्यायसंगत है।

63. (1) एटकिंसन असमानता माप (Atkinson inequality measure)
असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक की गणना करने के लिए सांख्यिकीय रूप से एटकिंसन असमानता माप का उपयोग किया जाता है। यह पद्धति प्रत्येक आयाम के भीतर होने वाले असमान वितरण की तीव्रता का आकलन करती है और उसी के आधार पर औसत मूल्य को संशोधित करती है। यह गणितीय दृष्टिकोण अन्य मापों की तुलना में अधिक संवेदनशील है क्योंकि यह समाज के निचले स्तर पर होने वाली वंचनाओं को अधिक महत्व देता है, जिससे विकास की हानि का अधिक सटीक मूल्यांकन संभव हो पाता है।

64. (1) केवल I and II
इस सूचकांक का प्राथमिक उद्देश्य यह दिखाना है कि असमानता के कारण किसी देश ने अपने विकास की कितनी क्षमता खो दी है। उच्च असमानता वाले देशों में स्कोर में बड़ी गिरावट देखी जाती है, जिससे उनका वास्तविक प्रदर्शन मानक स्कोर से काफी नीचे चला जाता है। यह प्रत्येक देश के वास्तविक आंतरिक वितरण के आधार पर अलग-अलग कटौती दर लागू करता है, न कि एक समान दर। अतः पहले दो कथन इस सूचकांक की भूमिका और प्रभाव को सटीक रूप से स्पष्ट करते हैं।

65. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
मानक मानव विकास सूचकांक बुनियादी आयामों में देश की औसत उपलब्धियों को मापता है। असमानता-समायोजित सूचकांक वितरण की खामियों के कारण होने वाली विकास की हानि पर ध्यान केंद्रित करता है। लिंग विकास सूचकांक विशेष रूप से उपलब्धियों के बीच मौजूद महिला-पुरुष अंतर या लैंगिक अंतराल को उजागर करता है। बहुआयामी गरीबी सूचकांक घरेलू स्तर पर एक साथ होने वाली विभिन्न वंचनाओं का विश्लेषण करता है। यह मिलान यूएनडीपी के विभिन्न मापन उपकरणों के विशिष्ट फोकस क्षेत्रों को स्पष्ट करता है।

66. (1) कल्याण, जीवन प्रत्याशा और पारिस्थितिक पदचिह्न (Ecological footprint)
हैप्पी प्लैनेट इंडेक्स एक अनूठा पैमाना है जो यह मापता है कि कोई देश अपने पर्यावरण की रक्षा करते हुए अपने नागरिकों को कितना सुखी जीवन दे रहा है। इसकी गणना में निवासियों के कल्याण का अनुभव, उनकी औसत जीवन प्रत्याशा और पृथ्वी के संसाधनों पर उनके पारिस्थितिक प्रभाव को शामिल किया जाता है। यह सूचकांक केवल आर्थिक वृद्धि को सफलता नहीं मानता, बल्कि यह देखता है कि न्यूनतम पर्यावरणीय संसाधनों का उपयोग करके अधिकतम मानवीय सुख कैसे प्राप्त किया जा सकता है।

NODIA

67. (3) यह संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाती है
विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट मुख्य रूप से संयुक्त राष्ट्र सतत विकास समाधान नेटवर्क द्वारा जारी की जाती है, न कि यूएनडीपी द्वारा। यह रिपोर्ट गैलप वर्ल्ड पोल के व्यापक आंकड़ों पर आधारित होती है और देशों को उनके नागरिकों द्वारा स्वयं बताए गए सुख के स्तर के अनुसार रैंक करती है। फिनलैंड जैसे नॉर्डिक देश अपनी मजबूत सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों के कारण इस सूची में लगातार शीर्ष पर रहते हैं। यह रिपोर्ट आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक कारकों के महत्व को उजागर करती है।

68. (4) कैंट्रिल लैडर (Cantril Ladder)
विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट में व्यक्तिपरक कल्याण को मापने के लिए 'कैंट्रिल लैडर' नामक एक विशेष सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया जाता है। इसमें उत्तरदाताओं को 0 से 10 तक की सीढ़ी की कल्पना करने को कहा जाता है, जहां 10 उनके लिए सर्वोत्तम संभव जीवन और 0 सबसे खराब जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। लोग स्वयं को इस सीढ़ी पर जहां देखते हैं, वही उनका व्यक्तिगत स्कोर होता है। यह विधि दुनिया भर के लोगों के जीवन के प्रति उनके स्वयं के दृष्टिकोण को समझने में मदद करती है।

69. (2) केवल I, II और IV
यह रिपोर्ट प्रसन्नता की व्याख्या करने के लिए प्रति व्यक्ति आय, सामाजिक सहयोग, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे छह चरों का गहन विश्लेषण करती है। इसमें भ्रष्टाचार की धारणा और उदारता को भी महत्वपूर्ण कारकों के रुप में शामिल किया गया है, न कि बाहर रखा गया है। भारत ऐतिहासिक रुप से इस रैंकिंग में काफी नीचे रहा है और अक्सर अपने पड़ोसियों से भी पीछे पाया गया है। अतः पहले, दूसरे और चौथे कथन इस रिपोर्ट की कार्यप्रणाली और भारत की स्थिति का सही वर्णन करते हैं।

70. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
हैप्पी प्लैनेट इंडेक्स पर्यावरणीय स्थिरता को बहुत महत्व देता है और उन देशों का स्कोर घटा देता है जिनका पारिस्थितिक पदचिह्न बहुत बड़ा है। दूसरी ओर, विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट व्यक्तिपरक सुख पर ध्यान केंद्रित करने के बावजूद सकल घरेलू उत्पाद जैसे वस्तुनिष्ठ आर्थिक संकेतकों को पूरी तरह अनदेखा नहीं करती है, बल्कि यह विश्लेषण करती है कि आय सुख को कैसे प्रभावित करती है। इसलिए, पहला कथन सूचकांक की प्रकृति के बारे में सही है, जबकि दूसरा कथन रिपोर्ट की पद्धति के बारे में गलत है।

71. (4) मॉरिस डी. मॉरिस
भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक का विकास 1970 के दशक के उत्तरार्ध में प्रसिद्ध विद्वान मॉरिस डी. मॉरिस द्वारा किया गया था। उन्होंने यह सूचकांक ओवरसीज डेवलपमेंट काउंसिल के लिए तैयार किया था ताकि विकास के मूल्यांकन को केवल मौद्रिक माप से आगे ले जाया जा सके। उस समय यह एक क्रांतिकारी विचार था क्योंकि इसने आर्थिक आंकड़ों के बजाय प्रत्यक्ष मानवीय परिणामों पर ध्यान केंद्रित किया। इस कार्य ने भविष्य में मानव विकास सूचकांक जैसे व्यापक मापों के लिए वैचारिक आधार तैयार किया था।

72. (1) प्रति व्यक्ति आय
भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक की सबसे विशिष्ट बात यह है कि इसने जानबूझकर आर्थिक या आय संबंधी आंकड़ों को अपने ढांचे से बाहर रखा। इसकी गणना तीन गैर-आर्थिक संकेतकों पर आधारित है: बुनियादी साक्षरता दर, शिशु मृत्यु दर और एक वर्ष की आयु में जीवन प्रत्याशा। मॉरिस का मानना था कि विकास का असली प्रमाण लोगों की शारीरिक स्थिति और शिक्षा में सुधार है, न कि केवल उनकी औसत आय में वृद्धि। इसलिए, प्रति व्यक्ति आय इस सूचकांक का हिस्सा नहीं है।

73. (3) आर्थिक विकास का सामाजिक परिणामों में परिवर्तन को न दर्शा पाना
मॉरिस डी. मॉरिस ने सकल राष्ट्रीय उत्पाद को इसलिए बाहर रखा क्योंकि उनका तर्क था कि केवल उच्च आय यह सुनिश्चित नहीं करती कि नागरिकों का स्वास्थ्य और शिक्षा स्तर भी बेहतर होगा। कई बार उच्च आय वाले देशों में भी भारी असमानता और खराब सामाजिक सेवाएं हो सकती हैं। उन्होंने एक ऐसा पैमाना विकसित करना चाहा जो यह देख सके कि आर्थिक संसाधन वास्तव में बेहतर जीवन गुणवत्ता में बदल रहे हैं या नहीं। यह दृष्टिकोण सामाजिक संकेतकों की स्वायत्तता को अधिक महत्व देता था।

74. (3) केवल V
भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक 1970 के दशक का एक महत्वपूर्ण माप है जो साक्षरता और स्वास्थ्य संकेतकों के औसत पर आधारित है। हालांकि इसने मानव विकास की अवधारणा को प्रभावित किया, लेकिन इसने आधुनिक आर्थिक आकलनों में मानव विकास सूचकांक को प्रतिस्थापित नहीं किया है। वास्तव में, अब एचडीआई ही वैश्विक स्तर पर विकास मापने का सबसे प्रमुख मानक है। अतः पांचवां कथन गलत है क्योंकि यह ऐतिहासिक और वर्तमान उपयोग के संदर्भ में इस सूचकांक की स्थिति का गलत विवरण देता है।

75. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
मॉरिस डी. मॉरिस ने भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक के माध्यम से विकास को मापने का नया नजरिया दिया। महबूब उल हक ने मानव विकास सूचकांक को जन्म दिया जो आज भी सबसे व्यापक पैमाना है। बहुआयामी गरीबी सूचकांक ऑक्सफोर्ड और संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से विकसित किया गया जो गरीबी की गहराई को मापता है। वैश्विक भूख सूचकांक कन्सर्न वर्ल्डवाइड और वेल्टहंगरहाइल्फ द्वारा प्रकाशित किया जाता है। यह मिलान विकास के विभिन्न पहलुओं को मापने वाले प्रमुख विद्वानों और संस्थानों को सही ढंग से जोड़ता है।

76. (2) विश्व बैंक समूह
'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' रिपोर्ट विश्व बैंक समूह द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाने वाली एक अत्यंत प्रभावशाली रिपोर्ट थी। यह देशों को उनके व्यावसायिक नियमों और उनके कार्यान्वयन की सुगमता के आधार पर रैंकिंग प्रदान करती थी। इस सूचकांक ने दुनिया भर की सरकारों को अपने निवेश वातावरण को सुधारने और नियामक बोझ को कम करने के लिए प्रेरित किया। हालांकि, डेटा संबंधी कुछ विसंगतियों के कारण विश्व बैंक ने आधिकारिक तौर पर इसका प्रकाशन बंद करने का कठिन निर्णय लिया था।

77. (2) 10
ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सूचकांक किसी व्यवसाय के शुरू होने से लेकर उसके बंद होने तक के जीवन चक्र को कवर करने वाले 10 प्राथमिक मानकों पर आधारित था। इन मानकों में व्यवसाय शुरू करना, निर्माण परमिट, बिजली कनेक्शन प्राप्त करना, संपत्ति पंजीकरण, ऋण प्राप्त करना, अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा, कर भुगतान, विदेशी व्यापार, अनुबंध लागू करना और दिवाला समाधान शामिल थे। इन सभी क्षेत्रों के स्कोर को मिलाकर एक अंतिम रैंकिंग तैयार की जाती थी जो समग्र व्यापार सुगमता को दर्शाती थी।

78. (4) पर्यावरणीय स्थिरता अनुपालन
ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रिपोर्ट मुख्य रुप से उन नियामक प्रक्रियाओं पर केंद्रित थी जो प्रत्यक्ष रूप से निजी व्यवसाय के संचालन को प्रभावित करती हैं। इसमें कर भुगतान, निर्माण परमिट और अनुबंधों के प्रवर्तन जैसे कानूनी और प्रशासनिक

Downloaded from www.pdf.tube

पहलुओं को मापा जाता था। हालांकि पर्यावरणीय स्थिरता अब एक वैश्विक प्राथमिकता है, लेकिन इसे इस विशिष्ट सूचकांक के मूल 10 संकेतकों में शामिल नहीं किया गया था। इस सूचकांक का प्राथमिक उद्देश्य व्यापार करने की प्रशासनिक और कानूनी बाधाओं को कम करना था।

79. (1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
विश्व बैंक ने 2021 में 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' रिपोर्ट को स्थायी रूप से बंद कर दिया। इसका मुख्य कारण एक स्वतंत्र जांच में पाया गया डेटा हेरफेर था, जिसने कुछ देशों की रैंकिंग को प्रभावित किया था। इन नैतिक चिंताओं और डेटा की विश्वसनीयता पर उठते सवालों के कारण इस प्रतिष्ठित रिपोर्ट की साख को भारी धक्का लगा। इस निर्णय ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डेटा अखंडता और पारदर्शिता के महत्व को एक बार फिर से रेखांकित किया है।

80. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
वर्ष 2014 और 2019 के बीच भारत की रैंकिंग में सुधार के संदर्भ में, प्रथम कथन सटीक नहीं है क्योंकि भारत ने वास्तव में इस अवधि में अभूतपूर्व छलांग लगाई थी और शीर्ष 100 में स्थान बनाया था। दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता जैसे सुधारों ने व्यावसायिक वातावरण को बदलने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अतः दूसरा कथन सुधारों के प्रभाव को सही ढंग से स्पष्ट करता है, जबकि पहला कथन भारत की ऐतिहासिक प्रगति के वास्तविक पैमाने का विवरण नहीं देता है।

81. (2) विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO)
वैश्विक नवाचार सूचकांक एक वार्षिक रिपोर्ट है जिसे विश्व बौद्धिक संपदा संगठन द्वारा कॉर्नेल विश्वविद्यालय और इनसीड के सहयोग से प्रकाशित किया जाता है। यह सूचकांक दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं को उनकी नवाचार क्षमताओं और परिणामों के आधार पर रैंक करता है। यह नीति-निर्माताओं को यह समझने में मदद करता है कि वे किस प्रकार अपने देशों में रचनात्मकता और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान और विकास के अनुकूल वातावरण तैयार कर सकते हैं।

82. (1) नवाचार इनपुट (Innovation Input) और नवाचार आउटपुट (Innovation Output)
वैश्विक नवाचार सूचकांक की गणना दो प्रमुख स्तंभों के औसत पर आधारित होती है। नवाचार इनपुट उप-सूचकांक उन तत्वों को मापता है जो नवाचार को सक्षम बनाते हैं, जैसे संस्थान, मानव पूंजी और बुनियादी ढांचा। दूसरी ओर, नवाचार आउटपुट उप-सूचकांक उन वास्तविक परिणामों को दर्ज करता है जो इन प्रयासों से प्राप्त होते हैं, जैसे ज्ञान और रचनात्मक उत्पाद। इन दोनों के बीच का संतुलन यह दर्शाता है कि कोई देश अपने संसाधनों का नवाचार में कितनी प्रभावी ढंग से उपयोग कर रहा है।

83. (3) पिछले दशक में भारत की रैंकिंग में निरंतर गिरावट देखी गई है
पिछले दशक के दौरान वैश्विक नवाचार सूचकांक में भारत के प्रदर्शन के बारे में यह कहना पूरी तरह गलत है कि इसकी रैंकिंग में गिरावट आई है। वास्तविकता इसके विपरीत है; भारत ने लगातार सुधार करते हुए वैश्विक रैंकिंग में एक बड़ी छलांग लगाई है। भारत को अपनी आय श्रेणी के अनुसार एक मजबूत नवाचार केंद्र माना जाता है, विशेष रूप से तकनीकी सेवाओं के निर्यात में इसकी वैश्विक धाक है। निरंतर सुधार भारत की बढ़ती वैज्ञानिक और तकनीकी शक्ति का प्रमाण है।

NODIA

84. (2) केवल I and III
वैश्विक नवाचार सूचकांक नवाचार का आकलन करने के लिए कठोर सांख्यिकीय डेटा के साथ-साथ विशेषज्ञों के सर्वेक्षणों का भी उपयोग करता है। 'नवाचार आउटपुट' विशेष रूप से ज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों पर केंद्रित होता है। संस्थान, बुनियादी ढांचा और मानव पूंजी वास्तव में 'नवाचार इनपुट' के स्तंभ हैं, जो नवाचार के लिए आवश्यक आधार प्रदान करते हैं। इसलिए, पहला और तीसरा कथन इस सूचकांक की संरचना और कार्यप्रणाली को पूरी तरह से सटीक और सही ढंग से परिभाषित करते हैं।

85. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
वैश्विक नवाचार सूचकांक का प्रकाशन विश्व बौद्धिक संपदा संगठन द्वारा किया जाता है। विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट को संयुक्त राष्ट्र सतत विकास समाधान नेटवर्क द्वारा तैयार किया जाता है। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सूचकांक ऐतिहासिक रूप से विश्व बैंक समूह से संबंधित रहा है। मानव विकास सूचकांक संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम का प्रमुख प्रकाशन है। यह मिलान विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों और उनके द्वारा संचालित महत्वपूर्ण वैश्विक विकास मापों और रिपोर्टों के बीच के सही संबंध को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

86. (2) किसी राष्ट्र के भीतर आय या धन की असमानता
गिनी गुणांक सांख्यिकीय अर्थों में वितरण की असमानता को मापने का सबसे लोकप्रिय पैमाना है। यह मुख्य रूप से किसी देश की जनसंख्या के बीच आय या धन के वितरण की विसंगतियों को दर्शाता है। अर्थशास्त्री और नीति-निर्माता इसका उपयोग यह समझने के लिए करते हैं कि आर्थिक विकास का लाभ समाज के विभिन्न वर्गों के बीच कितना समान है। यह सामाजिक स्थिरता और आर्थिक न्याय का आकलन करने के लिए एक अनिवार्य उपकरण माना जाता है, जो वितरण की गहराई को मापता है।

87. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
गिनी गुणांक का मान हमेशा 0 और 1 के बीच होता है। 0 का स्कोर एक ऐसी काल्पनिक स्थिति को दर्शाता है जहां समाज के प्रत्येक व्यक्ति की आय बिल्कुल बराबर है, जिसे पूर्ण समानता कहा जाता है। इसके विपरीत, 1 का स्कोर अधिकतम असमानता का प्रतिनिधित्व करता है, जहां देश की पूरी आय केवल एक ही व्यक्ति के पास होती है। ये दोनों कथन इस

गुणांक की सीमा रेखाओं और उनके पीछे के अर्थ को पूरी तरह से स्पष्ट और सही बताते हैं।

88. (1) पूर्ण समानता की रेखा के नीचे का कुल क्षेत्रफल
ज्यामितीय रूप से गिनी गुणांक को लोरेंज़ वक्र के आधार पर निकाला जाता है। इसकी गणना पूर्ण समानता की 45-डिग्री रेखा और वास्तविक लोरेंज़ वक्र के बीच के क्षेत्रफल को, उस पूर्ण समानता की रेखा के नीचे स्थित संपूर्ण त्रिकोणीय क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल से विभाजित करके की जाती है। यह अनुपात यह स्पष्ट करता है कि वास्तविक आय वितरण आदर्श स्थिति से कितना दूर है। क्षेत्रफल जितना अधिक होगा, समाज में आर्थिक असमानता का स्तर भी उतना ही अधिक माना जाएगा।

89. (2) केवल I, III and IV
गिनी गुणांक आय और धन दोनों की असमानताओं को मापने में सक्षम है और यह गुमनामी के सिद्धांत का पालन करता है। यह सीधे लोरेंज़ वक्र से प्राप्त किया जाता है। यह कहना गलत है कि घटता हुआ गिनी गुणांक बढ़ती असमानता को दर्शाता है, क्योंकि वास्तव में गुणांक का घटना यह संकेत देता है कि समाज में आय का वितरण अधिक समान होता जा रहा है। अतः पहला, तीसरा और चौथा कथन इस सांख्यिकीय माप की मुख्य विशेषताओं का सही वर्णन करते हैं।

90. (1) II, III, IV, I
गिनी गुणांक में कम मूल्य बेहतर समानता को दर्शाता है और उच्च मूल्य अधिक असमानता को इंगित करता है। इसलिए, 0.25 वाला राष्ट्र सबसे समान आय वितरण वाला होगा, उसके बाद 0.45 और फिर 0.65 का स्थान आएगा। 0.85 का गुणांक अत्यंत उच्च स्तर की असमानता को प्रदर्शित करता है। यह क्रम स्पष्ट करता है कि जैसे-जैसे हम कम मूल्य से उच्च मूल्य की ओर बढ़ते हैं, समाज में धन का संकेंद्रण कुछ ही लोगों के हाथों में बढ़ता जाता है।

91. (4) संचयी जनसंख्या और संचयी आय
लोरेंज़ वक्र का ग्राफ तैयार करते समय x-अक्ष पर जनसंख्या के संचयी प्रतिशत को रखा जाता है, जो सबसे गरीब से सबसे अमीर की ओर बढ़ता है। y-अक्ष पर उस जनसंख्या द्वारा प्राप्त की गई कुल आय के संचयी प्रतिशत को दर्शाया जाता है। यह वक्र हमें यह देखने की अनुमति देता है कि जनसंख्या के निचले हिस्से के पास देश की कुल आय का कितना हिस्सा है। यह वितरण की दृश्य व्याख्या करने का एक अत्यंत प्रभावशाली और सरल आर्थिक साधन माना जाता है।

92. (2) पूर्ण समानता की रेखा
लोरेंज़ वक्र के ग्राफ में खींची गई 45-डिग्री की विकर्ण रेखा उस आदर्श स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है जहां समाज में कोई आर्थिक भेदभाव नहीं है। इसे 'पूर्ण समानता की रेखा' कहा जाता है क्योंकि इस रेखा पर जनसंख्या का प्रत्येक 1% हिस्सा देश की कुल आय का ठीक 1% हिस्सा प्राप्त करता है। वास्तविक लोरेंज़ वक्र इस रेखा से जितना अधिक नीचे की ओर झुका होता है, उस समाज में धन और आय की असमानता उतनी ही गहरी और चिंताजनक मानी जाती है।

93. (3) सामान्य आर्थिक परिस्थितियों में वक्र 45-डिग्री की विकर्ण रेखा से ऊपर जा सकता है
लोरेंज़ वक्र हमेशा 45-डिग्री की समानता रेखा के नीचे या उसके साथ होता है। यह कभी भी उस विकर्ण रेखा से ऊपर नहीं जा सकता क्योंकि संचयी आय कभी भी संचयी जनसंख्या के प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकती है। इसे मैक्स ओ. लोरेंज़ द्वारा विकसित किया गया था और यह असमानता का एक स्पष्ट दृश्य चित्रण प्रदान करता है। अतः यह कहना कि वक्र ऊपर जा सकता है, आर्थिक और गणितीय दोनों सिद्धांतों के अनुसार पूरी तरह से गलत और असंभव है।

94. (3) केवल IV
लोरेंज़ वक्र और समानता रेखा के बीच का संबंध असमानता के स्तर को निर्धारित करता है। यदि किसी देश का वक्र विकर्ण रेखा के अधिक करीब है, तो इसका अर्थ है कि वहां असमानता कम है, न कि अधिक। वक्र जितना दूर झुकता है, असमानता उतनी ही अधिक होती है। अन्य सभी कथन, जैसे संचयी प्रतिशत का उपयोग और पूर्ण समानता की स्थिति, लोरेंज़ वक्र के कार्य करने के तरीके का बिल्कुल सही और सटीक वर्णन करते हैं।

95. (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
0 का गिनी गुणांक पूर्ण आय समानता का प्रतीक है, जहाँ सभी की आय बराबर होती है। 1 का गुणांक पूर्ण असमानता को दर्शाता है, जहाँ सारा धन एक ही व्यक्ति के पास होता है। जब लोरेंज़ वक्र विकर्ण रेखा के साथ मेल खाता है, तो यह पूर्ण समानता वितरण को प्रदर्शित करता है। वक्र का अत्यधिक झुकना समाज में उच्च आय असमानता का संकेत है। यह मिलान असमानता मापन के विभिन्न गणितीय और दृश्य संकेतों को उनके वास्तविक अर्थों के साथ स्पष्ट रूप से जोड़ता है।

96. (2) एसडीजी (SDG) इंडिया इंडेक्स
नीति आयोग द्वारा विकसित सतत विकास लक्ष्य भारत सूचकांक राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की प्रगति का मूल्यांकन करता है। यह सूचकांक विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय मानकों पर आधारित है। इसका उद्देश्य राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना और उन्हें 2030 के वैश्विक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरित करना है। यह सहकारी संघवाद का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जो डेटा-आधारित शासन और नीति-निर्माण को प्रोत्साहित करने का कार्य करता है।

97. (3) अग्रणी (Front Runner)
नीति आयोग के सूचकांक में राज्यों को उनके प्रदर्शन के आधार पर चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। जिन राज्यों का स्कोर 65 और 99 के बीच होता है, उन्हें 'अग्रणी' की श्रेणी में रखा जाता है। यह श्रेणी उन राज्यों को दी जाती है जिन्होंने विकास के विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है और वे पूर्ण लक्ष्य प्राप्ति के काफी करीब हैं। यह वर्गीकरण राज्यों को अपने प्रदर्शन में और अधिक सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

98. (4) पिछड़ा (Laggard)
नीति आयोग ने राज्यों के प्रदर्शन को मापने के लिए चार विशिष्ट श्रेणियों का उपयोग किया है: आकांक्षी (0-49), अच्छा प्रदर्शन करने वाला (50-64), अग्रणी (65-99) और लक्ष्य प्राप्त करने वाला (100)। इन श्रेणियों के माध्यम से राज्यों की प्रगति का संतुलित चित्रण किया जाता है। 'पिछड़ा' शब्द का प्रयोग इस आधिकारिक वर्गीकरण में नहीं किया गया है क्योंकि इसका उद्देश्य राज्यों को हतोत्साहित करने के बजाय उन्हें सुधार की दिशा में प्रेरित करना और सकारात्मक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाना है।

99. (1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
भारत ने राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट सूचकांकों जैसे राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक को अपनाने पर बल दिया है। इसका मुख्य कारण यह है कि वैश्विक औसत अक्सर राज्यों के बीच मौजूद भारी असमानताओं को नहीं दिखा पाते। स्थानीय स्तर के ये सूचकांक सरकार को यह समझने में मदद करते हैं कि किन विशिष्ट क्षेत्रों और राज्यों को अधिक संसाधनों और नीतिगत ध्यान की आवश्यकता है। इस प्रकार, ये सूचकांक देश के भीतर संतुलित और समावेशी विकास सुनिश्चित करते हैं।

100. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
भारत में विकास का मापन अब केवल सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर तक सीमित नहीं है। सरकार अब बहुआयामी गरीबी सूचकांक जैसे व्यापक मापदंडों का उपयोग करती है जो शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच को भी मापते हैं। कई राज्य अपनी कल्याणकारी योजनाओं और बजट के कुशल आवंटन के लिए इन आंकड़ों को आधार बनाते हैं ताकि लक्षित समूहों को अधिक लाभ मिल सके। ये दोनों कथन भारत में आधुनिक और संवेदनशील विकास मापन की प्रक्रिया को सही ढंग से दर्शाते हैं।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 03
मौद्रिक एवं राजकोषीय नीति, केंद्रीय बजट एवं संसाधन जुटाव

1. भारतीय संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन 'मौद्रिक नीति' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(1) सार्वजनिक ऋण और राजस्व संग्रह के प्रबंधन के लिए केंद्र सरकार की नीति
(2) मुद्रा आपूर्ति और ब्याज दरों के लिए केंद्रीय बैंक की समष्टि आर्थिक नीति
(3) कॉर्पोरेट फर्मों के लिए ऋण दरें निर्धारित करने हेतु बैंकों द्वारा बनाया गया ढांचा
(4) विदेशी मुद्रा के प्रबंधन के लिए वित्त मंत्रालय की रणनीतिक योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 के अनुसार, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा तैयार की गई मौद्रिक नीति का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) मूल्य स्थिरता बनाए रखना और विकास का समर्थन करना
(2) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की वार्षिक लाभप्रदता को अधिकतम करना
(3) अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये की मजबूती सुनिश्चित करना
(4) भारत के ग्रामीण कृषि क्षेत्रों में बेरोजगारी को समाप्त करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'रेपो दर' का सही वर्णन करता है?
(1) बैंकों द्वारा अपनी अधिशेष धनराशि को केंद्रीय बैंक के पास जमा करने की दर
(2) अनिवार्य आरक्षित निधि बनाए रखने में विफल रहने वाले बैंकों के लिए दंड दर
(3) प्रतिभूतियों के बदले बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा दिए जाने वाले अल्पकालिक ऋण की दर
(4) बैंकों द्वारा सरकार को दीर्घकालिक ऋण प्रदान करने की दर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. यदि भारतीय रिजर्व बैंक 'नकद आरक्षित अनुपात' बढ़ाने का निर्णय लेता है, तो बैंकिंग प्रणाली पर इसका सबसे संभावित प्रभाव क्या होगा?
(1) वाणिज्यिक बैंकों की ऋण सृजन क्षमता बढ़ जाएगी
(2) गृह ऋण पर ब्याज दरों में तत्काल कमी आएगी
(3) वाणिज्यिक बैंकों के पास शेयर बाजार में निवेश करने के लिए अधिक तरलता होगी
(4) वाणिज्यिक बैंकों के उधार देने योग्य संसाधनों में कमी आएगी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. सूची I में दिए गए मौद्रिक नीति के उपकरणों को सूची II में उनकी सही विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (नीतिगत उपकरण)
A. बैंक दर
B. सांविधिक तरलता अनुपात
C. नकद आरक्षित अनुपात
D. रिवर्स रेपो दर
सूची II: (विशेषता)
i. तरल संपत्तियों के रूप में शुद्ध मांग और समय देयताओं के प्रतिशत के रूप में बनाए रखा जाता है
ii. वह दर जिस पर भारतीय रिजर्व बैंक बैंकों से तरलता अवशोषित करता है
iii. भारतीय रिजर्व बैंक के पास रखी गई शेष राशि जिस पर कोई ब्याज नहीं मिलता
iv. दीर्घकालिक दर जिस पर भारतीय रिजर्व बैंक विनिमय बिलों को खरीदता है या पुनर्भुनाता है
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

6. आर्थिक स्थिरता के निम्नलिखित उपकरणों में से विषम का चयन कीजिए।
(1) खुले बाजार की क्रियाएं
(2) कराधान नीतियां
(3) सांविधिक तरलता अनुपात
(4) सीमांत स्थायी सुविधा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. जब भारतीय रिजर्व बैंक 'रिवर्स रेपो दर' बढ़ाता है, तो क्या होता है?

(1) वाणिज्यिक बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक के पास धन जमा करने के लिए हतोत्साहित करता है
(2) सभी बड़े निगमों के लिए आयकर दरों को सीधे कम करता है
(3) सामान्य मुद्रा आपूर्ति बढ़ाता है जिससे बाजार में मुद्रास्फीति आती है
(4) बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक के पास धन रखने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे तरलता कम होती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): उच्च मुद्रास्फीति की अवधि के दौरान, भारतीय रिजर्व बैंक आमतौर पर खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियां बेचता है।
कारण (R): सरकारी प्रतिभूतियों को बेचने से केंद्रीय बैंक को बैंकिंग प्रणाली से अतिरिक्त तरलता को अवशोषित करने में सहायता मिलती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. 'सांविधिक तरलता अनुपात' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) बैंक इस अनुपात को नकद, स्वर्ण या अनुमोदित सरकारी प्रतिभूतियों के रूप में रख सकते हैं
(2) इस अनुपात में वृद्धि आमतौर पर वाणिज्यिक बैंकों की ऋण देने की क्षमता को प्रतिबंधित करती है
(3) भारतीय रिजर्व बैंक बैंकों द्वारा बनाए रखे गए इस अनुपात पर एक निश्चित दंडात्मक ब्याज देता है
(4) इसकी गणना बैंक की शुद्ध मांग और समय देयताओं के निर्धारित प्रतिशत के रूप में की जाती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. सामान्य आर्थिक परिस्थितियों में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बनाए रखी जाने वाली नीतिगत दरों का उनके परिमाण के घटते क्रम में सही क्रम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) सीमांत स्थायी सुविधा दर, रेपो दर, रिवर्स रेपो दर
(2) रिवर्स रेपो दर, रेपो दर, सीमांत स्थायी सुविधा दर
(3) रेपो दर, सीमांत स्थायी सुविधा दर, रिवर्स रेपो दर
(4) सीमांत स्थायी सुविधा दर, रिवर्स रेपो दर, रेपो दर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. खुले बाजार की क्रियाओं के तहत भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जनता से सरकारी प्रतिभूतियां खरीदने का तत्काल प्रभाव क्या होता है?
(1) अर्थव्यवस्था में कुल मुद्रा आपूर्ति घट जाती है
(2) सरकार का राजकोषीय घाटा शून्य हो जाता है
(3) वाणिज्यिक बैंक अपनी ऋण ब्याज दरों में वृद्धि करते हैं
(4) अर्थव्यवस्था में कुल मुद्रा आपूर्ति बढ़ जाती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. मौद्रिक नीति समिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह केंद्र सरकार द्वारा गठित एक छह सदस्यीय समिति है।
II. केंद्रीय वित्त मंत्री इस समिति के पदेन अध्यक्ष होते हैं।
III. निर्णय बहुमत के आधार पर लिए जाते हैं, जिसमें मत बराबर होने की स्थिति में गवर्नर के पास निर्णायक मत होता है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. निम्नलिखित में से कौन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अपनाई गई 'मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण' की अवधारणा को परिभाषित करता है?
(1) यह सुनिश्चित करना कि राष्ट्रीय मुद्रास्फीति शून्य प्रतिशत पर बनी रहे
(2) थोक मूल्य सूचकांक के आधार पर आयकर स्लैब को समायोजित करना
(3) खुदरा मुद्रास्फीति को एक वैधानिक लक्ष्य सीमा के भीतर बनाए रखना
(4) सरकारी कर राजस्व बढ़ाने के लिए कृत्रिम रूप से मुद्रास्फीति बढ़ाना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. मौद्रिक नीति समिति के लिए वैधानिक ढांचा निम्नलिखित में से किस कानून में संशोधन करके पेश किया गया था?
(1) बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949
(2) विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम, 1999
(3) भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम, 1955
(4) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. सूची I में दिए गए शब्दों को सूची II में उनके सटीक विवरण के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मौद्रिक रुख)
A. उदार रुख
B. तटस्थ रुख
C. कठोर रुख
D. नपा-तुला कड़ा रुख
सूची II: (विवरण)
i. केंद्रीय बैंक अक्सर ब्याज दरें बढ़ाकर मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने को प्राथमिकता देता है
ii. केंद्रीय बैंक आंकड़ों के आधार पर दरों में कटौती या

Click Here to Buy book on Amazon

वृद्धि करने के लिए तैयार है
iii. दरों को या तो स्थिर रखा जाएगा या बढ़ाया जाएगा, लेकिन उनमें कटौती नहीं की जाएगी
iv. केंद्रीय बैंक विकास को गति देने के लिए मुद्रा आपूर्ति का विस्तार करने के लिए तैयार है
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. कोर मुद्रास्फीति में तीव्र वृद्धि के जवाब में, मौद्रिक नीति समिति रेपो दर में 50 आधार अंकों की वृद्धि करने का निर्णय लेती है। निम्नलिखित में से कौन सा इस कार्रवाई का एक इच्छित परिणाम है?
(1) बड़े पैमाने पर उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए उद्योगों के लिए ऋण सस्ता करना
(2) अर्थव्यवस्था में कुल मांग को कम करने के लिए ऋण की लागत बढ़ाना
(3) क्रेडिट कार्ड और व्यक्तिगत ऋण के माध्यम से उच्च उपभोक्ता व्यय को प्रोत्साहित करना
(4) केंद्र सरकार को अपने पूंजीगत व्यय को तुरंत बढ़ाने के लिए बाध्य करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. निम्नलिखित में से कौन सा भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति का प्रत्यक्ष उद्देश्य नहीं है?
(1) राष्ट्रीय मूल्य स्थिरता बनाए रखना
(2) सरकार के कर राजस्व लक्ष्यों का प्रबंधन करना
(3) उत्पादक क्षेत्रों को ऋण निर्देशित करना
(4) वित्तीय प्रणाली की स्थिरता सुनिश्चित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. आरक्षित अनुपातों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नकद आरक्षित अनुपात नकद में बनाए रखा जाता है, जबकि सांविधिक तरलता अनुपात को स्वर्ण और सरकारी प्रतिभूतियों जैसी तरल संपत्तियों में रखा जा सकता है।
II. बैंक भारतीय रिजर्व बैंक के पास रखी नकद आरक्षित अनुपात शेष राशि पर ब्याज कमाते हैं लेकिन सांविधिक तरलता अनुपात पर उन्हें कुछ नहीं मिलता।
III. नकद आरक्षित अनुपात और सांविधिक तरलता अनुपात दोनों की गणना शुद्ध मांग और समय देयताओं के प्रतिशत के रूप में की जाती है।
IV. नकद आरक्षित अनुपात और सांविधिक तरलता अनुपात को कम करने से बैंकिंग प्रणाली में तरलता जारी होती है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. मौद्रिक नीति के संचरण का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वाणिज्यिक बैंकों को मुद्रा नोटों का भौतिक वितरण
(2) मंत्रालय से भारतीय रिजर्व बैंक को राजकोषीय घाटे के आंकड़ों का सीधा हस्तांतरण
(3) वह प्रक्रिया जहां नीतिगत दरों में बदलाव बैंक ऋण दरों को प्रभावित करते हैं
(4) दिवाला कानूनी संहिता के माध्यम से बैंक संपत्तियों के समाधान का तंत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. नीचे दिए गए विकल्पों में से भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिकाओं के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(1) सरकार का बैंकर - केंद्र सरकार के सार्वजनिक ऋण का प्रबंधन करता है
(2) अंतिम ऋणदाता - अस्थायी कमी का सामना कर रहे सक्षम बैंकों को आपातकालीन तरलता प्रदान करता है
(3) विदेशी मुद्रा का संरक्षक - भारत के विदेशी मुद्रा भंडार का प्रबंधन करता है
(4) राजकोषीय नीति निर्माता - केंद्रीय बजट तैयार करता है और लागू करता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. राजकोषीय नीति मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किससे संबंधित है?
(1) मुद्रा की विदेशी विनिमय दर का प्रत्यक्ष प्रबंधन
(2) घरेलू शेयर और वस्तु बाजारों का व्यापक विनियमन
(3) अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने के लिए सरकारी राजस्व और व्यय का प्रबंधन
(4) विभिन्न कृषि वस्तुओं के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. विस्तारवादी राजकोषीय नीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका उपयोग आमतौर पर आर्थिक मंदी या सुस्ती के दौरान किया जाता है।
II. इसमें सरकारी व्यय बढ़ाना शामिल है।
III. इसमें उपभोक्ताओं के पास अधिक खर्च करने योग्य आय छोड़ने के लिए कर दरों को कम करना शामिल है।
IV. यह आमतौर पर सरकार के राजकोषीय घाटे में कमी लाता है।
V. इसका उद्देश्य अर्थव्यवस्था में कुल मांग को प्रोत्साहित करना है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II, III और IV

NODIA

(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, III और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. भारत में राजकोषीय नीति तैयार करने की जिम्मेदारी निम्नलिखित में से किस संस्था की है?
(1) भारतीय रिजर्व बैंक
(2) नीति आयोग
(3) वित्त आयोग
(4) वित्त मंत्रालय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. निम्नलिखित में से कौन सा उपाय संकुचनकारी राजकोषीय नीति का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) सहायता अनुदान कम करना और प्रत्यक्ष कर बढ़ाना
(2) बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर सरकारी व्यय बढ़ाना
(3) निगम कर की दर को कम करना
(4) केंद्रीय बैंक द्वारा रेपो दर को कम करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. सूची I में दिए गए नीतिगत उपकरणों को सूची II में उनके संबंधित नीतिगत प्रकारों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (उपकरण)
A. नकद आरक्षित अनुपात
B. वस्तु एवं सेवा कर
C. खुले बाजार की क्रियाएं
D. सार्वजनिक ऋण प्रबंधन
सूची II: (नीति का प्रकार)
i. मौद्रिक नीति उपकरण
ii. राजकोषीय नीति उपकरण
iii. मौद्रिक नीति उपकरण
iv. राजकोषीय नीति उपकरण
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. घरेलू बाजार से निरंतर सरकारी ऋण द्वारा वित्तपोषित उच्च राजकोषीय घाटे का सबसे संभावित दीर्घकालिक प्रभाव क्या है?
(1) उच्च ब्याज दरों के कारण निजी निवेश का विस्थापन
(2) घरेलू मुद्रा का तत्काल और महत्वपूर्ण मूल्यवर्धन
(3) सामान्य मूल्य स्तरों में निरंतर कमी जिसे अपस्फीति कहा जाता है
(4) देश के कुल व्यापार घाटे में भारी और तीव्र कमी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. एक अर्थव्यवस्था उच्च बेरोजगारी के साथ गंभीर मंदी का सामना कर रही है। इस स्थिति से निपटने के लिए नीतियों का कौन सा संयोजन सबसे उपयुक्त है?
(1) संकुचनकारी मौद्रिक नीति और संकुचनकारी राजकोषीय नीति
(2) विस्तारवादी मौद्रिक नीति और संकुचनकारी राजकोषीय नीति
(3) संकुचनकारी मौद्रिक नीति और विस्तारवादी राजकोषीय नीति
(4) विस्तारवादी मौद्रिक नीति और विस्तारवादी राजकोषीय नीति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): विस्तारवादी राजकोषीय नीति कभी-कभी मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति का कारण बन सकती है।
कारण (R): सरकारी व्यय में वृद्धि और कर कटौती कुल मांग को बढ़ावा देती है, जो कुल आपूर्ति से अधिक हो सकती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. केंद्र सरकार की 'पूंजीगत प्राप्तियों' के संदर्भ में निम्नलिखित प्रविष्टियों में से विषम का चयन कीजिए।
(1) राज्य सरकारों को दिए गए ऋणों की वसूली
(2) सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के विनिवेश से प्राप्त आय
(3) सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों से प्राप्त लाभांश
(4) घरेलू बाजार से नए ऋण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. संसद में केंद्रीय बजट पारित होने के निम्नलिखित चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. अनुदान की मांगों पर मतदान
II. बजट का प्रस्तुतिकरण
III. वित्त विधेयक पारित करना
IV. सामान्य चर्चा
V. विनियोग विधेयक पारित करना
(1) II - IV - I - V - III
(2) II - I - IV - III - V
(3) II - IV - V - I - III
(4) IV - II - I - V - III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. किसी सरकारी प्राप्ति को 'राजस्व प्राप्ति' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है यदि वह निम्नलिखित में से किस मानदंड को पूरा करती है?
(1) यह न तो देयता पैदा करती है और न ही परिसंपत्ति को

Downloaded from www.pdf.tube

कम करती है
(2) यह देयता पैदा करती है और परिसंपत्ति को कम करती है
(3) यह देयता पैदा करती है लेकिन परिसंपत्ति को कम नहीं करती है
(4) यह परिसंपत्ति को कम करती है लेकिन देयता पैदा नहीं करती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. पूंजीगत व्यय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इससे भौतिक या वित्तीय परिसंपत्तियों का सृजन होता है।
II. इसमें सरकारी ऋणों के मूलधन का पुनर्भुगतान शामिल है।
III. इसमें सरकारी कर्मचारियों को वेतन और पेंशन का भुगतान शामिल है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. राजस्व व्यय के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह सरकारी विभागों के सामान्य कामकाज के लिए किया जाता है
(2) इसका सीधा परिणाम उत्पादक भौतिक परिसंपत्तियों के सृजन के रूप में होता है
(3) इसमें सरकार द्वारा लिए गए ऋण पर ब्याज भुगतान शामिल है
(4) इसमें विभिन्न क्षेत्रों को प्रदान की जाने वाली सहायता अनुदान शामिल है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: पूंजीगत बजट में पूंजीगत प्राप्तियां और पूंजीगत भुगतान शामिल होते हैं।
कथन II: केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों को पूंजीगत परिसंपत्ति बनाने के लिए दिए गए अनुदानों को केंद्रीय बजट में कड़ाई से पूंजीगत व्यय के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. सूची I की प्रविष्टियों को सूची II में उनके बजट वर्गीकरण के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मद)
A. एकत्रित आयकर
B. राज्य सरकार द्वारा ऋण का पुनर्भुगतान
C. राष्ट्रीय ऋण पर दिया गया ब्याज
D. राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण
सूची II: (बजट वर्गीकरण)
i. पूंजीगत प्राप्ति
ii. पूंजीगत व्यय
iii. राजस्व प्राप्ति
iv. राजस्व व्यय
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. निम्नलिखित में से कौन सा केंद्र सरकार के लिए 'गैर-कर राजस्व' का उदाहरण नहीं है?
(1) सरकारी विभागों द्वारा एकत्रित शुल्क और जुर्माना
(2) विभिन्न राज्यों को दिए गए ऋणों पर ब्याज प्राप्ति
(3) भारतीय रिजर्व बैंक से प्राप्त लाभांश
(4) विदेशी कंपनियों द्वारा भुगतान किया गया निगम कर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन राजस्व प्राप्ति और पूंजीगत प्राप्ति के बीच सबसे उपयुक्त अंतर प्रदान करता है?
(1) राजस्व घरेलू स्रोतों से है; पूंजी विदेशी ऋणों से है
(2) राजस्व वेतन के लिए है; पूंजी बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए है
(3) राजस्व गैर-प्रतिदेय है; पूंजी में भविष्य का पुनर्भुगतान या बिक्री शामिल है
(4) राजस्व पांच साल में एक बार होता है; पूंजी हर साल होती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

38. सरकारी बजट के घटकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बजट मुख्य रूप से राजस्व खाते और पूंजीगत खाते में विभाजित होता है।
II. रक्षा उपकरणों की खरीद को सार्वभौमिक रूप से राजस्व व्यय के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
III. जनता से लिए गए ऋणों को पूंजीगत प्राप्तियों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
IV. विनिवेश से प्राप्त आय को राजस्व बजट के तहत वर्गीकृत किया गया है क्योंकि वे तत्काल नकद प्रदान करते हैं।
उपर्युक्त में से कौन से कथन गलत हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. निम्नलिखित बजट अवधारणाओं में से सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) अधिशेष बजट - व्यय राजस्व से अधिक है
(2) घाटे का बजट - राजस्व व्यय से अधिक है
(3) प्राथमिक घाटा - राजस्व ऋण पूंजी
(4) संतुलित बजट - राजस्व व्यय के बराबर है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. भारत सरकार बाजार ऋण के माध्यम से एक विशाल रेलवे विस्तार परियोजना को वित्तपोषित करने की योजना बना रही है। इस ऋण और उसके बाद रेलवे पर होने वाले खर्च को बजट के किन शीर्षों के तहत दर्ज किया जाएगा?
(1) पूंजीगत प्राप्ति और पूंजीगत व्यय
(2) राजस्व प्राप्ति और राजस्व व्यय
(3) राजस्व प्राप्ति और पूंजीगत व्यय
(4) पूंजीगत प्राप्ति और राजस्व व्यय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. 'राजकोषीय घाटा' को कुल व्यय की निम्नलिखित पर अधिकता के रूप में परिभाषित किया गया है:
(1) कुल राजस्व प्राप्तियां
(2) केवल राजस्व प्राप्तियां और विनिवेश प्राप्तियां
(3) उधार को छोड़कर कुल प्राप्तियां
(4) राजस्व प्राप्तियां और पूंजीगत प्राप्तियां
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. घाटे के माप के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्व घाटा इंगित करता है कि सरकार का नियमित राजस्व उसके नियमित व्यय को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है।
II. राजकोषीय घाटा एक व्यापक माप है जो सरकार की कुल उधार आवश्यकताओं को इंगित करता है।
III. प्राथमिक घाटा राजकोषीय घाटे में से ब्याज भुगतान घटाकर निकाला जाता है।
IV. शून्य प्राथमिक घाटे का अर्थ है कि सरकार केवल पिछले ऋणों पर ब्याज चुकाने के लिए उधार ले रही है।
V. प्रभावी राजस्व घाटे में पूंजीगत परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए दिए गए अनुदान शामिल नहीं होते हैं।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. सरकार का 'प्राथमिक घाटा' अनिवार्य रूप से क्या दर्शाता है?
(1) स्वतंत्रता के बाद से सरकार द्वारा संचित कुल ऋण
(2) बजट अनुमानों के मुकाबले प्रत्यक्ष कर संग्रह में कमी
(3) भारत की सभी राज्य सरकारों का संयुक्त कुल घाटा
(4) वर्तमान राजकोषीय घाटा और पिछले ऋण पर ब्याज का अंतर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'राजस्व घाटे' के महत्व को सही ढंग से उजागर करता है?
(1) एक राजकोषीय वर्ष में विदेशी मुद्रा भंडार में कमी
(2) उपभोग के वित्तपोषण के लिए सरकार द्वारा की गई 'अपबचत'
(3) चालू वर्ष के लिए कुल नियोजित बुनियादी ढांचा निवेश
(4) एक वर्ष में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मुद्रित मुद्रा की सही मात्रा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सूची I में दी गई घाटे की अवधारणाओं को सूची II में उनके संबंधित सूत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (घाटे की अवधारणा)
A. राजस्व घाटा
B. राजकोषीय घाटा
C. प्राथमिक घाटा
D. प्रभावी राजस्व घाटा
सूची II: (सूत्र)
i. कुल व्यय - (राजस्व प्राप्तियां + गैर-ऋण पूंजीगत प्राप्तियां)
ii. राजकोषीय घाटा - ब्याज भुगतान
iii. राजस्व घाटा - पूंजीगत परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए सहायता अनुदान
iv. राजस्व व्यय - राजस्व प्राप्तियां
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. यदि केंद्र सरकार का प्राथमिक घाटा शून्य है, तो इसका प्रत्यक्ष परिणाम क्या होगा?
(1) सरकार ने सभी ऐतिहासिक ऋण दायित्वों का भुगतान कर दिया है
(2) चालू राजकोषीय वर्ष के लिए किसी उधार की आवश्यकता नहीं है
(3) सभी पूंजीगत व्यय पूरी तरह से रोक दिए गए हैं
(4) राजकोषीय घाटा पिछले ऋण पर ब्याज के बराबर है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित में से कौन 'राजकोषीय घाटे के मुद्रीकरण' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) सरकार के बजट घाटे को पूरा करने के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा नए मुद्रा नोट छापना
(2) सरकार द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के शेयर खुदरा निवेशकों को बेचना
(3) सरकार द्वारा आम जनता को कर-मुक्त बॉन्ड जारी करना
(4) सरकार द्वारा विशेष रूप से अंतरराष्ट्रीय संगठनों से उधार

Click Here to Buy book on Amazon

लेना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): निरंतर उच्च राजकोषीय घाटा निजी निवेश के 'विस्थापन' का कारण बन सकता है।
कारण (R): सरकार द्वारा उच्च स्तर पर उधार लेने से उपलब्ध घरेलू बचत का एक बड़ा हिस्सा अवशोषित हो जाता है, जिससे निजी उधारकर्ताओं के लिए ब्याज दरें बढ़ जाती हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. अपने राजकोषीय घाटे को वित्तपोषित करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा उपयोग किए जाने वाले सामान्य स्रोतों में से विषम का चयन कीजिए।
(1) बाजार उधार (सरकारी प्रतिभूतियां और ट्रेजरी बिल)
(2) विदेशी राष्ट्रों से सहायता अनुदान
(3) बाहरी बहुपक्षीय एजेंसियों से ऋण
(4) सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड जारी करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. 'प्रभावी राजस्व घाटे' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) इसकी गणना राजस्व घाटे में पूंजीगत व्यय जोड़कर की जाती है
(2) इसे केंद्रीय बजट 2011-12 में पेश किया गया था
(3) यह इस तथ्य को ध्यान में रखता है कि कुछ राजस्व व्यय वास्तव में भौतिक परिसंपत्तियों का निर्माण करते हैं
(4) यह सरकार द्वारा उपभोग व्यय की अधिक सटीक तस्वीर प्रदान करता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम, 2003 का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) सरकारी ऋण का निरंतर मुद्रीकरण सुनिश्चित करना
(2) कर के बोझ को प्रत्यक्ष करों से अप्रत्यक्ष करों की ओर स्थानांतरित करना
(3) अंतर-पीढ़ीगत समानता और व्यापक आर्थिक स्थिरता प्राप्त करना
(4) दीर्घकालिक स्तर पर चालू खाता घाटे को समाप्त करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन ढांचे के तहत 'बचाव खंड' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सरकार को असाधारण परिस्थितियों में राजकोषीय घाटे के लक्ष्य से विचलन करने की अनुमति देता है।
II. राष्ट्रीय सुरक्षा संकट, युद्ध की स्थिति और राष्ट्रीय आपदाएं इसे लागू करने के वैध आधार हैं।
III. विचलन की अनुमति बिना किसी निश्चित सीमा के असीमित रूप से दी जाती है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

53. एन.के. सिंह समिति का गठन भारत सरकार द्वारा मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किसकी समीक्षा के लिए किया गया था?
(1) वस्तु एवं सेवा कर की संरचना का मूल्यांकन करना
(2) मौद्रिक नीति ढांचे और मुद्रास्फीति लक्ष्यों की समीक्षा करना
(3) राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम के कार्यान्वयन की समीक्षा करना
(4) घाटे में चल रही सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के लिए विनिवेश रणनीति तैयार करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'राजकोषीय सुदृढ़ीकरण' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) राजनीतिक शक्ति को मजबूत करने के लिए सरकारी सहायता अनुदान बढ़ाने की प्रक्रिया
(2) घाटे और ऋण के संचय को कम करने के उद्देश्य से बनाई गई सरकारी नीतियां
(3) कई सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को एक बड़ी इकाई में विलय करना
(4) मौद्रिक नीति उपकरणों के दायरे का विस्तार करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. सूची I में दी गई समितियों और अधिनियमों को सूची II में उनके प्राथमिक कार्यक्षेत्र के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समिति/अधिनियम)
A. एन.के. सिंह समिति
B. उर्जित पटेल समिति
C. एफआरबीएम अधिनियम, 2003
D. मौद्रिक नीति समिति
सूची II: (कार्यक्षेत्र)
i. मौद्रिक नीति ढांचे में संशोधन
ii. राजकोषीय घाटे के लक्ष्यों की समीक्षा
iii. राजकोषीय अनुशासन को संस्थागत बनाना
iv. नीतिगत रेपो दर तय करना
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम ने मूल रूप से राजस्व घाटे को समाप्त करने का आदेश दिया था।
कथन II: यह अधिनियम भारतीय रिजर्व बैंक को केंद्र सरकार की प्रतिभूतियों के प्राथमिक निर्गमों को खरीदने से सख्ती से रोकता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. एक सरकार जीडीपी के 3% के अपने राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को पूरा करने का प्रयास कर रही है लेकिन राजस्व की कमी का सामना कर रही है। निम्नलिखित में से कौन सा उपाय राजकोषीय सुदृढ़ीकरण का एक स्वीकार्य तरीका है?
(1) कमी को पूरा करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक को अधिक मुद्रा छापने के लिए बाध्य करना
(2) सभी राष्ट्रीय बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को अनिश्चित काल के लिए रोकना
(3) गैर-आवश्यक व्ययों को युक्तिसंगत बनाना और कर अनुपालन में सुधार करना
(4) सरकारी प्रतिभूतियों के ब्याज भुगतान में चूक करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम द्वारा केंद्रीय बजट के साथ संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले दस्तावेजों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. समष्टि आर्थिक रूपरेखा विवरण।
II. मध्यावधि राजकोषीय नीति विवरण।
III. राजकोषीय नीति रणनीति विवरण।
IV. वार्षिक वित्तीय विवरण।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. निम्नलिखित में से कौन सा लक्ष्य पैरामीटर आमतौर पर राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन ढांचे के तहत निगरानी नहीं किया जाता है?
(1) जीडीपी के प्रतिशत के रूप में राजकोषीय घाटा
(2) जीडीपी के प्रतिशत के रूप में राजस्व घाटा
(3) जीडीपी के प्रतिशत के रूप में केंद्र सरकार का ऋण
(4) शुद्ध मांग और समय देयताओं के प्रतिशत के रूप में नकद आरक्षित अनुपात
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

60. दिए गए विकल्पों में से, भारत में घाटों के उनके विशिष्ट परिमाण के घटते क्रम में सही अनुक्रम का चयन कीजिए।
(1) राजस्व घाटा, राजकोषीय घाटा, प्राथमिक घाटा
(2) राजकोषीय घाटा, राजस्व घाटा, प्राथमिक घाटा
(3) प्राथमिक घाटा, राजस्व घाटा, राजकोषीय घाटा
(4) राजकोषीय घाटा, प्राथमिक घाटा, राजस्व घाटा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. भारत के संविधान के किस अनुच्छेद के तहत केंद्रीय बजट को "वार्षिक वित्तीय विवरण" के रूप में संदर्भित किया जाता है?
(1) अनुच्छेद 110
(2) अनुच्छेद 266
(3) अनुच्छेद 112
(4) अनुच्छेद 280
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. केंद्रीय बजट के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बजट वित्त मंत्री द्वारा लोकसभा में पेश किया जाता है।
II. राज्यसभा के पास अनुदान की मांगों पर मतदान करने की शक्ति है।
III. वित्त विधेयक में सरकार के वित्तीय प्रस्तावों को प्रभावी करने के प्रावधान होते हैं।
IV. विनियोग विधेयक भारत की संचित निधि से धन निकालने के लिए अधिकृत करता है।
V. 'लेखानुदान' से बचने के लिए बजट को नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत से पहले पारित किया जाना चाहिए।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. किस संवैधानिक निधि का उपयोग मुख्य रूप से भारत सरकार के व्यय को पूरा करने के लिए किया जाता है, और जिससे धन निकालने के लिए संसदीय अनुमोदन की आवश्यकता होती है?
(1) भारत की संचित निधि
(2) भारत की आकस्मिकता निधि
(3) भारत का सार्वजनिक खाता
(4) राष्ट्रीय निवेश कोष
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में प्रत्यक्ष करों को सटीक रूप से चित्रित करता है?
(1) वे स्वभाव से प्रतिगामी होते हैं, जो अमीरों की तुलना में निर्धनों को अधिक प्रभावित करते हैं
(2) कर का करापात और प्रभाव उसी इकाई पर पड़ता है और इसे स्थानांतरित नहीं किया जा सकता है
(3) वस्तु एवं सेवा कर प्रत्यक्ष करों का सबसे बड़ा घटक है

(4) वे अर्जन के बिंदु के बजाय उपभोग के बिंदु पर एकत्र किए जाते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. सूची I में दिए गए करों को सूची II में उनकी विशिष्ट विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (कर)
A. व्यक्तिगत आयकर
B. वस्तु एवं सेवा कर
C. निगम कर
D. सीमा शुल्क
सूची II: (विशेषता)
i. आयात और निर्यात पर लगाया जाने वाला अप्रत्यक्ष कर
ii. कंपनियों की शुद्ध आय पर लगाया जाने वाला प्रत्यक्ष कर
iii. व्यक्तियों पर प्रगतिशील प्रत्यक्ष कर
iv. उपभोग पर गंतव्य-आधारित अप्रत्यक्ष कर
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. केंद्र सरकार द्वारा निगम कर की दर में एक महत्वपूर्ण कटौती का उद्देश्य निम्नलिखित में से किस प्रभाव को प्राप्त करना है?
(1) निजी निवेश और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना
(2) सभी नागरिकों की कुल खर्च करने योग्य आय को कम करना
(3) भारत में सभी विदेशी पोर्टफोलियो निवेश को हतोत्साहित करना
(4) अल्पकालिक कर राजस्व में तीव्र वृद्धि करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. भारत सरकार द्वारा लगाए गए निम्नलिखित करों में से विषम का चयन कीजिए।
(1) निगम कर
(2) आयकर
(3) उत्पाद शुल्क
(4) न्यूनतम वैकल्पिक कर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): आयकर जैसे प्रत्यक्ष करों को आमतौर पर प्रगतिशील प्रकृति का बनाया जाता है।
कारण (R): प्रगतिशील कराधान उच्च आय समूहों पर उच्च दरों पर कर लगाकर आय असमानताओं को कम करने में सहायता करता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. भारत की कर प्रणाली के रुझानों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) हाल के दशकों में प्रत्यक्ष कर संग्रह आमतौर पर अप्रत्यक्ष कर संग्रह से आगे निकल गया है
(2) वस्तु एवं सेवा कर की शुरुआत का उद्देश्य अर्थव्यवस्था को औपचारिक बनाना और अप्रत्यक्ष कर आधार को विस्तृत करना था
(3) उच्च छूट के कारण केंद्रीय कर पूल में व्यक्तिगत आयकर का कोई योगदान नहीं है
(4) केंद्र सरकार के लिए निगम कर प्रत्यक्ष कर राजस्व का एक प्रमुख हिस्सा है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. भारत में निम्नलिखित ऐतिहासिक कर सुधारों को उनकी शुरुआत के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. वस्तु एवं सेवा कर की शुरुआत
II. राज्य स्तर पर मूल्य वर्धित कर की शुरुआत
III. सेवा कर की शुरुआत
IV. वर्तमान में प्रभावी आयकर अधिनियम का अधिनियमन
(1) IV - III - II - I
(2) IV - II - III - I
(3) III - IV - II - I
(4) IV - I - III - II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. अप्रत्यक्ष करों को मौलिक रूप से निम्नलिखित में से किस विशेषता द्वारा परिभाषित किया जाता है?
(1) वे व्यक्तियों की व्यक्तिगत संपत्ति पर सीधे लगाए जाते हैं
(2) वे विशेष रूप से आयातित विलासिता की वस्तुओं पर लागू होते हैं
(3) वे उपभोग होने से पहले खर्च करने योग्य आय को कम करते हैं
(4) कर का बोझ उपभोक्ता पर स्थानांतरित किया जा सकता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. वस्तु एवं सेवा कर की संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह अंतर-राज्यीय आपूर्ति पर केंद्रीय जीएसटी और राज्य जीएसटी युक्त एक दोहरा मॉडल है।
II. एकीकृत जीएसटी अंतर-राज्यीय आपूर्ति पर लगाया जाता है और पूरी तरह से राज्य सरकारों द्वारा एकत्र किया जाता है।
III. वस्तु एवं सेवा कर एक गंतव्य-आधारित उपभोग कर है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III

Downloaded from www.pdf.tube

(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. किस संवैधानिक संशोधन अधिनियम ने भारत में वस्तु एवं सेवा कर की शुरुआत की?
(1) 99वां संशोधन अधिनियम
(2) 100वां संशोधन अधिनियम
(3) 101वां संशोधन अधिनियम
(4) 103वां संशोधन अधिनियम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. निम्नलिखित में से कौन सा कथन वस्तु एवं सेवा कर क्षतिपूर्ति उपकर से सही ढंग से संबंधित है?
(1) कर के कारण राजस्व हानि के लिए राज्यों को मुआवजा देना
(2) कर की उच्च दरों के लिए करदाताओं को मुआवजा देना
(3) गेहूं और चावल जैसी आवश्यक वस्तुओं पर लगाया गया उपकर
(4) राज्यों द्वारा सीधे केंद्र सरकार को भुगतान किया जाने वाला उपकर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. सूची I में दिए गए बुनियादी वस्तु एवं सेवा कर स्लैब को सूची II में उनकी सामान्य श्रेणियों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (कर स्लैब)
A. 0%
B. 5%
C. 12% / 18%
D. 28%
सूची II: (वस्तुओं की श्रेणी)
i. मानक जन उपभोग की वस्तुएं और सेवाएं
ii. बिना पैक किए हुए दूध जैसी आवश्यक ताजा खाद्य वस्तुएं
iii. विलासिता और अहितकर वस्तुएं
iv. बुनियादी जरूरतें जैसे पैक किए हुए मसाले, एक सीमा से नीचे के जूते-चप्पल
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: वस्तु एवं सेवा कर के कार्यान्वयन ने भारत में करों के कैस्केडिंग प्रभाव को काफी हद तक समाप्त कर दिया है।
कथन II: यह कर संपूर्ण मूल्य श्रृंखला में इनपुट टैक्स क्रेडिट की निर्बाध उपलब्धता की अनुमति देता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. राजस्थान का एक निर्माता गुजरात के एक डीलर को माल बेचता है। वस्तु एवं सेवा कर के गंतव्य-आधारित सिद्धांत के तहत, अंतिम उपभोग पर कर राजस्व किस इकाई को प्राप्त होता है?
(1) कर राजस्व केवल केंद्र सरकार द्वारा प्राप्त किया जाता है
(2) राजस्व पूरी तरह से राजस्थान की राज्य सरकार का है
(3) केंद्र और गुजरात सरकारें राजस्व साझा करती हैं
(4) निर्माण करने वाले शहर का स्थानीय नगर निगम इसे प्राप्त करता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. निम्नलिखित करों पर विचार कीजिए:
I. केंद्रीय उत्पाद शुल्क
II. राज्य मूल्य वर्धित कर
III. सीमा शुल्क
IV. प्रवेश कर या चुंगी
उपर्युक्त में से कौन से कर वस्तु एवं सेवा कर के तहत शामिल किए गए थे?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

79. निम्नलिखित में से कौन सी मद वर्तमान में भारत में वस्तु एवं सेवा कर के दायरे से बाहर रखी गई है?
(1) पेट्रोल और डीजल सहित पांच पेट्रोलियम उत्पाद
(2) मोबाइल फोन और विभिन्न अन्य उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स
(3) कपड़ा उत्पाद और सभी प्रकार के तैयार परिधान
(4) देश में रेस्तरां और बाहरी खान-पान सेवाएं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. भारत में वस्तु एवं सेवा कर शुरु करने का सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक लाभ क्या है?
(1) इसने देश में सभी प्रत्यक्ष करों को समाप्त कर दिया
(2) इसने अंतर-राज्यीय कर बाधाओं को हटाकर एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाया
(3) इसने कराधान प्रणाली को पूरी तरह से प्रौद्योगिकी और डिजिटल नेटवर्क से स्वतंत्र बना दिया
(4) इसने सरकार को शून्य मुद्रास्फीति की गारंटी देने में सक्षम बनाया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

81. कर-जीडीपी अनुपात संसाधन जुटाने का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। बढ़ते कर-जीडीपी अनुपात का आमतौर पर क्या अर्थ होता है?
(1) भारी कर दरों के साथ सिकुड़ती अर्थव्यवस्था
(2) बेहतर कर अनुपालन और व्यापक कर आधार

(3) कर चोरी और काले धन के सृजन में वृद्धि
(4) विदेशी ऋण पर सरकार की अत्यधिक निर्भरता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

82. सरकार द्वारा संसाधन जुटाने के निम्नलिखित तरीकों पर विचार कीजिए:
I. प्रत्यक्ष करों के आधार का विस्तार करना।
II. व्यय बचाने के लिए सहायता अनुदान को युक्तिसंगत बनाना।
III. सार्वजनिक संपत्तियों का मुद्रीकरण करना।
IV. स्पेक्ट्रम नीलामी जैसे गैर-कर राजस्व में वृद्धि करना।
V. बाहरी वाणिज्यिक बाजारों से उच्च ब्याज पर भारी उधार लेना।
उपर्युक्त में से किसे संसाधन जुटाने के स्वस्थ और टिकाऊ तरीके माना जाता है?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल I, II, III और IV
(4) केवल II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

83. नीचे दिए गए विकल्पों में से गैर-कर राजस्व के स्रोतों के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) राष्ट्रीय राजमार्गों पर एकत्रित पथकर
(2) लाभांश - यातायात उल्लंघन के लिए एकत्रित दंड
(3) प्रयोक्ता शुल्क - राष्ट्रीय राजमार्गों पर एकत्रित पथकर
(4) राजगामी संपत्ति - विदेशी सरकारों से प्राप्त अनुदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. संसाधन जुटाने के उपकरण के रूप में सरकारी उधार के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) आंतरिक उधार का ब्याज दरों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है
(2) राजकोषीय अनुशासन ढांचा केवल उधार लिए गए धन पर निर्भर रहने को प्रोत्साहित करता है
(3) बाहरी उधार में विनिमय दर का कोई जोखिम नहीं होता है
(4) यह वर्तमान संसाधन बनाता है लेकिन भविष्य की देयता वहन करता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. सूची I में दी गई संसाधन जुटाने की प्राप्तियों को सूची II में उनकी बजट श्रेणी के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (प्राप्ति)
A. सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड जारी करना
B. 5G स्पेक्ट्रम नीलामी प्राप्तियां
C. आयकर राजस्व
D. एयर इंडिया का विनिवेश
सूची II: (बजट श्रेणी)
i. कर राजस्व प्राप्ति
ii. गैर-कर राजस्व प्राप्ति
iii. ऋण पूंजीगत प्राप्ति
iv. गैर-ऋण पूंजीगत प्राप्ति
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

86. यदि किसी विकासशील देश का कर आधार निरंतर कम बना रहता है, तो उसका संभावित समष्टि आर्थिक प्रभाव क्या होगा?
(1) पूंजीगत व्यय के लिए अत्यधिक अधिशेष निधि की उपलब्धता
(2) उधार और उच्च घाटे पर अनिवार्य निर्भरता
(3) केंद्रीय बैंक द्वारा खुले बाजार की सभी क्रियाओं को रोकना
(4) उच्च विकास वाले आर्थिक चरण में संक्रमण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

87. लाफर वक्र वैचारिक रूप से किसके बीच संबंध को चित्रित करके संसाधन जुटाने से संबंधित है?
(1) मुद्रास्फीति दर और बेरोजगारी दर
(2) राजकोषीय घाटा और जीडीपी विकास दर
(3) विनिमय दर और विदेशी मुद्रा भंडार
(4) कर की दरें और एकत्रित कर राजस्व की मात्रा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): संसाधन जुटाने के लिए अप्रत्यक्ष करों पर अत्यधिक निर्भरता की अक्सर प्रतिगामी होने के रूप में आलोचना की जाती है।
कारण (R): अप्रत्यक्ष कर धनवानों की तुलना में निर्धनों की आय का एक बड़ा हिस्सा उपभोग करते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R both सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. भारतीय रिजर्व बैंक से भारत सरकार को अधिशेष के हस्तांतरण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह सरकार के गैर-कर राजस्व का एक प्रमुख घटक है
(2) अधिशेष हस्तांतरण की मात्रा आर्थिक पूंजी ढांचे द्वारा शासित होती है
(3) इसे पूंजीगत बजट के तहत ऋण-सृजन पूंजीगत प्राप्ति के रूप में वर्गीकृत किया गया है
(4) यह गैर-कर प्राप्तियों को बढ़ाकर सरकार के राजकोषीय घाटे को सीधे कम करता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

90. हाल के वर्षों के विशिष्ट बजट अनुमानों के आधार पर, केंद्र सरकार के लिए राजस्व के निम्नलिखित स्रोतों को उनके योगदान के घटते क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. वस्तु एवं सेवा कर
II. सीमा शुल्क
III. निगम कर
IV. गैर-कर राजस्व

(1) I - III - IV - II
(2) III - I - II - IV
(3) I - II - III - IV
(4) III - IV - I - II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. सरकारी वित्त के संदर्भ में 'विनिवेश' का अर्थ क्या है?

(1) सरकार द्वारा निजी नवाचारों में शेयर खरीदने की प्रक्रिया
(2) नए स्कूलों और अस्पतालों के निर्माण में सरकारी निवेश बढ़ाना
(3) किसानों और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के ऋण माफ करना
(4) सरकार द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में अपनी हिस्सेदारी बेचना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

92. 'रणनीतिक विनिवेश' और 'अल्पमत हिस्सेदारी बिक्री' के बीच अंतर करने वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. रणनीतिक विनिवेश में प्रबंधन नियंत्रण का किसी निजी इकाई को हस्तांतरण शामिल है।
II. अल्पमत हिस्सेदारी बिक्री सरकार को 51% से अधिक स्वामित्व और प्रबंधन नियंत्रण बनाए रखने की अनुमति देती है।
III. दोनों विधियों को केंद्रीय बजट में राजस्व प्राप्ति के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. भारत में, वित्त मंत्रालय के तहत कौन सा विभाग केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में सरकारी इक्विटी के विनिवेश के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार है?

(1) मंत्रालय के भीतर आर्थिक कार्य विभाग
(2) विभिन्न निधियों का प्रबंधन करने वाला व्यय विभाग
(3) निवेश और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग
(4) बैंकिंग क्षेत्र के लिए वित्तीय सेवा विभाग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. 'राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन' के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।

(1) विकासकर्ताओं को सरकारी भूमि की एकमुश्त बिक्री
(2) बाजार की अतिरिक्त तरलता को अवशोषित करने का मौद्रिक नीति उपकरण
(3) स्वर्ण के आधार पर नए मुद्रा नोट जारी करने की योजना
(4) पट्टे के माध्यम से पुरानी आधारभूत परिसंपत्तियों में मूल्य को अनलॉक करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

95. सूची I में विनिवेश से संबंधित शब्दों को सूची II में उनके अर्थों के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: (शब्द)

A. आरंभिक सार्वजनिक निर्गम
B. बिक्री का प्रस्ताव
C. रणनीतिक विनिवेश
D. परिसंपत्ति मुद्रीकरण

सूची II: (अर्थ)

i. निजी ऑपरेटरों को मुख्य बुनियादी ढांचा परिसंपत्ति पट्टे पर देना
ii. गैर-सूचीबद्ध सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा पहली बार जनता को शेयरों की पेशकश करना
iii. स्वामित्व और प्रबंधन नियंत्रण का हस्तांतरण
iv. सूचीबद्ध उपक्रमों के प्रवर्तकों द्वारा एक्सचेंज प्लेटफॉर्म पर शेयर बेचना

(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

96. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।

कथन I: विनिवेश हमेशा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम के पूर्ण निजीकरण की ओर ले जाता है।

कथन II: सरकार बहुमत स्वामित्व और नियंत्रण बनाए रखते हुए इन उद्यमों में अपनी इक्विटी का 49% तक विनिवेश कर सकती है।

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के विनिवेश से भारत सरकार को प्राप्त होने वाली आय निम्नलिखित में से किस निधि में जाती है?

(1) राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष
(2) राष्ट्रीय निवेश कोष
(3) प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष
(4) भारत की आकस्मिकता निधि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

98. भारत में विनिवेश के हालिया रुझानों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. सरकार ने पिछले एक दशक में हर साल अपने बजटीय विनिवेश लक्ष्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया है।
II. एयर इंडिया के रणनीतिक विनिवेश में एक निजी इकाई को स्वामित्व का पूर्ण हस्तांतरण शामिल था।
III. नई सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम नीति इन्हें रणनीतिक और गैर-रणनीतिक क्षेत्रों में वर्गीकृत करती है।
IV. गैर-रणनीतिक क्षेत्रों में, इन उद्यमों को समय के साथ निजीकृत, विलय या बंद करने का इरादा है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II और III
(3) केवल I और IV
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

99. मौद्रिक और राजकोषीय नीति के समन्वय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रभावी मुद्रास्फीति प्रबंधन के लिए भारतीय रिजर्व बैंक की दरों में वृद्धि और सरकार के आपूर्ति-पक्ष हस्तक्षेपों के बीच समन्वय की आवश्यकता होती है।
II. बड़े राजकोषीय घाटे मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के भारतीय रिजर्व बैंक के प्रयासों को कमजोर कर सकते हैं।
III. भारतीय रिजर्व बैंक केंद्र सरकार के लिए ऋण प्रबंधक के रूप में कार्य करता है।
IV. खुले बाजार की क्रियाएं मौद्रिक तरलता प्रबंधन और राजकोषीय ऋण वित्तपोषण के बीच के अंतर को पाटती हैं।
V. राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम स्पष्ट रुप से मौद्रिक नीति को किसी भी राजकोषीय बाधाओं से अलग करता है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. भारत सरकार द्वारा कुछ सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के 'रणनीतिक विनिवेश' पर जोर देने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) सरकारी सचिवों पर प्रशासनिक बोझ बढ़ाना
(2) विशिष्ट वस्तुओं के लिए निजी क्षेत्र का एकाधिकार बनाना
(3) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों में वृद्धि करना
(4) पूंजी, प्रौद्योगिकी और आधुनिक प्रबंधन लाना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) मुद्रा आपूर्ति और ब्याज दरों के लिए केंद्रीय बैंक की समष्टि आर्थिक नीति
मौद्रिक नीति भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा संचालित एक महत्वपूर्ण समष्टिगत आर्थिक नीति है। इसका प्राथमिक उद्देश्य अर्थव्यवस्था में मुद्रा की आपूर्ति और ब्याज दरों का प्रभावी नियमन करना है। यह नीति मूल्य स्थिरता बनाए रखने के साथ-साथ सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित रहती है। केंद्रीय बैंक रेपो दर और नकद आरक्षित अनुपात जैसे विभिन्न उपकरणों के माध्यम से बाजार की तरलता को नियंत्रित करता है।

2. (1) मूल्य स्थिरता बनाए रखना और विकास का समर्थन करना
भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 के वैधानिक प्रावधानों के अनुसार, मौद्रिक नीति का मुख्य लक्ष्य अर्थव्यवस्था में मूल्य स्थिरता सुनिश्चित करना है। इसके साथ ही, यह विकास के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए एक संतुलित वित्तीय वातावरण प्रदान करती है। मुद्रास्फीति को एक निश्चित सीमा के भीतर रखना अनिवार्य है ताकि नागरिकों की क्रय शक्ति सुरक्षित रहे और व्यापारिक गतिविधियों हेतु अनुकूल आर्थिक परिस्थितियां बनी रहें।

3. (3) प्रतिभूतियों के बदले बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा दिए जाने वाले अल्पकालिक ऋण की दर
रेपो दर वह अल्पकालिक ब्याज दर है जिस पर भारतीय रिजर्व बैंक वाणिज्यिक बैंकों को उनकी आकस्मिक नकदी की कमी को पूरा करने हेतु ऋण प्रदान करता है। इस प्रक्रिया में बैंक सरकारी प्रतिभूतियों को संपार्श्विक के रूप में गिरवी रखते हैं और भविष्य में उन्हें पुनर्खरीद करने का वादा करते हैं। यह मौद्रिक नीति का प्रमुख उपकरण है, जिसका उपयोग अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति नियंत्रण और तरलता प्रबंधन के लिए किया जाता है।

4. (4) वाणिज्यिक बैंकों के उधार देने योग्य संसाधनों में कमी आएगी
नकद आरक्षित अनुपात वाणिज्यिक बैंकों की शुद्ध मांग और समय देयताओं का वह अनिवार्य हिस्सा है जिसे उन्हें भारतीय रिजर्व बैंक के पास नकद जमा करना पड़ता है। जब इस अनुपात में वृद्धि की जाती है, तो बैंकों के पास उधार देने हेतु उपलब्ध धन की मात्रा कम हो जाती है। यह कदम बाजार में मुद्रा आपूर्ति को संकुचित करने और अत्यधिक तरलता को नियंत्रित करने के उद्देश्य से उठाया जाता है।

5. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
मौद्रिक नीति के उपकरण विशिष्ट आर्थिक भूमिकाएं निभाते हैं। बैंक दर वह दर है जिस पर केंद्रीय बैंक दीर्घकालिक बिलों की पुनर्भुनाई करता है। सांविधिक तरलता अनुपात के तहत बैंकों को अनिवार्य रूप से तरल संपत्तियां रखनी होती हैं। नकद आरक्षित अनुपात रिजर्व बैंक के पास रखा जाने वाला ब्याज-रहित कोष है, जबकि रिवर्स रेपो दर वह प्रतिफल है जो केंद्रीय बैंक बैंकों की अतिरिक्त जमा राशि पर प्रदान करता है।

6. (2) कराधान नीतियां
आर्थिक स्थिरता के लिए मुख्य रूप से मौद्रिक और राजकोषीय नीतियां अपनाई जाती हैं। खुले बाजार की क्रियाएं, सांविधिक तरलता अनुपात और सीमांत स्थायी सुविधा भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा संचालित मौद्रिक नीति के उपकरण हैं। इसके विपरीत, कराधान नीतियां सरकार की राजकोषीय नीति का हिस्सा हैं, जिनका प्रबंधन सीधे वित्त मंत्रालय द्वारा किया जाता है। इसलिए, कराधान अन्य विकल्पों से भिन्न है क्योंकि इसका कार्यान्वयन सरकार द्वारा किया जाता है।

7. (4) बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक के पास धन रखने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे तरलता कम होती है
जब भारतीय रिजर्व बैंक रिवर्स रेपो दर में वृद्धि करता है, तो वाणिज्यिक बैंकों के लिए अपनी अधिशेष धनराशि को केंद्रीय बैंक के पास जमा करना अधिक आकर्षक हो जाता है। इससे बैंकों को जोखिम-मुक्त और उच्च लाभ मिलता है, जिससे वे बाजार में ऋण देने के बजाय पैसा आरक्षित रखना बेहतर समझते हैं। परिणामस्वरूप, बैंकिंग प्रणाली में तरलता कम हो जाती है, जो अंततः अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति नियंत्रित करती है।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुद्रास्फीति के समय अर्थव्यवस्था में धन की मात्रा अधिक होती है। भारतीय रिजर्व बैंक खुले बाजार की क्रियाओं के माध्यम से सरकारी प्रतिभूतियों को बेचकर बैंकिंग प्रणाली से अतिरिक्त नकदी को बाहर निकालता है। जब बैंक इन प्रतिभूतियों को खरीदते हैं, तो उनकी ऋण देने की क्षमता स्वतः कम हो जाती है। यह प्रक्रिया कुल मांग को कम करने और कीमतों को स्थिर करने हेतु एक प्रभावी मौद्रिक उपकरण है।

9. (3) भारतीय रिजर्व बैंक बैंकों द्वारा बनाए रखे गए इस अनुपात पर एक निश्चित दंडात्मक ब्याज देता है
सांविधिक तरलता अनुपात के तहत वाणिज्यिक बैंकों को अपनी कुल जमा राशि का एक निश्चित हिस्सा नकद, स्वर्ण या अनुमोदित सरकारी प्रतिभूतियों के रूप में स्वयं के पास रखना अनिवार्य होता है। भारतीय रिजर्व बैंक इस आरक्षित निधि पर बैंकों को कोई प्रत्यक्ष ब्याज नहीं देता है। हालांकि, यदि बैंक सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं, तो उन्हें उन प्रतिभूतियों पर मिलने वाले कूपन या ब्याज से आय प्राप्त होती है।

NODIA

10. (1) सीमांत स्थायी सुविधा दर, रेपो दर, रिवर्स रेपो दर
भारतीय रिजर्व बैंक के नीतिगत गलियारे में दरें एक निश्चित पदानुक्रम का पालन करती हैं। सीमांत स्थायी सुविधा दर उच्चतम स्तर पर होती है क्योंकि यह बैंकों के लिए आपातकालीन उधार की दर है। इसके बाद रेपो दर आती है, जो मुख्य नीतिगत दर के रूप में कार्य करती है। रिवर्स रेपो दर आमतौर पर सबसे कम होती है क्योंकि यह बैंकों की अतिरिक्त जमा राशि पर मिलने वाला प्रतिफल है।

11. (4) अर्थव्यवस्था में कुल मुद्रा आपूर्ति बढ़ जाती है
जब भारतीय रिजर्व बैंक खुले बाजार में बैंकों या जनता से सरकारी प्रतिभूतियां खरीदता है, तो वह बैंकिंग प्रणाली में तरलता प्रवाहित करता है। इस खरीद के बदले में किया गया भुगतान सीधे अर्थव्यवस्था के मुद्रा प्रवाह में जुड़ जाता है। इससे मुद्रा की आपूर्ति बढ़ जाती है और बैंकों की ऋण देने की क्षमता में वृद्धि होती है। यह प्रक्रिया आमतौर पर आर्थिक गतिविधियों को गति देने के लिए अपनाई जाती है।

12. (3) केवल I और III
मौद्रिक नीति समिति भारत में ब्याज दरें निर्धारित करने वाली छह सदस्यीय वैधानिक संस्था है। इसकी अध्यक्षता भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर करते हैं। समिति में तीन सदस्य रिजर्व बैंक से और तीन सरकार द्वारा नियुक्त स्वतंत्र विशेषज्ञ होते हैं। निर्णय बहुमत के आधार पर लिए जाते हैं और मत बराबर होने की स्थिति में गवर्नर के पास निर्णायक मत देने का अधिकार होता है, जो मौद्रिक स्थिरता सुनिश्चित करता है।

13. (3) खुदरा मुद्रास्फीति को एक वैधानिक लक्ष्य सीमा के भीतर बनाए रखना
मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण एक मौद्रिक नीति ढांचा है जिसमें केंद्रीय बैंक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक पर आधारित खुदरा मुद्रास्फीति हेतु एक विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित करता है। भारत में यह लक्ष्य वर्तमान में 4% है, जिसमें 2% की वृद्धि या कमी की अनुमति है। इसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास को बाधित किए बिना कीमतों में स्थिरता लाना है। यह नीति पारदर्शिता बढ़ाती है और भविष्य की मुद्रास्फीति संबंधी अपेक्षाओं को प्रबंधित करती है।

14. (4) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934
भारत में मौद्रिक नीति समिति के गठन और संचालन हेतु वैधानिक आधार भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 में संशोधन द्वारा प्रदान किया गया। यह संशोधन वर्ष 2016 में किया गया था ताकि ब्याज दरों के निर्धारण की प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और सामूहिक बनाया जा सके। इससे पहले, रेपो दर और अन्य नीतिगत दरों के बारे में निर्णय लेने का एकमात्र अधिकार रिजर्व बैंक के गवर्नर के पास सुरक्षित होता था।

15. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
मौद्रिक नीति के विभिन्न रुख केंद्रीय बैंक की भविष्य की योजनाओं को दर्शाते हैं। उदार रुख का अर्थ विकास को गति देने हेतु ब्याज दरों में कटौती की संभावना है। कठोर रुख मुद्रास्फीति नियंत्रित करने हेतु दरों में वृद्धि का संकेत देता है। नपा-तुला कड़ा रुख दर्शाता है कि दरें स्थिर रहेंगी या बढ़ेंगी। तटस्थ रुख का अर्थ है कि केंद्रीय बैंक आंकड़ों के आधार पर किसी भी दिशा में निर्णय ले सकता है।

16. (2) अर्थव्यवस्था में कुल मांग को कम करने के लिए ऋण की लागत बढ़ाना
रेपो दर में वृद्धि करने से बैंकों के लिए केंद्रीय बैंक से धन उधार लेना महंगा हो जाता है। परिणामस्वरुप, वाणिज्यिक बैंक भी अपने ग्राहकों के लिए ऋण की ब्याज दरों में वृद्धि कर देते हैं। ऋण महंगा होने से अर्थव्यवस्था में निवेश और उपभोग व्यय में कमी आती है, जिससे कुल मांग घट जाती है। यह प्रक्रिया मुद्रास्फीति के दबाव को कम करने और मूल्य स्तर को स्थिर करने हेतु लक्षित होती है।

17. (2) सरकार के कर राजस्व लक्ष्यों का प्रबंधन करना
मौद्रिक नीति का प्राथमिक उद्देश्य मूल्य स्थिरता बनाए रखना और आर्थिक विकास का समर्थन करना है। यह वित्तीय प्रणाली की स्थिरता सुनिश्चित करती है और उत्पादक क्षेत्रों को पर्याप्त ऋण प्रवाह निर्देशित करने का प्रयास करती है। हालांकि, सरकार के कर राजस्व लक्ष्यों का प्रबंधन करना या बजट घाटे को नियंत्रित करना प्रत्यक्ष रूप से मौद्रिक नीति का कार्य नहीं है। ये कार्य राजकोषीय नीति के अंतर्गत आते हैं, जो वित्त मंत्रालय की जिम्मेदारी है।

18. (2) केवल I, III और IV
नकद आरक्षित अनुपात और सांविधिक तरलता अनुपात बैंकिंग तरलता प्रबंधन के अनिवार्य उपकरण हैं। नकद आरक्षित अनुपात का हिस्सा भारतीय रिजर्व बैंक के पास नकद रूप में रखा जाता है, जिस पर कोई ब्याज नहीं मिलता। इसके विपरीत, सांविधिक तरलता अनुपात को बैंक स्वयं के पास स्वर्ण या सरकारी प्रतिभूतियों में रखते हैं। इन अनुपातों में कमी करने से बैंकों के पास ऋण देने हेतु अधिक संसाधन उपलब्ध होते हैं।

19. (3) वह प्रक्रिया जहां नीतिगत दरों में बदलाव बैंक ऋण दरों को प्रभावित करते हैं
मौद्रिक नीति संचरण वह तंत्र है जिसके माध्यम से केंद्रीय बैंक द्वारा नीतिगत दरों में किए गए परिवर्तन वास्तविक अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। जब भारतीय रिजर्व बैंक रेपो दर बदलता है, तो उससे बैंकों की जमा और ऋण दरों में परिवर्तन अपेक्षित होता है। यदि बैंक अपनी ऋण दरों को नीतिगत दरों के अनुरूप घटाते या बढ़ाते हैं, तो इसे प्रभावी संचरण माना जाता है। यह प्रक्रिया विकास और मुद्रास्फीति को प्रभावित करती है।

20. (4) राजकोषीय नीति निर्माता - केंद्रीय बजट तैयार करता है और लागू करता है
भारतीय रिजर्व बैंक कई महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाता है, जिनमें सरकार का बैंकर होना, विदेशी मुद्रा भंडार का संरक्षण और बैंकों के लिए अंतिम ऋणदाता के रूप में कार्य करना शामिल है। हालांकि, राजकोषीय नीति बनाना और केंद्रीय बजट तैयार करना रिजर्व बैंक का कार्य नहीं है। राजकोषीय नीतियां पूरी

Click Here to Buy book on Amazon

तरह से भारत सरकार के वित्त मंत्रालय द्वारा निर्धारित की जाती हैं। रिजर्व बैंक केवल सरकार के ऋणों का प्रबंधन करता है।

21. (3) अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने के लिए सरकारी राजस्व और व्यय का प्रबंधन
राजकोषीय नीति सरकार का एक महत्वपूर्ण आर्थिक साधन है जो मुख्य रूप से सार्वजनिक राजस्व और व्यय के प्रबंधन से संबंधित है। इसके माध्यम से सरकार अर्थव्यवस्था में कुल मांग, संसाधन आवंटन और आय वितरण को प्रभावित करने का प्रयास करती है। कराधान, सार्वजनिक ऋण और बुनियादी ढांचे पर व्यय इस नीति के मुख्य अंग हैं। यह नीति आर्थिक स्थिरता प्राप्त करने और रोजगार सृजन करने के लिए बनाई जाती है।

22. (3) केवल I, II, III और V
विस्तारवादी राजकोषीय नीति का उपयोग आर्थिक मंदी के समय कुल मांग को बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसमें सरकार सार्वजनिक व्यय में वृद्धि करती है और कर दरों में कटौती करती है ताकि नागरिकों की क्रय शक्ति बढ़ सके। हालांकि यह नीति आर्थिक गतिविधियों को गति देती है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप अक्सर राजकोषीय घाटे में वृद्धि होती है क्योंकि सरकार अपनी राजस्व आय से अधिक खर्च करती है।

23. (4) वित्त मंत्रालय
भारत में राजकोषीय नीति तैयार करने और उसे लागू करने की प्राथमिक जिम्मेदारी वित्त मंत्रालय की होती है। मंत्रालय बजट निर्माण के माध्यम से कर की दरों, सरकारी व्यय और ऋण प्रबंधन की रुपरेखा तैयार करता है। जबकि भारतीय रिजर्व बैंक मौद्रिक नीति देखता है, वित्त मंत्रालय प्रत्यक्ष रुप से देश के वित्तीय संसाधनों के प्रबंधन और राजकोषीय अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए संसद के प्रति उत्तरदायी होता है।

24. (1) सहायता अनुदान कम करना और प्रत्यक्ष कर बढ़ाना
संकुचनकारी राजकोषीय नीति का उद्देश्य अर्थव्यवस्था में अत्यधिक मांग और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना होता है। इसे प्राप्त करने के लिए सरकार सार्वजनिक व्यय, जैसे कि सब्सिडी और सहायता अनुदान में कटौती करती है, और कर की दरों में वृद्धि करती है। इससे बाजार में उपलब्ध मुद्रा की मात्रा कम हो जाती है, जिससे उपभोग में कमी आती है। यह नीति राजकोषीय घाटे को कम करने में भी प्रभावी होती है।

25. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
आर्थिक प्रबंधन हेतु मौद्रिक और राजकोषीय उपकरणों का वर्गीकरण स्पष्ट है। नकद आरक्षित अनुपात और खुले बाजार की क्रियाएं मौद्रिक नीति के उपकरण हैं जिन्हें भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा नियंत्रित किया जाता है। दूसरी ओर, वस्तु एवं सेवा कर और सार्वजनिक ऋण का प्रबंधन राजकोषीय नीति का हिस्सा हैं, जो सरकार के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। ये उपकरण मिलकर अर्थव्यवस्था में स्थिरता सुनिश्चित करते हैं।

26. (1) उच्च ब्याज दरों के कारण निजी निवेश का विस्थापन
जब सरकार अपने उच्च राजकोषीय घाटे को पूरा करने हेतु घरेलू बाजार से भारी मात्रा में ऋण लेती है, तो ऋण योग्य निधियों की मांग बढ़ जाती है। इससे बाजार में ब्याज दरें ऊपर की ओर बढ़ती हैं। उच्च ब्याज दरों के कारण निजी क्षेत्र के निवेशकों के लिए ऋण लेना महंगा हो जाता है, जिससे उनके निवेश में कमी आती है। इस घटना को 'विस्थापन प्रभाव' कहा जाता है।

27. (4) विस्तारवादी मौद्रिक नीति और विस्तारवादी राजकोषीय नीति
गंभीर मंदी और उच्च बेरोजगारी की स्थिति में अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने हेतु विस्तारवादी मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों के समन्वय की आवश्यकता होती है। विस्तारवादी मौद्रिक नीति ब्याज दरों को कम करके ऋण प्रवाह बढ़ाती है, जबकि विस्तारवादी राजकोषीय नीति सरकारी व्यय बढ़ाकर और कर घटाकर मांग पैदा करती है। ये दोनों कदम मिलकर निवेश को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे उत्पादन बढ़ता है और रोजगार के नए अवसर सृजित होते हैं।

28. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विस्तारवादी राजकोषीय नीति के तहत जब सरकार अपना व्यय बढ़ाती है या करों में कटौती करती है, तो लोगों के पास खर्च करने के लिए अधिक पैसा होता है। इससे वस्तुओं और सेवाओं की कुल मांग में अचानक वृद्धि हो सकती है। यदि अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता इस बढ़ी हुई मांग के साथ तालमेल नहीं बिठा पाती, तो कीमतों में वृद्धि होने लगती है। इसे 'मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति' कहते हैं।

29. (3) सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों से प्राप्त लाभांश
पूंजीगत प्राप्तियां वे सरकारी आय हैं जो या तो देयता उत्पन्न करती हैं या संपत्तियों को कम करती हैं। ऋणों की वसूली और विनिवेश से प्राप्त धन इसके उदाहरण हैं। इसके विपरीत, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों से प्राप्त लाभांश सरकार की राजस्व प्राप्ति है क्योंकि यह नियमित आय है और इससे न तो कोई संपत्ति कम होती है और न ही कोई देयता बढ़ती है। इसलिए, लाभांश पूंजीगत प्राप्तियों में नहीं आता।

30. (1) II - IV - I - V - III
संसद में बजट पारित करने की प्रक्रिया कई चरणों से गुजरती है। इसकी शुरुआत वित्त मंत्री द्वारा बजट प्रस्तुति से होती है, जिसके बाद सदन में सामान्य चर्चा की जाती है। अगला चरण विभिन्न मंत्रालयों की अनुदान मांगों पर मतदान का होता है। इसके बाद, संचित निधि से धन निकालने की अनुमति हेतु विनियोग विधेयक पारित किया जाता है। अंत में, कर प्रस्तावों को कानूनी रुप देने हेतु वित्त विधेयक पारित होता है।

31. (1) यह न तो देयता पैदा करती है और न ही परिसंपत्ति को कम करती है
किसी भी सरकारी प्राप्ति को राजस्व प्राप्ति तब माना जाता है जब वह दो अनिवार्य मानदंडों को पूरा करती है। पहला, इस प्राप्ति से सरकार पर कोई भविष्य की वित्तीय देयता या ऋण का बोझ नहीं बढ़ता है। दूसरा, इसके प्राप्त होने से सरकार की

Downloaded from www.pdf.tube

किसी भी मौजूदा संपत्ति या निवेश में कोई कमी नहीं आती है। कर राजस्व, शुल्क, और निवेश पर मिलने वाला लाभांश इसी श्रेणी के अंग हैं।

32. (1) केवल I और II
पूंजीगत व्यय सरकार का वह खर्च है जिसका उद्देश्य भविष्य में लाभ प्राप्त करना होता है। इसमें नई भौतिक परिसंपत्तियों जैसे सड़कों और पुलों का निर्माण, या वित्तीय परिसंपत्तियों का सृजन शामिल है। इसके अतिरिक्त, पिछले लिए गए ऋणों के मूलधन का पुनर्भुगतान भी इसी श्रेणी में आता है क्योंकि यह सरकार की ऋण देयता को कम करता है। वेतन और पेंशन का भुगतान राजस्व व्यय की श्रेणी में आता है।

33. (2) इसका सीधा परिणाम उत्पादक भौतिक परिसंपत्तियों के सृजन के रूप में होता है
राजस्व व्यय सरकार का वह खर्च है जो प्रशासनिक कार्यों और सेवाओं के सामान्य संचालन के लिए आवश्यक होता है। इसमें वेतन, पेंशन, ऋण पर ब्याज भुगतान और सब्सिडी शामिल हैं। इस प्रकार के व्यय की मुख्य विशेषता यह है कि इससे किसी उत्पादक भौतिक या वित्तीय संपत्ति का सृजन नहीं होता है। यह खर्च सरकार की उपभोग संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जाता है।

34. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
बजट को राजस्व और पूंजीगत दो भागों में बांटा जाता है। पूंजीगत बजट में पूंजीगत प्राप्तियां और भुगतान शामिल होते हैं। तकनीकी रूप से केंद्र द्वारा राज्यों को पूंजीगत संपत्ति बनाने हेतु दिया गया अनुदान राजस्व व्यय के रूप में दर्ज किया जाता है क्योंकि यह 'सहायता अनुदान' है। हालांकि, चूंकि यह उत्पादक परिसंपत्ति बनाता है, इसलिए 'प्रभावी राजस्व घाटे' की गणना के समय इसे राजस्व व्यय से पृथक किया जाता है।

35. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
सरकारी बजट की विभिन्न मदों का वर्गीकरण उनके आर्थिक प्रभाव पर आधारित है। आयकर राजस्व प्राप्ति है क्योंकि यह सरकार की गैर-प्रतिदेय आय है। राज्यों द्वारा ऋण का पुनर्भुगतान पूंजीगत प्राप्ति है क्योंकि इससे वित्तीय परिसंपत्ति कम होती है। राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज भुगतान राजस्व व्यय है क्योंकि यह नियमित सेवा लागत है। राजमार्गों का निर्माण पूंजीगत व्यय है क्योंकि इससे स्थायी भौतिक परिसंपत्ति का सृजन होता है।

36. (4) विदेशी कंपनियों द्वारा भुगतान किया गया निगम कर
गैर-कर राजस्व सरकार की वह आय है जो करों के अलावा अन्य स्त्रोतों से प्राप्त होती है। इसमें सरकारी सेवाओं हेतु शुल्क, जुर्माना, ऋणों पर ब्याज और सार्वजनिक उपक्रमों से मिलने वाला लाभांश शामिल है। इसके विपरीत, निगम कर कंपनियों की शुद्ध आय पर लगाया जाने वाला एक प्रत्यक्ष कर है। चूंकि यह प्रत्यक्ष कर श्रेणी का हिस्सा है, इसलिए इसे गैर-कर राजस्व में शामिल नहीं किया जा सकता है।

37. (3) राजस्व गैर-प्रतिदेय है; पूंजी में भविष्य का पुनर्भुगतान या बिक्री शामिल है
राजस्व प्राप्ति और पूंजीगत प्राप्ति के बीच मुख्य अंतर उनकी प्रकृति और देयता में निहित है। राजस्व प्राप्तियां गैर-प्रतिदेय होती हैं, जिसका अर्थ है कि सरकार को इन्हें वापस करने की कोई आवश्यकता नहीं होती है। ये नियमित रुप से प्राप्त होती हैं। इसके विपरीत, पूंजीगत प्राप्तियों में या तो भविष्य में ऋण चुकाने की बाध्यता होती है या इसमें विनिवेश जैसी परिसंपत्तियों की बिक्री शामिल होती है।

38. (2) केवल II और IV
बजट वर्गीकरण में कुछ महत्वपूर्ण तकनीकी अंतर होते हैं। रक्षा उपकरणों की खरीद को आमतौर पर पूंजीगत व्यय माना जाता है क्योंकि ये दीर्घकालिक रक्षा परिसंपत्तियां बनाते हैं। इसी तरह, विनिवेश से प्राप्त आय को पूंजीगत प्राप्ति के रूप में वर्गीकृत किया जाता है क्योंकि इसमें सरकारी निवेश कम हो जाता है। राजस्व प्राप्तियों में केवल कर और गैर-कर आय शामिल होती है, जिससे सरकारी संपत्ति में कोई कमी नहीं आती है।

39. (4) संतुलित बजट - राजस्व व्यय के बराबर है
बजट के विभिन्न प्रकार आय और व्यय के संतुलन को दर्शाते हैं। संतुलित बजट वह स्थिति है जहां सरकार का कुल अनुमानित राजस्व उसके कुल अनुमानित व्यय के बराबर होता है। यदि व्यय अधिक हो तो उसे घाटे का बजट और यदि राजस्व अधिक हो तो उसे अधिशेष बजट कहा जाता है। प्राथमिक घाटा राजकोषीय घाटे और ब्याज भुगतान का अंतर है। ये अवधारणाएं सरकार की वित्तीय स्थिति को स्पष्ट करती हैं।

40. (1) पूंजीगत प्राप्ति और पूंजीगत व्यय
जब सरकार रेलवे विस्तार जैसी बड़ी परियोजना हेतु बाजार से उधार लेती है, तो यह राशि सरकार पर एक वित्तीय देयता पैदा करती है, इसलिए इसे 'पूंजीगत प्राप्ति' माना जाता है। इसके बाद, रेलवे बुनियादी ढांचे के निर्माण पर होने वाला खर्च एक स्थायी भौतिक परिसंपत्ति बनाता है, जो इसे 'पूंजीगत व्यय' की श्रेणी में रखता है। इस प्रकार, यह पूरी प्रक्रिया देश के पूंजीगत बजट का हिस्सा होती है।

NODIA

41. (3) उधार को छोड़कर कुल प्राप्तियां
राजकोषीय घाटा सरकार की कुल उधार आवश्यकताओं का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। इसे सरकार के कुल व्यय और उसकी कुल प्राप्तियों के बीच के अंतर के रूप में मापा जाता है, जिसमें ऋण शामिल नहीं होता है। सरल शब्दों में, यह बताता है कि सरकार को अपने खर्चों को पूरा करने हेतु बाजार से कितना ऋण लेने की आवश्यकता है। यह अर्थव्यवस्था के राजकोषीय स्वास्थ्य का आकलन करने का मुख्य पैमाना है।

42. (4) I, II, III, IV और V
राजस्व घाटा दर्शाता है कि सरकार अपने दैनिक खर्चों हेतु पर्याप्त आय नहीं जुटा पा रही है। राजकोषीय घाटा कुल उधार की जरूरत को बताता है, जबकि प्राथमिक घाटा केवल वर्तमान वर्ष की राजकोषीय स्थिति स्पष्ट करता है। शून्य प्राथमिक घाटा

यह संकेत देता है कि सरकार का सारा नया उधार केवल पुराने ऋणों के ब्याज को चुकाने में जा रहा है। प्रभावी राजस्व घाटा उत्पादक अनुदानों को राजस्व व्यय से पृथक करता है।

43. (4) वर्तमान राजकोषीय घाटा और पिछले ऋण पर ब्याज का अंतर
प्राथमिक घाटा सरकार के वित्तीय स्वास्थ्य का वह माप है जो वर्तमान राजकोषीय घाटे में से पिछले ऋणों पर किए गए ब्याज भुगतान को घटाकर प्राप्त किया जाता है। यह स्पष्ट करता है कि सरकार की वर्तमान नीतियां, ब्याज के बोझ को छोड़कर, कितनी असंतुलित हैं। उच्च प्राथमिक घाटा वर्तमान सरकार के बढ़ते खर्चों का संकेत देता है, जबकि शून्य प्राथमिक घाटा यह दर्शाता है कि नया ऋण केवल पुराना ब्याज चुकाने हेतु है।

44. (2) उपभोग के वित्तपोषण के लिए सरकार द्वारा की गई 'अपबचत'
राजस्व घाटा एक नकारात्मक संकेत है जो यह दर्शाता है कि सरकार अपने नियमित प्रशासनिक कार्यों और सामाजिक सेवाओं हेतु अपनी आय से अधिक खर्च कर रही है। इसे 'अपबचत' कहा जाता है क्योंकि सरकार को अपने दैनिक उपभोग व्यय हेतु उधार लेना पड़ता है या अपनी संपत्तियों को बेचना पड़ता है। यह स्थिति निवेश हेतु उपलब्ध संसाधनों को कम करती है और भविष्य के आर्थिक विकास हेतु जोखिम पैदा करती है।

45. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
विभिन्न प्रकार के घाटे सरकारी वित्त के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। राजस्व घाटा तब होता है जब राजस्व व्यय राजस्व प्राप्तियों से अधिक हो। राजकोषीय घाटा कुल व्यय और गैर-ऋण प्राप्तियों का अंतर है। प्राथमिक घाटा राजकोषीय घाटे में से ब्याज भुगतान को घटाकर निकाला जाता है। प्रभावी राजस्व घाटा राजस्व घाटे में से उन अनुदानों को कम करके प्राप्त होता है जो राज्यों को पूंजीगत संपत्तियों हेतु दिए जाते हैं।

46. (4) राजकोषीय घाटा पिछले ऋण पर ब्याज के बराबर है
यदि किसी वित्तीय वर्ष में प्राथमिक घाटा शून्य है, तो इसका अर्थ है कि उस वर्ष का राजकोषीय घाटा पूरी तरह से पिछले संचित ऋणों पर देय ब्याज के बराबर है। ऐसी स्थिति में, सरकार ने अपने चालू व्यय और आय के बीच संतुलन बना लिया है, लेकिन उसे पुराने कर्जों का ब्याज चुकाने हेतु नया उधार लेना पड़ रहा है। यह राजकोषीय अनुशासन की दिशा में एक सकारात्मक कदम माना जाता है।

47. (1) सरकार के budget घाटे को पूरा करने के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा नए मुद्रा नोट छापना
राजकोषीय घाटे के मुद्रीकरण का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें सरकार अपने घाटे को पूरा करने हेतु सीधे भारतीय रिजर्व बैंक को अपनी प्रतिभूतियां बेचती है। इसके बदले में, केंद्रीय बैंक नई मुद्रा छापकर सरकार को धन उपलब्ध कराता है। हालांकि यह घाटे को वित्तपोषित करने का सरल तरीका लगता है, लेकिन इससे अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति अचानक बढ़ जाती है, जिससे उच्च मुद्रास्फीति का गंभीर जोखिम पैदा होता है।

48. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जब सरकार का राजकोषीय घाटा निरंतर उच्च बना रहता है, तो उसे बाजार से बहुत अधिक उधार लेना पड़ता है। चूंकि घरेलू बचत का भंडार सीमित होता है, इसलिए सरकार की उच्च मांग के कारण निजी क्षेत्र हेतु ऋण की उपलब्धता कम हो जाती है। इसके परिणामस्वरुप ब्याज दरें बढ़ जाती हैं, जिससे निजी व्यवसायों हेतु निवेश करना महंगा हो जाता है। इस प्रक्रिया को 'विस्थापन प्रभाव' कहा जाता है।

49. (2) विदेशी राष्ट्रों से सहायता अनुदान
राजकोषीय घाटे को वित्तपोषित करने हेतु सरकार विभिन्न स्रोतों का उपयोग करती है। इसमें बाजार उधार, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से ऋण और लघु बचत योजनाओं से प्राप्त धन शामिल हैं। सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड भी ऋण का एक प्रकार है। हालांकि, विदेशी राष्ट्रों से प्राप्त 'सहायता अनुदान' घाटे के वित्तपोषण का स्रोत नहीं है क्योंकि यह एक गैर-प्रतिदेय प्राप्ति है जो राजस्व खाते में जुड़ती है और राजकोषीय घाटे को कम करती है।

50. (1) इसकी गणना राजस्व घाटे में पूंजीगत व्यय जोड़कर की जाती है
प्रभावी राजस्व घाटा एक परिष्कृत बजटीय अवधारणा है जिसे 2011-12 में पेश किया गया था। इसकी गणना राजस्व घाटे में से उन अनुदानों को घटाकर की जाती है जो पूंजीगत परिसंपत्तियों के निर्माण हेतु राज्यों को दिए जाते हैं। यह इस तर्क पर आधारित है कि ये अनुदान तकनीकी रूप से राजस्व व्यय होने के बावजूद अंततः उत्पादक संपत्तियां बनाते हैं। इससे सरकार के शुद्ध उपभोग व्यय की सटीक तस्वीर प्राप्त होती है।

51. (3) अंतर-पीढ़ीगत समानता और व्यापक आर्थिक स्थिरता प्राप्त करना
राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम, 2003 का मुख्य लक्ष्य सरकारी वित्तीय कामकाज में अनुशासन लाना है। इसका उद्देश्य राजकोषीय घाटे और ऋण को विवेकपूर्ण स्तर तक कम करना है ताकि अंतर-पीढ़ीगत समानता सुनिश्चित की जा सके। यह ढांचा सरकार को दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता हेतु पारदर्शी और जवाबदेह बनाता है। यह अधिनियम सुनिश्चित करता है कि वर्तमान पीढ़ी का अत्यधिक खर्च भविष्य की पीढ़ियों पर बोझ न बने।

52. (1) केवल I और II
राजकोषीय उत्तरदायित्व ढांचे में शामिल 'बचाव खंड' सरकार को गंभीर संकटों के दौरान निर्धारित घाटे के लक्ष्यों से थोड़ा विचलित होने की अनुमति देता है। युद्ध, राष्ट्रीय सुरक्षा खतरे, कृषि क्षेत्र का पतन या महामारी जैसी असाधारण परिस्थितियां इसे लागू करने के वैध आधार हैं। हालांकि, यह विचलन असीमित नहीं हो सकता; इसे जीडीपी के 0.5% तक सीमित रखा जाता है और सरकार को इसकी सूचना संसद को देना अनिवार्य है।

Click Here to Buy book on Amazon

53. (3) राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम के कार्यान्वयन की समीक्षा करना
एन.के. सिंह समिति का गठन राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम के कार्यान्वयन की व्यापक समीक्षा हेतु किया गया था। समिति को एक नया राजकोषीय रोडमैप तैयार करने का कार्य सौंपा गया था जिसमें राजकोषीय घाटे और ऋण के व्यावहारिक लक्ष्य निर्धारित किए जा सकें। समिति ने 'ऋण से जीडीपी अनुपात' को मुख्य राजकोषीय आधार के रूप में उपयोग करने और विशिष्ट 'बचाव खंड' को परिभाषित करने की सिफारिशें की थीं।

54. (2) घाटे और ऋण के संचय को कम करने के उद्देश्य से बनाई गई सरकारी नीतियां
राजकोषीय सुदृढ़ीकरण उन नीतियों का समूह है जिनका उद्देश्य सरकारी राजकोषीय घाटे और संचित सार्वजनिक ऋण को कम करना है। इसे राजस्व बढ़ाने, जैसे कि कर सुधार, तथा व्यय को युक्तिसंगत बनाने, जैसे कि गैर-जरूरी सब्सिडी को कम करने के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। यह प्रक्रिया अर्थव्यवस्था में विश्वास बहाल करने, ब्याज दरों को कम रखने और दीर्घकालिक सतत आर्थिक विकास के लिए एक मजबूत वित्तीय आधार तैयार करती है।

55. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
भारत के आर्थिक ढांचे में विभिन्न समितियां विशिष्ट भूमिकाएं निभाती हैं। एन.के. सिंह समिति राजकोषीय घाटे के लक्ष्यों की समीक्षा से जुड़ी है। उर्जित पटेल समिति ने मौद्रिक नीति ढांचे में सुधार और मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण की सिफारिश की थी। एफआरबीएम अधिनियम राजकोषीय अनुशासन का एक कानूनी ढांचा है। मौद्रिक नीति समिति एक वैधानिक संस्था है जिसे मुद्रास्फीति नियंत्रित करने हेतु रेपो दर निर्धारित करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।

56. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
राजकोषीय उत्तरदायित्व अधिनियम ने सरकार को राजस्व घाटे को समाप्त करने और राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करने का निर्देश दिया था। यह अधिनियम राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों के बीच एक स्पष्ट पृथक्करण भी स्थापित करता है। यह भारतीय रिजर्व बैंक को केंद्र सरकार की प्रतिभूतियों के प्राथमिक निर्गमों को सीधे खरीदने से रोकता है, जिसका अर्थ है कि घाटे का मुद्रीकरण प्रतिबंधित है। यह प्रावधान केंद्रीय बैंक की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने हेतु महत्वपूर्ण है।

57. (3) गैर-आवश्यक व्ययों को युक्तिसंगत बनाना और कर अनुपालन में सुधार करना
राजकोषीय सुदृढ़ीकरण प्राप्त करने का सबसे प्रभावी तरीका राजस्व वृद्धि और व्यय प्रबंधन का समन्वय है। सरकार को कर चोरी रोकने, कर आधार विस्तृत करने और गैर-आवश्यक खर्चों को युक्तिसंगत बनाने पर ध्यान देना चाहिए। इसके साथ ही, सब्सिडी के बेहतर लक्ष्यीकरण और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन में सुधार महत्वपूर्ण हैं। बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को रोकना विकास को बाधित करता है, जबकि मुद्रा छापना मुद्रास्फीति बढ़ा सकता है।

58. (2) केवल I, II और III
राजकोषीय उत्तरदायित्व अधिनियम के तहत सरकार हेतु केंद्रीय बजट के साथ तीन प्रमुख नीतिगत दस्तावेज संसद में प्रस्तुत करना अनिवार्य है। इनमें समष्टि आर्थिक रूपरेखा विवरण, मध्यावधि राजकोषीय नीति विवरण और राजकोषीय नीति रणनीति विवरण शामिल हैं। ये दस्तावेज अर्थव्यवस्था की स्थिति और भविष्य के राजकोषीय रोडमैप को स्पष्ट करते हैं। वार्षिक वित्तीय विवरण अनुच्छेद 112 के तहत संवैधानिक आवश्यकता है, जो बजट का मुख्य भाग होता है।

NODIA

59. (4) शुद्ध मांग और समय देयताओं के प्रतिशत के रूप में नकद आरक्षित अनुपात
राजकोषीय उत्तरदायित्व ढांचा मुख्य रूप से सरकारी वित्त के संकेतकों जैसे राजकोषीय घाटा, राजस्व घाटा और कुल ऋण की निगरानी करता है। ये पैरामीटर राजकोषीय अनुशासन सुनिश्चित करते हैं। इसके विपरीत, नकद आरक्षित अनुपात मौद्रिक नीति का एक उपकरण है जिसे भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकिंग प्रणाली में तरलता और ऋण नियंत्रण हेतु स्वतंत्र रूप से प्रबंधित किया जाता है। इसका राजकोषीय उत्तरदायित्व अधिनियम से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है।

60. (2) राजकोषीय घाटा, राजस्व घाटा, प्राथमिक घाटा
भारतीय बजट में घाटों का एक निश्चित परिमाण क्रम देखा जाता है। राजकोषीय घाटा आमतौर पर सबसे बड़ा होता है क्योंकि इसमें सरकार की कुल उधार आवश्यकताएं शामिल होती हैं। इसके बाद राजस्व घाटा आता है, जो राजस्व व्यय और प्राप्तियों के अंतर को दर्शाता है। प्राथमिक घाटा सामान्यतः इन दोनों से कम होता है क्योंकि इसमें से ब्याज भुगतान को घटा दिया जाता है। यह क्रम सरकार के वित्तीय असंतुलन की संरचना को स्पष्ट करता है।

61. (3) अनुच्छेद 112
भारत के संविधान में "बजट" शब्द का उल्लेख नहीं किया गया है। इसके बजाय, अनुच्छेद 112 के तहत इसे "वार्षिक वित्तीय विवरण" के रूप में संदर्भित किया जाता है। यह अनुच्छेद राष्ट्रपति को प्रत्येक वित्तीय वर्ष हेतु सरकार की अनुमानित प्राप्तियों और व्यय का विवरण संसद के समक्ष रखवाने का उत्तरदायित्व देता है। यह विवरण सरकार की वित्तीय योजनाओं का आधार होता है और संचित निधि से धन निकालने हेतु संवैधानिक अनुमति सुनिश्चित करता है।

62. (2) केवल I, III, IV और V
केंद्रीय बजट की प्रक्रिया में लोकसभा की विशेष शक्तियां होती हैं। बजट वित्त मंत्री द्वारा लोकसभा में पेश किया जाता है और केवल उसी सदन को अनुदान मांगों पर मतदान करने का अधिकार है। विनियोग विधेयक संचित निधि से व्यय हेतु कानूनी अधिकार प्रदान करता है। बजट को नए वित्तीय वर्ष से पहले पारित करना आवश्यक है, अन्यथा सरकार को अंतरिम खर्च हेतु 'लेखानुदान' चाहिए होता है। राज्यसभा केवल चर्चा कर सकती है।

63. (1) भारत की संचित निधि
भारत की संचित निधि संविधान के अनुच्छेद 266 के तहत स्थापित मुख्य सरकारी निधि है। सरकार को प्राप्त सारा कर राजस्व, ऋणों से प्राप्त आय और ऋण वसूली इसी निधि में जमा की जाती है। इस निधि से किसी भी व्यय के लिए संसद की पूर्व स्वीकृति या विनियोग विधेयक का पारित होना अनिवार्य है। यह संसदीय संप्रभुता सुनिश्चित करता है क्योंकि कार्यपालिका बिना विधायी अनुमोदन के सार्वजनिक धन का उपयोग नहीं कर सकती।

64. (2) कर का करापात और प्रभाव उसी इकाई पर पड़ता है और इसे स्थानांतरित नहीं किया जा सकता है
प्रत्यक्ष कर वे कर हैं जो सीधे व्यक्तियों या कंपनियों की आय और संपत्ति पर लगाए जाते हैं। इनकी मुख्य विशेषता यह है कि कर का करापात और प्रभाव उसी इकाई पर पड़ता है, जिसका अर्थ है कि कर के बोझ को किसी अन्य व्यक्ति पर स्थानांतरित नहीं किया जा सकता। ये कर आमतौर पर प्रगतिशील होते हैं, जहां आय बढ़ने के साथ कर की दर बढ़ती है। आयकर और निगम कर इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

65. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
भारतीय कर संरचना में विभिन्न करों की अपनी विशिष्टताएं हैं। व्यक्तिगत आयकर व्यक्तियों पर लगाया जाने वाला प्रगतिशील प्रत्यक्ष कर है। निगम कर कंपनियों के शुद्ध लाभ पर लगाया जाता है। वस्तु एवं सेवा कर एक व्यापक अप्रत्यक्ष कर है जो वस्तुओं के उपभोग पर गंतव्य-आधारित सिद्धांत पर कार्य करता है। सीमा शुल्क आयात और निर्यात की जाने वाली वस्तुओं पर लगाया जाता है। ये कर मिलकर सरकार की राजस्व आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

66. (1) निजी निवेश और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना
निगम कर की दर में कमी करना सरकार का एक रणनीतिक कदम है जिसका उद्देश्य व्यापार की लागत को कम करना है। इससे कंपनियों के पास निवेश हेतु अधिक लाभ बचता है, जो उन्हें विस्तार और उत्पादन बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित करता है। यह नीति भारत को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी निवेश गंतव्य बनाने और निजी निवेश के माध्यम से दीर्घकालिक आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई है।

67. (3) उत्पाद शुल्क
कराधान प्रणाली में करों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष श्रेणियों में विभाजित किया गया है। निगम कर, व्यक्तिगत आयकर और न्यूनतम वैकल्पिक कर प्रत्यक्ष करों के उदाहरण हैं क्योंकि इनका भुगतान सीधे करदाता द्वारा सरकार को किया जाता है। इसके विपरीत, उत्पाद शुल्क एक अप्रत्यक्ष कर है जो वस्तुओं के निर्माण पर लगाया जाता है और इसका बोझ अंततः उपभोक्ताओं पर स्थानांतरित होता है। अतः उत्पाद शुल्क अन्य विकल्पों से भिन्न है।

68. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रगतिशील कराधान एक सामाजिक-आर्थिक सिद्धांत है जहां कर की दर आय बढ़ने के साथ बढ़ती है। आयकर इसका उदाहरण है, जहां उच्च आय वाले व्यक्तियों पर अधिक प्रतिशत कर लगाया जाता है। इस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य समाज में आय की असमानताओं को कम करना है। यह सुनिश्चित करता है कि कर का बोझ करदाता की भुगतान क्षमता के अनुरूप हो, जिससे राजकोषीय न्याय और समावेशी विकास को बढ़ावा मिलता है।

69. (3) उच्च छूट के कारण केंद्रीय कर पूल में व्यक्तिगत आयकर का कोई योगदान नहीं है
भारत की कर प्रणाली में हाल के वर्षों में कई महत्वपूर्ण रुझान देखे गए हैं। निगम कर और व्यक्तिगत आयकर जैसे प्रत्यक्ष करों का योगदान कुल राजस्व में बढ़ा है। यह कहना गलत है कि व्यक्तिगत आयकर का कोई योगदान नहीं है; वास्तव में, यह कर राजस्व का एक बड़ा हिस्सा है। वस्तु एवं सेवा कर के आने से अप्रत्यक्ष कर आधार व्यापक हुआ है और पारदर्शिता बढ़ी है, जिससे कर चोरी में कमी आई है।

70. (1) IV - III - II - I
भारत में कर सुधारों का एक लंबा इतिहास है। वर्तमान आयकर अधिनियम 1961 में लागू हुआ। इसके बाद, 1994 में सेवाओं पर कर लगाने की शुरुआत हुई। राज्य स्तर पर मूल्य वर्धित कर को 2005 के आसपास अपनाया गया। सबसे व्यापक सुधार के रूप में, 1 जुलाई 2017 को वस्तु एवं सेवा कर लागू किया गया, जिसने कई केंद्र और राज्य स्तरीय अप्रत्यक्ष करों को एक ही ढांचे में समाहित कर दिया।

71. (4) कर का बोझ उपभोक्ता पर स्थानांतरित किया जा सकता है
अप्रत्यक्ष कर वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन या बिक्री पर लगाए जाते हैं। इनकी प्रमुख विशेषता यह है कि जो व्यक्ति कर का भुगतान करता है वह उसका वास्तविक बोझ नहीं उठाता; वह इसे मूल्य में जोड़कर अगले खरीदार या उपभोक्ता पर स्थानांतरित कर देता है। ये कर उपभोग-आधारित होते हैं और आय स्तर की परवाह किए बिना सभी हेतु समान होते हैं। वस्तु एवं सेवा कर और सीमा शुल्क इसके मुख्य उदाहरण हैं।

72. (2) केवल I और III
भारत में वस्तु एवं सेवा कर एक दोहरा मॉडल अपनाता है जहां केंद्र और राज्य सरकारें एक ही आधार पर कर लगाती हैं। इसमें अंतर-राज्यीय लेनदेन पर केंद्र द्वारा केंद्रीय जीएसटी और राज्यों द्वारा राज्य जीएसटी लगाया जाता है। अंतर-राज्यीय व्यापार पर एकीकृत जीएसटी लगाया जाता है जिसे केंद्र एकत्र करता है और फिर गंतव्य राज्य के साथ साझा करता है। यह एक गंतव्य-आधारित उपभोग कर है जो राजस्व वितरण सुनिश्चित करता है।

73. (3) 101वां संशोधन अधिनियम
101वां संविधान संशोधन अधिनियम, 2016 भारत के कर इतिहास में एक मील का पत्थर है जिसने वस्तु एवं सेवा कर की शुरुआत की। इस संशोधन ने केंद्र और राज्यों को वस्तुओं और सेवाओं पर कर लगाने की साझा शक्ति प्रदान की, जो पहले संवैधानिक रूप से विभाजित थी। इसने 'एक राष्ट्र, एक कर' की

Downloaded from www.pdf.tube

अवधारणा को साकार किया और कई अप्रत्यक्ष करों को समाप्त करके पूरे देश में एकीकृत कर व्यवस्था लागू की।

74. (1) कर के कारण राजस्व हानि के लिए राज्यों को मुआवजा देना
वस्तु एवं सेवा कर क्षतिपूर्ति उपकर को जीएसटी लागू होने के कारण राज्यों को होने वाली राजस्व हानि की भरपाई हेतु पांच साल के लिए पेश किया गया था। यह उपकर मुख्य रूप से विलासिता और अहितकर वस्तुओं पर जीएसटी की उच्चतम दर के ऊपर लगाया जाता है। इससे एकत्रित धन को एक विशेष कोष में रखा जाता है जिसे केवल राज्यों को मुआवजा देने हेतु उपयोग किया जाता है। यह राज्यों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है।

75. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
वस्तु एवं सेवा कर की दरें वस्तुओं की आवश्यकता और प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत हैं। शून्य प्रतिशत दर आवश्यक खाद्य पदार्थों जैसे अनाज और ताजी सब्जियों पर लागू होती है ताकि गरीबों पर बोझ न पड़े। 5% की दर बुनियादी जरूरतों पर लगाई जाती है। 12% और 18% मानक दरें हैं जो अधिकांश निर्मित वस्तुओं और सेवाओं को कवर करती हैं। उच्चतम 28% दर विलासिता की वस्तुओं पर लगाई जाती है।

76. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
वस्तु एवं सेवा कर का मुख्य लाभ 'करों पर कर' के प्रभाव को समाप्त करना है। यह इनपुट टैक्स क्रेडिट के माध्यम से संभव होता है, जहां एक व्यवसाय अपनी खरीद पर चुकाए गए कर को अपनी बिक्री पर देय कर से घटा सकता है। यह सुनिश्चित करता है कि कर केवल मूल्यवर्धन के प्रत्येक चरण पर लगाया जाए। इस प्रणाली से वस्तुओं की कुल लागत कम होती है और संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला में दक्षता बढ़ती है।

77. (3) केंद्र और गुजरात सरकारें राजस्व साझा करती हैं
वस्तु एवं सेवा कर एक गंतव्य-आधारित उपभोग कर है, जिसका अर्थ है कि कर का राजस्व उस राज्य सरकार को प्राप्त होता है जहां वस्तु का अंतिम रूप से उपभोग किया जाता है। यदि राजस्थान से माल भेजा जाता है, तो एकीकृत जीएसटी के तहत कर केंद्र द्वारा लिया जाएगा और फिर गंतव्य राज्य के साथ साझा किया जाएगा। यह सिद्धांत उपभोग करने वाले राज्यों को लाभ पहुंचाता है और क्षेत्रीय आर्थिक असंतुलन को कम करता है।

78. (2) केवल I, II और IV
वस्तु एवं सेवा कर ने केंद्र और राज्य स्तर के कई अप्रत्यक्ष करों को अपने भीतर समाहित कर लिया है। इनमें केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सेवा कर, राज्य मूल्य वर्धित कर, केंद्रीय बिक्री कर और प्रवेश कर जैसे स्थानीय कर शामिल हैं। हालांकि, सीमा शुल्क अभी भी स्वतंत्र रूप से लागू होता है, यद्यपि इसके साथ आईजीएसटी का एक घटक जोड़ा गया है। इन करों के विलय से कर संरचना सरल और पारदर्शी हुई है।

79. (1) पेट्रोल और डीजल सहित पांच पेट्रोलियम उत्पाद
हालांकि वस्तु एवं सेवा कर एक व्यापक कर है, लेकिन कुछ संवेदनशील मदों को वर्तमान में इसके दायरे से बाहर रखा गया है। इनमें पांच पेट्रोलियम उत्पाद (कच्चा तेल, पेट्रोल, डीजल, प्राकृतिक गैस और विमानन ईंधन) और मानव उपभोग के लिए शराब शामिल हैं। इन मदों पर केंद्र सरकार उत्पाद शुल्क और राज्य सरकारें मूल्य वर्धित कर लगाती रहती हैं। इन्हें जीएसटी में शामिल करने का निर्णय भविष्य की वित्तीय सहमति पर निर्भर है।

80. (2) इसने अंतर-राज्यीय कर बाधाओं को हटाकर एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाया
भारत में वस्तु एवं सेवा कर की शुरुआत का सबसे बड़ा आर्थिक लाभ एक साझा राष्ट्रीय बाजार का निर्माण है। इससे पहले, राज्यों के बीच करों की अलग-अलग दरों और बाधाओं के कारण व्यापार जटिल था। जीएसटी ने इन बाधाओं को हटाकर माल की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित की है और लॉजिस्टिक्स लागत को कम किया है। यह एक एकीकृत कर संरचना प्रदान करता है जो पारदर्शिता बढ़ाती है और कर चोरी को प्रभावी ढंग से रोकती है।

81. (2) बेहतर कर अनुपालन और व्यापक कर आधार
कर-जीडीपी अनुपात एक महत्वपूर्ण संकेतक है जो देश की जीडीपी के सापेक्ष सरकार द्वारा एकत्रित कुल कर राजस्व को दर्शाता है। इस अनुपात में वृद्धि आमतौर पर यह संकेत देती है कि अर्थव्यवस्था अधिक औपचारिक हो रही है और कर अनुपालन में सुधार हुआ है। इसका अर्थ यह भी है कि कर का आधार विस्तृत हो रहा है, जिससे सरकार के पास विकास कार्यों और सामाजिक कल्याण योजनाओं हेतु अधिक वित्तीय संसाधन उपलब्ध हो रहे हैं।

82. (3) केवल I, II, III और IV
संसाधन जुटाने के स्वस्थ तरीके वे हैं जो अर्थव्यवस्था पर दीर्घकालिक ऋण का बोझ नहीं डालते। इसमें कर आधार का विस्तार करना, अनुपालन सुधारना और सार्वजनिक व्यय को युक्तिसंगत बनाना शामिल है। स्पेक्ट्रम नीलामी जैसी गैर-कर प्राप्तियां और परिसंपत्तियों का मुद्रीकरण भी उत्पादक साधन हैं। इसके विपरीत, अंतरराष्ट्रीय बाजारों से उच्च ब्याज पर भारी उधार लेना जोखिम भरा हो सकता है क्योंकि यह भविष्य की आय को ऋण चुकाने में खर्च कर देता है।

83. (3) प्रयोक्ता शुल्क - राष्ट्रीय राजमार्गों पर एकत्रित पथकर
गैर-कर राजस्व सरकार की वह आय है जो करों के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से प्राप्त होती है। प्रयोक्ता शुल्क, जैसे कि राष्ट्रीय राजमार्गों पर एकत्र किया जाने वाला पथकर, इसका एक प्रमुख उदाहरण है क्योंकि यह प्रदान की गई सेवा के बदले लिया जाता है। अन्य स्रोतों में सार्वजनिक उपक्रमों से प्राप्त लाभांश और ऋणों पर ब्याज शामिल हैं। ये प्राप्तियां बजट के राजस्व खाते का हिस्सा होती हैं और दैनिक खर्चों को पूरा करने में सहायता करती हैं।

NODIA

84. (4) यह वर्तमान संसाधन बनाता है लेकिन भविष्य की देयता वहन करता है
सरकारी उधार संसाधन जुटाने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह वर्तमान में सरकार को बड़े निवेश हेतु आवश्यक धन प्रदान करता है, लेकिन साथ ही यह भविष्य की पीढ़ियों पर ब्याज और मूलधन के पुनर्भुगतान की देयता भी डालता है। घरेलू उधार ब्याज दरों को प्रभावित कर सकता है, जबकि बाहरी उधार में विनिमय दर का जोखिम होता है। इसलिए, उधार का उपयोग उन्हीं परियोजनाओं हेतु होना चाहिए जो भविष्य में आर्थिक लाभ उत्पन्न कर सकें।

85. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
बजट प्राप्तियों को उनकी आर्थिक प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। आयकर एक कर राजस्व प्राप्ति है। स्पेक्ट्रम नीलामी से प्राप्त राशि सरकार के लिए गैर-कर राजस्व है। सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड जारी करना सरकार पर ऋण देयता पैदा करता है, इसलिए यह ऋण पूंजीगत प्राप्ति है। सार्वजनिक उपक्रमों का विनिवेश गैर-ऋण पूंजीगत प्राप्ति की श्रेणी में आता है क्योंकि इसमें सरकार अपनी हिस्सेदारी बेचती है, जिससे संपत्ति कम होती है।

86. (2) उधार और उच्च घाटे पर अनिवार्य निर्भरता
यदि किसी विकासशील देश में कर आधार निरंतर कम बना रहता है, तो सरकार को अपने बुनियादी ढांचे और कल्याणकारी खर्चों हेतु पर्याप्त राजस्व नहीं मिल पाता। ऐसी स्थिति में, सरकार को भारी मात्रा में उधार लेने और उच्च राजकोषीय घाटा बनाए रखने हेतु विवश होना पड़ता है। यह स्थिति दीर्घकालिक ऋण जाल पैदा कर सकती है और देश की वित्तीय संप्रभुता को खतरे में डाल सकती है। अतः कर आधार बढ़ाना अनिवार्य है।

87. (4) कर की दरें और एकत्रित कर राजस्व की मात्रा
लाफर वक्र अर्थशास्त्र की वह अवधारणा है जो कर दरों और सरकार द्वारा एकत्रित कुल कर राजस्व के बीच के संबंध को स्पष्ट करती है। यह सिद्धांत बताता है कि कर की दर को एक निश्चित सीमा से अधिक बढ़ाने पर कुल राजस्व वास्तव में कम होने लगता है क्योंकि अत्यधिक कर निवेश को हतोत्साहित करता है और कर चोरी को बढ़ावा देता है। अतः अधिकतम राजस्व हेतु एक इष्टतम कर दर का निर्धारण आवश्यक है।

88. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अप्रत्यक्ष करों को प्रतिगामी माना जाता है क्योंकि ये सभी उपभोक्ताओं पर समान दर से लगाए जाते हैं। एक निर्धन व्यक्ति अपनी सीमित आय का एक बड़ा हिस्सा इन करों के भुगतान में खर्च करता है, जबकि समृद्ध व्यक्ति हेतु यह राशि नगण्य होती है। इसके विपरीत, प्रत्यक्ष कर प्रगतिशील होते हैं जहां आय के साथ कर का बोझ बढ़ता है। अतः समावेशी विकास हेतु प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों में संतुलन आवश्यक है।

89. (3) इसे पूंजीगत बजट के तहत ऋण-सृजन पूंजीगत प्राप्ति के रूप में वर्गीकृत किया गया है
भारतीय रिजर्व बैंक प्रतिवर्ष अपने संचालन से प्राप्त अधिशेष को भारत सरकार को हस्तांतरित करता है। यह सरकार के लिए गैर-कर राजस्व का घटक है, जो राजस्व प्राप्ति के अंतर्गत आता है। इसे ऋण-सृजन पूंजीगत प्राप्ति मानना गलत है क्योंकि यह सरकार पर कोई ऋण नहीं बढ़ाता। हस्तांतरण की यह राशि एक निर्धारित आर्थिक पूंजी ढांचे के आधार पर तय की जाती है और राजकोषीय घाटे को कम करने में सहायता करती है।

90. (1) I - III - IV - II
वर्तमान बजटीय प्रवृत्तियों के अनुसार, वस्तु एवं सेवा कर केंद्र सरकार हेतु राजस्व का सबसे बड़ा एकल स्रोत है। इसके बाद निगम कर का स्थान आता है, जो कंपनियों के लाभ पर लगता है। गैर-कर राजस्व, जिसमें लाभांश और ब्याज प्राप्तियां शामिल हैं, तीसरे स्थान पर आता है, जबकि सीमा शुल्क का योगदान इनके बाद होता है। यह अनुक्रम भारत की कर संरचना में अप्रत्यक्ष करों की प्रमुखता और आर्थिक विकास को दर्शाता है।

91. (4) सरकार द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में अपनी हिस्सेदारी बेचना
विनिवेश वह प्रक्रिया है जिसके तहत सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में अपनी हिस्सेदारी निजी निवेशकों या जनता को बेचती है। इसका उद्देश्य सरकारी स्वामित्व कम करना और बाजार से वित्तीय संसाधन जुटाना है। विनिवेश से प्राप्त धन का उपयोग बुनियादी ढांचे के विकास और सामाजिक कल्याण योजनाओं हेतु किया जाता है। यह सरकारी नियंत्रण को कम करने और सार्वजनिक उपक्रमों में दक्षता और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देने का एक माध्यम है।

92. (1) केवल I और II
रणनीतिक विनिवेश और अल्पमत हिस्सेदारी बिक्री में मुख्य अंतर प्रबंधन नियंत्रण का है। रणनीतिक विनिवेश में सरकार एक उद्यम की बड़ी हिस्सेदारी बेचती है और प्रबंधन नियंत्रण निजी खरीदार को हस्तांतरित कर देती है। इसके विपरीत, अल्पमत बिक्री में सरकार 51% से अधिक हिस्सेदारी और पूर्ण नियंत्रण अपने पास बनाए रखती है। ये दोनों प्राप्तियां बजट में 'गैर-ऋण पूंजीगत प्राप्तियां' मानी जाती हैं क्योंकि ये सरकारी संपत्ति कम करती हैं।

93. (3) निवेश और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग
वित्त मंत्रालय के अंतर्गत 'निवेश और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग' सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में सरकारी इक्विटी के प्रबंधन हेतु नोडल एजेंसी है। यह विभाग विनिवेश की योजना बनाने, उपयुक्त समय का निर्धारण करने और बिक्री प्रक्रिया को पारदर्शी तरीके से निष्पादित करने हेतु उत्तरदायी है। इसका मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक संपत्तियों के मूल्य को अधिकतम करना और सरकार के विनिवेश लक्ष्यों को प्राप्त करना है ताकि वित्तीय सुदृढ़ता बनी रहे।

94. (4) पट्टे के माध्यम से पुरानी आधारभूत परिसंपत्तियों में मूल्य को अनलॉक करना
राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन का उद्देश्य मौजूदा बुनियादी ढांचा परिसंपत्तियों, जैसे सड़कों और बिजली लाइनों के मूल्य को प्रभावी ढंग से उपयोग में लाना है। इसमें संपत्तियों की स्थायी बिक्री नहीं की जाती, बल्कि उन्हें एक निश्चित अवधि

Click Here to Buy book on Amazon

हेतु निजी ऑपरेटरों को पट्टे पर दिया जाता है। इससे प्राप्त अग्रिम धन का उपयोग नए बुनियादी ढांचे के निर्माण में किया जाता है। यह मॉडल पुरानी सरकारी संपत्तियों के कुशल प्रबंधन के लिए बनाया गया है।

95. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
विनिवेश के विभिन्न तरीके विशिष्ट प्रक्रियाओं का पालन करते हैं। सार्वजनिक निर्गम के माध्यम से एक गैर-सूचीबद्ध कंपनी पहली बार जनता को शेयर बेचती है। रणनीतिक विनिवेश में स्वामित्व और प्रबंधन नियंत्रण दोनों का हस्तांतरण शामिल होता है। परिसंपत्ति मुद्रीकरण में मुख्य बुनियादी ढांचे को पट्टे पर देकर आय प्राप्त की जाती है। ये सभी तरीके सरकार को वित्तीय संसाधनों के कुशल प्रबंधन और पूंजीगत व्यय हेतु धन जुटाने में सहायता प्रदान करते हैं।

96. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
विनिवेश का अर्थ सदैव पूर्ण निजीकरण नहीं होता। सरकार अक्सर सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में बहुमत स्वामित्व (51% या अधिक) बनाए रखते हुए अपनी इक्विटी का एक हिस्सा बेचती है। इसे 'अल्पमत विनिवेश' कहा जाता है। पूर्ण निजीकरण केवल तभी होता है जब सरकार अपनी अधिकांश हिस्सेदारी और प्रबंधन नियंत्रण किसी निजी इकाई को हस्तांतरित कर देती है। अतः विनिवेश एक लचीला उपकरण है जिसका उपयोग रणनीतिक प्राथमिकताओं के अनुसार किया जा सकता है।

97. (2) राष्ट्रीय निवेश कोष
सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के विनिवेश से प्राप्त आय को वर्ष 2005 में स्थापित 'राष्ट्रीय निवेश कोष' में जमा किया जाता है। यह कोष एक स्थायी प्रकृति का है जिसे पेशेवर रूप से प्रबंधित किया जाता है। इस कोष से प्राप्त आय का बड़ा हिस्सा सामाजिक क्षेत्र की परियोजनाओं, जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य को वित्तपोषित करने हेतु उपयोग किया जाता है। शेष राशि का उपयोग चुनिंदा सार्वजनिक उपक्रमों की पूंजीगत आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु किया जाता है।

98. (4) केवल III और IV
भारत सरकार की नई सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम नीति उद्यमों को रणनीतिक और गैर-रणनीतिक क्षेत्रों में वर्गीकृत करती है। रणनीतिक क्षेत्रों में सरकार की न्यूनतम उपस्थिति अनिवार्य है, जबकि अन्य को समय के साथ निजीकृत या बंद किया जाना है। एयर इंडिया का मामला रणनीतिक विनिवेश का उदाहरण है जहां पूर्ण स्वामित्व हस्तांतरित किया गया। हालांकि, सरकार को वार्षिक विनिवेश लक्ष्यों को पूरा करने में बाजार की स्थितियों के कारण अक्सर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

99. (2) केवल I, II, III और IV
अर्थव्यवस्था के संतुलित विकास हेतु मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों के बीच समन्वय अनिवार्य है। भारतीय रिजर्व बैंक दरों के माध्यम से तरलता प्रबंधित करता है, जबकि सरकार आपूर्ति पक्ष के हस्तक्षेपों और राजकोषीय अनुशासन के माध्यम से सहयोग करती है। यदि राजकोषीय घाटा अनियंत्रित हो, तो यह मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के केंद्रीय बैंक के प्रयासों को विफल कर सकता है। रिजर्व बैंक सरकार के ऋण प्रबंधक के रूप में कार्य करता है ताकि स्थिरता बनी रहे।

100. (4) पूंजी, प्रौद्योगिकी और आधुनिक प्रबंधन लाना
रणनीतिक विनिवेश का प्राथमिक उद्देश्य केवल राजस्व जुटाना नहीं है, बल्कि सार्वजनिक उद्यमों में पेशेवर प्रबंधन, आधुनिक तकनीक और निजी पूंजी लाना है। इससे उद्यमों की परिचालन दक्षता और प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार होता है। इसके अतिरिक्त, यह सरकार को उन क्षेत्रों से बाहर निकलने की अनुमति देता है जहां निजी क्षेत्र सक्षम है, जिससे सरकार अपने संसाधनों को शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक क्षेत्रों पर केंद्रित कर सकती है।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 04

राजकोषीय संघवाद एवं वित्त आयोग

NODIA

1. भारतीय संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा राजकोषीय संघवाद की अवधारणा को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है?
(1) विशेष रूप से केंद्र सरकार के भीतर वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियों का संकेंद्रण
(2) सरकार के विभिन्न स्तरों के बीच कर शक्तियों और व्यय उत्तरदायित्वों का विभाजन
(3) वित्त आयोग द्वारा स्थानीय शहरी निकायों को विकास निधि का आवंटन
(4) किसी भी प्रकार की केंद्रीय निगरानी के बिना राज्यों की पूर्ण राजकोषीय स्वतंत्रता
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. राजकोषीय संघवाद के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए।
कथन I: व्यापक आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए राजकोषीय संघवाद में राजस्व जुटाने की शक्तियों का स्पष्ट सीमांकन आवश्यक है।
कथन II: भारत में, क्षेत्रीय स्वायत्तता को बढ़ावा देने के लिए कराधान की अवशिष्ट शक्तियाँ राज्य विधानमंडलों में निहित हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. एक संघीय ढांचे में क्षैतिज राजकोषीय असंतुलन का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) संघ और राज्यों की संयुक्त राजस्व क्षमता और व्यय आवश्यकताओं के बीच असंतुलन
(2) केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड द्वारा प्रबंधित महानगरीय शहरों में प्रत्यक्ष कर संग्रह का संकेंद्रण
(3) विभिन्न राज्यों के बीच असमान आर्थिक क्षमताएं, संसाधन संपन्नता और विकास का स्तर
(4) ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकायों की प्रशासनिक संरचनाओं में असमानता
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. भारत में ऊर्ध्वाधर राजकोषीय असंतुलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि केंद्र सरकार को उच्च लोच और व्यापक आधार वाले कर सौंपे गए हैं।
II. राज्यों को व्यय की ऐसी जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं जो उनकी स्वतंत्र राजस्व-उत्पन्न करने की क्षमता से अधिक हैं।
III. संविधान इस असंतुलन को दूर करने के एकमात्र तंत्र के रूप में वित्त आयोग का प्रावधान करता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारत का संविधान राज्यों को कर हस्तांतरण और सहायता अनुदान जैसे तंत्रों को शामिल करता है।
तर्क (R): राजस्व और व्यय कार्यों के संवैधानिक आवंटन में ऊर्ध्वाधर राजकोषीय असंतुलन अंतर्निहित है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. भारत में राज्यों के बीच क्षैतिज राजकोषीय असंतुलन को दूर करने के लिए मुख्य रूप से कौन सा संवैधानिक तंत्र उत्तरदायी है?
(1) नीति आयोग की शासी परिषद द्वारा पारित विशिष्ट प्रस्ताव
(2) केंद्रीय वित्त आयोग द्वारा अनुशंसित कर हस्तांतरण सूत्र
(3) मौद्रिक नीति समिति द्वारा तरलता के संबंध में लिए गए निर्णय
(4) अंतर-राज्य परिषद की बैठक के माध्यम से किया गया वैधानिक निधि आवंटन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. सूची I में दिए गए राजकोषीय शब्दों को सूची II में दिए गए उनके विवरणों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
A. ऊर्ध्वाधर राजकोषीय असंतुलन
B. क्षैतिज राजकोषीय असंतुलन
C. समानीकरण अनुदान

D. विभाज्य पूल

सूची II: (विवरण)

i. विभिन्न राज्यों के बीच राजस्व क्षमताओं में अंतर

ii. राज्यों में सार्वजनिक सेवाओं का न्यूनतम मानक सुनिश्चित करने के उद्देश्य से हस्तांतरण

iii. राज्यों के साथ साझा किए जाने वाले केंद्रीय कर

iv. केंद्र और राज्यों के संसाधनों और व्यय दायित्वों के बीच का अंतर

सही उत्तर चुनिए:

(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय संबंधों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) कुछ करों और शुल्कों पर अधिभार संघ द्वारा लगाए जाते हैं और वे विभाज्य पूल का हिस्सा होते हैं।
(2) संसद यह निर्धारित करने के लिए सिद्धांतों को तैयार कर सकती है कि कब कोई बिक्री या खरीद राज्य के बाहर होती है।
(3) केंद्र सरकार किसी भी सार्वजनिक उद्देश्य के लिए अनुदान प्रदान कर सकती है, भले ही वह संघ सूची के विषय से संबंधित न हो।
(4) संघ की संपत्ति को राज्य द्वारा या राज्य के भीतर किसी भी प्राधिकरण द्वारा लगाए गए सभी करों से छूट प्राप्त है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. पहाड़ी क्षेत्र और कम औद्योगिक उत्पादन वाला एक नवनिर्मित राज्य बुनियादी स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए संघर्ष कर रहा है। व्यापक कर-साझाकरण सूत्र में बदलाव किए बिना इस विशिष्ट राज्य की अक्षमता को दूर करने के लिए राजकोषीय संघवाद में कौन सा विशिष्ट उपकरण सबसे उपयुक्त है?

(1) वैकल्पिक कार्यान्वयन श्रेणी के तहत सूचीबद्ध केंद्र प्रायोजित योजनाएं
(2) भारतीय रिजर्व बैंक से अल्पकालिक ऋण सुविधाएं प्राप्त करना
(3) केंद्रीय वित्त आयोग द्वारा अनुशंसित राजस्व घाटा अनुदान
(4) जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर में व्यक्तिगत राज्य की हिस्सेदारी बढ़ाना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. वित्त आयोग द्वारा उपयोग किए जाने वाले "आय की दूरी" मानदंड का सबसे उपयुक्त विवरण क्या है?

(1) किसी राज्य की प्रति व्यक्ति आय की उच्चतम प्रति व्यक्ति आय वाले राज्य से दूरी
(2) किसी राज्य की राजधानी और राष्ट्रीय राजधानी के बीच की भौगोलिक दूरी
(3) किसी विशिष्ट राज्य की प्रति व्यक्ति आय और सभी राज्यों की औसत प्रति व्यक्ति आय के बीच का अंतर
(4) किसी राज्य के भीतर कृषि आय और औद्योगिक आय के बीच की असमानता
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. वित्तीय संबंधों के लिए संवैधानिक प्रावधानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. अनुच्छेद 268 संघ द्वारा लगाए गए लेकिन राज्यों द्वारा एकत्रित और विनियोजित किए गए शुल्कों से संबंधित है।

II. अनुच्छेद 269 संघ द्वारा लगाए गए और एकत्रित किए गए लेकिन राज्यों को सौंपे गए करों से संबंधित है।

III. अनुच्छेद 270 संघ और राज्यों के बीच लगाए गए और वितरित किए गए करों का प्रावधान करता है।

IV. अनुच्छेद 271 संघ को संघ के उद्देश्यों के लिए करों पर अधिभार लगाने की अनुमति देता है।

निम्नलिखित में से कौन सा गलत संयोजन है?

(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. संविधान के तहत "भारत के लोक लेखा" को कैसे परिभाषित किया गया है?

(1) एक निधि जिसमें भारत सरकार के सभी सामान्य कर राजस्व जमा किए जाते हैं
(2) सरकार द्वारा प्राप्त वे सार्वजनिक धन जो संचित निधि का हिस्सा नहीं हैं
(3) संसदीय अनुमोदन लंबित होने तक अप्रत्याशित आपातकालीन खर्चों को पूरा करने के लिए उपयोग की जाने वाली निधि
(4) राज्य-स्तरीय ऋणों को विनियमित करने के लिए रिजर्व बैंक द्वारा प्रबंधित एक खाता
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. निम्नलिखित में से कौन सा भारत की आकस्मिकता निधि के एक घटक की सही पहचान करता है?

(1) इसकी स्थापना संविधान के अनुच्छेद 266 के तहत की गई है।
(2) इससे संवितरण के लिए संसद द्वारा बाद में अनुमोदन की आवश्यकता नहीं होती है।
(3) इसे भारत के राष्ट्रपति के प्राधिकार में रखा गया है।
(4) इसका वित्तपोषण पूरी तरह से विश्व बैंक और आईएमएफ के अनुदान के माध्यम से किया जाता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है:

अभिकथन (A): भविष्य निधि जमा और न्यायिक जमा भारत

Downloaded from www.pdf.tube

की संचित निधि का हिस्सा नहीं हैं।
तर्क (R): ये निधियां सरकार की नहीं हैं, और सरकार इनके लिए केवल एक बैंकर या ट्रस्टी के रूप में कार्य करती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद के तहत भारत और राज्यों की संचित निधियों और लोक लेखा से संबंधित प्रावधानों का उल्लेख है?
(1) अनुच्छेद 266
(2) अनुच्छेद 267
(3) अनुच्छेद 268
(4) अनुच्छेद 280
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

16. सूची I के संवैधानिक अनुच्छेदों को सूची II के उनके संबंधित प्रावधानों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संवैधानिक अनुच्छेद)
A. अनुच्छेद 275
B. अनुच्छेद 282
C. अनुच्छेद 292
D. अनुच्छेद 293
सूची II: (प्रावधान)
i. राज्यों द्वारा ऋण लेना
ii. संघ या राज्यों द्वारा विवेकाधीन अनुदान
iii. भारत सरकार द्वारा ऋण लेना
iv. कुछ राज्यों को वैधानिक अनुदान
सही उत्तर चुनिए:
(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. करों के विभाज्य पूल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें केंद्र सरकार द्वारा एकत्र किए गए सभी कर और शुल्क शामिल हैं।
II. संघ के उद्देश्यों के लिए लगाए गए अधिभार विभाज्य पूल का हिस्सा होते हैं।
III. विशिष्ट उद्देश्यों के लिए लगाए गए उपकर को विभाज्य पूल से बाहर रखा गया है।
IV. 80वें संविधान संशोधन अधिनियम के बाद निगम कर को विभाज्य पूल में शामिल किया गया था।
V. शुद्ध आय वितरित करने से पहले संग्रह की लागत घटा दी जाती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) III, IV और V
(4) I, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

18. राज्यों को केंद्रीय करों के हस्तांतरण के निम्नलिखित चरणों को सही तार्किक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. शुद्ध आय निर्धारित करने के लिए संग्रह की लागत की कटौती
II. उपकर और अधिभार का अपवर्जन
III. केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड और केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड द्वारा सकल कर राजस्व का संग्रह
IV. राज्यों के बीच क्षैतिज वितरण सूत्र का अनुप्रयोग
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) III, I, II, IV
(2) III, II, I, IV
(3) I, III, II, IV
(4) III, IV, II, I
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. निम्नलिखित में से कौन सा अनुच्छेद 270 के तहत विभाज्य पूल का हिस्सा नहीं है?
(1) आयकर
(2) केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर
(3) स्वास्थ्य एवं शिक्षा उपकर
(4) निगम कर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

20. संवैधानिक वित्तीय प्रावधानों के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) अनुच्छेद 268 – संघ द्वारा लगाए गए शुल्क जो राज्यों द्वारा एकत्रित और रखे जाते हैं
(2) अनुच्छेद 269 – संघ द्वारा लगाए गए और एकत्रित कर जो राज्यों को सौंपे जाते हैं
(3) अनुच्छेद 270 – संघ द्वारा लगाए गए कर जो संघ और राज्यों के बीच साझा किए जाते हैं
(4) अनुच्छेद 271 – नीति आयोग की सलाह के आधार पर राज्यों के लिए अनुदान
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. वित्त आयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह संविधान के अनुच्छेद 280 के तहत गठित एक अर्ध-न्यायिक निकाय है।
II. इसका गठन भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रत्येक पांच वर्ष में या आवश्यकतानुसार उससे पूर्व किया जाता है।
III. इसकी सिफारिशें केंद्र सरकार पर बाध्यकारी होती हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III

(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

22. वित्त आयोग के कानूनी ढांचे के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए।
कथन I: संसद वित्त आयोग के सदस्यों की योग्यता और उनके चयन के तरीके को निर्धारित करती है।
कथन II: इन योग्यताओं को विनिर्दिष्ट करने के लिए संसद द्वारा वित्त आयोग (विविध प्रावधान) अधिनियम, 1951 अधिनियमित किया गया था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. वित्त आयोग के सदस्यों के लिए आवश्यक योग्यताओं के संदर्भ में विषम का चयन कीजिए:
(1) ऐसा व्यक्ति जो किसी उच्च न्यायालय का न्यायाधीश रहा हो
(2) ऐसा व्यक्ति जिसे सरकार के वित्त और लेखों का विशेष ज्ञान हो
(3) ऐसा व्यक्ति जिसे वित्तीय मामलों और प्रशासन में व्यापक अनुभव हो
(4) ऐसा व्यक्ति जो संसद का वर्तमान सदस्य हो
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. वित्त आयोग के अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति कौन करता है?
(1) भारत के राष्ट्रपति
(2) भारत की संसद
(3) भारत के प्रधानमंत्री
(4) केंद्रीय वित्त मंत्री
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. सूची I के वित्त आयोग को सूची II के उसके अध्यक्ष के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (वित्त आयोग)
A. 12वां वित्त आयोग
B. 13वां वित्त आयोग
C. 14वां वित्त आयोग
D. 15वां वित्त आयोग
सूची II: (अध्यक्ष)
i. वाई.वी. रेड्डी
ii. एन.के. सिंह
iii. विजय केलकर
iv. सी. रंगराजन
सही उत्तर चुनिए:
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. वित्त आयोग के लिए विचारार्थ विषय केंद्र सरकार द्वारा तैयार किए जाते हैं। इन विषयों का मूल उद्देश्य क्या है?
(1) आयोग के मूल्यांकन के लिए मापदंडों और विशिष्ट मुद्दों को परिभाषित करना
(2) आयोग को राज्यों के आंतरिक राजस्व का मूल्यांकन करने से रोकना
(3) क्षैतिज कर हस्तांतरण के लिए सटीक निश्चित प्रतिशत निर्धारित करना
(4) आयोग को भारतीय रिजर्व बैंक के दैनिक नियंत्रण में रखना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 15वें वित्त आयोग को अपनी गणना के लिए 2011 के जनसंख्या आंकड़ों का उपयोग करने का निर्देश दिया गया था।
तर्क (R): 1971 के जनसंख्या आंकड़ों के उपयोग से उन राज्यों को दंडित किया गया था जिन्होंने जनसांख्यिकीय प्रबंधन और परिवार नियोजन उपायों को सफलतापूर्वक लागू किया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

28. 15वें वित्त आयोग के विचारार्थ विषयों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) इसे संघ और राज्यों के वित्त, घाटे और ऋण स्तरों की वर्तमान स्थिति की समीक्षा करने के लिए कहा गया था।
(2) इसे राजकोषीय हस्तांतरण को केंद्रीकृत करने के लिए राज्य वित्त आयोगों को समाप्त करने का आदेश दिया गया था।
(3) इसे व्यवसाय करने में सुगमता जैसे क्षेत्रों में राज्यों के लिए प्रदर्शन-आधारित प्रोत्साहन की सिफारिश करने का निर्देश दिया गया था।
(4) इसे रक्षा और आंतरिक सुरक्षा के लिए एक अलग वित्तपोषण तंत्र पर विचार करने के लिए कहा गया था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

29. कौन सा संवैधानिक अनुच्छेद वित्त आयोग के मुख्य कर्तव्यों को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है, जिसमें करों की शुद्ध आय का वितरण भी शामिल है?
(1) अनुच्छेद 275(1)
(2) अनुच्छेद 268(2)
(3) अनुच्छेद 280(3)

Click Here to Buy book on Amazon

(4) अनुच्छेद 293(1)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. वित्त आयोग के कर्तव्यों के संबंध में निम्नलिखित मामलों पर विचार कीजिए:
I. संघ और राज्यों के बीच करों की शुद्ध आय का वितरण।
II. भारत की संचित निधि से राज्यों को सहायता अनुदान को नियंत्रित करने वाले सिद्धांत।
III. स्थानीय निकायों के संसाधनों के पूरक के लिए राज्य की संचित निधि को बढ़ाने के उपाय।
IV. वित्तीय निहितार्थ वाले अंतर-राज्यीय जल विवादों का समाधान।
कौन सा संयोजन सही कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल II, III, और IV
(3) केवल I, III, और IV
(4) I, II, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. सूची I में दिए गए क्षैतिज हस्तांतरण मानदंडों को सूची II में 15वें वित्त आयोग द्वारा दिए गए वेटेज के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (15वें वित्त आयोग के मानदंड)
A. जनसंख्या (2011)
B. क्षेत्रफल
C. वन और पारिस्थितिकी
D. आय की दूरी
सूची II: (निर्धारित वेटेज)
i. 10.0%
ii. 15.0%
iii. 15.0%
iv. 45.0%
सही उत्तर चुनिए:
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

32. भारत में इन संस्थानों की स्थापना के सही ऐतिहासिक क्रम को सबसे पुराने से नवीनतम तक चुनिए:
(1) योजना आयोग — नीति आयोग — जीएसटी परिषद — 15वां वित्त आयोग
(2) योजना आयोग — जीएसटी परिषद — नीति आयोग — 15वां वित्त आयोग
(3) योजना आयोग — 15वां वित्त आयोग — नीति आयोग — जीएसटी परिषद
(4) नीति आयोग — योजना आयोग — 15वां वित्त आयोग — जीएसटी परिषद
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

33. 15वें वित्त आयोग द्वारा राज्यों को ऊर्ध्वाधर कर हस्तांतरण को 42% से घटाकर 41% करने का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) वैश्विक महामारी से उत्पन्न राष्ट्रीय राजकोषीय घाटे का प्रबंधन करना
(2) जम्मू और कश्मीर के केंद्र शासित प्रदेशों के रूप में पुनर्गठन हेतु समायोजन करना
(3) विभिन्न केंद्रीय क्षेत्र की योजनाओं के लिए बजटीय आवंटन बढ़ाना
(4) केंद्र द्वारा कड़ाई से नियंत्रित आपदा प्रबंधन कोष बनाना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. 15वें वित्त आयोग के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए।
कथन I: 15वें वित्त आयोग ने क्षैतिज हस्तांतरण में "जनसांख्यिकीय प्रदर्शन" नामक एक नया मानदंड पेश किया।
कथन II: "जनसांख्यिकीय प्रदर्शन" मानदंड का उद्देश्य कम कुल प्रजनन दर वाले राज्यों को पुरस्कृत करना था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. 15वें वित्त आयोग की सिफारिशों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने रक्षा और आंतरिक सुरक्षा के आधुनिकीकरण के लिए एक गैर-व्यपगत निधि की सिफारिश की।
II. इसने पूरी पुरस्कार अवधि के लिए सभी 28 राज्यों हेतु राजस्व घाटा अनुदान की सिफारिश की।
III. स्वास्थ्य, स्कूली शिक्षा और कृषि के लिए क्षेत्र-विशिष्ट अनुदान की सिफारिश की गई थी।
IV. इसने केंद्र और राज्यों के संयुक्त ऋण-जीडीपी अनुपात को कम करने के लिए एक 'ग्लाइड पाथ' का सुझाव दिया।
V. इसने राज्यों को अपने राजकोषीय उत्तरदायित्व कानून को अपडेट करने की सिफारिश की।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

36. 15वें वित्त आयोग द्वारा क्षैतिज हस्तांतरण के लिए किस मानदंड को पूरी तरह से हटा दिया गया था, जिसे 14वें वित्त आयोग द्वारा उपयोग किया गया था?
(1) वनावरण
(2) क्षेत्रफल
(3) जनसांख्यिकीय प्रदर्शन
(4) 1971 की जनसंख्या

NODIA

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. 15वें वित्त आयोग द्वारा कर हस्तांतरण के लिए उपयोग किए जाने वाले निम्नलिखित मानदंडों पर विचार कीजिए:
I. कर और राजकोषीय प्रयास
II. जनसांख्यिकीय प्रदर्शन
III. वन और पारिस्थितिकी
ऊपर दिए गए मानदंडों में से किसे 'प्रदर्शन-आधारित' मानदंड माना जाता है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

38. निम्नलिखित में से कौन वित्त आयोग द्वारा अनुशंसित सहायता अनुदान का प्रकार नहीं है?
(1) हस्तांतरण-पश्चात राजस्व घाटा अनुदान
(2) अनुच्छेद 282 के तहत विवेकाधीन अनुदान
(3) स्थानीय ग्रामीण निकायों के लिए वैधानिक अनुदान
(4) विशिष्ट आपदा प्रबंधन राहत अनुदान
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

39. वित्त आयोग द्वारा अनुशंसित 'हस्तांतरण-पश्चात राजस्व घाटा अनुदान' का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) महानगरीय शहरों में बड़े पैमाने की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का वित्तपोषण करना
(2) बड़ी प्राकृतिक आपदाओं के कारण राजस्व हानि के लिए राज्यों की भरपाई करना
(3) मौजूदा केंद्र प्रायोजित योजनाओं के लिए अनुरूप निधि हिस्सेदारी प्रदान करना
(4) केंद्रीय कर साझाकरण के बाद राज्य के बजटीय अंतर को पाटना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. 15वें वित्त आयोग द्वारा अनुशंसित स्थानीय निकाय अनुदान के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) टाइड ग्रांट — पेयजल और स्वच्छता प्राथमिकताओं के लिए आरक्षित निधि
(2) बेसिक ग्रांट — विशेष रूप से ग्रामीण अधिकारियों के वेतन के लिए उपयोग की जाने वाली निधि
(3) परफॉर्मेंस ग्रांट — स्थानीय चुनावों की परवाह किए बिना सभी राज्यों को समान रूप से दी जाने वाली निधि
(4) छावनी बोर्ड अनुदान — राज्य सरकारों द्वारा प्रबंधित और जारी की जाने वाली निधि
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

41. सूची I में अनुदान के प्रकार को सूची II में उसके लक्षित परिणाम के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अनुदान का प्रकार)
A. राजस्व घाटा अनुदान
B. राज्य आपदा जोखिम प्रबंधन कोष
C. क्षेत्र-विशिष्ट अनुदान
D. स्थानीय निकाय अनुदान
सूची II: (लक्षित परिणाम)
i. पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों का सशक्तीकरण
ii. राजस्व खातों में आकलित अंतर को पूरा करना
iii. स्वास्थ्य प्रणालियों और शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना
iv. प्राकृतिक आपदाओं के लिए शमन और क्षमता निर्माण
सही उत्तर चुनिए:
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): संविधान का अनुच्छेद 275 सहायता की आवश्यकता वाले राज्यों को वैधानिक सहायता अनुदान का प्रावधान करता है।
तर्क (R): ये अनुदान भारत की संचित निधि पर भारित होते हैं और वित्त आयोग की सिफारिशों के आधार पर निर्धारित किए जाते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. निम्नलिखित में से कौन सा कथन अनुच्छेद 282 के तहत सहायता अनुदान की विशेषता का सही वर्णन करता है?
(1) वे विशेष रूप से एक निश्चित सूत्र के आधार पर क्षैतिज राजकोषीय असमानताओं को संतुलित करने के लिए हैं।
(2) वे केवल वित्त आयोग की अनिवार्य सिफारिश पर ही जारी किए जा सकते हैं।
(3) वे केंद्र सरकार के लिए प्रतिवर्ष वितरित करने हेतु कानूनी रूप से बाध्यकारी हैं।
(4) वे किसी भी सार्वजनिक उद्देश्य के लिए संघ या राज्य द्वारा दिए गए विवेकाधीन अनुदान हैं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. जीएसटी परिषद के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह 2017 में स्थापित एक संवैधानिक निकाय है।
II. इसकी अध्यक्षता केंद्रीय वित्त मंत्री करते हैं।
III. केंद्र सरकार के मत का भार कुल डाले गए मतों का एक-तिहाई होता है।
IV. परिषद का प्रत्येक निर्णय भारित मतों के कम से कम तीन-चौथाई बहुमत से लिया जाना चाहिए।

Downloaded from www.pdf.tube

कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. जीएसटी परिषद में केंद्र के पास एक-तिहाई भार और राज्यों के पास दो-तिहाई भार होने के साथ निर्णयों के लिए तीन-चौथाई बहुमत की आवश्यकता का इच्छित प्रभाव क्या है?
(1) केंद्र को राज्यों की सहमति के बिना कोई भी प्रस्ताव पारित करने की अनुमति देना
(2) बड़े राज्यों को कर निर्णय लेने की प्रक्रिया पर पूरी तरह से हावी होने में सक्षम बनाना
(3) यह सुनिश्चित करना कि न तो केंद्र और न ही राज्य अकेले कार्य कर सकें, जिससे सहकारी संघवाद को बढ़ावा मिले
(4) विशेष रूप से विधायिका वाले केंद्र शासित प्रदेशों को विशेष वीटो शक्तियां प्रदान करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

46. जीएसटी परिषद का वैचारिक ढांचा संघवाद के किस रूप का उदाहरण है?
(1) असममित संघवाद
(2) प्रतिस्पर्धी संघवाद
(3) दोहरा संघवाद
(4) सहकारी संघवाद
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. जीएसटी परिषद का निर्माण किस संविधान संशोधन अधिनियम के तहत किया गया था?
(1) 100वां संशोधन अधिनियम
(2) 101वां संशोधन अधिनियम
(3) 102वां संशोधन अधिनियम
(4) 103वां संशोधन अधिनियम
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. जीएसटी परिषद की संरचना के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. केंद्रीय वित्त मंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं।
II. राजस्व या वित्त के प्रभारी केंद्रीय राज्य मंत्री इसके सदस्य होते हैं।
III. प्रत्येक राज्य सरकार के वित्त या कराधान के प्रभारी मंत्री इसके सदस्य होते हैं।
IV. मुख्य आर्थिक सलाहकार एक गैर-मतदान सदस्य के रूप में कार्य करते हैं।
V. भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर एक स्थायी विशेष आमंत्रित सदस्य होते हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, III, और IV
(3) केवल II, III, IV, और V
(4) केवल I, II, III, और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. जीएसटी विवाद समाधान और अपीलीय तंत्र के पदानुक्रम को सही आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. जीएसटी अपीलीय न्यायाधिकरण
II. न्यायनिर्णयन प्राधिकारी
III. उच्च न्यायालय
IV. अपीलीय प्राधिकारी
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) II, IV, I, III
(2) IV, II, I, III
(3) II, I, IV, III
(4) IV, I, II, III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. भारत में जीएसटी कार्यान्वयन के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए।
कथन I: भारत ने एक दोहरा जीएसटी मॉडल अपनाया है जहां केंद्र और राज्य दोनों एक ही आधार पर एक साथ कर लगाते हैं।
कथन II: दोहरा मॉडल आवश्यक था क्योंकि भारतीय संविधान संघ और राज्यों दोनों को समवर्ती रूप से कर लगाने और एकत्र करने का अधिकार देता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. सूची I में जीएसटी घटकों को सूची II में उनके संबंधित कर लगाने वाले प्राधिकारियों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (जीएसटी घटक)
A. CGST
B. SGST
C. IGST
D. UTGST
सूची II: (प्राधिकारी)
i. राज्य के भीतर आपूर्ति पर राज्यों द्वारा लगाया जाता है
ii. राज्य के भीतर आपूर्ति पर केंद्र द्वारा लगाया जाता है
iii. बिना विधायिका वाले केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा लगाया जाता है
iv. अंतर-राज्यीय आपूर्ति पर केंद्र द्वारा लगाया जाता है
सही उत्तर चुनिए:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

52. एकीकृत वस्तु एवं सेवा कर (IGST) के संबंध में निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

I. यह विशेष रूप से राज्यों को राजस्व हानि की भरपाई के लिए लगाया जाने वाला एक अतिरिक्त कर है।
II. यह अंतर-राज्यीय व्यापार या वाणिज्य और आयात पर लगाया जाता है।
III. IGST के तहत एकत्र किए गए राजस्व को संघ और राज्यों के बीच विभाजित किया जाता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

53. निम्नलिखित में से कौन सा कर जीएसटी के अंतर्गत समाहित किया गया था?

(1) बुनियादी सीमा शुल्क
(2) मानव उपभोग के लिए मादक शराब पर केंद्रीय उत्पाद शुल्क
(3) वस्तुओं की बिक्री पर मूल्य वर्धित कर
(4) विद्युत उत्पादन पर कर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. वस्तु एवं सेवा कर नेटवर्क (GSTN) के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) यह जीएसटी के लिए आईटी बुनियादी ढांचा प्रदान करने हेतु स्थापित एक गैर-लाभकारी संगठन है।
(2) इसके पास व्यवसायों का लेखा-परीक्षण करने और कर वसूली को सीधे लागू करने का अधिकार है।
(3) प्रारंभ में, केंद्र और राज्य सरकारों की GSTN में संयुक्त रूप से 49% हिस्सेदारी थी।
(4) यह केंद्र और राज्यों के बीच IGST के निपटान के लिए एक क्लियरिंग हाउस के रूप में कार्य करता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. वर्तमान में जीएसटी के दायरे से बाहर रखी गई वस्तुओं के संदर्भ में विषम को चुनें:

(1) विमानन ईंधन
(2) प्राकृतिक गैस
(3) हाई-स्पीड डीजल
(4) खाद्य तेल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है:

अभिकथन (A): वस्तु एवं सेवा कर (राज्यों को क्षतिपूर्ति) अधिनियम ने जीएसटी लागू होने से पांच वर्ष की अवधि के लिए राज्यों को क्षतिपूर्ति का प्रावधान किया।

तर्क (R): राज्यों को मूल-आधारित कराधान प्रणाली से गंतव्य-आधारित उपभोग कर की ओर बढ़ने के कारण राजस्व हानि की आशंका थी।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर मुख्य रूप से वस्तुओं की किस श्रेणी पर लगाया जाता है?

(1) सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत सूचीबद्ध आवश्यक वस्तुएं
(2) बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए आयातित पूंजीगत वस्तुएं
(3) तंबाकू उत्पादों और मोटर वाहनों सहित विलासिता और अहितकर वस्तुएं
(4) बिना ब्रांड वाली खाद्य सामग्री और कृषि उत्पाद
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

58. जीएसटी क्षतिपूर्ति तंत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. राज्य के राजस्व की गणना के लिए आधार वर्ष 2015-16 निश्चित किया गया था।
II. राज्य के राजस्व की गणना के लिए 14% प्रति वर्ष की अनुमानित विकास दर मानी गई थी।
III. क्षतिपूर्ति अवधि जून 2022 में समाप्त हो गई।
IV. कोविड-19 महामारी के दौरान राजस्व कमी को पूरा करने के लिए केंद्र ने ऋण लिया और उन्हें राज्यों को 'बैक-टू-बैक' ऋण के रूप में दिया।

कौन से कथन सही हैं?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर का संग्रह मार्च 2026 तक बढ़ा दिया गया था। इस विस्तार का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

(1) सभी विशेष श्रेणी के राज्यों को विशिष्ट राजस्व घाटा अनुदान प्रदान करना
(2) भविष्य की महामारियों के प्रबंधन के लिए एक आपातकालीन स्वास्थ्य देखभाल कोष बनाना
(3) जीएसटी अपीलीय न्यायाधिकरणों के प्रशासनिक खर्चों का वित्तपोषण करना
(4) केंद्र द्वारा लिए गए ऋणों के मूलधन और ब्याज को चुकाना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. सूची I में योजना के प्रकार को सूची II में उसके वित्तपोषण पैटर्न के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (योजना का प्रकार)

Click Here to Buy book on Amazon

A. केंद्रीय क्षेत्र की योजनाएं
B. केंद्र प्रायोजित योजनाएं
C. वित्त आयोग अनुदान
D. लोक लेखा निधि

सूची II: (विशेषता)

i. केंद्र सरकार द्वारा 100% वित्तपोषित
ii. केंद्र और राज्यों द्वारा संयुक्त रूप से वित्तपोषित
iii. वैधानिक हस्तांतरण जिसमें अनुरूप राज्य निधि की आवश्यकता नहीं होती है
iv. सरकार द्वारा एक बैंकर के रूप में रखी गई धनराशि

सही उत्तर चुनिए:

(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. केंद्र प्रायोजित योजनाओं के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए।

कथन I: इन योजनाओं के तहत 'कोर ऑफ द कोर' योजनाओं में सबसे कमजोर समूहों के लिए कार्यक्रम शामिल हैं, जैसे कि मनरेगा।

कथन II: 'कोर ऑफ द कोर' योजनाओं के लिए वित्तपोषण पैटर्न में विशेष श्रेणी के राज्यों सहित सभी राज्यों से अनिवार्य 50% योगदान की आवश्यकता होती है।

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. केंद्र प्रायोजित योजनाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. राज्यों को राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु इन्हें राज्य सूची के विषयों पर तैयार किया जाता है।
II. "कोर" योजनाओं के लिए सामान्य साझाकरण पैटर्न केंद्र और सामान्य राज्यों के बीच 60:40 है।
III. सामान्य श्रेणी के राज्य "कोर" योजनाओं में 40% योगदान देते हैं।
IV. उत्तर-पूर्वी और हिमालयी राज्यों में केंद्र का योगदान आमतौर पर 90% होता है।
V. सभी योजनाओं को राज्य के खजाने को दरकिनार करते हुए लाभार्थियों को प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से कार्यान्वित किया जाना चाहिए।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?

(1) केवल I, II, III, और IV
(2) केवल II, III, IV, और V
(3) केवल I, II, IV, और V
(4) केवल I, III, IV, और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य वित्त पर केंद्र प्रायोजित योजनाओं के प्रभाव का सही परिणाम नहीं है?

(1) यह राज्यों को स्थानीय हस्तक्षेपों को डिजाइन करने में पूर्ण लचीलापन प्रदान करता है।
(2) यह राज्यों को अनुरूप संसाधन जुटाने के लिए विवश करता है, जिससे अक्सर ऋण में वृद्धि होती है।
(3) यह राज्यों के अपने विवेकाधीन व्यय के लिए उपलब्ध राजकोषीय स्थान को कम करता है।
(4) यह कई योजना शर्तों की निगरानी के लिए राज्यों की प्रशासनिक क्षमता पर दबाव डालता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

64. मुख्यमंत्रियों के एक उप-समूह की सिफारिशों के आधार पर केंद्र प्रायोजित योजनाओं को युक्तिसंगत बनाने का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?

(1) सभी संभावित सूक्ष्म-क्षेत्रों को कवर करने के लिए योजनाओं की कुल संख्या में वृद्धि करना
(2) प्रशासनिक अधिव्यापन को कम करना और राज्यों के लिए अधिक लचीलापन प्रदान करना
(3) केंद्रीय वित्त मंत्रालय के तहत सभी विभागीय व्ययों को केंद्रीकृत करना
(4) यह सुनिश्चित करना कि परियोजना वित्तपोषण का संपूर्ण हिस्सा केंद्र द्वारा प्रदान किया जाए
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. भारत में योजनाओं के वर्गीकरण के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:

(1) वैकल्पिक योजनाएं – संघ सरकार द्वारा पूरी तरह से वित्तपोषित और प्रबंधित
(2) केंद्रीय क्षेत्र की योजनाएं – सीधे केंद्रीय मंत्रालयों द्वारा कार्यान्वित
(3) कोर ऑफ द कोर योजनाएं – 50:50 का अनिवार्य वित्तपोषण अनुपात
(4) राज्य क्षेत्र की योजनाएं – नीति आयोग के बोर्ड द्वारा आंशिक रूप से वित्तपोषित
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. सूची I में दिए गए निकाय को सूची II में उसके कार्य के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (निकाय)

A. योजना आयोग
B. नीति आयोग
C. वित्त आयोग
D. अंतर-राज्य परिषद

सूची II: (कार्य)

i. राज्यों के बीच साझा हित के विषयों की जांच और चर्चा करना
ii. संवैधानिक अधिदेश के आधार पर कर हस्तांतरण की सिफारिश करने वाला निकाय
iii. सहकारी और प्रतिस्पर्धी संघवाद के माध्यम से नीतिगत दिशा की सिफारिश करना

Downloaded from www.pdf.tube

iv. राज्यों को विवेकाधीन योजना अनुदान आवंटित करना
सही उत्तर चुनिए:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. योजना आयोग और नीति आयोग के बीच तुलना करते हुए निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. योजना आयोग के विपरीत, नीति आयोग के पास राज्यों या मंत्रालयों को धन आवंटित करने की शक्ति नहीं है।
II. नीति आयोग की शासी परिषद में राज्यों के मुख्यमंत्री शामिल होते हैं, जो सहकारी संघवाद को बढ़ावा देते हैं।
III. नीति आयोग नीतिगत समन्वय को बढ़ावा देने के अधिदेश के तहत कार्य करता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. तत्कालीन योजना आयोग द्वारा प्रशासित "योजना अनुदान" की वह विशेषता क्या थी जिसके कारण राजकोषीय संघवाद में विवाद उत्पन्न हुआ?
(1) वे एक कठोर वैधानिक और संवैधानिक सूत्र के आधार पर निर्धारित किए जाते थे
(2) वे विशेष रूप से संचित राज्य राजस्व घाटे को कम करने के लिए अनिवार्य थे
(3) वे राज्य सरकारों को दरकिनार करते हुए सीधे स्थानीय नगरपालिकाओं को आवंटित किए जाते थे
(4) वे विवेकाधीन और सशर्त थे, जो अक्सर स्थानीय राज्य प्राथमिकताओं को प्रभावित करते थे
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. कौन सा कथन योजना आयोग को नीति आयोग से प्रतिस्थापित करने के संघीय निहितार्थ पर सही प्रकाश डालता है?
(1) राज्यों ने संघ से वित्तीय सहायता प्राप्त करने के सभी मार्ग खो दिए हैं
(2) नीति आयोग राज्यों के वार्षिक बजट तैयार करने पर बाध्यकारी निर्देश जारी करता है
(3) वित्तीय हस्तांतरण अब मुख्य रूप से केंद्रीय वित्त आयोग के माध्यम से होता है
(4) पंचवर्षीय विकास योजनाएं अब राज्य विधानमंडलों द्वारा तैयार और पारित की जाती हैं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. राज्यों के बीच नीति आयोग द्वारा स्वास्थ्य सूचकांक और निर्यात तत्परता सूचकांक जैसे सूचकांकों को लागू करने का प्राथमिक प्रभाव क्या है?
(1) यह निम्न प्रदर्शन करने वाले राज्यों के वैधानिक कर हस्तांतरण को कम करता है।
(2) यह राज्य के प्रदर्शन को बेंचमार्क करके प्रतिस्पर्धी संघवाद को बढ़ावा देता है।
(3) यह वित्त आयोग के क्षैतिज वितरण सूत्र का स्थान लेता है।
(4) यह सभी राज्यों में समान कराधान दरें स्थापित करता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

71. विशेष श्रेणी के राज्यों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह अवधारणा पहली बार पांचवें वित्त आयोग की सिफारिशों पर पेश की गई थी।
II. यह दर्जा राज्यों को केंद्रीय सहायता और कर छूट में महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है।
III. भारत का संविधान भाग XXI में इस दर्जे को देने के मानदंडों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।
IV. 14वें वित्त आयोग के बाद, किसी भी नए राज्य को आधिकारिक रूप से यह दर्जा नहीं दिया गया है।
कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) केवल I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. किसी राज्य को विशेष श्रेणी का राज्य घोषित करने के लिए गाडगिल फॉर्मूला के तहत मूल मानदंड निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) पहाड़ी और कठिन भू-भाग
(2) उच्च जनसंख्या घनत्व
(3) किसी प्रमुख समुद्री बंदरगाह से निकटता
(4) उच्च प्रति व्यक्ति औद्योगिक उत्पादन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. राजकोषीय संघवाद से संबंधित निम्नलिखित घटनाक्रमों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. वस्तु एवं सेवा कर का कार्यान्वयन
II. योजना सहायता के लिए गाडगिल फॉर्मूला की शुरुआत
III. नीति आयोग की स्थापना
IV. 14वें वित्त आयोग की सिफारिशें (42% हस्तांतरण)
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) II, IV, III, I
(2) II, III, IV, I
(3) III, II, IV, I
(4) II, IV, I, III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. विशेष श्रेणी के राज्यों की वर्तमान स्थिति के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) 14वें वित्त आयोग ने स्पष्ट रूप से बिहार और ओडिशा को

यह दर्जा देने की सिफारिश की थी।
(2) उत्तर-पूर्वी और हिमालयी राज्यों को 90:10 के अनुपात में वित्तपोषण प्राप्त होना जारी है।
(3) बढ़े हुए हस्तांतरण का उद्देश्य राज्यों को मुक्त निधि प्रदान करना था।
(4) राज्य योजनाओं के लिए केंद्रीय सहायता को पुनर्गठित किया गया है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

75. एक राज्य ऐतिहासिक नुकसानों का हवाला देते हुए बार-बार "विशेष श्रेणी के दर्जे" की मांग करता है। केंद्र सरकार ने 2015 के बाद इस मांग को स्वीकार क्यों नहीं किया है?
(1) संविधान वर्ष 1990 के बाद किसी भी नई राज्य श्रेणी के निर्माण पर रोक लगाता है
(2) नीति आयोग ने निर्देश दिया है कि सभी राज्य-विशिष्ट अनुदान ऋण के माध्यम से जुटाए जाएं
(3) जीएसटी परिषद ने नए राज्यों के लिए विभेदक वित्तपोषण को अस्वीकार कर दिया है
(4) 14वें वित्त आयोग ने योजना सहायता को उच्च कर हस्तांतरण में समाहित कर दिया है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. राज्य के अपने कर राजस्व के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्यों के पास कृषि आय पर कर लगाने की शक्ति है।
II. मुद्रांक शुल्क और पंजीकरण शुल्क राज्य के राजस्व का प्रमुख हिस्सा हैं।
III. मादक शराब पर राज्य उत्पाद शुल्क विशेष रूप से राज्यों द्वारा लगाया जाता है।
IV. संपत्ति कर आमतौर पर राज्यों द्वारा स्थानीय निकायों को सौंप दिया जाता है।
V. जीएसटी के बाद सेवाओं पर राज्यों की स्वतंत्र कराधान शक्तियों का विस्तार हुआ।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) केवल I, II, III और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. सूची I में करों को सूची II में उनके संवैधानिक निर्धारण के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (कर)
A. निगम कर
B. कृषि आय पर कर
C. पथकर
D. सीमा शुल्क
सूची II: (निर्धारण)
i. विशेष रूप से संघीय कर
ii. विशेष रूप से राज्य कर
iii. राज्य द्वारा लगाया जाता है, प्रायः स्थानीय निकायों द्वारा एकत्रित किया जाता है
iv. संघ द्वारा लगाया और रखा जाता है
सही उत्तर चुनिए:
(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. राज्य वित्त के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए।
कथन I: शराब और पेट्रोलियम उत्पादों पर राज्य उत्पाद शुल्क महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे जीएसटी ढांचे से बाहर हैं।
कथन II: राज्य राजस्व की कमी को पूरा करने के लिए अक्सर पेट्रोल और डीजल पर मूल्य वर्धित कर में परिवर्तन करते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य के अपने कर राजस्व आधार के विस्तार के लिए एक बड़ी चुनौती नहीं है?
(1) केंद्रीय वित्त आयोग से धन का अत्यधिक हस्तांतरण जिससे राज्य का प्रयास कम हो जाता है
(2) राज्य के भीतर अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का उच्च स्तर
(3) जीएसटी लागू होने के बाद सीमित कराधान अधिकार
(4) राजनीतिक कारणों से कृषि आय पर कर लगाने में राज्यों की अनिच्छा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. उन करों के संदर्भ में विषम को चुनें जिन्हें एक राज्य सरकार आज स्वतंत्र रूप से लगा सकती है:
(1) हाई-स्पीड डीजल पर मूल्य वर्धित कर
(2) दूरसंचार पर सामान्य सेवा कर
(3) भू-राजस्व
(4) मनोरंजन और जुए पर कर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

81. किन संविधान संशोधनों ने भारत में स्थानीय निकायों को राजकोषीय विकेंद्रीकरण का ढांचा प्रदान किया?
(1) 71वें और 72वें संशोधन
(2) 73वें और 74वें संशोधन
(3) 86वें और 87वें संशोधन
(4) 101वें और 102वें संशोधन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

82. राज्य वित्त आयोग के कार्य का सबसे उपयुक्त विवरण क्या है?
(1) राज्य और स्थानीय निकायों के बीच राजस्व वितरण की सिफारिश करना

Click Here to Buy book on Amazon

(2) विभिन्न ग्राम पंचायतों के खातों का वार्षिक लेखा-परीक्षण करना
(3) शहरी क्षेत्रों में सीधे नगर निगमों को केंद्रीय अनुदान जारी करना
(4) जीएसटी परिषद के भीतर राज्य के राजस्व हिस्से पर चर्चा करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

83. भारत में राजकोषीय विकेंद्रीकरण के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) केंद्रीय वित्त आयोग को स्थानीय निकायों हेतु सिफारिशें करने से रोका गया है
(2) सभी राज्यों में राजकोषीय विकेंद्रीकरण का स्तर समान है
(3) राज्य सरकारें अक्सर स्थानीय निकायों को वित्तीय शक्तियां सौंपने में अनिच्छुक रहती हैं
(4) स्थानीय निकायों के पास विदेशों से ऋण लेने की स्वतंत्र शक्ति है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

84. सूची I के अनुच्छेदों को सूची II में उनके प्रावधानों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अनुच्छेद)
A. अनुच्छेद 243H
B. अनुच्छेद 243I
C. अनुच्छेद 243W
D. अनुच्छेद 243Y
सूची II: (प्रावधान)
i. पंचायतों के लिए राज्य वित्त आयोग का गठन
ii. पंचायतों द्वारा कर लगाने की शक्तियाँ
iii. नगर पालिकाओं के लिए राज्य वित्त आयोग का गठन
iv. नगर पालिकाओं की शक्तियाँ और उत्तरदायित्व
सही उत्तर चुनिए:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

85. भारत के वित्त आयोग के अध्यक्षों के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन कीजिए:
(1) के.सी. नियोगी — वाई.बी. चव्हाण — महावीर त्यागी — एन.के. सिंह
(2) के.सी. नियोगी — महावीर त्यागी — वाई.बी. चव्हाण — एन.के. सिंह
(3) महावीर त्यागी — के.सी. नियोगी — वाई.बी. चव्हाण — एन.के. सिंह
(4) के.सी. नियोगी — वाई.बी. चव्हाण — एन.के. सिंह — महावीर त्यागी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

86. क्षैतिज वितरण सूत्र में प्रयुक्त "राजकोषीय क्षमता दूरी" मुख्य रूप से क्या मापती है?
(1) राज्य के खजाने और आरबीआई के बीच की भौतिक दूरी
(2) अपनी जनसंख्या के सापेक्ष कर राजस्व उत्पन्न करने की राज्य की क्षमता
(3) केंद्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा निर्धारित राज्य की ऋण सीमा
(4) राज्य के पूंजीगत और राजस्व व्यय के बीच का अंतर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

87. भारत में राज्यों की ऋण लेने की शक्तियों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यदि कोई बकाया केंद्रीय ऋण है, तो राज्य केंद्र की अनुमति के बिना ऋण नहीं ले सकता।
(2) राज्य की कार्यकारी शक्ति राज्य की संचित निधि की सुरक्षा पर ऋण लेने तक विस्तृत है।
(3) भारत सरकार किसी राज्य द्वारा लिए गए ऋण की गारंटी दे सकती है।
(4) राज्य केंद्र की स्वीकृति के बिना सीधे विदेशों से ऋण ले सकते हैं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

88. कर हस्तांतरण सूत्र के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए।
कथन I: "वन और पारिस्थितिकी" मानदंड को वनावरण बनाए रखने की अवसर लागत की भरपाई के लिए शामिल किया गया था।
कथन II: उच्च वनावरण वाले राज्य संभावित औद्योगिक राजस्व में पिछड़ जाते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

89. भारतीय राजकोषीय संघीय व्यवस्था में राज्यों को वित्तीय विफलता से बचाने के लिए किसका उपयोग किया जाता है?
(1) राज्यों को दी गई पूर्ण वित्तीय स्वायत्तता
(2) राज्य सरकारों द्वारा मुद्रा की स्वतंत्र छपाई
(3) संवैधानिक ऋण प्रतिबंध और ऋण प्रबंधक के रूप में आरबीआई की भूमिका
(4) नीति आयोग द्वारा जारी किए जाने वाले विवेकाधीन कोष
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

90. भारत के संघीय ढांचे में राजकोषीय जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए खातों की लेखा-परीक्षण कौन करता है?
(1) भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक
(2) वित्त आयोग
(3) भारतीय रिजर्व बैंक
(4) राज्य विधानमंडल की लोक लेखा समिति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

91. वित्त आयोग के हस्तांतरण सूत्र में "कर प्रयास" मानदंड किसलिए बनाया गया है?
(1) उन राज्यों को दंडित करने के लिए जो अधिक स्थानीय कर एकत्र करते हैं
(2) बड़े शहरों में एकत्र कर की मात्रा के आधार पर धन आवंटित करने के लिए
(3) कर विभागों को चलाने की लागत की भरपाई करने के लिए
(4) क्षमता के सापेक्ष कर संग्रह में दक्षता दिखाने वाले राज्यों को पुरस्कृत करने के लिए
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

92. राजस्थान राज्य वित्त आयोग के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) छठा राजस्थान राज्य वित्त आयोग — अशोक लाहिड़ी की अध्यक्षता में
(2) पहला राजस्थान राज्य वित्त आयोग — कृष्ण कुमार गोयल की अध्यक्षता में
(3) राज्य वित्त आयोग की सिफारिशें — राज्य विधानमंडल पर बाध्यकारी
(4) राज्य वित्त आयोग अनुदान — केवल शहरी स्थानीय निकायों को हस्तांतरित
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

93. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य सरकार के गैर-कर राजस्व का हिस्सा नहीं है?
(1) राज्यों द्वारा दिए गए ऋणों पर प्राप्त ब्याज
(2) खनिजों से प्राप्त रॉयल्टी
(3) मुद्रांक शुल्क और पंजीकरण शुल्क
(4) राज्य सार्वजनिक उपक्रमों से प्राप्त लाभांश
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

94. केंद्र-राज्य वित्तीय संबंधों के संदर्भ में "उपकर" का सर्वोत्तम वर्णन क्या है?
(1) एक स्थायी कर जो केंद्र और राज्यों के बीच समान रूप से साझा किया जाता है
(2) केंद्र सरकार के बजट में राज्यों द्वारा स्वैच्छिक योगदान
(3) केवल वित्तीय आपातकाल के दौरान लगाया जाने वाला शुल्क
(4) केंद्र द्वारा लगाया गया एक विशिष्ट उद्देश्य वाला कर जो पूरी तरह संघ के पास रहता है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

95. हाल के वर्षों में उपकर और अधिभार पर केंद्र की बढ़ती निर्भरता का क्या प्रभाव पड़ा है?
(1) सकल केंद्रीय कर राजस्व में राज्यों के प्रभावी हिस्से में कमी
(2) राज्यों के लिए विभाज्य पूल के आकार में भारी वृद्धि
(3) गरीब राज्यों के बीच राजकोषीय असंतुलन का अंत
(4) विशेष श्रेणी के राज्यों के लिए ऋण सीमा में वृद्धि
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

96. कौन सा कथन कृषि आय कर की स्थिति को सटीक रूप से दर्शाता है?
(1) यह केंद्र सरकार द्वारा लगाया और एकत्र किया जाने वाला कर है
(2) यह राज्य सूची का विषय है, जिससे राज्य इसे लगा सकते हैं
(3) यह समवर्ती सूची का हिस्सा है और देशभर में समान है
(4) इसे 2017 में जीएसटी के अनिवार्य दायरे में लाया गया था
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

97. स्थानीय निकाय अनुदान के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए।
कथन I: 15वें वित्त आयोग ने टाइड अनुदान प्राप्त करने के लिए स्थानीय निकायों के लेखों का ऑनलाइन होना अनिवार्य कर दिया है।
कथन II: इस शर्त का उद्देश्य जमीनी स्तर पर वित्तीय पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

98. राज्य वित्त आयोग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह केंद्रीय वित्त आयोग की भूमिका को पूरी तरह से प्रतिस्थापित करता है।
(2) इसका गठन प्रत्येक पांच वर्ष में राज्यपाल द्वारा किया जाता है।
(3) यह स्थानीय निकायों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करता है।
(4) यह स्थानीय निकायों की वित्तीय स्थिति में सुधार हेतु उपायों की सिफारिश करता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

99. राजकोषीय संघवाद में "अर्थोपाय अग्रिम" तंत्र का उपयोग किसलिए किया जाता है?
(1) प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए दीर्घकालिक ऋण हेतु
(2) राज्यों के बीच जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर वितरित करने हेतु
(3) राज्यों के नकदी प्रवाह में अस्थायी असंतुलन को दूर करने हेतु
(4) नीति आयोग के प्रशासनिक खर्चों के वित्तपोषण हेतु
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

100. यदि कोई राज्य सरकार असीमित उधार के माध्यम से कल्याणकारी योजनाओं को वित्तपोषित करने का प्रयास करती है, तो उसे सबसे तत्काल बाधा क्या झेलनी होगी?
(1) केंद्र राज्य को कर हस्तांतरण तुरंत रोक देगा

Downloaded from www.pdf.tube

(2) जीएसटी परिषद उस राज्य पर लागू कर दरों को बढ़ा देगी
(3) भारतीय रिजर्व बैंक राज्य के खजाने पर सीधा नियंत्रण कर लेगा
(4) राज्य का उधार उसके वार्षिक जीएसडीपी के एक निश्चित प्रतिशत तक सीमित है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

www.nodia.in

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) सरकार के विभिन्न स्तरों के बीच कर शक्तियों और व्यय उत्तरदायित्वों का विभाजन
राजकोषीय संघवाद एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो केंद्र और राज्य सरकारों के मध्य वित्तीय उत्तरदायित्वों के वितरण का मार्गदर्शन करती है। इसके अंतर्गत कर अधिरोपित करने की शक्तियों और सार्वजनिक सेवाओं पर होने वाले व्यय को स्पष्ट रूप से विभाजित किया जाता है। यह संसाधनों के कुशल आवंटन और संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देता है, जिससे प्रशासनिक स्वायत्तता और वित्तीय आत्मनिर्भरता सुनिश्चित होती है।

2. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
राजकोषीय संघवाद में व्यापक आर्थिक स्थिरता बनाए रखने हेतु राजस्व संग्रहण की शक्तियों का स्पष्ट सीमांकन अनिवार्य है। भारत में कराधान की अवशिष्ट शक्तियाँ अनुच्छेद 248 के अंतर्गत केंद्र सरकार के पास सुरक्षित हैं, न कि राज्यों के पास। इसलिए प्रथम कथन सही है क्योंकि वह स्थिरता पर बल देता है, जबकि द्वितीय कथन गलत है क्योंकि वह राज्यों को अवशिष्ट शक्तियाँ प्रदान करता है।

3. (3) विभिन्न राज्यों के बीच असमान आर्थिक क्षमताएं, संसाधन संपन्नता और विकास का स्तर
क्षैतिज राजकोषीय असंतुलन तब उत्पन्न होता है जब विभिन्न राज्यों के मध्य राजस्व जुटाने की क्षमता में भारी अंतर होता है। इसका मुख्य कारण प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, औद्योगिक आधार और ऐतिहासिक विकास के स्तरों में भिन्नता है। यह असंतुलन पिछड़े राज्यों को अपने नागरिकों हेतु विकसित राज्यों के समान गुणवत्ता वाली बुनियादी सेवाएँ प्रदान करने की क्षमता में गंभीर बाधा उत्पन्न करता है।

4. (1) केवल I और II
भारत में ऊर्ध्वाधर राजकोषीय असंतुलन का कारण संविधान द्वारा केंद्र को आय और निगम कर जैसे लचीले कर सौंपना है। इसके विपरीत, राज्यों के पास शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे भारी व्यय वाले उत्तरदायित्व हैं, परंतु उनके राजस्व स्रोत सीमित हैं। यद्यपि वित्त आयोग इस अंतर को पाटने का मुख्य तंत्र है, तथापि यह एकमात्र माध्यम नहीं है क्योंकि अन्य अनुदान भी प्रदान किए जाते हैं।

5. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारतीय संवैधानिक ढांचे में राजस्व अर्जन की शक्तियाँ केंद्र की ओर झुकी हुई हैं, जबकि जन कल्याण के व्यय दायित्व मुख्य रूप से राज्यों पर हैं। इस अंतर्निहित ऊर्ध्वाधर असंतुलन को संतुलित करने हेतु संविधान ने वित्त आयोग के माध्यम से करों के हस्तांतरण और सहायता अनुदान की व्यवस्था की है। संसाधनों का यह संवैधानिक आवंटन ही राज्यों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की आवश्यकता उत्पन्न करता है।

6. (2) केंद्रीय वित्त आयोग द्वारा अनुशंसित कर हस्तांतरण सूत्र
राज्यों के मध्य आर्थिक असमानताओं को दूर करने हेतु केंद्रीय वित्त आयोग एक विशिष्ट हस्तांतरण सूत्र विकसित करता है। यह सूत्र जनसंख्या, क्षेत्रफल, आय की दूरी और वन आवरण जैसे विभिन्न मानदंडों पर आधारित होता है। यह सुनिश्चित करता है कि आर्थिक रूप से पिछड़े राज्यों को विभाज्य कोष से अधिक संसाधन प्राप्त हों, जिससे राष्ट्र में क्षैतिज राजकोषीय समानता और समावेशी विकास स्थापित हो सके।

7. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
ऊर्ध्वाधर असंतुलन केंद्र और राज्यों के मध्य संसाधनों के अंतर को दर्शाता है, जबकि क्षैतिज असंतुलन विभिन्न राज्यों की राजस्व क्षमताओं में भिन्नता है। समानीकरण अनुदान का उद्देश्य सभी राज्यों में सार्वजनिक सेवाओं का न्यूनतम स्तर सुनिश्चित करना है। विभाज्य कोष उन केंद्रीय करों का समूह है जिन्हें संवैधानिक रूप से राज्यों के साथ साझा करना अनिवार्य है। यह वर्गीकरण संघीय वित्तीय संरचना हेतु आवश्यक है।

8. (1) कुछ करों और शुल्कों पर अधिभार संघ द्वारा लगाए जाते हैं और वे विभाज्य पूल का हिस्सा होते हैं।
अनुच्छेद 271 के अंतर्गत केंद्र सरकार विशिष्ट संघ उद्देश्यों हेतु करों पर अधिभार लगा सकती है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस प्रकार प्राप्त राजस्व विशेष रूप से केंद्र के पास रहता है और इसे राज्यों के साथ साझा किए जाने वाले विभाज्य कोष में सम्मिलित नहीं किया जाता। अन्य विकल्प सही हैं क्योंकि संघीय संपत्ति को राज्य करों से छूट प्राप्त है और केंद्र विवेकाधीन अनुदान दे सकता है।

9. (3) केंद्रीय वित्त आयोग द्वारा अनुशंसित राजस्व घाटा अनुदान
जब कोई पिछड़ा राज्य कर साझा करने के सामान्य सूत्र के उपरांत भी अनिवार्य व्यय आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असमर्थ होता है, तब राजस्व घाटा अनुदान प्रभावी उपकरण होता है। यह अनुदान अनुच्छेद 275 के तहत उन राज्यों को दिया जाता है जिनका हस्तांतरण के पश्चात भी राजस्व खाता घाटे में रहता है। यह विशिष्ट वित्तीय अंतराल को भरने और सार्वजनिक सेवाओं के संचालन में सहायक होता है।

10. (1) किसी राज्य की प्रति व्यक्ति आय की उच्चतम प्रति व्यक्ति आय वाले राज्य से दूरी
आय की दूरी एक महत्वपूर्ण मानदंड है जिसका उपयोग वित्त आयोग राज्यों के मध्य वित्तीय क्षमता के अंतर को मापने हेतु करता है। इसकी गणना किसी राज्य की औसत प्रति व्यक्ति आय और उच्चतम आय वाले राज्य के मध्य अंतर के रूप में की जाती है। यह उन राज्यों को अधिक धन आवंटित करने

Click Here to Buy book on Amazon

का माध्यम है जिनकी आर्थिक क्षमता कम है, ताकि क्षेत्रीय विकास संतुलित हो सके।

11. (3) केवल IV
अनुच्छेद 271 केंद्र सरकार को संघ के उद्देश्यों हेतु कुछ करों पर अधिभार लगाने की शक्ति प्रदान करता है, परंतु यह राजस्व विभाज्य कोष में सम्मिलित नहीं होता। अनुच्छेद 268, 269 और 270 करों के अधिरोपण, संग्रहण और वितरण की श्रेणियों को परिभाषित करते हैं। संवैधानिक प्रावधानों का यह वर्गीकरण केंद्र-राज्य वित्तीय संबंधों की आधारशिला है और संघीय ढांचे में पारदर्शिता सुनिश्चित करता है।

12. (2) सरकार के द्वारा प्राप्त वे सार्वजनिक धन जो संचित निधि का हिस्सा नहीं हैं
भारत का लोक लेखा अनुच्छेद 266(2) के अंतर्गत आता है, जिसमें वे धन जमा होते हैं जो संचित निधि का भाग नहीं हैं। इसमें मुख्य रूप से भविष्य निधि और न्यायिक जमा जैसी राशियाँ सम्मिलित होती हैं। यह धन वास्तव में सरकार का राजस्व नहीं होता, बल्कि सरकार इसके लिए एक न्यासी के रूप में कार्य करती है। इसके भुगतान हेतु विधायी अनुमति अनिवार्य नहीं होती है।

13. (3) इसे भारत के राष्ट्रपति के प्राधिकार में रखा गया है।
भारत की आकस्मिकता निधि अनुच्छेद 267 के तहत स्थापित है और यह पूर्णतः राष्ट्रपति के नियंत्रण में होती है। इसका उद्देश्य सरकार को अप्रत्याशित और आपातकालीन व्यय पूर्ण करने में सक्षम बनाना है, जिसके लिए तत्काल विधायी अनुमोदन की प्रतीक्षा नहीं की जा सकती। हालांकि, इस निधि से किए गए व्यय हेतु कालांतर में संसद की स्वीकृति और संचित निधि से उसकी प्रतिपूर्ति अनिवार्य होती है।

14. (1) A and R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भविष्य निधि और न्यायिक जमा जैसी राशियाँ लोक लेखा में रखी जाती हैं क्योंकि यह धनराशि जनता की थाती होती है जिसे सरकार को भविष्य में लौटाना होता है। यहाँ सरकार केवल एक संरक्षक की भूमिका निभाती है, अतः इसे सरकारी आय नहीं माना जा सकता। अभिकथन और तर्क दोनों सही हैं क्योंकि सरकार की न्यासी वाली भूमिका ही इन निधियों को संचित निधि से पृथक करती है।

15. (1) अनुच्छेद 266
संविधान का अनुच्छेद 266 वित्तीय प्रशासन का आधार है, जो दो प्रकार की निधियों का प्रावधान करता है। प्रथम, संचित निधि जिसमें सभी कर राजस्व और ऋण प्राप्तियां जमा होती हैं। द्वितीय, लोक लेखा जिसमें भविष्य निधि जैसी राशियाँ रखी जाती हैं। यह अनुच्छेद सुनिश्चित करता है कि सार्वजनिक धन का प्रबंधन संवैधानिक प्रक्रियाओं के अनुसार हो, जिससे वित्तीय पारदर्शिता और जवाबदेही सरकार के प्रत्येक स्तर पर बनी रहे।

16. (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
अनुच्छेद 275 वैधानिक अनुदानों से संबंधित है, जबकि अनुच्छेद 282 सार्वजनिक उद्देश्यों हेतु विवेकाधीन अनुदान की अनुमति देता है। अनुच्छेद 292 केंद्र की ऋण लेने की शक्ति और अनुच्छेद 293 राज्यों द्वारा ऋण लेने की सीमाओं को स्पष्ट करता है। यह संवैधानिक ढांचा भारत में अंतर-सरकारी वित्तीय हस्तांतरण और ऋण प्रबंधन के लिए कानूनी आधार प्रदान करता है, जिससे संघीय राजकोषीय अनुशासन सुनिश्चित होता है।

17. (3) III, IV और V
विभाज्य कोष में केंद्र द्वारा एकत्रित सभी कर सम्मिलित नहीं होते, क्योंकि उपकर और अधिभार इससे बाहर रखे जाते हैं। 80वें संशोधन के पश्चात निगम कर को राज्यों के साथ साझा करना अनिवार्य हुआ। शुद्ध आय निर्धारित करने हेतु कुल संग्रहण से प्रशासनिक लागत घटाई जाती है। विशिष्ट उद्देश्यों हेतु लगाए गए उपकर केवल केंद्र के पास रहते हैं। अतः विभाज्य कोष की संरचना राजकोषीय संघवाद हेतु महत्वपूर्ण है।

18. (2) III, II, I, IV
कर हस्तांतरण की प्रक्रिया सकल राजस्व के संग्रहण से प्रारंभ होती है। इसके पश्चात, उपकर और अधिभार जैसी राशियों को पृथक कर दिया जाता है क्योंकि वे विभाज्य कोष का भाग नहीं हैं। शेष राशि में से संग्रहण की लागत घटाने पर शुद्ध आय प्राप्त होती है। अंत में, वित्त आयोग द्वारा निर्धारित मानदंडों का उपयोग करके इस राशि का राज्यों के मध्य क्षैतिज वितरण सुनिश्चित किया जाता है।

19. (3) स्वास्थ्य एवं शिक्षा उपकर
अनुच्छेद 270 के तहत राज्यों के साथ साझा किए जाने वाले विभाज्य कोष में आयकर, निगम कर और वस्तु एवं सेवा कर सम्मिलित होते हैं। परंतु स्वास्थ्य एवं शिक्षा उपकर जैसे कर इस कोष से बाहर रहते हैं। उपकर विशिष्ट उद्देश्यों हेतु लगाए जाते हैं और इनका संपूर्ण राजस्व केंद्र के पास रहता है। राज्यों द्वारा इसकी आलोचना की जाती है क्योंकि इससे उनके उपलब्ध वित्तीय संसाधनों में कमी आती है।

20. (1) अनुच्छेद 268 — संघ द्वारा लगाए गए शुल्क जो राज्यों द्वारा एकत्रित और रखे जाते हैं
अनुच्छेद 268 उन विशिष्ट शुल्कों से संबंधित है जो केंद्र द्वारा अधिरोपित किए जाते हैं परंतु संबंधित राज्यों द्वारा स्वयं एकत्र और विनियोजित किए जाते हैं। अनुच्छेद 269 और 270 करों के संग्रहण और वितरण की विधियों को स्पष्ट करते हैं। अनुच्छेद 271 अधिभार लगाने की शक्ति देता है, न कि अनुदान की। इन अनुच्छेदों का सही मिलान वित्तीय संघवाद की जटिल संरचना और कर शक्तियों के विभाजन को दर्शाता है।

21. (1) केवल I और II
वित्त आयोग एक संवैधानिक और अर्ध-न्यायिक निकाय है जिसकी स्थापना अनुच्छेद 280 के अंतर्गत होती है। राष्ट्रपति प्रत्येक 5 वर्ष में इसका गठन करते हैं ताकि राजस्व वितरण पर परामर्श दिया जा सके। आयोग की सिफारिशें केवल

NODIA

परामर्शकारी प्रकृति की होती हैं और केंद्र हेतु इन्हें मानना अनिवार्य नहीं है। हालांकि, लोकतांत्रिक परंपरा के अनुसार सरकार सामान्यतः इसकी महत्वपूर्ण वित्तीय सिफारिशों को स्वीकार कर लेती है।

22. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
संविधान ने संसद को वित्त आयोग के सदस्यों की पात्रता और चयन प्रक्रिया निर्धारित करने का अधिकार दिया है। इसी अधिकार का प्रयोग करते हुए संसद ने 1951 में वित्त आयोग अधिनियम पारित किया था। यह कानून सुनिश्चित करता है कि आयोग में केवल वही व्यक्ति सम्मिलित हों जिनके पास न्यायिक, वित्तीय या प्रशासनिक मामलों का विशेष ज्ञान हो। दोनों कथन सही हैं और आयोग की निष्पक्षता बनाए रखने में सहायक हैं।

23. (4) ऐसा व्यक्ति जो संसद का वर्तमान सदस्य हो
वित्त आयोग की सदस्यता हेतु व्यक्तियों के पास विशिष्ट अर्हताएँ होनी चाहिए, जैसे उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की पात्रता या वित्तीय प्रशासन और अर्थशास्त्र का गहन अनुभव। वर्तमान सांसदों हेतु ऐसी कोई अनिवार्य पात्रता नहीं है क्योंकि यह एक तकनीकी और अर्ध-न्यायिक निकाय है। इसका उद्देश्य राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त होकर निष्पक्ष वित्तीय निर्णय लेना है। सदस्यों का चयन विशेषज्ञता और सार्वजनिक मामलों के ज्ञान के आधार पर होता है।

24. (1) भारत के राष्ट्रपति
वित्त आयोग के अध्यक्ष और चार अन्य सदस्यों की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। यह प्रक्रिया अनुच्छेद 280 के तहत संचालित होती है। यद्यपि संसद सदस्यों की अर्हता निर्धारित करती है, परंतु वास्तविक नियुक्ति की शक्ति कार्यकारी प्रमुख के पास होती है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि आयोग को संवैधानिक गरिमा प्राप्त हो और वह केंद्र एवं राज्यों के मध्य एक निष्पक्ष मध्यस्थ के रूप में कार्य करे।

25. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
विभिन्न वित्त आयोगों का नेतृत्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों और प्रशासकों ने किया है। 12वें आयोग की अध्यक्षता सी. रंगराजन ने, 13वें की विजय केलकर ने और 14वें आयोग का नेतृत्व वाई. वी. रेड्डी ने किया था। 15वें आयोग के अध्यक्ष एन.के. सिंह हैं। इन अध्यक्षों के अधीन आयोगों ने कर हस्तांतरण के प्रतिशत और मानदंडों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं, जिससे भारत के राजकोषीय संघवाद को नई दिशा और गति प्राप्त हुई है।

26. (1) आयोग के मूल्यांकन के लिए मापदंडों और विशिष्ट मुद्दों को परिभाषित करना
विचारार्थ विषय वे मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो केंद्र सरकार द्वारा वित्त आयोग को उसके कार्यक्षेत्र के निर्देश देने हेतु तैयार किए जाते हैं। इनका उद्देश्य उन विशिष्ट आर्थिक चुनौतियों और लक्ष्यों को रेखांकित करना है जिनका मूल्यांकन आयोग को करना चाहिए। यह आयोग हेतु एक कार्ययोजना प्रदान करते हैं, ताकि वह संघ और राज्यों की वित्तीय स्थिति का विश्लेषण करते समय राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के मध्य संतुलन बना सके।

27. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
15वें वित्त आयोग को 2011 की जनगणना के आंकड़ों का उपयोग करने का निर्देश दिया गया था, जो अभिकथन के अनुसार सही है। हालांकि, तर्क गलत है क्योंकि 1971 के आंकड़ों का उपयोग ऐतिहासिक रूप से जनसंख्या नियंत्रण करने वाले राज्यों को पुरस्कृत करने हेतु किया जाता था। 2011 के आंकड़ों के उपयोग पर दक्षिण भारतीय राज्यों ने चिंता व्यक्त की थी क्योंकि इससे उन्हें वित्तीय हानि होने की संभावना थी।

28. (2) इसे राजकोषीय हस्तांतरण को केंद्रीकृत करने के लिए राज्य वित्त आयोगों को समाप्त करने का आदेश दिया गया था।
15वें वित्त आयोग को कभी भी राज्य वित्त आयोगों को समाप्त करने का निर्देश नहीं दिया गया। इसके विपरीत, इसका कार्य स्थानीय निकायों के संसाधनों को सुदृढ़ करना था। इसे रक्षा हेतु विशेष कोष, ऋण स्तरों की समीक्षा और प्रदर्शन-आधारित प्रोत्साहन जैसे विषयों पर विचार करने को कहा गया था। राज्य वित्त आयोग संवैधानिक रूप से अनिवार्य निकाय हैं और कोई भी केंद्रीय आयोग उन्हें समाप्त नहीं कर सकता है।

29. (3) अनुच्छेद 280(3)
अनुच्छेद 280(3) वित्त आयोग के संवैधानिक कर्तव्यों को विस्तार से स्पष्ट करता है। इसमें दो मुख्य कार्य सम्मिलित हैं: संघ और राज्यों के मध्य विभाज्य करों की शुद्ध आय का वितरण तय करना और संचित निधि से राज्यों को दी जाने वाली सहायता अनुदान के सिद्धांत निर्धारित करना। यह अनुच्छेद आयोग को यह शक्ति भी देता है कि वह राष्ट्रपति द्वारा सौंपे गए किसी अन्य वित्तीय मामले पर परामर्श प्रदान करे।

30. (1) केवल I, II, और III
वित्त आयोग के प्रमुख कार्यों में करों का वितरण, सहायता अनुदान के सिद्धांत और स्थानीय निकायों हेतु राज्य की संचित निधि को सुदृढ़ करने के उपाय सुझाना सम्मिलित है। अंतर-राज्यीय जल विवादों का समाधान आयोग के कार्यक्षेत्र में नहीं आता क्योंकि इसके लिए पृथक न्यायाधिकरण और संवैधानिक प्रावधान विद्यमान हैं। अतः विकल्प (1) सही है क्योंकि यह केवल उन्हीं कार्यों को समाहित करता है जो आयोग को सौंपे गए हैं।

NODIA

31. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
15वें वित्त आयोग ने संसाधनों के वितरण हेतु संतुलित सूत्र अपनाया है। इसमें आय की दूरी को सर्वाधिक 45.0% का भारांक दिया गया है, जो वित्तीय समानता सुनिश्चित करता है। जनसंख्या और क्षेत्रफल दोनों को 15.0% भार दिया गया है, जबकि वन और पारिस्थितिकी हेतु 10.0% आवंटित किया गया है। यह वितरण सूत्र राज्यों की विकासात्मक आवश्यकताओं, भौगोलिक चुनौतियों और पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों के मध्य संतुलन बनाने का प्रयास करता है।

32. (1) योजना आयोग — नीति आयोग — जीएसटी परिषद — 15वां वित्त आयोग
राजकोषीय संस्थाओं का ऐतिहासिक क्रम महत्वपूर्ण है। योजना आयोग की स्थापना 1950 में हुई थी। इसके पश्चात,

2015 में नीति आयोग ने इसका स्थान लिया। वस्तु एवं सेवा कर परिषद का गठन 101वें संविधान संशोधन के माध्यम से 2016-17 में किया गया। 15वें वित्त आयोग का गठन नवंबर 2017 में हुआ था। यह क्रम देश में योजनाबद्ध विकास से लेकर सहकारी संघवाद की ओर बढ़ते कदमों को सटीक रूप से दर्शाता है।

33. (2) जम्मू और कश्मीर के केंद्र शासित प्रदेशों के रूप में पुनर्गठन हेतु समायोजन करना
14वें वित्त आयोग ने राज्यों का हिस्सा 42% निर्धारित किया था, जिसे 15वें आयोग ने घटाकर 41% कर दिया। इस 1% की कमी का मुख्य कारण जम्मू और कश्मीर का केंद्र शासित प्रदेशों में पुनर्गठन था। चूंकि केंद्र शासित प्रदेशों की वित्तीय उत्तरदायित्व केंद्र सरकार का होता है, इसलिए उस अंश को विभाज्य कोष से वापस केंद्र के पास रखा गया। यह निर्णय विशुद्ध रूप से प्रशासनिक पुनर्गठन के कारण था।

34. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
15वें वित्त आयोग ने जनसांख्यिकीय प्रदर्शन को नए मानदंड के रूप में प्रस्तुत किया, जिसे 12.5% का भारांक दिया गया। इसका उद्देश्य उन राज्यों को पुरस्कृत करना था जिन्होंने परिवार नियोजन और निम्न प्रजनन दर प्राप्त करने में सफलता पाई है। यह मानदंड 2011 की जनगणना के उपयोग से उत्पन्न चिंताओं को संतुलित करने हेतु लाया गया था। अतः दोनों कथन सही हैं क्योंकि वे इस मानदंड की प्रकृति और उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं।

35. (2) केवल I, III, IV और V
15वें वित्त आयोग ने रक्षा हेतु गैर-व्यपगत निधि, क्षेत्र-विशिष्ट अनुदान और ऋण न्यूनीकरण हेतु महत्वपूर्ण सिफारिशें कीं। हालांकि, इसने सभी 28 राज्यों हेतु राजस्व घाटा अनुदान की अनुशंसा नहीं की थी; यह केवल उन्हीं राज्यों को दिया गया जिनके पास वित्तीय अंतराल था। अन्य सिफारिशें, जैसे स्वास्थ्य में निवेश और राजकोषीय कानूनों का अद्यतन, राज्यों की दीर्घकालिक वित्तीय स्थिति और पारदर्शिता में सुधार हेतु अत्यंत आवश्यक थीं।

36. (4) 1971 की जनसंख्या
14वें वित्त आयोग ने गणना में 1971 और 2011 दोनों की जनसंख्या का उपयोग किया था। परंतु 15वें आयोग ने 1971 की जनसंख्या के मानदंड को पूर्णतः हटा दिया और केवल 2011 के आंकड़ों पर निर्भर रहा। जनसांख्यिकीय परिवर्तनों को सटीक रूप से दर्शाने हेतु यह बड़ा बदलाव था। इसके बदले में, परिवार नियोजन में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले राज्यों के हितों की रक्षा हेतु जनसांख्यिकीय प्रदर्शन नामक नया मानदंड जोड़ा गया।

37. (1) केवल I और II
कर प्रयास और जनसांख्यिकीय प्रदर्शन को प्रदर्शन-आधारित मानदंड माना जाता है क्योंकि ये राज्यों की दक्षता और नीतिगत उपलब्धियों को मापते हैं। वन और पारिस्थितिकी एक संरचनात्मक मानदंड है जो राज्यों के भौगोलिक उत्तरदायित्वों को दर्शाता है, न कि उनके प्रत्यक्ष प्रदर्शन को। प्रदर्शन-आधारित मानदंड राज्यों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देते हैं, जिससे वे अपने राजस्व स्रोतों को सुधारने और राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित होते हैं।

38. (2) अनुच्छेद 282 के तहत विवेकाधीन अनुदान
वित्त आयोग मुख्य रूप से अनुच्छेद 275 के तहत वैधानिक अनुदानों की सिफारिश करता है, जिसमें राजस्व घाटा और स्थानीय निकाय अनुदान सम्मिलित हैं। अनुच्छेद 282 के तहत विवेकाधीन अनुदान पूर्णतः केंद्र और राज्यों के कार्यकारी विवेक पर निर्भर करते हैं और इसके लिए आयोग की अनुशंसा आवश्यक नहीं होती। आयोग आपदा प्रबंधन हेतु भी विशिष्ट निधियों का सुझाव देता है। अतः विवेकाधीन अनुदानों को वित्त आयोग के हस्तांतरण ढांचे से पृथक रखा गया है।

39. (4) केंद्रीय कर साझाकरण के बाद राज्य के बजटीय अंतर को पाटना
हस्तांतरण-पश्चात राजस्व घाटा अनुदान का लक्ष्य उन राज्यों की सहायता करना है जिनकी अनिवार्य व्यय आवश्यकताएं केंद्रीय करों का अंश प्राप्त होने के बाद भी अपूर्ण रहती हैं। यह अनुदान केवल उन्हीं राज्यों को दिया जाता है जिनका राजस्व खाता घाटे में रहने का अनुमान होता है। यह एक महत्वपूर्ण सुरक्षा तंत्र है जो सुनिश्चित करता है कि वित्तीय रूप से दुर्बल राज्य अपनी बुनियादी प्रशासनिक और सामाजिक सेवाओं को सुचारु रख सकें।

40. (1) टाइड ग्रांट — पेयजल और स्वच्छता प्राथमिकताओं के लिए आरक्षित निधि
15वें वित्त आयोग ने स्थानीय निकायों हेतु दो प्रकार के अनुदानों की व्यवस्था की है। बद्ध अनुदान (टाइड ग्रांट) का उपयोग पेयजल आपूर्ति और स्वच्छता जैसी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं हेतु करना अनिवार्य है। इसके विपरीत, अबद्ध अनुदान (अनटाइड ग्रांट) का उपयोग स्थानीय निकाय अपनी अन्य आवश्यकताओं हेतु कर सकते हैं। यह वर्गीकरण सुनिश्चित करता है कि बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं हेतु पर्याप्त धन उपलब्ध रहे और स्थानीय निकायों को वित्तीय स्वायत्तता भी मिले।

41. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
राजस्व घाटा अनुदान राज्यों के राजस्व अंतराल को भरता है, जबकि आपदा जोखिम कोष प्राकृतिक आपदाओं से लड़ने की क्षमता बढ़ाता है। क्षेत्र-विशिष्ट अनुदान स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में गुणवत्ता सुधार पर केंद्रित होते हैं। स्थानीय निकाय अनुदान विशेष रूप से पंचायतों और शहरी संस्थाओं के वित्तीय सशक्तीकरण हेतु निर्मित किए गए हैं। इन श्रेणियों के माध्यम से वित्त आयोग राज्यों की विशिष्ट और सामान्य वित्तीय चुनौतियों का समाधान करता है।

42. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अनुच्छेद 275 के तहत वैधानिक अनुदान उन राज्यों को दिए जाते हैं जिन्हें संसद द्वारा सहायता की आवश्यकता समझी जाती है। ये अनुदान वित्त आयोग की सिफारिशों पर आधारित होते हैं और संचित निधि पर भारित होते हैं, जिसका अर्थ है कि इन पर विधायी मतदान आवश्यक नहीं है। अभिकथन और

Downloaded from www.pdf.tube

तर्क दोनों सही हैं क्योंकि संचित निधि पर भारित होना ही इन अनुदानों को राज्यों हेतु एक सुरक्षित राजस्व स्रोत बनाता है।

43. (4) वे किसी भी सार्वजनिक उद्देश्य के लिए संघ या राज्य द्वारा दिए गए विवेकाधीन अनुदान हैं।
अनुच्छेद 282 केंद्र और राज्यों को व्यापक विवेकाधीन शक्तियाँ देता है कि वे किसी भी सार्वजनिक उद्देश्य हेतु अनुदान दे सकें, भले ही वह उनकी विधायी शक्तियों के भीतर न हो। ये अनुदान वित्त आयोग की अनुशंसाओं के बाहर होते हैं और केंद्र प्रायः इनका उपयोग अपनी विशिष्ट योजनाओं हेतु करता है। यह लचीलापन सरकार को आकस्मिक आवश्यकताओं या राष्ट्रीय महत्व की परियोजनाओं हेतु धन आवंटित करने में सक्षम बनाता है।

44. (2) केवल II, III और IV
वस्तु एवं सेवा कर परिषद की स्थापना 2016 के 101वें संशोधन के उपरांत हुई थी। इसकी अध्यक्षता वित्त मंत्री करते हैं और इसमें राज्यों के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं। परिषद में केंद्र का मतदान भारांक 1/3 और राज्यों का 2/3 होता है, जबकि निर्णय हेतु 75% बहुमत अनिवार्य है। यह संरचना सुनिश्चित करती है कि न तो केंद्र और न ही राज्य अकेले कोई बड़ा परिवर्तन कर सकें। प्रथम कथन स्थापना वर्ष के कारण गलत है।

45. (3) यह सुनिश्चित करना कि न तो केंद्र और न ही राज्य अकेले कार्य कर सकें, जिससे सहकारी संघवाद को बढ़ावा मिले
वस्तु एवं सेवा कर परिषद की मतदान संरचना एक अनूठा वीटो तंत्र प्रदान करती है। केंद्र के पास 33.3% और राज्यों के पास सामूहिक रूप से 66.7% मत होने के कारण किसी भी प्रस्ताव हेतु 75% बहुमत आवश्यक है। इसका अर्थ है कि केंद्र राज्यों के सहयोग के बिना और राज्य केंद्र के समर्थन के बिना निर्णय नहीं ले सकते। यह व्यवस्था आपसी सहमति और सहकारी संघवाद को प्रोत्साहित करती है, जिससे कर प्रणाली में स्थिरता बनी रहती है।

46. (4) सहकारी संघवाद
वस्तु एवं सेवा कर परिषद सहकारी संघवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि यह केंद्र और राज्यों को एक साझा मंच पर लाकर निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। यहाँ दोनों स्तरों की सरकारें अपनी कर स्वायत्तता साझा करती हैं ताकि राष्ट्र में एक समान बाजार और कर प्रणाली विकसित हो सके। यह मॉडल प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण के स्थान पर सहयोग और संवाद पर आधारित है, जो भारत जैसे विविध संघीय ढांचे के आर्थिक विकास हेतु अनिवार्य है।

47. (2) 101वां संशोधन अधिनियम
भारतीय संविधान का 101वां संशोधन अधिनियम, 2016, वस्तु एवं सेवा कर को लागू करने हेतु उत्तरदायी है। इसी अधिनियम द्वारा अनुच्छेद 279A जोड़ा गया, जो राष्ट्रपति को परिषद के गठन का अधिकार देता है। यह संशोधन अप्रत्यक्ष कर ढांचे में सबसे बड़ा सुधार था, जिसने केंद्र और राज्यों के विभिन्न करों को एक ही प्रणाली में समाहित किया। इसके द्वारा राजकोषीय इतिहास में आर्थिक एकीकरण पर आधारित नए युग का सूत्रपात हुआ।

48. (1) केवल I, II, और III
परिषद की संरचना में केंद्रीय वित्त मंत्री अध्यक्ष के रूप में, वित्त राज्य मंत्री और सभी राज्यों के वित्त मंत्री सदस्य के रूप में सम्मिलित होते हैं। इसमें मुख्य आर्थिक सलाहकार या केंद्रीय बैंक के गवर्नर के पास मतदान का अधिकार नहीं होता। यह परिषद एक राजनैतिक और कार्यकारी निकाय है जहाँ निर्वाचित प्रतिनिधि कर दरों और नियमों पर निर्णय लेते हैं। यह सदस्यता सुनिश्चित करती है कि कर नीतियों में राज्यों की लोकतांत्रिक इच्छा का सम्मान हो।

49. (1) II, IV, I, III
वस्तु एवं सेवा कर के अंतर्गत विवाद समाधान सबसे पहले न्यायनिर्णयन प्राधिकारी से प्रारंभ होता है। यदि पक्ष असंतुष्ट है, तो मामला अपीलीय प्राधिकारी के पास जाता है। इसके पश्चात, कानूनी और तकनीकी समाधान हेतु अपीलीय न्यायाधिकरण का प्रावधान है। उच्चतम स्तर पर, संवैधानिक या कानून की व्याख्या से संबंधित गंभीर मामलों को उच्च न्यायालय और अंततः सर्वोच्च न्यायालय में ले जाया जा सकता है। यह व्यवस्थित प्रक्रिया करदाताओं को न्याय सुनिश्चित करती है।

50. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
भारत ने दोहरा वस्तु एवं सेवा कर प्रतिरूप अपनाया है क्योंकि यहाँ केंद्र और राज्य दोनों को वस्तुओं और सेवाओं पर कर लगाने की समवर्ती शक्ति की आवश्यकता थी। चूंकि संविधान में शक्तियों का स्पष्ट विभाजन है, इसलिए इस प्रतिरूप हेतु 101वें संशोधन द्वारा संवैधानिक शक्तियों में परिवर्तन किया गया। यह व्यवस्था केंद्र और राज्यों के राजस्व हितों की रक्षा करती है और करदाताओं हेतु अनुपालन को सरल बनाती है, जो संघीय सफलता हेतु अनिवार्य है।

51. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
सीजीएसटी केंद्र द्वारा राज्य के भीतर की आपूर्ति पर और एसजीएसटी राज्य सरकार द्वारा उसी आपूर्ति पर वसूला जाता है। आईजीएसटी केंद्र द्वारा अंतर-राज्यीय व्यापार और आयात पर लगाया जाता है, जिसका राजस्व बाद में गंतव्य राज्य के साथ साझा किया जाता है। केंद्र शासित प्रदेशों में यूटीजीएसटी लागू होता है। करों का यह वर्गीकरण सुनिश्चित करता है कि आपूर्ति के प्रकार के आधार पर राजस्व का सही और पारदर्शी वितरण सरकारों के मध्य संभव हो सके।

52. (2) केवल II और III
एकीकृत वस्तु एवं सेवा कर (IGST) का कार्य अंतर-राज्यीय व्यापार के दौरान करों के निरंतर प्रवाह को सुनिश्चित करना है। यह केंद्र द्वारा एकत्र किया जाता है और गंतव्य आधारित सिद्धांत के अनुसार केंद्र और संबंधित राज्यों के मध्य वितरित होता है। यह राज्यों को राजस्व हानि की भरपाई हेतु कोई अतिरिक्त कर नहीं है, बल्कि एक सुव्यवस्थित संग्रहण प्रणाली है। आईजीएसटी सुनिश्चित करता है कि कर का लाभ अंतिम उपभोग वाले राज्य को प्राप्त हो।

NODIA

53. (3) वस्तुओं की बिक्री पर मूल्य वर्धित कर
वस्तु एवं सेवा कर के कार्यान्वयन के साथ राज्यों द्वारा लगाए जाने वाले मूल्य वर्धित कर (वैट) को इसमें समाहित कर लिया गया। हालांकि, सीमा शुल्क अभी पृथक है और शराब तथा बिजली को इसके दायरे से बाहर रखा गया है। वैट का समावेशन एक देश, एक कर के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में बड़ा कदम था, जिससे राज्यों के मध्य कर दरों की भिन्नता और व्यापारिक बाधाएं काफी हद तक समाप्त हो गई हैं।

54. (2) इसके पास व्यवसायों का लेखा-परीक्षण करने और कर वसूली को सीधे लागू करने का अधिकार है।
जीएसटीएन (GSTN) एक सूचना प्रौद्योगिकी बुनियादी ढांचा प्रदाता है जो संबंधित पोर्टल का प्रबंधन करता है। इसका मुख्य कार्य पंजीकरण, विवरणी दाखिल करने और कर भुगतान की प्रक्रिया को सुलभ बनाना है। इसके पास स्वयं कर लेखा-परीक्षण करने या वसूली लागू करने की कोई कानूनी शक्ति नहीं है; ये कार्य केवल सरकारी कर अधिकारियों द्वारा किए जाते हैं। यह केवल एक तकनीकी मंच है जो डेटा साझाकरण और राजस्व निपटान में सहायता करता है।

55. (4) खाद्य तेल
खाद्य तेल वस्तु एवं सेवा कर के अंतर्गत आता है और इसकी दरें परिषद द्वारा निर्धारित की जाती हैं। इसके विपरीत, पेट्रोलियम उत्पाद जैसे विमानन ईंधन, प्राकृतिक गैस, डीजल और कच्चा तेल वर्तमान में इससे बाहर रखे गए हैं। इन उत्पादों पर अभी पुराना कर ढांचा लागू है, जहाँ केंद्र उत्पाद शुल्क और राज्य वैट वसूलते हैं। राज्यों की राजस्व निर्भरता के कारण इन्हें अभी तक एकीकृत प्रणाली में सम्मिलित करने पर सहमति नहीं बनी है।

56. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वस्तु एवं सेवा कर एक गंतव्य-आधारित कर है, जिसका अर्थ है कि राजस्व उस राज्य को मिलता है जहाँ वस्तु का उपभोग होता है। इससे उत्पादक राज्यों को राजस्व हानि का भय था। इस चिंता को दूर करने हेतु केंद्र ने 5 वर्षों तक 14% वार्षिक विकास दर के आधार पर क्षतिपूर्ति का कानूनी वचन दिया। क्षतिपूर्ति का यह विचार राज्यों के विश्वास को बनाए रखने और कर सुधार को सफल बनाने हेतु अनिवार्य था।

57. (3) तंबाकू उत्पादों और मोटर वाहनों सहित विलासिता और अहितकर वस्तुएं
क्षतिपूर्ति उपकर केवल विशिष्ट श्रेणियों की वस्तुओं पर लगाया जाता है, जिन्हें विलासिता या अहितकर वस्तुएं कहा जाता है। इसमें मुख्य रूप से तंबाकू, वातित पेय और बड़ी कारें सम्मिलित हैं। इस उपकर से प्राप्त धन का उपयोग राज्यों की राजस्व हानि की भरपाई हेतु किया जाता है। आवश्यक वस्तुओं और कृषि उत्पादों को इस अतिरिक्त भार से मुक्त रखा गया है ताकि जनता पर महंगाई का अनावश्यक दबाव न पड़े और सामाजिक न्याय सुनिश्चित हो।

58. (2) केवल I, II और IV
क्षतिपूर्ति हेतु आधार वर्ष 2015-16 था और 14% की वृद्धि दर निर्धारित की गई थी। महामारी के दौरान उपकर संग्रहण कम होने पर केंद्र ने ऋण लेकर राज्यों को सहायता प्रदान की। तीसरा कथन गलत है क्योंकि क्षतिपूर्ति की कानूनी अवधि जून 2022 में समाप्त हो गई थी, परंतु ऋण चुकाने हेतु उपकर का संग्रहण अभी भी जारी है। यह तंत्र केंद्र और राज्यों के मध्य संकटकालीन वित्तीय सहयोग का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है।

59. (4) केंद्र द्वारा लिए गए ऋणों के मूलधन और ब्याज को चुकाना
कोविड-19 महामारी के दौरान राजस्व की कमी को पूर्ण करने हेतु केंद्र सरकार ने बाजार से ऋण लिया था ताकि राज्यों को उनके हिस्से की क्षतिपूर्ति प्रदान की जा सके। मार्च 2026 तक उपकर संग्रहण विस्तारित करने का एकमात्र उद्देश्य उस विशिष्ट ऋण और उसके ब्याज का भुगतान करना है। यह विस्तार राज्यों को कोई नवीन क्षतिपूर्ति देने हेतु नहीं है। एक बार ऋण चुकता होने पर इस उपकर को कानूनी रूप से समाप्त कर दिया जाएगा।

60. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
केंद्रीय क्षेत्र की योजनाएं पूर्णतः केंद्र द्वारा वित्तपोषित होती हैं, जबकि केंद्र प्रायोजित योजनाओं में केंद्र और राज्य दोनों का अंश होता है। वित्त आयोग के अनुदान वैधानिक होते हैं और इनके लिए राज्यों को पृथक धन मिलाने की आवश्यकता नहीं होती। लोक लेखा में वह धन होता है जिसके लिए सरकार केवल एक बैंकर के रूप में कार्य करती है। यह वर्गीकरण भारत के वित्तीय प्रशासन और कल्याणकारी कार्यक्रमों के वित्तपोषण को समझने हेतु स्पष्ट रुपरेखा प्रदान करता है।

61. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
कोर ऑफ द कोर योजनाओं में मनरेगा और राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम जैसे अनिवार्य सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम सम्मिलित हैं, अतः प्रथम कथन सही है। द्वितीय कथन गलत है क्योंकि इन योजनाओं का वित्तपोषण प्रतिरूप राज्यों की श्रेणियों के आधार पर भिन्न होता है और सभी हेतु 50% का समान नियम नहीं है। विशेष श्रेणी के राज्यों हेतु केंद्र का अंश अत्यधिक होता है। ये योजनाएं वंचित वर्गों की सुरक्षा हेतु सरकार की प्राथमिकता हैं।

62. (1) केवल I, II, III, और IV
केंद्र प्रायोजित योजनाएं राष्ट्रीय लक्ष्यों हेतु राज्य सूची के विषयों पर निर्मित होती हैं। मुख्य योजनाओं हेतु सामान्य राज्यों में 60:40 का अनुपात और पहाड़ी राज्यों हेतु 90:10 है। पांचवां कथन गलत है क्योंकि सभी योजनाओं को सीधे लाभ हस्तांतरण द्वारा लागू करना अनिवार्य नहीं है; कई योजनाओं में भौतिक बुनियादी ढांचे का निर्माण सम्मिलित होता है। यह साझा वित्तीय मॉडल सहकारी संघवाद को प्रभावी रूप से धरातल पर उतारने का प्रयास है।

63. (1) यह राज्यों को स्थानीय हस्तक्षेपों को डिजाइन करने में पूर्ण लचीलापन प्रदान करता है।
केंद्र प्रायोजित योजनाओं की बड़ी आलोचना यह है कि इनमें एक ही दृष्टिकोण अपनाया जाता है, जिससे राज्यों के पास स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तन हेतु कम लचीलापन होता है। इन योजनाओं के कारण राज्यों पर

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

अतिरिक्त वित्तीय भार पड़ता है क्योंकि उन्हें अपना अंश मिलाना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त, कठोर केंद्रीय दिशा-निर्देशों और जटिल रिपोर्टिंग प्रक्रियाओं के कारण राज्यों की प्रशासनिक क्षमता पर अत्यधिक दबाव पड़ता है, जो उनकी प्राथमिकताओं को प्रभावित करता है।

64. (2) प्रशासनिक अधिव्यापन को कम करना और राज्यों के लिए अधिक लचीलापन प्रदान करना
योजनाओं को युक्तिसंगत बनाने का उद्देश्य समान लक्ष्यों वाली योजनाओं को जोड़ना था ताकि कार्यान्वयन में दोहराव न हो। इससे न केवल प्रशासनिक दक्षता बढ़ती है, बल्कि राज्यों को अपनी भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार कार्यक्रमों को अनुकूलित करने हेतु अधिक स्थान मिलता है। यह सुधार राज्यों की उस मांग पर आधारित था कि उन्हें धन व्यय करने के तरीके में अधिक स्वायत्तता और लचीलापन प्राप्त होना चाहिए।

65. (2) केंद्रीय क्षेत्र की योजनाएं — सीधे केंद्रीय मंत्रालयों द्वारा कार्यान्वित
केंद्रीय क्षेत्र की योजनाओं का संपूर्ण वित्तपोषण और कार्यान्वयन सीधे केंद्र सरकार के मंत्रालयों द्वारा किया जाता है। विकल्प (1) गलत है क्योंकि अन्य योजनाओं में साझा वित्तपोषण होता है। विकल्प (3) भी त्रुटिपूर्ण है क्योंकि विशिष्ट श्रेणियों हेतु भिन्न अनुपात होते हैं। राज्य क्षेत्र की योजनाएं मुख्य रूप से राज्यों के अपने संसाधनों से संचालित होती हैं। केंद्रीय क्षेत्र की योजनाओं का उदाहरण अंतरिक्ष कार्यक्रम या परमाणु ऊर्जा जैसी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय परियोजनाएं हैं।

66. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
योजना आयोग पहले विवेकाधीन अनुदानों का प्रबंधन करता था, जबकि वित्त आयोग संवैधानिक आधार पर करों के हस्तांतरण की अनुशंसा करता है। नीति आयोग का कार्य अब सहकारी संघवाद के माध्यम से नीतिगत दिशा और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना है। अंतर-राज्य परिषद साझा हितों के विषयों पर केंद्र और राज्यों के मध्य चर्चा हेतु एक संवैधानिक मंच है। इन संस्थाओं की भूमिकाओं का यह अंतर भारतीय संघीय व्यवस्था के क्रमिक विकास को दर्शाता है।

67. (1) केवल I और II
नीति आयोग एक थिंक टैंक है जिसके पास पूर्ववर्ती योजना आयोग की भांति धन आवंटित करने की कोई वित्तीय शक्ति नहीं है। इसकी शासी परिषद में सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों की सहभागिता सहकारी संघवाद का सशक्त प्रतीक है। तीसरा कथन अपूर्ण है क्योंकि नीति आयोग का अधिदेश केवल समन्वय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह रणनीतिक और दीर्घकालिक नीतियां बनाने पर केंद्रित है। धन आवंटन की शक्ति अब पूरी तरह वित्त मंत्रालय के पास है।

68. (4) वे विवेकाधीन और सशर्त थे, जो अक्सर स्थानीय राज्य प्राथमिकताओं को प्रभावित करते थे
योजना आयोग द्वारा प्रदत्त अनुदानों पर प्रायः विवाद रहता था क्योंकि वे किसी संवैधानिक सूत्र के स्थान पर केंद्र के विवेक पर आधारित थे। राज्यों को धन प्राप्ति हेतु आयोग के कठोर दिशा-निर्देशों का पालन करना पड़ता था, जिससे उनकी विकासात्मक स्वायत्तता सीमित हो जाती थी। इसे केंद्र के अत्यधिक नियंत्रण के रूप में देखा जाता था। इसी वित्तीय असंतुलन और केंद्रीकृत योजना मॉडल के कारण अंततः नीति आयोग के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

69. (3) वित्तीय हस्तांतरण अब मुख्य रूप से केंद्रीय वित्त आयोग के माध्यम से होता है
योजना आयोग की समाप्ति और योजना बनाम गैर-योजना व्यय के भेद के अंत के पश्चात वित्त आयोग की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है। अब राज्यों को मिलने वाले वित्तीय हस्तांतरण का वृहद भाग अनुच्छेद 280 के तहत आयोग की सूत्र-आधारित सिफारिशों पर निर्भर करता है। इससे वित्तीय संबंधों में अधिक निष्पक्षता और पूर्वानुमेयता आई है। यद्यपि केंद्र प्रायोजित योजनाएं विद्यमान हैं, परंतु विवेकाधीन आवंटन का पुराना प्रभुत्व अब समाप्त हो गया है।

70. (2) यह राज्य के प्रदर्शन को बेंचमार्क करके प्रतिस्पर्धी संघवाद को बढ़ावा देता है।
नीति आयोग द्वारा जारी सूचकांकों का उद्देश्य राज्यों के मध्य स्वास्थ्य, शिक्षा और निर्यात जैसे क्षेत्रों में सुधार हेतु स्वस्थ प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करना है। जब प्रदर्शन के आंकड़े सार्वजनिक होते हैं, तो राज्य एक-दूसरे से सीखने और त्रुटियों को सुधारने हेतु प्रेरित होते हैं। यह प्रतिस्पर्धी संघवाद की अवधारणा को पुष्ट करता है, जहाँ राज्य निवेश आकर्षित करने और श्रेष्ठ नागरिक सेवाएं प्रदान करने की होड़ में अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन करने का निरंतर प्रयास करते हैं।

NODIA

71. (1) केवल I, II और IV
विशेष श्रेणी का दर्जा (SCS) 1969 में प्रारंभ हुआ था और यह राज्यों को उच्च केंद्रीय सहायता (90:10 अनुपात) प्रदान करता है। हालांकि, संविधान में इस दर्जे का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है; यह एक प्रशासनिक व्यवस्था रही है। 14वें वित्त आयोग की अनुशंसाओं के उपरांत केंद्र ने नवीन राज्यों को यह दर्जा देना बंद कर दिया है। तीसरा कथन गलत है क्योंकि यह संवैधानिक श्रेणी नहीं है। यह दर्जा भौगोलिक रूप से पिछड़े राज्यों हेतु महत्वपूर्ण सहारा था।

72. (1) पहाड़ी और कठिन भू-भाग
गाडगिल-मुखर्जी सूत्र के अंतर्गत किसी राज्य को विशेष दर्जा देने हेतु पहाड़ी और कठिन भू-भाग बुनियादी मानदंड है। इसके अतिरिक्त, कम जनसंख्या घनत्व, जनजातीय बहुलता, सामरिक सीमावर्ती स्थिति और आर्थिक पिछड़ापन भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। ये स्थितियाँ राज्य की राजस्व संग्रहण क्षमता को सीमित करती हैं और विकास की लागत को बढ़ा देती हैं, इसीलिए उन्हें सामान्य राज्यों की तुलना में अधिक केंद्रीय वित्तीय सहायता की आवश्यकता होती है।

73. (1) II, IV, III, I
ऐतिहासिक रूप से, गाडगिल सूत्र 1969 में प्रारंभ हुआ। 14वें वित्त आयोग की सिफारिशें 2014-15 में आईं। नीति आयोग की स्थापना जनवरी 2015 में हुई। अंत में, वस्तु एवं सेवा कर

को जुलाई 2017 में लागू किया गया। यह कालक्रम भारत के राजकोषीय इतिहास में क्रमिक बदलावों को दर्शाता है, जहाँ देश एक केंद्रीकृत योजना प्रतिरूप से अधिक आधुनिक, सहभागी और बाजार-उन्मुख संघीय वित्तीय ढांचे की ओर सफलतापूर्वक विकसित हुआ है।

74. (1) 14वें वित्त आयोग ने स्पष्ट रूप से बिहार और ओडिशा को यह दर्जा देने की सिफारिश की थी।
14वें वित्त आयोग ने किसी भी नवीन राज्य को विशेष श्रेणी दर्जा देने की अनुशंसा नहीं की थी; इसके स्थान पर उसने राज्यों के कर हस्तांतरण में बड़ी वृद्धि (32% से 42%) करने का सुझाव दिया। आयोग का मानना था कि उच्च हस्तांतरण से राज्यों को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार व्यय करने की पर्याप्त स्वतंत्रता मिलेगी। उत्तर-पूर्वी राज्यों हेतु 90:10 का अनुपात अभी भी जारी है, परंतु नए राज्यों हेतु यह मार्ग बंद कर दिया गया है।

75. (4) 14वें वित्त आयोग ने योजना सहायता को उच्च कर हस्तांतरण में समाहित कर दिया है
14वें वित्त आयोग ने राजकोषीय हस्तांतरण के ढांचे में बुनियादी परिवर्तन करते हुए विभाज्य कोष में राज्यों की हिस्सेदारी 32% से बढ़ाकर 42% कर दी थी। आयोग का तर्क था कि राज्यों को विशेष दर्जे के माध्यम से सहायता देने के बजाय सीधे अधिक कर राजस्व प्रदान किया जाए। इसके पश्चात केंद्र ने विशेष श्रेणी दर्जे की नवीन मांगों को स्वीकार करना बंद कर दिया क्योंकि राज्यों के पास अब स्वयं खर्च करने हेतु अधिक निधि उपलब्ध है।

76. (1) केवल I, II, III और IV
राज्यों के पास कृषि आय, शराब, संपत्ति और मुद्रांक शुल्क पर कर लगाने की महत्वपूर्ण शक्तियाँ हैं। भू-राजस्व भी राज्य का विषय है। हालांकि, पांचवां कथन गलत है क्योंकि वस्तु एवं सेवा कर लागू होने के पश्चात राज्यों ने सेवाओं पर स्वतंत्र रूप से कर लगाने की अपनी पृथक शक्ति खो दी है। अब सेवाओं पर कर परिषद द्वारा सामूहिक रूप से निर्धारित होता है। शराब और पेट्रोलियम पर स्वतंत्र कर शक्तियाँ अभी भी राज्यों के राजस्व का सुरक्षित आधार हैं।

77. (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
निगम कर और सीमा शुल्क पूर्णतः संघीय कर हैं जो केंद्र द्वारा अधिरोपित और धारित किए जाते हैं। कृषि आय पर कर लगाने का अधिकार विशेष रूप से राज्य सूची के अंतर्गत राज्यों के पास है। पथकर (टोल) जैसे कर राज्य सरकारों द्वारा लगाए जाते हैं, परंतु इनका संग्रहण प्रायः स्थानीय निकायों द्वारा किया जाता है। कर शक्तियों का यह संवैधानिक वितरण सुनिश्चित करता है कि सरकार के प्रत्येक स्तर के पास अपने कार्यों हेतु राजस्व के स्वतंत्र स्रोत हों।

78. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
चूंकि पेट्रोलियम उत्पाद और शराब वस्तु एवं सेवा कर के दायरे से बाहर हैं, इसलिए राज्यों के पास इन पर कर लगाने की पूर्ण स्वायत्तता है। यह उनके राजस्व का वृहद भाग बनाता है, विशेष रूप से तब जब अन्य कर संग्रह में उतार-चढ़ाव होता है। राज्य प्रायः अपने बजटीय घाटे को कम करने हेतु पेट्रोल और डीजल पर वैट की दरों में वृद्धि करते हैं। अतः दोनों कथन सही हैं क्योंकि वे राज्यों की राजकोषीय निर्भरता को सटीक रूप से दर्शाते हैं।

79. (1) केंद्रीय वित्त आयोग से धन का अत्यधिक हस्तांतरण जिससे राज्य का प्रयास कम हो जाता है
वित्त आयोग द्वारा हस्तांतरित धन को राज्यों हेतु चुनौती नहीं माना जाता, बल्कि यह विकास हेतु आवश्यक संसाधन है। वास्तविक चुनौतियां अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का आकार, वस्तु एवं सेवा कर के कारण सीमित कर स्वायत्तता और कृषि आय पर कर न लगाने की राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी हैं। वित्त आयोग तो वास्तव में कर प्रयास जैसे मानदंडों के माध्यम से राज्यों को अपना राजस्व बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित करता है, अतः हस्तांतरण बाधा नहीं है।

80. (2) दूरसंचार पर सामान्य सेवा कर
दूरसंचार सेवाओं पर कर लगाना केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में है और यह अब वस्तु एवं सेवा कर का भाग है, अतः कोई राज्य इसे स्वतंत्र रूप से नहीं लगा सकता। डीजल पर वैट, भू-राजस्व और मनोरंजन कर ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ राज्यों के पास अभी भी कर लगाने की शक्ति सुरक्षित है। विषम विकल्प की पहचान यह समझने में सहायक है कि कर सुधारों के पश्चात राज्यों की कराधान शक्तियाँ किन विशिष्ट क्षेत्रों तक सीमित हो गई हैं।

81. (2) 73वें और 74वें संशोधन
1992 के 73वें और 74वें संशोधनों ने त्रि-स्तरीय सरकार की नींव रखी और स्थानीय निकायों को संवैधानिक मान्यता प्रदान की। इन संशोधनों ने न केवल उन्हें प्रशासनिक शक्तियाँ दीं, बल्कि राज्य वित्त आयोगों के माध्यम से संसाधनों के हस्तांतरण का व्यवस्थित ढांचा भी उपलब्ध कराया। इसके द्वारा पंचायतों और नगर पालिकाओं को कर लगाने और सार्वजनिक सेवाओं के प्रबंधन का अधिकार मिला, जो जमीनी स्तर पर राजकोषीय विकेंद्रीकरण की दिशा में क्रांतिकारी कदम सिद्ध हुआ है।

82. (1) राज्य और स्थानीय निकायों के बीच राजस्व वितरण की सिफारिश करना
राज्य वित्त आयोग एक संवैधानिक निकाय है जिसका गठन राज्यपाल द्वारा प्रत्येक 5 वर्ष में किया जाता है। इसका मुख्य कार्य राज्य सरकार द्वारा एकत्रित राजस्व में से पंचायतों और शहरी निकायों के उचित अंश का निर्धारण करना है। इसके अतिरिक्त, यह स्थानीय निकायों की वित्तीय स्थिति सुदृढ़ करने के उपायों और उन्हें सौंपे जाने वाले करों के बारे में परामर्श देता है। यह सुनिश्चित करता है कि स्थानीय शासन के पास पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध हों।

83. (3) राज्य सरकारें अक्सर स्थानीय निकायों को वित्तीय शक्तियां सौंपने में अनिच्छुक रहती हैं
भारत में राजकोषीय विकेंद्रीकरण के समक्ष सबसे बड़ी बाधा यह है कि राज्य सरकारें अपनी वित्तीय शक्तियाँ और राजस्व स्रोत स्थानीय निकायों के साथ साझा करने में संकोच करती

Downloaded from www.pdf.tube

हैं। कई राज्यों में आयोगों का गठन समय पर नहीं होता और अनुशंसाएं पूर्णतः लागू नहीं होतीं। यद्यपि केंद्र सरकार केंद्रीय आयोग के माध्यम से सीधा धन भेज रही है, परंतु वास्तविक वित्तीय स्वायत्तता अभी भी राज्यों की राजनीतिक और प्रशासनिक इच्छाशक्ति पर निर्भर करती है।

84. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
अनुच्छेद 243H पंचायतों की कर लगाने की शक्तियों से संबंधित है, जबकि 243I पंचायतों हेतु राज्य वित्त आयोग का प्रावधान करता है। इसी प्रकार, 243W नगर पालिकाओं की उत्तरदायित्वों को परिभाषित करता है और 243Y उनके वित्तीय मामलों हेतु आयोग की भूमिका स्पष्ट करता है। इन अनुच्छेदों का समूह स्थानीय स्वशासन के राजकोषीय आधार को संवैधानिक सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे ग्रामीण और शहरी विकास हेतु एक जवाबदेह ढांचा निर्मित होता है।

85. (2) के.सी. नियोगी — महावीर त्यागी — वाई.बी. चव्हाण — एन.के. सिंह
भारत के वित्त आयोगों का इतिहास 1951 में के.सी. नियोगी के साथ प्रारंभ हुआ। महावीर त्यागी ने पांचवें आयोग और वाई. बी. चव्हाण ने आठवें आयोग का नेतृत्व किया। सबसे नवीन 15वें आयोग के अध्यक्ष एन.के. सिंह हैं। यह कालक्रम न केवल आयोग के नेतृत्व को दर्शाता है, बल्कि यह भी बताता है कि समय के साथ देश की आर्थिक आवश्यकताओं और संघीय वित्तीय संबंधों की चुनौतियों के अनुरूप आयोग के दृष्टिकोणों में कैसे महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं।

86. (2) अपनी जनसंख्या के सापेक्ष कर राजस्व उत्पन्न करने की राज्य की क्षमता
राजकोषीय क्षमता दूरी एक मानक है जिसका उपयोग यह मापने हेतु किया जाता है कि एक राज्य अपने आर्थिक आधार का उपयोग कर कितना राजस्व जुटा सकता है। यह केवल वास्तविक संग्रहण को नहीं, बल्कि संभावित क्षमता को देखता है। जिन राज्यों की क्षमता राष्ट्रीय औसत से कम होती है, उन्हें हस्तांतरण सूत्र में अधिक लाभ दिया जाता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि संसाधनों की कमी के कारण कोई राज्य आवश्यक सेवाएँ देने में पीछे न रहे।

87. (4) राज्य केंद्र की स्वीकृति के बिना सीधे विदेशों से ऋण ले सकते हैं।
अनुच्छेद 293 के तहत राज्य सरकारों पर विदेशी ऋण लेने के संबंध में कठोर प्रतिबंध हैं। कोई भी राज्य केंद्र की पूर्व अनुमति और प्रत्याभूति के बिना सीधे अंतरराष्ट्रीय बाजारों से ऋण प्राप्त नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त, यदि राज्य पर केंद्र का कोई पुराना बकाया है, तो उसे घरेलू उधारी हेतु भी केंद्र की सहमति लेनी होती है। यह प्रावधान राष्ट्र की समग्र आर्थिक स्थिरता और ऋण प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत अनिवार्य है।

88. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
वन और पारिस्थितिकी मानदंड सम्मिलित करने का तर्क यह है कि जिन राज्यों में वनावरण अधिक है, वे भूमि का उपयोग उद्योगों हेतु नहीं कर सकते। यह एक अवसर लागत है जिसे राज्य पर्यावरण संरक्षण के हित में वहन करते हैं। इसलिए वित्त आयोग उन्हें वित्तीय सहायता देकर पुरस्कृत करता है ताकि उनके विकास की गति बाधित न हो। दोनों कथन सही हैं क्योंकि वे पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के मध्य इस वित्तीय समझौते को स्पष्ट करते हैं।

89. (3) संवैधानिक ऋण प्रतिबंध और ऋण प्रबंधक के रूप में आरबीआई की भूमिका
भारतीय संघीय प्रणाली में राज्यों को वित्तीय दिवालियेपन से बचाने हेतु केंद्र और रिजर्व बैंक मिलकर कार्य करते हैं। अनुच्छेद 293 के तहत उधारी की सीमाएं निर्धारित की जाती हैं और रिजर्व बैंक राज्यों के ऋण का प्रबंधन करता है। अर्थोपाय अग्रिम जैसी सुविधाएं भी नकदी संकट के समय राज्यों की सहायता करती हैं। यह कठोर निगरानी और समर्थन तंत्र राज्य वित्त की सुरक्षा और राष्ट्रीय आर्थिक अखंडता को बनाए रखने हेतु अत्यंत प्रभावी और आवश्यक है।

90. (1) भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक
भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक एक स्वतंत्र संवैधानिक प्राधिकरण है जो केंद्र और राज्य सरकारों के खातों का लेखा-परीक्षण करता है। इसकी रिपोर्टें विधानमंडलों में प्रस्तुत की जाती हैं और सार्वजनिक धन के उपयोग की वैधता की जाँच करती हैं। यह सुनिश्चित करता है कि कार्यपालिका राजकोषीय अनुशासन का पालन करे और स्वीकृत बजट के अनुसार ही व्यय किया जाए। इसकी भूमिका राजकोषीय जवाबदेही और वित्तीय पारदर्शिता बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।

91. (4) क्षमता के सापेक्ष कर संग्रह में दक्षता दिखाने वाले राज्यों को पुरस्कृत करने के लिए
कर प्रयास एक ऐसा मानदंड है जो उन राज्यों को प्रोत्साहित करता है जो अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार अधिक कुशलता से कर एकत्र करते हैं। यह केवल संपन्न राज्यों को धन देने हेतु नहीं है, बल्कि उन राज्यों को पुरस्कृत करने हेतु है जो अपने राजस्व स्रोतों को सुधारने हेतु सक्रिय कदम उठाते हैं। यह राज्यों के मध्य सकारात्मक प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करता है ताकि वे केवल केंद्रीय हस्तांतरण पर निर्भर रहने के बजाय अपनी वित्तीय आत्मनिर्भरता बढ़ा सकें।

92. (2) पहला राजस्थान राज्य वित्त आयोग — कृष्ण कुमार गोयल की अध्यक्षता में
राजस्थान में पंचायती राज व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण हेतु प्रथम राज्य वित्त आयोग का गठन 1995 में किया गया था, जिसके अध्यक्ष कृष्ण कुमार गोयल थे। अन्य विकल्प त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि छठे आयोग के अध्यक्ष प्रद्युम्न सिंह थे। राज्य वित्त आयोग की सिफारिशें सरकार हेतु परामर्शकारी होती हैं। ये आयोग ग्रामीण और शहरी निकायों के मध्य संसाधनों के न्यायसंगत वितरण का आधार तैयार करते हैं, जो राज्य के विकेंद्रीकृत विकास हेतु आधारभूत आवश्यकता है।

93. (3) मुद्रांक शुल्क और पंजीकरण शुल्क
मुद्रांक शुल्क और पंजीकरण शुल्क कर राजस्व का अंश हैं, गैर-कर राजस्व का नहीं। गैर-कर राजस्व में वे आय सम्मिलित

NODIA

होती है जो सरकार करों के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से प्राप्त करती है, जैसे ऋणों पर ब्याज, खनिजों पर स्वामित्व शुल्क (रॉयल्टी), और सार्वजनिक उपक्रमों से प्राप्त लाभ। यह भेद महत्वपूर्ण है क्योंकि कर राजस्व आर्थिक गतिविधियों पर प्रत्यक्ष भार डालता है, जबकि गैर-कर राजस्व सरकारी संपत्तियों और सेवाओं के प्रबंधन से उत्पन्न आय को दर्शाता है।

94. (4) केंद्र द्वारा लगाया गया एक विशिष्ट उद्देश्य वाला कर जो पूरी तरह संघ के पास रहता है
उपकर (Cess) एक अतिरिक्त कर है जो केंद्र द्वारा विशिष्ट उद्देश्यों, जैसे शिक्षा या स्वास्थ्य हेतु धन जुटाने हेतु लगाया जाता है। सामान्य करों के विपरीत, उपकर से प्राप्त राशि को विभाज्य कोष में सम्मिलित नहीं किया जाता और इसे राज्यों के साथ साझा नहीं करना पड़ता। यह पूर्णतः केंद्र के पास रहती है और इसे केवल उसी उद्देश्य हेतु व्यय किया जाना चाहिए जिसके लिए इसे अधिरोपित किया गया है। यह केंद्र का विशिष्ट वित्तीय उपकरण है।

95. (1) सकल केंद्रीय कर राजस्व में राज्यों के प्रभावी हिस्से में कमी
यद्यपि वित्त आयोग ने राज्यों के अंश को बढ़ाकर 41-42% कर दिया है, परंतु केंद्र द्वारा उपकर और अधिभार का अधिक उपयोग करने से राज्यों को प्राप्त होने वाला वास्तविक धन कम हो गया है। चूंकि उपकर साझा नहीं किए जाते, इसलिए विभाज्य कोष का आकार सकल कर राजस्व की तुलना में संकुचित हो जाता है। इससे राज्यों को शिकायत रहती है कि उनका प्रभावी हिस्सा निर्धारित प्रतिशत से काफी कम है। यह प्रवृत्ति वर्तमान राजकोषीय तनाव का मुख्य कारण है।

96. (2) यह राज्य सूची का विषय है, जिससे राज्य इसे लगा सकते हैं
संविधान की सातवीं अनुसूची की राज्य सूची के अंतर्गत कृषि आय पर कर लगाने का अधिकार विशेष रूप से राज्य सरकारों को प्रदत्त है। केंद्र सरकार केवल गैर-कृषि आय पर ही आयकर लगा सकती है। हालांकि, राजनीतिक संवेदनशीलता और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के ढांचे के कारण अधिकांश राज्यों ने अभी तक कृषि आय पर कर नहीं लगाया है। यह राज्यों की कर शक्तियों का एक महत्वपूर्ण परंतु न्यूनतम उपयोग किया जाने वाला क्षेत्र है जो राजस्व बढ़ा सकता है।

97. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
15वें वित्त आयोग ने स्थानीय निकायों हेतु वित्तीय सुधारों पर बल दिया है। अब अनुदान प्राप्त करने हेतु पंचायतों और नगर पालिकाओं को अपने वार्षिक खातों को ऑनलाइन सार्वजनिक करना और लेखा-परीक्षण रिपोर्ट समय पर जमा करना अनिवार्य है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि स्थानीय स्तर पर धन का उपयोग पारदर्शिता के साथ हो और भ्रष्टाचार की संभावना न्यूनतम हो। डिजिटल रिकॉर्ड रखने से निधियों की प्रभावशीलता की निगरानी करना भी सरल हो गया है।

98. (1) यह केंद्रीय वित्त आयोग की भूमिका को पूरी तरह से प्रतिस्थापित करता है।
राज्य वित्त आयोग और केंद्रीय वित्त आयोग एक-दूसरे के पूरक हैं, न कि प्रतिस्थापक। राज्य वित्त आयोग राज्य के भीतर स्थानीय निकायों हेतु राजस्व वितरण निर्धारित करता है, जबकि केंद्रीय वित्त आयोग केंद्र और राज्यों के मध्य धन साझा करने की अनुशंसा करता है। राज्यपाल द्वारा गठित राज्य वित्त आयोग स्थानीय शासन की वित्तीय स्थिति सुधारने हेतु उत्तरदायी है। यह केंद्रीय आयोग को भी स्थानीय निकायों की आवश्यकताओं के संबंध में आवश्यक आंकड़े और परामर्श प्रदान करता है।

99. (3) राज्यों के नकदी प्रवाह में अस्थायी असंतुलन को दूर करने हेतु
अर्थोपाय अग्रिम (WMA) रिजर्व बैंक द्वारा सरकारों को दी जाने वाली अल्पकालिक ऋण सुविधा है। इसका उद्देश्य राजस्व प्राप्ति और व्यय के मध्य उत्पन्न होने वाले अस्थायी वित्तीय अंतराल या नकदी संकट को दूर करना है। यह कोई दीर्घकालिक निवेश ऋण नहीं है, बल्कि दैनिक सरकारी व्यय को सुचारु चलाने हेतु सहायता तंत्र है। राज्यों को यह राशि एक निश्चित समय सीमा में ब्याज सहित लौटानी होती है ताकि राजकोषीय अनुशासन और स्थिरता बनी रहे।

100. (4) राज्य का उधार उसके वार्षिक जीएसडीपी के एक निश्चित प्रतिशत तक सीमित है
भारत में राज्यों की ऋण शक्ति पर राजकोषीय उत्तरदायित्व अधिनियमों के तहत सीमाएं निर्धारित हैं। सामान्यतः राज्य अपने सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 3% से 3.5% तक ही उधार ले सकते हैं। यदि कोई राज्य इस सीमा का उल्लंघन करता है, तो केंद्र उसे अतिरिक्त बाजार उधारी की अनुमति नहीं देता। यह प्रतिबंध राज्य को ऋण जाल में फंसने से बचाने और राष्ट्र की समग्र राजकोषीय स्थिरता को सुरक्षित रखने हेतु संवैधानिक रूप से अनिवार्य किया गया है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 05

कृषि विकास : संस्थागत एवं तकनीकी पहलू तथा सुधार

1. वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान वर्तमान मूल्यों पर भारत के सकल मूल्य वर्धन में कृषि और संबद्ध क्षेत्र का अनुमानित योगदान कितना था?
   (1) 12.5 प्रतिशत
   (2) 15.2 प्रतिशत
   (3) 18.3 प्रतिशत
   (4) 22.1 प्रतिशत
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. स्वतंत्रता के पश्चात से कृषि क्षेत्र के संबंध में भारतीय अर्थव्यवस्था के संरचनात्मक परिवर्तन का सर्वोत्तम वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?
   (1) सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हिस्सेदारी में भारी गिरावट आई है, किंतु इस पर निर्भर कार्यबल के अनुपात में उसी अनुपात में कमी नहीं आई है।
   (2) सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हिस्सेदारी और इस पर निर्भर व्यक्तियों की कुल संख्या, दोनों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।
   (3) सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हिस्सेदारी स्थिर रही है, जबकि कृषि कार्यबल पूर्णतः विनिर्माण क्षेत्र में स्थानांतरित हो गया है।
   (4) सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हिस्सेदारी और कृषि कार्यबल दोनों में समान दर से गिरावट आई है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
   (1) यह भारतीय कार्यबल के आधे से अधिक भाग के लिए आजीविका का प्राथमिक स्रोत है।
   (2) यह वस्त्र और चीनी जैसे प्रमुख कृषि-आधारित उद्योगों को आवश्यक कच्चा माल प्रदान करती है।
   (3) भारत की कुल निर्यात आय में इसका योगदान निरंतर बढ़ रहा है और वर्तमान में यह 50 प्रतिशत से अधिक है।
   (4) यह बढ़ती घरेलू जनसंख्या के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. भारत में कृषि विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
   कथन I: कोविड-19 महामारी के दौरान औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों की तुलना में कृषि क्षेत्र ने उच्च लचीलापन प्रदर्शित किया।
   कथन II: कृषि सकल मूल्य वर्धन के प्रतिशत के रूप में कृषि में सकल पूंजी निर्माण पिछले एक दशक से निरंतर 30 प्रतिशत से ऊपर रहा है।
   (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
   (2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
   (3) कथन I सत्य है किंतु कथन II असत्य है।
   (4) कथन I असत्य है किंतु कथन II सत्य है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन सम्मिलित हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
   अभिकथन (A): सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की घटती हिस्सेदारी को सार्वभौमिक रूप से आर्थिक विकास का एक सूचक माना जाता है।
   कारण (R): जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था विकसित होती है, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र प्राथमिक क्षेत्र की तुलना में अधिक तीव्र दर से बढ़ते हैं, जिससे सकल घरेलू उत्पाद की संरचना परिवर्तित हो जाती है।
   (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (2) A और R दोनों सत्य हैं किंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (3) A सत्य है किंतु R असत्य है।
   (4) A असत्य है किंतु R सत्य है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. स्वतंत्र भारत में जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के लिए अधिनियम पारित करने वाला प्रथम राज्य कौन सा था?
   (1) उत्तर प्रदेश
   (2) मद्रास
   (3) बिहार
   (4) राजस्थान
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. भारत में भूमि सुधारों के उद्देश्यों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सुमेलित नहीं है?
   (1) मध्यस्थों का उन्मूलन - राज्य और काश्तकार के बीच

Downloaded from www.pdf.tube

प्रत्यक्ष संपर्क।
(2) काश्तकारी सुधार - लगान का विनियमन और पट्टे की सुरक्षा।
(3) जोतों की चकबंदी - कृषि भूमि के विखंडन को रोकना।
(4) भूमि की अधिकतम सीमा - बड़े निगमित कृषकों के स्वामित्व वाली भूमि को अधिकतम करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. सूची I में दी गई ब्रिटिश भारत की भू-राजस्व प्रणालियों को सूची II में दी गई उनकी प्रमुख विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (भू-राजस्व प्रणालियाँ)
A. जमींदारी प्रणाली
B. रैयतवाड़ी प्रणाली
C. महालवाड़ी प्रणाली
D. जागीरदारी प्रणाली
सूची II: (प्रमुख विशेषताएँ)
i. राजस्व बंदोबस्त प्रत्यक्ष रूप से व्यक्तिगत काश्तकारों के साथ किया गया
ii. राजस्व बंदोबस्त ग्राम समुदाय या संपदा के साथ किया गया
iii. सैन्य या प्रशासनिक सेवा के बदले स्वदेशी शासकों द्वारा सामंतों को दी गई भूमि
iv. स्थायी संपत्ति अधिकार रखने वाले मध्यस्थों द्वारा एकत्रित राजस्व
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. काश्तकारों के विभिन्न वर्गों को वैधानिक अधिकार प्रदान करने वाला व्यापक 'राजस्थान काश्तकारी अधिनियम' किस वर्ष लागू किया गया था?
(1) 1949
(2) 1952
(3) 1955
(4) 1959
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. भारत में काश्तकारी सुधारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. लगान के नियमन का प्रारंभ काश्तकारों द्वारा भू-स्वामियों को देय लगान को सीमित करने के लिए किया गया था, जो सामान्यतः कुल उपज का पांचवां से चौथाई भाग था।
II. पट्टे की सुरक्षा का उद्देश्य जमींदारों द्वारा काश्तकारों के मनमाने निष्कासन को रोकना था।
III. स्वामित्व अधिकार प्रदान करने से काश्तकारों को एक निर्दिष्ट क्षतिपूर्ति के भुगतान पर पट्टे की भूमि क्रय करने की अनुमति मिली।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. निम्नलिखित में से कौन सा भारतीय कृषि सुधारों के संदर्भ में 'भूमि की अधिकतम सीमा' की अवधारणा को सटीक रूप से परिभाषित करता है?
(1) भूमि के आकार पर न्यूनतम सीमा निर्धारित करना जिसे एक कृषक को अनुदान हेतु पात्र होने के लिए रखना अनिवार्य हो।
(2) निगमित खेती के उद्देश्य से एक निश्चित अधिकतम क्षेत्र तक बंजर भूमि का पुनरुद्धार करना।
(3) निजी कृषि जोतों पर भूजल निष्कर्षण की गहराई को प्रतिबंधित करना।
(4) कृषि भूमि की उस मात्रा पर वैधानिक अधिकतम सीमा निर्धारित करना जो एक व्यक्ति या परिवार रख सकता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

12. निम्नलिखित में से कौन स्वतंत्रता के पश्चात भारत में लागू की गई प्रमुख भूमि सुधार नीतियों के उपयुक्त कालानुक्रमिक अनुक्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) भूमि की अधिकतम सीमा → जोतों की चकबंदी → मध्यस्थों का उन्मूलन → काश्तकारी सुधार
(2) मध्यस्थों का उन्मूलन → काश्तकारी सुधार → भूमि की अधिकतम सीमा → जोतों की चकबंदी
(3) जोतों की चकबंदी → भूमि की अधिकतम सीमा → काश्तकारी सुधार → मध्यस्थों का उन्मूलन
(4) काश्तकारी सुधार → मध्यस्थों का उन्मूलन → जोतों की चकबंदी → भूमि की अधिकतम सीमा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. भारत में भूमि सीमा निर्धारण कानूनों के दुर्बल क्रियान्वयन और उनसे बचने का प्राथमिक कारण निम्नलिखित में से कौन सा नहीं था?
(1) विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा प्रारंभ में निर्धारित उच्च सीमा।
(2) भूमि की विशिष्ट श्रेणियों जैसे बागानों और धार्मिक ट्रस्टों को दी गई छूट।
(3) स्वतंत्रता के तुरंत पश्चात भूमि अभिलेखों का कड़ाई से अंकीयकरण जिसने हस्तचालित परिवर्तनों को रोक दिया।
(4) भू-स्वामियों द्वारा संबंधियों और काल्पनिक व्यक्तियों को भूमि का दुर्भावनापूर्ण 'बेनामी' हस्तांतरण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. भूमि सुधारों के संदर्भ में, 'बेनामी हस्तांतरण' शब्द मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस प्रथा को संदर्भित करता है?
(1) भूमिहीनों के बीच वितरण हेतु स्वेच्छा से सरकारी ट्रस्ट

को भूमि हस्तांतरित करना।
(2) काश्तकारी नियमों से बचने के लिए कृषि भूमि को औद्योगिक भूमि में परिवर्तित करना।
(3) चकबंदी हेतु निकटवर्ती कृषकों को खंडित भूमि के भाग बेचना।
(4) सीमा निर्धारण कानूनों से बचने के लिए काल्पनिक व्यक्तियों या आश्रित संबंधियों के नाम पर अधिशेष भूमि का पंजीकरण करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. भूमि की निम्नलिखित श्रेणियों पर विचार कीजिए:
I. वृक्षारोपण (चाय, कॉफी, रबर)
II. धार्मिक और धर्मार्थ ट्रस्टों के पास भूमि
III. कृषि सहकारी समितियों को आवंटित भूमि
IV. एक वर्ष में दो फसलें उत्पन्न करने वाली सिंचित भूमि
प्रारंभिक भूमि सीमा निर्धारण अधिनियमों के अंतर्गत सामान्यतः छूट प्राप्त भूमि श्रेणियों के संबंध में उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. भारत के किन दो राज्यों को कृषि जोतों की चकबंदी में लगभग पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए जाना जाता है?
(1) महाराष्ट्र और गुजरात
(2) पंजाब और हरियाणा
(3) राजस्थान और मध्य प्रदेश
(4) बिहार और पश्चिम बंगाल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. भारत में जोतों की चकबंदी का प्राथमिक परिचालन उद्देश्य क्या है?
(1) अनुपस्थित स्वामियों से भूमिहीन श्रमिकों को बड़ी जोत हस्तांतरित करना।
(2) खंडित भूमि के टुकड़ों को एक एकल सघन खंड में मिलाना।
(3) निजी कृषि जोतों को राज्य के स्वामित्व वाले सामूहिक खेतों में परिवर्तित करना।
(4) एक औपचारिक सहकारी समिति के अंतर्गत संयुक्त रूप से ग्राम की भूमि पर खेती करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. सूची I में दिए गए भूमि सुधार पदों को सूची II में उनके अर्थों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (भूमि सुधार पद)
A. चकबंदी
B. भूदान
C. उप-सामंतीकरण
D. अनुपस्थित भू-स्वामीवाद
सूची II: (अर्थ)
i. राज्य और काश्तकार के बीच मध्यस्थों की कई परतें बनाने की प्रक्रिया
ii. खंडित जोतों का एकत्रीकरण
iii. स्वामी जो भूमि से दूर रहते हैं और खेती में भाग लिए बिना लगान वसूलते हैं
iv. भूमिहीनों के लिए बड़े स्वामियों द्वारा भूमि का स्वैच्छिक दान
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. जोतों की चकबंदी के प्रत्यक्ष लाभों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प असंगत है?
(1) बिखरे हुए खेतों के बीच आने-जाने में लगने वाले समय और श्रम की हानि में कमी।
(2) आधुनिक कृषि पद्धतियों और मशीनीकृत खेती की सुविधा।
(3) चकबंदी वाली भूमि पर उगाई जाने वाली फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में स्वतः वृद्धि।
(4) निकटवर्ती कृषकों के बीच सीमा विवादों और मुकदमों में कमी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. जोतों की चकबंदी के दौरान आने वाली निम्नलिखित चुनौतियों पर विचार कीजिए:
I. कृषकों का अपनी पैतृक भूमि के प्रति भावनात्मक लगाव।
II. पृथक खेतों में मिट्टी की गुणवत्ता और उर्वरता में व्यापक भिन्नता।
III. अद्यतन और सटीक भूमि अभिलेखों का अभाव।
IV. छोटे और सीमांत कृषकों के बीच विस्थापन का भय।
V. जटिल विनिमय प्रक्रिया को निष्पादित करने के लिए प्रशिक्षित राजस्व अधिकारियों की कमी।
इन चुनौतियों को सटीक रूप से दर्शाने वाले उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. भारतीय संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा सहकारी खेती को सामूहिक खेती से सर्वोत्तम रूप से पृथक करता है?
(1) सहकारी खेती का प्रबंधन कड़ाई से सरकारी अधिकारियों द्वारा किया जाता है जबकि सामूहिक खेती का नहीं।
(2) सहकारी खेती सदस्यों को एक बार समूह में सम्मिलित होने के पश्चात भूमि वापस लेने से रोकती है।

Click Here to Buy book on Amazon

(3) सामूहिक खेती के विपरीत, सहकारी खेती में व्यक्तिगत सदस्य भूमि का स्वामित्व बनाए रखते हैं।
(4) सहकारी खेती में नकदी फसलों की खेती सम्मिलित है जबकि सामूहिक खेती में खाद्यान्न सम्मिलित हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. एक सहकारी कृषि समिति निर्मित करने के लिए निम्नलिखित चरणों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
I. सहकारी समितियों के पंजीयक के पास समिति का पंजीकरण।
II. अपनी भूमि और संसाधनों को एकत्रित करने के लिए सहमत कृषकों की न्यूनतम आवश्यक संख्या।
III. आम सभा द्वारा एक प्रबंधन समिति का चुनाव।
IV. समिति की उप-विधियों का मसौदा तैयार करना।
(1) II, IV, I, III
(2) II, I, IV, III
(3) IV, II, I, III
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. किस संविधान संशोधन अधिनियम ने भारत में सहकारी समितियों को संवैधानिक दर्जा और संरक्षण प्रदान किया, जिससे राज्य के नीति निदेशक तत्वों में अनुच्छेद 43B जोड़ा गया?
(1) 73वां संशोधन अधिनियम, 1992
(2) 86वां संशोधन अधिनियम, 2002
(3) 101वां संशोधन अधिनियम, 2016
(4) 97वां संशोधन अधिनियम, 2011
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. प्रारंभिक पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान सरकारी सहायता के बावजूद, भारत में सहकारी खेती विफल रही। इस विफलता का सबसे महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय कारण निम्नलिखित में से कौन सा था?
(1) व्यक्तिवाद और पैतृक भूमि पर स्वामित्व खोने का भय।
(2) स्थापित सहकारी खेतों में सिंचाई सुविधाओं का सामान्य अभाव।
(3) सहकारी संरचनाओं के भीतर आधुनिक मशीनरी के उपयोग पर अनिवार्य प्रतिबंध।
(4) कृषि सहकारी समितियों के लिए कृषि विस्तार सेवाओं को वापस लेना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन सम्मिलित हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): 1960 के दशक के दौरान भारत के सभी राज्यों में सहकारी खेती ने व्यापक स्वीकार्यता और स्थायी सफलता प्राप्त की।
कारण (R): छोटे और सीमांत कृषकों को भय था कि भूमि को एकत्रित करने से अंततः उनके व्यक्तिगत स्वामित्व अधिकारों की हानि होगी।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं किंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है किंतु R असत्य है।
(4) A असत्य है किंतु R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. निम्नलिखित में से किसे भारत में हरित क्रांति के मुख्य वास्तुकार या 'जनक' के रूप में जाना जाता है?
(1) एम.एस. स्वामीनाथन
(2) वर्गीज कुरियन
(3) नॉर्मन बोरलॉग
(4) सी. सुब्रमण्यम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

27. भारत में हरित क्रांति का प्रथम चरण मुख्य रूप से किन दो फसलों में उच्च उपज देने वाली किस्म के बीजों की शुरुआत तक सीमित था?
(1) दलहन और तिलहन
(2) गन्ना और कपास
(3) ज्वार और बाजरा
(4) गेहूं और चावल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. सूची I में दी गई फसलों को सूची II में हरित क्रांति के दौरान पेश की गई उनकी प्रमुख उच्च उपज वाली किस्मों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (फसलें)
A. गेहूं
B. चावल
C. मक्का
D. बाजरा
सूची II: (उच्च उपज वाली किस्में)
i. आईआर-8
ii. कल्याण सोना
iii. गंगा-101
iv. एचबी-1
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. हरित क्रांति की उत्पत्ति के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: भारत द्वारा आयात किए गए प्रारंभिक उच्च उपज वाली किस्म के गेहूं के बीज मैक्सिको में डॉ. नॉर्मन बोरलॉग

द्वारा विकसित किए गए थे।
कथन II: डॉ. नॉर्मन बोरलॉग को उच्च उपज देने वाली गेहूं की किस्मों को विकसित करने में उनके योगदान के लिए कृषि में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है किंतु कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है किंतु कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. हरित क्रांति के मुख्य तकनीकी पैकेज को बनाने वाले निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
I. उच्च उपज देने वाली किस्म के बीज
II. कृत्रिम सिंचाई की सुनिश्चित आपूर्ति
III. रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का भारी उपयोग
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. भारत में हरित क्रांति के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) इसने सभी राज्यों में समान कृषि विकास सुनिश्चित करके अंतर-क्षेत्रीय असमानताओं को महत्वपूर्ण रूप से कम किया।
(2) इसने भारत को खाद्यान्न की कमी वाले देश से अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भर देश में परिवर्तित कर दिया।
(3) इससे गेहूं और चावल के विपणन योग्य अधिशेष में भारी वृद्धि हुई।
(4) इसने कृषि-रसायन और कृषि मशीनरी उद्योगों के विकास को प्रोत्साहित किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में हरित क्रांति का सबसे प्रमुख दीर्घकालिक पारिस्थितिक परिणाम क्या रहा है?
(1) प्राकृतिक वन क्षेत्र का अभूतपूर्व विस्तार।
(2) अत्यधिक सिंचाई और रसायनों के उपयोग के कारण गंभीर भूजल की कमी और मिट्टी का लवणीकरण।
(3) मुख्य फसलों पर कीटों के हमलों का पूर्ण उन्मूलन।
(4) नकदी फसलों का सूखा-प्रतिरोधी किस्मों में स्वतः उत्परिवर्तन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. निम्नलिखित में से किसे हरित क्रांति की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक आलोचना के रूप में उद्धृत किया जाता है?
(1) इसके परिणामस्वरूप एक दशक के दौरान कुल खाद्यान्न उत्पादन में पूर्ण गिरावट आई।
(2) इसने कृषकों के बीच असमानताओं को बढ़ा दिया, क्योंकि केवल बड़े कृषक ही उच्च उपज वाली किस्म के बीजों हेतु आवश्यक महंगे आदान वहन कर सकते थे।
(3) इसने विशेष रूप से छोटे और सीमांत कृषकों को लाभान्वित किया, जिससे बड़े कृषक दिवालिया हो गए।
(4) इसने कृषि मशीनीकरण के कारण ग्रामीण जनसंख्या को पूर्णतः शहरी औद्योगिक क्षेत्रों में स्थानांतरित होने के लिए विवश किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. हरित क्रांति के विशिष्ट प्रभावों के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) अग्रगामी जुड़ाव - खाद्य प्रसंस्करण, भंडारण और परिवहन क्षेत्रों को बढ़ावा
(2) फसल प्रतिरूप - मोटे अनाजों और बाजरा की ओर झुकाव
(3) रोजगार - शुरुआती चरणों में फसल कटाई के मौसम के दौरान ग्रामीण रोजगार में महत्वपूर्ण कमी
(4) दलहन उत्पादन - गेहूं के समान तीव्र वृद्धि का अनुभव किया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. हरित क्रांति से जुड़े निम्नलिखित पर्यावरणीय प्रभावों पर विचार कीजिए:
I. नाइट्रेट्स के साथ भूजल का संदूषण।
II. स्वदेशी फसल आनुवंशिक विविधता की हानि।
III. कीटों और खरपतवारों में प्रतिरोध का विकास।
IV. मिट्टी के प्राकृतिक जीवांश तत्व में वृद्धि।
नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों को सटीक रूप से दर्शाने वाले उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. 'ऑपरेशन फ्लड', जिसने भारत में श्वेत क्रांति की शुरुआत की, औपचारिक रूप से किस वर्ष प्रारंभ किया गया था?
(1) 1965
(2) 1970
(3) 1975
(4) 1980
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. ऑपरेशन फ्लड के अंतर्गत देश भर में सफल अमूल सहकारी प्रतिरूप को दोहराने के लिए भारत सरकार द्वारा विशेष रूप से किस शीर्ष निकाय की स्थापना की गई थी?
(1) भारतीय खाद्य निगम
(2) राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड)
(3) राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी)
(4) कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

38. सूची I में अमूल सहकारी प्रतिरूप के स्तरों को सूची II में उनके संबंधित कार्यों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (अमूल प्रतिरूप के स्तर)

A. ग्राम दुग्ध सहकारी समिति
B. जिला दुग्ध संघ
C. राज्य दुग्ध महासंघ
D. राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड

सूची II: (कार्य)

i. दूध का प्रसंस्करण और दुग्ध उत्पादों का उत्पादन
ii. राज्य या देश भर में दूध और दुग्ध उत्पादों का विपणन
iii. प्राथमिक उत्पादक सदस्यों से प्रत्यक्ष दूध का संग्रह
iv. देश भर में डेयरी कार्यक्रमों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करना

(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. श्वेत क्रांति की संस्थागत संरचना के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा असंगत है?

(1) प्राथमिक दुग्ध उत्पादक समिति
(2) जिला दुग्ध सहकारी संघ
(3) राज्य सहकारी दुग्ध विपणन महासंघ
(4) जिला परिषद कृषि समिति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. डेयरी विकास के अमूल प्रतिरूप की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:

I. दूध खरीद प्रक्रिया से बिचौलियों का उन्मूलन।
II. स्वयं कृषकों द्वारा लोकतांत्रिक नियंत्रण और प्रबंधन।
III. प्रसंस्करण और विपणन के साथ दूध उत्पादन का एकीकरण।
IV. ग्राम स्तर पर पशु चिकित्सा सेवाओं और कृत्रिम गर्भाधान का प्रावधान।
V. पशुओं के स्वामित्व का सहकारी समिति को अनिवार्य हस्तांतरण।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. भारतीय कृषि विकास के संदर्भ में 'नीली क्रांति' शब्द निम्नलिखित में से किसके उत्पादन में तीव्र और निरंतर वृद्धि को संदर्भित करता है?

(1) दलहन और फलियां
(2) जूट और कपास
(3) मछली और समुद्री उत्पाद
(4) नील और प्राकृतिक रंग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. मत्स्य पालन क्षेत्र के पारिस्थितिक रुप से स्वस्थ, आर्थिक रुप से व्यवहार्य और सामाजिक रूप से समावेशी विकास के लिए भारत सरकार द्वारा 2020 में कौन सी प्रमुख योजना प्रारंभ की गई थी?

(1) प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना
(2) प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
(3) प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि
(4) प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. वैश्विक मछली उत्पादन में भारत की स्थिति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) भारत वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश है।
(2) भारत वर्तमान में नीली क्रांति से पूर्व की तुलना में कम मछली उत्पादन करता है।
(3) भारत अपनी सम्पूर्ण मछली पकड़ का निर्यात करता है और घरेलू उपभोग हेतु मछली का आयात करता है।
(4) भारत कुल मछली उत्पादन में वैश्विक स्तर पर तीसरे और जलीय कृषि में दूसरे स्थान पर है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

44. भारत में मछली उत्पादन की संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

कथन I: ऐतिहासिक रूप से, समुद्री मात्स्यिकी भारत के कुल मछली उत्पादन में प्रमुख भाग थी।

कथन II: हाल के वर्षों में, अंतर्देशीय मात्स्यिकी (जलीय कृषि सहित) समुद्री मात्स्यिकी से आगे निकल गई है और अब कुल मछली उत्पादन में 70 प्रतिशत से अधिक का योगदान देती है।

(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है किंतु कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है किंतु कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन सम्मिलित हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

अभिकथन (A): नीली क्रांति विशेष रूप से गहरे समुद्री वातावरण से मछली पकड़ने को बढ़ाने पर केंद्रित है।

कारण (R): अंतर्देशीय जलीय कृषि ने तीव्र वृद्धि का अनुभव किया है और यह ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के साथ एकीकरण के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।

(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं किंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(3) A सत्य है किंतु R असत्य है।
(4) A असत्य है किंतु R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. भारतीय कृषि में 'पीली क्रांति' निम्नलिखित में से किस वस्तु के उत्पादन में आत्मनिर्भरता और वृद्धि से जुड़ी है?
(1) दलहन
(2) हल्दी
(3) मक्का
(4) तिलहन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. पीली क्रांति के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, भारत सरकार ने किस वर्ष तिलहन पर प्रौद्योगिकी मिशन प्रारंभ किया था?
(1) 1974
(2) 1986
(3) 1995
(4) 2004
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. सूची I में दी गई कृषि क्रांतियों को सूची II में उनके संबंधित क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (कृषि क्रांतियाँ)
A. पीली क्रांति
B. स्वर्ण क्रांति
C. रजत क्रांति
D. गुलाबी क्रांति
सूची II: (संबंधित क्षेत्र)
i. बागवानी और शहद
ii. अंडे और मुर्गी पालन
iii. तिलहन
iv. मांस और औषधीय उत्पाद / प्याज
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. भारत में तिलहन उत्पादन और उपभोग की वर्तमान स्थिति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) राजस्थान भारत में सरसों और रेपसीड के अग्रणी उत्पादकों में से एक है।
(2) भारत वर्तमान में खाद्य तेलों में पूर्णतः आत्मनिर्भर है और एक शुद्ध निर्यातक है।
(3) पीली क्रांति के बावजूद, भारत अभी भी अपनी खाद्य तेल आवश्यकताओं का एक बड़ा भाग आयात करता है।
(4) पाम ऑयल भारत के कुल खाद्य तेल आयात में एक बड़ा भाग रखता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. पीली क्रांति के प्रारंभिक चरण के अंतर्गत उन्नत उत्पादन के लिए लक्षित निम्नलिखित प्रमुख फसलों पर विचार कीजिए:
I. सरसों
II. मूंगफली
III. सोयाबीन
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की स्थापना किस समिति की सिफारिश पर की गई थी?
(1) नरसिम्हम समिति
(2) केलकर समिति
(3) शिवरामन समिति
(4) रंगराजन समिति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. भारत में कृषि ऋण के क्षेत्र में निम्नलिखित संस्थागत विकासों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों से सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
I. नाबार्ड की स्थापना।
II. कृषि पुनर्वित्त और विकास निगम की स्थापना।
III. सहकारी ऋण समिति अधिनियम का पारित होना।
IV. 14 प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण।
(1) III, II, IV, I
(2) III, IV, II, I
(3) II, III, IV, I
(4) IV, III, I, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. निम्नलिखित में से कौन नाबार्ड के प्राथमिक ऋण कार्य का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(1) यह छोटे और सीमांत कृषकों को रियायती दरों पर प्रत्यक्ष खुदरा ऋण प्रदान करता है।
(2) यह विशेष रूप से बड़े निगमित कृषि निर्यात घरानों को वित्तपोषित करता है।
(3) यह ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश और उत्पादन ऋण प्रदान करने वाली संस्थाओं के लिए एक शीर्ष पुनर्वित्त एजेंसी के रूप में कार्य करता है।
(4) यह ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवास करने वाले शहरी निवासियों को दीर्घकालिक आवास ऋण प्रदान करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. निम्नलिखित में से कौन सा कार्य सामान्यतः नाबार्ड द्वारा किए जाने वाले कार्यों का अपवाद है?
(1) राज्य सहकारी बैंकों को पुनर्वित्त प्रदान करना।
(2) व्यक्तिगत कृषकों को प्रत्यक्ष फसल ऋण प्रदान करना।
(3) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का पर्यवेक्षण और निरीक्षण करना।

Click Here to Buy book on Amazon

(4) ग्रामीण बुनियादी ढांचा विकास निधि का प्रबंधन करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. निम्नलिखित कार्यों पर विचार कीजिए:
I. जिला केंद्रीय सहकारी बैंकों का निरीक्षण करना।
II. ग्रामीण गैर-कृषि क्षेत्रों के लिए पुनर्वित्त सहायता प्रदान करना।
III. मौद्रिक नीति को विनियमित करना और रेपो दर निर्धारित करना।
IV. स्वयं सहायता समूह-बैंक जुड़ाव कार्यक्रम जैसी सूक्ष्म वित्त पहलों को बढ़ावा देना।
नाबार्ड द्वारा किए जाने वाले कार्यों के संबंध में उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. कृषकों को बैंकिंग प्रणाली से पर्याप्त और समय पर ऋण सहायता प्रदान करने के लिए निर्मित 'किसान क्रेडिट कार्ड' योजना किस वर्ष प्रारंभ की गई थी?
(1) 1991-92
(2) 1998-99
(3) 2004-05
(4) 2014-15
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. किसान क्रेडिट कार्ड योजना के कार्यक्षेत्र के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह कड़ाई से उर्वरकों और बीजों की खरीद हेतु ऋण प्रदान करने तक सीमित है।
(2) यह केवल उन कृषकों को निर्गत किया जा सकता है जिनके पास न्यूनतम 5 हेक्टेयर सिंचित भूमि है।
(3) यह फसल की खेती, फसल कटाई के पश्चात के व्यय और कृषक परिवारों की उपभोग आवश्यकताओं हेतु अल्पकालिक ऋण प्रदान करता है।
(4) यह कृषकों को भारी कृषि मशीनरी क्रय करने के लिए गैर-प्रतिदेय अनुदान प्रदान करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. सूची I में दी गई किसान क्रेडिट कार्ड की विशेषताओं को सूची II में उनके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (किसान क्रेडिट कार्ड की विशेषताएँ)
A. निर्गत करने वाले संस्थान
B. कवरेज का विस्तार
C. पुनर्भुगतान की अवधि
D. रुपे कार्ड
सूची II: (विवरण)
i. वाणिज्यिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक और सहकारी बैंक
ii. किसान क्रेडिट कार्ड निकासी के लिए एटीएम-सक्षम इलेक्ट्रॉनिक कार्ड
iii. पशुपालन और मत्स्य पालन करने वाले कृषकों तक विस्तारित
iv. फसल की कटाई और विपणन अवधि के अनुसार निर्धारित
(1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(2) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. किसान क्रेडिट कार्ड योजना को रुपे नेटवर्क के साथ जोड़ने का प्राथमिक परिचालन लाभ क्या है?
(1) यह अल्पकालिक कृषि ऋण को दीर्घकालिक बंधक में परिवर्तित कर देता है।
(2) अकाल पड़ने पर यह देय ब्याज को स्वतः क्षमा कर देता है।
(3) यह कार्ड के उपयोग को विशेष रूप से सरकारी स्वामित्व वाले बीज निगमों तक सीमित करता है।
(4) यह कृषकों को एटीएम से सुगमता से नकद निकालने और पॉइंट ऑफ सेल लेनदेन करने की अनुमति देता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. एक कृषक की निम्नलिखित वित्तीय आवश्यकताओं पर विचार कीजिए:
I. फसल की खेती के लिए अल्पकालिक ऋण।
II. फसल कटाई के पश्चात के व्यय।
III. कृषि मशीनरी का रखरखाव।
IV. कृषक परिवार की उपभोग आवश्यकताएँ।
V. खेत का आकार बढ़ाने के लिए भूमि क्रय करना।
उन व्ययों के संबंध में उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं जिन्हें एक मानक किसान क्रेडिट कार्ड की ऋण सीमा के भीतर वित्तपोषित किया जा सकता है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. भारत सरकार को अनिवार्य कृषि फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की सिफारिश करने के लिए कौन सा संस्थागत निकाय उत्तरदायी है?
(1) नीति आयोग
(2) भारतीय खाद्य निगम
(3) कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी)
(4) भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

62. न्यूनतम समर्थन मूल्य के निर्धारण और घोषणा के निम्नलिखित चरणों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
I. सीएसीपी की सिफारिश
II. राज्य सरकारों के साथ परामर्श
III. आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति द्वारा अनुमोदन
IV. औपचारिक अधिसूचना
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, IV, III
(3) III, I, II, IV
(4) IV, III, II, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. भारत में न्यूनतम समर्थन मूल्य व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) कृषकों के पास अपने द्वारा उत्पादित सभी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की मांग करने का कानूनी रुप से लागू करने योग्य वैधानिक अधिकार है।
(2) यह कृषि मूल्यों में भारी गिरावट के विरुद्ध कृषकों के लिए एक सुरक्षा कवच के रुप में कार्य करता है।
(3) अनिवार्य फसलों के लिए बुवाई के मौसम से पूर्व न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा की जाती है।
(4) न्यूनतम समर्थन मूल्य के अंतर्गत गेहूं और धान की खरीद मुख्य रुप से भारतीय खाद्य निगम द्वारा की जाती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. हाल के नीतिगत मानकों के अनुसार, भारत सरकार कितनी अनिवार्य फसलों (गन्ने के लिए उचित और लाभकारी मूल्य को छोड़कर) के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा करती है?
(1) 14
(2) 22
(3) 26
(4) 30
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन सम्मिलित हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रणाली कृषकों को एक गारंटीकृत मूल्य प्रदान करती है, जो उन्हें बाजार के उतार-चढ़ाव से बचाती है।
कारण (R): यदि न्यूनतम समर्थन मूल्य-अधिसूचित फसल का बाजार मूल्य घोषित मूल्य से नीचे गिर जाता है, तो सरकारी एजेंसियां उस मूल्य पर फसल खरीदती हैं, जिससे कृषक को औने-पौने मूल्य पर बिक्री से बचाया जा सके।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं किंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है किंतु R असत्य है।
(4) A असत्य है किंतु R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा कृषि उपज मंडी समिति अधिनियमों के अधिनियमन के पीछे प्राथमिक ऐतिहासिक उद्देश्य क्या था?
(1) विनियमित मंडी प्रांगणों में पारदर्शी मूल्य निर्धारण सुनिश्चित करके कृषकों को बिचौलियों द्वारा शोषण से बचाना।
(2) कृषकों को अपनी उपज प्रत्यक्ष रुप से बड़ी बहुराष्ट्रीय खुदरा श्रृंखलाओं को बेचने के लिए विवश करना।
(3) शहरी बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण के लिए कृषि उपज पर अत्यधिक कर लगाना।
(4) सभी कृषि वस्तुओं के अंतर-राज्यीय संचलन पर प्रतिबंध लगाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

67. निम्नलिखित में से किसे पारंपरिक कृषि उपज मंडी समिति प्रणाली में समय के साथ विकसित हुई सबसे गंभीर खामी माना जाता है?
(1) घरेलू आपूर्ति के मूल्य पर अंतरराष्ट्रीय निर्यात पर अत्यधिक ध्यान देना।
(2) नीलामी मंच और तौल कांटे जैसे भौतिक बुनियादी ढांचे का पूर्ण अभाव।
(3) लाइसेंस प्राप्त व्यापारियों और कमीशन एजेंटों के बीच गुटबंदी, जिससे कृषकों को कम मूल्य प्राप्त होता है।
(4) गेहूं और चावल जैसे मुख्य खाद्यान्नों में व्यापार करने से मना करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. सूची I में दिए गए कृषि विपणन सुधार अवधारणाओं को सूची II में उनकी प्रमुख विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (विपणन सुधार)
A. मॉडल एपीएमसी अधिनियम, 2003
B. ई-नाम
C. ग्रामीण कृषि बाजार
D. आवश्यक वस्तु अधिनियम
सूची II: (प्रमुख विशेषताएँ)
i. अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग पोर्टल
ii. निजी मंडी प्रांगणों की स्थापना और प्रत्यक्ष खरीद की अनुमति दी गई
iii. ग्रामीण हाटों को औपचारिक खुदरा कृषि बाजारों में उन्नत करना
iv. स्टॉक सीमा को नियंत्रित करने और जमाखोरी रोकने के लिए प्रयुक्त ऐतिहासिक उपकरण
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. 2003 के मॉडल कृषि उपज मंडी समिति अधिनियम में अनुशंसित प्रावधानों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सुमेलित नहीं है?
(1) प्रत्यक्ष विपणन - कृषकों को मंडियों में गए बिना प्रत्यक्ष रूप से प्रसंस्करणकर्ताओं को बेचने की अनुमति देना।
(2) अनुबंध खेती - प्रायोजक-कृषक समझौतों को औपचारिक रूप देने के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान करना।
(3) बाजार शुल्क - व्यापारियों को कृषकों से वसूले जाने वाले मंडी शुल्क को एकपक्षीय निर्धारित करने का अधिकार देना।
(4) निजी बाजार - निजी निकायों को समानांतर मंडी प्रांगण स्थापित करने की अनुमति देना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. भारत में कृषि विपणन में सुधार के लिए सुझाए गए निम्नलिखित संरचनात्मक सुधारों पर विचार कीजिए:
I. एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार की स्थापना।
II. सौदेबाजी की शक्ति बढ़ाने के लिए कृषक उत्पादक संगठनों (एफपीओ) को बढ़ावा देना।
III. बागवानी क्षेत्र को कृषि उपज मंडी समिति प्रतिबंधों से विनियमित करना।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. कृषि विपणन सुधारों के संदर्भ में, ई-नाम का पूर्ण रूप क्या है?
(1) इलेक्ट्रॉनिक नोडल एजेंसी फॉर मंडीस
(2) एसेंशियल नेटवर्क फॉर एग्रीकल्चरल मार्केटिंग
(3) इकोनॉमिक नॉमिनी फॉर एग्रीकल्चरल मर्चेंट्स
(4) इलेक्ट्रॉनिक नेशनल एग्रीकल्चरल मार्केट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. निम्नलिखित में से कौन ई-नाम की संरचना को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है?
(1) यह एक अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग पोर्टल है जो एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाने के लिए मौजूदा मंडियों को नेटवर्क से जोड़ता है।
(2) यह नई दिल्ली में स्थापित एक भौतिक थोक बाजार है जो भारत में सभी कृषि व्यापार को नियंत्रित करता है।
(3) यह विशेष रूप से भारतीय बासमती चावल के लिए एक अंतरराष्ट्रीय निर्यात पोर्टल है।
(4) यह एक सहकारी समिति है जो इंटरनेट का उपयोग किए बिना कृषकों से प्रत्यक्ष अनाज खरीदती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. किसी राज्य द्वारा अपनी मंडियों को ई-नाम मंच के साथ एकीकृत करने के लिए आवश्यक पूर्व-शर्तों में निम्नलिखित में से कौन सा एक अपवाद है?
(1) राज्य अधिनियम में ई-नीलामी या इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग का प्रावधान।
(2) पूरे राज्य में बाजार शुल्क के एकल बिंदु लेवी का प्रावधान।
(3) भौतिक मंडी प्रांगणों को पूर्णतः समाप्त करने और पूर्णतः ऑनलाइन व्यापार पर जाने का प्रावधान।
(4) पूरे राज्य में वैध एकीकृत एकल व्यापार लाइसेंस का प्रावधान।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. ई-नाम के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: लघु कृषक कृषि व्यवसाय संघ ई-नाम को लागू करने वाली प्रमुख एजेंसी है।
कथन II: ई-नाम की शुरुआत के लिए मौजूदा भौतिक मंडी बुनियादी ढांचे के तत्काल उन्मूलन की आवश्यकता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है किंतु कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है किंतु कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. कृषकों के लिए ई-नाम के निम्नलिखित लाभों पर विचार कीजिए:
I. एकीकृत मंडियों में वस्तुओं के मूल्यों तक रीयल-टाइम पहुंच।
II. अपने स्थानीय क्षेत्र के बाहर के क्रेताओं तक विस्तारित पहुंच।
III. केंद्र सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उनकी सभी उपज की गारंटीकृत खरीद।
IV. इलेक्ट्रॉनिक नीलामी के माध्यम से पारदर्शी मूल्य निर्धारण।
वास्तविक लाभों को दर्शाने वाले उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. निम्नलिखित में से कौन सी परिभाषा 'अनुबंध खेती' का सटीक वर्णन करती है?
(1) एक सहकारी समिति की ओर से भूमि पर खेती करना जहां लाभ समान रूप से वितरित किया जाता है।
(2) पूर्व-निर्धारित मूल्यों पर वायदा समझौतों के अंतर्गत कृषि उत्पादों का उत्पादन और आपूर्ति करना।
(3) कई दशकों के लिए बड़ी निजी कंपनियों को कृषि भूमि पट्टे पर देना।

Downloaded from www.pdf.tube

(4) फसल कटाई के समय निश्चित दैनिक मजदूरी अनुबंधों पर भूमिहीन श्रमिकों को कार्य पर रखना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. अनुबंध खेती के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) यह कृषक के लिए मूल्य जोखिम और बाजार की अनिश्चितता को कम करने में सहायता करती है।
(2) प्रायोजक कंपनी सामान्यतः बीज, उर्वरक और तकनीकी सलाह जैसे आवश्यक आदान प्रदान करती है।
(3) समझौते के अंतर्गत स्वाभाविक रूप से कृषक की भूमि का कानूनी स्वामित्व प्रायोजक कंपनी को हस्तांतरित हो जाता है।
(4) यह भारत के विशिष्ट क्षेत्रों में टमाटर, आलू और जौ जैसी फसलों में अपेक्षाकृत सफल रही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. सूची I में दिए गए निगमित प्रायोजकों को सूची II में उनसे जुड़ी अनुबंध खेती की फसलों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (निगमित प्रायोजक)
A. पेप्सिको
B. सैबमिलर
C. अपाची कपास
D. सुगुना फूड्स
सूची II: (फसलें)
i. मुर्गी पालन
ii. एक्स्ट्रा लॉन्ग स्टेपल कपास
iii. जौ
iv. आलू
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. क्या प्राथमिक कारण है कि निगमित प्रायोजकों द्वारा प्रायः छोटे और सीमांत कृषकों को अनुबंध खेती की व्यवस्था से बाहर रखा जाता है?
(1) कई छोटे व्यक्तिगत भूमिधारकों के प्रबंधन से जुड़ी उच्च लेनदेन लागत।
(2) छोटे कृषकों को वाणिज्यिक अनुबंधों में प्रवेश करने से रोकने वाले कानूनी प्रतिबंध।
(3) छोटे कृषकों की केवल गैर-वाणिज्यिक खाद्यान्न किस्में उगाने की प्रवृत्ति।
(4) छोटे सीमांत कृषकों को सहमत मूल्य से दोगुना भुगतान करने की अनिवार्य आवश्यकता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. प्रायोजक के लिए अनुबंध खेती के निम्नलिखित संभावित लाभों पर विचार कीजिए:
I. सहमत समय पर कच्चे माल की सुनिश्चित आपूर्ति।
II. कृषि उपज की निरंतरता और गुणवत्ता की गारंटी।
III. खुले बाजार के मूल्यों में अचानक उतार-चढ़ाव से सुरक्षा।
IV. खेती के कार्यों के शारीरिक श्रम और प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण से राहत।
V. अपनी स्वयं की बड़ी कृषि संपदा बनाए रखने की आवश्यकता का उन्मूलन।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

81. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत, पात्र कृषक परिवारों को प्रति वर्ष कितनी राशि की आय सहायता प्रदान की जाती है?
(1) ₹3,000 दो समान किश्तों में
(2) ₹6,000 तीन समान किश्तों में
(3) ₹9,000 तीन समान किश्तों में
(4) ₹12,000 चार समान किश्तों में
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

82. पीएम-किसान योजना के अंतर्गत धन के क्रियान्वयन और हस्तांतरण में सम्मिलित निम्नलिखित चरणों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही तार्किक क्रम चुनिए:
I. लाभार्थी के आंकड़ों का आधार प्रमाणीकरण।
II. राज्य या केंद्र शासित प्रदेश सरकारों द्वारा पात्र कृषकों की पहचान और पंजीकरण।
III. केंद्र सरकार द्वारा बैंक खातों में किश्तों का प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण।
IV. पीएम-किसान पोर्टल पर सत्यापित लाभार्थी आंकड़े अपलोड करना।
(1) II, IV, I, III
(2) II, I, IV, III
(3) I, II, IV, III
(4) IV, II, I, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

83. पीएम-किसान योजना के अंतर्गत लाभार्थियों के कार्यक्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) केवल भूमिहीन कृषि मजदूर और पंजीकृत काश्तकार कृषक।
(2) वाणिज्यिक नकदी फसलों को छोड़कर मुख्य खाद्यान्न उत्पन्न करने वाले कृषक।
(3) सभी जोतदार कृषक, जो विशिष्ट अपवर्जन मानदंडों के अधीन हैं।
(4) वे कृषक जिन्होंने पूर्व में संस्थागत बैंक ऋणों में चूक की है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. व्यक्तियों की निम्नलिखित में से कौन सी श्रेणी पीएम-किसान योजना के अंतर्गत लाभ प्राप्त करने से बाहर नहीं है?
(1) संस्थागत भूमिधारक।
(2) संवैधानिक पदों के पूर्व और वर्तमान धारक।
(3) वे सभी व्यक्ति जिन्होंने पिछले निर्धारण वर्ष में आयकर का भुगतान किया था।
(4) 1 हेक्टेयर से कम कृषि योग्य भूमि के स्वामी सीमांत कृषक।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन सम्मिलित हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): पीएम-किसान अनिवार्य रूप से न्यूनतम समर्थन मूल्य के समान एक मूल्य सहायता तंत्र है।
कारण (R): पीएम-किसान कृषकों को उनके द्वारा उगाई जाने वाली फसलों या बाजार मूल्यों की परवाह किए बिना प्रत्यक्ष, अबाध्य आय सहायता प्रदान करता है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं किंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है किंतु R असत्य है।
(4) A असत्य है किंतु R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

86. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत कृषकों द्वारा क्रमशः खरीफ, रबी और वार्षिक वाणिज्यिक या बागवानी फसलों के लिए देय अधिकतम प्रीमियम कितना है?
(1) 1.5%, 2%, और 5%
(2) 2%, 1.5%, और 5%
(3) 5%, 2%, और 1.5%
(4) 1%, 1%, और 3%
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

87. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को किन दो पूर्ववर्ती फसल बीमा योजनाओं को मिलाकर प्रारंभ किया गया था?
(1) मौसम आधारित फसल बीमा योजना और पीएम-किसान
(2) व्यापक फसल बीमा योजना और ई-नाम
(3) कृषि सिंचाई योजना और किसान क्रेडिट कार्ड योजना
(4) राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना और संशोधित राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. सूची I में दी गई फसल श्रेणियों को सूची II में कृषक की प्रीमियम दरों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (फसल श्रेणियाँ)
A. खरीफ खाद्यान्न और तिलहन फसलें
B. रबी खाद्यान्न और तिलहन फसलें
C. वार्षिक वाणिज्यिक फसलें
D. वार्षिक बागवानी फसलें
सूची II: (प्रीमियम दरें)
i. 5%
ii. 2%
iii. 1.5%
iv. 5%
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: 2016 में इसकी शुरुआत के समय, यह उन कृषकों के लिए अनिवार्य थी जिन्होंने संस्थागत फसल ऋण लिया था।
कथन II: 2020 में, भारत सरकार ने ऋणी कृषकों सहित सभी कृषकों के लिए इसे स्वैच्छिक बना दिया।
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है किंतु कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है किंतु कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

90. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत कवर किए गए गैर-निवारणीय जोखिमों के कारण उपज के निम्नलिखित नुकसानों पर विचार कीजिए:
I. प्राकृतिक अग्नि और आकाशीय बिजली।
II. कीट और बीमारियाँ।
III. जलप्लावन और चक्रवात।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का उद्घाटन 2015 में प्रधानमंत्री द्वारा राजस्थान में किस स्थान पर किया गया था?
(1) जोधपुर
(2) बीकानेर
(3) कोटा
(4) सूरतगढ़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

92. एक मानक मृदा स्वास्थ्य कार्ड कितने पृथक मापदंडों के आधार पर मिट्टी की स्थिति का आकलन करता है?
(1) 6
(2) 9
(3) 12

Click Here to Buy book on Amazon

(4) 15
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) यह विशिष्ट फसलों के लिए आवश्यक उर्वरकों की उचित मात्रा पर सिफारिशें प्रदान करता है।
(2) यह यूरिया के अत्यधिक उपयोग से बचकर कृषकों को खेती की लागत कम करने में सहायता करता है।
(3) यह केवल मुख्य पोषक तत्वों का परीक्षण करता है और पीएच तथा विद्युत चालकता जैसे भौतिक मापदंडों की पूर्णतः उपेक्षा करता है।
(4) इसका उद्देश्य मृदा स्वास्थ्य में सुधार करना और टिकाऊ कृषि सुनिश्चित करना है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. राष्ट्रव्यापी स्तर पर मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना को लागू करने का सबसे महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष लाभ क्या माना जाता है?
(1) किसी भी रासायनिक उर्वरक की आवश्यकता को पूर्णतः समाप्त करना।
(2) मृदा संघनन के माध्यम से भूजल स्तर को बढ़ाना।
(3) बिना वित्तीय सहायता के कृषकों को विशेष रूप से जैविक खेती की ओर जाने के लिए विवश करना।
(4) मिट्टी की सटीक कमियों के आधार पर रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

95. मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के अंतर्गत परीक्षण किए गए निम्नलिखित मापदंडों पर विचार कीजिए:
I. मुख्य पोषक तत्व (नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम)
II. द्वितीयक पोषक तत्व (सल्फर)
III. सूक्ष्म पोषक तत्व (जस्ता, लोहा, तांबा, मैंगनीज, बोरोन)
IV. भौतिक मापदंड (पीएच, विद्युत चालकता, जैविक कार्बन)
मृदा परीक्षण रिपोर्ट में सम्मिलित मापदंडों को दर्शाने वाले उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

96. कृषि गणना (2015-16) के अनुसार, विखंडन की गंभीर चुनौती को दर्शाते हुए भारत में परिचालन जोतों का औसत आकार क्या है?
(1) 0.50 हेक्टेयर
(2) 1.08 हेक्टेयर
(3) 2.25 हेक्टेयर
(4) 4.50 हेक्टेयर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. निम्नलिखित में से कौन सा भारतीय कृषि पर जलवायु परिवर्तन का तात्कालिक परिणाम है, जो राजस्थान जैसे राज्यों को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है?
(1) बारहमासी सिंचाई प्रदान करने वाली हिमनद पोषित नदियों का विस्तार।
(2) ऊष्मा तनाव जिसके कारण टर्मिनल हीट प्रभाव होता है और गेहूं जैसी रबी फसलों की उपज कम हो जाती है।
(3) दक्षिण-पश्चिम मानसून की पूर्वानुमान क्षमता में वृद्धि।
(4) उच्च तापमान के कारण फसल रोगों का पूर्ण उन्मूलन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

98. सूची I में दी गई कृषि चुनौतियों को सूची II में उनके प्रभावों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (कृषि चुनौतियां)
A. गंभीर भूमि विखंडन
B. भूजल का अत्यधिक दोहन
C. जलवायु परिवर्तन और लू
D. अपर्याप्त शीत भंडारण रसद
सूची II: (प्रभाव)
i. फसल कटाई के पश्चात भारी क्षति, विशेष रूप से बागवानी में
ii. बड़ी कृषि मशीनरी का उपयोग करने की अव्यवहार्यता
iii. मिट्टी की लवणता और डार्क जोन में वृद्धि
iv. परिवर्तित फेनोलॉजी और कम फसल अवधि
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

99. राजस्थान जैसे क्षेत्रों में गंभीर जल संकट की चुनौती से निपटने के लिए 'प्रति बूंद अधिक फसल' की अवधारणा को बढ़ावा दिया गया है। यह किस योजना का प्राथमिक घटक है?
(1) राष्ट्रीय कृषि विकास योजना
(2) परंपरागत कृषि विकास योजना
(3) प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना
(4) सतत कृषि पर राष्ट्रीय मिशन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. कृषकों की आय दोगुनी करने के लिए अशोक दलवई समिति द्वारा अनुशंसित निम्नलिखित रणनीतियों पर विचार कीजिए:
I. फसल उत्पादकता में सुधार।
II. संसाधन उपयोग दक्षता या उत्पादन लागत में बचत।
III. फसल सघनता में वृद्धि।
IV. उच्च मूल्य वाली फसलों की ओर विविधीकरण।
V. काश्तकारों का गैर-कृषि व्यवसायों की ओर स्थानांतरण।
इन अनुशंसित रणनीतियों का प्रतिनिधित्व करने वाले उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V

(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (3) 18.3 प्रतिशत
भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में वर्तमान मूल्यों पर इस क्षेत्र का सकल मूल्य वर्धन लगभग 18.3 प्रतिशत रहा। यद्यपि सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों का निरंतर विस्तार हुआ है, फिर भी कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार बना हुआ है। यह सांख्यिकीय जानकारी राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा प्रस्तुत आर्थिक समीक्षा के आधिकारिक आंकड़ों पर आधारित है, जो ग्रामीण स्थिरता सुनिश्चित करती है।

2. (1) सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हिस्सेदारी में भारी गिरावट आई है, किंतु इस पर निर्भर कार्यबल के अनुपात में उसी अनुपात में कमी नहीं आई है।
स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन हुए हैं। सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान निरंतर कम हुआ है, परंतु विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार सृजन न होने के कारण कृषि पर निर्भर कार्यबल का अनुपात उस गति से नहीं घटा। यह असंतुलन ग्रामीण अर्थव्यवस्था में प्रच्छन्न बेरोजगारी और कम उत्पादकता जैसी चुनौतियों को जन्म देता है, जो वर्तमान भारतीय विकास मॉडल की एक मुख्य विशेषता है।

3. (3) भारत की कुल निर्यात आय में इसका योगदान निरंतर बढ़ रहा है और वर्तमान में यह 50 प्रतिशत से अधिक है।
भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह देश की आधी से अधिक जनसंख्या को आजीविका प्रदान करती है। यह उद्योगों के लिए कच्चे माल का प्रमुख स्रोत है और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है। हालांकि, भारत की कुल निर्यात आय में कृषि का योगदान लगभग 11 से 12 प्रतिशत के मध्य है। अतः कृषि निर्यात में 50 प्रतिशत से अधिक की हिस्सेदारी का दावा तथ्यात्मक रूप से पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है।

4. (3) कथन I सत्य है किंतु कथन II असत्य है।
कोविड-19 महामारी के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में गिरावट आई, जबकि कृषि क्षेत्र ने सकारात्मक वृद्धि दर के साथ उच्च लचीलापन प्रदर्शित किया। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ता को दर्शाता है। हालांकि, कृषि क्षेत्र में सकल पूंजी निर्माण का स्तर पिछले एक दशक से सकल मूल्य वर्धन के 30 प्रतिशत से बहुत नीचे, लगभग 15 से 18 प्रतिशत के बीच बना हुआ है। अतः पूंजी निवेश के संदर्भ में दूसरा कथन सत्य नहीं है।

5. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आर्थिक विकास के साथ सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हिस्सेदारी का कम होना एक सामान्य वैश्विक प्रवृत्ति है। जैसे-जैसे देश विकसित होता है, तकनीकी प्रगति और बुनियादी ढांचे के विकास के कारण औद्योगिक और सेवा क्षेत्र प्राथमिक क्षेत्र की तुलना में अधिक तीव्र गति से बढ़ते हैं। यह परिवर्तन अर्थव्यवस्था के परिपक्व होने का सूचक है, जहां आय के स्रोत विविध हो जाते हैं और श्रम शक्ति गैर-कृषि गतिविधियों की ओर स्थानांतरित होती है।

6. (2) मद्रास
स्वतंत्र भारत में भूमि सुधारों की दिशा में जमींदारी प्रथा का उन्मूलन एक क्रांतिकारी कदम था। मद्रास वर्तमान तमिलनाडु राज्य का वह हिस्सा था जिसने इस प्रथा को समाप्त करने के लिए 1948 में सर्वप्रथम कानून पारित किया था। इस पहल का मुख्य उद्देश्य बिचौलियों को हटाकर भूमि के वास्तविक काश्तकारों का राज्य के साथ प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करना था। इसके पश्चात उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों ने भी समान कानून लागू किए।

7. (4) भूमि की अधिकतम सीमा - बड़े निगमित कृषकों के स्वामित्व वाली भूमि को अधिकतम करना।
भारत में भूमि सुधारों का मुख्य उद्देश्य सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना और कृषि उत्पादकता बढ़ाना था। भूमि की अधिकतम सीमा निर्धारण का अर्थ निजी स्वामित्व वाली कृषि भूमि पर एक वैधानिक ऊपरी सीमा तय करना था ताकि अधिशेष भूमि को भूमिहीन श्रमिकों में पुनर्वितरित किया जा सके। बड़े निगमित कृषकों के स्वामित्व को बढ़ाना इसका उद्देश्य कभी नहीं रहा। मध्यस्थों का उन्मूलन और जोतों की चकबंदी जैसे प्रयास समानता लाने हेतु किए गए थे।

8. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
ब्रिटिश काल की भू-राजस्व प्रणालियां भारतीय कृषि संरचना को निर्धारित करने वाले महत्वपूर्ण कारक थे। जमींदारी प्रणाली में मध्यस्थ राजस्व एकत्र करते थे, जबकि रैयतवाड़ी में सरकार काश्तकारों से प्रत्यक्ष संपर्क करती थी। महालवाड़ी प्रणाली में ग्राम समुदाय सामूहिक रूप से राजस्व के लिए उत्तरदायी होता था। जागीरदारी व्यवस्था के तहत शासक अपनी सेवाओं के बदले सामंतों को भूमि अनुदान देते थे। इन प्रणालियों ने स्वतंत्रता के बाद के भूमि सुधारों को प्रभावित किया।

9. (3) 1955
राजस्थान में भूमि सुधारों को प्रभावी ढंग से लागू करने हेतु 'राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955' एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जाता है। यह कानून राज्य में विभिन्न श्रेणियों के काश्तकारों को वैधानिक अधिकार और सुरक्षा प्रदान करने हेतु लाया गया था। इसने पट्टे की सुरक्षा सुनिश्चित की और अनुचित निष्कासन पर रोक लगाई। इस व्यापक अधिनियम ने राजस्थान की सामंती कृषि व्यवस्था को आधुनिक और न्यायपूर्ण ढांचे में बदलने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

NODIA

10. (4) I, II और III
भारत में काश्तकारी सुधारों का मुख्य उद्देश्य किसानों को शोषण से बचाना था। इसके अंतर्गत लगान का नियमन किया गया ताकि यह कुल उपज के एक उचित हिस्से तक सीमित रहे। साथ ही, पट्टे की सुरक्षा सुनिश्चित करके जमींदारों द्वारा किए जाने वाले मनमाने निष्कासन को रोका गया। अंततः, काश्तकारों को स्वामित्व अधिकार प्रदान किए गए ताकि वे निश्चित क्षतिपूर्ति देकर भूमि के मालिक बन सकें। ये तीनों कदम कृषि क्षेत्र में न्याय लाने हेतु अनिवार्य थे।

11. (4) कृषि भूमि की उस मात्रा पर वैधानिक अधिकतम सीमा निर्धारित करना जो एक व्यक्ति या परिवार रख सकता है।
भूमि सुधारों के अंतर्गत 'भूमि की अधिकतम सीमा' की अवधारणा का अर्थ किसी व्यक्ति या परिवार द्वारा रखी जा सकने वाली कृषि भूमि की मात्रा पर वैधानिक सीमा तय करना है। इस नीति का उद्देश्य भूमि के संकेंद्रण को रोकना और सामाजिक समानता लाना था। इस सीमा से अधिक उपलब्ध अधिशेष भूमि को सरकार द्वारा अधिग्रहित करके भूमिहीन मजदूरों और छोटे किसानों के बीच वितरित किया जाता था ताकि ग्रामीण संसाधनों का न्यायपूर्ण बंटवारा हो।

12. (2) मध्यस्थों का उन्मूलन → काश्तकारी सुधार → भूमि की अधिकतम सीमा → जोतों की चकबंदी
स्वतंत्रता के पश्चात भारत में भूमि सुधारों को एक व्यवस्थित क्रम में लागू किया गया। सर्वप्रथम जमींदारी और जागीरदारी जैसे मध्यस्थों का उन्मूलन किया गया ताकि राज्य और किसान के बीच सीधा संबंध बने। इसके पश्चात काश्तकारी सुधारों के माध्यम से लगान और पट्टे की सुरक्षा सुनिश्चित की गई। तीसरे चरण में भूमि की अधिकतम सीमा का निर्धारण हुआ और अंत में खंडित खेतों को एकीकृत करने हेतु जोतों की चकबंदी की प्रक्रिया अपनाई गई।

13. (3) स्वतंत्रता के तुरंत पश्चात भूमि अभिलेखों का कड़ाई से अंकीयकरण जिसने हस्तचालित परिवर्तनों को रोक दिया।
भारत में भूमि सीमा निर्धारण कानूनों का क्रियान्वयन विभिन्न बाधाओं के कारण अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सका। उस समय राज्य सरकारों द्वारा निर्धारित सीमाएं बहुत अधिक थीं और बागानों जैसी श्रेणियों को छूट दी गई थी। भू-स्वामियों ने कानूनों से बचने हेतु बेनामी हस्तांतरण का मार्ग चुना। साथ ही, भूमि अभिलेखों के अंकीयकरण का अभाव और कागजी प्रलेखों में पारदर्शिता की कमी ने इन सुधारों को विफल बनाने में मुख्य भूमिका निभाई।

14. (4) सीमा निर्धारण कानूनों से बचने के लिए काल्पनिक व्यक्तियों या आश्रित संबंधियों के नाम पर अधिशेष भूमि का पंजीकरण करना।
भूमि सुधारों के दौरान 'बेनामी हस्तांतरण' एक बड़ी चुनौती थी। इसके अंतर्गत बड़े भू-स्वामी अपनी अधिशेष भूमि को सरकारी अधिग्रहण से बचाने हेतु अपने रिश्तेदारों, सहायकों या काल्पनिक व्यक्तियों के नाम पर कागजों में स्थानांतरित कर देते थे। इस प्रथा का मुख्य उद्देश्य भूमि सीमा निर्धारण कानूनों की कानूनी पकड़ से बाहर निकलना था। वास्तविकता में भूमि का पूर्ण नियंत्रण मूल स्वामी के पास ही रहता था, जिससे भूमिहीनों हेतु पर्याप्त भूमि उपलब्ध नहीं हुई।

15. (1) केवल I, II और III
प्रारंभिक भूमि सीमा निर्धारण कानूनों में कुछ विशिष्ट श्रेणियों को छूट प्रदान की गई थी ताकि राष्ट्रीय उत्पादन प्रभावित न हो। इनमें चाय, कॉफी और रबर जैसे बागान, धार्मिक एवं धर्मार्थ न्यासों के पास मौजूद भूमि तथा कृषि सहकारी समितियों की भूमि सम्मिलित थी। हालांकि, एक वर्ष में दो फसलें उत्पन्न करने वाली सिंचित भूमि को सामान्यतः इन छूटों के दायरे से बाहर रखा गया था क्योंकि ऐसी भूमि अत्यधिक उत्पादक और सीमित थी।

16. (2) पंजाब और हरियाणा
भारत में जोतों की चकबंदी का मुख्य उद्देश्य छोटे और बिखरे हुए खेतों को एक स्थान पर संकलित करना था। पंजाब और हरियाणा ऐसे दो प्रमुख राज्य हैं जिन्होंने इस दिशा में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। इन राज्यों में लगभग शत-प्रतिशत कृषि भूमि की चकबंदी पूर्ण की जा चुकी है, जिससे वहां मशीनीकृत खेती और आधुनिक सिंचाई प्रणालियों को अपनाना सरल हो गया। इसी प्रशासनिक सफलता ने हरित क्रांति की नींव को और अधिक सुदृढ़ बनाया।

17. (2) खंडित भूमि के टुकड़ों को एक एकल सघन खंड में मिलाना।
जोतों की चकबंदी का प्राथमिक उद्देश्य कृषि कार्य की दक्षता और उत्पादकता बढ़ाना है। उत्तराधिकार नियमों के कारण किसानों के पास भूमि छोटे-छोटे बिखरे हुए टुकड़ों में बंट जाती है, जिससे वैज्ञानिक खेती करना कठिन हो जाता है। चकबंदी के माध्यम से इन बिखरे हुए हिस्सों को मिलाकर एक बड़ा और सघन भूखंड बनाया जाता है। इससे किसान के समय की बचत होती है और वह सिंचाई यंत्रों एवं आधुनिक मशीनरी का बेहतर उपयोग कर पाता है।

18. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
भूमि सुधारों से जुड़े विभिन्न पदों के विशिष्ट अर्थ हैं। चकबंदी का तात्पर्य खंडित भूमि के एकत्रीकरण से है, जबकि भूदान विनोबा भावे द्वारा प्रारंभ किया गया स्वैच्छिक भूमि दान कार्यक्रम था। उप-सामंतीकरण की प्रक्रिया में मध्यस्थों की कई परतें बन जाती थीं, जिससे किसानों का आर्थिक शोषण बढ़ता था। अनुपस्थित भू-स्वामीवाद उन स्वामियों को संदर्भित करता है जो स्वयं खेती नहीं करते, बल्कि केवल लगान वसूलने हेतु भूमि रखते हैं।

19. (3) चकबंदी वाली भूमि पर उगाई जाने वाली फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में स्वतः वृद्धि।
जोतों की चकबंदी से कृषि उत्पादकता में सुधार होता है और परिचालन लागत कम हो जाती है। इससे खेतों के मध्य आवागमन में लगने वाला श्रम बचता है और मशीनीकृत खेती सुगम हो जाती है। इसके अतिरिक्त, पड़ोसी किसानों के मध्य सीमा विवादों में भी कमी आती है। हालांकि, न्यूनतम समर्थन मूल्य का निर्धारण सरकार की कृषि नीति और बाजार की

Click Here to Buy book on Amazon

स्थितियों पर निर्भर करता है। इसका भूमि की चकबंदी से कोई प्रत्यक्ष या स्वतः संबंध नहीं है।

20. (4) I, II, III, IV और V
जोतों की चकबंदी की प्रक्रिया भारत में अत्यंत चुनौतीपूर्ण रही है। किसानों का अपनी पैतृक भूमि से गहरा भावनात्मक लगाव और विभिन्न खेतों की मिट्टी की उर्वरता में भिन्नता इसके मुख्य कारण हैं। इसके अतिरिक्त, अपूर्ण भूमि अभिलेखों और छोटे किसानों में विस्थापन के भय ने इस प्रक्रिया को और जटिल बना दिया है। प्रशिक्षित राजस्व अधिकारियों की कमी भी एक बड़ी बाधा रही है। इन सम्मिलित कारकों के कारण ही चकबंदी पूर्ण नहीं हो सकी।

21. (3) सामूहिक खेती के विपरीत, सहकारी खेती में व्यक्तिगत सदस्य भूमि का स्वामित्व बनाए रखते हैं।
सहकारी खेती और सामूहिक खेती के मध्य सबसे बड़ा अंतर भूमि के वैधानिक स्वामित्व का है। सहकारी खेती में किसान अपनी भूमि का व्यक्तिगत मालिकाना हक बनाए रखते हैं, परंतु संसाधनों के कुशल उपयोग हेतु मिलकर कृषि कार्य करते हैं। इसके विपरीत, सामूहिक खेती में भूमि का व्यक्तिगत स्वामित्व समाप्त हो जाता है और वह पूर्ण समुदाय या राज्य की संपत्ति बन जाती है। भारतीय संदर्भ में सहकारी खेती को अधिक उपयुक्त माना गया है।

22. (1) II, IV, I, III
एक सहकारी कृषि समिति का गठन एक व्यवस्थित प्रक्रिया द्वारा होता है। सर्वप्रथम, न्यूनतम आवश्यक संख्या में किसान भूमि साझा करने हेतु सहमत होते हैं। इसके पश्चात समिति की उप-विधियों का मसौदा तैयार किया जाता है। तीसरे चरण में, सहकारी समितियों के पंजीयक के पास पंजीकरण की औपचारिक कार्यवाही पूर्ण की जाती है। अंत में, पंजीकृत सदस्यों की आम सभा द्वारा कार्यों के संचालन हेतु एक प्रबंधन समिति का चुनाव किया जाता है, जो लोकतांत्रिक संचालन सुनिश्चित करता है।

23. (4) 97वां संशोधन अधिनियम, 2011
भारत में सहकारी समितियों के महत्व को देखते हुए 97वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2011 द्वारा इन्हें संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया। इस संशोधन ने संविधान के भाग 9ख को जोड़ा और राज्य के नीति निदेशक तत्वों के अंतर्गत अनुच्छेद 43ख को सम्मिलित किया। यह अनुच्छेद राज्यों को सहकारी समितियों के स्वैच्छिक गठन, लोकतांत्रिक नियंत्रण और पेशेवर प्रबंधन को बढ़ावा देने का निर्देश देता है। इस कदम ने सहकारिता आंदोलन को एक सुदृढ़ कानूनी आधार प्रदान किया।

24. (1) व्यक्तिवाद और पैतृक भूमि पर स्वामित्व खोने का भय।
भारत में सहकारी खेती की विफलता के पीछे गहरे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण रहे हैं। भारतीय ग्रामीण परिवेश में किसान अपनी पैतृक भूमि के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। उन्हें यह निरंतर भय सताता था कि अपनी भूमि को सामूहिक उपयोग हेतु देने से उनका व्यक्तिगत स्वामित्व सदैव के लिए समाप्त हो जाएगा। इसी व्यक्तिगत स्वायत्तता की भावना और संशय ने सरकारी प्रयासों के बावजूद सहकारी खेती को व्यापक रूप से अपनाने से रोक दिया।

25. (4) A असत्य है किंतु R सत्य है।
1960 के दशक के दौरान भारत में सहकारी खेती को व्यापक सफलता नहीं मिली, बल्कि यह एक असफल प्रयोग के रूप में उभरा। अधिकांश किसान अपनी भूमि के सामूहिक एकत्रीकरण के विचार के प्रति आशंकित थे। छोटे और सीमांत कृषकों को विशेष रूप से यह भय था कि इससे उनके व्यक्तिगत स्वामित्व अधिकारों की हानि होगी। इस सामाजिक प्रतिरोध के कारण ही सहकारी खेती की अवधारणा ग्रामीण भारत में अपनी जड़ें नहीं जमा सकी।

26. (1) एम.एस. स्वामीनाथन
भारत में हरित क्रांति की सफलता का मुख्य श्रेय प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक एम.एस. स्वामीनाथन को दिया जाता है। उन्हें भारतीय हरित क्रांति का जनक माना जाता है क्योंकि उन्होंने उच्च उपज देने वाली किस्मों के बीजों को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल ढालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके वैज्ञानिक नेतृत्व और नीतिगत सुझावों के कारण ही भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बन सका। नॉर्मन बोरलॉग ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस क्रांति को आधार प्रदान किया था।

27. (4) गेहूं और चावल
भारत में हरित क्रांति के प्रथम चरण का मुख्य ध्यान गेहूं और चावल जैसी महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसलों पर केंद्रित था। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में उच्च उपज देने वाली किस्मों के बीजों का प्रयोग इन्हीं दो फसलों में प्रारंभ किया गया था। विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गेहूं के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई। हालांकि बाद में अन्य फसलों को भी सम्मिलित किया गया, परंतु आत्मनिर्भरता का आधार मुख्य रूप से गेहूं और चावल ही रहे।

28. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
हरित क्रांति के दौरान फसलों की पैदावार बढ़ाने हेतु विशिष्ट उच्च उपज वाली किस्में विकसित की गई थीं। गेहूं हेतु 'कल्याण सोना' और चावल हेतु 'आईआर-8' ने क्रांति लाने में मुख्य भूमिका निभाई। मक्के हेतु 'गंगा-101' और बाजरे हेतु 'एचबी-1' जैसी संकर किस्मों को बढ़ावा दिया गया। इन वैज्ञानिक नवाचारों ने फसलों की उत्पादकता को कई गुना बढ़ा दिया, जिससे देश में अनाज का भरपूर उत्पादन संभव हुआ और भारत खाद्य सुरक्षा में सक्षम बना।

29. (3) कथन I सत्य है किंतु कथन II असत्य है।
भारत में हरित क्रांति का प्रारंभ मेक्सिको से आयातित उच्च उपज वाली गेहूं की किस्मों से हुआ था, जिन्हें डॉ. नॉर्मन बोरलॉग ने विकसित किया था। यह तथ्य पूर्णतः सत्य है। हालांकि, डॉ. बोरलॉग को उनके अभूतपूर्व मानवीय योगदान हेतु 'नोबेल शांति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था, न कि कृषि क्षेत्र में, क्योंकि नोबेल पुरस्कारों की श्रेणियों में कृषि सम्मिलित नहीं

Downloaded from www.pdf.tube

है। उनकी खोजों ने विश्वभर में भुखमरी को कम करने में सहायता प्रदान की।

30. (4) I, II और III
हरित क्रांति केवल बीजों का परिवर्तन नहीं था, बल्कि यह एक संपूर्ण तकनीकी पैकेज था। इसकी सफलता हेतु तीन मुख्य तत्वों का समन्वय अनिवार्य था। सर्वप्रथम, उच्च उपज देने वाली किस्म के बीज, जिन्हें पर्याप्त पोषण हेतु रासायनिक उर्वरकों और सुरक्षा हेतु कीटनाशकों के भारी उपयोग की आवश्यकता थी। अंत में, इन बीजों की क्षमता का पूर्ण उपयोग करने हेतु कृत्रिम सिंचाई की सुनिश्चित आपूर्ति सबसे महत्वपूर्ण कारक थी। इन तीनों के मेल ने उत्पादन बढ़ाया।

31. (1) इसने सभी राज्यों में समान कृषि विकास सुनिश्चित करके अंतर-क्षेत्रीय असमानताओं को महत्वपूर्ण रूप से कम किया।
हरित क्रांति ने भारत को खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बनाया और विपणन योग्य अधिशेष में भारी वृद्धि की, जिससे अनाज की कमी दूर हुई। इसने कृषि आधारित उद्योगों को भी काफी बढ़ावा दिया। हालांकि, इसकी एक बड़ी कमी यह रही कि इसने अंतर-क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने के बजाय बढ़ा दिया। इसका लाभ मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे सुनिश्चित सिंचाई वाले क्षेत्रों तक ही सीमित रहा, जबकि अन्य क्षेत्र पीछे रहे।

32. (2) अत्यधिक सिंचाई और रसायनों के उपयोग के कारण गंभीर भूजल की कमी और मिट्टी का लवणीकरण।
पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में हरित क्रांति के दीर्घकालिक पारिस्थितिक परिणाम अत्यंत चिंताजनक रहे हैं। सघन खेती हेतु किए गए अत्यधिक भूजल दोहन से जल स्तर खतरनाक रूप से नीचे गिर गया है। साथ ही, रासायनिक उर्वरकों के असंतुलित उपयोग और दोषपूर्ण सिंचाई पद्धतियों के कारण मिट्टी की उर्वरता कम हुई है और लवणीकरण की समस्या बढ़ी है। ये पर्यावरणीय चुनौतियां अब भविष्य की कृषि उत्पादकता और पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता हेतु संकट उत्पन्न कर रही हैं।

33. (2) इसने कृषकों के बीच असमानताओं को बढ़ा दिया, क्योंकि केवल बड़े कृषक ही उच्च उपज वाली किस्म के बीजों हेतु आवश्यक महंगे आदान वहन कर सकते थे।
हरित क्रांति की सबसे प्रमुख सामाजिक-आर्थिक आलोचना यह है कि इसने ग्रामीण क्षेत्रों में आय की असमानता को बढ़ा दिया। उच्च उपज देने वाले बीजों हेतु महंगे उर्वरक, कीटनाशक और उन्नत सिंचाई सुविधाओं की आवश्यकता थी, जिन्हें खरीदने में केवल बड़े और धनी किसान ही सक्षम थे। छोटे और सीमांत किसानों के पास संसाधनों की कमी के कारण वे इस तकनीक का पूर्ण लाभ नहीं उठा सके। इससे धनी किसान और अधिक समृद्ध हुए, जबकि गरीब पिछड़ गए।

34. (1) अग्रगामी जुड़ाव - खाद्य प्रसंस्करण, भंडारण और परिवहन क्षेत्रों को बढ़ावा
हरित क्रांति ने कृषि क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण आर्थिक परिवर्तन लाए। 'अग्रगामी जुड़ाव' के अंतर्गत बढ़े हुए उत्पादन ने खाद्य प्रसंस्करण, प्रशीतन गृह (कोल्ड स्टोरेज) और परिवहन जैसे क्षेत्रों को नई गति प्रदान की। हालांकि, इसका फसल प्रतिरूप मुख्य रूप से गेहूं और चावल की ओर झुक गया, जिससे मोटे अनाजों की उपेक्षा हुई। रोजगार के मामले में, शुरुआत में मांग बढ़ी परंतु बाद में मशीनीकरण ने इसे प्रभावित किया। दलहन उत्पादन में वृद्धि भी बहुत धीमी रही।

35. (1) केवल I, II और III
हरित क्रांति के नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों ने टिकाऊ कृषि हेतु कई चुनौतियां उत्पन्न की हैं। रासायनिक उर्वरकों के रिसाव से भूजल नाइट्रेट्स के साथ संदूषित हो गया है और उच्च उपज वाली किस्मों के प्रभुत्व के कारण स्वदेशी फसलों की आनुवंशिक विविधता लुप्त हो गई है। कीटनाशकों के निरंतर प्रयोग से कीटों में प्रतिरोध क्षमता विकसित हो गई है। मिट्टी के जीवांश तत्व में वृद्धि होने के स्थान पर, रसायनों के कारण इसकी प्राकृतिक गुणवत्ता और जैविक संरचना में गिरावट आई है।

36. (2) 1970
'ऑपरेशन फ्लड' भारत के डेयरी क्षेत्र के विकास हेतु प्रारंभ किया गया विश्व का सबसे बड़ा कार्यक्रम था। इसे औपचारिक रूप से 1970 में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के माध्यम से प्रारंभ किया गया था। इस अभियान ने भारत को दुग्ध उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया और इसे विश्व का अग्रणी दूध उत्पादक देश बना दिया। इसे 'श्वेत क्रांति' के नाम से भी जाना जाता है, जिसने ग्रामीण क्षेत्रों में आय सृजन और पोषण स्तर में सुधार हेतु एक क्रांतिकारी मॉडल प्रस्तुत किया।

NODIA

37. (3) राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी)
ऑपरेशन फ्लड की सफलता को संपूर्ण देश में लागू करने का उत्तरदायित्व राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड को सौंपा गया था। इस संस्था की स्थापना 1965 में की गई थी, परंतु इसने 1970 से श्वेत क्रांति को गति प्रदान की। इसका मुख्य उद्देश्य गुजरात के आनंद में सफल रहे 'अमूल' के सहकारी प्रतिरूप को संपूर्ण भारत में दोहराना था। एनडीडीबी ने दुग्ध उत्पादकों को संगठित करने, प्रसंस्करण की आधुनिक सुविधाएं प्रदान करने और एक सुदृढ़ विपणन तंत्र बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाई।

38. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
अमूल सहकारी मॉडल एक त्रि-स्तरीय संरचना पर आधारित है जो उत्पादकों को सशक्त बनाता है। ग्राम स्तर पर दुग्ध सहकारी समितियां सीधे किसानों से दूध एकत्र करती हैं। जिला स्तर पर दुग्ध संघ इस दूध के प्रसंस्करण और विभिन्न उत्पादों के निर्माण का कार्य करते हैं। राज्य स्तर पर विपणन महासंघ इन उत्पादों की व्यापक बिक्री का प्रबंधन करते हैं। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड इन कार्यक्रमों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करने वाली एक शीर्ष संस्था के रूप में कार्य करता है।

39. (4) जिला परिषद कृषि समिति
श्वेत क्रांति की संस्थागत संरचना पूर्णतः सहकारी सिद्धांतों पर आधारित है। इसमें ग्राम स्तर पर प्राथमिक दुग्ध उत्पादक समिति, जिला स्तर पर सहकारी दुग्ध संघ और राज्य स्तर पर

सहकारी दुग्ध विपणन महासंघ सम्मिलित हैं। ये तीनों इकाइयां मिलकर एक सुव्यवस्थित आपूर्ति श्रृंखला बनाती हैं। जिला परिषद की कृषि समिति एक सरकारी प्रशासनिक निकाय है और यह डेयरी क्षेत्र के इस विशिष्ट त्रि-स्तरीय सहकारी ढांचे का हिस्सा नहीं है, जो केवल दूध के व्यापार पर केंद्रित है।

40. (1) केवल I, II, III और IV
अमूल मॉडल की सफलता का मुख्य कारण इसकी अनूठी विशेषताएं हैं। इसमें बिचौलियों को हटाकर किसानों को उचित मूल्य दिलाया गया और तंत्र पर किसानों का लोकतांत्रिक नियंत्रण रखा गया। दुग्ध उत्पादन को सीधे प्रसंस्करण और विपणन से जोड़ा गया, जिससे मूल्यवर्धन का लाभ किसानों को मिला। इसके अतिरिक्त, ग्राम स्तर पर पशु चिकित्सा सेवाएं और कृत्रिम गर्भाधान जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। हालांकि, पशुओं का स्वामित्व सदैव व्यक्तिगत किसानों के पास ही रहा, उसे हस्तांतरित नहीं किया गया।

41. (3) मछली और समुद्री उत्पाद
भारतीय कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में 'नीली क्रांति' का तात्पर्य मत्स्य पालन और समुद्री उत्पादों के उत्पादन में होने वाली तीव्र वृद्धि से है। इसका मुख्य उद्देश्य देश के विशाल जल संसाधनों का उपयोग करके मछली उत्पादन बढ़ाना, निर्यात को बढ़ावा देना और मछुआरों की आय में सुधार करना है। यह क्रांति न केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है बल्कि समुद्री और अंतर्देशीय जल निकायों के माध्यम से लाखों लोगों को रोजगार के अवसर भी प्रदान करती है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

42. (1) प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना
भारत सरकार ने 2020 में मत्स्य पालन क्षेत्र के एकीकृत और सतत विकास हेतु 'प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना' का प्रारंभ किया। यह योजना नीली क्रांति के उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक बड़ा कदम है, जिसका उद्देश्य मछली उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाना है। इसमें आधुनिक बुनियादी ढांचे का निर्माण, कटाई के पश्चात के नुकसान को कम करना और मछुआरों के कल्याण पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह आर्थिक व्यवहार्यता और सामाजिक समावेशिता को बढ़ावा देने वाली योजना है।

43. (4) भारत कुल मछली उत्पादन में वैश्विक स्तर पर तीसरे और जलीय कृषि में दूसरे स्थान पर है।
वैश्विक स्तर पर मत्स्य पालन के क्षेत्र में भारत एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरा है। वर्तमान में भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश है और जलीय कृषि के मामले में इसका स्थान दूसरा है। नीली क्रांति के पश्चात से मछली उत्पादन में कई गुना वृद्धि हुई है, जो देश के सकल घरेलू उत्पाद और निर्यात आय में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। यद्यपि चीन इस क्षेत्र में शीर्ष पर है, परंतु भारत की बढ़ती हिस्सेदारी इसकी विशाल संभावनाओं को दर्शाती है।

44. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
भारत में मछली उत्पादन की संरचना में पिछले कुछ दशकों में बड़ा परिवर्तन आया है। पूर्व में समुद्री मात्स्यिकी का योगदान अधिक था, परंतु अब अंतर्देशीय मात्स्यिकी और जलीय कृषि का प्रभुत्व बढ़ गया है। वर्तमान में, कुल उत्पादन में अंतर्देशीय क्षेत्र का योगदान 70 प्रतिशत से भी अधिक हो गया है। यह वृद्धि वैज्ञानिक जलीय कृषि पद्धतियों को अपनाने और ग्रामीण तालाबों के कुशल प्रबंधन के कारण संभव हुई है, जो देश की बढ़ती प्रोटीन आवश्यकताओं को पूर्ण कर रही है।

45. (4) A असत्य है किंतु R सत्य है।
नीली क्रांति केवल गहरे समुद्र तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अंतर्देशीय मात्स्यिकी और तटवर्ती जलीय कृषि का विकास भी सम्मिलित है। यह अवधारणा व्यापक है और जल संसाधनों के समग्र प्रबंधन पर केंद्रित है। अंतर्देशीय जलीय कृषि ने ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत तीव्रता से विकास किया है क्योंकि इसे छोटे तालाबों और खेतों के साथ सरलता से एकीकृत किया जा सकता है। इससे न केवल मछली उत्पादन बढ़ता है, बल्कि किसानों को परंपरागत खेती के साथ आय का अतिरिक्त स्रोत मिलता है।

46. (4) तिलहन
भारत में 'पीली क्रांति' मुख्य रूप से तिलहन फसलों के उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने से संबंधित है। इसका लक्ष्य खाद्य तेलों की घरेलू मांग को पूर्ण करना और आयात पर निर्भरता कम करना है। इसके अंतर्गत सरसों, मूंगफली, सोयाबीन और सूरजमुखी जैसी फसलों की खेती को आधुनिक तकनीकों और उन्नत बीजों के माध्यम से बढ़ावा दिया गया। यह क्रांति 1980 के दशक के मध्य में प्रारंभ हुई और इसने भारत के कृषि परिदृश्य में खाद्य तेल उत्पादन के क्षेत्र में नई दिशा प्रदान की।

47. (2) 1986
पीली क्रांति को संस्थागत समर्थन प्रदान करने हेतु भारत सरकार ने वर्ष 1986 में 'तिलहन पर प्रौद्योगिकी मिशन' का प्रारंभ किया था। इस मिशन का प्राथमिक उद्देश्य तिलहन फसलों के उत्पादन और उत्पादकता में सुधार करके खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना था। इसमें किसानों को उन्नत बीज, आधुनिक कृषि तकनीक और बेहतर विपणन सुविधाएं प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस ऐतिहासिक पहल के कारण देश में तिलहन उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई और ग्रामीण आय में सुधार हुआ।

48. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
भारत की विभिन्न कृषि क्रांतियां विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को समर्पित रही हैं। पीली क्रांति ने तिलहन उत्पादन को गति दी, जबकि स्वर्ण क्रांति बागवानी और शहद उत्पादन से संबंधित है। रजत क्रांति के माध्यम से अंडे और मुर्गी पालन क्षेत्र में बड़ी प्रगति हुई। गुलाबी क्रांति मांस, प्याज और औषधीय उत्पादों के उत्पादन पर केंद्रित है। इन सभी क्रांतियों ने मिलकर कृषि क्षेत्र में विविधता लाने और किसानों हेतु आय के कई नए स्रोत सृजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

Click Here to Buy book on Amazon

49. (2) भारत वर्तमान में खाद्य तेलों में पूर्णतः आत्मनिर्भर है और एक शुद्ध निर्यातक है।
भारत तिलहन उत्पादन में राजस्थान जैसे राज्यों के माध्यम से महत्वपूर्ण स्थान रखता है, विशेष रूप से सरसों के उत्पादन में। हालांकि, यह कथन त्रुटिपूर्ण है कि भारत खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर है। वास्तविकता यह है कि पीली क्रांति के बावजूद, भारत आज भी अपनी कुल खाद्य तेल आवश्यकताओं का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा आयात करता है, जिसमें पाम तेल की हिस्सेदारी सर्वाधिक है। खाद्य तेलों में पूर्ण आत्मनिर्भरता प्राप्त करना अभी भी देश हेतु एक बड़ी आर्थिक चुनौती है।

50. (4) I, II और III
पीली क्रांति के शुरुआती चरण में खाद्य तेलों की कमी को दूर करने हेतु विशिष्ट तिलहन फसलों को लक्षित किया गया था। इनमें सरसों, मूंगफली और सोयाबीन सर्वाधिक प्रमुख थीं। इन फसलों की खेती को बढ़ावा देने हेतु उन्नत किस्म के बीजों और वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों का प्रसार किया गया। इन तीनों फसलों के उत्पादन में हुई वृद्धि ने देश की घरेलू तेल आपूर्ति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज भी ये फसलें भारत के कुल तिलहन उत्पादन का मुख्य आधार बनी हुई हैं।

51. (3) शिवरामन समिति
राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की स्थापना एक ऐतिहासिक कदम था। इसकी स्थापना शिवरामन समिति की सिफारिशों के आधार पर 12 जुलाई, 1982 को की गई थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य कृषि, लघु उद्योगों, कुटीर उद्योगों और ग्रामीण शिल्प को बढ़ावा देने हेतु ऋण सहायता प्रदान करना है। नाबार्ड ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के समग्र विकास हेतु एक समर्पित शीर्ष संस्था के रूप में कार्य किया है, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों में ऋण पहुंच सुलभ हो सकी है।

52. (1) III, II, IV, I
भारत में कृषि ऋण का विकास विभिन्न चरणों में हुआ है। सर्वप्रथम 1904 में सहकारी ऋण समिति अधिनियम पारित किया गया। इसके पश्चात 1963 में कृषि पुनर्वित्त और विकास निगम की स्थापना हुई। बैंकिंग क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन 1969 में हुआ जब 14 प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया ताकि ग्रामीण ऋण बढ़ाया जा सके। अंत में, 1982 में इन सभी प्रयासों को एकीकृत करने हेतु नाबार्ड की स्थापना हुई, जो आज देश की प्रमुख ग्रामीण वित्त पोषक संस्था है।

53. (3) यह ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश और उत्पादन ऋण प्रदान करने वाली संस्थाओं के लिए एक शीर्ष पुनर्वित्त एजेंसी के रूप में कार्य करता है।
नाबार्ड की भूमिका एक प्रत्यक्ष ऋणदाता की तुलना में एक नियामक और पुनर्वित्त प्रदाता के रूप में अधिक महत्वपूर्ण है। यह सामान्य किसानों को सीधे ऋण नहीं देता, बल्कि वाणिज्यिक बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और सहकारी बैंकों को धन उपलब्ध कराता है ताकि वे आगे किसानों को ऋण दे सकें। एक शीर्ष एजेंसी के रूप में, यह ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश और कृषि उत्पादन हेतु ऋण प्रवाह सुनिश्चित करता है, जिससे कृषि क्षेत्र के बुनियादी ढांचे और विकास को मजबूती मिलती है।

54. (2) व्यक्तिगत कृषकों को प्रत्यक्ष फसल ऋण प्रदान करना।
नाबार्ड ग्रामीण वित्त व्यवस्था की एक शीर्ष संस्था है जो कई महत्वपूर्ण कार्य करती है। यह राज्य सहकारी बैंकों को पुनर्वित्त देता है, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का निरीक्षण करता है और ग्रामीण बुनियादी ढांचा विकास निधि का प्रबंधन भी करता है। हालांकि, नाबार्ड का एक विशिष्ट कार्य यह है कि यह व्यक्तिगत कृषकों को सीधे तौर पर कोई फसल ऋण प्रदान नहीं करता है। प्रत्यक्ष ऋण देने का कार्य मुख्य रूप से प्राथमिक सहकारी समितियों, वाणिज्यिक बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा किया जाता है।

55. (1) केवल I, II और IV
नाबार्ड ग्रामीण विकास हेतु बहुआयामी कार्य करता है। यह जिला केंद्रीय सहकारी बैंकों के निरीक्षण का उत्तरदायित्व निभाता है और ग्रामीण गैर-कृषि क्षेत्रों हेतु पुनर्वित्त सहायता सुनिश्चित करता है। इसके अतिरिक्त, इसने स्वयं सहायता समूह-बैंक जुड़ाव जैसे सूक्ष्म वित्त कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाया है। मौद्रिक नीति को विनियमित करना और रेपो दर निर्धारित करना नाबार्ड का नहीं बल्कि भारतीय रिजर्व बैंक का कार्य है, जो देश का केंद्रीय बैंक है।

56. (2) 1998-99
किसानों को संस्थागत बैंकिंग प्रणाली से जोड़ने हेतु 1998-99 में 'किसान क्रेडिट कार्ड' योजना प्रारंभ की गई थी। यह योजना आर.वी. गुप्ता समिति की सिफारिशों पर आधारित थी। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों को उनकी खेती और अन्य आकस्मिक आवश्यकताओं हेतु बिना किसी कठिनाई के समय पर पर्याप्त ऋण उपलब्ध कराना था। इस कार्ड ने किसानों को अनौपचारिक साहूकारों के चंगुल से बचाने और कम ब्याज दरों पर ऋण सुलभ कराने में एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई है।

57. (3) यह फसल की खेती, फसल कटाई के पश्चात के व्यय और कृषक परिवारों की उपभोग आवश्यकताओं हेतु अल्पकालिक ऋण प्रदान करता है।
किसान क्रेडिट कार्ड योजना का दायरा अत्यंत व्यापक है और यह केवल खेती की लागत तक सीमित नहीं है। यह किसानों को फसल उगाने हेतु आवश्यक बीज और उर्वरक खरीदने के साथ-साथ फसल कटाई के पश्चात के खर्चों को पूर्ण करने में सहायता करता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह कार्ड कृषक परिवारों की घरेलू उपभोग आवश्यकताओं और कृषि संपत्तियों के रखरखाव हेतु भी ऋण प्रदान करता है। इसकी लचीली पुनर्भुगतान नीति किसानों की बदलती जरूरतों के अनुकूल बनाई गई है।

NODIA

58. (1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
किसान क्रेडिट कार्ड योजना एक बहुआयामी ऋण साधन है। इसे वाणिज्यिक, क्षेत्रीय ग्रामीण और सहकारी बैंकों द्वारा निर्गत किया जाता है। अब इसका दायरा बढ़ाकर पशुपालन और मत्स्य पालन करने वाले किसानों को भी सम्मिलित किया गया है। इसके पुनर्भुगतान की अवधि फसलों की कटाई और उनके विपणन के समय के अनुसार निर्धारित की जाती है ताकि

किसान पर बोझ न पड़े। रुपे कार्ड की सुविधा ने इसे एटीएम-सक्षम बना दिया है, जिससे किसान सुगमता से लेनदेन कर सकते हैं।

59. (4) यह कृषकों को एटीएम से सुगमता से नकद निकालने और पॉइंट ऑफ सेल लेनदेन करने की अनुमति देता है।
किसान क्रेडिट कार्ड को रुपे नेटवर्क के साथ जोड़ने से इसकी उपयोगिता और पहुंच काफी बढ़ गई है। अब किसानों को ऋण प्राप्ति हेतु बार-बार बैंक शाखा जाने की आवश्यकता नहीं होती। वे स्वचालित टेलर मशीन (एटीएम) के माध्यम से कभी भी अपनी ऋण सीमा के अनुसार नकद निकाल सकते हैं। इसके अतिरिक्त, वे बिक्री केंद्रों पर मशीनों का उपयोग करके बीज और उर्वरक दुकानों पर प्रत्यक्ष भुगतान कर सकते हैं। इस तकनीकी नवाचार ने कृषि ऋण वितरण में पारदर्शिता और गति सुनिश्चित की है।

60. (2) केवल I, II, III और IV
एक मानक किसान क्रेडिट कार्ड की ऋण सीमा में विभिन्न प्रकार की वित्तीय आवश्यकताओं को सम्मिलित किया जाता है। इसमें फसल उगाने का व्यय, फसल कटाई के पश्चात की आवश्यकताएं, कृषि मशीनरी का रखरखाव और परिवार की उपभोग आवश्यकताएं सम्मिलित हैं। हालांकि, किसान क्रेडिट कार्ड मुख्य रूप से अल्पकालिक ऋण हेतु है। खेत का विस्तार करने हेतु भूमि क्रय करना एक बड़ा पूंजीगत निवेश है, जिसके लिए दीर्घकालिक सावधि ऋण की आवश्यकता होती है और इसे सामान्य केसीसी सीमा में सम्मिलित नहीं किया जाता।

61. (3) कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी)
भारत में न्यूनतम समर्थन मूल्य के निर्धारण में कृषि लागत और मूल्य आयोग की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यह एक विशेषज्ञ निकाय है जो उत्पादन लागत, मांग-आपूर्ति की स्थिति और बाजार मूल्य रुझानों का गहन विश्लेषण करता है। इसके पश्चात ही यह सरकार को विभिन्न फसलों हेतु समर्थन मूल्य की सिफारिश करता है। यद्यपि अंतिम निर्णय केंद्र सरकार की कैबिनेट समिति करती है, परंतु सीएसीपी का वैज्ञानिक और सांख्यिकीय डेटा ही इस मूल्य निर्धारण नीति का आधार बनता है।

62. (1) I, II, III, IV
न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा एक व्यवस्थित प्रक्रिया के अंतर्गत की जाती है। सर्वप्रथम सीएसीपी अपनी सिफारिशें तैयार करता है। इसके पश्चात इन सिफारिशों पर राज्य सरकारों और संबंधित मंत्रालयों के साथ विस्तृत परामर्श किया जाता है। तीसरे चरण में, आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति इन प्रस्तावों पर विचार कर उन्हें अंतिम अनुमोदन प्रदान करती है। अंत में, बुवाई के मौसम से ठीक पूर्व सरकार द्वारा औपचारिक अधिसूचना जारी कर किसानों को गारंटीकृत मूल्य का आश्वासन दिया जाता है।

63. (1) कृषकों के पास अपने द्वारा उत्पादित सभी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की मांग करने का कानूनी रूप से लागू करने योग्य वैधानिक अधिकार है।
न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रणाली किसानों को बाजार में मूल्य गिरने से बचाने हेतु एक सुरक्षा कवच प्रदान करती है। इसकी घोषणा बुवाई से पूर्व की जाती है और एफसीआई जैसी एजेंसियां इसके अंतर्गत खरीद करती हैं। हालांकि, भारत में वर्तमान में एमएसपी प्राप्त करना किसानों का कोई वैधानिक या कानूनी अधिकार नहीं है। यह सरकार की एक नीतिगत गारंटी है, जिसका अर्थ है कि किसान कानूनन सरकार को अपनी प्रत्येक फसल एमएसपी पर खरीदने हेतु विवश नहीं कर सकते हैं।

64. (2) 22
वर्तमान नीतिगत मानदंडों के अनुसार, भारत सरकार कुल 22 अनिवार्य फसलों हेतु न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा करती है। इनमें 14 खरीफ फसलें, 6 रबी फसलें और 2 अन्य वाणिज्यिक फसलें सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त गन्ने हेतु 'उचित और लाभकारी मूल्य' की घोषणा पृथक रूप से की जाती है। यह मूल्य व्यवस्था किसानों को विभिन्न फसलों के मध्य चयन करने में सहायता करती है और उन्हें सुनिश्चित आय का आश्वासन देती है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्थिरता बनी रहती है।

65. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रणाली एक प्रभावी सुरक्षा तंत्र के रूप में कार्य करती है जो किसानों को कृषि बाजारों की अनिश्चितता से बचाती है। इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बंपर पैदावार के समय अत्यधिक आपूर्ति के कारण फसल के दाम इतने न गिर जाएं कि किसान की लागत भी न निकले। ऐसी स्थिति में सरकारी एजेंसियां घोषित मूल्य पर उपज खरीदती हैं। यह सीधा हस्तक्षेप बाजार में मूल्य के स्तर को बनाए रखता है और किसानों को आर्थिक हानि से बचाता है।

66. (1) विनियमित मंडी प्रांगणों में पारदर्शी मूल्य निर्धारण सुनिश्चित करके कृषकों को बिचौलियों द्वारा शोषण से बचाना।
कृषि उपज मंडी समिति अधिनियमों को लागू करने का ऐतिहासिक उद्देश्य कृषि व्यापार में सुधार लाना था। स्वतंत्रता से पूर्व किसान साहूकारों और अनियंत्रित बिचौलियों के हाथों शोषित होते थे। इन कानूनों के माध्यम से सरकार ने विनियमित मंडियां निर्मित कीं जहां नीलामी और तौल की प्रक्रिया पारदर्शी हो सके। इसका मुख्य लक्ष्य किसानों को एक सुरक्षित बाजार प्रदान करना था जहां उन्हें उनकी उपज का उचित मूल्य मिल सके और वे अनुचित व्यापारिक प्रथाओं के शिकार होने से बच सकें।

67. (3) लाइसेंस प्राप्त व्यापारियों और कमीशन एजेंटों के बीच गुटबंदी, जिससे कृषकों को कम मूल्य प्राप्त होता है।
यद्यपि एपीएमसी प्रणाली किसानों की सुरक्षा हेतु निर्मित की गई थी, परंतु समय के साथ इसमें कई दोष उत्पन्न हो गए। सबसे गंभीर समस्या लाइसेंस प्राप्त व्यापारियों और एजेंटों के मध्य बनने वाले 'गुट' या कार्टेल की है। ये व्यापारी परस्पर मिलकर बोली को सीमित कर देते हैं, जिससे बाजार में वास्तविक

Downloaded from www.pdf.tube

प्रतिस्पर्धा नहीं हो पाती। परिणामस्वरूप, किसानों को उनकी उपज हेतु प्राप्त होने वाला मूल्य कम रह जाता है। पारदर्शिता की कमी इस प्रणाली की सबसे बड़ी संरचनात्मक विफलता मानी जाती है।

68. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
भारत में कृषि विपणन सुधारों के अंतर्गत विभिन्न पहलें की गई हैं। 2003 के मॉडल एक्ट ने निजी मंडियों और प्रत्यक्ष खरीद का मार्ग प्रशस्त किया। ई-नाम ने संपूर्ण देश की मंडियों को एक ऑनलाइन पोर्टल पर जोड़ दिया। ग्रामीण कृषि बाजारों के माध्यम से स्थानीय हाटों को आधुनिक बनाया जा रहा है। आवश्यक वस्तु अधिनियम का उपयोग सरकार स्टॉक सीमा निर्धारित करने और जमाखोरी रोकने हेतु करती है। ये सभी कदम मिलकर कृषि व्यापार को आधुनिक और पारदर्शी बनाते हैं।

69. (3) बाजार शुल्क - व्यापारियों को कृषकों से वसूले जाने वाले मंडी शुल्क को एकपक्षीय निर्धारित करने का अधिकार देना।
2003 के मॉडल एपीएमसी अधिनियम ने कृषि व्यापार में निजी क्षेत्र की भागीदारी और प्रत्यक्ष विपणन को बढ़ावा देने की सिफारिश की थी। इसने अनुबंध खेती हेतु एक कानूनी रूपरेखा भी प्रदान की। हालांकि, इस अधिनियम का उद्देश्य बाजार शुल्क को पारदर्शी और तर्कसंगत बनाना था, न कि व्यापारियों को इसे एकतरफा निर्धारित करने की छूट देना। व्यापारियों को शुल्क तय करने का असीमित अधिकार प्रदान करना किसानों के हितों के विरुद्ध होता, अतः यह प्रावधान सुधारों की मूल भावना के विपरीत है।

70. (4) I, II और III
भारत में कृषि विपणन को प्रतिस्पर्धी बनाने हेतु कई संरचनात्मक सुधार सुझाए गए हैं। एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार की स्थापना से किसानों को संपूर्ण देश में कहीं भी उपज बेचने की स्वतंत्रता मिलती है। कृषक उत्पादक संगठनों को बढ़ावा देने से छोटे किसानों की मोलभाव करने की शक्ति बढ़ती है। साथ ही, बागवानी फसलों को एपीएमसी के प्रतिबंधों से मुक्त करने से किसान सीधे खुदरा विक्रेताओं को बेच सकते हैं। ये सभी सुधार किसानों को बेहतर मूल्य और विपणन विकल्प प्रदान करने हेतु आवश्यक हैं।

71. (4) इलेक्ट्रॉनिक नेशनल एग्रीकल्चरल मार्केट
ई-नाम का पूर्ण रूप 'इलेक्ट्रॉनिक नेशनल एग्रीकल्चरल मार्केट' है। यह भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है जिसका उद्देश्य कृषि विपणन में डिजिटल क्रांति लाना है। यह पोर्टल देश भर की भौतिक मंडियों को एक आभासी नेटवर्क में जोड़ता है। इसके माध्यम से किसान अपनी उपज की ऑनलाइन नीलामी कर सकते हैं, जिससे उन्हें व्यापक बाजार और बेहतर मूल्य प्राप्त होता है। यह तकनीक बिचौलियों की भूमिका को कम करने और व्यापार प्रक्रिया को पूरी तरह पारदर्शी बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

72. (1) यह एक अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग पोर्टल है जो एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाने के लिए मौजूदा मंडियों को नेटवर्क से जोड़ता है।
ई-नाम की संरचना एक डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में है जो भारत की विभिन्न कृषि मंडियों को एक सूत्र में पिरोती है। यह कोई भौतिक बाजार नहीं है, बल्कि एक ऐसा ऑनलाइन तंत्र है जहां व्यापारी और किसान परस्पर जुड़ते हैं। इसके माध्यम से एक राज्य का व्यापारी दूसरे राज्य की मंडी में उपलब्ध उपज हेतु बोली लगा सकता है। यह प्रणाली सूचनाओं की विषमता को दूर करती है और 'एक राष्ट्र, एक बाजार' की अवधारणा को साकार करने हेतु तकनीकी आधार प्रदान करती है।

73. (3) भौतिक मंडी प्रांगणों को पूर्णतः समाप्त करने और पूर्णतः ऑनलाइन व्यापार पर जाने का प्रावधान।
ई-नाम से जुड़ने हेतु राज्यों को अपने कानूनों में कुछ विशिष्ट परिवर्तन करने होते हैं। इनमें इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग की अनुमति देना, संपूर्ण राज्य हेतु एक ही व्यापार लाइसेंस जारी करना और बाजार शुल्क को केवल एक बिंदु पर वसूलना सम्मिलित है। हालांकि, इस योजना का उद्देश्य भौतिक मंडियों को बंद करना कदापि नहीं है। अपितु, यह भौतिक मंडियों की कार्यप्रणाली को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने का प्रयास है ताकि किसान भौतिक रूप से वहां उपस्थित रहकर भी ऑनलाइन सर्वोत्तम मूल्य प्राप्त कर सके।

74. (3) कथन I सत्य है किंतु कथन II असत्य है।
ई-नाम योजना के क्रियान्वयन हेतु 'लघु कृषक कृषि व्यवसाय संघ' को नोडल एजेंसी बनाया गया है, जो इस संपूर्ण पोर्टल का प्रबंधन करती है। यह तथ्य पूर्णतः सत्य है। हालांकि, ई-नाम के आगमन का तात्पर्य यह नहीं है कि मौजूदा भौतिक मंडी बुनियादी ढांचे को पूर्णतः समाप्त कर दिया जाए। वास्तविकता में, ई-नाम का सफल संचालन इन्हीं मंडियों के सहयोग से होता है, जहां उपज का भौतिक निरीक्षण और तौल किया जाता है। डिजिटल और भौतिक ढांचे का समन्वय ही इसे सफल बनाता है।

75. (1) केवल I, II और IV
ई-नाम किसानों हेतु सूचना और पहुंच का द्वार खोलता है। उन्हें विभिन्न मंडियों में प्रचलित मूल्यों की जानकारी वास्तविक समय में मिलती है और वे अपने स्थानीय दायरे से बाहर के क्रेताओं तक पहुंच सकते हैं। इलेक्ट्रॉनिक नीलामी से पारदर्शिता बढ़ती है और धोखाधड़ी की आशंका कम होती है। हालांकि, ई-नाम स्वयं कोई खरीद गारंटी नहीं देता और न ही यह न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सभी उपज की सरकारी खरीद सुनिश्चित करता है, क्योंकि एमएसपी खरीद एक पृथक सरकारी प्रक्रिया है।

NODIA

76. (2) पूर्व-निर्धारित मूल्यों पर वायदा समझौतों के अंतर्गत कृषि उत्पादों का उत्पादन और आपूर्ति करना।
अनुबंध खेती एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें किसान और खरीदार के मध्य फसल की बुवाई से पूर्व ही एक लिखित समझौता हो जाता है। इसमें फसल की गुणवत्ता, मात्रा और सर्वाधिक महत्वपूर्ण, उसके विक्रय मूल्य को पूर्व में ही निर्धारित कर लिया जाता है। किसान अपनी भूमि पर खरीदार की शर्तों के

अनुसार खेती करता है और कटाई के पश्चात उसे पूर्व-निश्चित मूल्य पर उपज सौंप देता है। यह मॉडल किसान को भविष्य के बाजार जोखिमों से बचाता है और उसे एक निश्चित आय का आश्वासन देता है।

77. (3) समझौते के अंतर्गत स्वाभाविक रूप से कृषक की भूमि का कानूनी स्वामित्व प्रायोजक कंपनी को हस्तांतरित हो जाता है।
अनुबंध खेती किसानों हेतु मूल्य और बाजार जोखिम कम करने का एक प्रभावी माध्यम है। इसमें प्रायोजक कंपनियां प्रायः उन्नत बीज, उर्वरक और तकनीकी ज्ञान भी उपलब्ध कराती हैं ताकि फसल मानकों के अनुरूप हो। आलू और टमाटर जैसी फसलों में यह मॉडल भारत में काफी सफल रहा है। परंतु यह समझना अनिवार्य है कि इस समझौते में भूमि का मालिकाना हक कभी भी कंपनी को प्राप्त नहीं होता। किसान अपनी भूमि का स्वामी बना रहता है, केवल उत्पादित फसल का ही अनुबंध होता है।

78. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
भारत में कई बड़ी कंपनियां अनुबंध खेती के माध्यम से किसानों के साथ मिलकर कार्य कर रही हैं। पेप्सिको मुख्य रूप से खाद्य प्रसंस्करण हेतु विशिष्ट किस्म के आलू का अनुबंध करती है। सैबमिलर जैसी कंपनियां पेय उत्पादन हेतु जौ की खेती को बढ़ावा देती हैं। अपाची कपास ने लंबे रेशे वाले कपास हेतु अनुबंध किए हैं, जबकि सुगुना फूड्स मुर्गी पालन के क्षेत्र में किसानों को संसाधन और बाजार उपलब्ध कराती है। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि अनुबंध खेती कृषि-उद्योगों को कच्चा माल सुनिश्चित करती है।

79. (1) कई छोटे व्यक्तिगत भूमिधारकों के प्रबंधन से जुड़ी उच्च लेनदेन लागत।
बड़ी कंपनियों हेतु छोटे और सीमांत किसानों के साथ प्रत्यक्ष अनुबंध करना प्रायः चुनौतीपूर्ण होता है। इसका मुख्य कारण 'लेनदेन लागत' का अत्यधिक होना है। कंपनियों को हजारों छोटे किसानों के साथ पृथक वार्ता करने, उन्हें कृषि आदान वितरित करने और फसल की गुणवत्ता पर निरंतर दृष्टि रखने में बहुत अधिक समय और व्यय करना पड़ता है। इसीलिए प्रायोजक अक्सर बड़े किसानों को वरीयता देते हैं या फिर एफपीओ जैसे समूहों के माध्यम से कार्य करना पसंद करते हैं, ताकि प्रबंधन सुलभ हो सके।

80. (4) I, II, III, IV और V
अनुबंध खेती प्रायोजक कंपनियों हेतु अत्यंत लाभदायक सिद्ध होती है। उन्हें अपनी इकाइयों हेतु कच्चे माल की नियमित और गुणवत्तापूर्ण आपूर्ति सुनिश्चित हो जाती है। चूंकि मूल्य पूर्व-निर्धारित होते हैं, अतः वे बाजार के आकस्मिक उतार-चढ़ाव से भी सुरक्षित रहते हैं। इसके अतिरिक्त, उन्हें स्वयं विशाल भूखंड क्रय करने या खेती के भारी शारीरिक श्रम में संलग्न होने की आवश्यकता नहीं होती। वे केवल प्रबंधन और तकनीक पर ध्यान केंद्रित करके किसानों के माध्यम से अपना उत्पादन लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं।

81. (2) ₹6,000 तीन समान किश्तों में
प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना भारत के कृषकों हेतु एक महत्वपूर्ण आय सहायता पहल है। इसके अंतर्गत पात्र किसान परिवारों को प्रति वर्ष 6,000 रुपये की नकद सहायता प्रदान की जाती है। यह राशि एक साथ न देकर, 2,000-2,000 रुपये की तीन समान किस्तों में सीधे किसानों के बैंक खातों में हस्तांतरित की जाती है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों को उनकी कृषि आवश्यकताओं और घरेलू जरूरतों हेतु वित्तीय तरलता प्रदान करना है, जिससे वे ऋण हेतु साहूकारों पर निर्भर न रहें।

82. (1) II, IV, I, III
पीएम-किसान योजना का क्रियान्वयन एक डिजिटल और पारदर्शी प्रक्रिया है। सर्वप्रथम राज्य सरकारें पात्र किसानों की पहचान कर उनका पंजीकरण करती हैं। इसके पश्चात, इन लाभार्थियों का डेटा पीएम-किसान पोर्टल पर अपलोड किया जाता है। तीसरे चरण में, केंद्र सरकार द्वारा इस डेटा का आधार के माध्यम से सत्यापन किया जाता है ताकि कोई त्रुटि न हो। अंत में, सत्यापित खातों में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से किस्तें भेजी जाती हैं। यह प्रक्रिया बिचौलियों को हटाकर सीधे लाभ पहुंचाना सुनिश्चित करती है।

83. (3) सभी जोतदार कृषक, जो विशिष्ट अपवर्जन मानदंडों के अधीन हैं।
पीएम-किसान योजना का दायरा अत्यंत व्यापक है और यह मुख्य रूप से उन सभी जोतदार किसान परिवारों हेतु है जिनके पास खेती योग्य भूमि है। हालांकि, सरकार ने कुछ 'अपवर्जन मानदंड' भी निर्धारित किए हैं ताकि लाभ केवल जरूरतमंदों तक ही पहुंचे। इन मानदंडों के अंतर्गत सरकारी कर्मचारी, पेंशनभोगी, आयकर दाता और संवैधानिक पदों पर आसीन व्यक्तियों को योजना से बाहर रखा गया है। शेष सभी सामान्य किसान परिवार, चाहे वे किसी भी फसल की खेती करते हों, इसके पात्र माने जाते हैं।

84. (4) 1 हेक्टेयर से कम कृषि योग्य भूमि के स्वामी सीमांत कृषक।
पीएम-किसान योजना में कुछ उच्च आय वर्ग और विशिष्ट श्रेणियों को बाहर रखा गया है। इनमें संस्थागत भूमिधारक, संवैधानिक पदों पर रहे व्यक्ति और आयकर दाता सम्मिलित हैं। हालांकि, सीमांत और छोटे किसान, जिनके पास 1 हेक्टेयर से भी कम भूमि है, इस योजना के सबसे मुख्य लाभार्थी हैं। उनके लिए भूमि की कोई न्यूनतम सीमा नहीं है, बशर्ते उनके पास वैध भूमि अभिलेख हों और वे अन्य अपवर्जन श्रेणियों में न आते हों। यह योजना ग्रामीण निर्धनता निवारण का एक प्रभावी साधन है।

85. (4) A असत्य है किंतु R सत्य है।
पीएम-किसान और न्यूनतम समर्थन मूल्य दो भिन्न अवधारणाएं हैं। एमएसपी केवल विशिष्ट फसलों हेतु मूल्य सुरक्षा प्रदान करता है और यह किसान द्वारा बेची गई उपज की मात्रा पर निर्भर करता है। इसके विपरीत, पीएम-किसान एक प्रत्यक्ष आय सहायता योजना है, जिसका फसल के बाजार मूल्य या उत्पादन की मात्रा से कोई सीधा संबंध नहीं है। यह किसानों को एक निश्चित राशि प्रदान करती है, जिसे वे अपनी स्वेच्छा

Click Here to Buy book on Amazon

से किसी भी कृषि या घरेलू कार्य में व्यय कर सकते हैं, जिससे उनकी क्रय शक्ति बढ़ती है।

86. (2) 2%, 1.5%, और 5%
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में किसानों पर वित्तीय भार कम करने हेतु प्रीमियम की दरें अत्यंत न्यून रखी गई हैं। किसानों को खरीफ फसलों हेतु उनकी बीमा राशि का केवल 2 प्रतिशत और रबी फसलों हेतु मात्र 1.5 प्रतिशत प्रीमियम देना होता है। वार्षिक वाणिज्यिक और बागवानी फसलों हेतु यह दर 5 प्रतिशत निर्धारित की गई है। प्रीमियम की शेष राशि का भुगतान केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा समान रूप से सब्सिडी के रूप में किया जाता है, जिससे किसानों को व्यापक सुरक्षा प्राप्त होती है।

87. (4) राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना और संशोधित राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को 2016 में पूर्ववर्ती बीमा योजनाओं की विसंगतियों को दूर करने हेतु प्रारंभ किया गया था। इसने मुख्य रूप से 'राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना' और 'संशोधित राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना' का स्थान लिया। पुरानी योजनाओं में उच्च प्रीमियम और दावों के भुगतान में विलंब जैसी कठिनाइयां थीं। नई योजना ने इन समस्याओं को दूर करते हुए एक सरल, सस्ती और प्रभावी फसल सुरक्षा प्रणाली प्रदान की, जिसमें आपदा के समय किसानों को समय पर मुआवजा मिलना सुनिश्चित किया गया है।

88. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत विभिन्न फसल श्रेणियों हेतु प्रीमियम की दरें पूर्व-निर्धारित हैं। खरीफ की खाद्यान्न और तिलहन फसलों हेतु किसानों को 2 प्रतिशत भुगतान करना होता है। रबी की फसलों हेतु यह दर और भी न्यून, मात्र 1.5 प्रतिशत है। वाणिज्यिक और बागवानी जैसी उच्च मूल्य वाली वार्षिक फसलों हेतु प्रीमियम की दर 5 प्रतिशत रखी गई है। ये दरें संपूर्ण देश में समान रूप से लागू हैं, जिससे छोटे किसानों हेतु भी फसल बीमा कराना काफी किफायती और सुलभ हो गया है।

89. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
2016 में जब प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना प्रारंभ हुई थी, तब इसे उन किसानों हेतु अनिवार्य रखा गया था जो बैंकों से फसल ऋण प्राप्त करते थे। इसका उद्देश्य व्यापक बीमा कवरेज सुनिश्चित करना था। हालांकि, किसानों की मांग और योजना को अधिक लचीला बनाने हेतु 2020 में भारत सरकार ने इसमें महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। अब यह योजना ऋणी और गैर-ऋणी दोनों प्रकार के किसानों हेतु पूर्णतः स्वैच्छिक है। किसान अब अपनी इच्छा और आवश्यकता के अनुसार बीमा चुनने हेतु स्वतंत्र हैं।

90. (4) I, II और III
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना किसानों को विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध एक व्यापक सुरक्षा चक्र प्रदान करती है। इसमें प्राकृतिक आग, आकाशीय बिजली, बाढ़, चक्रवात और जलप्लावन जैसे गैर-निवारणीय जोखिम सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, यदि फसल को व्यापक स्तर पर कीटों या रोगों से भारी क्षति होती है, तो उसे भी इस योजना के अंतर्गत कवर किया जाता है। बुवाई से लेकर कटाई के पश्चात तक के विभिन्न चरणों में होने वाले नुकसान की भरपाई इस योजना की सबसे बड़ी विशेषता है।

NODIA

91. (4) सूरतगढ़
मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का प्रारंभ भारत के कृषि इतिहास में वैज्ञानिक दृष्टिकोण लाने के उद्देश्य से किया गया था। इस महत्वाकांक्षी राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 19 फरवरी, 2015 को राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ से किया था। "स्वस्थ धरा, खेत हरा" के नारे के साथ शुरू हुई इस योजना का लक्ष्य किसानों को उनकी मिट्टी की उर्वरता के विषय में सटीक जानकारी देना है ताकि वे रसायनों का संतुलित उपयोग कर सकें और कृषि लागत कम कर सकें।

92. (3) 12
मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के अंतर्गत प्रत्येक किसान के खेत की मिट्टी की गुणवत्ता का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है। एक मानक रिपोर्ट में कुल 12 प्रमुख मापदंडों का परीक्षण किया जाता है, जिसमें मुख्य पोषक तत्व (एनपीके), द्वितीयक पोषक तत्व (सल्फर), सूक्ष्म पोषक तत्व और भौतिक कारक जैसे पीएच और विद्युत चालकता सम्मिलित हैं। यह विस्तृत डेटा किसानों को उनकी मिट्टी की वास्तविक स्थिति के अनुसार उर्वरकों की सही मात्रा उपयोग करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे मिट्टी उपजाऊ बनी रहती है।

93. (3) यह केवल मुख्य पोषक तत्वों का परीक्षण करता है और पीएच तथा विद्युत चालकता जैसे भौतिक मापदंडों की पूर्णतः उपेक्षा करता है।
मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना एक संपूर्ण मृदा परीक्षण प्रणाली है। यह न केवल नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम जैसे मुख्य पोषक तत्वों की जांच करती है, बल्कि पीएच मान और विद्युत चालकता जैसे महत्वपूर्ण भौतिक मापदंडों का भी सटीक आकलन करती है। यह किसानों को उनकी मिट्टी की प्रकृति और कमियों को समझने में सहायता करती है, जिससे वे अंधाधुंध यूरिया के उपयोग से बचते हैं। इसका अंतिम उद्देश्य उर्वरकों के संतुलित उपयोग के माध्यम से खेती को लाभदायक और टिकाऊ बनाना है।

94. (4) मिट्टी की सटीक कमियों के आधार पर रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देना।
मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का सर्वाधिक प्रत्यक्ष लाभ रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में दक्षता लाना है। प्रायः किसान बिना मिट्टी की जांच कराए अत्यधिक मात्रा में उर्वरक डालते हैं, जिससे मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होती है और लागत बढ़ती है। यह कार्ड किसान को सूचित करता है कि उसकी मिट्टी में किस तत्व की न्यूनता है और किस फसल हेतु कितनी खाद आवश्यक है। इससे न केवल किसान का धन बचता है, बल्कि पर्यावरण की रक्षा होती है और फसल की पैदावार भी स्वस्थ होती है।

95. (4) I, II, III और IV
एक संपूर्ण मृदा स्वास्थ्य कार्ड रिपोर्ट में मिट्टी की उर्वरता के सभी आयामों को सम्मिलित किया जाता है। इसमें मुख्य पोषक तत्व (एन, पी, के), द्वितीयक पोषक तत्व के रूप में सल्फर, और जस्ता, लोहा, तांबा जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों की विस्तृत जांच होती है। इसके अतिरिक्त, मिट्टी के भौतिक गुणों जैसे पीएच, विद्युत चालकता और जैविक कार्बन के स्तर का भी परीक्षण किया जाता है। इन सभी मापदंडों का सम्मिलित विश्लेषण किसान को उसके खेत की वास्तविक स्थिति का एक वैज्ञानिक चित्र प्रदान करता है।

96. (2) 1.08 हेक्टेयर
भारत में कृषि जोतों का विखंडन एक बड़ी संरचनात्मक चुनौती है। 2015-16 की कृषि गणना के अनुसार, देश में परिचालन जोतों का औसत आकार घटकर मात्र 1.08 हेक्टेयर रह गया है। जनसंख्या के बढ़ते दबाव और उत्तराधिकार में भूमि के निरंतर बंटवारे के कारण यह आकार लगातार कम हो रहा है। छोटी जोत होने के कारण आधुनिक कृषि उपकरणों का उपयोग करना और बड़े पैमाने पर खेती करना कठिन हो जाता है, जिससे प्रति व्यक्ति उत्पादकता और किसानों की आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

97. (2) ऊष्मा तनाव जिसके कारण टर्मिनल हीट प्रभाव होता है और गेहूं जैसी रबी फसलों की उपज कम हो जाती है।
जलवायु परिवर्तन का प्रभाव भारतीय कृषि, विशेष रूप से राजस्थान जैसे क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। बढ़ते तापमान के कारण फसलों में 'ऊष्मा तनाव' की स्थिति उत्पन्न होती है। गेहूं जैसी रबी फसलों हेतु 'टर्मिनल हीट' एक बड़ा संकट है, जहां पकने के समय अचानक बढ़ती गर्मी से दाने सिकुड़ जाते हैं और पैदावार कम हो जाती है। यह पारिस्थितिक परिवर्तन फसलों के जीवन चक्र को छोटा कर रहा है, जिससे खाद्य सुरक्षा और किसानों की आर्थिक स्थिति हेतु गंभीर चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं।

98. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
भारतीय कृषि कई अंतर-संबंधित चुनौतियों से जूझ रही है। भूमि के अत्यधिक विखंडन के कारण मशीनीकरण अव्यवहार्य हो जाता है। भूजल के अंधाधुंध दोहन ने कई क्षेत्रों को 'डार्क जोन' में परिवर्तित कर दिया है और मिट्टी की लवणता बढ़ाई है। जलवायु परिवर्तन के कारण लू और तापमान बढ़ने से फसलों की विकास प्रक्रिया प्रभावित हो रही है। साथ ही, पर्याप्त प्रशीतन गृह (कोल्ड स्टोरेज) और रसद सुविधाओं की कमी के कारण बागवानी फसलों में कटाई के पश्चात भारी बर्बादी होती है।

99. (3) प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना
'प्रति बूंद अधिक फसल' प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना का एक केंद्रीय घटक है, जो राजस्थान जैसे जल-अभाव वाले क्षेत्रों हेतु अत्यंत प्रासंगिक है। इसका मुख्य उद्देश्य ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों को बढ़ावा देकर जल उपयोग की दक्षता बढ़ाना है। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि सीमित जल संसाधनों का उपयोग करके अधिकतम उत्पादकता कैसे प्राप्त की जा सकती है। इससे न केवल जल की बचत होती है, बल्कि उर्वरकों का अपव्यय भी कम होता है, जिससे खेती अधिक टिकाऊ बनती है।

100. (4) I, II, III, IV और V
अशोक दलवई समिति ने किसानों की आय को दोगुना करने के उद्देश्य से एक बहुआयामी रणनीति की संस्तुति की थी। इसमें मुख्य रूप से फसल उत्पादकता में सुधार, उत्पादन लागत में कमी लाकर संसाधन दक्षता बढ़ाना और फसल सघनता में वृद्धि करना सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त, उच्च मूल्य वाली फसलों की ओर कृषि विविधीकरण और ग्रामीण युवाओं को गैर-कृषि व्यवसायों की ओर प्रोत्साहित करना भी इस व्यापक योजना के अभिन्न अंग हैं। ये उपाय मिलकर ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक समृद्धि सुनिश्चित करते हैं।

NODIA
www.nodia.in

अध्याय 06
औद्योगिक वृद्धि, नीतिगत सुधार एवं एल.पी.जी.

1. निम्नलिखित में से किस औद्योगिक नीति प्रस्ताव में पहली बार भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था की अवधारणा प्रस्तुत की गई थी, जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों की भूमिकाओं को रेखांकित किया गया था?
(1) औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1956
(2) औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1948
(3) औद्योगिक नीति वक्तव्य, 1973
(4) औद्योगिक नीति वक्तव्य, 1977
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव के अंतर्गत उद्योगों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था। किस अनुसूची में विशेष रूप से वे उद्योग शामिल थे जिनका भविष्य में विकास करना राज्य की अनन्य जिम्मेदारी थी?
(1) अनुसूची A
(2) अनुसूची B
(3) अनुसूची C
(4) अनुसूची D
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. जनता सरकार द्वारा प्रस्तुत किए गए 1977 के औद्योगिक नीति वक्तव्य का प्राथमिक केंद्र बिंदु क्या था?
(1) भारी उद्योगों और पूंजीगत वस्तुओं का तीव्र विस्तार
(2) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का पूर्ण वि-नियमन
(3) लघु, कुटीर और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देना
(4) सभी घाटे में चल रहे सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का निजीकरण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव की विशेषता का गलत वर्णन करता है?
(1) यह मुख्य रूप से आर्थिक विकास के महालनोबिस मॉडल पर आधारित था।
(2) इसका उद्देश्य औद्योगिक विकास में क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना था।
(3) इसने कुटीर और लघु उद्योगों के महत्व पर बल दिया।
(4) निजी क्षेत्र की सभी मौजूदा औद्योगिक इकाइयों का राष्ट्रीयकरण।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

5. 1980 की औद्योगिक नीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. इसने आर्थिक संघवाद की अवधारणा को बढ़ावा देने का प्रयास किया।
II. इसने औद्योगिक रूप से पिछड़े जिलों में 'केंद्रक संयंत्र' (न्यूक्लियस प्लांट) की अवधारणा पेश की।
III. इसने बड़े व्यापारिक घरानों के लिए एमआरटीपी (MRTP) अधिनियम की सीमा को पूरी तरह से समाप्त कर दिया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) केवल I और II
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. भारत में औद्योगिक लाइसेंसिंग की प्रणाली, जिसे अक्सर 'लाइसेंस राज' कहा जाता है, मुख्य रूप से किस कानून के प्रावधानों द्वारा शासित थी?
(1) एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार अधिनियम, 1969
(2) उद्योग (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1951
(3) विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम, 1973
(4) आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. औद्योगिक लाइसेंसिंग प्रणाली के कार्यकरण की जांच के लिए 1967 में किस समिति को नियुक्त किया गया था, जिसने निष्कर्ष निकाला था कि यह प्रणाली आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण को रोकने में विफल रही है?
(1) हजारी समिति
(2) नरसिम्हम समिति
(3) चेलैया समिति
(4) दत्त समिति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में लाइसेंस राज प्रणाली के कारण उद्योगपतियों के बीच व्यापक भ्रष्टाचार और अनुचित लाभ प्राप्त करने की प्रवृत्ति (रेंट-सीकिंग) बढ़ी।
कारण (R): उद्यमियों ने उत्पाद की गुणवत्ता और बाजार प्रतिस्पर्धा में सुधार करने के बजाय लाइसेंस प्राप्त करने के लिए सरकारी तंत्र के प्रबंधन में अधिक समय और संसाधन व्यय किए।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?

Downloaded from www.pdf.tube

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. 1991 से पूर्व की औद्योगिक व्यवस्था के संदर्भ में, एमआरटीपी (MRTP) अधिनियम, 1969 का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(1) उपभोक्ता वस्तु क्षेत्र के भीतर प्रतिस्पर्धी एकाधिकार प्रथाओं को बढ़ावा देना
(2) बाजार में बहुराष्ट्रीय निगमों के बड़े पैमाने पर प्रवेश की सुविधा प्रदान करना
(3) जनहित के विरुद्ध आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण को रोकना
(4) आक्रामक निर्यात संवर्धन के माध्यम से अधिकतम विदेशी मुद्रा भंडार सुनिश्चित करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I (कानून/नीति):
A. औद्योगिक नीति प्रस्ताव (IPR) 1956
B. एमआरटीपी (MRTP) अधिनियम 1969
C. फेरा (FERA) 1973
D. आईडीआरए (IDRA) 1951
सूची II (मुख्य विशेषता/उद्देश्य):
i. औद्योगिक लाइसेंसिंग के लिए रूपरेखा
ii. विदेशी मुद्रा का सख्त विनियमन
iii. प्रमुख व्यापारिक प्रथाओं पर रोक
iv. उद्योगों का तीन अनुसूचियों में वर्गीकरण
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. निम्नलिखित में से कौन सा समष्टि आर्थिक (मैक्रोइकॉनॉमिक) संकट का संकेतक नहीं था जिसने भारत को 1991 में नई आर्थिक नीति अपनाने के लिए विवश किया?
(1) विदेशी मुद्रा भंडार में गंभीर और तीव्र गिरावट
(2) केंद्र सरकार का उच्च और असहनीय राजकोषीय घाटा
(3) मुद्रास्फीति की दो अंकों वाली दर
(4) चालू खाता शेष में अभूतपूर्व अधिशेष
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. भारत में लाइसेंस राज की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नई औद्योगिक इकाइयां स्थापित करने के लिए सरकारी अनुमोदन आवश्यक था।
II. इसने मौजूदा उद्योगों की क्षमता विस्तार को विनियमित किया।
III. उत्पाद मिश्रण (प्रोडक्ट मिक्स) को बदलने के लिए सरकारी अनुमति अनिवार्य थी।
IV. यह क्षेत्रीय औद्योगिक असमानताओं को पूरी तरह से समाप्त करने में अत्यधिक प्रभावी था।
V. इसने पूंजीगत वस्तुओं और कच्चे माल के आयात पर प्रतिबंध लगाए।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) II, III, IV और V
(2) I, II, III और V
(3) I, II, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

13. 1991 के संकट के दौरान किस अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान ने आर्थिक सुधारों के कार्यान्वयन की शर्त पर भारत को आपातकालीन संरचनात्मक समायोजन ऋण प्रदान किया था?
(1) एशियाई विकास बैंक और ब्रिक्स बैंक
(2) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम
(3) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक
(4) विश्व व्यापार संगठन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. नई आर्थिक नीति 1991 के घटकों के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) स्थिरीकरण उपाय - दीर्घकालिक संस्थागत सुधार
(2) संरचनात्मक सुधार नीतियां - अल्पकालिक संकट प्रबंधन
(3) वैश्वीकरण - विदेशी व्यापार में सार्वजनिक क्षेत्र के एकाधिकार के प्रभुत्व को बढ़ावा देना
(4) उदारीकरण - निजी क्षेत्र पर प्रवेश और विकास संबंधी प्रतिबंधों को हटाना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. नई आर्थिक नीति 1991 के अंतर्गत उद्योगों के वि-नियमन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. बिना किसी अपवाद के सभी उद्योगों के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग समाप्त कर दी गई।
II. सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की संख्या में भारी कमी की गई।
III. एमआरटीपी (MRTP) कंपनियों के लिए परिसंपत्ति सीमा को हटा दिया गया।
IV. चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रमों को समाप्त कर दिया गया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) II, III और IV
(2) I, II और III
(3) I, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

16. वर्तमान में भारत में निम्नलिखित में से किस उद्योग के लिए अनिवार्य लाइसेंसिंग की आवश्यकता है?
(1) सूती वस्त्र और तैयार परिधान
(2) इलेक्ट्रॉनिक एयरोस्पेस और रक्षा उपकरण
(3) मानक सीमेंट और बुनियादी निर्माण सामग्री
(4) ऑटोमोबाइल विनिर्माण और असेंबली इकाइयां
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. किसी सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम के स्वामित्व, प्रबंधन और नियंत्रण को निजी क्षेत्र को हस्तांतरित करने की प्रक्रिया को औपचारिक रुप से किस नाम से जाना जाता है?
(1) राष्ट्रीयकरण
(2) निजीकरण
(3) उदारीकरण
(4) वैश्वीकरण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के संदर्भ में 'रणनीतिक विनिवेश' शब्द विशेष रुप से किसे संदर्भित करता है?
(1) किसी सीपीएसई (CPSE) के स्वामित्व और प्रबंधन नियंत्रण को एक निजी इकाई को हस्तांतरित करना
(2) खुले बाजार में किसी पीएसयू (PSU) के अल्पसंख्यक शेयरों को बेचना जबकि सरकार नियंत्रण अपने पास रखे
(3) पहली बार शेयर बाजार में पूर्णतः सरकारी स्वामित्व वाली कंपनी को सूचीबद्ध करना
(4) पुराने घाटे में चल रहे सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम का अत्यधिक लाभदायक उद्यम के साथ विलय करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. एमआरटीपी (MRTP) अधिनियम के स्थान पर नया कानून लाने की सिफारिश करने के लिए 1999 में भारत सरकार द्वारा किस समिति का गठन किया गया था, जिसके परिणामस्वरुप प्रतिस्पर्धा अधिनियम अस्तित्व में आया?
(1) सच्चर समिति
(2) भगवती समिति
(3) राघवन समिति
(4) रंगराजन समिति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

20. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I (सुधार अवधारणा):
A. उदारीकरण
B. निजीकरण
C. वैश्वीकरण
D. स्थिरीकरण
सूची II (व्यावहारिक उपाय):
i. उच्चतम आयात शुल्क दरों में कमी
ii. मुद्रास्फीति और भुगतान संतुलन का नियंत्रण
iii. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में इक्विटी का विनिवेश
iv. औद्योगिक लाइसेंसिंग की समाप्ति
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. वित्त मंत्रालय के अंतर्गत कौन सा विभाग केंद्र सरकार के निवेशों के प्रबंधन और विनिवेश योजनाओं को लागू करने के लिए उत्तरदायी है?
(1) आर्थिक कार्य विभाग (DEA)
(2) व्यय विभाग (DoE)
(3) निवेश और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग (DIPAM)
(4) वित्तीय सेवा विभाग (DFS)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

22. निम्नलिखित में से कौन भारत में औद्योगिक नीति सुधारों के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) MRTP अधिनियम → प्रतिस्पर्धा अधिनियम → IPR 1956 → नई आर्थिक नीति
(2) IPR 1956 → MRTP अधिनियम → नई आर्थिक नीति → प्रतिस्पर्धा अधिनियम
(3) IPR 1956 → नई आर्थिक नीति → MRTP अधिनियम → प्रतिस्पर्धा अधिनियम
(4) MRTP अधिनियम → IPR 1956 → प्रतिस्पर्धा अधिनियम → नई आर्थिक नीति
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. घरेलू अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण मुख्य रुप से निम्नलिखित में से किस उपाय के माध्यम से प्राप्त किया जाता है?
(1) आयात शुल्क और कोटा बढ़ाना
(2) केवल पूंजीगत खाते पर रुपये की पूर्ण परिवर्तनीयता लागू करना
(3) मुख्य क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रतिबंधित करना
(4) सीमाओं के पार वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी और प्रौद्योगिकी के मुक्त प्रवाह को बढ़ावा देना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. भारत में वैश्वीकरण के संदर्भ में, 'मात्रात्मक प्रतिबंधों' के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) 2001 तक उपभोक्ता वस्तुओं पर से मात्रात्मक प्रतिबंध हटा दिए गए।
(2) भारत ने 1991 के बाद प्रमुख कृषि आयातों पर मात्रात्मक प्रतिबंध बढ़ा दिए।
(3) मात्रात्मक प्रतिबंध भारतीय निर्यात पर लगाए गए गुणवत्ता नियंत्रण मानकों को संदर्भित करते हैं।
(4) वैश्वीकरण ने सभी शुल्कों को मात्रात्मक प्रतिबंधों में बदलने का आदेश दिया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

25. 1991 के बाद भारत में एफडीआई (FDI) नीति के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

I. प्रारंभ में, उच्च प्राथमिकता वाले उद्योगों में 51% तक विदेशी इक्विटी के लिए स्वचालित अनुमोदन प्रदान किया गया था।
II. सिंगल-विंडो क्लीयरेंस की प्रक्रिया के लिए विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड (FIPB) की स्थापना की गई थी।
III. FIPB वर्तमान में भी भारत में सभी FDI अनुमोदनों के लिए एकमात्र प्राधिकरण बना हुआ है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा गलत है?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. भारत में निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) पूर्णतः प्रतिबंधित है?

(1) परमाणु ऊर्जा और लॉटरी व्यवसाय
(2) रक्षा विनिर्माण और अंतरिक्ष क्षेत्र
(3) नागरिक उड्डयन और मल्टी-ब्रांड रिटेल
(4) दूरसंचार और फार्मास्यूटिकल्स
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. वर्तमान एफडीआई (FDI) नीति के अंतर्गत, रक्षा विनिर्माण क्षेत्र में स्वचालित मार्ग के माध्यम से कितने प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति है (शर्तों के अधीन)?

(1) 26%
(2) 49%
(3) 74%
(4) 100%
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

अभिकथन (A): एफडीआई (FDI) अनुमोदन के सरकारी मार्ग के लिए संबंधित मंत्रालयों या विभागों से पूर्व सहमति की आवश्यकता होती है।

कारण (R): स्वचालित मार्ग के लिए भारत सरकार या भारतीय रिजर्व बैंक से पूर्व अनुमोदन की आवश्यकता नहीं होती है, बशर्ते निवेशक निवेश के बाद आरबीआई (RBI) को सूचित करे।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

29. निर्यात के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी और बाधा मुक्त वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से पूर्व के निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्रों (EPZs) को प्रतिस्थापित करने के लिए 2000 में भारत सरकार द्वारा कौन सी योजना शुरू की गई थी?

(1) मुक्त व्यापार और भंडारण क्षेत्र (FTWZ)
(2) निर्यात उन्मुख इकाई (EOU) योजना
(3) विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) योजना
(4) भारतीय सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क (STPI)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।

सूची I (FDI मार्ग/अवधारणा):

A. स्वचालित मार्ग
B. सरकारी मार्ग
C. ग्रीनफील्ड निवेश
D. ब्राउनफील्ड निवेश

सूची II (विवरण):

i. प्रारंभ से नई उत्पादन सुविधाओं का निर्माण करना
ii. मौजूदा उत्पादन सुविधाओं को खरीदना या पट्टे पर लेना
iii. केंद्र सरकार के पूर्व अनुमोदन के बिना निवेश
iv. क्षेत्रीय मंत्रालयों से पूर्व अनुमोदन की आवश्यकता वाला निवेश

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) को किन उद्देश्यों के लिए विदेशी क्षेत्र माना जाता है?

(1) व्यापार संचालन, शुल्क और टैरिफ
(2) आपराधिक कानून और आंतरिक सुरक्षा
(3) श्रम कानून और ट्रेड यूनियन अधिकार
(4) चुनावी कानून और राजनीतिक प्रतिनिधित्व
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

32. भारत में विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZs) के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

I. SEZ अधिनियम 2005 में संसद द्वारा पारित किया गया था।
II. SEZ इकाइयां प्रथम पांच वर्षों के लिए निर्यात आय पर 100% आयकर छूट प्राप्त करती हैं।
III. घरेलू टैरिफ क्षेत्र (DTA) से SEZ को होने वाली आपूर्ति को भौतिक निर्यात माना जाता है।
IV. SEZ की स्थापना में राज्य सरकारों की कोई भूमिका नहीं है।
V. SEZ को अनिश्चित काल के लिए न्यूनतम वैकल्पिक कर (MAT) से छूट दी गई है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?

(1) II, III और IV

(2) I, II और III
(3) I, IV और V
(4) I, II और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

33. सुधार के बाद की भारतीय अर्थव्यवस्था में 'रोजगार विहीन संवृद्धि' (जॉबलेस ग्रोथ) की परिघटना किसे संदर्भित करती है?
(1) बढ़ती बेरोजगारी के साथ सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के निरपेक्ष मूल्य में एक साथ गिरावट।
(2) रोजगार में आनुपातिक वृद्धि के बिना पूंजी-प्रधान क्षेत्रों द्वारा संचालित उच्च जीडीपी विकास दर।
(3) औद्योगिक रोजगार में वृद्धि के बिना कृषि उत्पादन में वृद्धि।
(4) संगठित क्षेत्र की तुलना में असंगठित क्षेत्र का विस्तार।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. 1991 के बाद भारत में औद्योगिक विकास के स्वरुप के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) दूरसंचार जैसे मुख्य उद्योगों में सार्वजनिक क्षेत्र के एकाधिकार को पूर्णतः बरकरार रखा गया था।
(2) जीडीपी में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी विनिर्माण क्षेत्र की तुलना में तीव्र गति से बढ़ी।
(3) उदारीकरण के कारण उपभोक्ता टिकाऊ वस्तु उद्योग में तीव्र विस्तार देखा गया।
(4) विदेशी तकनीक और पूंजीगत वस्तुओं का महत्वपूर्ण आगमन हुआ।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. उदारीकरण के बाद भारतीय औद्योगिक क्षेत्र के समक्ष आने वाली निम्नलिखित बाधाओं पर विचार कीजिए:
I. अपर्याप्त बुनियादी ढांचा सुविधाएं
II. कठोर श्रम कानून
III. एमएसएमई (MSMEs) के लिए ऋण तक पहुंच का अभाव
IV. विदेशी प्रतिस्पर्धा से अत्यधिक सुरक्षा
ऊपर दिए गए विकल्पों में से कौन सी बाधाओं की गलत पहचान करता है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

36. भारत सरकार द्वारा 'मेक इन इंडिया' पहल किस वर्ष प्रारंभ की गई थी?
(1) 2012
(2) 2014
(3) 2016
(4) 2018
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन सा 'मेक इन इंडिया' पहल के चार प्रमुख स्तंभों में से एक नहीं है?
(1) नई प्रक्रियाएं (New Processes)
(2) नया बुनियादी ढांचा (New Infrastructure)
(3) नया संरक्षणवाद (New Protectionism)
(4) नए क्षेत्र (New Sectors)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

38. 'मेक इन इंडिया' पहल का एक प्रमुख मात्रात्मक लक्ष्य 2025 तक देश की जीडीपी में विनिर्माण की हिस्सेदारी बढ़ाकर कितने प्रतिशत करना था?
(1) 15%
(2) 20%
(3) 25%
(4) 30%
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

39. निम्नलिखित में से कौन उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजना का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(1) कारखाने स्थापित करने के लिए भूमि अधिग्रहण हेतु अग्रिम पूंजीगत सब्सिडी।
(2) यह एमएसएमई द्वारा उत्पादित औद्योगिक वस्तुओं के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य सुनिश्चित करता है।
(3) यह नियोजित श्रमिकों की संख्या के आधार पर कर अवकाश प्रदान करता है।
(4) घरेलू उत्पादों की वृद्धिशील बिक्री के आधार पर वित्तीय प्रोत्साहन।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I (नीति/योजना):
A. स्टार्टअप इंडिया
B. PLI योजना
C. मेक इन इंडिया
D. SEZ अधिनियम
सूची II (मुख्य उद्देश्य):
i. घरेलू विनिर्माण और FDI को बढ़ावा देना
ii. नवाचार और उद्यमिता का पोषण करना
iii. शुल्क मुक्त क्षेत्रों के साथ निर्यात हब बनाना
iv. बिक्री प्रोत्साहन के माध्यम से विनिर्माण क्षमताओं और निर्यात को बढ़ावा देना
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

41. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र वर्तमान में उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजना के अंतर्गत नहीं आता है?
(1) बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण

Downloaded from www.pdf.tube

(2) फार्मास्यूटिकल्स
(3) पारंपरिक हथकरघा बुनाई
(4) उच्च दक्षता वाले सौर पीवी मॉड्यूल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. निम्नलिखित क्षेत्रों पर विचार कीजिए और उन्हें प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की उनकी अधिकतम स्वीकार्य सीमा (स्वचालित और सरकारी दोनों मार्गों सहित) के आधार पर अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. मल्टी-ब्रांड रिटेल ट्रेडिंग
II. प्रिंट मीडिया
III. दूरसंचार
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) III, II, I
(2) I, II, III
(3) III, I, II
(4) II, III, I
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) की परिभाषा 2020 में संशोधित की गई थी। नई परिभाषा में प्रयुक्त दोहरे मानदंड क्या हैं?
(1) स्थायी कर्मचारियों की संख्या और बिजली की खपत का स्तर
(2) निर्यात की मात्रा और पूंजी निवेश
(3) वार्षिक टर्नओवर और लाभ मार्जिन
(4) संयंत्र/मशीनरी में निवेश और वार्षिक टर्नओवर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. संशोधित 2020 MSME वर्गीकरण के अंतर्गत, एक उद्यम को 'मध्यम' उद्यम के रूप में वर्गीकृत किया जाता है यदि:
(1) निवेश ₹1 करोड़ तक और टर्नओवर ₹5 करोड़ तक है
(2) निवेश ₹10 करोड़ तक और टर्नओवर ₹50 करोड़ तक है
(3) निवेश ₹50 करोड़ तक और टर्नओवर ₹250 करोड़ तक है
(4) निवेश ₹100 करोड़ तक और टर्नओवर ₹500 करोड़ तक है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. भारत में एमएसएमई (MSME) क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह रोजगार सृजन और निर्यात आय दोनों में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
II. 'उद्यम पंजीकरण' पोर्टल एक कागज रहित और स्व-घोषणा आधारित पंजीकरण प्रक्रिया प्रदान करता है।
III. औपचारिकरण के कारण इस क्षेत्र ने ऋण पहुंच की चुनौतियों पर पूर्णतः विजय प्राप्त कर ली है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) केवल I और II
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

46. भारत में 1991 के बाद के युग में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) की प्राथमिक भूमिका क्या है?
(1) सभी प्रमुख विनिर्माण क्षेत्रों में पूर्ण राज्य एकाधिकार बनाए रखना।
(2) लाभप्रदता की परवाह किए बिना अधिकतम अकुशल श्रम को खपाना।
(3) उपभोक्ता वस्तुओं के एकमात्र निर्यातक के रूप में कार्य करना।
(4) व्यावसायिक आधार पर रणनीतिक और मुख्य बुनियादी ढांचा संचालन।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. किसी केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम (CPSE) को 'महारत्न' का दर्जा दिए जाने के लिए निम्नलिखित में से कौन सा एक आवश्यक मानदंड है?
(1) इसके पास नवरत्न का दर्जा होना चाहिए और यह भारतीय शेयर बाजार में सूचीबद्ध होना चाहिए।
(2) पिछले 3 वर्षों में इसका औसत वार्षिक टर्नओवर ₹10,000 करोड़ से अधिक होना चाहिए।
(3) यह शून्य निजी इक्विटी के साथ पूर्णतः भारत सरकार के स्वामित्व में होना चाहिए।
(4) इसका संचालन विशेष रूप से भारत की घरेलू सीमाओं के भीतर होना चाहिए।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सरकार ने चुनिंदा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के लिए 'नवरत्न' और 'मिनीरत्न' योजनाएं प्रारंभ कीं।
कारण (R): इसका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए उन्हें उन्नत वित्तीय और परिचालन स्वायत्तता प्रदान करना था।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. निम्नलिखित में से कौन सा सीपीएसई (CPSE) 'महारत्न' का दर्जा नहीं रखता है (2024 के प्रारंभ के वर्गीकरण के अनुसार)?
(1) भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (BHEL)
(2) हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL)
(3) इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (IOCL)
(4) स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (SAIL)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

50. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I (PSU दर्जा):
A. महारत्न
B. नवरत्न
C. मिनीरत्न श्रेणी-I
D. मिनीरत्न श्रेणी-II
सूची II (वित्तीय स्वायत्तता सीमा):
i. ₹500 करोड़ तक
ii. ₹1000 करोड़ या निवल मूल्य का 15% तक
iii. ₹300 करोड़ या निवल मूल्य का 50% तक
iv. ₹5,000 करोड़ या निवल मूल्य का 15% तक
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर (DMIC) एक विशाल बुनियादी ढांचा परियोजना है जिसे किस देश की वित्तीय और तकनीकी सहायता से विकसित किया जा रहा है?
(1) संयुक्त राज्य अमेरिका
(2) रूस
(3) जापान
(4) जर्मनी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर (DMIC) के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह भारत के छह राज्यों में विस्तृत है।
II. वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (WDFC) इसके परिवहन आधार के रूप में कार्य करता है।
III. इसका उद्देश्य स्मार्ट और संधारणीय औद्योगिक शहर विकसित करना है।
IV. WDFC संरेखण का लगभग 39% राजस्थान से होकर गुजरता है।
V. खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना राजस्थान में निर्दिष्ट निवेश क्षेत्रों में से एक है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

53. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर (DMIC) के प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है?
(1) उत्तर प्रदेश
(2) हरियाणा
(3) बिहार
(4) राजस्थान
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. 'पीएम गति शक्ति' राष्ट्रीय मास्टर प्लान का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित में से क्या प्राप्त करना है?
(1) ग्रामीण निर्धनों को प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण
(2) मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी बुनियादी ढांचे का समन्वित नियोजन।
(3) सभी मौजूदा राष्ट्रीय राजमार्गों और रेलवे लाइनों का पूर्ण निजीकरण।
(4) इलेक्ट्रिक वाहन विनिर्माण को सब्सिडी प्रदान करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. भारत में औद्योगिक गलियारों के संस्थागत ढांचे के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास और कार्यान्वयन ट्रस्ट (NICDIT) शीर्ष निकाय है।
II. NICDIT उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) के अंतर्गत कार्य करता है।
III. इस ढांचे के अंतर्गत केवल ग्रीनफील्ड औद्योगिक नोड्स विकसित किए जाते हैं।
IV. राज्य सरकारें विशेष प्रयोजन वाहनों (SPVs) में अपने इक्विटी योगदान के रूप में भूमि प्रदान करती हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) II, III और IV
(2) I, III और IV
(3) I, II और III
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. औद्योगिक गलियारों के साथ 'निवेश क्षेत्र' और 'औद्योगिक क्षेत्र' विकसित करने का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) निवेश आकर्षित करने के लिए विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे के साथ आत्मनिर्भर औद्योगिक टाउनशिप बनाना।
(2) प्रदूषणकारी उद्योगों को शहरी केंद्रों से पृथक करना
(3) ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों को विशेष रूप से बढ़ावा देना
(4) बड़े बहुराष्ट्रीय निगमों को निःशुल्क भूमि और अप्रतिबंधित संसाधन उपलब्ध कराना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर (DMIC) परियोजना के प्रथम चरण में राजस्थान के किन दो प्रमुख नोड्स को विकसित किया जा रहा है?
(1) जयपुर-किशनगढ़ क्षेत्र और उदयपुर-भीलवाड़ा औद्योगिक पट्टी।
(2) कोटा-बारां और बीकानेर-नागौर
(3) खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना और जोधपुर-पाली-मारवाड़
(4) अलवर-भरतपुर क्षेत्र और सीकर-झुंझुनू औद्योगिक पट्टी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

58. 'स्टार्टअप इंडिया' पहल के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) स्टार्टअप्स के लिए फंड ऑफ फंड्स (FFS) - सिडबी (SIDBI) द्वारा प्रबंधित।
(2) स्टार्टअप इंडिया सीड फंड योजना - व्यावसायीकरण के अंतिम चरण के लिए वित्त पोषण हेतु।
(3) स्टार्टअप इंडिया हब - केवल विदेशी निवेशकों को समर्पित एक व्यापक मंच।
(4) मार्ग (MAARG) पोर्टल - एमएसएमई (MSMEs) के अनिवार्य पंजीकरण के लिए।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में 1 बिलियन डॉलर से अधिक मूल्य वाली निजी स्वामित्व वाली स्टार्टअप कंपनी को क्या कहा जाता है?
(1) गज़ेल (Gazelle)
(2) डेकाकॉर्न (Decacorn)
(3) मिनोटौर (Minotaur)
(4) यूनिकॉर्न (Unicorn)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I (स्टार्टअप शब्दावली):
A. इन्क्यूबेटर
B. एंजेल निवेशक
C. बूटस्ट्रैपिंग
D. वेंचर कैपिटल
सूची II (अर्थ):
i. व्यक्तिगत वित्त या राजस्व का उपयोग करके व्यवसाय को वित्तपोषित करना
ii. शुरुआती चरण की उच्च क्षमता वाली कंपनियों के लिए संस्थागत वित्तपोषण
iii. व्यवसाय प्रारंभ करने के लिए पूंजी प्रदान करने वाला उच्च निवल संपत्ति वाला व्यक्ति
iv. सेवाएं और स्थान प्रदान करके स्टार्टअप्स को विकसित होने में सहायता करने वाला संगठन
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. DPIIT की परिभाषा के अनुसार, किसी इकाई को उसके निगमन/पंजीकरण की तिथि से कितने वर्षों तक भारत में 'स्टार्टअप' माना जाएगा?
(1) 5 वर्ष
(2) 7 वर्ष
(3) 10 वर्ष
(4) 15 वर्ष
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. अप्रैल 2000 और हाल के वर्षों के मध्य भारत में उच्चतम संचयी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) इक्विटी प्रवाह को आकर्षित करने वाले शीर्ष तीन क्षेत्रों का सही क्रम कौन सा है?
(1) कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर, ऑटोमोबाइल उद्योग, निर्माण
(2) दूरसंचार, सेवा क्षेत्र, व्यापार
(3) औषधियां और फार्मास्यूटिकल्स, रसायन, विद्युत
(4) सेवा क्षेत्र, कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर, दूरसंचार
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' (EoDB) सूचकांक, जो विभिन्न देशों में व्यापार नियमों का मूल्यांकन करता था, किस अंतरराष्ट्रीय संगठन द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता था?
(1) विश्व बैंक समूह
(2) विश्व आर्थिक मंच
(3) विश्व व्यापार संगठन
(4) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

64. निम्नलिखित में से कौन सा 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' स्कोर की गणना के लिए प्रयुक्त होने वाला पैरामीटर नहीं था?
(1) व्यवसाय प्रारंभ करना
(2) राजनीतिक भ्रष्टाचार को नियंत्रित करना
(3) विद्युत प्राप्त करना
(4) निर्माण परमिट प्राप्त करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. बिजनेस रिफॉर्म्स एक्शन प्लान (BRAP) के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह व्यावसायिक सुधारों के कार्यान्वयन के आधार पर भारत में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को रैंक करने का एक अभ्यास है।
II. यह उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) द्वारा समन्वित है।
III. इसका उद्देश्य सहकारी और प्रतिस्पर्धी संघवाद को बढ़ावा देना है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) I, II और III
(3) केवल II और III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. पिछले दशक में, कौन सा देश निरंतर भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) प्रवाह के शीर्ष दो स्रोतों में रहा है, जिसे अक्सर कर संधि लाभों के कारण पसंद किया जाता है?
(1) सिंगापुर
(2) संयुक्त राज्य अमेरिका
(3) जापान
(4) यूनाइटेड किंगडम

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. 2016 में दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (IBC) के प्रारंभ ने मुख्य रुप से 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' सूचकांक के किस पैरामीटर में भारत के प्रदर्शन में सुधार किया?
(1) करों का भुगतान
(2) अनुबंध लागू करना
(3) दिवाला समाधान (Insolvency Resolution)
(4) ऋण प्राप्त करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सुधारों के बावजूद कई दशकों से भारत की जीडीपी में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी लगभग 16-17% पर स्थिर बनी हुई है।
कारण (R): सेवा क्षेत्र की तीव्र वृद्धि और बुनियादी ढांचे एवं श्रम बाज़ारों में संरचनात्मक बाधाओं ने विनिर्माण के आनुपातिक विस्तार में बाधा उत्पन्न की।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. कौन सा विकल्प पर्यावरणीय नियमों के संबंध में वर्तमान औद्योगिक नीति को सटीक रूप से दर्शाता है?
(1) सभी एमएसएमई (MSMEs) को पर्यावरणीय मंजूरी से स्थायी रूप से छूट दी गई है।
(2) एसईजेड (SEZ) इकाइयों को राष्ट्रीय पर्यावरणीय मानकों का पालन करने से छूट दी गई है।
(3) लाइसेंस मुक्ति के बावजूद अत्यधिक प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों के लिए सख्त मंजूरी अनिवार्य है।
(4) विदेशी निवेशकों को एफडीआई के लिए स्थानीय पर्यावरणीय कानूनों को दरकिनार करने की अनुमति है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I (सुधार पहल):
A. विनिवेश
B. PLI योजना (मोबाइल विनिर्माण)
C. MSME उद्यम पंजीकरण
D. स्टार्टअप इंडिया
सूची II (संबंधित मंत्रालय/विभाग):
i. इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय
ii. एमएसएमई मंत्रालय
iii. उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT)
iv. निवेश और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग (DIPAM)
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

71. 'मेक इन इंडिया' पहल ने ध्यान केवल 'आयात प्रतिस्थापन' से हटाकर निम्नलिखित में से किस पर केंद्रित किया?
(1) सख्त निर्यात निराशावाद और अलगाव के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता।
(2) आत्मनिर्भरता और आत्म-अलगाव
(3) पूर्णतः कृषि मशीनीकरण
(4) निर्यात संवर्धन और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकरण।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. इससे बाजार में उपलब्ध उपभोक्ता वस्तुओं की विविधता और गुणवत्ता में वृद्धि हुई।
II. इसके परिणामस्वरुप सूचना प्रौद्योगिकी और ITES क्षेत्रों में संकुचन हुआ।
III. इसने घरेलू लघु उद्योगों को तीव्र अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के समक्ष खड़ा कर दिया।
IV. इसने प्रतिस्पर्धा-विरोधी प्रथाओं को रोकने के लिए भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग की स्थापना को आवश्यक बना दिया।
V. इसने देश में गरीबी और आय असमानता को पूर्णतः समाप्त कर दिया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) I, III और IV
(2) I, II और III
(3) II, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में सरकार द्वारा अपने शेयरों को विनिवेश करने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से क्या माना जाता है?
(1) सरकारी कार्मिकों के प्रशासनिक बोझ और कार्यभार को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाना।
(2) यह सुनिश्चित करना कि औद्योगिक संपत्ति निजी प्रवर्तकों के मध्य संकेंद्रित हो।
(3) राजकोषीय घाटे को कम करना और सामाजिक क्षेत्र के व्ययों के लिए संसाधन जुटाना।
(4) विदेशी संस्थाओं के प्रवेश के लिए जानबूझकर घरेलू उद्योगों को दिवालिया करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड (FIPB) के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) इसे 2017 में समाप्त कर दिया गया था, और अनुमोदन का कार्य संबंधित मंत्रालयों को सौंप दिया गया।
(2) इसकी स्थापना 2020 में आत्मनिर्भर भारत अभियान के हिस्से के रूप में की गई थी।
(3) यह केवल भारतीय कंपनियों द्वारा विदेशों में किए जाने वाले निवेशों को प्रबंधित करता था।
(4) यह डब्ल्यूटीओ (WTO) ढांचे के अंतर्गत संचालित एक अंतरराष्ट्रीय विवाद समाधान निकाय है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

75. 1991 से पूर्व की औद्योगिक नीति के निम्नलिखित परिणामों पर विचार कीजिए:
I. उत्पादन की उच्च लागत और वस्तुओं की खराब गुणवत्ता
II. तकनीकी आधुनिकीकरण का अभाव
III. निर्मित वस्तुओं के वैश्विक निर्यात में अभूतपूर्व वृद्धि
IV. लालफीताशाही के कारण परियोजनाओं के कार्यान्वयन में विलंब
ऊपर दिए गए विकल्पों में से कौन सा नकारात्मक परिणामों की सही पहचान करता है?
(1) II, III और IV
(2) I, III और IV
(3) I, II और III
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. 1991 में प्रारंभ की गई उदारीकरण की नीति का अर्थ आर्थिक प्रणाली में बाधाओं को दूर करना था। औद्योगिक क्षेत्र में इसे सबसे स्पष्ट रुप से किसकी समाप्ति द्वारा चिह्नित किया गया था?
(1) मौजूदा न्यूनतम मजदूरी कानून और नियामक प्रावधान।
(2) अधिकांश क्षेत्रों के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग प्रणाली
(3) कॉर्पोरेट आयकर
(4) कारखाना अधिनियम, 1948
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. FDI का अर्थ किसी विदेशी देश में निवेश करना है जिसमें प्रबंधन नियंत्रण सम्मिलित होता है।
II. FPI में सामान्यतः स्टॉक और बॉन्ड जैसी वित्तीय संपत्तियों में अल्पकालिक निवेश सम्मिलित होता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) I और II दोनों
(4) न तो I और न ही II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. वैश्वीकरण के अंतर्गत व्यवस्थित टैरिफ (शुल्क) कटौती का भारत में घरेलू विनिर्माण पर क्या प्रभाव पड़ा?
(1) इसके कारण सभी घरेलू विनिर्माण इकाइयों का तत्काल और पूर्ण उन्मूलन हो गया।
(2) इसके परिणामस्वरूप भारत से होने वाले सभी निर्यातों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया।
(3) इसने घरेलू फर्मों को बिना किसी परिणाम के कृत्रिम रूप से कीमतें बढ़ाने की अनुमति दी।
(4) इसने फर्मों को अधिक लागत-कुशल और गुणवत्ता के प्रति सचेत बनने के लिए विवश किया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. 'ब्राउनफील्ड FDI' शब्द किसे संदर्भित करता है?
(1) किसी विदेशी देश में मौजूदा कंपनी का अधिग्रहण करना या उसके साथ विलय करना।
(2) पर्यावरण के अनुकूल हरित प्रौद्योगिकियों में निवेश।
(3) किसी विदेशी देश में प्रारंभ से नई उत्पादन सुविधा स्थापित करना।
(4) विशेष रूप से कृषि भूमि में निवेश।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I (औद्योगिक नीति युग):
A. 1948 की नीति
B. 1956 की नीति
C. 1977 की नीति
D. 1991 की नीति
सूची II (परिभाषित विशेषता):
i. भारत का आर्थिक संविधान, सार्वजनिक क्षेत्र का प्रभुत्व
ii. वि-नियमन, उदारीकरण, निजीकरण
iii. मिश्रित अर्थव्यवस्था की प्रथम घोषणा
iv. लघु और अति सूक्ष्म उद्योगों पर बल
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

81. दादरी (उत्तर प्रदेश) और जवाहरलाल नेहरु पोर्ट ट्रस्ट (महाराष्ट्र) के मध्य की दूरी, जो वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (DMIC का मुख्य आधार) द्वारा कवर की जाती है, लगभग कितनी है?
(1) 1,000 किमी
(2) 1,504 किमी
(3) 2,200 किमी
(4) 3,000 किमी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

82. निम्नलिखित राज्यों पर विचार कीजिए और उन्हें उत्तर से दक्षिण की ओर व्यवस्थित कीजिए जैसा कि वे दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर (DMIC) संरेखण के साथ भौगोलिक रूप से कवर किए गए हैं:
I. हरियाणा
II. राजस्थान

Click Here to Buy book on Amazon

III. गुजरात
IV. महाराष्ट्र
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

83. रसद (लॉजिस्टिक्स) लागत को कम करने के लिए मजबूत परिवहन नेटवर्क के साथ औद्योगिक विकास को एकीकृत करने की अवधारणा का सर्वोत्तम उदाहरण भारत में किसके द्वारा दिया गया है?
(1) सार्वजनिक वितरण प्रणाली
(2) न्यूनतम समर्थन मूल्य तंत्र
(3) औद्योगिक गलियारा कार्यक्रम
(4) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

84. भारत में विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZs) की एक प्रमुख आलोचना निम्नलिखित में से क्या है?
(1) वे राज्य के लिए प्रत्यक्ष कृषि कराधान के संग्रह में भारी योगदान देते हैं।
(2) उन्हें भारत के बाहर माल निर्यात करने की अनुमति नहीं है।
(3) वे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के किसी भी रूप के पूर्ण निषेध को लागू करते हैं।
(4) उपजाऊ भूमि का अधिग्रहण जिससे किसानों का विस्थापन हो रहा है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

85. भारत में एमएसएमई (MSME) क्षेत्र के प्रदर्शन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. भारत के कुल निर्यात में इसकी हिस्सेदारी 40% से अधिक है।
II. यह कृषि के बाद देश का दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता है।
III. एमएसएमई तकनीकी व्यवधानों और ऋण की कमी से पूर्णतः सुरक्षित हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) केवल I और II
(4) I, II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

86. स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ी 'स्टैंड-अप इंडिया' योजना का उद्देश्य विशेष रूप से किसके मध्य उद्यमिता को बढ़ावा देना है?
(1) अनिवासी भारतीय (NRIs)
(2) अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिलाएं
(3) पूर्व सैनिक
(4) महानगरों के केवल शहरी युवा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

87. 1991 में, भुगतान संतुलन के संकट से निपटने के लिए, भारत को अपने भौतिक स्वर्ण भंडार को किन देशों के बैंकों के पास गिरवी रखने के लिए भेजना पड़ा था?
(1) संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्रांस
(2) रूस और जर्मनी
(3) जापान और सिंगापुर
(4) इंग्लैंड और स्विट्ज़रलैंड
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

88. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 'मेक इन इंडिया' पहल ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सूचकांक में भारत की रैंकिंग में सुधार पर बल देती है।
कारण (R): विनिर्माण क्षेत्र में घरेलू और विदेशी दोनों निवेशों को आकर्षित करने के लिए अनुकूल नियामक वातावरण और प्रशासनिक बाधाओं को कम करना आवश्यक है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

89. निम्नलिखित पहलों/योजनाओं में से उनके प्राथमिक लक्ष्य क्षेत्र के आधार पर विषम का चयन कीजिए।
(1) मेक इन इंडिया
(2) उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन (PLI)
(3) पीएम-किसान (PM-KISAN)
(4) राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास कार्यक्रम
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

90. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I (सुधार-पूर्व समिति):
A. महालनोबिस समिति
B. दत्त समिति
C. आबिद हुसैन समिति
D. हजारी समिति
सूची II (जांच का विषय):
i. औद्योगिक लाइसेंसिंग नीति जांच
ii. आय का वितरण और जीवन स्तर
iii. लघु उद्योग
iv. औद्योगिक लाइसेंसिंग प्रणाली का कार्यकरण
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

91. 1991 के सुधारों के बाद, भारतीय अर्थव्यवस्था के किस क्षेत्र ने सबसे तीव्र वृद्धि प्रदर्शित की और जीडीपी में सबसे बड़ा योगदानकर्ता बन गया?
(1) कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ
(2) खनन और उत्खनन
(3) विनिर्माण
(4) सेवा क्षेत्र
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

92. 2000 के बाद भारत में एफडीआई (FDI) प्रवाह की प्रवृत्ति के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. संचयी एफडीआई प्रवाह में निरंतर वृद्धि हुई है।
II. सेवा क्षेत्र (वित्तीय, बैंकिंग और बीमा सहित) शीर्ष प्राप्तकर्ता रहा है।
III. इक्विटी प्रवाह कुल एफडीआई का सबसे बड़ा घटक है।
IV. 100% एफडीआई प्रवाह विशेष रूप से कृषि क्षेत्र की ओर निर्देशित है।
V. विदेशी निवेशकों द्वारा मुनाफे की वापसी पर भारी प्रतिबंध है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से गलत हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV और V
(3) केवल III, IV और V
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

93. भारत में वर्तमान DPIIT दिशानिर्देशों के अंतर्गत किसी कंपनी को 'स्टार्टअप' के रूप में वर्गीकृत करने के लिए टर्नओवर की अधिकतम सीमा क्या है?
(1) ₹25 करोड़
(2) ₹50 करोड़
(3) ₹100 करोड़
(4) ₹500 करोड़
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

94. एमआरटीपी (MRTP) अधिनियम, 1969 के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. इसका उद्देश्य एकाधिकारवादी व्यापार प्रथाओं को प्रतिबंधित करना था।
II. इसे प्रतिस्पर्धा अधिनियम, 2002 द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) I और II दोनों
(4) न तो I और न ही II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

95. भारत जैसे मेजबान देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के प्रवाह को सामान्यतः प्रभावित करने वाले कारकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. बाजार का आकार और विकास क्षमता
II. कुशल और सस्ते श्रम की उपलब्धता
III. राजनीतिक स्थिरता और पूर्वानुमानित नीति व्यवस्था
IV. अत्यधिक उच्च कॉर्पोरेट कर दरें और कठोर श्रम कानून
ऊपर दिए गए विकल्पों में से कौन सा FDI आकर्षित करने के लिए अनुकूल कारकों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

96. एमएसएमई (MSMEs) के लिए नए समग्र मानदंडों के अंतर्गत, यदि किसी उद्यम का संयंत्र और मशीनरी में निवेश ₹8 करोड़ है और वार्षिक टर्नओवर ₹40 करोड़ है, तो इसे किस रूप में वर्गीकृत किया जाएगा?
(1) सूक्ष्म उद्यम
(2) लघु उद्यम
(3) मध्यम उद्यम
(4) बड़ा उद्यम
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

97. निम्नलिखित में से कौन 1991 की नई आर्थिक नीति का स्पष्ट उद्देश्य नहीं था?
(1) राजकोषीय घाटे को कम करना
(2) भारतीय अर्थव्यवस्था को पूर्णतः बंद आत्मनिर्भरता में धकेलना
(3) विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ाना
(4) सार्वजनिक क्षेत्र की दक्षता में सुधार करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

98. 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' में भारत की प्रगति के संबंध में निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए और उन्हें सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. भारत पहली बार शीर्ष 100 देशों में सम्मिलित हुआ।
II. राज्यों के लिए बिजनेस रिफॉर्म एक्शन प्लान (BRAP) का प्रारंभ।
III. विश्व बैंक द्वारा 'डूइंग बिजनेस' रिपोर्ट को बंद किया जाना।
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) I, II, III
(2) II, I, III
(3) III, II, I
(4) I, III, II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

99. "प्लग एंड प्ले" (Plug and Play) बुनियादी ढांचे की अवधारणा, जिसका हाल की औद्योगिक नीतियों में उल्लेख किया गया है, किसे संदर्भित करती है?

(1) विदेशी कंपनियों को सॉफ्टवेयर गेमिंग उद्योगों में निवेश करने की अनुमति देना।
(2) उपभोग के आधार पर भारी उद्योगों के लिए विद्युत पर सब्सिडी देना।
(3) विनिर्माण के लिए तैयार उपयोगिताओं के साथ पूर्व-निर्मित फैक्ट्री शेड।
(4) उत्सवों के दौरान कुटीर उद्योगों की अस्थायी स्थापना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

100. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।

सूची I (औद्योगिक शब्द/नीति):

A. व्हाइट गुड्स (White Goods)
B. पीएम गति शक्ति
C. मेक इन इंडिया
D. स्टार्टअप इंडिया

सूची II (संबंधित क्षेत्र/दायरा):

i. लॉजिस्टिक्स और मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी
ii. PLI योजना का लक्ष्य क्षेत्र (एसी और एलईडी)
iii. नवाचार और प्रारंभिक चरण के उद्यमों को सहायता
iv. विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए चिह्नित 27 क्षेत्र

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1948
स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार ने औद्योगिक क्षेत्र हेतु प्रथम नीतिगत घोषणा वर्ष 1948 में की थी। इस महत्वपूर्ण नीति ने देश में 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' के प्रारुप को आधिकारिक रुप से स्वीकार किया। इसके माध्यम से सार्वजनिक एवं निजी दोनों क्षेत्रों हेतु विशिष्ट उत्तरदायित्व निर्धारित किए गए। इसमें उद्योगों को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया था ताकि आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के मध्य उचित संतुलन स्थापित किया जा सके।

2. (1) अनुसूची क
वर्ष 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव को भारत का आर्थिक संविधान माना जाता है। इसमें उद्योगों को तीन विशिष्ट श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था। अनुसूची 'क' में 17 उद्योग सम्मिलित थे, जिनकी स्थापना एवं भविष्य में विस्तार की संपूर्ण जिम्मेदारी राज्य की थी। यह वर्ग सार्वजनिक क्षेत्र के प्रभुत्व और रणनीतिक उद्योगों पर सरकारी नियंत्रण को दर्शाता था। इसका मुख्य लक्ष्य तीव्र औद्योगिकीकरण के माध्यम से पूर्ण आत्मनिर्भरता प्राप्त करना था।

3. (3) लघु, कुटीर और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देना
वर्ष 1977 की औद्योगिक नीति मुख्य रुप से विकेंद्रीकरण की अवधारणा पर आधारित थी। इस नीति ने भारी उद्योगों के स्थान पर लघु, कुटीर एवं ग्रामीण उद्योगों के विस्तार पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। इसका मुख्य लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नवीन अवसर उत्पन्न करना और आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण को रोकना था। इसने जिला उद्योग केंद्रों की स्थापना का प्रस्ताव दिया ताकि छोटे उद्यमियों को स्थानीय स्तर पर आवश्यक सहायता मिल सके।

4. (4) निजी क्षेत्र की सभी मौजूदा औद्योगिक इकाइयों का राष्ट्रीयकरण।
औद्योगिक नीति प्रस्ताव 1956 ने आर्थिक विकास हेतु महालनोबिस प्रारुप को आधार बनाया था। इसका मुख्य उद्देश्य संतुलित क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित करना एवं लघु उद्योगों को वित्तीय सहायता प्रदान करना था। हालांकि, इसने निजी क्षेत्र के अस्तित्व को पूर्णतः स्वीकार किया और केवल रणनीतिक क्षेत्रों को ही सार्वजनिक क्षेत्र हेतु आरक्षित रखा। निजी क्षेत्र की सभी इकाइयों का राष्ट्रीयकरण करना इस नीति का भाग नहीं था, बल्कि इसने पूरक भूमिका पर बल दिया।

5. (3) केवल I और II
1980 की औद्योगिक नीति ने भारतीय उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने हेतु आर्थिक संघवाद को प्रोत्साहित किया। इसने पिछड़े क्षेत्रों के विकास हेतु 'केंद्रक संयंत्र' की अवधारणा प्रस्तुत की, जो सहायक इकाइयों के माध्यम से क्षेत्रीय विकास को गति प्रदान करते थे। यद्यपि इसने एकाधिकार एवं प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार नियमों में कुछ ढील दी, परंतु अधिनियम की सीमा को पूर्णतः समाप्त नहीं किया गया था। यह नीति मुख्य रुप से उत्पादकता वृद्धि पर केंद्रित थी।

6. (2) उद्योग (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1951
भारत में औद्योगिक अनुज्ञप्ति का कानूनी ढांचा मुख्य रुप से 1951 के अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया था। इस कानून ने सरकार को उद्योगों के पंजीकरण, नवीन क्षमता की स्थापना और उत्पादन विविधीकरण को नियंत्रित करने की व्यापक शक्तियाँ प्रदान कीं। इसे निजी क्षेत्र की गतिविधियों को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरुप निर्देशित करने हेतु निर्मित किया गया था। समय के साथ, इस अत्यधिक जटिल नियामक प्रक्रिया को लोकप्रिय रुप से 'लाइसेंस राज' के रुप में जाना गया।

7. (4) दत्त समिति
औद्योगिक अनुज्ञप्ति नीति जांच समिति, सुबिमल दत्त की अध्यक्षता के कारण दत्त समिति कहलाई, जिसने 1969 में अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया था। समिति ने पाया कि तत्कालीन अनुज्ञप्ति प्रणाली ने बड़े औद्योगिक घरानों को अनुचित लाभ पहुँचाया और आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण को रोकने में विफल रही। इसकी सिफारिशों के आधार पर ही 1969 में एमआरटीपी अधिनियम लागू किया गया था ताकि बाजार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा बनी रहे और एकाधिकार की प्रवृत्ति पर प्रभावी अंकुश लगे।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
लाइसेंस राज के दौरान उद्यमियों को व्यवसाय प्रारंभ करने या विस्तार हेतु सरकारी अनुमतियों की लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था। इस जटिल नियंत्रण प्रणाली ने भ्रष्टाचार को जन्म दिया क्योंकि अनुज्ञप्ति प्राप्त करना बाजार की प्रतिस्पर्धा से अधिक महत्वपूर्ण हो गया था। संसाधनों का उपयोग उत्पादन सुधारने के स्थान पर नौकरशाही को प्रभावित करने में किया गया। इस कारण विकास की गति अत्यंत धीमी रही और किराया-अन्वेषण की प्रवृत्ति ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गंभीर हानि पहुँचाई।

9. (3) जनहित के विरुद्ध आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण को रोकना
एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार अधिनियम 1969 का मुख्य लक्ष्य भारतीय अर्थव्यवस्था में कुछ ही व्यक्तियों के हाथों में संपत्ति और शक्ति के संचय को रोकना था। यह सुनिश्चित करने हेतु बनाया गया था कि बड़े व्यावसायिक घरानों की गतिविधियाँ सामान्य जनहित के प्रतिकूल न हों। इसने अनुचित व्यापार प्रथाओं पर नियंत्रण लगाया और बड़ी

Click Here to Buy book on Amazon

कंपनियों के विस्तार हेतु विशेष सरकारी स्वीकृति को अनिवार्य बना दिया ताकि लघु उद्योगों को संरक्षण प्राप्त हो सके।

10. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
भारतीय औद्योगिक इतिहास में 1956 के प्रस्ताव ने उद्योगों को तीन अनुसूचियों में वर्गीकृत किया। एमआरटीपी अधिनियम 1969 ने एकाधिकारवादी प्रथाओं पर अंकुश लगाया, जबकि 1973 के विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम ने विदेशी निवेश पर कड़े नियंत्रण लागू किए। उद्योगों के व्यवस्थित विकास और अनुज्ञप्ति हेतु 1951 का कानून आधार बना। ये सभी नीतियां मिलकर 1991 से पूर्व के नियंत्रित आर्थिक ढांचे का निर्माण करती थीं, जिसे कालांतर में नवीन आर्थिक नीति द्वारा आधुनिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित किया गया।

11. (4) चालू खाता शेष में अभूतपूर्व अधिशेष
1991 के आर्थिक संकट की पहचान भुगतान संतुलन की गंभीर समस्या, विदेशी मुद्रा भंडार का मात्र दो सप्ताह के आयात तक गिर जाना और दहाई अंक वाली उच्च मुद्रास्फीति थी। केंद्र सरकार का राजकोषीय घाटा भी असहनीय स्तर तक पहुँच गया था। इसके विपरीत, भारत चालू खाता घाटे से जूझ रहा था, न कि अधिशेष से। इन परिस्थितियों ने सरकार को अंतरराष्ट्रीय ऋणदाताओं की शर्तों के अनुरूप अर्थव्यवस्था का उदारीकरण करने और नवीन आर्थिक नीति अपनाने हेतु विवश किया।

12. (2) I, II, III और V
लाइसेंस राज में औद्योगिक गतिविधियों पर सख्त नियंत्रण था, जिसमें नवीन इकाइयों की स्थापना और उत्पादन क्षमता वृद्धि हेतु सरकारी अनुमति अनिवार्य थी। उद्यमियों को उत्पाद के प्रकार परिवर्तित करने हेतु भी स्वीकृति लेनी पड़ती थी और कच्चे माल के आयात पर कड़े प्रतिबंध थे। यद्यपि इस प्रणाली का एक उद्देश्य क्षेत्रीय समानता लाना था, परंतु व्यावहारिक रुप से यह असमानताओं को पूर्णतः समाप्त करने में सफल नहीं रही, बल्कि इसने केवल प्रशासनिक और नौकरशाही बाधाओं को बढ़ाया।

13. (3) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक
1991 के भुगतान संतुलन संकट के समाधान हेतु भारत ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक से वित्तीय सहायता मांगी थी। इन संस्थानों ने सात बिलियन डॉलर का ऋण प्रदान करने के बदले में भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यापक संरचनात्मक सुधारों की शर्त रखी थी। इसके परिणामस्वरूप सरकार ने उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों को लागू किया। इन सुधारों का मुख्य उद्देश्य भारतीय बाजार को विश्व हेतु खोलना और घरेलू अर्थव्यवस्था की दक्षता एवं औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना था।

14. (4) उदारीकरण - निजी क्षेत्र पर प्रवेश और विकास संबंधी प्रतिबंधों को हटाना
1991 की नवीन आर्थिक नीति में उदारीकरण का तात्पर्य उन प्रशासनिक बाधाओं और अनुज्ञप्तियों को समाप्त करना था जो निजी उद्यमों के विकास को रोकते थे। स्थिरीकरण उपाय अल्पकालिक थे जिनका उद्देश्य मुद्रास्फीति और विदेशी मुद्रा संकट को नियंत्रित करना था, जबकि संरचनात्मक सुधार दीर्घकालिक थे। वैश्वीकरण ने घरेलू बाजार को अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा हेतु खोल दिया। उदारीकरण ने उद्यमियों को अधिक स्वतंत्रता प्रदान की, जिससे निवेश के नवीन मार्ग खुले और विनिर्माण क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों का समावेश हुआ।

15. (1) II, III और IV
1991 के सुधारों ने औद्योगिक अनुज्ञप्ति को केवल कुछ संवेदनशील क्षेत्रों तक सीमित कर दिया, जबकि अधिकांश उद्योगों को इससे मुक्त कर दिया गया। सार्वजनिक क्षेत्र हेतु आरक्षित उद्योगों की संख्या 17 से घटाकर बहुत कम कर दी गई। एमआरटीपी कंपनियों हेतु निवेश की सीमा हटा दी गई और चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रमों को समाप्त कर दिया गया ताकि विदेशी पूँजी का प्रवाह सुगम हो सके। इन परिवर्तनों ने उद्योगों हेतु सरकारी नियंत्रण को कम करके बाजार आधारित विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

16. (2) इलेक्ट्रॉनिक एयरोस्पेस और रक्षा उपकरण
उदारीकरण के पश्चात अधिकांश उद्योगों को अनुज्ञप्ति से मुक्त कर दिया गया है, परंतु सुरक्षा और पर्यावरणीय कारणों से कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में यह आज भी अनिवार्य है। इलेक्ट्रॉनिक एयरोस्पेस और रक्षा उपकरणों के निर्माण हेतु सरकार से अनुमति लेना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, हानिकारक रसायनों, औद्योगिक विस्फोटकों, तंबाकू उत्पादों और मदिरा जैसे क्षेत्रों में भी अनुज्ञप्ति लागू है। यह विनियमन सुनिश्चित करता है कि संवेदनशील क्षेत्रों में उत्पादन गतिविधियों की निरंतर निगरानी सरकार द्वारा सुनिश्चित की जा सके।

17. (2) निजीकरण
निजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत सरकारी स्वामित्व वाले उद्यमों का प्रबंधन या स्वामित्व निजी हाथों में सौंप दिया जाता है। यह विनिवेश के माध्यम से या सरकारी कंपनियों की पूर्ण बिक्री के द्वारा किया जा सकता है। इसका मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की कार्यक्षमता में वृद्धि करना, वित्तीय घाटे को कम करना और बाजार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहन देना है। यह सुधारों का एक महत्वपूर्ण अंग है जो राज्य की भूमिका को नियंत्रक के स्थान पर नियामक बनाता है।

18. (1) किसी सीपीएसई (CPSE) के स्वामित्व और प्रबंधन नियंत्रण को एक निजी इकाई को हस्तांतरित करना
रणनीतिक विनिवेश सामान्य विनिवेश से भिन्न है क्योंकि इसमें सरकार केवल अंशधारिता नहीं बेचती, बल्कि कंपनी का प्रबंधन नियंत्रण भी क्रेता को सौंप देती है। इसमें सरकारी हिस्सेदारी का एक बड़ा भाग बेचा जाता है, जिससे सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई का स्वरुप पूर्णतः परिवर्तित हो जाता है। इसका लक्ष्य सार्वजनिक संसाधनों को अधिक उत्पादक क्षेत्रों में लगाना और सरकारी उद्यमों को व्यावसायिक रूप से सक्षम बनाना है। यह नीति सरकार को गैर-प्रमुख क्षेत्रों से बाहर निकलने की अनुमति देती है।

NODIA

19. (3) राघवन समिति
भारत सरकार ने 1999 में राघवन की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया था। इस समिति को पुराने एमआरटीपी अधिनियम की समीक्षा करने और आधुनिक बाजार परिस्थितियों के अनुरुप नवीन कानून बनाने का सुझाव देने का कार्य सौंपा गया था। समिति की सिफारिशों के आधार पर प्रतिस्पर्धा अधिनियम 2002 पारित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना, उपभोक्ता हितों की रक्षा करना और बाजार में प्रभुत्व के दुरुपयोग को रोकना था, जिससे आर्थिक दक्षता में वृद्धि हुई।

20. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
आर्थिक सुधारों के अंतर्गत उदारीकरण ने अनुज्ञप्ति की बाधाओं को हटाया, जबकि निजीकरण ने सार्वजनिक उपक्रमों में सरकारी हिस्सेदारी कम की। वैश्वीकरण ने आयात शुल्कों को घटाकर अंतरराष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाया। वहीं, स्थिरीकरण के उपायों का प्राथमिक लक्ष्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना और भुगतान संतुलन की समस्या का समाधान करना था। इन चारों स्तंभों ने मिलकर भारतीय अर्थव्यवस्था के पुराने ढांचे को बदला और इसे एक प्रतिस्पर्धी बाजार उन्मुख प्रणाली के रुप में विकसित किया, जिससे समग्र आर्थिक समृद्धि संभव हुई।

21. (3) निवेश और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग (DIPAM)
वित्त मंत्रालय का दीपम विभाग केंद्र सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में निवेश के प्रबंधन और विनिवेश से संबंधित सभी कार्यों हेतु उत्तरदायी है। यह विभाग सरकारी संपत्तियों के मुद्रीकरण और अंशों की बिक्री के माध्यम से राजस्व जुटाने की रणनीतियां तैयार करता है। पूर्व में इसे विनिवेश विभाग के रुप में जाना जाता था, परंतु 2016 में इसका पुनर्गठन किया गया। इसका कार्य यह सुनिश्चित करना है कि सरकारी निवेश का कुशलतापूर्वक उपयोग हो और निर्धारित राजकोषीय लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

22. (2) IPR 1956 → MRTP अधिनियम → नई आर्थिक नीति → प्रतिस्पर्धा अधिनियम
भारत में औद्योगिक नीतियों का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया रही है। सर्वप्रथम 1956 में औद्योगिक नीति प्रस्ताव आया, जिसने सार्वजनिक क्षेत्र की सुदृढ़ नींव रखी। इसके पश्चात 1969 में आर्थिक संकेंद्रण रोकने हेतु एमआरटीपी अधिनियम लागू हुआ। 1991 की नवीन आर्थिक नीति ने अर्थव्यवस्था को उदारीकरण की ओर मोड़ा। अंततः, 2002 में प्रतिस्पर्धा अधिनियम आया जिसने एमआरटीपी का स्थान लिया। यह कालक्रम दर्शाता है कि कैसे भारत धीरे-धीरे कड़े सरकारी नियंत्रण से हटकर एक खुली बाजार व्यवस्था की ओर बढ़ा है।

23. (4) सीमाओं के पार वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी और प्रौद्योगिकी के मुक्त प्रवाह को बढ़ावा देना
वैश्वीकरण का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय सीमाओं को आर्थिक गतिविधियों के लिए गौण बनाना है। इसमें आयात और निर्यात पर प्रतिबंधों को न्यूनतम किया जाता है ताकि वैश्विक बाजार तक पहुँच सुगम हो सके। इसके अंतर्गत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया जाता है और तकनीकी आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है। यह प्रक्रिया घरेलू उद्योगों को वैश्विक मानक अपनाने हेतु प्रेरित करती है। इससे न केवल विदेशी पूँजी का आगमन होता है, बल्कि उपभोक्ताओं को बेहतर गुणवत्ता वाले अंतरराष्ट्रीय उत्पाद भी सुलभ होते हैं।

NODIA

24. (1) 2001 तक उपभोक्ता वस्तुओं पर से मात्रात्मक प्रतिबंध हटा दिए गए।
भारत ने वैश्वीकरण की दिशा में अग्रसर होते हुए अंतरराष्ट्रीय व्यापार संधियों के अंतर्गत अपनी आयात नीतियों में व्यापक परिवर्तन किए। प्रारंभ में, कई उपभोक्ता वस्तुओं के आयात पर मात्रात्मक प्रतिबंध अर्थात कोटा लागू था ताकि घरेलू उद्योगों को संरक्षण मिले। हालांकि, विश्व व्यापार संगठन के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं को पूर्ण करने हेतु भारत ने अप्रैल 2001 तक इन प्रतिबंधों को पूर्णतः समाप्त कर दिया। इसके पश्चात आयात को केवल टैरिफ या सीमा शुल्क के माध्यम से विनियमित किया जाने लगा।

25. (3) केवल III
1991 के पश्चात भारत ने विदेशी निवेश आकर्षित करने हेतु कई कदम उठाए, जिसमें एफआईपीबी की स्थापना एक प्रमुख निर्णय था। प्रारंभ में कई क्षेत्रों में 51 प्रतिशत तक निवेश हेतु स्वचालित अनुमति प्रदान की गई। हालांकि, सरकार ने 2017 में विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड (एफआईपीबी) को समाप्त करने का निर्णय लिया ताकि अनुमोदन प्रक्रिया और सरल हो सके। अब विभिन्न मंत्रालयों को सीधे आवेदन स्वीकृत करने की शक्ति प्रदान की गई है। अतः, वर्तमान में एफआईपीबी संस्थागत रुप में अस्तित्व में नहीं है।

26. (1) परमाणु ऊर्जा और लॉटरी व्यवसाय
भारत की प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति में राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वजनिक नैतिकता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। परमाणु ऊर्जा और लॉटरी व्यवसाय जैसे क्षेत्र विदेशी निवेशकों हेतु पूर्णतः प्रतिबंधित हैं। इसके अतिरिक्त जुआ, सट्टेबाजी, चिट फंड और रियल एस्टेट व्यवसाय (टाउनशिप विकास को छोड़कर) में भी निवेश की अनुमति नहीं है। यह प्रतिबंध इसलिए लगाए गए हैं ताकि संवेदनशील क्षेत्रों पर सरकारी नियंत्रण बना रहे और समाज के नैतिक मूल्यों पर आधारित गतिविधियों को बाहरी हस्तक्षेप से सुरक्षित रखा जा सके।

27. (3) 74%
भारत ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ाने और आधुनिक तकनीक को आकर्षित करने हेतु विदेशी निवेश की सीमाओं में संशोधन किया है। वर्तमान नीति के अनुसार, रक्षा विनिर्माण क्षेत्र में स्वचालित मार्ग के अंतर्गत 74 प्रतिशत तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति है। इससे अधिक निवेश हेतु सरकारी अनुमोदन की आवश्यकता होती है। यह कदम वैश्विक रक्षा निर्माताओं को भारत में अपनी इकाइयां स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित करने हेतु उठाया गया है। इससे रक्षा निर्यात बढ़ने और घरेलू विनिर्माण सुदृढ़ होने की पूर्ण संभावना है।

28. (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हेतु दो पृथक प्रणालियां कार्य करती हैं। सरकारी मार्ग में निवेशक को संबंधित मंत्रालय से अनिवार्य पूर्व सहमति लेनी पड़ती है, जो संवेदनशील क्षेत्रों हेतु आवश्यक है। दूसरी ओर, स्वचालित मार्ग व्यवसायों को पूर्व अनुमति के बिना निवेश की सुविधा प्रदान करता है, जिसमें केवल निवेश के पश्चात सूचना देना पर्याप्त होता है। यद्यपि दोनों कथन सत्य हैं, परंतु स्वचालित मार्ग की कार्यप्रणाली सरकारी मार्ग की आवश्यकता का कारण स्पष्ट नहीं करती। ये दोनों निवेश की अलग-अलग व्यवस्थाएं हैं।

29. (3) विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) योजना
भारत सरकार ने वर्ष 2000 में पूर्व के निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्रों की सीमाओं को दूर करने हेतु विशेष आर्थिक क्षेत्र योजना की घोषणा की थी। इसका उद्देश्य देश में बड़े पैमाने पर निर्यात उन्मुख औद्योगिक केंद्रों की स्थापना करना था। इन क्षेत्रों को एक पृथक विदेशी क्षेत्र की भाँति माना जाता है जहाँ व्यापारिक संचालन हेतु करों और शुल्कों में व्यापक छूट प्रदान की जाती है। यह नीति अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा बढ़ाने, विदेशी निवेश आकर्षित करने और अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे के माध्यम से रोजगार सृजन हेतु निर्मित की गई थी।

30. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की विभिन्न श्रेणियों के माध्यम से अर्थव्यवस्था का विस्तार होता है। स्वचालित मार्ग में सरकारी स्वीकृति की आवश्यकता नहीं होती, जबकि सरकारी मार्ग में क्षेत्रीय मंत्रालयों से अनुमति अनिवार्य है। ग्रीनफील्ड निवेश के अंतर्गत विदेशी कंपनियां पूर्णतः नए सिरे से बुनियादी ढांचे का निर्माण करती हैं। इसके विपरीत, ब्राउनफील्ड निवेश में मौजूदा कंपनियों या संपत्तियों का अधिग्रहण किया जाता है। ये सभी माध्यम देश में पूँजी, आधुनिक तकनीक और वैश्विक प्रबंधन पद्धतियों को लाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

31. (1) व्यापार संचालन, शुल्क और टैरिफ
विशेष आर्थिक क्षेत्रों को देश की भौगोलिक सीमा के भीतर होने के उपरांत भी आर्थिक उद्देश्यों हेतु एक विदेशी क्षेत्र माना जाता है। इसका अर्थ यह है कि इन क्षेत्रों में आने वाली वस्तुओं और सेवाओं पर सीमा शुल्क और अन्य प्रत्यक्ष कर नहीं लगाए जाते, जैसे वे देश के बाहर से आ रही हों। यहाँ संचालित होने वाली इकाइयों को व्यापारिक सुगमता हेतु उदार टैरिफ ढांचे का लाभ प्राप्त होता है। हालांकि, देश के सामान्य कानून, सुरक्षा और आपराधिक संहिताएँ इन क्षेत्रों पर पूर्णतः प्रभावी रहती हैं।

32. (2) I, II और III
विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम 2005 में पारित किया गया था ताकि निर्यात को बढ़ावा देने हेतु एक स्थिर कानूनी ढांचा प्रदान किया जा सके। इस योजना के अंतर्गत इकाइयों को प्रथम पांच वर्षों हेतु निर्यात लाभ पर पूर्ण आयकर छूट दी जाती है। घरेलू क्षेत्र से इन क्षेत्रों को की जाने वाली आपूर्ति को निर्यात माना जाता है, जिससे स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं को भी लाभ मिलता है। हालांकि, इनकी स्थापना में राज्य सरकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है और न्यूनतम वैकल्पिक कर से इन्हें पूर्णतः छूट प्राप्त नहीं है।

33. (2) रोजगार में आनुपातिक वृद्धि के बिना पूंजी-प्रधान क्षेत्रों द्वारा संचालित उच्च जीडीपी विकास दर।
सुधार के पश्चात के कालखंड में भारत ने उच्च आर्थिक विकास दर प्राप्त की है, परंतु यह वृद्धि रोजगार के अवसरों के सृजन के साथ तालमेल नहीं बिठा सकी। इसे 'रोजगार विहीन संवृद्धि' कहा जाता है क्योंकि विकास मुख्य रूप से सेवा क्षेत्र और पूँजी-प्रधान उद्योगों द्वारा संचालित रहा है जहाँ श्रम की आवश्यकता न्यून होती है। विनिर्माण क्षेत्र की धीमी वृद्धि और तकनीक के बढ़ते उपयोग ने इस समस्या को अधिक गंभीर बना दिया है। परिणामस्वरूप देश की विशाल युवा आबादी को कार्यबल में समाहित करना चुनौतीपूर्ण है।

34. (1) दूरसंचार जैसे मुख्य उद्योगों में सार्वजनिक क्षेत्र के एकाधिकार को पूर्णतः बरकरार रखा गया था।
1991 के सुधारों के पश्चात भारत ने अपने अधिकांश मुख्य क्षेत्रों को निजी भागीदारी हेतु खोल दिया। दूरसंचार जैसे क्षेत्रों में, जहाँ पूर्व में केवल सरकारी कंपनियों का अधिकार था, अब निजी और विदेशी कंपनियों का वर्चस्व स्थापित है। औद्योगिक विकास का स्वरूप पूर्णतः बदल गया क्योंकि सेवा क्षेत्र विनिर्माण की तुलना में अधिक तीव्र गति से विकसित हुआ। देश में विदेशी तकनीक और आधुनिक मशीनरी का बड़े पैमाने पर आयात हुआ, जिससे उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के विविध विकल्प उपलब्ध हुए।

35. (3) केवल IV
उदारीकरण के पश्चात भारतीय उद्योगों को तीव्र वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा, जिससे उनकी सुरक्षा कम हो गई। हालांकि, औद्योगिक विकास की राह में बुनियादी ढांचे का अभाव और कठोर श्रम कानून आज भी बड़ी बाधाएं बने हुए हैं। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों हेतु समय पर ऋण की उपलब्धता न होना भी एक गंभीर समस्या है। विदेशी प्रतिस्पर्धा से सुरक्षा अब औद्योगिक बाधा नहीं है, बल्कि खुली प्रतियोगिता ने घरेलू फर्मों को अपनी गुणवत्ता और कार्यक्षमता सुधारने हेतु प्रेरित किया है ताकि वे टिक सकें।

36. (2) 2014
भारत सरकार ने सितंबर 2014 में 'मेक इन इंडिया' पहल का शुभारंभ किया था। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना और विदेशी निवेश को आकर्षित करना था। इसके माध्यम से देश में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी को सकल घरेलू उत्पाद में बढ़ाना और करोड़ों नवीन रोजगार सृजित करना लक्षित है। यह पहल व्यापार करने की सुगमता में सुधार, आधुनिक बुनियादी ढांचे के विकास और नवाचार को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। इसने वैश्विक छवि बदली है।

37. (3) नया संरक्षणवाद (New Protectionism)
'मेक इन इंडिया' पहल चार मुख्य स्तंभों पर आधारित है: नवीन प्रक्रियाएं, नवीन बुनियादी ढांचा, नवीन क्षेत्र और नवीन

Downloaded from www.pdf.tube

मानसिकता। यह पहल सरकार की भूमिका को एक नियामक के स्थान पर सुविधा प्रदाता के रूप में देखती है। इसका उद्देश्य प्रक्रियाओं को सरल बनाना और औद्योगिक गलियारों के माध्यम से अत्याधुनिक बुनियादी ढांचा प्रदान करना है। इसके विपरीत, 'नया संरक्षणवाद' इस पहल का भाग नहीं है क्योंकि मेक इन इंडिया अर्थव्यवस्था को वैश्विक प्रतिस्पर्धा हेतु खोलने और विदेशी निवेश को आकर्षित करने के उद्देश्य से प्रेरित है।

38. (3) 25%
'मेक इन इंडिया' अभियान के अंतर्गत एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया गया था कि विनिर्माण क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान बढ़ाकर 25 प्रतिशत किया जाए। वर्तमान में यह हिस्सेदारी लगभग 16 से 17 प्रतिशत के मध्य स्थिर रही है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सरकार ने औद्योगिक गलियारों, उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन योजनाओं और व्यापक श्रम सुधारों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। विनिर्माण क्षेत्र का विस्तार न केवल आर्थिक विकास हेतु आवश्यक है, बल्कि यह बढ़ती श्रम शक्ति हेतु रोजगार का प्रभावी माध्यम भी है।

39. (4) घरेलू उत्पादों की वृद्धिशील बिक्री के आधार पर वित्तीय प्रोत्साहन।
उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना भारत सरकार की एक रणनीतिक पहल है जिसका उद्देश्य विनिर्माण क्षमताओं को सुदृढ़ करना है। इस योजना के अंतर्गत कंपनियों को भारत में निर्मित वस्तुओं की अतिरिक्त बिक्री पर वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है। यह उद्योगों को अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का अंग बनने हेतु प्रोत्साहित करती है। यह योजना मुख्य रूप से उन क्षेत्रों पर केंद्रित है जहाँ भारत को आत्मनिर्भर बनाने की आवश्यकता है, जैसे इलेक्ट्रॉनिक्स, औषधि और वाहन निर्माण क्षेत्र।

40. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
स्टार्टअप इंडिया नवाचार और नवीन व्यवसायों को संबल प्रदान करने हेतु निर्मित है, जबकि पीएलआई योजना उत्पादन बढ़ाकर विनिर्माण क्षमता को सुदृढ़ करती है। मेक इन इंडिया का मुख्य ध्यान घरेलू विनिर्माण और विदेशी निवेश को बढ़ावा देने पर है। इसके साथ ही, विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम निर्यात वृद्धि हेतु शुल्क मुक्त औद्योगिक क्षेत्रों का निर्माण करता है। ये सभी योजनाएं सम्मिलित रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था को और अधिक प्रतिस्पर्धी और उत्पादन-केंद्रित बनाने की दिशा में कार्य करती हैं, जिससे रोजगार और निर्यात में सुधार होता है।

41. (3) पारंपरिक हथकरघा बुनाई
पीएलआई योजना मुख्य रूप से उन आधुनिक और उच्च विकास क्षमता वाले क्षेत्रों पर केंद्रित है जो बड़े पैमाने पर उत्पादन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा से संबद्ध हैं। इसमें इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण, फार्मास्यूटिकल्स, सौर ऊर्जा मॉड्यूल और वाहन निर्माण जैसे तकनीकी रूप से उन्नत क्षेत्र सम्मिलित हैं। पारंपरिक हथकरघा बुनाई इस योजना के दायरे में नहीं आती क्योंकि इसके लिए सरकार अन्य ग्रामोद्योग विकास योजनाओं के माध्यम से सहायता प्रदान करती है। पीएलआई का ध्येय भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाना है, जिसमें आधुनिक तकनीक अनिवार्य है।

42. (3) III, I, II
भारत की प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति विभिन्न क्षेत्रों हेतु पृथक सीमाएं निर्धारित करती है। दूरसंचार क्षेत्र में अब 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति है, जो इसे निवेश हेतु पूर्णतः खुला क्षेत्र बनाता है। मल्टी-ब्रांड रिटेल में यह सीमा 51 प्रतिशत निर्धारित की गई है, जबकि प्रिंट मीडिया जैसे संवेदनशील क्षेत्र में इसे केवल 26 प्रतिशत तक सीमित रखा गया है। यह क्रम दर्शाता है कि सरकार कैसे सामरिक महत्व और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के आधार पर विदेशी पूँजी के प्रवेश को विनियमित करती है, ताकि घरेलू हित सुरक्षित रहें।

43. (4) संयंत्र/मशीनरी में निवेश और वार्षिक टर्नओवर
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की परिभाषा में वर्ष 2020 में एक ऐतिहासिक परिवर्तन किया गया था। अब किसी उद्यम का वर्गीकरण केवल निवेश के आधार पर नहीं, बल्कि निवेश और वार्षिक टर्नओवर दोनों के संयुक्त मानदंड पर आधारित है। यह नवीन परिभाषा विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों के मध्य के अंतर को समाप्त करती है। इसका उद्देश्य छोटे उद्यमों को आकार बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित करना है क्योंकि पुराने मानदंडों में टर्नओवर बढ़ने पर सरकारी लाभ छिन जाने का भय बना रहता था। इससे विस्तार में सुगमता मिली है।

44. (3) निवेश ₹50 करोड़ तक और टर्नओवर ₹250 करोड़ तक है
वर्ष 2020 के संशोधित वर्गीकरण के अनुसार, मध्यम उद्यमों हेतु सीमा को पर्याप्त रूप से बढ़ाया गया है। अब वे इकाइयाँ जिनका संयंत्र और मशीनरी में कुल निवेश 50 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है और जिनका वार्षिक टर्नओवर 250 करोड़ रुपये के भीतर है, मध्यम उद्यम मानी जाती हैं। यह विस्तार उद्यमों को अपनी क्षमता बढ़ाने और बड़े पैमाने पर उत्पादन करने के उपरांत भी एमएसएमई के अंतर्गत मिलने वाले लाभों को जारी रखने की अनुमति देता है। यह परिवर्तन भारतीय कंपनियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने हेतु है।

45. (3) केवल I और II
एमएसएमई क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की मुख्य आधारशिला है, जो कुल निर्यात और रोजगार में व्यापक योगदान देता है। सरकार ने 'उद्यम पंजीकरण' पोर्टल के माध्यम से पंजीकरण प्रक्रिया को पूर्णतः डिजिटल और सुलभ बना दिया है, जिससे औपचारिकरण को प्रोत्साहन मिला है। हालांकि, इन सुधारों के उपरांत भी, छोटे उद्यमों हेतु ऋण तक पहुँच अभी भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। पूर्ण रूप से इस समस्या का समाधान प्राप्त करना शेष है क्योंकि बैंकों द्वारा सुरक्षा की मांग और ऋण प्रक्रियाओं में जटिलता विद्यमान है।

46. (4) व्यावसायिक आधार पर रणनीतिक और मुख्य बुनियादी ढांचा संचालन।
उदारीकरण के पश्चात सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की भूमिका में आधारभूत परिवर्तन आया है। अब उनका ध्यान केवल रोजगार प्रदान करने के स्थान पर व्यावसायिक लाभप्रदता और

NODIA

दक्षता पर केंद्रित है। सरकार अब रणनीतिक क्षेत्रों जैसे ऊर्जा, रक्षा और बुनियादी ढांचे में सरकारी कंपनियों की उपस्थिति को अनिवार्य मानती है। इन उपक्रमों को अब वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करने हेतु अधिक स्वायत्तता प्रदान की गई है। इनका उद्देश्य देश के आर्थिक हितों की रक्षा करना और महत्वपूर्ण सेवाओं की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करना है।

47. (1) इसके पास नवरत्न का दर्जा होना चाहिए और यह भारतीय शेयर बाजार में सूचीबद्ध होना चाहिए।
किसी सार्वजनिक उपक्रम को महारत्न का गौरव प्राप्त करने हेतु कुछ कठोर मानदंड पूर्ण करने होते हैं। उसे पूर्व से ही नवरत्न की श्रेणी में होना चाहिए और शेयर बाजार में उसकी सूचीबद्धता अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त, पिछले तीन वर्षों के दौरान कंपनी का औसत वार्षिक निवल मूल्य, टर्नओवर और शुद्ध लाभ एक निश्चित उच्च स्तर से अधिक होना चाहिए। यह दर्जा मिलने से कंपनी को बड़े निवेश निर्णयों और वैश्विक परिचालन हेतु व्यापक वित्तीय स्वायत्तता प्राप्त होती है, जिससे वह अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धी बनती है।

48. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के चुनिंदा उद्यमों को उनकी उत्कृष्ट कार्यक्षमता के आधार पर नवरत्न और मिनीरत्न जैसी श्रेणियों में विभक्त किया है। इन योजनाओं का मूल उद्देश्य इन कंपनियों को नौकरशाही के प्रत्यक्ष नियंत्रण से मुक्त करना और उन्हें अधिक प्रशासनिक एवं वित्तीय शक्तियां प्रदान करना है। इस स्वायत्तता के कारण ये कंपनियां बिना सरकारी अनुमति के बड़े निवेश और रणनीतिक गठबंधन करने में सक्षम होती हैं। यह उन्हें वैश्विक बाजार की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने और एक स्वतंत्र व्यावसायिक इकाई बनने में सहायता करता है।

49. (2) हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL)
भारत में महारत्न का दर्जा केवल उन सार्वजनिक कंपनियों को प्रदान किया गया है जो वित्तीय और परिचालन दृष्टि से विशाल हैं। 2024 के प्रारंभ तक भेल, गेल, सेल और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन जैसी कंपनियां इस शीर्ष सूची में सम्मिलित थीं। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) एक अत्यंत महत्वपूर्ण रक्षा उपक्रम है, परंतु उस समय तक इसे नवरत्न की श्रेणी में रखा गया था। महारत्न दर्जा प्राप्त कंपनियों को 5,000 करोड़ रुपये तक के निवेश प्रस्तावों को स्वतंत्र रूप से स्वीकृत करने का अधिकार होता है, जो उनकी शक्ति बढ़ाता है।

50. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को उनके वित्तीय प्रदर्शन के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में स्वायत्तता प्रदान की जाती है। महारत्न कंपनियां 5,000 करोड़ रुपये तक का स्वतंत्र निवेश कर सकती हैं, जबकि नवरत्न कंपनियों हेतु यह सीमा 1,000 करोड़ रुपये है। मिनीरत्न श्रेणी-1 को 500 करोड़ रुपये तक और श्रेणी-2 को 300 करोड़ रुपये तक की वित्तीय शक्तियां प्राप्त हैं। यह वर्गीकरण सुनिश्चित करता है कि बेहतर प्रदर्शन करने वाली कंपनियों को अपनी वृद्धि हेतु सरकार पर निर्भर न रहना पड़े, जिससे उनकी व्यावसायिक निर्णय क्षमता में सुधार होता है।

51. (3) जापान
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर भारत की एक अत्यंत महत्वाकांक्षी बुनियादी ढांचा परियोजना है जिसे जापान सरकार के तकनीकी सहयोग से विकसित किया जा रहा है। जापान इस परियोजना हेतु विशेषज्ञता और महत्वपूर्ण वित्तीय ऋण प्रदान कर रहा है। इस सहयोग का मुख्य उद्देश्य वैश्विक मानकों के अनुरूप औद्योगिक शहरों का निर्माण करना और भारत की विनिर्माण क्षमता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है। यह परियोजना दोनों राष्ट्रों के मध्य सुदृढ़ आर्थिक संबंधों का प्रतीक है और भारतीय रसद क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम है।

52. (4) I, II, III, IV और V
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर एक विशाल विकास परियोजना है जो उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे छह राज्यों से होकर गुजरती है। वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर इसका आधार है, जिसका लगभग 39 प्रतिशत भाग राजस्थान में अवस्थित है। इस परियोजना के अंतर्गत संधारणीय स्मार्ट शहरों और निवेश क्षेत्रों का विकास किया जा रहा है। इसका मुख्य लक्ष्य तीव्र परिवहन व्यवस्था और आधुनिक औद्योगिक बुनियादी ढांचे के माध्यम से विनिर्माण क्षेत्र में निवेश आकर्षित करना और व्यापक रोजगार उत्पन्न करना है।

53. (3) बिहार
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर मुख्य रूप से भारत के पश्चिमी और उत्तरी भागों को जोड़ने वाली एक विशाल बुनियादी ढांचा परियोजना है। इसका प्रभाव क्षेत्र उत्तर प्रदेश के दादरी से प्रारंभ होकर महाराष्ट्र के बंदरगाह तक विस्तृत है। इस गलियारे में हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के क्षेत्र सम्मिलित हैं जहाँ से फ्रेट कॉरिडोर गुजरता है। बिहार इस भौगोलिक संरेखण का भाग नहीं है क्योंकि यह भारत के पूर्वी क्षेत्र में स्थित है। बिहार जैसे राज्यों हेतु सरकार ने अमृतसर-कोलकाता औद्योगिक गलियारे जैसी पृथक योजनाएं बनाई हैं।

54. (2) मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी बुनियादी ढांचे का समन्वित नियोजन।
पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान एक डिजिटल मंच है जिसका उद्देश्य भारत में बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के क्रियान्वयन में आने वाली बाधाओं को दूर करना है। यह विभिन्न मंत्रालयों के मध्य तालमेल बिठाकर सड़क, रेलवे, हवाई अड्डों और जलमार्गों को एक एकीकृत नेटवर्क से जोड़ता है। इसका प्राथमिक लक्ष्य रसद लागत को न्यून करना और माल के सुगम आवागमन को सुनिश्चित करना है। यह योजना डेटा-आधारित नियोजन के माध्यम से परियोजनाओं में होने वाले विलंब को रोकने में सहायक है, जिससे व्यापारिक सुगमता में वृद्धि होती है।

55. (4) I, II और IV
औद्योगिक गलियारों के विकास की निगरानी एनआईसीडीआईटी द्वारा की जाती है, जो वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अधीन एक शीर्ष निकाय है। परियोजना के कार्यान्वयन हेतु केंद्र और

Click Here to Buy book on Amazon

राज्य सरकारों के मध्य साझेदारी होती है, जहाँ राज्य सरकारें भूमि को अपनी हिस्सेदारी के रूप में प्रदान करती हैं। इस उच्च स्तरीय ढांचे में केवल ग्रीनफील्ड शहर ही नहीं, बल्कि मौजूदा औद्योगिक केंद्रों का आधुनिकीकरण भी सम्मिलित हो सकता है। यह सहकारी संघवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ दोनों स्तर की सरकारें औद्योगिक विकास हेतु अनुकूल वातावरण बनाती हैं।

56. (1) निवेश आकर्षित करने के लिए विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे के साथ आत्मनिर्भर औद्योगिक टाउनशिप बनाना।
औद्योगिक गलियारों के साथ निवेश क्षेत्रों के विकास का मुख्य दर्शन एकीकृत औद्योगिक पारिस्थिकी तंत्र तैयार करना है। इन क्षेत्रों में विद्युत, जल, परिवहन और संचार की विश्व स्तरीय सुविधाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध कराई जाती हैं। यह 'प्लग एंड प्ले' प्रारूप पर आधारित है जहाँ उद्यमी बिना किसी प्रशासनिक विलंब के अपनी इकाइयां प्रारंभ कर सकते हैं। ये क्षेत्र आत्मनिर्भर टाउनशिप के रूप में विकसित किए जाते हैं जिनमें आवासीय और व्यावसायिक सुविधाएं भी होती हैं। इसका अंतिम उद्देश्य वैश्विक निवेशकों को आकर्षित करना है।

57. (3) खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नेमराना और जोधपुर-पाली-मारवाड़
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे के राजस्थान खंड में दो अत्यंत महत्वपूर्ण औद्योगिक केंद्रों का विकास प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है। खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना क्षेत्र को एक प्रमुख निवेश केंद्र के रूप में विकसित किया गया है जो दिल्ली के निकट होने के कारण ऑटोमोबाइल उद्योगों हेतु आकर्षण का केंद्र है। वहीं, जोधपुर-पाली-मारवाड़ क्षेत्र को एक अन्य औद्योगिक नोड के रूप में चुना गया है जो मारवाड़ क्षेत्र की क्षमता को बढ़ावा देगा। ये परियोजनाएं आधुनिक बुनियादी ढांचे के माध्यम से राज्य के औद्योगिक परिदृश्य को बदल रही हैं।

58. (1) स्टार्टअप्स के लिए फंड ऑफ फंड्स (FFS) - सिडबी (SIDBI) द्वारा प्रबंधित।
स्टार्टअप इंडिया पहल के अंतर्गत कई महत्वपूर्ण योजनाएं संचालित हैं। स्टार्टअप्स हेतु निर्मित 'फंड ऑफ फंड्स' भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक द्वारा प्रबंधित किया जाता है, जो शुरुआती चरण के उद्यमों को पूँजी प्रदान करता है। सीड फंड योजना का उद्देश्य विचारों के परीक्षण हेतु शुरुआती वित्त पोषण प्रदान करना है। मार्ग पोर्टल मुख्य रूप से स्टार्टअप्स हेतु मार्गदर्शन प्रदान करने वाला एक डिजिटल मंच है। ये प्रयास सम्मिलित रूप से एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र निर्मित करते हैं जो नवाचार को निरंतर प्रोत्साहित करता है और विकास में सहायक है।

59. (4) Unicorn
स्टार्टअप की दुनिया में 'यूनिकॉर्न' एक ऐसी निजी कंपनी को कहा जाता है जिसका बाजार मूल्यांकन एक बिलियन डॉलर से अधिक हो जाता है। यह शब्द उस स्टार्टअप की असाधारण वृद्धि और अभूतपूर्व सफलता का प्रतीक है। भारत ने हाल के वर्षों में विश्व के सबसे बड़े स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्रों में से एक के रूप में विशिष्ट पहचान बनाई है और यहाँ यूनिकॉर्न की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई है। ये कंपनियां न केवल नवाचार और तकनीकी प्रगति का प्रतिनिधित्व करती हैं, बल्कि व्यापक स्तर पर रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

60. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
स्टार्टअप शब्दावली में इन्क्यूबेटर वे संगठन हैं जो नवीन व्यवसायों को स्थान और प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। एंजेल निवेशक व्यक्तिगत रूप से शुरुआती पूँजी निवेश करते हैं, जबकि वेंचर कैपिटल संस्थागत रूप से उच्च क्षमता वाले स्टार्टअप्स में निवेश करते हैं। बूटस्ट्रैपिंग का अर्थ है बाहरी निवेश के बिना स्वयं के संसाधनों से व्यवसाय का संचालन करना। ये विभिन्न घटक मिलकर एक सुदृढ़ उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि नवाचार के प्रत्येक चरण में स्टार्टअप्स को आवश्यक वित्तीय और तकनीकी सहायता उपलब्ध हो सके।

61. (3) 10 वर्ष
उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग के वर्तमान मानदंडों के अनुसार, किसी भी इकाई को उसके पंजीकरण की तिथि से दस वर्षों तक 'स्टार्टअप' की श्रेणी में माना जाता है। इसके अतिरिक्त, उसका वार्षिक टर्नओवर किसी भी वित्तीय वर्ष में 100 करोड़ रुपये से अधिक नहीं होना चाहिए। यह परिभाषा यह सुनिश्चित करने हेतु निर्मित की गई है कि केवल वास्तविक रूप से नवीन और उभरते उद्यम ही सरकार द्वारा प्रदान किए जाने वाले कर लाभों, सरल ऋण सुविधाओं और अन्य नियामक रियायतों का समुचित लाभ उठा सकें। यह लंबी अवधि स्थिरता प्रदान करती है।

62. (4) सेवा क्षेत्र, computer software और hardware, दूरसंचार
वर्ष 2000 से अब तक भारत में आए कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि सेवा क्षेत्र सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता रहा है। इसमें बैंकिंग, बीमा और अन्य वित्तीय सेवाएं सम्मिलित हैं। द्वितीय स्थान पर कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर क्षेत्र है, जिसने डिजिटल क्रांति के कारण व्यापक निवेश आकर्षित किया है। इसके पश्चात दूरसंचार क्षेत्र का स्थान आता है, जहाँ बड़े पैमाने पर नेटवर्क विस्तार और तकनीकी सुधार हुए हैं। ये तीन क्षेत्र मिलकर भारत में आने वाले कुल निवेश का बड़ा भाग बनाते हैं।

63. (1) विश्व बैंक समूह
'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' सूचकांक विश्व बैंक समूह द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाने वाला एक अत्यंत प्रभावशाली प्रतिवेदन था। यह विश्व भर के देशों को उनके व्यापार नियमों की सुगमता और नियामक वातावरण की गुणवत्ता के आधार पर श्रेणीबद्ध करता था। भारत ने इस सूचकांक में अपनी स्थिति सुधारने हेतु कई महत्वपूर्ण नीतिगत सुधार किए, जिससे उसकी रैंकिंग में उल्लेखनीय उछाल आया। हालांकि, डेटा विसंगतियों और पारदर्शिता संबंधी चिंताओं के कारण विश्व बैंक ने 2021 में इस रिपोर्ट को बंद करने का निर्णय लिया।

NODIA

A. असंगठित खुदरा
B. हाइपरमार्केट
C. सुविधा स्टोर
D. ई-कॉमर्स

सूची II: (विवरण)

i. आवासीय क्षेत्रों के निकट स्थित छोटा खुदरा आउटलेट जो अधिक समय तक खुला रहता है
ii. व्यवसायी से उपभोक्ता (B2C) लेनदेन की सुविधा प्रदान करने वाला ऑनलाइन मंच
iii. पारंपरिक परिवार संचालित किराना स्टोर और सड़क विक्रेता
iv. एक ही छत के नीचे उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला वाला बड़ा खुदरा केंद्र

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. भारतीय खुदरा उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

कथन I: कुल बाजार हिस्सेदारी के मामले में असंगठित क्षेत्र का भारतीय खुदरा उद्योग पर प्रभुत्व है।

कथन II: संगठित खुदरा विशेष रूप से विलासिता की वस्तुओं और विदेशी ब्रांडों में व्यापार करता है।

सही प्रतिक्रिया का चयन कीजिए:

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. भारत के खुदरा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

I. एकल-ब्रांड खुदरा व्यापार में स्वचालित मार्ग के तहत 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति है।
II. बहु-ब्रांड खुदरा व्यापार में स्वचालित मार्ग के तहत 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति है।
III. ई-कॉमर्स में मार्केटप्लेस मॉडल के लिए स्वचालित मार्ग के तहत 100 प्रतिशत तक एफडीआई की अनुमति है।
IV. ई-कॉमर्स के इन्वेंट्री-आधारित मॉडल में एफडीआई कड़ाई से प्रतिबंधित है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. अचल संपत्ति और निर्माण क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मुख्य रूप से:

(1) कृषि के बाद देश का दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता है
(2) भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में सबसे बड़ा योगदानकर्ता है
(3) भारत के सेवा निर्यात विकास का एकमात्र चालक है
(4) घरेलू व्यापक आर्थिक उतार-चढ़ाव से पूरी तरह सुरक्षित है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प अचल संपत्ति क्षेत्र में एक विनियामक चुनौती को भारत सरकार द्वारा अधिनियमित उसके संबंधित विधायी समाधान के साथ सही ढंग से जोड़ता है?

(1) किफायती शहरी आवास की व्यवस्थित कमी – विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) अधिनियम
(2) लेनदेन पर उच्च स्टांप शुल्क का बोझ – वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) अधिनियम
(3) परियोजना वितरण में विलंब और पारदर्शिता के मुद्दे – अचल संपत्ति (विनियमन और विकास) अधिनियम
(4) अनियमित कृषि भूमि अधिग्रहण – बेनामी लेनदेन (निषेध) संशोधन अधिनियम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. निम्नलिखित प्रमुख परिवहन अवसंरचना कार्यक्रमों को उनके प्रारंभिक शुभारंभ के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

A. समर्पित माल ढुलाई गलियारा (डीएफसी) परियोजना
B. स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना
C. भारतमाला परियोजना
D. पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान

सही क्रम का चयन कीजिए:

(1) B, A, C, D
(2) A, B, C, D
(3) B, C, A, D
(4) C, B, D, A
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. निम्नलिखित में से कौन सा कथन विमानन क्षेत्र में 'उड़ान' (उड़े देश का आम नागरिक) योजना के प्राथमिक उद्देश्य का सही वर्णन करता है?

(1) भारतीय विमानन प्राधिकरण द्वारा प्रबंधित सभी हवाई अड्डों का पूर्ण निजीकरण करना
(2) भारत के भीतर वाणिज्यिक यात्री विमानों के विनिर्माण को बढ़ावा देना
(3) टियर-1 शहरों से संचालित होने वाली अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए विशेष सब्सिडी प्रदान करना
(4) क्षेत्रीय हवाई संपर्क को प्रोत्साहित करना और हवाई यात्रा को आम जनता के लिए किफायती बनाना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. भारत में परिवहन सेवाओं के आधुनिकीकरण से संबंधित निम्नलिखित पहलों को पढ़िए:

I. वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों की शुरुआत

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

73. (3) राजकोषीय घाटे को कम करना और सामाजिक क्षेत्र के व्ययों के लिए संसाधन जुटाना।
विनिवेश के पीछे मुख्य तर्क यह है कि सरकार को उन क्षेत्रों से अपनी पूँजी निकाल लेनी चाहिए जहाँ निजी क्षेत्र बेहतर निष्पादन कर सकता है। इससे प्राप्त होने वाली राशि का उपयोग राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करने और शिक्षा, स्वास्थ्य तथा बुनियादी ढांचे जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक क्षेत्रों में निवेश हेतु किया जाता है। यह प्रक्रिया सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में वित्तीय अनुशासन और व्यावसायिक दक्षता लाने में भी सहायक है। सरकार अब 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन' के सिद्धांत पर कार्य कर रही है, जिससे संसाधनों का इष्टतम उपयोग संभव है।

74. (1) इसे 2017 में समाप्त कर दिया गया था, और अनुमोदन का कार्य संबंधित मंत्रालयों को सौंप दिया गया।
विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड एक अंतर-मंत्रालयी निकाय था जो उन क्षेत्रों में विदेशी निवेश आवेदनों की समीक्षा करता था जहाँ सरकारी अनुमोदन अनिवार्य था। व्यापार करने की सुगमता को और बेहतर बनाने और अनुमोदन में होने वाले विलंब को न्यून करने हेतु सरकार ने 2017 में इसे समाप्त कर दिया। अब यह कार्य सीधे उन संबंधित प्रशासनिक मंत्रालयों को सौंप दिया गया है जो उस विशिष्ट क्षेत्र की देखरेख करते हैं। इससे अनुमोदन प्रक्रिया अधिक विकेंद्रीकृत और पारदर्शी हो गई है, जिससे विदेशी निवेशकों को त्वरित स्वीकृति प्राप्त होती है।

75. (4) I, II और IV
1991 से पूर्व की संरक्षित आर्थिक नीतियों के कई प्रतिकूल प्रभाव दृष्टिगोचर हुए। विदेशी प्रतिस्पर्धा के अभाव में घरेलू उद्योगों में उत्पादन की लागत उच्च रही और उत्पादों की गुणवत्ता अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप नहीं थी। कड़े नियंत्रणों के कारण तकनीकी आधुनिकीकरण की गति अत्यंत मंद थी। नौकरशाही की लालफीताशाही ने परियोजनाओं के समय पर क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न की, जिससे औद्योगिक विकास अवरुद्ध हो गया। उस अवधि में निर्मित वस्तुओं के निर्यात में कोई बड़ी वृद्धि नहीं हुई, जिसने अंततः आर्थिक संकट की नींव रखी।

76. (2) अधिकांश क्षेत्रों के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग प्रणाली
1991 के उदारीकरण का सबसे क्रांतिकारी कदम औद्योगिक अनुज्ञप्ति की समाप्ति था, जिसे 'डी-लाइसेंसिंग' कहा जाता है। इससे पूर्व, किसी भी नवीन व्यवसाय को प्रारंभ करने या क्षमता विस्तार हेतु सरकार से अनुमति लेना एक अनिवार्य एवं जटिल प्रक्रिया थी। सुधारों के उपरांत, केवल सामरिक और पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों को छोड़कर सभी उद्योगों को इस बंधन से मुक्त कर दिया गया। इसने उद्यमियों को बाजार की मांग के अनुरूप स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति प्रदान की। इस परिवर्तन ने निजी निवेश हेतु द्वार खोल दिए।

77. (3) I और II दोनों
प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में निवेशक किसी अन्य राष्ट्र की कंपनी में एक स्थायी हिस्सेदारी क्रय करता है, जिससे उसे प्रबंधन और संचालन में नियंत्रण प्राप्त होता है। यह दीर्घकालिक प्रकृति का निवेश है जो भौतिक संपत्तियों और रोजगार के सृजन से प्रत्यक्ष रुप से संबद्ध होता है। इसके विपरीत, विदेशी पोर्टफोलियो निवेश मुख्य रुप से शेयर बाजार और बॉन्ड में किया जाने वाला अल्पकालिक निवेश है, जहाँ निवेशक केवल लाभ हेतु प्रतिभूतियां खरीदता है। इसे 'हॉट मनी' कहा जाता है क्योंकि इसे शीघ्रता से निकाला जा सकता है, जबकि एफडीआई स्थिर होता है।

78. (4) इसने फर्मों को अधिक लागत-कुशल और गुणवत्ता के प्रति सचेत बनने के लिए विविविध किया।
वैश्वीकरण के अंतर्गत आयात शुल्कों में की गई कटौती ने भारतीय बाजार को विदेशी वस्तुओं हेतु खोल दिया। इसने घरेलू विनिर्माताओं के समक्ष एक कड़ी प्रतिस्पर्धा प्रस्तुत की। पूर्व के संरक्षित वातावरण में अक्षम रहने वाली कंपनियों को अब अपनी लागत कम करने और उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करने हेतु विवश होना पड़ा। यह प्रतिस्पर्धा अंततः उपभोक्ताओं हेतु अत्यंत लाभकारी रही क्योंकि उन्हें वैश्विक स्तर के उत्पाद सुलभ होने लगे। यद्यपि कुछ इकाइयां बंद हो गईं, परंतु कुल मिलाकर भारतीय उद्योग अधिक लचीले और प्रतिस्पर्धी बनकर उभरे हैं।

79. (1) किसी विदेशी देश में मौजूदा कंपनी का अधिग्रहण करना या उसके साथ विलय करना।
ब्राउनफील्ड प्रत्यक्ष विदेशी निवेश तब होता है जब एक विदेशी निवेशक किसी दूसरे देश में पूर्व से विद्यमान कंपनी या विनिर्माण सुविधा को खरीदता है या उसके साथ विलय करता है। यह ग्रीनफील्ड निवेश से भिन्न है, जहाँ एक नवीन इकाई शून्य से प्रारंभ की जाती है। ब्राउनफील्ड निवेश का मुख्य लाभ यह है कि निवेशक को पूर्व से स्थापित बाजार, कर्मचारी और बुनियादी ढांचा प्राप्त हो जाता है, जिससे व्यवसाय प्रारंभ करने में लगने वाला समय कम हो जाता है। भारत में फार्मास्युटिकल जैसे क्षेत्रों में यह निवेश काफी प्रचलित रहा है।

NODIA

80. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
भारत का औद्योगिक मार्ग विभिन्न चरणों से गुजरा है। 1948 की नीति ने पहली बार मिश्रित अर्थव्यवस्था की आधारशिला रखी, जबकि 1956 के प्रस्ताव ने सार्वजनिक क्षेत्र के प्रभुत्व को सुदृढ़ किया। 1977 की नीति ने तत्कालीन सरकार के अंतर्गत लघु और ग्रामीण उद्योगों के विकास पर विशेष बल दिया ताकि आर्थिक विकेंद्रीकरण सुनिश्चित हो सके। अंततः, 1991 की नीति ने अर्थव्यवस्था को पूर्णतः उदार बनाया और निजीकरण तथा वैश्विक एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया। ये नीतियां दर्शाती हैं कि प्राथमिकताएं राज्य नियंत्रण से बाजार व्यवस्था की ओर बढ़ी हैं।

81. (2) 1,504 किमी
वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर दिल्ली के समीप दादरी से महाराष्ट्र के जवाहरलाल नेहरु पोर्ट ट्रस्ट तक विस्तृत है। इसकी कुल लंबाई लगभग 1,504 किलोमीटर है, जो उत्तर और पश्चिम भारत के प्रमुख औद्योगिक केंद्रों को परस्पर जोड़ती है। यह कॉरिडोर दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर परियोजना की जीवन रेखा है, जिसे मालगाड़ियों के तीव्र संचालन हेतु विशेष

64. (2) राजनीतिक भ्रष्टाचार को नियंत्रित करना
विश्व बैंक के डूइंग बिजनेस स्कोर की गणना व्यापार के जीवन चक्र से संबंधित विशिष्ट नियामक मापदंडों पर आधारित थी। इसमें व्यवसाय प्रारंभ करने की प्रक्रिया, निर्माण अनुमति प्राप्त करना, विद्युत संयोजन मिलना, ऋण प्राप्ति और दिवाला समाधान जैसे दस मुख्य संकेतक सम्मिलित थे। यद्यपि भ्रष्टाचार किसी भी देश के व्यापारिक वातावरण को प्रभावित करता है, परंतु 'राजनीतिक भ्रष्टाचार का नियंत्रण' इस सूचकांक का प्रत्यक्ष मात्रात्मक मापदंड नहीं था। इस प्रतिवेदन का प्राथमिक ध्यान केवल उन सरकारी नियमों की सुगमता पर था जो निजी संचालन को प्रभावित करते हैं।

65. (2) I, II और III
बिजनेस रिफॉर्म्स एक्शन प्लान भारत में राज्यों के मध्य व्यापार सुगमता बढ़ाने की एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहल है। इसे डीपीआईआईटी द्वारा प्रशासित किया जाता है और यह विभिन्न सुधारों के कार्यान्वयन के आधार पर राज्यों का मूल्यांकन करता है। इसका उद्देश्य सहकारी और प्रतिस्पर्धी संघवाद को बढ़ावा देना है, जहाँ राज्य निवेश आकर्षित करने हेतु एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हैं। यह प्रक्रिया पारदर्शी नियामक वातावरण सुनिश्चित करती है और निवेश की बाधाओं को कम करती है। इसके माध्यम से स्थानीय स्तर पर अनुज्ञप्ति प्रक्रियाओं को सरल बनाया गया है।

66. (1) सिंगापुर
सिंगापुर पिछले कई वर्षों से भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का एक प्रमुख और निरंतर स्रोत बना हुआ है। इसका मुख्य कारण दोनों देशों के मध्य हुई दोहरी कराधान बचाव संधि है, जिसने निवेशकों को महत्वपूर्ण कर लाभ प्रदान किए। इसके अतिरिक्त, सिंगापुर एक वैश्विक वित्तीय केंद्र है, जो अंतरराष्ट्रीय निवेशकों हेतु भारत में पूँजी लगाने के लिए एक सुविधाजनक मार्ग प्रदान करता है। मॉरीशस के साथ नियमों में परिवर्तन के पश्चात सिंगापुर की स्थिति और सुदृढ़ हुई है। यह देश न केवल पूँजी बल्कि आधुनिक तकनीक भी भारत लाता है।

67. (3) दिवाला समाधान (Insolvency Resolution)
वर्ष 2016 में दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता के लागू होने से भारत के व्यापारिक वातावरण में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। इस कानून ने ऋण में डूबी कंपनियों के बंद होने या पुनर्गठन की प्रक्रिया को समयबद्ध और कुशल बनाया। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सूचकांक में इसने 'दिवाला समाधान' मापदंड में भारत के प्रदर्शन को अत्यधिक बेहतर कर दिया, जहाँ पूर्व में समाधान में कई वर्ष लगते थे। यह सुधार निवेशकों को यह विश्वास दिलाता है कि वे संकट की स्थिति में अपनी पूँजी को कानूनी रूप से सुरक्षित निकाल सकते हैं।

68. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में पिछले तीन दशकों के सुधारों के उपरांत भी विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 16 प्रतिशत के समीप स्थिर रही है। इसका एक मुख्य कारण यह है कि भारत ने कृषि से सीधे सेवा क्षेत्र की ओर प्रस्थान किया, जो विनिर्माण की तुलना में अधिक तीव्र गति से विकसित हुआ। इसके अतिरिक्त, विद्युत की उच्च लागत, अपर्याप्त रसद बुनियादी ढांचा और कठोर श्रम कानून जैसे संरचनात्मक मुद्दों ने बड़े पैमाने पर उत्पादन को कठिन बना दिया। ये कारण बताते हैं कि विनिर्माण का विस्तार क्यों नहीं हो सका।

69. (3) लाइसेंस मुक्ति के बावजूद अत्यधिक प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों के लिए सख्त मंजूरी अनिवार्य है।
वर्तमान औद्योगिक नीति उदारीकरण और पर्यावरण संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करने का निरंतर प्रयास करती है। यद्यपि अधिकांश उद्योगों को अनुज्ञप्ति से मुक्त कर दिया गया है, परंतु अत्यधिक प्रदूषण फैलाने वाली श्रेणियों जैसे रसायनों और पेट्रोकेमिकल्स हेतु सख्त पर्यावरणीय स्वीकृति प्राप्त करना आज भी अनिवार्य है। पर्यावरण मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानकों का अनुपालन करना सभी विनिर्माण इकाइयों हेतु आवश्यक है। यह सुनिश्चित करता है कि औद्योगिक विकास संधारणीय हो और प्राकृतिक संसाधनों तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य को कोई क्षति न पहुँचे।

70. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
विनिवेश प्रक्रिया को दीपम विभाग द्वारा संचालित किया जाता है, जबकि मोबाइल विनिर्माण हेतु पीएलआई योजना इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय के अंतर्गत आती है। एमएसएमई के पंजीकरण और उनके विकास की जिम्मेदारी एमएसएमई मंत्रालय की है। स्टार्टअप इंडिया पहल को डीपीआईआईटी द्वारा नवाचार को प्रोत्साहित करने हेतु प्रबंधित किया जाता है। ये मंत्रालय और विभाग अपनी विशिष्ट योजनाओं के माध्यम से औद्योगिक नीति के विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सम्मिलित रूप से कार्य करते हैं। इस ढांचे का ध्येय व्यापारिक सुगमता को बढ़ाना है।

71. (4) निर्यात संवर्धन और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकरण।
पूर्व की नीतियां मुख्य रूप से 'आयात प्रतिस्थापन' पर केंद्रित थीं, जहाँ वस्तुओं को देश के भीतर निर्मित कर विदेशी मुद्रा बचाने का प्रयास किया जाता था। हालांकि, 'मेक इन इंडिया' ने इस दृष्टिकोण को परिवर्तित करते हुए निर्यात संवर्धन पर विशेष बल दिया। इसका लक्ष्य भारतीय विनिर्माण को वैश्विक गुणवत्ता मानकों के अनुरूप बनाना और इसे अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखला का अंग बनाना है। यह पहल घरेलू बाजार तक सीमित रहने के स्थान पर विश्व भर के बाजारों हेतु उत्पादन करने के लिए उद्योगों को प्रोत्साहित करती है।

72. (1) I, III और IV
वैश्वीकरण ने भारतीय बाजार में अंतरराष्ट्रीय ब्रांडों और उच्च गुणवत्ता वाली वस्तुओं की उपलब्धता बढ़ाई है, जिससे उपभोक्ताओं को लाभ प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही, इसने घरेलू लघु उद्योगों हेतु चुनौतियां भी प्रस्तुत की हैं क्योंकि उन्हें अब वैश्विक स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धी फर्मों का सामना करना पड़ता है। अनुचित व्यापार प्रथाओं को नियंत्रित करने हेतु प्रतिस्पर्धा आयोग की स्थापना आवश्यक हो गई। हालांकि, इसने सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों का व्यापक विस्तार किया है। गरीबी में कमी आई है, परंतु आय असमानता पूर्णतः समाप्त नहीं हुई है।

Click Here to Buy book on Amazon

अनुज्ञप्ति प्रणाली के वास्तविक कार्यकरण का गहन अध्ययन किया। आबिद हुसैन समिति ने लघु उद्योगों की समस्याओं और उनके सर्वांगीण विकास हेतु रणनीतियां सुझाईं। इन समितियों की सिफारिशों ने समय-समय पर सरकार को नीतियों में सुधार हेतु आवश्यक निर्देश दिए।

91. (4) सेवा क्षेत्र
1991 के आर्थिक सुधारों के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था में सर्वाधिक प्रभावशाली परिवर्तन सेवा क्षेत्र की असाधारण वृद्धि रही है। सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, बैंकिंग और बीमा जैसे क्षेत्रों ने अत्यंत तीव्र गति से विस्तार किया और भारत सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र के योगदान के मामले में विश्व के शीर्ष देशों में सम्मिलित हो गया। विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर अपेक्षा के अनुरूप नहीं रही, जबकि कृषि की हिस्सेदारी निरंतर न्यून होती गई। वर्तमान में सेवा क्षेत्र भारत की कुल आय का आधे से अधिक भाग प्रदान करता है।

92. (2) केवल IV और V
वर्ष 2000 के पश्चात से भारत में विदेशी निवेश की प्रवृत्ति में निरंतर वृद्धि दृष्टिगोचर हुई है, जिसमें सेवा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों का पूर्ण वर्चस्व रहा है। अधिकांश क्षेत्रों में अब 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति है, परंतु यह केवल कृषि की ओर निर्देशित नहीं है, बल्कि विनिर्माण और सेवाओं में भी समान रूप से विस्तृत है। इसके अतिरिक्त, भारत की वर्तमान नीति विदेशी निवेशकों को अपने अर्जित मुनाफे को वापस अपने देश ले जाने की व्यापक स्वतंत्रता प्रदान करती है। अतः, मुनाफे की वापसी पर कड़े प्रतिबंधों की धारणा पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है।

93. (3) ₹100 करोड़
स्टार्टअप इंडिया पहल के अंतर्गत किसी इकाई को 'स्टार्टअप' के लाभ प्राप्त करने हेतु कुछ विशिष्ट वित्तीय सीमाएं निर्धारित की गई हैं। डीपीआईआईटी की परिभाषा के अनुसार, किसी भी स्टार्टअप का वार्षिक टर्नओवर किसी भी वित्तीय वर्ष में 100 करोड़ रुपये से अधिक नहीं होना चाहिए। यदि टर्नओवर इस निर्धारित सीमा को पार कर जाता है, तो वह इकाई स्टार्टअप के दर्जे से बाहर हो जाती है और सामान्य कॉर्पोरेट नियमों के अधीन आ जाती है। यह सीमा इसलिए है ताकि सरकारी सहायता केवल उभरते उद्यमों तक सीमित रहे।

94. (3) I और II दोनों
एमआरटीपी अधिनियम 1969 को तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण को रोकने और अनुचित व्यापार प्रथाओं पर लगाम लगाने हेतु निर्मित किया गया था। यह पुराने नियंत्रित आर्थिक ढांचे का एक मुख्य स्तंभ था। हालांकि, उदारीकरण के पश्चात बाजार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता अनुभव हुई, जिसके परिणामस्वरूप इसे प्रतिस्पर्धा अधिनियम 2002 द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया। नवीन कानून केवल एकाधिकार को रोकने के स्थान पर बाजार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करने और उपभोक्ता हितों की रक्षा पर केंद्रित है।

95. (1) I, II और III
प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकर्षित करने हेतु एक विशाल और निरंतर बढ़ता हुआ बाजार सबसे प्रमुख कारक सिद्ध होता है। निवेशक प्रायः उन देशों को वरीयता देते हैं जहाँ कुशल किंतु किफायती श्रम प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक स्थिरता और नीतियों में निरंतरता निवेशकों को दीर्घकालिक सुरक्षा का विश्वास दिलाती है। इसके विपरीत, अत्यधिक उच्च कर दरें और बहुत कठोर श्रम कानून निवेश के मार्ग में गंभीर बाधा उत्पन्न करते हैं क्योंकि वे व्यवसाय संचालन की लागत को अनियंत्रित रूप से बढ़ा देते हैं।

96. (2) लघु उद्यम
2020 के नवीन एमएसएमई वर्गीकरण के अनुसार, 'लघु' उद्यम वे इकाइयाँ हैं जिनमें संयंत्र और मशीनरी में निवेश 10 करोड़ रुपये से न्यून है और जिनका वार्षिक टर्नओवर 50 करोड़ रुपये के भीतर है। इस प्रश्न में प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार, 8 करोड़ का निवेश और 40 करोड़ का टर्नओवर दोनों ही लघु उद्यम की निर्धारित सीमा के पूर्णतः अंतर्गत आते हैं। यह नवीन वर्गीकरण सुनिश्चित करता है कि उद्यमी अपने व्यवसाय का विस्तार सुगमता से कर सकें और सरकारी लाभों से वंचित न हों। यह मानदंड सभी क्षेत्रों पर लागू है।

97. (2) भारतीय अर्थव्यवस्था को पूर्णतः बंद आत्मनिर्भरता में धकेलना
1991 की नवीन आर्थिक नीति का मूल ध्येय भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व हेतु उन्मुक्त करना था, न कि उसे संकुचित करना। इसके प्रमुख लक्ष्यों में राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करना, विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि करना और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाना सम्मिलित था। उदारीकरण के माध्यम से आयात और निर्यात पर प्रतिबंधों को न्यूनतम किया गया ताकि विदेशी निवेश और अत्याधुनिक तकनीक भारत आ सके। इसका उद्देश्य 'बंद आत्मनिर्भरता' के पुराने प्रारूप को त्यागकर वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में गौरवपूर्ण प्रवेश करना था।

98. (2) II, I, III
भारत में व्यापार सुगमता के सुधारों का एक व्यवस्थित क्रमिक इतिहास रहा है। सर्वप्रथम 2015 में राज्यों हेतु बिजनेस रिफॉर्म एक्शन प्लान प्रारंभ किया गया ताकि जमीनी स्तर पर विनियामक परिवर्तन लाए जा सकें। इन निरंतर प्रयासों के परिणामस्वरूप, भारत ने विश्व बैंक की रैंकिंग में तीव्र प्रगति की और 2017 में प्रथम बार शीर्ष 100 राष्ट्रों की सूची में स्थान बनाया। अंततः, डेटा संबंधी विवादों के कारण विश्व बैंक ने 2021 में इस प्रतिवेदन का प्रकाशन स्थगित कर दिया। यह कालक्रम दर्शाता है कि भारत ने वैश्विक मानक अपनाए हैं।

99. (3) विनिर्माण के लिए तैयार उपयोगिताओं के साथ पूर्व-निर्मित फैक्ट्री शेड।
"प्लग एंड प्ले" बुनियादी ढांचा एक ऐसी आधुनिक औद्योगिक संकल्पना है जहाँ उद्यमियों को पूर्व से निर्मित फैक्ट्री शेड, विद्युत, जल और संचार की समस्त अनिवार्य सुविधाओं के साथ उपलब्ध कराए जाते हैं। इसमें उद्यमी को बुनियादी ढांचे

Downloaded from www.pdf.tube

रूप से निर्मित किया गया है। यह उच्च क्षमता वाले वैगनों के माध्यम से रसद समय को न्यून कर देगा, जिससे निर्यात और आयात में होने वाली रसद लागत में भारी बचत होगी।

82. (1) I, II, III, IV
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर का भौगोलिक विस्तार उत्तर से दक्षिण की ओर एक विशिष्ट संरेखण का पालन करता है। यह उत्तर प्रदेश और हरियाणा के औद्योगिक क्षेत्रों से प्रारंभ होकर राजस्थान के विस्तृत औद्योगिक मैदानों से होकर गुजरता है। इसके पश्चात यह गुजरात के बंदरगाहों और औद्योगिक केंद्रों को जोड़ते हुए अंततः महाराष्ट्र के मुंबई तक पहुँचता है। यह क्रम न केवल माल के सुगम परिवहन हेतु महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारत के सबसे विकसित राज्यों को एक आर्थिक सूत्र में पिरोता है। विकसित होने वाले स्मार्ट शहर इसी क्रम में स्थित हैं।

83. (3) औद्योगिक गलियारा कार्यक्रम
औद्योगिक गलियारा कार्यक्रम भारत में एक नवीन अवधारणा है जो विनिर्माण केंद्रों को तीव्र परिवहन नेटवर्क से जोड़ती है। इसका मुख्य उद्देश्य माल के उत्पादन और उसके वितरण के मध्य लगने वाले समय एवं लागत को न्यूनतम करना है। यह योजना समर्पित माल ढुलाई गलियारों के समीप औद्योगिक क्लस्टर, स्मार्ट शहर और लॉजिस्टिक्स पार्क विकसित करने पर केंद्रित है। यह एकीकृत दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि उद्योग न केवल विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे का लाभ उठाएं, बल्कि बंदरगाहों तक उनकी पहुँच भी सुगम हो। यह भारत को विनिर्माण हब बनाएगा।

84. (4) उपजाऊ भूमि का अधिग्रहण जिससे किसानों का विस्थापन हो रहा है।
विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना भारत में प्रायः विवादों के घेरे में रही है, जिसका मुख्य कारण भूमि अधिग्रहण से संबद्ध समस्याएं हैं। इन विशाल परियोजनाओं हेतु बड़े पैमाने पर उपजाऊ कृषि भूमि का अधिग्रहण किया गया, जिससे स्थानीय किसानों का विस्थापन हुआ और उनकी आजीविका पर संकट उत्पन्न हुआ। आलोचकों का तर्क है कि इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई है और भूमि उपयोग में होने वाला यह परिवर्तन सामाजिक तनाव उत्पन्न करता है। हालांकि ये क्षेत्र निर्यात हेतु आवश्यक हैं, परंतु उचित पुनर्वास की मांग एक गंभीर मुद्दा है।

85. (3) केवल I और II
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम भारतीय अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद और निर्यात में असाधारण योगदान देते हैं। कुल निर्यात में इनकी हिस्सेदारी 40 प्रतिशत से अधिक है, जो इन्हें विदेशी मुद्रा अर्जन का प्रमुख स्रोत बनाती है। कृषि के पश्चात यह क्षेत्र सर्वाधिक रोजगार प्रदान करता है, जिससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में आजीविका सुरक्षित होती है। हालांकि, तकनीकी पिछड़ेपन और ऋण की न्यूनता जैसी समस्याएं अभी भी इन उद्यमों हेतु गंभीर चुनौती बनी हुई हैं। वे तकनीकी परिवर्तनों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं।

86. (2) केवल अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमी
स्टैंड-अप इंडिया योजना भारत सरकार की एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य समाज के उन वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ना है जो पारंपरिक रूप से उद्यमिता से दूर रहे हैं। यह योजना विशेष रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों को अपनी नवीन इकाइयां स्थापित करने हेतु 10 लाख से 1 करोड़ रुपये तक का ऋण प्रदान करती है। प्रत्येक बैंक शाखा को इन श्रेणियों के कम से कम दो व्यक्तियों को ऋण देना अनिवार्य है। इसका लक्ष्य जमीनी स्तर पर आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है।

87. (4) इंग्लैंड और स्विट्ज़रलैंड
1991 के ऐतिहासिक भुगतान संतुलन संकट के दौरान, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार इतना न्यून हो गया था कि वह केवल दो सप्ताह के आयात हेतु पर्याप्त था। इस आपातकालीन स्थिति से निपटने और अंतरराष्ट्रीय ऋण अदायगी में चूक से बचने हेतु, भारत सरकार को अपना भौतिक स्वर्ण भंडार गिरवी रखना पड़ा। भारतीय रिजर्व बैंक ने लगभग 47 टन सोना बैंक ऑफ इंग्लैंड और यूनियन बैंक ऑफ स्विट्ज़रलैंड के पास सुरक्षित भेजा था। इस साहसिक कदम ने देश को दिवालिया होने से बचाया और आर्थिक सुधारों हेतु समय प्रदान किया।

NODIA

88. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
'मेक इन इंडिया' का मुख्य लक्ष्य भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करना है, जिसके लिए बड़े पैमाने पर पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है। यह निवेश तभी संभव है जब व्यापार करने की प्रक्रियाएं सरल, तीव्र और पारदर्शी हों। यही कारण है कि यह पहल ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग में सुधार पर विशेष बल देती है। लालफीताशाही को कम करना, अनुज्ञप्ति को सुगम बनाना और डिजिटल सिंगल विंडो प्रणाली लागू करना इसके प्रमुख अंग हैं। अनुकूल नियामक वातावरण विदेशी निवेशकों को आकर्षित करता है।

89. (3) पीएम-किसान (PM-KISAN)
मेक इन इंडिया, पीएलआई योजना और राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास कार्यक्रम सभी औद्योगिक विकास, विनिर्माण और बुनियादी ढांचे के विस्तार से संबंधित महत्वपूर्ण पहलें हैं। इनका साझा उद्देश्य देश की औद्योगिक क्षमता को बढ़ाना और विनिर्माण क्षेत्र में निवेश आकर्षित करना है। इसके विपरीत, पीएम-किसान योजना एक कृषि-केंद्रित पहल है जो सीधे किसानों को उनकी कृषि आवश्यकताओं हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करती है। यह योजना सीधे तौर पर विनिर्माण या औद्योगिक नीति का भाग नहीं है, बल्कि ग्रामीण आय और कृषि स्थिरता पर केंद्रित है।

90. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
भारत के औद्योगिक विकास को आकार देने में विभिन्न विशेषज्ञ समितियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महालनोबिस समिति ने आय के वितरण और जनसामान्य के जीवन स्तर की व्यापक जांच की थी। दत्त समिति ने औद्योगिक अनुज्ञप्ति नीति की विसंगतियों को उजागर किया, जबकि हजारी समिति ने

अध्याय 07

सेवा क्षेत्र : भूमिका, चुनौतियाँ एवं अवसर

1. सेवा क्षेत्र को प्रायः अर्थव्यवस्था के तृतीयक क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प इस क्षेत्र के अंतर्गत वर्गीकृत गतिविधियों की प्राथमिक विशेषता को सबसे सटीक रूप से परिभाषित करता है?
(1) औद्योगिक उत्पादन हेतु प्राथमिक प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर निष्कर्षण और संग्रहण
(2) अमूर्त मूल्य, पेशेवर विशेषज्ञता और अनुभवात्मक सेवाओं का प्रावधान
(3) थोक विक्रय हेतु कच्चे माल का तैयार निर्मित वस्तुओं में औद्योगिक रूपांतरण
(4) बड़े पैमाने पर खुदरा वितरण हेतु कृषि उत्पादों का उन्नत प्रसंस्करण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. सेवा क्षेत्र के वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. तृतीयक सेवाओं में खुदरा और परिवहन जैसी बुनियादी व्यावसायिक सेवाएं शामिल हैं।
II. चतुर्थक सेवाओं में अनुसंधान और विकास जैसी ज्ञान-आधारित गतिविधियां शामिल हैं।
III. पंचमक सेवाओं में नियमित प्रशासनिक कार्य और लिपिकीय कार्य शामिल हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सेवा क्षेत्र का योगदान सर्वाधिक है।
कारण (R): सेवा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में सबसे बड़ा नियोक्ता है, जो कुल कार्यबल के आधे से अधिक को रोजगार देता है।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. सूची I में दिए गए सेवा उप-क्षेत्रों को सूची II में उनकी मुख्य गतिविधियों के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (सेवा उप-क्षेत्र)
A. व्यापार और मरम्मत
B. वित्तीय सेवाएं
C. अचल संपत्ति (रियल एस्टेट)
D. लोक प्रशासन
सूची II: (मुख्य गतिविधि)
i. पूंजी बाजार मध्यस्थता
ii. शासन और वैधानिक सेवाएं
iii. खुदरा वितरण
iv. संपत्ति विकास और प्रबंधन
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. भारत की आर्थिक संरचना के संदर्भ में, सेवा क्षेत्र कुल सकल मूल्य वर्धित (जीबीए) में लगभग कितने प्रतिशत का योगदान देता है?
(1) 20 प्रतिशत से 30 प्रतिशत के बीच
(2) 35 प्रतिशत से 45 प्रतिशत के बीच
(3) 50 प्रतिशत से 60 प्रतिशत के बीच
(4) 65 प्रतिशत से 75 प्रतिशत के बीच
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और सूचना प्रौद्योगिकी सक्षम सेवाओं (आईटीईएस) क्षेत्र के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया (एसटीपीआई) की स्थापना ने निर्यात को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया।
II. इस क्षेत्र का विकास मुख्य रूप से वैश्विक निर्यात के बजाय घरेलू उपभोग से प्रेरित है।
III. इंजीनियरिंग महाविद्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में शुरुआती निवेश के कारण बेंगलुरु एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा।
IV. यह क्षेत्र पूरी तरह से कम लागत वाले लाभ (आर्बिट्राज) से उच्च मूल्य वाले नवाचार और बौद्धिक संपदा निर्माण की ओर स्थानांतरित हो गया है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

Click Here to Buy book on Amazon

(1) I और III
(2) II और IV
(3) I, II और IV
(4) III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. निम्नलिखित में से कौन सा कारक सबसे सटीक रूप से स्पष्ट करता है कि बेंगलुरु भारत में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रमुख केंद्र के रूप में क्यों उभरा?
(1) हार्डवेयर निर्यात के लिए प्रमुख अंतरराष्ट्रीय बंदरगाहों से सामरिक निकटता
(2) किसी अन्य भारतीय राज्य को उपलब्ध नहीं होने वाली विशेष कर छूट का प्रावधान
(3) विशाल डेटा केंद्र स्थापित करने के लिए सस्ती कृषि भूमि की व्यापक उपलब्धता
(4) रक्षा, विमानन और तकनीकी अनुसंधान संस्थानों का पुराना संकेंद्रण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के निम्नलिखित घटनाक्रमों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया (एसटीपीआई) की स्थापना
B. डिजिटल इंडिया पहल का शुभारंभ
C. नेशनल एसोसिएशन ऑफ सॉफ्टवेयर एंड सर्विस कंपनीज (नैसकॉम) की शुरुआत
D. सूचना प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय नीति का निर्माण
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) C, A, D, B
(2) A, C, B, D
(3) C, A, B, D
(4) A, D, C, B
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. वित्तीय सेवाओं के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प पूंजी बाजार के कार्य को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(1) एक वर्ष से कम की परिपक्वता वाले अल्पकालिक ऋण साधनों का उच्च-आवृत्ति व्यापार
(2) मुद्रा नोटों के केंद्रीय निर्गमन की देखरेख करना और विदेशी मुद्रा भंडार का प्रबंधन करना
(3) दीर्घकालिक ऋण और इक्विटी-समर्थित प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय की सुविधा प्रदान करना
(4) क्षेत्रीय कृषि सहकारी समितियों को रियायती अल्पकालिक ऋण सुविधाओं का प्रबंधन करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. भारत में वित्तीय सेवा क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) बीमा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) स्वचालित मार्ग के तहत कड़ाई से 26 प्रतिशत पर सीमित है।
(2) वित्तीय क्षेत्र की संपत्तियों में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की हिस्सेदारी सर्वाधिक है।
(3) भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) जीवन और गैर-जीवन बीमा दोनों को विनियमित करता है।
(4) म्यूचुअल फंड निवेशकों से बचत जुटाकर और उन्हें प्रतिभूतियों में निवेश करके पूंजी बाजार में कार्य करते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. आर्थिक विकास के बावजूद, वैश्विक औसत की तुलना में भारत में बीमा की पैठ अपेक्षाकृत कम बनी हुई है। इसके लिए सबसे उपयुक्त प्राथमिक कारण कौन सा है?
(1) घरेलू बीमा उद्योग के भीतर निजी क्षेत्र की भागीदारी का पूर्ण अभाव
(2) स्थापित भारतीय बीमा कंपनियों में विदेशी निवेश पर सख्त प्रतिबंध
(3) सभी मानक पॉलिसियों के लिए सरकार द्वारा अनिवार्य उच्च प्रीमियम दरें
(4) निम्न जन जागरूकता और बीमा को सुरक्षा के बजाय निवेश के रूप में देखने की धारणा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. भारत में पर्यटन क्षेत्र के विकास की संभावनाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. ई-वीजा सुविधाओं ने विदेशी पर्यटकों के आगमन में उल्लेखनीय सुधार किया है।
II. चिकित्सा पर्यटन पश्चिमी देशों की लागत के एक अंश पर उच्च गुणवत्ता वाली देखभाल से संचालित होता है।
III. विरासत पर्यटन केवल दक्षिण भारतीय राज्यों में ही केंद्रित है।
IV. स्वदेश दर्शन योजना का उद्देश्य विषय-आधारित पर्यटन सर्किट विकसित करना है।
V. पर्यटन क्षेत्र अत्यधिक श्रम-प्रधान है और समावेशी विकास का समर्थन करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, IV, और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. सूची I में दिए गए पर्यटन सर्किटों को सूची II में उनके संबंधित क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पर्यटन सर्किट)
A. मरुस्थल (रेगिस्तान) सर्किट
B. बौद्ध सर्किट
C. तटीय सर्किट
D. हिमालयन सर्किट
सूची II: (संबंधित राज्य/क्षेत्र)

NODIA

i. बिहार और उत्तर प्रदेश
ii. राजस्थान
iii. हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड
iv. ओडिशा और आंध्र प्रदेश
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. भारत चिकित्सा पर्यटन के एक प्रमुख गंतव्य के रूप में उभरा है। निम्नलिखित में से किसे छोड़कर, भारत में इस क्षेत्र को बढ़ावा देने वाले लाभ विद्यमान हैं?
(1) अत्यधिक योग्य और अनुभवी चिकित्सा पेशेवरों की उपलब्धता
(2) विकसित देशों की तुलना में जटिल शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं की बहुत कम लागत
(3) प्रमुख वैकल्पिक शल्य चिकित्सा के लिए न्यूनतम प्रतीक्षा समय
(4) भारत में अभ्यास करने वाले विदेशी डॉक्टरों के लिए किसी भी विनियामक आवश्यकता का अभाव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): भारत में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र नागरिकों द्वारा अपनी जेब से किए जाने वाले उच्च व्यय की चुनौती का सामना कर रहा है।
कारण (R): पिछले दशक में भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय लगातार सकल घरेलू उत्पाद के 5 प्रतिशत से ऊपर रहा है।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. भारतीय स्वास्थ्य क्षेत्र की निम्नलिखित पहलों में से कौन सी एक बेमेल है, क्योंकि यह मुख्य रूप से सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के बजाय तृतीयक विशिष्ट चिकित्सा शिक्षा से संबंधित है?
(1) आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना
(2) प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई)
(3) स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र (एचडब्ल्यूसी)
(4) राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. शिक्षा क्षेत्र और कौशल विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. 2023 तक भारत में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) 50 प्रतिशत को पार कर गया है।
II. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मुख्यधारा की शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण पर बल देती है।
III. स्किल इंडिया मिशन का उद्देश्य उद्योग की आवश्यकताओं और मौजूदा शैक्षिक पाठ्यक्रम के बीच के अंतराल को कम करना है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत, वर्ष 2035 तक व्यावसायिक शिक्षा सहित उच्च शिक्षा में लक्षित सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) कितना है?
(1) 35 प्रतिशत
(2) 50 प्रतिशत
(3) 65 प्रतिशत
(4) 100 प्रतिशत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. भारत में शिक्षा और कौशल क्षेत्र से संबंधित निम्नलिखित प्रमुख नीतियों/मिशनों के सही कालानुक्रमिक अनुक्रम की पहचान कीजिए:
(1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), सर्व शिक्षा अभियान, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, स्किल इंडिया मिशन
(2) सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), स्किल इंडिया मिशन, शिक्षा का अधिकार अधिनियम
(3) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), शिक्षा का अधिकार अधिनियम, सर्व शिक्षा अभियान, स्किल इंडिया मिशन
(4) शिक्षा का अधिकार अधिनियम, सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), स्किल इंडिया मिशन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. भारत के शिक्षा क्षेत्र में 'रोजगार क्षमता अंतराल' एक प्रमुख चुनौती है। इस प्रभाव का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) सैद्धांतिक ज्ञान के स्थान पर व्यवहार कौशल (सॉफ्ट स्किल्स) प्रशिक्षण पर अत्यधिक बल देना
(2) सभी डिग्री पाठ्यक्रमों में निजी क्षेत्र के शिक्षुता कार्यक्रमों का उच्च एकीकरण
(3) तृतीयक संस्थानों की उपेक्षा करते हुए प्राथमिक शिक्षा की ओर अत्यधिक धन का आवंटन
(4) सैद्धांतिक शैक्षणिक पाठ्यक्रम और व्यावहारिक उद्योग आवश्यकताओं के बीच विसंगति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. सूची I में दिए गए खुदरा प्रारूपों को सूची II में उनके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (खुदरा प्रारूप)

Downloaded from www.pdf.tube

के निर्माण में बहुमूल्य समय नष्ट नहीं करना पड़ता, बल्कि वह केवल अपनी मशीनें स्थापित कर तत्काल उत्पादन प्रारंभ कर सकता है। यह प्रारूप औद्योगिक पार्कों में निवेश आकर्षित करने हेतु अत्यंत प्रभावी है क्योंकि यह व्यवसाय प्रारंभ करने की बाधाओं को न्यूनतम करता है। यह त्वरित परिचालन हेतु आदर्श है।

100. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
औद्योगिक विकास की विभिन्न योजनाएं विशिष्ट आर्थिक क्षेत्रों को लक्षित करती हैं। व्हाइट गुड्स के अंतर्गत एसी और एलईडी विनिर्माण को पीएलआई योजना से वित्तीय प्रोत्साहन प्राप्त होता है। पीएम गति शक्ति मुख्य रूप से रसद और कनेक्टिविटी में व्यापक सुधार पर केंद्रित है। मेक इन इंडिया ने विनिर्माण हेतु 27 प्रमुख क्षेत्रों को चिन्हित किया है, जबकि स्टार्टअप इंडिया नवाचार और नवीन उद्यमियों को संबल प्रदान करता है। ये पहलें सम्मिलित रूप से भारत की औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता और आर्थिक संवृद्धि को तीव्र गति देने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

NODIA

II. 'कवच' (टक्कर-रोधी प्रणाली) का कार्यान्वयन
III. ब्रॉड-गेज नेटवर्क का पूर्ण विद्युतीकरण
IV. समर्पित माल ढुलाई गलियारे का मुद्रीकरण
V. पुनर्विकास के लिए अमृत भारत स्टेशन योजना

उपरोक्त में से कौन सी पहल भारतीय रेलवे के परिवर्तन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है?

(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

कथन (A): भारत में दूरसंचार क्षेत्र में मोबाइल क्रांति देखी गई है, जिससे भारत विश्व स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा दूरसंचार बाजार बन गया है।

कारण (R): भारत में मोबाइल डेटा की लागत विश्व में सर्वाधिक है, जिससे दूरसंचार ऑपरेटरों के लिए उच्च राजस्व उत्पन्न होता है।

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. दूरसंचार क्षेत्र में, 'दूरसंचार घनत्व' (टेलीडेंसिटी) शब्द को किस प्रकार परिभाषित किया गया है?

(1) मासिक आधार पर व्यक्तिगत उपयोगकर्ता द्वारा उपभोग किए गए उच्च गति डेटा की औसत मात्रा
(2) प्रति वर्ग किलोमीटर भूमि पर सक्रिय मोबाइल टावरों का औसत भौतिक घनत्व
(3) कुल ग्रामीण मोबाइल उपयोगकर्ताओं के सापेक्ष शहरी मोबाइल ग्राहकों का प्रतिशत अनुपात
(4) किसी निश्चित क्षेत्र में प्रति सौ व्यक्तियों पर टेलीफोन कनेक्शनों की संख्या
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. मीडिया और मनोरंजन उद्योग के डिजिटल की ओर झुकाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

I. ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफॉर्म भारत में डिजिटल मीडिया उपभोग के विकास को अत्यधिक प्रेरित कर रहे हैं।
II. डिजिटल बदलाव के कारण पारंपरिक प्रिंट मीडिया का राजस्व अपने महामारी-पूर्व के उच्चतम स्तर से काफी अधिक हो गया है।
III. सूचना प्रौद्योगिकी नियम 2021 ने ओटीटी प्लेटफॉर्म और डिजिटल समाचार प्रकाशकों के लिए एक स्व-नियामक ढांचा पेश किया।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. मीडिया और मनोरंजन उद्योग के संबंध में, डिजिटल समाचार क्षेत्र में वर्तमान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की सीमा कितनी है?

(1) 26 प्रतिशत
(2) 49 प्रतिशत
(3) 74 प्रतिशत
(4) 100 प्रतिशत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. सूची I में दी गई आउटसोर्सिंग श्रेणियों को सूची II में उनके प्रमुख कार्यों के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (आउटसोर्सिंग श्रेणी)

A. बीपीओ (बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग)
B. केपीओ (नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग)
C. एलपीओ (लीगल प्रोसेस आउटसोर्सिंग)
D. आरपीओ (रिक्रूटमेंट प्रोसेस आउटसोर्सिंग)

सूची II: (प्रमुख कार्य)

i. उन्नत अनुसंधान, डेटा विश्लेषण और डोमेन विशेषज्ञता
ii. अनुबंधों का मसौदा तैयार करना और पेटेंट अनुसंधान
iii. मानव संसाधन भर्ती कार्यों का प्रबंधन करना
iv. ग्राहक सहायता और नियमित बैक-ऑफिस संचालन

(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. भारत को नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग (केपीओ) में मजबूत प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त है। कौन सी अवधारणा सबसे अच्छी तरह स्पष्ट करती है कि वैश्विक फर्में केपीओ सेवाओं के लिए भारत को क्यों चुनती हैं?

(1) प्रतिस्पर्धी लागत पर उपलब्ध अंग्रेजी भाषी, डोमेन-विशिष्ट पेशेवरों का बड़ा समूह
(2) प्रमुख यूरोपीय और एशियाई औद्योगिक विनिर्माण केंद्रों से तत्काल भौगोलिक निकटता
(3) समुद्र के भीतर स्थित उच्च गति वाले फाइबर-ऑप्टिक केबल के वैश्विक नेटवर्क पर सामरिक एकाधिकार
(4) प्रौद्योगिकी क्षेत्र में कार्यरत सभी संस्थाओं के लिए घरेलू कॉर्पोरेट करों का पूर्ण अभाव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारतीय सेवा क्षेत्र के सामने आने वाली चुनौती का गलत वर्णन करता है?

(1) नियमों की बहुलता सेवा प्रदाताओं के लिए अनुपालन

Click Here to Buy book on Amazon

होती है।
सही प्रतिक्रिया का चयन कीजिए:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. कौन सी वित्तीय संस्था भारत में पूंजी बाजारों के लिए प्राथमिक नियामक के रुप में कार्य करती है?
(1) भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी)
(2) भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई)
(3) कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय (एमसीए)
(4) नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. कड़े गुणवत्ता नियंत्रण के बिना उच्च शिक्षण संस्थानों की तीव्र वृद्धि सामान्यतः निम्नलिखित में से किस प्रभाव की ओर ले जाती है?
(1) उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान उत्पादन में आनुपातिक वृद्धि
(2) उद्योग-प्रासंगिक कौशल की कमी वाले स्नातकों का अधिशेष
(3) कॉर्पोरेट प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता की समाप्ति
(4) शैक्षिक सेवाओं के निर्यात में तत्काल वृद्धि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

81. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में अचल संपत्ति और निर्माण क्षेत्र की स्थिति का गलत चित्रण करता है?
(1) यह प्रवासी श्रमिकों पर अत्यधिक निर्भर है।
(2) रेरा (RERA) की शुरुआत ने डेवलपर्स की जवाबदेही कम कर दी है।
(3) इसका 250 से अधिक सहायक उद्योगों के साथ अग्रगामी और पश्चगामी जुड़ाव है।
(4) यह सकल पूंजी निर्माण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

82. भारत के सेवा निर्यात की निम्नलिखित विशेषताओं को पढ़िए:
I. सॉफ्टवेयर सेवाएं सबसे बड़े घटक का निर्माण करती हैं।
II. यात्रा और पर्यटन सेवाओं का निर्यात वैश्विक महामारियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।
III. वस्तु निर्यात की तुलना में वैश्विक सेवा निर्यात में भारत की हिस्सेदारी अधिक है।
IV. पेशेवर और प्रबंधन परामर्श सेवाएं तेजी से बढ़ते घटक हैं।
V. भारत सॉफ्टवेयर सेवाओं का निर्यात करने के बजाय उनका अधिक आयात करता है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

83. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सेवा क्षेत्र में रोजगार की गुणवत्ता में सुधार हेतु सर्वोत्तम रणनीति को दर्शाता है?
(1) सभी सेवा और विनिर्माण उद्योगों में स्वचालन के सभी रुपों पर प्रतिबंध लगाना
(2) सख्त प्रशासनिक उपायों के माध्यम से ग्रामीण-से-शहरी प्रवासन को प्रतिबंधित करना
(3) पोर्टेबल सामाजिक सुरक्षा और कौशल उन्नयन के माध्यम से गिग कार्य का औपचारिकीकरण करना
(4) सेवाओं में अधिक भर्ती को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय न्यूनतम मजदूरी कम करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. भविष्य के अवसरों के संदर्भ में 'हरित सेवाएं' (Green Services) की अवधारणा में मुख्य रुप से शामिल हैं:
(1) घने शहरी क्षेत्रों में नए औद्योगिक पैमाने के कृषि फार्मों का नेटवर्क स्थापित करना
(2) वैश्विक खुदरा क्षेत्र में हरे रंग की बायोडिग्रेडेबल पैकेजिंग का अनिवार्य उपयोग
(3) सभी भौतिक परिवहन बुनियादी ढांचे को पर्यावरण के अनुकूल रंगों से रंगना
(4) स्थिरता का समर्थन करने वाली सेवाएं, जैसे ऊर्जा ऑडिटिंग, ईएसजी परामर्श और हरित वित्त
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. डिजिटल प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था मॉडल के बजाय पारंपरिक सेवाओं से संबंधित होने के कारण निम्नलिखित में से कौन सा एक बेमेल है?
(1) स्विगी
(2) अर्बन कंपनी
(3) इंडिया पोस्ट
(4) ओला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

86. व्यापक सेवा क्षेत्र के भीतर किस उप-क्षेत्र में भारत में कोविड-19 महामारी के दौरान सर्वाधिक संकुचन देखा गया?
(1) सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और आईटीईएस
(2) व्यापार, होटल, परिवहन और संचार
(3) वित्तीय, अचल संपत्ति और व्यावसायिक सेवाएं
(4) लोक प्रशासन और रक्षा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

87. अपने वैश्विक ग्राहकों को तकनीकी सहायता प्रदान करने हेतु बेंगलुरु में एक सहायक कंपनी खोलने वाली विदेशी सॉफ्टवेयर कंपनी जीएटीएस आपूर्ति के किस मोड का उदाहरण है?
(1) मोड 1
(2) मोड 2

है जिसका स्वामित्व विशेष रूप से बहुराष्ट्रीय क्रेडिट कार्ड कंपनियों के पास है।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. भारत में डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ी निम्नलिखित संस्थाओं और प्रौद्योगिकियों को पढ़िए:
I. भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई)
II. भारत बिल भुगतान प्रणाली (बीबीपीएस)
III. आधार सक्षम भुगतान प्रणाली (एईपीएस)
IV. सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (ई-रुपी)
V. सोसाइटी फॉर वर्ल्डवाइड इंटरबैंक फाइनेंशियल टेलीकम्युनिकेशन (स्विफ्ट)
उपरोक्त में से कौन से घटक मुख्य रूप से भारत के घरेलू डिजिटल बुनियादी ढांचे के भीतर विकसित या संचालित हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. सेवा क्षेत्र और रोजगार के बीच संबंध के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: पिछले दो दशकों में भारत के आर्थिक विकास की 'रोजगार विहीन विकास' के रूप में आलोचना की गई है क्योंकि सेवा क्षेत्र में रोजगार लोच कम है।
कथन II: कृषि से बाहर निकलने वाले अधिकांश कार्यबल को उच्च-कौशल वाले सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र द्वारा सफलतापूर्वक समाहित कर लिया गया है।
सही प्रतिक्रिया का चयन कीजिए:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सेवा क्षेत्र के भीतर गिग अर्थव्यवस्था के तीव्र विस्तार का श्रम बाजार पर निम्नलिखित में से कौन सा प्राथमिक प्रभाव पड़ा है?
(1) क्षेत्र के सभी कम-कुशल श्रमिकों के लिए गारंटीकृत दीर्घकालिक नौकरी सुरक्षा का प्रावधान
(2) सभी प्रमुख सेवा उद्योगों में निरंतर बने रहने वाले लिंग आधारित वेतन अंतर का पूर्ण उन्मूलन
(3) लचीले अवसरों में वृद्धि किंतु सामाजिक सुरक्षा और लाभों की कमी पर चिंताएं
(4) डिजिटल सेवाओं में लगे शहरी कार्यबल का शत-प्रतिशत तीव्र औपचारिकीकरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. सेवाओं के व्यापार पर सामान्य समझौते (जीएटीएस) के तहत आपूर्ति के चार मोड को मोड 1 से मोड 4 तक उनके सही क्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. वाणिज्यिक उपस्थिति
B. विदेशों में उपभोग
C. प्राकृतिक व्यक्तियों की उपस्थिति
D. सीमा पार आपूर्ति
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) D, B, A, C
(2) A, B, C, D
(3) D, A, B, C
(4) B, D, C, A
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. सेवाओं के व्यापार पर सामान्य समझौते (जीएटीएस) के तहत, कुशल पेशेवरों के अपने विशाल समूह को देखते हुए भारत ने ऐतिहासिक रूप से किस मोड में उदारीकरण के लिए सर्वाधिक बल दिया है?
(1) मोड 1
(2) मोड 2
(3) मोड 3
(4) मोड 4
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. सूची I में दी गई जीएटीएस शब्दावली को सूची II में उनके अर्थों के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (जीएटीएस शब्दावली)
A. सर्वाधिक पसंदीदा राष्ट्र (MFN)
B. राष्ट्रीय व्यवहार
C. बाजार पहुंच
D. पारदर्शिता
सूची II: (अर्थ)
i. विदेशी सेवाओं के साथ घरेलू सेवाओं की तुलना में कम अनुकूल व्यवहार नहीं करना
ii. सेवाओं के व्यापार को प्रभावित करने वाले सभी प्रासंगिक कानूनों और विनियमों को प्रकाशित करना
iii. एक सदस्य की सेवाओं के साथ किसी अन्य सदस्य की सेवाओं की तुलना में कम अनुकूल व्यवहार नहीं करना
iv. विदेशी सेवा प्रदाताओं को घरेलू बाजार में प्रवेश की अनुमति देना
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. सेवा क्षेत्र में भविष्य के अवसरों के रूप में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के अनुप्रयोगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

NODIA

63. वैश्विक बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (बीपीओ) क्षेत्र में भारत के पास उपलब्ध लाभों में से कौन सा एक बेमेल है?
(1) डेटा गोपनीयता कानूनों का पूर्ण अभाव जिससे संचालन अनियंत्रित रहता है
(2) समय क्षेत्र का अंतर जो पश्चिमी ग्राहकों के लिए 24/7 सेवा संचालन की अनुमति देता है
(3) स्नातकों के बीच अंग्रेजी भाषा में उच्च दक्षता
(4) बड़े रोजगार योग्य कार्यबल के साथ अनुकूल जनसांख्यिकीय लाभांश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. सूची I में दी गई सेवा क्षेत्र की चुनौतियों को सूची II में उनके प्रभावों के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (सेवा क्षेत्र की चुनौती)
A. विनियामक बाधाएं
B. कौशल की कमी
C. बुनियादी ढांचे की कमी
D. अनौपचारिकीकरण
सूची II: (प्रभाव)
i. डिजिटल वितरण की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में बाधा डालता है
ii. परियोजना मंजूरी और व्यावसायिक संचालन में विलंब
iii. रोजगार क्षमता को कम करता है और उच्च-मूल्य वाली सेवाओं में संक्रमण को सीमित करता है
iv. गिग और सेवा श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा की कमी का कारण बनता है
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. विशिष्ट आर्थिक प्रदर्शन के आधार पर, भारत की सबसे महत्वपूर्ण और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी सेवा निर्यात श्रेणी कौन सी है?
(1) वैश्विक बैंकिंग संस्थानों के लिए व्यापक वित्तीय और बीमा सेवाएं
(2) दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं
(3) बड़े पैमाने पर अंतरराष्ट्रीय परिवहन और बहु-मोडल रसद सेवाएं
(4) बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए विशेष निर्माण और सिविल इंजीनियरिंग सेवाएं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. भारत में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के तीव्र विस्तार से सेवा क्षेत्र पर निम्नलिखित में से कौन सा द्वितीयक प्रभाव पड़ा है?
(1) डिजिटल भुगतान गेटवे और स्थानीय वितरण नेटवर्क की मांग में वृद्धि
(2) तीसरे पक्ष की रसद और वेयरहाउसिंग सेवाओं की मांग में तेज और स्थायी गिरावट
(3) भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में असंगठित खुदरा स्टोरों का पूर्ण और व्यवस्थित उन्मूलन
(4) पेशेवर डिजिटल मार्केटिंग और डेटा एनालिटिक्स विशेषज्ञों की आवश्यकता में महत्वपूर्ण कमी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. भारत के यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस) के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह एक ही मोबाइल एप्लीकेशन के माध्यम से कई बैंक खातों तक पहुँचने की अनुमति देता है।
II. यह प्रत्यक्ष रूप से भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा संचालित किया जाता है।
III. यह 24/7 धन के वास्तविक समय (रियल-टाइम) रूटिंग की सुविधा प्रदान करता है।
IV. इसे कई विदेशी देशों की भुगतान प्रणालियों के साथ एकीकृत किया गया है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. सेवा क्षेत्र में 'निम्न गुणवत्ता वाली नौकरियों' की समस्या मुख्य रूप से किस तथ्य को उजागर करती है?
(1) सेवा क्षेत्र की नौकरियों के लिए पारंपरिक कृषि नौकरियों की तुलना में काफी कम शैक्षिक योग्यता की आवश्यकता होती है
(2) सूचना प्रौद्योगिकी पेशेवरों को उनके विनिर्माण समकक्षों की तुलना में लगातार काफी कम भुगतान किया जाता है
(3) सेवा क्षेत्र की नौकरियां देश के सकल घरेलू उत्पाद की आधिकारिक गणना में योगदान नहीं देती हैं
(4) कम वेतन और असुरक्षा के साथ असंगठित खुदरा और घरेलू सहायता क्षेत्रों में कार्यबल का संकेंद्रण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. कौन सा युग्म सेवा क्षेत्र में भविष्य के अवसर को उसके संबंधित डोमेन के साथ सही ढंग से सुमेलित करता है?
(1) प्रिसिजन फार्मिंग एनालिटिक्स – वित्तीय सेवाएं
(2) एल्गोरिथम हाई-फ्रीक्वेंसी ट्रेडिंग – स्वास्थ्य सेवाएं
(3) हरित सेवाएं (कार्बन ऑडिटिंग) – पर्यावरणीय परामर्श
(4) रोबोटिक सहायता प्राप्त शल्य चिकित्सा – दूरसंचार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. सेवाओं के व्यापार पर सामान्य समझौते (जीएटीएस) के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: जीएटीएस विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) की एक संधि है जो बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली को सेवा क्षेत्र तक विस्तारित करती है।
कथन II: जीएटीएस सभी सदस्य देशों को उनके सार्वजनिक स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्रों का निजीकरण करने के लिए बाध्य करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

V. आयुष्मान भारत योजना ने कमजोर परिवारों पर वित्तीय बोझ कम किया है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) I, II, IV और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. भारत में उच्च शिक्षा के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: भारत में विदेशी विश्वविद्यालयों की उपस्थिति वर्तमान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा पूर्णतः प्रतिबंधित है।
कथन II: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शीर्ष वैश्विक विश्वविद्यालयों को भारत में परिसर स्थापित करने की अनुमति देती है।
सही प्रतिक्रिया का चयन कीजिए:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में संगठित खुदरा को असंगठित खुदरा से सही ढंग से अलग करता है?
(1) संगठित खुदरा कॉर्पोरेट प्रबंधन और जटिल आपूर्ति श्रृंखलाओं का उपयोग करता है; असंगठित खुदरा स्वामी-प्रबंधित दुकानों का उपयोग करता है।
(2) संगठित खुदरा पूरी तरह से कर जाल के बाहर कार्य करता है, जबकि असंगठित खुदरा मानक कॉर्पोरेट करों का भुगतान करता है।
(3) संगठित खुदरा विस्तार विशेष रूप से 10 मिलियन से अधिक आबादी वाले टियर-1 शहरों तक ही सीमित है।
(4) संगठित खुदरा किसी भी परिस्थिति में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति नहीं देता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. सूची I में दिए गए अचल संपत्ति शब्दों को सूची II में उनकी परिभाषाओं के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (अचल संपत्ति शब्द)
A. आरईआईटी (REIT)
B. रेरा (RERA)
C. किफायती आवास
D. फ्लोर स्पेस इंडेक्स (FSI)
सूची II: (परिभाषा)
i. किसी भवन के कुल फर्श क्षेत्र का उस भूमि के आकार से अनुपात जिस पर वह निर्मित है
ii. एक निवेश माध्यम जो आय उत्पन्न करने वाली अचल संपत्ति का स्वामित्व रखता है और उसका संचालन करता है
iii. घर खरीदारों के हितों की रक्षा करने और निवेश को बढ़ावा देने के लिए स्थापित एक विनियामक प्राधिकरण
iv. आवास इकाइयाँ जो समाज के उस वर्ग के लिए सस्ती हैं जिनकी आय औसत घरेलू आय से कम है
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): रेलवे और विमानन बुनियादी ढांचे के विकास का समग्र अर्थव्यवस्था पर गहरा गुणक प्रभाव पड़ता है।
कारण (R): बेहतर परिवहन बुनियादी ढांचा रसद लागत को कम करता है, बाजार पहुंच बढ़ाता है और पर्यटन तथा संबद्ध सेवाओं को प्रोत्साहित करता है।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. भारत में दूरसंचार क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) भारत में दूरसंचार क्षेत्र कुछ प्रमुख निजी कंपनियों और सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं के साथ एक अल्पाधिकार के रूप में कार्य करता है।
(2) यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड (यूएसओएफ) का उपयोग ग्रामीण और दूरदराज के दूरसंचार बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण के लिए किया जाता है।
(3) भारत में 5G रोलआउट पूरी तरह से पड़ोसी देशों से आयातित तकनीक पर निर्भर है और इसके कोई घरेलू परीक्षण नहीं हुए हैं।
(4) इस क्षेत्र में वॉयस-केंद्रित राजस्व से डेटा-केंद्रित राजस्व की ओर एक बड़ा बदलाव देखा गया है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. मीडिया और मनोरंजन उद्योग में, 'कॉर्ड-कटिंग' (cord-cutting) शब्द का तात्पर्य है:
(1) पुरानी एनालॉग फिल्म रीलों को हाई-डेफिनिशन डिजिटल प्रारूपों में परिवर्तित करने की प्रक्रिया
(2) वायरलेस नेटवर्क स्थापित करने के लिए ब्रॉडबैंड फाइबर-ऑप्टिक केबलों को भौतिक रूप से हटाना
(3) राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान उपग्रह टेलीविजन प्रसारण पर सख्त सरकारी सेंसरशिप
(4) इंटरनेट आधारित स्ट्रीमिंग सेवाओं के पक्ष में पारंपरिक केबल सदस्यता रद्द करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

का बोझ उत्पन्न करती है।
(2) अपर्याप्त भौतिक अवसंरचना ग्रामीण क्षेत्रों में सेवाओं के विकास को बाधित करती है।
(3) यह क्षेत्र अत्यधिक कुशल, रोजगार योग्य स्नातकों की भारी अधिक आपूर्ति से ग्रस्त है।
(4) असमान विकास के कारण विशिष्ट शहरी केंद्रों में सेवाओं का संकेंद्रण हुआ है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. सेवा क्षेत्र में बुनियादी ढांचे की चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. संगठित खाद्य खुदरा बिक्री को प्रभावित करने वाली अपर्याप्त शीत श्रृंखला (कोल्ड चेन) सुविधाएं।
II. वैश्विक मानकों की तुलना में उच्च रसद (लॉजिस्टिक्स) लागत।
III. डिजिटल सेवाओं के निर्यात में बाधा डालने वाले गहरे पानी के बंदरगाहों की कमी।
IV. डिजिटल समावेशन को प्रभावित करने वाले दूरदराज के क्षेत्रों में सीमित अंतिम-मील इंटरनेट कनेक्टिविटी।
उपरोक्त में से कौन से कथन सेवाओं के लिए वास्तविक बुनियादी ढांचे की बाधाओं को दर्शाते हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन सा भारतीय सेवा क्षेत्र में 'रोजगार गुणवत्ता चिंता' का सबसे उपयुक्त विवरण है?
(1) सृजित नौकरियों की कुल संख्या प्रतिवर्ष घट रही है।
(2) यह क्षेत्र केवल उच्च वेतन वाली नौकरियां पैदा करता है, जिससे अकुशल कार्यबल अलग-थलग पड़ जाता है।
(3) सेवा क्षेत्र की अधिकांश नौकरियां अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में केंद्रित हैं जिनमें सामाजिक सुरक्षा लाभों का अभाव है।
(4) स्वचालन (ऑटोमेशन) ने आतिथ्य क्षेत्र में मानव श्रम की आवश्यकता को पूरी तरह समाप्त कर दिया है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. भारत के सेवा निर्यात की निम्नलिखित श्रेणियों को उनकी विशिष्ट मात्रा (उच्चतम से निम्नतम) के आधार पर सही क्रम में चुनिए:
(1) दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं → व्यावसायिक सेवाएं → यात्रा
(2) यात्रा → व्यावसायिक सेवाएं → दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं
(3) व्यावसायिक सेवाएं → यात्रा → दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं
(4) दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं → यात्रा → व्यावसायिक सेवाएं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. सेवाओं के वैश्विक व्यापार में भारत की स्थिति को दर्शाने वाले सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) वैश्विक सेवा निर्यात में हिस्सा – लगभग 15 प्रतिशत
(2) सेवाओं में व्यापार संतुलन – लगातार घाटे में
(3) प्रमुख निर्यात श्रेणी – वित्तीय सेवाएं
(4) सेवा निर्यात में वैश्विक रैंक – सामान्यतः शीर्ष 10 के भीतर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. सूची I में दिए गए वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) खंडों को सूची II में उनके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (फिनटेक खंड)
A. पीयर-टू-पीयर (P2P) ऋण
B. इंश्योरटेक
C. नियोबैंक
D. वेल्थटेक
सूची II: (विवरण)
i. भौतिक शाखाओं के बिना बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने वाले केवल-डिजिटल मंच
ii. व्यक्तिगत उधारकर्ताओं को सीधे ऋणदाताओं से जोड़ने वाले मंच
iii. निवेश प्रबंधन और रोबो-सलाहकार हेतु डिजिटल मंच
iv. बीमा प्रक्रियाओं को सरल और सुगम बनाने वाली तकनीक
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक बेमेल है क्योंकि यह डिजिटल प्लेटफॉर्म मॉडल के बजाय एक पारंपरिक रैखिक व्यापार मॉडल है?
(1) विभिन्न प्रतिस्पर्धी राइड-शेयरिंग और परिवहन सेवाओं को एकीकृत करने वाला एक केंद्रीकृत मोबाइल एप्लीकेशन
(2) तीसरे पक्ष के विक्रेताओं और खरीदारों की विविध श्रृंखला को जोड़ने वाला एक एकीकृत ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस
(3) एक विनिर्माण कंपनी जो अपने स्वयं के भौतिक खुदरा आउटलेट्स के माध्यम से सीधे उत्पाद बेचती है
(4) एक डिजिटल फ्रीलांस मार्केटप्लेस जो स्वतंत्र पेशेवरों को विभिन्न वैश्विक कॉर्पोरेट ग्राहकों के साथ जोड़ता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) ने तीव्र घरेलू विकास और बढ़ती वैश्विक स्वीकार्यता देखी है।
कारण (R): यूपीआई एक मालिकाना, क्लोज्ड-लूप नेटवर्क

Click Here to Buy book on Amazon

सही प्रतिक्रिया का चयन कीजिए:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. 'प्लेटफ़ॉर्म इकोनॉमी' शब्द को सबसे अच्छी तरह से एक ऐसी आर्थिक प्रणाली के रूप में वर्णित किया गया है जो आधारित है:
(1) भारी पूंजीगत वस्तुओं के निर्माण में संलग्न सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों पर
(2) पारंपरिक सरकारी मंडी प्लेटफार्मों पर कृषि वस्तुओं के भौतिक विनिमय पर
(3) पारंपरिक वस्तु विनिमय प्रणालियों पर जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्राओं से पृथक रहती हैं
(4) डिजिटल नेटवर्क पर जो क्रेताओं, विक्रेताओं और सेवा प्रदाताओं के बीच लेनदेन का समन्वय करते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. भविष्य की सेवाओं में एआई की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. जेनरेटिव एआई से ग्राहक सहायता सेवाओं में अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है।
II. एआई कार्यान्वयन सभी अनौपचारिक नौकरियों को तकनीकी नौकरियों में बदलकर रोजगार की गुणवत्ता के मुद्दे को पूर्णतः हल कर देगा।
III. एआई मॉडल को विशाल क्लाउड कंप्यूटिंग बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है, जिससे डेटा सेंटर उद्योग को बढ़ावा मिलता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर, डिजिटल अर्थव्यवस्था को विनियमित करने में सभी ज्ञात चुनौतियां विद्यमान हैं?
(1) डिजिटल सेवाओं की सीमा पार प्रकृति जिसके कारण कराधान की जटिलताएं उत्पन्न होती हैं
(2) डेटा गोपनीयता और स्थानीयकरण की आवश्यकताएं
(3) प्लेटफार्मों द्वारा मूल्य निर्धारण हेतु उपयोग किए जाने वाले एल्गोरिदम की पूर्ण पारदर्शिता
(4) बड़े तकनीकी एग्रीगेटर्स द्वारा एकाधिकारवादी व्यवहार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. सूची I में दिए गए परिवहन उप-क्षेत्रों को सूची II में हाल की पहलों के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (परिवहन उप-क्षेत्र)
A. रेलवे
B. विमानन
C. सड़क मार्ग
D. अंतर्देशीय जलमार्ग
सूची II: (हालिया पहल/अवधारणा)
i. इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह के लिए फास्टैग (FASTag)
ii. जल मार्ग विकास परियोजना
iii. कृषि उड़ान
iv. समर्पित माल ढुलाई गलियारा
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. यदि कोई विदेशी पर्यटक पुष्कर मेला देखने के लिए राजस्थान आता है और स्थानीय हस्तशिल्प खरीदता है, तो इस लेनदेन को जीएटीएस आपूर्ति मोड के तहत किस प्रकार वर्गीकृत किया जाता है?
(1) सीमा पार आपूर्ति (मोड 1)
(2) विदेश में उपभोग (मोड 2)
(3) वाणिज्यिक उपस्थिति (मोड 3)
(4) प्राकृतिक व्यक्तियों की उपस्थिति (मोड 4)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. डिजिटल सेवाओं में भारत के दूरसंचार क्षेत्र के योगदान के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) उच्च ब्रॉडबैंड पहुंच ने निरंतर बने रहने वाले शहरी-ग्रामीण डिजिटल विभाजन को पूर्णतः समाप्त कर दिया है
(2) डिजिटल पहचान और भुगतान इंटरफेस के माध्यम से सार्वजनिक वस्तुओं को वितरित करने हेतु दूरसंचार नेटवर्क का उपयोग
(3) दूरसंचार कंपनियों को किसी भी प्रकार की डिजिटल वित्तीय सेवाएं प्रदान करने से कड़ाई से प्रतिबंधित किया गया है
(4) दूरसंचार क्षेत्र विशेष रूप से सरकार द्वारा संचालित है जिसमें निजी कंपनियों की कोई भागीदारी नहीं है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. सेवा क्षेत्र के संदर्भ में, 'बीपीओ' (BPO) का पूर्ण रूप क्या है?
(1) बेसिक प्रोसेसिंग ऑपरेशंस
(2) ब्रॉडबैंड प्रोटोकॉल ऑप्टिमाइज़ेशन
(3) बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग
(4) बैंकिंग प्रोसीजर ओवरसाइट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. पर्यटन क्षेत्र के आर्थिक प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: पर्यटन परिवहन, हस्तशिल्प और कृषि जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण अप्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करता है।
कथन II: भारी विनिर्माण की तुलना में पर्यटन क्षेत्र को प्रति सृजित नौकरी हेतु अत्यधिक उच्च पूंजी निवेश की आवश्यकता

NODIA

(2) राजस्व की रक्षा हेतु इलेक्ट्रॉनिक प्रसारणों पर कर लगाने के लिए नीतिगत स्थान सुरक्षित रखना
(3) सभी डब्ल्यूटीओ सदस्य देशों को डिजिटल व्यापार हेतु भारतीय रुपये का उपयोग करने के लिए बाध्य करना
(4) यह सुनिश्चित करना कि ऑनलाइन खरीदी गई सभी भौतिक वस्तुएं सीमा शुल्क से पूर्णतः मुक्त रहें
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. हाल ही में चर्चा में रही 'कवच' (Kavach) प्रणाली किस सेवा क्षेत्र के सुरक्षा बुनियादी ढांचे से जुड़ी है?
(1) विमानन क्षेत्र
(2) रेलवे क्षेत्र
(3) दूरसंचार क्षेत्र
(4) बैंकिंग क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

98. डिजिटल अर्थव्यवस्था के संदर्भ में 'यूनिकॉर्न' (unicorn) को किस प्रकार परिभाषित किया जाता है?
(1) 1 अरब डॉलर से अधिक मूल्य वाली निजी स्वामित्व वाली स्टार्टअप कंपनी
(2) डिजिटल क्षेत्र में कार्यरत एक सरकारी स्वामित्व वाला उद्यम
(3) एक डिजिटल प्लेटफॉर्म जिसने शत-प्रतिशत बाजार एकाधिकार प्राप्त कर लिया है
(4) एक ई-कॉमर्स कंपनी जिसने कभी विदेशी पूंजी नहीं जुटाई है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

99. राजस्थान में एक व्यक्ति क्यूआर कोड का उपयोग करके किसी व्यापारी के खाते में तुरंत धन स्थानांतरित करने हेतु मोबाइल एप्लीकेशन का उपयोग करता है। यह प्रक्रिया किस तकनीक पर आधारित है?
(1) एनईएफटी (NEFT)
(2) आरटीजीएस (RTGS)
(3) यूपीआई (UPI)
(4) स्विफ्ट (SWIFT)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. सेवा क्षेत्र में क्लाउड कंप्यूटिंग के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) इसके लिए सभी व्यवसायों को अपने परिसर में व्यापक भौतिक सर्वर बनाए रखने की आवश्यकता होती है
(2) भारत में सभी वित्तीय और बैंकिंग संस्थानों द्वारा क्लाउड सेवाओं के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध है
(3) यह एक पुरानी तकनीक है जिसे पूर्णतः विकेंद्रीकृत एज कंप्यूटिंग द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है
(4) संसाधनों तक स्केलेबल, ऑन-डिमांड पहुंच स्टार्टअप्स के लिए पूंजीगत व्यय को कम करती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

(3) मोड 3
(4) मोड 4
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र की क्षमता के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: बदलती जनसांख्यिकी और गैर-संचारी रोगों का बढ़ता बोझ घरेलू स्वास्थ्य देखभाल बाजार का विस्तार कर रहा है।
कथन II: निवारक स्वास्थ्य देखभाल में निवेश तृतीयक उपचारात्मक देखभाल की तुलना में कम आर्थिक प्रतिफल वाला सिद्ध हुआ है।
सही प्रतिक्रिया का चयन कीजिए:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. वित्तीय सेवा और उसके प्राथमिक कार्य को दर्शाने वाले सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) वाणिज्यिक बैंकिंग – इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग (आईपीओ) जारी करना
(2) म्यूचुअल फंड – किसानों को अल्पकालिक ऋण प्रदान करना
(3) बीमा – जोखिमों का एकत्रीकरण और वित्तीय हानि का शमन
(4) पेंशन फंड – दैनिक अंतर-बैंक मुद्रा बाजार लेनदेन की सुविधा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

90. खुदरा क्षेत्र में एकल-ब्रांड खुदरा (सिंगल-ब्रांड रिटेल) को निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सबसे सटीक रूप से परिभाषित करता है?
(1) एक खुदरा आउटलेट जो विशेष रूप से विश्व स्तर पर एक विशिष्ट लेबल के तहत ब्रांडेड सामान बेचता है
(2) एक स्टोर जो एक ही छत के नीचे विभिन्न निर्माताओं के उत्पाद बेचता है
(3) एक मंच जो केवल गैर-ब्रांडेड सामान्य वस्तुएं बेचता है
(4) एक थोक बाजार जो विशेष रूप से अन्य व्यवसायों को सामान बेचता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. मीडिया और मनोरंजन उद्योग के डिजिटल बदलाव के बारे में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) ओटीटी प्लेटफार्मों के उदय के कारण पारंपरिक सिनेमाघरों ने अपना संचालन पूर्णतः बंद कर दिया है
(2) डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म भारत में सभी प्रकार के कॉर्पोरेट कराधान से पूर्णतः मुक्त हैं
(3) डिजिटल संक्रमण ने भौतिक संगीत उद्योग के समग्र वैश्विक राजस्व को शून्य कर दिया है
(4) डिजिटल संक्रमण ने सामग्री निर्माण का लोकतंत्रीकरण किया है, जिससे विशिष्ट सामग्री को वैश्विक दर्शक मिले हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

92. विनियामक अधिकारियों द्वारा वित्तीय डेटा हेतु सख्त स्थानीयकरण नियमों (डेटा स्थानीयकरण) के कार्यान्वयन का विदेशी प्रदाताओं पर क्या प्राथमिक प्रभाव पड़ता है?
(1) भारत में विदेशी फर्मों के लिए सभी मौजूदा कर देनदारियों का उन्मूलन
(2) स्थानीय डेटा सर्वर बनाए रखने के लिए परिचालन और बुनियादी ढांचा लागत में वृद्धि
(3) उनकी विनियामक स्थिति का स्वतः ही घरेलू वाणिज्यिक बैंक के रूप में उन्नयन
(4) भारतीय रिजर्व बैंक की विनियामक और वित्तीय देखरेख को पूर्णतः बायपास करने की अनुमति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. भारत के सेवा निर्यात के संदर्भ में, कौन सा भौगोलिक क्षेत्र भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी निर्यात के लिए सबसे बड़ा गंतव्य है?
(1) यूरोपीय संघ
(2) मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका
(3) उत्तरी अमेरिका
(4) दक्षिण-पूर्व एशिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर, सभी सेवा क्षेत्र में ज्ञान-आधारित भविष्य के अवसरों के उदाहरण हैं?
(1) बिग डेटा एनालिटिक्स
(2) ब्लॉकचेन-आधारित स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट्स
(3) साइबर सुरक्षा परामर्श
(4) मैनुअल डेटा एंट्री संचालन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

95. परिवहन सेवाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: समर्पित माल ढुलाई गलियारा (डीएफसी) विशेष रूप से उच्च गति पर यात्री ट्रेनें चलाने हेतु डिज़ाइन किया गया है।
कथन II: डीएफसी का उद्देश्य मौजूदा रेलवे नेटवर्क की भीड़ को कम करना और मालगाड़ियों की औसत गति बढ़ाना है।
सही प्रतिक्रिया का चयन कीजिए:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

96. विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में ई-कॉमर्स अधिस्थगन (मोरेटोरियम) पर भारत द्वारा स्थायी समाधान की वकालत करने का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) भारतीय सीमाओं के भीतर संचालित होने वाली सभी विदेशी ई-कॉमर्स कंपनियों को प्रतिबंधित करना

NODIA

I. स्वास्थ्य सेवा में भविष्यसूचक निदान और व्यक्तिगत उपचार योजनाएं।
II. वित्तीय सेवाओं में स्वचालित अंडरराइटिंग और जोखिम मूल्यांकन।
III. प्राथमिक शिक्षा में सभी मानव शिक्षकों को एआई चैटबॉट्स से पूरी तरह प्रतिस्थापित करना।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन यथार्थवादी निकट-भविष्य के अवसरों को दर्शाते हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. क्लाउड कंप्यूटिंग सेवाओं के संदर्भ में, कौन सा मॉडल इंटरनेट पर वर्चुअलाइज्ड कंप्यूटिंग संसाधन प्रदान करता है, जैसे कि वर्चुअल मशीन और स्टोरेज?
(1) इन्फ्रास्ट्रक्चर एज़ अ सर्विस (IaaS)
(2) प्लेटफॉर्म एज़ अ सर्विस (PaaS)
(3) सॉफ्टवेयर एज़ अ सर्विस (SaaS)
(4) फंक्शन एज़ अ सर्विस (FaaS)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. एक भारतीय कंपनी संयुक्त राज्य अमेरिका में एक ग्राहक के लेखांकन कार्य हेतु जयपुर में एक बैक-ऑफिस स्थापित करती है। मानक आर्थिक वर्गीकरण के अनुसार, यह गतिविधि किस क्षेत्र के अंतर्गत आती है?
(1) प्राथमिक
(2) द्वितीयक
(3) तृतीयक
(4) चतुर्थक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र के योगदान के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह सकल मूल्य वर्धित (जीबीए) में 50 प्रतिशत से अधिक का योगदान देता है।
II. यह अन्य क्षेत्रों की तुलना में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) इक्विटी प्रवाह की उच्चतम मात्रा को आकर्षित करता है।
III. यह भारत के व्यापार घाटे के लिए उत्तरदायी प्राथमिक क्षेत्र है।
IV. इसकी विकास दर कोविड-19 महामारी की पहली लहर के दौरान अत्यधिक लचीली और सकारात्मक बनी रही।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) III और IV
(3) I, II और III
(4) II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. भारत के किस राज्य ने हाल ही में सूचना प्रौद्योगिकी और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के विकास हेतु 'आईस्टार्ट' (iStart) कार्यक्रम जैसी नीतियां शुरू की हैं?
(1) पंजाब
(2) ओडिशा
(3) राजस्थान
(4) झारखंड
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. सूची I में दिए गए वित्तीय बाजार नियामकों को सूची II में उन संस्थाओं के साथ सुमेलित कीजिए जिन्हें वे विनियमित करते हैं और सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (वित्तीय बाजार नियामक)
A. आरबीआई
B. सेबी
C. आईआरडीएआई
D. पीएफआरडीए

सूची II: (विनियमित संस्था)
i. म्यूचुअल फंड
ii. वाणिज्यिक बैंक
iii. राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली
iv. सामान्य बीमा कंपनियां

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर, सभी भारत में पर्यटन क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं?
(1) दूरदराज के विरासत स्थलों तक अपर्याप्त बुनियादी ढांचा और अंतिम-मील कनेक्टिविटी
(2) अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए सुरक्षा और संरक्षा संबंधी चिंताएं
(3) पेशेवर रूप से प्रशिक्षित बहुभाषी पर्यटक गाइडों की कमी
(4) देश के भीतर भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता का अभाव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र की चुनौतियों और अवसरों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. टेलीमेडिसिन शहरी-ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा विभाजन को पाटने का एक बड़ा अवसर प्रदान करती है।
II. भारत ग्रामीण क्षेत्रों में विशिष्ट चिकित्सा पेशेवरों की भारी कमी का सामना कर रहा है।
III. दवा उद्योग पूरी तरह से घरेलू सक्रिय दवा सामग्री (एपीआई) पर निर्भर है।
IV. जिला अस्पतालों के उन्नयन के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) का तेजी से उपयोग किया जा रहा है।

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) अमूर्त मूल्य, पेशेवर विशेषज्ञता और अनुभवात्मक सेवाओं का प्रावधान
अर्थव्यवस्था का सेवा क्षेत्र मुख्य रुप से अमूर्त उत्पादों के निर्माण और वितरण पर केंद्रित है। इसकी प्राथमिक विशेषता भौतिक वस्तुओं के उत्पादन के स्थान पर पेशेवर विशेषज्ञता, तकनीकी ज्ञान और अनुभव आधारित सेवाएं प्रदान करना है। इसमें बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य और सूचना प्रौद्योगिकी जैसी गतिविधियां सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र उपभोक्ताओं को मूल्य प्रदान करने के लिए मानवीय कौशल और तकनीकी नवाचार का उपयोग करता है।

2. (1) केवल I और II
आर्थिक गतिविधियों के वर्गीकरण में तृतीयक सेवाओं के अंतर्गत परिवहन और व्यापार जैसी बुनियादी वाणिज्यिक गतिविधियां आती हैं। चतुर्थक क्षेत्र ज्ञान पर आधारित है, जिसमें अनुसंधान, विकास और सूचना प्रसंस्करण शामिल हैं। हालांकि, पंचमक क्षेत्र में उच्च स्तरीय निर्णय लेने वाले और नीति निर्माता शामिल होते हैं, न कि सामान्य लिपिकीय कार्य। अतः केवल प्रथम दो कथन इस वर्गीकरण के वैज्ञानिक और आर्थिक मानदंडों के अनुरुप हैं।

3. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
भारतीय अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी सर्वाधिक है, जो 50 प्रतिशत से भी अधिक योगदान देता है। इसके विपरीत, रोजगार के मोर्चे पर कृषि क्षेत्र अब भी सबसे बड़ा नियोक्ता बना हुआ है, जहाँ कुल कार्यबल का लगभग 45 प्रतिशत हिस्सा संलग्न है। सेवा क्षेत्र मुख्य रुप से उच्च उत्पादकता और कौशल-गहन प्रकृति के कारण योगदान देता है, न कि रोजगार संख्या के कारण।

4. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
सेवा क्षेत्र के विभिन्न उप-क्षेत्र विशिष्ट आर्थिक कार्यों का संपादन करते हैं। व्यापार और मरम्मत का मुख्य कार्य वस्तुओं का खुदरा वितरण सुनिश्चित करना है। वित्तीय सेवाएं पूंजी बाजार में मध्यस्थता के माध्यम से निवेश की सुविधा प्रदान करती हैं। अचल संपत्ति क्षेत्र भूमि विकास और संपत्ति प्रबंधन की देखभाल करता है। लोक प्रशासन सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली वैधानिक और प्रशासनिक सेवाओं के प्रबंधन से संबंधित है।

5. (3) 50 प्रतिशत से 60 प्रतिशत के बीच
भारत की आर्थिक संरचना में पिछले तीन दशकों में सेवा क्षेत्र ने अभूतपूर्व प्रगति की है। वर्तमान में, सकल मूल्य वर्धन में इस क्षेत्र का योगदान 50 प्रतिशत से 60 प्रतिशत के दायरे में रहता है। यह भारत को एक सेवा-प्रधान अर्थव्यवस्था बनाता है, जहाँ विनिर्माण और कृषि की तुलना में सेवाओं का मूल्य काफी अधिक है। यह प्रवृत्ति भारत के आर्थिक विकास की अनूठी प्रकृति और वैश्विक सेवा निर्यात को दर्शाती है।

6. (2) II और IV
भारत में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र का विकास मुख्य रुप से वैश्विक निर्यात और विदेशी मांग से प्रेरित रहा है, न कि केवल घरेलू उपभोग से। हालांकि यह क्षेत्र नवाचार की ओर बढ़ रहा है, लेकिन यह कहना अनुचित होगा कि यह पूरी तरह से कम लागत वाले लाभ से मुक्त होकर केवल बौद्धिक संपदा निर्माण पर आधारित हो गया है। आज भी वैश्विक बाह्य-स्रोतीकरण और लागत दक्षता इसके महत्वपूर्ण आधार हैं।

7. (4) रक्षा, विमानन और तकनीकी अनुसंधान संस्थानों का पुराना संकेंद्रण
बेंगलुरु का सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में उदय होने का मुख्य कारण वहाँ रक्षा, विमानन और सार्वजनिक क्षेत्र के अनुसंधान संस्थानों की ऐतिहासिक उपस्थिति है। इन संस्थानों ने कुशल जनशक्ति और वैज्ञानिक वातावरण का एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र तैयार किया जिसने निजी तकनीकी कंपनियों को आकर्षित किया। अनुकूल जलवायु और शैक्षणिक संस्थानों की प्रचुरता ने इस शहर को सॉफ्टवेयर विकास के लिए एक आदर्श स्थान बना दिया।

8. (1) C, A, D, B
भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र का विकास महत्वपूर्ण मील के पत्थरों से चिह्नित है। सबसे पहले 1988 में नैसकॉम की स्थापना हुई, जिसने उद्योग का प्रतिनिधित्व किया। इसके पश्चात 1991 में सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया का गठन हुआ। 2012 में सूचना प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय नीति लाई गई। अंत में 2015 में डिजिटल इंडिया पहल शुरु हुई, जिसने देश के डिजिटल बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया।

9. (3) दीर्घकालिक ऋण और इक्विटी-समर्थित प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय की सुविधा प्रदान करना
वित्तीय प्रणाली में पूंजी बाजार का मुख्य उद्देश्य दीर्घकालिक धन जुटाना और उसका आवंटन करना है। यह बाजार कंपनियों और सरकारों को इक्विटी और ऋण साधनों के माध्यम से लंबी अवधि के लिए निवेश प्राप्त करने की अनुमति देता है। यह मुद्रा बाजार से भिन्न है, जो केवल अल्पकालिक ऋणों पर ध्यान केंद्रित करता है। पूंजी बाजार आर्थिक विकास के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा परियोजनाओं हेतु वित्तीय संसाधनों का मुख्य स्रोत है।

Downloaded from www.pdf.tube

72. (2) केवल I और III
कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) सेवा क्षेत्र की कार्यक्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जेनरेटिव एआई ग्राहक सेवाओं को अधिक व्यक्तिगत और प्रभावी बना सकता है। इसके साथ ही, एआई के संचालन के लिए विशाल डेटा केंद्रों और क्लाउड बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है, जिससे निवेश बढ़ता है। हालांकि, एआई रातों-रात सभी अनौपचारिक नौकरियों की समस्याओं को हल नहीं कर सकता, क्योंकि इसके लिए व्यापक कौशल विकास की आवश्यकता होती है।

73. (3) प्लेटफार्मों द्वारा मूल्य निर्धारण हेतु उपयोग किए जाने वाले एल्गोरिदम की पूर्ण पारदर्शिता
डिजिटल अर्थव्यवस्था के विनियमन में एल्गोरिदम की पारदर्शिता का अभाव वास्तव में एक बड़ी चुनौती है, न कि कोई समाधान। तकनीकी कंपनियां अक्सर अपने मूल्य निर्धारण एल्गोरिदम को गुप्त रखती हैं, जिससे प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ता हितों पर असर पड़ सकता है। अन्य चुनौतियां जैसे डेटा स्थानीयकरण और बड़ी कंपनियों का एकाधिकारवादी व्यवहार डिजिटल बाजार की निष्पक्षता सुनिश्चित करने के मार्ग में प्रमुख बाधाएं बनी हुई हैं।

74. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
परिवहन के प्रत्येक माध्यम को आधुनिक बनाने के लिए विशिष्ट पहल की गई हैं। रेलवे के लिए समर्पित माल ढुलाई गलियारे बनाए गए हैं। कृषि उड़ान के माध्यम से हवाई मार्ग से कृषि उत्पादों के परिवहन को सुगम बनाया गया है। सड़कों पर टोल संग्रह को डिजिटल बनाने हेतु फास्टैग का उपयोग हो रहा है। अंतर्देशीय जलमार्गों के विकास के लिए जल मार्ग विकास परियोजना लागू की गई है। ये पहल देश की रसद दक्षता को बढ़ाती हैं।

75. (2) विदेश में उपभोग (मोड 2)
जब कोई विदेशी नागरिक किसी अन्य देश की यात्रा करता है और वहाँ सेवाओं का उपभोग करता है, तो इसे जीएटीएस के तहत 'विदेश में उपभोग' या मोड 2 माना जाता है। पुष्कर मेले के उदाहरण में, पर्यटक भारत की पर्यटन और सांस्कृतिक सेवाओं का प्रत्यक्ष उपभोग कर रहा है। यह मोड भारत के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक प्रमुख स्रोत है, क्योंकि यह विदेशी पर्यटकों को भारत की ओर आकर्षित करता है।

76. (2) डिजिटल पहचान और भुगतान इंटरफेस के माध्यम से सार्वजनिक वस्तुओं को वितरित करने हेतु दूरसंचार नेटवर्क का उपयोग
भारत ने अपने दूरसंचार नेटवर्क को 'डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे' के रूप में सफलतापूर्वक विकसित किया है। इसके माध्यम से आधार, यूपीआई और प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण जैसी सेवाएं करोड़ों नागरिकों तक पहुँच रही हैं। यह मॉडल दिखाता है कि कैसे संचार तकनीक का उपयोग करके शासन को अधिक पारदर्शी और कुशल बनाया जा सकता है। यह केवल निजी लाभ का क्षेत्र नहीं है, बल्कि सामाजिक कल्याण का शक्तिशाली माध्यम बन गया है।

77. (3) बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग
बीपीओ का अर्थ बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग है, जिसमें एक कंपनी अपनी विशिष्ट व्यावसायिक प्रक्रियाओं को किसी बाहरी सेवा प्रदाता को सौंपती है। इसमें आमतौर पर डेटा प्रविष्टि, ग्राहक सहायता और बैक-ऑफिस संचालन जैसे कार्य शामिल होते हैं। भारत अपनी कम लागत और कुशल जनशक्ति के कारण दुनिया का सबसे बड़ा बीपीओ केंद्र बन गया है। इस उद्योग ने भारत में लाखों युवाओं को रोजगार प्रदान किया है और निर्यात में योगदान दिया है।

78. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
पर्यटन क्षेत्र की एक बड़ी खूबी यह है कि यह भारी उद्योगों की तुलना में बहुत कम पूंजी निवेश के साथ अधिक रोजगार पैदा कर सकता है। यह क्षेत्र होटल और परिवहन जैसे प्रत्यक्ष रोजगार के साथ-साथ स्थानीय हस्तशिल्प और कृषि उत्पादों की मांग बढ़ाकर अप्रत्यक्ष रूप से भी आजीविका प्रदान करता है। इसलिए पर्यटन को एक उच्च आर्थिक गुणक वाला क्षेत्र माना जाता है जो समावेशी विकास और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है।

79. (1) भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी)
सेबी भारत में शेयर बाजार और पूंजी बाजार का प्रमुख प्रहरी और नियामक है। इसका मुख्य कार्य निवेशकों के हितों की रक्षा करना और प्रतिभूति बाजार के स्वस्थ विकास को बढ़ावा देना है। सेबी स्टॉक एक्सचेंजों और पारस्परिक निधियों के लिए कड़े नियम बनाता है ताकि बाजार में किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी या अनुचित प्रथाओं को रोका जा सके। एक पारदर्शी और विश्वसनीय पूंजी बाजार ही आधुनिक अर्थव्यवस्था की नींव होता है।

80. (2) उद्योग-प्रासंगिक कौशल की कमी वाले स्नातकों का अधिशेष
यदि उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या गुणवत्ता नियंत्रण के बिना बढ़ती है, तो इसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में ऐसे स्नातक निकलते हैं जिनके पास डिग्री तो होती है, लेकिन उनमें रोजगार के लिए आवश्यक व्यावहारिक कौशल नहीं होता। यह श्रम बाजार में एक असंतुलन पैदा करता है जहाँ कंपनियों को योग्य उम्मीदवार नहीं मिलते और युवा बेरोजगार रहते हैं। अतः संस्थानों की संख्या बढ़ाने के साथ-साथ शिक्षा के मानकों को सुधारना अनिवार्य है।

81. (2) रेरा (RERA) की शुरुआत ने डेवलपर्स की जवाबदेही कम कर दी है।
वास्तव में आरईआरए ने अचल संपत्ति क्षेत्र में विकासकर्ताओं की जवाबदेही और पारदर्शिता को अत्यधिक बढ़ा दिया है। यह कानून अब विकासकर्ताओं को दंडित करने और परियोजनाओं को समय पर पूरा करने के लिए मजबूर करता है। अन्य कथन सही हैं क्योंकि यह क्षेत्र श्रमिकों को भारी रोजगार देता है और सीमेंट तथा इस्पात जैसे कई अन्य उद्योगों के विकास को गति प्रदान करता है। आरईआरए ने खरीदारों का विश्वास बहाल किया है।

NODIA

प्रशिक्षण और उद्योग-अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देना वर्तमान समय की अनिवार्य आवश्यकता है।

21. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
खुदरा क्षेत्र के विभिन्न प्रारूप बाजार की विविध आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। असंगठित खुदरा में छोटे किराना स्टोर शामिल हैं। सुविधा स्टोर स्थानीय क्षेत्रों में लंबी अवधि तक सेवाएं देते हैं। हाइपरमार्केट विशाल स्टोर होते हैं जहाँ घरेलू सामानों की एक बहुत बड़ी श्रृंखला उपलब्ध होती है। ई-वाणिज्य इंटरनेट के माध्यम से खरीदारी की सुविधा प्रदान करता है। ये सभी प्रारूप मिलकर भारत के खुदरा पारिस्थितिकी तंत्र को प्रतिस्पर्धी बनाते हैं।

22. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
भारतीय खुदरा बाजार की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ असंगठित क्षेत्र, जिसमें लाखों छोटे किराना स्टोर शामिल हैं, का वर्चस्व है। संगठित खुदरा क्षेत्र हालांकि तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन यह केवल विलासिता की वस्तुओं तक सीमित नहीं है। बड़े रिटेल स्टोर दैनिक उपभोग की वस्तुओं, कपड़ों और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे सभी प्रकार के उत्पादों में व्यापार करते हैं, जो समाज के प्रत्येक वर्ग हेतु उपलब्ध हैं।

23. (2) I, III और IV
भारत की प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति के अनुसार, एकल-ब्रांड खुदरा और ई-वाणिज्य के मार्केटप्लेस मॉडल में 100 प्रतिशत निवेश की अनुमति है। ई-वाणिज्य के इन्वेंट्री मॉडल में निवेश प्रतिबंधित है ताकि छोटे विक्रेताओं के हितों की रक्षा की जा सके। हालांकि, बहु-ब्रांड खुदरा क्षेत्र में 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति नहीं है और यह कई सख्त शर्तों के अधीन है। यह नीतिगत ढांचा घरेलू विक्रेताओं और विदेशी निवेश में संतुलन बनाता है।

24. (1) कृषि के बाद देश का दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता है
अचल संपत्ति और निर्माण क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कृषि क्षेत्र के बाद सर्वाधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है। यह क्षेत्र कुशल और अकुशल दोनों प्रकार के श्रमिकों को बड़े पैमाने पर अवसर देता है। इसके अलावा, इसका सीमेंट और इस्पात जैसे 250 से अधिक संबद्ध उद्योगों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शहरीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास के कारण इसकी भूमिका निरंतर बढ़ रही है।

25. (3) परियोजना वितरण में विलंब और पारदर्शिता के मुद्दे – अचल संपत्ति (विनियमन और विकास) अधिनियम
अचल संपत्ति क्षेत्र में घर खरीदारों को अक्सर परियोजनाओं में देरी और धोखाधड़ी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। इन चुनौतियों के समाधान हेतु सरकार ने अचल संपत्ति विनियमन और विकास अधिनियम (आरईआरए) लागू किया। यह कानून विकासकर्ताओं के लिए परियोजनाओं का पंजीकरण अनिवार्य बनाता है और समय पर कब्जे की गारंटी देता है। इससे क्षेत्र में पारदर्शिता बढ़ी है और ग्राहकों के भरोसे में व्यापक सुधार हुआ है।

26. (1) B, A, C, D
भारत के परिवहन बुनियादी ढांचे का विकास विभिन्न समय अवधियों में हुआ है। स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना 1999 में शुरू हुई, जिसने प्रमुख महानगरों को जोड़ा। इसके बाद 2006 में समर्पित माल ढुलाई गलियारा परियोजना आई। 2015 में भारतमाला परियोजना के माध्यम से राजमार्ग नेटवर्क के विस्तार पर ध्यान दिया गया। अंत में, 2021 में पीएम गति शक्ति मास्टर प्लान शुरू किया गया, जिसका उद्देश्य परिवहन माध्यमों के बीच एकीकृत कनेक्टिविटी सुनिश्चित करना है।

27. (4) क्षेत्रीय हवाई संपर्क को प्रोत्साहित करना और हवाई यात्रा को आम जनता के लिए किफायती बनाना
'उड़ान' योजना का मुख्य लक्ष्य देश के अनछुए और कम सेवा वाले हवाई अड्डों को सक्रिय करना है। इस योजना के तहत छोटी दूरी की उड़ानों के लिए किराए को सीमित किया गया है और विमानन कंपनियों को वित्तीय सहायता दी जाती है। इससे टियर-2 और टियर-3 शहरों के नागरिकों के लिए हवाई यात्रा सुलभ हो गई है। यह पहल न केवल पर्यटन को बढ़ावा देती है बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक विकास को भी तेज करती है।

28. (4) I, II, III, IV और V
भारतीय रेलवे वर्तमान में आधुनिकीकरण के दौर से गुजर रहा है। वंदे भारत जैसी अत्याधुनिक ट्रेनों की शुरुआत, कवच सुरक्षा प्रणाली का विस्तार और संपूर्ण नेटवर्क का विद्युतीकरण इसके मुख्य स्तंभ हैं। समर्पित माल ढुलाई गलियारे परिवहन क्षमता को बढ़ा रहे हैं, जबकि अमृत भारत योजना के तहत स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। ये सभी प्रयास रेलवे को अधिक सुरक्षित, तेज और कुशल सेवा बनाने के लिए समर्पित हैं।

29. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा दूरसंचार बाजार है, जहाँ करोड़ों लोग मोबाइल और इंटरनेट सेवाओं का उपयोग करते हैं। हालांकि, भारत में मोबाइल डेटा की कीमतें विश्व में सबसे कम दरों में से एक हैं, न कि सर्वाधिक। इस कम लागत ने ही देश में डिजिटल क्रांति और स्मार्टफोन की व्यापक पहुंच को संभव बनाया है। डेटा की सस्ती उपलब्धता के कारण ही डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन सेवाओं का विस्तार हुआ है।

30. (4) किसी निश्चित क्षेत्र में प्रति सौ व्यक्तियों पर टेलीफोन कनेक्शनों की संख्या
दूरसंचार घनत्व या टेलीडेंसिटी एक महत्वपूर्ण सूचकांक है जो किसी देश या क्षेत्र में दूरसंचार सेवाओं के प्रसार को मापता है। इसकी गणना प्रति 100 निवासियों पर उपलब्ध कुल टेलीफोन कनेक्शनों की संख्या के आधार पर की जाती है। उच्च टेलीडेंसिटी बेहतर संचार बुनियादी ढांचे और सूचना तक व्यापक पहुंच का संकेत देती है। भारत में शहरी क्षेत्रों में यह घनत्व अधिक है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में इसे बढ़ाने हेतु प्रयास जारी हैं।

31. (3) केवल I और III
भारत में मीडिया और मनोरंजन उद्योग तेजी से डिजिटल की ओर बढ़ रहा है। ओटीटी प्लेटफॉर्म सामग्री उपभोग के मुख्य

Click Here to Buy book on Amazon

10. (1) बीमा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) स्वचालित मार्ग के तहत कड़ाई से 26 प्रतिशत पर सीमित है।
भारत में वित्तीय सेवाओं के विनियमन में बड़े बदलाव हुए हैं। अब बीमा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा को बढ़ाकर 74 प्रतिशत कर दिया गया है। अन्य कथन सही हैं, क्योंकि अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक वित्तीय संपत्ति के सबसे बड़े धारक हैं और आईआरडीएआई संपूर्ण बीमा उद्योग का नियामक है। पारस्परिक निधि भी पूंजी बाजार में छोटी बचतों को संगठित करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

11. (4) निम्न जन जागरुकता और बीमा को सुरक्षा के बजाय निवेश के रूप में देखने की धारणा
भारत में बीमा की कम पैठ का मुख्य कारण जनता में वित्तीय साक्षरता और जोखिम सुरक्षा के प्रति जागरुकता की कमी है। अधिकांश लोग बीमा को आकस्मिक सुरक्षा के बजाय कर बचाने या परिपक्वता पर लाभ पाने वाले निवेश के रूप में देखते हैं। इसके अतिरिक्त, जटिल उत्पाद संरचना और ग्रामीण क्षेत्रों में वितरण नेटवर्क की सीमित पहुंच भी इसे लोकप्रिय बनाने में बड़ी बाधा बनी हुई है।

12. (1) I, II, IV, और V
भारत में पर्यटन क्षेत्र के विकास को ई-वीजा और स्वदेश दर्शन जैसी योजनाओं से बल मिला है। चिकित्सा पर्यटन अपनी कम लागत और गुणवत्ता के कारण तेजी से बढ़ रहा है। पर्यटन न केवल विदेशी मुद्रा लाता है, बल्कि यह एक श्रम-प्रधान क्षेत्र होने के कारण व्यापक रोजगार के अवसर भी प्रदान करता है। कथन III गलत है क्योंकि उत्तर, मध्य और पूर्व के राज्यों में भी समृद्ध ऐतिहासिक स्थल मौजूद हैं।

13. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत की भौगोलिक स्थितियों के अनुसार पर्यटन परिपथ विकसित किए गए हैं। मरुस्थल परिपथ राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों पर केंद्रित है। बौद्ध परिपथ उन स्थलों को जोड़ता है जो बिहार और उत्तर प्रदेश में भगवान बुद्ध से संबंधित हैं। तटीय परिपथ ओडिशा और आंध्र प्रदेश के समुद्री किनारों के विकास हेतु है। हिमालयन परिपथ पर्वतीय सौंदर्य और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किया गया है।

14. (4) भारत में अभ्यास करने वाले विदेशी डॉक्टरों के लिए किसी भी विनियामक आवश्यकता का अभाव
चिकित्सा पर्यटन में भारत की सफलता कुशल डॉक्टरों और किफायती चिकित्सा प्रक्रियाओं पर आधारित है। हालांकि, विनियामक मानकों के मामले में भारत अत्यंत सख्त है। भारत में चिकित्सा अभ्यास करने के इच्छुक किसी भी विदेशी शिक्षित डॉक्टर को राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के कड़े नियमों और पंजीकरण प्रक्रियाओं का पालन करना अनिवार्य है। यह व्यवस्था स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और रोगियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्थापित है।

15. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय वर्तमान में सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 2.1 प्रतिशत के स्तर पर है, जो 2.5 प्रतिशत के लक्ष्य से कम है। इस अपर्याप्त निवेश के कारण नागरिकों को निजी चिकित्सालयों में इलाज के लिए भारी खर्च करना पड़ता है। सरकार का लक्ष्य स्वास्थ्य बजट को धीरे-धीरे बढ़ाना है, ताकि गरीबों पर वित्तीय बोझ कम हो सके और स्वास्थ्य सेवाएं अधिक सुलभ और सस्ती हो सकें।

16. (2) प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई)
प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना मुख्य रुप से देश में तृतीयक स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और विशिष्ट चिकित्सा शिक्षा में सुधार के लिए समर्पित है। इसके तहत एम्स जैसे संस्थानों की स्थापना और मेडिकल कॉलेजों का उन्नयन किया जाता है। अन्य विकल्प जैसे आयुष्मान भारत और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, टीकाकरण और गरीबों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने पर केंद्रित हैं।

17. (2) केवल II और III
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा के साथ जोड़ने पर जोर देती है, जबकि कौशल भारत मिशन उद्योगों की मांग और युवाओं के कौशल के बीच अंतर को कम करता है। भारत में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात वर्तमान में 30 प्रतिशत से कम है, इसलिए कथन I गलत है। कौशल विकास और आधुनिक शैक्षणिक सुधार ही भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश को वास्तविक आर्थिक मूल्य में बदल सकते हैं।

18. (2) 50 प्रतिशत
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत भारत सरकार ने उच्च शिक्षा की पहुंच और गुणवत्ता बढ़ाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। वर्ष 2035 तक देश में व्यावसायिक शिक्षा सहित उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 50 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य है। इसकी प्राप्ति हेतु संस्थानों की क्षमता विस्तार, डिजिटल शिक्षण को बढ़ावा देने और दूरस्थ शिक्षा प्रणालियों को सुदृढ़ बनाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

19. (1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), सर्व शिक्षा अभियान, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, स्किल इंडिया मिशन
भारत में शिक्षा नीतियों का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया रही है। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने आधुनिक शिक्षा का आधार रखा। इसके बाद 2001 में प्राथमिक शिक्षा के प्रसार हेतु सर्व शिक्षा अभियान शुरु हुआ। 2009 में शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित किया गया, जिसने 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया। अंत में 2015 में स्किल इंडिया मिशन की शुरुआत हुई।

20. (4) सैद्धांतिक शैक्षणिक पाठ्यक्रम और व्यावहारिक उद्योग आवश्यकताओं के बीच विसंगति
भारत में रोजगार क्षमता अंतराल का प्राथमिक कारण यह है कि शैक्षणिक संस्थान अक्सर पुराने और सैद्धांतिक पाठ्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो आधुनिक उद्योगों की व्यावहारिक मांगों से मेल नहीं खाते। इसके परिणामस्वरूप स्नातकों के पास डिग्री तो होती है, लेकिन उनमें कार्यस्थल के लिए आवश्यक कौशल की कमी होती है। पाठ्यक्रम में बदलाव, व्यावहारिक

NODIA

कोई बाहरी डिजिटल नेटवर्क शामिल नहीं होता। अन्य विकल्प डिजिटल प्लेटफॉर्म के उदाहरण हैं जो सेवाओं के विकेंद्रीकृत आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं।

42. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
यूपीआई भारत में डिजिटल भुगतान का सबसे सफल मॉडल बन गया है और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनाया जा रहा है। हालांकि, यूपीआई कोई निजी नेटवर्क नहीं है। यह भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) द्वारा विकसित एक ओपन-सोर्स प्लेटफॉर्म है। यह किसी एक कंपनी के बजाय सभी बैंकों और भुगतान प्रदाताओं को एक साथ जोड़ता है, जिससे यह सार्वजनिक लाभ के लिए एक समावेशी डिजिटल बुनियादी ढांचा बन जाता है।

43. (2) I, II, III और IV
भारत ने अपना स्वयं का मजबूत डिजिटल भुगतान बुनियादी ढांचा विकसित किया है। एनपीसीआई, भारत बिल भुगतान प्रणाली, आधार सक्षम भुगतान प्रणाली और ई-रुपी इसी घरेलू नवाचार के परिणाम हैं। ये प्रणालियाँ भारत की विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने के लिए स्वदेशी रूप से डिजाइन की गई हैं। स्विफ्ट एक अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क है जिसका उपयोग सीमा पार संदेशों के लिए किया जाता है, न कि यह भारत के घरेलू भुगतान बुनियादी ढांचे का हिस्सा है।

44. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
भारत के सेवा क्षेत्र के विकास की अक्सर आलोचना की जाती है क्योंकि जीडीपी में भारी योगदान के बावजूद यह पर्याप्त रोजगार पैदा नहीं कर पाया है। सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र उच्च कौशल की मांग करता है, जिसके कारण कृषि से निकलने वाला अकुशल कार्यबल इसमें समाहित नहीं हो पाता। अधिकांश ग्रामीण श्रमिक निर्माण या निम्न-स्तरीय सेवा नौकरियों की ओर रुख करते हैं। अतः उच्च-कुशल सेवाओं द्वारा कार्यबल का अवशोषण एक अधूरा लक्ष्य है।

45. (3) लचीले अवसरों में वृद्धि किंतु सामाजिक सुरक्षा और लाभों की कमी पर चिंताएं
गिग अर्थव्यवस्था ने श्रमिकों को काम के समय और स्थान में लचीलापन प्रदान किया है, जिससे बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार मिला है। हालांकि, इस मॉडल में पारंपरिक नौकरियों जैसी सुरक्षा और लाभ नहीं मिलते। गिग श्रमिकों को अक्सर स्वास्थ्य बीमा, भविष्य निधि और न्यूनतम मजदूरी जैसी कानूनी सुरक्षा से वंचित रहना पड़ता है। यह श्रम बाजार में आय की अनिश्चितता और सामाजिक सुरक्षा के अभाव की एक बड़ी चुनौती है।

46. (1) D, B, A, C
सेवाओं के व्यापार पर सामान्य समझौते (जीएटीएस) के तहत आपूर्ति के चार मोड परिभाषित हैं। मोड 1 सीमा पार आपूर्ति को दर्शाता है। मोड 2 में उपभोक्ता सेवा लेने विदेश जाता है। मोड 3 वाणिज्यिक उपस्थिति है, जहाँ कंपनी दूसरे देश में शाखा खोलती है। मोड 4 प्राकृतिक व्यक्तियों की उपस्थिति है, जिसमें कुशल पेशेवर सेवा प्रदान करने के लिए अस्थायी रूप से दूसरे देश जाते हैं। यह वर्गीकरण वैश्विक व्यापार को सुगम बनाता है।

47. (4) मोड 4
भारत के पास दुनिया का सबसे बड़ा कुशल और पेशेवर कार्यबल है, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग में। इसलिए, विश्व व्यापार संगठन की वार्ताओं में भारत हमेशा मोड 4 के तहत उदारीकरण पर जोर देता है। यह मोड भारतीय पेशेवरों को विदेशों में जाकर सेवाएं देने के लिए वीजा और अन्य बाधाओं को कम करने से संबंधित है। भारत का मानना है कि मानव संसाधनों की गतिशीलता बढ़ाकर वैश्विक सेवा व्यापार को प्रभावी बनाया जा सकता है।

48. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
जीएटीएस के सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय सेवा व्यापार में निष्पक्षता सुनिश्चित करते हैं। सर्वाधिक पसंदीदा राष्ट्र सिद्धांत सदस्य देशों के बीच भेदभाव को रोकता है। राष्ट्रीय व्यवहार का अर्थ है कि विदेशी सेवाओं को घरेलू सेवाओं के समान दर्जा मिले। बाजार पहुंच विदेशी सेवा प्रदाताओं के प्रवेश की अनुमति से संबंधित है। पारदर्शिता सभी देशों के लिए अपने व्यापार कानूनों को सार्वजनिक करना अनिवार्य बनाती है ताकि व्यापारिक वातावरण में अनिश्चितता कम हो सके।

49. (1) केवल I और II
निकट भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) स्वास्थ्य सेवा में सटीक निदान और वित्तीय सेवाओं में जोखिम प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव लाएगी। ये अनुप्रयोग मानव दक्षता को बढ़ाने और त्रुटियों को कम करने में सहायक होंगे। हालांकि, शिक्षा के क्षेत्र में एआई शिक्षकों का स्थान पूरी तरह नहीं ले सकता, क्योंकि शिक्षण में मानवीय सहानुभूति की आवश्यकता होती है। एआई केवल एक सहायक उपकरण के रूप में गुणवत्ता सुधार में मदद कर सकता है।

50. (1) इन्फ्रास्ट्रक्चर एज़ अ सर्विस (IaaS)
क्लाउड कंप्यूटिंग का आईएएएस मॉडल व्यवसायों को इंटरनेट पर वर्चुअल सर्वर और नेटवर्क जैसे बुनियादी कंप्यूटिंग संसाधन उपलब्ध कराता है। यह कंपनियों को अपना भौतिक डेटा सेंटर बनाने की भारी लागत से बचाता है। उपयोगकर्ता अपनी आवश्यकतानुसार इन संसाधनों को बढ़ा या घटा सकते हैं और केवल उपयोग किए गए हिस्से के लिए भुगतान करते हैं। यह विशेष रूप से स्टार्टअप्स के लिए उपयोगी है क्योंकि यह उनके शुरुआती निवेश के बोझ को कम करता है।

51. (3) तृतीयक
आर्थिक गतिविधियों के वर्गीकरण के अनुसार, लेखांकन, डेटा प्रसंस्करण और ग्राहक सहायता जैसी सभी व्यावसायिक सेवाएं तृतीयक क्षेत्र के अंतर्गत आती हैं। चूंकि यह गतिविधि किसी भौतिक वस्तु का उत्पादन नहीं करती, बल्कि एक पेशेवर सेवा प्रदान करती है, इसलिए इसे तृतीयक माना जाता है। जयपुर जैसे केंद्रों से वैश्विक ग्राहकों को सेवा देना भारत की बढ़ती सेवा निर्यात क्षमता और तकनीकी दक्षता का एक बेहतरीन उदाहरण है।

Downloaded from www.pdf.tube

माध्यम बन गए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी नियम 2021 ने डिजिटल सामग्री के लिए आवश्यक विनियामक और नैतिक ढांचा प्रदान किया है। हालांकि, प्रिंट मीडिया का राजस्व डिजिटल विज्ञापन की प्रतिस्पर्धा और बदलती पाठकों की आदतों के कारण चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिससे इसका पूर्व स्तर तक पहुंचना कठिन है।

32. (1) 26 प्रतिशत
भारत सरकार ने डिजिटल समाचार क्षेत्र में विदेशी निवेश को विनियमित करने के लिए वर्तमान में 26 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा निर्धारित की है। यह सीमा राष्ट्रीय सुरक्षा और सूचना की सत्यता बनाए रखने के उद्देश्य से लगाई गई है। डिजिटल समाचार प्रकाशकों को इस सीमा का पालन करना अनिवार्य है, जो प्रिंट मीडिया के लिए लागू नीति के समान है। यह सुनिश्चित करता है कि भारतीय डिजिटल मीडिया का स्वामित्व मुख्य रूप से घरेलू रहे।

33. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
बाह्य-स्रोतीकरण के विभिन्न रूप विशिष्ट व्यावसायिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। बीपीओ सामान्य ग्राहक सहायता का कार्य करता है। केपीओ उच्च स्तरीय अनुसंधान और डेटा विश्लेषण जैसी ज्ञान-प्रधान सेवाएं प्रदान करता है। एलपीओ कानूनी अनुसंधान और अनुबंधों के मसौदे तैयार करने से संबंधित है। आरपीओ कंपनियों के लिए भर्ती प्रक्रिया के कुशल प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करता है। ये श्रेणियां मिलकर भारत को वैश्विक सेवा निर्यात का केंद्र बनाती हैं।

34. (1) प्रतिस्पर्धी लागत पर उपलब्ध अंग्रेजी भाषी, डोमेन-विशिष्ट पेशेवरों का बड़ा समूह
नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग में भारत की सफलता का मुख्य आधार यहाँ उच्च शिक्षित और अंग्रेजी बोलने वाले पेशेवरों की विशाल उपलब्धता है। भारतीय स्नातक डेटा विश्लेषण, चिकित्सा अनुसंधान और वित्तीय परामर्श जैसे जटिल कार्यों को वैश्विक मानकों के अनुरुप और कम लागत पर करने में सक्षम हैं। यह कौशल और लागत का संतुलन विदेशी कंपनियों को अपनी महत्वपूर्ण ज्ञान-आधारित गतिविधियों को भारत में स्थानांतरित करने हेतु प्रोत्साहित करता है।

35. (3) यह क्षेत्र अत्यधिक कुशल, रोजगार योग्य स्नातकों की भारी अधिक आपूर्ति से ग्रस्त है।
सेवा क्षेत्र के सामने सबसे बड़ी चुनौती वास्तव में कुशल और उद्योग-तैयार जनशक्ति की कमी है, न कि उनकी अधिक आपूर्ति। हालांकि डिग्री धारकों की संख्या अधिक है, लेकिन उनमें से कई के पास आधुनिक सेवाओं के लिए आवश्यक व्यावहारिक कौशल नहीं होता। अन्य चुनौतियां जैसे विनियामक जटिलताएं, शहरी केंद्रों में अत्यधिक संकेंद्रण और ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे की कमी इसके संतुलित विकास में बड़ी बाधाएं हैं।

36. (2) I, II और IV
सेवाओं के विकास में कई बुनियादी ढांचागत बाधाएं मौजूद हैं। कोल्ड चेन सुविधाओं की कमी से खाद्य खुदरा क्षेत्र प्रभावित होता है, जबकि उच्च रसद लागत प्रतिस्पर्धा को कम करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की कमी डिजिटल समावेशन और ई-सेवाओं की पहुंच को सीमित करती है। हालांकि, गहरे पानी के बंदरगाह मुख्य रूप से वस्तु व्यापार से संबंधित हैं और डिजिटल सेवाओं के निर्यात पर उनका कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ता।

37. (3) सेवा क्षेत्र की अधिकांश नौकरियां अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में केंद्रित हैं जिनमें सामाजिक सुरक्षा लाभों का अभाव है।
सेवा क्षेत्र में रोजगार की गुणवत्ता एक गंभीर चिंता का विषय है क्योंकि बड़ी संख्या में श्रमिक अनौपचारिक रूप से कार्यरत हैं। इन नौकरियों में पेंशन, स्वास्थ्य बीमा और नौकरी की सुरक्षा जैसे सामाजिक लाभों का अभाव होता है। वितरण सेवाओं और छोटे खुदरा व्यापार में लगे लोग अक्सर कम मजदूरी और अनिश्चित परिस्थितियों में कार्य करते हैं। यह स्थिति आर्थिक विकास के लाभों के समान वितरण में एक बाधा है।

38. (1) दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं → व्यावसायिक सेवाएं → यात्रा
भारत के सेवा निर्यात की संरचना में सूचना प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर सेवाएं ऐतिहासिक रूप से शीर्ष पर रही हैं, जो कुल निर्यात का सबसे बड़ा हिस्सा बनाती हैं। इसके बाद पेशेवर और परामर्श जैसी व्यावसायिक सेवाओं का स्थान आता है। यात्रा और पर्यटन क्षेत्र भी एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है, लेकिन निर्यात मूल्य के मामले में यह तकनीकी सेवाओं की तुलना में पीछे है। यह क्रम भारत की तकनीकी दक्षता को दर्शाता है।

39. (4) सेवा निर्यात में वैश्विक रैंक – सामान्यतः शीर्ष 10 के भीतर
भारत ने सेवाओं के वैश्विक व्यापार में अपनी एक मजबूत स्थिति बनाई है और यह निरंतर दुनिया के शीर्ष 10 सेवा निर्यातक देशों में शामिल रहता है। वस्तु व्यापार के विपरीत, सेवाओं के व्यापार में भारत का संतुलन हमेशा सकारात्मक रहता है। यह अधिशेष देश के चालू खाता घाटे को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत मुख्य रूप से सॉफ्टवेयर और व्यावसायिक सेवाओं में वैश्विक स्तर पर अग्रणी है।

NODIA

40. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
वित्तीय प्रौद्योगिकी क्षेत्र सेवाओं को आधुनिक तकनीक से जोड़ता है। पीयर-टू-पीयर ऋण उधारकर्ताओं और दाताओं को सीधे जोड़ता है। इंश्योरटेक तकनीक के माध्यम से बीमा प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करता है। नियोबैंक पूरी तरह से डिजिटल बैंकिंग अनुभव प्रदान करते हैं, जबकि वेल्थटेक निवेश के लिए डिजिटल उपकरणों का उपयोग करता है। ये नवाचार वित्तीय सेवाओं को अधिक समावेशी, तीव्र और ग्राहकों के लिए सुलभ बनाने में सहायता कर रहे हैं।

41. (3) एक विनिर्माण कंपनी जो अपने स्वयं के भौतिक खुदरा आउटलेट्स के माध्यम से सीधे उत्पाद बेचती है
प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था डिजिटल मध्यस्थों पर आधारित होती है जो स्वतंत्र पक्षों के बीच लेनदेन की सुविधा देते हैं। इसके विपरीत, एक विनिर्माण कंपनी जो सीधे अपने आउटलेट के माध्यम से सामान बेचती है, वह एक पारंपरिक व्यापार मॉडल का पालन करती है। यहाँ उत्पाद पर पूर्ण नियंत्रण होता है और

62. (4) इंटरनेट आधारित स्ट्रीमिंग सेवाओं के पक्ष में पारंपरिक केबल सदस्यता रद्द करना
'कॉर्ड-कटिंग' आधुनिक मीडिया उपभोग में एक बढ़ती हुई प्रवृत्ति है, जहाँ उपभोक्ता पारंपरिक केबल टीवी कनेक्शन को छोड़कर ओटीटी प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन स्ट्रीमिंग का चयन कर रहे हैं। यह बदलाव हाई-स्पीड इंटरनेट की उपलब्धता और व्यक्तिगत सामग्री की मांग के कारण हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप मनोरंजन उद्योग की राजस्व संरचना में बड़ा बदलाव आया है और पारंपरिक प्रसारकों को अब अपनी डिजिटल उपस्थिति मजबूत करनी पड़ रही है।

63. (1) डेटा गोपनीयता कानूनों का पूर्ण अभाव जिससे संचालन अनियंत्रित रहता है
बीपीओ क्षेत्र में भारत की सफलता डेटा गोपनीयता कानूनों के अभाव के कारण नहीं, बल्कि कुशल जनशक्ति और तकनीकी क्षमता के कारण है। वास्तव में, भारत ने डेटा सुरक्षा और डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण के लिए मजबूत विनियामक ढांचे विकसित किए हैं ताकि अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों का भरोसा बना रहे। समय क्षेत्र का अंतर और अंग्रेजी में दक्षता जैसे कारक भारत को आउटसोर्सिंग के लिए दुनिया का पसंदीदा गंतव्य बनाते हैं।

64. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
सेवा क्षेत्र की विभिन्न चुनौतियां इसके विकास को सीमित करती हैं। जटिल नियम और मंजूरी प्रक्रियाएं परियोजनाओं में देरी करती हैं। कौशल की कमी स्नातकों को उच्च-मूल्य वाले कार्यों के लिए अयोग्य बनाती है। अपर्याप्त बुनियादी ढांचा सेवाओं की गुणवत्ता को बाधित करता है। अनौपचारिकीकरण के कारण बड़ी संख्या में श्रमिकों को कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं मिल पाती है। इन समस्याओं का समाधान करना भारतीय अर्थव्यवस्था के समावेशी विकास के लिए अनिवार्य है।

65. (2) दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं
भारत की सेवा निर्यात क्षमता में सूचना प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर सेवाओं का दबदबा है। यह क्षेत्र वैश्विक सॉफ्टवेयर बाजार में भारत को एक अग्रणी शक्ति बनाता है। भारतीय तकनीकी कंपनियां दुनिया भर के बड़े निगमों को सॉफ्टवेयर विकास, परामर्श और सिस्टम एकीकरण जैसी उच्च स्तरीय सेवाएं प्रदान करती हैं। यह श्रेणी न केवल सर्वाधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करती है, बल्कि इसने भारत की छवि को एक तकनीकी महाशक्ति के रूप में स्थापित किया है।

66. (1) डिजिटल भुगतान गेटवे और स्थानीय वितरण नेटवर्क की मांग में वृद्धि
ई-वाणिज्य के विस्तार ने कई सहायक सेवाओं के लिए नए अवसर पैदा किए हैं। ऑनलाइन खरीदारी बढ़ने से डिजिटल भुगतान प्रणालियों की मांग में भारी उछाल आया है। इसके साथ ही, अंतिम छोर तक सामान पहुँचाने के लिए स्थानीय रसद और वितरण नेटवर्क का व्यापक विस्तार हुआ है। यह बदलाव दर्शाता है कि कैसे एक क्षेत्र का डिजिटल विकास अन्य संबंधित सेवा क्षेत्रों में भी नवाचार और रोजगार के नए मार्ग खोलता है।

67. (2) I, III और IV
यूपीआई ने भारत में वित्तीय लेनदेन को सरल और तत्काल बना दिया है। यह चौबीसों घंटे रीयल-टाइम फंड ट्रांसफर की सुविधा देता है और एक ही ऐप से कई बैंक खातों को प्रबंधित करना संभव बनाता है। अब इसकी वैश्विक स्वीकार्यता भी बढ़ रही है। हालांकि, कथन 2 गलत है क्योंकि यूपीआई का संचालन एनपीसीआई द्वारा किया जाता है, जो एक गैर-लाभकारी संस्था है, हालांकि आरबीआई इसकी विनियामक देखरेख करता है।

68. (4) कम वेतन और असुरक्षा के साथ असंगठित खुदरा और घरेलू सहायता क्षेत्रों में कार्यबल का संकेंद्रण
सेवा क्षेत्र में 'निम्न गुणवत्ता वाली नौकरियों' का तात्पर्य उन कार्यों से है जिनमें वेतन कम होता है और रोजगार की कोई कानूनी गारंटी नहीं होती। इसमें मुख्य रूप से छोटे दुकान सहायक और घरेलू श्रमिक शामिल हैं। हालांकि ये क्षेत्र बड़ी संख्या में लोगों को खपाते हैं, लेकिन ये उन्हें गरीबी से बाहर निकालने के लिए पर्याप्त सुरक्षा प्रदान नहीं करते। यह स्थिति सेवा-प्रधान विकास के सामाजिक प्रभावों पर प्रश्न उठाती है।

69. (3) हरित सेवाएं (कार्बन ऑडिटिंग) – पर्यावरणीय परामर्श
जैसे-जैसे दुनिया जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूक हो रही है, पर्यावरणीय परामर्श और हरित सेवाओं की मांग तेजी से बढ़ रही है। इसमें कार्बन ऑडिटिंग, ईएसजी रिपोर्टिंग और स्थिरता रणनीतियां शामिल हैं। यह भविष्य की सेवाओं का एक उभरता हुआ क्षेत्र है जो पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक मूल्य भी पैदा करता है। यह सेवा क्षेत्र के विविधीकरण और वैश्विक पर्यावरणीय लक्ष्यों के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को मजबूत करने का अवसर है।

70. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
जीएटीएस विश्व व्यापार संगठन का एक प्रमुख समझौता है जो अंतरराष्ट्रीय सेवा व्यापार के लिए नियम निर्धारित करता है। इसका उद्देश्य सदस्य देशों के बीच सेवाओं के आदान-प्रदान को सुगम बनाना है। हालांकि, यह किसी भी देश को स्वास्थ्य या शिक्षा जैसी अपनी आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं का निजीकरण करने के लिए बाध्य नहीं करता है। प्रत्येक सदस्य देश को यह अधिकार है कि वह किन क्षेत्रों को विदेशी प्रतिस्पर्धा के लिए खोलना चाहता है।

71. (4) डिजिटल नेटवर्क पर जो क्रेताओं, विक्रेताओं और सेवा प्रदाताओं के बीच लेनदेन का समन्वय करते हैं
प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था एक आधुनिक आर्थिक मॉडल है जो डिजिटल इंटरफेस के माध्यम से संचालित होता है। इसमें एक केंद्रीय डिजिटल प्लेटफॉर्म क्रेताओं और स्वतंत्र विक्रेताओं को एक साथ लाता है। यह मॉडल पारंपरिक विनिर्माण से अलग है क्योंकि यह मुख्य रूप से डेटा और कनेक्टिविटी पर आधारित है। उदाहरण के तौर पर ई-वाणिज्य साइटें और टैक्सी एग्रीगेटर सेवाएं शामिल हैं, जो वैश्विक स्तर पर व्यापार के तरीके को बदल रही हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

92. (2) स्थानीय डेटा सर्वर बनाए रखने के लिए परिचालन और बुनियादी ढांचा लागत में वृद्धि
डेटा स्थानीयकरण के नियम विदेशी सेवा प्रदाताओं को भारतीय नागरिकों का डेटा देश के भीतर ही संग्रहीत करने के लिए बाध्य करते हैं। इसके लिए कंपनियों को भारत में नए डेटा सेंटर स्थापित करने या स्थानीय क्लाउड प्रदाताओं की सेवाएं लेने की आवश्यकता होती है, जिससे उनका परिचालन व्यय बढ़ जाता है। हालांकि, यह नियम डेटा सुरक्षा और राष्ट्रीय संप्रभुता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं, ताकि कानूनी कार्यवाही के समय डेटा तक आसान पहुंच हो।

93. (3) उत्तरी अमेरिका
भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर सेवाओं के लिए उत्तरी अमेरिका, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका, सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण बाजार बना हुआ है। भारत के कुल आईटी निर्यात का आधे से अधिक हिस्सा इसी क्षेत्र से आता है। अमेरिकी कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर बाह्य-स्रोतीकरण और भारतीय फर्मों की वहाँ मजबूत उपस्थिति इस व्यापारिक संबंध का आधार है। हालांकि भारत अब यूरोप और एशिया में भी विस्तार कर रहा है, लेकिन उत्तरी अमेरिका का वर्चस्व बरकरार है।

94. (4) मैनुअल डेटा एंट्री संचालन
भविष्य की सेवाएं उच्च स्तरीय ज्ञान, रचनात्मकता और जटिल समस्या समाधान पर आधारित होंगी। बिग डेटा, ब्लॉकचेन और साइबर सुरक्षा इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसके विपरीत, मैनुअल डेटा एंट्री एक नियमित और दोहराव वाला कार्य है जिसे अब स्वचालन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से आसानी से किया जा सकता है। इसलिए, भविष्य के रोजगार के अवसरों के लिए कौशल का विकास निम्न-स्तरीय तकनीकी कार्यों से हटकर उन्नत विशेषज्ञता की ओर होना अनिवार्य है।

95. (4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
समर्पित माल ढुलाई गलियारे विशेष रूप से केवल मालगाड़ियों के आवागमन के लिए विकसित किए गए हैं, न कि यात्री ट्रेनों के लिए। इनका मुख्य उद्देश्य मुख्य रेल मार्गों पर दबाव को कम करना है ताकि यात्री ट्रेनें और मालगाड़ियां दोनों अपनी निर्धारित गति से चल सकें। इससे माल के परिवहन में लगने वाले समय और लागत में भारी कमी आएगी। यह बुनियादी ढांचा औद्योगिक गलियारों के विकास और भारत की रसद दक्षता को वैश्विक मानकों तक ले जाने के लिए महत्वपूर्ण है।

96. (2) राजस्व की रक्षा हेतु इलेक्ट्रॉनिक प्रसारणों पर कर लगाने के लिए नीतिगत स्थान सुरक्षित रखना
वर्तमान में विश्व व्यापार संगठन के सदस्य देशों के बीच इलेक्ट्रॉनिक प्रसारणों पर सीमा शुल्क न लगाने का एक अस्थायी समझौता है। भारत इसका विरोध कर रहा है क्योंकि डिजिटल व्यापार बढ़ने से विकासशील देशों को महत्वपूर्ण राजस्व की हानि हो रही है। भारत चाहता है कि उसे डिजिटल डाउनलोड और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सेवाओं पर कर लगाने का अधिकार मिले। यह राजस्व डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और घरेलू उद्योगों को सहायता प्रदान करने के लिए आवश्यक है।

97. (2) रेलवे क्षेत्र
'कवच' एक स्वदेशी रूप से विकसित स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली है जो भारतीय रेलवे की सुरक्षा को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन की गई है। यह तकनीक दो ट्रेनों के बीच आमने-सामने की टक्कर को रोकने में सक्षम है। यह सुरक्षित रेल संचालन सुनिश्चित करने और मानवीय त्रुटियों के जोखिम को कम करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। भारत इस प्रणाली को अपने पूरे रेल नेटवर्क पर तेजी से लागू कर रहा है ताकि दुर्घटनाओं की संभावना को समाप्त किया जा सके।

98. (1) 1 अरब डॉलर से अधिक मूल्य वाली निजी स्वामित्व वाली स्टार्टअप कंपनी
डिजिटल अर्थव्यवस्था में 'यूनिकॉर्न' शब्द का उपयोग उन नई और निजी स्टार्टअप कंपनियों के लिए किया जाता है जिनका बाजार मूल्यांकन 1 अरब अमेरिकी डॉलर को पार कर गया है। भारत दुनिया के शीर्ष देशों में से एक है जहाँ यूनिकॉर्न की संख्या तेजी से बढ़ रही है। ये कंपनियां वित्तीय प्रौद्योगिकी, ई-वाणिज्य और एडुटेक जैसे क्षेत्रों में नवाचार का नेतृत्व करती हैं। यूनिकॉर्न का उदय देश के मजबूत तकनीकी और निवेश अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र का संकेत है।

NODIA

99. (3) यूपीआई (UPI)
यूपीआई एक क्रांतिकारी तकनीक है जिसने भारत में छोटे से लेकर बड़े सभी प्रकार के व्यापारियों के लिए भुगतान को आसान बना दिया है। क्यूआर कोड को स्कैन करके सीधे बैंक खाते से धन स्थानांतरित करना इसकी सबसे लोकप्रिय विशेषता है। यह पूरी तरह से सुरक्षित है और इसके लिए किसी कार्ड या बैंक जाने की आवश्यकता नहीं होती। इस तकनीक ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में नकद रहित लेनदेन को बढ़ावा दिया है, जिससे औपचारिक अर्थव्यवस्था का विस्तार हुआ है।

100. (4) संसाधनों तक स्केलेबल, ऑन-डिमांड पहुंच स्टार्टअप्स के लिए पूंजीगत व्यय को कम करती है
क्लाउड कंप्यूटिंग स्टार्टअप्स को बिना किसी भारी निवेश के विश्व स्तरीय तकनीकी संसाधनों तक पहुंच प्रदान करती है। कंपनियां अपनी आवश्यकतानुसार डेटा भंडारण और प्रसंस्करण क्षमता ले सकती हैं और केवल उतना ही भुगतान करती हैं। यह उन्हें कम लागत पर प्रयोग करने और तेजी से अपने व्यवसाय को बढ़ाने की अनुमति देता है। आधुनिक सेवा क्षेत्र में क्लाउड तकनीक ने नवाचार की गति को तेज कर दिया है, क्योंकि अब कंपनियों को अपना महंगा बुनियादी ढांचा नहीं बनाना पड़ता।

82. (2) I, II, III और IV
भारत का सेवा निर्यात सॉफ्टवेयर सेवाओं और व्यावसायिक परामर्श के बल पर वैश्विक स्तर पर पहचान बना चुका है। भारत सॉफ्टवेयर सेवाओं का एक शुद्ध निर्यातक है, जिसका अर्थ है कि वह इनका आयात करने की तुलना में अधिक निर्यात करता है। पर्यटन क्षेत्र महामारी जैसी बाहरी घटनाओं के प्रति संवेदनशील है। वैश्विक सेवा व्यापार में भारत की हिस्सेदारी इसके वस्तु व्यापार की तुलना में अधिक है, जो देश की आर्थिक ताकत का केंद्र है।

83. (3) पोर्टेबल सामाजिक सुरक्षा और कौशल उन्नयन के माध्यम से गिग कार्य का औपचारिकीकरण करना
सेवा क्षेत्र में रोजगार की गुणवत्ता सुधारने के लिए गिग श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाना प्रभावी कदम है। पोर्टेबल लाभों का अर्थ है कि श्रमिक चाहे किसी भी प्लेटफॉर्म के लिए काम करे, उसे पेंशन और बीमा जैसे लाभ मिलते रहने चाहिए। इसके साथ ही, निरंतर कौशल उन्नयन से श्रमिक बदलती तकनीक के साथ तालमेल बिठा सकेंगे और बेहतर वेतन पाने में सक्षम होंगे। यह आधुनिक श्रम बाजार की अनिश्चितताओं को कम करता है।

84. (4) स्थिरता का समर्थन करने वाली सेवाएं, जैसे ऊर्जा ऑडिटिंग, ईएसजी परामर्श और हरित वित्त
'हरित सेवाएं' उन व्यावसायिक गतिविधियों को संदर्भित करती हैं जो कंपनियों और सरकारों को अपने कार्बन पदचिह्न को कम करने और पर्यावरणीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती हैं। इसमें सौर ऊर्जा परियोजनाओं का परामर्श और अपशिष्ट प्रबंधन की रणनीतियां शामिल हैं। जैसे-जैसे वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के नियम कड़े हो रहे हैं, भारत जैसे विकासशील देशों के लिए इन विशिष्ट सेवाओं का निर्यात करने के नए और बड़े अवसर पैदा हो रहे हैं।

85. (3) इंडिया पोस्ट
इंडिया पोस्ट एक पारंपरिक सेवा प्रदाता है जो मुख्य रूप से एक सरकारी मॉडल के माध्यम से डाक और पार्सल सेवाएं प्रदान करता है। इसके विपरीत, स्विगी, ओला और अर्बन कंपनी शुद्ध डिजिटल प्लेटफॉर्म मॉडल हैं। ये प्लेटफॉर्म स्वयं सेवा प्रदान नहीं करते, बल्कि एक मोबाइल ऐप के माध्यम से सेवा प्रदाताओं और उपभोक्ताओं को जोड़ते हैं। इंडिया पोस्ट का बुनियादी ढांचा भौतिक है, जबकि आधुनिक प्लेटफॉर्म मॉडल पूरी तरह से तकनीक-आधारित हैं।

86. (2) व्यापार, होटल, परिवहन और संचार
कोविड-19 महामारी के दौरान लागू किए गए कड़े यात्रा प्रतिबंधों और सामाजिक दूरी के नियमों के कारण पर्यटन, होटल और परिवहन क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुए थे। इन सेवाओं के लिए प्रत्यक्ष भौतिक उपस्थिति अनिवार्य होती है, जो लॉकडाउन के दौरान असंभव थी। इसके विपरीत, सूचना प्रौद्योगिकी और वित्तीय सेवाएं डिजिटल माध्यमों से कार्य करना जारी रखने में सफल रहीं। यह घटना दर्शाती है कि सेवा क्षेत्र के विभिन्न हिस्से संकटों के प्रति अलग संवेदनशीलता रखते हैं।

87. (3) मोड 3
जब कोई विदेशी कंपनी किसी दूसरे देश में अपनी सहायक कंपनी या शाखा स्थापित करके सेवाएं प्रदान करती है, तो इसे जीएटीएस के तहत 'वाणिज्यिक उपस्थिति' या मोड 3 कहा जाता है। बेंगलुरु में सहायक कंपनी खोलना वैश्विक सेवा व्यापार का हिस्सा है जहाँ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के माध्यम से सेवाएं वितरित की जाती हैं। यह मोड स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन और तकनीकी हस्तांतरण में मदद करता है, जिससे मेजबान देश को दीर्घकालिक लाभ मिलता है।

88. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
भारत की बदलती जीवनशैली और बढ़ती उम्र के कारण स्वास्थ्य सेवाओं की मांग निरंतर बढ़ रही है। निवारक स्वास्थ्य देखभाल, जिसमें टीकाकरण और नियमित जांच शामिल है, वास्तव में उपचारात्मक देखभाल की तुलना में बहुत अधिक आर्थिक और सामाजिक प्रतिफल प्रदान करती है। यह भविष्य में होने वाले रोगों के बोझ को कम करती है और कार्यबल की उत्पादकता बनाए रखती है। इसलिए, किसी भी मजबूत स्वास्थ्य प्रणाली के लिए निवारक उपायों पर ध्यान देना बुद्धिमानी है।

89. (3) बीमा – जोखिमों का एकत्रीकरण और वित्तीय हानि का शमन
बीमा का प्राथमिक आर्थिक कार्य अनिश्चित भविष्य के जोखिमों को साझा करना है। कई लोगों से प्रीमियम के रूप में धन एकत्रित करके एक कोष बनाया जाता है, जिसका उपयोग किसी व्यक्ति को होने वाली वित्तीय हानि की भरपाई के लिए किया जाता है। यह व्यक्तिगत और व्यावसायिक गतिविधियों को सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे अर्थव्यवस्था में निवेश को बढ़ावा मिलता है। अन्य विकल्पों में वर्णित कार्य उनके संबंधित संस्थानों के कार्यों से सही ढंग से मेल नहीं खाते हैं।

NODIA

90. (1) एक खुदरा आउटलेट जो विशेष रूप से विश्व स्तर पर एक विशिष्ट लेबल के तहत ब्रांडेड सामान बेचता है
एकल-ब्रांड खुदरा में एक कंपनी केवल अपने स्वयं के ब्रांड नाम के तहत उत्पादों की बिक्री करती है। इसमें अन्य ब्रांडों के सामान बेचने की अनुमति नहीं होती। उदाहरण के तौर पर नाइके या एप्पल जैसे विशेष स्टोर शामिल हैं। भारत सरकार की नीति के तहत इस क्षेत्र में विदेशी निवेश की शर्तों को अब काफी सरल बनाया गया है। यह मॉडल ब्रांड की विशिष्टता बनाए रखने और ग्राहकों को एक अंतरराष्ट्रीय खरीदारी अनुभव प्रदान करने में सहायक है।

91. (4) डिजिटल संक्रमण ने सामग्री निर्माण का लोकतंत्रीकरण किया है, जिससे विशिष्ट सामग्री को वैश्विक दर्शक मिले हैं
डिजिटल क्रांति ने मनोरंजन उद्योग में प्रवेश की बाधाओं को कम कर दिया है। अब कोई भी व्यक्ति अपनी रचनात्मक सामग्री बनाकर उसे यूट्यूब या सोशल मीडिया के माध्यम से दुनिया भर में प्रसारित कर सकता है। इसने पारंपरिक बड़े मीडिया घरानों के एकाधिकार को चुनौती दी है और स्थानीय कलाकारों को वैश्विक मंच प्रदान किया है। यह लोकतंत्रीकरण दर्शकों को अधिक विकल्प देता है और रचनात्मक अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

52. (2) III और IV
सेवा क्षेत्र भारत के व्यापार संतुलन में अधिशेष उत्पन्न करता है, जिससे व्यापार घाटे को कम करने में सहायता मिलती है। इसके अलावा, कोविड-19 महामारी के दौरान लॉकडाउन और यात्रा प्रतिबंधों के कारण इस क्षेत्र की विकास दर प्रभावित हुई थी और यह नकारात्मक हो गई थी। हालांकि, डिजिटल सेवाओं ने कुछ लचीलापन दिखाया, लेकिन समग्र क्षेत्र को महामारी की पहली लहर में भारी आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ा था।

53. (3) राजस्थान
राजस्थान सरकार ने 'आईस्टार्ट' कार्यक्रम के माध्यम से राज्य में स्टार्टअप्स और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय पहल की है। यह कार्यक्रम उद्यमियों को वित्तीय सहायता, परामर्श और आवश्यक संसाधन प्रदान करता है ताकि वे अपनी व्यावसायिक योजनाओं को वास्तविकता में बदल सकें। इस तरह की नीतियों का उद्देश्य राज्य में सूचना प्रौद्योगिकी के बुनियादी ढांचे को मजबूत करना और युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर पैदा करना है।

54. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत में विभिन्न वित्तीय संस्थानों के लिए विशिष्ट नियामक नियुक्त हैं। भारतीय रिजर्व बैंक बैंकों का नियमन करता है, जबकि सेबी पारस्परिक निधि और शेयर बाजार की देखरेख करता है। आईआरडीएआई बीमा क्षेत्र की पारदर्शिता सुनिश्चित करता है। पीएफआरडीए पेंशन फंडों का नियामक है। यह विनियामक ढांचा निवेशकों के हितों की रक्षा करने और संपूर्ण वित्तीय प्रणाली की स्थिरता और विकास को बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।

55. (4) देश के भीतर भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता का अभाव
भारत की भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता वास्तव में इसके पर्यटन क्षेत्र की सबसे बड़ी शक्ति है, न कि कोई चुनौती। चुनौतियों में पर्यटन स्थलों तक खराब पहुंच, सुरक्षा संबंधी चिंताएं और कुशल गाइडों की कमी शामिल हैं। भारत में हिमालय से लेकर समुद्र तटों तक विविध स्थल उपलब्ध हैं। इस विविधता का सही विपणन और बुनियादी ढांचे में सुधार करके भारत पर्यटन के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर नेतृत्व कर सकता है।

56. (1) I, II, IV और V
भारतीय स्वास्थ्य क्षेत्र टेलीमेडिसिन और सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से आधुनिक हो रहा है। आयुष्मान भारत योजना ने गरीबों के स्वास्थ्य खर्च को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषज्ञों की कमी अब भी समस्या है। कथन 3 गलत है क्योंकि भारतीय दवा उद्योग कच्चे माल के लिए मुख्य रूप से अन्य देशों पर निर्भर है, जिसे आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

57. (4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा बदलाव किया है। अब शीर्ष वैश्विक विश्वविद्यालयों को भारत में अपने परिसर स्थापित करने और अपनी अकादमिक विधाएं संचालित करने की अनुमति दी गई है। इससे भारतीय छात्रों को अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा देश के भीतर ही मिल सकेगी। पूर्व में इस पर कई प्रतिबंध थे, जिन्हें अब प्रतिस्पर्धा और गुणवत्ता बढ़ाने के उद्देश्य से सरल बनाया गया है।

58. (1) संगठित खुदरा कॉर्पोरेट प्रबंधन और जटिल आपूर्ति श्रृंखलाओं का उपयोग करता है; असंगठित खुदरा स्वामी-प्रबंधित दुकानों का उपयोग करता है।
संगठित खुदरा क्षेत्र पेशेवर प्रबंधन, आधुनिक तकनीक और व्यवस्थित इन्वेंट्री नियंत्रण के माध्यम से संचालित होता है। इसके विपरीत, असंगठित खुदरा मुख्य रूप से छोटे स्थानीय किराना स्टोरों से बना है जो पारंपरिक तरीके से चलते हैं। संगठित क्षेत्र पारदर्शिता और दक्षता लाता है, जबकि असंगठित क्षेत्र अपनी स्थानीय पहुंच के लिए जाना जाता है। दोनों ही क्षेत्र भारतीय उपभोक्ता बाजार की आपूर्ति श्रृंखला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

59. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
अचल संपत्ति क्षेत्र में आरईआईटी निवेशकों को संपत्ति में निवेश का सरल तरीका प्रदान करता है। आरईआरए एक नियामक के रूप में ग्राहकों के अधिकारों की सुरक्षा करता है। किफायती आवास कम आय वाले समूहों के लिए घर उपलब्ध कराने पर केंद्रित है। फ्लोर स्पेस इंडेक्स यह निर्धारित करता है कि जमीन पर कितना निर्माण किया जा सकता है। ये सभी शब्द और नियामक ढांचा अचल संपत्ति क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

60. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
परिवहन बुनियादी ढांचे में निवेश आर्थिक विकास की गति को तेज करता है। बेहतर रेलवे और हवाई संपर्क न केवल यात्रा को सुगम बनाते हैं, बल्कि व्यापारिक लागतों को कम करके माल की आवाजाही को भी प्रभावी बनाते हैं। इससे उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है और पर्यटन जैसे क्षेत्रों को नया जीवन मिलता है। बुनियादी ढांचे का यह गुणक प्रभाव रोजगार सृजन और क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

61. (3) भारत में 5G रोलआउट पूरी तरह से पड़ोसी देशों से आयातित तकनीक पर निर्भर है और इसके कोई घरेलू परीक्षण नहीं हुए हैं।
भारत में 5G तकनीक का रोलआउट स्वदेशी नवाचार का एक गौरवशाली उदाहरण है। भारत ने अपना स्वयं का स्वदेशी 5G स्टैक विकसित किया है और इसके व्यापक परीक्षण देश के भीतर ही किए गए हैं। अन्य कथन सही हैं, क्योंकि दूरसंचार क्षेत्र में कुछ बड़ी कंपनियों का वर्चस्व है और डेटा उपभोग में भारी वृद्धि हुई है। यूएसओएफ ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण वित्तीय साधन है।

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 08
ऊर्जा, परिवहन एवं संचार

1. भारतीय संदर्भ में ऊर्जा के पारंपरिक और गैर-पारंपरिक स्रोतों के बीच के अंतर को निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सर्वश्रेष्ठ रूप से परिभाषित करता है?
(1) पारंपरिक स्रोत पूर्णतः नवीकरणीय होते हैं, जबकि गैर-पारंपरिक स्रोत सदैव समाप्य होते हैं।
(2) पारंपरिक स्रोत लंबे समय से उपयोग किए जाने वाले जीवाश्म ईंधन हैं, जबकि गैर-पारंपरिक स्रोत आधुनिक विकल्प हैं।
(3) पारंपरिक स्रोतों में परमाणु ऊर्जा सम्मिलित है, जबकि गैर-पारंपरिक स्रोतों में कोयला और पेट्रोलियम आते हैं।
(4) पारंपरिक स्रोत पूर्णतः पर्यावरण के अनुकूल हैं, जबकि गैर-पारंपरिक स्रोत भारी प्रदूषण का कारक हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. भारत में ऊर्जा स्रोतों के वर्गीकरण के संबंध में अशुद्ध युग्म की पहचान करें:
(1) पारंपरिक ऊर्जा - पवन और सौर
(2) वाणिज्यिक ऊर्जा - कोयला और पेट्रोलियम
(3) गैर-वाणिज्यिक ऊर्जा - जलाऊ लकड़ी और उपले
(4) गैर-पारंपरिक ऊर्जा - ज्वारीय और भू-तापीय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. भारत में कोयला भंडार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. भारत के कुल कोयला भंडार में गोंडवाना कोयले का अंश 98 प्रतिशत से अधिक है।
II. टर्शियरी कोयला मुख्य रूप से भारत के प्रायद्वीपीय पठार क्षेत्र में पाया जाता है।
III. एंथ्रेसाइट भारत में प्रचुरता में उपलब्ध कोयले का प्रकार है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. भारत में कोयला संसाधनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प का चयन करें:
कथन I: विशाल घरेलू कोयला भंडार होने के बावजूद भारत बड़ी मात्रा में कोकिंग कोयले का आयात करता है।
कथन II: अधिकांश भारतीय कोयला भंडारों में राख का अंश अधिक होता है और वे प्रकृति में गैर-कोकिंग होते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें:
सूची I: (कोयला/लिग्नाइट खनन क्षेत्र)
A. झरिया
B. नेवेली
C. पलाना
D. तालचर
सूची II: (राज्य)
i. ओडिशा
ii. राजस्थान
iii. तमिलनाडु
iv. झारखंड
सही कूट का चयन करें:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. निम्नलिखित में से कौन-सी भारत में कोयला क्षेत्र से जुड़ी एक प्रमुख चुनौती नहीं है?
(1) उप-इष्टतम परिवहन अवसंरचना जिसके कारण आपूर्ति में बाधाएं आती हैं।
(2) सल्फर का उच्च स्तर जिसके कारण निकटवर्ती क्षेत्रों में गंभीर अम्लीय वर्षा की समस्या होती है।
(3) भूमि अधिग्रहण और आवश्यक पर्यावरणीय अनुमति प्राप्त करने में विलंब।
(4) राख की उच्च मात्रा जो कोयले के ऊष्मीय मान (कैलोरी मान) को अत्यधिक कम कर देती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

7. भारत में कुल अनुमानित कोयला भंडार के अवरोही क्रम में राज्यों के सही अनुक्रम का चयन करें:
(1) ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल
(2) झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल
(3) छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल

(4) NW-4 (कृष्णा-गोदावरी)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. भारत में वर्तमान में केंद्र सरकार द्वारा कितने "प्रमुख बंदरगाह" (Major Ports) संचालित और प्रशासित हैं?
(1) 10
(2) 12
(3) 15
(4) 18
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. भारत में बंदरगाहों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. जवाहरलाल नेहरू पोर्ट (JNPT) भारत का सबसे बड़ा कंटेनर बंदरगाह है।
II. कांडला (दीनदयाल पोर्ट) कच्छ की खाड़ी में स्थित एक ज्वारीय बंदरगाह है।
III. कामराजार पोर्ट (एन्नोर) भारत का प्रथम प्रमुख बंदरगाह है जो कंपनी के रूप में पंजीकृत है।
IV. मुंद्रा भारत का सबसे बड़ा निजी बंदरगाह है।
V. कोलकाता बंदरगाह प्रत्यक्ष रूप से बंगाल की खाड़ी पर स्थित एक प्रमुख तटीय समुद्री बंदरगाह है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, II, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. तट (पूर्वी तट बनाम पश्चिमी तट) के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख भारतीय बंदरगाहों में से विषम की पहचान करें:
(1) कांडला
(2) मोरमुगाओ
(3) पारादीप
(4) न्यू मंगलौर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंदरगाह (कोलकाता बंदरगाह) में निरंतर ड्रेजिंग की आवश्यकता का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) हुगली नदी पर स्थित होने के कारण यहाँ भारी गाद जमा होने की प्रवृत्ति है।
(2) पूर्वी तट पर बार-बार आने वाली गंभीर सुनामी।
(3) मुख्य बंदरगाह क्षेत्र में सीधे औद्योगिक अपशिष्ट का डंपिंग।
(4) भारत में सबसे गहरे और सबसे स्थिर प्राकृतिक बंदरगाह के रूप में इसकी स्थिति।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें:
सूची I: (प्रमुख बंदरगाह)
A. मोरमुगाओ
B. विशाखापत्तनम
C. कोच्चि
D. हल्दिया
सूची II: (विशिष्ट विशेषता/राज्य)
i. सबसे गहरा भू-आबद्ध और सुरक्षित बंदरगाह
ii. जुआरी मुहाने (गोवा) के प्रवेश द्वार पर स्थित
iii. कोलकाता के सहायक के रूप में कार्य करने वाला नदी बंदरगाह
iv. वेम्बनाड कयाल के शीर्ष पर स्थित
सही कूट का चयन करें:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. सागरमाला परियोजना के संबंध में गलत कथन की पहचान करें:
(1) यह बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय का एक प्रमुख कार्यक्रम है।
(2) इसका एकमात्र केंद्र वर्तमान बंदरगाहों को उन्नत किए बिना नए प्रमुख बंदरगाहों का निर्माण करना है।
(3) इसका उद्देश्य बंदरगाह आधारित औद्योगिकीकरण और आयात-निर्यात तथा घरेलू व्यापार के लिए रसद लागत कम करना है।
(4) तटीय समुदाय का विकास इसके प्रमुख स्तंभों में से एक है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. सागरमाला के अंतर्गत बंदरगाह आधारित विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनें:
कथन I: सागरमाला प्रमुख बंदरगाहों के निकट तटीय आर्थिक क्षेत्रों (CEZs) के निर्माण की कल्पना करती है।
कथन II: तटीय आर्थिक क्षेत्र विनिर्माण को निर्यात और आयात के बिंदु के निकट लाकर रसद लागत को कम करते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. सागरमाला कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. बंदरगाह आधुनिकीकरण और नए बंदरगाहों का विकास एक प्रमुख स्तंभ है।
II. पृष्ठप्रदेश (Hinterland) तक बंदरगाह संपर्क बढ़ाना इसमें सम्मिलित है।
III. तटीय जहाजरानी और अंतर्देशीय जलमार्ग परिवहन को

Click Here to Buy book on Amazon

(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. निम्नलिखित में से किसे भारत के तीन चरणों वाले परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की अवधारणा तैयार करने का श्रेय दिया जाता है?
(1) ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
(2) होमी जे. भाभा
(3) विक्रम साराभाई
(4) सतीश धवन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. भारत में परमाणु ऊर्जा के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनें:
कथन I: परमाणु ऊर्जा वर्तमान में भारत की कुल स्थापित विद्युत क्षमता में 5 प्रतिशत से भी कम योगदान देती है।
कथन II: परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE) प्रत्यक्ष रूप से भारत के प्रधानमंत्री के अधीन कार्य करता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. प्रथम चरण दाबित भारी जल रिएक्टरों (PHWRs) का उपयोग करता है।
II. त्वरित प्रजनक रिएक्टर (Fast Breeder Reactors) द्वितीय चरण का निर्माण करते हैं और प्लूटोनियम का उपयोग करते हैं।
III. थोरियम का उपयोग प्रथम चरण का प्राथमिक केंद्र है।
IV. भारत के पास केरल की मोनाजाइट रेत में थोरियम का विशाल भंडार है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. भारत की ऊर्जा सुरक्षा और सामरिक पेट्रोलियम भंडार (SPR) के संबंध में गलत कथन की पहचान करें:
(1) सामरिक पेट्रोलियम भंडार सुविधाएं अल्पकालिक वैश्विक आपूर्ति व्यवधानों के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण बफर के रूप में कार्य करती हैं।
(2) इंडियन स्ट्रैटेजिक पेट्रोलियम रिजर्व्स लिमिटेड (ISPRL) ऐसे सभी भंडारों का प्रबंधन करती है।
(3) सामरिक पेट्रोलियम भंडार सुविधाओं में दो वर्षों की कुल मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त कच्चा तेल उपलब्ध है।
(4) मैंगलोर और विशाखापत्तनम सामरिक पेट्रोलियम भंडार सुविधाओं के प्रमुख स्थान हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

20. एक ऊर्जा कंपनी प्राकृतिक गैस निकालना चाहती है जो कोयले की परतों के भीतर फंसी हुई है। निम्नलिखित में से कौन-सा विशिष्ट शब्द इस संसाधन का वर्णन करता है?
(1) शेल गैस
(2) टाइट गैस
(3) तरलीकृत प्राकृतिक गैस
(4) कोल बेड मीथेन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. राजस्थान में स्थित कौन-सा सौर पार्क क्षमता के आधार पर विश्व के सबसे बड़े सौर पार्कों में से एक होने का गौरव रखता है?
(1) पावागढ़ सोलर पार्क
(2) कुरनूल अल्ट्रा मेगा सोलर पार्क
(3) भदला सोलर पार्क
(4) रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. भारत में सौर ऊर्जा पहलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. भारत को सौर ऊर्जा में वैश्विक अग्रणी के रूप में स्थापित करने के लिए राष्ट्रीय सौर मिशन प्रारंभ किया गया था।
II. अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) का मुख्यालय गुरुग्राम, भारत में स्थित है।
III. पीएम-कुसुम योजना का उद्देश्य विशेष रूप से शहरी घरों में रूफटॉप सौर स्थापना को बढ़ावा देना है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. भारत में उच्चतम स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता वाले शीर्ष पांच राज्यों की सूची में निम्नलिखित में से किस राज्य को सामान्यत: अपवाद माना जाता है?
(1) राजस्थान
(2) गुजरात
(3) कर्नाटक
(4) असम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. भारत में पवन ऊर्जा के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प का चयन करें:

कथन I: भारत की पवन ऊर्जा क्षमता मुख्य रूप से तटीय राज्यों और राजस्थान में केंद्रित है।
कथन II: अंतर्देशीय महाद्वीपीय क्षेत्रों की तुलना में अपतटीय और तटीय क्षेत्रों में वायु की गति प्रायः अधिक और निरंतर होती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें:
सूची I: (अक्षय ऊर्जा पार्क/परियोजना)
A. चरणका सोलर पार्क
B. कामुथी सौर ऊर्जा परियोजना
C. मुप्पंडल विंड फार्म
D. जैसलमेर विंड पार्क
सूची II: (राज्य)
i. राजस्थान
ii. गुजरात
iii. तमिलनाडु
iv. तमिलनाडु
सही कूट का चयन करें:
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. निम्नलिखित राज्यों पर विचार करें:
I. तमिलनाडु
II. गुजरात
III. कर्नाटक
IV. महाराष्ट्र
उन्हें भारत में उनकी कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता के अवरोही क्रम में व्यवस्थित करें:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, IV, III
(3) I, II, IV, III
(4) II, I, III, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. भारत में सौर ऊर्जा उत्पादन के संबंध में सही कथन की पहचान करें:
(1) ग्रिड से जुड़े रूफटॉप सोलर की क्षमता, उपयोगिता-पैमाने वाली भूमि पर स्थापित सौर परियोजनाओं से अधिक है।
(2) भारत में आवासीय रूफटॉप सोलर के लिए केंद्रित सौर ऊर्जा (CSP) सर्वाधिक उपयोग की जाने वाली तकनीक है।
(3) आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत पूर्ण आत्मनिर्भरता के कारण भारत सौर पैनलों का आयात बिल्कुल नहीं करता है।
(4) फोटोवोल्टिक (PV) तकनीक अर्धचालकों का उपयोग करके सूर्य के प्रकाश को सीधे विद्युत में परिवर्तित करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): सौर और पवन ऊर्जा के बड़े पैमाने पर एकीकरण के लिए उन्नत ग्रिड संतुलन तंत्र की आवश्यकता होती है।
कारण (R): सौर और पवन ऊर्जा उत्पादन असतत (रुक-रुक कर) होता है और मौसम की स्थिति पर निर्भर करता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. एक राज्य सरकार मरुस्थलीय क्षेत्र में एक नई अक्षय ऊर्जा सुविधा स्थापित करने की योजना बना रही है जहाँ रात में वायु की गति अधिक होती है और दिन में तीव्र धूप रहती है। निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सबसे कुशल होगा?
(1) उच्च तीव्रता वाले सूर्य के प्रकाश के लिए एक स्वतंत्र सौर तापीय संयंत्र स्थापित करना।
(2) मरुस्थल की तटीय सीमाओं के पास एक विशेष अपतटीय पवन फार्म स्थापित करना।
(3) भूमि और ग्रिड अवसंरचना के इष्टतम उपयोग के लिए पवन-सौर हाइब्रिड पार्क विकसित करना।
(4) स्थानीय कृषि अपशिष्ट का उपयोग करके बड़े पैमाने पर बायोमास गैसीकरण संयंत्र बनाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. नेशनल ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर को क्रियान्वित करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लाभ क्या है?
(1) विभिन्न नए ऊर्जा पार्कों में संकटग्रस्त वन्यजीवों के आवागमन को प्रतिबंधित करना।
(2) विशेष रूप से निर्मित इलेक्ट्रिक रेलवे के माध्यम से भारी कोयले का परिवहन करना।
(3) सभी वर्तमान राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे व्यवस्थित रूप से वृक्षारोपण अनिवार्य करना।
(4) राष्ट्रीय ग्रिड में पारंपरिक विद्युत के साथ अक्षय विद्युत का समन्वय स्थापित करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. भारत में किस नदी बेसिन में व्यावसायिक रूप से दोहन योग्य सर्वाधिक जलविद्युत क्षमता अनुमानित है?
(1) ब्रह्मपुत्र बेसिन
(2) गंगा बेसिन

Downloaded from www.pdf.tube

(3) सिंधु बेसिन
(4) गोदावरी बेसिन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. भारत में प्रमुख जलविद्युत परियोजनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. टिहरी बांध भागीरथी नदी पर स्थित है।
II. भाखड़ा नांगल परियोजना सतलुज नदी पर स्थित है।
III. नाथपा झाकड़ी परियोजना हिमाचल प्रदेश में है।
IV. इडुक्की बांध कर्नाटक की एक प्रमुख परियोजना है।
V. सरदार सरोवर बांध नर्मदा नदी पर निर्मित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) II, III, IV और V
(3) I, II, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. जैव ऊर्जा (Bioenergy) स्रोतों और उनके व्युत्पन्न उत्पादों के संदर्भ में विषम की पहचान करें:
(1) खोई (Bagasse)
(2) बिटुमेन
(3) बायो-एथेनॉल
(4) संपीड़ित बायोगैस (Compressed Biogas)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. जलविद्युत परियोजना और संबंधित नदी के अशुद्ध युग्म की पहचान करें:
(1) पोंग बांध - यमुना
(2) सलाल परियोजना - चेनाब
(3) उकाई परियोजना - तापी
(4) श्रीशैलम परियोजना - कृष्णा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें:
सूची I: (ऊर्जा अवधारणा)
A. लघु जलविद्युत
B. बायो-एथेनॉल
C. बायोगैस
D. रन-ऑफ-द-रिवर परियोजना
सूची II: (विशेषता/स्रोत)
i. जैविक कचरे का अवायवीय पाचन (Anaerobic digestion)
ii. शीरा और क्षतिग्रस्त खाद्यान्न
iii. भारत में 25 मेगावाट तक की क्षमता
iv. बड़े जलाशय के बिना नदी के प्राकृतिक प्रवाह का उपयोग
सही कूट का चयन करें:
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. रन-ऑफ-द-रिवर (RoR) जलविद्युत परियोजनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनें:
कथन I: बड़े जलाशय-आधारित बांधों की तुलना में RoR परियोजनाएं प्रायः कम पर्यावरणीय जलमग्नता का कारण बनती हैं।
कथन II: RoR परियोजनाएं बड़े जल भंडारण के स्थान पर मुख्य रूप से नदी के प्राकृतिक प्रवाह पर निर्भर करती हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

37. भारत की जैव ऊर्जा (Bioenergy) नीतियों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें:
(1) जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति बायोडीजल के लिए गैर-खाद्य तिलहनों के उपयोग को प्रोत्साहित करती है।
(2) SATAT योजना का उद्देश्य संपीड़ित बायोगैस (CBG) उत्पादन संयंत्र स्थापित करना है।
(3) भारत ने पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथेनॉल सम्मिश्रण का लक्ष्य बढ़ाकर 2030 कर दिया है।
(4) जैव ऊर्जा कृषि अवशेषों का उपयोग करती है, जिससे पराली जलाने की समस्या कम करने में सहायता मिलती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. भारत में लघु जलविद्युत (SHP) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. 25 मेगावाट तक की परियोजनाओं को लघु जलविद्युत के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
II. SHP परियोजनाओं का प्रबंधन पूर्णतः विद्युत मंत्रालय द्वारा किया जाता है, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा नहीं।
III. बड़ी जलविद्युत परियोजनाओं की तुलना में इनकी निर्माण अवधि कम होती है।
IV. ये विशेष रूप से दूरस्थ और पहाड़ी क्षेत्रों के विद्युतीकरण के लिए उपयुक्त हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

iii. वाराणसी
iv. चित्तरंजन
सही कूट का चयन करें:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. रसद (लॉजिस्टिक्स) क्षेत्र पर पूर्वी और पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारों के पूर्ण होने का अपेक्षित प्राथमिक प्रभाव क्या है?
(1) माल परिवहन के पारगमन समय और इकाई लागत में कमी।
(2) सभी यात्री ट्रेनों का नए निर्मित गलियारों में पूर्ण स्थानांतरण।
(3) प्रमुख परियोजना लागतों की प्रतिपूर्ति के लिए माल ढुलाई दरों में तत्काल दोगुनी वृद्धि।
(4) रेल द्वारा परिवहन की जाने वाली प्राथमिक वस्तुओं की कुल मात्रा में कमी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. समर्पित माल ढुलाई गलियारे (DFC) के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनें:
कथन I: पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा उत्तर प्रदेश के दादरी को महाराष्ट्र के जवाहरलाल नेहरू पोर्ट से जोड़ता है।
कथन II: पूर्वी समर्पित माल ढुलाई गलियारा मुख्य रूप से पूर्वी भारत से उत्तरी विद्युत संयंत्रों तक कोयले और इस्पात के तीव्र परिवहन के लिए बनाया गया है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. समर्पित माल ढुलाई गलियारों (DFCs) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. पूर्वी DFC पंजाब के लुधियाना से पश्चिम बंगाल के दानकुनी तक विस्तारित है।
II. पश्चिमी DFC को जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (JICA) द्वारा आंशिक रूप से वित्तपोषित किया जा रहा है।
III. DFCs को डबल-स्टैक कंटेनरों को संचालित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
IV. DFCs मालगाड़ियों को 40 किमी प्रति घंटे की अधिकतम गति से चलने की अनुमति देंगे।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. भारतीय रेलवे में हाल के सुधारों और सुरक्षा तंत्र के संबंध में गलत कथन की पहचान करें:
(1) 'कवच' स्वदेशी रूप से विकसित स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली है।
(2) 2017-18 से रेल बजट का सामान्य बजट में विलय कर दिया गया था।
(3) वंदे भारत एक्सप्रेस एक सेमी-हाई-स्पीड, बिना लोकोमोटिव वाला ट्रेनसेट है।
(4) कवच तकनीक पूर्णतः जर्मनी से आयात की गई थी और भारत के लिए अनुकूलित की गई थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. कोंकण रेलवे द्वारा लोकप्रिय बनाई गई 'रो-रो' (Roll-on/Roll-off) सेवा को निम्नलिखित में से कौन सर्वश्रेष्ठ रूप से परिभाषित करता है?
(1) एक अनूठी सेवा जहाँ यात्री चलती ट्रेन में टिकट क्रय कर सकते हैं।
(2) लदे हुए ट्रकों को परिवहन के लिए सीधे रेलवे के फ्लैटबेड वैगनों पर ले जाना।
(3) परिचालन संबंधी थकान को रोकने के लिए ट्रेन चालकों का चक्रीय समय-सारणी।
(4) रखरखाव के दौरान पटरियों को स्वचालित रूप से घुमाने के लिए एक यांत्रिक प्रणाली।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा प्रारंभ की गई उड़ान (UDAN) योजना का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) भारत में स्थित सभी बड़े अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों का निजीकरण करना।
(2) सभी अंतरराष्ट्रीय कार्गो उड़ान मार्गों के लिए कुल ईंधन लागत पर सब्सिडी देना।
(3) क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाना ताकि हवाई यात्रा सभी के लिए वहनीय हो सके।
(4) घरेलू एयरलाइन संचालन में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रतिबंधित करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें:
सूची I: (प्रमुख बंदरगाह)
A. मोरमुगाओ
B. विशाखापत्तनम
C. कोच्चि
D. हल्दिया
सूची II: (विशिष्ट विशेषता/राज्य)
i. सबसे गहरा भू-आबद्ध और सुरक्षित बंदरगाह
ii. जुआरी मुहाने (गोवा) के प्रवेश द्वार पर स्थित
iii. कोलकाता के सहायक के रूप में कार्य करने वाला नदी

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित में से कौन-सा हरित राजमार्ग (वृक्षारोपण, प्रत्यारोपण, सौंदर्यीकरण और रखरखाव) नीति का प्राथमिक उद्देश्य नहीं है?
(1) सड़क निर्माण के लिए डामर को पूर्णतः जैव-निम्नीकरणीय सामग्रियों से प्रतिस्थापित करना।
(2) राजमार्ग गलियारों में हरियाली को बढ़ावा देना।
(3) वायु और ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव को कम करना।
(4) वृक्षारोपण गतिविधियों के माध्यम से स्थानीय समुदायों को रोजगार के अवसर प्रदान करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): केरल में सड़क घनत्व जम्मू और कश्मीर के सड़क घनत्व की तुलना में काफी अधिक है।
कारण (R): भू-भाग, स्थलाकृति और जनसंख्या घनत्व सड़क नेटवर्क के विकास को अत्यधिक प्रभावित करते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. एक वाणिज्यिक परिवहन कंपनी नकद लेनदेन के बिना राष्ट्रीय राजमार्गों पर टोल प्लाजा के माध्यम से अपने ट्रकों की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित करना चाहती है। इस उद्देश्य के लिए प्रयुक्त फास्टैग (FASTag) प्रणाली का आधार कौन-सी तकनीक है?
(1) ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (GPS)
(2) रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (RFID)
(3) नियर फील्ड कम्युनिकेशन (NFC)
(4) ब्लूटूथ लो एनर्जी (BLE)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. भारत का सबसे लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग कौन-सा है, जो उत्तर में श्रीनगर से दक्षिण में कन्याकुमारी तक जाता है?
(1) NH 44
(2) NH 27
(3) NH 48
(4) NH 52
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. प्रशासनिक सुविधा के लिए भारतीय रेलवे नेटवर्क को वर्तमान में कितने क्षेत्रों (कोलकाता मेट्रो सहित) में विभाजित किया गया है?
(1) 16
(2) 17
(3) 18
(4) 19
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. भारतीय रेलवे नेटवर्क के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह एकल प्रबंधन के अंतर्गत विश्व का सबसे बड़ा रेलवे नेटवर्क है।
II. यूनीगेज नीति का उद्देश्य सभी पटरियों को ब्रॉड गेज (बड़ी लाइन) में परिवर्तित करना है।
III. विवेक एक्सप्रेस वर्तमान में भारत में सबसे लंबे मार्ग वाली ट्रेन है।
IV. कोंकण रेलवे पश्चिमी घाट के माध्यम से महाराष्ट्र को केरल से जोड़ता है।
V. भारत में 100 प्रतिशत ब्रॉड गेज नेटवर्क का विद्युतीकरण हो चुका है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. पटरियों की चौड़ाई के आधार पर निम्नलिखित भारतीय रेलवे गेज में से विषम की पहचान करें:
(1) ब्रॉड गेज
(2) मीटर गेज
(3) स्टैंडर्ड गेज
(4) नैरो गेज
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. भारत में समर्पित माल ढुलाई गलियारों (DFCs) के निर्माण का सर्वाधिक उपयुक्त कारण क्या है?
(1) प्रमुख महानगरों के बीच हाई-स्पीड बुलेट ट्रेनों के संचालन की अनुमति देना।
(2) गति और दक्षता बढ़ाने के लिए माल ढुलाई को यात्री यातायात से पृथक करना।
(3) सभी वाणिज्यिक वस्तुओं के लिए सड़क परिवहन के उपयोग को पूर्णतः समाप्त करना।
(4) किसानों के लिए विभिन्न कृषि उत्पादों का पूर्णतः निशुल्क परिवहन प्रदान करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें:
सूची I: (रेलवे विनिर्माण इकाई)
A. इंटीग्रल कोच फैक्ट्री
B. रेल कोच फैक्ट्री
C. चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स
D. बनारस लोकोमोटिव वर्क्स
सूची II: (स्थान)
i. कपूरथला
ii. पेरंबूर (चेन्नई)

Downloaded from www.pdf.tube

39. हिमालयी क्षेत्र में स्थित जलविद्युत परियोजनाओं में बार-बार होने वाली तकनीकी और रखरखाव संबंधी चुनौतियों का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) अत्यधिक तापमान जिसके कारण उच्च ऊंचाई वाले जलाशयों में तीव्र वाष्पीकरण होता है।
(2) बिना तलछट भार के पूर्वानुमानित और स्थिर मौसमी जल प्रवाह।
(3) संपूर्ण पर्वतीय क्षेत्रों में बारहमासी नदियों का पूर्णतः अभाव।
(4) नाजुक भूगर्भीय संरचनाएं और उच्च गाद का स्तर जिससे भू-अस्थिरता उत्पन्न होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. भारतीय संदर्भ में मानक परिभाषा के अनुसार, 'लघु जलविद्युत' को 'बड़ी जलविद्युत' परियोजनाओं से कौन-सा कारक पृथक करता है?
(1) स्थापित क्षमता 25 मेगावाट या उससे कम होना।
(2) बांध की ऊंचाई 15 मीटर से कम होना।
(3) विशेष रूप से मौसमी नदियों पर निर्माण किया जाना।
(4) कुल वित्तीय निवेश 10 करोड़ से कम होना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. ऊर्जा सुरक्षा और संधारणीयता के दृष्टिकोण को रेखांकित करने वाली भारत की 'राष्ट्रीय ऊर्जा नीति' का मसौदा तैयार करने के लिए मुख्य रूप से कौन-सा संस्थान उत्तरदायी था?
(1) विद्युत मंत्रालय
(2) केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण
(3) नीति आयोग
(4) नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. COP26 में भारत द्वारा प्रस्तुत 'पंचामृत' रणनीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता प्राप्त करना।
II. 2030 तक अक्षय ऊर्जा से ऊर्जा आवश्यकताओं का 50 प्रतिशत पूर्ण करना।
III. वर्ष 2050 तक शुद्ध शून्य (Net Zero) उत्सर्जन का लक्ष्य प्राप्त करना।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. भारत के सड़क परिवहन नेटवर्क के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनें:
कथन I: भारत के पास विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क है।
कथन II: राष्ट्रीय राजमार्ग भारत में कुल सड़क लंबाई का 10 प्रतिशत से अधिक भाग बनाते हैं लेकिन लगभग 40 प्रतिशत सड़क यातायात का वहन करते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. भारतमाला परियोजना के संबंध में सही कथन की पहचान करें:
(1) यह विशेष रूप से उत्तर भारत में आधुनिक अंतर्देशीय जलमार्ग विकसित करने पर केंद्रित है।
(2) अवसंरचनात्मक कमियों को दूर कर माल और यात्री आवाजाही को अनुकूलतम बनाना।
(3) यह पूर्णतः विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित है जिसमें कोई घरेलू बजटीय सहायता नहीं है।
(4) यह ग्रामीण कनेक्टिविटी में सुधार के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का स्थान लेती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें:
सूची I: (राजमार्ग गलियारा/परियोजना)
A. स्वर्णिम चतुर्भुज
B. उत्तर-दक्षिण गलियारा
C. पूर्व-पश्चिम गलियारा
D. उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम गलियारों का मिलन स्थल
सूची II: (विवरण/स्थान)
i. श्रीनगर से कन्याकुमारी
ii. सिलचर से पोरबंदर
iii. दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता को जोड़ता है
iv. झाँसी
सही कूट का चयन करें:
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. निम्नलिखित राज्यों पर विचार करें:
I. महाराष्ट्र
II. उत्तर प्रदेश
III. राजस्थान
IV. मध्य प्रदेश
उन्हें राज्य के भीतर राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई के अवरोही क्रम में व्यवस्थित करें:
(1) I, II, III, IV
(2) I, II, IV, III
(3) II, I, III, IV
(4) III, I, II, IV

NODIA

बंदरगाह
iv. वेम्बनाड कयाल के शीर्ष पर स्थित
सही कोड का चयन करें:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. सागरमाला परियोजना के संबंध में गलत कथन की पहचान करें:
(1) यह बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय का एक प्रमुख कार्यक्रम है।
(2) इसका एकमात्र केंद्र मौजूदा बंदरगाहों को उन्नत किए बिना नए प्रमुख बंदरगाहों का निर्माण करना है।
(3) इसका उद्देश्य बंदरगाह आधारित औद्योगिकीकरण और EXIM (आयात-निर्यात) तथा घरेलू व्यापार के लिए रसद लागत कम करना है।
(4) तटीय समुदाय का विकास इसके प्रमुख स्तंभों में से एक है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और उससे संबंधित शहर के सही युग्म की पहचान करें:
(1) नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा - हैदराबाद
(2) लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा - गुवाहाटी
(3) राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा - कोलकाता
(4) केम्पेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा - चेन्नई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें:
सूची I: (राष्ट्रीय जलमार्ग)
A. NW-1
B. NW-2
C. NW-3
D. NW-4
सूची II: (नदी/नहर प्रणाली)
i. ब्रह्मपुत्र नदी
ii. गंगा-भागीरथी-हुगली नदी
iii. कृष्णा और गोदावरी नदियाँ
iv. पश्चिम तट नहर
सही कूट का चयन करें:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. राष्ट्रीय जलमार्गों को उनकी कुल लंबाई के अवरोही क्रम में व्यवस्थित सही अनुक्रम चुनें:
(1) NW-1, NW-4, NW-2, NW-3
(2) NW-4, NW-1, NW-2, NW-3
(3) NW-1, NW-2, NW-4, NW-3
(4) NW-4, NW-2, NW-1, NW-3
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. निम्नलिखित में से कौन-सी भारत में अंतर्देशीय जलमार्गों के विकास और उपयोग में बाधक एक प्रमुख चुनौती नहीं है?
(1) जल प्रवाह में अत्यधिक मौसमी परिवर्तन।
(2) भारी गाद जमाव (Siltation) जिसके कारण नदियों की नौगम्य गहराई कम हो जाती है।
(3) सड़क परिवहन की तुलना में अत्यधिक उच्च ईंधन लागत।
(4) वर्तमान पुलों के नीचे पर्याप्त ऊर्ध्वाधर निकासी (Vertical Clearance) का अभाव।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): अत्यधिक ईंधन-कुशल और पर्यावरण के अनुकूल होने के बावजूद, भारत के माल परिवहन में अंतर्देशीय जलमार्गों का अंश अत्यंत कम है।
कारण (R): अधिकांश भारतीय नदियों में बड़े जहाजों के लिए बारहमासी पर्याप्त गहराई का अभाव है और उन्हें निरंतर गाद निकालने (ड्रेजिंग) की आवश्यकता होती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. कृषि उड़ान योजना के संबंध में सही कथन की पहचान करें:
(1) यह किसानों को व्यावसायिक हवाई यात्रा के लिए विभिन्न सब्सिडी प्रदान करती है।
(2) यह कृषि में ड्रोन के उपयोग को व्यावसायिक विमानों से प्रतिस्थापित करती है।
(3) बेहतर मूल्य प्राप्ति के लिए उत्पादों के परिवहन में किसानों की सहायता करना।
(4) यह अनिवार्य करती है कि सभी कृषि निर्यात हवाई परिवहन के माध्यम से हों।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. जल मार्ग विकास परियोजना (JMVP) किस विशिष्ट राष्ट्रीय जलमार्ग की नौवहन क्षमता को बढ़ाने के लिए कार्यान्वित की जा रही है?
(1) NW-2 (ब्रह्मपुत्र)
(2) NW-1 (गंगा)
(3) NW-3 (पश्चिम तट नहर)

Click Here to Buy book on Amazon

(4) झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. भारत में खान-मुहाना (पिट-हेड) ताप विद्युत केंद्रों की स्थापना का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) लंबी दूरी तक भारी कोयले के परिवहन की उच्च लागत।
(2) बिजली संयंत्रों को घनी आबादी वाले शहरी क्षेत्रों से दूर रखने का सरकारी अधिदेश।
(3) प्रमुख कोयला खदानों से दूर स्थित क्षेत्रों में पर्याप्त जलापूर्ति का अभाव।
(4) वर्तमान खनन क्षेत्रों के पास विशेष और कुशल श्रम की बेहतर उपलब्धता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन भारत की वर्तमान विद्युत उत्पादन क्षमता के मिश्रण का सही वर्णन करता है?
(1) कुल स्थापित क्षमता में अक्षय ऊर्जा, तापीय ऊर्जा से अधिक हो गई है।
(2) कुल स्थापित क्षमता में परमाणु ऊर्जा का योगदान 10 प्रतिशत से अधिक है।
(3) कुल स्थापित क्षमता में तापीय ऊर्जा का अंश सर्वाधिक है।
(4) कुल स्थापित क्षमता में जलविद्युत का भाग 30 प्रतिशत से अधिक है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारत में कोयला आधारित विद्युत संयंत्रों की तापीय दक्षता प्रायः वैश्विक औसत की तुलना में कम है।
कारण (R): भारतीय कोयला मुख्य रूप से बिटुमिनस और सब-बिटुमिनस श्रेणी का है जिसमें राख का अंश अधिक होता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. भारत में कच्चे तेल के उत्पादन में किस क्षेत्र का योगदान सर्वाधिक है?
(1) असम-अराकान बेसिन
(2) खंभात बेसिन
(3) राजस्थान बेसिन
(4) बॉम्बे हाई (अपतटीय)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. भारत में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. भारत अपनी कच्चे तेल की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आयात पर अत्यधिक निर्भर है।
II. मंगला, भाग्यम और ऐश्वर्या क्षेत्र राजस्थान में प्रमुख तेल खोजें हैं।
III. हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर (HVJ) पाइपलाइन भारत की पहली अंतर-राज्यीय गैस पाइपलाइन है।
IV. सामरिक पेट्रोलियम भंडार का रखरखाव भारत में पूर्णतः निजी क्षेत्र की रिफाइनरियों द्वारा किया जाता है।
V. प्राकृतिक गैस को कोयले की तुलना में स्वच्छ संक्रमणकालीन ईंधन माना जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. भौगोलिक स्थिति (तटीय बनाम अंतर्देशीय) के आधार पर भारत की निम्नलिखित तेल रिफाइनरियों में से विषम की पहचान करें:
(1) मथुरा
(2) बरौनी
(3) कोच्चि
(4) पानीपत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. भारत सरकार द्वारा ऊर्जा मिश्रण में प्राकृतिक गैस को बढ़ावा देने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(1) यह भारत में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, जिससे आयात की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।
(2) इसके परिवहन और भंडारण के लिए किसी विशेष अवसंरचना की आवश्यकता नहीं होती है।
(3) यह भविष्य के लिए ऊर्जा का पूर्णतः अक्षय और संधारणीय स्रोत है।
(4) कोयले या तेल की तुलना में कार्बन डाइऑक्साइड और प्रदूषकों का उत्सर्जन इसमें काफी कम होता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें:
सूची I: (परमाणु ऊर्जा संयंत्र)
A. रावतभाटा
B. काकरापार
C. कैगा
D. कुडनकुलम
सूची II: (राज्य)
i. गुजरात
ii. राजस्थान
iii. तमिलनाडु
iv. कर्नाटक
सही कूट का चयन करें:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv

NODIA

बढ़ावा देना एक प्रमुख उद्देश्य है।
IV. कुल वित्तपोषण विशेष रूप से निजी विदेशी निवेशकों द्वारा प्रदान किया जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. बंदरगाहों और परिवहन रसद के संदर्भ में 'पृष्ठप्रदेश' (Hinterland) की अवधारणा को निम्नलिखित में से कौन सर्वश्रेष्ठ रूप से वर्णित करता है?
(1) बंदरगाह के पीछे का भूमि क्षेत्र जो निर्यात वस्तुएं प्रदान करता है और आयात का उपभोग करता है।
(2) बड़े मालवाहक जहाजों के सुरक्षित लंगर हेतु निर्मित गहरा जल मार्ग।
(3) विशेष रूप से विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए निर्मित विशेष आर्थिक क्षेत्र।
(4) वह भौगोलिक क्षेत्र जिस पर बंदरगाह का विशेष प्रशासनिक नियंत्रण होता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. भारत में 'कैबोटेज नियमों' में ढील से मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस क्षेत्र को लाभ होता है?
(1) अंतर्देशीय सड़क परिवहन नेटवर्क में सुधार।
(2) तटीय जहाजरानी और निर्यात-निर्यात कंटेनरों का ट्रांसशिपमेंट।
(3) एयरलाइन कार्गो संचालन का आधुनिकीकरण।
(4) यात्री रेलवे यात्रा सेवाओं का विस्तार।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

81. कौन-सा नियामक निकाय भारतीय दूरसंचार क्षेत्र में टैरिफ की निगरानी करने और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा बनाए रखने के लिए उत्तरदायी है?
(1) दूरसंचार विभाग (DoT)
(2) भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (TRAI)
(3) इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY)
(4) नीति आयोग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

82. 5G तकनीक के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह 4G LTE की तुलना में काफी कम लैटेंसी (Latency) प्रदान करती है।
II. यह केवल 1 गीगाहर्ट्ज से नीचे के लो-बैंड स्पेक्ट्रम पर संचालित होती है।
III. यह मैसिव मशीन टाइप कम्युनिकेशंस (mMTC) का समर्थन करती है जो IoT के लिए आवश्यक है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

83. भारतनेट परियोजना के संबंध में सही कथन की पहचान करें:
(1) यह शहरी मॉल्स में निशुल्क वाई-फाई प्रदान करने की एक निजी क्षेत्र की पहल है।
(2) यह बिना किसी भौतिक केबल का उपयोग किए विशेष रूप से 5G वायरलेस तकनीक पर निर्भर करती है।
(3) इसका उद्देश्य ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क का उपयोग करके देश की सभी ग्राम पंचायतों को जोड़ना है।
(4) यह पूर्णतः विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. निम्नलिखित में से कौन डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के नौ स्तंभों में से एक नहीं है?
(1) ब्रॉडबैंड हाईवे
(2) मोबाइल कनेक्टिविटी तक सार्वभौमिक पहुंच
(3) पब्लिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम
(4) अनिवार्य क्रिप्टोकरेंसी अपनाना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें:
सूची I: (टेलीकॉम जनरेशन)
A. 1G
B. 2G
C. 3G
D. 4G
सूची II: (परिभाषित विशेषता)
i. एनालॉग वॉयस
ii. डिजिटल वॉयस और SMS
iii. मोबाइल ब्रॉडबैंड और बुनियादी वीडियो कॉलिंग
iv. हाई-स्पीड IP-आधारित नेटवर्क (LTE)
सही कूट का चयन करें:
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

86. भारत में दूरसंचार से संबंधित निम्नलिखित महत्वपूर्ण नीतियों पर विचार करें:
I. राष्ट्रीय डिजिटल संचार नीति
II. राष्ट्रीय दूरसंचार नीति 1994
III. नई दूरसंचार नीति 1999
उन्हें उनके लागू होने के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
(1) II, III, I
(2) I, II, III
(3) II, I, III
(4) III, II, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

भी कम हो जाएगी। यह औद्योगिक उत्पादन को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाता है क्योंकि कच्चा माल और तैयार उत्पाद तेजी से अपने गंतव्य तक पहुँच सकते हैं। यह सुधार भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाने और निर्यात क्षमता बढ़ाने के लिए अनिवार्य कदम है।

57. (2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा उत्तर प्रदेश के दादरी को महाराष्ट्र के महत्वपूर्ण जवाहरलाल नेहरु पोर्ट से जोड़ता है, जो आयात-निर्यात के लिए महत्वपूर्ण है। पूर्वी गलियारा मुख्य रुप से कोयले, अनाज और इस्पात जैसे भारी सामानों के परिवहन के लिए पंजाब और पश्चिम बंगाल के बीच बनाया गया है। हालांकि दोनों कथन अपनी जगह सही हैं, लेकिन पूर्वी गलियारे की उपयोगिता पश्चिमी गलियारे के रूट का कारण या व्याख्या नहीं है। दोनों अलग-अलग भौगोलिक और आर्थिक क्षेत्रों की विशिष्ट मांगों को पूरा करते हैं।

58. (1) I, II और III
पूर्वी गलियारा लुधियाना से दानकुनी तक फैला है और पश्चिमी गलियारा जापान के वित्तीय सहयोग से विकसित किया जा रहा है। ये गलियारे आधुनिक तकनीक से सुसज्जित हैं और डबल-स्टैक कंटेनरों को ले जाने में सक्षम हैं, जिससे परिवहन क्षमता दोगुनी हो जाती है। इन ट्रैक पर मालगाड़ियों की गति 100 किमी प्रति घंटे तक हो सकती है, न कि केवल 40 किमी। यह अवसंरचना भारत के भीतरी क्षेत्रों को बंदरगाहों से जोड़कर व्यापारिक सुगमता और आर्थिक विकास के नए द्वार खोलने में सहायक है।

59. (4) कवच तकनीक पूर्णतः जर्मनी से आयात की गई थी और भारत के लिए अनुकूलित की गई थी।
'कवच' एक स्वदेशी रुप से विकसित स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली है, जिसे भारतीय अनुसंधान डिजाइन और मानक संगठन द्वारा बनाया गया है, यह जर्मनी से आयातित नहीं है। यह प्रणाली ट्रेनों को आपस में टकराने से रोकती है और सुरक्षा सुनिश्चित करती है। रेलवे बजट का सामान्य बजट में विलय और वंदे भारत जैसी आधुनिक ट्रेनों का संचालन हाल के बड़े सुधार हैं। कवच जैसी स्वदेशी तकनीक का उपयोग भारत की आत्मनिर्भरता और वैश्विक स्तर पर सुरक्षित रेल यात्रा के संकल्प को प्रदर्शित करता है।

60. (2) लदे हुए ट्रकों को परिवहन के लिए सीधे रेलवे के फ्लैटबेड वैगनों पर ले जाना।
'रो-रो' सेवा एक अभिनव परिवहन मॉडल है जहाँ सामान से लदे ट्रकों को सीधे रेल वैगनों पर चढ़ा दिया जाता है। इससे ट्रकों को लंबी दूरी तक सड़क मार्ग से नहीं चलना पड़ता, जिससे ईंधन की बचत होती है और सड़क यातायात का दबाव कम होता है। कोंकण रेलवे ने इस सेवा को सफलतापूर्वक लागू किया है, जिससे प्रदूषण में कमी और माल की तेजी से आपूर्ति सुनिश्चित हुई है। यह मॉडल परिवहन के विभिन्न साधनों के बीच एक कुशल समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

NODIA

61. (3) क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाना ताकि हवाई यात्रा सभी के लिए वहनीय हो सके।
'उड़े देश का आम नागरिक' यानी उड़ान योजना का मुख्य लक्ष्य मध्यम और निम्न आय वर्ग के लोगों के लिए हवाई यात्रा को सुलभ बनाना है। इसके तहत छोटे और कम उपयोग किए जाने वाले हवाई अड्डों को मुख्य विमानन नेटवर्क से जोड़ा जाता है। सरकार इन उड़ानों की व्यवहार्यता बढ़ाने के लिए एयरलाइंस को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इससे क्षेत्रीय पर्यटन को बढ़ावा मिलता है और दूरदराज के क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों का विस्तार होता है, जिससे देश का संतुलित विकास सुनिश्चित होता है।

62. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत के प्रमुख बंदरगाहों की अपनी विशिष्ट भौगोलिक विशेषताएं हैं। मोरमुगाओ ज़ुआरी नदी के मुहाने पर स्थित है और अयस्क निर्यात का केंद्र है। विशाखापत्तनम भारत का सबसे गहरा और सुरक्षित भू-आबद्ध बंदरगाह माना जाता है। कोच्चि बंदरगाह केरल की प्रसिद्ध वेम्बनाड कयाल के मुहाने पर स्थित एक प्राकृतिक बंदरगाह है। हल्दिया बंदरगाह को कोलकाता बंदरगाह पर बढ़ते दबाव को कम करने और बड़े जहाजों को संभालने के लिए एक सहायक नदी बंदरगाह के रुप में विकसित किया गया है।

63. (2) इसका एकमात्र केंद्र वर्तमान बंदरगाहों को उन्नत किए बिना नए प्रमुख बंदरगाहों का निर्माण करना है।
सागरमाला परियोजना का लक्ष्य केवल नए बंदरगाहों का निर्माण करना नहीं है, बल्कि वर्तमान बंदरगाहों का आधुनिकीकरण और उनकी दक्षता बढ़ाना भी है। यह एक व्यापक कार्यक्रम है जो बंदरगाहों को रेल, सड़क और जलमार्गों से जोड़कर रसद लागत कम करने पर ध्यान केंद्रित करता है। तटीय समुदायों का कल्याण और बंदरगाह आधारित औद्योगिक गलियारों का विकास इसके अन्य महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। यह परियोजना भारत के समुद्री क्षेत्र को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप बनाने के लिए सरकार की एक दीर्घकालिक और बहुआयामी रणनीति है।

64. (2) लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा - गुवाहाटी
लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा गुवाहाटी में स्थित है और उत्तर-पूर्वी भारत का मुख्य प्रवेश द्वार है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस हवाई अड्डा कोलकाता में है, जबकि राजीव गांधी हवाई अड्डा हैदराबाद में और केम्पेगौड़ा हवाई अड्डा बेंगलुरु में स्थित है। हवाई अड्डों का नामकरण अक्सर उन क्षेत्रों की महान विभूतियों के सम्मान में किया जाता है। ये हवाई अड्डे अंतरराष्ट्रीय कनेक्टिविटी प्रदान करते हैं और संबंधित शहरों के आर्थिक और व्यावसायिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण आधारभूत संरचना के रूप में कार्य करते हैं।

65. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत के राष्ट्रीय जलमार्ग विभिन्न नदी प्रणालियों का उपयोग करके परिवहन का एक सस्ता और पर्यावरण अनुकूल विकल्प प्रदान करते हैं। जलमार्ग-1 गंगा-भागीरथी-हुगली नदी पर

95. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें:
सूची I: (रसद/लॉजिस्टिक्स अवधारणा)
A. मल्टीमॉडल परिवहन
B. लास्ट-माइल कनेक्टिविटी
C. कोल्ड चेन लॉजिस्टिक्स
D. शुष्क बंदरगाह (Dry Port)
सूची II: (विवरण)
i. एक अंतर्देशीय इंटरमॉडल टर्मिनल जो सड़क या रेल द्वारा प्रत्यक्ष समुद्री बंदरगाह से जुड़ा हो
ii. एक ही शिपमेंट के लिए परिवहन के एक से अधिक साधनों का उपयोग
iii. तापमान-नियंत्रित आपूर्ति श्रृंखला
iv. हब से अंतिम उपभोक्ता तक वितरण का अंतिम चरण
सही कूट का चयन करें:
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

96. राष्ट्रीय रसद (लॉजिस्टिक्स) नीति (NLP) 2022 के संबंध में गलत कथन की पहचान करें:
(1) इसका उद्देश्य भारत में रसद लागत को वैश्विक मानकों के समकक्ष कम करना है।
(2) यह रसद प्रदर्शन सूचकांक (LPI) में भारत की रैंकिंग में सुधार करना चाहती है।
(3) यह एक कुशल रसद पारिस्थितिकी तंत्र के लिए डेटा-संचालित निर्णय प्रणाली पर केंद्रित है।
(4) यह यूनिफाइड लॉजिस्टिक्स इंटरफेस प्लेटफॉर्म (ULIP) जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के उपयोग को प्रतिबंधित करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. पीएम गति शक्ति पहल के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनें:
कथन I: यह विभिन्न मंत्रालयों और राज्य सरकारों की अवसंरचना योजनाओं जैसे भारतमाला, सागरमाला और उड़ान को एकीकृत करती है।
कथन II: यह योजना भू-स्थानिक डेटा वाली भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) आधारित प्लेटफॉर्म पर निर्भर करती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

98. भारत में रसद क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. लीड्स (LEADS) सूचकांक वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा जारी किया जाता है।
II. उच्च रसद लागत भारतीय निर्यात की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है।
III. मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क्स (MMLPs) का उद्देश्य माल ढुलाई लागत और प्रदूषण को कम करना है।
IV. भारतीय रसद वर्तमान में अत्यधिक रेल परिवहन की ओर झुकी हुई है, जो कुल माल ढुलाई का 70 प्रतिशत वहन करती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

99. भारत में अंतरिक्ष संचार के विकास के निम्नलिखित चरणों पर विचार करें:
I. SITE (सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट) का शुभारंभ
II. INSAT-1B का प्रक्षेपण
III. स्वदेशी क्रायोजेनिक इंजन के साथ GSAT-14 का प्रक्षेपण
IV. डायरेक्ट-टू-होम सेवाओं के लिए GSAT-24 का प्रक्षेपण
उन्हें सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, II, IV, III
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. रसद और संचार अवसंरचना (जैसे DFCs और पीएम गति शक्ति) के आधुनिकीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर सबसे प्रत्यक्ष व्यापक आर्थिक प्रभाव क्या है?
(1) कुल शहरी बेरोजगारी दरों में तत्काल वृद्धि का कारण बनना।
(2) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की कुल मात्रा में भारी कमी लाना।
(3) भारी कराधान बोझ जिसके कारण लघु उद्योगों का बंद होना।
(4) प्रणालीगत अक्षमताओं को कम करना और निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

19. (3) सामरिक पेट्रोलियम भंडार सुविधाओं में दो वर्षों की कुल मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त कच्चा तेल उपलब्ध है।
सामरिक पेट्रोलियम भंडार वैश्विक आपूर्ति में अचानक बाधा आने पर सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करते हैं। इनका प्रबंधन इंडियन स्ट्रैटेजिक पेट्रोलियम रिजर्व्स लिमिटेड द्वारा किया जाता है और ये मुख्य रूप से विशाखापत्तनम, मैंगलोर और पादुर में स्थित हैं। हालांकि, इन भंडारों की वर्तमान क्षमता केवल कुछ दिनों की खपत को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, न कि दो वर्षों के लिए। सरकार चरणबद्ध तरीके से इस क्षमता को बढ़ाने और दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने पर लगातार कार्य कर रही है।

20. (4) कोल बेड मीथेन
कोल बेड मीथेन एक प्रकार की प्राकृतिक गैस है जो कोयले के निक्षेपों या परतों के भीतर अवशोषित अवस्था में पाई जाती है। यह गैस कोयला निर्माण की प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होती है और खदानों के भीतर फंसी रहती है। इसे निकालने से न केवल एक स्वच्छ ऊर्जा स्रोत प्राप्त होता है, बल्कि कोयला खदानों में विस्फोट के खतरे भी कम हो जाते हैं। शेल गैस और टाइट गैस अन्य गैर-पारंपरिक स्रोत हैं जो अलग-अलग भूगर्भीय संरचनाओं में पाए जाते हैं।

21. (3) भदला सोलर पार्क
राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित भदला सोलर पार्क अपनी विशाल स्थापित क्षमता के कारण दुनिया के सबसे बड़े सौर ऊर्जा केंद्रों में से एक है। यह शुष्क और उच्च सौर विकिरण वाले क्षेत्र में विस्तृत है, जो सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए आदर्श स्थिति प्रदान करता है। इस पार्क का विकास भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक मील का पत्थर साबित हुआ है। यह परियोजना न केवल बिजली प्रदान करती है, बल्कि हरित ऊर्जा की दिशा में वैश्विक नेतृत्व को भी दर्शाती है।

22. (1) I और II
राष्ट्रीय सौर मिशन भारत को सौर ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी बनाने की एक प्रमुख सरकारी पहल है। अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन का गठन भारत और फ्रांस द्वारा किया गया था और इसका मुख्यालय गुरुग्राम में स्थित है। पीएम-कुसुम योजना मुख्य रूप से किसानों की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने और कृषि पंपों को सौर ऊर्जा से जोड़ने के लिए है, न कि केवल शहरी घरों के लिए। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार और डीजल पर निर्भरता कम करने के उद्देश्य से संचालित की जा रही है।

23. (4) असम
भारत में सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता मुख्य रूप से उन राज्यों में अधिक है जहाँ सौर विकिरण की तीव्रता और अवधि अधिक होती है। राजस्थान, गुजरात और कर्नाटक इस क्षेत्र में अग्रणी राज्य हैं और शीर्ष सूची में बने रहते हैं। इसके विपरीत, असम जैसे उत्तर-पूर्वी राज्यों में भौगोलिक और जलवायु संबंधी कारणों से सौर क्षमता का विकास इन राज्यों की तुलना में काफी कम है। इसलिए असम को शीर्ष सौर ऊर्जा उत्पादक राज्यों की सूची में एक अपवाद माना जाता है।

24. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
भारत की पवन ऊर्जा क्षमता का अधिकांश भाग तमिलनाडु, गुजरात और राजस्थान जैसे राज्यों में स्थित है। इसका मुख्य भौगोलिक कारण यह है कि तटीय और खुले रेगिस्तानी क्षेत्रों में हवा की गति निरंतर और उच्च होती है। समुद्र और जमीन के बीच तापमान के अंतर के कारण तटीय क्षेत्रों में हवा का दबाव अनुकूल रहता है, जिससे पवन चक्कियां अधिक बिजली उत्पन्न करती हैं। यह निरंतरता पवन ऊर्जा को एक स्थिर और विश्वसनीय नवीकरणीय स्रोत बनाने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

25. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
भारत में विभिन्न नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएं उनकी भौगोलिक अनुकूलता के अनुसार स्थापित की गई हैं। चरणका सौर पार्क गुजरात के पाटन जिले में स्थित है। कामुथी सौर ऊर्जा परियोजना और मुप्पंडल पवन फार्म दोनों तमिलनाडु के महत्वपूर्ण केंद्र हैं, जहाँ मुप्पंडल एशिया के बड़े पवन ऊर्जा समूहों में से एक है। जैसलमेर पवन पार्क राजस्थान का एक प्रमुख पवन ऊर्जा केंद्र है। ये सभी परियोजनाएं भारत के स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों को प्राप्त करने और कार्बन उत्सर्जन घटाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

26. (4) II, I, III, IV
भारत में पवन ऊर्जा क्षमता निरंतर विकसित हो रही है और गुजरात वर्तमान में स्थापित क्षमता के मामले में अग्रणी स्थान पर है। गुजरात के बाद तमिलनाडु दूसरे स्थान पर आता है, जो लंबे समय तक इस क्षेत्र में प्रथम रहा था। कर्नाटक और महाराष्ट्र क्रमशः तीसरे और चौथे स्थान पर अपनी पकड़ बनाए हुए हैं। इन राज्यों की लंबी तटरेखा और अनुकूल भू-आकृति इन्हें पवन ऊर्जा के उत्पादन के लिए देश का सबसे महत्वपूर्ण और उत्पादक क्षेत्र बनाने में मदद करती है।

NODIA

27. (4) फोटोवोल्टिक (PV) तकनीक अर्धचालकों का उपयोग करके सूर्य के प्रकाश को सीधे विद्युत में परिवर्तित करती है।
फोटोवोल्टिक तकनीक सौर ऊर्जा संचयन का सबसे प्रचलित तरीका है, जिसमें सिलिकॉन जैसे अर्धचालक पदार्थों का उपयोग सूर्य के प्रकाश को सीधे बिजली में बदलने के लिए किया जाता है। भारत में उपयोगिता-पैमाने वाली बड़ी सौर परियोजनाओं की क्षमता रूफटॉप सौर की तुलना में वर्तमान में काफी अधिक है। हालांकि भारत घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा दे रहा है, लेकिन वह अभी भी सौर पैनलों और घटकों के आयात पर कुछ हद तक निर्भर है। फोटोवोल्टिक सेल स्वच्छ और शोर मुक्त बिजली उत्पादन का आधार हैं।

28. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सौर और पवन ऊर्जा उत्पादन मौसम की स्थिति पर निर्भर करता है, जिससे इनका उत्पादन रुक-रुक कर या अनिश्चित होता है। जब इन अस्थिर ऊर्जा स्रोतों को राष्ट्रीय ग्रिड में बड़े पैमाने पर जोड़ा जाता है, तो ग्रिड की स्थिरता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इसलिए उत्पादन में आने वाले उतार-चढ़ाव को संभालने के लिए ग्रिड संतुलन और भंडारण की आधुनिक

कम है। बिजली उत्पादन के इस मिश्रण में कोयला आधारित संयंत्रों का प्रभुत्व आज भी बना हुआ है।

10. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारतीय कोयला मुख्य रूप से बिटुमिनस श्रेणी का है जिसमें राख की मात्रा 35 से 45 प्रतिशत तक होती है। राख की इस उच्च मात्रा के कारण दहन के दौरान काफी ऊर्जा नष्ट हो जाती है और विद्युत संयंत्रों की तापीय दक्षता कम हो जाती है। वैश्विक स्तर पर उपयोग किए जाने वाले उच्च गुणवत्ता वाले कोयले की तुलना में भारतीय कोयले का ऊष्मीय मान कम होता है। यही कारण है कि भारत के कोयला आधारित बिजली संयंत्रों का प्रदर्शन वैश्विक मानकों से नीचे रहता है।

11. (4) बॉम्बे हाई (अपतटीय)
भारत के कुल कच्चे तेल उत्पादन में बॉम्बे हाई का योगदान सबसे अधिक है, जो मुंबई के तट से दूर अरब सागर में स्थित है। यह एक विशाल अपतटीय तेल क्षेत्र है जिसका संचालन तेल और प्राकृतिक गैस निगम द्वारा किया जाता है। हालांकि राजस्थान का बाड़मेर क्षेत्र और असम के पुराने तेल क्षेत्र भी महत्वपूर्ण हैं, लेकिन मात्रा के लिहाज से बॉम्बे हाई अग्रणी बना हुआ है। यह क्षेत्र देश की तेल आत्मनिर्भरता की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

12. (1) I, II, III और V
भारत कच्चे तेल की अपनी 80 प्रतिशत से अधिक आवश्यकताओं के लिए आयात पर निर्भर है, जो अर्थव्यवस्था के लिए चुनौतीपूर्ण है। राजस्थान में मंगला और ऐश्वर्या जैसे क्षेत्रों ने घरेलू उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि की है। एचवीजे पाइपलाइन ने गैस ग्रिड के विकास में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है और प्राकृतिक गैस को कोयले से स्वच्छ विकल्प माना जाता है। सामरिक पेट्रोलियम भंडार का प्रबंधन सरकारी निकाय द्वारा किया जाता है, न कि निजी शोधनशालाओं द्वारा, जो ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

13. (3) कोच्चि
भारत में तेल शोधनशालाओं को उनकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर तटीय और अंतर्देशीय श्रेणियों में विभाजित किया गया है। कोच्चि शोधनशाला केरल के तट पर स्थित है, जो समुद्री मार्गों से कच्चे तेल के आयात के लिए सुविधाजनक है। इसके विपरीत, मथुरा, बरौनी और पानीपत शोधनशालाएं देश के भीतरी भागों में स्थित अंतर्देशीय इकाइयां हैं। ये अंतर्देशीय शोधनशालाएं पाइपलाइनों के माध्यम से कच्चे तेल की आपूर्ति प्राप्त करती हैं और मुख्य रूप से स्थानीय उपभोग क्षेत्रों की मांग को पूरा करती हैं।

14. (4) कोयले या तेल की तुलना में कार्बन डाइऑक्साइड और प्रदूषकों का उत्सर्जन इसमें काफी कम होता है।
प्राकृतिक गैस को अन्य जीवाश्म ईंधनों की तुलना में पर्यावरण के अनुकूल माना जाता है क्योंकि इसके दहन से कम ग्रीनहाउस गैसें उत्सर्जित होती हैं। भारत सरकार अपने ऊर्जा मिश्रण में गैस की हिस्सेदारी बढ़ाकर कार्बन फुटप्रिंट को कम करने का लक्ष्य रख रही है। यह ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु लक्ष्यों के बीच संतुलन बनाने में सहायक है। गैस आधारित अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण से वायु प्रदूषण कम करने और पेरिस समझौते के लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी बड़ी मदद मिलती है।

15. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत के परमाणु ऊर्जा संयंत्र विभिन्न राज्यों में रणनीतिक रूप से स्थापित किए गए हैं। रावतभाटा राजस्थान में स्थित है, जबकि काकरापार गुजरात का प्रमुख परमाणु संयंत्र है। कैगा कर्नाटक में स्थित है और कुडनकुलम तमिलनाडु में रूस के सहयोग से स्थापित एक विशाल परियोजना है। ये संयंत्र देश की आधारभूत बिजली आपूर्ति में योगदान देते हैं और कार्बन मुक्त ऊर्जा उत्पादन का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इन केंद्रों का प्रबंधन मुख्य रूप से न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा किया जाता है।

16. (2) होमी जे. भाभा
डॉक्टर होमी जहांगीर भाभा को भारतीय परमाणु कार्यक्रम का जनक माना जाता है, जिन्होंने देश की ऊर्जा स्वतंत्रता के लिए तीन चरणों वाले कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की थी। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भारत के विशाल थोरियम भंडार का उपयोग करना है। प्रथम चरण में यूरेनियम आधारित रिएक्टर, द्वितीय चरण में प्लूटोनियम आधारित फास्ट ब्रीडर रिएक्टर और तृतीय चरण में थोरियम आधारित रिएक्टरों की योजना बनाई गई थी। उनकी दूरदर्शी सोच ने भारत को परमाणु तकनीक के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने का मार्ग प्रशस्त किया।

17. (2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
भारत की कुल बिजली उत्पादन क्षमता में परमाणु ऊर्जा का योगदान वर्तमान में लगभग 2 प्रतिशत है, जो 5 प्रतिशत की सीमा से काफी नीचे है। परमाणु ऊर्जा विभाग एक अत्यंत संवेदनशील विभाग है जो सीधे प्रधानमंत्री के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है। हालांकि ये दोनों कथन व्यक्तिगत रूप से सही हैं, लेकिन विभाग का प्रधानमंत्री के अधीन होना परमाणु ऊर्जा के कम उत्पादन का कारण नहीं है। परमाणु ऊर्जा की कम हिस्सेदारी का मुख्य कारण तकनीकी जटिलताएं और ईंधन की सीमित उपलब्धता है।

18. (2) I, II और IV
भारत के परमाणु कार्यक्रम का प्रथम चरण दाबित भारी जल रिएक्टरों पर आधारित है। द्वितीय चरण में फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों का उपयोग होता है जो प्लूटोनियम को ईंधन के रूप में जलाते हैं। थोरियम का उपयोग तीसरे चरण का मुख्य केंद्र है, न कि पहले चरण का। केरल के तट पर पाई जाने वाली मोनाजाइट रेत थोरियम का एक विशाल भंडार है, जो भविष्य की ऊर्जा जरूरतों के लिए महत्वपूर्ण है। यह त्रि-स्तरीय रणनीति भारत को यूरेनियम की कमी के बावजूद ऊर्जावान बनाने के लिए बनाई गई है।

NODIA

87. भारत में दूरसंचार क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनें:
कथन I: भारत सरकार दूरसंचार क्षेत्र में स्वचालित मार्ग के अंतर्गत 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की अनुमति देती है।
कथन II: बढ़ते प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को 5G रोलआउट की विशाल अवसंरचनात्मक मांगों के लिए आवश्यक पूंजी निवेश के साधन के रूप में देखा जाता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): उच्च समग्र टेली-घनत्व के बावजूद, भारत में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच एक महत्वपूर्ण 'डिजिटल विभाजन' उपस्थित है।
कारण (R): शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में इंटरनेट अवसंरचना, सामर्थ्य और डिजिटल साक्षरता काफी बेहतर है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. एक स्टार्टअप टेलीकॉम लाइसेंस प्राप्त किए बिना एक छोटे नगर में सार्वजनिक वाई-फाई हॉटस्पॉट स्थापित करना चाहता है। कौन-सा हालिया सरकारी ढांचा इस सार्वजनिक वाई-फाई मॉडल को सक्षम बनाता है?
(1) पीएम किसान
(2) पीएम गति शक्ति
(3) पीएम वाणी (PM-WANI)
(4) पीएम ई-विद्या
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

90. भारत में यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड (USOF) का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) व्यावसायिक रूप से अव्यवहार्य ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में दूरसंचार सेवाओं हेतु वित्त पोषण करना।
(2) ऋण में डूबे निजी दूरसंचार ऑपरेटरों को वित्तीय सहायता प्रदान करना।
(3) भारत में कम लागत वाले स्मार्टफोन के बड़े पैमाने पर विनिर्माण को सब्सिडी देना।
(4) अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ में भारत के अंशदान का भुगतान करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. इसरो (ISRO) की कौन-सी उपग्रह श्रृंखला मुख्य रूप से भारत में दूरसंचार, टेलीविजन प्रसारण और उपग्रह समाचार संग्रहण के लिए समर्पित है?
(1) कार्टोसैट (Cartosat)
(2) रीसैट (RISAT)
(3) ओशनसैट (Oceansat)
(4) जीसैट (GSAT/INSAT)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

92. भारत में अंतरिक्ष संचार अनुप्रयोगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. एडुसैट (EDUSAT) विशेष रूप से शैक्षिक क्षेत्र के लिए समर्पित भारत का प्रथम उपग्रह था।
II. नाविक (NavIC) एक क्षेत्रीय नेविगेशन उपग्रह प्रणाली है जो आपदा प्रबंधन संचार में भी सहायता करती है।
III. हाई थ्रूपुट सैटेलाइट्स (HTS) का उपयोग दूरदराज के क्षेत्रों में उच्च गति ब्रॉडबैंड प्रदान करने के लिए किया जाता है।
IV. Ku और Ka बैंड का उपयोग प्रायः DTH सेवाओं के लिए उपग्रह संचार में किया जाता है।
V. इसरो के संचार उपग्रह केवल निम्न पृथ्वी कक्षा (LEO) में स्थापित किए जाते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. उपग्रह कक्षाओं और उनके सामान्य संचार उपयोग के संबंध में अशुद्ध युग्म की पहचान करें:
(1) भू-स्थैतिक कक्षा (GEO) - डायरेक्ट-टू-होम (DTH) टेलीविजन प्रसारण
(2) निम्न पृथ्वी कक्षा (LEO) - सैटेलाइट ब्रॉडबैंड तारामंडल
(3) ध्रुवीय कक्षा - भूमध्य रेखा पर निरंतर, निर्बाध वॉयस कॉल के लिए विशेष रूप से उपयोग
(4) मध्यम पृथ्वी कक्षा (MEO) - ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (GPS) उपग्रह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान का मौलिक उद्देश्य क्या है?
(1) संपूर्ण रसद और परिवहन क्षेत्र को निशुल्क विद्युत प्रदान करना।
(2) सड़क और रेल की उपेक्षा करते हुए केवल अंतर्देशीय जलमार्ग नेटवर्क विकसित करना।
(3) भारत की सभी निजी रसद और कूरियर कंपनियों का राष्ट्रीयकरण करना।
(4) अवसंरचना की एकीकृत योजना के लिए विभागीय बाधाओं को दूर करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

तकनीकों की आवश्यकता होती है। यह एकीकरण भविष्य में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने के लिए एक आवश्यक तकनीकी कदम है।

29. (3) भूमि और ग्रिड अवसंरचना के इष्टतम उपयोग के लिए पवन-सौर हाइब्रिड पार्क विकसित करना।
मरुस्थलीय क्षेत्रों में जहाँ दिन में तीव्र धूप और रात में तेज़ हवाएं चलती हैं, वहाँ पवन-सौर मिश्रित प्रणाली सबसे कुशल होती है। यह तकनीक एक ही स्थान पर और एक ही ग्रिड अवसंरचना का उपयोग करके दिन-रात निरंतर बिजली उत्पादन सुनिश्चित करती है। इससे न केवल भूमि का बेहतर उपयोग होता है, बल्कि ग्रिड में बिजली के प्रवाह की अनिश्चितता भी कम होती है। यह एक एकीकृत दृष्टिकोण है जो अक्षय ऊर्जा के आर्थिक और तकनीकी लाभों को अधिकतम करता है।

30. (4) राष्ट्रीय ग्रिड में पारंपरिक विद्युत के साथ अक्षय विद्युत का समन्वय स्थापित करना।
राष्ट्रीय हरित ऊर्जा गलियारे का मुख्य उद्देश्य नवीकरणीय ऊर्जा संपन्न राज्यों से बिजली को मांग वाले केंद्रों तक कुशलतापूर्वक पहुँचाना है। यह ग्रिड को अधिक लचीला और आधुनिक बनाता है ताकि सौर और पवन जैसे उतार-चढ़ाव वाले स्रोतों को पारंपरिक बिजली के साथ आसानी से जोड़ा जा सके। यह परियोजना भारत के हरित ऊर्जा लक्ष्यों को प्राप्त करने और ग्रिड स्थिरता बनाए रखने के लिए बुनियादी ढांचा प्रदान करती है। इससे कार्बन मुक्त ऊर्जा के व्यापक उपयोग का मार्ग भी प्रशस्त होता है।

31. (1) ब्रह्मपुत्र बेसिन
भारत में जलविद्युत क्षमता का सर्वाधिक हिस्सा ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन में निहित है, जिसका मुख्य कारण यहाँ की तीव्र ढाल और प्रचुर जल प्रवाह है। हालांकि यहाँ की भौगोलिक चुनौतियां और पर्यावरणीय संवेदनशीलता निर्माण कार्य को कठिन बनाती हैं, लेकिन व्यावसायिक दोहन के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके बाद सिंधु और गंगा बेसिन का स्थान आता है। उत्तर-पूर्वी भारत की नदियाँ भविष्य में देश को स्वच्छ और सस्ती बिजली प्रदान करने की अपार संभावना रखती हैं, जो विकास का आधार बन सकती हैं।

32. (1) I, II, III और V
टिहरी बांध उत्तराखंड में भागीरथी नदी पर और भाखड़ा नांगल पंजाब-हिमाचल सीमा पर सतलुज नदी पर स्थित महत्वपूर्ण परियोजनाएं हैं। नाथपा झाकड़ी हिमाचल प्रदेश की एक बड़ी जलविद्युत परियोजना है, जबकि सरदार सरोवर बांध गुजरात में नर्मदा नदी पर बना है। इडुक्की बांध केरल में स्थित है, न कि कर्नाटक में, जो अपनी विशिष्ट चाप संरचना के लिए प्रसिद्ध है। ये सभी परियोजनाएं सिंचाई और बिजली उत्पादन के माध्यम से भारत की कृषि और औद्योगिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

33. (2) बिटुमेन
बिटुमेन पेट्रोलियम शोधन का एक सह-उत्पाद है जिसका उपयोग मुख्य रूप से सड़क निर्माण में किया जाता है, यह जैविक ऊर्जा का स्रोत नहीं है। इसके विपरीत, खोई या बगास चीनी मिलों का अपशिष्ट है जिसे जलाकर ऊर्जा प्राप्त की जाती है। बायो-एथेनॉल और संपीड़ित बायोगैस भी नवीकरणीय जैविक स्रोतों से प्राप्त ईंधन हैं। जैव ऊर्जा का संबंध सीधे कृषि और जैविक कचरे से होता है, जबकि बिटुमेन का आधार जीवाश्म तेल है। इस प्रकार बिटुमेन अन्य विकल्पों से पूरी तरह अलग है।

34. (1) पोंग बांध - यमुना
पोंग बांध हिमाचल प्रदेश में ब्यास नदी पर निर्मित है, न कि यमुना नदी पर। यह बांध सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन दोनों के लिए महत्वपूर्ण है और यहाँ एक बड़ा जलाशय है। सलाल परियोजना जम्मू-कश्मीर में चेनाब नदी पर, उकाई परियोजना गुजरात में तापी नदी पर और श्रीशैलम परियोजना आंध्र प्रदेश और तेलंगाना की सीमा पर कृष्णा नदी पर स्थित है। परियोजनाओं और उनकी संबंधित नदियों का सही ज्ञान क्षेत्रीय भूगोल और जल संसाधन प्रबंधन को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक होता है।

35. (3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
ऊर्जा की विभिन्न अवधारणाएं उनकी उत्पादन क्षमता और स्रोतों पर आधारित होती हैं। लघु जलविद्युत में 25 मेगावाट तक की परियोजनाएं आती हैं, जो स्थानीय स्तर पर ऊर्जा समाधान प्रदान करती हैं। बायोगैस का उत्पादन जैविक कचरे के अवायवीय पाचन के माध्यम से होता है। बायो-एथेनॉल मुख्य रूप से शीरा और क्षतिग्रस्त अनाज से प्राप्त किया जाता है। रन-ऑफ-द-रिवर परियोजनाएं नदी के प्राकृतिक बहाव का उपयोग करती हैं और इनमें विशाल बांधों की आवश्यकता नहीं होती, जिससे पर्यावरणीय प्रभाव न्यूनतम रहता है।

NODIA

36. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
रन-ऑफ-द-रिवर जलविद्युत परियोजनाएं बड़े जलाशयों के निर्माण के बिना नदी के निरंतर और प्राकृतिक प्रवाह का उपयोग करके बिजली बनाती हैं। चूंकि इनमें बहुत बड़े क्षेत्र को जलमग्न करने की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए इनका पारिस्थितिक प्रभाव पारंपरिक बड़े बांधों की तुलना में काफी कम होता है। ये परियोजनाएं मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में सफल होती हैं जहाँ नदियों में पूरे वर्ष पर्याप्त बहाव बना रहता है। यह दृष्टिकोण विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाने का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

37. (3) भारत ने पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथेनॉल सम्मिश्रण का लक्ष्य बढ़ाकर 2030 कर दिया है।
भारत सरकार ने ऊर्जा आत्मनिर्भरता और प्रदूषण कम करने के लिए पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथेनॉल मिश्रण के लक्ष्य को पूर्व निर्धारित समय 2030 से घटाकर अब 2025-26 कर दिया है। यह नीति कृषि अवशेषों और अधिशेष अनाज के उपयोग को बढ़ावा देती है। संपीड़ित बायोगैस के लिए सतत योजना और बायोडीजल के लिए गैर-खाद्य तेलों का उपयोग इस रणनीति के अन्य महत्वपूर्ण अंग हैं। ये उपाय न केवल विदेशी मुद्रा

बचाते हैं बल्कि किसानों की आय बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध होते हैं।

38. (2) I, III और IV
भारत में 25 मेगावाट तक की जलविद्युत परियोजनाओं को लघु जलविद्युत के रूप में वर्गीकृत किया गया है और इनका प्रबंधन नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा किया जाता है। ये परियोजनाएं कम समय में तैयार हो जाती हैं और हिमालय जैसे दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में बिजली पहुँचाने के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। इनका पर्यावरणीय प्रभाव भी काफी कम होता है क्योंकि इनमें बहुत बड़े जलाशयों की आवश्यकता नहीं होती। यह स्थानीय समुदायों को विकेंद्रीकृत और स्वच्छ ऊर्जा प्रदान करने का एक प्रभावी माध्यम है।

39. (4) नाज़ुक भूगर्भीय संरचनाएं और उच्च गाद का स्तर जिससे भू-अस्थिरता उत्पन्न होती है।
हिमालय एक नवीन वलित पर्वत श्रृंखला है जिसकी भूगर्भीय संरचना अत्यंत संवेदनशील और नाज़ुक है। यहाँ की नदियाँ अपने साथ भारी मात्रा में गाद और तलछट लाती हैं, जो टर्बाइन और मशीनों को नुकसान पहुँचाती हैं। इसके अलावा, भूकंपीय सक्रियता और भूस्खलन के खतरे परियोजनाओं के स्थायित्व के लिए बड़ी चुनौती पेश करते हैं। इन तकनीकी समस्याओं के कारण रखरखाव की लागत बढ़ जाती है और परियोजनाओं के संचालन में निरंतरता बनाए रखना कठिन हो जाता है, जिससे ऊर्जा उत्पादन प्रभावित होता है।

40. (1) स्थापित क्षमता 25 मेगावाट या उससे कम होना।
भारतीय ऊर्जा क्षेत्र में जलविद्युत परियोजनाओं का वर्गीकरण मुख्य रूप से उनकी बिजली उत्पादन क्षमता के आधार पर किया जाता है। जिन परियोजनाओं की स्थापित क्षमता 25 मेगावाट या उससे कम होती है, उन्हें 'लघु जलविद्युत' की श्रेणी में रखा जाता है। इससे अधिक क्षमता वाली परियोजनाओं को 'बड़ी जलविद्युत' माना जाता है। यह वर्गीकरण महत्वपूर्ण है क्योंकि लघु परियोजनाओं को नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है और उन्हें विभिन्न वित्तीय लाभ और सरल पर्यावरणीय अनुमतियाँ प्राप्त करने की सुविधा मिलती है।

41. (3) नीति आयोग
नीति आयोग ने भारत की राष्ट्रीय ऊर्जा नीति का मसौदा तैयार करने में मुख्य भूमिका निभाई है, जिसका उद्देश्य देश की ऊर्जा सुरक्षा और संधारणीयता सुनिश्चित करना है। यह नीति भविष्य की ऊर्जा मांग का अनुमान लगाती है और कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा के व्यापक उपयोग पर जोर देती है। यह विभिन्न ऊर्जा मंत्रालयों के बीच समन्वय स्थापित करने और निवेश के लिए एक स्पष्ट ढांचा प्रदान करने का कार्य करती है। यह नीति आधुनिक भारत की बढ़ती ऊर्जा जरूरतों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है।

42. (3) केवल III
ग्लासगो में COP26 शिखर सम्मेलन के दौरान भारत ने 'पंचामृत' नामक पांच रणनीतिक लक्ष्यों की घोषणा की थी। इनमें 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म क्षमता और 50 प्रतिशत अक्षय ऊर्जा की हिस्सेदारी प्राप्त करना शामिल है। हालांकि, भारत ने शुद्ध शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य वर्ष 2070 तक प्राप्त करने का संकल्प लिया है, न कि 2050 तक। यह समयसीमा भारत की विकास आवश्यकताओं और जलवायु न्याय के सिद्धांतों को ध्यान में रखकर निर्धारित की गई है ताकि संतुलित आर्थिक विकास सुनिश्चित हो सके।

43. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
भारत का सड़क नेटवर्क विश्व में दूसरा सबसे बड़ा है, जो देश की आर्थिक गतिविधियों की जीवन रेखा है। हालांकि राष्ट्रीय राजमार्गों का कुल सड़क लंबाई में योगदान केवल लगभग 2 प्रतिशत है, न कि 10 प्रतिशत। यह सही है कि ये राजमार्ग देश के लगभग 40 प्रतिशत सड़क यातायात का वहन करते हैं, जो उनके रणनीतिक महत्व को दर्शाता है। लंबाई कम होने के बावजूद, ये प्रमुख व्यापारिक केंद्रों और राज्यों की राजधानियों को जोड़कर माल और यात्रियों की आवाजाही सुनिश्चित करते हैं।

44. (2) अवसंरचनात्मक कमियों को दूर कर माल और यात्री आवाजाही को अनुकूलतम बनाना।
भारतमाला परियोजना एक महत्वाकांक्षी बुनियादी ढांचा कार्यक्रम है जिसका मुख्य लक्ष्य देश भर में सड़क संपर्क में सुधार करना और परिवहन की दक्षता बढ़ाना है। यह आर्थिक गलियारों, सीमावर्ती सड़कों और बंदरगाह कनेक्टिविटी पर ध्यान केंद्रित करती है ताकि रसद लागत को कम किया जा सके। यह योजना पुरानी सड़क परियोजनाओं को एकीकृत करती है और नई तकनीक का उपयोग करके विश्व स्तरीय राजमार्ग बनाती है। इससे व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा मिलता है और क्षेत्रीय आर्थिक विकास में तेजी आती है।

45. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
भारत के प्रमुख राजमार्ग गलियारे देश के विभिन्न कोनों को जोड़ने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। स्वर्णिम चतुर्भुज दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता जैसे चार प्रमुख महानगरों को जोड़ता है। उत्तर-दक्षिण गलियारा श्रीनगर को कन्याकुमारी से और पूर्व-पश्चिम गलियारा सिलचर को पोरबंदर से जोड़ता है। झाँसी वह महत्वपूर्ण स्थान है जहाँ ये दोनों बड़े गलियारे एक-दूसरे को काटते हैं। यह नेटवर्क न केवल दूरी कम करता है बल्कि देश के आर्थिक एकीकरण और माल परिवहन को अत्यधिक गति प्रदान करता है।

46. (1) I, II, III, IV
राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई के मामले में महाराष्ट्र भारत का अग्रणी राज्य है, जिसके बाद उत्तर प्रदेश का स्थान आता है। राजस्थान अपनी विशाल भौगोलिक स्थिति के कारण तीसरे स्थान पर और मध्य प्रदेश चौथे स्थान पर है। राजमार्गों का यह व्यापक जाल इन राज्यों में औद्योगिक और कृषि उत्पादों के विपणन के लिए आधारभूत ढांचा प्रदान करता है। विकसित सड़क नेटवर्क व्यापारिक सुगमता को बढ़ाता है और दूरदराज के क्षेत्रों को मुख्य आर्थिक केंद्रों से जोड़कर समावेशी विकास में सहायक होता है।

Click Here to Buy book on Amazon

47. (1) सड़क निर्माण के लिए डामर को पूर्णतः जैव-निम्नीकरणीय सामग्रियों से प्रतिस्थापित करना।
हरित राजमार्ग नीति का मुख्य उद्देश्य राजमार्गों के किनारे वृक्षारोपण और सौंदर्यीकरण के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करना है। यह नीति डामर को पूरी तरह से बदलने पर नहीं, बल्कि कार्बन उत्सर्जन को कम करने और वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने पर ध्यान केंद्रित करती है। वृक्षारोपण गतिविधियों से स्थानीय समुदायों को रोजगार मिलता है और सड़क के कटाव को रोकने में मदद मिलती है। यह पहल सड़कों के विकास और प्रकृति के बीच एक सामंजस्य स्थापित करने का सराहनीय प्रयास है।

48. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सड़क घनत्व मुख्य रूप से किसी क्षेत्र की भौगोलिक बनावट और जनसंख्या के दबाव पर निर्भर करता है। केरल जैसे मैदानी और घनी आबादी वाले राज्य में सड़कों का निर्माण आसान और अधिक आवश्यक है, जिससे वहाँ सड़क घनत्व अधिक होता है। इसके विपरीत, जम्मू और कश्मीर का पहाड़ी भू-भाग और कठिन स्थलाकृति सड़क नेटवर्क के विस्तार में बड़ी बाधा उत्पन्न करती है। इसलिए भौगोलिक अनुकूलता और सामाजिक मांग किसी भी क्षेत्र में परिवहन अवसंरचना के विकास के प्राथमिक निर्धारक कारक होते हैं।

49. (2) रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (RFID)
फास्टैग एक इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह प्रणाली है जो रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन तकनीक पर आधारित है। इसमें वाहन की विंडस्क्रीन पर एक टैग लगाया जाता है, जिसे टोल प्लाजा पर लगे सेंसर सीधे पढ़ लेते हैं। इसके माध्यम से टोल शुल्क का भुगतान वाहन के जुड़े हुए बैंक खाते या वॉलेट से अपने आप हो जाता है। यह तकनीक टोल प्लाजा पर वाहनों की लंबी कतारों को समाप्त करती है, जिससे समय और ईंधन की बचत होती है और यातायात प्रवाह सुचारू बना रहता है।

50. (1) NH 44
राष्ट्रीय राजमार्ग 44 भारत का सबसे लंबा राजमार्ग है, जो उत्तर में जम्मू और कश्मीर के श्रीनगर से शुरु होकर दक्षिण में तमिलनाडु के कन्याकुमारी तक जाता है। यह मार्ग पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र सहित कई राज्यों से होकर गुजरता है। यह देश की उत्तर-दक्षिण धुरी को जोड़ने वाली प्रमुख परिवहन धमनी है। इसकी कुल लंबाई देश के विभिन्न हिस्सों के बीच व्यापार और लोगों की आवाजाही को सुगम बनाने में ऐतिहासिक और आर्थिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

51. (4) 19
भारतीय रेलवे को कुशल प्रशासन और परिचालन के लिए कई क्षेत्रों या जोन्स में विभाजित किया गया है। वर्तमान में कोलकाता मेट्रो सहित कुल 19 रेलवे जोन हैं, जिनमें सबसे नया दक्षिण तटीय रेलवे जोन है। प्रत्येक जोन का नेतृत्व एक महाप्रबंधक द्वारा किया जाता है जो रेलवे बोर्ड को रिपोर्ट करता है। यह विशाल नेटवर्क न केवल यात्रियों को जोड़ता है बल्कि माल ढुलाई के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य करता है।

NODIA

52. (2) II, III, IV और V
भारतीय रेलवे अपनी यूनीगेज नीति के तहत सभी पटरियों को ब्रॉड गेज में बदल रही है ताकि निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित हो सके। विवेक एक्सप्रेस देश के सबसे लंबे रेल मार्ग पर चलती है। कोंकण रेलवे पश्चिमी तट पर एक तकनीकी चमत्कार है जो दुर्गम क्षेत्रों को जोड़ता है। ब्रॉड गेज नेटवर्क का लगभग पूर्ण विद्युतीकरण हो चुका है, जो हरित परिवहन की ओर एक बड़ा कदम है। हालांकि, यह एकल प्रबंधन के तहत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा नेटवर्क है, न कि पहला।

53. (3) Standard Gauge
भारतीय रेलवे के मुख्य नेटवर्क में ब्रॉड गेज, मीटर गेज और नैरो गेज का उपयोग किया जाता है, जो पटरियों के बीच की दूरी को दर्शाते हैं। स्टैंडर्ड गेज का उपयोग मुख्य रूप से भारत में मेट्रो रेल और कुछ विशिष्ट आधुनिक परियोजनाओं के लिए किया जाता है, न कि पारंपरिक मुख्य लाइन नेटवर्क के लिए। ब्रॉड गेज वर्तमान में सबसे प्रचलित है क्योंकि यह अधिक गति और क्षमता प्रदान करता है। गेज की यह विविधता ऐतिहासिक विकास और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित करती है।

54. (2) गति और दक्षता बढ़ाने के लिए माल ढुलाई को यात्री यातायात से पृथक करना।
भारत में मालगाड़ियों की औसत गति कम होने का मुख्य कारण यात्री ट्रेनों को दी जाने वाली प्राथमिकता है। समर्पित माल ढुलाई गलियारों का निर्माण इस समस्या के समाधान के लिए किया गया है ताकि मालगाड़ियाँ बिना किसी रुकावट के तेज गति से चल सकें। इससे परिवहन का समय काफी कम हो जाता है और रसद लागत में भारी गिरावट आती है। यह पहल औद्योगिक गलियारों के विकास में सहायक है और रेल के माध्यम से माल परिवहन की दक्षता को वैश्विक स्तर पर पहुँचाती है।

55. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारतीय रेलवे की विभिन्न विनिर्माण इकाइयां देश की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए इंजन और कोच बनाती हैं। इंटीग्रल कोच फैक्ट्री चेन्नई के पेरंबूर में स्थित है, जबकि रेल कोच फैक्ट्री कपूरथला में है। चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स इलेक्ट्रिक इंजनों के उत्पादन के लिए और बनारस लोकोमोटिव वर्क्स डीजल एवं इलेक्ट्रिक इंजनों के लिए प्रसिद्ध है। ये इकाइयां मेक इन इंडिया पहल के तहत आधुनिक और सुरक्षित ट्रेन सेटों का निर्माण कर रेलवे के आधुनिकीकरण में निरंतर अपना योगदान दे रही हैं।

56. (1) माल परिवहन के पारगमन समय और इकाई लागत में कमी।
समर्पित माल ढुलाई गलियारों के पूर्ण होने से मालगाड़ियों के संचालन के लिए अलग और उच्च क्षमता वाले ट्रैक उपलब्ध होंगे। इससे माल की आवाजाही की गति बढ़ेगी और पारगमन समय में महत्वपूर्ण कमी आएगी, जिससे रसद की कुल लागत

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) पारंपरिक स्रोत लंबे समय से उपयोग किए जाने वाले जीवाश्म ईंधन हैं, जबकि गैर-पारंपरिक स्रोत आधुनिक विकल्प हैं।
ऊर्जा के पारंपरिक स्रोत वे हैं जिनका उपयोग लंबे समय से किया जा रहा है और जो प्रकृति में सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। इनमें कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधन शामिल हैं जो गैर-नवीकरणीय होते हैं। इसके विपरीत, सौर, पवन और ज्वारीय ऊर्जा जैसे गैर-पारंपरिक स्रोत आधुनिक तकनीक पर आधारित नवीकरणीय विकल्प हैं। ये स्रोत पर्यावरण के अनुकूल हैं और भविष्य में सतत ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करते हैं।

2. (1) पारंपरिक ऊर्जा - पवन और सौर
ऊर्जा स्रोतों का वर्गीकरण उनकी प्रकृति और उपयोग की अवधि के आधार पर किया जाता है। पवन और सौर ऊर्जा को गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के रुप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि ये नवीकरणीय हैं और इनका व्यापक उपयोग आधुनिक समय में शुरु हुआ है। पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों में मुख्य रुप से जीवाश्म ईंधन जैसे कोयला और पेट्रोलियम शामिल होते हैं। व्यावसायिक ऊर्जा में कोयला आता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में जलाऊ लकड़ी गैर-वाणिज्यिक ऊर्जा है।

3. (2) II और III
भारत के कोयला निक्षेपों का अधिकांश भाग गोंडवाना श्रेणी का है जो कुल भंडार का लगभग 98 प्रतिशत हिस्सा बनाता है। टर्शियरी कोयला मुख्य रुप से उत्तर-पूर्वी राज्यों जैसे असम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश में पाया जाता है, न कि प्रायद्वीपीय पठार में। एंथ्रेसाइट कोयला भारत में अत्यंत दुर्लभ है और केवल जम्मू-कश्मीर के कुछ क्षेत्रों में पाया जाता है। भारत में पाए जाने वाले अधिकांश कोयले की प्रकृति मुख्य रुप से बिटुमिनस श्रेणी की होती है।

4. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
भारत में कोयले का विशाल भंडार होने के बावजूद कोकिंग कोयले का भारी मात्रा में आयात किया जाता है क्योंकि भारतीय कोयला भंडार मुख्य रुप से गैर-कोकिंग प्रकृति का है। यहाँ के कोयले में राख की मात्रा अधिक होती है, जो लोहे और इस्पात उद्योग की भट्टियों के लिए अनुपयुक्त होती है। कोकिंग कोयले की कमी और उच्च राख की मात्रा घरेलू उद्योगों को विदेशी गुणवत्ता वाले कोयले पर निर्भर बनाती है। यह निर्भरता व्यापारिक संतुलन को प्रभावित करती है।

5. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
भारत के प्रमुख कोयला खनन क्षेत्र विभिन्न राज्यों में फैले हुए हैं जो औद्योगिक विकास का आधार हैं। झरिया झारखंड का सबसे महत्वपूर्ण कोयला क्षेत्र है, जबकि नेवेली तमिलनाडु में लिग्नाइट उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थान का पलाना क्षेत्र लिग्नाइट के भंडार के लिए जाना जाता है और तालचर ओडिशा का प्रमुख कोयला क्षेत्र है। इन क्षेत्रों का उचित मिलान भारत के भूगर्भिक संसाधनों और उनकी भौगोलिक स्थिति के व्यवस्थित वितरण को स्पष्ट रुप से प्रदर्शित करता है।

6. (2) सल्फर का उच्च स्तर जिसके कारण निकटवर्ती क्षेत्रों में गंभीर अम्लीय वर्षा की समस्या होती है।
भारतीय कोयले में राख की मात्रा अधिक होती है, लेकिन वैश्विक तुलना में इसमें सल्फर का स्तर काफी कम होता है। इसलिए अम्लीय वर्षा भारत के कोयला क्षेत्रों में एक प्रमुख पर्यावरणीय चुनौती नहीं मानी जाती है। प्रमुख चुनौतियों में पुरानी तकनीक, भूमि अधिग्रहण में देरी और परिवहन संबंधी बाधाएं शामिल हैं। राख की अधिकता से कोयले का कैलोरी मान कम हो जाता है, जिससे विद्युत उत्पादन की तापीय दक्षता प्रभावित होती है और राख प्रबंधन की समस्या उत्पन्न होती है।

7. (2) झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल
भारत में कोयला भंडार का वितरण भौगोलिक रुप से असमान है और मुख्य रुप से पूर्वी राज्यों में केंद्रित है। कुल अनुमानित भंडार के आधार पर झारखंड देश में पहले स्थान पर है, जहाँ झरिया जैसी महत्वपूर्ण खदानें स्थित हैं। झारखंड के बाद ओडिशा दूसरे और छत्तीसगढ़ तीसरे स्थान पर आता है। पश्चिम बंगाल इस क्रम में चौथे स्थान पर है। ये चार राज्य मिलकर भारत के कुल कोयला भंडार का एक बहुत बड़ा हिस्सा कवर करते हैं।

8. (1) लंबी दूरी तक भारी कोयले के परिवहन की उच्च लागत।
कोयला एक भारी और बोझिल ईंधन है जिसका लंबी दूरी तक परिवहन करना अत्यधिक खर्चीला और चुनौतीपूर्ण होता है। परिवहन लागत को कम करने और दक्षता बढ़ाने के लिए ताप विद्युत केंद्रों को अक्सर कोयला खदानों के बिल्कुल निकट स्थापित किया जाता है। इन्हें खान-मुहाना बिजली संयंत्र कहा जाता है। इससे रेलवे नेटवर्क पर बोझ कम होता है और बिजली उत्पादन की कुल लागत में महत्वपूर्ण कमी आती है। यह रणनीति ऊर्जा उत्पादन में अधिक आर्थिक लाभ प्रदान करती है।

9. (3) कुल स्थापित क्षमता में तापीय ऊर्जा का अंश सर्वाधिक है।
भारत की कुल स्थापित विद्युत क्षमता में तापीय ऊर्जा, जिसमें कोयला, गैस और लिग्नाइट शामिल हैं, का योगदान सबसे अधिक है। यद्यपि अक्षय ऊर्जा की क्षमता तेजी से बढ़ रही है, लेकिन वर्तमान में तापीय ऊर्जा ही देश की आधारभूत बिजली मांग को पूरा करने का मुख्य स्रोत बनी हुई है। परमाणु ऊर्जा और जलविद्युत का योगदान तापीय ऊर्जा की तुलना में काफी

Downloaded from www.pdf.tube

प्रयागराज और हल्दिया के बीच स्थित है। जलमार्ग-2 ब्रह्मपुत्र नदी पर सादिया और धुबरी को जोड़ता है। जलमार्ग-3 केरल की पश्चिम तट नहर पर आधारित है, जबकि जलमार्ग-4 आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में कृष्णा और गोदावरी नदियों के कुछ हिस्सों को कवर करता है। ये जलमार्ग भारी माल की ढुलाई के लिए सड़क और रेल के प्रभावी पूरक हैं।

66. (1) NW-1, NW-4, NW-2, NW-3
राष्ट्रीय जलमार्गों की लंबाई उनकी आर्थिक व्यवहार्यता और उपयोग के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। गंगा नदी पर स्थित जलमार्ग-1 भारत का सबसे लंबा जलमार्ग है, जिसकी लंबाई लगभग 1620 किलोमीटर है। इसके बाद जलमार्ग-4 की लंबाई आती है, जो दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्रों को जोड़ता है। जलमार्ग-2 ब्रह्मपुत्र नदी पर और जलमार्ग-3 केरल में अपेक्षाकृत कम लंबे हैं। जलमार्गों की यह लंबाई देश के अंतर्देशीय व्यापार को सुगम बनाने और परिवहन लागत को न्यूनतम करने में सहायक सिद्ध होती है।

67. (3) सड़क परिवहन की तुलना में अत्यधिक उच्च ईंधन लागत।
अंतर्देशीय जलमार्ग परिवहन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह सड़क और रेल परिवहन की तुलना में काफी सस्ता और ईंधन-कुशल होता है। ईंधन की उच्च लागत इसकी चुनौती नहीं बल्कि इसकी एक प्रमुख खूबी है। प्रमुख चुनौतियों में नदियों में जल प्रवाह की मौसमी अनिश्चितता और गाद जमा होने के कारण गहराई की कमी शामिल है। इसके अलावा, पुराने पुलों की ऊंचाई कम होने से बड़े जहाजों के निकलने में बाधा आती है। इन संरचनात्मक समस्याओं के कारण जलमार्गों का पूर्ण विकास कठिन है।

68. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में अंतर्देशीय जलमार्गों का उपयोग माल परिवहन के लिए बहुत कम होता है, हालांकि यह एक किफायती और प्रदूषण मुक्त साधन है। इसका प्राथमिक कारण यह है कि अधिकांश भारतीय नदियों में पूरे वर्ष पर्याप्त गहराई नहीं रहती, विशेष रूप से गैर-मानसून महीनों में। इसके अतिरिक्त, गाद के निरंतर जमाव के कारण बड़े जहाजों का संचालन कठिन हो जाता है और बार-बार ड्रेजिंग की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए तकनीकी और प्राकृतिक बाधाएं जलमार्गों के व्यापक व्यावसायिक उपयोग को सीमित करती हैं।

69. (3) उत्पादों के परिवहन में किसानों की सहायता करना।
कृषि उड़ान योजना का उद्देश्य किसानों को उनके खराब होने वाले उत्पादों, जैसे फल, सब्जियां और दूध, को तेजी से बाजारों तक पहुँचाने में मदद करना है। यह योजना विशेष रूप से उत्तर-पूर्वी और आदिवासी क्षेत्रों में कृषि मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने के लिए शुरू की गई है। इसके माध्यम से किसान राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने उत्पादों का बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। यह परिवहन रसद में सुधार करके कृषि बर्बादी को कम करने और किसानों की आय बढ़ाने की एक महत्वपूर्ण पहल है।

70. (2) NW-1 (गंगा)
जल मार्ग विकास परियोजना का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय जलमार्ग-1 यानी गंगा नदी पर नौवहन की क्षमता और दक्षता को बढ़ाना है। इस परियोजना के तहत बड़े जहाजों के चलने के लिए नदी की गहराई बढ़ाना और मल्टीमॉडल टर्मिनल विकसित करना शामिल है। यह विश्व बैंक के तकनीकी और वित्तीय सहयोग से क्रियान्वित की जा रही है। इसका लक्ष्य उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल के बीच माल परिवहन को सुगम बनाना है, जिससे इस पूरे गलियारे में व्यापारिक गतिविधियों को नई गति मिलेगी।

71. (2) 12
भारत के व्यापारिक हितों की सुरक्षा और वैश्विक पहुंच के लिए केंद्र सरकार द्वारा 12 प्रमुख बंदरगाहों का संचालन और प्रशासन किया जाता है। ये बंदरगाह देश के समुद्री व्यापार के लगभग 70 प्रतिशत हिस्से को संभालते हैं। इनमें मुंबई, कांडला, चेन्नई और कोलकाता जैसे ऐतिहासिक बंदरगाहों के साथ-साथ आधुनिक जेएनपीटी और एन्नोर भी शामिल हैं। इन बंदरगाहों का प्रशासन प्रमुख बंदरगाह न्यास अधिनियम के तहत होता है, और ये देश की अर्थव्यवस्था में विदेशी मुद्रा और रसद प्रवाह के मुख्य स्रोत हैं।

72. (1) I, II, III और IV
भारत के प्रमुख बंदरगाहों की अपनी विशिष्ट विशेषताएं हैं जो व्यापार में सहायक हैं। जेएनपीटी सबसे बड़ा कंटेनर पोर्ट है और कांडला एक ज्वारीय बंदरगाह है जो उत्तर भारत की मांग पूरी करता है। कामराजार पोर्ट को एक कंपनी के रूप में स्थापित किया गया है और मुंद्रा देश का सबसे बड़ा निजी बंदरगाह बनकर उभरा है। कोलकाता बंदरगाह सीधे समुद्र पर नहीं बल्कि हुगली नदी के किनारे स्थित एक नदी बंदरगाह है। ये सभी केंद्र मिलकर भारत के समुद्री व्यापारिक नेटवर्क को मजबूती प्रदान करते हैं।

NODIA

73. (3) पारादीप
भौगोलिक स्थिति के आधार पर भारतीय बंदरगाहों को पूर्वी और पश्चिमी तटों में वर्गीकृत किया गया है। कांडला, मोरमुगाओ और न्यू मंगलौर भारत के पश्चिमी तट पर अरब सागर के किनारे स्थित हैं। इसके विपरीत, पारादीप बंदरगाह ओडिशा के पूर्वी तट पर बंगाल की खाड़ी के किनारे स्थित है। पूर्वी तट के बंदरगाह मुख्य रूप से खनिज और अयस्क के निर्यात के लिए महत्वपूर्ण हैं, जबकि पश्चिमी तट के बंदरगाह पेट्रोलियम और कंटेनर व्यापार के लिए देश के प्रमुख केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं।

74. (1) हुगली नदी पर स्थित होने के कारण यहाँ भारी गाद जमा होने की प्रवृत्ति है।
श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंदरगाह एक नदी बंदरगाह है जो हुगली नदी के ज्वारीय प्रभाव वाले क्षेत्र में स्थित है। नदी अपने साथ विशाल मात्रा में गाद लाती है जो बंदरगाह के चैनल में जमा हो जाती है, जिससे जल की गहराई कम हो जाती है। बड़े मालवाहक जहाजों के सुरक्षित प्रवेश के लिए इस गाद को निरंतर हटाना अनिवार्य होता है, जिसे ड्रेजिंग कहा जाता है।

(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

34. व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थिति संहिता, 2020 के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) किसी भी प्रतिष्ठान में महिलाओं को रात्रि पाली (night shift) में कार्य करने से प्रतिबंधित करना
(2) तेरह विभिन्न मौजूदा केंद्रीय श्रम कानूनों को समेकित और प्रतिस्थापित करना
(3) कर्मचारियों को औपचारिक नियुक्ति पत्र जारी करने का अनिवार्य प्रावधान करना
(4) अंतर-राज्यीय प्रवासी श्रमिकों के कल्याण हेतु एक व्यापक वैधानिक ढांचा प्रदान करना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

35. श्रम और रोजगार मंत्रालय द्वारा कार्यबल के किस विशिष्ट वर्ग की चुनौतियों के समाधान हेतु ई-श्रम (e-Shram) पोर्टल प्रारंभ किया गया था?
(1) बहुराष्ट्रीय कॉर्पोरेट अधिकारी
(2) ईपीएफओ (EPFO) के तहत कवर किए गए औपचारिक क्षेत्र के कर्मचारी
(3) असंगठित और अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिक
(4) सरकारी कर्मचारी
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

36. महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी को बढ़ावा देने वाली पहलों के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017 : सवैतनिक मातृत्व अवकाश को 12 सप्ताह से घटाकर 6 सप्ताह किया गया
(2) स्टैंड-अप इंडिया योजना : विशेष रूप से आधुनिक रिटेल मॉल स्थापित करने हेतु बैंक ऋण की सुविधा
(3) पीएम उज्ज्वला योजना : महिला उच्च शिक्षा हेतु प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण
(4) मिशन शक्ति : महिलाओं की सुरक्षा, संरक्षा और सशक्तिकरण हेतु एक व्यापक (umbrella) योजना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

37. भारत में दीर्घकालिक ग्रामीण बेरोजगारी और संकट से संबंधित सबसे सामान्य 'कारण और प्रभाव' संबंध क्या है?
(1) तीव्र कृषि उत्पादकता जिसके कारण व्यापक शहरी वि-औद्योगिकीकरण हो रहा है
(2) मनरेगा की उच्च मजदूरी दर जिसके कारण आईटी पेशेवरों की अधिक आपूर्ति हो रही है
(3) गैर-कृषि रोजगार की कमी के कारण शहरी मलिन बस्तियों की ओर संकटपूर्ण पलायन
(4) व्यापक कृषि सुधार जिसके कारण शहरी गरीबी का पूर्ण उन्मूलन हो रहा है
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

38. पीएम स्वनिधि (PM SVANidhi) योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा पूर्णतः वित्तपोषित एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है।
II. भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) इस योजना का कार्यान्वयन भागीदार है।
III. यह डिजिटल लेनदेन करने पर रेहड़ी-पटरी वालों को दंडित करती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

39. वह परिघटना जिसमें ग्रामीण अधिशेष श्रम को कृषि से बढ़ते शहरी औद्योगिक क्षेत्र की ओर निर्वाह मजदूरी पर आकर्षित किया जाता है, किस आर्थिक मॉडल द्वारा वर्णित है?
(1) सोलो विकास मॉडल
(2) हैरोड-डोमर मॉडल
(3) कीनेसियन गुणक मॉडल
(4) श्रम की असीमित आपूर्ति का लुईस मॉडल
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

40. इंडस्ट्री 4.0 द्वारा संचालित "कार्य के भविष्य" हेतु भारतीय कार्यबल को तैयार करने के लिए सबसे उपयुक्त रणनीति कौन सी है?
(1) डिजिटल प्रौद्योगिकियों में निरंतर सीखने और कौशल उन्नयन (upskilling) की संस्कृति को बढ़ावा देना
(2) सैद्धांतिक उदार कला (liberal arts) डिग्री के पक्ष में तकनीकी शिक्षा को समाप्त करना
(3) स्वचालन (automation) को प्रतिबंधित करने हेतु संरक्षणवादी नीतियां लागू करना
(4) आधुनिक प्रौद्योगिकियों के प्रसार को रोकने हेतु इंटरनेट पहुंच को प्रतिबंधित करना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

41. सूची I में कौशल के प्रकारों को सूची II में उनके संबंधित उदाहरणों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (कौशल के प्रकार)
A. संज्ञानात्मक कौशल (Cognitive Skills)
B. तकनीकी कौशल (Technical Skills)
C. सॉफ्ट स्किल्स (Soft Skills)
D. व्यावसायिक कौशल (Vocational Skills)
सूची II: (उदाहरण)
i. वेल्डिंग, बढ़ईगीरी और प्लंबिंग
ii. संचार, टीम वर्क और अनुकूलनशीलता
iii. पायथन में कोडिंग और सीएनसी (CNC) मशीनें संचालित करना

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

फाइबर केबल का व्यापक जाल बिछाया जा रहा है। यह डिजिटल इंडिया का एक प्रमुख स्तंभ है जो ग्रामीण क्षेत्रों में ई-शिक्षा, ई-स्वास्थ्य और सरकारी सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करता है। यह परियोजना ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच के डिजिटल अंतर को समाप्त कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सशक्तिकरण और आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

84. (4) अनिवार्य क्रिप्टोकरेंसी अपनाना।
डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के नौ स्तंभ भारत को एक डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए बनाए गए हैं। इनमें ब्रॉडबैंड हाईवे, मोबाइल कनेक्टिविटी की सार्वभौमिक पहुंच और पब्लिक इंटरनेट एक्सेस जैसे महत्वपूर्ण लक्ष्य शामिल हैं। ई-गवर्नेंस और सभी के लिए सूचना भी इसके मुख्य अंग हैं। हालांकि, क्रिप्टोकरेंसी को अपनाना इस कार्यक्रम का हिस्सा नहीं है और सरकार इस पर सतर्क रुख अपनाती है। यह कार्यक्रम नागरिकों को डिजिटल सेवाओं के माध्यम से सशक्त बनाने पर केंद्रित है।

85. (2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
दूरसंचार पीढ़ियों का विकास तकनीकी प्रगति की एक निरंतर यात्रा है। पहली पीढ़ी केवल एनालॉग आवाज़ तक सीमित थी, जबकि दूसरी पीढ़ी ने डिजिटल आवाज़ और एसएमएस की सुविधा प्रदान की। तीसरी पीढ़ी के साथ मोबाइल पर ब्रॉडबैंड और बुनियादी वीडियो कॉलिंग संभव हुई। चौथी पीढ़ी यानी 4G ने एलटीई तकनीक के माध्यम से हाई-स्पीड इंटरनेट और एचडी वीडियो स्ट्रीमिंग को सुलभ बनाया। प्रत्येक नई पीढ़ी ने डेटा ट्रांसफर की गति और कनेक्टिविटी की गुणवत्ता में अभूतपूर्व सुधार किया है, जिससे संचार के तरीके बदल गए हैं।

86. (1) II, III, I
भारत में दूरसंचार नीतियों का विकास देश की बदलती जरूरतों के अनुसार हुआ है। सबसे पहले 1994 की राष्ट्रीय दूरसंचार नीति आई जिसने इस क्षेत्र में निजी भागीदारी का मार्ग खोला। इसके बाद 1999 की नई नीति ने ऑपरेटरों के लिए लाइसेंस शुल्क के स्थान पर राजस्व साझाकरण का ढांचा तैयार किया। अंत में, 2018 में राष्ट्रीय डिजिटल संचार नीति लाई गई जो 5G और अगली पीढ़ी की डिजिटल सेवाओं पर केंद्रित है। यह कालानुक्रमिक विकास भारत के संचार क्षेत्र के उदारीकरण और आधुनिकीकरण की यात्रा को दर्शाता है।

87. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
भारत सरकार ने दूरसंचार क्षेत्र में 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को स्वचालित मार्ग से अनुमति दी है ताकि वैश्विक पूंजी और तकनीक को आकर्षित किया जा सके। 5G तकनीक को लागू करने के लिए विशाल बुनियादी ढांचे और भारी निवेश की आवश्यकता है, जिसे घरेलू संसाधनों से पूरा करना कठिन है। इसलिए विदेशी निवेश इस वित्तीय कमी को पूरा करने और तकनीकी प्रगति को गति देने का एक प्रभावी साधन है। यह उदार नीति दूरसंचार क्षेत्र की मजबूती और डिजिटल क्रांति को सफल बनाने के लिए अनिवार्य है।

88. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में दूरसंचार के विस्तार के बावजूद ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। शहरी क्षेत्रों में निजी निवेश अधिक होने के कारण बेहतर नेटवर्क और तेज़ इंटरनेट उपलब्ध है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे की कमी है। साक्षरता और सामर्थ्य के स्तर में अंतर भी इस अंतर को और गहरा करता है। ग्रामीण आबादी को डिजिटल सेवाओं से पूरी तरह जोड़ने के लिए भारतनेट जैसी सरकारी योजनाओं और डिजिटल साक्षरता अभियानों का सफल कार्यान्वयन अत्यंत आवश्यक है।

89. (3) पीएम वाणी (PM-WANI)
पीएम वाणी योजना का उद्देश्य देश भर में सार्वजनिक वाई-फाई हॉटस्पॉट के माध्यम से ब्रॉडबैंड इंटरनेट की पहुंच को बढ़ाना है। यह योजना छोटे व्यापारियों और स्टार्टअप्स को बिना लाइसेंस शुल्क के डेटा कार्यालय स्थापित करने की अनुमति देती है, जिससे वे स्थानीय स्तर पर इंटरनेट सेवाएं प्रदान कर सकें। यह डिजिटल कनेक्टिविटी के विकेंद्रीकरण का एक प्रयास है जो शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में इंटरनेट उपयोग को सस्ता और आसान बनाता है। यह योजना अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी प्रदान कर डिजिटल इंडिया को सफल बनाती है।

90. (1) व्यावसायिक रूप से अव्यवहार्य ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में दूरसंचार सेवाओं हेतु वित्त पोषण करना।
यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड एक विशेष कोष है जिसे दूरसंचार ऑपरेटरों से प्राप्त लेवी के माध्यम से बनाया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य उन क्षेत्रों में संचार नेटवर्क का विस्तार करना है जहाँ निजी कंपनियों के लिए व्यवसाय करना आर्थिक रूप से लाभप्रद नहीं है। यह फंड मुख्य रूप से गांवों और दुर्गम इलाकों में मोबाइल और ब्रॉडबैंड सेवाएं पहुँचाने के लिए उपयोग किया जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि डिजिटल सेवाओं का लाभ केवल शहरों तक सीमित न रहकर देश के हर नागरिक तक पहुँचे।

91. (4) जीसैट (GSAT/INSAT)
इसरो की जीसैट और इनसैट श्रृंखला के उपग्रह भारत के संचार बुनियादी ढांचे के मुख्य स्तंभ हैं। ये उपग्रह मुख्य रूप से टेलीविजन प्रसारण, डायरेक्ट-टू-होम सेवाओं और दूरदराज के क्षेत्रों में दूरसंचार कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। कार्टोसैट और ओशनसैट का उपयोग पृथ्वी अवलोकन और समुद्री संसाधनों के अध्ययन के लिए होता है। संचार उपग्रहों की यह श्रृंखला मौसम पूर्वानुमान और आपदा चेतावनी भेजने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे करोड़ों नागरिकों को समय पर सूचना और मनोरंजन प्राप्त होता है।

92. (2) I, II, III और IV
भारत ने अंतरिक्ष संचार में एडुसैट के माध्यम से शिक्षा और नाविक के जरिए क्षेत्रीय नेविगेशन में बड़ी प्रगति की है। उच्च थ्रूपुट उपग्रह डिजिटल कनेक्टिविटी को उन क्षेत्रों तक ले जा रहे हैं जहाँ केबल नहीं पहुँच सकते। उपग्रहों में विभिन्न फ्रीक्वेंसी बैंड्स का उपयोग विशिष्ट सेवाओं के लिए किया जाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

7. राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना (NAPS) के तहत, भारत सरकार नियोक्ताओं को निर्धारित वजीफे (stipend) का अधिकतम कितना प्रतिशत प्रतिपूर्ति (reimburse) करती है?
(1) 10 प्रतिशत
(2) 50 प्रतिशत
(3) 75 प्रतिशत
(4) 25 प्रतिशत
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

8. सूची I में बेरोजगारी के प्रकारों को सूची II में उनकी परिभाषित विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (बेरोजगारी के प्रकार)
A. संरचनात्मक बेरोजगारी
B. प्रतिरोधात्मक (Frictional) बेरोजगारी
C. चक्रीय बेरोजगारी
D. प्रच्छन्न (Disguised) बेरोजगारी
सूची II: (परिभाषित विशेषताएं)
i. अस्थायी बेरोजगारी जब श्रमिक एक रोजगार से दूसरे रोजगार में जा रहे होते हैं
ii. किसी कार्य में वास्तव में आवश्यक संख्या से अधिक श्रमिक संलग्न हैं
iii. आर्थिक मंदी या गिरावट के कारण रोजगार की हानि
iv. श्रमिकों के कौशल और उद्योग की मांग के बीच विसंगति
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

9. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एक वित्तीय वर्ष में उस ग्रामीण परिवार को 100 दिनों के सवैतनिक रोजगार की गारंटी देता है जिसके वयस्क सदस्य अकुशल शारीरिक श्रम करने के इच्छुक हैं।
II. योजना के तहत कम से कम एक-तिहाई लाभार्थी महिलाएं होनी चाहिए।
III. यदि मांग के 15 दिनों के भीतर कार्य उपलब्ध नहीं कराया जाता है, तो आवेदक बेरोजगारी भत्ते का पात्र है।
IV. मनरेगा कार्यों का सामाजिक अंकेक्षण (Social audit) अनिवार्य रुप से केवल राज्य सरकार के अधिकारियों द्वारा किया जाता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

NODIA

10. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना (PMRPY) के प्राथमिक उद्देश्य का सही वर्णन करता है?
(1) पेंशन योजना में नियोक्ता के योगदान का भुगतान करके औपचारिक रोजगार को प्रोत्साहित करना
(2) निर्दिष्ट शहरी समूहों में कार्य करने वाले पंजीकृत रेहड़ी-पटरी वालों (स्ट्रीट वेंडर्स) को रियायती सूक्ष्म ऋण प्रदान करना
(3) औपचारिक क्षेत्र में रोजगार की तलाश करने वाले शिक्षित बेरोजगार युवाओं को नियमित प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण प्रदान करना
(4) यह अनिवार्य करना कि बहुराष्ट्रीय कंपनियां तकनीकी कार्यों के लिए स्थानीय श्रमिकों का एक निश्चित प्रतिशत नियुक्त करें
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

11. भारत के महानगरीय शहरों में तीव्रता से बढ़ते स्टार्ट-अप (start-up) पारिस्थितिकी तंत्र का सबसे प्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) सभी क्षेत्रों में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में निरंतर गिरावट
(2) राष्ट्रीय कृषि उत्पादन क्षेत्र का व्यापक और तत्काल औपचारिकीकरण
(3) बढ़े हुए कॉर्पोरेट करों के माध्यम से राष्ट्रीय राजकोषीय घाटे में तत्काल कमी
(4) गिग इकोनॉमी (gig economy) और प्लेटफॉर्म-आधारित रोजगार का विकास
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

12. रोजगार और आजीविका को लक्षित करने वाली निम्नलिखित महत्वपूर्ण सरकारी पहलों पर विचार कीजिए:
I. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम
II. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना
III. पीएम स्वनिधि (PM SVANidhi)
IV. स्टार्ट-अप इंडिया कार्य योजना (Startup India Action Plan)
निम्नलिखित में से कौन उनके शुभारंभ (launch) का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) I, IV, II, III
(2) I, II, IV, III
(3) II, I, III, IV
(4) IV, I, II, III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

अध्याय 09
कौशल विकास एवं रोजगार सृजन

1. भारतीय श्रम बाजार के संदर्भ में "कौशल अंतराल" (skill gap) को निम्नलिखित में से कौन सबसे अच्छी तरह से परिभाषित करता है?
(1) विशिष्ट प्रशिक्षण केंद्रों और क्षेत्रीय औद्योगिक उत्पादन केंद्रों के बीच भौगोलिक दूरी
(2) कार्यबल के कौशल और नियोक्ताओं द्वारा अपेक्षित कौशल के बीच असंतुलन
(3) अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में प्रमाणित कुशल श्रमिकों और अप्रमाणित श्रमिकों के बीच पारिश्रमिक का अंतर
(4) ग्रामीण कार्यबल में मौलिक साक्षरता और मुख्य अंकगणितीय दक्षताओं का सामान्य अभाव
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

2. सूची I में राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन के तहत उप-मिशनों को सूची II में उनके मुख्य उद्देश्यों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (उप-मिशन)
A. संस्थागत प्रशिक्षण
B. अभिसरण (Convergence)
C. प्रशिक्षक
D. विदेशी रोजगार
सूची II: (मुख्य उद्देश्य)
i. विभिन्न केंद्रीय और राज्य मंत्रालयों के कौशल प्रयासों में समन्वय स्थापित करना
ii. आईटीआई (ITIs) का उन्नयन और प्रशिक्षण वितरण में सुधार करना
iii. कुशल भारतीय श्रमिकों की वैश्विक गतिशीलता सुनिश्चित करना
iv. व्यावसायिक शिक्षकों की गुणवत्ता और उपलब्धता में सुधार करना
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

3. राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह एक लाभ-निरपेक्ष (not-for-profit) पब्लिक लिमिटेड कंपनी के रूप में कार्य करता है।
(2) इसकी स्थापना वित्त मंत्रालय द्वारा सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल के तहत की गई थी।
(3) भारत सरकार के पास एनएसडीसी (NSDC) की 100 प्रतिशत इक्विटी हिस्सेदारी है।
(4) इसका प्राथमिक अधिदेश निजी क्षेत्र की प्रशिक्षण पहलों को प्रोत्साहित करके कौशल परिदृश्य को उत्प्रेरित करना है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

4. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय की प्रमुख योजना है।
II. पूर्व शिक्षण की मान्यता (RPL) अनौपचारिक रूप से कौशल प्राप्त व्यक्तियों को प्रमाणित करने के लिए एक प्रमुख घटक है।
III. यह योजना प्रशिक्षण का पूरा वित्तीय भार नामांकित उम्मीदवारों पर डालती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

5. 2015 में शुरू किए गए कौशल भारत मिशन (Skill India Mission) ने मूल रूप से वर्ष 2022 तक व्यक्तियों की एक विशिष्ट संख्या को प्रशिक्षित करने का मात्रात्मक लक्ष्य रखा था। यह लक्ष्य क्या था?
(1) 10 करोड़ व्यक्ति
(2) 25 करोड़ व्यक्ति
(3) 40 करोड़ व्यक्ति
(4) 50 करोड़ व्यक्ति
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): भारत में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (ITIs) ने तीव्रता से प्रशिक्षण की दोहरी प्रणाली (DST) को अपनाया है।
कारण (R): प्रशिक्षण की दोहरी प्रणाली 'कार्य-स्थल पर प्रशिक्षण' (on-the-job training) को एकीकृत करके सैद्धांतिक शिक्षा और व्यावहारिक औद्योगिक आवश्यकताओं के बीच के अंतराल को कम करती है।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

Click Here to Buy book on Amazon

यह प्रक्रिया अत्यंत महंगी है लेकिन बंदरगाह के संचालन और कोलकाता के व्यापारिक महत्व को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

75. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत के प्रमुख बंदरगाहों की अपनी विशिष्ट भौगोलिक विशेषताएं हैं। मोरमुगाओ जुआरी नदी के मुहाने पर स्थित है और अयस्क निर्यात का केंद्र है। विशाखापत्तनम भारत का सबसे गहरा और सुरक्षित भू-आबद्ध बंदरगाह माना जाता है। कोच्चि बंदरगाह केरल की प्रसिद्ध वेम्बनाड कयाल के मुहाने पर स्थित एक प्राकृतिक बंदरगाह है। हल्दिया बंदरगाह को कोलकाता बंदरगाह पर बढ़ते दबाव को कम करने और बड़े जहाजों को संभालने के लिए एक सहायक नदी बंदरगाह के रूप में विकसित किया गया है।

76. (2) इसका एकमात्र केंद्र वर्तमान बंदरगाहों को उन्नत किए बिना नए प्रमुख बंदरगाहों का निर्माण करना है।
सागरमाला परियोजना का लक्ष्य केवल नए बंदरगाहों का निर्माण करना नहीं है, बल्कि वर्तमान बंदरगाहों का आधुनिकीकरण और उनकी दक्षता बढ़ाना भी है। यह एक व्यापक कार्यक्रम है जो बंदरगाहों को रेल, सड़क और जलमार्गों से जोड़कर रसद लागत कम करने पर ध्यान केंद्रित करता है। तटीय समुदायों का कल्याण और बंदरगाह आधारित औद्योगिक गलियारों का विकास इसके अन्य महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। यह परियोजना भारत के समुद्री क्षेत्र को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप बनाने के लिए सरकार की एक दीर्घकालिक और बहुआयामी रणनीति है।

77. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
सागरमाला परियोजना के तहत तटीय आर्थिक क्षेत्रों का विकास बंदरगाहों के निकट उद्योगों को स्थापित करने के लिए किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि कच्चा माल और तैयार उत्पाद परिवहन की न्यूनतम लागत पर आयात-निर्यात किए जा सकें। विनिर्माण केंद्रों का बंदरगाहों के बिल्कुल करीब होना रसद समय को कम करता है और उत्पादों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाता है। यह एक एकीकृत विकास मॉडल है जो व्यापार सुगमता और औद्योगिक विकास को एक साथ जोड़कर तटीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है।

78. (1) I, II और III
सागरमाला कार्यक्रम बंदरगाहों के आधुनिकीकरण, उनके पृष्ठप्रदेश तक संपर्क सुधारने और अंतर्देशीय जलमार्गों को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य भारत की लंबी तटरेखा का अधिकतम आर्थिक लाभ उठाना है। हालांकि इसके लिए भारी निवेश की आवश्यकता होती है, लेकिन यह केवल निजी विदेशी निवेशकों पर निर्भर नहीं है; इसमें सरकारी बजटीय सहायता और सार्वजनिक-निजी भागीदारी भी शामिल है। यह पहल देश के कुल रसद व्यय को कम करने और निर्यात आधारित विकास मॉडल को सफल बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

79. (1) बंदरगाह के पीछे का भूमि क्षेत्र जो निर्यात वस्तुएं प्रदान करता है और आयात का उपभोग करता है।
'पृष्ठप्रदेश' या हिंटरलैंड वह भौगोलिक क्षेत्र होता है जो किसी बंदरगाह से रेल, सड़क या पाइपलाइन द्वारा जुड़ा होता है। इस क्षेत्र से उत्पादित वस्तुएं बंदरगाह तक निर्यात के लिए आती हैं और विदेशों से आने वाला आयातित माल इसी क्षेत्र में खपत के लिए भेजा जाता है। किसी बंदरगाह की सफलता उसके पृष्ठप्रदेश की आर्थिक समृद्धि और परिवहन संपर्क की सुगमता पर निर्भर करती है। मजबूत हिंटरलैंड कनेक्टिविटी के बिना बंदरगाह का पूर्ण व्यावसायिक विकास और उसकी परिचालन दक्षता सुनिश्चित करना असंभव है।

NODIA

80. (2) तटीय जहाजरानी और निर्यात-निर्यात कंटेनरों का ट्रांसशिपमेंट।
कैबोटेज नियमों में ढील का मुख्य उद्देश्य भारत के तटीय मार्गों पर विदेशी जहाजों को माल ढोने की अनुमति देना है, जिससे तटीय व्यापार में प्रतिस्पर्धा और दक्षता बढ़ती है। इससे भारतीय बंदरगाहों पर कंटेनरों का ट्रांसशिपमेंट आसान हो जाता है, जिससे व्यापारियों को अंतरराष्ट्रीय ट्रांसशिपमेंट हब पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। यह कदम रसद लागत कम करने और भारत को एक वैश्विक समुद्री केंद्र के रूप में स्थापित करने में सहायक है। इससे तटीय जहाजरानी को बढ़ावा मिलता है और सड़क परिवहन पर बोझ कम होता है।

81. (2) भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (TRAI)
भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण यानी ट्राई देश के दूरसंचार क्षेत्र का वैधानिक नियामक निकाय है। इसका मुख्य उत्तरदायित्व उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करना, कॉल और डेटा की दरों की निगरानी करना और ऑपरेटरों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करना है। यह दूरसंचार सेवाओं की गुणवत्ता के मानक तय करता है और समय-समय पर सरकार को महत्वपूर्ण नीतियों पर परामर्श देता है। ट्राई की भूमिका डिजिटल इंडिया के दौर में दूरसंचार सेवाओं को पारदर्शी, वहनीय और विश्वसनीय बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और अनिवार्य है।

82. (3) I और III
5G तकनीक दूरसंचार क्षेत्र में एक बड़ी क्रांति है जो 4G की तुलना में बहुत कम लैटेंसी और अत्यधिक तेज़ इंटरनेट गति प्रदान करती है। यह तकनीक लाखों उपकरणों को एक साथ जोड़ने की क्षमता रखती है, जो इंटरनेट ऑफ थिंग्स और स्मार्ट शहरों के विकास के लिए आवश्यक है। 5G केवल लो-बैंड तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मिड और हाई-बैंड स्पेक्ट्रम पर भी काम करती है। इसकी उच्च बैंडविड्थ और विश्वसनीयता औद्योगिक नवाचारों और दूरस्थ चिकित्सा जैसी उन्नत सेवाओं के लिए नए अवसर प्रदान करती है।

83. (3) इसका उद्देश्य ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क का उपयोग करके देश की सभी ग्राम पंचायतों को जोड़ना है।
भारतनेट परियोजना दुनिया का सबसे बड़ा ग्रामीण ब्रॉडबैंड संपर्क कार्यक्रम है, जिसका लक्ष्य देश की सभी ग्राम पंचायतों को उच्च गति वाले इंटरनेट से जोड़ना है। इसके लिए ऑप्टिकल

13. भारत वर्तमान में "जनसांख्यिकीय लाभांश" (demographic dividend) की स्थिति में है। किसी देश के लिए इस लाभांश का लाभ उठाने हेतु आवश्यक शर्तों में से कौन सा एक अपवाद है?
(1) स्वास्थ्य देखभाल और बुनियादी शिक्षा प्रणालियों में महत्वपूर्ण सार्वजनिक और निजी निवेश
(2) युवा जनसंख्या के लिए व्यावसायिक और तकनीकी कौशल का निरंतर उन्नयन
(3) कुल प्रजनन दर और बाल निर्भरता में आकस्मिक वृद्धि
(4) बढ़ते श्रम बल के लिए उत्पादक रोजगार के अवसरों का निरंतर सृजन
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

14. भारत में हाल के श्रम सुधारों (चार श्रम संहिताओं) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मजदूरी संहिता (Code on Wages) सभी क्षेत्रों में सार्वभौमिक रूप से न्यूनतम मजदूरी लागू करती है।
II. औद्योगिक संबंध संहिता छंटनी के लिए सरकार की अनुमति की आवश्यकता वाली सीमा को 100 से बढ़ाकर 300 श्रमिक करती है।
III. व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थिति संहिता अंतर-राज्यीय प्रवासी श्रमिकों के लिए कल्याणकारी सुविधाओं को अनिवार्य बनाती है।
IV. सामाजिक सुरक्षा संहिता गिग श्रमिकों और प्लेटफॉर्म श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने का ढांचा प्रस्तुत करती है।
V. चार श्रम संहिताएं किसी भी मौजूदा केंद्रीय श्रम अधिनियम को प्रतिस्थापित किए बिना 29 नवीन कानून जोड़कर बनाई गई थीं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल V
(4) केवल I, II और V
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

15. भारत में अनौपचारिक क्षेत्र (informal sector) में रोजगार की विशेषताओं में से कौन सी विशेषता असंगत है?
(1) कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) में अनिवार्य नामांकन
(2) औपचारिक लिखित रोजगार अनुबंधों और कानूनी रोजगार सुरक्षा का अभाव
(3) वैधानिक सवैतनिक अवकाश, चिकित्सा बीमा और मातृत्व लाभों का अभाव
(4) आर्थिक झटकों और बाजार के उतार-चढ़ाव के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

16. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: भारत में महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर (FLFPR) ऐतिहासिक रूप से पुरुष भागीदारी दर की तुलना में काफी कम रही है।
कथन II: अवैतनिक घरेलू देखभाल कार्य का उत्तरदायित्व औपचारिक कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी को सीमित करने वाली प्राथमिक बाधाओं में से एक है।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

17. ग्रामीण अर्थव्यवस्था में 'स्वामित्व' (SVAMITVA) योजना की भूमिका का सबसे उपयुक्त विवरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) देश भर के छोटे और सीमांत किसानों को रियायती बीज और उर्वरक प्रदान करना
(2) ऋण प्राप्त करने हेतु संपत्ति के अभिलेख (प्रॉपर्टी कार्ड) प्रदान करने के लिए ड्रोन के माध्यम से ग्रामीण भूमि का मानचित्रण करना
(3) विविध बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर ग्रामीण युवाओं के लिए 100 दिनों का गारंटीकृत रोजगार सुनिश्चित करना
(4) स्थानीय कौशल को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत में विशेष व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

18. पीएम स्वनिधि (PM SVANidhi) योजना के संदर्भ में, समय पर पुनर्भुगतान करने पर रेहड़ी-पटरी वालों को उपलब्ध ऋण किश्तों (tranches) के सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) पहली किश्त: 5,000 रुपये | दूसरी किश्त: 10,000 रुपये
(2) पहली किश्त: 10,000 रुपये | दूसरी किश्त: 20,000 रुपये
(3) पहली किश्त: 20,000 रुपये | दूसरी किश्त: 50,000 रुपये
(4) पहली किश्त: 50,000 रुपये | दूसरी किश्त: 1,00,000 रुपये
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

19. छह सदस्यों का एक परिवार 2 हेक्टेयर के कृषि फार्म पर कार्य कर रहा है। यदि दो सदस्य कार्य हेतु शहर चले जाते हैं, तब भी खेत का कुल उत्पादन अपरिवर्तित रहता है। यह परिदृश्य किस आर्थिक अवधारणा का उदाहरण है?
(1) संरचनात्मक बेरोजगारी
(2) मौसमी बेरोजगारी
(3) प्रच्छन्न बेरोजगारी
(4) प्रतिरोधात्मक (Frictional) बेरोजगारी
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

20. "कार्य के भविष्य" के संदर्भ में, विनिर्माण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और रोबोटिक प्रक्रिया स्वचालन के एकीकरण का सर्वाधिक संभावित परिणाम क्या होगा?
(1) सभी मानवीय संज्ञानात्मक कौशल की आवश्यकता का पूर्ण उन्मूलन
(2) सभी देशों में वैश्विक कुल प्रजनन दर में निरंतर वृद्धि
(3) कृषि क्षेत्र के भीतर प्रच्छन्न बेरोजगारी का स्थाई उन्मूलन
(4) नियमित कार्यों का प्रतिस्थापन जबकि जटिल समस्या-समाधान की मांग में वृद्धि
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

21. श्रम बाजार में मांग-आपूर्ति असंतुलन के कारण, नियोक्ताओं द्वारा नए तकनीकी स्नातकों में किस कौशल की कमी को सर्वाधिक चिन्हित किया जाता है?
(1) क्षेत्रीय मातृभाषा में मौलिक पठन और लेखन दक्षता
(2) उन्नत मैकेनिकल इंजीनियरिंग सिद्धांत और विशेष ऊष्मागतिकी गणना
(3) सॉफ्ट स्किल्स (soft skills), संचार, और सैद्धांतिक ज्ञान का व्यावहारिक अनुप्रयोग
(4) प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथों और शास्त्रीय दार्शनिक सिद्धांतों का ज्ञान
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

22. राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन (NSDM) के संस्थागत ढांचे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शीर्ष स्तर पर, इसमें प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में एक शासी परिषद (Governing Council) है।
II. यह राज्य कौशल विकास मिशनों के साथ बिना किसी समन्वय के स्वतंत्र रूप से कार्य करता है।
III. कार्यान्वयन कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री की अध्यक्षता वाली एक कार्यकारी समिति द्वारा किया जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल I और III
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

23. निम्नलिखित में से कौन सा कथन एनएसडीसी (NSDC) के तहत सेक्टर कौशल परिषदों (SSCs) की भूमिका का सही वर्णन करता है?
(1) मानकीकृत विश्वविद्यालय परीक्षाएं आयोजित करने हेतु उत्तरदायी वैधानिक सरकारी निकाय
(2) ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा और बुनियादी साक्षरता का प्रबंधन करने वाले क्षेत्रीय प्राधिकरण
(3) राज्य आईटीआई (ITIs) को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रदान करने वाले अंतर्राष्ट्रीय संगठन
(4) राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (NOS) और योग्यता पैक (Qualification Packs) विकसित करने वाले उद्योग-नेतृत्व वाले निकाय
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

24. सूची I में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) के चरणों को सूची II में उनकी परिभाषित विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (PMKVY चरण)
A. PMKVY 1.0 (2015)
B. PMKVY 2.0 (2016-2020)
C. PMKVY 3.0 (2020-2021)
D. PMKVY 4.0 (2023 से आगे)
सूची II: (परिभाषित विशेषताएं)
i. जिला कौशल समितियों को सशक्त करने वाला विकेंद्रीकृत मॉडल
ii. कार्य-स्थल पर प्रशिक्षण, इंडस्ट्री 4.0 पाठ्यक्रम और विद्यालयों में कौशल केंद्रों पर बल
iii. तीव्र और व्यापक प्रशिक्षण तथा पुरस्कार-आधारित प्रमाणीकरण पर केंद्रित प्रारंभिक चरण
iv. प्लेसमेंट और मानकीकृत पाठ्यक्रम पर विशेष ध्यान के साथ विस्तारित स्वरुप
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

25. निम्नलिखित में से कौन सा कौशल भारत मिशन (Skill India Mission) के प्राथमिक स्तंभों या उप-योजनाओं में से एक नहीं है?
(1) राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना (NAPS)
(2) प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)
(3) प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN)
(4) औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (ITIs) का उन्नयन
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

26. हाल के सुधारों से पूर्व औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (ITIs) के पारंपरिक प्रशिक्षण मॉडल के संबंध में कौन सी विशेषता असंगत है?
(1) आधुनिक एआई (AI) और रोबोटिक्स उद्योग समूहों के साथ एकीकरण
(2) पारंपरिक सैद्धांतिक कक्षा शिक्षण विधियों पर अत्यधिक निर्भरता
(3) राज्य संचालित प्रशिक्षण केंद्रों में पुरानी मशीनरी और अप्रचलित पाठ्यक्रम का प्रचलन
(4) प्रशिक्षण केंद्रों और स्थानीय औद्योगिक इकाइयों के बीच समन्वय की कमी
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

27. राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना (NAPS) के लिए उम्मीदवार सहभागिता के चरणों का सही क्रम कौन सा है?
(1) बुनियादी प्रशिक्षण → पंजीकरण → अनुबंध सृजन → मूल्यांकन → कार्य-स्थल पर प्रशिक्षण

NODIA

(2) पंजीकरण → अनुबंध सृजन → बुनियादी प्रशिक्षण → कार्य-स्थल पर प्रशिक्षण → मूल्यांकन
(3) कार्य-स्थल पर प्रशिक्षण → पंजीकरण → बुनियादी प्रशिक्षण → मूल्यांकन → अनुबंध सृजन
(4) पंजीकरण → बुनियादी प्रशिक्षण → कार्य-स्थल पर प्रशिक्षण → मूल्यांकन → अनुबंध सृजन
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): प्रतिरोधात्मक (frictional) बेरोजगारी की तुलना में संरचनात्मक बेरोजगारी दीर्घकालिक होती है।
कारण (R): संरचनात्मक बेरोजगारी अर्थव्यवस्था के मौलिक बदलावों से उत्पन्न होती है, जैसे तकनीकी प्रगति जो पुराने कौशल को अप्रासंगिक बना देती है।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

29. मनरेगा (MGNREGA) योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मनरेगा ने पारिश्रमिक का भुगतान सीधे बैंक या डाकघर खातों में अनिवार्य करके ग्रामीण महिलाओं के वित्तीय समावेशन में वृद्धि की है।
कथन II: यह योजना स्थाई ग्रामीण संपत्तियों के निर्माण पर बल नहीं देती है और केवल पारिश्रमिक वितरण पर ध्यान केंद्रित करती है।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

30. प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना (PMRPY) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) द्वारा कार्यान्वित किया जाता है।
II. यह केवल 15,000 रुपये प्रति माह तक वेतन पाने वाले श्रमिकों पर लागू होती है।
III. इसका उद्देश्य कार्यबल के औपचारिकीकरण को प्रोत्साहित करना है।
IV. सरकार नए कर्मचारियों हेतु ईपीएफ (EPF) और ईपीएस (EPS) में नियोक्ता के पूर्ण 12% योगदान का भुगतान करती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

31. सूची I में स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र के शब्दों को सूची II में उनके सही विवरण के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (शब्द)
A. इनक्यूबेटर (Incubator)
B. एंजेल निवेशक (Angel Investor)
C. यूनिकॉर्न (Unicorn)
D. बूटस्ट्रैपिंग (Bootstrapping)
सूची II: (विवरण)
i. 1 बिलियन डॉलर से अधिक मूल्यांकन वाली स्टार्ट-अप कंपनी
ii. व्यक्तिगत बचत और प्रारंभिक राजस्व का उपयोग करके व्यवसाय निर्मित करना
iii. एक संगठन जो कार्यक्षेत्र और परामर्श प्रदान करके स्टार्ट-अप को बढ़ने में सहायता करता है
iv. एक उच्च-नेटवर्थ वाला व्यक्ति जो छोटे स्टार्ट-अप को वित्तीय सहायता प्रदान करता है
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

32. आत्मनिर्भर भारत पैकेज के तहत, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) की परिभाषा संशोधित की गई थी। संशोधित मानदंडों के अनुसार, "लघु" उद्यम हेतु निवेश और टर्नओवर की सीमा क्या है?
(1) 1 करोड़ रुपये तक का निवेश और 5 करोड़ रुपये तक का टर्नओवर
(2) 10 करोड़ रुपये तक का निवेश और 50 करोड़ रुपये तक का टर्नओवर
(3) 50 करोड़ रुपये तक का निवेश और 250 करोड़ रुपये तक का टर्नओवर
(4) 100 करोड़ रुपये तक का निवेश और 500 करोड़ रुपये तक का टर्नओवर
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

33. निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच में सुधार
II. शिक्षा प्रणाली का आधुनिकीकरण
III. कम आयु में विवाह को प्रोत्साहित करना
IV. कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देना
V. व्यापार-अनुकूल श्रम सुधारों को लागू करना
उपरोक्त में से कौन सा संयोजन भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश को अधिकतम करने हेतु आवश्यक कारकों का प्रतिनिधित्व करता है?

Click Here to Buy book on Amazon

हालांकि, अधिकांश संचार उपग्रहों को पृथ्वी से 36000 किलोमीटर ऊपर भू-स्थैतिक कक्षा में रखा जाता है ताकि वे निरंतर कवरेज प्रदान कर सकें, न कि केवल निम्न पृथ्वी कक्षा में, जो संचार की स्थिरता के लिए आवश्यक है।

93. (3) ध्रुवीय कक्षा - भूमध्य रेखा पर निरंतर, निर्बाध वॉयस कॉल के लिए विशेष रूप से उपयोग
ध्रुवीय कक्षा के उपग्रह पृथ्वी के ध्रुवों के ऊपर से गुजरते हैं और मुख्य रूप से रिमोट सेंसिंग और मानचित्रण के लिए उपयोग किए जाते हैं। निरंतर संचार और वॉयस कॉल के लिए भू-स्थैतिक कक्षा के उपग्रहों का उपयोग किया जाता है क्योंकि वे पृथ्वी के सापेक्ष एक ही स्थान पर स्थिर रहते हैं। निम्न पृथ्वी कक्षा का उपयोग अब सैटेलाइट इंटरनेट के लिए किया जा रहा है और मध्यम कक्षा जीपीएस के लिए आदर्श है। संचार की निरंतरता बनाए रखने के लिए कक्षा का चयन उस सेवा की विशिष्ट तकनीकी आवश्यकता पर निर्भर करता है।

94. (4) अवसंरचना की एकीकृत योजना के लिए विभागीय बाधाओं को दूर करना।
पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है जो सड़क, रेल, हवाई मार्ग और जलमार्ग मंत्रालयों को एक साथ लाता है। इसका मुख्य उद्देश्य बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की योजना में विभागों के बीच होने वाले विलंब और समन्वय की कमी को दूर करना है। यह सुनिश्चित करता है कि विभिन्न मंत्रालय मिलकर कार्य करें ताकि परियोजनाओं का निर्माण समय पर और कम लागत में हो सके। यह एकीकृत दृष्टिकोण रसद लागत को कम करने और देश की समग्र आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए एक क्रांतिकारी कदम है।

95. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
रसद और परिवहन की दक्षता विभिन्न मॉडलों के समन्वय पर निर्भर करती है। मल्टीमॉडल परिवहन में एक ही यात्रा के लिए सड़क, रेल और जलमार्ग का संयुक्त उपयोग किया जाता है। अंतिम-मील संपर्क माल को वितरण केंद्र से सीधे ग्राहक के दरवाजे तक पहुँचाने का अंतिम चरण है। शीत-श्रृंखला खराब होने वाले सामानों के लिए तापमान नियंत्रण सुनिश्चित करती है। शुष्क बंदरगाह अंतर्देशीय क्षेत्रों में स्थित टर्मिनल हैं जो समुद्री बंदरगाहों की तरह कार्य करते हैं। ये सभी तत्व मिलकर एक सुव्यवस्थित आपूर्ति श्रृंखला का निर्माण करते हैं।

96. (4) यह यूनिफाइड लॉजिस्टिक्स इंटरफेस प्लेटफॉर्म (ULIP) जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के उपयोग को प्रतिबंधित करती है।
राष्ट्रीय रसद नीति 2022 का मुख्य लक्ष्य भारत में रसद लागत को सकल घरेलू उत्पाद के 14 प्रतिशत से घटाकर एकल अंक में लाना है। यह नीति यूलिप जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्मों के उपयोग को प्रोत्साहित करती है ताकि माल की रसद स्थिति का रीयल-टाइम पता लगाया जा सके। यह नीति कागजी कार्रवाई को कम करने और विभिन्न विभागों के बीच डेटा साझाकरण को सुगम बनाने पर केंद्रित है। रसद प्रदर्शन सूचकांक में सुधार और परिचालन दक्षता बढ़ाना इसके प्राथमिक उद्देश्य हैं, जिससे व्यापारिक सुगमता में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी।

97. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
पीएम गति शक्ति पहल भारतमाला और सागरमाला जैसी बड़ी अवसंरचनात्मक योजनाओं को एक साझा डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाती है। यह प्लेटफॉर्म जीआईएस आधारित मैपिंग का उपयोग करता है जिससे भौगोलिक स्थिति और वर्तमान संसाधनों की सटीक जानकारी प्राप्त होती है। इस तकनीक के उपयोग से योजना बनाना अधिक वैज्ञानिक और त्रुटिहीन हो जाता है क्योंकि सभी मंत्रालय एक ही डेटा स्रोत का उपयोग करते हैं। यह विभागीय सीमाओं को तोड़कर एक समग्र और एकीकृत बुनियादी ढांचा विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है।

NODIA

98. (2) I, II और III
लीड्स सूचकांक राज्यों में रसद प्रदर्शन का आकलन करता है और वाणिज्य मंत्रालय द्वारा जारी किया जाता है। भारत में उच्च रसद लागत एक बड़ी चुनौती है जो वैश्विक बाजार में हमारे निर्यात को महंगा बनाती है। मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क्स के माध्यम से माल ढुलाई को अधिक संगठित और सस्ता बनाने का प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान में भारत का रसद क्षेत्र रेल के बजाय सड़क परिवहन पर अत्यधिक निर्भर है, जो लगभग 60 प्रतिशत से अधिक भार वहन करता है। यह असंतुलन लागत और प्रदूषण दोनों को बढ़ाता है।

99. (1) I, II, III, IV
भारत के अंतरिक्ष संचार का इतिहास क्रमिक विकास का परिणाम है। 1975 में साइट प्रयोग के माध्यम से शिक्षा के लिए उपग्रह का उपयोग शुरु हुआ। इसके बाद 1983 में इनसैट-1बी ने संचार और मौसम सेवाओं में क्रांति ला दी। 2014 में स्वदेशी क्रायोजेनिक तकनीक के साथ जीसैट-14 का सफल प्रक्षेपण भारत की आत्मनिर्भरता का प्रतीक बना। अंततः, जीसैट-24 जैसी आधुनिक परियोजनाओं ने डीटीएच सेवाओं की क्षमता में भारी विस्तार किया। यह कालक्रम भारत की तकनीकी श्रेष्ठता और अंतरिक्ष विज्ञान में वैश्विक शक्ति बनने की यात्रा को दर्शाता है।

100. (4) प्रणालीगत अक्षमताओं को कम करना और निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना।
परिवहन और संचार बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिए उत्प्रेरक का कार्य करता है। जब रसद की लागत कम होती है और माल की आवाजाही तेज़ होती है, तो उत्पादन की कुल लागत घट जाती है। इससे भारतीय उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी बन जाते हैं, जिससे निर्यात में वृद्धि होती है। कुशल अवसंरचना न केवल समय बचाती है बल्कि बर्बादी को भी कम करती है, जिससे सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि और समावेशी आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

iv. आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और विश्लेषणात्मक तर्क

(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

42. भारत में कौशल विकास के संस्थागत ढांचे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) पूर्णतः निजी क्षेत्र के उद्यमों द्वारा वित्तपोषित है और इसमें सरकार की कोई सहभागिता नहीं है।

कथन II: कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (MSDE) देश में सभी कौशल विकास पहलों हेतु शीर्ष नोडल मंत्रालय है।

उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

43. निम्नलिखित कार्यों पर विचार कीजिए:

I. प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने हेतु निजी संस्थाओं को रियायती वित्त पोषण प्रदान करना।
II. सभी सरकारी विद्यालयों में सीधे उम्मीदवारों का प्रशासन और परीक्षा लेना।
III. गुणवत्ता आश्वासन, सूचना प्रणाली और प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण जैसी सहायता प्रणालियों को सक्षम करना।
IV. विनिर्माण उद्योगों हेतु राजकोषीय नीति और कॉर्पोरेट कर दरों को विनियमित करना।

राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) के उपरोक्त कार्यों में से कौन से गलत हैं?

(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

44. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) के पूर्व शिक्षण की मान्यता (RPL) घटक के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) इसका उद्देश्य असंगठित कार्यबल की दक्षताओं को राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे (NSQF) के साथ जोड़ना है।
(2) आरपीएल (RPL) के तहत प्रमाणित उम्मीदवारों को सरकार को भारी परीक्षा शुल्क देना पड़ता है।
(3) यह अप्रमाणित श्रमिकों को उनके अनौपचारिक कौशल हेतु औपचारिक प्रमाणन प्राप्त करने का अवसर देता है।
(4) यह अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों के आत्म-सम्मान और रोजगार क्षमता बढ़ाने में सहायक है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

45. भारत के कौशल विकास पारिस्थितिकी तंत्र में निम्नलिखित संस्थागत पड़ावों पर विचार कीजिए:

I. राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) का गठन
II. कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (MSDE) का गठन
III. प्रथम औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (ITIs) की स्थापना
IV. राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन (NSDM) का शुभारंभ

निम्नलिखित में से कौन सा इन पड़ावों का सही कालानुक्रमिक क्रम है?

(1) III, I, II, IV
(2) I, III, II, IV
(3) III, II, I, IV
(4) I, II, IV, III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

NODIA

46. प्रशिक्षण महानिदेशालय (DGT) द्वारा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (ITIs) हेतु प्रारंभ की गई ग्रेडिंग प्रणाली का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

(1) छात्रों की उपस्थिति के आधार पर आईटीआई प्रशिक्षकों के वेतन का निर्धारण करना
(2) स्थानीय हस्तशिल्प उद्योगों के विकास हेतु कच्चे माल का आवंटन करना
(3) यह तय करना कि किन राज्य संचालित आईटीआई का पूर्ण निजीकरण किया जाना चाहिए
(4) छात्रों और नियोक्ताओं के मार्गदर्शन हेतु आईटीआई को 1 से 5 स्टार तक श्रेणीबद्ध करना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

47. सूची I में राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना (NAPS) के घटकों को सूची II में उनके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (घटक)

A. लक्षित लाभार्थी
B. कार्यान्वयन एजेंसी
C. वित्तीय सहायता (वजीफा)
D. बुनियादी प्रशिक्षण प्रदाता

सूची II: (विवरण)

i. प्रति शिक्षु प्रति माह 1500 रुपये तक सरकार द्वारा साझा किया जाता है
ii. नए शिक्षुओं हेतु सैद्धांतिक शिक्षा की सुविधा प्रदान करने वाले संस्थान
iii. रोजगार क्षमता बढ़ाने हेतु कार्य-स्थल पर प्रशिक्षण चाहने वाले युवा
iv. प्रशिक्षण महानिदेशालय (DGT) / एनएसडीसी (NSDC)

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii

(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

64. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तीसरे चरण (PMKVY 3.0) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसने राज्यों को अधिक उत्तरदायित्व सौंपते हुए विकेंद्रीकृत दृष्टिकोण अपनाया।

II. जिला कौशल समितियों (DSCs) को स्थानीय कौशल अंतराल की पहचान हेतु सशक्त किया गया।

III. इसने सभी पारंपरिक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों पर प्रतिबंध लगा दिया।

IV. इसे 'स्किल इंडिया पोर्टल' के साथ एकीकृत किया गया था।

V. इसे केवल 45-60 वर्ष के आयु वर्ग हेतु बनाया गया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और V
(3) केवल II, IV और V
(4) केवल I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

65. कौशल भारत मिशन के तहत संचालित पहलों में से सही युग्म की पहचान कीजिए:

(1) उड़ान (UDAAN) : दक्षिण भारतीय राज्यों के युवाओं हेतु कौशल विकास योजना
(2) संकल्प (SANKALP) : संस्थागत तंत्र और गुणवत्ता सुधार हेतु केंद्र प्रायोजित योजना
(3) स्ट्राइव (STRIVE) : पूर्व सैनिकों हेतु रक्षा मंत्रालय की पहल
(4) जेएसएस (Jan Shikshan Sansthan) : कॉर्पोरेट सीईओ हेतु प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

66. सूची I में संस्थागत निकायों को सूची II में उनके प्राथमिक कार्यों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (संस्थागत निकाय)

A. NCVET (राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद)

B. DGT (प्रशिक्षण महानिदेशालय)

C. CSTARI (केंद्रीय कर्मचारी प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान)

D. NIMI (राष्ट्रीय निर्देशात्मक मीडिया संस्थान)

सूची II: (प्राथमिक कार्य)

i. व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थाओं हेतु नियामक निकाय

ii. आईटीआई सहित व्यावसायिक प्रशिक्षण के समन्वय हेतु शीर्ष संगठन

iii. अनुसंधान, पाठ्यक्रम विकास और प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु उत्तरदायी

iv. निर्देशात्मक सामग्री और ई-लर्निंग सामग्री विकसित करना

(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

67. भारत में शिक्षुता (Apprenticeship) प्रशिक्षण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. शिक्षु अधिनियम, 1961 सभी कंपनियों हेतु शिक्षुओं की नियुक्ति को वैकल्पिक बनाता है।

II. शिक्षुओं को नियमित कर्मचारी माना जाता है और वे बोनस लाभ के हकदार होते हैं।

III. राष्ट्रीय शिक्षुता प्रशिक्षण योजना (NATS) इंजीनियरिंग और गैर-इंजीनियरिंग डिग्री/डिप्लोमा धारकों को कवर करती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

68. संरचनात्मक बेरोजगारी का कौन सा उदाहरण असंगत है?

(1) सौर ऊर्जा की ओर झुकाव के कारण कोयला खनिक का रोजगार छिनना
(2) रोबोटिक स्वचालन के कारण औद्योगिक श्रमिक का विस्थापित होना
(3) कंप्यूटर कौशल न होने के कारण टाइपिस्ट को कार्य न मिलना
(4) व्यापक आर्थिक मंदी के दौरान किसी कर्मचारी की छंटनी होना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

69. ग्रामीण श्रम बाजार पर मनरेगा (MGNREGA) का सर्वाधिक प्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव क्या रहा है?

(1) ग्रामीण कृषि मजदूरी दरों में भारी कमी
(2) सभी कृषि गतिविधियों का पूर्णतः बंद होना
(3) श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति बढ़ने से कृषि मजदूरी में वृद्धि
(4) शहरी पेशेवरों का वापस पारंपरिक खेती की ओर पलायन
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

70. कोविड-19 महामारी के पश्चात औपचारिक क्षेत्र में रोजगार सृजन हेतु कौन सी योजना प्रारंभ की गई थी?

(1) प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना
(2) आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना (ABRY)
(3) दीनदयाल अंत्योदय योजना
(4) स्टैंड-अप इंडिया
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

सुविधा अनिवार्य है।
(2) भारतीय श्रम कानून महिलाओं को विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZs) में आईटी नौकरियां करने से प्रतिबंधित करते हैं।
(3) समान पारिश्रमिक अधिनियम नियोक्ताओं को महिला श्रमिकों को कम वेतन देने की अनुमति देता है।
(4) कारखाना अधिनियम अनिवार्य करता है कि विनिर्माण क्षेत्र में 50% महिला कर्मचारी होनी चाहिए।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

57. ग्रामीण विकास और रोजगार कार्यक्रमों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पुरा (PURA) अवधारणा की परिकल्पना डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा की गई थी।
II. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रुर्बन मिशन का उद्देश्य 'स्मार्ट गांवों' का समूह विकसित करना है।
III. इन योजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण-शहरी अंतर को कम करके संकटपूर्ण पलायन को रोकना है।
IV. दोनों योजनाएं गांवों में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

58. पीएम स्वनिधि (PM SVANidhi) योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह योजना डिजिटल लेनदेन पर मासिक कैशबैक प्रोत्साहन प्रदान करके रेहड़ी-पटरी वालों के डिजिटल सशक्तिकरण को बढ़ावा देती है।
कथन II: इस योजना के तहत ऋण हेतु विक्रेताओं को सोना गिरवी रखने की आवश्यकता होती है।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): कृषि में प्रच्छन्न बेरोजगारी, अधिशेष श्रमिकों को हटाने पर कुल उत्पादन को प्रभावित नहीं करती है।
कारण (R): प्रच्छन्न बेरोजगारी की स्थिति में अधिशेष श्रमिकों की सीमांत भौतिक उत्पादकता शून्य होती है।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

60. सूची I में तकनीकी रुझानों को सूची II में उनके रोजगार प्रभावों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (तकनीकी रुझान)
A. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस
B. गिग इकोनॉमी प्लेटफॉर्म
C. ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी
D. इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT)
सूची II: (रोजगार प्रभाव)
i. दीर्घकालिक अनुबंधों से फ्रीलांस और कार्य-आधारित कार्य की ओर संक्रमण
ii. संज्ञानात्मक कार्यों और डेटा विश्लेषण का स्वचालन
iii. सुरक्षित और विकेंद्रीकृत डिजिटल लेजर प्रणालियों में कौशल की मांग
iv. हार्डवेयर-सॉफ्टवेयर एकीकरण और स्मार्ट सेंसर प्रबंधन की मांग
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

NODIA

61. कौशल प्राप्ति और प्लेसमेंट प्रक्रिया के चरणों का सही अनुक्रम कौन सा है?
(1) मूल्यांकन → प्रशिक्षण → प्रमाणन → लामबंदी (Mobilization) → प्लेसमेंट
(2) लामबंदी (Mobilization) → प्रशिक्षण → मूल्यांकन → प्रमाणन → प्लेसमेंट
(3) प्रमाणन → मूल्यांकन → लामबंदी → प्रशिक्षण → प्लेसमेंट
(4) प्रशिक्षण → प्रमाणन → प्लेसमेंट → मूल्यांकन → लामबंदी
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

62. राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन (NSDM) की शासी परिषद के अध्यक्ष कौन हैं?
(1) वित्त मंत्री
(2) कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री
(3) राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के सीईओ
(4) भारत के प्रधानमंत्री
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

63. राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) निजी क्षेत्र को वित्तीय सहायता किस रूप में प्रदान करता है?
(1) सॉफ्ट लोन (soft loans) और इक्विटी निवेश
(2) केवल गैर-वापसी योग्य अनुदान (grants)
(3) निजी संस्था के परिचालन व्यय का पूर्ण वहन
(4) सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड जारी करना

(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

79. भारतीय संदर्भ में "कृषि का महिलाकरण" (Feminization of Agriculture) किसे संदर्भित करता है?
(1) पुरुषों के पलायन के कारण कृषि में महिलाओं की बढ़ती सहभागिता
(2) कृषि भूमि के अधिकारों का विशेष रुप से महिलाओं को हस्तांतरण
(3) मशीनों के स्थान पर केवल हस्त औजारों का उपयोग
(4) एपीएमसी मंडियों में केवल महिलाओं द्वारा कृषि उपज का विक्रय
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

80. गिग इकोनॉमी (gig economy) में प्लेटफॉर्म श्रमिकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे कार्य के घंटों के चयन में लचीलेपन का लाभ उठाते हैं।
II. वे सामाजिक सुरक्षा और आय स्थिरता के संबंध में असुरक्षा का सामना करते हैं।
III. वे कारखाना अधिनियम, 1948 की 'कर्मचारी' परिभाषा के तहत पूर्णतः कवर किए गए हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

81. निम्नलिखित में से कौन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में "कौशल अंतराल" के आकलन की सटीक विधि है?
(1) प्रमुख औद्योगिक जिलों में दर्ज वार्षिक वर्षा की गणना करना
(2) नौकरी चाहने वालों के कौशल और उद्योग की मांग के बीच अंतर का विश्लेषण करना
(3) राज्य बनाम केंद्र सरकार द्वारा सृजित नौकरियों की तुलना करना
(4) आईटीआई और रोजगार कार्यालयों के बीच की भौतिक दूरी मापना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

82. राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन (NSDM) के संस्थागत ढांचे के संबंध में कौन सा कथन गलत है?
(1) इसने राज्य सरकारों को अपने राज्य कौशल विकास मिशन बनाने से प्रतिबंधित किया है।
(2) यह केंद्रीय स्तर पर त्रि-स्तरीय ढांचे के माध्यम से संचालित होता है।
(3) शासी परिषद समग्र मार्गदर्शन और नीतिगत दिशा प्रदान करती है।
(4) कार्यकारी समिति दैनिक प्रशासन और कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व संभालती है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

83. राजस्थान में राज्य स्तरीय कौशल विकास और रोजगार सृजन हेतु शीर्ष संस्था कौन सी है?
(1) राष्ट्रीय कौशल विकास एजेंसी (NSDA)
(2) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
(3) राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम (RSLDC)
(4) राजस्थान औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम (RIICO)
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

84. पीएमकेवीवाई 4.0 (PMKVY 4.0) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में व्यावसायिक शिक्षा हेतु "कौशल हब" (Skill Hubs) प्रस्तुत करता है।
कथन II: यह कौशल पारिस्थितिकी तंत्र में निजी प्रशिक्षण प्रदाताओं की भूमिका को पूर्णतः समाप्त करता है।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

85. सूची I में कौशल विकास पहलों को सूची II में उनकी मुख्य विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (कौशल पहल)
A. संकल्प (SANKALP)
B. स्ट्राइव (STRIVE)
C. पीएमकेवीवाई (PMKVY)
D. नेप्स (NAPS)
सूची II: (मुख्य विशेषताएं)
i. अल्पकालिक प्रशिक्षण और आरपीएल (RPL) प्रमाणन
ii. शिक्षुता हेतु नियोक्ताओं को वित्तीय सहायता
iii. आईटीआई (ITIs) की दक्षता सुधार हेतु विश्व बैंक समर्थित परियोजना
iv. संस्थागत तंत्र को सुदृढ़ करने हेतु विश्व बैंक समर्थित परियोजना
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

86. औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (ITIs) के सुधारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्य सरकारों ने आईटीआई को 'उत्कृष्टता केंद्र' (Centre of Excellence) बनाने हेतु निजी क्षेत्र के साथ साझेदारी की है।
II. उन्नयन का ध्यान रोबोटिक्स और 3D प्रिंटिंग जैसे इंडस्ट्री 4.0 व्यवसायों पर है।
III. यह प्रक्रिया पाठ्यक्रम डिजाइन में उद्योग विशेषज्ञों की

Click Here to Buy book on Amazon

71. स्टार्ट-अप इंडिया सीड फंड स्कीम (SISFS) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) संकल्पना के प्रमाण (proof of concept) और प्रोटोटाइप विकास हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करना
(2) उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) द्वारा कार्यान्वयन करना
(3) प्रमाणित इनक्यूबेटरों के माध्यम से योजना का संचालन करना
(4) संस्थापकों के व्यक्तिगत जीवन-निर्वाह व्यय हेतु सीधे धन वितरित करना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

72. उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजना के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका उद्देश्य घरेलू विनिर्माण को वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी बनाना है।
II. यह कपड़ा और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्रों को कवर करती है।
III. इसमें अर्ध-कुशल श्रम को खपाने (absorb) की क्षमता है।
IV. यह रोजगार सृजन की पूर्णतः उपेक्षा करती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

73. सूची I में जनसांख्यिकीय संक्रमण के चरणों को सूची II में उनकी विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संक्रमण के चरण)
A. चरण 1 (पूर्व-औद्योगिक)
B. चरण 2 (विकासशील)
C. चरण 3 (औद्योगिकीकरण)
D. चरण 4 (विकसित)
सूची II: (जनसंख्या विशेषताएं)
i. उच्च जन्म दर, उच्च मृत्यु दर, मंद जनसंख्या वृद्धि
ii. उच्च जन्म दर, गिरती मृत्यु दर, जनसंख्या विस्फोट
iii. गिरती जन्म दर, न्यून मृत्यु दर, बढ़ती कार्यशील जनसंख्या
iv. न्यून जन्म दर, न्यून मृत्यु दर, वृद्ध होती जनसंख्या
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

74. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): 29 केंद्रीय श्रम कानूनों का चार श्रम संहिताओं में समेकन "ईज ऑफ डूइंग बिजनेस" को बढ़ावा देता है।
कारण (R): यह समेकन विभिन्न परिभाषाओं और विरोधाभासी अनुपालनों की जटिलता को समाप्त करता है।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

NODIA

75. भारत में अनौपचारिक क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: असंगठित श्रमिक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम उन श्रमिकों हेतु कल्याणकारी ढांचा प्रदान करता है जो औपचारिक कानूनों के दायरे में नहीं हैं।
कथन II: भारत के कुल कार्यबल का 80% से अधिक औपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

76. मशीनीकरण, सुरक्षित परिवहन का अभाव और पितृसत्तात्मक मान्यताएं किस परिणाम में योगदान देने वाले कारक हैं?
(1) शहरी आईटी कंपनियों में उच्च नौकरी छोड़ने की दर
(2) भारत में निम्न महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर (FLFPR)
(3) शहरी रियल एस्टेट बाजारों में मुद्रास्फीति
(4) एमएसएमई (MSME) क्षेत्र का 100% औपचारिकीकरण
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

77. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प मुख्य रूप से ग्रामीण बेरोजगारी को दूर करने का उपाय नहीं है?
(1) राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) का कार्यान्वयन
(2) कृषि आधारित उद्योगों और खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को बढ़ावा देना
(3) उन्नत सेमीकंडक्टर निर्माण हेतु विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZs)
(4) डेयरी और पोल्ट्री जैसी संबद्ध कृषि गतिविधियों का विकास
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

78. पीएम स्वनिधि (PM SVANidhi) योजना के लाभार्थियों में से कौन सा विकल्प असंगत है?
(1) ठेला चलाने वाले फल-सब्जी विक्रेता
(2) फुटपाथ पर कार्य करने वाले पारंपरिक मोची
(3) सड़क किनारे चाय की दुकान चलाने वाले
(4) बड़े शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के स्वामी

(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

48. बेरोजगारी के प्रकारों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारतीय कृषि क्षेत्र में मौसमी बेरोजगारी सर्वाधिक प्रचलित है।
II. प्रतिरोधात्मक (frictional) बेरोजगारी को हानिकारक माना जाता है और यह मंदी का संकेत है।
III. प्रच्छन्न बेरोजगारी का अर्थ है कि अतिरिक्त श्रमिक की सीमांत उत्पादकता शून्य या ऋणात्मक है।
IV. आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में चक्रीय बेरोजगारी अप्रासंगिक है।
V. संरचनात्मक बेरोजगारी को केवल ब्याज दरों को कम करके हल किया जा सकता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II, IV और V
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल III, IV और V
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

49. 'जियो मनरेगा' (GeoMGNREGA) पहल क्यों प्रारंभ की गई थी?
(1) ग्राम पंचायत अधिकारियों के उपस्थिति रिकॉर्ड को डिजिटल बनाने हेतु
(2) मनरेगा की संपत्तियों की जियो-टैगिंग हेतु अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और जीआईएस (GIS) का उपयोग करने हेतु
(3) पड़ोसी देशों में मनरेगा श्रमिकों का निर्यात करने हेतु
(4) ग्रामीण परिवारों की कृषि भूमि के कुल क्षेत्रफल की गणना करने हेतु
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

50. निम्नलिखित में से किसे प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना (PMRPY) के लाभ से स्पष्ट रुप से बाहर रखा गया है?
(1) 15,000 रुपये प्रति माह से अधिक वेतन वाले कर्मचारियों वाले प्रतिष्ठान
(2) ईपीएफओ (EPFO) के साथ पंजीकृत औपचारिक व्यावसायिक प्रतिष्ठान
(3) वैध श्रम पहचान संख्या (LIN) वाले प्रतिष्ठान
(4) औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत सूक्ष्म और लघु विनिर्माण इकाइयां
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

51. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): तकनीक संचालित स्टार्ट-अप्स का रोजगार सृजन पर मिश्रित प्रभाव पड़ता है।
कारण (R): जहाँ स्टार्ट-अप्स तकनीकी क्षेत्रों में उच्च-कुशल रोजगार सृजित करते हैं, वहीं उनके स्वचालित मॉडल पारंपरिक नौकरियों को विस्थापित भी कर सकते हैं।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

52. 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के पांच आधिकारिक स्तंभों में से कौन सा एक नहीं है?
(1) अर्थव्यवस्था
(2) बुनियादी ढांचा
(3) जीवंत जनसांख्यिकी
(4) निरंकुश शासन (Autocratic Governance)
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

53. भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश के संदर्भ में किस आयु वर्ग को "कार्यशील जनसंख्या" माना जाता है?
(1) 0-14 वर्ष
(2) 15-59 वर्ष
(3) 60-75 वर्ष
(4) 75 वर्ष से अधिक
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

54. मजदूरी संहिता (Code on Wages), 2019 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 सहित मजदूरी से संबंधित चार प्रमुख कानूनों को समेकित करती है।
II. यह मजदूरी और भर्ती में लैंगिक भेदभाव को प्रतिबंधित करती है।
III. यह "राष्ट्रीय न्यूनतम मजदूरी" (National Floor Wage) की अवधारणा प्रस्तुत करती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

55. असंगठित क्षेत्र के उद्यमों हेतु राष्ट्रीय आयोग (NCEUS) की अध्यक्षता किसके द्वारा की गई थी?
(1) सी. रंगराजन
(2) बिमल जालान
(3) रघुराम राजन
(4) अर्जुन सेनगुप्ता
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

56. भारत में महिला कार्यबल भागीदारी से संबंधित कानूनों के बारे में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017 में 50 या अधिक कर्मचारियों वाले प्रतिष्ठानों हेतु क्रेच (crèche)

Downloaded from www.pdf.tube

भागीदारी को प्रतिबंधित करती है।
IV. इसका उद्देश्य आधुनिक विनिर्माण में स्नातकों की रोजगार क्षमता बढ़ाना है।
V. इसमें आईटीआई की प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण शामिल है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

87. राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना (NAPS) के तहत किसका प्रावधान नहीं है?
(1) निर्धारित मासिक वजीफे को सरकार द्वारा साझा करना
(2) बुनियादी प्रशिक्षण की लागत साझा करना
(3) शिक्षुओं की नियुक्ति हेतु एमएसएमई (MSMEs) को विशेष प्रोत्साहन
(4) प्रशिक्षण के पश्चात आजीवन पेंशन का प्रावधान
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

88. एनएसएसओ (NSSO) द्वारा गणना की गई बेरोजगारी के मापों का उनकी संदर्भ अवधि (दीर्घ से लघु) के अनुसार सही क्रम क्या है?
(1) II, III, I
(2) I, III, II
(3) II, I, III
(4) III, II, I
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

89. मनरेगा के तहत, 15 दिनों के भीतर रोजगार न मिलने पर बेरोजगारी भत्ते का भुगतान करने का वित्तीय दायित्व किसका है?
(1) केंद्र सरकार का
(2) स्थानीय एनजीओ का
(3) राज्य सरकार का
(4) जिला कलेक्टर का
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

90. योजनाओं और उनके तंत्र के संबंध में सही युग्म पहचानिए:
(1) पीएमआरपीवाई (PMRPY) : सरकार नए कर्मचारियों हेतु 12% ईपीएफ योगदान का भुगतान करती है
(2) मनरेगा (MGNREGA) : शहरी क्षेत्रों में 100 दिनों का कुशल आईटी कार्य प्रदान करना
(3) पीएम स्वनिधि (PM SVANidhi) : किसानों हेतु ट्रैक्टर ऋण
(4) स्टार्ट-अप इंडिया : सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों में स्थाई रोजगार
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

NODIA

91. नवाचार को बढ़ावा देने हेतु "स्टार्ट-अप इंडिया कार्य योजना" किस वर्ष प्रारंभ की गई थी?
(1) 2012
(2) 2014
(3) 2016
(4) 2019
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

92. आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना (ABRY) किस घटना की प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया के रूप में प्रारंभ की गई थी?
(1) 2008 का वैश्विक वित्तीय संकट
(2) कोविड-19 महामारी और लॉकडाउन
(3) 2016 में विमुद्रीकरण
(4) वस्तु एवं सेवा कर (GST) का लागू होना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

93. जनसांख्यिकीय लाभांश की "अवसर की खिड़की" बंद होने का मुख्य कारण क्या है?
(1) नागरिकों की जीवन प्रत्याशा में तीव्र गिरावट
(2) शिशु मृत्यु दर में अप्रत्याशित वृद्धि
(3) उच्च वृद्ध निर्भरता अनुपात वाले समाज में संक्रमण
(4) विकसित देशों की ओर वृद्ध आबादी का उत्प्रवास
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

94. श्रम सुधारों के तहत "निश्चित अवधि के रोजगार" (Fixed Term Employment) का उद्देश्य क्या है?
(1) श्रमिकों को आजीवन एक ही कंपनी में कार्य हेतु विवश करना
(2) न्यूनतम मजदूरी के अनिवार्य भुगतान को समाप्त करना
(3) विदेशी कंपनियों को भारतीय श्रमिकों की नियुक्ति से रोकना
(4) वैधानिक लाभ सुनिश्चित करते हुए भर्ती में लचीलापन प्रदान करना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

95. प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन (PM-SYM) योजना का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) 60 वर्ष की आयु के पश्चात असंगठित श्रमिकों हेतु 3,000 रुपये प्रति माह की न्यूनतम पेंशन
(2) संगठित श्रमिकों हेतु 5 लाख रुपये तक का मुफ्त चिकित्सा बीमा
(3) शहरी स्नातकोत्तर उम्मीदवारों को बेरोजगारी भत्ता देना
(4) रेहड़ी-पटरी वालों को रियायती कार्यशील पूंजी ऋण देना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

96. आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) शहरी क्षेत्रों हेतु रोजगार संकेतकों का अनुमान किस आवृत्ति पर लगाता है?
(1) प्रत्येक दस वर्ष में
(2) प्रत्येक पांच वर्ष में
(3) त्रैमासिक (Quarterly)

(4) मासिक
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

97. स्वामित्व (SVAMITVA) योजना किस केंद्रीय मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित की जाती है?
(1) कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(2) पंचायती राज मंत्रालय
(3) ग्रामीण विकास मंत्रालय
(4) कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

98. पीएम स्वनिधि के तहत समय पर पुनर्भुगतान पर अगली किश्त में ऋण सीमा बढ़ाने का क्या उद्देश्य है?
(1) विक्रेताओं को औपचारिक बैंकिंग से जोड़ने हेतु क्रेडिट इतिहास निर्मित करना
(2) रेहड़ी-पटरी वालों हेतु ऋण जाल निर्मित करना
(3) विक्रेताओं को शोषणकारी ब्याज दरें देने हेतु विवश करना
(4) सभी विक्रेताओं को कॉर्पोरेट कर दाताओं में परिवर्तित करना
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

99. भारतीय कृषि क्षेत्र में रोजगार के संबंध में कौन सा कथन गलत है?
(1) कृषि भारत के लगभग आधे कार्यबल को रोजगार प्रदान करती है।
(2) यह क्षेत्र प्रच्छन्न और मौसमी बेरोजगारी से ग्रस्त है।
(3) जीडीपी (GDP) में कृषि की हिस्सेदारी, रोजगार में इसकी हिस्सेदारी के बराबर है।
(4) अधिशेष श्रम को कृषि से हटाना आर्थिक योजना का एक मुख्य लक्ष्य है।
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

100. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और स्वचालन के प्रभाव के संबंध में कौन सा कथन सत्य माना जाता है?
(1) वे सभी क्षेत्रों में मानवीय श्रम की आवश्यकता को पूर्णतः समाप्त कर देंगे।
(2) वे केवल उच्च-स्तरीय नौकरियों को नष्ट करेंगे और अन्य को छोड़ देंगे।
(3) विकासशील देशों की रोजगार गतिशीलता पर उनका कोई प्रभाव नहीं है।
(4) नियमित कार्यों में विस्थापन जबकि पुनर्कौशल (reskilling) वाली नई भूमिकाओं का सृजन
(5) प्रश्न हल करने का प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) कार्यबल के कौशल और नियोक्ताओं द्वारा अपेक्षित कौशल के बीच असंतुलन
कौशल अंतराल उस स्थिति को दर्शाता है जहाँ उपलब्ध कार्यबल की योग्यता और नियोक्ताओं की विशिष्ट आवश्यकताओं के मध्य स्पष्ट असंतुलन होता है। यह अंतराल आर्थिक प्रगति को बाधित करता है क्योंकि उद्योग अपनी जरूरतों के अनुरुप कुशल श्रमिक प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं। इसका मुख्य कारण शिक्षा प्रणाली और औद्योगिक मांग के बीच समन्वय की कमी है। इसे निरंतर व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से ही सुधारा जा सकता है।

2. (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन के विभिन्न उप-मिशनों के विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं ताकि कौशल पारिस्थितिकी तंत्र सुदृढ़ हो सके। संस्थागत प्रशिक्षण आईटीआई के उन्नयन और गुणवत्ता सुधार पर केंद्रित है। अभिसरण का उद्देश्य विभिन्न मंत्रालयों के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित करना है। प्रशिक्षक उप-मिशन व्यावसायिक शिक्षकों की गुणवत्ता सुनिश्चित करता है, जबकि विदेशी रोजगार उप-मिशन कुशल भारतीय श्रमिकों की अंतरराष्ट्रीय गतिशीलता और वैश्विक मानकों के अनुरुप प्रशिक्षण सुनिश्चित करता है।

3. (3) भारत सरकार के पास एनएसडीसी (NSDC) की 100 प्रतिशत इक्विटी हिस्सेदारी है।
राष्ट्रीय कौशल विकास निगम एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल पर आधारित लाभ-निरपेक्ष सार्वजनिक कंपनी है। इसमें भारत सरकार की कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के माध्यम से केवल 49 प्रतिशत हिस्सेदारी है, जबकि शेष 51 प्रतिशत हिस्सेदारी निजी क्षेत्र के पास है। इसका प्राथमिक कार्य निजी क्षेत्र की प्रशिक्षण पहलों को प्रोत्साहित करना और वित्तीय सहायता प्रदान करना है। यह व्यावसायिक मानकों के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ताकि प्रशिक्षण उद्योग की मांग के अनुरुप हो।

4. (1) केवल I और II
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना केंद्र सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य युवाओं को उद्योग-संबंधित कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना है। इस योजना का एक महत्वपूर्ण घटक 'पूर्व शिक्षण की मान्यता' है, जो उन व्यक्तियों को प्रमाणित करता है जिन्होंने अनौपचारिक रुप से कौशल प्राप्त किया है। यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है जहाँ सरकार प्रशिक्षण की पूरी लागत वहन करती है, इसलिए प्रशिक्षण का वित्तीय भार उम्मीदवारों पर होने की बात पूर्णतः गलत है।

5. (3) 40 करोड़ व्यक्ति
वर्ष 2015 में शुरू किए गए कौशल भारत मिशन का मुख्य उद्देश्य भारत को विश्व की कौशल राजधानी के रुप में स्थापित करना था। इस मिशन के तहत सरकार ने वर्ष 2022 तक विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 40 करोड़ व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने का एक अत्यंत महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया था। यह व्यापक लक्ष्य कार्यबल की उत्पादकता बढ़ाने, औद्योगिक क्षेत्रों की मांग को पूरा करने और युवाओं को रोजगार योग्य बनाकर जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने हेतु तैयार किया गया था।

6. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों ने प्रशिक्षण की दोहरी प्रणाली को अपनाया है ताकि सैद्धांतिक शिक्षा और व्यावहारिक कौशल के अंतर को कम किया जा सके। यह प्रणाली प्रशिक्षुओं को वास्तविक औद्योगिक वातावरण में कार्य-स्थल पर प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर देती है, जिससे वे आधुनिक मशीनों को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं। इससे छात्रों की रोजगार क्षमता में वृद्धि होती है और उद्योगों को उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरुप पहले से तैयार कुशल कार्यबल प्राप्त होता है।

7. (4) 25 प्रतिशत
राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना के अंतर्गत सरकार नियोक्ताओं को शिक्षुओं की नियुक्ति करने हेतु प्रोत्साहित करती है। योजना के प्रावधानों के अनुसार, सरकार नियोक्ताओं द्वारा भुगतान किए गए निर्धारित वजीफे का 25 प्रतिशत, जो अधिकतम 1500 रुपये प्रति माह प्रति शिक्षु हो सकता है, सीधे प्रतिपूर्ति के रुप में प्रदान करती है। यह पहल सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को अपने यहाँ प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा देने और युवाओं को प्रायोगिक अनुभव प्रदान करने हेतु वित्तीय सहायता देती है।

8. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी को उनकी विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। संरचनात्मक बेरोजगारी श्रमिकों के कौशल और उद्योग की मांग के बीच अंतर के कारण होती है। प्रतिरोधात्मक बेरोजगारी तब होती है जब श्रमिक एक नौकरी छोड़कर दूसरी नौकरी की तलाश की प्रक्रिया में होते हैं। चक्रीय बेरोजगारी आर्थिक मंदी के दौरान मांग में कमी से उत्पन्न होती है। प्रच्छन्न बेरोजगारी कृषि क्षेत्र में पाई जाती है, जहाँ आवश्यकता से अधिक श्रमिक एक ही कार्य में लगे होते हैं।

9. (2) केवल I, II और III
मनरेगा योजना ग्रामीण परिवारों को प्रति वर्ष 100 दिनों के गारंटीकृत अकुशल शारीरिक श्रम का अधिकार प्रदान करती है। इसमें एक-तिहाई भागीदारी महिलाओं हेतु आरक्षित है

Downloaded from www.pdf.tube

और कार्य न मिलने पर बेरोजगारी भत्ते का कानूनी प्रावधान है। इसका सामाजिक अंकेक्षण केवल सरकारी अधिकारियों द्वारा नहीं, बल्कि अनिवार्य रूप से ग्राम सभा और स्वतंत्र इकाइयों द्वारा किया जाता है ताकि पारदर्शिता बनी रहे। यह योजना ग्रामीण बुनियादी ढांचे के निर्माण में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

10. (1) पेंशन योजना में नियोक्ता के योगदान का भुगतान करके औपचारिक रोजगार को प्रोत्साहित करना
प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना का मुख्य उद्देश्य नियोक्ताओं को नए रोजगार सृजन और कार्यबल के औपचारिकीकरण हेतु प्रोत्साहित करना है। इस योजना के तहत, भारत सरकार नए कर्मचारियों के संबंध में भविष्य निधि और पेंशन योजना में नियोक्ता के पूरे 12 प्रतिशत अंशदान का भुगतान करती है। यह लाभ उन श्रमिकों को मिलता है जिनका मासिक वेतन 15,000 रुपये तक है। यह पहल व्यापारिक लागत को कम करने और श्रमिकों को औपचारिक सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाती है।

11. (4) गिग इकोनॉमी (gig economy) और प्लेटफॉर्म-आधारित रोजगार का विकास
भारतीय शहरों में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के तीव्र विकास का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव गिग अर्थव्यवस्था और प्लेटफॉर्म-आधारित रोजगार का उदय है। यह डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से स्वतंत्र कार्य और ऑन-डिमांड सेवाओं के वितरण को बढ़ावा देता है। यह मॉडल युवाओं को लचीले कार्य घंटे और आय के नए स्रोत प्रदान करता है। हालाँकि, यह पारंपरिक स्थाई नौकरियों के स्थान पर अल्पकालिक अनुबंधों के बढ़ते प्रचलन और सामाजिक सुरक्षा की नई चुनौतियों की ओर भी संकेत करता है।

12. (2) I, II, IV, III
भारत में रोजगार और कौशल विकास से संबंधित प्रमुख पहलों का शुभारंभ विभिन्न कालखंडों में हुआ है। सर्वप्रथम महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 में पारित हुआ। इसके पश्चात, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 2015 में युवाओं को प्रशिक्षित करने हेतु शुरू की गई। स्टार्टअप इंडिया कार्य योजना का शुभारंभ 2016 में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए हुआ। अंततः, रेहड़ी-पटरी वालों को सहायता प्रदान करने हेतु 2020 में पीएम स्वनिधि योजना का शुभारंभ किया गया था।

13. (3) कुल प्रजनन दर और बाल निर्भरता में आकस्मिक वृद्धि
जनसांख्यिकीय लाभांश तब प्राप्त होता है जब कार्यशील आयु वाली जनसंख्या का अनुपात बढ़ता है और निर्भरता अनुपात कम होता है। इसका लाभ उठाने हेतु स्वास्थ्य, शिक्षा और कौशल उन्नयन में निवेश आवश्यक है। कुल प्रजनन दर और बाल निर्भरता में आकस्मिक वृद्धि इस लाभांश के विपरीत कार्य करती है, क्योंकि यह आश्रितों की संख्या बढ़ाती है। इससे देश के संसाधनों का बड़ा हिस्सा विकास के बजाय पालन-पोषण में खर्च होने लगता है, जिससे आर्थिक विकास की गति मंद हो सकती है।

14. (3) केवल V
श्रम सुधारों के अंतर्गत 29 केंद्रीय श्रम कानूनों को चार व्यापक संहिताओं में समेकित किया गया है ताकि नियमों का सरलीकरण हो सके। ये संहिताएं मजदूरी, औद्योगिक संबंध, सामाजिक सुरक्षा और कार्यस्थल की सुरक्षा से संबंधित पुराने अधिनियमों को एकीकृत करती हैं। इन सुधारों का मुख्य उद्देश्य परिभाषाओं में एकरूपता लाना, अनुपालन के बोझ को कम करना और औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों क्षेत्रों के श्रमिकों हेतु बेहतर सुरक्षा सुनिश्चित करना है। यह कहना गलत है कि इन्हें पुराने कानूनों को हटाए बिना जोड़ा गया है।

15. (1) कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) में अनिवार्य नामांकन
अनौपचारिक क्षेत्र की मुख्य विशेषताओं में लिखित अनुबंधों का अभाव, कानूनी रोजगार सुरक्षा की कमी और सवैतनिक अवकाश जैसे लाभों की अनुपस्थिति शामिल है। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन में अनिवार्य नामांकन इस क्षेत्र की विशेषता नहीं है, बल्कि यह केवल औपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों हेतु होता है। अनौपचारिक श्रमिक प्रायः दैनिक मजदूरी पर निर्भर होते हैं और आर्थिक उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील होते हैं। उन्हें सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाना वर्तमान सरकार की प्राथमिक आर्थिक चुनौती है।

NODIA

16. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भारत में महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर ऐतिहासिक रूप से पुरुषों की तुलना में काफी कम रही है। इसके पीछे प्राथमिक बाधाओं में अवैतनिक घरेलू कार्य और देखभाल की जिम्मेदारियां शामिल हैं, जो महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी को सीमित करती हैं। पितृसत्तात्मक सामाजिक मानदंड, सुरक्षित परिवहन का अभाव और शिक्षा के स्तर में अंतर भी उनकी गतिशीलता को प्रभावित करते हैं। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु इन बाधाओं को दूर करना और समावेशी कार्य-संस्कृति विकसित करना देश के विकास के लिए अनिवार्य है।

17. (2) ऋण प्राप्त करने हेतु संपत्ति के अभिलेख (प्रॉपर्टी कार्ड) प्रदान करने के लिए ड्रोन के माध्यम से ग्रामीण भूमि का मानचित्रण करना
स्वामित्व योजना पंचायती राज मंत्रालय की एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में संपत्ति के स्पष्ट मालिकाना हक का निर्धारण करना है। इस योजना के तहत ड्रोन तकनीक का उपयोग करके ग्रामीण भूमि का सटीक मानचित्रण किया जाता है और निवासियों को उनके आधिकारिक प्रॉपर्टी कार्ड प्रदान किए जाते हैं। यह दस्तावेज ग्रामीणों को अपनी भूमि को वित्तीय संपत्ति के रूप में उपयोग करने और बैंकों से ऋण प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि विवाद भी कम होते हैं।

18. (2) पहली किश्त: 10,000 रुपये | दूसरी किश्त: 20,000 रुपये
पीएम स्वनिधि योजना रेहड़ी-पटरी वालों को अपना व्यवसाय पुनः स्थापित करने हेतु बिना किसी गारंटी के कार्यशील पूंजी ऋण प्रदान करती है। इस योजना के अंतर्गत, लाभार्थियों को

प्रारंभिक चरण में 10,000 रुपये तक की पहली ऋण किश्त दी जाती है। यदि वे इस ऋण का समय पर भुगतान करते हैं, तो वे क्रमशः 20,000 रुपये की दूसरी किश्त और फिर 50,000 रुपये की तीसरी किश्त के लिए पात्र हो जाते हैं। यह व्यवस्था छोटे विक्रेताओं को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली के साथ जोड़ती है।

19. (3) प्रच्छन्न बेरोजगारी
प्रच्छन्न बेरोजगारी एक ऐसी स्थिति है जिसमें किसी कार्य में आवश्यकता से अधिक लोग लगे होते हैं। यदि इन अतिरिक्त श्रमिकों को हटा भी दिया जाए, तो भी कुल उत्पादन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। उदाहरण के तौर पर, यदि किसी खेत पर परिवार के कई सदस्य कार्य कर रहे हैं और कुछ के चले जाने के बावजूद उत्पादन समान रहता है, तो वे प्रच्छन्न रूप से बेरोजगार कहलाते हैं। यह समस्या भारतीय कृषि क्षेत्र में बहुत अधिक पाई जाती है।

20. (4) नियमित कार्यों का प्रतिस्थापन जबकि जटिल समस्या-समाधान की मांग में वृद्धि
विनिर्माण क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोबोटिक्स का उपयोग कार्य की प्रकृति को तेजी से बदल रहा है। इसका परिणाम यह होगा कि मशीनें उन कार्यों को प्रतिस्थापित कर देंगी जो नियमित और दोहराव वाले हैं। इसके विपरीत, उन भूमिकाओं की मांग बढ़ेगी जिनमें जटिल समस्या-समाधान, रचनात्मकता और मानवीय निर्णय लेने की क्षमता आवश्यक है। भविष्य के कार्यबल को इस बदलते परिवेश में प्रासंगिक बने रहने हेतु निरंतर नए कौशल सीखने और अपनी तकनीकी दक्षता को बढ़ाने की आवश्यकता होगी।

21. (3) सॉफ्ट स्किल्स (soft skills), संचार, और सैद्धांतिक ज्ञान का व्यावहारिक अनुप्रयोग
आधुनिक श्रम बाजार में तकनीकी स्नातकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती कौशल अंतराल की है। नियोक्ताओं द्वारा प्रायः यह देखा जाता है कि उम्मीदवारों के पास किताबी ज्ञान तो है, परंतु वे प्रभावी संचार और नेतृत्व जैसे मृदु कौशलों में पीछे रह जाते हैं। इसके अतिरिक्त, कक्षा में सीखे गए सिद्धांतों को वास्तविक औद्योगिक समस्याओं को हल करने में लागू करने की क्षमता की कमी उन्हें रोजगार के अयोग्य बनाती है। अतः शैक्षणिक संस्थानों को अब व्यावहारिक अनुभव पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

22. (4) केवल II और III
राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन का ढांचा त्रि-स्तरीय है, जिसमें शीर्ष स्तर पर प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली शासी परिषद नीतिगत मार्गदर्शन प्रदान करती है। कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व सचिव की अध्यक्षता वाली कार्यकारी समिति और मिशन निदेशालयों पर होता है। यह मिशन राज्य कौशल विकास मिशनों के साथ निकट समन्वय बनाकर कार्य करता है ताकि राष्ट्रीय लक्ष्यों को जमीनी स्तर पर लागू किया जा सके। यह कहना गलत है कि यह राज्यों के साथ बिना किसी समन्वय के स्वतंत्र रूप से कार्य करता है।

23. (4) राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (NOS) और योग्यता पैक (Qualification Packs) विकसित करने वाले उद्योग-नेतृत्व वाले निकाय
सेक्टर कौशल परिषदें उद्योग के नेतृत्व वाले स्वायत्त निकाय हैं जो राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के अंतर्गत कार्य करती हैं। इनका प्राथमिक उत्तरदायित्व अपने औद्योगिक क्षेत्रों हेतु राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों और योग्यता पैकों का विकास करना है। ये परिषदें कौशल अंतराल का विश्लेषण करती हैं और प्रशिक्षण के मानक निर्धारित करती हैं। इनका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रदान किया जाने वाला प्रशिक्षण वास्तविक औद्योगिक मांग के अनुरूप हो, जिससे प्रशिक्षुओं की रोजगार क्षमता और कार्यबल की उत्पादकता में सुधार हो सके।

24. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के विभिन्न चरणों ने कौशल विकास के दृष्टिकोण को परिष्कृत किया है। प्रथम चरण में व्यापक स्तर पर त्वरित प्रशिक्षण और प्रमाणन पर बल दिया गया। द्वितीय चरण में रोजगार प्राप्ति और पाठ्यक्रमों के मानकीकरण को प्राथमिकता दी गई। तृतीय चरण ने जिला स्तर पर विकेंद्रीकृत मॉडल को अपनाया ताकि स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। चतुर्थ चरण आधुनिक तकनीक और विद्यालयों में कौशल केंद्रों के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है।

25. (3) प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN)
कौशल भारत मिशन के अंतर्गत कई महत्वपूर्ण उप-योजनाएं संचालित हैं, जैसे प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों का उन्नयन। इन सभी का उद्देश्य कार्यबल की दक्षता और रोजगार क्षमता को बढ़ाना है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि इस मिशन का हिस्सा नहीं है, क्योंकि यह किसानों को प्रत्यक्ष आय सहायता प्रदान करने वाली एक वित्तीय योजना है। कौशल विकास का संबंध मुख्य रूप से व्यावसायिक प्रशिक्षण और तकनीकी दक्षता से है, न कि प्रत्यक्ष नकद सहायता से।

26. (1) आधुनिक एआई (AI) और रोबोटिक्स उद्योग समूहों के साथ एकीकरण
भारत में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के पारंपरिक मॉडल की सीमाएं पुरानी मशीनरी, अप्रचलित पाठ्यक्रम और सैद्धांतिक शिक्षण पर अत्यधिक निर्भरता रही हैं। इन संस्थानों और स्थानीय उद्योगों के बीच प्रभावी समन्वय की कमी भी एक बड़ी चुनौती रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोबोटिक्स का एकीकरण पारंपरिक मॉडल की विशेषता नहीं रही है। यह हाल के सुधारों और उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना के माध्यम से किया जा रहा एक नवीन प्रयास है ताकि प्रशिक्षुओं को भविष्य की आवश्यकताओं हेतु तैयार किया जा सके।

27. (2) पंजीकरण → अनुबंध सृजन → बुनियादी प्रशिक्षण → कार्य-स्थल पर प्रशिक्षण → मूल्यांकन
राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना के तहत उम्मीदवार की सहभागिता एक चरणबद्ध प्रक्रिया है। सर्वप्रथम उम्मीदवार

Click Here to Buy book on Amazon

हालांकि, विसंगति यह है कि सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हिस्सेदारी, रोजगार में इसकी हिस्सेदारी की तुलना में बहुत कम है। यह स्थिति निम्न कृषि उत्पादकता और प्रच्छन्न बेरोजगारी को दर्शाती है। आर्थिक नियोजन का मुख्य लक्ष्य इस अधिशेष श्रम को कृषि से हटाकर अधिक उत्पादकता वाले गैर-कृषि क्षेत्रों में स्थानांतरित करना है ताकि प्रति व्यक्ति आय और ग्रामीण जीवन स्तर में सुधार हो सके।

100. (4) नियमित कार्यों में विस्थापन जबकि पुनर्कौशल (reskilling) वाली नई भूमिकाओं का सृजन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वचालन भविष्य के श्रम बाजार को मौलिक रूप से पुनर्गठित कर रहे हैं। यह माना जाता है कि ये तकनीकें उन नियमित और दोहराव वाले कार्यों को विस्थापित कर देंगी जो मशीनों द्वारा अधिक सटीकता से किए जा सकते हैं। हालाँकि, इसके साथ ही कई ऐसी नई भूमिकाओं का सृजन होगा जहाँ मानवीय विवेक, रचनात्मकता और तकनीकी प्रबंधन की आवश्यकता होगी। इस बदलाव का सामना करने हेतु कार्यबल के लिए निरंतर पुनर्कौशल अनिवार्य हो जाएगा। यह तकनीकी क्रांति रोजगार के स्वरूप को बदलकर नई दक्षताओं की मांग उत्पन्न कर रही है।

NODIA

पर ध्यान केंद्रित करते हैं। अन्य विकल्पों के संदर्भ में, मातृत्व लाभ अधिनियम में अवकाश की अवधि बढ़ाई गई है। स्टैंड-अप इंडिया विशेष रूप से महिलाओं और वंचित वर्गों को उद्यम स्थापित करने हेतु बैंक ऋण की सुविधा प्रदान करती है ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

37. (3) गैर-कृषि रोजगार की कमी के कारण शहरी मलिन बस्तियों की ओर संकटपूर्ण पलायन
ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गैर-कृषि रोजगार की कमी और कृषि में घटती जोत के कारण बेरोजगारी की समस्या बढ़ रही है। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण श्रमिक आजीविका की तलाश में विवश होकर शहरों की ओर पलायन करते हैं, जिसे 'संकटपूर्ण पलायन' कहा जाता है। चूंकि इन श्रमिकों के पास अक्सर शहरी कौशल की कमी होती है, इसलिए वे शहरों में अनौपचारिक कार्यों में संलग्न होते हैं और मलिन बस्तियों में रहने को विवश होते हैं। यह स्थिति ग्रामीण विकास की चुनौतियों और शहरी बुनियादी ढांचे पर दबाव को दर्शाती है।

38. (1) केवल I और II
पीएम स्वनिधि योजना आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित एक केंद्रीय योजना है, जिसे सिडबी के माध्यम से कार्यान्वित किया जाता है। यह योजना रेहड़ी-पटरी वालों को सस्ता ऋण प्रदान करने के साथ उनके डिजिटल सशक्तिकरण पर भी बल देती है। डिजिटल लेनदेन करने वाले विक्रेताओं को कैशबैक प्रोत्साहन दिया जाता है, जिससे उनके व्यापार का आधुनिकीकरण होता है और क्रेडिट स्कोर बेहतर होता है। यह कहना गलत है कि यह डिजिटल लेनदेन हेतु दंडित करती है, बल्कि यह उन्हें औपचारिक अर्थव्यवस्था से जोड़ती है।

39. (4) श्रम की असीमित आपूर्ति का लुईस मॉडल
आर्थर लुईस द्वारा प्रतिपादित मॉडल विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में संरचनात्मक परिवर्तन की व्याख्या करता है। यह बताता है कि कृषि जैसे पारंपरिक क्षेत्रों में श्रम की प्रचुरता होती है, जहाँ उनकी सीमांत उत्पादकता बहुत कम होती है। इस अधिशेष श्रम को बढ़ते औद्योगिक क्षेत्र की ओर आकर्षित किया जाता है, जहाँ उच्च निवेश के कारण उत्पादकता अधिक होती है। यह प्रक्रिया तब तक चलती है जब तक कि पारंपरिक क्षेत्र का अतिरिक्त श्रम समाप्त नहीं हो जाता और अर्थव्यवस्था का पूर्ण औद्योगिकीकरण नहीं हो जाता है।

40. (1) डिजिटल प्रौद्योगिकियों में निरंतर सीखने और कौशल उन्नयन (upskilling) की संस्कृति को बढ़ावा देना
इंडस्ट्री 4.0 के आगमन के साथ वैश्विक श्रम बाजार में तकनीकी दक्षता की मांग बढ़ रही है। भारतीय कार्यबल को इस हेतु तैयार करने के लिए सबसे उपयुक्त रणनीति डिजिटल प्रौद्योगिकियों में निरंतर सीखने और कौशल उन्नयन की संस्कृति को बढ़ावा देना है। इसमें डेटा विश्लेषण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण पर ध्यान देना अनिवार्य है। स्वचालन को प्रतिबंधित करने के स्थान पर, मानव और मशीन के बीच सहयोगात्मक कौशल विकसित करना भविष्य की प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था हेतु अत्यंत आवश्यक और प्रभावी रणनीति है।

41. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
कार्यबल की दक्षता को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। संज्ञानात्मक कौशल में आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान की क्षमता शामिल है। तकनीकी कौशल विशिष्ट सॉफ्टवेयर या मशीनरी संचालित करने की योग्यता को दर्शाते हैं। मृदु कौशल (सॉफ्ट स्किल्स) अंतर्वैयक्तिक व्यवहार और प्रभावी संचार से संबंधित हैं जो कार्यस्थल पर समन्वय हेतु महत्वपूर्ण हैं। व्यावसायिक कौशल प्रायः व्यावहारिक और ट्रेड-आधारित होते हैं, जैसे वेल्डिंग, जो विशिष्ट विनिर्माण और सेवा कार्यों हेतु तत्काल रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं।

42. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
भारत में कौशल विकास मंत्रालय देश में सभी कौशल पहलों हेतु शीर्ष मंत्रालय के रूप में कार्य करता है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के बारे में यह कहना गलत है कि यह पूर्णतः निजी क्षेत्र द्वारा वित्तपोषित है। वास्तव में, यह एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी निकाय है जिसमें भारत सरकार की 49 प्रतिशत हिस्सेदारी है। एनएसडीसी का मुख्य उद्देश्य निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करके गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना हेतु वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करना है ताकि कौशल पारिस्थितिकी तंत्र सुदृढ़ हो।

43. (2) केवल II और IV
राष्ट्रीय कौशल विकास निगम मुख्य रूप से कौशल पारिस्थितिकी तंत्र को गति देने का कार्य करता है। इसके प्रमुख कार्यों में निजी प्रशिक्षण संस्थानों को वित्तीय सहायता देना और गुणवत्ता आश्वासन प्रणालियों को सक्षम करना शामिल है। यह निकाय सरकारी विद्यालयों के सीधे प्रशासन या वहां परीक्षाओं का संचालन करने हेतु उत्तरदायी नहीं है। साथ ही, विनिर्माण उद्योगों हेतु कर दरों को विनियमित करना इसका कार्य नहीं है, बल्कि ये कार्य क्रमशः शिक्षा बोर्डों और वित्त मंत्रालय के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

44. (2) आरपीएल (RPL) के तहत प्रमाणित उम्मीदवारों को सरकार को भारी परीक्षा शुल्क देना पड़ता है।
पूर्व शिक्षण की मान्यता (RPL) प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का महत्वपूर्ण घटक है जो असंगठित कार्यबल की दक्षताओं को औपचारिक पहचान प्रदान करता है। इसका उद्देश्य उन व्यक्तियों को प्रमाणित करना है जिन्होंने अनौपचारिक माध्यमों से कौशल प्राप्त किया है, ताकि उन्हें रोजगार के बेहतर अवसर मिल सकें। यह कहना गलत है कि इसके लिए भारी शुल्क देना पड़ता है, क्योंकि सरकार द्वारा इसे सुगम बनाया गया है। यह प्रमाणन राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे के साथ जोड़कर श्रमिकों की व्यावसायिक गतिशीलता सुनिश्चित करता है।

45. (1) III, I, II, IV
भारत में कौशल विकास की यात्रा कई चरणों में विकसित हुई है। सर्वप्रथम 1950 के दशक में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की गई थी। इसके बहुत समय बाद, 2008 में सार्वजनिक-निजी भागीदारी हेतु राष्ट्रीय कौशल विकास निगम का गठन हुआ। वर्ष 2014 में कौशल विकास के प्रयासों

Downloaded from www.pdf.tube

प्रदाता अपनी क्षमता का विस्तार कर सकें। इसका उद्देश्य केवल अनुदान देना नहीं है, बल्कि एक ऐसा टिकाऊ मॉडल विकसित करना है जहाँ निजी संस्थाएं गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण सेवाएं प्रदान कर सकें। यह वित्तीय समर्थन निजी क्षेत्र की भागीदारी को आकर्षक और परिणाम-उन्मुख बनाता है।

64. (1) केवल I, II और IV
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का तीसरा चरण अपनी विकेंद्रीकृत प्रकृति के कारण पिछले चरणों से काफी भिन्न है। इसमें राज्यों और जिला समितियों को स्थानीय स्तर पर कौशल की मांग को पहचानने हेतु अधिक अधिकार दिए गए हैं। इस चरण का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षण को स्थानीय रोजगार के अवसरों के साथ जोड़ना है। इसे डिजिटल पोर्टल के माध्यम से सुगम बनाया गया है ताकि पारदर्शिता बनी रहे। यह कहना गलत है कि यह केवल 45-60 वर्ष के आयु वर्ग हेतु लक्षित थी, क्योंकि यह मुख्य रूप से युवाओं हेतु है।

65. (2) संकल्प (SANKALP) : संस्थागत तंत्र और गुणवत्ता सुधार हेतु केंद्र प्रायोजित योजना
संकल्प योजना को विश्व बैंक के सहयोग से कौशल विकास पारिस्थितिकी तंत्र के संस्थागत तंत्र को सुदृढ़ करने हेतु प्रारंभ किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य शासन में सुधार, गुणवत्ता आश्वासन और कौशल कार्यक्रमों में समावेशिता को बढ़ावा देना है। इसी प्रकार, स्ट्राइव योजना का ध्यान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों की दक्षता सुधारने पर है। जन शिक्षण संस्थान वंचित क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, जबकि 'उड़ान' योजना विशेष रूप से जम्मू और कश्मीर के युवाओं हेतु एक विशिष्ट कौशल विकास पहल के रूप में शुरु की गई थी।

66. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
भारत में व्यावसायिक प्रशिक्षण हेतु विभिन्न विशिष्ट संस्थागत निकाय कार्य करते हैं। एनसीवीईटी प्रशिक्षण संस्थानों हेतु नियामक निकाय के रूप में मानकों का निर्धारण करता है। प्रशिक्षण महानिदेशालय आईटीआई सहित देश में नीतियों के निर्माण हेतु उत्तरदायी शीर्ष संगठन है। सीएसटीएआरआई का मुख्य कार्य अनुसंधान करना और आधुनिक औद्योगिक मांग के अनुसार पाठ्यक्रम विकसित करना है। एनआईएमआई निर्देशात्मक सामग्री और आधुनिक ई-लर्निंग संसाधनों के विकास पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि प्रशिक्षुओं को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षण सामग्री प्राप्त हो सके।

67. (1) केवल I और II
शिक्षुता प्रशिक्षण भारत में व्यावहारिक औद्योगिक कौशल प्राप्त करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षु अधिनियम, 1961 के तहत एक निश्चित आकार के प्रतिष्ठानों हेतु शिक्षुओं की नियुक्ति को अनिवार्य बनाया गया है। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि शिक्षु को नियमित कर्मचारी नहीं माना जाता और वे बोनस जैसे लाभों के हकदार नहीं होते, बल्कि वे प्रशिक्षु होते हैं जिन्हें निर्धारित वजीफा मिलता है। राष्ट्रीय शिक्षुता प्रशिक्षण योजना विशेष रूप से तकनीकी डिग्री और डिप्लोमा धारकों को उद्योगों में व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने हेतु बनाई गई है।

NODIA

68. (4) व्यापक आर्थिक मंदी के दौरान किसी कर्मचारी की छंटनी होना
संरचनात्मक बेरोजगारी तब उत्पन्न होती है जब तकनीकी प्रगति के कारण श्रमिकों के पुराने कौशल अप्रासंगिक हो जाते हैं। कोयला खनिकों का सौर ऊर्जा के कारण विस्थापित होना इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसके विपरीत, व्यापक आर्थिक मंदी या मांग में गिरावट के दौरान होने वाली छंटनी को "चक्रीय बेरोजगारी" कहा जाता है। चक्रीय बेरोजगारी अस्थायी आर्थिक गिरावट से जुड़ी होती है, जबकि संरचनात्मक बेरोजगारी को दूर करने हेतु श्रमिकों को नए कौशल सीखने के लिए गहन और दीर्घकालिक पुनर्कौशल की आवश्यकता होती है।

69. (3) श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति बढ़ने से कृषि मजदूरी में वृद्धि
मनरेगा योजना ने ग्रामीण श्रम बाजार को गहराई से प्रभावित किया है। इस योजना द्वारा प्रदान की जाने वाली रोजगार गारंटी और निर्धारित न्यूनतम मजदूरी ने ग्रामीण श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ा दिया है। इसके परिणामस्वरूप निजी कृषि कार्यों में भी मजदूरी की दरों में वृद्धि देखी गई है, क्योंकि अब श्रमिक मनरेगा द्वारा सुनिश्चित न्यूनतम वेतन से कम दर पर कार्य करने को तैयार नहीं होते। इसने ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाने और श्रमिकों के शोषण को रोकने में प्रभावी सहायता की है।

70. (2) आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना (ABRY)
कोविड-19 महामारी के पश्चात औपचारिक क्षेत्र में रोजगार सृजन को पुनर्जीवित करने हेतु 'आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना' प्रारंभ की गई थी। इसके तहत सरकार उन नियोक्ताओं को वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करती है जो नए कर्मचारियों की नियुक्ति करते हैं। सरकार भविष्य निधि में कर्मचारी और नियोक्ता दोनों के 12-12 प्रतिशत अंशदान का भुगतान करती है। यह पहल उद्योगों पर वित्तीय भार कम करने, व्यापार को पुनः गति देने और नए श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई है।

71. (4) संस्थापकों के व्यक्तिगत जीवन-निर्वाह व्यय हेतु सीधे धन वितरित करना
स्टार्टअप इंडिया सीड फंड योजना का उद्देश्य प्रारंभिक चरण के स्टार्टअप को उनके व्यावसायिक मॉडल को धरातल पर उतारने हेतु वित्तीय सहायता देना है। यह सहायता प्रोटोटाइप विकास और बाजार प्रवेश जैसे महत्वपूर्ण चरणों हेतु प्रदान की जाती है। इसका कार्यान्वयन प्रमाणित इनक्यूबेटरों के माध्यम से किया जाता है। यह कहना गलत है कि यह धन संस्थापकों के व्यक्तिगत खर्च हेतु दिया जाता है। इसका वास्तविक लक्ष्य उद्यम को आत्मनिर्भर बनाना और उसे भविष्य में बड़े निवेश आकर्षित करने हेतु तैयार करना है।

72. (1) केवल I, II और III
उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजना भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाने की दिशा में एक रणनीतिक पहल है। यह योजना इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मास्यूटिकल्स जैसे प्रमुख क्षेत्रों में घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु नकद प्रोत्साहन प्रदान करती

की अवधारणा इसकी प्रमुख विशेषता है, जो केंद्र सरकार को विभिन्न क्षेत्रों हेतु वेतन का एक आधार स्तर निर्धारित करने का अधिकार देती है।

55. (4) अर्जुन सेनगुप्ता
असंगठित क्षेत्र के उद्यमों हेतु राष्ट्रीय आयोग का गठन अनौपचारिक क्षेत्र की समस्याओं के अध्ययन हेतु किया गया था। इस महत्वपूर्ण आयोग की अध्यक्षता प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अर्जुन सेनगुप्ता ने की थी। उनकी रिपोर्ट ने अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डाला और उन्हें सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने हेतु व्यापक कानूनी ढांचे की सिफारिश की। इस आयोग के निष्कर्षों ने असंगठित श्रमिक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम और विभिन्न अन्य कल्याणकारी योजनाओं के निर्माण में एक मार्गदर्शक की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

56. (1) मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017 में 50 या अधिक कर्मचारियों वाले प्रतिष्ठानों हेतु क्रेच (crèche) सुविधा अनिवार्य है।
भारत में महिलाओं की कार्यबल भागीदारी को सुगम बनाने हेतु कई कानूनी प्रावधान किए गए हैं। मातृत्व लाभ अधिनियम के तहत 50 या अधिक कर्मचारियों वाले प्रत्येक प्रतिष्ठान में क्रेच सुविधा का होना अनिवार्य है। यह प्रावधान कामकाजी माताओं को अपने बच्चों की सुरक्षित देखभाल सुनिश्चित करते हुए रोजगार जारी रखने में सहायता करता है। समान पारिश्रमिक अधिनियम यह सुनिश्चित करता है कि समान कार्य हेतु महिलाओं और पुरुषों को बराबर वेतन मिले। ये कानून कार्यस्थल पर लैंगिक समानता और समावेशिता को बढ़ावा देते हैं।

57. (1) केवल I, II और III
ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाएं प्रदान करने हेतु श्यामा प्रसाद मुखर्जी रूर्बन मिशन का उद्देश्य ग्रामीण क्लस्टरों को योजनाबद्ध तरीके से विकसित करना है। इन पहलों का लक्ष्य ग्रामीण-शहरी अंतर को कम करना और स्थानीय स्तर पर रोजगार प्रदान कर संकटपूर्ण पलायन को रोकना है। इन योजनाओं का ध्यान अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों के बजाय आवश्यक नागरिक सेवाओं, डिजिटल कनेक्टिविटी, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं पर केंद्रित है। यह मॉडल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने और बुनियादी ढांचे को आधुनिक बनाने की दिशा में कार्यरत है।

58. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
पीएम स्वनिधि योजना रेहड़ी-पटरी वालों को बिना किसी गारंटी के कार्यशील पूंजी ऋण प्रदान करती है ताकि वे अपना व्यवसाय पुनः शुरू कर सकें। इस योजना की विशिष्ट विशेषता यह है कि यह डिजिटल लेनदेन करने वाले विक्रेताओं को मासिक आधार पर कैशबैक प्रोत्साहन प्रदान करती है। यह कहना पूर्णतः गलत है कि इसके लिए सोना गिरवी रखने की आवश्यकता होती है, क्योंकि यह योजना सूक्ष्म-क्रेडिट को समाज के सबसे निचले स्तर तक सुलभ बनाने हेतु बनाई गई है, जिससे विक्रेताओं का सशक्तिकरण होता है।

59. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कृषि क्षेत्र में प्रच्छन्न बेरोजगारी एक ऐसी स्थिति है जहाँ श्रम की सीमांत उत्पादकता शून्य होती है। इसका तात्पर्य यह है कि यदि उत्पादन प्रक्रिया से कुछ अतिरिक्त श्रमिकों को हटा भी दिया जाए, तो भी कुल उत्पादन में कोई गिरावट नहीं आती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उपलब्ध भूमि की तुलना में काम करने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक होती है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में इस अधिशेष श्रम को कृषि से हटाकर अधिक उत्पादक सेवा क्षेत्रों में स्थानांतरित करना अनिवार्य माना जाता है।

60. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
तकनीकी नवाचार रोजगार बाजार को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मुख्य रूप से डेटा विश्लेषण और संज्ञानात्मक कार्यों के स्वचालन की ओर ले जाती है। गिग अर्थव्यवस्था पारंपरिक नौकरियों के स्थान पर स्वतंत्र और कार्य-आधारित अनुबंधों को बढ़ावा दे रही है। ब्लॉकचेन तकनीक सुरक्षित डिजिटल लेजर और विकेंद्रीकृत प्रणालियों के प्रबंधन में नए कौशल की मांग उत्पन्न करती है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स स्मार्ट उपकरणों और सेंसर प्रबंधन के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों का विस्तार कर रहा है, जिससे नई दक्षताओं की आवश्यकता बढ़ रही है।

61. (2) लामबंदी (Mobilization) → प्रशिक्षण → मूल्यांकन → प्रमाणन → प्लेसमेंट
कौशल विकास कार्यक्रमों का सफल कार्यान्वयन एक व्यवस्थित प्रक्रिया पर निर्भर करता है। सर्वप्रथम 'लामबंदी' के माध्यम से योग्य उम्मीदवारों की पहचान कर उन्हें योजना से जोड़ा जाता है। इसके पश्चात उन्हें चयनित व्यवसायों में आवश्यक सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण पूरा होने पर उम्मीदवारों का मूल्यांकन किया जाता है और सफल उम्मीदवारों को राष्ट्रीय प्रमाणन प्रदान किया जाता है। अंतिम चरण 'प्लेसमेंट' है, जहाँ प्रशिक्षित युवाओं को उद्योगों में उपयुक्त रोजगार प्रदान कर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाता है।

62. (4) भारत के प्रधानमंत्री
राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन को देश में कौशल विकास के प्रयासों को एकीकृत करने हेतु एक शीर्ष मिशन के रूप में स्थापित किया गया है। इसके संस्थागत ढांचे के सर्वोच्च स्तर पर एक शासी परिषद कार्य करती है, जिसकी अध्यक्षता स्वयं भारत के प्रधानमंत्री करते हैं। यह परिषद मिशन को समग्र नीतिगत दिशा और विभिन्न मंत्रालयों के बीच उच्च स्तरीय समन्वय हेतु मार्ग प्रशस्त करती है। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता कौशल विकास को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में उच्च स्थान प्रदान करने की सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता को स्पष्ट करती है।

63. (1) सॉफ्ट लोन (soft loans) और इक्विटी निवेश
राष्ट्रीय कौशल विकास निगम निजी क्षेत्र की कौशल प्रशिक्षण पहलों को बढ़ावा देने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करता है। यह सहायता मुख्य रूप से कम ब्याज दर वाले ऋण (सॉफ्ट लोन) और इक्विटी निवेश के रूप में दी जाती है ताकि प्रशिक्षण

Click Here to Buy book on Amazon

की जाती है। वर्षा की गणना करना इस संदर्भ में पूरी तरह अप्रासंगिक है। कौशल अंतराल की सही पहचान होने पर ही शैक्षणिक संस्थान अपने पाठ्यक्रमों को संशोधित कर सकते हैं, जिससे कार्यबल की रोजगार क्षमता में प्रभावी सुधार होता है।

82. (1) इसने राज्य सरकारों को अपने राज्य कौशल विकास मिशन बनाने से प्रतिबंधित किया है।
राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन का मुख्य उद्देश्य केंद्र और राज्यों के प्रयासों को एकीकृत करना है। यह मिशन वास्तव में राज्य सरकारों को अपने स्वयं के कौशल विकास मिशन बनाने हेतु प्रोत्साहित करता है ताकि वे क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुसार योजनाओं को लागू कर सकें। मिशन का त्रि-स्तरीय ढांचा राष्ट्रीय स्तर पर नीति निर्माण और त्वरित निर्णय लेने में सहायता करता है। यह ढांचा सुनिश्चित करता है कि कौशल विकास की पहलें प्रभावी ढंग से और सहकारी संघवाद के माध्यम से जमीनी स्तर तक पहुँच सकें और सफल हों।

83. (3) राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम (RSLDC)
राजस्थान में कौशल विकास और आजीविका संवर्धन के क्षेत्र में राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम शीर्ष संस्था के रूप में कार्य करती है। यह निगम राज्य के युवाओं को रोजगारपरक और बाजार-अनुकूल प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन करता है। इसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय उद्योगों की मांग के अनुसार कौशल विकसित करना और वंचित वर्गों को सशक्त बनाना है। यह निगम निजी प्रशिक्षण प्रदाताओं के साथ मिलकर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रबंधन करता है ताकि युवाओं को उपयुक्त रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकें।

84. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का चौथा चरण कौशल पारिस्थितिकी तंत्र को औपचारिक शिक्षा प्रणाली के साथ एकीकृत करने पर बल देता है। इसके तहत विद्यालयों और कॉलेजों में कौशल हब स्थापित करने का प्रावधान है, ताकि छात्र अपनी पढ़ाई के साथ व्यावसायिक प्रशिक्षण भी प्राप्त कर सकें। यह कहना गलत है कि यह चरण निजी प्रशिक्षण प्रदाताओं की भूमिका को समाप्त करता है; बल्कि यह सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के संसाधनों का उपयोग करके प्रशिक्षण की गुणवत्ता और पहुंच बढ़ाने का प्रयास करता है।

85. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
भारत में कौशल विकास हेतु संचालित विभिन्न योजनाओं के विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित हैं। संकल्प योजना कौशल पारिस्थितिकी तंत्र के संस्थागत सुदृढ़ीकरण हेतु कार्य करती है, जबकि स्ट्राइव योजना का ध्यान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों की दक्षता बढ़ाने पर है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना अल्पकालिक प्रशिक्षण के माध्यम से प्रमाणन प्रदान करती है। राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना नियोक्ताओं को वित्तीय प्रोत्साहन के माध्यम से प्रशिक्षण को बढ़ावा देती है। ये सभी पहलें मिलकर कार्यबल को वैश्विक औद्योगिक मानकों के अनुरूप तैयार करने का निरंतर प्रयास करती हैं।

86. (2) केवल I, II, IV और V
औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के आधुनिकीकरण हेतु सरकार ने निजी क्षेत्र के साथ साझेदारी की है और कई आईटीआई को उत्कृष्टता केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। यहाँ रोबोटिक्स और थ्री-डी प्रिंटिंग जैसे आधुनिक व्यवसायों का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह कहना गलत है कि यह प्रक्रिया उद्योग विशेषज्ञों की भागीदारी को प्रतिबंधित करती है; वास्तव में, प्रशिक्षण वितरण में उनकी भूमिका को और अधिक बढ़ाया गया है। आईटीआई की प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण स्नातकों की रोजगार क्षमता बढ़ाने और उन्हें भविष्य हेतु तैयार करने का महत्वपूर्ण कदम है।

NODIA

87. (4) प्रशिक्षण के पश्चात आजीवन पेंशन का प्रावधान
राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना नियोक्ताओं और शिक्षुओं दोनों को लाभान्वित करने हेतु वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करती है। इसमें वजीफे का एक बड़ा हिस्सा सरकार द्वारा वहन किया जाता है। यह योजना सूक्ष्म और लघु उद्यमों को युवाओं को प्रशिक्षित करने हेतु प्रोत्साहित करती है ताकि कार्यबल की गुणवत्ता बढ़े। हालाँकि, इस योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण के पश्चात आजीवन पेंशन का कोई प्रावधान नहीं है। यह योजना मुख्य रूप से कौशल प्राप्ति और कार्य-स्थल पर व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने तक सीमित है, न कि सेवानिवृत्ति लाभ हेतु।

88. (1) II, III, I
राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन बेरोजगारी का आकलन करने हेतु तीन प्रमुख मापों का उपयोग करता है। सामान्य स्थिति 365 दिनों की लंबी संदर्भ अवधि के आधार पर दीर्घकालिक बेरोजगारी को मापती है। वर्तमान साप्ताहिक स्थिति सर्वेक्षण के ठीक पहले के सात दिनों के आधार पर बेरोजगारी का अनुमान लगाती है। वर्तमान दैनिक स्थिति संदर्भ सप्ताह के प्रत्येक दिन की गतिविधियों को देखती है और यह बेरोजगारी का सबसे सटीक माप माना जाता है। दीर्घ से लघु अवधि के आधार पर इनका सही क्रम सामान्य, साप्ताहिक और दैनिक स्थिति है।

89. (3) राज्य सरकार का
मनरेगा योजना के नियमों के अनुसार, यदि किसी पंजीकृत आवेदक को कार्य की मांग करने के 15 दिनों के भीतर रोजगार उपलब्ध नहीं कराया जाता है, तो वह बेरोजगारी भत्ते का कानूनी रूप से हकदार होता है। इस भत्ते के भुगतान का पूर्ण वित्तीय दायित्व केंद्र सरकार के बजाय संबंधित राज्य सरकार का होता है। यह प्रावधान राज्य सरकारों को स्थानीय स्तर पर कार्यों की प्रभावी योजना बनाने हेतु जवाबदेह बनाता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि ग्रामीण श्रमिकों को या तो रोजगार मिले या उन्हें आवश्यक आर्थिक मुआवजा प्राप्त हो।

90. (1) पीएमआरपीवाई (PMRPY) : सरकार नए कर्मचारियों हेतु 12% ईपीएफ योगदान का भुगतान करती है
प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना के तहत सरकार नए कर्मचारियों के संबंध में नियोक्ता के 12 प्रतिशत अंशदान का भुगतान करती है, जो औपचारिक रोजगार को बढ़ावा देता है। अन्य विकल्पों के संदर्भ में, मनरेगा ग्रामीण अकुशल श्रम हेतु है। पीएम स्वनिधि रेहड़ी-पटरी वालों के लिए ऋण योजना

है। यद्यपि इसका प्राथमिक लक्ष्य निवेश बढ़ाना है, लेकिन इसके माध्यम से बड़ी संख्या में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित होने की प्रबल संभावना है। यह कहना गलत है कि यह रोजगार की उपेक्षा करती है, क्योंकि उत्पादन में वृद्धि अनिवार्य रूप से श्रम बल की मांग बढ़ाती है।

73. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धांत बताता है कि आर्थिक विकास के साथ जनसंख्या के स्वरूप में कैसे परिवर्तन आता है। प्रथम चरण में उच्च जन्म और मृत्यु दर के कारण वृद्धि मंद होती है। द्वितीय चरण में स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार से मृत्यु दर गिरती है और जनसंख्या विस्फोट होता है। तृतीय चरण में जन्म दर में गिरावट और कार्यशील जनसंख्या के अनुपात में वृद्धि देखी जाती है। चतुर्थ चरण विकसित देशों की विशेषता है, जहाँ जन्म और मृत्यु दर दोनों न्यूनतम होती हैं और जनसंख्या वृद्ध होने लगती है।

74. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में 29 केंद्रीय श्रम कानूनों को चार सरल संहिताओं में समेकित करना व्यापार की सुगमता और श्रमिकों के अधिकारों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास है। यह सरलीकरण विभिन्न पुराने अधिनियमों की जटिल अनुपालन प्रक्रियाओं को समाप्त करता है। इससे नियोक्ताओं हेतु नियमों का पालन करना आसान हो जाता है, जिससे निवेश को प्रोत्साहन मिलता है। साथ ही, यह नई प्रणाली अधिक श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा और न्यूनतम मजदूरी के दायरे में लाती है, जिससे औद्योगिक संबंधों और श्रमिकों के कल्याण में सुधार होता है।

75. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
भारत में अनौपचारिक क्षेत्र अर्थव्यवस्था का विशाल हिस्सा है, जहाँ कुल कार्यबल का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा नियोजित है। असंगठित श्रमिक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम उन श्रमिकों को कानूनी सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास करता है जो औपचारिक प्रणालियों के दायरे में नहीं आते हैं। यह कहना कि भारत का 80 प्रतिशत कार्यबल औपचारिक क्षेत्र में है, पूर्णतः गलत है। इन श्रमिकों की समस्याओं के समाधान हेतु सरकार ई-श्रम जैसे डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से उन्हें पंजीकृत कर सामाजिक सुरक्षा से जोड़ रही है।

76. (2) भारत में निम्न महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर (FLFPR)
भारत में महिलाओं की निम्न कार्यबल भागीदारी के पीछे कई सामाजिक और ढांचागत कारक उत्तरदायी हैं। कृषि में बढ़ते मशीनीकरण ने महिलाओं के पारंपरिक कार्यों को कम कर दिया है, जबकि सुरक्षित परिवहन का अभाव और सामाजिक मान्यताएं उनकी गतिशीलता को बाधित करती हैं। घरेलू जिम्मेदारियों का भारी बोझ भी उनकी औपचारिक भागीदारी को सीमित करता है। इन कारकों के प्रभाव के कारण बड़ी संख्या में योग्य महिलाएं श्रम बाजार से बाहर रह जाती हैं, जो आर्थिक और सामाजिक विकास की एक बड़ी चुनौती है।

77. (3) उन्नत सेमीकंडक्टर निर्माण हेतु विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZs)
ग्रामीण बेरोजगारी दूर करने हेतु कृषि आधारित उद्योगों, खाद्य प्रसंस्करण और डेयरी जैसे क्षेत्रों का विकास अत्यंत प्रभावी उपाय है। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन भी स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण आय बढ़ाने और स्वरोजगार सृजित करने का कार्य करता है। इसके विपरीत, उन्नत सेमीकंडक्टर निर्माण हेतु विशेष आर्थिक क्षेत्र मुख्य रूप से उच्च-तकनीकी और पूंजी-प्रधान होते हैं। ये ग्रामीण अकुशल श्रमिकों के स्थान पर शहरी क्षेत्रों के उच्च-स्तरीय तकनीकी विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं के लिए अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं।

78. (4) बड़े शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के स्वामी
पीएम स्वनिधि योजना विशेष रूप से उन सूक्ष्म-उद्यमियों हेतु बनाई गई है जो सड़कों पर अपना छोटा व्यवसाय चलाकर आजीविका कमाते हैं। इसके लाभार्थियों में मुख्य रूप से फल-सब्जी विक्रेता, मोची, नाई और अन्य पारंपरिक रेहड़ी-पटरी वाले शामिल हैं। बड़े शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के स्वामी या संगठित रिटेल स्टोर के मालिक इस योजना के दायरे में नहीं आते हैं। इस योजना का मुख्य उद्देश्य समाज के सबसे निचले स्तर के उन विक्रेताओं को ऋण प्रदान करना है जो महामारी के कारण आर्थिक रूप से प्रभावित हुए थे।

79. (1) पुरुषों के पलायन के कारण कृषि में महिलाओं की बढ़ती सहभागिता
कृषि का महिलाकरण ग्रामीण अर्थव्यवस्था में देखी जाने वाली एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है। जब पुरुष रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करते हैं, तो खेती की जिम्मेदारी और शारीरिक श्रम का पूरा भार घर की महिलाओं पर आ जाता है। इसके परिणामस्वरूप कृषि कार्यबल में महिलाओं की संख्या और निर्णय लेने की भूमिका में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। हालांकि वे मुख्य रूप से कार्यों का प्रबंधन करती हैं, फिर भी भूमि के मालिकाना हक जैसी औपचारिक सुविधाओं तक उनकी पहुंच अब भी काफी सीमित है।

NODIA

80. (1) केवल I और II
गिग अर्थव्यवस्था में प्लेटफार्म श्रमिक स्वतंत्र अनुबंधों के आधार पर कार्य करते हैं, जिससे उन्हें काम के समय के चयन में लचीलापन मिलता है। हालाँकि, यह मॉडल आय की अनिश्चितता और सामाजिक सुरक्षा जैसे पेंशन या बीमा के अभाव की गंभीर चुनौतियाँ भी पेश करता है। ये श्रमिक वर्तमान में कारखाना अधिनियम की 'कर्मचारी' परिभाषा के तहत पूर्णतः कवर नहीं हैं। नई सामाजिक सुरक्षा संहिता में पहली बार इन श्रमिकों को कुछ कल्याणकारी लाभों के दायरे में लाने का प्रयास किया गया है ताकि उन्हें सुरक्षा मिल सके।

81. (2) नौकरी चाहने वालों के कौशल और उद्योग की मांग के बीच अंतर का विश्लेषण करना
किसी भी अर्थव्यवस्था में कौशल अंतराल का सटीक आकलन करने हेतु नियोक्ताओं की मांग और नौकरी चाहने वालों की उपलब्ध दक्षता के बीच के अंतर का विश्लेषण करना अनिवार्य है। यह प्रक्रिया उद्योग के प्रतिनिधियों के साथ संवाद और भविष्य के तकनीकी रुझानों के अध्ययन के माध्यम से संपन्न

और नियोक्ता का पोर्टल पर पंजीकरण होता है, जिसके पश्चात प्रशिक्षण हेतु एक आधिकारिक अनुबंध सृजित किया जाता है। इसके बाद आवश्यक बुनियादी सैद्धांतिक प्रशिक्षण दिया जाता है, जो फिर वास्तविक कार्य-स्थल पर व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ आगे बढ़ता है। प्रशिक्षण के अंत में उम्मीदवार की दक्षता का मूल्यांकन किया जाता है। यह क्रम सुनिश्चित करता है कि प्रशिक्षु औद्योगिक वातावरण में प्रभावी ढंग से कौशल प्राप्त करें।

28. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संरचनात्मक और प्रतिरोधात्मक बेरोजगारी के बीच मुख्य अंतर उनकी प्रकृति और अवधि में होता है। प्रतिरोधात्मक बेरोजगारी सामान्यतः अल्पकालिक होती है जो नौकरी बदलने की प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होती है। इसके विपरीत, संरचनात्मक बेरोजगारी दीर्घकालिक होती है क्योंकि यह अर्थव्यवस्था की संरचना में होने वाले मौलिक बदलावों, जैसे नई तकनीक के आगमन, के कारण होती है। जब श्रमिकों के पुराने कौशल बाजार की मांग के अनुरूप नहीं रहते, तो उन्हें नए कौशल सीखने हेतु अधिक समय की आवश्यकता होती है।

29. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
मनरेगा योजना ने ग्रामीण भारत में मजदूरी का सीधा भुगतान बैंक खातों में अनिवार्य करके वित्तीय समावेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह कहना गलत है कि यह योजना केवल मजदूरी वितरण पर ध्यान देती है और संपत्ति निर्माण पर नहीं। वास्तव में, मनरेगा का एक मुख्य उद्देश्य जल संरक्षण और भूमि विकास जैसी स्थाई ग्रामीण संपत्तियों का निर्माण करना है। यह योजना ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने और संकटपूर्ण पलायन को रोकने का एक प्रमुख सरकारी साधन है।

30. (4) I, II, III और IV
प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना कर्मचारी भविष्य निधि संगठन द्वारा कार्यान्वित की जाती है और यह 15,000 रुपये तक के मासिक वेतन वाले नए श्रमिकों पर लागू होती है। योजना का प्राथमिक उद्देश्य नियोक्ताओं को कार्यबल के औपचारिकीकरण हेतु प्रोत्साहित करना है। इसके तहत सरकार नए कर्मचारियों के संबंध में भविष्य निधि में नियोक्ता के पूरे 12 प्रतिशत अंशदान का भुगतान करती है। यह प्रोत्साहन न केवल रोजगार सृजन में मदद करता है, बल्कि श्रमिकों को पेंशन जैसी महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों से भी जोड़ता है।

31. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न अवधारणाओं का विशेष महत्व है। इनक्यूबेटर ऐसे संगठन हैं जो शुरुआती स्तर के स्टार्टअप को कार्यक्षेत्र और परामर्श प्रदान करते हैं। एंजेल निवेशक वे व्यक्ति हैं जो छोटे व्यवसायों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराते हैं। जब किसी स्टार्टअप का बाजार मूल्यांकन 1 बिलियन डॉलर से अधिक हो जाता है, तो उसे यूनिकॉर्न कहा जाता है। बूटस्ट्रैपिंग वह प्रक्रिया है जहाँ उद्यमी बाहरी निवेश के बजाय अपनी व्यक्तिगत बचत से व्यवसाय को विकसित करता है। ये सभी तत्व नवाचार बढ़ाते हैं।

32. (2) 10 करोड़ रुपये तक का निवेश और 50 करोड़ रुपये तक का टर्नओवर
आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की परिभाषा को संशोधित किया गया है। संशोधित मानदंडों के अनुसार, "लघु" उद्यम की श्रेणी में उन इकाइयों को रखा जाता है जिनका मशीनरी में निवेश 10 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है और जिनका वार्षिक टर्नओवर 50 करोड़ रुपये की सीमा के भीतर है। यह नया वर्गीकरण विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों के लिए समान रखा गया है, जिससे इस क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने और उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने में काफी मदद मिली है।

33. (2) केवल I, II, IV और V
भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने हेतु बहुआयामी नीतियों की आवश्यकता है। इसमें गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल, आधुनिक शिक्षा और व्यापक कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही व्यापार-अनुकूल श्रम सुधारों को लागू करना आवश्यक है ताकि बढ़ते कार्यबल हेतु उत्पादक रोजगार सृजित किए जा सकें। कम आयु में विवाह जैसे सामाजिक कारक इस लाभांश के विपरीत कार्य करते हैं क्योंकि ये उत्पादक वर्षों में शिक्षा और रोजगार की संभावनाओं को कम कर देते हैं।

34. (1) किसी भी प्रतिष्ठान में महिलाओं को रात्रि पाली (night shift) में कार्य करने से प्रतिबंधित करना
व्यावसायिक सुरक्षा और कार्य स्थिति संहिता, 2020 का उद्देश्य कार्यस्थलों पर सुरक्षा मानकों को उन्नत करना है। यह संहिता 13 मौजूदा श्रम कानूनों को समाहित करती है और सभी कर्मचारियों हेतु औपचारिक नियुक्ति पत्र देना अनिवार्य बनाती है। इसके तहत महिलाओं को उनकी सहमति और सुरक्षा सुनिश्चित होने पर रात्रि पाली में कार्य करने की स्पष्ट अनुमति दी गई है। यह प्रावधान श्रम बाजार में लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है और विनिर्माण एवं सेवा जैसे क्षेत्रों में महिलाओं हेतु रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है।

35. (3) असंगठित और अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिक
ई-श्रम पोर्टल को श्रम मंत्रालय द्वारा असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों का एक व्यापक राष्ट्रीय डेटाबेस बनाने हेतु प्रारंभ किया गया है। इसमें प्रवासी श्रमिक, निर्माण श्रमिक और रेहड़ी-पटरी वाले शामिल हैं। इस पोर्टल पर पंजीकरण के माध्यम से इन श्रमिकों को एक विशिष्ट सार्वभौमिक खाता संख्या प्राप्त होती है, जो उन्हें विभिन्न सरकारी सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और संकट के समय मिलने वाली सहायता तक आसान पहुंच प्रदान करती है। यह पहल असंगठित कार्यबल को औपचारिक पहचान देने की दिशा में बड़ा कदम है।

36. (4) मिशन शक्ति : महिलाओं की सुरक्षा, संरक्षा और सशक्तिकरण हेतु एक व्यापक (umbrella) योजना
मिशन शक्ति महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की एक व्यापक योजना है जिसका उद्देश्य महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण सुनिश्चित करना है। इसके दो प्रमुख घटक 'संबल' और 'सामर्थ्य' हैं जो क्रमशः सुरक्षा और आर्थिक कौशल विकास

Downloaded from www.pdf.tube

है। स्टार्टअप इंडिया का उद्देश्य निजी नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देना है। अतः पीएमआरपीवाई और भविष्य निधि योगदान का युग्म पूरी तरह सही है, जो देश की औपचारिक अर्थव्यवस्था के विस्तार और श्रमिकों की सुरक्षा में सहायक है।

91. (3) 2016
भारत में नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्टार्टअप इंडिया कार्य योजना का आधिकारिक शुभारंभ वर्ष 2016 में किया गया था। इस योजना का उद्देश्य स्टार्टअप्स को कर लाभ, सरल अनुपालन प्रक्रिया और बौद्धिक संपदा अधिकारों के संरक्षण जैसी सुविधाएं प्रदान करना है। इस पहल ने देश के युवाओं को नौकरी चाहने वालों के बजाय नौकरी सृजनकर्ता बनने हेतु प्रेरित किया है और भारत को दुनिया के सबसे बड़े स्टार्टअप केंद्रों में से एक के रूप में स्थापित करने में मदद की है।

92. (2) कोविड-19 महामारी और लॉकडाउन
आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना को विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न आर्थिक चुनौतियों और रोजगार के नुकसान के समाधान के रूप में प्रारंभ किया गया था। लॉकडाउन के दौरान आर्थिक गतिविधियाँ रुकने से कार्यबल के एक बड़े हिस्से को बेरोजगारी का सामना करना पड़ा था। सरकार ने इस योजना के माध्यम से नियोक्ताओं को वित्तीय प्रोत्साहन दिया ताकि वे नए श्रमिकों की भर्ती कर सकें। यह योजना महामारी के पश्चात अर्थव्यवस्था की रिकवरी और रोजगार दर को स्थिर करने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास थी।

93. (3) उच्च वृद्ध निर्भरता अनुपात वाले समाज में संक्रमण
जनसांख्यिकीय लाभांश की अवसर की खिड़की तब बंद होने लगती है जब कार्यशील आयु वाली जनसंख्या का अनुपात घटने लगता है और वृद्धों की संख्या में वृद्धि होती है। इस स्थिति को उच्च वृद्ध निर्भरता अनुपात कहा जाता है, जहाँ एक छोटा कार्यबल बड़ी सेवानिवृत्त जनसंख्या का आर्थिक समर्थन करता है। यदि कोई देश अपनी कार्यशील जनसंख्या के सक्रिय वर्षों के दौरान पर्याप्त विकास और कौशल उन्नयन नहीं कर पाता, तो वह वृद्ध होने की अवस्था में स्वास्थ्य देखभाल के भारी वित्तीय बोझ के कारण आर्थिक संकट में पड़ सकता है।

94. (4) वैधानिक लाभ सुनिश्चित करते हुए भर्ती में लचीलापन प्रदान करना
श्रम सुधारों के अंतर्गत निश्चित अवधि के रोजगार का मुख्य उद्देश्य नियोक्ताओं को भर्ती प्रक्रिया में लचीलापन प्रदान करना है, ताकि वे प्रोजेक्ट की अवधि के अनुसार श्रमिकों को नियुक्त कर सकें। इस मॉडल की विशेषता यह है कि निश्चित अवधि के श्रमिकों को वही वैधानिक लाभ, जैसे सामाजिक सुरक्षा, प्राप्त होते हैं जो स्थाई श्रमिकों को मिलते हैं। यह व्यवस्था अनौपचारिक अनुबंधों के स्थान पर एक पारदर्शी ढांचा प्रदान करती है, जिससे व्यापार की सुगमता और श्रमिकों के कल्याण के बीच एक स्वस्थ संतुलन स्थापित होता है।

95. (1) 60 वर्ष की आयु के पश्चात असंगठित श्रमिकों हेतु 3,000 रुपये प्रति माह की न्यूनतम पेंशन
प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन योजना असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों हेतु एक स्वैच्छिक पेंशन योजना है। इसका मुख्य उद्देश्य रेहड़ी-पटरी वालों और निर्माण श्रमिकों जैसे कामगारों को वृद्धावस्था में आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना है। इस योजना के तहत, 60 वर्ष की आयु प्राप्त करने के पश्चात प्रत्येक लाभार्थी को 3,000 रुपये प्रति माह की न्यूनतम सुनिश्चित पेंशन प्रदान की जाती है। यह योजना श्रमिकों के बुढ़ापे की आजीविका को सुरक्षित करने की दिशा में एक बड़ा सामाजिक सुरक्षा उपाय है, जो उन्हें वित्तीय रूप से स्वतंत्र बनाता है।

NODIA

96. (3) त्रैमासिक (Quarterly)
आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण का संचालन राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा किया जाता है ताकि देश में रोजगार की स्थिति का नियमित आकलन किया जा सके। शहरी क्षेत्रों की संवेदनशीलता और वहां के श्रम बाजार में होने वाले तीव्र परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए, शहरी क्षेत्रों हेतु प्रमुख संकेतकों का अनुमान त्रैमासिक आधार पर लगाया जाता है। यह बार-बार होने वाला सर्वेक्षण नीति निर्माताओं को शहरी अर्थव्यवस्था में हो रहे अल्पकालिक बदलावों को समझने और समय पर आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाने में सहायता प्रदान करता है।

97. (2) पंचायती राज मंत्रालय
स्वामित्व योजना का कार्यान्वयन मुख्य रूप से केंद्रीय पंचायती राज मंत्रालय द्वारा किया जाता है। हालांकि इसमें भारतीय सर्वेक्षण विभाग और राज्य के राजस्व विभागों की भी तकनीकी सहभागिता होती है, लेकिन ग्रामीण नियोजन के कारण यह पंचायती राज मंत्रालय के प्रशासनिक अधिकार क्षेत्र में आती है। इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण भारत में संपत्ति के अधिकारों का आधुनिकीकरण करना है ताकि ग्रामीण निवासी अपनी भूमि के आधिकारिक अभिलेखों के आधार पर ऋण प्राप्त कर सकें। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता लाने की दिशा में बड़ा कदम है।

98. (1) विक्रेताओं को औपचारिक बैंकिंग से जोड़ने हेतु क्रेडिट इतिहास निर्मित करना
पीएम स्वनिधि योजना के तहत समय पर ऋण चुकाने पर अगली किश्त में ऋण की सीमा बढ़ाने का प्रावधान विक्रेताओं के वित्तीय समावेशन हेतु किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य छोटे विक्रेताओं के लिए एक विश्वसनीय क्रेडिट इतिहास निर्मित करना है। जब ये विक्रेता समय पर पुनर्भुगतान करते हैं, तो वे धीरे-धीरे औपचारिक बैंकिंग प्रणाली का स्थाई हिस्सा बन जाते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें भविष्य में बैंकों से बड़े व्यावसायिक ऋण प्राप्त करने के योग्य बनाती है, जिससे वे अपने छोटे व्यवसाय को एक स्थाई उद्यम बना सकते हैं।

99. (3) जीडीपी (GDP) में कृषि की हिस्सेदारी, रोजगार में इसकी हिस्सेदारी के बराबर है।
भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र रोजगार का सबसे बड़ा स्रोत है, जो लगभग आधे कार्यबल को आजीविका प्रदान करता है।

को एकीकृत करने हेतु एक समर्पित मंत्रालय बनाया गया। अंततः, 2015 में देश में कौशल विकास की गति बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन का शुभारंभ किया गया। यह क्रम इस क्षेत्र के क्रमिक विकास को दर्शाता है।

46. (4) छात्रों और नियोक्ताओं के मार्गदर्शन हेतु आईटीआई को 1 से 5 स्टार तक श्रेणीबद्ध करना
प्रशिक्षण महानिदेशालय द्वारा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों हेतु प्रारंभ की गई ग्रेडिंग प्रणाली का उद्देश्य संस्थानों में गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देना है। इस प्रणाली के तहत बुनियादी ढांचे और प्लेसमेंट रिकॉर्ड के आधार पर आईटीआई को 1 से 5 स्टार तक की रेटिंग दी जाती है। यह रेटिंग छात्रों को बेहतर संस्थान चुनने में मदद करती है और नियोक्ताओं को यह समझने में सहायता देती है कि वे कहाँ से कुशल कार्यबल प्राप्त कर सकते हैं। यह प्रक्रिया संस्थानों को निरंतर सुधार हेतु प्रोत्साहित करती है।

47. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन योजना के सुचारु संचालन हेतु विभिन्न घटकों के बीच समन्वय आवश्यक है। इस योजना के लाभार्थी वे युवा हैं जो कार्य-स्थल पर प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी रोजगार क्षमता बढ़ाना चाहते हैं। कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व प्रशिक्षण महानिदेशालय और एनएसडीसी पर है। सरकार द्वारा वित्तीय सहायता के रूप में वजीफे की प्रतिपूर्ति की जाती है। इसके अतिरिक्त, बुनियादी प्रशिक्षण प्रदाता उन नए शिक्षुओं को आवश्यक सैद्धांतिक शिक्षा प्रदान करते हैं जिनके पास पहले से कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं होता है।

48. (2) केवल II, IV और V
बेरोजगारी के विभिन्न प्रकारों की समझ नीति निर्माण हेतु आवश्यक है। भारतीय कृषि में मौसमी और प्रच्छन्न बेरोजगारी अत्यंत व्यापक है। यह मानना गलत है कि प्रतिरोधात्मक बेरोजगारी हमेशा हानिकारक होती है, क्योंकि यह बेहतर अवसरों की तलाश को दर्शाती है। इसी प्रकार, चक्रीय बेरोजगारी मंदी के दौरान बहुत प्रभावी होती है। संरचनात्मक बेरोजगारी को केवल ब्याज दरों को कम करके नहीं, बल्कि पुनर्कौशल और दीर्घकालिक शैक्षिक सुधारों के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है, जो श्रम शक्ति की दक्षता बढ़ाते हैं।

49. (2) मनरेगा की संपत्तियों की जियो-टैगिंग हेतु अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और जीआईएस (GIS) का उपयोग करने हेतु
'जियो मनरेगा' पहल को निर्मित ग्रामीण संपत्तियों की निगरानी और पारदर्शिता बढ़ाने हेतु प्रारंभ किया गया है। इस तकनीक के माध्यम से अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग करके सभी परिसंपत्तियों की जियो-टैगिंग की जाती है। इससे प्रत्येक कार्य की सटीक भौगोलिक स्थिति और प्रगति को डिजिटल मानचित्र पर देखा जा सकता है। यह प्रणाली फर्जी दावों को रोकने, सार्वजनिक जवाबदेही सुनिश्चित करने और भविष्य की योजनाओं के बेहतर नियोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे सरकारी संसाधनों का अत्यंत कुशल और पारदर्शी उपयोग सुनिश्चित होता है।

50. (1) 15,000 रुपये प्रति माह से अधिक वेतन वाले कर्मचारियों वाले प्रतिष्ठान
प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना का लाभ केवल उन प्रतिष्ठानों को मिलता है जो निर्धारित आर्थिक शर्तों को पूरा करते हैं। इस योजना से मुख्य रूप से उन कर्मचारियों को बाहर रखा गया है जिनका मासिक वेतन 15,000 रुपये से अधिक है। सरकार का उद्देश्य निम्न और मध्यम आय वाले कार्यबल हेतु औपचारिक रोजगार को प्रोत्साहित करना है। जिन कर्मचारियों का वेतन इस सीमा से अधिक है, उनके योगदान का भार नियोक्ता को स्वयं वहन करना पड़ता है, क्योंकि योजना का ध्यान श्रम-प्रधान क्षेत्रों पर है।

51. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
तकनीक संचालित स्टार्टअप्स का रोजगार बाजार पर मिश्रित प्रभाव पड़ता है। एक ओर, वे सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग और डेटा विज्ञान जैसे आधुनिक क्षेत्रों में बड़ी संख्या में उच्च-कुशल रोजगार सृजित करते हैं। दूसरी ओर, उनके द्वारा विकसित स्वचालित प्रणालियाँ पारंपरिक क्षेत्रों जैसे खुदरा व्यापार और परिवहन में पुरानी नौकरियों को विस्थापित भी कर सकती हैं। यह परिवर्तन कौशल की मांग में बदलाव को दर्शाता है, जहाँ भविष्य के कार्यबल को तकनीकी रूप से सक्षम होना आवश्यक है ताकि वे नए डिजिटल अवसरों का लाभ उठा सकें।

52. (4) निरंकुश शासन (Autocratic Governance)
आत्मनिर्भर भारत अभियान पांच प्रमुख स्तंभों पर आधारित है जो देश के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इनमें एक सुदृढ़ अर्थव्यवस्था, आधुनिक बुनियादी ढांचा, प्रौद्योगिकी संचालित प्रणालियाँ, जीवंत जनसांख्यिकी और बढ़ती मांग शामिल हैं। निरंकुश शासन इस अभियान का स्तंभ नहीं है, बल्कि यह लोकतांत्रिक मूल्यों और 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन' के सिद्धांत पर आधारित है। इन स्तंभों का उद्देश्य स्थानीय विनिर्माण और उद्यमिता को सशक्त बनाकर भारत को विश्व स्तर पर आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धी बनाना है।

53. (2) 15-59 वर्ष
आर्थिक नियोजन के संदर्भ में 15 से 59 वर्ष के आयु वर्ग को "कार्यशील जनसंख्या" माना जाता है। इस आयु वर्ग के लोग शारीरिक और मानसिक रूप से उत्पादन गतिविधियों में भाग लेने हेतु पूरी तरह उपयुक्त होते हैं। 15 वर्ष से कम आयु के बच्चे और 60 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धों को "आश्रित जनसंख्या" की श्रेणी में रखा जाता है। किसी भी देश का विकास इस कार्यशील जनसंख्या की उत्पादकता, स्वास्थ्य और कौशल स्तर पर निर्भर करता है, जिसे प्रभावी ढंग से उपयोग करना ही जनसांख्यिकीय लाभांश है।

54. (4) I, II और III
मजदूरी संहिता, 2019 भारत के श्रम सुधारों की दिशा में ऐतिहासिक कदम है। यह संहिता न्यूनतम मजदूरी और बोनस भुगतान सहित चार प्रमुख पुराने कानूनों को एक सरल ढांचे में समाहित करती है। यह सभी क्षेत्रों में न्यूनतम मजदूरी का विस्तार करती है और भर्ती के मामले में लिंग आधारित भेदभाव को स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित करती है। "राष्ट्रीय न्यूनतम मजदूरी"

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 10
सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण

1. भारत के संविधान का अनुच्छेद 15 राज्य को किसी भी नागरिक के विरुद्ध केवल इन आधारों पर भेदभाव करने से रोकता है:
(1) धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, वंश, या जन्म स्थान
(2) धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, या जन्म स्थान
(3) धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्म स्थान, या निवास
(4) धर्म, मूलवंश, जाति, भाषा, या जन्म स्थान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. भारत में आरक्षण नीति के कार्यान्वयन का प्राथमिक औचित्य निम्नलिखित में से क्या है?
(1) ऐतिहासिक कमियों को दूर करना और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए समानता सुनिश्चित करना
(2) सभी नागरिकों के बीच राष्ट्रीय धन का पुनर्वितरण करके पूर्ण आर्थिक समानता प्राप्त करना
(3) सभी विशिष्ट भाषाई समूहों में आनुपातिक राजनीतिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना
(4) एक ही विधायी आदेश के माध्यम से पारंपरिक जाति व्यवस्था को पूरी तरह से समाप्त करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. सूची I (संवैधानिक अनुच्छेद) को सूची II (अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति से संबंधित प्रावधान) के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें:
सूची I: (संवैधानिक अनुच्छेद)
A. अनुच्छेद 330
B. अनुच्छेद 332
C. अनुच्छेद 338
D. अनुच्छेद 338A
सूची II: (अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति से संबंधित प्रावधान)
i. राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग
ii. लोकसभा में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए सीटों का आरक्षण
iii. राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग
iv. राज्यों की विधानसभाओं में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए सीटों का आरक्षण
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. मंडल आयोग, जिसे आधिकारिक तौर पर दूसरे पिछड़ा वर्ग आयोग के रूप में जाना जाता है, की नियुक्ति बी.पी. मंडल की अध्यक्षता में किस वर्ष की गई थी?
(1) 1953
(2) 1989
(3) 1992
(4) 1979
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

5. आर्थिक रुप से कमजोर वर्ग (EWS) आरक्षण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसे 103वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा पेश किया गया था।
II. यह उच्च शिक्षा और सार्वजनिक रोजगार में अधिकतम 10 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करता है।
III. भारत के उच्चतम न्यायालय ने जनहित अभियान मामले में इसे असंवैधानिक घोषित किया था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) केवल I और II
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. निम्नलिखित में से कौन सी कल्याणकारी योजना मुख्य रुप से भारत में अनुसूचित जातियों के शैक्षिक सशक्तीकरण के लिए नहीं बनाई गई है?
(1) अनुसूचित जातियों के लिए पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना
(2) पीएम किसान सम्मान निधि
(3) अनुसूचित जाति के छात्रों के लिए राष्ट्रीय फेलोशिप
(4) श्रेयस (SHREYAS) योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. निम्नलिखित प्रश्न में, एक कथन (A) के बाद उसका कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प चुनें:
कथन (A): अनुसूचित क्षेत्रों वाले राज्य के राज्यपाल को ऐसे क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में राष्ट्रपति को रिपोर्ट प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
कारण (R): संघ की कार्यकारी शक्ति का विस्तार राज्यों को अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में निर्देश देने तक है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या

नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के तहत, निम्नलिखित में से किसे अत्याचार का अपराध माना जाता है?
(1) एक गैर-एससी/एसटी व्यक्ति द्वारा किसी एससी/एसटी सदस्य को कोई अखाद्य पदार्थ खाने के लिए मजबूर करना
(2) अनुसूचित जाति के दो सदस्यों के बीच विरासत में मिली संपत्ति के स्वामित्व को लेकर कानूनी विवाद
(3) एक सामान्य श्रेणी के नियोक्ता और अनुसूचित जाति के कर्मचारी के बीच होने वाला सामान्य नागरिक अनुबंध उल्लंघन
(4) दो अलग-अलग अनुसूचित जनजाति समुदायों के बीच शारीरिक मारपीट या पड़ोस का विवाद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. महिला सशक्तीकरण के संवैधानिक ढांचे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: संविधान का अनुच्छेद 39(d) राज्य को पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान कार्य के लिए समान वेतन सुनिश्चित करने का निर्देश देता है।
कथन II: मातृत्व लाभ अधिनियम केवल अनुच्छेद 51A में उल्लिखित मौलिक कर्तव्यों को पूरा करने के लिए अधिनियमित किया गया था।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (BBBP) योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह योजना 2015 में पानीपत, हरियाणा से शुरू की गई थी।
II. पूर्व-गर्भाधान और प्रसव-पूर्व निदान तकनीक (PC & PNDT) अधिनियम का प्रवर्तन इसका एक मुख्य घटक है।
III. इस योजना में व्यक्तिगत प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण का कोई प्रावधान नहीं है।
IV. यह योजना विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों पर केंद्रित है और शहरी केंद्रों को पूरी तरह से बाहर रखती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. निम्नलिखित में से कौन महिला शक्ति केंद्र (MSK) योजना के प्राथमिक उद्देश्य को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(1) ग्रामीण महिलाओं को भारी विनिर्माण उद्योग स्थापित करने के लिए सीधे कम ब्याज वाले सूक्ष्म ऋण प्रदान करना
(2) महिला कारीगरों के लिए प्रमुख शहरी केंद्रों के भीतर विशिष्ट भौतिक बाजार स्थान बनाना
(3) कॉर्पोरेट वातावरण में काम करने वाली सभी महिलाओं के लिए अनिवार्य आत्मरक्षा प्रशिक्षण मॉड्यूल लागू करना
(4) सामुदायिक भागीदारी और विभिन्न सरकारी योजनाओं तक पहुंच की सुविधा प्रदान करके ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के अनुसार सूची I (दिव्यांगता प्रकार) को सूची II (विशिष्ट स्थिति) के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें:
सूची I: (दिव्यांगता प्रकार)
A. चलन दिव्यांगता
B. दृष्टिबाधितता
C. बौद्धिक दिव्यांगता
D. दीर्घकालिक तंत्रिका संबंधी स्थितियां
सूची II: (विशिष्ट स्थिति)
i. अंधापन
ii. मल्टीपल स्केलेरोसिस
iii. विशिष्ट अधिगम दिव्यांगताएं
iv. कुष्ठ रोग मुक्त व्यक्ति
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. निम्नलिखित में से कौन सा पोर्टल या योजना अन्य से भिन्न है, क्योंकि यह मुख्य रूप से वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण से संबंधित नहीं है?
(1) सेक्रेड (SACRED) पोर्टल
(2) सेज (SAGE) पोर्टल
(3) पीएम-दक्ष (PM-DAKSH) योजना
(4) राष्ट्रीय वयःश्री योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. निम्नलिखित बाल कल्याण और पोषण कार्यक्रमों को उनके शुभारंभ के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. मध्याह्न भोजन योजना
II. एकीकृत बाल विकास सेवाएं (ICDS)
III. पोषण अभियान
IV. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

Downloaded from www.pdf.tube

(1) I, II, III, IV
(2) II, IV, I, III
(3) I, IV, II, III
(4) II, I, IV, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (PMUY) के प्राथमिक उद्देश्य का सबसे उपयुक्त वर्णन क्या है?
(1) एलपीजी कनेक्शन के माध्यम से स्वच्छ खाना पकाने का ईंधन प्रदान करके महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा करना
(2) गरीबी रेखा से नीचे के सभी घरों को मुफ्त बिजली कनेक्शन प्रदान करना
(3) सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों की महिलाओं को मासिक प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करना
(4) ग्रामीण और दूरदराज के आदिवासी क्षेत्रों में बिना किसी लागत के सौर कुकिंग स्टोव वितरित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. भारत में सामाजिक सुरक्षा से संबंधित निम्नलिखित योजनाओं और संगठनों पर विचार करें:
I. कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO)
II. कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC)
III. अटल पेंशन योजना (APY)
IV. प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन (PM-SYM)
V. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA)
इनमें से कौन सा संयोजन मुख्य रूप से असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को सीधे वृद्धावस्था पेंशन या सेवानिवृत्ति के बाद वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने वाली योजनाओं का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II और V
(2) III और IV
(3) I, III और IV
(4) II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. अल्पसंख्यक कल्याण योजनाओं और उनके लक्षित क्षेत्रों के संबंध में सही युग्म की पहचान करें:
(1) नई मंज़िल - सभी अल्पसंख्यक समुदायों की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण
(2) पढ़ो प्रदेश - विदेशी शिक्षा के लिए ऋण पर ब्याज सब्सिडी
(3) उस्ताद (USTTAD) - अल्पसंख्यक स्कूल छोड़ चुके बच्चों की औपचारिक शिक्षा और कौशल विकास
(4) नई रोशनी - विभिन्न प्रतियोगी सरकारी परीक्षाओं के लिए मुफ्त कोचिंग प्रदान करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. भारत में विमुक्त जनजातियां (DNT) विशेष रूप से उन समुदायों को संदर्भित करती हैं जो:
(1) 1871 के आपराधिक जनजाति अधिनियम के तहत "आपराधिक जनजातियों" के रूप में अधिसूचित थे
(2) संविधान की पांचवीं अनुसूची के तहत अनुसूचित जनजातियों के रूप में अधिसूचित थे
(3) मंडल आयोग की मूल सूची से बाहर रखे गए थे
(4) विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTG) की सूची से हटा दिए गए थे
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. निम्नलिखित में से कौन सा राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (NSAP) का घटक नहीं है?
(1) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना (IGNOAPS)
(2) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना (IGNWPS)
(3) प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY)
(4) राष्ट्रीय परिवार लाभ योजना (NFBS)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

20. आयुष्मान भारत - प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (AB-PMJAY) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह माध्यमिक और तृतीयक देखभाल अस्पताल में भर्ती के लिए प्रति परिवार प्रति वर्ष 5 लाख रुपये का स्वास्थ्य कवर प्रदान करता है।
(2) योजना के तहत परिवार के आकार, आयु या लिंग पर कोई सीमा नहीं है।
(3) लाभार्थी परिवारों की पहचान SECC 2011 के आंकड़ों के आधार पर की जाती है।
(4) इस योजना के लिए लाभार्थियों को स्वास्थ्य कवर बनाए रखने के लिए 1000 रुपये के वार्षिक प्रीमियम का भुगतान करना आवश्यक है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. संविधान के अनुच्छेद 16 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह राज्य के अधीन रोजगार से संबंधित मामलों में सभी नागरिकों के लिए अवसर की समानता की गारंटी देता है।
II. यह राज्य को नागरिकों के किसी भी पिछड़े वर्ग के पक्ष में नियुक्तियों के आरक्षण का प्रावधान करने की अनुमति देता है।
III. यह स्पष्ट रूप से कर्मचारियों की सभी श्रेणियों के लिए पदोन्नति में आरक्षण पर रोक लगाता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I
(2) केवल I और II
(3) केवल III
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना निम्नलिखित में से किन तीन केंद्रीय मंत्रालयों की एक सहयोगी पहल है?
(1) महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय
(2) महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय और पंचायती राज मंत्रालय
(3) गृह मंत्रालय, सामाजिक न्याय एवं सशक्तीकरण मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय
(4) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय और वित्त मंत्रालय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. महिला शक्ति केंद्र (MSK) योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसका उद्देश्य सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना है।
II. महिलाओं को सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने में मदद करने के लिए छात्र स्वयंसेवकों को प्रोत्साहित किया जाता है।
III. यह राष्ट्रीय, राज्य, जिला और ब्लॉक स्तर पर संचालित होती है।
IV. यह 115 आकांक्षी जिलों में ब्लॉक-स्तरीय पहलों को प्राथमिकता देती है।
V. इसे 2021 में पूरी तरह से पोषण अभियान द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II, IV और V
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. निम्नलिखित प्रश्न में, एक कथन (A) के बाद उसका कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प चुनें:
कथन (A): दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 बेंचमार्क दिव्यांगता वाले व्यक्तियों के लिए सरकारी नौकरियों में 4% आरक्षण का आदेश देता है।
कारण (R): भारत के संविधान के अनुच्छेद 16(4) के तहत विशेष रूप से दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आरक्षण कोटा का स्पष्ट उल्लेख है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह केवल जैविक बच्चों पर लागू होता है और दत्तक बच्चों को भरण-पोषण के दायित्वों से छूट देता है।
(2) यह उप-मंडलीय अधिकारी के पद से नीचे के अधिकारी की अध्यक्षता में भरण-पोषण न्यायाधिकरणों की स्थापना करता है।
(3) निःसंतान वरिष्ठ नागरिकों के पास इस अधिनियम के तहत किसी भी रिश्तेदार से भरण-पोषण का दावा करने के लिए कोई कानूनी सहारा नहीं है।
(4) भरण-पोषण न्यायाधिकरण के समक्ष कार्यवाही के लिए वकीलों द्वारा कानूनी प्रतिनिधित्व अनिवार्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) योजना के तहत प्रदान की जाने वाली सेवाओं में निम्नलिखित में से कौन सा एक अपवाद है?
(1) पूरक पोषण
(2) अनौपचारिक पूर्व-स्कूली शिक्षा
(3) औपचारिक प्राथमिक स्कूली शिक्षा (कक्षा 1 से 5)
(4) टीकाकरण और स्वास्थ्य जांच
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (PMUY) के तहत बीपीएल परिवारों की वयस्क महिलाओं की पहचान करने के लिए शुरु में किस डेटा स्रोत का उपयोग किया गया था?
(1) आधार पंजीकरण डेटाबेस
(2) राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय का 68वां दौर
(3) चुनाव आयोग की मतदाता सूची
(4) सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना (SECC) 2011
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. कर्मचारी भविष्य निधि और विविध प्रावधान अधिनियम, 1952 के तहत अंशदान के उद्देश्य से "मजदूरी" की परिभाषा क्या है?
(1) मूल मजदूरी, महंगाई भत्ता और प्रतिधारण भत्ता
(2) केवल मूल मजदूरी और वार्षिक प्रदर्शन बोनस
(3) केवल ओवरटाइम भत्ता और मकान किराया भत्ता
(4) सभी संभावित भत्तों और परिलब्धियों सहित कुल वेतन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री का नया 15 सूत्री कार्यक्रम मुख्य रूप से क्या सुनिश्चित करना चाहता है?
(1) अल्पसंख्यक संचालित सभी धार्मिक संस्थानों को पूर्ण प्रशासनिक स्वायत्तता प्रदान करना
(2) यह सुनिश्चित करना कि अल्पसंख्यकों को आर्थिक गतिविधियों, रोजगार और विकास योजनाओं में न्यायसंगत हिस्सा मिले
(3) पड़ोसी देशों से आने वाले सभी अल्पसंख्यक शरणार्थियों को बिना शर्त नागरिकता प्रदान करना
(4) अल्पसंख्यक समुदायों के सभी सदस्यों को किसी भी प्रकार के व्यक्तिगत आयकर से छूट देना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

29. निम्नलिखित में से कौन सा संवैधानिक प्रावधान विशेष रूप से महिलाओं के कल्याण और सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नहीं है?
(1) अनुच्छेद 15(3)
(2) अनुच्छेद 39(a)
(3) अनुच्छेद 330
(4) अनुच्छेद 42
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. निम्नलिखित प्रश्न में, एक कथन (A) के बाद उसका कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प चुनें:
कथन (A): बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना पूर्व-गर्भाधान और प्रसव-पूर्व निदान तकनीक (PC & PNDT) अधिनियम को लागू करने पर बल देती है।
कारण (R): योजना का प्राथमिक उद्देश्य गिरते बाल लिंगानुपात को सुधारना और बालिकाओं का अस्तित्व सुनिश्चित करना है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. महिला शक्ति केंद्र योजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह विभिन्न महिला योजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए पिछड़े जिलों में छात्र स्वयंसेवकों का उपयोग करती है।
(2) यह शहरी क्षेत्रों में रहने वाली कामकाजी महिलाओं को सीधे मासिक नकद लाभ प्रदान करती है।
(3) यह पूरी तरह से राष्ट्रीय स्तर पर संचालित होती है और इसमें कोई राज्य, जिला या ब्लॉक हस्तक्षेप शामिल नहीं है।
(4) यह घरेलू हिंसा से महिलाओं के संरक्षण अधिनियम, 2005 के तहत स्थापित एक वैधानिक निकाय है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. निम्नलिखित में से कौन सी स्थिति अन्य से भिन्न है, क्योंकि इसे पहली बार दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के तहत दिव्यांगता के रूप में मान्यता दी गई थी?
(1) अंधापन
(2) तेजाब हमला पीड़ित
(3) श्रवण बाधितता
(4) चलन दिव्यांगता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. मध्याह्न भोजन योजना (अब पीएम पोषण) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसका उद्देश्य सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में कक्षा I-VIII के बच्चों की पोषण स्थिति में सुधार करना है।
II. यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है।
III. यह किसान उत्पादक संगठनों (FPO) और महिला स्वयं सहायता समूहों की भागीदारी को प्रोत्साहित करती है।
IV. यह निर्धारित पोषण मानकों के साथ गर्म पका हुआ भोजन प्रदान करती है।
V. यह नए दिशा-निर्देशों के तहत अपने कवरेज से पूर्व-प्राथमिक या बालवाटिका के छात्रों को पूरी तरह से बाहर रखती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और V
(3) केवल V
(4) केवल IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. सूची I (ICDS के घटक) को सूची II (लक्षित समूह) के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें:
सूची I: (ICDS के घटक)
A. पूरक पोषण
B. अनौपचारिक पूर्व-स्कूली शिक्षा
C. टीकाकरण
D. पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा
सूची II: (लक्षित समूह)
i. 15-45 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाएं
ii. 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चे, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताएं
iii. 3-6 वर्ष के बच्चे
iv. शिशु और गर्भवती महिलाएं
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (PMUY) के तहत, प्रत्येक एलपीजी कनेक्शन के लिए भारत सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सहायता है:
(1) 1000 रुपये
(2) 1600 रुपये
(3) 2500 रुपये
(4) 3200 रुपये
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. सामाजिक सुरक्षा पहलों और उनके लक्षित लाभार्थियों के संबंध में गलत युग्म की पहचान करें:
(1) अटल पेंशन योजना - असंगठित क्षेत्र के श्रमिक
(2) पीएम श्रम योगी मान-धन - बड़े स्तर के कॉर्पोरेट नियोक्ता
(3) कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC) - कारखानों और कवर किए गए प्रतिष्ठानों के कर्मचारी

Downloaded from www.pdf.tube

65. निम्नलिखित प्रश्न में, एक कथन (A) के बाद उसका कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प चुनें:
कथन (A): 103वें संविधान संशोधन अधिनियम ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (EWS) के लिए आरक्षण प्रदान करने के लिए अनुच्छेद 15(6) और अनुच्छेद 16(6) को जोड़ा।
कारण (R): इस संशोधन से पहले, संविधान में केवल आर्थिक पिछड़ेपन के आधार पर आरक्षण प्रदान करने का कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग (NCSC) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह विशुद्ध रूप से एक वैधानिक निकाय है जिसे नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955 के तहत स्थापित किया गया था।
(2) अनुसूचित जातियों के लिए सुरक्षा उपायों से संबंधित मामलों की जांच करते समय इसके पास दीवानी न्यायालय की शक्तियां होती हैं।
(3) अध्यक्ष और अन्य सभी सदस्यों की नियुक्ति सीधे भारत के राष्ट्रपति कार्यालय द्वारा की जाती है।
(4) 89वें संशोधन के बाद भी यह अनुसूचित जनजातियों पर पूर्ण अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करना जारी रखता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. पांचवीं अनुसूची असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम के अलावा अन्य राज्यों के जनजातीय क्षेत्रों से संबंधित है।
II. छठी अनुसूची स्वायत्त जिला परिषदों के निर्माण का प्रावधान करती है।
III. पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम, 1996 (PESA) संविधान के भाग IX को पांचवीं अनुसूची क्षेत्रों तक विस्तारित करता है।
IV. PESA के तहत ग्राम सभाओं को अनुसूचित क्षेत्रों में भूमि के हस्तांतरण को रोकने की शक्ति दी गई है।
V. राज्यपाल के पास पांचवीं अनुसूची क्षेत्र पर लागू संसद के किसी भी अधिनियम को निरस्त करने या संशोधित करने की शक्ति है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II, III और IV
(2) III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

68. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम की धारा 14 के तहत, राज्य सरकार को प्रत्येक जिले के लिए एक विशेष न्यायालय के रूप में सत्र न्यायालय निर्दिष्ट करना आवश्यक है। इस प्रावधान का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) अधिनियम के तहत अपराधों की त्वरित सुनवाई सुनिश्चित करना
(2) न्यायालय से बाहर समझौतों के लिए एक मंच प्रदान करना
(3) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समुदायों के नागरिक संपत्ति विवादों को संभालना
(4) उच्च न्यायालय के ऊपर एक अपीलीय प्राधिकारी के रूप में कार्य करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. निम्नलिखित में से कौन सा संवैधानिक प्रावधान अन्य से भिन्न है, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से महिलाओं के सशक्तीकरण, कल्याण या अधिकारों से संबंधित नहीं है?
(1) अनुच्छेद 15(3)
(2) अनुच्छेद 39(a)
(3) अनुच्छेद 280
(4) अनुच्छेद 42
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (BBBP) अभियान के प्रारंभिक चरण के लिए जिलों के चयन हेतु प्राथमिक मानदंड क्या था?
(1) जनगणना 2011 के अनुसार सबसे कम बाल लिंगानुपात वाले जिले
(2) उच्चतम महिला साक्षरता दर वाले जिले
(3) उच्चतम मातृ मृत्यु दर वाले जिले
(4) अल्पसंख्यक आबादी की उच्चतम सांद्रता वाले जिले
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. महिला शक्ति केंद्र योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: इसे 'महिलाओं के संरक्षण और सशक्तीकरण मिशन' नामक व्यापक योजना के तहत एक उप-योजना के रूप में अनुमोदित किया गया था।
कथन II: यह योजना जागरूकता पैदा करने के लिए ब्लॉक स्तर पर कॉलेज के छात्र स्वयंसेवकों को तैनात करने की कल्पना करती है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसने मान्यता प्राप्त दिव्यांगताओं की संख्या 7 से बढ़ाकर

संसद द्वारा अधिनियमित कानून की आवश्यकता होती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) I, II और III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. 1990 में वी.पी. सिंह सरकार द्वारा मंडल आयोग की सिफारिशों के कार्यान्वयन के कारण सीधे तौर पर उच्चतम न्यायालय का निम्नलिखित में से कौन सा ऐतिहासिक मामला सामने आया?

(1) केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य
(2) मिनर्वा मिल्स बनाम भारत संघ
(3) आई.आर. कोएल्हो बनाम तमिलनाडु राज्य
(4) इंदिरा साहनी बनाम भारत संघ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. 103वें संविधान संशोधन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

कथन I: यह राज्य को एससी, एसटी और गैर-क्रीमी लेयर ओबीसी के अलावा नागरिकों के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (EWS) के लिए विशेष प्रावधान करने का अधिकार देता है।

कथन II: इस संशोधन के तहत निजी गैर-सहायता प्राप्त अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थानों को EWS छात्रों के लिए 10% कोटा अनिवार्य करना आवश्यक है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. अनुसूचित जातियों से संबंधित निम्नलिखित वैधानिक और संवैधानिक विकासों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

I. नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम का अधिनियमन
II. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम का अधिनियमन
III. एक अलग राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग (अनुच्छेद 338) बनाने के लिए राष्ट्रीय आयोग का द्विभाजन
IV. हाथ से मैला ढोने वाले कर्मियों के नियोजन का निषेध और उनका पुनर्वास अधिनियम

(1) II, I, IV, III
(2) I, II, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) III, I, II, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. पांचवीं अनुसूची के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. यह असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम के अलावा किसी भी राज्य में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन और नियंत्रण पर लागू होती है।
II. राष्ट्रपति के पास किसी भी क्षेत्र को अनुसूचित क्षेत्र घोषित करने की शक्ति है।
III. राज्यपाल को प्रतिवर्ष या जब भी आवश्यक हो, अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में राष्ट्रपति को एक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी चाहिए।
IV. अनुसूचित क्षेत्रों वाले प्रत्येक राज्य में जनजाति सलाहकार परिषदें स्थापित की जानी चाहिए।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?

(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) यह अधिनियम अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समुदायों से संबंधित व्यक्तियों द्वारा सामान्य श्रेणी के सदस्यों के विरुद्ध किए गए अपराधों पर लागू होता है।
(2) यह अधिनियम इसके तहत अपराधों की त्वरित सुनवाई के लिए विशेष न्यायालयों की स्थापना करता है।
(3) इस अधिनियम के तहत किए गए अपराधों के लिए दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 438 के तहत अग्रिम जमानत सामान्यतः उपलब्ध नहीं है।
(4) यह अधिनियम अत्याचार के पीड़ितों के आर्थिक और सामाजिक पुनर्वास का प्रावधान करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. सूची I (महिलाओं से संबंधित कानून) को सूची II (अधिनियमन का वर्ष) के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें:

सूची I: (महिलाओं से संबंधित कानून)

A. दहेज निषेध अधिनियम
B. घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम
C. कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम
D. बाल विवाह निषेध अधिनियम

सूची II: (अधिनियमन का वर्ष)

i. 2005
ii. 2006
iii. 2013
iv. 1961

(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

(4) पीएम किसान मान-धन योजना - छोटे और सीमांत किसान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन अनुच्छेद 30 के तहत अल्पसंख्यक कल्याण के संवैधानिक आधार को सही ढंग से परिभाषित करता है?
(1) यह विशेष रुप से मान्यता प्राप्त धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए सभी सार्वजनिक रोजगार क्षेत्रों में विशिष्ट आरक्षण प्रदान करता है।
(2) यह राज्य को आर्थिक मानदंडों के आधार पर कुछ समुदायों को अल्पसंख्यकों के रूप में पहचानने का आदेश देता है।
(3) यह सभी धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए अलग और समर्पित चुनावी क्षेत्रों का प्रावधान करता है।
(4) यह धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों को अपनी पसंद के शिक्षण संस्थान स्थापित करने और उनका प्रशासन करने की अनुमति देता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. सरकार ने विमुक्त जनजातियों के आर्थिक सशक्तीकरण के लिए योजना (SEED) स्थापित की। इस योजना का एक प्रमुख उद्देश्य इस तथ्य को संबोधित करना है कि विमुक्त जनजातियां:
(1) अक्सर उनके पास स्थायी पते और औपचारिक दस्तावेजों की कमी होती है, जिससे कल्याणकारी योजनाओं तक पहुंचना कठिन हो जाता है।
(2) वे पूरी तरह से अनुसूचित जनजातियों की सूची में एकीकृत हैं और पहले से ही सभी लाभ प्राप्त कर रही हैं।
(3) वे ग्रामीण भारत में कृषि भूमि मालिकों के एक बहुत समृद्ध वर्ग का गठन करते हैं।
(4) उन्हें किसी भी प्रकार के सार्वजनिक कल्याणकारी लाभ प्राप्त करने से कानूनी रुप से प्रतिबंधित किया गया है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (NSAP) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह ग्रामीण विकास मंत्रालय के तहत एक केंद्र प्रायोजित योजना है।
(2) यह संविधान के अनुच्छेद 41 में उल्लिखित राज्य के नीति निदेशक तत्वों को पूरा करता है।
(3) NSAP का पूरा वित्तीय बोझ संबंधित राज्य सरकारों द्वारा वहन किया जाता है।
(4) यह गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों के बुजुर्गों, विधवाओं और दिव्यांग व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. आयुष्मान भारत - PMJAY योजना के तहत उपचार, अस्पताल में रहने और अस्पताल से छुट्टी के बाद के खर्चों को कवर किया जाता है। निम्नलिखित में से कौन अस्पताल में भर्ती होने से पहले और बाद के कवरेज के दिनों की सही संख्या दर्शाता है?
(1) अस्पताल में भर्ती होने से 1 दिन पहले और छुट्टी के 5 दिन बाद तक
(2) अस्पताल में भर्ती होने से 3 दिन पहले और छुट्टी के 15 दिन बाद तक
(3) अस्पताल में भर्ती होने से 5 दिन पहले और छुट्टी के 20 दिन बाद तक
(4) अस्पताल में भर्ती होने से 7 दिन पहले और छुट्टी के 30 दिन बाद तक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. सूची I (संवैधानिक अनुच्छेद) को सूची II (सामाजिक न्याय से संबंधित विषयवस्तु) के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें:
सूची I: (संवैधानिक अनुच्छेद)
A. अनुच्छेद 14
B. अनुच्छेद 15
C. अनुच्छेद 16
D. अनुच्छेद 17
सूची II: (सामाजिक न्याय से संबंधित विषयवस्तु)
i. सार्वजनिक रोजगार में अवसर की समानता
ii. अस्पृश्यता का अंत
iii. विधि के समक्ष समानता
iv. कुछ आधारों पर भेदभाव का निषेध
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. निम्नलिखित में से कौन सी समिति/आयोग अन्य से भिन्न है, क्योंकि यह मुख्य रुप से पिछड़े वर्गों/ओबीसी के निर्धारण या कल्याण से संबंधित नहीं है?
(1) काका कालेलकर आयोग
(2) सरकारिया आयोग
(3) बी.पी. मंडल आयोग
(4) न्यायमूर्ति रोहिणी आयोग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए संवैधानिक प्रावधानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. अनुच्छेद 335 आदेश देता है कि अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के दावों को प्रशासन की दक्षता बनाए रखने के साथ संगति में ध्यान में रखा जाएगा।
II. अनुच्छेद 341 राष्ट्रपति को उन जातियों, मूलवंशों या जनजातियों को निर्दिष्ट करने का अधिकार देता है जिन्हें अनुसूचित जाति माना जाएगा।
III. प्रख्यापित होने के बाद अनुसूचित जातियों की सूची में किसी भी जाति को शामिल करने या बाहर करने के लिए

NODIA

58. आधुनिक भारत में विमुक्त जनजातियों (DNT) के अत्यधिक हाशिए पर होने का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?

(1) औपनिवेशिक युग के आपराधिक जनजाति अधिनियम का ऐतिहासिक कलंक, जिसने उन्हें जन्मजात अपराधी करार दिया था
(2) राष्ट्र की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लेने से उनका सामूहिक और स्वैच्छिक इनकार
(3) औपचारिक या आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने के विरुद्ध उनके सख्त पारंपरिक धार्मिक निषेध
(4) एक संवैधानिक प्रतिबंध का अस्तित्व जो सरकार को उन्हें आरक्षण प्रदान करने से रोकता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. NSAP के घटकों के संबंध में सही युग्म की पहचान करें:

(1) IGNOAPS - गरीबी रेखा से काफी नीचे रहने वाले 40 वर्ष से अधिक आयु के सभी नागरिकों के लिए मासिक पेंशन
(2) IGNWPS - बीपीएल परिवारों की 18 से 39 वर्ष की आयु की विधवाओं के लिए मासिक पेंशन
(3) IGNDPS - बीपीएल परिवारों के 18 से 79 वर्ष की आयु के गंभीर दिव्यांगता वाले व्यक्तियों के लिए पेंशन
(4) NFBS - गरीबी रेखा से नीचे के सभी परिवारों को निरंतर मासिक पेंशन प्रदान करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. पूरे भारत में आयुष्मान भारत PM-JAY योजना को लागू करने का एक महत्वपूर्ण इच्छित प्रभाव क्या है?

(1) पूरे देश में सभी सार्वजनिक जिला अस्पतालों का पूर्ण निजीकरण
(2) पांच साल की अवधि के भीतर सभी संक्रामक रोगों का पूर्ण उन्मूलन
(3) सभी निजी चिकित्सकों की सरकारी सेवा में अनिवार्य भर्ती
(4) गरीब और कमजोर परिवारों के लिए स्वास्थ्य पर होने वाले भारी जेब खर्च को कम करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. निम्नलिखित में से कौन भारत के संविधान में सामाजिक न्याय से संबंधित मौलिक अधिकारों के अनुच्छेदों के सही क्रम को दर्शाता है?

(1) विधि के समक्ष समानता → भेदभाव का निषेध → सार्वजनिक रोजगार में अवसर की समानता → अस्पृश्यता का अंत
(2) भेदभाव का निषेध → विधि के समक्ष समानता → अस्पृश्यता का अंत → सार्वजनिक रोजगार में अवसर की समानता
(3) विधि के समक्ष समानता → सार्वजनिक रोजगार में अवसर की समानता → भेदभाव का निषेध → अस्पृश्यता का अंत
(4) सार्वजनिक रोजगार में अवसर की समानता → भेदभाव का निषेध → विधि के समक्ष समानता → अस्पृश्यता का अंत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. भारत में आरक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. 1932 के सांप्रदायिक पंचाट ने दलित वर्गों के लिए अलग निर्वाचक मंडल प्रदान किया।
II. 1932 के पूना पैक्ट ने अलग निर्वाचक मंडल को सामान्य हिंदू निर्वाचक मंडल के भीतर दलित वर्गों के लिए आरक्षित सीटों से बदल दिया।
III. भारत के संविधान में मूल रूप से अनुच्छेद 16 के तहत अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए पदोन्नति में आरक्षण का प्रावधान था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल II और III
(2) केवल I और II
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. राज्य के नीति निदेशक तत्वों का अनुच्छेद 46 राज्य को किसके शैक्षिक और आर्थिक हितों को विशेष सावधानी से बढ़ावा देने का निर्देश देता है?

(1) विशेष रूप से समाज के सभी वर्गों की महिलाओं और बच्चों का कल्याण
(2) पूरे भारत में धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों के हितों का संरक्षण
(3) जनता के कमजोर वर्ग, विशेष रूप से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति
(4) सभी वरिष्ठ नागरिकों और शारीरिक रूप से दिव्यांग व्यक्तियों के शैक्षिक हित
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. सूची I (ओबीसी से संबंधित आयोग/मामला) को सूची II (प्रमुख संबद्धता) के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें:

सूची I: (ओबीसी से संबंधित आयोग/मामला)

A. प्रथम पिछड़ा वर्ग आयोग
B. द्वितीय पिछड़ा वर्ग आयोग
C. इंदिरा साहनी मामला
D. 102वां संविधान संशोधन

सूची II: (प्रमुख संबद्धता)

i. NCBC को संवैधानिक दर्जा
ii. बी.पी. मंडल
iii. काका कालेलकर
iv. आरक्षण पर 50% की सीमा

(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

22. आरक्षण नीति के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

कथन I: 1932 के पूना पैक्ट के परिणामस्वरुप दलित वर्गों के लिए अलग निर्वाचक मंडल को त्याग दिया गया और सामान्य हिंदू निर्वाचक मंडल के भीतर आरक्षित सीटों को अपनाया गया।

कथन II: डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने 1932 के सांप्रदायिक पंचाट का कड़ा विरोध किया क्योंकि इसमें दलित वर्गों को प्रतिनिधित्व देने से इनकार किया गया था।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. भारत के संविधान के तहत "अनुसूचित जाति" की सबसे उपयुक्त परिभाषा क्या है?

(1) ऐसी जातियों का समूह जो सामाजिक और आर्थिक रुप से उन्नत हैं लेकिन शैक्षिक रुप से पिछड़े माने जाते हैं
(2) राज्य विधानमंडल द्वारा विधानसभा में साधारण बहुमत से पहचानी गई और अधिसूचित कोई भी जाति
(3) पांचवीं अनुसूची के तहत शासित निर्दिष्ट अनुसूचित क्षेत्रों में रहने वाली विशिष्ट जातियां
(4) वे समूह, जातियां या जनजातियां जिन्हें अनुच्छेद 341 के प्रावधानों के तहत अनुसूचित जाति माना जाता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. भारत में ओबीसी आरक्षण से संबंधित घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम निम्नलिखित में से कौन सा है?

(1) काका कालेलकर आयोग → मंडल आयोग → इंदिरा साहनी निर्णय → 102वां संविधान संशोधन
(2) मंडल आयोग → काका कालेलकर आयोग → 102वां संविधान संशोधन → इंदिरा साहनी निर्णय
(3) काका कालेलकर आयोग → इंदिरा साहनी निर्णय → मंडल आयोग → 102वां संविधान संशोधन
(4) मंडल आयोग → इंदिरा साहनी निर्णय → काका कालेलकर आयोग → 102वां संविधान संशोधन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. 103वें संविधान संशोधन अधिनियम, जिसने EWS आरक्षण की शुरुआत की, ने संविधान के निम्नलिखित में से किस अनुच्छेद के युग्म में संशोधन किया?

(1) अनुच्छेद 14 और 15
(2) अनुच्छेद 16 और 17
(3) अनुच्छेद 15 और 16
(4) अनुच्छेद 15 और 19
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. सूची I (अनुसूचित जाति कल्याण योजना/पहल) को सूची II (उद्देश्य) के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें:

सूची I: (अनुसूचित जाति कल्याण योजना/पहल)

A. पीएम-दक्ष (PM-DAKSH)
B. स्टैंड-अप इंडिया
C. अनुसूचित जातियों के लिए जोखिम पूंजी कोष
D. बाबू जगजीवन राम छात्रावास योजना

सूची II: (उद्देश्य)

i. उद्यमिता और नवाचार के लिए रियायती वित्त
ii. छात्रों के लिए छात्रावासों का निर्माण
iii. उच्च गुणवत्ता वाला कौशल विकास प्रशिक्षण
iv. ग्रीनफील्ड उद्यमों के लिए 10 लाख से 1 करोड़ रुपये के बीच बैंक ऋण

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. पांचवीं अनुसूची के तहत किसी क्षेत्र को अनुसूचित क्षेत्र घोषित करने से मुख्य रुप से निम्नलिखित में से क्या प्रभाव पड़ता है?

(1) संबंधित राज्य के सामान्य शासन से क्षेत्र का पूर्ण प्रशासनिक अलगाव
(2) सभी प्रकार के राष्ट्रीय करों के भुगतान से निर्दिष्ट क्षेत्र की स्थायी छूट
(3) सभी नागरिक कानून और व्यवस्था की जिम्मेदारियों का सीधे केंद्रीय सैन्य कमान को हस्तांतरण
(4) अनुसूचित जनजातियों के कल्याण और उन्नति पर सलाह देने के लिए राज्य में एक जनजाति सलाहकार परिषद की स्थापना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) संशोधन अधिनियम, 2018 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. इसने मूल अधिनियम में धारा 18A को जोड़ा।
II. यह आदेश देता है कि किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने के लिए प्रारंभिक जांच की आवश्यकता नहीं होगी।
III. इसमें कहा गया है कि जांच अधिकारी को आरोपी की गिरफ्तारी के लिए पूर्व अनुमति की आवश्यकता होती है।
IV. यह उस प्रावधान को बहाल करता है जो अधिनियम के तहत आरोपी को अग्रिम जमानत के लाभ से वंचित करता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?

(1) I, II और IV
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

21 कर दी।
II. इसने सरकारी नौकरियों में बेंचमार्क दिव्यांगता वाले व्यक्तियों के लिए आरक्षण 3% से बढ़ाकर 4% कर दी।
III. इसने बेंचमार्क दिव्यांगता की अवधारणा को निर्दिष्ट दिव्यांगता के कम से कम 40% के रूप में पेश किया।
IV. यह तेजाब हमला पीड़ितों और पार्किंसंस रोग वाले व्यक्तियों को दिव्यांगताओं की सूची से बाहर रखता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. सूची I (वरिष्ठ नागरिकों के लिए पहल) को सूची II (उद्देश्य) के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें:
सूची I: (वरिष्ठ नागरिकों के लिए पहल)
A. राष्ट्रीय वयःश्री योजना
B. वयो नमन कार्यक्रम
C. सेक्रेड (SACRED) पोर्टल
D. सेज (SAGE) पोर्टल

सूची II: (उद्देश्य)
i. वरिष्ठ नागरिकों के लिए रोजगार के अवसर
ii. बुजुर्गों की देखभाल के उत्पाद और सेवाएं प्रदान करने वाले स्टार्ट-अप
iii. बीपीएल वरिष्ठ नागरिकों के लिए भौतिक सहायता और सहायक उपकरण प्रदान करना
iv. अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानित करना

(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. पोषण अभियान के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह ठिगनेपन, अल्पपोषण, एनीमिया और जन्म के समय कम वजन को कम करने का लक्ष्य रखता है।
(2) यह रीयल-टाइम निगरानी के लिए 'पोषण ट्रैकर' जैसे आईसीटी-आधारित उपकरणों का उपयोग करता है।
(3) यह व्यवहार परिवर्तन के लिए "जन आंदोलन" या सामुदायिक लामबंदी को बढ़ावा देता है।
(4) यह सभी मौजूदा उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति योजनाओं को एक डिजिटल प्लेटफॉर्म के तहत विलय करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. निम्नलिखित में से कौन सा प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना से जुड़ा एक मुख्य कार्यान्वयन चुनौती है?
(1) यह योजना सभी पात्र लाभार्थियों को खाद्य सब्सिडी प्राप्त करने से रोकती है।
(2) शुरुआती मुफ्त कनेक्शन के बाद एलपीजी सिलेंडर के लिए उच्च रीफिलिंग लागत।
(3) यह योजना आदेश देती है कि लाभार्थियों को अपने आधार कार्ड स्थायी रूप से सरेंडर करने होंगे।
(4) यह योजना एलपीजी कनेक्शन के स्वामित्व को परिवार के पुरुष मुखिया तक सीमित रखती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों के संबंध में सही युग्म की पहचान करें:
(1) मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961 - केवल असंगठित कृषि क्षेत्र की महिलाओं पर लागू
(2) अटल पेंशन योजना - उच्च आय वाले कॉर्पोरेट अधिकारियों के लिए नियोक्ता-वित्त पोषित पेंशन
(3) उपदान भुगतान अधिनियम, 1972 - सेवानिवृत्ति, त्यागपत्र या मृत्यु पर कर्मचारियों को एकमुश्त भुगतान प्रदान करता है
(4) ESIC योजना - सभी ग्रामीण नागरिकों के लिए 1 करोड़ रुपये तक का जीवन बीमा कवर प्रदान करती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. कौन सा संवैधानिक अनुच्छेद यह सुनिश्चित करता है कि किसी भी नागरिक को धर्म, मूलवंश, जाति, भाषा के आधार पर राज्य निधि से सहायता प्राप्त किसी भी शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश से वंचित नहीं किया जाएगा?
(1) अनुच्छेद 30(1)
(2) अनुच्छेद 25(1)
(3) अनुच्छेद 16(4)
(4) अनुच्छेद 29(2)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. कल्याणकारी बोर्डों के संदर्भ में, "अर्ध-घुमंतू जनजाति" शब्द आमतौर पर क्या परिभाषित करता है?
(1) वे समुदाय जो समय-समय पर स्थानांतरित होते हैं लेकिन वर्ष के एक निश्चित भाग के लिए उनका एक निश्चित निवास स्थान होता है
(2) वे जनजातियां जो स्थायी रूप से बड़े शहरी क्षेत्रों में बस गई हैं और कृषि प्रथाओं को छोड़ दिया है
(3) वे समूह जो लगातार चलते रहते हैं और कभी भी एक दिन से अधिक किसी एक स्थान पर नहीं रहते हैं
(4) जनजातीय आबादी जो बेहतर रोजगार की तलाश में अक्सर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पलायन करती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना (IGNWPS) का सबसे उपयुक्त वर्णन क्या है?
(1) यह विधवाओं को व्यवसाय शुरू करने के लिए 50,000 रुपये का एकमुश्त अनुदान प्रदान करती है।
(2) यह बीपीएल परिवारों की 40 वर्ष और उससे अधिक आयु की विधवाओं को मासिक पेंशन प्रदान करती है।
(3) यह किसी भी मृतक सरकारी कर्मचारी की विधवा को

Click Here to Buy book on Amazon

II. भरण-पोषण के दावों पर निर्णय लेने के लिए अधिनियम के तहत एक भरण-पोषण न्यायाधिकरण का गठन किया जाता है।
III. न्यायाधिकरण द्वारा आदेशित अधिकतम भरण-पोषण भत्ता 5,000 रुपये प्रति माह से अधिक नहीं हो सकता है।
IV. निःसंतान वरिष्ठ नागरिक उन रिश्तेदारों से भरण-पोषण का दावा कर सकते हैं जिन्हें उनकी संपत्ति विरासत में मिलेगी।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, III और IV
(2) II, III और IV
(3) I, II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) योजना मुख्य रूप से जमीनी स्तर के केंद्रों के एक नेटवर्क के माध्यम से संचालित होती है, जिन्हें कहा जाता है:
(1) आंगनवाड़ी केंद्र (AWC)
(2) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC)
(3) बाल भवन
(4) कृषि विज्ञान केंद्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

95. निम्नलिखित में से कौन सा समूह अन्य से भिन्न है, क्योंकि यह PM उज्ज्वला योजना के घोषित उद्देश्यों से संबंधित नहीं है?
(1) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के परिवार
(2) PM किसान ट्रैक्टर सब्सिडी के लाभार्थी
(3) PMAY (ग्रामीण) के लाभार्थी
(4) अंत्योदय अन्न योजना (AAY) के लाभार्थी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

96. अटल पेंशन योजना (APY) के तहत 60 वर्ष की आयु तक पहुंचने पर ग्राहक के लिए गारंटीकृत लाभ क्या है?
(1) 1,000 रुपये से 5,000 रुपये तक की गारंटीकृत न्यूनतम मासिक पेंशन
(2) सेवानिवृत्ति की आयु तक पहुंचने पर प्रदान किया जाने वाला 10 लाख रुपये का एकमुश्त भुगतान
(3) मृतक ग्राहक के नामित व्यक्ति के लिए तत्काल सरकारी नौकरी
(4) पूरे देश में किसी भी पंजीकृत निजी अस्पताल में जीवन भर मुफ्त चिकित्सा उपचार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. भारत में अल्पसंख्यकों के लिए संवैधानिक प्रावधानों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) अनुच्छेद 29 अल्पसंख्यकों को उनकी विशिष्ट भाषा, लिपि या संस्कृति को संरक्षित करने की अनुमति देता है।
(2) अनुच्छेद 30 सभी अल्पसंख्यकों को शिक्षण संस्थान स्थापित करने और उनका प्रशासन करने का अधिकार देता है।
(3) 'अल्पसंख्यक' शब्द को संविधान में स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है।
(4) संविधान स्पष्ट रूप से उन मानदंडों और जनसंख्या प्रतिशत को परिभाषित करता है जो अल्पसंख्यक के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

98. विमुक्त, घुमंतू और अर्ध-घुमंतू जनजातियों (DNT) के कल्याणकारी उपायों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: विमुक्त, घुमंतू और अर्ध-घुमंतू जनजातियों के लिए राष्ट्रीय आयोग (NCDNT) का गठन भीकू रामजी इदाते की अध्यक्षता में किया गया था।
कथन II: इन समुदायों के लिए कार्यक्रमों को लागू करने के लिए विमुक्त, घुमंतू और अर्ध-घुमंतू जनजातियों के लिए एक विकास और कल्याण बोर्ड स्थापित किया गया है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

99. राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (NSAP) के तहत, राष्ट्रीय परिवार लाभ योजना (NFBS) के लक्षित समूह की परिभाषा क्या है?
(1) वे परिवार जिन्होंने सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एजेंसी के तहत किसी बालिका को गोद लिया है
(2) 18-59 वर्ष की आयु के प्राथमिक कमाने वाले सदस्य की मृत्यु के मामले में बीपीएल परिवार
(3) वे परिवार जिनके तीन से अधिक बच्चे हैं जो वर्तमान में सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में पढ़ रहे हैं
(4) बीपीएल परिवार जहां सभी जीवित सदस्य 60 वर्ष से अधिक आयु के हैं और उनकी कोई आय नहीं है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. आयुष्मान भारत - PMJAY की वित्तपोषण संरचना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है जो पूरी तरह से भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित है।
(2) निजी बीमा कंपनियों को किसी भी राज्य में योजना के कार्यान्वयन में भाग लेने से प्रतिबंधित किया गया है।
(3) अधिकांश राज्यों के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के बीच वित्त पोषण 60:40 के अनुपात में साझा किया जाता है।
(4) लाभार्थियों को सभी सर्जिकल प्रक्रियाओं के लिए 10% सह-भुगतान करना होगा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

कर्मचारियों के स्वरोजगार के लिए रियायती ऋण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

87. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के आरक्षण से संबंधित निम्नलिखित संविधान संशोधनों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. 65वां संशोधन अधिनियम (SC/ST के लिए राष्ट्रीय आयोग)
II. 89वां संशोधन अधिनियम (आयोग का NCSC और NCST में विभाजन)
III. 82वां संशोधन अधिनियम (पदोन्नति में SC/ST के लिए अर्हक अंकों में छूट)
IV. 104वां संशोधन अधिनियम (लोकसभा और विधानसभाओं में सीटों के आरक्षण का विस्तार)
(1) I, II, III, IV
(2) III, I, II, IV
(3) I, III, II, IV
(4) II, I, IV, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. सूची I (अत्याचार निवारण अधिनियम, 1989 की धारा) को सूची II (प्रावधान) के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें:
सूची I: (अत्याचार निवारण अधिनियम, 1989 की धारा)
A. धारा 3
B. धारा 14
C. धारा 15A
D. धारा 21
सूची II: (प्रावधान)
i. विशेष न्यायालय और अनन्य विशेष न्यायालय
ii. अत्याचार के अपराधों के लिए दंड
iii. अधिनियम का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करना सरकार का कर्तव्य
iv. पीड़ितों और गवाहों के अधिकार
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. निम्नलिखित प्रश्न में, एक कथन (A) के बाद उसका कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प चुनें:
कथन (A): संविधान का अनुच्छेद 15(3) राज्य को महिलाओं और बच्चों के लिए विशेष प्रावधान करने की अनुमति देता है।
कारण (R): यह प्रावधान अनुच्छेद 15(1) में निर्धारित गैर-भेदभाव के सामान्य नियम के लिए एक सक्षम खंड और अपवाद के रूप में कार्य करता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

90. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (BBBP) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और शिक्षा मंत्रालयों की एक त्रि-मंत्रालयी पहल है।
II. यह प्राथमिक शिक्षा पूरी करने पर लड़कियों के व्यक्तिगत बैंक खातों में सीधे नकद हस्तांतरण प्रदान करती है।
III. यह मुख्य रूप से गंभीर रूप से गिरते बाल लिंगानुपात वाले जिलों को लक्षित करती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और III
(2) केवल I और II
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. महिला शक्ति केंद्र (MSK) योजना द्वारा सरकारी पहलों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए ब्लॉक स्तर पर मुख्य रूप से किस तंत्र का उपयोग किया जाता है?
(1) पिछड़े जिलों में गश्त करने के लिए सशस्त्र महिला पुलिस अधिकारियों के दस्तों का आयोजन करना
(2) जागरूकता पैदा करने और योजनाओं के उपयोग में सहायता के लिए छात्र स्वयंसेवकों को तैनात करना
(3) महिलाओं की सहायता के लिए सभी स्थानीय उद्योगों से कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व वित्त पोषण अनिवार्य करना
(4) बिना किसी बाहरी मदद के विशेष रूप से ग्राम पंचायत सरपंचों द्वारा प्रत्यक्ष प्रशासन लागू करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

92. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के तहत "बेंचमार्क दिव्यांगता वाले व्यक्ति" का सबसे उपयुक्त वर्णन कौन सा है?
(1) ऐसा व्यक्ति जिसके पास WHO द्वारा जारी दिव्यांगता का एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र हो
(2) कोई भी व्यक्ति जो तीन महीने से अधिक समय तक चलने वाली अस्थायी बीमारी से पीड़ित हो
(3) अधिनियम में परिभाषित निर्दिष्ट दिव्यांगता का कम से कम 40 प्रतिशत वाला व्यक्ति
(4) ऐसा व्यक्ति जिसकी विशिष्ट दिव्यांगता उसे किसी भी शारीरिक गतिविधि के लिए पूरी तरह अक्षम बना देती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह बच्चों और रिश्तेदारों द्वारा माता-पिता के भरण-पोषण को एक कानूनी दायित्व बनाता है।

NODIA

सामाजिक न्याय के विचार को केवल जाति से हटाकर आर्थिक आधार तक ले जाता है।

46. (2) I, II, III, IV
अनुसूचित जातियों के कल्याण हेतु कानूनों का विकास ऐतिहासिक रहा है। नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम 1955 में आया, जिसके पश्चात 1989 में कठोर अत्याचार निवारण अधिनियम लागू किया गया। 2004 में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग का पृथक गठन हुआ और अंततः 2013 में हाथ से मैला ढोने के विरुद्ध सख्त कानून बनाया गया। यह कालक्रम दर्शाता है कि समय के साथ राज्य ने इन वर्गों की सुरक्षा और मानवीय गरिमा सुनिश्चित करने हेतु अधिक विशिष्ट और प्रभावी कानूनी ढांचे निरंतर विकसित किए हैं।

47. (4) I, II, III, IV
संविधान की पांचवीं अनुसूची जनजातीय क्षेत्रों के सुशासन हेतु एक व्यापक ढांचा प्रदान करती है। यह असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम को छोड़कर अन्य राज्यों के अधिसूचित क्षेत्रों पर प्रभावी होती है। राष्ट्रपति के पास इन क्षेत्रों को घोषित करने की शक्ति है, जबकि राज्यपाल को इनके प्रशासन पर वार्षिक रिपोर्ट देनी होती है। जनजाति सलाहकार परिषदों की स्थापना इन क्षेत्रों में स्थानीय हितों की रक्षा हेतु अनिवार्य है। यह व्यवस्था जनजातियों को उनकी विशिष्ट संस्कृति के अनुरुप विकास का अवसर प्रदान करती है।

48. (1) यह अधिनियम अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समुदायों से संबंधित व्यक्तियों द्वारा सामान्य श्रेणी के सदस्यों के विरुद्ध किए गए अपराधों पर लागू होता है।
अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 विशेष रुप से उन अपराधों को रोकता है जो गैर-एससी/एसटी व्यक्तियों द्वारा अनुसूचित जाति या जनजाति के सदस्यों के विरुद्ध किए जाते हैं। इसका उद्देश्य ऐतिहासिक रुप से पीड़ित समूहों को विशेष सुरक्षा प्रदान करना है। इस कानून में त्वरित न्याय हेतु विशेष न्यायालयों का प्रावधान है और अग्रिम जमानत पर पूर्ण रोक है। यह पीड़ितों के पुनर्वास और उनकी सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु भी प्रतिबद्ध है। अतः यह कानून प्रतिशोधात्मक नहीं बल्कि सुरक्षात्मक और सुधारात्मक प्रकृति का है।

49. (3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
भारत में महिलाओं की सुरक्षा हेतु विभिन्न कानून समय-समय पर निर्मित किए गए हैं। दहेज निषेध अधिनियम 1961 में लागू हुआ, जबकि घरेलू हिंसा से संरक्षण का कानून 2005 में आया। कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न को रोकने हेतु 2013 में विशेष अधिनियम बनाया गया। बाल विवाह रोकने हेतु नवीन अधिनियम 2006 में अधिनियमित किया गया। ये कानून सामूहिक रुप से महिलाओं को उनके जीवन के विभिन्न चरणों में कानूनी सुरक्षा और न्याय सुनिश्चित करने हेतु एक अत्यंत सुदृढ़ सुरक्षा घेरा प्रदान करते हैं।

50. (1) महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना तीन महत्वपूर्ण केंद्रीय मंत्रालयों के साझा प्रयासों का परिणाम है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय इसके समन्वय का मुख्य कार्य करता है, जबकि स्वास्थ्य मंत्रालय लिंग चयन रोकने और पोषण पर ध्यान केंद्रित करता है। शिक्षा मंत्रालय बालिकाओं के नामांकन और विद्यालयों में उनकी निरंतर भागीदारी सुनिश्चित करता है। यह अंतर-मंत्रालयी सहयोग इस योजना को एक बहुआयामी दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिससे बालिकाओं के समग्र विकास और उनके अधिकारों की रक्षा संभव हो पाती है।

51. (4) I, II, III और IV
महिला शक्ति केंद्र योजना ग्रामीण स्तर पर महिलाओं के सशक्तीकरण हेतु एक संगठित ढांचा प्रदान करती है। यह योजना राष्ट्रीय से लेकर ब्लॉक स्तर तक प्रभावी रुप से कार्यरत है और आकांक्षी जिलों में इसकी भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। छात्र स्वयंसेवकों का उपयोग करके यह योजना सरकारी लाभों को सीधे लक्षित महिला लाभार्थियों तक पहुंचाती है। इसे पोषण अभियान द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया गया है, बल्कि यह उसके पूरक के रुप में कार्य करती है। यह ग्रामीण भारत में महिलाओं की डिजिटल साक्षरता बढ़ाने का माध्यम है।

52. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के तहत सरकारी नौकरियों में बेंचमार्क दिव्यांगों हेतु आरक्षण को 3 प्रतिशत से बढ़ाकर 4 प्रतिशत किया गया है। हालांकि, संविधान का अनुच्छेद 16(4) मुख्य रुप से पिछड़े वर्गों हेतु आरक्षण की बात करता है और इसमें दिव्यांगों का पृथक उल्लेख नहीं है। दिव्यांगों को दिया जाने वाला आरक्षण 'क्षैतिज आरक्षण' की श्रेणी में आता है, जो वैधानिक प्रावधानों पर आधारित है। अतः आरक्षण का आदेश सही है, लेकिन उसका प्रत्यक्ष संवैधानिक उल्लेख दिए गए संदर्भ में तकनीकी रुप से भिन्न है।

53. (2) यह उप-मंडलीय अधिकारी के पद से नीचे के अधिकारी की अध्यक्षता में भरण-पोषण न्यायाधिकरणों की स्थापना करता है।
वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण अधिनियम 2007 के तहत प्रत्येक उप-मंडल में एक न्यायाधिकरण का गठन किया जाता है, जिसका नेतृत्व एसडीओ स्तर का अधिकारी करता है। यह कानून बच्चों और उत्तराधिकारियों पर अपने माता-पिता के भरण-पोषण का कानूनी उत्तरदायित्व डालता है। निःसंतान वरिष्ठ नागरिक भी उन रिश्तेदारों से सहायता मांग सकते हैं जिन्हें उनकी संपत्ति प्राप्त होने वाली है। यह प्रक्रिया सरल रखी गई है ताकि बुजुर्गों को बिना वकीलों के शीघ्र न्याय मिल सके और उनका जीवन सुरक्षित हो सके।

54. (3) औपचारिक प्राथमिक स्कूली शिक्षा (कक्षा 1 से 5)
एकीकृत बाल विकास सेवा योजना छह वर्ष से कम आयु के बच्चों के प्रारंभिक विकास पर ध्यान केंद्रित करती है। इसमें आंगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से पूरक पोषण, स्वास्थ्य जांच और

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, या जन्म स्थान
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 15 राज्य को धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग और जन्म स्थान के पाँच विशिष्ट आधारों पर भेदभाव करने से पूर्णतः रोकता है। यह मौलिक अधिकार सामाजिक समानता सुनिश्चित करने और सार्वजनिक स्थानों तक सबकी समान पहुंच सुलभ बनाने हेतु अत्यंत अनिवार्य है। हालांकि, राज्य को महिलाओं और बच्चों के उत्थान हेतु विशेष प्रावधान बनाने की अनुमति है, लेकिन अन्य नागरिकों के साथ केवल इन आधारों पर विभेद करना सर्वथा असंवैधानिक माना जाता है।

2. (1) ऐतिहासिक कमियों को दूर करना और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए समानता सुनिश्चित करना
भारत में आरक्षण नीति का प्राथमिक उद्देश्य उन समुदायों को मुख्यधारा में लाना है जो सदियों से सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ेपन का शिकार रहे हैं। यह नीति ऐतिहासिक अन्याय को सुधारने और वंचित वर्गों को अवसर की पूर्ण समानता प्रदान करने का एक सशक्त उपकरण है। यह केवल आर्थिक आधार पर नहीं, बल्कि शासन में प्रतिनिधित्व की कमी को दूर करने हेतु लागू की गई है, जिससे देश में विविधता और सामाजिक समावेशन को निरंतर बल मिलता है।

3. (3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
भारतीय संविधान के अनुच्छेद 330 और 332 क्रमशः लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए सीटों के आरक्षण का अनिवार्य प्रावधान करते हैं। अनुच्छेद 338 के तहत राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की स्थापना की गई है, जो इन समुदायों के संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करता है। अनुच्छेद 338A विशेष रूप से राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के गठन से संबंधित है। ये सभी महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रावधान वंचित वर्गों के राजनीतिक और प्रशासनिक सशक्तीकरण को सुनिश्चित करते हैं।

4. (4) 1979
मंडल आयोग, जिसे द्वितीय पिछड़ा वर्ग आयोग के रूप में जाना जाता है, की स्थापना वर्ष 1979 में की गई थी। इस आयोग का नेतृत्व बी.पी. मंडल ने किया था और इसे सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों की पहचान का उत्तरदायित्व सौंपा गया था। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में पिछड़ी जातियों हेतु सरकारी नौकरियों में 27 प्रतिशत आरक्षण की महत्वपूर्ण सिफारिश की थी। इस ऐतिहासिक कदम ने भारत की आरक्षण नीति की दिशा और सामाजिक संरचना को अत्यंत गहराई से प्रभावित किया है।

5. (3) केवल I और II
आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए आरक्षण 103वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा वर्ष 2019 में प्रभावी रूप से लागू किया गया था। यह उच्च शिक्षा और सार्वजनिक रोजगार में उन नागरिकों को 10 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करता है जो अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति या अन्य पिछड़ा वर्ग श्रेणियों में सम्मिलित नहीं हैं। उच्चतम न्यायालय ने जनहित अभियान मामले में इस संशोधन की संवैधानिकता को पूर्णतः बरकरार रखा था। यह प्रावधान गरीबी को आधार बनाकर सामाजिक न्याय के दायरे को विस्तारित करता है।

6. (2) पीएम किसान सम्मान निधि
पीएम किसान सम्मान निधि मुख्य रूप से लघु और सीमांत किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु निर्मित एक महत्वपूर्ण कृषि कल्याण योजना है। अन्य विकल्प जैसे मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्ति और राष्ट्रीय फेलोशिप विशेष रूप से अनुसूचित जाति के छात्रों के शैक्षिक उत्थान एवं उच्च शिक्षा की सुगमता के लिए लक्षित हैं। श्रेयस योजना भी कौशल विकास और उच्च शिक्षा के क्षेत्रों में सहायता प्रदान करती है। अतः कृषि सहायता से संबंधित यह योजना वर्तमान शैक्षिक सशक्तीकरण के दायरे से बाहर मानी जाती है।

7. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारतीय संविधान की पांचवीं अनुसूची के अनुसार, अनुसूचित क्षेत्रों वाले राज्यों के राज्यपालों के लिए यह अनिवार्य है कि वे इन क्षेत्रों के प्रशासन के विषय में राष्ट्रपति को नियमित रिपोर्ट दें। संघ की कार्यकारी शक्ति राज्यों को इन क्षेत्रों के प्रबंधन हेतु निर्देश देने तक विस्तृत है ताकि जनजातीय समुदायों के हितों की रक्षा सुनिश्चित हो सके। यह प्रशासनिक ढांचा केंद्र और राज्यों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करता है। राज्यपाल की रिपोर्टिंग प्रणाली इसी संवैधानिक उत्तरदायित्व का अभिन्न हिस्सा है।

NODIA

8. (1) एक गैर-एससी/एसटी व्यक्ति द्वारा किसी एससी/एसटी सदस्य को कोई अखाद्य पदार्थ खाने के लिए मजबूर करना
अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 का मुख्य उद्देश्य इन समुदायों के विरुद्ध अपमानजनक और हिंसक गतिविधियों को रोकना है। किसी व्यक्ति को जबरन अखाद्य पदार्थ खिलाना उसकी मानवीय गरिमा का गंभीर उल्लंघन है और इसे अत्याचार की श्रेणी में रखा गया है। यह कानून सामाजिक बहिष्कार और अपमान को दंडनीय बनाता है। संपत्ति विवाद या सामान्य नागरिक अनुबंध उल्लंघन इस विशेष अधिनियम के बजाय सामान्य दीवानी कानूनों के अंतर्गत न्यायपालिका द्वारा निपटाए जाते हैं।

9. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
संविधान का अनुच्छेद 39(d) राज्य के नीति निदेशक तत्वों का हिस्सा है, जो पुरुषों और महिलाओं के लिए समान कार्य हेतु समान वेतन सुनिश्चित करने का निर्देश देता है। मातृत्व लाभ

सरकारी नौकरी की गारंटी देती है।
(4) यह भारत की सभी विधवाओं के लिए पक्का मकान बनाने के लिए 100% सब्सिडी प्रदान करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना (RSBY) की वह प्राथमिक सीमा क्या थी जिसे आयुष्मान भारत PM-JAY ने दूर करने का प्रयास किया?
(1) RSBY केवल बुनियादी बाह्य रोगी विभाग खर्चों को कवर करती थी।
(2) RSBY उनकी आय के स्तर की परवाह किए बिना सभी नागरिकों के लिए अनिवार्य थी।
(3) RSBY की 30,000 रुपये की कवरेज सीमा महंगी तृतीयक देखभाल के लिए अपर्याप्त थी।
(4) RSBY ने माध्यमिक स्वास्थ्य देखभाल कवरेज को पूरी तरह से बाहर रखा था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

81. किस संविधान संशोधन ने अनुच्छेद 15(5) जोड़ा, जिससे राज्य को निजी संस्थानों सहित शैक्षणिक संस्थानों में पिछड़े वर्गों की उन्नति के लिए विशेष प्रावधान करने में सक्षम बनाया गया?
(1) 86वां संशोधन अधिनियम, 2002
(2) 97वां संशोधन अधिनियम, 2011
(3) 102वां संशोधन अधिनियम, 2018
(4) 93वां संशोधन अधिनियम, 2005
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

82. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें:
सूची I: (आरक्षण से संबंधित अवधारणा/प्रावधान)
A. कैच-अप नियम
B. परिणामी वरिष्ठता
C. कैरी फॉरवर्ड नियम
D. क्रीमी लेयर
सूची II: (संबंधित संशोधन/मामला)
i. 85वां संशोधन अधिनियम
ii. 81वां संशोधन अधिनियम
iii. वीरपाल सिंह चौहान मामला
iv. इंदिरा साहनी मामला
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

83. विधायी आरक्षण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: अनुच्छेद 332 राज्यों की विधानसभाओं में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए सीटों के आरक्षण का प्रावधान करता है।
कथन II: अनुच्छेद 332 के तहत आरक्षित सीटों की संख्या की गणना जनसंख्या की परवाह किए बिना प्रति राज्य 10 सीटों की एक निश्चित संख्या के रूप में की जाती है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. मंडल आयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसकी नियुक्ति 1979 में बी.पी. मंडल की अध्यक्षता में की गई थी।
II. इसने पिछड़ापन निर्धारित करने के लिए सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक संकेतकों का उपयोग किया।
III. इसने ओबीसी जनसंख्या का अनुमान लगभग 52% लगाया।
IV. इसने सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में ओबीसी के लिए 27% आरक्षण की सिफारिश की।
V. इसकी सिफारिशों को मोरारजी देसाई सरकार द्वारा 1980 में तुरंत लागू कर दिया गया था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) II, III, IV और V
(2) I, II, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. केंद्र सरकार के दिशा-निर्देशों के तहत EWS कोटा का दावा करने के लिए परिवार के लिए निम्नलिखित में से कौन सा एक अपवर्जन मानदंड है?
(1) परिवार के पास निर्दिष्ट ग्रामीण विकास क्षेत्र के भीतर 2 एकड़ से अधिक कृषि भूमि है।
(2) परिवार के पास किसी शहर में 800 वर्ग फुट या उससे अधिक के कुल क्षेत्रफल वाला आवासीय फ्लैट है।
(3) अधिसूचित नगरपालिकाओं में 100 वर्ग गज या उससे अधिक के आवासीय भूखंड का होना।
(4) परिवार की सभी स्रोतों से कुल वार्षिक आय 6 लाख रुपये की सीमा से अधिक है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

86. अनुसूचित जातियों के लिए कल्याणकारी योजनाओं के संबंध में गलत युग्म की पहचान करें:
(1) पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति - माध्यमिक शिक्षा के बाद के स्तर पर पढ़ाई के लिए वित्तीय सहायता
(2) पीएम-अजय (PM-AJAY) - विशेष रूप से अनुसूचित जाति के छात्रों की अंतरराष्ट्रीय उच्च शिक्षा के लिए एक योजना
(3) अनुसूचित जाति उपयोजना के लिए विशेष केंद्रीय सहायता - राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को उनकी उपयोजना में वृद्धि के रूप में 100% अनुदान
(4) राष्ट्रीय सफ़ाई कर्मचारी वित्त और विकास निगम - सफ़ाई

Click Here to Buy book on Amazon

अपराधी मान लिया गया था। स्वतंत्रता के पश्चात 1952 में इन्हें इस अपमानजनक लेबल से मुक्त किया गया, जिसके कारण इन्हें विमुक्त कहा जाता है। ये जनजातियां आज भी सामाजिक कलंक और अत्यधिक निर्धनता का सामना कर रही हैं। सरकार ने इनके कल्याण और अधिकारों की रक्षा हेतु अब विशेष बोर्ड और सीड जैसी समर्पित एवं प्रभावी योजनाएं प्रारंभ की हैं।

19. (3) प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY)
राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम ग्रामीण विकास मंत्रालय के तहत एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जिसमें वृद्धावस्था, विधवा और दिव्यांगता पेंशन सम्मिलित हैं। राष्ट्रीय परिवार लाभ योजना भी इसी कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण घटक है जो मुख्य कमाने वाले की मृत्यु पर सहायता प्रदान करती है। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं हेतु नकद प्रोत्साहन योजना है और यह महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा संचालित होती है। अतः यह इस कार्यक्रम के घटकों का हिस्सा नहीं है।

20. (4) इस योजना के लिए लाभार्थियों को स्वास्थ्य कवर बनाए रखने के लिए 1000 रुपये के वार्षिक प्रीमियम का भुगतान करना आवश्यक है।
आयुष्मान भारत योजना पूर्णतः नकद रहित और कागज रहित है, जिसमें लाभार्थियों को किसी भी प्रकार का प्रीमियम देने की आवश्यकता नहीं होती है। यह योजना सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना 2011 के आंकड़ों के आधार पर पहचानी गई आबादी को 5 लाख रुपये तक का वार्षिक स्वास्थ्य बीमा प्रदान करती है। परिवार के आकार और आयु पर कोई प्रतिबंध न होना इसकी एक बड़ी विशेषता है। यह विश्व की सबसे बड़ी सरकारी वित्तपोषित स्वास्थ्य बीमा योजना मानी जाती है।

21. (3) केवल III
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 16 सार्वजनिक रोजगार में अवसर की समानता की गारंटी देता है, लेकिन यह पिछड़े वर्गों हेतु आरक्षण के प्रावधान की अनुमति भी देता है। उच्चतम न्यायालय के निर्णयों और संवैधानिक संशोधनों के माध्यम से अनुसूचित जातियों और जनजातियों हेतु पदोन्नति में आरक्षण को कानूनी रूप से मान्य किया गया है। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि अनुच्छेद 16 सभी श्रेणियों हेतु पदोन्नति में आरक्षण पर पूरी तरह रोक लगाता है। यह प्रावधान वास्तव में सामाजिक न्याय का एक सशक्त माध्यम है।

22. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
पूना पैक्ट 1932 में महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. अंबेडकर के मध्य हुआ था, जिसके तहत दलितों हेतु पृथक निर्वाचक मंडल को त्यागकर आरक्षित सीटों की व्यवस्था स्वीकार की गई थी। डॉ. अंबेडकर ने प्रारंभ में सांप्रदायिक पंचाट का समर्थन किया था क्योंकि इसने दलितों को अलग राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्रदान किया था। गांधीजी के आमरण अनशन के पश्चात आपसी सहमति से पूना पैक्ट संपन्न हुआ। यह समझौता भारतीय इतिहास में दलितों के राजनीतिक अधिकारों की सुरक्षा हेतु एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ।

23. (4) वे समूह, जातियां या जनजातियां जिन्हें अनुच्छेद 341 के प्रावधानों के तहत अनुसूचित जाति माना जाता है
भारतीय संविधान के अनुच्छेद 341 के तहत, राष्ट्रपति के पास राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों हेतु विशिष्ट जातियों को अनुसूचित जाति के रूप में अधिसूचित करने की शक्ति निहित है। ये वे समुदाय हैं जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से अस्पृश्यता और सामाजिक भेदभाव का सामना किया है। संसद को कानून बनाकर इस सूची में जातियों को जोड़ने या हटाने का अधिकार है। यह संवैधानिक परिभाषा सुनिश्चित करती है कि इन वर्गों को विशेष सुरक्षा और विकास के अवसर समान रूप से प्रदान किए जा सकें।

24. (1) काका कालेलकर आयोग → मंडल आयोग → इंदिरा साहनी निर्णय → 102वां संविधान संशोधन
भारत में अन्य पिछड़ा वर्ग के आरक्षण का इतिहास क्रमबद्ध घटनाओं से जुड़ा है। सर्वप्रथम 1953 में काका कालेलकर आयोग बना, जिसके पश्चात 1979 में मंडल आयोग की नियुक्ति हुई। मंडल आयोग की सिफारिशों के कार्यान्वयन के बाद 1992 में इंदिरा साहनी मामले का ऐतिहासिक निर्णय आया, जिसने 50 प्रतिशत की आरक्षण सीमा निर्धारित की। अंततः 2018 में 102वें संविधान संशोधन द्वारा राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया। यह विकास सामाजिक न्याय की निरंतर यात्रा को दर्शाता है।

25. (3) अनुच्छेद 15 और 16
103वें संविधान संशोधन अधिनियम ने संविधान के अनुच्छेद 15 और 16 में उप-खंड (6) जोड़कर आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों हेतु आरक्षण का मार्ग प्रशस्त किया। अनुच्छेद 15(6) शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश हेतु विशेष प्रावधान की अनुमति देता है, जबकि अनुच्छेद 16(6) सार्वजनिक रोजगार में नियुक्तियों हेतु आरक्षण सुनिश्चित करता है। यह संशोधन ऐतिहासिक है क्योंकि इसने सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ेपन के पारंपरिक आधार के साथ-साथ विशुद्ध आर्थिक मानदंडों को भी आरक्षण का आधार बनाने की व्यवस्था की है।

26. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
पीएम-दक्ष योजना पिछड़े वर्गों के कौशल विकास हेतु समर्पित है, जबकि स्टैंड-अप इंडिया उद्यमिता को बढ़ावा देने हेतु बड़े ऋण प्रदान करती है। अनुसूचित जातियों हेतु जोखिम पूंजी कोष रियायती वित्त के माध्यम से नवाचार को प्रोत्साहित करता है। बाबू जगजीवन राम योजना छात्रों हेतु छात्रावासों के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है। ये सभी पहलें सामूहिक रूप से अनुसूचित जाति के युवाओं को शैक्षिक और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने का एक व्यापक एवं सशक्त तंत्र तैयार करती हैं।

27. (4) अनुसूचित जनजातियों के कल्याण और उन्नति पर सलाह देने के लिए राज्य में एक जनजाति सलाहकार परिषद की स्थापना
संविधान की पांचवीं अनुसूची के तहत अनुसूचित क्षेत्र घोषित करने का मुख्य परिणाम जनजाति सलाहकार परिषद का अनिवार्य गठन है। यह परिषद संबंधित राज्य में अनुसूचित

NODIA

अधिनियम का उद्देश्य कार्यस्थल पर महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करना है, जो अनुच्छेद 42 के तहत मानवीय कार्य स्थितियों और प्रसूति सहायता से प्रेरित है। यह केवल मौलिक कर्तव्यों से संबंधित नहीं है, बल्कि राज्य के संवैधानिक उत्तरदायित्वों को प्रभावी बनाने के लिए निर्मित एक अत्यंत महत्वपूर्ण कल्याणकारी कानून है।

10. (1) I, II और III
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना वर्ष 2015 में हरियाणा के पानीपत से प्रारंभ हुई थी, जिसका लक्ष्य गिरते बाल लिंगानुपात को सुधारना है। पीसी एंड पीएनडीटी अधिनियम का कड़ाई से क्रियान्वयन इस योजना का एक आधारभूत स्तंभ माना जाता है। यह योजना मुख्य रूप से सामाजिक जागरूकता और शिक्षा पर केंद्रित है और इसमें व्यक्तिगत नकद हस्तांतरण का कोई प्रावधान नहीं रखा गया है। यह संपूर्ण भारत के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के लिए प्रासंगिक है और व्यापक सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करती है।

11. (4) सामुदायिक भागीदारी और विभिन्न सरकारी योजनाओं तक पहुंच की सुविधा प्रदान करके ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना
महिला शक्ति केंद्र योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं के लिए एक ऐसा मंच प्रदान करना है जहां वे सरकारी सेवाओं और अधिकारों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकें। यह योजना छात्र स्वयंसेवकों की सहायता से समुदायों को निरंतर जागरूक करती है। इसका लक्ष्य ग्रामीण स्तर पर महिलाओं के कौशल विकास, स्वास्थ्य और डिजिटल साक्षरता को व्यापक बढ़ावा देना है। यह केवल ऋण वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि एक समग्र और व्यापक सामाजिक सशक्तिकरण मॉडल के रूप में कार्य करती है।

12. (2) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के तहत कुष्ठ रोग मुक्त व्यक्तियों को चलन दिव्यांगता की श्रेणी में रखा गया है। अंधापन दृष्टिबाधितता का एक प्रकार है और विशिष्ट अधिगम विकार बौद्धिक दिव्यांगता के अंतर्गत आते हैं। मल्टीपल स्केलेरोसिस को दीर्घकालिक तंत्रिका संबंधी स्थितियों की सूची में सम्मिलित किया गया है। यह अधिनियम दिव्यांगताओं की संख्या को सात से बढ़ाकर इक्कीस करके उनके अधिकारों और सुरक्षा के दायरे को व्यापक बनाता है। यह समावेशी समाज के निर्माण में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ है।

13. (3) पीएम-दक्ष (PM-DAKSH) योजना
पीएम-दक्ष योजना मुख्य रूप से अनुसूचित जातियों, पिछड़ें वर्गों और सफ़ाई कर्मचारियों के कौशल विकास और आर्थिक सशक्तिकरण पर केंद्रित है। इसके विपरीत, सेक्रेड और सेज पोर्टल वरिष्ठ नागरिकों के लिए क्रमशः रोजगार के अवसर और देखभाल उत्पादों की सुविधा प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय वयःश्री योजना भी बीपीएल श्रेणी के बुजुर्गों को आवश्यक सहायक उपकरण प्रदान करने के लिए समर्पित है। अतः पीएम-दक्ष योजना का प्राथमिक उद्देश्य अन्य योजनाओं की तुलना में भिन्न और युवाओं के व्यावसायिक कौशल से संबंधित है।

14. (4) II, I, IV, III
भारत में बाल कल्याण कार्यक्रमों की शुरुआत अलग-अलग समय पर हुई है। एकीकृत बाल विकास सेवाएं 1975 में प्रारंभ की गई थीं। मध्याह्न भोजन योजना का शुभारंभ 1995 में हुआ था। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना को 2015 में बाल लिंगानुपात सुधारने हेतु पेश किया गया था। पोषण अभियान 2018 में कुपोषण की समस्या को दूर करने हेतु शुरु किया गया था। इस प्रकार इन योजनाओं का विकास क्रमबद्ध तरीके से स्वास्थ्य और शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के उद्देश्य से किया गया है।

15. (1) एलपीजी कनेक्शन के माध्यम से स्वच्छ खाना पकाने का ईंधन प्रदान करके महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा करना
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ग्रामीण महिलाओं को धुआं मुक्त रसोई और स्वच्छ ईंधन प्रदान करने के पवित्र उद्देश्य से शुरु की गई थी। लकड़ी और कोयले जैसे पारंपरिक ईंधनों के उपयोग से होने वाली श्वसन संबंधी बीमारियों को रोकना इसका मुख्य लक्ष्य है। यह योजना महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार के साथ-साथ उनके समय की बचत और पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का प्रभावी प्रयास है।

16. (2) III और IV
अटल पेंशन योजना और प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन योजना विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को वृद्धावस्था में वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने हेतु बनाई गई हैं। ये योजनाएं लाभार्थियों को 60 वर्ष की आयु के पश्चात एक निश्चित मासिक पेंशन की गारंटी देती हैं। ईपीएफओ और ईएसआईसी मुख्य रूप से संगठित क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए हैं। मनरेगा एक रोजगार गारंटी योजना है, न कि प्रत्यक्ष पेंशन योजना। अतः असंगठित श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा हेतु ये दोनों योजनाएं अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

17. (2) पढ़ो प्रदेश - विदेशी शिक्षा के लिए ऋण पर ब्याज सब्सिडी
पढ़ो प्रदेश योजना अल्पसंख्यक समुदायों के मेधावी छात्रों को विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु लिए गए शैक्षिक ऋण पर ब्याज सब्सिडी प्रदान करती है। नई मंज़िल योजना औपचारिक शिक्षा के साथ कौशल विकास पर केंद्रित है। उस्ताद योजना पारंपरिक कला और शिल्प को संरक्षित करने हेतु है। नई रोशनी योजना अल्पसंख्यक महिलाओं के नेतृत्व विकास से संबंधित है। ये योजनाएं सामूहिक रूप से अल्पसंख्यकों के शैक्षिक और आर्थिक उत्थान में योगदान देकर उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ती हैं।

18. (1) 1871 के आपराधिक जनजाति अधिनियम के तहत "आपराधिक जनजातियों" के रूप में अधिसूचित थे
विमुक्त जनजातियां उन समुदायों का समूह हैं जिन्हें ब्रिटिश शासन के दौरान 1871 के दमनकारी कानून के तहत जन्मजात

Downloaded from www.pdf.tube

किसानों के कल्याण हेतु हैं। अतः कॉरपोरेट नियोक्ताओं का इससे जुड़ाव दर्शाना गलत है।

37. (4) यह धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों को अपनी पसंद के शिक्षण संस्थान स्थापित करने और उनका प्रशासन करने की अनुमति देता है।
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 30 अल्पसंख्यकों को अपनी संस्कृति और शिक्षा को संरक्षित करने का विशेष अधिकार प्रदान करता है। इसके तहत धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों को अपने शिक्षण संस्थान खोलने और उन्हें प्रबंधित करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है। यह प्रावधान सांस्कृतिक विविधता की रक्षा करता है और यह सुनिश्चित करता है कि राज्य इन संस्थानों को सहायता देते समय उनके अल्पसंख्यक होने के आधार पर भेदभाव न करे। यह भारत के धर्मनिरपेक्ष और बहुलवादी ढांचे को मजबूती प्रदान करता है।

38. (1) अक्सर उनके पास स्थायी पते और औपचारिक दस्तावेजों की कमी होती है, जिससे कल्याणकारी योजनाओं तक पहुंचना कठिन हो जाता है।
विमुक्त जनजातियां ऐतिहासिक रूप से घुमंतू रही हैं, जिसके कारण उनके पास निवास के स्थायी प्रमाण या पहचान पत्र जैसे दस्तावेजों का प्रायः अभाव रहता है। सीड योजना इन्हीं बाधाओं को दूर करने और उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आवास के लाभ प्रदान करने हेतु प्रारंभ की गई है। ये समुदाय समाज के सबसे हाशिए पर रहने वाले वर्गों में सम्मिलित हैं। यह योजना उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने और मुख्यधारा के विकास कार्यक्रमों से जोड़ने का एक एकीकृत सरकारी प्रयास है।

39. (3) NSAP का पूरा वित्तीय बोझ संबंधित राज्य सरकारों द्वारा वहन किया जाता है।
राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (एनएसएपी) एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जिसका अर्थ है कि इसका वित्तीय बोझ केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा साझा किया जाता है। यह कार्यक्रम अनुच्छेद 41 के तहत बेरोजगारी, वृद्धावस्था और बीमारी की स्थिति में सहायता प्रदान करने के राज्य के संवैधानिक कर्तव्य को पूर्ण करता है। इसमें बुजुर्गों, विधवाओं और दिव्यांगों को नकद सहायता प्रदान की जाती है। यह ग्रामीण विकास मंत्रालय के माध्यम से लागू होने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रभावी सामाजिक सुरक्षा तंत्र है।

40. (2) अस्पताल में भर्ती होने से 3 दिन पहले और छुट्टी के 15 दिन बाद तक
आयुष्मान भारत योजना के तहत स्वास्थ्य कवर में केवल अस्पताल में भर्ती होने की अवधि ही नहीं, बल्कि उससे पूर्व और पश्चात के व्यय भी सम्मिलित हैं। इसमें भर्ती होने से तीन दिन पहले तक की जांच एवं औषधियां तथा डिस्चार्ज होने के बाद 15 दिनों तक की देखभाल का खर्च कवर किया जाता है। यह व्यापक सुरक्षा सुनिश्चित करती है कि निर्धन परिवारों पर चिकित्सा उपचार के दौरान कोई अतिरिक्त वित्तीय बोझ न पड़े। यह इस नीति का एक अत्यंत मानवीय और प्रभावी पहलू है।

NODIA

41. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
संविधान का अनुच्छेद 14 कानून के समक्ष सबको समान मानता है और अनुच्छेद 15 धर्म या जाति के आधार पर भेदभाव को वर्जित करता है। अनुच्छेद 16 सरकारी नौकरियों में सभी के लिए समान अवसरों की गारंटी प्रदान करता है। अनुच्छेद 17 अस्पृश्यता जैसी सामाजिक कुरीति को समाप्त कर इसे एक दंडनीय अपराध घोषित करता है। ये चारों अनुच्छेद मिलकर भारत में सामाजिक न्याय और समानता की सुदृढ़ नींव रखते हैं। ये प्रावधान वंचित वर्गों को गरिमापूर्ण जीवन और समाज में बराबरी का हक दिलाते हैं।

42. (2) सरकारिया आयोग
सरकारिया आयोग का गठन 1983 में मुख्य रूप से केंद्र और राज्यों के मध्य संबंधों की समीक्षा हेतु किया गया था। अन्य तीनों आयोगों का संबंध प्रत्यक्ष रूप से पिछड़ें वर्गों से है; काका कालेलकर और मंडल आयोग ने पिछड़ी जातियों की पहचान की, जबकि रोहिणी आयोग ओबीसी के भीतर उप-वर्गीकरण के मुद्दे पर कार्य कर रहा है। सरकारिया आयोग का ध्यान संघीय ढांचे और प्रशासनिक शक्तियों के वितरण पर केंद्रित था। अतः इसका उद्देश्य सामाजिक वर्गों के वर्गीकरण से पृथक और प्रशासनिक प्रकृति का था।

43. (3) I, II और III
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 335 प्रशासन की दक्षता बनाए रखते हुए अनुसूचित जातियों और जनजातियों की भागीदारी सुनिश्चित करता है। अनुच्छेद 341 राष्ट्रपति को इन वर्गों की पहचान और अधिसूचना की शक्ति प्रदान करता है। एक बार सूची अधिसूचित होने के पश्चात, इसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन केवल संसद द्वारा कानून बनाकर ही संभव है। ये प्रावधान सुनिश्चित करते हैं कि आरक्षण और सुरक्षा उपायों का लाभ केवल पात्र समुदायों को मिले और इस प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता एवं कानूनी स्थिरता बनी रहे।

44. (4) इंदिरा साहनी बनाम भारत संघ
1990 में मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने के बाद व्यापक विरोध हुआ, जिसके परिणामस्वरूप इंदिरा साहनी मामला उच्चतम न्यायालय पहुँचा। इस ऐतिहासिक निर्णय में न्यायालय ने अन्य पिछड़ा वर्ग हेतु 27 प्रतिशत आरक्षण को वैध ठहराया लेकिन साथ ही आरक्षण पर 50 प्रतिशत की अधिकतम सीमा भी निर्धारित की। न्यायालय ने 'क्रीमी लेयर' की अवधारणा को भी इसी मामले में प्रस्तुत किया। यह निर्णय भारत की आरक्षण नीति को कानूनी रूप से परिभाषित और नियंत्रित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

45. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
103वें संविधान संशोधन ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों हेतु 10 प्रतिशत आरक्षण की शुरुआत की, जो एससी, एसटी और ओबीसी के दायरे से बाहर के निर्धन लोगों हेतु है। हालांकि, यह संशोधन स्पष्ट करता है कि अनुच्छेद 30 के तहत आने वाले अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों पर यह आरक्षण कोटा प्रभावी नहीं होगा। यह प्रावधान समाज के उन निर्धनों को सहायता प्रदान करता है जो पूर्व में किसी आरक्षण के पात्र नहीं थे। यह

जनजातियों के कल्याण और उन्नति से जुड़े महत्वपूर्ण मामलों पर राज्यपाल को उचित सलाह देती है। इसका उद्देश्य इन क्षेत्रों के प्रशासन में स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करना और उनकी परंपराओं की रक्षा करना है। यह व्यवस्था जनजातीय क्षेत्रों में सुशासन और स्वायत्तता को बढ़ावा देने हेतु एक सुरक्षा कवच है।

28. (1) I, II और IV
वर्ष 2018 के संशोधन अधिनियम ने अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम में धारा 18A जोड़ी, जिसने प्राथमिकी दर्ज करने हेतु प्रारंभिक जांच की आवश्यकता को पूर्णतः समाप्त कर दिया। इसने अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु किसी पूर्व अनुमति की आवश्यकता को भी हटा दिया और अग्रिम जमानत के लाभ पर रोक को पुनः बहाल किया। यह संशोधन उच्चतम न्यायालय के एक आदेश के प्रभावों को बदलने और कानून के कठोर प्रावधानों को सुरक्षित रखने हेतु लाया गया था।

29. (3) अनुच्छेद 330
अनुच्छेद 15(3) राज्य को महिलाओं हेतु विशेष प्रावधान करने की अनुमति देता है, जबकि अनुच्छेद 39(a) आजीविका के समान अवसरों पर केंद्रित है। अनुच्छेद 42 कार्य की न्यायसंगत स्थितियों और प्रसूति सहायता का प्रावधान करता है। इसके विपरीत, अनुच्छेद 330 विशेष रूप से लोकसभा में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों हेतु सीटों के आरक्षण से संबंधित है। हालांकि यह सामाजिक न्याय का हिस्सा है, लेकिन इसका प्राथमिक लक्ष्य महिलाओं के विशिष्ट सशक्तिकरण के बजाय जातीय एवं जनजातीय प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना है।

30. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना गिरते बाल लिंगानुपात की गंभीर समस्या से निपटने हेतु पीसी एंड पीएनडीटी अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन पर बल देती है। यह कानून प्रसव पूर्व लिंग चयन को प्रतिबंधित करता है, जो बालिकाओं के अस्तित्व हेतु एक बड़ा संकट है। योजना का लक्ष्य न केवल बालिकाओं को बचाना है, बल्कि उनकी शिक्षा और सर्वांगीण विकास भी सुनिश्चित करना है। अधिनियम का प्रवर्तन और व्यापक सामाजिक जागरूकता मिलकर इस योजना के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होते हैं।

31. (1) यह विभिन्न महिला योजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए पिछड़े जिलों में छात्र स्वयंसेवकों का उपयोग करती है।
महिला शक्ति केंद्र योजना सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण का एक अनूठा मॉडल प्रस्तुत करती है। इसमें कॉलेज के छात्र स्वयंसेवक पिछड़े क्षेत्रों में जाकर महिलाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वरोजगार से जुड़ी सरकारी योजनाओं के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। यह योजना सीधे नकद लाभ देने के स्थान पर सूचना और पहुंच के अंतर को समाप्त करने पर केंद्रित है। इसका संचालन राष्ट्रीय से लेकर ब्लॉक स्तर तक विकेंद्रीकृत तरीके से किया जाता है।

32. (2) तेज़ाब हमला पीड़ित
दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 ने दिव्यांगता की श्रेणियों को व्यापक बनाया, जिसमें तेज़ाब हमला पीड़ितों को प्रथम बार कानूनी रूप से दिव्यांगता के रूप में मान्यता दी गई। अंधापन, श्रवण बाधितता और चलन दिव्यांगता पूर्व के 1995 के अधिनियम में भी सम्मिलित थे। नई सूची में पार्किंसंस रोग और थैलेसीमिया जैसी स्थितियों को भी जोड़ा गया है। यह विस्तार समाज के अधिक वंचित और उपेक्षित समूहों को कानूनी सुरक्षा, आरक्षण और सरकारी लाभों का वास्तविक हकदार बनाने हेतु किया गया है।

33. (3) केवल V
मध्याह्न भोजन योजना अब पीएम पोषण के रूप में जानी जाती है और यह कक्षा एक से आठ तक के छात्रों को कवर करती है। नवीन दिशा-निर्देशों के अनुसार, इसका विस्तार प्री-प्राइमरी या बालवाटिका के छोटे बच्चों तक भी कर दिया गया है। यह योजना सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में पोषण और उपस्थिति सुधारने का एक सशक्त माध्यम है। इसमें स्वयं सहायता समूहों और किसान संगठनों की भागीदारी को भी महत्व दिया जाता है। अतः इसे बालवाटिका से बाहर रखना एक तथ्यात्मक त्रुटि है।

34. (4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
एकीकृत बाल विकास सेवा के तहत पूरक पोषण छोटे बच्चों और गर्भवती माताओं को प्रदान किया जाता है। अनौपचारिक पूर्व-स्कूली शिक्षा विशेष रूप से तीन से छह वर्ष के बच्चों हेतु होती है जो उनकी बुनियादी शिक्षा की नींव रखती है। टीकाकरण कार्यक्रम शिशुओं और गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है। पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा 15 से 45 वर्ष की महिलाओं को लक्षित करती है ताकि वे स्वयं और परिवार की उचित देखभाल कर सकें। ये सेवाएं आंगनवाड़ी केंद्रों द्वारा दी जाती हैं।

35. (2) 1600 रुपये
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत केंद्र सरकार प्रत्येक पात्र बीपीएल परिवार को नया एलपीजी कनेक्शन लेने हेतु 1600 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान करती है। यह राशि सुरक्षा जमा राशि, रेगुलेटर और पाइप की लागत को कवर करने हेतु दी जाती है। इस पहल ने करोड़ों निर्धन महिलाओं को स्वच्छ ईंधन उपलब्ध कराया है, जिससे वे रसोई के धुएं से मुक्त हो सकी हैं। यह योजना सामाजिक सशक्तिकरण के साथ-साथ पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में भी एक क्रांतिकारी एवं सफल कदम सिद्ध हुई है।

36. (2) पीएम श्रम योगी मान-धन - बड़े स्तर के कॉर्पोरेट नियोक्ता
प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन योजना विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों, जैसे घरेलू कामगारों और रिक्शा चालकों हेतु निर्मित एक स्वैच्छिक पेंशन योजना है। यह बड़े कॉर्पोरेट नियोक्ताओं हेतु नहीं, बल्कि उन लोगों के लिए है जिनकी मासिक आय अत्यंत कम है। अटल पेंशन योजना भी इसी प्रकार असंगठित वर्ग को लक्षित करती है। कर्मचारी राज्य बीमा और किसान मान-धन क्रमशः औद्योगिक श्रमिकों और सीमांत

Click Here to Buy book on Amazon

अनौपचारिक पूर्व-स्कूली शिक्षा प्रदान की जाती है। औपचारिक प्राथमिक स्कूली शिक्षा इस योजना का हिस्सा नहीं है, क्योंकि वह शिक्षा विभाग के नियमित स्कूली तंत्र के अंतर्गत आती है। आईसीडीएस का मुख्य लक्ष्य विद्यालय जाने से पूर्व के बच्चों और गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण की नींव को सुदृढ़ बनाना है।

55. (4) सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना (SECC) 2011
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के शुरुआती चरण में पात्र लाभार्थियों की पहचान हेतु 2011 की सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना के आंकड़ों का उपयोग किया गया था। यह डेटाबेस निर्धन परिवारों की वास्तविक स्थिति को समझने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ। पश्चात में इस योजना के दायरे को अन्य श्रेणियों तक विस्तृत किया गया ताकि कोई भी वंचित परिवार स्वच्छ ईंधन के लाभ से वंचित न रहे। यह डेटा आधारित दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि सरकारी सहायता सीधे उन्हीं तक पहुंचे जिन्हें इसकी सर्वाधिक आवश्यकता है।

56. (1) मूल मजदूरी, महंगाई भत्ता और प्रतिधारण भत्ता
कर्मचारी भविष्य निधि अधिनियम के तहत भविष्य निधि अंशदान की गणना हेतु मजदूरी में मूल वेतन के साथ-साथ महंगाई भत्ता और प्रतिधारण भत्ता सम्मिलित किया जाता है। अन्य भत्ते जैसे आवास किराया या बोनस सामान्यतः इस गणना का हिस्सा नहीं होते हैं। यह परिभाषा महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी के आधार पर कर्मचारी और नियोक्ता दोनों के योगदान की राशि निर्धारित होती है। यह प्रणाली सुनिश्चित करती है कि कर्मचारी की सेवानिवृत्ति के समय उसे एक सुरक्षित और पर्याप्त धनराशि प्राप्त हो सके जो उसके भविष्य हेतु सहायक हो।

57. (2) यह सुनिश्चित करना कि अल्पसंख्यकों को आर्थिक गतिविधियों, रोजगार और विकास योजनाओं में न्यायसंगत हिस्सा मिले
प्रधानमंत्री का नया 15 सूत्री कार्यक्रम अल्पसंख्यकों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने हेतु निर्मित किया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि सरकारी विकास योजनाओं का लाभ इन समुदायों के जरूरतमंद लोगों तक पूर्ण निष्पक्षता के साथ पहुंचे। यह शिक्षा, स्वरोजगार और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों में विशिष्ट लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह कार्यक्रम सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने और अल्पसंख्यकों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने की दिशा में सरकार की एक महत्वपूर्ण और समावेशी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

58. (1) औपनिवेशिक युग के आपराधिक जनजाति अधिनियम का ऐतिहासिक कलंक, जिसने उन्हें जन्मजात अपराधी करार दिया था
विमुक्त जनजातियों की सबसे बड़ी समस्या वह सामाजिक कलंक है जो ब्रिटिश शासन के दौरान उन पर लगाया गया था। 1871 के कानून ने इन समुदायों को अपराधी मानकर समाज से पूर्णतः पृथक कर दिया। स्वतंत्रता के दशकों पश्चात भी वे इसी पूर्वाग्रह और भेदभाव का सामना कर रहे हैं, जिससे उन्हें सम्मानजनक रोजगार और शिक्षा प्राप्त करने में भारी कठिनाई होती है। यह ऐतिहासिक अन्याय उनकी वर्तमान निर्धनता और पिछड़ेपन का मुख्य कारण है, जिसे मिटाने हेतु अब विशेष सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं।

59. (3) IGNDPS - बीपीएल परिवारों के 18 से 79 वर्ष की आयु के गंभीर दिव्यांगता वाले व्यक्तियों के लिए पेंशन
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय दिव्यांगता पेंशन योजना के तहत 18 से 79 वर्ष की आयु के उन व्यक्तियों को सहायता दी जाती है जो गरीबी रेखा से नीचे हैं और गंभीर रूप से दिव्यांग हैं। 80 वर्ष के पश्चात उन्हें वृद्धावस्था पेंशन योजना में स्थानांतरित कर दिया जाता है। विधवा पेंशन हेतु आयु सीमा 40 से 79 वर्ष निर्धारित है। ये योजनाएं एनएसएपी का अभिन्न हिस्सा हैं और समाज के सबसे असहाय वर्गों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती हैं। इनका मुख्य उद्देश्य जीवन की गरिमा और न्यूनतम आय सुनिश्चित करना है।

60. (4) गरीब और कमजोर परिवारों के लिए स्वास्थ्य पर होने वाले भारी जेब खर्च को कम करना
आयुष्मान भारत योजना का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव निर्धन परिवारों को चिकित्सा के कारण होने वाली भारी ऋणग्रस्तता से बचाना है। भारत में बड़ी संख्या में नागरिक महंगे उपचार के कारण गरीबी रेखा से नीचे चले जाते हैं। यह योजना 5 लाख रुपये तक का निशुल्क इलाज प्रदान करके इस वित्तीय बोझ को पूर्णतः समाप्त करती है। इससे न केवल स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बढ़ती है, बल्कि सार्वजनिक और निजी अस्पतालों के सहयोग से एक सुदृढ़ और व्यापक स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण भी होता है।

61. (1) विधि के समक्ष समानता → भेदभाव का निषेध → सार्वजनिक रोजगार में अवसर की समानता → अस्पृश्यता का अंत
भारतीय संविधान में समानता के अधिकार का क्रम अनुच्छेद 14 से 17 तक अत्यंत स्पष्ट है। सर्वप्रथम अनुच्छेद 14 कानून की दृष्टि में सबको समान बनाता है। तत्पश्चात अनुच्छेद 15 विशिष्ट आधारों पर भेदभाव को वर्जित करता है। इसके बाद अनुच्छेद 16 सरकारी नौकरियों में बराबरी के अवसर प्रदान करता है। अंत में अनुच्छेद 17 अस्पृश्यता को समाप्त कर सामाजिक न्याय को पूर्णता प्रदान करता है। यह क्रम कानूनी समानता से प्रारंभ होकर गहरे सामाजिक सुधारों तक जाने वाली न्याय की गौरवशाली यात्रा को दर्शाता है।

62. (2) केवल I और II
1932 के सांप्रदायिक पंचाट ने दलितों को पृथक राजनीतिक पहचान प्रदान की थी, लेकिन गांधीजी के विरोध के पश्चात पूना पैक्ट के माध्यम से इसे आरक्षित सीटों में परिवर्तित किया गया। मूल संविधान में पदोन्नति में आरक्षण का स्पष्ट उल्लेख नहीं था; इसे बाद में 77वें संविधान संशोधन के माध्यम से जोड़ा गया था। अतः ऐतिहासिक रूप से पूना पैक्ट दलितों के राजनीतिक एकीकरण का प्रतीक बना। संवैधानिक संशोधन ने पश्चात में प्रशासनिक सेवाओं में उनके प्रतिनिधित्व को अधिक मजबूती और कानूनी सुरक्षा प्रदान की है।

Downloaded from www.pdf.tube

विकास और कल्याण बोर्ड की स्थापना की है। यह बोर्ड इन उपेक्षित समुदायों हेतु शिक्षा, आवास और स्वास्थ्य की विशिष्ट कल्याणकारी योजनाएं तैयार और क्रियान्वित करता है। यह संस्थागत ढांचा इन जनजातियों को ऐतिहासिक कलंक से मुक्त करने और उन्हें सम्मानजनक जीवन दिलाने हेतु आवश्यक है।

99. (2) 18-59 वर्ष की आयु के प्राथमिक कमाने वाले सदस्य की मृत्यु के मामले में बीपीएल परिवार
राष्ट्रीय परिवार लाभ योजना एनएसएपी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो संकट के समय निर्धन परिवारों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है। यदि किसी बीपीएल परिवार के मुख्य कमाने वाले सदस्य, जिसकी आयु 18 से 59 वर्ष के मध्य है, की आकस्मिक मृत्यु हो जाती है, तो सरकार उस परिवार को एकमुश्त वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य परिवार को तत्काल आर्थिक आघात से उबारना और उन्हें पुनः स्वावलंबी होने में सहायता करना है। यह योजना सामाजिक सुरक्षा जाल को और अधिक सुदृढ़ एवं मानवीय बनाती है।

100. (3) अधिकांश राज्यों के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के बीच वित्त पोषण 60:40 के अनुपात में साझा किया जाता है।
आयुष्मान भारत एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जिसमें वित्तीय संसाधनों का आवंटन केंद्र और राज्यों के मध्य साझा आधार पर सुनिश्चित होता है। सामान्य राज्यों हेतु यह अनुपात 60:40 निर्धारित है, जबकि उत्तर-पूर्वी और पहाड़ी राज्यों हेतु यह 90:10 का होता है। केंद्र शासित प्रदेशों के मामले में, जहां अपनी विधायिका नहीं है, वहां केंद्र सरकार 100 प्रतिशत वित्तीय भार वहन करती है। यह सहकारी संघवाद का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहां दोनों स्तर की सरकारें मिलकर नागरिकों के स्वास्थ्य अधिकारों को सुनिश्चित करती हैं।

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs, you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams, being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

72. (3) केवल IV
2016 का नवीन दिव्यांगजन कानून पूर्व की सात श्रेणियों के स्थान पर 21 स्थितियों को मान्यता प्रदान करता है। इसमें तेजाब हमला पीड़ितों और पार्किंसंस रोग को भी स्पष्ट रुप से सम्मिलित किया गया है, अतः इन्हें बाहर रखने की बात तथ्यहीन है। बेंचमार्क दिव्यांगता का तात्पर्य कम से कम 40 प्रतिशत दिव्यांगता होना है, जो आरक्षण और अन्य लाभों हेतु पात्रता का आधार बनती है। नौकरियों में आरक्षण को बढ़ाकर 4 प्रतिशत करना और शिक्षा में 5 प्रतिशत करना इस कानून के अत्यंत प्रगतिशील प्रावधानों में सम्मिलित है।

73. (4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राष्ट्रीय वयःश्री योजना वरिष्ठ नागरिकों को सहायक उपकरण प्रदान करती है। वयो नमन बुजुर्गों के योगदान का सम्मान करने का एक औपचारिक उत्सव है। सेक्रेड पोर्टल सेवानिवृत्त लोगों को पुनः कार्य खोजने में सहायता करता है, जबकि सेज पोर्टल बुजुर्गों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाले स्टार्टअप को बढ़ावा देता है। ये चारों पहलें मिलकर बुढ़ापे को केवल निर्भरता का समय नहीं, बल्कि सम्मान और सक्रिय जीवन का चरण बनाने का प्रयास करती हैं। यह समाज में बुजुर्गों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने का एक प्रयास है।

74. (4) यह सभी मौजूदा उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति योजनाओं को एक डिजिटल प्लेटफॉर्म के तहत विलय करता है।
पोषण अभियान का मुख्य लक्ष्य बच्चों और माताओं में कुपोषण, एनीमिया और जन्म के समय कम वजन जैसी गंभीर समस्याओं को दूर करना है। यह रीयल-टाइम आंकड़ों हेतु तकनीकी उपकरणों का उपयोग करता है और 'जन आंदोलन' के माध्यम से व्यापक समाज की भागीदारी सुनिश्चित करता है। छात्रवृत्ति योजनाओं का विलय इस अभियान का हिस्सा नहीं है, क्योंकि यह प्रत्यक्ष स्वास्थ्य और पोषण से संबंधित है, न कि उच्च शिक्षा के वित्तीय प्रबंधन से। अतः छात्रवृत्ति संबंधी तथ्य इस अभियान के उद्देश्यों के साथ मेल नहीं खाता है।

75. (2) शुरुआती मुफ्त कनेक्शन के बाद एलपीजी सिलेंडर के लिए उच्च रीफिलिंग लागत।
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने निर्धन परिवारों को निशुल्क एलपीजी कनेक्शन तो प्रदान कर दिए, किंतु सबसे बड़ी चुनौती सिलेंडर को पुनः भरवाने की महंगी लागत बनी हुई है। गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले परिवारों हेतु बाजार मूल्य पर गैस क्रय करना प्रायः दुष्कर होता है, जिसके कारण वे वापस पारंपरिक ईंधनों की ओर लौट जाते हैं। सरकार इस समस्या के समाधान हेतु सब्सिडी प्रदान करती है, किंतु फिर भी रीफिलिंग की निरंतरता बनाए रखना इस योजना की पूर्ण सफलता हेतु एक सतत एवं बड़ी चुनौती है।

76. (3) उपदान भुगतान अधिनियम, 1972 - सेवानिवृत्ति, त्यागपत्र या मृत्यु पर कर्मचारियों को एकमुश्त भुगतान प्रदान करता है
उपदान या ग्रेच्युटी एक कर्मचारी को लंबी सेवा के बदले दिया जाने वाला एकमुश्त लाभ है, जो सेवानिवृत्ति या सेवा छोड़ने पर प्राप्त होता है। मातृत्व लाभ अधिनियम समस्त संगठित क्षेत्रों पर प्रभावी होता है, न कि केवल कृषि पर। अटल पेंशन योजना कम आय वाले असंगठित श्रमिकों हेतु है, न कि कॉर्पोरेट अधिकारियों के लिए। ईएसआईसी स्वास्थ्य देखभाल और नकद लाभ प्रदान करता है, लेकिन यह करोड़ों का जीवन बीमा कवर नहीं है। अतः उपदान भुगतान अधिनियम का वर्णन सर्वाधिक सटीक, तथ्यपूर्ण और विधिक रुप से सही है।

77. (4) अनुच्छेद 29(2)
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 29(2) यह गारंटी प्रदान करता है कि राज्य द्वारा संचालित या राज्य से सहायता प्राप्त किसी भी शिक्षण संस्थान में प्रवेश के समय किसी भी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूलवंश, जाति या भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा। यह प्रावधान सुनिश्चित करता है कि सरकारी संसाधनों से संचालित संस्थानों में सभी नागरिकों को समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त हो। यह भारत के धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को सुदृढ़ करता है और शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण समावेशन एवं सामाजिक न्याय की स्थापना करता है।

78. (1) वे समुदाय जो समय-समय पर स्थानांतरित होते हैं लेकिन वर्ष के एक निश्चित भाग के लिए उनका एक निश्चित निवास स्थान होता है
अर्ध-घुमंतू जनजातियां वे समूह हैं जो आजीविका की खोज में वर्ष के कुछ महीनों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करते हैं, किंतु मानसून या किसी निश्चित ऋतु में अपने स्थायी ठिकानों पर लौट आते हैं। यह विशिष्ट जीवनशैली उन्हें पूर्ण घुमंतू समुदायों से पृथक बनाती है। इन जनजातियों को प्रायः विकास की मुख्यधारा से बाहर रखा जाता है क्योंकि उनके पास स्थायी निवास का निरंतर साक्ष्य नहीं होता। सरकार अब इनके लिए विशेष आवासीय और शैक्षिक विकास योजनाएं निर्मित करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

79. (2) यह बीपीएल परिवारों की 40 वर्ष और उससे अधिक आयु की विधवाओं को मासिक पेंशन प्रदान करती है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना उन महिलाओं को आवश्यक आर्थिक संबल प्रदान करती है जो गरीबी रेखा से नीचे हैं और जिन्होंने अपने पति को खो दिया है। इस योजना के अंतर्गत 40 से 79 वर्ष की आयु की विधवा महिलाओं को मासिक नकद सहायता प्रदान की जाती है। यह पेंशन उन्हें समाज में गरिमापूर्ण जीवन जीने और अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहायता करती है। 80 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर, ये लाभार्थी स्वतः ही राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना के दायरे में सम्मिलित कर ली जाती हैं।

80. (3) RSBY की 30,000 रुपये की कवरेज सीमा महंगी तृतीयक देखभाल के लिए अपर्याप्त थी।
राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत वार्षिक कवर केवल 30,000 रुपये था, जो गंभीर बीमारियों और जटिल शल्य चिकित्सा के व्यय को पूर्ण करने में सर्वथा असमर्थ था। आयुष्मान भारत ने इस सीमा को बढ़ाकर 5 लाख रुपये कर दिया है, जिससे अब निर्धन परिवार भी प्रतिष्ठित अस्पतालों में बड़ी सर्जरी और कैंसर जैसी घातक बीमारियों का उपचार निशुल्क करा सकते हैं। यह विस्तार स्वास्थ्य सुरक्षा के दायरे

Click Here to Buy book on Amazon

को व्यापक बनाता है और चिकित्सा व्यय के कारण होने वाली निर्धनता को प्रभावी ढंग से रोकने में सहायक है।

81. (4) 93वां संशोधन अधिनियम, 2005
93वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा अनुच्छेद 15 में खंड (5) को जोड़ा गया था। यह प्रावधान राज्य को यह संवैधानिक शक्ति प्रदान करता है कि वह निजी संस्थानों सहित समस्त शैक्षणिक संस्थानों में सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़ें वर्गों, अनुसूचित जातियों और जनजातियों के प्रवेश हेतु विशेष नियम निर्मित कर सके। केवल अल्पसंख्यक संस्थानों को इस विधिक दायरे से बाहर रखा गया है। यह संशोधन सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने हेतु उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आरक्षण के आधार को अत्यंत व्यापक और विधिक रूप से सुदृढ़ बनाता है।

82. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
कैच-अप नियम वीरपाल सिंह चौहान मामले से संबंधित है, जो पदोन्नति में वरिष्ठता से जुड़ा है। परिणामी वरिष्ठता को 85वें संशोधन द्वारा संवैधानिक मान्यता दी गई, जबकि कैरी फॉरवर्ड नियम 81वें संशोधन का अभिन्न हिस्सा बना जिसने बैकलॉग रिक्तियों के आरक्षण को सुलभ बनाया। क्रीमी लेयर की महत्वपूर्ण अवधारणा इंदिरा साहनी मामले में प्रस्तुत की गई थी ताकि आरक्षण का वास्तविक लाभ केवल पात्र ओबीसी लाभार्थियों तक ही पहुंचे। ये सभी विधिक बिंदु भारत की जटिल आरक्षण प्रणाली को सुव्यवस्थित और न्यायसंगत बनाते हैं।

83. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
संविधान का अनुच्छेद 332 राज्य विधानसभाओं में अनुसूचित जातियों और जनजातियों हेतु आरक्षण सुनिश्चित करता है, जो प्रत्यक्ष रुप से उनकी जनसंख्या के अनुपात पर आधारित होता है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि सीटों की संख्या सदैव निश्चित है; यह प्रत्येक राज्य में इन वर्गों की जनसंख्या के प्रतिशत के अनुरुप परिवर्तित होती रहती है। यह प्रणाली सुनिश्चित करती है कि विधायी निकायों में वंचित वर्गों का प्रतिनिधित्व उनकी वास्तविक संख्यात्मक स्थिति के अनुरुप हो, जिससे लोकतंत्र में उनकी सक्रिय आवाज को पूर्ण महत्व प्राप्त हो सके।

84. (4) I, II, III और IV
मंडल आयोग ने 1979 में अपनी नियुक्ति के पश्चात पिछड़ेंपन की पहचान हेतु सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक कारकों का एक अत्यंत व्यापक डेटा संकलित किया। आयोग ने पाया कि देश की लगभग 52 प्रतिशत जनसंख्या ओबीसी श्रेणी में आती है और उनके लिए 27 प्रतिशत आरक्षण की स्पष्ट सिफारिश की। हालांकि, मोरारजी देसाई सरकार के पतन के कारण इसे 1980 में तत्काल लागू नहीं किया जा सका; इसे एक दशक पश्चात 1990 में वी.पी. सिंह सरकार द्वारा क्रियान्वित किया गया। यह देरी भारतीय राजनीति के उतार-चढ़ाव को दर्शाती है।

85. (3) अधिसूचित नगरपालिकाओं में 100 वर्ग गज या उससे अधिक के आवासीय भूखंड का होना।
ईडब्ल्यूएस आरक्षण के तहत आर्थिक पात्रता हेतु सरकार ने संपत्ति की कुछ कड़ी सीमाएं निर्धारित की हैं। यदि किसी परिवार के पास अधिसूचित नगरपालिकाओं में 100 वर्ग गज या उससे अधिक का आवासीय भूखंड है, तो वह इस आरक्षण का लाभ प्राप्त करने हेतु पात्र नहीं होगा। कृषि भूमि की अधिकतम सीमा 5 एकड़ निर्धारित है। वार्षिक पारिवारिक आय की सीमा 8 लाख रुपये रखी गई है। ये मानदंड सुनिश्चित करते हैं कि आरक्षण का लाभ समाज के केवल उन आर्थिक रूप से निर्बल लोगों को प्राप्त हो जिन्हें वास्तव में इसकी सर्वाधिक आवश्यकता है।

86. (2) पीएम-अजय (PM-AJAY) - विशेष रूप से अनुसूचित जाति के छात्रों की अंतरराष्ट्रीय उच्च शिक्षा के लिए एक योजना
पीएम-अजय योजना मुख्य रूप से अनुसूचित जाति बहुल गांवों के बुनियादी ढांचे के विकास, कौशल प्रशिक्षण और आय सृजन की गतिविधियों पर केंद्रित है। यह अंतरराष्ट्रीय शिक्षा हेतु समर्पित कोई योजना नहीं है। पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति और सफाई कर्मचारी निगम अन्य विशिष्ट कल्याणकारी क्षेत्रों में सहायता करते हैं। अंतरराष्ट्रीय उच्च शिक्षा हेतु केंद्र सरकार 'राष्ट्रीय प्रवासी छात्रवृत्ति' जैसी अन्य पृथक योजनाएं संचालित करती है। अतः पीएम-अजय का संबंध ग्रामीण विकास और स्थानीय आजीविका सुधारने से अधिक गहरा है।

87. (3) I, III, II, IV
अनुसूचित जातियों के संवैधानिक विकास का क्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है। 1990 में 65वें संशोधन ने बहु-सदस्यीय आयोग का गठन किया। इसके पश्चात 2000 में 82वें संशोधन ने पदोन्नति में अर्हक अंकों में छूट प्रदान की। 2003 में 89वें संशोधन द्वारा आयोग का विभाजन कर पृथक आयोग बनाया गया और अंततः 2019 के 104वें संशोधन ने विधायी सीटों के आरक्षण को वर्ष 2030 तक विस्तृत कर दिया। यह कालक्रम दर्शाता है कि समय-समय पर सरकार ने इन वर्गों के राजनीतिक और प्रशासनिक अधिकारों को सुदृढ़ करने हेतु निरंतर विधायी प्रयास किए हैं।

88. (4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
अत्याचार निवारण अधिनियम की धारा 3 विभिन्न अपराधों हेतु कठोर दंड निर्धारित करती है, जबकि धारा 14 विशेष न्यायालयों के गठन का विधिक आधार है। धारा 15A विशेष रूप से पीड़ितों और साक्षियों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करती है ताकि वे बिना किसी भय के न्याय प्राप्त कर सकें। धारा 21 केंद्र व राज्य सरकार पर यह विधिक कर्तव्य डालती है कि वह कानून के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु आवश्यक सुरक्षात्मक उपाय करे। ये समस्त धाराएं मिलकर एक ऐसा कानूनी तंत्र निर्मित करती हैं जो हाशिए के समुदायों को पूर्ण सुरक्षा देता है।

89. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अनुच्छेद 15(1) लिंग के आधार पर भेदभाव को पूर्णतः रोकता है, किंतु अनुच्छेद 15(3) राज्य को महिलाओं और बच्चों हेतु 'सकारात्मक भेदभाव' करने की विशिष्ट अनुमति प्रदान करता है। यह अपवाद इसलिए रखा गया है क्योंकि ऐतिहासिक और सामाजिक कारणों से इन वर्गों को विशेष सुरक्षा एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता है। यह सक्षम खंड राज्य को ऐसी नीतियां बनाने की शक्ति देता है जो महिलाओं के वास्तविक सशक्तिकरण में सहायक हों, जैसे स्थानीय निकायों में आरक्षण।

NODIA

अतः यह प्रावधान समानता के सिद्धांत को अधिक व्यावहारिक बनाता है।

90. (1) केवल I और III
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना तीन मंत्रालयों की एक संयुक्त पहल है और यह उन संवेदनशील जिलों पर केंद्रित है जहां लिंगानुपात अत्यंत कम है। यह योजना समाज की रुढ़िवादी मानसिकता को बदलने और बालिकाओं की अनिवार्य शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु व्यापक जागरुकता अभियान संचालित करती है। इसमें बालिकाओं के खाते में सीधे नकद हस्तांतरण की कोई पृथक व्यवस्था नहीं है; इसके स्थान पर 'सुकन्या समृद्धि योजना' बचत को प्रोत्साहित करती है। यह योजना मुख्य रूप से सुरक्षा और शिक्षा के माध्यम से बालिकाओं को सशक्त बनाने का मिशन है।

91. (2) जागरुकता पैदा करने और योजनाओं के उपयोग में सहायता के लिए छात्र स्वयंसेवकों को तैनात करना
महिला शक्ति केंद्र योजना का प्रभावी संचालन मुख्य रुप से शिक्षित युवाओं की ऊर्जा और सेवा भाव पर आधारित है। छात्र स्वयंसेवकों को ग्रामीण और पिछड़े ब्लॉक क्षेत्रों में प्रेषित किया जाता है ताकि वे महिलाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा और कानूनी अधिकारों से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं की सरल भाषा में जानकारी प्रदान कर सकें। यह मॉडल न केवल महिलाओं को सशक्त बनाता है, बल्कि युवाओं में भी सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करता है। यह सूचना के अभाव को दूर करने का एक अत्यंत प्रभावी और लागत-कुशल तरीका है।

92. (3) अधिनियम में परिभाषित निर्दिष्ट दिव्यांगता का कम से कम 40 प्रतिशत वाला व्यक्ति
दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के अनुसार, 'बेंचमार्क दिव्यांगता' उस स्थिति को कहा जाता है जहां किसी व्यक्ति में निर्धारित 21 दिव्यांगताओं में से कोई एक कम से कम 40 प्रतिशत की मात्रा में विद्यमान हो। इस प्रतिशत का प्रमाणन एक सक्षम चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा किया जाना विधिक रुप से अनिवार्य है। बेंचमार्क दिव्यांगता वाले व्यक्ति ही सरकारी नौकरियों में आरक्षण, निशुल्क शिक्षा और अन्य विशेष लाभों के पात्र माने जाते हैं। यह मानक सुनिश्चित करता है कि सरकारी सहायता सबसे अधिक प्रभावित और जरुरतमंद व्यक्तियों तक पहुंचे।

93. (4) I, II और IV
वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण अधिनियम 2007 बच्चों और उत्तराधिकारियों पर अपने बुजुर्गों की देखभाल का विधिक दायित्व डालता है। इसके लिए गठित न्यायाधिकरण तीव्र गति से सुनवाई सुनिश्चित करता है। हालांकि, संशोधित नियमों और न्यायिक निर्णयों के अनुसार, 10,000 रुपये की पुरानी मासिक सीमा को अब हटाया जा चुका है ताकि बुजुर्गों को उनकी वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरुप पर्याप्त वित्तीय राशि प्राप्त हो सके। यह कानून सुनिश्चित करता है कि वरिष्ठ नागरिक समाज में उपेक्षित न रहें और उन्हें अपने उत्तराधिकारियों से पूर्ण सहायता मिले।

94. (1) आंगनवाड़ी केंद्र (AWC)
एकीकृत बाल विकास सेवा का संपूर्ण कार्यान्वयन आंगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से सुनिश्चित किया जाता है। ये केंद्र ग्रामीण और शहरी मलिन बस्तियों के जमीनी स्तर पर स्थित होते हैं जहां प्रशिक्षित आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायक बच्चों के पोषण, स्वास्थ्य जांच और पूर्व-स्कूली शिक्षा का कुशल प्रबंधन करते हैं। ये केंद्र देश की स्वास्थ्य प्रणाली और स्थानीय समुदाय के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी के रुप में कार्य करते हैं। आईसीडीएस की सफलता इन केंद्रों की प्रभावी कार्यप्रणाली और स्थानीय महिलाओं एवं बच्चों के जुड़ाव पर निर्भर करती है।

95. (2) PM किसान ट्रैक्टर सब्सिडी के लाभार्थी
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का मुख्य लक्ष्य निर्धन परिवारों की महिलाओं को स्वच्छ खाना पकाने का ईंधन उपलब्ध कराना है। इसके लाभार्थियों में एससी/एसटी परिवार, अंत्योदय अन्न योजना के सदस्य और प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के पात्र लाभार्थी सम्मिलित हैं। ट्रैक्टर सब्सिडी कृषि यंत्रीकरण से संबंधित है और इसका रसोई के ईंधन सुधार से कोई सीधा संबंध नहीं है। उज्ज्वला योजना सामाजिक सशक्तिकरण और स्वास्थ्य सुधार पर केंद्रित है, जबकि कृषि सब्सिडी का मुख्य उद्देश्य उत्पादन बढ़ाना और खेती की लागत को कम करना है।

96. (1) 1,000 रुपये से 5,000 रुपये तक की गारंटीकृत न्यूनतम मासिक पेंशन
अटल पेंशन योजना मुख्य रुप से असंगठित क्षेत्र के कामगारों को वृद्धावस्था सुरक्षा प्रदान करने हेतु है। 60 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर, ग्राहक द्वारा किए गए अंशदान के आधार पर उसे 1,000 से 5,000 रुपये के मध्य की निश्चित मासिक पेंशन की गारंटी प्रदान की जाती है। यह पेंशन न केवल ग्राहक को, बल्कि उसकी मृत्यु के पश्चात उसके जीवनसाथी को भी निरंतर मिलती रहती है। यह योजना कम आय वाले नागरिकों को नियमित बचत के माध्यम से भविष्य में आत्मनिर्भर बनाने का एक उत्कृष्ट एवं सुरक्षित अवसर प्रदान करती है।

97. (4) संविधान स्पष्ट रुप से उन मानदंडों और जनसंख्या प्रतिशत को परिभाषित करता है जो अल्पसंख्यक के रुप में मान्यता प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं।
भारतीय संविधान में अनुच्छेद 29 और 30 अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करते हैं, किंतु 'अल्पसंख्यक' शब्द को संविधान में कहीं भी स्पष्ट रुप से परिभाषित नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, किसी समुदाय को अल्पसंख्यक मानने हेतु कोई विशिष्ट जनसंख्या प्रतिशत भी संविधान में उल्लिखित नहीं है। यह अधिकार केंद्र सरकार को प्रदान किया गया है कि वह समुदायों को धार्मिक या भाषाई आधार पर अल्पसंख्यक अधिसूचित करे। वर्तमान में भारत में मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, पारसी और जैन समुदायों को यह वैधानिक दर्जा प्राप्त है।

98. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
विमुक्त, घुमंतू और अर्ध-घुमंतू जनजातियों की जटिल समस्याओं के समाधान हेतु भीकू रामजी इदाते आयोग का गठन किया गया था, जिसने उनकी दयनीय स्थिति पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। इन सिफारिशों के आधार पर सरकार ने एक समर्पित

Downloaded from www.pdf.tube

22. उस क्षेत्र के कुल राष्ट्रीय उत्पादन में राजस्थान की सापेक्ष हिस्सेदारी के आधार पर निम्नलिखित क्षेत्रों को उच्चतम योगदान से निम्नतम योगदान के सही क्रम में व्यवस्थित करें:
I. सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएँ
II. अधात्विक खनिज (जैसे संगमरमर, बलुआ पत्थर)
III. कृषि (तिलहन और पोषक अनाज)
(1) I, II, III
(2) II, III, I
(3) III, II, I
(4) II, I, III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: राजस्थान की आर्थिक विकास दर ऐतिहासिक रूप से राष्ट्रीय औसत के अनुरूप रही है, जिसमें अच्छे मानसून के वर्षों के कारण कभी-कभी उछाल देखा गया है।
कथन II: कृषि, उद्योग और सेवाओं के सटीक प्रतिशत हिस्से के मामले में राज्य की अर्थव्यवस्था संरचनात्मक रूप से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के समान है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

24. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में राजस्थान के योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. राजस्थान भारत के स्थलीय क्षेत्रों में कच्चे तेल का सबसे बड़ा उत्पादक है।
II. राजस्थान भारत के कुल सूचना प्रौद्योगिकी सॉफ्टवेयर निर्यात में 20% से अधिक का योगदान देता है।
III. राज्य देश में सरसों और बाजरा का अग्रणी उत्पादक है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. कृषि/खनिज वस्तुओं (सूची I) को राष्ट्रीय उत्पादन में राजस्थान के विशिष्ट स्थान (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (वस्तु)
A. बाजरा
B. कच्चा तेल (स्थलीय)
C. जस्ता अयस्क
D. गेहूँ
सूची II: (स्थान/स्थिति)
i. प्रथम
ii. द्वितीय
iii. प्रथम (एकाधिकार)
iv. चौथी/पाँचवीं
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. स्वतंत्रता-पूर्व राजस्थान के आर्थिक इतिहास के संदर्भ में, 'जागीरदारी प्रथा' मुख्य रूप से किसके रूप में कार्य करती थी?
(1) सामंती भू-राजस्व संग्रह और प्रशासन की प्रणाली
(2) आधुनिक औद्योगिक पूंजीवाद
(3) राज्य प्रायोजित सहकारी खेती
(4) मुक्त बाजार कृषि वस्तु व्यापार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. स्वतंत्रता के बाद राजस्थान में भूमि सुधारों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) भूमि सुधार पूरी तरह विफल रहे और किसी भी अधिशेष भूमि का वितरण नहीं हुआ।
(2) कृषि जोतों की उच्चतम सीमा को 1973 में समाप्त कर दिया गया था।
(3) भूमि सुधारों ने महिलाओं को भूमि उत्तराधिकार से स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित किया था।
(4) राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 ने काश्तकारों को सुरक्षा प्रदान की।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. स्वतंत्रता से पूर्व राजपूताना की रियासतों की अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी नहीं थी?
(1) पारंपरिक वर्षा आधारित कृषि पर भारी निर्भरता
(2) वैश्विक वित्तीय बाजारों के साथ उच्च एकीकरण
(3) पूरे क्षेत्र में एकीकृत मुद्रा और सीमा शुल्क प्रणाली का अभाव
(4) कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प की प्रधानता
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

29. स्वतंत्रता के बाद राजस्थान में औद्योगिक विकास के चरणों और विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. रीको (RIICO) की स्थापना औद्योगिक क्षेत्रों के विकास में एक बड़ा कदम था।
II. शुरुआती दशकों (1950-1970) में भारी उद्योगों में बड़े पैमाने पर निजी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश देखा गया।
III. बाड़मेर बेसिन में कच्चे तेल की खोज ने 2000 के दशक में औद्योगिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण बढ़ावा दिया।
IV. हाल की नीतियां नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के विकास पर भारी जोर देती हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II, III और IV

अध्याय 11

राजस्थान की अर्थव्यवस्था एवं राज्य बजट का व्यापक अवलोकन

1. प्रचलित मूल्यों पर सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) के आकार के संदर्भ में, राजस्थान आमतौर पर भारतीय राज्यों के बीच किस श्रेणी में आता है?
   (1) शीर्ष 3 स्थानों के भीतर
   (2) 7वें से 10वें स्थान के भीतर
   (3) 11वें से 15वें स्थान के भीतर
   (4) 15वें स्थान से नीचे
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

2. राजस्थान के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
   कथन I: स्थिर मूल्यों पर राजस्थान के जीएसडीपी की गणना आधार वर्ष 2011-12 का उपयोग करके की जाती है।
   कथन II: मुद्रास्फीति के प्रभाव के कारण प्रचलित मूल्यों पर जीएसडीपी की वृद्धि दर हमेशा स्थिर मूल्यों पर होने वाली वृद्धि दर से कम होती है।
   ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
   (1) केवल कथन I
   (2) केवल कथन II
   (3) कथन I और कथन II दोनों
   (4) न तो कथन I और न ही कथन II
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

3. राजस्थान के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन पूर्णतः गलत है?
   (1) स्थिर मूल्यों पर राज्य के जीएसडीपी में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी सबसे अधिक है।
   (2) राजस्थान के जीएसडीपी में कृषि क्षेत्र का योगदान भारत के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हिस्सेदारी के राष्ट्रीय औसत से अधिक है।
   (3) प्रचलित मूल्यों पर राज्य के जीएसडीपी में औद्योगिक क्षेत्र सबसे बड़ा योगदानकर्ता है।
   (4) जीएसडीपी के अनुमान आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान द्वारा तैयार किए जाते हैं।
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

4. राजस्थान के जीएसडीपी की क्षेत्रीय संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
   I. मानसून पर निर्भरता के कारण पिछले दशक में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की हिस्सेदारी में अत्यधिक अस्थिरता देखी गई है।
   II. राजस्थान में विनिर्माण उप-क्षेत्र, सेवा क्षेत्र पर हावी है।
   III. हाल के वर्षों में जीएसडीपी में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी लगातार 40% से ऊपर बनी हुई है।
   उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
   (1) I और II
   (2) II और III
   (3) I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

5. राजस्थान के व्यापक आर्थिक समुच्चयों (सूची I) को उनकी मूलभूत वर्णनात्मक विशेषताओं (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
   सूची I: (समुच्चय)
   A. सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी)
   B. शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (एनएसडीपी)
   C. प्रति व्यक्ति आय (पीसीआई)
   D. स्थिर मूल्यों पर जीएसडीपी
   सूची II: (विशेषता)
   i. किसी दिए गए वर्ष में राज्य में प्रति व्यक्ति अर्जित औसत आय
   ii. मूल्यह्रास को छोड़कर राज्य के भीतर उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य
   iii. आधार वर्ष का उपयोग करके मुद्रास्फीति के लिए समायोजित आर्थिक उत्पादन
   iv. राज्य की सीमाओं के भीतर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल बाजार मूल्य
   (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
   (2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
   (3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
   (4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

6. राजस्थान की अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों में से, किस क्षेत्र ने पिछले दो दशकों में जीएसडीपी में अपने प्रतिशत हिस्से में उच्चतम लचीलापन और निरंतर विस्तार प्रदर्शित किया है?
   (1) कृषि और संबद्ध क्षेत्र
   (2) सेवा क्षेत्र
   (3) खनन और उत्खनन

Click Here to Buy book on Amazon

(4) विनिर्माण और निर्माण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

7. राजस्थान में कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर में देखे जाने वाले बार-बार और महत्वपूर्ण उतार-चढ़ाव का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) केंद्र सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में बार-बार बदलाव
(2) कृषि श्रम का औद्योगिक क्षेत्र की ओर निरंतर स्थानांतरण
(3) रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता का कम होना
(4) वर्षा आधारित कृषि पर उच्च निर्भरता और अनियमित मानसून पैटर्न
(5) प्रश्न अनुत्तरित

8. राजस्थान के जीएसडीपी की गणना में निम्नलिखित में से कौन से उप-क्षेत्र सेवा क्षेत्र के अंतर्गत वर्गीकृत हैं, सिवाय:
(1) बिजली, गैस और जल आपूर्ति
(2) व्यापार, होटल और रेस्तरां
(3) परिवहन, भंडारण और संचार
(4) रियल एस्टेट और पेशेवर सेवाएं
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. राजस्थान के औद्योगिक क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. राज्य के औद्योगिक क्षेत्र के जीएसडीपी में निर्माण का योगदान खनन और उत्खनन से अधिक है।
II. राजस्थान भारत में सीसा और जस्ता अयस्कों के उत्पादन में लगभग एकाधिकार रखता है।
III. औद्योगिक क्षेत्र राज्य के कुल जीएसडीपी में 50% से अधिक का योगदान देता है।
IV. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) राज्य में औद्योगिक रोजगार के बड़े हिस्से के लिए जिम्मेदार हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. राजस्थान की अर्थव्यवस्था के प्राथमिक, द्वितीयक या तृतीयक क्षेत्रों के तहत उनके वर्गीकरण के आधार पर निम्नलिखित उप-क्षेत्रों में से भिन्न को पहचानिए।
(1) लोक प्रशासन
(2) वानिकी और लठ्ठा बनाना
(3) मत्स्य पालन और जलीय कृषि
(4) खनन और उत्खनन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. प्रति व्यक्ति आय (पीसीआई) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) प्रचलित मूल्यों पर राजस्थान की पीसीआई — आमतौर पर राष्ट्रीय औसत पीसीआई से अधिक
(2) पीसीआई गणना सूत्र — कुल राज्य राजस्व प्राप्तियां/कुल जनसंख्या
(3) स्थिर मूल्यों पर पीसीआई की विकास दर — हमेशा मुद्रास्फीति दर के बिल्कुल बराबर
(4) स्थिर पीसीआई के लिए आधार वर्ष — 2011-12
(5) प्रश्न अनुत्तरित

12. एक विशिष्ट हालिया वित्तीय वर्ष में राजस्थान के लिए निम्नलिखित आर्थिक संकेतकों के सापेक्ष परिमाण का प्रतिनिधित्व करने वाले सही क्रम का चयन करें, उच्चतम मूल्य से निम्नतम मूल्य तक:
(1) प्रचलित मूल्यों पर जीएसडीपी, स्थिर मूल्यों पर जीएसडीपी, प्रचलित मूल्यों पर एनएसडीपी, स्थिर मूल्यों पर एनएसडीपी
(2) प्रचलित मूल्यों पर जीएसडीपी, प्रचलित मूल्यों पर एनएसडीपी, स्थिर मूल्यों पर जीएसडीपी, स्थिर मूल्यों पर एनएसडीपी
(3) प्रचलित मूल्यों पर एनएसडीपी, प्रचलित मूल्यों पर जीएसडीपी, स्थिर मूल्यों पर एनएसडीपी, स्थिर मूल्यों पर जीएसडीपी
(4) स्थिर मूल्यों पर जीएसडीपी, प्रचलित मूल्यों पर जीएसडीपी, स्थिर मूल्यों पर एनएसडीपी, प्रचलित मूल्यों पर एनएसडीपी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. जब राजस्थान की प्रति व्यक्ति आय (पीसीआई) की तुलना भारत के राष्ट्रीय औसत से की जाती है, तो निम्नलिखित में से कौन सा कथन ऐतिहासिक और तथ्यात्मक रूप से सटीक है?
(1) राजस्थान की पीसीआई 2001 से लगातार राष्ट्रीय औसत से ऊपर बनी हुई है।
(2) राजस्थान की पीसीआई सभी अधिकार प्राप्त कार्य समूह (ईएजी) राज्यों में सबसे अधिक है और यह राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है।
(3) राजस्थान की पीसीआई आमतौर पर राष्ट्रीय औसत से कम है।
(4) इसमें कोई संरचनात्मक अंतर नहीं है; राजस्थान की पीसीआई हर साल राष्ट्रीय औसत के बिल्कुल बराबर होती है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. राजस्थान में प्रति व्यक्ति आय (पीसीआई) के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. पीसीआई की गणना शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (एनएसडीपी) को राज्य की मध्य-वर्ष की जनसंख्या से विभाजित करके की जाती है।
II. प्रचलित मूल्यों पर पीसीआई में वृद्धि हमेशा वास्तविक जीवन स्तर में सुधार का संकेत देती है।
III. राजस्थान की पीसीआई और राष्ट्रीय पीसीआई के बीच का अंतर पिछले दशक में धीरे-धीरे कम हो रहा है।
IV. राजस्थान में उच्च जनसंख्या वृद्धि दर राज्य की पीसीआई

NODIA

वृद्धि पर नीचे की ओर दबाव डालती है।

V. पीसीआई राजस्थान के शुष्क पश्चिम और उपजाऊ पूर्व के बीच आय की असमानता को पूरी तरह से स्पष्ट करती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?

(1) I और III
(2) II और V
(3) III, IV और V
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. राजस्थान के आर्थिक भूगोल की विशिष्ट विशेषताओं (सूची I) को उनकी प्रमुख आर्थिक विशेषताओं (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (क्षेत्र)

A. पश्चिमी शुष्क क्षेत्र
B. पूर्वी मैदानी क्षेत्र
C. दक्षिणी जनजातीय क्षेत्र
D. अरावली क्षेत्र

सूची II: (आर्थिक विशेषता)

i. खनिज निष्कर्षण और उत्खनन का प्रभुत्व
ii. उच्च कृषि उत्पादकता और कृषि आधारित उद्योग
iii. निर्वाह कृषि और लघु वन उपज पर निर्भरता
iv. पशुपालन और पशुधन आधारित अर्थव्यवस्था

(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. राजस्थान के शुष्क पश्चिम और उपजाऊ पूर्व के बीच का आर्थिक विभाजन मौलिक रूप से राज्य की कृषि नीति को निर्धारित करता है। निम्नलिखित में से कौन सा दृष्टिकोण पश्चिमी शुष्क क्षेत्र के लिए सबसे उपयुक्त है?

(1) गन्ने जैसी अधिक पानी वाली नकदी फसलों को बढ़ावा देना
(2) शुष्क भूमि कृषि, वन-चरागाह और पशुपालन पर ध्यान केंद्रित करना
(3) अत्यधिक जल-उपभोग करने वाले धातुकर्म उद्योगों का विकास
(4) बारहमासी जल की उपलब्धता मानकर व्यापक नहर नेटवर्क का क्रियान्वयन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. निम्नलिखित में से कौन सा फसल समूह राजस्थान के शुष्क पश्चिमी क्षेत्र के प्राथमिक कृषि उत्पादन का प्रतिनिधित्व करता है?

(1) गेहूँ, जौ और गन्ना
(2) बाजरा, मोठ और ग्वार
(3) चावल, मक्का और कपास
(4) सोयाबीन, धनिया और अफीम
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और सही उत्तर चुनिए।

अभिकथन (A): राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में पूर्वी क्षेत्र की तुलना में प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पादकता काफी कम है।

कारण (R): अत्यधिक शुष्कता, अनियमित वर्षा और बारहमासी नदी प्रणालियों की अनुपस्थिति पश्चिमी राजस्थान में सिंचाई क्षमता को सीमित करती है।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. संसाधन-विहीन पश्चिमी जिलों और अपेक्षाकृत समृद्ध पूर्वी जिलों के बीच आर्थिक असमानता को कम करने के लिए राजस्थान सरकार के लिए सबसे उपयुक्त दीर्घकालिक रणनीति क्या है?

(1) पश्चिम से पूर्व की ओर जनसंख्या स्थानांतरण को अनिवार्य करना
(2) पश्चिमी जिलों में कृषि गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाना
(3) निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा का लाभ उठाना
(4) राज्य के बजट को विशेष रुप से पश्चिम की ओर मोड़ना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. स्वतंत्रता के पश्चात राजस्थान के ऐतिहासिक आर्थिक विकास के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) स्वतंत्रता के समय, राजस्थान के पास रियासतों से विरासत में मिला एक अत्यधिक विकसित औद्योगिक आधार था।
(2) जागीरदारी और ज़मींदारी प्रथाओं को 1947 में तुरंत समाप्त कर दिया गया, जिससे तत्काल उच्च कृषि विकास हुआ।
(3) स्वतंत्रता के बाद पहले तीन दशकों तक राजस्थान लगातार राजस्व-अधिशेष वाला राज्य था।
(4) स्वतंत्रता के बाद की आर्थिक योजना ने शुरुआत में सड़क, बिजली और सिंचाई जैसी बुनियादी सुविधाओं के निर्माण पर भारी ध्यान केंद्रित किया।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

21. हाल के वर्षों में भारत के राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में राजस्थान का अनुमानित प्रतिशत योगदान कितना है?

(1) लगभग 2-3%
(2) लगभग 5-6%
(3) लगभग 9-10%
(4) लगभग 12-14%
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. (3) जनता के कमजोर वर्ग, विशेष रूप से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति
संविधान का अनुच्छेद 46 राज्य को यह निर्देश देता है कि वह समाज के कमजोर वर्गों, विशेषकर अनुसूचित जातियों और जनजातियों के शैक्षिक और आर्थिक हितों का विशेष ध्यान रखे। यह उन्हें सामाजिक अन्याय और समस्त प्रकार के शोषण से बचाने हेतु भी प्रतिबद्ध है। यह नीति निदेशक तत्व सामाजिक न्याय के प्रति सरकार की प्राथमिक जिम्मेदारी को रेखांकित करता है। इसी के आधार पर विभिन्न छात्रवृत्ति और आर्थिक सहायता योजनाएं संचालित की जाती हैं ताकि ये वंचित वर्ग विकास की मुख्यधारा में पीछे न रहें।

64. (4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
काका कालेलकर प्रथम पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष थे, जबकि बी.पी. मंडल ने द्वितीय आयोग का नेतृत्व किया। इंदिरा साहनी मामले का महत्व आरक्षण की 50 प्रतिशत सीमा निर्धारित करने में है। 102वें संविधान संशोधन ने राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया। ये चारों मील के पत्थर भारत में अन्य पिछड़े वर्गों के सामाजिक और कानूनी अधिकारों के विकास को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। इनके माध्यम से ओबीसी समुदाय को शासन और प्रशासन में उनकी उचित भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है।

65. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
103वें संविधान संशोधन से पूर्व आरक्षण का मुख्य आधार सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ापन था, आर्थिक स्थिति को स्वतंत्र आधार नहीं माना जाता था। अनुच्छेद 15(6) और 16(6) को जोड़कर राज्य ने प्रथम बार विशुद्ध आर्थिक आधार पर 10 प्रतिशत कोटा प्रदान करने की संवैधानिक शक्ति प्राप्त की। यह ऐतिहासिक परिवर्तन उन लोगों को सुरक्षा प्रदान करने हेतु लाया गया था जो निर्धन हैं किंतु पारंपरिक आरक्षण श्रेणियों में नहीं आते। अतः यह संशोधन आरक्षण नीति के गौरवशाली इतिहास में एक नया आयाम जोड़ता है।

66. (2) अनुसूचित जातियों के लिए सुरक्षा उपायों से संबंधित मामलों की जांच करते समय इसके पास दीवानी न्यायालय की शक्तियां होती हैं।
राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग एक संवैधानिक निकाय है, जिसे अनुच्छेद 338 के तहत स्थापित किया गया है। जांच के दौरान इसके पास दीवानी न्यायालय की शक्तियां निहित होती हैं, जैसे साक्षियों को बुलाना और दस्तावेजों की मांग करना। यह आयोग इन समुदायों के अधिकारों के हनन की शिकायतों की जांच करता है और राष्ट्रपति को वार्षिक रिपोर्ट प्रेषित करता है। 89वें संशोधन के पश्चात अनुसूचित जनजातियों हेतु एक पृथक आयोग निर्मित किया गया, जिससे अनुसूचित जाति आयोग का कार्यक्षेत्र अब इसी वर्ग तक सीमित है।

67. (4) I, II, III, IV और V
जनजातीय क्षेत्रों का प्रशासन पांचवीं और छठी अनुसूची के माध्यम से एक विशेष ढांचा प्राप्त करता है। पेसा अधिनियम 1996 ने पंचायतों के अधिकारों को जनजातीय क्षेत्रों तक विस्तृत कर ग्राम सभाओं को आत्मनिर्भर बनाया। राज्यपाल के पास इन क्षेत्रों में केंद्रीय व राज्य कानूनों के अनुप्रयोग को नियंत्रित करने की व्यापक शक्तियां हैं। परिषदें और स्थानीय निकाय जनजातीय संस्कृति और अधिकारों की रक्षा हेतु स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं। यह व्यवस्था एक समावेशी और स्वायत्त प्रशासनिक मॉडल पेश करती है।

68. (1) अधिनियम के तहत अपराधों की त्वरित सुनवाई सुनिश्चित करना
अत्याचार निवारण अधिनियम की धारा 14 विशेष न्यायालयों की स्थापना का प्रावधान करती है ताकि अनुसूचित जातियों और जनजातियों के विरुद्ध होने वाले अपराधों का निपटारा बिना किसी विलंब के हो सके। सामान्य न्यायालयों में मुकदमों के बोझ के कारण न्याय मिलने में देरी होती है, जिसे दूर करने हेतु इन विशेष सत्र न्यायालयों को निर्दिष्ट किया जाता है। त्वरित सुनवाई पीड़ितों को शीघ्र राहत प्रदान करती है और अपराधियों में कानून का भय उत्पन्न करती है, जो सामाजिक न्याय की स्थापना हेतु अत्यंत आवश्यक है।

69. (3) अनुच्छेद 280
अनुच्छेद 15(3), 39(a) और 42 विशेष रूप से महिलाओं के अधिकारों, उनके कल्याण और कार्यस्थल पर उनकी सुरक्षा से संबंधित प्रावधान हैं। इसके विपरीत, अनुच्छेद 280 वित्त आयोग के गठन और उसकी शक्तियों से संबंधित है, जो केंद्र और राज्यों के मध्य वित्तीय संसाधनों के वितरण का कार्य करता है। वित्त आयोग की भूमिका पूर्णतः आर्थिक और राजकोषीय प्रबंधन की है, इसका प्रत्यक्ष संबंध लैंगिक सशक्तिकरण या सामाजिक सुरक्षा के प्रावधानों से नहीं है। अतः यह विकल्प अन्य विकल्पों से स्पष्ट रूप से भिन्न है।

70. (1) जनगणना 2011 के अनुसार सबसे कम बाल लिंगानुपात वाले जिले
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना को उन क्षेत्रों में प्राथमिकता प्रदान की गई जहां 2011 की जनगणना के अनुसार शून्य से छह वर्ष की आयु के बच्चों का लिंगानुपात अत्यंत चिंताजनक था। इस चयन का मुख्य उद्देश्य उन जिलों में तत्काल हस्तक्षेप करना था जहां कन्या भ्रूण हत्या और भेदभाव की दर सर्वाधिक थी। वैज्ञानिक आंकड़ों पर आधारित यह चुनाव सुनिश्चित करता है कि योजना के संसाधन और सरकारी प्रयास सर्वप्रथम उन संवेदनशील क्षेत्रों में पहुंचें जहां बालिकाओं के अस्तित्व को सबसे अधिक खतरा है।

71. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
महिला शक्ति केंद्र योजना को 'महिलाओं के संरक्षण और सशक्तीकरण मिशन' के एक व्यापक ढांचे के अंतर्गत प्रारंभ किया गया था। इसका अनूठा पहलू यह है कि यह कॉलेज के छात्र स्वयंसेवकों को समाज सेवा के साथ जोड़ती है, जो ब्लॉक स्तर पर जाकर ग्रामीण महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करते हैं। यह योजना सूचना के प्रचार-प्रसार और सरकारी योजनाओं के साथ लाभार्थियों के जुड़ाव को सुगम बनाने का कार्य करती है। यह महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक विकास हेतु एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाती है।

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. राजस्थान के विशिष्ट क्षेत्रों (जैसे गंगानगर और हनुमानगढ़) में निर्वाह खेती से व्यावसायिक खेती की ओर ऐतिहासिक बदलाव मुख्य रूप से किसके द्वारा प्रेरित हुआ था?
(1) प्रिवी पर्स की समाप्ति
(2) विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) की स्थापना
(3) वैश्विक सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में उछाल
(4) इंदिरा गांधी नहर परियोजना (आईजीएनपी) की शुरुआत
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. राज्य के बजट की संरचना के तहत, राजस्व खाते में निम्नलिखित में से क्या शामिल है?
(1) कर/गैर-कर प्राप्तियां और नियमित प्रशासनिक व्यय
(2) राज्य द्वारा वसूल किए गए ऋण और सभी बाजार ऋण
(3) सिंचाई परियोजनाओं और प्रमुख सड़कों पर पूंजीगत परिव्यय
(4) सार्वजनिक खाते का संवितरण और संबंधित राज्य अग्रिम
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. राजस्थान राज्य बजट के राजस्व खाते और पूंजीगत खाते के बीच अंतर करने वाले निम्नलिखित कथनों में से कौन सा गलत है?
(1) राजस्व व्यय के परिणामस्वरूप राज्य के लिए भौतिक या वित्तीय संपत्ति का निर्माण नहीं होता है।
(2) पूंजीगत व्यय विशुद्ध रूप से सरकारी विभागों के दिन-प्रतिदिन के संचालन के लिए होता है।
(3) पूंजीगत प्राप्तियों में बाजार ऋण और केंद्र सरकार से प्राप्त ऋण शामिल हैं।
(4) राजस्व प्राप्तियों में केंद्रीय करों में राज्य का हिस्सा और सहायता अनुदान शामिल हैं।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: राज्य सरकार की पूंजीगत प्राप्तियां हमेशा एक दायित्व पैदा करती हैं या वित्तीय संपत्तियों में कमी लाती हैं।
कथन II: राजस्व प्राप्तियां न तो दायित्व पैदा करती हैं और न ही राज्य सरकार की संपत्तियों में कमी का कारण बनती हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. राजस्थान राज्य बजट के घटकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. राज्य का अपना कर राजस्व
II. ऋणों और अग्रिमों की वसूली
III. केंद्र से सहायता अनुदान
IV. सार्वजनिक ऋण उधार
V. केंद्रीय करों में राज्य का हिस्सा
कौन सा संयोजन राजस्व प्राप्तियों के तत्वों की सही पहचान करता है?
(1) I, II और IV
(2) I, III और V
(3) II, IV और V
(4) I, II, III और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. बजटीय घाटे की अवधारणाओं (सूची I) को उनके संबंधित सूत्रों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (घाटे की अवधारणा)
A. राजस्व घाटा
B. राजकोषीय घाटा
C. प्राथमिक घाटा
D. बजटीय घाटा
सूची II: (सूत्र)
i. कुल व्यय - कुल प्राप्तियां (उधार को छोड़कर)
ii. राजस्व व्यय - राजस्व प्राप्तियां
iii. राजकोषीय घाटा - ब्याज भुगतान
iv. कुल व्यय - कुल प्राप्तियां (उधार सहित)
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. राजस्थान राज्य सरकार के लिए राजस्व के निम्नलिखित स्रोतों में से, कर या गैर-कर राजस्व के रूप में इसके वर्गीकरण के आधार पर भिन्न को पहचानिए।
(1) खानों और खनिजों से रॉयल्टी
(2) राज्य द्वारा दिए गए ऋणों पर ब्याज प्राप्तियां
(3) राज्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों से लाभांश और लाभ
(4) राज्य उत्पाद शुल्क से राजस्व
(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. निम्नलिखित में से कौन पारंपरिक रूप से राजस्थान सरकार के लिए गैर-कर राजस्व का सबसे बड़ा स्रोत है?
(1) वानिकी और वन्य जीव प्राप्तियां
(2) चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राप्तियां
(3) खनन और धातुकर्म रॉयल्टी
(4) पुलिस और जेल सेवा प्राप्तियां
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

38. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
अभिकथन (A): कर राजस्व की तुलना में गैर-कर राजस्व राजस्थान की कुल राजस्व प्राप्तियों का अपेक्षाकृत कम हिस्सा

है।
कारण (R): कई राज्य सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम कम लाभप्रदता पर काम करते हैं, जिससे लाभांश आय सीमित हो जाती है, और सार्वजनिक उपयोगिताओं के लिए उपयोगकर्ता शुल्क अक्सर कल्याणकारी कारणों से कम रखे जाते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

39. राजस्थान के राज्य बजट में निम्नलिखित में से किसे गैर-कर राजस्व प्राप्ति के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है?
(1) ब्याज प्राप्तियां
(2) सामान्य सेवाओं से प्राप्तियां
(3) आर्थिक सेवाओं से प्राप्तियां
(4) स्टाम्प शुल्क और पंजीकरण शुल्क
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. राजस्थान सरकार द्वारा गैर-कर राजस्व जुटाने पर जोर देने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) केंद्रीय कर हस्तांतरण पर निर्भरता कम करने के लिए
(2) अंततः सभी मौजूदा राज्य करों को समाप्त करने के लिए
(3) अधिक अनुदान के लिए राजकोषीय घाटा बढ़ाने के लिए
(4) कराधान पर विश्व बैंक के आदेशों का पालन करने के लिए
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. राजस्थान के राज्य के स्वयं के कर राजस्व के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) भू-राजस्व वर्तमान में राज्य के स्वयं के कर राजस्व में सबसे बड़ा योगदानकर्ता है।
(2) जीएसटी के कार्यान्वयन ने पेट्रोल और शराब पर कर लगाने की राज्य की शक्ति को पूरी तरह समाप्त कर दिया है।
(3) राज्य वस्तु एवं सेवा कर (एसजीएसटी) और विशिष्ट वस्तुओं पर बिक्री कर/वैट, राज्य के स्वयं के कर राजस्व का प्रमुख हिस्सा हैं।
(4) स्टाम्प शुल्क संग्रह में लगातार गिरावट आ रही है और वर्तमान में यह योगदान 1% से भी कम है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. हाल के वर्षों में राज्य के खजाने में उनके योगदान के विशिष्ट अवरोही क्रम में राजस्थान के स्वयं के कर राजस्व के निम्नलिखित घटकों को व्यवस्थित करें:
I. वाहनों पर कर
II. राज्य वस्तु एवं सेवा कर (एसजीएसटी)
III. राज्य उत्पाद शुल्क
(1) I, II, III
(2) II, III, I
(3) III, I, II
(4) II, I, III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: कच्चे तेल, डीजल और पेट्रोल जैसे पेट्रोलियम उत्पाद वर्तमान में राजस्थान में जीएसटी के दायरे से बाहर हैं।
कथन II: राज्य सरकार महत्वपूर्ण कर राजस्व उत्पन्न करने के लिए पेट्रोलियम उत्पादों पर मूल्य वर्धित कर (वैट) लगाना जारी रखती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. राजस्थान में राज्य उत्पाद शुल्क के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह मानव उपभोग के लिए मादक शराब पर लगाया जाता है।
II. यह अफीम, भांग और अन्य नशीले पदार्थों पर भी लगाया जाता है।
III. यह राज्य के स्वयं के कर राजस्व का नगण्य हिस्सा है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. राजस्थान में विशिष्ट कर (सूची I) को उसकी विशेषता (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (कर का प्रकार)
A. स्टाम्प शुल्क
B. राज्य उत्पाद शुल्क
C. एसजीएसटी
D. भू-राजस्व
सूची II: (विशेषता)
i. वस्तुओं और सेवाओं की राज्य के भीतर आपूर्ति पर लगाया जाता है
ii. ऐतिहासिक रूप से कृषि भूमि जोतों पर लगाया जाता है
iii. संपत्ति हस्तांतरण दस्तावेजों के निष्पादन पर लगाया जाता है
iv. शराब के निर्माण और बिक्री पर लगाया जाता है
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Click Here to Buy book on Amazon

46. वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के कार्यान्वयन के साथ, निम्नलिखित में से कौन सा राज्य कर जीएसटी ढांचे में समाहित हो गया था?
(1) मादक शराब पर राज्य उत्पाद शुल्क
(2) स्टाम्प शुल्क और संबंधित पंजीकरण शुल्क
(3) पेट्रोल और डीजल पर कर
(4) मनोरंजन कर (स्थानीय निकायों द्वारा लगाए गए कर को छोड़कर)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. जून 2022 में जीएसटी क्षतिपूर्ति तंत्र की समाप्ति के परिणामस्वरूप राजस्थान पर प्राथमिक राजकोषीय प्रभाव क्या पड़ा है?
(1) राजस्व में कमी क्योंकि विकास की गारंटी समाप्त हो गई
(2) राज्य के एसजीएसटी संग्रह का तत्काल दोगुना होना
(3) जीएसटी संग्रह प्राधिकरण का पूरी तरह से राज्य को हस्तांतरित होना
(4) पेट्रोलियम उत्पादों पर वैट में 10% की वृद्धि
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. राजस्थान के राजस्व पर जीएसटी कार्यान्वयन के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) औपचारिकीकरण के माध्यम से कर आधार का विस्तार
(2) जीएसटी दरों में बदलाव करने की राज्य की एकपक्षीय शक्ति
(3) करों के सोपानकारी प्रभाव का उन्मूलन
(4) गंतव्य-आधारित संग्रह में सुधार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. राजस्थान में जीएसटी राजस्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. एसजीएसटी राजस्व सीधे राज्य की संचित निधि में जमा किया जाता है।
II. राजस्थान को अंतर-राज्यीय व्यापार पर एकत्र किए गए एकीकृत जीएसटी (आईजीएसटी) का एक हिस्सा प्राप्त होता है।
III. जीएसटी परिषद की अध्यक्षता रोटेशन के आधार पर राजस्थान के वित्त मंत्री द्वारा की जाती है।
IV. जीएसटी कार्यान्वयन ने राज्य को राष्ट्रीय आर्थिक मंदी से पूरी तरह सुरक्षित कर दिया है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) III और IV
(3) I, III और IV
(4) II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. 'कर' और 'राजस्थान में जीएसटी के तहत इसकी स्थिति' का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) प्रवेश कर — जीएसटी में समाहित
(2) बिजली शुल्क — जीएसटी में समाहित
(3) विमानन ईंधन (एटीएफ) पर कर — जीएसटी में समाहित
(4) मूल सीमा शुल्क — जीएसटी में समाहित
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

51. भारतीय संविधान का कौन सा अनुच्छेद संघ और राज्यों के बीच केंद्रीय करों की शुद्ध आय के वितरण का आदेश देता है, जो राजस्थान के लिए राजस्व का एक महत्वपूर्ण स्रोत है?
(1) अनुच्छेद 280
(2) अनुच्छेद 275
(3) अनुच्छेद 270
(4) अनुच्छेद 268
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. 15वें वित्त आयोग ने राज्यों के बीच केंद्रीय करों के क्षैतिज वितरण के लिए कई मानदंडों का उपयोग किया। भौगोलिक रूप से राजस्थान जैसे बड़े राज्य को कौन सा मानदंड संरचनात्मक रूप से सबसे अधिक लाभ पहुँचाता है?
(1) जनसांख्यिकीय प्रदर्शन
(2) आय का अंतर
(3) कर और राजकोषीय प्रयास
(4) क्षेत्रफल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. निम्नलिखित में से कौन सा करों के क्षैतिज वितरण के लिए 15वें वित्त आयोग द्वारा उपयोग किया गया मानदंड नहीं था?
(1) वन और पारिस्थितिकी
(2) जनसांख्यिकीय प्रदर्शन
(3) बुनियादी ढांचे का अंतर
(4) क्षेत्रफल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. राजस्थान को होने वाले केंद्रीय हस्तांतरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. कर हस्तांतरण वित्त आयोग के सूत्रों पर आधारित राज्य का एक वैधानिक अधिकार है।
II. अनुच्छेद 275 के तहत सहायता अनुदान विवेकाधीन हैं और वित्त आयोग की सिफारिशों पर आधारित नहीं हैं।
III. केंद्र प्रायोजित योजनाएं (सीएसएस) राज्य को होने वाले केंद्रीय हस्तांतरण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।
IV. केंद्रीय विभाज्य पूल में राजस्थान की प्रतिशत हिस्सेदारी 11वें से 15वें वित्त आयोग तक लगातार बढ़ी है।
V. अधिकांश केंद्र प्रायोजित योजनाओं के लिए राज्य की मिलान हिस्सेदारी अनिवार्य है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, III और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) 7वें से 10वें स्थान के भीतर
राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। प्रचलित मूल्यों पर सकल राज्य घरेलू उत्पाद के आकार के संदर्भ में, यह सामान्यतः भारतीय राज्यों में सातवें से दसवें स्थान के मध्य रहता है। यह रैंकिंग राज्य के निरंतर सुदृढ़ होते आर्थिक आधार को रेखांकित करती है। औद्योगिक चुनौतियों के बावजूद, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में राजस्थान का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली बना हुआ है।

2. (1) केवल कथन I
राजस्थान में स्थिर मूल्यों पर सकल राज्य घरेलू उत्पाद की गणना हेतु आधार वर्ष 2011-12 का प्रयोग किया जाता है। यह मानक वास्तविक आर्थिक वृद्धि के मापन में सहायक है। मुद्रास्फीति के प्रभावस्वरूप, प्रचलित मूल्यों पर वृद्धि दर प्रायः स्थिर मूल्यों की अपेक्षा अधिक रहती है। मुद्रास्फीति उत्पादन के मौद्रिक मूल्य को बढ़ा देती है, जिससे वृद्धि दर सदैव उच्च स्तर पर दिखाई देती है।

3. (3) प्रचलित मूल्यों पर राज्य के जीएसडीपी में औद्योगिक क्षेत्र सबसे बड़ा योगदानकर्ता है।
राजस्थान की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का योगदान प्रचलित और स्थिर दोनों मूल्यों पर सर्वाधिक है। कृषि क्षेत्र द्वितीय प्रमुख योगदानकर्ता है, जबकि औद्योगिक क्षेत्र का स्थान इसके पश्चात आता है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की उच्च हिस्सेदारी इसकी कृषि-प्रधान प्रकृति को स्पष्ट करती है। इन आर्थिक अनुमानों का संकलन और प्रकाशन 'आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय' द्वारा किया जाता है।

4. (3) I और III
राजस्थान में कृषि क्षेत्र मानसून पर अत्यधिक निर्भर है, जिससे इसकी वृद्धि दर में व्यापक उतार-चढ़ाव होता है। पिछले दशक में सेवा क्षेत्र का योगदान निरंतर 40% से अधिक रहा है, जो राज्य की अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करता है। विनिर्माण क्षेत्र औद्योगिक गतिविधियों का हिस्सा है और यह सेवा क्षेत्र पर प्रभावी नहीं है। अतः सेवा क्षेत्र और कृषि के प्रदर्शन संबंधी कथन ही सत्य हैं।

5. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
सकल राज्य घरेलू उत्पाद राज्य की सीमाओं के भीतर उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल बाजार मूल्य है। शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद की गणना सकल मूल्य में से मूल्यह्रास घटाकर की जाती है। प्रति व्यक्ति आय किसी विशिष्ट वर्ष में राज्य की औसत व्यक्तिगत आय को दर्शाती है। स्थिर मूल्यों पर गणना आधार वर्ष का उपयोग करके की जाती है ताकि वास्तविक उत्पादन ज्ञात हो सके।

6. (2) सेवा क्षेत्र
पिछले दो दशकों में राजस्थान की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र ने सर्वाधिक मजबूती और निरंतर विस्तार प्रदर्शित किया है। कृषि और उद्योगों में अस्थिरता के बावजूद, पर्यटन, संचार और व्यापार जैसी सेवाओं ने निरंतर वृद्धि दर्ज की है। वर्तमान में यह क्षेत्र राज्य की कुल आय का लगभग आधा भाग प्रदान करता है। यह संरचनात्मक परिवर्तन अर्थव्यवस्था के प्राथमिक से तृतीयक क्षेत्र की ओर झुकाव को दर्शाता है।

7. (4) वर्षा आधारित कृषि पर उच्च निर्भरता और अनियमित मानसून पैटर्न
राजस्थान में कृषि क्षेत्र की विकास दर में बार-बार होने वाले उतार-चढ़ाव का मुख्य कारण वर्षा पर अत्यधिक निर्भरता है। राज्य का अधिकांश भाग शुष्क है जहाँ सिंचाई के स्थायी साधनों का अभाव है। अनियमित और अनिश्चित मानसून के कारण फसल उत्पादन प्रतिवर्ष परिवर्तित होता रहता है। अनुकूल मानसून आर्थिक वृद्धि को तीव्र करता है, जबकि सूखे की स्थिति में कृषि उत्पादन में भारी गिरावट आती है।

8. (1) बिजली, गैस और जल आपूर्ति
आर्थिक गतिविधियों के वर्गीकरण में बिजली, गैस और जल आपूर्ति को औद्योगिक अथवा द्वितीयक क्षेत्र के अंतर्गत रखा जाता है, न कि सेवा क्षेत्र में। सेवा क्षेत्र, जिसे तृतीयक क्षेत्र भी कहते हैं, में मुख्य रुप से व्यापार, परिवहन, संचार और स्थावर संपदा जैसी गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं। इन क्षेत्रों का अंतर समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि सकल घरेलू उत्पाद की संरचना में प्रत्येक क्षेत्र की चुनौतियाँ भिन्न होती हैं।

9. (1) I, II और IV
राजस्थान के औद्योगिक परिदृश्य में निर्माण क्षेत्र का योगदान प्रायः खनन गतिविधियों से अधिक रहता है। राज्य सीसा और जस्ता जैसे खनिजों के उत्पादन में देश में एकाधिकार रखता है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम राज्य में रोजगार प्रदान करने वाले महत्वपूर्ण आधार हैं। औद्योगिक क्षेत्र का कुल योगदान 50% से कम है, क्योंकि सेवा क्षेत्र का हिस्सा सर्वाधिक है। विनिर्माण और खनन की भूमिका महत्वपूर्ण है।

10. (1) लोक प्रशासन
लोक प्रशासन सेवा क्षेत्र का भाग है, जबकि वानिकी और मत्स्य पालन को प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियों में वर्गीकृत किया जाता है। प्राथमिक क्षेत्र प्रत्यक्ष रुप से प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से संबद्ध होता है। इसके विपरीत, लोक प्रशासन सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली एक महत्वपूर्ण सेवा है, जो तृतीयक क्षेत्र के अंतर्गत आती है। अतः लोक प्रशासन अपनी आर्थिक प्रकृति और वर्गीकरण के कारण अन्य विकल्पों से भिन्न है।

Downloaded from www.pdf.tube

63. राजस्थान में पूंजीगत व्यय के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) बिना किसी उधार के केवल कर राजस्व के माध्यम से वित्तपोषण
(2) भौतिक और वित्तीय संपत्तियों का प्रत्यक्ष निर्माण
(3) विभिन्न स्थानीय निकायों को दिए गए ऋण और अग्रिम
(4) आर्थिक विकास पर सकारात्मक गुणक प्रभाव
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. राजस्थान के दीर्घकालिक विकास में पूंजीगत व्यय की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह राज्य के शुष्क क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे की कमी को पाटने में मदद करता है।
II. यह सीधे तौर पर राज्य के तत्काल राजकोषीय घाटे को कम करता है।
III. यह आवश्यक लॉजिस्टिक सहायता प्रदान करके निजी निवेश को प्रोत्साहित करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) I और III
(3) II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. राजस्थान में निम्नलिखित प्रमुख पूंजीगत बुनियादी ढांचा पहलों (सूची I) को उनके प्राथमिक उद्देश्य (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (पहल)
A. पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना
B. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर नोड्स
C. पीएम मेगा एकीकृत टेक्सटाइल रीजन एंड अपैरल पार्क
D. भदला सोलर पार्क
सूची II: (उद्देश्य)
i. औद्योगिक और विनिर्माण क्लस्टरिंग
ii. सिंचाई और पेयजल आपूर्ति
iii. नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन
iv. विशेष कृषि-वस्त्र निर्यात प्रोत्साहन
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. राजस्थान राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन (एफआरबीएम) अधिनियम के तहत, जीएसडीपी के प्रतिशत के रूप में राजकोषीय घाटे के लिए सामान्यतः निर्धारित सीमा क्या है?
(1) 1.5%
(2) 3.0%
(3) 5.0%
(4) 7.5%
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. राजस्थान राज्य बजट के संदर्भ में राजकोषीय घाटे की सही वैचारिक व्याख्या निम्नलिखित में से कौन सी है?
(1) वित्तीय वर्ष के दौरान बचाई गई कुल धनराशि
(2) कर राजस्व और प्रशासन के बीच का अंतर
(3) राज्य की कुल वार्षिक उधार आवश्यकताएं
(4) बकाया संचित सार्वजनिक ऋण की माप
(5) प्रश्न अनुत्तरित

68. यदि राजस्थान राज्य एक दशक तक मुख्य रूप से राजस्व व्यय द्वारा संचालित उच्च राजकोषीय घाटा लगातार बनाए रखता है, तो इसका सबसे संभावित परिणाम क्या होगा?
(1) पूरे राज्य में तीव्र और निरंतर औद्योगीकरण
(2) केंद्रीय संप्रभु क्रेडिट रेटिंग में सुधार
(3) राज्य की मुद्रास्फीति में स्थाई कमी
(4) ऋण जाल की स्थिति जहाँ नए ऋण पुराने ऋण का ब्याज चुकाने में खर्च हों
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. राजस्थान सरकार अपने सकल राजकोषीय घाटे को वित्तपोषित करने के लिए किन स्रोतों का उपयोग कर सकती है?
I. बाजार ऋण
II. केंद्र सरकार से ऋण
III. आरबीआई के माध्यम से नए नोट छापना
IV. सार्वजनिक खाता प्राप्तियां (लघु बचत, भविष्य निधि)
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

70. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: सकल राजकोषीय घाटा राज्य सरकार की सकल उधारी के बराबर होता है।
कथन II: यदि राज्य अपने राजस्व घाटे को पूरी तरह समाप्त कर देता है, तो उसका राजकोषीय घाटा एक साथ शून्य हो जाएगा।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. यदि राजस्थान सरकार लगातार राजस्व घाटा चलाती है, तो इसका तात्पर्य है कि:
(1) राजस्व प्राप्तियों का पूंजीगत संपत्तियों में रूपांतरण हो रहा है

55. केंद्रीय हस्तांतरण घटक (सूची I) को राजस्थान के संबंध में उसकी विशेषता (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (हस्तांतरण घटक)
A. केंद्रीय करों में हिस्सा
B. अनुच्छेद 275 अनुदान
C. केंद्र प्रायोजित योजनाएं
D. केंद्रीय क्षेत्र की योजनाएं
सूची II: (विशेषता)
i. केंद्र सरकार द्वारा 100% वित्तपोषित और केंद्रीय एजेंसियों द्वारा कार्यान्वित
ii. वित्त आयोग के सूत्र के आधार पर हस्तांतरित बिना शर्त निधि
iii. स्थानीय निकायों या आपदा प्रबंधन जैसे विशिष्ट उद्देश्यों के लिए वैधानिक सहायता अनुदान
iv. केंद्र और राज्य द्वारा संयुक्त रूप से वित्तपोषित (जैसे, 60:40 अनुपात)
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. राजस्थान राज्य बजट के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन आमतौर पर राजस्व व्यय का सबसे बड़ा घटक होता है?
(1) वेतन, मजदूरी और पेंशन
(2) सब्सिडी
(3) भौतिक बुनियादी ढांचे का रखरखाव
(4) स्थानीय निकायों को अनुदान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. राजस्थान में कुल राजस्व प्राप्तियों के प्रतिशत के रूप में उच्च 'प्रतिबद्ध व्यय' (वेतन, पेंशन और ब्याज भुगतान) का सबसे उपयुक्त आर्थिक प्रभाव क्या होता है?
(1) यह नई पूंजीगत संपत्ति बनाने की राज्य की क्षमता को काफी बढ़ाता है।
(2) यह स्वचालित रूप से राजकोषीय घाटे को शून्य कर देता है।
(3) यह विकासात्मक और पूंजीगत व्यय के लिए उपलब्ध राजकोषीय स्थान को गंभीर रूप से सीमित कर देता है।
(4) यह राज्य को एफआरबीएम सीमाओं को दरकिनार करने की अनुमति देता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

58. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
अभिकथन (A): राजस्व व्यय में निरंतर वृद्धि राजस्थान के दीर्घकालिक आर्थिक विकास को प्रतिबंधित करती है।
कारण (R): यह पूंजीगत संपत्ति निर्माण और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए सरकारी संसाधनों का एक छोटा हिस्सा ही छोड़ता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

59. राजस्थान बजट के राजस्व खाते या पूंजीगत खाते के तहत इसके वर्गीकरण के आधार पर निम्नलिखित व्यय मदों में से भिन्न को पहचानिए।
(1) सरकारी शिक्षकों को वेतन का भुगतान
(2) आंतरिक ऋण पर दिया जाने वाला ब्याज
(3) सरकारी अस्पतालों का नियमित रखरखाव
(4) एक नए राज्य राजमार्ग के निर्माण पर व्यय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

60. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: किसानों को बिजली के लिए राजस्थान सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सब्सिडी को राजस्व व्यय के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
कथन II: राजस्व व्यय के परिणामस्वरुप आमतौर पर राज्य की भविष्य की राजस्व-उत्पादन क्षमता में प्रत्यक्ष वृद्धि होती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. राजस्थान राज्य बजट में, निम्नलिखित में से कौन सा व्यय पूर्णतः पूंजीगत व्यय की श्रेणी में आता है?
(1) बाजार ऋणों पर ब्याज का भुगतान
(2) नागरिकों को मुफ्त स्मार्टफोन का वितरण
(3) बाजार ऋणों की मूल राशि का पुनर्भुगतान
(4) सरकारी कार्यालयों के लिए वर्तमान उपयोगिता बिलों का भुगतान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

62. हाल के वर्षों में राजस्थान सरकार के पूंजीगत परिव्यय में उनके हिस्से के विशिष्ट अवरोही क्रम में निम्नलिखित व्यापक क्षेत्रों को व्यवस्थित करें:
I. आर्थिक सेवाएँ (सिंचाई, परिवहन, ऊर्जा)
II. सामाजिक सेवाएँ (शिक्षा, स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा)
III. सामान्य सेवाएँ (पुलिस भवन, प्रशासनिक कार्यालय)
(1) I, II, III
(2) II, I, III
(3) I, III, II
(4) III, I, II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Click Here to Buy book on Amazon

79. राजस्थान राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन (एफआरबीएम) अधिनियम के प्रावधानों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) आपदाओं के दौरान सभी प्रकार की उधारी पर प्रतिबंध
(2) मध्यम अवधि की राजकोषीय नीति का विवरण प्रस्तुत करना
(3) क्रमिक चरणों के माध्यम से राजकोषीय घाटे को कम करना
(4) राजकोषीय अनुशासन और पारदर्शिता लागू करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. वह प्राथमिक तंत्र क्या है जिसके माध्यम से भारत सरकार यह सुनिश्चित करती है कि राजस्थान राज्य एफआरबीएम उधार सीमाओं का पालन करे?
(1) राजकोष में केंद्रीय पुलिस बलों की तैनाती
(2) अनुच्छेद 293(3) के तहत उधार लेने के लिए केंद्र की सहमति
(3) घाटा बढ़ने पर विधानसभा भंग करना
(4) सभी राज्य कर्मचारियों के वेतन पर रोक लगाना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

81. राजस्थान के सार्वजनिक ऋण प्रबंधन के संदर्भ में, राज्य के "आंतरिक ऋण" में शामिल हैं:
(1) विश्व बैंक और आईएमएफ से विदेशी ऋण
(2) बाजार ऋण, वित्तीय उधार और प्रतिभूतियां
(3) केंद्र प्रायोजित योजनाओं के तहत प्राप्त अनुदान
(4) राज्य के वाणिज्यिक बैंकों में जमा सार्वजनिक धन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

82. राजस्थान के कुल बकाया सार्वजनिक ऋण के घटकों के सही क्रम का चयन करें (सबसे बड़े हिस्से से सबसे छोटे हिस्से तक):
(1) केंद्र से ऋण, आंतरिक ऋण, सार्वजनिक खाता देनदारियां
(2) आंतरिक ऋण (बाजार उधार), सार्वजनिक खाता देनदारियां, केंद्र से ऋण
(3) सार्वजनिक खाता देनदारियां, आंतरिक ऋण, केंद्र से ऋण
(4) केंद्र से ऋण, सार्वजनिक खाता देनदारियां, आंतरिक ऋण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

83. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: राज्य विकास ऋण (एसडीएल) बाजार उधार हैं जो राजस्थान सरकार द्वारा आरबीआई की नीलामी के माध्यम से जुटाए जाते हैं।
कथन II: एसडीएल पर ब्याज दरें पूरी तरह से बाजार की ताकतों से स्वतंत्र होती हैं और वित्त आयोग द्वारा तय की जाती हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

84. राजस्थान राज्य सरकार द्वारा दी गई गारंटियों के प्रबंधन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को राज्य द्वारा प्रदान की गई गारंटियां एक आकस्मिक देयता हैं, प्रत्यक्ष ऋण नहीं।
II. यदि कोई उपक्रम गारंटीकृत ऋण पर चूक करता है, तो पुनर्भुगतान का दायित्व राज्य सरकार पर आ जाता है।
III. एफआरबीएम अधिनियम राज्य द्वारा प्रदान की जाने वाली गारंटियों की मात्रा पर कोई सीमा नहीं लगाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

85. राजस्थान सरकार के ऋण/देनदारियों (सूची I) को उनके स्रोतों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (देनदारी का प्रकार)
A. बाजार उधार
B. सार्वजनिक खाता देनदारियां
C. केंद्र से ऋण
D. आकस्मिक देनदारियां
सूची II: (स्रोत/उपकरण)
i. राज्य योजनाओं के लिए ब्लॉक ऋण
ii. राज्य विकास ऋण
iii. राज्य विद्युत बोर्डों को दी गई गारंटी
iv. राज्य भविष्य निधि और आरक्षित निधि
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

86. भारतीय संविधान का कौन सा अनुच्छेद पंचायतों और नगर पालिकाओं की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करने के लिए राजस्थान में राज्य वित्त आयोग के गठन का प्रावधान करता है?
(1) अनुच्छेद 280
(2) अनुच्छेद 243-I और 243-Y
(3) अनुच्छेद 243-G और 243-W
(4) अनुच्छेद 268 और 269
(5) प्रश्न अनुत्तरित

87. वह प्राथमिक कारण क्या है जिसने 73वें और 74वें संविधान संशोधनों के बाद राजस्थान राज्य वित्त आयोग की स्थापना को आवश्यक बना दिया?
(1) राज्य स्तर पर आरबीआई के कार्यों का प्रतिस्थापन

Downloaded from www.pdf.tube

(2) पूंज़ीगत प्राप्तियां पूंज़ीगत परिव्यय से कम हैं
(3) कर आय में राज्य की आत्मनिर्भरता की उपलब्धि हुई है
(4) दिन-प्रतिदिन के नियमित खर्चों के वित्तपोषण के लिए उधार लिया जा रहा है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. निम्नलिखित में से कौन सा कार्य राजस्थान सरकार को अपना राजस्व घाटा कम करने में मदद नहीं करेगा?
(1) नए राजमार्ग निर्माण पर पूंज़ीगत परिव्यय बढ़ाना
(2) अवांछित सब्सिडी को युक्तिसंगत बनाना
(3) कर अनुपालन और संग्रह दक्षता में सुधार करना
(4) गैर-जरूरी प्रशासनिक खर्चों में कटौती करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. राजस्थान के राजस्व घाटे की गणना किस प्रकार की जाती है?
(1) कुल व्यय - कुल प्राप्तियां
(2) राजकोषीय घाटा - ब्याज भुगतान
(3) राजस्व व्यय - राजस्व प्राप्तियां
(4) पूंज़ीगत व्यय - पूंज़ीगत प्राप्तियां
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. राजस्थान में राजस्व घाटे के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. शून्य राजस्व घाटा इंगित करता है कि वर्तमान खर्च पूरी तरह से वर्तमान राजस्व से पूरे किए जा रहे हैं।
II. राजस्थान ने ऐतिहासिक रूप से पिछले दो दशकों में लगातार राजस्व अधिशेष बनाए रखा है।
III. एफआरबीएम अधिनियम राजस्व घाटे को कम करने और समाप्त करने के लिए एक क्रमिक मार्ग का आदेश देता है।
IV. पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) की बहाली के बाद उच्च पेंशन देनदारियां राजस्व घाटे पर दबाव डाल सकती हैं।
V. पूर्ण संख्या में राजस्व घाटा हमेशा राजकोषीय घाटे से अधिक होता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, III और IV
(2) II, IV और V
(3) I, II और III
(4) I, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. घाटे की शब्दावली (सूची I) को राजस्थान के लिए उसके आर्थिक निहितार्थ (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (शब्दावली)
A. राजस्व घाटा
B. राजकोषीय घाटा
C. प्राथमिक घाटा
D. मुद्रीकृत घाटा
सूची II: (आर्थिक निहितार्थ)
i. पुराने ऋण भार को छोड़कर वर्तमान वर्ष के राजकोषीय संचालन को दर्शाता है
ii. सभी स्रोतों से कुल उधार आवश्यकता को दर्शाता है
iii. चालू खाते पर सरकार द्वारा की गई नकारात्मक बचत को दर्शाता है
iv. राज्य सरकारों पर लागू नहीं होता क्योंकि वे मुद्रा नहीं छाप सकते
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. राजस्थान एफआरबीएम अधिनियम ऋण प्रबंधन के लिए लक्ष्य निर्दिष्ट करता है। राज्य के लिए बकाया ऋण-से-जीएसडीपी अनुपात के लिए सामान्यतः स्वीकृत लक्ष्य सीमा क्या है?
(1) 10% से नीचे
(2) 20% से 25% की सीमा
(3) 50% का स्तर
(4) 60% से ऊपर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

77. राजस्थान एफआरबीएम अधिनियम के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) एफआरबीएम का उद्देश्य — राजकोषीय प्रबंधन में अंतर-पीढ़ीगत समानता
(2) राजकोषीय घाटा लक्ष्य — आमतौर पर जीएसडीपी का 3%
(3) राजस्व घाटा लक्ष्य — भारी राजस्व घाटा बनाए रखने का लक्ष्य
(4) पारदर्शिता — विधायिका में व्यापक आर्थिक रूपरेखा विवरण रखने का आदेश
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
अभिकथन (A): राजस्थान एफआरबीएम अधिनियम का उद्देश्य राजकोषीय प्रबंधन में अंतर-पीढ़ीगत समानता सुनिश्चित करना है।
कारण (R): आज उच्च सार्वजनिक ऋण संचय राज्य की भविष्य की पीढ़ियों को उच्च करों और कम विकासात्मक व्यय का बोझ उठाने के लिए मजबूर करता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

A. उच्च शुष्कता
B. गिरता भूजल स्तर
C. बुनियादी ढांचे की कमी
D. संकीर्ण कर आधार

सूची II: (अभिव्यक्ति)

i. उपजाऊ पूर्वी कृषि क्षेत्रों में जलभृतों का अत्यधिक दोहन
ii. केंद्रीय हस्तांतरण और अनुदान पर भारी निर्भरता
iii. पश्चिमी जिलों में फसल गहनता और विविधता को सीमित करना
iv. दूरदराज के क्षेत्रों में विनिर्माण क्लस्टर स्थापित करने में बाधा

(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

96. निम्नलिखित में से भिन्न को पहचानिए, जिसे आमतौर पर राजस्थान के आर्थिक विजन में प्राथमिकता वाले क्षेत्र के रूप में उद्धृत नहीं किया जाता है।

(1) नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता (सौर और पवन) का विस्तार
(2) खुदरा हार्डवेयर बिक्री पर राज्य का एकाधिकार स्थापित करना
(3) पर्यटन को एक मुख्य उद्योग के रूप में बढ़ावा देना
(4) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) का उन्नयन करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

97. ऊर्जा क्षेत्र के लिए राजस्थान के आर्थिक विजन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) 2030 तक सभी नवीकरणीय ऊर्जा संयंत्रों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना
(2) देश में शीर्ष सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता का लक्ष्य रखना
(3) पवन ऊर्जा में निजी क्षेत्र के निवेश पर प्रतिबंध लगाना
(4) तटीय राज्यों से 100% बिजली का आयात करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

98. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और सही उत्तर चुनिए।

अभिकथन (A): राजस्थान सौर और पवन ऊर्जा क्षेत्रों में निवेश को आक्रामक रूप से प्राथमिकता दे रहा है।

कारण (R): राज्य के पास सर्वाधिक साफ़ धूप वाले दिनों और बंजर भूमि के विस्तार के साथ प्राकृतिक भौगोलिक लाभ है।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

99. राजस्थान के आर्थिक विजन के संदर्भ में, राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए आमतौर पर रेखांकित दीर्घकालिक विजन लक्ष्य आकार क्या है?

(1) 1 लाख करोड़ रुपये का स्तर
(2) 5 लाख करोड़ रुपये का स्तर
(3) 15 लाख करोड़ रुपये (लगभग)
(4) 500 अरब रुपये का स्तर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

100. राजस्थान सरकार के आर्थिक विजन और बजटीय प्राथमिकताओं का अंतिम उद्देश्य क्या है?

(1) राज्य के सभी क्षेत्रों में 100% शहरीकरण प्राप्त करना
(2) लाभ के लिए सभी कृषि भूमियों का निगमीकरण करना
(3) उपभोग के वित्तपोषण के लिए आंतरिक ऋण को अधिकतम करना
(4) समावेशी विकास, गरीबी उन्मूलन और सामाजिक समानता
(5) प्रश्न अनुत्तरित

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

(2) अंतर्राष्ट्रीय ग्रामीण विकास ऋणों के लिए बातचीत
(3) राज्य सरकार के सभी विभागों के खातों का ऑडिट करना
(4) स्थानीय निकायों को राजस्व हस्तांतरित करने का तंत्र सुनिश्चित करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

88. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान राज्य वित्त आयोग का कार्य या अधिदेश नहीं है?
(1) भारत के विभिन्न राज्यों के बीच केंद्रीय करों के क्षैतिज वितरण की सिफारिश करना
(2) राज्य और स्थानीय निकायों के बीच राज्य करों की शुद्ध आय के वितरण की सिफारिश करना
(3) उन करों, टोल और फीसों को निर्धारित करना जो स्थानीय निकायों को सौंपे जा सकते हैं
(4) राज्य की संचित निधि से पंचायतों और नगर पालिकाओं को सहायता अनुदान की सिफारिश करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

89. स्थानीय निकायों को हस्तांतरण के संबंध में राजस्थान राज्य वित्त आयोग द्वारा की गई सिफारिशों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. हस्तांतरण के लिए राज्य के स्वयं के शुद्ध कर राजस्व के एक विशिष्ट प्रतिशत की सिफारिश की जाती है।
II. हस्तांतरित राशि को जनसंख्या के आधार पर पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों के बीच वितरित किया जाता है।
III. पंचायती राज संस्थाओं के बीच वितरण में ग्राम पंचायतों को अधिक महत्व दिया जाता है।
IV. स्थानीय निकायों को अपना स्वयं का गैर-कर राजस्व उत्पन्न करने से स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित किया गया है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

90. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थान के छठे राज्य वित्त आयोग के संबंध में सही है?
(1) इसका गठन श्री प्रद्युम्न सिंह की अध्यक्षता में किया गया था।
(2) इसने शहरी स्थानीय निकायों को सभी वित्तीय सहायता रोकने की सिफारिश की।
(3) इसने सुझाव दिया कि स्थानीय निकाय विशेष रूप से केंद्रीय अनुदानों पर निर्भर रहें।
(4) इसकी सिफारिशें राज्य विधायिका के लिए पूरी तरह बाध्यकारी हैं।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

91. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान की अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ी संरचनात्मक व्यापक आर्थिक चुनौती है?
(1) अति-औद्योगीकरण जिससे गंभीर शहरी प्रदूषण हो रहा है
(2) बैंक ऋण को दर्शाने वाला उच्च ऋण-जमा अनुपात
(3) बारहमासी नदी प्रणालियाँ जिससे बार-बार बाढ़ आती है
(4) कम योगदान देने वाली कृषि पर कार्यबल की अत्यधिक निर्भरता
(5) प्रश्न अनुत्तरित

92. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: राजस्थान की सूखे पर निर्भरता कृषि जीएसडीपी विकास में गंभीर वार्षिक अस्थिरता का कारण बनती है।
कथन II: कृषि में अस्थिरता, कच्चे माल की आपूर्ति को बाधित करके द्वितीयक क्षेत्र को भी प्रभावित करती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

93. राजस्थान में बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण की ऐतिहासिक रूप से कम दर इसकी आर्थिक जनसांख्यिकी को कैसे प्रभावित करती है?
(1) इससे संगठित विनिर्माण क्षेत्र में बहुत उच्च रोजगार लोच पैदा होती है।
(2) यह कृषि क्षेत्र में प्रच्छन्न बेरोजगारी को पूरी तरह समाप्त कर देता है।
(3) यह युवाओं के एक बड़े हिस्से को रोजगार के लिए दूसरे राज्यों में पलायन करने को मजबूर करता है।
(4) इसके परिणामस्वरूप शहरी क्षेत्रों के पक्ष में विषम महिला श्रम भागीदारी दर होती है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

94. राजस्थान में तीव्र औद्योगिक विकास में बाधक कारकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. जल संसाधनों की कमी
II. प्रमुख बंदरगाहों से दूरी
III. खनिज संपदा का अभाव
IV. पड़ोसी राज्यों की तुलना में बिजली की उच्च लागत
V. उच्च कुशल तकनीकी जनशक्ति की कमी
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, IV और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

95. राजस्थान की विशिष्ट आर्थिक चुनौती (सूची I) को उसकी क्षेत्रीय अभिव्यक्ति (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (चुनौती)

11. (4) स्थिर पीसीआई के लिए आधार वर्ष — 2011-12
राजस्थान में स्थिर मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय की गणना हेतु वर्तमान में 2011-12 को आधार वर्ष माना गया है। यह मानक वास्तविक आय में सुधार को मापने हेतु मुद्रास्फीति के प्रभाव को हटा देता है। ऐतिहासिक रूप से, राजस्थान की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से कम रही है। इसकी गणना शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद को कुल जनसंख्या से विभाजित करके की जाती है, जो जीवन स्तर का मापदंड है।

12. (2) प्रचलित मूल्यों पर जीएसडीपी, प्रचलित मूल्यों पर एनएसडीपी, स्थिर मूल्यों पर जीएसडीपी, स्थिर मूल्यों पर एनएसडीपी
प्रचलित मूल्यों पर सकल राज्य घरेलू उत्पाद सर्वाधिक होता है क्योंकि इसमें मुद्रास्फीति सम्मिलित होती है। इसके पश्चात प्रचलित मूल्यों पर शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद आता है, जो मूल्यह्रास घटाने के बाद प्राप्त होता है। स्थिर मूल्यों पर ये आंकड़े सदैव कम होते हैं क्योंकि वे आधार वर्ष की कीमतों पर आधारित होते हैं। इन चारों संकेतकों में स्थिर मूल्यों पर शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद न्यूनतम होता है।

13. (3) राजस्थान की पीसीआई आमतौर पर राष्ट्रीय औसत से कम है।
ऐतिहासिक आंकड़ों के अनुसार राजस्थान की प्रति व्यक्ति आय प्रायः भारत के राष्ट्रीय औसत से न्यून रही है। राज्य ने आर्थिक विकास में प्रशंसनीय प्रगति की है, परंतु उच्च जनसंख्या वृद्धि दर और कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के कारण यह अंतर बना हुआ है। यद्यपि राजस्थान कई राज्यों की तुलना में बेहतर है, फिर भी राष्ट्रीय औसत तक पहुँचने हेतु औद्योगिक और सेवा क्षेत्र का विस्तार आवश्यक है।

14. (2) II और V
प्रचलित मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि सदैव जीवन स्तर में वास्तविक सुधार नहीं दर्शाती, क्योंकि यह केवल कीमतों में वृद्धि का परिणाम हो सकती है। इसी प्रकार, प्रति व्यक्ति आय एक औसत आंकड़ा है जो राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य व्याप्त आय की असमानता को उजागर नहीं करता है। शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद और जनसंख्या का उपयोग करके इसकी गणना करना एक सांख्यिकीय तथ्य है।

15. (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
पश्चिमी शुष्क क्षेत्र अपनी कठिन जलवायु के कारण पशुपालन पर निर्भर है। इसके विपरीत, पूर्वी मैदानी भाग उर्वर मृदा और जल की उपलब्धता के कारण उच्च कृषि उत्पादकता हेतु प्रसिद्ध है। दक्षिणी जनजातीय क्षेत्रों में जीवन निर्वाह हेतु कृषि और वन उत्पादों का विशेष महत्व है। अरावली पर्वतीय क्षेत्र अपनी प्रचुर खनिज संपदा हेतु जाना जाता है, जहाँ खनन मुख्य आर्थिक गतिविधि के रूप में विद्यमान है।

16. (2) शुष्क भूमि कृषि, वन-चरागाह और पशुपालन पर ध्यान केंद्रित करना
पश्चिमी राजस्थान में जल संसाधनों की अत्यधिक कमी और शुष्क जलवायु को देखते हुए वहाँ खेती के पारंपरिक तरीकों के स्थान पर शुष्क भूमि कृषि और पशुपालन पर ध्यान देना श्रेयस्कर है। गन्ने जैसी अधिक जल की खपत वाली फसलों को प्रोत्साहन देना पारिस्थितिक तंत्र हेतु हानिकारक हो सकता है। अतः वन-चरागाह विकास और पशुधन आधारित अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना ही इस क्षेत्र हेतु स्थायी रणनीति है।

17. (2) बाजरा, मोठ और ग्वार
बाजरा, मोठ और ग्वार राजस्थान के शुष्क पश्चिमी भाग की मुख्य फसलें हैं। ये फसलें न्यून वर्षा और उच्च तापमान में भी जीवित रहने की क्षमता रखती हैं, जो इस क्षेत्र की जलवायु के अनुकूल है। इसके विपरीत, गेहूँ, चावल और गन्ना जैसी फसलों हेतु अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है, जो मरुस्थलीय जिलों में अत्यंत सीमित है। ये पारंपरिक फसलें खाद्य सुरक्षा और चारा प्रदान करती हैं।

18. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में न्यून वर्षा और बारहमासी नदियों के अभाव के कारण सिंचाई सुविधाएँ अत्यंत सीमित हैं। फलस्वरूप यहाँ प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पादकता पूर्वी जिलों की तुलना में काफी कम रहती है। पूर्वी राजस्थान में बेहतर जल उपलब्धता और उर्वर मृदा उत्पादकता बढ़ाने में सहायक होती है। अतः भौगोलिक और पर्यावरणीय कारक सीधे तौर पर कृषि उत्पादन की क्षेत्रीय असमानता हेतु उत्तरदायी हैं।

19. (3) निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा का लाभ उठाना
पश्चिमी राजस्थान में सौर और पवन ऊर्जा की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं। इस प्राकृतिक लाभ का उपयोग करके राज्य सरकार वृहद स्तर पर निवेश आकर्षित कर सकती है और क्षेत्रीय असमानता को न्यून कर सकती है। ऊर्जा क्षेत्र में विकास न केवल नवीन रोजगार सृजित करेगा, अपितु आधारभूत ढांचे में भी सुधार लाएगा। यह रणनीति कृषि पर निर्भरता घटाने और शुष्क क्षेत्रों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु उपयुक्त है।

20. (4) स्वतंत्रता के बाद की आर्थिक योजना ने शुरुआत में सड़क, बिजली और सिंचाई जैसी बुनियादी सुविधाओं के निर्माण पर भारी ध्यान केंद्रित किया।
स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राजस्थान की आर्थिक स्थिति चुनौतीपूर्ण थी और आधारभूत सुविधाओं का नितांत अभाव था। शुरुआती दशकों में सरकार ने सड़क निर्माण, विद्युत आपूर्ति और सिंचाई परियोजनाओं को प्राथमिकता दी ताकि भविष्य के विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके। जागीरदारी जैसी सामंती व्यवस्थाओं को समाप्त करने में समय लगा और औद्योगिक आधार भी क्षीण था। अतः प्रारंभिक योजनाओं का केंद्र आधारभूत ढांचा विस्तार था।

21. (2) लगभग 5-6%
राष्ट्रीय स्तर पर भारत के सकल घरेलू उत्पाद में राजस्थान का योगदान लगभग 5% से 6% के मध्य रहता है। यह हिस्सेदारी राज्य की भौगोलिक स्थिति और इसके प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों जैसे खनिज, कृषि और पर्यटन के प्रदर्शन को दर्शाती है। यद्यपि यह शीर्ष योगदानकर्ताओं में सम्मिलित नहीं है, किंतु उत्तर भारतीय

Downloaded from www.pdf.tube

पेट्रोलियम उत्पादों पर वैट लगाकर वृहद मात्रा में राजस्व एकत्र करती है, जो राज्य के बजट का अनिवार्य भाग है। यह व्यवस्था राज्य को वित्तीय लचीलापन प्रदान करती है, विशेषकर जब स्वयं के कर स्रोतों से आय बढ़ानी हो।

44. (1) I और II
राज्य उत्पाद शुल्क मुख्य रूप से मानव उपभोग हेतु मादक मदिरा पर लगाया जाता है। इसके अतिरिक्त, अफीम और भांग जैसे अन्य नशीले पदार्थों पर भी यह कर प्रभावी है। यह राज्य के स्वयं के कर राजस्व का अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है, न कि नगण्य। उत्पाद शुल्क से प्राप्त आय राज्य के सार्वजनिक व्यय को वित्तपोषित करने में बड़ी भूमिका निभाती है। अतः मदिरा और नशीले पदार्थों संबंधी कथन सत्य हैं।

45. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
स्टाम्प शुल्क संपत्ति हस्तांतरण प्रलेखों पर लगाया जाता है, जबकि राज्य उत्पाद शुल्क मदिरा के निर्माण और बिक्री पर आधारित है। एसजीएसटी राज्य के भीतर वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति पर लागू होता है। भू-राजस्व ऐतिहासिक रूप से कृषि भूमि के स्वामित्व पर आधारित एक पारंपरिक कर रहा है। इन विभिन्न करों का अपना विशिष्ट आधार है, जो सामूहिक रूप से राजस्थान सरकार के कर ढांचे को निर्मित करते हैं।

46. (4) मनोरंजन कर (स्थानीय निकायों द्वारा लगाए गए कर को छोड़कर)
जीएसटी के कार्यान्वयन के साथ ही कई राज्य स्तरीय कर इसमें समाहित हो गए, जिनमें स्थानीय निकायों द्वारा आरोपित करों को छोड़कर मनोरंजन कर भी शामिल था। इसके विपरीत, मदिरा पर उत्पाद शुल्क और पेट्रोलियम उत्पादों पर वैट को जीएसटी से पृथक रखा गया है ताकि राज्यों की आय सुरक्षित रहे। स्टाम्प शुल्क और पंजीकरण शुल्क भी स्वतंत्र कर स्रोत बने हुए हैं और जीएसटी का भाग नहीं हैं।

47. (1) राजस्व में कमी क्योंकि विकास की गारंटी समाप्त हो गई
जून 2022 में जीएसटी क्षतिपूर्ति व्यवस्था की समाप्ति का राजस्थान पर मुख्य प्रभाव राजस्व में संभावित कमी के रूप में पड़ा है, क्योंकि अब 14% वृद्धि की केंद्र द्वारा प्रदत्त गारंटी समाप्त हो गई है। पूर्व में राज्य को होने वाले किसी भी राजस्व नुकसान की प्रतिपूर्ति केंद्र द्वारा की जाती थी। अब राज्य को अपने स्वयं के कर संग्रह और दक्षता पर अधिक निर्भर रहना होगा, जो एक राजकोषीय चुनौती है।

48. (2) जीएसटी दरों में बदलाव करने की राज्य की एकपक्षीय शक्ति
जीएसटी लागू होने से कर आधार का विस्तार हुआ है और करों के दोहरे प्रभाव को समाप्त करने में सहायता मिली है। हालांकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि राज्य सरकार के पास जीएसटी दरों को परिवर्तित करने की एकपक्षीय शक्ति है। दरें और नियम केवल जीएसटी परिषद द्वारा निर्धारित किए जाते हैं, जहाँ केंद्र और समस्त राज्यों की सामूहिक सहमति अनिवार्य है। राजस्थान अकेले कोई भी दर नहीं बदल सकता।

49. (2) III और IV
जीएसटी परिषद की अध्यक्षता सदैव केंद्रीय वित्त मंत्री द्वारा की जाती है, न कि राज्यों के मंत्रियों द्वारा। इसके अतिरिक्त, जीएसटी लागू होने से अर्थव्यवस्था पूर्णतः मंदी से सुरक्षित नहीं हो जाती; यदि उपभोग घटता है, तो कर संग्रह भी न्यून होगा। हालांकि, एसजीएसटी का राज्य की संचित निधि में जाना और आईजीएसटी का अंश प्राप्त करना पूर्णतः सही तथ्य हैं। अतः परिषद अध्यक्षता संबंधी कथन असत्य है।

NODIA

50. (1) प्रवेश कर — जीएसटी में समाहित
प्रवेश कर उन प्रमुख करों में से एक था जिन्हें जीएसटी के आगमन के पश्चात इसमें पूर्णतः समाहित कर दिया गया था। इसके विपरीत, बिजली शुल्क और विमानन ईंधन पर आरोपित कर वर्तमान में जीएसटी से बाहर रखे गए हैं और राज्य सरकारें इन पर स्वतंत्र रूप से कर लगाती हैं। बुनियादी सीमा शुल्क एक केंद्रीय कर है जिसे जीएसटी में शामिल नहीं किया गया है। अतः प्रवेश कर ही सही विकल्प है।

51. (3) अनुच्छेद 270
भारतीय संविधान के अनुच्छेद 270 के अंतर्गत केंद्रीय करों से प्राप्त शुद्ध आय को केंद्र और राज्यों के मध्य साझा किया जाता है। राजस्थान हेतु यह हिस्सा राजस्व का अत्यंत महत्वपूर्ण और वृहद स्रोत है। इस वितरण की मात्रा और पद्धति प्रत्येक पाँच वर्ष में गठित होने वाले वित्त आयोग की अनुशंसाओं पर आधारित होती है। यह संवैधानिक प्रावधान राजकोषीय संघवाद को सुदृढ़ करता है जिससे राज्यों को वित्तीय सुरक्षा मिलती है।

52. (4) क्षेत्रफल
15वें वित्त आयोग ने करों के वितरण हेतु 'क्षेत्रफल' को एक महत्वपूर्ण मापदंड माना है, जिससे राजस्थान जैसे भौगोलिक रूप से विशाल राज्य को लाभ होता है। वृहद क्षेत्रफल का अर्थ है कि वहाँ आधारभूत सुविधाएँ पहुँचाने की लागत अधिक होती है, और यह मापदंड इस अतिरिक्त वित्तीय बोझ को संतुलित करने में सहायक है। राजस्थान का विशाल मरुस्थलीय क्षेत्र उसे क्षेत्रफल के आधार पर अधिक हिस्सेदारी दिलाता है।

53. (3) बुनियादी ढांचे का अंतर
15वें वित्त आयोग द्वारा राज्यों के मध्य करों के बंटवारे हेतु क्षेत्रफल, जनसंख्या, आय का अंतर और वन क्षेत्र जैसे मानदंडों का प्रयोग किया गया। 'बुनियादी ढांचे के अंतर' को इस वितरण सूत्र में प्रत्यक्ष मानदंड के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया था। आयोग इन अन्य कारकों के आधार पर धन हस्तांतरण करता है ताकि राज्यों की वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके। यह वितरण पद्धति महत्वपूर्ण है।

54. (2) I, III और V
राजस्थान को मिलने वाले केंद्रीय हस्तांतरण में करों का हिस्सा एक विधिक अधिकार है, जबकि केंद्र प्रायोजित योजनाएं विकास का साधन हैं। इन योजनाओं में अक्सर राज्य को 40% तक की मिलान राशि देनी पड़ती है। अनुच्छेद 275 के तहत प्राप्त अनुदान भी विधिक होते हैं और वित्त आयोग की सलाह

व्यय प्रयुक्त होता है। पूंजीगत प्राप्तियों में उधार ली गई राशि शामिल होती है, जबकि राजस्व प्राप्तियों में कर और सहायता अनुदान आते हैं। यह अंतर राजकोषीय अनुशासन हेतु अनिवार्य है।

33. (3) कथन I और कथन II दोनों
पूंजीगत प्राप्तियाँ ऐसी आय हैं जो या तो सरकार पर भविष्य में ऋण अदायगी का दायित्व सृजित करती हैं, अथवा उसकी संपत्तियों में कमी लाती हैं। इसके विपरीत, राजस्व प्राप्तियाँ वे नियमित आय हैं, जैसे कर और शुल्क, जो न तो किसी प्रकार की देनदारी बढ़ाती हैं और न ही राज्य की संपत्तियों को कम करती हैं। ये दोनों कथन सरकारी लेखांकन के मूलभूत सिद्धांतों को सही ढंग से परिभाषित करते हैं।

34. (2) I, III और V
राजस्व प्राप्तियों में वे सभी आय सम्मिलित होती हैं जो सरकार पर कोई ऋण दायित्व निर्मित नहीं करतीं। इसमें राज्य का अपना कर राजस्व, केंद्र सरकार से प्राप्त सहायता अनुदान और केंद्रीय करों में राज्य का हिस्सा शामिल है। ऋणों की वसूली और सार्वजनिक उधारी को पूंजीगत प्राप्तियों में गिना जाता है क्योंकि वे संपत्तियों अथवा देनदारियों को प्रभावित करते हैं। अतः कर राजस्व और अनुदान ही राजस्व प्राप्तियाँ हैं।

35. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
राजस्व घाटा तब होता है जब राजस्व व्यय उसकी प्राप्तियों से अधिक हो जाता है। राजकोषीय घाटा राज्य की कुल उधारी आवश्यकताओं को दर्शाता है, जो कुल व्यय और गैर-ऋण प्राप्तियों का अंतर है। प्राथमिक घाटा राजकोषीय घाटे में से पुराने ऋणों पर देय ब्याज को घटाकर प्राप्त होता है। बजटीय घाटा कुल व्यय और समस्त प्राप्तियों के मध्य का अंतर है। ये माप वित्तीय स्थिति का सटीक विश्लेषण करते हैं।

36. (4) राज्य उत्पाद शुल्क से राजस्व
राजस्थान सरकार के राजस्व स्रोतों में राज्य उत्पाद शुल्क एक महत्वपूर्ण कर राजस्व है, क्योंकि यह मदिरा और नशीले पदार्थों के निर्माण पर आरोपित अनिवार्य कर है। दूसरी ओर, खनिजों से प्राप्त रॉयल्टी, ऋणों पर ब्याज प्राप्तियाँ और सरकारी उपक्रमों से प्राप्त लाभांश गैर-कर राजस्व की श्रेणी में आते हैं। गैर-कर राजस्व वह आय है जो सरकार अपनी सेवाओं के बदले प्राप्त करती है। उत्पाद शुल्क एक कर है।

37. (3) खनन और धातुकर्म रॉयल्टी
राजस्थान अपनी समृद्ध खनिज संपदा हेतु विख्यात है, और खनन से प्राप्त होने वाली रॉयल्टी राज्य के गैर-कर राजस्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत है। यद्यपि वन उत्पादों, स्वास्थ्य सेवाओं और ब्याज से भी आय होती है, परंतु खनिजों का योगदान इन सबसे कहीं अधिक है। यह राजस्व राज्य की राजकोषीय स्थिति को सुदृढ़ करता है और करों के अतिरिक्त सरकार के पास उपलब्ध वित्तीय संसाधनों का बड़ा भाग है।

38. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान की कुल राजस्व प्राप्तियों में गैर-कर राजस्व का हिस्सा करों की तुलना में काफी न्यून रहता है। इसका मुख्य कारण यह है कि अधिकांश सार्वजनिक उपक्रम कम लाभ पर कार्य करते हैं और जन-कल्याण हेतु सरकारी सेवाओं के शुल्क को कम रखा जाता है। इसके अतिरिक्त, राज्य की आय का बड़ा भाग प्रत्यक्ष करों और केंद्रीय हस्तांतरण से प्राप्त होता है। अतः अभिकथन और तर्क दोनों सही हैं।

39. (4) स्टाम्प शुल्क और पंजीकरण शुल्क
स्टाम्प शुल्क और पंजीकरण शुल्क राजस्थान सरकार के स्वयं के कर राजस्व का भाग हैं। ये अनिवार्य शुल्क विधिक प्रलेखों और संपत्ति के हस्तांतरण पर लगाए जाते हैं। दूसरी ओर, ब्याज प्राप्तियाँ और आर्थिक सेवाओं से होने वाली आय को गैर-कर राजस्व के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। गैर-कर राजस्व वह धन है जो सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के बदले मिलता है। स्टाम्प शुल्क एक कर है।

40. (1) केंद्रीय कर हस्तांतरण पर निर्भरता कम करने के लिए
राजस्थान सरकार द्वारा गैर-कर राजस्व बढ़ाने का प्राथमिक उद्देश्य केंद्र सरकार से प्राप्त कर हस्तांतरण और अनुदानों पर अपनी अत्यधिक निर्भरता को न्यून करना है। स्वयं के गैर-कर स्रोतों, जैसे खनन रॉयल्टी और उपयोगकर्ता शुल्क को सुदृढ़ करके राज्य अधिक वित्तीय स्वायत्तता प्राप्त कर सकता है। इससे राज्य को अपनी विशिष्ट स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार व्यय करने और विकास परियोजनाओं को तीव्रता से लागू करने में सहायता मिलती है।

41. (3) राज्य वस्तु एवं सेवा कर (एसजीएसटी) और विशिष्ट वस्तुओं पर बिक्री कर/वैट, राज्य के स्वयं के कर राजस्व का प्रमुख हिस्सा हैं।
राजस्थान के कर राजस्व में राज्य वस्तु एवं सेवा कर और पेट्रोलियम व मदिरा जैसी विशिष्ट वस्तुओं पर आरोपित वैट प्रमुख योगदानकर्ता हैं। जीएसटी लागू होने के पश्चात भी राज्य सरकारें इन चुनिंदा वस्तुओं पर कर लगाकर अपनी आय सुरक्षित रखती हैं। यद्यपि स्टाम्प शुल्क भी महत्वपूर्ण है, परंतु भू-राजस्व का योगदान अब न्यून हो गया है। वर्तमान कर संरचना मुख्य रूप से उपभोग आधारित करों पर आधारित है।

42. (2) II, III, I
राजस्थान के स्वयं के कर राजस्व में सर्वाधिक हिस्सा राज्य वस्तु एवं सेवा कर से प्राप्त होता है, जो व्यापक उपभोग पर आधारित है। इसके पश्चात राज्य उत्पाद शुल्क का स्थान आता है, जो मदिरा की बिक्री से होने वाली महत्वपूर्ण आय है। वाहनों पर लगने वाला कर भी एक प्रमुख स्रोत है, परंतु इसका कुल योगदान जीएसटी और उत्पाद शुल्क की तुलना में कम रहता है। अतः एसजीएसटी शीर्ष पर है।

43. (3) कथन I और कथन II दोनों
कच्चा तेल, पेट्रोल और डीजल वर्तमान में जीएसटी के दायरे से बाहर हैं, जिससे राज्य सरकारों को इन पर अपना मूल्य वर्धित कर लगाने की स्वायत्तता मिलती है। राजस्थान सरकार इन

Click Here to Buy book on Amazon

87. (4) स्थानीय निकायों को राजस्व हस्तांतरित करने का तंत्र सुनिश्चित करना
राजस्थान में राज्य वित्त आयोग की स्थापना का मुख्य उद्देश्य स्थानीय निकायों को राज्य राजस्व में उनका उचित अंश प्रदान करने हेतु एक पारदर्शी तंत्र विकसित करना है। 73वें और 74वें संशोधनों ने इन निकायों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया, जिससे उनकी वित्तीय सुदृढ़ता अनिवार्य हो गई। यह आयोग निर्धारित करता है कि राज्य करों का कितना प्रतिशत स्थानीय सरकारों को हस्तांतरित किया जाए ताकि वे स्थानीय विकास प्रभावी ढंग से कर सकें।

88. (1) भारत के विभिन्न राज्यों के बीच केंद्रीय करों के क्षैतिज वितरण की सिफारिश करना
राज्य वित्त आयोग का कार्यक्षेत्र केवल राज्य और उसके स्थानीय निकायों तक सीमित है। केंद्रीय करों का राज्यों के मध्य वितरण करना भारत के केंद्रीय वित्त आयोग का कार्य है। राज्य वित्त आयोग मुख्य रूप से राज्य करों की शुद्ध आय का बंटवारा करने, स्थानीय निकायों के करों को निर्धारित करने तथा राज्य की संचित निधि से उन्हें सहायता अनुदान देने की अनुशंसा करता है। इसका लक्ष्य स्थानीय वित्तीय स्वायत्तता बढ़ाना है।

89. (1) I, II और III
राज्य वित्त आयोग राज्य के शुद्ध कर राजस्व का एक निश्चित प्रतिशत स्थानीय निकायों को देने और उसे जनसंख्या के आधार पर ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में विभाजित करने की सलाह देता है। पंचायतों में ग्राम पंचायतों को प्राथमिकता दी जाती है। इसके अतिरिक्त, आयोग स्थानीय निकायों को अपने स्वयं के संसाधन जुटाने हेतु प्रोत्साहित करता है। अतः राजस्व साझाकरण और वितरण आधार से संबंधित प्रथम तीन कथन पूर्णतः सत्य हैं।

90. (1) इसका गठन श्री प्रद्युम्न सिंह की अध्यक्षता में किया गया था।
राजस्थान के छठे राज्य वित्त आयोग का गठन श्री प्रद्युम्न सिंह की अध्यक्षता में किया गया था। इस आयोग का मुख्य उत्तरदायित्व राज्य के वित्तीय संसाधनों का पंचायतों और शहरी स्थानीय निकायों के मध्य न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करना है। यह आयोग स्थानीय शासन को सुदृढ़ करने हेतु सुझाव देता है ताकि वे केवल केंद्रीय अनुदानों पर आश्रित न रहें। इसकी अनुशंसाएं ग्रामीण और शहरी विकास की वित्तीय रूपरेखा हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

91. (4) कम योगदान देने वाली कृषि पर कार्यबल की अत्यधिक निर्भरता
राजस्थान की अर्थव्यवस्था के समक्ष प्रमुख संरचनात्मक चुनौती यह है कि इसकी कार्यशक्ति का वृहद भाग अभी भी कृषि पर निर्भर है, जबकि सकल राज्य घरेलू उत्पाद में इस क्षेत्र का योगदान न्यून है। यह स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों में अल्प आय और प्रच्छन्न बेरोजगारी को जन्म देती है। कृषि से अन्य उत्पादक क्षेत्रों की ओर श्रम का स्थानांतरण न होना विकास की गति को बाधित करता है, जो एक गंभीर आर्थिक मुद्दा है।

92. (3) कथन I और कथन II दोनों
राजस्थान में सूखे की पुनरावृत्ति के कारण कृषि उत्पादन और उसकी विकास दर में भारी अनिश्चितता बनी रहती है। चूंकि राज्य के अनेक उद्योग कच्चे माल हेतु कृषि पर आश्रित हैं, अतः कृषि क्षेत्र में गिरावट का प्रत्यक्ष नकारात्मक प्रभाव औद्योगिक और सेवा क्षेत्र पर भी पड़ता है। यह अंतर-क्षेत्रीय जुड़ाव संपूर्ण अर्थव्यवस्था को अस्थिर करता है। अतः मानसून की अनिश्चितता और उसके व्यापक आर्थिक प्रभाव संबंधी दोनों कथन सत्य हैं।

93. (3) यह युवाओं के एक बड़े हिस्से को रोजगार के लिए दूसरे राज्यों में पलायन करने को मजबूर करता है।
राजस्थान में औद्योगिक विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी होने के कारण संगठित क्षेत्र में रोजगार के पर्याप्त अवसर सृजित नहीं हो रहे हैं। इसका सीधा परिणाम यह है कि राज्य के शिक्षित और कुशल युवाओं के बड़े भाग को आजीविका हेतु अन्य समृद्ध राज्यों की ओर पलायन करना पड़ता है। यह स्थिति न केवल राज्य की मानव पूंजी को कम करती है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना पर भी गहरा प्रभाव डालती है।

NODIA

94. (1) I, II, IV और V
राजस्थान में औद्योगिक विकास के मार्ग में मुख्य बाधाएं जल संसाधनों की न्यूनता, समुद्र तट से दूरी और औद्योगिक इकाइयों हेतु विद्युत की उच्च लागत हैं। साथ ही, उच्च कुशल तकनीकी श्रम का अभाव भी वृहद उद्योगों को आकर्षित करने में बाधक है। खनिजों की कमी कोई कारण नहीं है क्योंकि राजस्थान खनिज संपदा में अत्यंत समृद्ध है। अतः भौगोलिक और ढांचागत चुनौतियां ही राज्य की औद्योगिक क्षमता प्राप्ति में बाधक हैं।

95. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
पश्चिमी राजस्थान में उच्च शुष्कता फसल विविधता को सीमित करती है, जबकि उर्वर पूर्वी भागों में भूजल का अति-दोहन गंभीर समस्या है। दूरदराज के क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे का अभाव नवीन कारखाने लगाने में बाधक है। कर आधार सीमित होने के कारण राज्य को व्यय हेतु केंद्रीय हस्तांतरण पर अधिक निर्भर रहना पड़ता है। यह मिलान राजस्थान की विभिन्न भौगोलिक और संरचनात्मक समस्याओं को उनके आर्थिक परिणामों के साथ जोड़ता है।

96. (2) खुदरा हार्डवेयर बिक्री पर राज्य का एकाधिकार स्थापित करना
राजस्थान के आर्थिक दृष्टिकोण में सौर ऊर्जा विस्तार, पर्यटन को मुख्य उद्योग बनाना और लघु उद्योगों का उन्नयन करना प्राथमिकताएं हैं। हालांकि, खुदरा हार्डवेयर बिक्री पर सरकारी एकाधिकार स्थापित करना इस दृष्टिकोण का भाग नहीं है क्योंकि राज्य की नीतियां मुक्त बाजार और निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने वाली हैं। सरकार का ध्यान व्यवसाय संचालन के स्थान पर विकास हेतु अनुकूल वातावरण निर्मित करने पर है। अतः एकाधिकार असंगत है।

पर दिए जाते हैं। अतः करों की हिस्सेदारी और साझा योजनाएं मिलकर राज्य के विकास का आधार बनाती हैं।

55. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
केंद्रीय करों में हिस्सा बिना किसी शर्त के हस्तांतरित की जाने वाली राशि है, जबकि अनुच्छेद 275 के अनुदान विशिष्ट उद्देश्यों हेतु होते हैं। केंद्र प्रायोजित योजनाओं में केंद्र और राज्य दोनों धन लगाते हैं, जबकि केंद्रीय क्षेत्र की योजनाएं पूर्णतः केंद्र द्वारा वित्तपोषित होती हैं। यह वर्गीकरण स्पष्ट करता है कि राजस्थान को मिलने वाली विभिन्न केंद्रीय निधियाँ किस प्रकार भिन्न नियमों के साथ प्राप्त होती हैं।

56. (1) वेतन, मजदूरी और पेंशन
राजस्थान के राजस्व व्यय में सर्वाधिक भाग 'प्रतिबद्ध व्यय' का होता है, जिसमें सरकारी कर्मचारियों के वेतन, मजदूरी और पेंशन सम्मिलित है। ये व्यय अनिवार्य हैं और सरकार को इनका निर्वहन करना ही होता है। यद्यपि सब्सिडी और रखरखाव पर भी व्यय होता है, परंतु कर्मचारी संबंधी लागतें बजट का वृहद हिस्सा घेरती हैं। यह व्यय ढांचा राज्य के पास नवीन निवेश हेतु उपलब्ध धन को सीमित कर देता है।

57. (3) यह विकासात्मक और पूंजीगत व्यय के लिए उपलब्ध राजकोषीय स्थान को गंभीर रूप से सीमित कर देता है।
जब वेतन, पेंशन और ब्याज भुगतान जैसे 'प्रतिबद्ध खर्च' राजस्व प्राप्तियों का बड़ा भाग उपभोग कर लेते हैं, तो राज्य के पास विकास कार्यों हेतु न्यून राजकोषीय स्थान बचता है। इससे सड़कों, विद्यालयों और चिकित्सालयों जैसे आधारभूत ढांचे पर निवेश की क्षमता प्रभावित होती है। यह स्थिति सरकार को नवीन विकास कार्यों हेतु अधिक उधार लेने पर विवश करती है, जिससे भविष्य में ऋण भार बढ़ता है।

58. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्व व्यय में निरंतर वृद्धि राजस्थान के दीर्घकालिक आर्थिक विकास हेतु बाधा बन सकती है क्योंकि यह धन केवल उपभोग में प्रयुक्त होता है। फलस्वरूप, पूंजीगत संपत्तियों के निर्माण और आधारभूत ढांचे के विकास हेतु न्यून सरकारी संसाधन शेष रहते हैं। बिना नवीन सड़कों और विद्युत संयंत्रों के, भविष्य की आर्थिक उत्पादकता बढ़ाना दुष्कर होता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं जो इस चुनौती को स्पष्ट करते हैं।

59. (4) एक नए राज्य राजमार्ग के निर्माण पर व्यय
नवीन राज्य राजमार्ग के निर्माण पर होने वाला व्यय पूंजीगत व्यय की श्रेणी में आता है क्योंकि इससे राज्य हेतु स्थायी भौतिक संपत्ति सृजित होती है। इसके विपरीत, शिक्षकों का वेतन, ऋणों पर ब्याज और चिकित्सालयों का नियमित रखरखाव राजस्व व्यय के उदाहरण हैं क्योंकि वे चालू सेवाओं को बनाए रखने हेतु किए जाते हैं। इन दोनों का अंतर यह दर्शाता है कि सरकार भविष्य हेतु कितना निवेश कर रही है।

60. (1) केवल कथन I
कृषकों को विद्युत पर दी जाने वाली सब्सिडी राजस्व व्यय है क्योंकि यह एक आवर्ती हस्तांतरण है जिससे किसी नवीन संपत्ति का निर्माण नहीं होता। हालांकि, यह मानना त्रुटिपूर्ण है कि राजस्व व्यय से भविष्य की आय सृजन क्षमता में प्रत्यक्ष वृद्धि होती है; यह कार्य मुख्य रूप से पूंजीगत व्यय द्वारा संपन्न होता है। राजस्व व्यय केवल वर्तमान सेवाओं और सामाजिक सुरक्षा को सुनिश्चित करता है। अतः प्रथम कथन सत्य है।

61. (3) बाजार ऋणों की मूल राशि का पुनर्भुगतान
बाजार ऋणों की मूल राशि का पुनर्भुगतान पूंजीगत व्यय है क्योंकि यह सरकार की कुल देनदारी अथवा ऋण भार को कम करता है। इसके विपरीत, ऋणों पर ब्याज भुगतान एक राजस्व व्यय है क्योंकि यह सेवा की लागत है। निःशुल्क मोबाइल फोन वितरण अथवा बिजली बिलों का भुगतान कल्याणकारी व्यय होने के कारण राजस्व व्यय के अंतर्गत आते हैं। अतः केवल मूल ऋण की अदायगी ही पूंजीगत व्यय है।

62. (1) I, II, III
राजस्थान अपने पूंजीगत परिव्यय का वृहद हिस्सा आर्थिक सेवाओं जैसे सिंचाई, सड़क और ऊर्जा पर व्यय करता है ताकि आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिल सके। इसके पश्चात शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सामाजिक सेवाओं के आधारभूत ढांचे का स्थान आता है। प्रशासनिक भवनों जैसी सामान्य सेवाओं पर पूंजीगत व्यय प्रायः न्यूनतम होता है। यह प्राथमिकता क्रम दर्शाता है कि राज्य सरकार उत्पादक ढांचे के निर्माण को महत्व देती है।

63. (1) बिना किसी उधार के केवल कर राजस्व के माध्यम से वित्तपोषण
यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि राजस्थान में पूंजीगत व्यय केवल कर राजस्व से और बिना किसी उधारी के किया जाता है। वास्तविकता यह है कि अधिकांश आधारभूत ढांचा परियोजनाएं बाजार ऋणों और केंद्रीय सहायता से वित्तपोषित होती हैं। पूंजीगत व्यय का उद्देश्य भौतिक संपत्तियों का निर्माण और आर्थिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालना है। इसमें स्थानीय निकायों को दिए जाने वाले ऋण भी सम्मिलित होते हैं। अतः उधार अनिवार्य है।

64. (2) I और III
पूंजीगत व्यय राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में आवश्यक आधारभूत ढांचे का विस्तार करने में सहायक है, जिससे क्षेत्रीय विकास का संतुलन बनता है। यह सड़क और बिजली जैसी सुविधाएँ प्रदान कर निजी क्षेत्र के निवेश को भी आकर्षित करता है। हालांकि, यह व्यय तत्काल राजकोषीय घाटे को न्यून नहीं करता, बल्कि अक्सर उसे बढ़ाता है क्योंकि इसके लिए वृहद निवेश आवश्यक होता है। अतः आर्थिक विकास में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

65. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना का उद्देश्य पेयजल और सिंचाई संकट का समाधान है। दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा राज्य में औद्योगिक विकास के नवीन केंद्र निर्मित कर रहा है। प्रधानमंत्री मित्र पार्क विशेष रूप से वस्त्र उद्योग हेतु है, जबकि भदला सौर पार्क अक्षय ऊर्जा उत्पादन में अग्रणी है।

NODIA

अध्याय 12

राजस्थान में कृषि : स्थिति, समस्याएँ एवं पहलें

1. हालिया आर्थिक समीक्षाओं के अनुसार, स्थिर कीमतों पर राजस्थान के सकल राज्य घरेलू उत्पाद में कृषि और संबद्ध क्षेत्र का अनुमानित योगदान कितना है?
(1) 10 से 15 प्रतिशत के बीच
(2) 28 से 30 प्रतिशत के बीच
(3) 45 से 50 प्रतिशत के बीच
(4) 55 से 60 प्रतिशत के बीच
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. राजस्थान में खरीफ फसल के स्वरुप के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. खरीफ की फसलें सामान्यतः दक्षिण-पश्चिम मानसून की शुरुआत में बोई जाती हैं।
II. बाजरा, मूंग और मूंगफली राज्य की प्रमुख खरीफ फसलें हैं।
III. इन फसलों को उनकी वानस्पतिक वृद्धि के दौरान मध्यम तापमान और लघु प्रकाश अवधि की आवश्यकता होती है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): राजस्थान भारत में बाजरा का सबसे बड़ा उत्पादक है।
कारण (R): बाजरा को इष्टतम विकास के लिए 100 सेमी से अधिक उच्च वर्षा और भारी मृण्मय मिट्टी की आवश्यकता होती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. राजस्थान में कृषि ऋतुओं के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) जायद की फसलें आमतौर पर रबी की कटाई और खरीफ की बुआई के बीच की अवधि में उगाई जाती हैं।
(2) गेहूं, जौ और चना राजस्थान की प्रमुख रबी फसलें हैं।
(3) तरबूज, खरबूजा और ककड़ी जायद फसलों के प्रमुख उदाहरण हैं।
(4) रबी की फसलें अपनी वानस्पतिक वृद्धि के लिए दक्षिण-पश्चिम मानसून पर अत्यधिक निर्भर होती हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. सूची I में दी गई फसलों को सूची II में उनके प्राथमिक फसल मौसम और वर्गीकरण के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (फसल)
A. गेहूं
B. सरसों
C. बाजरा
D. कपास
सूची II: (ऋतु और वर्गीकरण)
i. खरीफ नकदी फसल
ii. खरीफ खाद्यान्न फसल
iii. रबी नकदी फसल
iv. रबी खाद्यान्न फसल
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्र का एक किसान ऐसी फसल उगाना चाहता है जो जल्दी पकती हो, जिसे बहुत कम पानी की आवश्यकता हो और जो उच्च तापमान के प्रति सहनशील हो। इस किसान के लिए निम्नलिखित में से कौन सी प्रमुख खाद्यान्न फसल सबसे उपयुक्त है?
(1) गेहूं
(2) बाजरा
(3) मक्का
(4) चावल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

7. राजस्थान के निम्नलिखित में से कौन से जिले अपनी उपयुक्त लाल-काली मिट्टी और वर्षा के स्वरुप के कारण पारंपरिक रुप से मुख्य मक्का उत्पादक क्षेत्र के रूप में जाने जाते हैं?
(1) श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़
(2) जैसलमेर और बाड़मेर
(3) चूरू, झुंझुनूं और सीकर

Downloaded from www.pdf.tube

बोझ अत्यधिक न बढ़े। यद्यपि आर्थिक कारणों से यह अनुपात कभी बढ़ सकता है, परंतु दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता हेतु इसे निर्धारित सीमा में बनाए रखना आदर्श माना जाता है।

77. (3) राजस्व घाटा लक्ष्य — भारी राजस्व घाटा बनाए रखने का लक्ष्य
एफआरबीएम अधिनियम का मुख्य उद्देश्य राजस्व घाटे को न्यून करना और अंततः उसे समाप्त करना है, न कि उसे बनाए रखना। यह अधिनियम राजकोषीय घाटे को 3% पर सीमित करने, वित्तीय पारदर्शिता बढ़ाने और भावी पीढ़ियों पर ऋण का अनावश्यक बोझ न डालने हेतु निर्मित है। इसमें बजट प्रलेखों के साथ मध्यम अवधि की नीतियों को विधानसभा में प्रस्तुत करने का प्रावधान है। अतः भारी घाटे का समर्थन अधिनियम के विरुद्ध है।

78. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजकोषीय उत्तरदायित्व कानून का प्रमुख लक्ष्य अंतर-पीढ़ीगत साम्यता बनाए रखना है। इसका अर्थ है कि वर्तमान सरकार को अत्यधिक ऋण नहीं लेना चाहिए क्योंकि इसका भार भावी पीढ़ियों को ब्याज और उच्च करों के रूप में वहन करना होगा। यदि वर्तमान पीढ़ी केवल उपभोग हेतु उधार लेती है, तो भविष्य में विकास कार्यों हेतु धन का अभाव होगा। अतः आज का ऋण कल के नागरिकों की आर्थिक स्वतंत्रता सीमित करता है।

79. (1) आपदाओं के दौरान सभी प्रकार की उधारी पर प्रतिबंध
एफआरबीएम अधिनियम राजकोषीय अनुशासन और पारदर्शिता हेतु निर्मित है, परंतु यह आपदाओं के दौरान उधारी पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाता। इसके विपरीत, इसमें ऐसी आपात स्थितियों हेतु लचीलेपन का प्रावधान है ताकि सरकार संकट समाधान हेतु आवश्यक धन जुटा सके। यह कानून मुख्य रूप से मध्यम अवधि की नीतियों और घाटे को क्रमिक रूप से कम करने पर बल देता है। अतः आपदा के समय उधारी प्रतिबंधित करना सत्य नहीं है।

80. (2) अनुच्छेद 293(3) के तहत उधार लेने के लिए केंद्र की सहमति
संविधान के अनुच्छेद 293(3) के अनुसार, यदि किसी राज्य पर केंद्र का कोई पिछला ऋण शेष है, तो उसे नवीन उधारी हेतु केंद्र की अनुमति लेनी अनिवार्य है। चूंकि राजस्थान पर केंद्र का बकाया रहता है, अतः भारत सरकार इस शक्ति का प्रयोग कर राज्य की वार्षिक उधार सीमा निर्धारित करती है। यह सुनिश्चित करता है कि राज्य एफआरबीएम सीमाओं का अनुपालन करे और अपनी वित्तीय स्थिति को अनियंत्रित न होने दे।

81. (2) बाजार ऋण, वित्तीय उधार और प्रतिभूतियां
राजस्थान सरकार के 'आंतरिक ऋण' में वे समस्त उधार सम्मिलित होते हैं जो देश के भीतर से जुटाए जाते हैं। इसमें मुख्य रूप से बाजार से लिए गए ऋण, वित्तीय संस्थानों से प्राप्त उधार और सरकार द्वारा जारी प्रतिभूतियाँ सम्मिलित हैं। विदेशी संस्थानों से प्राप्त ऋण तकनीकी रूप से केंद्र के माध्यम से प्राप्त होता है। अतः बाजार उधारी और घरेलू संस्थानों से प्राप्त धन ही शुद्ध आंतरिक ऋण है जो देनदारियों का बड़ा भाग है।

82. (2) आंतरिक ऋण (बाजार उधार), सार्वजनिक खाता देनदारियां, केंद्र से ऋण
राजस्थान की कुल देनदारियों में सर्वाधिक हिस्सा आंतरिक ऋण का है जिसमें बाजार उधारी प्रमुख है। इसके पश्चात सार्वजनिक खाते की देनदारियाँ आती हैं जिनमें कर्मचारियों की भविष्य निधि और अन्य छोटी बचत शामिल हैं। केंद्र सरकार से प्राप्त ऋण वर्तमान में कुल ऋण का लघु अंश है क्योंकि अब अधिकांश केंद्रीय सहायता अनुदान के रूप में प्राप्त होती है। यह क्रम राज्य के ऋण प्रबंधन और बाजार निर्भरता को दर्शाता है।

83. (1) केवल कथन I
राज्य विकास ऋण राजस्थान सरकार द्वारा बाजार से धन जुटाने का मुख्य साधन है जिसकी नीलामी भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा की जाती है। यह कथन पूर्णतः सत्य है। हालांकि, इन ऋणों पर ब्याज दरें बाजार की स्थितियों और निवेशकों की मांग से निर्धारित होती हैं, न कि वित्त आयोग द्वारा। वित्त आयोग केवल संसाधनों के बंटवारे की अनुशंसा करता है, ब्याज दरें नहीं। अतः बाजार उधारी प्रक्रिया संबंधी प्रथम कथन ही सत्य है।

84. (1) I और II
राज्य द्वारा सार्वजनिक उपक्रमों को दी जाने वाली गारंटी एक आकस्मिक देयता है, जिसका अर्थ है कि भुगतान का दायित्व तभी उत्पन्न होगा जब वह संस्थान चूक करेगा। यदि ऐसा होता है, तो पूर्ण उत्तरदायित्व राज्य सरकार पर आ जाता है। एफआरबीएम नियमों के अंतर्गत इन गारंटियों की कुल सीमा निर्धारित की जाती है ताकि भविष्य में अचानक वित्तीय बोझ न पड़े। अतः गारंटियों की प्रकृति और विधिक सीमा संबंधी कथन सत्य हैं।

NODIA

85. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
बाजार उधारी को राज्य विकास ऋण के रूप में जाना जाता है, जबकि सार्वजनिक खाता देनदारियों में राज्य भविष्य निधि जैसी निधियाँ शामिल होती हैं। केंद्र से प्राप्त ऋणों का प्रयोग विशिष्ट राज्य योजनाओं हेतु किया जाता है। आकस्मिक देनदारियाँ मुख्य रूप से विद्युत बोर्डों अथवा अन्य संस्थानों को प्रदान की गई सरकारी गारंटियाँ होती हैं। यह वर्गीकरण राजस्थान की विभिन्न वित्तीय प्रतिबद्धताओं और उनके स्रोतों को समझने हेतु महत्वपूर्ण है।

86. (2) अनुच्छेद 243-I और 243-Y
भारतीय संविधान के अनुच्छेद 243-I और 243-Y के अंतर्गत राजस्थान में राज्य वित्त आयोग का गठन किया जाता है। अनुच्छेद 243-I पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करता है, जबकि 243-Y नगर पालिकाओं हेतु यही कार्य संपन्न करता है। यह आयोग राज्य और स्थानीय निकायों के मध्य करों के बंटवारे की अनुशंसा करने हेतु संवैधानिक रूप से उत्तरदायी है, ताकि स्थानीय सरकारों के पास पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध हों।

राज्यों में इसका स्थान महत्वपूर्ण है। औद्योगिक नीतियों के माध्यम से इस योगदान को बढ़ाने के प्रयास निरंतर जारी हैं।

22. (2) II, III, I
राष्ट्रीय उत्पादन में राजस्थान का सर्वाधिक हिस्सा अधात्विक खनिजों जैसे संगमरमर और बलुआ पत्थर में है। इसके पश्चात कृषि क्षेत्र का स्थान आता है, जहाँ राजस्थान तिलहन और बाजरा उत्पादन में देश के अग्रणी राज्यों में सम्मिलित है। सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं में राज्य का राष्ट्रीय योगदान अभी भी खनिजों और कृषि की तुलना में काफी कम है। अतः हिस्सेदारी के आधार पर खनिजों का स्थान शीर्ष पर रहता है।

23. (1) केवल कथन I
राजस्थान की आर्थिक विकास दर ऐतिहासिक रूप से राष्ट्रीय औसत के अनुरूप रही है, जिसमें मानसून के आधार पर उतार-चढ़ाव देखे जाते हैं। अनुकूल वर्षा वाले वर्षों में राज्य की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में तीव्र उछाल आता है। राज्य की आर्थिक संरचना राष्ट्रीय औसत के पूर्णतः समान नहीं है। राजस्थान में पशुपालन और विशिष्ट खनिजों की भूमिका राष्ट्रीय स्तर की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। अतः केवल प्रथम कथन सत्य है।

24. (3) I और III
राजस्थान भारत में स्थलीय क्षेत्रों से कच्चे तेल के उत्पादन में अग्रणी है, जिसमें बाड़मेर बेसिन का मुख्य योगदान है। इसके अतिरिक्त, राज्य सरसों और बाजरा उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर है। सूचना प्रौद्योगिकी निर्यात में राजस्थान की हिस्सेदारी अभी भी सीमित है और यह राष्ट्रीय स्तर पर 20% तक नहीं पहुँची है। ऊर्जा और कृषि क्षेत्र में राजस्थान का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और नेतृत्वकारी बना हुआ है।

25. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान बाजरा उत्पादन में संपूर्ण देश में प्रथम स्थान पर है। कच्चे तेल के उत्पादन में यह बॉम्बे हाई के पश्चात द्वितीय स्थान पर आता है। जस्ता अयस्क के मामले में राज्य का भारत में लगभग पूर्ण एकाधिकार है, जो इसे खनिज क्षेत्र में अद्वितीय बनाता है। गेहूँ उत्पादन में राजस्थान सामान्यतः चतुर्थ अथवा पंचम स्थान पर रहता है। यह विविधता खनिज संसाधनों में राज्य की सुदृढ़ स्थिति को दर्शाती है।

26. (1) सामंती भू-राजस्व संग्रह और प्रशासन की प्रणाली
स्वतंत्रता पूर्व राजस्थान की रियासतों में जागीरदारी प्रथा एक प्रमुख सामंती व्यवस्था थी। इसके अंतर्गत शासक अपने सामंतों को भूमि प्रदान करते थे, जिन्हें उस क्षेत्र से भू-राजस्व वसूलने और प्रशासनिक नियंत्रण रखने का अधिकार था। यह व्यवस्था पूर्णतः पारंपरिक और कृषि आधारित थी, जिसमें कृषकों का राज्य से प्रत्यक्ष संपर्क नहीं होता था। यह ढांचा सत्ता के विकेंद्रीकरण और स्थानीय सामंती नियंत्रण पर आधारित था।

27. (4) राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 ने काश्तकारों को सुरक्षा प्रदान की।
राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 राज्य के भूमि सुधारों के इतिहास में एक मील का पत्थर है। इस कानून ने उन कृषकों को विधिक सुरक्षा और अधिकार प्रदान किए जो दीर्घकाल से दूसरों की भूमि पर खेती कर रहे थे। इसने मनमानी बेदखली को रोका और किसानों को भूमि स्वामित्व का अवसर दिया। इस अधिनियम ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अधिक न्यायपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

28. (2) वैश्विक वित्तीय बाजारों के साथ उच्च एकीकरण
स्वतंत्रता पूर्व राजपूताना की रियासतें आर्थिक रूप से पारंपरिक थीं। उनकी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से वर्षा आधारित कृषि और स्थानीय हस्तशिल्प पर आधारित थी। उस समय रियासतों के मध्य कोई एकीकृत मुद्रा अथवा कर प्रणाली नहीं थी, जिससे व्यापार में बाधाएँ आती थीं। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उस दौर में राजस्थान का वैश्विक वित्तीय बाजारों के साथ कोई उच्च एकीकरण अथवा आधुनिक बैंकिंग संबंध नहीं था।

29. (2) I, III और IV
राजस्थान में औद्योगिक विकास हेतु रीको की स्थापना और बाड़मेर में कच्चे तेल की खोज अत्यंत महत्वपूर्ण मोड़ रहे हैं। वर्तमान में राज्य सरकार नवीकरणीय ऊर्जा जैसे सौर और पवन ऊर्जा के विस्तार पर विशेष बल दे रही है। शुरुआती दशकों में वृहद स्तर पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अभाव था, क्योंकि तब मुख्य ध्यान आधारभूत ढांचे के निर्माण पर था। अतः औद्योगिक प्रगति में सार्वजनिक संस्थानों का योगदान रहा है।

30. (4) इंदिरा गांधी नहर परियोजना (आईजीएनपी) की शुरुआत
गंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में कृषि का परिदृश्य इंदिरा गांधी नहर परियोजना के आगमन से पूर्णतः परिवर्तित हो गया। इस परियोजना ने मरुस्थलीय क्षेत्र को सिंचाई हेतु पर्याप्त जल उपलब्ध कराया, जिससे किसान जीवन निर्वाह फसलों के स्थान पर गेहूँ और कपास जैसी नकदी फसलों की व्यावसायिक खेती करने लगे। इस बदलाव ने न केवल कृषकों की आय बढ़ाई, बल्कि पूरे क्षेत्र को कृषि केंद्र के रूप में विकसित किया।

31. (1) कर/गैर-कर प्राप्तियां और नियमित प्रशासनिक व्यय
राज्य बजट के राजस्व खाते में सरकार की वे प्राप्तियाँ और व्यय सम्मिलित होते हैं जो नियमित प्रकृति के हैं। इसमें करों से होने वाली आय, ब्याज प्राप्तियाँ और केंद्र से प्राप्त अनुदान जैसे स्रोत आते हैं। व्यय के भाग में वेतन, पेंशन और प्रशासनिक खर्च शामिल हैं जिनसे किसी भौतिक संपत्ति का निर्माण नहीं होता। राजस्व खाते का प्रबंधन सरकार के दैनिक कार्यों की कुशलता का परिचायक है।

32. (2) पूंजीगत व्यय विशुद्ध रूप से सरकारी विभागों के दिन-प्रतिदिन के संचालन के लिए होता है।
पूंजीगत व्यय मुख्य रूप से भविष्य के विकास हेतु भौतिक और वित्तीय संपत्तियों के निर्माण के लिए किया जाता है, जैसे विद्यालय और सड़कों का निर्माण। यह सरकारी विभागों के दैनिक संचालन हेतु नहीं होता; दैनिक खर्चों के लिए राजस्व

Click Here to Buy book on Amazon

97. (2) देश में शीर्ष सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता का लक्ष्य रखना
ऊर्जा क्षेत्र हेतु राजस्थान का दृष्टिकोण देश में सौर ऊर्जा उत्पादन में शीर्ष स्थान प्राप्त करना है। राज्य अपनी विशाल बंजर भूमि और सर्वाधिक सूर्य-प्रकाश वाले दिनों का लाभ उठाकर अक्षय ऊर्जा का वैश्विक केंद्र बनना चाहता है। इसके लिए निजी निवेश को प्रोत्साहित करने वाली विशेष नीतियां लागू की गई हैं। यह लक्ष्य न केवल राज्य को ऊर्जा-आत्मनिर्भर बनाएगा, बल्कि भविष्य के औद्योगिक विकास हेतु हरित ऊर्जा सुनिश्चित करेगा।

98. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान सरकार सौर और पवन ऊर्जा के विकास को विशेष प्राथमिकता दे रही है क्योंकि यहाँ की भौगोलिक स्थिति इसके अत्यंत अनुकूल है। राज्य में वर्ष भर स्पष्ट सूर्य-प्रकाश और विशाल बंजर भूमि उपलब्ध है, जो वृहद ऊर्जा संयंत्रों हेतु आदर्श है। प्राकृतिक रूप से उपलब्ध इन लाभों के कारण ही राजस्थान नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में निवेश का प्रमुख केंद्र बन गया है। अतः अभिकथन और भौगोलिक कारण दोनों सत्य हैं।

NODIA

99. (3) 15 लाख करोड़ रुपये (लगभग)
राजस्थान के दीर्घकालिक आर्थिक दृष्टिकोण के अंतर्गत राज्य की अर्थव्यवस्था के आकार को लगभग 15 लाख करोड़ रुपये तक पहुँचाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह लक्ष्य राज्य की बढ़ती महत्वाकांक्षाओं और विभिन्न क्षेत्रों में नियोजित विकास को प्रदर्शित करता है। इस विशाल स्तर की प्राप्ति हेतु कृषि, उद्योग और सेवाओं में उच्च वृद्धि दर अनिवार्य है। यह आंकड़ा विकास के पैमाने और जीवन स्तर में सुधार का सूचक है।

100. (4) समावेशी विकास, गरीबी उन्मूलन और सामाजिक समानता
राजस्थान सरकार की आर्थिक नीतियों और बजट का अंतिम लक्ष्य समावेशी विकास सुनिश्चित करना, निर्धनता उन्मूलन और सामाजिक समानता स्थापित करना है। इसका उद्देश्य केवल आर्थिक आंकड़े बढ़ाना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि विकास का लाभ दूरदराज के क्षेत्रों और वंचित वर्गों तक पहुँचे। शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा पर विशेष बल देना इसी दृष्टिकोण का भाग है। समृद्ध समाज का निर्माण ही बजटीय प्राथमिकताओं का आधार है।

ये परियोजनाएं राजस्थान की आधारभूत संरचना को आधुनिक बनाने और निवेश व रोजगार की संभावनाएँ उत्पन्न करने हेतु महत्वपूर्ण हैं।

66. (2) 3.0%
राजस्थान के एफआरबीएम अधिनियम के अनुसार, राज्य के राजकोषीय घाटे को सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 3% के भीतर रखने का लक्ष्य निर्धारित है। यह सीमा सुनिश्चित करती है कि सरकार अपनी आय के अनुपात में अत्यधिक ऋण न ले जिससे वित्तीय स्थिरता बनी रहे। यद्यपि विशेष परिस्थितियों में इस सीमा में कुछ शिथिलता दी जा सकती है, परंतु सामान्यतः 3% का स्तर राजकोषीय अनुशासन का अनिवार्य मानक है।

67. (3) राज्य की कुल वार्षिक उधार आवश्यकताएं
राजकोषीय घाटा यह दर्शाता है कि राज्य सरकार को अपने कुल व्यय की पूर्ति हेतु एक वर्ष में कितने नवीन ऋण की आवश्यकता है। यह कुल व्यय और सरकार की गैर-ऋण प्राप्तियों जैसे कर और अनुदान के मध्य का अंतर है। यह केवल एक वर्ष की उधारी को मापता है, न कि संचित ऋण को। उच्च राजकोषीय घाटा भविष्य में ब्याज भार बढ़ने का संकेत देता है, अतः इसे नियंत्रित रखना आर्थिक स्वास्थ्य हेतु आवश्यक है।

68. (4) ऋण जाल की स्थिति जहाँ नए ऋण पुराने ऋण का ब्याज चुकाने में खर्च हों
यदि राजस्थान निरंतर उच्च राजकोषीय घाटा केवल राजस्व व्यय हेतु चलाता है, तो वह 'ऋण जाल' में फंस सकता है। ऐसी स्थिति में, नवीन ऋण मुख्य रूप से पुराने ऋणों का ब्याज चुकाने में ही व्यय हो जाता है, जिससे वास्तविक विकास हेतु धन का अभाव हो जाता है। यह स्थिति आर्थिक अस्थिरता उत्पन्न करती है और सरकार की जन-कल्याणकारी योजनाओं तथा आवश्यक आधारभूत ढांचे पर व्यय करने की क्षमता को क्षीण करती है।

69. (2) I, II और IV
राजस्थान सरकार अपने राजकोषीय घाटे की पूर्ति हेतु बाजार से ऋण लेती है, केंद्र सरकार से उधार लेती है और सार्वजनिक खाते में जमा भविष्य निधि जैसी निधियों का प्रयोग करती है। यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि राज्य सरकार के पास मुद्रा मुद्रण की कोई शक्ति नहीं है, क्योंकि यह कार्य केवल भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किया जाता है। अतः उधारी और आंतरिक बचत ही वे मुख्य स्रोत हैं जिनसे बजट घाटा पूरा होता है।

70. (1) केवल कथन I
सकल राजकोषीय घाटा वास्तव में राज्य सरकार की उस वर्ष की कुल उधारी के समतुल्य होता है। हालांकि, यह धारणा त्रुटिपूर्ण है कि राजस्व घाटा शून्य होने पर राजकोषीय घाटा भी शून्य हो जाएगा। सरकार अपने दैनिक खर्चों को संतुलित करने के पश्चात भी आधारभूत ढांचे के निर्माण हेतु ऋण ले सकती है जिससे राजकोषीय घाटा बना रहेगा। राजस्व घाटा न होना केवल वर्तमान आय-व्यय का संतुलन दर्शाता है।

71. (4) दिन-प्रतिदिन के नियमित खर्चों के वित्तपोषण के लिए उधार लिया जा रहा है
निरंतर राजस्व घाटा होने का अर्थ है कि राजस्थान सरकार अपनी नियमित आय से दैनिक प्रशासनिक व्यय, वेतन और ब्याज भुगतान करने में असमर्थ है। इसके लिए सरकार को उधार लेना पड़ता है जिसे 'उपभोग हेतु ऋण' माना जाता है। यह स्थिति वित्तीय रूप से असुरक्षित है क्योंकि ऋण का प्रयोग किसी उत्पादक संपत्ति के सृजन के स्थान पर वर्तमान खर्चों की पूर्ति हेतु हो रहा है, जो विकास को बाधित करता है।

72. (1) नए राजमार्ग निर्माण पर पूंजीगत परिव्यय बढ़ाना
राजमार्गों के निर्माण पर पूंजीगत व्यय बढ़ाना राजस्व घाटे को न्यून करने में सहायक नहीं है क्योंकि यह पूंजीगत खाते का अंश है। राजस्व घाटे को कम करने हेतु कर संग्रह को प्रभावी बनाना, सब्सिडी को तर्कसंगत बनाना और प्रशासनिक अपव्यय को रोकना अनिवार्य है। ये उपाय प्रत्यक्ष रूप से राजस्व आय और व्यय के अंतर को पाटते हैं। आधारभूत ढांचे पर निवेश विकास हेतु श्रेयस्कर है पर राजस्व घाटे का हल नहीं है।

73. (3) राजस्व व्यय - राजस्व प्राप्तियां
राजस्व घाटे की गणना हेतु राजस्व व्यय में से राजस्व प्राप्तियों को घटाया जाता है। यह आंकड़ा यह स्पष्ट करता है कि सरकार अपनी नियमित आय के भीतर कितनी कुशलता से दैनिक कार्य संचालित कर रही है। यदि व्यय प्राप्तियों से अधिक है, तो यह दर्शाता है कि राज्य को अपनी सामान्य गतिविधियों हेतु भी उधारी पर निर्भर रहना पड़ रहा है। यह राजकोषीय प्रबंधन का महत्वपूर्ण मानक है जो वित्तीय स्थिति उजागर करता है।

74. (1) I, III और IV
शून्य राजस्व घाटा दर्शाता है कि वर्तमान आय व्यय हेतु पर्याप्त है। एफआरबीएम कानून इस घाटे को क्रमिक रूप से समाप्त करने का निर्देश देता है। पुरानी पेंशन योजना जैसी नवीन देनदारियां इस घाटे को बढ़ा सकती हैं। हालांकि, राजस्थान का इतिहास सदैव राजस्व अधिशेष का नहीं रहा है और राजस्व घाटा सदैव राजकोषीय घाटे से अधिक नहीं होता। अतः घाटे के अर्थ, विधिक लक्ष्य और पेंशन संबंधी कथन ही सत्य हैं।

75. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्व घाटा सरकार की वर्तमान बचत की न्यूनता को प्रदर्शित करता है। राजकोषीय घाटा कुल उधारी आवश्यकता का परिचायक है, जबकि प्राथमिक घाटा पुराने ब्याज को छोड़कर वर्तमान वित्तीय स्थिति स्पष्ट करता है। मुद्रीकृत घाटा, जिसमें नोट छापे जाते हैं, राज्यों पर लागू नहीं होता क्योंकि उनके पास यह संवैधानिक शक्ति नहीं है। इन संकेतकों का मिलान राजस्थान की वित्तीय नीतियों और ऋण भार के सटीक आकलन हेतु आवश्यक है।

76. (2) 20% से 25% की सीमा
राजस्थान के एफआरबीएम अधिनियम के अंतर्गत, राज्य के कुल बकाया ऋण को सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 20% से 25% की सीमा में रखने का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है। यह ऋण वहनीयता सुनिश्चित करने हेतु अनिवार्य है ताकि ब्याज का

Downloaded from www.pdf.tube

(4) भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और उदयपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. राजस्थान की प्रमुख खाद्यान्न फसलों की निम्नलिखित सूची को पढ़िए और सफल खेती के लिए उनकी विशिष्ट जल आवश्यकता के घटते क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. चावल
II. गेहूं
III. बाजरा
निम्नलिखित में से कौन सा क्रम सही है?
(1) I, II, III
(2) I, III, II
(3) II, I, III
(4) III, II, I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. राजस्थान में बुआई के विशिष्ट मौसम के आधार पर निम्नलिखित फसलों में से विषम का चयन कीजिए।
(1) चना
(2) सरसों
(3) सोयाबीन
(4) जौ
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. राजस्थान में प्रमुख खाद्यान्न फसलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. राजस्थान देश में मोटे अनाजों के अग्रणी उत्पादकों में से एक है।
II. ज्वार मुख्य रूप से राजस्थान के मध्य और पूर्वी जिलों में उगाया जाता है।
III. राजस्थान में गेहूं की खेती मुख्य रूप से वर्षा आधारित है और सिंचाई पर कोई निर्भरता नहीं है।
IV. राजस्थान में मक्का की उत्पादकता राष्ट्रीय औसत से अधिक है।
उपरोक्त में से कौन से कथन गलत हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. प्रमुख नकदी फसलों के संदर्भ में, राजस्थान राष्ट्रीय स्तर पर निम्नलिखित में से किस फसल के उत्पादन में अक्सर प्रथम स्थान रखता है?
(1) वाणिज्यिक गन्ना
(2) लंबे रेशे वाली कपास
(3) स्पेनिश मूंगफली
(4) राई और सरसों
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. सूची I में दी गई मसाला फसलों को सूची II में राजस्थान में उनके महत्वपूर्ण उत्पादन के लिए प्रसिद्ध जिलों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मसाला फसल)
A. जीरा
B. धनिया
C. मेथी
D. लहसुन
सूची II: (जिला)
i. झालावाड़ और बारां
ii. नागौर
iii. जालौर और बाड़मेर
iv. कोटा और बारां
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान में उगाई जाने वाली प्रमुख नकदी फसल नहीं माना जाता है?
(1) मूंगफली
(2) कपास
(3) जौ
(4) ईसबगोल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. राजस्थान में बागवानी के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. राजस्थान की जलवायु बेर, आंवला और अनार जैसी शुष्क बागवानी फसलों के लिए उपयुक्त है।
II. राष्ट्रीय बागवानी मिशन राजस्थान के किसी भी जिले में संचालित नहीं है।
III. किन्नू की खेती श्रीगंगानगर जैसे सिंचित उत्तरी जिलों में व्यापक रूप से की जाती है।
IV. जयपुर और अजमेर जैसे शहरी केंद्रों के आसपास फूलों की खेती महत्व प्राप्त कर रही है।
V. राज्य ने नांता, कोटा में नींबू वर्गीय फलों के लिए 'उत्कृष्टता केंद्र' स्थापित किया है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं:
कथन I: अमेरिकी कपास (नर्मा) की खेती मुख्य रूप से श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ के उत्तरी जिलों में केंद्रित है।
कथन II: इन जिलों को व्यापक नहर सिंचाई नेटवर्क का लाभ मिलता है, जो कपास की खेती के लिए आवश्यक है।

NODIA

31. राजस्थान में सूखे के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. मौसम संबंधी सूखा तब होता है जब सामान्य वर्षा की तुलना में वास्तविक वर्षा में महत्वपूर्ण कमी होती है।
II. जल विज्ञान संबंधी सूखा सतही और भूजल संसाधनों की कमी को संदर्भित करता है।
III. कृषि संबंधी सूखा विशेष रूप से राज्य में शीतकालीन मानसून की विफलता से परिभाषित होता है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. निम्नलिखित में से किसे पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थलीकरण और मृदा क्षरण का प्राथमिक मानवजनित कारण माना जाता है?
(1) जैविक खाद का अत्यधिक उपयोग
(2) अति-चराई और वनोन्मूलन
(3) वर्षा जल संचयन संरचनाओं का निर्माण
(4) सूखा-प्रतिरोधी स्वदेशी झाड़ियों की खेती
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. सूची I में दी गई विशिष्ट कृषि मंडियों को सूची II में उनके स्थानों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विशिष्ट मंडी)
A. जीरा मंडी
B. धनिया मंडी
C. किन्नू मंडी
D. प्याज मंडी
सूची II: (स्थान)
i. रामगंज मंडी (कोटा)
ii. मेड़ता सिटी (नागौर)
iii. अलवर
iv. श्रीगंगानगर
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं:
कथन I: राजस्थान कृषि उपज मंडी अधिनियम ने कृषि उपज मंडी समिति प्रणाली की स्थापना की ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि किसानों को उचित मूल्य मिले।
कथन II: राजस्थान में हाल के विपणन सुधार किसानों को अपनी उपज बेचने में लचीलापन प्रदान करते हैं।
दिए गए विकल्पों के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. सूखे के प्रति संवेदनशीलता के आधार पर राजस्थान के निम्नलिखित क्षेत्रों का उच्चतम संवेदनशीलता से न्यूनतम संवेदनशीलता की ओर सही क्रम चुनिए।
(1) पश्चिमी शुष्क क्षेत्र → अर्ध-शुष्क क्षेत्र → दक्षिण-पूर्वी पठार
(2) दक्षिण-पूर्वी पठार → अर्ध-शुष्क क्षेत्र → पश्चिमी शुष्क क्षेत्र
(3) अर्ध-शुष्क क्षेत्र → पश्चिमी शुष्क क्षेत्र → दक्षिण-पूर्वी पठार
(4) पश्चिमी शुष्क क्षेत्र → दक्षिण-पूर्वी पठार → अर्ध-शुष्क क्षेत्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. निम्नलिखित परिदृश्य पर विचार कीजिए: एक कृषि विस्तार अधिकारी जैसलमेर में स्थित एक खेत में रक्षक मेखला और वात-रोध लगाने का सुझाव देता है। अधिकारी मुख्य रूप से भूमि क्षरण की किस विशिष्ट समस्या को कम करने की कोशिश कर रहा है?
(1) जलभराव
(2) मृदा लवणता
(3) भूजल की कमी
(4) वायु अपरदन और रेत के टीलों का स्थिरीकरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. राजस्थान में कृषि विपणन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. ई-नाम एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाने के लिए मौजूदा मंडियों को जोड़ता है।
II. भंडारण की कमी अक्सर राजस्थान में छोटे किसानों को अभावग्रस्त बिक्री के लिए मजबूर करती है।
III. कृषि विपणन निदेशालय राज्य में मंडियों के संचालन को विनियमित करता है।
IV. सहकारी विपणन समितियों की राजस्थान में कृषि विपणन में कोई भूमिका नहीं है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल IV
(4) केवल II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान की कृषि भूमि में मृदा क्षरण का एक मान्यता प्राप्त कारण नहीं है?
(1) शुष्क क्षेत्रों में वायु अपरदन
(2) जैविक खाद का व्यापक प्रयोग

Click Here to Buy book on Amazon

23. राजस्थान में सिंचाई के निम्नलिखित स्रोतों को राज्य के शुद्ध सिंचित क्षेत्र में उनके प्रतिशत हिस्से के आधार पर अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. नहरें
II. तालाब
III. कुएं और नलकूप
निम्नलिखित में से कौन सा क्रम सही है?
(1) I, II, III
(2) I, III, II
(3) III, I, II
(4) III, II, I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. राजस्थान के पूर्वी और मध्य जिलों में सिंचाई के लिए भूजल के निरंतर अत्यधिक दोहन का प्राथमिक प्रभाव क्या है?
(1) जिलों का 'डार्क ज़ोन' या अति-दोहन वाले खंडों में परिवर्तन
(2) खनिजों के ऊपर आने के कारण मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि
(3) जलभृतों के लवणता स्तर में कमी
(4) स्थानीय बाढ़ की बार-बार होने वाली घटनाएँ
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. राजस्थान में भूजल की कमी और डार्क ज़ोन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. 'डार्क ज़ोन' उस क्षेत्र को संदर्भित करता है जहाँ भूजल दोहन की दर पुनर्भरण की दर से अधिक होती है।
II. राजस्थान में 70 प्रतिशत से अधिक भूजल खंडों को सुरक्षित के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
III. सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों का क्रियान्वयन डार्क ज़ोन के प्रबंधन के लिए एक नीतिगत पहल है।
IV. अटल भूजल योजना का उद्देश्य अति-दोहन वाले क्षेत्रों में भूजल प्रबंधन में सुधार करना है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान में वर्षा आधारित कृषि की सबसे उपयुक्त विशेषता है?
(1) यह उच्च जोखिम, कम पैदावार और बाजरा एवं दालों की प्रमुख खेती द्वारा पहचानी जाती है।
(2) यह रासायनिक उर्वरकों और उच्च उपज वाली किस्म के बीजों पर अत्यधिक निर्भर है।
(3) इसमें उच्च फसल गहनता और कई फसल सीजन शामिल हैं।
(4) यह केवल राज्य के पूर्वी मैदानों तक सीमित है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): इंदिरा गांधी नहर परियोजना की शुरुआत ने पश्चिमी राजस्थान के कुछ हिस्सों में फसल के स्वरुप को बदल दिया है।
कारण (R): नहर सिंचाई ने मरुस्थलीय क्षेत्र में कपास, गेहूं और मूंगफली जैसी जल-प्रधान वाणिज्यिक फसलों की खेती करना संभव बना दिया है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. राजस्थान में सिंचाई और कृषि शब्दावली के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(1) बारानी - वर्षा आधारित कृषि
(2) जायद - केवल शीतकालीन वर्षा (मावठ) पर निर्भर कृषि
(3) नहरी - नहर सिंचित कृषि
(4) चाही - कुआं सिंचाई पर निर्भर कृषि
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. राजस्थान में शुद्ध बोए गए क्षेत्र का लगभग कितना प्रतिशत वर्तमान में सुनिश्चित सिंचाई के अंतर्गत है?
(1) 15 प्रतिशत से कम
(2) लगभग 65 से 70 प्रतिशत
(3) लगभग 30 से 35 प्रतिशत
(4) 85 प्रतिशत से अधिक
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. राजस्थान में सिंचाई पद्धतियों के प्रभाव के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. इंदिरा गांधी नहर परियोजना कमान क्षेत्र के कुछ हिस्सों में अत्यधिक नहर सिंचाई से जलभराव की समस्या उत्पन्न हुई है।
II. जलभराव का सामना करने वाले क्षेत्रों में मृदा लवणता और क्षारीयता कम हो गई है।
III. राज्य में क्षारीय मिट्टी के सुधार के लिए अक्सर जिप्सम का उपयोग किया जाता है।
IV. ड्रिप और फव्वारा प्रणालियाँ सतही सिंचाई की तुलना में वाष्पीकरण नुकसान को काफी कम करती हैं।
V. राज्य सरकार नर्मदा नहर परियोजना के कमान क्षेत्र में सूक्ष्म सिंचाई का उपयोग अनिवार्य करती है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II
(3) केवल III और IV
(4) केवल II और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. निम्नलिखित फसलों में से विषम का चयन कीजिए, यह देखते हुए कि वे सामान्यतः भारत सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य के अंतर्गत कवर की जाती हैं।
(1) गेहूं
(2) सरसों
(3) बाजरा
(4) अनार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. किसानों को दीर्घकालिक ऋण प्रदान करने के लिए राजस्थान में प्राथमिक सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक सामान्यतः किस स्तर पर कार्य करते हैं?
(1) तहसील स्तर
(2) राज्य स्तर
(3) जिला स्तर
(4) राजस्व ग्राम स्तर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. फसल बीमा का दावा करने में शामिल निम्नलिखित चरणों को पढ़िए और उन्हें सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. स्थानीय आपदा की घटना
II. किसान द्वारा 72 घंटे के भीतर सूचना देना
III. अधिकारियों द्वारा संयुक्त नुकसान का आकलन
IV. दावे की राशि का बैंक खाते में निपटान
निम्नलिखित में से कौन सा क्रम सही है?
(1) I, II, III, IV
(2) I, III, II, IV
(3) II, I, III, IV
(4) I, II, IV, III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं:
कथन I: न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा का उद्देश्य बाजार कीमतों में गिरावट के विरुद्ध किसानों को सुरक्षा प्रदान करना है।
कथन II: राजस्थान में बाजरा और सरसों जैसी फसलों की बाजार कीमतों में अक्सर उतार-चढ़ाव होता है।
दिए गए विकल्पों के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. राजस्थान में कृषि खरीद चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. पर्याप्त खरीद केंद्रों की कमी प्रभावी एमएसपी संचालन में बाधा डालती है।
II. भुगतान में देरी किसानों को सरकारी एजेंसियों को बेचने से हतोत्साहित करती है।
III. कड़े गुणवत्ता मानदंड कभी-कभी किसानों की उपज की अस्वीकृति का कारण बनते हैं।
IV. राजस्थान में एमएसपी खरीद राज्य के कुल कृषि उत्पादन का 100% कवर करती है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV
(3) केवल III और IV
(4) केवल I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. राजस्थान सरकार ने किस वर्ष "राजस्थान कृषि प्रसंस्करण, कृषि व्यवसाय और कृषि निर्यात प्रोत्साहन नीति" शुरु की?
(1) 2015
(2) 2017
(3) 2019
(4) 2022
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. राजस्थान के संदर्भ में सूची I में दी गई योजनाओं को सूची II में उनके प्राथमिक उद्देश्य के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (योजना)
A. परंपरागत कृषि विकास योजना
B. राजस्थान मिलेट्स मिशन
C. मुख्यमंत्री कृषक साथी योजना
D. पीएम-कुसुम योजना
सूची II: (उद्देश्य)
i. जैविक खेती को बढ़ावा देना
ii. बाजरा और ज्वार की खेती एवं मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देना
iii. कृषि कार्य के दौरान दुर्घटना के लिए वित्तीय सहायता
iv. कृषि पंपों का सौरकरण
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

53. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): कृषि के साथ पशुपालन का एकीकरण राजस्थान में एक लचीली अर्थव्यवस्था बनाता है।
कारण (R): पशुधन वैकल्पिक आय प्रदान करता है और

(3) चंबल के बीहड़ों में जल अपरदन
(4) मृदा लवणता की ओर ले जाने वाली अवैज्ञानिक सिंचाई
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. राजस्थान में सूखा प्रबंधन कार्यक्रमों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) मरुस्थल विकास कार्यक्रम पूर्णतः राज्य सरकार द्वारा वित्त पोषित है।
(2) राजस्थान में सूखा प्रबंधन में विशेष रूप से किसानों को निःशुल्क उर्वरकों का वितरण शामिल है।
(3) राज्य सरकार ने कृषि सूखे के सभी नकारात्मक प्रभावों को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है।
(4) सूखा प्रवण क्षेत्र कार्यक्रम का उद्देश्य फसलों, पशुधन और भूमि उत्पादकता पर सूखे के प्रतिकूल प्रभावों को कम करना है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): पश्चिमी राजस्थान में वायु अपरदन मृदा क्षरण का एक प्रमुख कारक है।
कारण (R): इस क्षेत्र में उच्च वायु वेग, विरल वनस्पति आवरण और रेतीली मिट्टी होती है जिसकी बंधन क्षमता कम होती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. निम्नलिखित में से कौन सी एजेंसी राजस्थान में न्यूनतम समर्थन मूल्य संचालन के तहत तिलहन और दलहन की खरीद के लिए प्राथमिक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है?
(1) भारतीय खाद्य निगम
(2) राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड
(3) राजफेड (राजस्थान राज्य सहकारी विपणन संघ लिमिटेड)
(4) राजस्थान राज्य बीज निगम
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. राजस्थान में किसान क्रेडिट कार्ड योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. इसका उद्देश्य किसानों को पर्याप्त और समय पर ऋण सहायता प्रदान करना है।
II. ऋण सीमा परिचालन जोत, फसल प्रतिरूप और वित्त के पैमाने के आधार पर तय की जाती है।
III. राजस्थान में केवल वाणिज्यिक बैंक ही केसीसी जारी करने के लिए अधिकृत हैं।
IV. यह फसल के बाद के खर्चों और किसान परिवारों की उपभोग आवश्यकताओं को कवर करता है।
V. बटाईदार और काश्तकार किसान भी केसीसी योजना के लिए पात्र हैं।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. सूची I में फसलों को सूची II में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों द्वारा देय अधिकतम प्रीमियम दर के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (फसल का प्रकार)
A. खरीफ खाद्यान्न और तिलहन फसलें
B. रबी खाद्यान्न और तिलहन फसलें
C. वार्षिक वाणिज्यिक फसलें
D. वार्षिक बागवानी फसलें
सूची II: (अधिकतम प्रीमियम दर)
i. 1.5%
ii. 2.0%
iii. 5.0%
iv. 5.0%
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. राजस्थान में किसानों के लिए सहकारी ऋण संरचना के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) राज्य में अल्पकालिक सहकारी ऋण संरचना एक त्रि-स्तरीय प्रणाली है।
(2) केंद्रीय सहकारी बैंक राज्य स्तर पर शीर्ष निकाय के रूप में कार्य करते हैं।
(3) प्राथमिक कृषि ऋण समितियां ग्राम स्तर पर कार्य करती हैं।
(4) राजस्थान राज्य सहकारी बैंक केंद्रीय सहकारी बैंकों को पुनर्वित्त प्रदान करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. राजस्थान में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के क्रियान्वयन के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. इसका उद्देश्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण फसल नुकसान के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है।
II. वर्तमान में किसानों के लिए इस योजना के तहत नामांकन स्वैच्छिक है।
III. ओलावृष्टि और भूस्खलन जैसी स्थानीय आपदाओं के कारण होने वाले नुकसान का आकलन व्यक्तिगत कृषि स्तर पर किया जाता है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II

Click Here to Buy book on Amazon

की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. राजस्थान में 1899-1900 का ऐतिहासिक अकाल किस नाम से जाना जाता है?
(1) सहसा मुणसा
(2) छप्पन्या अकाल
(3) मकरा अकाल
(4) त्रिकाल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

81. सूची I में उपज को सूची II में विशिष्ट मंडी के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (उपज)
A. ईसबगोल
B. मेहंदी
C. प्याज
D. मूंगफली
सूची II: (मंडी)
i. भीनमाल (जालौर)
ii. सोजत (पाली)
iii. अलवर
iv. बीकानेर
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

82. मृदा प्रकार और क्षेत्र का सही युग्म पहचानिए।
(1) वर्टिसोल्स - हाड़ौती क्षेत्र
(2) एरिडिसोल्स - पूर्वी मैदान
(3) इनसेप्टिसोल्स - पश्चिमी शुष्क क्षेत्र
(4) अल्फिसोल्स - दक्षिणी अरावली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

83. न्यूनतम समर्थन मूल्य की प्राथमिक परिभाषा क्या है?
(1) वह अधिकतम मूल्य जिस पर कॉर्पोरेट किसान से खरीद सकते हैं।
(2) वह न्यूनतम मूल्य जिस पर राशन दुकानों में वस्तुएं बेची जाती हैं।
(3) बाजार मूल्य में गिरावट के विरुद्ध सरकार द्वारा दी जाने वाली गारंटीकृत कीमत।
(4) मंडियों में उपज बेचने के लिए किसानों पर लगाया गया कर।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

84. राजस्थान की अल्पकालिक सहकारी ऋण संरचना में ग्राम स्तर पर ऋण वितरण का कार्य कौन करता है?
(1) राजस्थान राज्य सहकारी बैंक
(2) केंद्रीय सहकारी बैंक
(3) नाबार्ड
(4) प्राथमिक कृषि ऋण समितियां
(5) अनुत्तरित प्रश्न

85. निम्नलिखित में से विषम का चयन कीजिए जिसे प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत कवर नहीं किया जाता है?
(1) सूखे के कारण उपज का नुकसान।
(2) ओलावृष्टि और भूस्खलन के कारण हानि।
(3) चोरी या जानबूझकर किए गए नुकसान के कारण फसल हानि।
(4) कीट हमले या बीमारी के प्रकोप से नुकसान।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

86. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं:
कथन I: राजस्थान कृषि निर्यात नीति का उद्देश्य मसालों और तिलहनों के मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देना है।
कथन II: यह नीति निर्यात-उन्मुख इकाइयों की स्थापना के लिए प्रोत्साहन देती है।
दिए गए विकल्पों के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

87. परंपरागत कृषि विकास योजना मुख्य रूप से किसके प्रोत्साहन से जुड़ी है?
(1) आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलें
(2) कृषि यंत्रीकरण
(3) पॉलीहाउस खेती
(4) क्लस्टर दृष्टिकोण से जैविक खेती
(5) अनुत्तरित प्रश्न

88. राजस्थान में मिश्रित खेती को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण कारण क्या है?
(1) फसल अवशेष चारे का स्रोत हैं और पशुधन खाद एवं पूरक आय प्रदान करते हैं।
(2) पशुपालन किसानों को अधिक नहरें बनाने के लिए प्रेरित करता है।
(3) पशुधन की चराई शाकनाशी की आवश्यकता को समाप्त कर देती है।
(4) यह मृदा प्रबंधन की आवश्यकता को समाप्त करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

फसल विफलता के समय बीमा तंत्र के रूप में कार्य करता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. राजस्थान कृषि प्रसंस्करण नीति 2019 के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह प्रसंस्करण इकाइयां स्थापित करने के लिए पूंजी निवेश अनुदान प्रदान करती है।
II. इसका उद्देश्य फसल कटाई के बाद के नुकसान को कम करना है।
III. यह प्रसंस्कृत कृषि उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहित करती है।
IV. यह विशिष्ट फसलों के परिवहन के लिए भाड़ा अनुदान प्रदान करती है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) I, II, III और IV (ये सभी)
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I और II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. ग्रामीण राजस्थान में अपनाई जाने वाली मिश्रित खेती प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव क्या है?
(1) इससे भूजल संसाधनों की तीव्र कमी होती है।
(2) इसके परिणामस्वरूप तीव्र औद्योगीकरण होता है।
(3) यह जैविक खाद की उपलब्धता को कम करती है।
(4) यह किसानों के लिए आय स्थिरता और जोखिम न्यूनीकरण सुनिश्चित करती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. राजस्थान में प्रमुख पशुधन नस्लों और उनके मूल क्षेत्रों के गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(1) कांकरेज - पूर्वी जिले (अलवर, भरतपुर)
(2) थारपारकर - पश्चिमी सीमावर्ती जिले (बाड़मेर, जैसलमेर)
(3) गिर - दक्षिण-पूर्वी जिले (अजमेर, भीलवाड़ा)
(4) राठी - उत्तर-पश्चिमी जिले (बीकानेर, श्रीगंगानगर)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. राजस्थान में निम्नलिखित कृषि पहलों की शुरुआत का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए।
(1) किसान क्रेडिट कार्ड की शुरुआत → प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का शुभारंभ → राजस्थान कृषि प्रसंस्करण नीति
(2) प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का शुभारंभ → किसान क्रेडिट कार्ड की शुरुआत → राजस्थान कृषि प्रसंस्करण नीति
(3) किसान क्रेडिट कार्ड की शुरुआत → राजस्थान कृषि प्रसंस्करण नीति → प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का शुभारंभ
(4) राजस्थान कृषि प्रसंस्करण नीति → प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का शुभारंभ → किसान क्रेडिट कार्ड की शुरुआत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. राजस्थान में जैविक खेती के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. पारंपरिक निम्न-रासायनिक पद्धतियों के कारण राजस्थान में जैविक खेती की अपार संभावनाएं हैं।
II. जैविक प्रमाणीकरण के लिए एक विशिष्ट संक्रमण अवधि की आवश्यकता होती है।
III. डूंगरपुर को राजस्थान का पहला पूर्ण जैविक जिला घोषित किया गया है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. राजस्थान में कृषि-व्यवसाय को बढ़ावा देने का सबसे उपयुक्त उद्देश्य कौन सा है?
(1) पारंपरिक कृषि को कॉर्पोरेट खेती से बदलना।
(2) स्थानीय किसानों को राज्य के बाहर उपज बेचने से रोकना।
(3) सभी कृषि भूमि का औद्योगिक पार्क के लिए अधिग्रहण करना।
(4) फार्म गेट मूल्य को अधिकतम करना, ग्रामीण रोजगार सृजन और राष्ट्रीय मूल्य श्रृंखलाओं से जुड़ाव।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. राजस्थान के किस जिले को राज्य का पहला पूर्ण जैविक खेती जिला बनने के लिए आधिकारिक रूप से मान्यता दी गई है?
(1) जयपुर
(2) डूंगरपुर
(3) जैसलमेर
(4) सीकर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय किस जिले में स्थित है?
(1) उदयपुर
(2) जयपुर
(3) बीकानेर
(4) जोधपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

62. सूची I में संस्थानों को सूची II में उनके स्थानों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (संस्थान)
A. केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
B. राई-सरसों अनुसंधान निदेशालय
C. राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र
D. केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान
सूची II: (स्थान)
i. भरतपुर
ii. जोधपुर
iii. अविकानगर (टोंक)
iv. अजमेर
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. राजस्थान सरकार के "राजकिसान साथी" पोर्टल के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह कृषि योजनाओं तक पहुँचने हेतु एक एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म है।
II. यह ऑनलाइन सब्सिडी आवेदन की सुविधा प्रदान करता है।
III. पोर्टल प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण सुनिश्चित करता है।
IV. यह स्थानीय भाषाओं में सुलभ है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में डिजिटल कृषि पहल का प्रत्यक्ष उद्देश्य नहीं है?
(1) वास्तविक समय में मौसम और बाजार मूल्य की जानकारी देना।
(2) डिजिटल डेटाबेस के स्थान पर मैन्युअल रिकॉर्ड सिस्टम को बढ़ावा देना।
(3) कृषि सब्सिडी वितरण में पारदर्शिता सुनिश्चित करना।
(4) फसल बीमा नामांकन की सुविधा प्रदान करना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. राजस्थान में कृषि अनुसंधान के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) अनुसंधान विशेष रूप से गन्ना और धान जैसी जल-प्रधान फसलों पर केंद्रित है।
(2) सूखा-प्रतिरोधी और कम अवधि वाली फसल किस्मों को विकसित करना प्राथमिक फोकस क्षेत्र है।
(3) महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय जैसलमेर में स्थित है।
(4) सभी अनुसंधान राज्य विश्वविद्यालयों की भागीदारी के बिना किए जाते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. निम्नलिखित परिदृश्य पर विचार कीजिए: एक किसान फसल की रोगग्रस्त पत्ती को स्कैन करने के लिए एक डिजिटल एप्लिकेशन का उपयोग करता है जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से उपचार सुझाता है। यह किस अवधारणा को स्पष्ट करता है?
(1) परिशुद्ध कृषि और डिजिटल एकीकरण
(2) पारंपरिक जैविक खेती
(3) कॉर्पोरेट अनुबंध खेती
(4) सहकारी विपणन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. राजस्थान की किस प्रमुख नकदी फसल का अनुसंधान सेवर, भरतपुर में स्थित राष्ट्रीय निदेशालय द्वारा किया जाता है?
(1) कपास
(2) सोयाबीन
(3) राई और सरसों
(4) मूंगफली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. कृषि के लिए विभिन्न डिजिटल पोर्टलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. ई-नाम कृषि वस्तुओं के ऑनलाइन व्यापार की सुविधा देता है।
II. राजकिसान साथी मशीनरी सब्सिडी आवेदन हेतु है।
III. पीएमएफबीवाई पोर्टल फसल नुकसान पंजीकरण हेतु है।
IV. मृदा स्वास्थ्य कार्ड पोर्टल उर्वरक उपयोग पर सिफारिशें देता है।
V. इन पोर्टलों का उद्देश्य किसानों को डिजिटल रिकॉर्ड से रोकना है।
दिए गए विकल्पों के आधार पर उपरोक्त में से कौन सा कथन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल V
(3) केवल III और V
(4) केवल IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं:
कथन I: राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से विस्तार सेवाओं में संलग्न हैं।
कथन II: कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को तकनीक और प्रशिक्षण प्रसार के लिए उत्तरदायी हैं।
दिए गए विकल्पों के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।

NODIA

(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. निम्नलिखित पहलों में से विषम का चयन कीजिए, जो "डिजिटल कृषि" की श्रेणी से संबंधित नहीं है।
(1) किसान सुविधा ऐप
(2) खेत के तालाबों का निर्माण
(3) ई-नाम
(4) राजकिसान साथी पोर्टल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. सूची I में फसलों को सूची II में अग्रणी उत्पादक जिलों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (प्रमुख फसल)
A. सोयाबीन
B. ईसबगोल
C. गेहूं
D. ज्वार
सूची II: (अग्रणी जिला)
i. जालौर और बाड़मेर
ii. कोटा, बूंदी और बारां
iii. अजमेर और नागौर
iv. श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. कृषि अर्थशास्त्र में, "शस्य गहनता" शब्द किसे संदर्भित करता है?
(1) शुद्ध बोए गए क्षेत्र के सापेक्ष कुल बोए गए क्षेत्र का प्रतिशत अनुपात
(2) प्रति हेक्टेयर उत्पादित फसलों की कुल मात्रा
(3) प्रति हेक्टेयर रासायनिक उर्वरकों की मात्रा
(4) नकदी फसलों के अंतर्गत कुल कृषि भूमि
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. राजस्थान में जायद फसलों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) वे मुख्य मानसून के मौसम के दौरान उगाई जाती हैं।
(2) उन्हें इष्टतम उपज के लिए भारी पाले की आवश्यकता होती है।
(3) वे मार्च और जून के बीच बोई जाने वाली अल्पकालिक फसलें हैं।
(4) बाजरा और मक्का जायद फसलों के सबसे प्रमुख उदाहरण हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. बाजरा का कौन सा पोषक गुण इसे कुपोषण के विरुद्ध महत्वपूर्ण बनाता है?
(1) इसमें लोहा, जस्ता और आहार फाइबर की उच्च मात्रा होती है।
(2) यह विटामिन C और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर है।
(3) इसमें शून्य कैलोरी और शून्य कार्बोहाइड्रेट होते हैं।
(4) यह विटामिन B12 का उच्चतम स्रोत है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. राजस्थान में मूंगफली की खेती के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह मुख्य रूप से खरीफ की फसल के रूप में उगाई जाती है।
(2) बीकानेर जिले में मूंगफली उत्पादन में भारी वृद्धि देखी गई है।
(3) यह एक महत्वपूर्ण तिलहन फसल है।
(4) इसे फली निर्माण के लिए भारी और जलभराव वाली मृण्मय मिट्टी की आवश्यकता होती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. निम्नलिखित में से किसकी खेती राजस्थान में प्रमुख मसाला फसल के रूप में नहीं की जाती है?
(1) धनिया
(2) काली मिर्च
(3) मेथी
(4) जीरा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. राजस्थान के पश्चिमी जिलों में कम कृषि उत्पादकता का मुख्य कारण क्या है?
(1) रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग।
(2) शारीरिक श्रम पर अत्यधिक निर्भरता।
(3) जल की कमी, अनिश्चित वर्षा और रेतीली मिट्टी।
(4) जैविक कृषि पद्धतियों का अत्यधिक क्रियान्वयन।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. इंदिरा गांधी नहर परियोजना के कमान क्षेत्रों में देखा गया नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव क्या है?
(1) भूजल का तीव्र क्षरण।
(2) मरुस्थलीय जीवों का उन्मूलन।
(3) अनियंत्रित दावानल।
(4) जलभराव और मृदा लवणता का उद्भव।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं:
कथन I: राजस्थान में भूजल दोहन का स्तर भारत में सर्वाधिक है।
कथन II: बारहमासी नदियों के अभाव में राज्य सिंचाई हेतु भूजल पर अत्यधिक निर्भर है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I

Click Here to Buy book on Amazon

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): पश्चिमी राजस्थान में जीरे की खेती अत्यधिक जोखिम भरी है और इसमें पैदावार में उतार-चढ़ाव की संभावना बनी रहती है।
कारण (R): जीरा मौसम की विविधताओं, विशेष रूप से फूल आने की अवस्था के दौरान बादलों वाले मौसम और असामयिक पाले के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. राजस्थान में विशिष्ट बागवानी फसलों के प्रमुख उत्पादन क्षेत्र के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) अनार - जैसलमेर
(2) संतरा - झालावाड़
(3) आम - बीकानेर
(4) सीताफल - हनुमानगढ़
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. राजस्थान में मूंगफली की खेती के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. बीकानेर को इसके उच्च मूंगफली उत्पादन के कारण अक्सर 'राजस्थान का राजकोट' कहा जाता है।
II. मूंगफली राजस्थान में एक रबी की फसल है जिसे अपने पूरे जीवन चक्र में ठंडे तापमान की आवश्यकता होती है।
III. मूंगफली की फलियों के विकास के लिए ढीली, रेतीली दोमट मिट्टी आदर्श होती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल I और III
(4) केवल II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. राजस्थान की मसाला फसलों के राष्ट्रीय महत्व के संबंध में, राज्य सामान्यतः भारत में मसालों के निम्नलिखित में से किस समूह का सबसे बड़ा या दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है?
(1) काली मिर्च, इलायची, लौंग
(2) हल्दी, अदरक, जायफल
(3) धनिया, जीरा, मेथी
(4) दालचीनी, तेजपत्ता, केसर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. राजस्थान में प्रयुक्त कृषि शब्दावली में, 'खड़ीन' शब्द किसे संदर्भित करता है?
(1) सरकार द्वारा अनुदानित एक आधुनिक ड्रिप सिंचाई प्रणाली
(2) सूखा-प्रतिरोधी बाजरा की एक स्थानीय किस्म
(3) नकदी फसलों के लिए उपयोग किया जाने वाला एक प्रकार का सिंथेटिक उर्वरक
(4) मरुस्थलीय क्षेत्र में वर्षा जल संचयन और कृषि की एक पारंपरिक विधि
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राष्ट्रीय औसत की तुलना में राजस्थान में सामान्य कृषि उत्पादकता का सही वर्णन करता है?
(1) उन्नत यंत्रीकरण के कारण राजस्थान में सभी प्रमुख फसलों की उपज राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है।
(2) राजस्थान की उत्पादकता विशेष रूप से वर्षा आधारित क्षेत्रों में राष्ट्रीय औसत के समान है।
(3) अधिकांश फसलों की उपज सामान्यतः राष्ट्रीय औसत से कम है, जिसका मुख्य कारण शुष्क परिस्थितियाँ और सुनिश्चित सिंचाई का अभाव है।
(4) राजस्थान में कृषि उत्पादकता पिछले तीन दशकों से स्थिर बनी हुई है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. सूची I में सिंचाई के स्रोतों को सूची II में उनके संबंधित प्रमुख क्षेत्रों/जिलों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सिंचाई का स्रोत)
A. नलकूप और कुएं
B. नहरें
C. तालाब
D. फव्वारा प्रणालियाँ
सूची II: (क्षेत्र/जिला)
i. जयपुर और अलवर
ii. श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़
iii. भीलवाड़ा और उदयपुर
iv. नर्मदा नहर कमान क्षेत्र (जालौर, बाड़मेर)
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

89. कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (आत्मा) के संबंध में सही कथन पहचानिए।
(1) यह यंत्रीकरण के लिए ऋण देने वाला संस्थान है।
(2) यह बफर स्टॉक के लिए खाद्यान्न खरीदती है।
(3) यह जिला स्तर पर कृषि विस्तार और तकनीक प्रसार हेतु पंजीकृत समिति है।
(4) यह मंडियों में मूल्य निर्धारण तंत्र को नियंत्रित करती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

90. राजकिसान साथी पोर्टल के माध्यम से किसे सहायता नहीं भेजी जाती है?
(1) शहरी परिवारों के लिए उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स
(2) सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली
(3) सौर जल पंप
(4) कृषि उपकरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

91. सूची I में मेलों को सूची II में जिलों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मेला)
A. मल्लीनाथ पशु मेला
B. पुष्कर पशु मेला
C. चंद्रभागा पशु मेला
D. गोगामेड़ी पशु मेला
सूची II: (जिला)
i. झालावाड़
ii. अजमेर
iii. हनुमानगढ़
iv. बाड़मेर (तिलवाड़ा)
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

92. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं:
कथन I: सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को अपनाने से जल उपयोग दक्षता में वृद्धि होती है।
कथन II: ये प्रणालियाँ पानी को सीधे जड़ क्षेत्र तक पहुँचाती हैं, जिससे वाष्पीकरण का नुकसान कम होता है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

93. कृषि पहल और विशेषता का सही युग्म पहचानिए।
(1) ई-नाम - पारंपरिक भौतिक व्यापार तंत्र।
(2) मृदा स्वास्थ्य कार्ड - भूमि स्वामित्व दस्तावेज।
(3) कस्टम हायरिंग केंद्र - लघु किसानों को किराए पर कृषि मशीनरी प्रदान करना।
(4) सूक्ष्म सिंचाई - अधिकतम जल उपयोग वाली बाढ़ सिंचाई तकनीक।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

94. किसान क्रेडिट कार्ड योजना भारत में पहली बार किस वर्ष शुरू की गई थी?
(1) 1991-92
(2) 2004-05
(3) 2014-15
(4) 1998-99
(5) अनुत्तरित प्रश्न

95. एक शुष्क जिले का किसान बाजरा के साथ मोठ का फसल चक्र अपनाता है। इसका प्राथमिक लाभ क्या है?
(1) दलहनी फसल जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण द्वारा मिट्टी की उर्वरता बहाल करती है।
(2) यह किसानों को अधिक उर्वरकों के उपयोग के लिए विवश करता है।
(3) यह कीट हमलों से पूर्ण सुरक्षा की गारंटी देता है।
(4) यह मिट्टी की लवणता को बढ़ाता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

96. "सफेद रोली" एक प्रमुख कवक रोग है जो किस फसल को प्रभावित करता है?
(1) बाजरा
(2) सरसों
(3) मक्का
(4) कपास
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

97. एकीकृत बागवानी विकास मिशन के संबंध में गलत कथन पहचानिए।
(1) यह बागवानी क्षेत्र के समग्र विकास को बढ़ावा देता है।
(2) यह अनाज फसलों पर ध्यान केंद्रित करता है और बागों को हतोत्साहित करता है।
(3) यह संरक्षित खेती की संरचना के लिए अनुदान प्रदान करता है।
(4) यह कटाई के बाद के प्रबंधन और विपणन में सहायता करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

98. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान में कृषि विपणन सुधार नहीं है?
(1) मंडी कर और बिचौलियों के कमीशन को अधिकतम सीमा तक बढ़ाना।
(2) निजी मार्केट यार्ड की स्थापना की अनुमति।
(3) यार्ड के बाहर सीधे उपज खरीदने की अनुमति।
(4) मंडियों का ई-नाम के साथ एकीकरण।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

99. राजस्थान की कृषि में तकनीकी हस्तक्षेपों के संबंध में सही कथन पहचानिए।

(1) सौर पंपों के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है।
(2) डिजिटल मिट्टी परीक्षण को पारंपरिक विधियों द्वारा बदल दिया गया है।
(3) सरकार कृषि ड्रोन की खरीद हेतु किसानों और संगठनों को अनुदान प्रदान करती है।
(4) राजस्थान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग नहीं किया जा सकता।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

100. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थान के कृषि क्षेत्र की सबसे बड़ी व्यापक चुनौती है?

(1) बारहमासी सतही जल की अधिकता और व्यापक बाढ़।
(2) जोतों का औद्योगिक एस्टेट में अत्यधिक विखंडन।
(3) अंतरराष्ट्रीय बाजारों में जैविक उत्पादों की अत्यधिक संतृप्ति।
(4) आवर्ती सूखा, घटता भूजल और वर्षा आधारित खेती पर संरचनात्मक निर्भरता।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

NODIA

1. (2) 28 से 30 प्रतिशत के बीच
राजस्थान की आर्थिक समीक्षा के अनुसार, स्थिर कीमतों पर सकल राज्य घरेलू उत्पाद में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों का योगदान 28.50% से 30% के मध्य रहता है। इस क्षेत्र में फसलें, पशुपालन, वानिकी और मत्स्य पालन जैसी महत्वपूर्ण गतिविधियां समाहित हैं। कृषि क्षेत्र राज्य की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है, जो ग्रामीण जनसंख्या को बड़े स्तर पर रोजगार और आजीविका सुनिश्चित करता है।

2. (1) केवल I और II
राजस्थान में खरीफ फसलें जून-जुलाई में दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन पर बोई जाती हैं। बाजरा, मूंग, मोठ और मूंगफली यहाँ की प्रमुख खरीफ फसलें हैं। इन फसलों को वानस्पतिक वृद्धि हेतु उच्च तापमान और पकने के लिए शुष्क वातावरण चाहिए। कथन III अशुद्ध है क्योंकि इन्हें लघु प्रकाश अवधि की अनिवार्य आवश्यकता नहीं होती। यह राज्य की खाद्य सुरक्षा हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण कृषि चक्र है।

3. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
राजस्थान भारत में बाजरा उत्पादन में अग्रणी है क्योंकि यहाँ की जलवायु इस हेतु अनुकूल है। बाजरा एक सूखा-सहिष्णु फसल है जिसे 40 से 50 सेंटीमीटर वर्षा और हल्की रेतीली मिट्टी की आवश्यकता होती है। कारण गलत है क्योंकि इसे भारी मृण्मय मिट्टी या 100 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा की आवश्यकता नहीं होती। यह शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों की मुख्य जीवनदायी फसल मानी जाती है।

4. (4) रबी की फसलें अपनी वानस्पतिक वृद्धि के लिए दक्षिण-पश्चिम मानसून पर अत्यधिक निर्भर होती हैं।
रबी फसलें शीत ऋतु में अक्टूबर-नवंबर में बोई जाती हैं और मार्च-अप्रैल में काटी जाती हैं। इनकी वृद्धि सिंचाई और शीतकालीन वर्षा 'मावठ' पर निर्भर करती है। दक्षिण-पश्चिम मानसून का प्रभाव केवल खरीफ फसलों पर होता है, रबी पर नहीं। गेहूं, जौ और सरसों जैसी रबी फसलों को अंकुरण के समय कम तापमान की आवश्यकता होती है। अतः विकल्प 4 का कथन भौगोलिक रूप से पूर्णतः गलत है।

5. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान में फसलों का वर्गीकरण बुआई समय और उपयोग के आधार पर होता है। गेहूं प्रमुख रबी खाद्यान्न है, जबकि सरसों महत्वपूर्ण रबी तिलहन और नकदी फसल है। बाजरा राज्य की मुख्य खरीफ खाद्यान्न फसल है जो न्यूनतम जल में उपजती है। कपास एक प्रमुख खरीफ नकदी फसल है, जिसकी खेती मुख्य रूप से राज्य के उत्तरी और दक्षिणी सिंचित क्षेत्रों में केंद्रित है।

6. (2) बाजरा
पश्चिमी राजस्थान का शुष्क वातावरण बाजरा कृषि हेतु अत्यंत उपयुक्त है। यह फसल न्यूनतम जल उपलब्धता और उच्च तापमान में भी अच्छी उपज देती है। बाजरा अल्प अवधि में पककर तैयार होता है, जिससे यह अनिश्चित मानसून की स्थिति में एक सुरक्षित विकल्प है। रेतीली मिट्टी में इसकी जड़ें गहराई तक जाकर नमी सोखती हैं, जो इसे मरुस्थलीय क्षेत्रों के लिए अनुकूल बनाती हैं।

7. (4) भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और उदयपुर
मक्का हेतु मध्यम वर्षा और उत्तम जल निकासी वाली मिट्टी आवश्यक है। राजस्थान के दक्षिणी जिले जैसे उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा और बांसवाड़ा इसके प्रमुख उत्पादक हैं। इन क्षेत्रों की लाल-काली मिट्टी मक्का की वानस्पतिक वृद्धि हेतु आदर्श है। यहाँ की जलवायु के कारण मक्का स्थानीय समुदायों का मुख्य भोजन और आय का स्रोत है। मक्का उत्पादन में दक्षिणी राजस्थान का प्राकृतिक परिवेश विशेष सहायक सिद्ध होता है।

8. (1) I, II, III
फसलों की जल आवश्यकता उनकी जैविक प्रकृति पर निर्भर करती है। चावल हेतु निरंतर जलभराव आवश्यक है, जिससे इसकी जल मांग सर्वाधिक होती है। गेहूं को मध्यम सिंचाई और ठंडी जलवायु चाहिए, अतः इसकी जल मांग चावल से कम है। बाजरा न्यूनतम जल मांग वाली फसल है, जो केवल वर्षा और शुष्क स्थितियों में भी उपज देने में सक्षम है। यह क्रम राज्य की कृषि जल उपयोगिता को दर्शाता है।

9. (3) सोयाबीन
चना, सरसों और जौ राजस्थान में रबी मौसम की फसलें हैं, जिन्हें शीतकालीन परिस्थितियों और सीमित सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, सोयाबीन एक खरीफ फसल है जिसे मानसून के दौरान बोया जाता है। इसके विकास हेतु अधिक नमी और उच्च तापमान अनिवार्य है। सोयाबीन का उत्पादन मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती क्षेत्र में होता है। बुआई मौसम के आधार पर सोयाबीन अन्य विकल्पों से भिन्न है।

10. (2) केवल III और IV
राजस्थान में गेहूं की खेती नहरों और नलकूपों जैसे सुनिश्चित सिंचाई स्रोतों पर निर्भर है, इसे केवल वर्षा आधारित नहीं कह सकते। राज्य में मक्का की उत्पादकता तकनीकी अभाव और वर्षा की अनिश्चितता के कारण अक्सर राष्ट्रीय औसत से कम रहती है। मोटे अनाजों के उत्पादन में राज्य अग्रणी है और ज्वार मुख्य रूप से अजमेर तथा टोंक जैसे मध्य जिलों में प्रचुरता से उगाया जाता है।

निवेश पर भारी अनुदान देती है। इसका लक्ष्य फसल कटाई के पश्चात होने वाली बर्बादी रोकना और उत्पादों की संचयन अवधि बढ़ाना है। यह निर्यात हेतु भाड़ा अनुदान और अंतरराष्ट्रीय मानकों हेतु उत्पादों के परीक्षण की सुविधाएं भी देती है। ये सभी उपाय संयुक्त रूप से कृषि को लाभप्रद व्यवसाय बनाते हैं।

55. (4) यह किसानों के लिए आय स्थिरता और जोखिम न्यूनीकरण सुनिश्चित करती है।
मिश्रित खेती, जिसमें फसल और पशुपालन साथ होता है, राजस्थान जैसे शुष्क राज्य हेतु श्रेष्ठ आर्थिक मॉडल है। इसका मुख्य लाभ यह है कि फसल विफलता की स्थिति में पशुपालन नियमित आय का स्रोत बना रहता है। यह प्रणाली कृषि लागत भी कम करती है क्योंकि गोबर खाद के रूप में और फसल अवशेष चारे के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में लचीलापन और आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

56. (1) कांकरेज - पूर्वी जिले (अलवर, भरतपुर)
राजस्थान में पशु नस्लें विशिष्ट क्षेत्रों से संबद्ध हैं। कांकरेज नस्ल की गाय मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान के जालौर, बाड़मेर और सिरोही जिलों में पाई जाती है, न कि पूर्वी जिलों में। थारपारकर सीमावर्ती शुष्क क्षेत्रों हेतु, राठी बीकानेर संभाग हेतु और गिर नस्ल अजमेर क्षेत्र हेतु विख्यात है। कांकरेज अपनी विशिष्ट 'सवाई चाल' हेतु प्रसिद्ध है और इसे कृषि एवं दुग्ध उत्पादन दोनों हेतु उपयुक्त माना जाता है।

57. (1) किसान क्रेडिट कार्ड की शुरुआत → प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का शुभारंभ → राजस्थान कृषि प्रसंस्करण नीति
इन योजनाओं का क्रम कृषि सुधारों के विभिन्न चरणों को दर्शाता है। किसान क्रेडिट कार्ड योजना 1998-99 में ऋण सुलभता हेतु शुरु हुई। इसके पश्चात, 2016 में जोखिम प्रबंधन हेतु प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू की गई। राजस्थान की नई कृषि प्रसंस्करण और निर्यात प्रोत्साहन नीति वर्ष 2019 में आई। यह विकास क्रम दर्शाता है कि सरकार अब ऋण और सुरक्षा के साथ मूल्य संवर्धन पर विशेष बल दे रही है।

58. (4) I, II और III
राजस्थान में जैविक खेती की प्रबल संभावनाएं हैं क्योंकि यहाँ पारंपरिक रूप से रसायनों का प्रयोग न्यून है। जैविक प्रमाणीकरण हेतु तीन वर्ष की संक्रमण अवधि अनिवार्य है ताकि मृदा से रसायनों का प्रभाव पूर्णतः समाप्त हो। डूंगरपुर को राज्य का पहला पूर्ण जैविक जिला घोषित करना एक बड़ी उपलब्धि है। सरकार अब समूह आधारित जैविक खेती, प्रमाणीकरण और विपणन में सहायता प्रदान कर इस क्षेत्र को विस्तारित कर रही है।

59. (4) फार्म गेट मूल्य को अधिकतम करना, ग्रामीण रोजगार सृजन और राष्ट्रीय मूल्य श्रृंखलाओं से जुड़ाव।
कृषि-व्यवसाय का लक्ष्य खेती को जीवन निर्वाह के बजाय लाभप्रद व्यवसाय बनाना है। इसके तहत किसानों को प्रत्यक्ष बाजार और प्रसंस्करण इकाइयों से जोड़ा जाता है ताकि उन्हें खेत पर ही अधिकतम मूल्य मिले। यह ग्रामीण क्षेत्रों में भंडारण, ग्रेडिंग और पैकेजिंग के माध्यम से रोजगार सृजित करता है। इस रणनीति से राजस्थान के किसान राष्ट्रीय खाद्य आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा बन रहे हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो रही है।

60. (2) डूंगरपुर
राजस्थान सरकार ने दक्षिण राजस्थान के डूंगरपुर जिले को राज्य का पहला पूर्ण जैविक जिला बनने की आधिकारिक मान्यता दी है। यहाँ के कृषकों ने रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर पारंपरिक जैविक खाद और कीटनाशकों को अपनाया है। इस पहल का लक्ष्य पर्यावरण संरक्षण और उपभोक्ताओं को स्वास्थ्यप्रद उत्पाद उपलब्ध कराना है। डूंगरपुर की यह सफलता राज्य के अन्य जिलों, विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों हेतु जैविक कृषि अपनाने का एक प्रेरक आदर्श है।

61. (3) बीकानेर
'स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय' बीकानेर में स्थित है। यह राज्य का प्रथम कृषि विश्वविद्यालय है, जिसकी स्थापना कृषि शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु की गई थी। यह संस्थान शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों हेतु उपयुक्त फसल किस्मों और कृषि तकनीकों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अधीन संचालित कृषि महाविद्यालय और अनुसंधान केंद्र किसानों को निरंतर तकनीकी प्रशिक्षण और वैज्ञानिक सहायता प्रदान करने हेतु प्रतिबद्ध हैं।

62. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान में कृषि अनुसंधान संस्थानों का व्यापक संजाल है। 'काजरी' (CAZRI) जोधपुर में स्थित है जो मरुस्थलीय समस्याओं पर शोध करता है। 'सरसों अनुसंधान निदेशालय' सेवर (भरतपुर) में स्थित है। 'राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र' तबीजी (अजमेर) में है और 'केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान' अविकानगर (टोंक) में स्थित है। ये संस्थान राज्य की विशिष्ट भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुरूप कृषि एवं पशुपालन में निरंतर नवाचार करते हैं।

63. (1) केवल I, II और III
'राजकिसान साथी पोर्टल' राजस्थान सरकार की डिजिटल पहल है जो किसानों को एक ही मंच पर समस्त कृषि सेवाएं प्रदान करती है। इसके माध्यम से सिंचाई, सौर पंप और यंत्रों पर अनुदान हेतु ऑनलाइन आवेदन किए जा सकते हैं। यह प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण सुनिश्चित कर पारदर्शिता बढ़ाता है। कथन IV इसकी मुख्य तकनीकी विशेषता नहीं है, यद्यपि इसे अत्यंत सुगम बनाया गया है। यह पोर्टल कृषि क्षेत्र में ई-गवर्नेंस का एक सशक्त उदाहरण है।

64. (2) डिजिटल डेटाबेस के स्थान पर मैन्युअल रिकॉर्ड सिस्टम को बढ़ावा देना।
डिजिटल कृषि का लक्ष्य पारंपरिक मैन्युअल प्रणालियों को आधुनिक तकनीकी व्यवस्था से प्रतिस्थापित करना है। राजस्थान में डिजिटल पहलों का उद्देश्य किसानों को मौसम पूर्वानुमान, ई-मंडियों और अनुदान हेतु ऑनलाइन मंच उपलब्ध कराना है। यह तकनीक कागजी कार्रवाई कम कर दावों के

Click Here to Buy book on Amazon

22. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान में सिंचाई स्रोतों का वितरण क्षेत्रीय भूगोल पर आधारित है। नलकूप और कुएं पूर्वी राजस्थान (जयपुर, अलवर) में मुख्य साधन हैं। उत्तर में श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिले नहरों पर निर्भर हैं। दक्षिणी राजस्थान के पथरीले धरातल वाले जिलों (भीलवाड़ा, उदयपुर) में तालाबों का उपयोग पारंपरिक है। नर्मदा नहर के कारण जालौर और बाड़मेर जिलों में फव्वारा सिंचाई पद्धति का उपयोग अनिवार्य एवं व्यापक स्तर पर किया गया है।

23. (3) III, I, II
राजस्थान के शुद्ध सिंचित क्षेत्र में कुएं और नलकूपों का सर्वाधिक योगदान है, जो कुल सिंचाई का लगभग 65% से 70% भाग कवर करते हैं। इसके पश्चात नहरों का स्थान है, जो विशेषकर उत्तरी और पश्चिमी राजस्थान में लगभग 25% से 30% सिंचाई प्रदान करती हैं। तालाबों का योगदान अत्यंत न्यून है और यह मुख्य रूप से दक्षिणी क्षेत्रों तक सीमित है। अतः राज्य में भूजल आधारित सिंचाई स्रोतों की प्रधानता स्पष्ट है।

24. (1) जिलों का 'डार्क ज़ोन' या अति-दोहन वाले खंडों में परिवर्तन
पूर्वी और मध्य राजस्थान में कृषि एवं घरेलू उपयोग हेतु भूजल का अनियंत्रित दोहन हो रहा है। जब जल निष्कर्षण प्राकृतिक पुनर्भरण दर से अधिक होता है, तो जल स्तर तेजी से गिरने लगता है। इस गंभीर स्थिति के कारण कई विकास खंडों को 'डार्क ज़ोन' या 'अति-दोहन' श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। इससे भविष्य में गहरा जल संकट और नलकूप सिंचाई की बढ़ती लागत जैसी चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं।

25. (2) केवल I, III और IV
डार्क ज़ोन वह क्षेत्र है जहाँ भूजल दोहन पुनर्भरण की तुलना में बहुत अधिक है। राजस्थान में भूजल की स्थिति चिंताजनक है क्योंकि अधिकांश खंड सुरक्षित श्रेणी से बाहर हो चुके हैं, अतः कथन II गलत है। सरकार 'अटल भूजल योजना' और सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों (ड्रिप और स्प्रिंकलर) से इस समस्या का समाधान कर रही है। इन पहलों का उद्देश्य जल प्रबंधन सुदृढ़ करना और किसानों को जल बचत हेतु प्रोत्साहित करना है।

26. (1) यह उच्च जोखिम, कम पैदावार और बाजरा एवं दालों की प्रमुख खेती द्वारा पहचानी जाती है।
राजस्थान में वर्षा आधारित कृषि या 'बारानी' खेती मानसून की अनिश्चितता पर निर्भर है। इस पद्धति में वर्षा की कमी से फसल विफलता का जोखिम सदैव रहता है। इसमें कम जल की आवश्यकता वाली फसलें जैसे बाजरा, ग्वार, मूंग और मोठ उगाई जाती हैं। तकनीकी निवेश और सिंचाई के अभाव में यहाँ पैदावार काफी कम होती है, जो स्थानीय किसानों की आर्थिक स्थिति को अस्थिर बनाती है।

27. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
इंदिरा गांधी नहर ने पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय परिदृश्य को रूपांतरित कर दिया है। पूर्व में जहाँ केवल शुष्क फसलें उगती थीं, अब जल उपलब्धता से गेहूं, कपास और मूंगफली जैसी व्यावसायिक फसलों की व्यापक खेती हो रही है। इस परियोजना ने मृदा नमी में सुधार किया और किसानों को वर्ष में एक से अधिक फसलें लेने हेतु सक्षम बनाया। अतः नहर परियोजना ही राज्य में फसल विविधीकरण का मुख्य कारक है।

28. (2) जायद - केवल शीतकालीन वर्षा (मावठ) पर निर्भर कृषि
राजस्थान में कृषि प्रकारों के स्थानीय नाम प्रचलित हैं। 'बारानी' वर्षा आधारित कृषि है और 'नहरी' नहरों द्वारा सिंचित क्षेत्र। 'चाही' वह कृषि है जो कुओं की सिंचाई पर निर्भर है। विकल्प 2 अशुद्ध है क्योंकि 'जायद' फसलों का काल मार्च से जून के मध्य होता है और ये पूर्णतः कृत्रिम सिंचाई पर निर्भर हैं। मावठ (शीतकालीन वर्षा) का लाभ मुख्य रूप से रबी फसलों को मिलता है, जायद को नहीं।

NODIA

29. (3) लगभग 30 से 35 प्रतिशत
राजस्थान एक जल अभाव वाला शुष्क राज्य है। वर्तमान में राज्य के शुद्ध बोए गए कुल क्षेत्रफल का लगभग 30% से 35% हिस्सा ही सुनिश्चित सिंचाई के अंतर्गत आता है। शेष कृषि क्षेत्र अभी भी वर्षा पर निर्भर है, जिसे 'बारानी' कृषि कहा जाता है। यद्यपि विगत दशकों में नहरों और नलकूपों के विस्तार से सिंचित क्षेत्र बढ़ा है, फिर भी राज्य का बड़ा भाग मानसून की अनिश्चितता के प्रति संवेदनशील है।

30. (2) केवल II
इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में अत्यधिक सिंचाई और दोषपूर्ण जल निकासी से जलभराव (सेम) की समस्या उत्पन्न हुई है। इसके परिणामस्वरूप मिट्टी में लवणता और क्षारीयता बढ़ गई है, जिससे भूमि बंजर होने लगी है, अतः कथन II गलत है। सरकार इस संकट से निपटने हेतु जिप्सम के उपयोग और सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को बढ़ावा दे रही है। नर्मदा नहर परियोजना में सूक्ष्म सिंचाई का प्रयोग कानूनी रूप से अनिवार्य है।

31. (1) केवल I और II
मौसम संबंधी सूखा तब होता है जब वर्षा सामान्य से न्यून होती है, जबकि जल विज्ञान संबंधी सूखा जलाशयों और भूजल के सूखने से संबंधित है। राजस्थान में कृषि सूखा मुख्य रूप से खरीफ मौसम में मानसून की विफलता के कारण होता है, क्योंकि राज्य की अधिकांश कृषि इसी पर आश्रित है। कथन III अशुद्ध है क्योंकि केवल शीतकालीन मानसून की विफलता ही कृषि सूखे की एकमात्र परिभाषा नहीं है।

32. (2) अति-चराई और वनोन्मूलन
पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थलीकरण हेतु प्राकृतिक कारकों के साथ मानवीय गतिविधियां भी उत्तरदायी हैं। पशुओं द्वारा अति-चराई से भूमि का सुरक्षात्मक वनस्पति आवरण नष्ट हो जाता है, जिससे मिट्टी ढीली हो जाती है। वनों की कटाई से वायु अवरोध समाप्त होते हैं और तेज हवाएं उपजाऊ मृदा को उड़ा ले जाती हैं। ये गतिविधियां पारिस्थितिक संतुलन बिगाड़ती हैं और रेत के टीलों के विस्तार में सहायता कर मरुस्थलीकरण को बढ़ाती हैं।

बाजरे की व्यापक खपत यहाँ की ग्रामीण जनसंख्या के पोषण स्तर को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

75. (4) इसे फली निर्माण के लिए भारी और जलभराव वाली मृण्मय मिट्टी की आवश्यकता होती है।
मूंगफली एक तिलहन फसल है जिसे हल्की, रेतीली और भुरभुरी मिट्टी चाहिए ताकि फलियां भूमि के अंदर सुगमता से विकसित हो सकें। भारी मृण्मय मिट्टी और जलभराव इसकी खेती हेतु हानिकारक हैं, क्योंकि इससे फलियां सड़ सकती हैं। बीकानेर का लूणकरणसर क्षेत्र अपनी रेतीली मृदा और सिंचाई सुविधाओं के कारण मूंगफली उत्पादन का प्रमुख केंद्र बन गया है। अतः विकल्प 4 मूंगफली की कृषि आवश्यकताओं के संबंध में अशुद्ध है।

76. (2) काली मिर्च
राजस्थान की शुष्क जलवायु धनिया, जीरा और मेथी जैसे बीजीय मसालों के उत्पादन हेतु विश्वभर में प्रसिद्ध है। इन मसालों को पकते समय शुष्क मौसम चाहिए जो यहाँ उपलब्ध है। इसके विपरीत, काली मिर्च एक उष्णकटिबंधीय मसाला है जिसे भारी वर्षा और उच्च आर्द्रता चाहिए, जो मुख्य रुप से केरल और कर्नाटक जैसे राज्यों में पाई जाती है। अतः राजस्थान में काली मिर्च का व्यावसायिक स्तर पर उत्पादन नहीं किया जाता है।

77. (3) जल की कमी, अनिश्चित वर्षा और रेतीली मिट्टी।
पश्चिमी राजस्थान में जल का अभाव कृषि हेतु सबसे बड़ी चुनौती है। यहाँ औसत वार्षिक वर्षा अत्यंत कम और अनिश्चित है, जिससे फसलें प्रायः सूख जाती हैं। यहाँ की रेतीली मृदा की जल धारण क्षमता न्यून है और जैविक अंशों की कमी से यह कम उपजाऊ होती है। इन्हीं प्राकृतिक सीमाओं के कारण प्रति हेक्टेयर उत्पादकता कम रहती है। हालांकि, आधुनिक तकनीकों और नहर विस्तार से अब इन परिस्थितियों में सुधार के प्रयास जारी हैं।

78. (4) जलभराव और मृदा लवणता का उद्भव।
इंदिरा गांधी नहर परियोजना से मरुस्थलीय क्षेत्रों में कृषि समृद्धि आई है, परंतु कुछ प्रतिकूल पर्यावरणीय प्रभाव भी उत्पन्न हुए हैं। अत्यधिक और अवैज्ञानिक सिंचाई से मिट्टी के नीचे का जल स्तर ऊपर आ गया है, जिसे 'जलभराव' या 'सेम' कहते हैं। इसके अतिरिक्त, वाष्पीकरण से सतह पर लवणों की परत जम जाती है, जिससे उपजाऊ भूमि धीरे-धीरे क्षारीय और कृषि हेतु अनुपयुक्त होती जा रही है। यह एक गंभीर पारिस्थितिक संकट है।

79. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
राजस्थान में चंबल के अतिरिक्त कोई बड़ी बारहमासी नदी नहीं है, जिससे सतही जल की उपलब्धता सीमित है। सिंचाई हेतु किसान मुख्य रुप से भूजल (कुओं और नलकूपों) पर निर्भर हैं। इस निरंतर और अत्यधिक दोहन के कारण राज्य के अधिकांश क्षेत्रों में जल निष्कर्षण पुनर्भरण दर से अधिक हो गया है। यही कारण है कि राजस्थान में भूजल की कमी और 'डार्क ज़ोन' की समस्या भारत के अन्य राज्यों की तुलना में अधिक चिंताजनक है।

80. (2) छप्पन्या अकाल
विक्रम संवत 1956 (1899-1900 ईस्वी) में पड़ा अकाल राजस्थान के इतिहास का सर्वाधिक विनाशकारी अकाल है, जिसे 'छप्पन्या अकाल' कहते हैं। यह एक 'त्रिकाल' था, जिसमें अन्न, जल और चारे की भीषण कमी हुई। इस दौरान व्यापक स्तर पर जन और पशुधन की हानि हुई थी। इस त्रासदी ने राज्य में जल संरक्षण और अकाल राहत नीतियों की आवश्यकता को सदैव हेतु रेखांकित किया। लोक स्मृतियों में इसका दुखद वर्णन आज भी मिलता है।

81. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान में विभिन्न उत्पादों के विपणन हेतु विशिष्ट मंडियां विख्यात हैं। जालौर का भीनमाल ईसबगोल के बड़े व्यापार हेतु जाना जाता है। पाली का सोजत अपनी गुणवत्तापूर्ण मेहंदी हेतु विश्व प्रसिद्ध है, जिसे भौगोलिक संकेत (GI Tag) भी प्राप्त है। अलवर जिला प्याज उत्पादन और मंडी हेतु प्रसिद्ध है, जबकि बीकानेर मूंगफली प्रसंस्करण का प्रमुख केंद्र है। ये विशिष्ट मंडियां स्थानीय कृषकों को उनकी उपज का श्रेष्ठ मूल्य दिलाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

82. (1) वर्टिसोल्स - हाड़ौती क्षेत्र
राजस्थान में मृदा का वैज्ञानिक वर्गीकरण उनके विशिष्ट गुणों पर आधारित है। वर्टिसोल्स (काली मिट्टी) मुख्य रुप से हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, झालावाड़) में पाई जाती है, जो कपास और सोयाबीन हेतु श्रेष्ठ है। एरिडिसोल्स पश्चिमी मरुस्थल में, अल्फिसोल्स पूर्वी मैदानी भागों में और इनसेप्टिसोल्स अरावली ढलानों पर मिलती है। अतः वर्टिसोल्स और हाड़ौती क्षेत्र का युग्म भौगोलिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से पूर्णतः सटीक और सही है।

83. (3) बाजार मूल्य में गिरावट के विरुद्ध सरकार द्वारा दी जाने वाली गारंटीकृत कीमत।
न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) कृषि मूल्य नीति का महत्वपूर्ण स्तंभ है। यह वह दर है जिस पर सरकार किसानों से फसल खरीदने का आश्वासन देती है, भले ही खुले बाजार में दरें कितनी भी गिर जाएं। यह किसानों हेतु 'कीमत बीमा' की भाँति है जो बंपर पैदावार के समय आर्थिक क्षति से बचाता है। इसकी घोषणा बुआई से पूर्व की जाती है ताकि किसान अपनी फसलों का चयन लाभकारी आधार पर कर सकें।

84. (4) प्राथमिक कृषि ऋण समितियां
राजस्थान में ग्रामीण स्तर पर अल्पकालिक ऋण प्रदान करने का दायित्व 'प्राथमिक कृषि ऋण समितियों' (PACS) का है। ये समितियां सीधे कृषकों से जुड़ी होती हैं और उन्हें फसल ऋण, उर्वरक एवं बीज उपलब्ध कराती हैं। इनकी सदस्यता स्थानीय किसानों के पास होती है और ये जिला केंद्रीय सहकारी बैंकों से पुनर्वित्त प्राप्त करती हैं। वित्तीय समावेशन और किसानों की तात्कालिक ऋण आवश्यकताओं की पूर्ति में इन समितियों की भूमिका अत्यंत आधारभूत एवं महत्वपूर्ण है।

Downloaded from www.pdf.tube

44. (2) केंद्रीय सहकारी बैंक राज्य स्तर पर शीर्ष निकाय के रूप में कार्य करते हैं।
राजस्थान में अल्पकालिक सहकारी ऋण संरचना त्रि-स्तरीय है। ग्राम स्तर पर 'प्राथमिक कृषि ऋण समितियां' (PACS) कार्यरत हैं। जिला स्तर पर 'केंद्रीय सहकारी बैंक' (DCCB) स्थित हैं, जबकि राज्य स्तर पर शीर्ष संस्था के रूप में 'राजस्थान राज्य सहकारी बैंक' कार्य करता है। अतः कथन 2 गलत है क्योंकि केंद्रीय सहकारी बैंक जिला स्तर पर होते हैं। यह व्यवस्था किसानों को समय पर वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु निर्मित है।

45. (4) I, II, III और IV
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना किसानों को प्राकृतिक आपदाओं, जैसे सूखा, बाढ़ और कीटों से सुरक्षा देती है। अब यह योजना सभी किसानों हेतु पूर्णतः स्वैच्छिक है। स्थानीय आपदाओं (ओलावृष्टि, जलभराव) की स्थिति में नुकसान का आकलन अब क्षेत्र के बजाय व्यक्तिगत खेत स्तर पर किया जाता है। इससे दावों के निपटान में अधिक सटीकता और पारदर्शिता आती है, जो संकट के समय किसानों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है।

46. (4) अनार
भारत सरकार 23 प्रमुख फसलों हेतु न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) घोषित करती है, जिसमें गेहूं, सरसों और बाजरा जैसे खाद्यान्न एवं तिलहन सम्मिलित हैं। इसका उद्देश्य किसानों को एक सुरक्षित मूल्य प्रदान करना है। अनार जैसी बागवानी फसलें इस समर्थन मूल्य के दायरे में नहीं आतीं। फलों और सब्जियों की कीमतों का निर्धारण बाजार की मांग और आपूर्ति के आधार पर होता है, न कि सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम मूल्य पर।

47. (1) तहसील स्तर
राजस्थान में किसानों को दीर्घकालिक ऋण हेतु द्वि-स्तरीय सहकारी संरचना है। तहसील या उप-मंडल स्तर पर 'प्राथमिक सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक' किसानों को ट्रैक्टर, सिंचाई यंत्र और भूमि सुधार हेतु ऋण देते हैं। राज्य स्तर पर 'राजस्थान राज्य सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक' इन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करता है। यह व्यवस्था किसानों को कृषि क्षेत्र में लंबी अवधि के पूंजीगत निवेश करने हेतु समर्थ बनाती है।

48. (1) I, II, III, IV
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में व्यक्तिगत दावे की प्रक्रिया सुव्यवस्थित है। स्थानीय आपदा (ओलावृष्टि/जलभराव) होने पर प्रभावित किसान को 72 घंटे के भीतर बीमा कंपनी या कृषि विभाग को सूचित करना अनिवार्य है। इसके पश्चात राजस्व और बीमा अधिकारियों की संयुक्त टीम द्वारा नुकसान का भौतिक सत्यापन किया जाता है। अंततः, स्वीकृत दावा राशि प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से सीधे किसान के बैंक खाते में जमा कर दी जाती है।

49. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) का मुख्य लक्ष्य बाजार में बंपर पैदावार के समय कीमतों में गिरावट से किसानों को सुरक्षा देना है। राजस्थान में बाजरा और सरसों का उत्पादन अधिक होने से कटाई के समय भाव गिर सकते हैं। MSP घोषणा किसानों को यह विश्वास दिलाती है कि सरकार एक निश्चित मूल्य पर फसल खरीदने हेतु प्रतिबद्ध है। अतः बाजार की अनिश्चितता ही इस समर्थन मूल्य प्रणाली की आवश्यकता और महत्व का आधार है।

50. (2) केवल IV
राजस्थान में समर्थन मूल्य खरीद संबंधी कई चुनौतियां हैं। पर्याप्त खरीद केंद्रों की कमी और भुगतान में विलंब मुख्य बाधाएं हैं। इसके अतिरिक्त, सरकारी खरीद के कड़े गुणवत्ता मानकों के कारण कभी-कभी फसल स्वीकार नहीं की जाती। कथन IV अशुद्ध है क्योंकि सरकार कुल उत्पादन का 100% समर्थन मूल्य पर नहीं खरीदती, बल्कि केवल बाजार हस्तक्षेप हेतु निर्धारित मात्रा की खरीद होती है। शेष व्यापार निजी स्तर पर होता है।

51. (3) 2019
राजस्थान सरकार ने 12 दिसंबर, 2019 को नई 'कृषि प्रसंस्करण, कृषि व्यवसाय और कृषि निर्यात प्रोत्साहन नीति' लागू की। इसका उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना और उत्पादों में मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देना है। इसके तहत राज्य में नई प्रसंस्करण इकाइयां स्थापित करने हेतु विशेष अनुदान और वित्तीय रियायतें दी जा रही हैं। यह नीति ग्रामीण युवाओं हेतु कृषि क्षेत्र में स्वरोजगार के नए अवसर सृजित करने पर केंद्रित है।

52. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान की कृषि योजनाएं विशिष्ट लक्ष्यों पर केंद्रित हैं। 'परम्परागत कृषि विकास योजना' जैविक खेती के समूह बनाने हेतु कार्य करती है। 'राजस्थान मिलेट्स मिशन' पोषक अनाजों की खेती और उनकी प्रोसेसिंग बढ़ाता है। 'मुख्यमंत्री कृषक साथी योजना' दुर्घटना की स्थिति में किसानों को आर्थिक सहायता देती है। 'पीएम-कुसुम योजना' से डीजल पंपों को सौर ऊर्जा पंपों में बदलकर किसानों की लागत कम की जा रही है।

NODIA

53. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान की कृषि में पशुपालन एक अभिन्न अंग है, जो इसे 'मिश्रित खेती' का स्वरूप प्रदान करता है। मानसून की अनिश्चितता के कारण फसल खराब होने पर पशुपालन किसानों को वैकल्पिक आय सुनिश्चित करता है। पशुधन एक जीवित संपत्ति है जो ग्रामीण परिवारों को गंभीर आर्थिक संकट से सुरक्षा देती है। कृषि और पशुपालन का यह समन्वय राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता, स्थिरता और आत्मनिर्भरता प्रदान करता है।

54. (2) I, II, III और IV (ये सभी)
राजस्थान की 2019 की कृषि प्रसंस्करण नीति एक व्यापक ढांचा प्रस्तुत करती है। यह प्रसंस्करण संयंत्र लगाने हेतु पूंजी

11. (4) राई और सरसों
राजस्थान भारत में राई और सरसों उत्पादन में प्रथम स्थान पर है, जहाँ देश का लगभग 40% से अधिक उत्पादन होता है। अनुकूल जलवायु और कम जल आवश्यकता के कारण सरसों राज्य की प्रमुख नकदी फसल बन गई है। भरतपुर जिला इसके उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है और यहाँ 'राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान केंद्र' भी स्थित है, जो इस क्षेत्र में उन्नत कृषि तकनीकों और अनुसंधान को निरंतर बढ़ावा देता है।

12. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
राजस्थान के विभिन्न जिले विशिष्ट मसाला उत्पादन हेतु विख्यात हैं। जीरे का सर्वाधिक उत्पादन जालौर और बाड़मेर के शुष्क क्षेत्रों में होता है। धनिया मुख्य रूप से हाड़ौती क्षेत्र के कोटा और बारां जिलों में उगाया जाता है। नागौर जिला अपनी सुगंधित मेथी हेतु प्रसिद्ध है, जबकि लहसुन का बड़ा उत्पादन झालावाड़ और बारां जिलों में किया जाता है। ये फसलें राज्य की कृषि आय में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

13. (3) जौ
नकदी फसलें वे हैं जिन्हें मुख्य रूप से बाजार में लाभ हेतु बेचा जाता है। कपास, मूंगफली और ईसबगोल राजस्थान की प्रमुख नकदी फसलें हैं। इसके विपरीत, जौ पारंपरिक रूप से एक खाद्यान्न फसल है, हालांकि इसका औद्योगिक उपयोग माल्ट निर्माण में भी होता है। जौ का उत्पादन प्राथमिक रूप से घरेलू उपभोग और पशु आहार हेतु किया जाता है, इसलिए इसे मुख्य नकदी फसल की श्रेणी में नहीं रखते।

14. (2) केवल I, III, IV और V
राजस्थान में शुष्क बागवानी के अंतर्गत बेर, आंवला और अनार उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं। श्रीगंगानगर जिला सिंचित कृषि के कारण किन्नू उत्पादन का मुख्य केंद्र है। जयपुर-अजमेर क्षेत्र में फूलों की व्यावसायिक खेती बढ़ रही है। कोटा के नांता में नींबू वर्गीय फलों हेतु उत्कृष्टता केंद्र स्थापित है। कथन II गलत है क्योंकि 'राष्ट्रीय बागवानी मिशन' राजस्थान के 24 जिलों में सक्रिय रूप से संचालित हो रहा है।

15. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
अमेरिकी कपास (नर्मा) की खेती हेतु नियमित सिंचाई और उर्वरक आवश्यक हैं। श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिले इंदिरा गांधी तथा भाखड़ा नहर प्रणालियों से जुड़े हैं, जो कपास हेतु पर्याप्त जल सुनिश्चित करते हैं। नहर सिंचाई की इस उपलब्धता ने ही इन मरुस्थलीय जिलों को कपास उत्पादन के बड़े केंद्रों में रूपांतरित किया है। अतः सिंचाई सुविधा ही इन क्षेत्रों में नर्मा की व्यापक खेती का भौगोलिक आधार है।

16. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
पश्चिमी राजस्थान में जीरे की खेती आर्थिक रूप से जोखिमपूर्ण है क्योंकि यह पर्यावरणीय कारकों के प्रति अति संवेदनशील है। फूल आने के समय आकाश में बादल या कोहरा होने पर फसल में 'झुलसा रोग' और कीटों का प्रकोप बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त, अचानक पड़ने वाला पाला पूरी फसल नष्ट कर सकता है। मौसम की इसी अनिश्चितता के कारण जीरे की पैदावार और बाजार भाव अस्थिर रहते हैं।

17. (2) संतरा - झालावाड़
झालावाड़ जिले को उच्च संतरा उत्पादकता के कारण 'राजस्थान का नागपुर' कहा जाता है। यहाँ की आर्द्र परिस्थितियाँ संतरा उत्पादन हेतु देश में श्रेष्ठ मानी जाती हैं। इसके विपरीत, अनार का उत्पादन बाड़मेर और जालौर के सिंचित क्षेत्रों में बढ़ रहा है। आम का उत्पादन मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा) में होता है और सीताफल हेतु राजसमंद तथा चित्तौड़गढ़ जिले प्रसिद्ध हैं। अतः विकल्प 2 का युग्म सही है।

18. (2) केवल II
मूंगफली राजस्थान की महत्वपूर्ण खरीफ फसल है, न कि रबी। इसे जून-जुलाई में गर्म-आर्द्र मौसम में बोया जाता है। बीकानेर का लूणकरणसर क्षेत्र भारी उत्पादन के कारण 'राजस्थान का राजकोट' कहलाता है। मूंगफली की फलियों के विकास हेतु हल्की, रेतीली और उत्तम जल निकासी वाली दोमट मिट्टी आवश्यक है। कथन II पूर्णतः अशुद्ध है क्योंकि यह रबी नहीं बल्कि खरीफ की मुख्य तिलहन फसल मानी जाती है।

19. (3) धनिया, जीरा, मेथी
राजस्थान मसालों, विशेषकर बीजीय मसालों के उत्पादन में देश का अग्रणी राज्य है। धनिया, जीरा और मेथी के उत्पादन में राजस्थान का भारत में शीर्ष स्थान रहता है। राज्य की शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु इन बीजीय मसालों हेतु प्राकृतिक रूप से अनुकूल है। अजमेर स्थित 'राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र' इन फसलों की उत्पादकता और गुणवत्ता बढ़ाने हेतु निरंतर तकनीकी सहयोग एवं नवाचारों को बढ़ावा देता है।

20. (4) मरुस्थलीय क्षेत्र में वर्षा जल संचयन और कृषि की एक पारंपरिक विधि
'खड़ीन' पश्चिमी राजस्थान, विशेषकर जैसलमेर में प्रचलित जल संरक्षण की प्राचीन पद्धति है। इसमें ढलान वाली भूमि पर मिट्टी का बांध बनाकर वर्षा जल संचित किया जाता है। जब जल सूख जाता है, तो उस संरक्षित नमी वाली भूमि पर रबी फसलें (गेहूं, चना) बिना अतिरिक्त सिंचाई के उगाई जाती हैं। यह विधि मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र में कृषि और जल प्रबंधन का एक उत्कृष्ट एवं टिकाऊ उदाहरण है।

21. (3) अधिकांश फसलों की उपज सामान्यतः राष्ट्रीय औसत से कम है, जिसका मुख्य कारण शुष्क परिस्थितियाँ और सुनिश्चित सिंचाई का अभाव है।
राजस्थान में कृषि मुख्य रूप से मानसूनी वर्षा पर आधारित है, जो अनिश्चित और अल्प होती है। राज्य का अधिकांश भाग मरुस्थलीय है, जहाँ मिट्टी की उर्वरता कम और वाष्पीकरण दर अधिक है। यद्यपि सिंचित क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ी है, फिर भी राज्य का औसत राष्ट्रीय मानकों से कम है। बुनियादी ढांचे की कमी और पारंपरिक कृषि विधियों के कारण यहाँ प्रति हेक्टेयर पैदावार में निरंतर सुधार की आवश्यकता है।

Click Here to Buy book on Amazon

निपटान में तीव्रता लाती है। अतः मैन्युअल रिकॉर्ड सिस्टम को बढ़ावा देना किसी भी डिजिटल पहल का हिस्सा नहीं हो सकता, क्योंकि यह आधुनिकीकरण के सिद्धांतों के विपरीत है।

65. (2) सूखा-प्रतिरोधी और कम अवधि वाली फसल किस्मों को विकसित करना प्राथमिक फोकस क्षेत्र है।
राजस्थान की विषम जलवायु और जल संकट को देखते हुए, यहाँ के अनुसंधान का मुख्य केंद्र ऐसी फसलें विकसित करना है जो अल्प जल और कम समय में पक सकें। यह शुष्क क्षेत्रों की खाद्य सुरक्षा हेतु अनिवार्य है। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय उदयपुर में है, न कि जैसलमेर में। राज्य के विश्वविद्यालय और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मिलकर किसानों की समस्याओं के वैज्ञानिक समाधान खोजते हैं, जिससे कृषि को अधिक टिकाऊ बनाया जा सके।

66. (1) परिशुद्ध कृषि और डिजिटल एकीकरण
परिशुद्ध कृषि (Precision Farming) में डेटा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कर कृषि कार्यों को सटीक बनाया जाता है। जब किसान डिजिटल माध्यम से रोग की पहचान करता है, तो वह उन्नत तकनीक का प्रयोग कर रहा होता है ताकि संसाधनों का अनावश्यक उपयोग न हो। यह डिजिटल एकीकरण का उत्कृष्ट उदाहरण है जो खेती की लागत कम कर पैदावार बढ़ाता है। यह आधुनिक तकनीक भविष्य की टिकाऊ खेती हेतु एक अनिवार्य आधार बनती जा रही है।

67. (3) राई और सरसों
भरतपुर के सेवर में स्थित 'सरसों अनुसंधान निदेशालय' (DRMR) राई और सरसों के उत्पादन में सुधार हेतु देश का प्रमुख संस्थान है। राजस्थान भारत का सबसे बड़ा सरसों उत्पादक होने के कारण यहाँ अनुसंधान का विशेष महत्व है। यह निदेशालय ऐसी किस्में विकसित करता है जिनमें तेल की मात्रा अधिक और रोग प्रतिरोधक क्षमता श्रेष्ठ हो। यहाँ के शोध का लाभ पूरे देश के किसानों को मिल रहा है, जिससे सरसों की आर्थिक उपयोगिता बढ़ी है।

68. (2) केवल V
विभिन्न कृषि पोर्टलों का वास्तविक उद्देश्य किसानों को डिजिटल रिकॉर्ड रखने और आधुनिक डेटा प्रणालियों से जोड़ना है। ई-नाम, राजकिसान साथी और मृदा स्वास्थ्य कार्ड जैसे मंच सूचना के अभाव को दूर कर खेती को वैज्ञानिक बनाते हैं। कथन V पूर्णतः अशुद्ध है क्योंकि ये पोर्टल किसानों को डिजिटल रूप से साक्षर और सशक्त बनाने हेतु निर्मित हैं। इन प्रौद्योगिकियों से कृषि सेवाओं की सुपुर्दगी में अभूतपूर्व पारदर्शिता और गति आई है।

69. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
राजस्थान में कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका शैक्षणिक होने के साथ 'कृषि विज्ञान केंद्रों' (KVK) के माध्यम से किसानों तक तकनीकी प्रसार की भी है। प्रत्येक जिले में स्थापित ये केंद्र प्रयोगशाला के नवाचारों को सीधे किसानों के खेतों तक पहुँचाते हैं। वे कृषकों को प्रशिक्षण और नई फसल किस्मों का प्रत्यक्ष प्रदर्शन प्रदान करते हैं। इस प्रकार, कृषि विज्ञान केंद्र ही वैज्ञानिक अनुसंधान और व्यावहारिक कृषि के मध्य एक सेतु का कार्य करते हैं।

70. (2) खेत के तालाबों का निर्माण
डिजिटल कृषि में इंटरनेट, सॉफ्टवेयर और डेटा आधारित तकनीकों का प्रयोग होता है, जैसे ई-नाम, राजकिसान साथी और किसान सुविधा ऐप। खेत के तालाबों या डिग्गी का निर्माण एक भौतिक बुनियादी ढांचागत गतिविधि है जो जल संरक्षण से संबद्ध है। यद्यपि यह कृषि हेतु महत्वपूर्ण है, किंतु इसे डिजिटल तकनीक की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। अन्य तीनों विकल्प सीधे तौर पर सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से किसानों को सेवाएं देते हैं।

71. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान में फसलों का क्षेत्रीय वितरण मृदा और जलवायु पर आधारित है। सोयाबीन मुख्य रूप से हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, बारां) में उत्पादित होता है। ईसबगोल हेतु जालौर और बाड़मेर जिले सुविख्यात हैं। गेहूं का सर्वाधिक उत्पादन सिंचित उत्तरी जिलों (श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़) में होता है। ज्वार की खेती मध्य राजस्थान के अजमेर और नागौर जिलों में केंद्रित है। यह भौगोलिक विविधता राज्य की कुल कृषि उत्पादकता और विशिष्टता को परिभाषित करती है।

72. (1) शुद्ध बोए गए क्षेत्र के सापेक्ष कुल बोए गए क्षेत्र का प्रतिशत अनुपात
शस्य गहनता (Cropping Intensity) यह दर्शाती है कि एक ही भूमि पर वर्ष में कितनी बार फसल उगाई गई। यदि एक भूमि पर साल में दो-तीन फसलें ली जाती हैं, तो गहनता अधिक होगी। राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में शस्य गहनता उच्च है, जबकि वर्षा आधारित क्षेत्रों में यह कम होती है क्योंकि वहाँ केवल खरीफ फसल ही ली जा पाती है। यह कृषि भूमि की उपयोगिता और कार्यकुशलता मापने का एक महत्वपूर्ण आर्थिक सूचक है।

73. (3) वे मार्च और जून के बीच बोई जाने वाली अल्पकालिक फसलें हैं।
राजस्थान में जायद फसलों का काल रबी और खरीफ के मध्य की अवधि में आता है। ये मार्च में बोई जाती हैं और मानसून से पूर्व जून में काट ली जाती हैं। इनके विकास हेतु तीव्र धूप और कृत्रिम सिंचाई आवश्यक है। इनमें मुख्य रूप से खरबूज़ा, तरबूज, ककड़ी और चारा फसलें सम्मिलित हैं। चूंकि ये अत्यंत अल्प समय में तैयार होती हैं, अतः ये किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करने का एक प्रभावी माध्यम हैं।

74. (1) इसमें लोहा, जस्ता और आहार फाइबर की उच्च मात्रा होती है।
बाजरा को 'न्यूट्री-सीरियल' या पोषक अनाज कहा जाता है क्योंकि इसमें सूक्ष्म पोषक तत्व प्रचुर हैं। यह आयरन (लोहा) और जिंक (जस्ता) का श्रेष्ठ प्राकृतिक स्रोत है, जो एनीमिया दूर करने में सहायक है। इसमें मौजूद उच्च फाइबर पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है और मधुमेह प्रबंधन में उपयोगी है। राजस्थान में

Downloaded from www.pdf.tube

33. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान में कृषि विपणन को सुदृढ़ करने हेतु विशिष्ट वस्तुओं की विशेष मंडियां स्थापित हैं। मेड़ता सिटी (नागौर) जीरे के बड़े व्यापारिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है। रामगंज मंडी (कोटा) धनिया की एशिया की प्रमुख मंडियों में से एक है। श्रीगंगानगर में किन्नू की विशेष मंडी है क्योंकि यहाँ इसका सर्वाधिक उत्पादन होता है। अलवर जिला प्याज उत्पादन और विपणन हेतु प्रसिद्ध है। ये मंडियां किसानों को उचित मूल्य सुनिश्चित करती हैं।

34. (2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
राजस्थान कृषि उपज मंडी अधिनियम का मूल उद्देश्य बिचौलियों के शोषण को रोकना और विनियमित बाजार उपलब्ध कराना था। हाल के वर्षों में ई-नाम और निजी मंडियों जैसे विपणन सुधारों ने किसानों को फसल बेचने की अधिक स्वतंत्रता दी है। यद्यपि दोनों कथन सही हैं और कृषि विपणन से संबंधित हैं, लेकिन ये आधुनिक सुधार सीधे तौर पर मूल मंडी अधिनियम के कार्यान्वयन की एकमात्र व्याख्या नहीं करते हैं।

35. (1) पश्चिमी शुष्क क्षेत्र → अर्ध-शुष्क क्षेत्र → दक्षिण-पूर्वी पठार
राजस्थान में सूखे की संवेदनशीलता वर्षा वितरण के अनुसार परिवर्तित होती है। पश्चिमी शुष्क क्षेत्र (जैसलमेर, बाड़मेर) न्यूनतम वर्षा के कारण सर्वाधिक संवेदनशील है। अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में वर्षा की स्थिति कुछ बेहतर है, अतः वहाँ जोखिम मध्यम है। दक्षिण-पूर्वी पठारी क्षेत्र (झालावाड़, कोटा) में राज्य की सर्वाधिक वर्षा होती है, जिसके कारण यहाँ सूखे की बारंबारता और तीव्रता अन्य क्षेत्रों की तुलना में न्यूनतम रहती है।

36. (4) वायु अपरदन और रेत के टीलों का स्थिरीकरण
जैसलमेर जैसे शुष्क क्षेत्रों में तेज हवाएं मृदा अपरदन का मुख्य कारक हैं। रक्षक मेखला और वात-रोध तकनीकों के तहत खेतों की सीमाओं पर वृक्षों की कतारें लगाई जाती हैं। ये कतारें वायु वेग को कम करती हैं, जिससे उपजाऊ मृदा का उड़ना रुक जाता है। यह तकनीक रेत के टीलों के स्थानांतरण को भी रोकती है। अतः यह पहल मरुस्थलीकरण रोकने और मृदा स्वास्थ्य संरक्षण हेतु अत्यंत प्रभावी सिद्ध होती है।

37. (3) केवल IV
राजस्थान में कृषि विपणन बहुआयामी है। ई-नाम डिजिटल माध्यम से मंडियों को जोड़कर पारदर्शिता बढ़ाता है। भंडारण सुविधाओं का अभाव छोटे किसानों हेतु बड़ी चुनौती है क्योंकि वे फसल को अधिक समय तक रोक नहीं पाते। कथन IV पूर्णतः गलत है क्योंकि सहकारी विपणन समितियां (जैसे राजफेड) किसानों को उचित मूल्य दिलाने और न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

38. (2) जैविक खाद का व्यापक प्रयोग
राजस्थान में मृदा क्षरण के कई प्राकृतिक और मानवीय कारण हैं। पश्चिमी भागों में वायु अपरदन और चंबल क्षेत्रों में जल अपरदन (बीहड़) गंभीर समस्याएं हैं। अनियंत्रित सिंचाई से मृदा लवणता बढ़ती है जो उत्पादकता को क्षति पहुँचाती है। इसके विपरीत, जैविक खाद का प्रयोग मृदा स्वास्थ्य और उसकी संरचना में सुधार करता है। यह मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ाकर उसे अपरदन के प्रति अधिक प्रतिरोधी बनाता है।

39. (4) सूखा प्रवण क्षेत्र कार्यक्रम का उद्देश्य फसलों, पशुधन और भूमि उत्पादकता पर सूखे के प्रतिकूल प्रभावों को कम करना है।
'सूखा प्रवण क्षेत्र कार्यक्रम' (DPAP) पारिस्थितिक संतुलन बहाली और सूखे के आर्थिक प्रभाव कम करने हेतु एकीकृत दृष्टिकोण अपनाता है। इसमें जल संचयन, वनीकरण और चारागाह विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। विकल्प 1 गलत है क्योंकि मरुस्थल विकास कार्यक्रम केंद्र और राज्य के साझा वित्त पोषण से संचालित है। सूखे के प्रभाव को पूर्णतः समाप्त करना कठिन है, परंतु वैज्ञानिक प्रबंधन से इसे प्रभावी रूप से कम किया जा सकता है।

40. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
पश्चिमी राजस्थान में वायु अपरदन मृदा क्षरण का घातक रूप है। यहाँ की रेतीली मिट्टी के कण असंगठित होते हैं, जिससे वे वायु के साथ सुगमता से उड़ जाते हैं। विरल वनस्पति के कारण प्राकृतिक बाधाएं न्यूनतम हैं। ग्रीष्मकालीन धूल भरे अंधड़ और उच्च वायु वेग इस प्रक्रिया को तीव्र करते हैं। अतः मिट्टी की भौतिक बनावट और प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियां मिलकर यहाँ व्यापक वायु अपरदन को बढ़ावा देती हैं।

41. (3) राजफेड (राजस्थान राज्य सहकारी विपणन संघ लिमिटेड)
राजस्थान में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर तिलहन और दलहन खरीद हेतु 'राजफेड' मुख्य राज्य नोडल संस्था है। यह भारत सरकार की संस्था 'नाफेड' के समन्वय से किसानों से प्रत्यक्ष खरीद करती है। राजफेड का उद्देश्य बाजार कीमतों में गिरावट को रोकना और किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य सुनिश्चित करना है। इसकी सहकारी संरचना ग्राम स्तर तक विस्तृत है, जो खरीद प्रक्रिया को सुगम बनाती है।

42. (2) केवल I, II, IV और V
किसान क्रेडिट कार्ड योजना का लक्ष्य किसानों को कृषि और उपभोग आवश्यकताओं हेतु सुलभ ऋण देना है। ऋण सीमा जमीन, फसल प्रतिरुप और जिला स्तरीय तकनीकी समिति द्वारा निर्धारित मानकों पर आधारित होती है। राजस्थान में वाणिज्यिक, सहकारी और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक इसे जारी करते हैं, अतः कथन III गलत है। यह योजना बटाईदारों और मौखिक पट्टेदारों हेतु भी उपलब्ध है, जो इसे एक समावेशी वित्तीय साधन बनाती है।

NODIA

43. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत प्रीमियम दरें अत्यंत कम हैं। खरीफ की खाद्यान्न और तिलहन फसलों हेतु बीमा राशि का अधिकतम 2% प्रीमियम देय है। रबी फसलों हेतु यह दर 1.5% निर्धारित है। वार्षिक व्यावसायिक और बागवानी फसलों हेतु अधिकतम 5% प्रीमियम देना होता है। शेष प्रीमियम राशि का भुगतान केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा अनुदान (सब्सिडी) के रूप में किया जाता है, जिससे किसानों पर बोझ कम होता है।

85. (3) चोरी या जानबूझकर किए गए नुकसान के कारण फसल हानि।
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लक्ष्य प्राकृतिक और अपरिहार्य आपदाओं से सुरक्षा देना है। इसमें सूखा, बाढ़, ओलावृष्टि, कीट और प्राकृतिक अग्नि से होने वाले नुकसान को कवर किया जाता है। मानवीय लापरवाही, चोरी, जानबूझकर की गई क्षति या युद्ध जनित स्थितियों को इस योजना से बाहर रखा गया है। बीमा लाभ केवल उन्हीं मामलों में मिलता है जहाँ क्षति किसान के नियंत्रण से बाहर के प्राकृतिक कारकों के कारण हुई हो।

86. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
राजस्थान की कृषि निर्यात नीति का मुख्य केंद्र मसालों और तिलहनों जैसे प्रचुर उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुँचाना है। निर्यात व्यवहार्यता हेतु यह नीति उन इकाइयों को विशेष अनुदान देती है जो कच्चे माल का मूल्य संवर्धन (Value Addition) करती हैं। मूल्य संवर्धन से उत्पादों की आर्थिक कीमत बढ़ती है और वे अंतरराष्ट्रीय मानकों को भी पूर्ण करते हैं। अतः निर्यात वृद्धि हेतु प्रसंस्करण इकाइयों को बढ़ावा देना इस नीति का अनिवार्य अंग है।

87. (4) क्लस्टर दृष्टिकोण से जैविक खेती
'परम्परागत कृषि विकास योजना' (PKVY) का उद्देश्य रासायनिक उर्वरकों को कम कर जैविक कृषि को बढ़ावा देना है। इसके तहत कृषक समूहों या 'क्लस्टर' का निर्माण किया जाता है, जिन्हें प्रशिक्षण, जैविक बीज और प्रमाणीकरण हेतु वित्तीय सहायता दी जाती है। क्लस्टर दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि एक बड़े भू-भाग पर जैविक पद्धति अपनाई जाए, जिससे मृदा स्वास्थ्य सुधरे और उत्पादों को वैश्विक स्तर पर बेहतर बाजार मूल्य प्राप्त हो सके।

88. (1) फसल अवशेष चारे का स्रोत हैं और पशुधन खाद एवं पूरक आय प्रदान करते हैं।
राजस्थान में मिश्रित खेती की व्यापकता कृषि और पशुपालन के पारस्परिक लाभ पर आधारित है। खेती से प्राप्त फसल अवशेष पशुओं हेतु पौष्टिक चारे का मुख्य स्रोत हैं, जिससे पशुपालन लागत कम होती है। बदले में पशुधन से प्राप्त जैविक खाद मृदा की उर्वरता बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त, दुग्ध विक्रय से किसानों को दैनिक नकद आय प्राप्त होती है, जो उनकी आर्थिक स्थिति को अधिक सुरक्षित और स्थायी संबल प्रदान करती है।

89. (3) यह जिला स्तर पर कृषि विस्तार और तकनीक प्रसार हेतु पंजीकृत समिति है।
'कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी' (ATMA) जिला स्तरीय संस्था है जो कृषि विभाग और कृषकों के मध्य कड़ी का कार्य करती है। इसका मुख्य उत्तरदायित्व आधुनिक कृषि तकनीकों, नवीन शोधों और सरकारी योजनाओं की जानकारी अंतिम किसान तक पहुँचाना है। 'आत्मा' के माध्यम से प्रशिक्षण शिविर, प्रदर्शनियां और अध्ययन भ्रमण आयोजित किए जाते हैं। यह विस्तार सेवाओं के विकेंद्रीकरण का सफल मॉडल है जो स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरुप तकनीकी प्रसार करता है।

90. (1) शहरी परिवारों के लिए उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स
'राजकिसान साथी पोर्टल' विशेष रुप से कृषि और संबद्ध क्षेत्रों हेतु विकसित डिजिटल मंच है। इसके माध्यम से किसानों को सूक्ष्म सिंचाई, सौर पंप और कृषि यंत्रों पर मिलने वाले अनुदान हेतु सहायता दी जाती है। इसका लक्ष्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था को तकनीकी रुप से सक्षम बनाना है। उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स (टीवी, फ्रिज) इस पोर्टल के दायरे में नहीं आते, क्योंकि इनका कृषि उत्पादकता या किसान कल्याण की सरकारी योजनाओं से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है।

91. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
राजस्थान के पशु मेले सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। मल्लीनाथ पशु मेला तिलवाड़ा (बाड़मेर) में लूणी तट पर आयोजित होता है। पुष्कर पशु मेला राज्य का सुप्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय मेला है। चंद्रभागा मेला झालावाड़ में मालवी नस्ल के व्यापार हेतु विख्यात है और गोगामेड़ी मेला हनुमानगढ़ में आयोजित होता है। ये मेले पशुपालकों को अपनी उन्नत नस्लों के प्रदर्शन और व्यापार हेतु एक विशाल व्यावसायिक मंच प्रदान करते हैं।

92. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियाँ (ड्रिप और फव्वारा) जल संरक्षण के प्रभावी साधन हैं। पारंपरिक बाढ़ सिंचाई में जल का बड़ा भाग वाष्पीकरण और रिसाव से नष्ट हो जाता है। इसके विपरीत, ड्रिप प्रणाली में जल सीधे पौधों की जड़ों तक पहुँचाया जाता है, जिससे व्यर्थ जल हानि न्यूनतम होती है। अल्प जल में अधिक क्षेत्रफल सिंचित करने की इस क्षमता के कारण ये प्रणालियाँ राज्य में जल उपयोग दक्षता को अभूतपूर्व रुप से बढ़ाती हैं।

93. (3) कस्टम हायरिंग केंद्र - लघु किसानों को किराए पर कृषि मशीनरी प्रदान करना।
राजस्थान में 'कस्टम हायरिंग केंद्र' उन लघु किसानों हेतु वरदान हैं जो महंगे कृषि यंत्र (ट्रैक्टर/हार्वेस्टर) खरीदने में असमर्थ हैं। इन केंद्रों से किसान उचित किराए पर आधुनिक मशीनरी ले सकते हैं, जिससे श्रम और समय की बचत होती है। विकल्प 1 और 2 गलत हैं क्योंकि ई-नाम डिजिटल व्यापार हेतु और मृदा स्वास्थ्य कार्ड उर्वरक सिफारिश हेतु है। विकल्प 4 भी गलत है क्योंकि सूक्ष्म सिंचाई जल बचत की तकनीक है।

94. (4) 1998-99
'किसान क्रेडिट कार्ड' (KCC) योजना की शुरुआत 1998 में आर.वी. गुप्ता समिति की सिफारिशों पर हुई थी। इसका उद्देश्य कृषकों को साहूकारों के चंगुल से मुक्त कर सरल संस्थागत ऋण उपलब्ध कराना था। यह योजना बीज-उर्वरक जैसे अल्पकालिक कृषि निवेशों हेतु ऋण सुनिश्चित करती है। राजस्थान में इसका क्रियान्वयन सफल रहा है और लाखों किसान इस कार्ड से अपनी वित्तीय जरूरतें पूर्ण कर रहे हैं। यह कृषि ऋण वितरण का मुख्य आधार है।

Click Here to Buy book on Amazon

(4) यह क्षेत्र मुख्य रूप से घरेलू खपत पर केंद्रित है और निर्यात बाजार में इसकी हिस्सेदारी नगण्य है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. राजस्थान में हस्तशिल्प समूहों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जोधपुर लकड़ी के हस्तशिल्प और पारंपरिक फर्नीचर निर्यात का एक प्रमुख केंद्र है।
II. बाड़मेर अपनी जटिल अजरक हस्त-ब्लॉक छपाई के लिए प्रसिद्ध है।
III. अलवर को राज्य में टेराकोटा कला के विशिष्ट केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल III
(3) केवल II और III
(4) केवल I और II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. राजस्थान के निम्नलिखित हस्तशिल्प उत्पादों में से किसके पास भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग नहीं है?
(1) जोधपुर का लकड़ी का फर्नीचर
(2) मोलेला मृण्मय कला (क्ले वर्क)
(3) सांगानेरी हस्त-ब्लॉक छपाई
(4) कोटा डोरिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. राजस्थान में 'मीनाकारी' का पारंपरिक शिल्प निम्नलिखित में से किस प्रक्रिया को संदर्भित करता है?
(1) जटिल पैटर्न बनाने के लिए कपड़े को बांधने और रंगने की तकनीक
(2) लाल बलुआ पत्थर पर जटिल ज्यामितीय डिजाइनों की नक्काशी
(3) हाथी दांत और ऊँट की हड्डी पर लघु चित्रों का निर्माण
(4) जीवंत रंग बनाने के लिए सोने और चांदी पर कांच को पिघलाने की कला
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जयपुर में रत्न और आभूषण उद्योग स्थानीय स्तर पर रत्नों की महत्वपूर्ण खदानों की कमी के बावजूद समृद्ध है।
कारण (R): जयपुर में आयातित कच्चे पत्थरों की कटाई, पॉलिशिंग और मूल्य संवर्धन में विशेषज्ञता रखने वाला अत्यधिक कुशल कार्यबल है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. निम्नलिखित मदों में से विषम की पहचान करें, जो अपनी पारंपरिक शिल्प श्रेणी के आधार पर मौलिक रूप से भिन्न है।
(1) कुंदन
(2) थेवा
(3) बंधेज
(4) मीनाकारी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. राजस्थान में हस्तशिल्प क्षेत्र के विकास से जुड़ी निम्नलिखित पहलों और विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. शिल्पकारों को बढ़ावा देने के लिए शिल्पग्रामों की स्थापना
II. पंजीकृत शिल्पकारों के लिए स्वास्थ्य बीमा का प्रावधान
III. जीवन भर के लिए सभी आयकर से पूर्ण छूट
IV. राष्ट्रीय स्तर के हथकरघा मेलों का आयोजन
V. उपकरण किट स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता
उपरोक्त में से कौन सा कथन राज्य के हस्तशिल्प प्रोत्साहन ढांचे की गलत विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) केवल I
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. राजस्थान में चंबल फर्टिलाइजर्स एंड Chemicals लिमिटेड द्वारा संचालित प्रमुख गैस आधारित उर्वरक संयंत्र कहाँ स्थित है?
(1) गडेपान (कोटा)
(2) कपासण (चित्तौड़गढ़)
(3) डीडवाना (नागौर)
(4) भिवाड़ी (अलवर)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. राजस्थान में कृषि-प्रसंस्करण और प्रोत्साहन नीतियों के संबंध में सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए।
कथन I: फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने के लिए 2019 में राजस्थान कृषि-प्रसंस्करण, कृषि-व्यवसाय और कृषि-निर्यात प्रोत्साहन नीति शुरू की गई थी।
कथन II: यह नीति स्थानीय किसानों की सुरक्षा के लिए कृषि-प्रसंस्करण क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को पूरी तरह से प्रतिबंधित करती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. सूची I की रासायनिक या उर्वरक इकाई को सूची II में उसके स्थान के साथ सुमेलित कीजिए।

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs, you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams, being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

अध्याय 13
राजस्थान में उद्योग : स्थिति, समस्याएँ एवं पहल

1. वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए स्थिर कीमतों पर राजस्थान के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में औद्योगिक क्षेत्र का अनुमानित योगदान कितना था?
   (1) 18.25 प्रतिशत
   (2) 27.31 प्रतिशत
   (3) 35.10 प्रतिशत
   (4) 42.50 प्रतिशत
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

2. राजस्थान की औद्योगिक संरचना के संबंध में सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए।
   कथन I: राजस्थान का औद्योगिक क्षेत्र मुख्य रूप से बड़े पैमाने के भारी उद्योगों के वर्चस्व वाला है।
   कथन II: राज्य के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में कुल औद्योगिक योगदान के भीतर विनिर्माण उप-क्षेत्र की हिस्सेदारी सर्वाधिक है।
   (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
   (2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
   (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
   (4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

3. सूची I में दिए गए उद्योग के उप-क्षेत्र को सूची II में राजस्थान में उसकी प्रमुख विशेषता के साथ सुमेलित कीजिए।
   सूची I: (उद्योग का उप-क्षेत्र)
   A. विनिर्माण
   B. खनन एवं उत्खनन
   C. निर्माण
   D. बिजली, गैस और जल आपूर्ति
   सूची II: (प्रमुख विशेषताएँ)
   i. स्थावर संपदा (रियल एस्टेट) और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर अत्यधिक निर्भर
   ii. इसमें बिजली उत्पादन और उपयोगिता वितरण शामिल है
   iii. औद्योगिक क्षेत्र की सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) हिस्सेदारी में वर्चस्व रखता है
   iv. राज्य के विशाल अधात्विक संसाधनों का लाभ उठाता है
   (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
   (2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
   (3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
   (4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

4. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थान की औद्योगिक संरचना की एक प्रमुख विशेषता का सही वर्णन करता है?
   (1) राज्य भारत में समुद्री रसायनों का सबसे बड़ा उत्पादक है।
   (2) औद्योगिक इकाइयों में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) का हिस्सा नगण्य है।
   (3) औद्योगिक विकास दर प्रतिवर्ष सेवा क्षेत्र की विकास दर से लगातार आगे रहती है।
   (4) राज्य को देश में सीसा और जस्ता के उत्पादन में लगभग एकाधिकार प्राप्त है।
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

5. राजस्थान के औद्योगिक परिदृश्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. राजस्थान भारत में जैस्पर और वोलास्टोनाइट का एकमात्र उत्पादक है।
   II. राजस्थान के पश्चिमी जिले भारी ऑटोमोबाइल विनिर्माण के प्राथमिक केंद्र हैं।
   III. राज्य की औद्योगिक नीति सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र के माध्यम से रोजगार सृजन पर महत्वपूर्ण बल देती है।
   उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल I और III
   (3) केवल II और III
   (4) I, II और III
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

6. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान में औद्योगिक विकास के लिए एक बड़ी बाधा नहीं माना जाता है?
   (1) जल संसाधनों की अत्यधिक कमी
   (2) खनिज संसाधनों की कमी
   (3) दूरदराज के क्षेत्रों में बिजली की अपर्याप्त आपूर्ति
   (4) भू-बद्ध भौगोलिक स्थिति के कारण उच्च रसद (लॉजिस्टिक्स) लागत
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

7. स्थिर कीमतों पर राजस्थान के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) की गणना के लिए वर्तमान में उपयोग किया जाने वाला आधार वर्ष है:
   (1) 2004-05
   (2) 2011-12
   (3) 2015-16

Downloaded from www.pdf.tube

57. स्व-घोषणा के आधार पर एमएसएमई के पेपरलेस पंजीकरण के लिए केंद्र सरकार द्वारा शुरु किए गए ऑनलाइन पोर्टल का नाम क्या है?
(1) राज-निवेश पोर्टल
(2) ई-मित्रा एमएसएमई
(3) उद्यम पंजीकरण
(4) श्रम सुविधा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. वर्तमान एमएसएमई परिभाषा के तहत वार्षिक कारोबार की बढ़ती सीमा के आधार पर उद्यम वर्गीकरण का सही क्रम चुनें।
(1) सूक्ष्म, मध्यम, लघु
(2) लघु, सूक्ष्म, मध्यम
(3) सूक्ष्म, लघु, मध्यम
(4) मध्यम, लघु, सूक्ष्म
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. बड़े पैमाने के उद्योगों द्वारा एमएसएमई को भुगतान में देरी का मुद्दा अक्सर एमएसएमई इकाइयों पर निम्नलिखित में से किस प्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव की ओर ले जाता है?
(1) उनके शुद्ध लाभ मार्जिन में वृद्धि
(2) उनकी राष्ट्रीय क्रेडिट रेटिंग प्रोफाइल में तत्काल वृद्धि
(3) कार्यबल की भर्ती में अचानक विस्तार
(4) गंभीर कार्यशील पूंजी संकट और संभावित रुप से गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) के रुप में वर्गीकरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. राजस्थान में विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) मुख्य रुप से किसलिए स्थापित किए गए हैं?
(1) संवेदनशील क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रतिबंधित करने के लिए
(2) कर छूट और विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे के साथ निर्यात उन्मुख परिक्षेत्र के रुप में
(3) सभी प्रदूषणकारी उद्योगों को शहरी क्षेत्रों से कृषि क्षेत्रों में स्थानांतरित करने के लिए
(4) औद्योगिक श्रमिकों के लिए मुफ्त भूमि और स्थायी आवास सुविधाएं प्रदान करने के लिए
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. भारी औद्योगिक निवेश को आकर्षित करने के लिए राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (रिप्स) का सबसे हालिया व्यापक संस्करण किस वर्ष शुरु किया गया था?
(1) 2014
(2) 2019
(3) 2022
(4) 2024
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. 'इन्वेस्ट राजस्थान समिट' के फोकस क्षेत्रों और उसके लक्षित परिणामों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(1) ग्रीन हाइड्रोजन - जीवाश्म ईंधन निर्भरता को बढ़ावा देना
(2) चिकित्सा उपकरण - पारंपरिक आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों का निर्यात
(3) कृषि-व्यवसाय - भारी धातु विज्ञान और बड़े पैमाने के खनन का विस्तार
(4) ई-गतिशीलता - इलेक्ट्रिक वाहन विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र का विकास
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. सूची I में रिप्स 2022 के तहत प्रमुख क्षेत्रों (थ्रस्ट सेक्टर) को सूची II में उसके मुख्य उद्योग उदाहरण के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (प्रमुख क्षेत्र)
A. उदीयमान (सनराइज) क्षेत्र
B. हरित क्षेत्र
C. पारंपरिक क्षेत्र
D. सूचना प्रौद्योगिकी और संबंधित सेवाएँ
सूची II: (उद्योग उदाहरण)
i. सौर पैनल विनिर्माण
ii. ग्रीन हाइड्रोजन
iii. डेटा सेंटर
iv. वस्त्र और परिधान
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

64. 'इन्वेस्ट राजस्थान समिट' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) इसे विशेष रुप से अंतरराष्ट्रीय निवेशकों को छोड़कर केवल पड़ोसी राज्यों से निवेश आकर्षित करने के लिए आयोजित किया गया था।
(2) इसका उद्देश्य विकास को गति देने के लिए समझौता ज्ञापनों (MoUs) और आशय पत्रों (LoIs) पर हस्ताक्षर करना था।
(3) शिखर सम्मेलन ने अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में सभी निजी निवेशों पर प्रतिबंध लगा दिया।
(4) इसने यह अनिवार्य किया कि सभी निवेशों का 100 प्रतिशत सार्वजनिक क्षेत्र के माध्यम से ही किया जाना चाहिए।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (रिप्स) 2022 के निम्नलिखित उद्देश्यों पर विचार कीजिए:
I. पूरे राज्य में संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना।
II. रोजगार के व्यापक अवसर पैदा करना।
III. नए उद्योगों के लिए सभी प्रकार के पर्यावरणीय नियमों को समाप्त करना।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II

(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख औद्योगिक समूहों में से उनकी प्राथमिक औद्योगिक श्रेणी के आधार पर विषम की पहचान करें।
(1) मकराना
(2) सीतापुरा
(3) किशनगढ़
(4) राजसमंद
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. भीलवाड़ा को राजस्थान की "वस्त्र नगरी" कहे जाने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) विशाल कताई मिलों के समर्थन के लिए भारत में कच्चे कपास का उच्चतम उत्पादन।
(2) कताई, बुनाई और वस्त्र प्रसंस्करण का संकेंद्रित पारिस्थितिकी तंत्र।
(3) पारंपरिक बंधेज और लहरिया जैसे रंगाई शिल्पों का विशेष केंद्र।
(4) यह विशेष रूप से कृत्रिम कपड़ों के लिए राज्य के सबसे बड़े विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) की मेजबानी करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को बड़े पैमाने की सीमेंट विनिर्माण इकाइयों के सामान्य संकेंद्रण के आधार पर अवरोही क्रम में चुनें।
(1) चित्तौड़गढ़, सिरोही, बूंदी
(2) सिरोही, चित्तौड़गढ़, बूंदी
(3) बूंदी, चित्तौड़गढ़, सिरोही
(4) चित्तौड़गढ़, बूंदी, सिरोही
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. किशनगढ़ जैसे क्षेत्रों में व्यापक संगमरमर प्रसंस्करण उद्योग से विशेष रूप से जुड़ी प्राथमिक पर्यावरणीय चुनौती क्या है?
(1) ग्रीनहाउस गैसों का उच्च स्तरीय उत्सर्जन
(2) नदी प्रणालियों में विषाक्त भारी धातुओं का विमोचन
(3) संगमरमर स्लरी (अपशिष्ट लेई) की भारी मात्रा का निपटान
(4) समताप मंडलीय ओजोन परत का क्षरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. राजस्थान का एक प्रसिद्ध पारंपरिक हथकरघा उत्पाद, कोटा डोरिया, मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस विशेषता के लिए जाना जाता है?
(1) भारी ऊनी कढ़ाई
(2) पारंपरिक तंबू बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला मोटा सूती कपड़ा
(3) सोने और चांदी के धागों से सजाया गया रेशमी कपड़ा
(4) वर्गाकार चेक पैटर्न वाला पारभासी कपड़ा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. राजस्थान सरकार ने शिल्पकारों के उत्थान और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए अपनी पहली समर्पित 'हस्तशिल्प नीति' किस वर्ष शुरु की?
(1) 2015
(2) 2019
(3) 2022
(4) 2023
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. राजस्थान में रत्न और आभूषण क्षेत्र के संबंध में सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए।
कथन I: रत्न और आभूषण क्षेत्र राजस्थान की निर्यात आय में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक है।
कथन II: जयपुर पन्ना और अन्य रंगीन रत्नों की कटाई और पॉलिशिंग के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. सूची I में दिए गए हस्तशिल्प या कला के रूप को सूची II में उसके संबंधित जिले या क्षेत्र के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (हस्तशिल्प/कला रुप)
A. थेवा कला
B. ब्लू पॉटरी
C. उस्ता कला
D. पिछवाई पेंटिंग
सूची II: (संबंधित जिला/क्षेत्र)
i. बीकानेर
ii. नाथद्वारा
iii. प्रतापगढ़
iv. जयपुर
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. राजस्थान के रत्न और आभूषण उद्योग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) पारंपरिक कुंदन और मीनाकारी कला रुप शिल्पकार अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं।
(2) यह पूरी तरह से राज्य की सीमाओं के भीतर से प्राप्त कच्चे हीरों पर निर्भर है।
(3) जयपुर भारत का एकमात्र शहर है जहाँ आईटी के लिए समर्पित विशेष आर्थिक क्षेत्र है, लेकिन रत्न और आभूषण के लिए कोई नहीं है।

Click Here to Buy book on Amazon

(4) 2020-21
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): विनिर्माण उप-क्षेत्र राजस्थान के औद्योगिक जीएसडीपी का एक महत्वपूर्ण घटक है।
कारण (R): राजस्थान में कृषि-उत्पादों और खनिज संसाधनों का समृद्ध आधार है जो विभिन्न विनिर्माण उद्योगों के लिए कच्चे माल के रूप में कार्य करते हैं।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. आर्थिक आघातों के संदर्भ में, राजस्थान में कौन सा औद्योगिक उप-क्षेत्र लगातार गंभीर सूखे के वर्षों से सबसे सीधे और तुरंत प्रभावित होता है?
(1) भारी इंजीनियरिंग उपकरण
(2) सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएँ
(3) कृषि-प्रसंस्करण उद्योग
(4) जस्ता प्रगलन संयंत्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. राजस्थान में कार्यरत निम्नलिखित प्रमुख उद्योगों पर विचार कीजिए:
I. सीमेंट विनिर्माण
II. वस्त्र और परिधान
III. सूचना प्रौद्योगिकी और वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिन-टेक)
IV. रत्न और आभूषण
V. जस्ता प्रगलन
कौन सा संयोजन उन पारंपरिक, संसाधन-आधारित उद्योगों का सही प्रतिनिधित्व करता है जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से राजस्थान की औद्योगिक अर्थव्यवस्था की नींव रखी है?
(1) I, II, III और IV
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. राजस्थान में पहला आधुनिक सीमेंट संयंत्र कहाँ स्थापित किया गया था?
(1) मोड़क
(2) निम्बाहेड़ा
(3) ब्यावर
(4) लाखेरी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. राजस्थान में खनिज आधारित उद्योग और उसके प्राथमिक स्थान का निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(1) जस्ता प्रगलन - भिवाड़ी
(2) तांबा प्रगलन - खेतड़ी
(3) संगमरमर प्रसंस्करण - फलौदी
(4) काँच विनिर्माण - जैसलमेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. सूची I के सीमेंट संयंत्र को सूची II के संबंधित जिले के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सीमेंट संयंत्र)
A. जेके सफेद सीमेंट
B. श्री सीमेंट
C. मंगलम सीमेंट
D. बिनानी सीमेंट
सूची II: (जिला)
i. ब्यावर
ii. पिंडवाड़ा (सिरोही)
iii. गोटन (नागौर)
iv. मोड़क (कोटा)
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

14. राजस्थान में खनिज आधारित उद्योगों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) राजस्थान भारत में सीमेंट का अग्रणी उत्पादक है।
(2) चित्तौड़गढ़ के चंदेरिया में एशिया का सबसे बड़ा जस्ता प्रगलन संयंत्र स्थित है।
(3) किशनगढ़ को संगमरमर प्रसंस्करण उद्योग के एक प्रमुख केंद्र के रूप में व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है।
(4) राज्य अपने सीमेंट विनिर्माण क्षेत्र के लिए पूरी तरह से आयातित चूना पत्थर पर निर्भर है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. राजस्थान में वस्त्र उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भीलवाड़ा को वस्त्र नगरी या 'राजस्थान का मैनचेस्टर' कहा जाता है।
II. राजस्थान में वस्त्र क्षेत्र मुख्य रूप से कृत्रिम रेशों पर आधारित है और इसका कोई पारंपरिक कपास आधार नहीं है।
III. बगरू और सांगानेरी जैसी हस्त-ब्लॉक छपाई तकनीकों को वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त है।
IV. भारतीय वस्त्र उद्योग के कताई और बुनाई क्षेत्रों में राजस्थान की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV

सूची I: (रासायनिक/उर्वरक इकाई)
A. राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स
B. श्रीराम फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स
C. मोदी अल्कलीज एंड केमिकल्स
D. हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड (रासायनिक विभाग)
सूची II: (स्थान)
i. अलवर
ii. डीडवाना
iii. कोटा
iv. देबारी
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. राजस्थान में रासायनिक और उर्वरक उद्योग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) राजस्थान भारत में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के उत्पादन में एकाधिकार रखता है।
(2) राजस्थान सिंगल सुपर फास्फेट (एसएसपी) उर्वरकों का एक प्रमुख उत्पादक है।
(3) राजस्थान की खारी झीलें सोडियम आधारित रासायनिक उद्योग के लिए महत्वपूर्ण कच्चा माल प्रदान करती हैं।
(4) चित्तौड़गढ़ के कपासण में एक प्रमुख डाई-अमोनियम फास्फेट (डीएपी) संयंत्र है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. राजस्थान में कृषि-प्रसंस्करण क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान भारत में सरसों का सबसे बड़ा उत्पादक है, जो तेल मिलों के लिए एक विशाल कच्चा माल आधार प्रदान करता है।
II. ईसबगोल और ग्वार राज्य के प्रमुख निर्यात-उन्मुख कृषि-उत्पाद हैं।
III. बुनियादी ढांचे की कमी के कारण राज्य में किसी भी समर्पित मेगा फूड पार्क का अभाव है।
IV. डेयरी क्षेत्र कृषि-प्रसंस्करण का एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसे सहकारी नेटवर्क द्वारा व्यापक समर्थन प्राप्त है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. निम्नलिखित में से कौन कृषि-प्रसंस्करण उद्योग की श्रेणी में नहीं आता है?
(1) ग्वार गम विनिर्माण
(2) खाद्य तेल शोधन
(3) कपास की कताई
(4) जस्ता प्रगलन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. राजस्थान के किस जिले में राज्य का पहला मेगा फूड पार्क 'ग्रीनटेक मेगा फूड पार्क' स्थापित किया गया है?
(1) जयपुर
(2) जोधपुर
(3) अजमेर
(4) अलवर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. कृषि-प्रसंस्करण मूल्य श्रृंखला के निम्नलिखित महत्वपूर्ण चरणों पर विचार कीजिए:
I. प्राथमिक प्रसंस्करण और श्रेणीकरण (ग्रेडिंग)
II. खेत स्तर पर कटाई और खरीद
III. खुदरा पैकेजिंग और वितरण
IV. द्वितीयक मूल्य संवर्धन और विनिर्माण
निम्नलिखित में से कौन खेत से बाजार तक के सही तार्किक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) II, I, IV, III
(2) I, II, III, IV
(3) II, IV, I, III
(4) I, IV, II, III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

39. सांभर, डीडवाना और पचपदरा के आसपास के क्षेत्रों में कई रासायनिक उद्योगों की स्थापना का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) प्रचुर मात्रा में मीठे पानी के संसाधनों की उपलब्धता
(2) प्रमुख बंदरगाहों से निकटता
(3) कृत्रिम रासायनिक प्रसंस्करण के लिए उच्च श्रेणी की कोयला खदानों से निकटता
(4) सोडियम आधारित कच्चा माल उपलब्ध कराने वाली खारी झीलों की उपस्थिति
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. राजस्थान में एक बड़े टमाटर खेती समूह के पास टमाटर केचप कारखाना स्थापित करना औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र के किस पहलू को अनुकूलित करने का एक उदाहरण है?
(1) पश्चगामी संबद्धता (बैकवर्ड लिंकेज)
(2) अग्रगामी संबद्धता (फॉरवर्ड लिंकेज)
(3) क्षैतिज एकीकरण
(4) मिश्रित विविधीकरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास और निवेश निगम (रीको) स्वतंत्र रूप से अपने वर्तमान स्वरूप में औद्योगिक विकास को गति देने के लिए किस वर्ष स्थापित किया गया था?
(1) 1956
(2) 1969
(3) 1980
(4) 1991

(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. भिवाड़ी के औद्योगिक केंद्र के संबंध में सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए।
कथन I: भिवाड़ी राजस्थान में एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र के रूप में उभरा है, विशेष रूप से ऑटोमोबाइल और ऑटो-घटकों के क्षेत्र के लिए।
कथन II: भिवाड़ी की औद्योगिक वृद्धि मुख्य रूप से सख्त पर्यावरणीय नियमों से बचने के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के बाहर इसकी रणनीतिक स्थिति के कारण है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. सूची I के विशिष्ट औद्योगिक पार्क को सूची II में रीको द्वारा विकसित उसके स्थान के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विशिष्ट औद्योगिक पार्क)
A. जापानी पार्क
B. स्पाइस पार्क
C. फिन-टेक पार्क
D. परिधान पार्क
सूची II: (रीको द्वारा विकसित स्थान)
i. जयपुर
ii. रामगंज मंडी (कोटा)
iii. नीमराना (अलवर)
iv. महल (जयपुर)
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. निम्नलिखित में से कौन सा कथन जयपुर के सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र का सही वर्णन करता है?
(1) विशेष रूप से भारी रक्षा विनिर्माण और मशीनरी उत्पादन के लिए समर्पित।
(2) रत्न और आभूषण तथा सूचना प्रौद्योगिकी के लिए प्रमुख विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) की मेजबानी करता है।
(3) यह राजस्थान का सबसे बड़ा कच्चे तेल का शोधन संयंत्र परिसर है।
(4) यह एक कृषि व्यापार केंद्र है जहाँ कोई विनिर्माण इकाई नहीं है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. निम्नलिखित कार्यों पर विचार कीजिए:
I. भूमि अधिग्रहण करना और औद्योगिक क्षेत्रों का विकास करना
II. मध्यम और बड़े पैमाने की परियोजनाओं को मियादी ऋण प्रदान करना
III. राज्य की मौद्रिक नीति तैयार करना
उपरोक्त में से कौन रीको के प्राथमिक कार्यों का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में रीको द्वारा विकसित या प्रोत्साहित विशिष्ट औद्योगिक पार्क नहीं है?
(1) एग्रो फूड पार्क
(2) स्टोन पार्क
(3) लेदर कॉम्प्लेक्स (चमड़ा परिसर)
(4) मरीन एक्सपोर्ट पार्क (समुद्री निर्यात पार्क)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. जयपुर में 'फिन-टेक पार्क' विकसित करने की राज्य सरकार की पहल का उद्देश्य मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में निवेश आकर्षित करना है?
(1) वित्तीय सेवाएँ, सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और संबंधित प्रौद्योगिकी स्टार्टअप
(2) महीन वस्त्र और प्राकृतिक कपड़ों की पारंपरिक हस्त-बुनाई
(3) तैयार तकनीकी सामान और हार्डवेयर विनिर्माण
(4) ललित कला, सिनेमा और मनोरंजन प्रौद्योगिकियाँ
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): राजस्थान के कई अन्य क्षेत्रों की तुलना में भिवाड़ी में तीव्र औद्योगीकरण हुआ है।
कारण (R): दिल्ली से इसकी भौगोलिक निकटता और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में इसका जुड़ाव उत्कृष्ट बाजार पहुँच और संबद्धता प्रदान करता है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास और निवेश निगम (रीको) के मुख्य अधिदेश का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) केवल पर्यावरणीय अनुपालन को विनियमित करना और मौजूदा उद्योगों का लेखा-परीक्षण करना
(2) औद्योगिक बुनियादी ढांचे का विकास करना और वित्तीय सहायता प्रदान करना
(3) शहरी क्षेत्रों में खाद्यान्न की सार्वजनिक वितरण प्रणाली का प्रबंधन करना

Downloaded from www.pdf.tube

(4) केंद्र सरकार की ओर से औद्योगिक इकाइयों से प्रत्यक्ष कर एकत्र करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों और उनकी प्रमुख कार्यात्मक विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. नीमराना - जापानी निवेश क्षेत्र
II. बोरानाडा - हस्तशिल्प और कृषि-प्रसंस्करण
III. सीतापुरा - रत्न और आभूषण
IV. भिवाड़ी - ऑटोमोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स
V. मानसरोवर - भारी रक्षा तोपखाने विनिर्माण
उपरोक्त में से कौन औद्योगिक क्षेत्रों को उनके वास्तविक प्रमुख क्षेत्रों के साथ सही सुमेलित करता है?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. सार्वजनिक-निजी भागीदारी मोड में स्थापित राजस्थान का पहला कार्यात्मक बहु-उत्पाद विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) कौन सा है?
(1) सोमानी एसईजेड
(2) वाटिका एसईजेड
(3) महिंद्रा वर्ल्ड सिटी
(4) जेनपैक्ट एसईजेड
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. राजस्थान में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र के संबंध में सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए।
कथन I: राजस्थान एमएसएमई (स्थापना और संचालन की सुविधा) अधिनियम एमएसएमई को एक निर्दिष्ट प्रारंभिक अवधि के लिए पूर्व अनुमोदन और निरीक्षण के बिना संचालन शुरू करने की अनुमति देता है।
कथन II: राजस्थान में एमएसएमई क्षेत्र की विशेषता उच्च पूंजी तीव्रता और कम रोजगार सृजन है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. सूची I के विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) स्थान या डेवलपर को सूची II में उसके अधिसूचित क्षेत्र या प्रकार के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (एसईजेड स्थान/डेवलपर)
A. महिंद्रा वर्ल्ड सिटी (जयपुर)
B. रीको (सीतापुरा, जयपुर)
C. रीको (बोरानाडा, जोधपुर)
D. इंफोसिस लिमिटेड (जयपुर)
सूची II: (अधिसूचित क्षेत्र/प्रकार)
i. सूचना प्रौद्योगिकी (IT/ITES)
ii. हस्तशिल्प
iii. रत्न और आभूषण
iv. बहु-उत्पाद
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) वर्गीकरण के संशोधित समग्र मानदंडों के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) एक सूक्ष्म उद्यम वह है जहाँ निवेश 1 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है और कुल कारोबार 5 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है।
(2) राज्य का वर्गीकरण राष्ट्रीय मानदंडों से भिन्न है।
(3) लघु उद्यम की सीमाएँ निवेश के लिए 10 करोड़ रुपये और कुल कारोबार के लिए 50 करोड़ रुपये हैं।
(4) एक मध्यम उद्यम की निवेश सीमा 50 करोड़ रुपये और कुल कारोबार सीमा 250 करोड़ रुपये है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. राजस्थान में सामान्यतः सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र द्वारा सामना की जाने वाली निम्नलिखित चुनौतियों पर विचार कीजिए:
I. बड़े कॉर्पोरेट खरीदारों और सरकारी विभागों से भुगतान में देरी
II. अत्यधिक कुशल और तकनीकी रूप से प्रशिक्षित श्रम की प्रचुरता
III. औपचारिक ऋण तक पहुँचने में कठिनाई और पूंजी की उच्च लागत
IV. तकनीकी अप्रचलन और नवाचार की कमी
उपरोक्त में से कौन एमएसएमई द्वारा सामना की जाने वाली वास्तविक चुनौतियों का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. निम्नलिखित में से कौन आमतौर पर राजस्थान एमएसएमई नीति 2022 के तहत प्रदान किया जाने वाला लाभ या सहायता तंत्र नहीं है?
(1) पांच साल के लिए सभी कर्मचारियों के वेतन की पूर्ण माफी
(2) पूंजी निवेश पर राजसहायता
(3) गुणवत्ता प्रमाणन शुल्क की प्रतिपूर्ति
(4) उपकरणों के लिए दीर्घकालिक ऋण पर ब्याज राजसहायता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

95. (1) दलहनी फसल जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण द्वारा मिट्टी की उर्वरता बहाल करती है।
फसल चक्र में दलहनी फसलों (मोठ/मूंग) का समावेश मृदा स्वास्थ्य हेतु वैज्ञानिक है। इन पौधों की जड़ों की ग्रंथियों में मौजूद जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन को मिट्टी में स्थिर करते हैं। इससे मृदा की प्राकृतिक उर्वरता बढ़ती है और आगामी फसल को पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। यह तकनीक रासायनिक उर्वरकों की निर्भरता कम करती है और शुष्क क्षेत्रों में कृषि स्थिरता बनाए रखने में सहायक है, जो पूर्णतः पर्यावरण अनुकूल है।

96. (2) सरसों
"सफेद रोली" (White Rust) सरसों की फसल को प्रभावित करने वाला गंभीर कवक जनित रोग है। यह उच्च नमी और निम्न तापमान वाले वातावरण में अधिक फैलता है। इसके प्रभाव से पत्तियों और तनों पर सफेद उभरे हुए धब्बे बनते हैं, जिससे प्रकाश संश्लेषण बाधित होता है। समय पर उपचार न होने पर यह पैदावार और तेल की गुणवत्ता को भारी क्षति पहुँचाता है, जिससे किसानों को आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है।

97. (2) यह अनाज फसलों पर ध्यान केंद्रित करता है और बागों को हतोत्साहित करता है।
'एकीकृत बागवानी विकास मिशन' (MIDH) का लक्ष्य फलों, सब्जियों, मसालों और फूलों के उत्पादन में वृद्धि करना है। यह नवीन बागों की स्थापना, पुराने बागों के पुनरुद्धार और संरक्षित खेती हेतु वित्तीय सहायता देता है। कथन 2 अशुद्ध है क्योंकि यह अनाज फसलों के स्थान पर बागवानी विविधीकरण पर केंद्रित है। यह कोल्ड स्टोरेज जैसे कटाई उपरांत बुनियादी ढांचे के विकास पर भी बल देता है ताकि किसानों का लाभ बढ़ सके।

98. (1) मंडी कर और बिचौलियों के कमीशन को अधिकतम सीमा तक बढ़ाना।
राजस्थान में कृषि विपणन सुधारों का लक्ष्य लेनदेन लागत कम करना और शोषण रोकना है। सुधारों के तहत मंडी कर तर्कसंगत बनाए गए और ई-नाम जैसे पारदर्शी मंच बढ़ाए गए। निजी मार्केट यार्ड और मंडी के बाहर व्यापार की अनुमति से प्रतिस्पर्धा बढ़ी है, जिससे किसानों को उपज का श्रेष्ठ मूल्य मिल रहा है। अतः करों और कमीशन को बढ़ाना सुधारों का हिस्सा नहीं हो सकता, क्योंकि यह वित्तीय बोझ में वृद्धि करेगा।

99. (3) सरकार कृषि ड्रोन की खरीद हेतु किसानों और संगठनों को अनुदान प्रदान करती है।
राजस्थान सरकार आधुनिक तकनीक के प्रयोग हेतु सक्रिय है। कृषि ड्रोन का उपयोग कीटनाशक छिड़काव और फसल निगरानी हेतु हो रहा है, जिससे संसाधनों की बचत होती है। सरकार इन ड्रोनों की खरीद पर किसानों और कृषक उत्पादक संगठनों (FPO) को भारी अनुदान (सब्सिडी) दे रही है। यह 'स्मार्ट कृषि' की दिशा में बड़ा कदम है, जो युवाओं को खेती के प्रति आकर्षित करने और कृषि दक्षता बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

100. (4) आवर्ती सूखा, घटता भूजल और वर्षा आधारित खेती पर संरचनात्मक निर्भरता।
राजस्थान के कृषि क्षेत्र की स्थायी चुनौती यहाँ की प्रतिकूल जलवायु है। बार-बार का सूखा और अनियमित मानसून खेती को जोखिमपूर्ण बनाता है। राज्य का बड़ा हिस्सा केवल वर्षा पर निर्भर है, अतः मानसून विफलता पूरी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है। भूजल का अति-दोहन जल स्तर को खतरनाक सीमा तक नीचे ले गया है। ये प्राकृतिक और संरचनात्मक बाधाएं राज्य में कृषि विकास की गति और उत्पादकता को निरंतर सीमित करती हैं।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. राजस्थान में औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन योजनाओं के मानक प्रावधानों के तहत, निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र आम तौर पर विशेष विनिर्माण प्रोत्साहन और छूट के लिए पात्र नहीं है?
(1) खुदरा व्यापार और विशुद्ध रूप से वाणिज्यिक परिसर
(2) अक्षय ऊर्जा उपकरण विनिर्माण
(3) चिकित्सा उपकरण विनिर्माण
(4) एकीकृत कृषि-प्रसंस्करण इकाइयां और विशिष्ट फूड पार्क
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. कौन सी राज्य एजेंसी निवेश प्रोत्साहन के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है और 'इन्वेस्ट राजस्थान समिट' आयोजित करने में उसकी केंद्रीय भूमिका थी?
(1) राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड
(2) राजस्थान पर्यटन विकास निगम
(3) निवेश प्रोत्साहन ब्यूरो (बीआईपी)
(4) राजस्थान लोक सेवा आयोग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): रिप्स 2022 ग्रीन हाइड्रोजन और चिकित्सा उपकरणों जैसे उदीयमान क्षेत्रों के लिए अनुकूलित पैकेज और उच्च छूट प्रदान करता है।
कारण (R): राज्य का लक्ष्य अपने पारंपरिक विनिर्माण आधार से परे भविष्य के लिए तैयार, उच्च-तकनीकी और टिकाऊ उद्योगों की ओर बढ़ना है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. राजस्थान सरकार द्वारा रिप्स के तहत स्टांप शुल्क और बिजली शुल्क में भारी छूट प्रदान करने का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) राज्य के कुल कर राजस्व को जानबूझकर कम करना
(2) लघु उद्योगों को विस्तार करने से हतोत्साहित करना
(3) शुरुआती लागत को कम करना और राज्य को एक प्रतिस्पर्धी गंतव्य बनाना
(4) वर्तमान विश्व व्यापार संगठन के दिशानिर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (रिप्स) के तहत आम तौर पर दिए जाने वाले निम्नलिखित प्रोत्साहनों पर विचार कीजिए:
I. स्टांप शुल्क पर 100 प्रतिशत छूट
II. एक निर्दिष्ट अवधि के लिए बिजली शुल्क पर 100 प्रतिशत छूट
III. एसजीएसटी के प्रतिशत के बराबर निवेश राजसहायता
IV. रोजगार सृजन राजसहायता
V. राज्य सरकार द्वारा विनिर्मित वस्तुओं की 100 प्रतिशत खरीद की गारंटी
उपरोक्त में से कौन योजना के तहत दिए गए वास्तविक प्रोत्साहनों का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. राजस्थान में दुनिया का सबसे बड़ा सौर पार्क कहाँ स्थित है, जिसने स्थानीय स्तर पर अक्षय ऊर्जा विनिर्माण की संभावनाओं को भी बढ़ावा दिया है?
(1) रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)
(2) सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)
(3) नोख (जैसलमेर)
(4) भड़ला (जोधपुर)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. राजस्थान में विनिर्माण क्षमता के संबंध में सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए।
कथन I: अपनी विस्तृत सीमा और अलवर जैसे रणनीतिक केंद्रों के कारण राजस्थान आगामी रक्षा विनिर्माण गलियारों का लाभ उठाने के लिए भौगोलिक रूप से अनुकूल स्थिति में है।
कथन II: राज्य में रक्षा घटकों के विनिर्माण का समर्थन करने के लिए किसी भी बुनियादी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) पारिस्थितिकी तंत्र का अभाव है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. सूची I में उभरते क्षेत्र के तत्व को सूची II में राजस्थान के लिए उसकी प्रासंगिकता के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (उभरता क्षेत्र तत्व)
A. सौर फोटोवोल्टिक विनिर्माण
B. पवन टरबाइन घटक
C. रक्षा ऑफसेट विनिर्माण
D. ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन
सूची II: (राजस्थान के लिए प्रासंगिकता)
i. उच्च प्रत्यक्ष सामान्य विकिरण (डीएनआई) का लाभ उठाता है

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) 27.31 प्रतिशत
राजस्थान की अर्थव्यवस्था में औद्योगिक क्षेत्र का महत्वपूर्ण स्थान है। वर्ष 2022-23 के अग्रिम अनुमानों के अनुसार, प्रचलित मूल्यों पर सकल राज्य मूल्य वर्धित में इसका योगदान 27.31 प्रतिशत रहने की संभावना है। इसमें विनिर्माण, खनन, निर्माण और विद्युत जैसी आर्थिक गतिविधियाँ सम्मिलित हैं। औद्योगिक विकास राज्य के आर्थिक विस्तार और रोजगार सृजन के लिए एक प्रमुख आधार स्तंभ के रूप में कार्य करता है।

2. (4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
राजस्थान का औद्योगिक ढांचा विविधतापूर्ण है, जिसमें विनिर्माण क्षेत्र एक प्रभावशाली उप-क्षेत्र के रूप में उभरा है। राज्य के औद्योगिक सकल राज्य मूल्य वर्धित में विनिर्माण इकाइयों की हिस्सेदारी सर्वाधिक है। यद्यपि बड़े उद्योगों की उपस्थिति महत्वपूर्ण है, किंतु सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों का योगदान भी अत्यंत व्यापक है। विनिर्माण की यह प्रधानता राज्य के आर्थिक विकास को निरंतर गति और स्थिरता प्रदान करती है।

3. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान की औद्योगिक संरचना में विभिन्न उप-क्षेत्रों की विशिष्ट भूमिका है। विनिर्माण क्षेत्र औद्योगिक विकास दर और सकल मूल्य वर्धित में सर्वोच्च स्थान रखता है। खनन क्षेत्र राज्य के प्रचुर अधात्विक संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करता है। निर्माण क्षेत्र बुनियादी ढांचे और स्थावर संपदा परियोजनाओं से जुड़ा है, जबकि बिजली, गैस और जल आपूर्ति उप-क्षेत्र अनिवार्य सेवाओं और ऊर्जा उत्पादन से संबंधित गतिविधियों का प्रबंधन करते हैं।

4. (4) राज्य को देश में सीसा और जस्ता के उत्पादन में लगभग एकाधिकार प्राप्त है।
राजस्थान खनिज संसाधनों की प्रचुरता में भारत का अग्रणी राज्य है। खनिज क्षेत्र में राज्य की स्थिति सुदृढ़ है और विशेष रूप से सीसा एवं जस्ता के उत्पादन में इसे देश में लगभग एकाधिकार प्राप्त है। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड जैसी बड़ी संस्थाएं इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। यह विशिष्टता राज्य को धात्विक खनिजों के शोधन और संबंधित विनिर्माण उद्योगों में रणनीतिक लाभ प्रदान करती है, जो अर्थव्यवस्था हेतु अनिवार्य है।

5. (2) केवल I और III
राजस्थान खनिज विविधता में विशिष्ट स्थान रखता है। यह भारत में जैस्पर तथा वोलास्टोनाइट का एकमात्र उत्पादक राज्य है। राज्य सरकार की औद्योगिक रणनीतियां सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के माध्यम से रोजगार सृजन पर केंद्रित हैं। यद्यपि वाहन उद्योग अलवर और भिवाड़ी जैसे क्षेत्रों में केंद्रित है, किंतु पश्चिमी जिलों की पहचान मुख्य रूप से खनिज तेल, प्राकृतिक गैस और सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए अधिक है।

6. (2) खनिज संसाधनों की कमी
राजस्थान के औद्योगिक विकास में जल का अभाव और भू-बद्ध भौगोलिक स्थिति जैसी चुनौतियां विद्यमान हैं, किंतु खनिज संसाधनों की कोई कमी नहीं है। इसके विपरीत, राज्य खनिजों के मामले में अत्यंत समृद्ध है। यहाँ विभिन्न प्रकार के धात्विक और अधात्विक खनिज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। यह प्रचुरता ही राज्य में सीमेंट, जस्ता और पत्थर उद्योगों के विकास का मुख्य आधार है, जो आर्थिक वृद्धि में योगदान देती है।

7. (2) 2011-12
सकल राज्य घरेलू उत्पाद की गणना में आधार वर्ष का चयन आर्थिक आंकड़ों की सटीकता हेतु आवश्यक है। राजस्थान में वर्तमान में स्थिर मूल्यों पर आर्थिक विकास दर मापने हेतु 2011-12 को आधार वर्ष के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है। यह मानक वर्ष सांख्यिकीय गणनाओं में निरंतरता सुनिश्चित करता है और अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले वास्तविक परिवर्तनों को मुद्रास्फीति के प्रभाव के बिना स्पष्ट करता है।

8. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के पास कृषि उत्पादों और खनिजों का विशाल भंडार उपलब्ध है, जो स्थानीय विनिर्माण इकाइयों के लिए निरंतर कच्चे माल की आपूर्ति सुनिश्चित करता है। इसी कारण विनिर्माण उप-क्षेत्र राज्य के औद्योगिक सकल मूल्य वर्धित का एक सशक्त और अनिवार्य घटक बना हुआ है। संसाधनों की सुलभता औद्योगिक विस्तार को सुगम बनाती है और मूल्य संवर्धन के माध्यम से राज्य की आय में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

9. (3) कृषि-प्रसंस्करण उद्योग
राजस्थान की अर्थव्यवस्था का बड़ा भाग कृषि पर आधारित है, जिससे मानसून का उद्योगों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। सूखे के वर्षों में कृषि उत्पादन घटने से कृषि-प्रसंस्करण इकाइयों को कच्चे माल की भारी कमी का सामना करना पड़ता है। भारी अभियांत्रिकी या सूचना प्रौद्योगिकी जैसे उद्योगों की तुलना में खाद्य प्रसंस्करण, दाल और तेल मिलों जैसे क्षेत्र सूखे की स्थिति से सबसे पहले और प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं।

10. (2) I, II, IV और V
राजस्थान की औद्योगिक प्रगति ऐतिहासिक रूप से स्थानीय संसाधनों पर आधारित रही है। सीमेंट, वस्त्र, रत्न-आभूषण और जस्ता प्रगलन जैसे उद्योगों ने राज्य की आर्थिक नींव को सुदृढ़ किया है। सीमेंट उद्योग प्रचुर चूना पत्थर पर आधारित है, जबकि वस्त्र उद्योग का भीलवाड़ा में पुराना इतिहास रहा है। जस्ता और

Downloaded from www.pdf.tube

(3) 2017
(4) 2020
(5) अनुत्तरित प्रश्न

82. राजस्थान में औद्योगिक बाधाओं के संबंध में सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए।
कथन I: पश्चिमी राजस्थान में अत्यधिक जल-गहन उद्योगों की स्थापना के लिए पानी की कमी एक महत्वपूर्ण बाधा है।
कथन II: राज्य सरकार थार मरुस्थल में बड़े पैमाने पर पानी पर निर्भर वस्त्र प्रसंस्करण इकाइयों को स्थापित करने के लिए सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

83. सूची I में राजस्थान में औद्योगिक चुनौती को सूची II में उसके संदर्भ या प्रभाव के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (औद्योगिक चुनौती)
A. भू-बद्ध भौगोलिक स्थिति
B. पानी की कमी
C. बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ
D. कौशल की कमी
सूची II: (संदर्भ/प्रभाव)
i. संचालन के लिए विलवणीकरण या दूर की नहरों पर निर्भरता
ii. रसद और निर्यात परिवहन लागत में वृद्धि
iii. उद्योग की आवश्यकताओं और स्थानीय श्रम उपलब्धता के बीच असंतुलन
iv. दूरदराज के औद्योगिक क्षेत्रों में बिजली की अपर्याप्त गुणवत्ता और खराब अंतिम-मील सड़क संबद्धता
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

84. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'राज-निवेश' पोर्टल का सही वर्णन करता है?
(1) यह सरकारी स्कूल के शिक्षकों की भर्ती के लिए एक समर्पित पोर्टल है।
(2) यह कृषि उपज को सीधे उपभोक्ताओं को बेचने के लिए एक ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म है।
(3) वन्यजीव अभयारण्यों में जानवरों की आवाजाही पर नज़र रखने के लिए केंद्रीकृत डेटाबेस है।
(4) समयबद्ध अनुमोदन प्रदान करने वाली उन्नत एकल खिड़की अनापत्ति प्रणाली है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

85. राजस्थान में औद्योगिक क्षेत्र द्वारा सामना की जाने वाली निम्नलिखित चुनौतियों पर विचार कीजिए:
I. प्रमुख बंदरगाहों की अनुपस्थिति के कारण अंतरराज्यीय रसद पर उच्च निर्भरता।
II. घटता भूजल स्तर औद्योगिक विस्तार को प्रतिबंधित कर रहा है।
III. राष्ट्रीय औसत की तुलना में अत्यधिक सस्ती और निर्बाध बिजली की अति-आपूर्ति।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन एक गलत या अस्तित्वहीन चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है/करते हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

86. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता राजस्थान में एकल खिड़की अनापत्ति प्रणाली के माध्यम से लागू किए गए सुधारों का हिस्सा नहीं है?
(1) ऑनलाइन आवेदन जमा करना
(2) सत्यापन के लिए अलग-अलग विभागों में अनिवार्य व्यक्तिगत उपस्थिति
(3) ई-ग्रास प्लेटफॉर्म के माध्यम से सभी प्रसंस्करण शुल्कों का इलेक्ट्रॉनिक भुगतान
(4) आवेदनों का समयबद्ध निस्तारण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

87. औद्योगिक नीति के संदर्भ में, राजस्थान में 'व्यापार करने में सुगमता' (EoDB) शब्द मुख्य रूप से किसे संदर्भित करता है?
(1) किसी भी व्यक्ति को मुफ्त भूमि का प्रावधान जो कारखाना शुरू करना चाहता है
(2) सभी श्रम कानूनों और पर्यावरणीय मानकों को समाप्त करना
(3) सरलीकृत प्रबंधन के लिए निजी व्यवसायों के राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया
(4) पारदर्शिता और गति जिसके साथ एक उद्यमी व्यवसाय शुरू और संचालित कर सकता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

88. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): राजस्थान शुष्क बंदरगाहों (अंतर्देशीय कंटेनर डिपो) को विकसित करने पर विशेष बल देता है।
कारण (R): एक भू-बद्ध राज्य होने के नाते, राज्य से सीधे औद्योगिक वस्तुओं के सीमा शुल्क निकासी और कंटेनरीकृत निर्यात की सुविधा के लिए शुष्क बंदरगाह आवश्यक हैं।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

NODIA

हो रही कलाओं का संरक्षण, नवीन तकनीक का समावेश और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में स्थानीय उत्पादों की पहुंच बढ़ाना है। यह नीति शिल्पकारों के लिए विपणन सहायता, वित्तीय मदद और कौशल विकास हेतु एक व्यापक ढांचा प्रदान करने का कार्य करती है।

22. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
राजस्थान का रत्न और आभूषण क्षेत्र राज्य की निर्यात अर्थव्यवस्था की आधारशिला है। जयपुर विशेष रूप से पन्ना और अन्य रंगीन रत्नों की विश्व स्तरीय कटाई और पॉलिशिंग हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात है। यह क्षेत्र न केवल विदेशी मुद्रा अर्जित करने में अग्रणी है, अपितु हजारों कुशल कारीगरों को रोजगार भी प्रदान करता है। पारंपरिक कुंदन और मीनाकारी जैसी कलाएं इस उद्योग को वैश्विक बाजार में अद्वितीय स्थान दिलाती हैं।

23. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में हस्तशिल्प की विशिष्ट कलाएं विकसित हुई हैं। प्रतापगढ़ की थेवा कला कांच पर स्वर्ण नक्काशी हेतु प्रसिद्ध है, जबकि जयपुर की ब्लू पॉटरी अपनी नीली चमक के लिए जानी जाती है। बीकानेर की उस्ता कला ऊंट की खाल पर सुनहरी नक्काशी का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसी प्रकार, नाथद्वारा की पिछवाई चित्रकारी भगवान कृष्ण के चित्रण हेतु प्रसिद्ध है। ये कलाएं राज्य की सांस्कृतिक विरासत को सशक्त करती हैं।

24. (1) पारंपरिक कुंदन और मीनाकारी कला रूप शिल्पकार अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं।
राजस्थान का रत्न और आभूषण उद्योग मुख्य रूप से कुशल श्रम और पारंपरिक कलाओं जैसे कुंदन और मीनाकारी पर आधारित है। यद्यपि कच्चे रत्नों का आयात किया जाता है, किंतु जयपुर में उनकी कटाई और पॉलिशिंग की विशेषज्ञता अद्वितीय है। राज्य में सीतापुरा जैसे क्षेत्रों में समर्पित विशेष आर्थिक क्षेत्र भी विद्यमान हैं जो निर्यात को बढ़ावा देते हैं। यह उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था में मूल्य संवर्धन और रोजगार सृजन का प्रमुख माध्यम है।

25. (2) केवल III
राजस्थान में हस्तशिल्प के विभिन्न केंद्र अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। जोधपुर जहाँ लकड़ी के फर्नीचर हेतु प्रसिद्ध है, वहीं बाड़मेर की अजरक प्रिंटिंग को वैश्विक ख्याति प्राप्त है। टेराकोटा कला का प्रमुख केंद्र अलवर के स्थान पर राजसमंद जिले का 'मोलेला' गांव है, जहाँ मिट्टी की कलाकृतियां बनाई जाती हैं। अलवर क्षेत्र मुख्य रूप से अपनी कागजी पॉटरी हेतु जाना जाता है। इन केंद्रों का विकास स्थानीय आर्थिक उन्नति में सहायक है।

26. (1) Jodhpur का लकड़ी का फर्नीचर
भौगोलिक संकेतक टैग किसी उत्पाद की विशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति और गुणवत्ता को प्रमाणित करता है। राजस्थान के कई उत्पादों जैसे मोलेला क्ले वर्क, सांगानेरी प्रिंट और कोटा डोरिया को यह प्रतिष्ठित टैग प्राप्त हो चुका है। यद्यपि जोधपुर का लकड़ी का फर्नीचर अपनी कलात्मकता हेतु प्रसिद्ध है, किंतु इसे अभी तक आधिकारिक भौगोलिक संकेतक टैग प्राप्त नहीं हुआ है। यह टैग मिलने से उत्पादों की अंतरराष्ट्रीय बाजार में विश्वसनीयता और सुरक्षा बढ़ती है।

27. (4) जीवंत रंग बनाने के लिए सोने और चांदी पर कांच को पिघलाने की कला
मीनाकारी राजस्थान की एक प्राचीन और जटिल हस्तशिल्प कला है। इसमें स्वर्ण या चांदी के आभूषणों की सतह पर विभिन्न रंगों के कांच जैसे पदार्थ को पिघलाकर भरा जाता है। यह प्रक्रिया आभूषणों को अत्यंत जीवंत और रंगीन रूप प्रदान करती है। जयपुर इस कला का प्रमुख केंद्र है, जहाँ कुशल कारीगर पीढ़ियों से इस शिल्प को संजोए हुए हैं। मीनाकारी का उपयोग गहनों के साथ सजावटी वस्तुओं में भी व्यापक रूप से किया जाता है।

28. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जयपुर का रत्न उद्योग कौशल और विशेषज्ञता का उत्कृष्ट उदाहरण है। यद्यपि राजस्थान में हीरों की बड़ी खदानें उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी जयपुर कच्चे रत्नों के प्रसंस्करण का सबसे बड़ा केंद्र है। इसका मुख्य कारण यहाँ के कारीगरों की सदियों पुरानी विशेषज्ञता है, जो कच्चे पत्थरों को काटकर और पॉलिश करके उन्हें बहुमूल्य रत्नों में परिवर्तित कर देते हैं। यह मूल्य संवर्धन ही जयपुर के निर्यात और आर्थिक सुदृढ़ता का आधार है।

29. (3) बंधेज
पारंपरिक शिल्प की श्रेणियों में बंधेज अन्य विकल्पों से भिन्न है। कुंदन, थेवा और मीनाकारी मुख्य रूप से धातु, कांच और रत्नों पर आधारित आभूषण निर्माण की कलाएं हैं। इसके विपरीत, बंधेज एक वस्त्र आधारित कला है जिसमें कपड़े को विशिष्ट पैटर्न में बांधकर और रंगकर सुंदर डिजाइन तैयार किए जाते हैं। श्रेणीगत रूप से, बंधेज कपड़ा उद्योग से संबंधित है, जबकि अन्य तीनों रत्न एवं आभूषण शिल्प के अभिन्न अंग हैं।

30. (2) केवल III
राजस्थान सरकार हस्तशिल्प को बढ़ावा देने हेतु शिल्पग्रामों की स्थापना और वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है। किंतु, राज्य की नीतियों में पंजीकृत शिल्पकारों हेतु आयकर से पूर्ण और जीवन भर की छूट का कोई प्रावधान नहीं है। कर संबंधी नियम मुख्य रूप से राष्ट्रीय कानूनों के अधीन होते हैं। सरकार का मुख्य ध्यान शिल्पकारों को सामाजिक सुरक्षा, ऋण सुविधाएं और विपणन मंच प्रदान करने पर केंद्रित है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुधर सके।

31. (1) गडेपान (कोटा)
राजस्थान में कृषि उत्पादकता बढ़ाने हेतु उर्वरक उद्योग की भूमिका महत्वपूर्ण है। चंबल फर्टिलाइजर्स द्वारा संचालित देश का प्रमुख गैस आधारित यूरिया संयंत्र कोटा जिले के गडेपान में स्थित है। यह संयंत्र पाइपलाइन के माध्यम से ईंधन प्राप्त करता है और उच्च गुणवत्ता वाले नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का उत्पादन करता है। गडेपान स्थित यह इकाई न केवल राजस्थान अपितु संपूर्ण उत्तरी भारत के किसानों हेतु उर्वरक की आपूर्ति सुनिश्चित करने का प्रमुख केंद्र है।

Click Here to Buy book on Amazon

(1) अलवर
(2) जैसलमेर
(3) जयपुर
(4) अजमेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

97. खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना निवेश क्षेत्र (केबीएनआईआर) को किस मेगा-बुनियादी ढांचा परियोजना के तहत एक प्रमुख नोड के रूप में विकसित किया जा रहा है?
(1) राजस्थान राज्य राजमार्ग विकास परियोजना
(2) दिल्ली मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (डीएमआईसी)
(3) स्मार्ट सिटी मिशन
(4) भारतमाला परियोजना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

98. राजस्थान में दिल्ली मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (डीएमआईसी) के निम्नलिखित प्रमुख नोड्स पर विचार कीजिए:
I. जोधपुर-पाली-मारवाड़ औद्योगिक क्षेत्र
II. खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना निवेश क्षेत्र
III. अजमेर-किशनगढ़ निवेश क्षेत्र
IV. जयपुर-दौसा औद्योगिक क्षेत्र
निम्नलिखित में से कौन उत्तर से दक्षिण की ओर सही भौगोलिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) II, IV, III, I
(2) II, III, IV, I
(3) IV, II, III, I
(4) I, III, IV, II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

99. राजस्थान में डीएमआईसी के साथ समर्पित माल भाड़ा गलियारा (डीएफसी) के एकीकरण से निम्नलिखित में से कौन सा प्राथमिक आर्थिक प्रभाव होने की संभावना है?
(1) कॉरिडोर के किनारे औद्योगिक भूमि की कीमतों में भारी गिरावट
(2) पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योगों का तत्काल बंद होना
(3) राजस्थान और पश्चिमी बंदरगाहों के बीच रसद पारगमन समय में कमी
(4) राज्य की कुल औद्योगिक बिजली खपत में भारी कमी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

100. आई-स्टार्ट पारिस्थितिकी तंत्र के तहत ग्रामीण और महिला नेतृत्व वाले उद्यमों के लिए विशेष वित्त पोषण का प्रावधान राजस्थान सरकार के किस विशिष्ट नीतिगत उद्देश्य को दर्शाता है?
(1) तकनीकी प्रगति और डिजिटल उपकरणों को केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित रखना
(2) कृषि श्रम को सीधे भारी धातु विनिर्माण में स्थानांतरित करना
(3) ग्रामीण राजसहायता पर कुल राज्य व्यय को कम करना
(4) समावेशी विकास को बढ़ावा देना और स्टार्टअप संस्कृति का विकेंद्रीकरण करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

42. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
अलवर का भिवाड़ी क्षेत्र राजस्थान का महत्वपूर्ण औद्योगिक केंद्र है, जो वाहन और इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण हेतु प्रसिद्ध है। इसकी तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से इसकी रणनीतिक निकटता और उपलब्ध सुदृढ़ बुनियादी ढांचा है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह विकास पर्यावरणीय नियमों से बचने हेतु हुआ है। इसके विपरीत, यहाँ की इकाइयां कड़े मानकों का पालन करती हैं और राज्य सरकार द्वारा प्रदान किए गए निवेश प्रोत्साहनों का पूर्ण लाभ उठाती हैं।

43. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
रीको ने उद्योगों की विशिष्ट आवश्यकताओं हेतु राजस्थान में विभिन्न विशेष औद्योगिक पार्क विकसित किए हैं। नीमराना में जापानी कंपनियों हेतु समर्पित जापानी पार्क है, जबकि कोटा में मसालों के प्रसंस्करण हेतु स्पाइस पार्क बनाया गया है। जयपुर में आधुनिक वित्तीय सेवाओं हेतु फिन-टेक पार्क और वस्त्रों हेतु परिधान पार्क क्रियाशील हैं। ये विशिष्ट पार्क संबंधित क्षेत्रों में निवेश आकर्षित करने और क्लस्टर आधारित औद्योगिक विकास को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होते हैं।

44. (2) रत्न और आभूषण तथा सूचना प्रौद्योगिकी के लिए प्रमुख विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) की मेजबानी करता है।
जयपुर का सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र राजस्थान के सबसे विकसित और बहुमुखी क्षेत्रों में से एक है। यह विशेष रूप से रत्न और आभूषणों के निर्यात हेतु समर्पित विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) के लिए प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त, यहाँ सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की अनेक बड़ी कंपनियां और सॉफ्टवेयर पार्क भी स्थित हैं। सीतापुरा न केवल राज्य के निर्यात में बड़ा योगदान देता है, अपितु यह उच्च तकनीकी कौशल वाले हजारों पेशेवरों के लिए रोजगार का प्रमुख केंद्र भी है।

45. (1) केवल I और II
रीको राजस्थान की प्रमुख औद्योगिक विकास संस्था है। इसके प्राथमिक कार्यों में औद्योगिक उपयोग हेतु भूमि का अधिग्रहण और सड़क, बिजली तथा जल जैसी सुविधाओं से युक्त औद्योगिक क्षेत्रों का विकास करना सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त, यह औद्योगिक परियोजनाओं को स्थापना हेतु दीर्घकालिक ऋण भी प्रदान करता है। हालाँकि, मौद्रिक नीति तैयार करना रीको का कार्य नहीं है, क्योंकि यह उत्तरदायित्व केवल भारतीय रिजर्व बैंक और केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में आता है।

46. (4) मरीन एक्सपोर्ट पार्क (समुद्री निर्यात पार्क)
राजस्थान एक भू-बद्ध राज्य है, अतः यहाँ रीको द्वारा किसी समुद्री निर्यात पार्क का विकास करना व्यावहारिक नहीं है। इसके स्थान पर रीको ने प्राकृतिक संपदा और कृषि के आधार पर एग्रो फूड पार्क, स्टोन पार्क और लेदर कॉम्प्लेक्स जैसे विशिष्ट औद्योगिक पार्कों के विकास पर ध्यान केंद्रित किया है। ये पार्क स्थानीय संसाधनों का अधिकतम मूल्य संवर्धन सुनिश्चित करने और संबंधित उद्योगों को एक ही स्थान पर श्रेष्ठ बुनियादी ढांचा प्रदान करने के उद्देश्य से बनाए गए हैं।

47. (1) वित्तीय सेवाएँ, सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और संबंधित प्रौद्योगिकी स्टार्टअप
जयपुर में फिन-टेक पार्क की स्थापना राज्य सरकार की एक दूरदर्शी पहल है। इसका उद्देश्य राजस्थान को देश के प्रमुख वित्तीय प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में स्थापित करना है। यह पार्क विशेष रूप से बैंकिंग, बीमा और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की बड़ी कंपनियों तथा स्टार्टअप्स को आकर्षित करने हेतु निर्मित है। आधुनिक बुनियादी ढांचे के माध्यम से सरकार का लक्ष्य इन उच्च-तकनीकी क्षेत्रों में निवेश बढ़ाना और युवाओं हेतु सम्मानजनक सफेदपोश रोजगार के नवीन अवसर सृजित करना है।

48. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भिवाड़ी की औद्योगिक सफलता में इसकी भौगोलिक स्थिति की रणनीतिक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का भाग होने के कारण यहाँ के उद्योगों को विशाल उपभोक्ता बाजार और उत्कृष्ट परिवहन नेटवर्क की सीधी पहुंच प्राप्त है। यह निकटता रसद लागत को कम करती है और अंतरराष्ट्रीय निवेशकों को आकर्षित करती है। यही कारण है कि भिवाड़ी आज वाहन, औषधि और उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माण में राज्य का एक प्रमुख और सशक्त औद्योगिक केंद्र बन चुका है।

49. (2) औद्योगिक बुनियादी ढांचे का विकास करना और वित्तीय सहायता प्रदान करना
रीको का मुख्य उद्देश्य राजस्थान में औद्योगीकरण को गति प्रदान करना है। यह संस्था मुख्य रूप से भूमि का अधिग्रहण कर उसे सुसज्जित औद्योगिक क्षेत्रों में परिवर्तित करती है। इसके साथ ही, रीको उद्यमियों को उनकी परियोजनाओं हेतु मियादी ऋण और इक्विटी समर्थन जैसी वित्तीय सहायता भी प्रदान करता है। औद्योगिक क्षेत्रों का रखरखाव और आवश्यक उपयोगिताओं का प्रबंधन भी इसके दायित्वों का भाग है, जिससे राज्य में निवेश के अनुकूल और सुरक्षित वातावरण का निर्माण होता है।

50. (2) I, II, III और IV
राजस्थान के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्र अपनी विशिष्ट गतिविधियों हेतु पहचाने जाते हैं। नीमराना जापानी विनिर्माण हेतु विख्यात है, जबकि जोधपुर का बोरानाडा हस्तशिल्प का केंद्र है। सीतापुरा रत्न निर्यात हेतु प्रसिद्ध है और भिवाड़ी अपनी वाहन इकाइयों के लिए जाना जाता है। हालाँकि, मानसरोवर मुख्य रूप से एक आवासीय और व्यावसायिक क्षेत्र है, जहाँ भारी रक्षा विनिर्माण जैसी कोई औद्योगिक गतिविधि नहीं होती। यह इसे अन्य औद्योगिक विकल्पों से पूर्णतः भिन्न और विशिष्ट बनाता है।

51. (3) महिंद्रा वर्ल्ड सिटी
जयपुर स्थित महिंद्रा वर्ल्ड सिटी राजस्थान का प्रथम बहु-उत्पाद विशेष आर्थिक क्षेत्र है, जिसे सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल के तहत विकसित किया गया है। यह रीको और महिंद्रा समूह का संयुक्त उपक्रम है। यह क्षेत्र सूचना प्रौद्योगिकी, हस्तशिल्प और विनिर्माण हेतु विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचा प्रदान करता है। अपनी आधुनिक सुविधाओं और कर लाभों के कारण इसने अनेक बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को आकर्षित किया है, जिससे

NODIA

रत्न उद्योग राज्य की खनिज संपदा और पारंपरिक कौशल का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो विकास के प्रमुख इंजन हैं।

11. (4) लाखेरी
राजस्थान में सीमेंट उद्योग की स्थापना का श्रेय प्रचुर चूना पत्थर भंडार को जाता है। राज्य का प्रथम आधुनिक सीमेंट कारखाना 1915-17 के दौरान बूंदी जिले के लाखेरी में स्थापित किया गया था। इस संयंत्र की स्थापना ने राजस्थान में सीमेंट विनिर्माण के एक नए युग का सूत्रपात किया। आज राजस्थान भारत के सबसे बड़े सीमेंट उत्पादक राज्यों में से एक है, जिसमें चित्तौड़गढ़ और सिरोही प्रमुख केंद्र हैं।

12. (2) तांबा प्रगलन - खेतड़ी
राजस्थान में खनिजों की उपलब्धता के आधार पर विशिष्ट औद्योगिक केंद्रों का विकास हुआ है। झुंझुनूं जिले का खेतड़ी क्षेत्र तांबा खनन और प्रगलन के लिए विख्यात है, जहाँ हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड की महत्वपूर्ण इकाइयां स्थित हैं। इसी प्रकार, जस्ता प्रगलन का कार्य मुख्य रूप से उदयपुर के देबारी और चित्तौड़गढ़ के चंदेरिया में केंद्रित है। खनिज आधारित ये उद्योग राज्य के औद्योगिक ढांचे को मजबूती और रोजगार प्रदान करते हैं।

13. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
राजस्थान में सीमेंट उद्योगों का वितरण कच्चे माल की उपलब्धता के अनुसार विभिन्न जिलों में है। जेके सफेद सीमेंट का प्रसिद्ध संयंत्र नागौर के गोटन में स्थित है, जबकि श्री सीमेंट की इकाइयां ब्यावर में कार्यरत हैं। मंगलम सीमेंट कोटा के मोड़क क्षेत्र में उत्पादन कर रहा है। इसी प्रकार, बिनानी सीमेंट का संयंत्र सिरोही के पिंडवाड़ा में स्थापित है। यह विकेंद्रीकरण राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में संतुलित विकास सुनिश्चित करता है।

14. (4) राज्य अपने सीमेंट विनिर्माण क्षेत्र के लिए पूरी तरह से आयातित चूना पत्थर पर निर्भर है।
राजस्थान में सीमेंट उद्योग की सफलता का मुख्य कारण यहाँ उच्च श्रेणी के चूना पत्थर के प्रचुर भंडार की उपलब्धता है। राज्य को इसके लिए आयात की आवश्यकता नहीं है, अपितु यह आत्मनिर्भर है। चित्तौड़गढ़, जैसलमेर और नागौर इसके प्रमुख स्रोत हैं। एशिया का सबसे बड़ा जस्ता प्रगलन संयंत्र चंदेरिया में स्थित है और किशनगढ़ संगमरमर प्रसंस्करण का विश्व विख्यात केंद्र है, जो राज्य की औद्योगिक शक्ति को दर्शाता है।

15. (2) I, III और IV
भीलवाड़ा को वस्त्र इकाइयों के कारण राजस्थान का मैंचेस्टर कहा जाता है। राज्य में कताई और बुनाई का सुदृढ़ आधार है। यहाँ बगरू और सांगानेरी हस्त-ब्लॉक छपाई जैसी पारंपरिक कलाएं वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध हैं। राजस्थान में कपास का उत्पादन भी होता है और वस्त्र क्षेत्र में सूती तथा कृत्रिम रेशों का संतुलित मिश्रण है। यह क्षेत्र राज्य की अर्थव्यवस्था में रोजगार और निर्यात आय का प्रमुख स्रोत है।

16. (2) सीतापुरा
औद्योगिक श्रेणियों के आधार पर सीतापुरा अन्य विकल्पों से भिन्न है। मकराना, किशनगढ़ और राजसमंद मुख्य रूप से संगमरमर के खनन और प्रसंस्करण के प्रसिद्ध केंद्र हैं। इसके विपरीत, जयपुर का सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र मुख्य रूप से रत्न, आभूषण, सूचना प्रौद्योगिकी और निर्यात संवर्धन औद्योगिक पार्क के रूप में विकसित किया गया है। यह क्षेत्र विनिर्माण और सेवाओं के आधुनिक आयामों का प्रतिनिधित्व करता है, जो पारंपरिक पत्थर उद्योग से पृथक है।

17. (2) कताई, बुनाई और वस्त्र प्रसंस्करण का संकेंद्रित पारिस्थितिकी तंत्र।
भीलवाड़ा को राजस्थान की वस्त्र नगरी कहा जाता है क्योंकि यहाँ वस्त्र उत्पादन की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला उपलब्ध है। इस नगर में कताई, बुनाई, रंगाई और छपाई की आधुनिक इकाइयों का एक सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हुआ है। यहाँ निर्मित कृत्रिम वस्त्र न केवल भारत अपितु अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी प्रसिद्ध हैं। औद्योगिक संकुल की यह विशेषता भीलवाड़ा को वस्त्र क्षेत्र में राज्य का अग्रणी जिला और निर्यात केंद्र बनाती है।

18. (1) चित्तौड़गढ़, सिरोही, बूंदी
राजस्थान में बड़े सीमेंट संयंत्रों का संकेंद्रण मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्वी और दक्षिण-पश्चिमी चूना पत्थर क्षेत्रों में पाया जाता है। चित्तौड़गढ़ जिले में चूना पत्थर की प्रचुरता के कारण सर्वाधिक सीमेंट इकाइयां स्थापित हैं। इसके पश्चात सिरोही जिला अपनी बड़ी उत्पादन क्षमता हेतु जाना जाता है। बूंदी जिला ऐतिहासिक रूप से राज्य के प्रथम सीमेंट संयंत्र का केंद्र रहा है। उत्पादन क्षमता के आधार पर इन जिलों का यह क्रम महत्वपूर्ण है।

19. (3) संगमरमर स्लरी (अपशिष्ट लेई) की भारी मात्रा का निपटान
किशनगढ़ में संगमरमर प्रसंस्करण उद्योग के विस्तार ने गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों को जन्म दिया है। पत्थर की कटाई और पॉलिशिंग से निकलने वाली बारीक धूल और जल के मिश्रण से बनी स्लरी का निपटान एक बड़ी समस्या है। यह स्लरी मृदा की उर्वरता कम करती है और जल निकासी प्रणालियों को बाधित करती है। राज्य सरकार अब इस अपशिष्ट के प्रबंधन और निर्माण सामग्री में इसके पुनर्चक्रण पर विशेष बल दे रही है।

20. (4) वर्गाकार चेक पैटर्न वाला पारभासी कपड़ा
कोटा डोरिया राजस्थान का विश्व प्रसिद्ध हथकरघा उत्पाद है, जिसे अपनी विशिष्ट बुनाई शैली हेतु जाना जाता है। इसकी मुख्य विशेषता इसमें बनने वाले बारीक वर्गाकार चेक पैटर्न हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'खत' कहते हैं। यह कपड़ा कपास और रेशम के धागों के मिश्रण से बनाया जाता है, जो इसे पारभासी और हल्का बनाता है। अपनी अनूठी बनावट के कारण कोटा डोरिया को भौगोलिक संकेतक टैग प्राप्त हुआ है।

21. (3) 2022
राजस्थान सरकार ने पारंपरिक हस्तशिल्प को पुनर्जीवित करने और शिल्पकारों को आर्थिक सुरक्षा देने हेतु वर्ष 2022 में प्रथम 'राजस्थान हस्तशिल्प नीति' जारी की। इसका मुख्य लक्ष्य लुप्त

Click Here to Buy book on Amazon

(5) अनुत्तरित प्रश्न

89. निम्नलिखित कारकों में से विषम की पहचान करें, जो राजस्थान में उद्योग के लिए विशुद्ध रूप से भौगोलिक बाधा के बजाय एक नियामक बाधा के रूप में कार्य करता है।
(1) शुष्क जलवायु और कम वर्षा
(2) पश्चिमी समुद्र तट से अधिक दूरी
(3) विभागीय स्वीकृतियों की बहुलता और अनुपालन का बोझ
(4) बारहमासी नदियों की कमी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

90. राजस्थान के निवेश सुविधा ढांचे के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में निवेश बोर्ड की स्थापना
II. एक निश्चित सीमा से अधिक निवेश के लिए 'वन स्टॉप शॉप' सुविधा
III. लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत समयबद्ध अनापत्ति
IV. सभी बड़े पैमाने की परियोजनाओं के लिए पर्यावरणीय कानूनों से पूर्ण छूट
V. कई विभागीय पोर्टलों का एक एकल इंटरफेस में एकीकरण
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) I, II और III
(2) केवल IV
(3) I, IV और V
(4) II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

91. राजस्थान सरकार का कौन सा विभाग 'आई-स्टार्ट राजस्थान' पहल के लिए नोडल एजेंसी है?
(1) उद्योग एवं वाणिज्य विभाग
(2) वित्त विभाग
(3) उच्च शिक्षा विभाग
(4) सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

92. दिल्ली मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (डीएमआईसी) के संबंध में सही कथन/कथनों की पहचान कीजिए।
कथन I: समर्पित माल भाड़ा गलियारा (डीएफसी) के संरेखण का लगभग 39 प्रतिशत राजस्थान से होकर गुजरता है।
कथन II: राजस्थान में डीएमआईसी परियोजना पूरी तरह से विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित है और इसमें जापान सरकार की कोई भागीदारी नहीं है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

93. सूची I के डीएमआईसी निवेश क्षेत्र या औद्योगिक क्षेत्र को सूची II में उसके विकास चरण के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (डीएमआईसी निवेश क्षेत्र/औद्योगिक क्षेत्र)
A. खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना निवेश क्षेत्र
B. जोधपुर-पाली-मारवाड़ औद्योगिक क्षेत्र
C. जयपुर-दौसा औद्योगिक क्षेत्र
D. राजसमंद-भीलवाड़ा औद्योगिक क्षेत्र
सूची II: (विकास चरण/स्थिति)
i. चरण-I विकास नोड
ii. चरण-I विकास नोड
iii. चरण-II विकास नोड
iv. चरण-II विकास नोड
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

94. राजस्थान में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) आई-स्टार्ट राजस्थान स्टार्टअप्स, निवेशकों और इनक्यूबेटरों के लिए एक एकल खिड़की मंच प्रदान करता है।
(2) भामाशाह टेक्नो हब जयपुर में स्टार्टअप्स को सह-कार्यशील स्थान (को-वर्किंग स्पेस) और परामर्श प्रदान करने के लिए स्थित है।
(3) राज्य सरकार मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स को निर्वाह भत्ता और प्रारंभिक पूंजी (सीड फंडिंग) प्रदान करती है।
(4) केवल जयपुर के निवासियों द्वारा स्थापित स्टार्टअप ही आई-स्टार्ट कार्यक्रम के तहत लाभ के पात्र हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

95. आई-स्टार्ट राजस्थान कार्यक्रम के तहत प्रदान किए जाने वाले निम्नलिखित लाभों पर विचार कीजिए:
I. स्टार्टअप क्षमता के मूल्यांकन के लिए क्यू-रेट मूल्यांकन
II. राजीविका के तहत ग्रामीण स्टार्टअप्स के लिए वित्तीय सहायता
III. सभी स्टार्टअप संस्थापकों के लिए मुफ्त अंतरराष्ट्रीय हवाई टिकट
IV. न्यूनतम या बिना किसी लागत पर इनक्यूबेशन स्पेस
उपरोक्त में से कौन प्रदान किए गए वास्तविक लाभों की सही पहचान करता है?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

96. राजस्थान का निम्नलिखित में से कौन सा जिला दिल्ली मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (डीएमआईसी) के प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है?

32. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
राजस्थान सरकार ने 2019 में कृषि-प्रसंस्करण और कृषि-निर्यात प्रोत्साहन नीति लागू की, जिसका उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना है। यह नीति बुनियादी ढांचे के विकास हेतु वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करती है। यह नीति प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रतिबंधित नहीं करती, अपितु अंतरराष्ट्रीय निवेश को आकर्षित कर आधुनिक तकनीक और वैश्विक बाजारों के साथ स्थानीय कृषि को जोड़ने का प्रयास करती है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में व्यापक सुधार और रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं।

33. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान में रसायनों और उर्वरकों का उत्पादन विभिन्न स्थानों पर विशिष्ट इकाइयों द्वारा किया जाता है। डीडवाना में राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स सोडियम आधारित रसायनों का उत्पादन करता है। श्रीराम फर्टिलाइजर्स की इकाई कोटा में है, जबकि मोदी अल्कलीज अलवर में स्थित है। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड का रासायनिक विभाग उदयपुर के देबारी में संचालित है। इन इकाइयों का वितरण राज्य की खनिज संपदा और बुनियादी ढांचे की उपलब्धता पर पूर्णतः निर्भर करता है।

34. (1) राजस्थान भारत में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के उत्पादन में एकाधिकार रखता है।
राजस्थान उर्वरक उत्पादन में महत्वपूर्ण है, किंतु नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के उत्पादन में इसका एकाधिकार नहीं है, क्योंकि अन्य राज्यों में भी बड़े संयंत्र स्थित हैं। हालाँकि, राजस्थान सिंगल सुपर फास्फेट के उत्पादन में अग्रणी है और यहाँ खारी झीलों के कारण सोडियम आधारित रसायन उद्योग विकसित है। चित्तौड़गढ़ में डीएपी संयंत्र की उपस्थिति और प्रचुर रॉक फास्फेट के भंडार राज्य के उर्वरक क्षेत्र को एक सशक्त और सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं।

35. (3) केवल III
राजस्थान कृषि-प्रसंस्करण में तीव्र प्रगति कर रहा है और सरसों एवं ग्वार के उत्पादन में अपनी अग्रणी स्थिति का लाभ उठा रहा है। राज्य में डेयरी क्षेत्र भी सहकारी ढांचे के कारण सुदृढ़ है। बुनियादी ढांचे के संदर्भ में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि राज्य में मेगा फूड पार्क का अभाव है। अजमेर के रूपनगढ़ में राज्य का प्रथम मेगा फूड पार्क पहले से ही क्रियाशील है। सरकार ऐसे पार्कों के माध्यम से मूल्य संवर्धन को बढ़ावा दे रही है।

36. (4) जस्ता प्रगलन
कृषि-प्रसंस्करण उद्योग कृषि उत्पादों को कच्चे माल के रूप में उपयोग कर उनमें मूल्य संवर्धन करते हैं। ग्वार गम, खाद्य तेल शोधन और कपास की कताई प्रत्यक्षतः कृषि उपजों से संबंधित हैं। इसके विपरीत, जस्ता प्रगलन एक खनिज आधारित भारी उद्योग है, जो धात्विक अयस्कों के शोधन से संबंधित है। यह श्रेणीगत रूप से धातुकर्म उद्योग के अंतर्गत आता है और इसका कृषि गतिविधियों से कोई प्रत्यक्ष प्रसंस्करण संबंध या प्रक्रियात्मक जुड़ाव नहीं है।

37. (3) अजमेर
राजस्थान में कृषि-प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे को आधुनिक बनाने हेतु अजमेर का रूपनगढ़ महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ राज्य का प्रथम 'ग्रीनटेक मेगा फूड पार्क' स्थापित किया गया है। यह पार्क किसानों और प्रसंस्करणकर्ताओं को जोड़कर मूल्य श्रृंखला को सशक्त करता है। इसमें शीत भंडारण और पैकेजिंग जैसी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं, जो फसल कटाई के पश्चात होने वाली बर्बादी को कम करने और ग्रामीण क्षेत्रों में नवीन रोजगार सृजन करने में सहायक सिद्ध होती हैं।

38. (1) II, I, IV, III
कृषि-प्रसंस्करण की मूल्य श्रृंखला एक व्यवस्थित क्रम का अनुसरण करती है। सर्वप्रथम खेत स्तर पर फसल की कटाई और खरीद की जाती है। इसके पश्चात प्राथमिक प्रसंस्करण के अंतर्गत सफाई और श्रेणीकरण का कार्य होता है। तृतीय चरण में द्वितीयक मूल्य संवर्धन के माध्यम से कच्चे माल को तैयार उत्पादों में परिवर्तित किया जाता है। अंत में, इन तैयार वस्तुओं की पैकेजिंग और वितरण के माध्यम से उन्हें उपभोक्ताओं हेतु बाजार में विक्रय किया जाता है।

39. (4) सोडियम आधारित कच्चा माल उपलब्ध कराने वाली खारी झीलों की उपस्थिति
राजस्थान के सांभर, डीडवाना और पचपदरा क्षेत्रों में रासायनिक उद्योगों के संकेंद्रण का मुख्य कारण वहाँ की खारी झीलें हैं। ये झीलें सोडियम सल्फेट और अन्य लवणों का प्रचुर प्राकृतिक स्रोत हैं, जो अनेक रसायनों के निर्माण हेतु आवश्यक कच्चे माल का कार्य करते हैं। स्थानीय स्तर पर इन लवणों की सुलभता परिवहन लागत को कम करती है और इकाइयों को आर्थिक रूप से व्यावहारिक बनाती है। इसी कारण ये शुष्क क्षेत्र रासायनिक विनिर्माण के केंद्र बन गए हैं।

40. (1) पश्चगामी संबद्धता (बैकवर्ड लिंकेज)
जब कोई प्रसंस्करण इकाई अपने कच्चे माल के स्रोत के समीप स्थापित होती है, तो इसे पश्चगामी संबद्धता कहा जाता है। टमाटर केचप कारखाने का टमाटर उत्पादक क्षेत्र के निकट होना इसका सटीक उदाहरण है। इससे परिवहन के दौरान कच्चे माल की बर्बादी न्यूनतम होती है, लागत घटती है और कृषकों को उनके उत्पाद का सीधा बाजार उपलब्ध होता है। यह प्रक्रिया आपूर्ति श्रृंखला की दक्षता बढ़ाकर औद्योगिक विकास और कृषि आय में सुधार सुनिश्चित करती है।

41. (3) 1980
राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास और निवेश निगम (रीको) की स्थापना औद्योगिक बुनियादी ढांचे के विकास हेतु की गई थी। यद्यपि इसकी जड़ें पूर्व के खनिज विकास निगम से जुड़ी थीं, किंतु 1980 में इसे एक स्वतंत्र और पूर्ण स्वायत्त संस्था के रूप में पुनर्गठित किया गया। तब से रीको भूमि अधिग्रहण, औद्योगिक क्षेत्रों के विकास और बड़ी परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने वाली राज्य की सबसे महत्वपूर्ण नोडल एजेंसी के रूप में निरंतर कार्यरत है।

Downloaded from www.pdf.tube

ii. राज्य की प्रचुर अक्षय ऊर्जा और भूमि उपलब्धता का लाभ उठाता है
iii. एनसीआर क्षेत्र में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों द्वारा समर्थित
iv. पश्चिमी जिलों में उच्च वायु गति से प्रेरित

(1) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. राजस्थान में अक्षय ऊर्जा विनिर्माण क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) राज्य विशेष रुप से थर्मल पावर पर निर्भर है और नए सौर उपकरण कारखानों पर प्रतिबंध लगा दिया है।
(2) राज्य आयात निर्भरता कम करने के लिए सौर पैनलों के विनिर्माण को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहा है।
(3) राजस्थान ने बिजली उत्पादन और उपकरण विनिर्माण में निवेश आकर्षित करने के लिए एक समर्पित अक्षय ऊर्जा नीति तैयार की है।
(4) अक्षय ऊर्जा उपकरणों के विनिर्माण को रिप्स के तहत प्रमुख क्षेत्र (थ्रस्ट सेक्टर) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. देश में उच्चतम सौर विकिरण
II. गैर-कृषि योग्य बंजर भूमि के विशाल क्षेत्रों की उपलब्धता
III. तत्काल विदेशी निर्यात के लिए प्रमुख बंदरगाहों से निकटता
IV. अनुकूल राज्य नीतियां और रिप्स प्रोत्साहन

उपरोक्त में से कौन सौर ऊर्जा और सौर उपकरण विनिर्माण क्षेत्र में राजस्थान की उच्च क्षमता के कारणों का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. औद्योगिक गलियारों से दूर होने के कारण निम्नलिखित में से किस जिले के बड़े पैमाने पर भारी रक्षा विनिर्माण और सटीक ऑटो-घटकों का केंद्र होने की संभावना सबसे कम है?
(1) अलवर
(2) बांसवाड़ा
(3) जयपुर
(4) भरतपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. सौर ऊर्जा क्षमता और स्थापित क्षमता के मामले में, भारतीय राज्यों में राजस्थान सामान्यतः किस स्थान पर है?
(1) प्रथम
(2) पांचवां
(3) दसवां
(4) पंद्रहवां
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. सौर ऊर्जा विनिर्माण मूल्य श्रृंखला के निम्नलिखित चरणों पर विचार कीजिए:
I. सौर सेल का विनिर्माण
II. पॉलिसिलिकॉन का निष्कर्षण और प्रसंस्करण
III. सौर मॉड्यूल/पैनलों की असेंबली
IV. सिलिकॉन वेफर का विनिर्माण

निम्नलिखित में से कौन कच्चे माल से अंतिम बिजली उत्पादन बुनियादी ढांचे तक के सही अनुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) II, IV, I, III
(2) I, II, III, IV
(3) II, I, IV, III
(4) IV, II, I, III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. पश्चिमी राजस्थान में सौर ऊर्जा उत्पादन पार्कों का व्यापक विस्तार किस आर्थिक सिद्धांत के कारण मुख्य रूप से स्थानीय सौर पैनल उद्योग के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है?
(1) बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्था और अंतिम बाजारों से निकटता जिससे रसद लागत कम होती है
(2) अंतरराज्यीय व्यापार पर कराधान की पूर्ण अनुपस्थिति
(3) सौर पैनल को ठंडा करने के लिए समुद्री जल के उपयोग की आवश्यकता
(4) अन्य राज्यों से सौर पैनल आयात करने पर सख्त विधायी प्रतिबंध
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

80. राष्ट्रीय 'रक्षा ऑफसेट नीति' संभावित रूप से राजस्थान के औद्योगिक परिदृश्य को कैसे लाभ पहुँचाती है?
(1) यह अनिवार्य करके कि सभी राष्ट्रीय रक्षा प्रशिक्षण आधारों को स्थानांतरित किया जाना चाहिए
(2) विदेशी ठेकेदारों को स्थानीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों से घटकों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करके
(3) स्थानीय पुलिस बलों को निजी रक्षा ठेकेदारों से बदलकर
(4) सीमावर्ती जिलों में सभी कृषि गतिविधियों को रोककर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

81. व्यापार करने में सुगमता (ईज ऑफ डूइंग बिजनेस) को बढ़ावा देने के लिए 'राजस्थान उद्यम एकल खिड़की समर्थकारी और अनापत्ति अधिनियम' मूल रूप से किस वर्ष पारित किया गया था?
(1) 2005
(2) 2011

राज्य के निर्यात और रोजगार में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है।

52. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
राजस्थान एमएसएमई अधिनियम एक क्रांतिकारी कदम है, जो सूक्ष्म और लघु उद्यमों को स्थापना के प्रारंभिक वर्षों तक निरीक्षणों से छूट प्रदान करता है। यह 'पहले कार्य और बाद में अनुमति' की सुविधा देता है। एमएसएमई क्षेत्र की विशेषता यह है कि यह कम पूंजी में भी अत्यधिक रोजगार सृजन की क्षमता रखता है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि इसमें रोजगार कम होता है; वास्तव में यह कृषि के पश्चात राज्य में सर्वाधिक रोजगार प्रदान करने वाला क्षेत्र है।

53. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान में विशेष आर्थिक क्षेत्रों को उनकी विशिष्ट प्रकृति के अनुसार विकसित किया गया है। महिंद्रा वर्ल्ड सिटी एक बहु-उत्पाद क्षेत्र है, जबकि सीतापुरा रत्न और आभूषणों हेतु समर्पित है। जोधपुर के बोरानाडा में हस्तशिल्प हेतु विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र बनाया गया है। इंफोसिस ने जयपुर में अपना निजी सूचना प्रौद्योगिकी सक्षम सेवा क्षेत्र स्थापित किया है। ये सभी क्षेत्र राज्य की निर्यात क्षमताओं को बढ़ाने और अंतरराष्ट्रीय व्यापार में राजस्थान की वैश्विक भागीदारी सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

54. (2) राज्य का वर्गीकरण राष्ट्रीय मानदंडों से भिन्न है।
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों का वर्गीकरण अब संपूर्ण भारत में एक समान है और राजस्थान भी इसी राष्ट्रीय मानक का पालन करता है। संशोधित मानदंडों के अनुसार, विनिर्माण और सेवा दोनों हेतु निवेश और टर्नओवर की संयुक्त सीमाएं निर्धारित हैं। सूक्ष्म उद्यम हेतु निवेश 1 करोड़ और टर्नओवर 5 करोड़ तक है, जबकि मध्यम उद्यम हेतु यह सीमा क्रमशः 50 करोड़ और 250 करोड़ रुपये है। राज्य का कोई पृथक वर्गीकरण नहीं है, जो व्यापारिक एकरूपता सुनिश्चित करता है।

55. (2) I, III और IV
राजस्थान में एमएसएमई क्षेत्र को अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बड़े खरीदारों से भुगतान में विलंब के कारण कार्यशील पूंजी का संकट सर्वाधिक प्रमुख है। इसके अतिरिक्त, औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से ऋण प्राप्ति में कठिनाई और पुरातन तकनीक का उपयोग उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता कम करता है। प्रशिक्षित तकनीकी कर्मचारियों का अभाव भी एक बड़ी बाधा है। इन चुनौतियों से निपटने हेतु सरकार निरंतर नवीन नीतियों और क्लस्टर विकास योजनाओं के माध्यम से सहायता प्रदान कर रही है।

56. (1) पांच साल के लिए सभी कर्मचारियों के वेतन की पूर्ण माफी
राजस्थान एमएसएमई नीति 2022 उद्योगों को प्रोत्साहन हेतु विभिन्न वित्तीय सहायता प्रदान करती है, जैसे पूंजी निवेश पर अनुदान, ब्याज में छूट और गुणवत्ता प्रमाणीकरण हेतु व्यय की प्रतिपूर्ति। हालाँकि, यह नीति कर्मचारियों के पूर्ण वेतन की माफी का कोई प्रावधान नहीं करती। इसके स्थान पर सरकार रोजगार सृजन के आधार पर कुछ सब्सिडी या भविष्य निधि में अंशदान जैसी सहायता देती है। नीति का मुख्य उद्देश्य व्यवसाय की परिचालन लागत को कम करना और नए उद्यमियों को प्रोत्साहित करना है।

57. (3) उद्यम पंजीकरण
केंद्र सरकार द्वारा आरंभ 'उद्यम पंजीकरण' पोर्टल एमएसएमई पंजीकरण की प्रक्रिया को पूर्णतः डिजिटल, निःशुल्क और कागज रहित बनाने की दिशा में बड़ा सुधार है। यह पोर्टल आधार संख्या पर आधारित है और तत्काल पंजीकरण प्रमाणपत्र प्रदान करता है। राजस्थान की सभी नवीन और पुरानी इकाइयों हेतु इस पोर्टल पर पंजीकरण अनिवार्य और लाभप्रद है। इसी के माध्यम से वे सरकारी योजनाओं, अनुदान और प्राथमिकता प्राप्त ऋण सुविधाओं का सुगमता से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

58. (3) सूक्ष्म, लघु, मध्यम
एमएसएमई क्षेत्र के अंतर्गत उद्यमों का वर्गीकरण उनके आकार और टर्नओवर के बढ़ते क्रम में किया जाता है। प्रथम स्तर पर सूक्ष्म उद्यम आते हैं, जिनकी टर्नओवर सीमा 5 करोड़ रुपये तक है। इसके पश्चात लघु उद्यम आते हैं, जिनका वार्षिक टर्नओवर 50 करोड़ रुपये तक हो सकता है। सर्वोच्च श्रेणी में मध्यम उद्यम सम्मिलित हैं, जिनकी टर्नओवर सीमा 250 करोड़ रुपये निर्धारित है। यह पदानुक्रम व्यवसायों को उनकी क्षमता अनुसार सरकारी लाभों और नियामक नियमों के दायरे में रखता है।

59. (4) गंभीर कार्यशील पूंजी संकट और संभावित रूप से गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) के रूप में वर्गीकरण
एमएसएमई इकाइयां प्रायः बड़े उद्योगों को माल की आपूर्ति करती हैं, किंतु भुगतान में विलंब उनके लिए आर्थिक संकट उत्पन्न कर देता है। सीमित वित्तीय संसाधनों के कारण समय पर भुगतान न मिलने से उनकी दैनिक कार्यशील पूंजी समाप्त हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप वे बैंक ऋणों की किश्तें नहीं चुका पाते, जिससे उनके खाते गैर-निष्पादित परिसंपत्ति बन जाते हैं। यह स्थिति न केवल इकाई को बंद होने की कगार पर लाती है, अपितु उसकी भविष्य की ऋण पात्रता को भी क्षति पहुँचाती है।

60. (2) कर छूट और विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे के साथ निर्यात उन्मुख परिक्षेत्र के रूप में
राजस्थान में विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य राज्य के निर्यात को बढ़ावा देना और वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करना है। ये विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र होते हैं जहाँ शुल्क मुक्त आयात, आयकर में छूट और सुव्यवस्थित बुनियादी ढांचा जैसे लाभ प्रदान किए जाते हैं। यहाँ का वातावरण व्यापार हेतु अत्यंत अनुकूल होता है, जो न केवल विदेशी मुद्रा अर्जित करने में सहायक है, अपितु बड़े पैमाने पर स्थानीय नागरिकों हेतु रोजगार के नवीन और स्थायी अवसर भी सृजित करता है।

61. (3) 2022
राजस्थान सरकार ने राज्य को वैश्विक निवेश गंतव्य बनाने हेतु अक्टूबर 2022 में 'राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (रिप्स-2022)' का नवीनतम संस्करण जारी किया। यह योजना अत्यंत समावेशी है और इसमें हरित ऊर्जा, चिकित्सा उपकरणों तथा

Click Here to Buy book on Amazon

(3) राज-नेट (Raj-Net) - पर्यटन बुकिंग के लिए राज्य पोर्टल
(4) ई-मित्र (E-Mitra) - विशेष रूप से कॉर्पोरेट करों के भुगतान हेतु मंच
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. सूची-I (राजस्थान में डिजिटल पहल) को सूची-II (मुख्य उद्देश्य) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (डिजिटल पहल)
A. जन आधार
B. राज ई-वॉल्ट
C. संपर्क
D. जन सूचना पोर्टल
सूची II: (मुख्य उद्देश्य)
i. केंद्रीकृत सार्वजनिक शिकायत निवारण
ii. सरकारी सूचनाओं का स्वतः प्रकटीकरण
iii. पारिवारिक लाभों के लिए 'एक नंबर, एक कार्ड, एक पहचान'
iv. सुरक्षित डिजिटल दस्तावेज़ भंडारण और सत्यापन
कूट:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

24. राजस्थान में डिजिटल अर्थव्यवस्था की पहलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. 'राज-मेघ' राजस्थान राज्य डेटा सेंटर और क्लाउड वातावरण है।
II. 'राज-नेट' का उद्देश्य ग्राम पंचायत स्तर तक कनेक्टिविटी प्रदान करना है।
III. 'राज-वाई-फाई' इंटरनेट एक्सेस को केवल सरकारी कार्यालयों तक ही सीमित रखता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. राजस्थान के एक दूरदराज गांव का एक उद्यमी भौतिक दुकान के बिना स्थानीय हस्तशिल्प को विश्व स्तर पर बेचना चाहता है। राज्य की डिजिटल अर्थव्यवस्था की पहल का कौन सा अनुप्रयोग इसे सर्वोत्तम रुप से सुगम बनाता है?
(1) कच्चे माल के स्रोतों की पहचान करने हेतु जन सूचना पोर्टल का उपयोग।
(2) खुदरा लाइसेंस हेतु आवेदन करने हेतु राज-काज प्रणाली का उपयोग।
(3) राज-नेट बुनियादी ढांचे द्वारा प्रदान की गई कनेक्टिविटी के साथ ई-बाज़ार (E-Bazaar) पोर्टल का उपयोग।
(4) औपचारिक शिकायत दर्ज करने हेतु संपर्क पोर्टल का उपयोग।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

26. ग्रामीण राजस्थान में बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट (बैंक मित्र) की तैनाती ने ग्रामीण क्षेत्रों में अंतिम मील (last mile) तक वित्तीय समावेशन में महत्वपूर्ण सुधार किया है।
कथन II: राजस्थान के सभी ग्रामीण परिवारों की एक किलोमीटर के दायरे में एक कोर बैंकिंग शाखा तक भौतिक पहुँच है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I सही है
(2) केवल कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) न तो कथन I और न ही कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): बैंकिंग नेटवर्क के विस्तार के पश्चात भी ग्रामीण राजस्थान में वित्तीय समावेशन चुनौतीपूर्ण बना हुआ है।
कारण (R): मरुस्थलीय जिलों में निम्न वित्तीय साक्षरता और विरल जनसंख्या घनत्व पारंपरिक बैंक शाखाओं के लिए परिचालन संबंधी बाधाएं उत्पन्न करते हैं।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. निम्नलिखित में से कौन सा संस्थान राजस्थान में राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (SLBC) के संयोजक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?
(1) भारतीय स्टेट बैंक
(2) बैंक ऑफ बड़ौदा
(3) भारतीय रिजर्व बैंक
(4) राजस्थान मरुधरा ग्रामीण बैंक
(5) प्रश्न अनुत्तरित

29. राजस्थान में सीमांत किसानों हेतु ऋण उपलब्धता की चुनौती को दूर करने के लिए निम्नलिखित में से कौन सी सबसे उपयुक्त रणनीति है?
(1) प्रत्येक दूरस्थ और आदिवासी गांव में अंतरराष्ट्रीय कॉर्पोरेट बैंकों की स्थापना।
(2) निजी प्रतिस्पर्धा हेतु सभी मौजूदा ग्रामीण सहकारी ऋण

71. (4) भड़ला (जोधपुर)
जोधपुर जिले के फलोदी में स्थित भड़ला सौर पार्क वर्तमान में विश्व के सबसे बड़े सौर ऊर्जा पार्कों में से एक है। इसकी विशाल क्षमता ने राजस्थान को अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक मानचित्र पर स्थापित किया है। इस पार्क के विकास से न केवल विद्युत उत्पादन बढ़ा है, अपितु सौर पैनलों और संबद्ध उपकरणों के स्थानीय विनिर्माण की संभावनाओं को भी बल मिला है। भड़ला राजस्थान की सौर क्रांति का एक चमकता हुआ प्रतीक है, जो पर्यावरण अनुकूल ऊर्जा को बढ़ावा देता है।

72. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
राजस्थान अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण रक्षा विनिर्माण हेतु एक आदर्श स्थान के रूप में उभर रहा है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि राज्य में एमएसएमई पारिस्थितिकी तंत्र का अभाव है। वास्तव में, भिवाड़ी और जयपुर में हजारों छोटे उद्यम पहले से ही सटीक मशीनरी और घटकों का उत्पादन कर रहे हैं, जो रक्षा आपूर्ति श्रृंखला का भाग बन सकते हैं। राज्य की नीतियां इन इकाइयों को रक्षा क्षेत्र की बड़ी कंपनियों के साथ जोड़कर तकनीकी हस्तांतरण और नवाचार को निरंतर प्रोत्साहित कर रही हैं।

73. (1) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
राजस्थान की प्राकृतिक विशेषताएं इसे ऊर्जा क्षेत्रों हेतु उपयुक्त बनाती हैं। पश्चिमी राजस्थान में उच्च सौर विकिरण सौर फोटोवोल्टिक विनिर्माण को बढ़ावा देता है, जबकि तेज हवाएं पवन ऊर्जा घटकों हेतु अवसर प्रदान करती हैं। प्रचुर भूमि और अक्षय ऊर्जा की उपलब्धता इसे ग्रीन हाइड्रोजन का प्रमुख केंद्र बनाती है। इसके साथ ही, एनसीआर के निकट स्थित इकाइयां रक्षा क्षेत्र के लिए ऑफसेट विनिर्माण और आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने हेतु सक्षम हैं। यह विविधता राज्य के औद्योगिक आधार को सशक्त करती है।

74. (1) राज्य विशेष रूप से थर्मल पावर पर निर्भर है और नए सौर उपकरण कारखानों पर प्रतिबंध लगा दिया है।
यह कथन पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है क्योंकि राजस्थान अब तापीय विद्युत के स्थान पर अक्षय ऊर्जा की ओर तीव्र गति से अग्रसर है। राज्य ने न केवल सौर ऊर्जा उत्पादन में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, अपितु वह सौर उपकरण बनाने वाली नवीन इकाइयों को रिप्स-2022 के अंतर्गत विशेष प्रोत्साहन देकर आमंत्रित कर रहा है। राजस्थान की नवीन अक्षय ऊर्जा नीति विशेष रूप से सौर और पवन ऊर्जा उपकरणों के स्थानीय विनिर्माण को बढ़ावा देने हेतु निर्मित है, ताकि आयात पर निर्भरता न्यूनतम की जा सके।

75. (2) I, II और IV
राजस्थान में सौर उपकरण विनिर्माण की अपार संभावनाओं के पीछे तीन मुख्य कारक हैं। प्रथम, यहाँ देश का सर्वाधिक सौर विकिरण उपलब्ध है। द्वितीय, राज्य के पास सौर पार्क स्थापित करने हेतु विशाल गैर-कृषि योग्य बंजर भूमि सुलभ है। तृतीय, राज्य सरकार की अनुकूल नीतियां और रिप्स के अंतर्गत आकर्षक वित्तीय प्रोत्साहन निवेशकों को सुरक्षा प्रदान करते हैं। हालाँकि बंदरगाहों से दूरी एक चुनौती है, किंतु स्थानीय मांग और सरकारी समर्थन इस कमी को पूर्णतः संतुलित कर देते हैं।

76. (2) बांसवाड़ा
राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित बांसवाड़ा जिला औद्योगिक गलियारों और दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर से काफी दूर है। इसके विपरीत, अलवर, जयपुर और भरतपुर जैसे जिले अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण रक्षा विनिर्माण और सटीक ऑटो-घटकों हेतु अधिक उपयुक्त हैं। बांसवाड़ा का आर्थिक आधार मुख्य रूप से कृषि और खनिजों पर केंद्रित है, जिससे वहाँ भविष्य में उच्च-तकनीकी रक्षा इकाइयों की स्थापना की संभावना अन्य विकसित औद्योगिक केंद्रों की तुलना में काफी कम और चुनौतीपूर्ण प्रतीत होती है।

NODIA

77. (1) प्रथम
सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता और कुल उत्पादन के मामले में राजस्थान वर्तमान में भारत के सभी राज्यों में प्रथम स्थान पर है। अपनी विशाल बंजर भूमि और देश के उच्चतम सौर विकिरण का लाभ उठाते हुए, राज्य ने सौर पार्कों के विकास में क्रांतिकारी प्रगति की है। यह नेतृत्व न केवल राज्य की विद्युत आवश्यकताओं को पूर्ण करता है, अपितु इसे देश के हरित ऊर्जा परिवर्तन में सबसे महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनाता है। यह गौरवपूर्ण स्थिति सौर उपकरणों के विनिर्माण हेतु नवीन अवसर खोलती है।

78. (1) II, IV, I, III
सौर ऊर्जा विनिर्माण की मूल्य श्रृंखला एक तकनीकी प्रक्रिया है जो कच्चे माल से आरंभ होती है। सर्वप्रथम पॉलिसिलिकॉन का निष्कर्षण और शुद्धिकरण किया जाता है। इसके पश्चात इस सामग्री से सिलिकॉन वेफर्स का निर्माण होता है, जो सौर प्रौद्योगिकी का आधार हैं। तृतीय चरण में इन वेफर्स को सौर सेलों में परिवर्तित किया जाता है। अंत में, अनेक सौर सेलों को एक साथ असेंबल करके अंतिम सौर मॉड्यूल या पैनल तैयार किए जाते हैं, जो विद्युत उत्पादन हेतु उपयोग में लाए जाते हैं।

79. (1) बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्था और अंतिम बाजारों से निकटता जिससे रसद लागत कम होती है
पश्चिमी राजस्थान में सौर पार्कों का विस्तार स्थानीय सौर पैनल उद्योग हेतु उत्प्रेरक का कार्य करता है। जब उत्पादन इकाइयां अपने मुख्य उपयोग क्षेत्र के समीप होती हैं, तो भारी और नाजुक पैनलों के परिवहन पर होने वाला व्यय काफी कम हो जाता है। यह 'बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्था' का लाभ प्रदान करता है और स्थानीय विनिर्माण को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाता है। मांग और आपूर्ति के मध्य यह भौगोलिक निकटता अंतरराष्ट्रीय निवेशकों को राजस्थान में ही उत्पादन केंद्र स्थापित करने हेतु प्रेरित करती है।

80. (2) विदेशी ठेकेदारों को स्थानीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों से घटकों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करके
राष्ट्रीय रक्षा ऑफसेट नीति के अंतर्गत विदेशी कंपनियों को कुल अनुबंध का एक निश्चित भाग भारत में ही निवेश करना होता है। राजस्थान हेतु इसका लाभ यह है कि यह नीति विदेशी

ii. राजस्थान पर्यटन का पारंपरिक और सुप्रसिद्ध स्वागत नारा
iii. पर्यटन बुनियादी ढांचे में निजी निवेश को प्रोत्साहित करने वाली नीति
iv. राजस्थान पर्यटन की पुनर्ब्रांडिंग हेतु 2016 में शुरू किया गया विपणन अभियान

कूट:
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

8. राजस्थान में पर्यटन क्षेत्र के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) औद्योगिक इकाइयों के समान लाभ प्राप्त करने हेतु इसे "उद्योग" का दर्जा प्राप्त है।
(2) यह मुख्य रूप से केवल विशिष्ट शहरी पेशेवर वर्गों हेतु रोजगार सृजित करता है।
(3) यह राजस्व के लिए विशेष रूप से उच्च व्यय वाले अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों पर निर्भर है।
(4) पारिस्थितिकी की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु वन्यजीव पर्यटन पर पूर्ण प्रतिबंध है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. राजस्थान में पर्यटन वृद्धि और रोजगार के मध्य प्राथमिक कार्य-कारण संबंध क्या है?
(1) व्यापक औद्योगिक भूमि अधिग्रहण के कारण कृषि रोजगार में प्रत्यक्ष गिरावट।
(2) रोजगार को केवल सरकार द्वारा प्रबंधित विरासत और संग्रहालय संपत्तियों तक सीमित रखना।
(3) स्थानीय क्षेत्रों में गुणक प्रभाव (multiplier effect) के माध्यम से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार को बढ़ावा देना।
(4) बेहतर आतिथ्य प्रशिक्षण हेतु अन्य राज्यों में होने वाला व्यापक पलायन।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. राजस्थान में पर्यटन क्षेत्र की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. यह अत्यधिक श्रम-प्रधान है और बड़े पैमाने पर रोजगार प्रदान करता है।
II. यह ऐतिहासिक स्मारकों और विरासत के संरक्षण को प्रोत्साहित करता है।
III. महिला सशक्तिकरण और स्थानीय कारीगरों की आजीविका में इसकी भूमिका न्यूनतम है।
IV. यह दूरदराज के क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा देता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. राजस्थान पर्यटन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा पर्यटन सर्किट बेमेल (असंगत) है?
(1) डेजर्ट (मरु) सर्किट
(2) मेवाड़ सर्किट
(3) ब्रज-मेवात सर्किट
(4) नीलगिरी सर्किट
(5) प्रश्न अनुत्तरित

12. राजस्थान में पर्यटन राजस्व के संदर्भ में, ऐतिहासिक रूप से राज्य में पर्यटकों के कुल आगमन में किस वर्ग की हिस्सेदारी सर्वाधिक है?
(1) यूरोप के अंतरराष्ट्रीय पर्यटक
(2) भारत के घरेलू पर्यटक
(3) अनिवासी भारतीय (NRI)
(4) दक्षिण-पूर्व एशिया के अंतरराष्ट्रीय पर्यटक
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों पर विचार कीजिए:
I. जयपुर
II. अजमेर
III. उदयपुर
IV. प्रतापगढ़

निम्नलिखित में से कौन सा इन जिलों की सामान्य ऐतिहासिक घरेलू पर्यटकों की आवक के आधार पर सही अवरोही क्रम है?
(1) I, II, III, IV
(2) I, III, II, IV
(3) II, I, IV, III
(4) III, I, II, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. राजस्थान में पर्यटन राजस्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: घरेलू पर्यटक संख्या-आधारित पर्यटन राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।
कथन II: अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की प्रति व्यक्ति व्यय दर सामान्यतः घरेलू पर्यटकों की तुलना में अधिक होती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I सही है
(2) केवल कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) न तो कथन I और न ही कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): राजस्थान में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन, घरेलू पर्यटन की तुलना में कम पर्यटकों के बावजूद उच्च विदेशी मुद्रा आय

Downloaded from www.pdf.tube

अनुपालन का बोझ एक नियामक बाधा है। यह शासन प्रणाली और नीतियों से संबंधित है। सरकार एकल खिड़की प्रणालियों और नियमों के सरलीकरण के माध्यम से इसी नियामक बाधा को दूर करने का प्रयास कर रही है ताकि औद्योगिक निवेश हेतु अनुकूल और सुगम वातावरण तैयार किया जा सके।

90. (2) केवल IV
राजस्थान का निवेश सुविधा ढांचा अत्यंत सुदृढ़ है, जिसमें मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में निवेश बोर्ड और 'वन स्टॉप शॉप' जैसी अत्याधुनिक सुविधाएं सम्मिलित हैं। ये प्रणालियां लोक सेवा गारंटी अधिनियम के अंतर्गत समयबद्ध स्वीकृतियां सुनिश्चित करती हैं। हालाँकि, यह कहना पूर्णतः असत्य है कि बड़े उद्योगों को पर्यावरणीय कानूनों से छूट दी जाती है। वास्तव में, सभी परियोजनाओं हेतु कड़े पर्यावरणीय मानदंडों का पालन अनिवार्य है और सरकार केवल उनकी मंजूरी की प्रक्रिया को डिजिटल माध्यम से तीव्र और सरल बनाती है।

91. (4) सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग
'आई-स्टार्ट राजस्थान' राज्य सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य राज्य में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना और युवाओं में नवाचार की संस्कृति विकसित करना है। सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग इस कार्यक्रम की नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। यह विभाग स्टार्टअप्स को न केवल तकनीकी सहायता और परामर्श प्रदान करता, अपितु उन्हें सरकारी निधि और इनक्यूबेशन सुविधाएं प्राप्त करने में भी सहायता करता है। इन प्रयासों से राजस्थान स्टार्टअप रैंकिंग में देश के अग्रणी राज्यों में सम्मिलित है।

92. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
दिल्ली मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (DMIC) भारत की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है, जिसमें समर्पित माल भाड़ा गलियारे का लगभग 39 प्रतिशत भाग राजस्थान से होकर गुजरता है। यह राजस्थान को एक विशाल लॉजिस्टिक लाभ प्रदान करता है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह केवल विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित है; वास्तव में, इस परियोजना में भारत सरकार और जापान की प्रमुख भागीदारी है। यह अंतरराष्ट्रीय सहयोग राज्य में आधुनिक और तकनीकी रूप से उन्नत औद्योगिक नगरों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

93. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान में DMIC के अंतर्गत विभिन्न औद्योगिक नोड्स को चरणों में विकसित किया जा रहा है। खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना और जोधपुर-पाली-मारवाड़ क्षेत्रों को प्रथम चरण के विकास नोड्स के रूप में प्राथमिकता दी गई है। जयपुर-दौसा और राजसमंद-भीलवाड़ा क्षेत्रों को द्वितीय चरण हेतु नियोजित किया गया है। यह क्रमिक विकास सुनिश्चित करता है कि राज्य के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में औद्योगीकरण का प्रसार संतुलित ढंग से हो और भविष्य में एक विशाल औद्योगिक गलियारा पूरी तरह निर्मित हो, जो निर्यात और रोजगार का आधार बने।

94. (4) केवल जयपुर के निवासियों द्वारा स्थापित स्टार्टअप ही आई-स्टार्ट कार्यक्रम के तहत लाभ के पात्र हैं।
आई-स्टार्ट राजस्थान कार्यक्रम की प्रकृति पूर्णतः समावेशी और राज्यव्यापी है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह केवल जयपुर के निवासियों तक सीमित है। राजस्थान के किसी भी जिले का कोई भी उद्यमी या विद्यार्थी, जिसके पास नवीन विचार या स्टार्टअप है, इस पोर्टल पर पंजीकरण कर सरकारी सहायता प्राप्त कर सकता है। वास्तव में, सरकार अब ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे नगरों के स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करने पर विशेष बल दे रही है ताकि नवाचार का लाभ संपूर्ण राज्य के युवाओं को समान रूप से मिल सके।

95. (1) I, II और IV
आई-स्टार्ट कार्यक्रम स्टार्टअप्स को उनके संपूर्ण सफर में सहायता प्रदान करता है। इसमें 'क्यू-रेट' मूल्यांकन के माध्यम से स्टार्टअप की परिपक्वता जांची जाती है, जिससे उन्हें कमियां सुधारने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त, राजीविका के माध्यम से ग्रामीण उद्यमों को वित्तीय सहायता दी जाती है। भामाशाह टेक्नो हब जैसी संस्थाओं में निःशुल्क इनक्यूबेशन और परामर्श की सुविधा भी उपलब्ध है। हालाँकि, सरकार संस्थापकों को व्यक्तिगत उपयोग हेतु निःशुल्क अंतरराष्ट्रीय हवाई टिकट जैसा कोई लाभ प्रदान नहीं करती, अपितु केवल व्यावसायिक सहायता देती है।

96. (2) जैसलमेर
दिल्ली मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर का प्रभाव क्षेत्र मुख्य रूप से उन जिलों तक सीमित है जो समर्पित माल भाड़ा गलियारे के संरेखण में आते हैं। अलवर, जयपुर और अजमेर जैसे जिले सीधे इस गलियारे के निकट स्थित हैं और इसके विकास का लाभ उठाते हैं। इसके विपरीत, जैसलमेर जिला राजस्थान के सुदूर पश्चिम में स्थित है, जो इस कॉरिडोर के प्रभाव क्षेत्र से काफी दूर है। DMIC का मुख्य उद्देश्य पूर्वी और मध्य राजस्थान को औद्योगिक हब के रूप में जोड़कर आर्थिक उन्नति को गति देना है।

97. (2) दिल्ली मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (डीएमआईसी)
खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना निवेश क्षेत्र को दिल्ली मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर परियोजना के अंतर्गत एक मॉडल औद्योगिक शहर के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह क्षेत्र अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण अंतरराष्ट्रीय निवेशकों को आकर्षित कर रहा है। यहाँ आधुनिक सड़कों, समर्पित विद्युत प्रणालियों और सुदृढ़ रसद केंद्रों का निर्माण किया जा रहा है ताकि इसे वैश्विक विनिर्माण मानकों के अनुरूप बनाया जा सके। DMIC के अंतर्गत विकसित यह नोड राजस्थान के औद्योगिक निर्यात और रोजगार में भविष्य में क्रांतिकारी सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है।

98. (1) II, IV, III, I
राजस्थान में DMIC के अंतर्गत नियोजित औद्योगिक नोड्स को यदि उत्तर से दक्षिण की ओर देखा जाए, तो सर्वप्रथम अलवर का नीमराना-भिवाड़ी क्षेत्र आता है। इसके दक्षिण में जयपुर-दौसा औद्योगिक क्षेत्र स्थित है। इसके पश्चात और दक्षिण की

NODIA

ओर बढ़ने पर अजमेर-किशनगढ़ निवेश क्षेत्र आता है। अंत में दक्षिण-पश्चिमी दिशा में जोधपुर-पाली-मारवाड़ औद्योगिक क्षेत्र का स्थान आता है। यह संरेखण राज्य के मुख्य परिवहन मार्गों का अनुसरण करता है और औद्योगिक विकास के एक सुसंगत गलियारे का सफल निर्माण करता है।

99. (3) राजस्थान और पश्चिमी बंदरगाहों के बीच रसद पारगमन समय में कमी

DMIC और समर्पित माल भाड़ा गलियारे का एकीकरण राजस्थान की अर्थव्यवस्था हेतु अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा। वर्तमान में औद्योगिक माल को सड़क मार्ग से बंदरगाहों तक पहुँचने में अधिक समय लगता है। DFC के पूर्णतः क्रियाशील होने से मालगाड़ियाँ उच्च गति और अधिक क्षमता के साथ सीधे गुजरात और महाराष्ट्र के बंदरगाहों तक पहुँच सकेंगी। इससे रसद पारगमन समय में भारी कमी आएगी, परिवहन लागत घटेगी और राजस्थान में निर्मित वस्तुएं वैश्विक बाजारों में अधिक प्रतिस्पर्धी बन सकेंगी, जो अंततः निर्यात में वृद्धि सुनिश्चित करेगी।

100. (4) समावेशी विकास को बढ़ावा देना और स्टार्टअप संस्कृति का विकेंद्रीकरण करना

आई-स्टार्ट कार्यक्रम के अंतर्गत ग्रामीण और महिला उद्यमियों हेतु विशेष वित्त पोषण का प्रावधान सरकार की समावेशी नीति को दर्शाता है। इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि तकनीकी नवाचार और उद्यमशीलता केवल बड़े नगरों तक ही सीमित न रहे। स्टार्टअप संस्कृति को गांवों और महिलाओं तक पहुँचाकर सरकार आर्थिक शक्ति का विकेंद्रीकरण करना चाहती है। यह दृष्टिकोण न केवल नवीन प्रतिभाओं को सामने लाता है, अपितु ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजित कर पलायन को रोकने में भी अत्यंत सहायक है।

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 14

राजस्थान में सेवा क्षेत्र : स्थिति, समस्याएँ एवं पहल

NODIA

1. पिछले दशक में राजस्थान के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) में सेवा क्षेत्र के योगदान की प्रवृत्ति का सबसे सटीक वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा कथन करता है?
(1) यह लगभग 25 प्रतिशत पर स्थिर बना हुआ है।
(2) यह GSDP में सबसे बड़े योगदानकर्ता क्षेत्र के रूप में उभरा है।
(3) यह लगातार तीन प्रमुख क्षेत्रों में सबसे कम योगदान देने वाला क्षेत्र रहा है।
(4) व्यापक औद्योगीकरण के कारण इसमें निरंतर गिरावट आई है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

2. राजस्थान की अर्थव्यवस्था की क्षेत्रवार संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: प्रचलित कीमतों पर राजस्थान के कुल GSDP में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी चालीस प्रतिशत से अधिक है।
कथन II: राज्य में सेवा क्षेत्र की विकास दर पूर्णतः कृषि उत्पादन पर निर्भर है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I सही है
(2) केवल कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) न तो कथन I और न ही कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

3. राजस्थान में सेवा क्षेत्र के उप-क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. व्यापार, होटल और जलपान गृह, सेवा क्षेत्र के योगदान के प्रमुख घटक हैं।
II. स्थावर संपदा (रियल एस्टेट) और व्यावसायिक सेवाएँ सेवा क्षेत्र के GSDP में न्यूनतम योगदान देती हैं।
III. सुदृढ़ बुनियादी ढांचे के कारण परिवहन और संचार सेवाओं ने निरंतर वृद्धि प्रदर्शित की है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

4. राजस्थान में सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) में मुख्य सेवा क्षेत्र के योगदान की गणना करते समय सामान्यतः निम्नलिखित में से किस उप-क्षेत्र को सम्मिलित नहीं किया जाता है?
(1) लोक प्रशासन
(2) वित्तीय सेवाएँ
(3) व्यापार और मरम्मत सेवाएँ
(4) खनन और उत्खनन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): राजस्थान में GSDP योगदान के मामले में सेवा क्षेत्र, कृषि और उद्योग क्षेत्रों से आगे निकल गया है।
कारण (R): राजस्थान का औद्योगिक आधार अत्यधिक विविधतापूर्ण है जो पूर्णतः इसकी सेवा-उन्मुख अर्थव्यवस्था का समर्थन करता है।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

6. निम्नलिखित में से किस उद्योग को राजस्थान में सेवा क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक रूप से प्रभावशाली चालक माना जाता है?
(1) सूचना प्रौद्योगिकी
(2) पर्यटन और आतिथ्य
(3) दूरसंचार
(4) संगठित खुदरा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

7. सूची-I (राजस्थान के पर्यटन अभियान/नारे) को सूची-II (विशेषताएं/समयरेखा) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (पर्यटन अभियान/नारे)
A. पधारो म्हारे देस
B. जाने क्या दिख जाए
C. राजस्थान पर्यटन इकाई नीति
D. मुख्यमंत्री पर्यटन उद्योग संबल योजना
सूची II: (विशेषताएं/समयरेखा)
i. कोविड-19 के पश्चात पर्यटन क्षेत्र को वित्तीय राहत प्रदान करने हेतु प्रारंभ

स्टार्टअप्स जैसे उभरते क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह योजना निवेशकों को विभिन्न कर छूटों और अनुदानों के माध्यम से आकर्षित करती है। इससे राज्य में औद्योगिक विकास को नई ऊर्जा मिली है और निवेश का एक सकारात्मक वातावरण तैयार हुआ है।

62. (4) ई-गतिशीलता - इलेक्ट्रिक वाहन विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र का विकास
'इन्वेस्ट राजस्थान समिट' के दौरान राज्य सरकार ने भविष्य की प्रौद्योगिकियों पर बल दिया है, जिसमें ई-गतिशीलता एक प्रमुख क्षेत्र है। राजस्थान का लक्ष्य विद्युत वाहनों (ईवी) के विनिर्माण और उनके घटकों हेतु एक सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है। इसके लिए राज्य की ईवी नीति के अंतर्गत विशेष प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं। अन्य विकल्पों के विपरीत ई-गतिशीलता आधुनिक, टिकाऊ और तकनीकी रूप से उन्नत औद्योगिक विकास का प्रतिनिधित्व करती है, जो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है।

63. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
रिप्स-2022 के अंतर्गत उद्योगों को उनकी प्रकृति अनुसार विभिन्न श्रेणियों में विभक्त किया गया है। ग्रीन हाइड्रोजन जैसे क्षेत्रों को 'सनराइज' या उदीयमान क्षेत्र माना गया है। सौर पैनल विनिर्माण को 'हरित क्षेत्र' में रखा गया है, जो अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देता है। वस्त्र जैसे पुराने उद्योगों को 'पारंपरिक क्षेत्र' में सम्मिलित किया गया है, जबकि डेटा सेंटरों को सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के तहत विशेष प्रोत्साहन दिए जाते हैं। यह वर्गीकरण राज्य का संतुलित और आधुनिक औद्योगिक विकास सुनिश्चित करता है।

64. (2) इसका उद्देश्य विकास को गति देने के लिए समझौता ज्ञापनों (MoUs) और आशय पत्रों (LoIs) पर हस्ताक्षर करना था।
'इन्वेस्ट राजस्थान समिट' का मुख्य उद्देश्य निवेशकों के साथ सीधा संवाद स्थापित करना और राज्य में निवेश प्रस्तावों को अंतिम रूप देना था। इस शिखर सम्मेलन में हजारों करोड़ रुपये के समझौता ज्ञापनों और आशय पत्रों पर हस्ताक्षर किए गए, जो सौर ऊर्जा, पर्यटन और विनिर्माण जैसे विभिन्न क्षेत्रों में विस्तृत थे। यह आयोजन निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करने और राजस्थान की व्यावसायिक क्षमता को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित करने के लिए एक सफल और महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हुआ।

65. (1) केवल I और II
राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना 2022 के मुख्य उद्देश्यों में संपूर्ण राज्य में संतुलित क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित करना सम्मिलित है। यह योजना स्थानीय युवाओं हेतु रोजगार के व्यापक अवसर सृजित करने पर बल देती है। हालाँकि, यह योजना किसी भी पर्यावरणीय नियम को शिथिल या समाप्त नहीं करती है। टिकाऊ विकास हेतु प्रदूषण नियंत्रण और पर्यावरणीय मानदंडों का कड़ाई से पालन करना सभी नवीन और पुरानी औद्योगिक इकाइयों हेतु अनिवार्य है। सरकार केवल प्रक्रिया को सुगम और समयबद्ध बनाने पर ध्यान देती है।

66. (1) खुदरा व्यापार और विशुद्ध रूप से वाणिज्यिक परिसर
राजस्थान की निवेश प्रोत्साहन योजनाएं मुख्य रूप से विनिर्माण और मूल्य संवर्धन गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु निर्मित हैं। अतः अक्षय ऊर्जा उपकरण, चिकित्सा उपकरण और कृषि-प्रसंस्करण जैसी इकाइयों को थ्रस्ट सेक्टर के तहत विशेष छूट दी जाती है। इसके विपरीत, साधारण खुदरा व्यापार या व्यावसायिक परिसरों को औद्योगिक प्रोत्साहन के दायरे से बाहर रखा गया है, क्योंकि ये गतिविधियां सीधे तौर पर विनिर्माण में योगदान नहीं देतीं। सरकार का ध्यान उन क्षेत्रों पर है जो राज्य की उत्पादन क्षमता और निर्यात बढ़ाते हैं।

67. (3) निवेश प्रोत्साहन ब्यूरो (बीआईपी)
राजस्थान में निवेश को सुविधाजनक बनाने और 'इन्वेस्ट राजस्थान समिट' जैसे बड़े आयोजनों के प्रबंधन का उत्तरदायित्व ' निवेश प्रोत्साहन ब्यूरो' (BIP) का है। यह ब्यूरो बड़े निवेश प्रस्तावों हेतु मुख्य संपर्क बिंदु के रूप में कार्य करता है और निवेशकों को विभिन्न विभागीय स्वीकृतियां प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। यह औद्योगिक विकास हेतु नोडल एजेंसी है, जो राज्य सरकार और निजी निवेशकों के मध्य सेतु का कार्य कर प्रक्रिया को अत्यंत सरल, पारदर्शी और प्रभावी बनाती है।

68. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
रिप्स-2022 का रणनीतिक लक्ष्य राजस्थान को भविष्य की तकनीक और टिकाऊ ऊर्जा के केंद्र के रूप में विकसित करना है। इसी उद्देश्य से ग्रीन हाइड्रोजन और चिकित्सा उपकरणों जैसे नए युग के क्षेत्रों हेतु आकर्षक प्रोत्साहन पैकेज तैयार किए गए हैं। राज्य सरकार का मानना है कि इन आधुनिक उद्योगों को बढ़ावा देकर न केवल उच्च गुणवत्ता वाला रोजगार सृजन होगा, अपितु वैश्विक मूल्य श्रृंखला में राजस्थान की भूमिका भी और अधिक सुदृढ़ होगी। यह योजना राज्य के दीर्घकालिक आर्थिक हितों को सुरक्षित करती है।

69. (3) शुरुआती लागत को कम करना और राज्य को एक प्रतिस्पर्धी गंतव्य बनाना
नवीन उद्योग स्थापित करते समय भूमि पंजीकरण और प्रारंभिक चरणों में भारी व्यय होता है। राजस्थान सरकार स्टांप शुल्क और बिजली शुल्क में छूट प्रदान कर इस 'प्रवेश लागत' को न्यूनतम कर देती है। इससे राज्य अन्य राज्यों की तुलना में निवेशकों हेतु अधिक प्रतिस्पर्धी बन जाता है। यह वित्तीय राहत उद्योगों को अपनी पूंजी का उपयोग तकनीक और विस्तार में करने की अनुमति देती है, जिससे अंततः राज्य के औद्योगिक विकास की गति तेज होती है और निवेश आकर्षित होता है।

70. (2) I, II, III और IV
रिप्स योजना के अंतर्गत निवेशकों को आकर्षित करने हेतु करों में व्यापक राहत दी जाती है। इसमें स्टांप और बिजली शुल्क पर शत-प्रतिशत छूट के साथ राज्य वस्तु एवं सेवा कर के आधार पर निवेश अनुदान प्रदान करना सम्मिलित है। हालाँकि, सरकार विनिर्मित वस्तुओं की शत-प्रतिशत खरीद की कोई गारंटी नहीं देती, क्योंकि यह बाजार की मांग और प्रतिस्पर्धा का विषय है। ये प्रोत्साहन मुख्य रूप से विनिर्माण लागत को कम करने और औद्योगिक दक्षता बढ़ाने पर केंद्रित हैं ताकि निर्यात बढ़ सके।

Downloaded from www.pdf.tube

अर्जित करता है।
कारण (R): अंतरराष्ट्रीय पर्यटक सामान्यतः बजट आवास का विकल्प चुनते हैं और विरासत संपत्तियों (heritage properties) से बचते हैं।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. सूची-I (राजस्थान में आईटी और आईटीईएस पार्क/जोन) को सूची-II (प्रमुख विशेषताएं/स्थान) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (आईटी और आईटीईएस पार्क/जोन)
A. महिंद्रा वर्ल्ड सिटी
B. फिनटेक पार्क
C. साइबर पार्क
D. भामाशाह टेक्नो हब
सूची II: (प्रमुख विशेषताएं/स्थान)
i. जोधपुर
ii. जयपुर (सबसे बड़ा इनक्यूबेशन सेंटर)
iii. जयपुर (आईटी/आईटीईएस हेतु विशेष आर्थिक क्षेत्र - SEZ)
iv. जयपुर (वित्तीय प्रौद्योगिकी कंपनियों हेतु समर्पित)
कूट:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. सेवा क्षेत्र के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सी सूचना प्रौद्योगिकी सक्षम सेवाओं (ITeS) की सबसे सटीक परिभाषा है?
(1) कंप्यूटर हार्डवेयर के उत्पादन से जुड़ी उच्च-स्तरीय विनिर्माण सेवाएँ।
(2) दक्षता बढ़ाने हेतु डिजाइन की गई बीपीओ (BPO) और केपीओ (KPO) जैसी आईटी-निर्भर सेवाएँ।
(3) ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ताओं को ऑप्टिकल फाइबर कनेक्टिविटी का व्यवस्थित प्रावधान।
(4) शीघ्र खराब होने वाले कृषि उत्पादों का व्यापार करने वाले बड़े पैमाने के ई-कॉमर्स डिजिटल प्लेटफॉर्म।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. राजस्थान का कौन सा शहर सूचना प्रौद्योगिकी और आईटीईएस (ITeS) के लिए टियर-2 हब के रूप में प्रमुखता से उभरा है, जो प्रमुख बहुराष्ट्रीय निगमों को आकर्षित कर रहा है?
(1) जयपुर
(2) बीकानेर
(3) अलवर
(4) भरतपुर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. जयपुर में आईटी विकास की पहलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. समर्पित आईटी पार्क और सेज (SEZ) की स्थापना।
II. स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने हेतु आई-स्टार्ट (iStart) राजस्थान पहल का कार्यान्वयन।
III. आईटी कंपनियों को राज्य के श्रम कानूनों का पालन करने से पूर्णतः छूट।
IV. भामाशाह टेक्नो हब जैसे विश्व स्तरीय इनक्यूबेशन केंद्रों का विकास।
V. निवेश आकर्षित करने और नवाचार को बढ़ावा देने हेतु आईटी दिवस (IT Days) का आयोजन।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

20. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान की आईटी और आईटीईएस क्षेत्र को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों की विशेषता नहीं है?
(1) आईटी पार्कों हेतु रियायती दरों पर भूमि उपलब्ध कराना।
(2) मेगा आईटी परियोजनाओं के लिए अनुकूलित पैकेज की सुविधा देना।
(3) एक निश्चित अवधि हेतु विद्युत शुल्क में छूट प्रदान करना।
(4) आईटी कंपनियों हेतु अपने 100% सॉफ्टवेयर उत्पादों का निर्यात करना अनिवार्य करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. राज्य सरकार द्वारा प्रारंभ की गई 'आई-स्टार्ट (iStart) राजस्थान' पहल का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) सभी सरकारी प्राथमिक विद्यालयों को हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी प्रदान करना।
(2) राज्य के सभी मौजूदा भू-राजस्व और संपत्ति अभिलेखों का डिजिटलीकरण करना।
(3) इनक्यूबेशन, फंडिंग और मेंटरशिप सहायता के माध्यम से स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना।
(4) सभी मेधावी वरिष्ठ छात्रों को मुफ्त लैपटॉप और टैबलेट वितरित करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. डिजिटल पहल और उसके उद्देश्य का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) राज-ईसाइन (Raj-eSign) - ऑनलाइन शिकायत निवारण तंत्र
(2) राज-काज (Raj-Kaj) - सरकारी अधिकारियों के लिए एकीकृत इलेक्ट्रॉनिक कार्यक्षेत्र

कंपनियों को स्थानीय एमएसएमई इकाइयों से रक्षा घटकों की खरीद करने हेतु प्रोत्साहित करती है। इससे राजस्थान के छोटे अभियांत्रिकी उद्योगों को वैश्विक मानक प्राप्त करने, आधुनिक तकनीक अपनाने और अंतरराष्ट्रीय रक्षा आपूर्ति श्रृंखला का अंग बनने का सुअवसर प्राप्त होता है। यह नीति राज्य के सूक्ष्म और लघु उद्योगों को सशक्त करती है।

81. (2) 2011
राजस्थान सरकार ने निवेशकों हेतु स्वीकृतियों की प्रक्रिया सुगम बनाने के उद्देश्य से वर्ष 2011 में 'राजस्थान उद्यम एकल खिड़की समर्थकारी अधिनियम' पारित किया था। इस कानून का मुख्य लक्ष्य विभिन्न विभागों से ली जाने वाली अनापत्ति प्रमाणपत्रों हेतु एक ही स्थान पर आवेदन की सुविधा देना था। इस ऐतिहासिक अधिनियम ने राजस्थान में व्यापार करने में सुगमता के नवीन युग का सूत्रपात किया और समयबद्ध स्वीकृतियों को वैधानिक रूप प्रदान किया, जिससे भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण निर्मित करने में सहायता मिली।

82. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
राजस्थान के पश्चिमी भाग में जल का अभाव औद्योगिक विस्तार हेतु एक वास्तविक चुनौती है, विशेषकर उन उद्योगों हेतु जिन्हें संचालन में अत्यधिक जल की आवश्यकता होती है। राज्य सरकार अपनी नीतियों में थार मरुस्थल जैसे शुष्क क्षेत्रों में जल पर अत्यधिक निर्भर वस्त्र इकाइयों के स्थान पर सौर ऊर्जा या ऐसे उद्योगों को प्रोत्साहित करती है जो कम जल में संचालित हो सकें। संसाधनों का विवेकपूर्ण और सीमित उपयोग ही राज्य में टिकाऊ औद्योगिक विकास सुनिश्चित कर सकता है।

83. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के औद्योगिक परिदृश्य में विभिन्न चुनौतियों के अपने विशिष्ट संदर्भ हैं। भू-बद्ध स्थिति के कारण निर्यात की रसद लागत बढ़ जाती है, जबकि जल की कमी उद्योगों को महंगी पुनर्चक्रण प्रणालियों पर निर्भर करती है। बुनियादी ढांचे की सीमाओं के कारण दूरदराज के क्षेत्रों में विद्युत और सड़कों की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त, कौशल का अभाव औद्योगिक आवश्यकताओं और उपलब्ध स्थानीय कार्यबल के मध्य अंतराल उत्पन्न करता है, जिसे पाटने हेतु सरकार अब कौशल विकास पर विशेष ध्यान दे रही है।

84. (4) समयबद्ध अनुमोदन प्रदान करने वाली उन्नत एकल खिड़की अनापत्ति प्रणाली है।
'राज-निवेश' पोर्टल राजस्थान सरकार की एक महत्वाकांक्षी डिजिटल पहल है, जो राज्य में निवेश की प्रक्रिया को पारदर्शी और सुगम बनाती है। यह पोर्टल एक उन्नत एकल खिड़की प्रणाली है, जहाँ उद्यमी अपनी परियोजनाओं हेतु आवश्यक दर्जनों स्वीकृतियों हेतु एक ही स्थान पर आवेदन कर सकते हैं। इसकी मुख्य विशेषता आवेदनों का समयबद्ध निस्तारण और ऑनलाइन ट्रैकिंग है, जो सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाने की आवश्यकता समाप्त कर निवेशकों का बहुमूल्य समय और संसाधन बचाती है। यह व्यावसायिक सुगमता का प्रतीक है।

85. (3) केवल III
राजस्थान के उद्योगों को जल की कमी और समुद्री बंदरगाहों से दूरी के कारण उच्च रसद लागत जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालाँकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि राज्य में राष्ट्रीय औसत से बहुत सस्ती और निर्बाध विद्युत की प्रचुरता है। वास्तव में, उद्योगों हेतु बिजली की लागत और गुणवत्तापूर्ण आपूर्ति सुनिश्चित करना भी एक चुनौती रही है। सरकार अब सौर ऊर्जा के माध्यम से बिजली की उपलब्धता बढ़ाने और औद्योगिक उपभोक्ताओं हेतु दरों को प्रतिस्पर्धी बनाने के प्रयासों में संलग्न है।

86. (2) सत्यापन के लिए अलग-अलग विभागों में अनिवार्य व्यक्तिगत उपस्थिति
राजस्थान की एकल खिड़की प्रणाली का मुख्य उद्देश्य मानवीय हस्तक्षेप को न्यूनतम करना है। अतः इस प्रणाली में सत्यापन हेतु उद्यमी की अलग-अलग विभागों में व्यक्तिगत उपस्थिति की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया गया है। इसके स्थान पर सभी दस्तावेज ऑनलाइन जमा किए जाते हैं और प्रसंस्करण शुल्क ई-ग्रास के माध्यम से डिजिटल रूप में भुगतान किया जाता है। स्वीकृतियां भी डिजिटल रूप में ही प्राप्त होती हैं। यह सुधार प्रक्रिया को तीव्र बनाता है और व्यवस्था में पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करता है।

87. (4) पारदर्शिता और गति जिसके साथ एक उद्यमी व्यवसाय शुरू और संचालित कर सकता है
औद्योगिक नीति के संदर्भ में 'व्यापार करने में सुगमता' का वास्तविक अर्थ उस प्रशासनिक वातावरण से है जो व्यवसायियों को न्यूनतम बाधाओं के साथ कार्य करने की अनुमति देता है। इसमें नियमों का सरलीकरण, डिजिटल स्वीकृतियां और अनावश्यक निरीक्षणों में कमी सम्मिलित है। इसका लक्ष्य प्रक्रियाओं में पारदर्शिता लाना और यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी निवेशक बिना किसी विलंब के अपना उद्योग स्थापित कर सके। यह सुधार राज्य की निवेश आकर्षण क्षमता को प्रभावित करता है और आर्थिक विकास को गति प्रदान करता है।

88. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान एक भू-बद्ध राज्य है, अतः निर्यात-उन्मुख उद्योगों हेतु यह बड़ी चुनौती है। इस कमी को दूर करने हेतु राज्य में 'शुष्क बंदरगाहों' या अंतर्देशीय कंटेनर डिपो का विकास किया गया है। ये डिपो समुद्र तटीय बंदरगाहों की भाँति कार्य करते हैं, जहाँ वस्तुओं की सीमा शुल्क निकासी और कंटेनरीकरण की सुविधा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होती है। इससे निर्यातकों को सीधे विदेशी बाजारों तक पहुँचने में सुगमता होती है और उनकी परिवहन लागत में भी उल्लेखनीय कमी आती है, जिससे व्यापार बढ़ता है।

89. (3) विभागीय स्वीकृतियों की बहुलता और अनुपालन का बोझ
राजस्थान में उद्योगों हेतु चुनौतियों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है। शुष्क जलवायु और समुद्र से दूरी प्राकृतिक भौगोलिक बाधाएं हैं जिन्हें बदला नहीं जा सकता। इसके विपरीत, विभागीय स्वीकृतियों की बहुलता और कानूनी

Click Here to Buy book on Amazon

समितियों को समाप्त करना।
(3) स्वयं सहायता समूहों (SHG) का सुदृढ़ीकरण और क्षेत्रीय सूक्ष्म वित्त नेटवर्क का लाभ उठाना।
(4) कृषि ऋण को केवल दस हेक्टेयर से अधिक भूमि वाले किसानों तक सीमित करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. राजस्थान में ग्रामीण बैंकिंग में सुधार हेतु उठाए गए कदमों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. राजस्थान मरुधरा ग्रामीण बैंक नेटवर्क का विस्तार।
II. प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY) का प्रभावी कार्यान्वयन।
III. माइक्रो-एटीएम और पॉइंट-ऑफ-सेल (POS) उपकरणों की व्यापक तैनाती।
IV. सहकारी समितियों के संरक्षण हेतु निजी बैंकों के ग्रामीण संचालन पर प्रतिबंध।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. जयपुर, जोधपुर और कोटा जैसे शहरों में स्थावर संपदा (रियल एस्टेट) और निर्माण क्षेत्र में तीव्र वृद्धि का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) ग्रामीण-से-शहरी प्रवासन की उच्च दर और औद्योगिक विस्तार।
(2) राज्य की कुल जनसंख्या में होने वाली कमी।
(3) कृषि भूमि का पूर्ण रूप से वन्यजीव अभयारण्यों में परिवर्तन।
(4) शहरी क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्रों का ठहराव।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. सूची-I (राजस्थान में रियल एस्टेट से संबंधित शब्द) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (शब्द)
A. रेरा (RERA)
B. किफायती आवास नीति
C. यूआईटी (UIT)
D. जेडीए (JDA)
सूची II: (विवरण)
i. विशिष्ट बढ़ते शहरों में शहरी विकास हेतु उत्तरदायी स्थानीय निकाय
ii. घर खरीदारों के हितों की रक्षा करने वाला नियामक प्राधिकरण
iii. राज्य की राजधानी के नियोजित विकास हेतु नोडल एजेंसी
iv. आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को आवास प्रदान करने की पहल
कूट:
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. निर्माण क्षेत्र, यद्यपि रियल एस्टेट से संबद्ध है, सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) के लेखांकन में अर्थव्यवस्था के किस व्यापक क्षेत्र के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है?
(1) प्राथमिक क्षेत्र
(2) द्वितीयक क्षेत्र
(3) तृतीयक क्षेत्र
(4) चतुर्थक क्षेत्र
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. राजस्थान में एक प्रमुख रियल एस्टेट परियोजना के अनुमोदन और निष्पादन के चरणों का सही क्रम क्या है?
(1) रेरा पंजीकरण → भूमि रूपांतरण अनुमोदन → भवन योजना अनुमोदन → पूर्णता प्रमाण पत्र
(2) भूमि रूपांतरण अनुमोदन → भवन योजना अनुमोदन → रेरा पंजीकरण → पूर्णता प्रमाण पत्र
(3) भवन योजना अनुमोदन → रेरा पंजीकरण → भूमि रूपांतरण अनुमोदन → पूर्णता प्रमाण पत्र
(4) पूर्णता प्रमाण पत्र → रेरा पंजीकरण → भवन योजना अनुमोदन → भूमि रूपांतरण अनुमोदन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. राजस्थान में रियल एस्टेट और शहरी विस्तार के परिदृश्य के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) मुख्यमंत्री जन आवास योजना का उद्देश्य किफायती आवास को प्रोत्साहित करना है।
(2) रेरा के अनुसार आवंटियों से प्राप्त 70% धनराशि एक पृथक बैंक खाते में जमा करना अनिवार्य है।
(3) शहरी विस्तार राजस्थान के सभी 50 जिलों में समान रूप से वितरित है।
(4) शहरी आवास में निजी भागीदारी हेतु टाउनशिप नीतियों को संशोधित किया गया है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. राजस्थान की अर्थव्यवस्था के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन "संगठित खुदरा" (organised retail) क्षेत्र को परिभाषित करता है?
(1) औपचारिक सरकारी पंजीकरण के बिना संचालित छोटी पारिवारिक दुकानें।
(2) अनौपचारिक साप्ताहिक हाटों में सामान बेचने वाले बिना लाइसेंस वाले विक्रेता।
(3) अनौपचारिक खुदरा व्यापारी जो अनियमित सामानों का व्यापार करते हैं।
(4) विशिष्ट कर और कॉर्पोरेट कानूनों के तहत पंजीकृत लाइसेंस प्राप्त संस्थाओं द्वारा संचालन।

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

NODIA

1. (2) यह GSDP में सबसे बड़े योगदानकर्ता क्षेत्र के रूप में उभरा है।
राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पिछले दशक में व्यापक संरचनात्मक परिवर्तन हुए हैं। वर्तमान सांख्यिकीय रुझानों के अनुसार, सेवा क्षेत्र अब सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में सबसे बड़े हिस्सेदार के रूप में स्थापित हो चुका है। इसने कृषि और उद्योग जैसे पारंपरिक क्षेत्रों को पीछे छोड़ते हुए अपनी स्थिति सुदृढ़ की है। पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी और वित्तीय सेवाओं में तीव्र वृद्धि ने इस बड़े आर्थिक बदलाव को गति प्रदान की है।

2. (1) केवल कथन I सही है
राजस्थान के सकल राज्य घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान वर्तमान में निरंतर बढ़ रहा है। प्रचलित कीमतों पर इस क्षेत्र की हिस्सेदारी 40% की सीमा को पार कर गई है, जो राज्य के आर्थिक आधुनिकीकरण का संकेत है। हालांकि, सेवा क्षेत्र की प्रगति पूर्णतः कृषि उत्पादन पर निर्भर नहीं है, बल्कि इसमें शहरीकरण, डिजिटल क्रांति और बुनियादी ढांचे में व्यापक निवेश जैसे विशिष्ट कारक प्रमुखता से शामिल हैं।

3. (3) केवल I और III
राजस्थान के सेवा क्षेत्र के भीतर व्यापार, होटल और जलपान गृह प्रमुख आर्थिक घटकों के रूप में कार्य करते हैं, जो पर्यटन की सुदृढ़ता पर आधारित हैं। इसके अतिरिक्त, राज्य के परिवहन और संचार नेटवर्क के विस्तार ने इस क्षेत्र की वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्थावर संपदा और व्यावसायिक सेवाएँ भी सकल राज्य घरेलू उत्पाद में बड़ा योगदान देती हैं, अतः उन्हें न्यूनतम योगदानकर्ता मानना तथ्यात्मक रूप से सही नहीं है।

4. (4) खनन और उत्खनन
सकल राज्य घरेलू उत्पाद की गणना करते समय विभिन्न आर्थिक गतिविधियों को प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है। लोक प्रशासन, वित्तीय सेवाएँ और व्यापारिक सेवाएँ स्पष्ट रूप से तृतीयक या सेवा क्षेत्र के अंतर्गत आती हैं। इसके विपरीत, खनन और उत्खनन की गतिविधि को प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है क्योंकि इसमें प्राकृतिक संसाधनों का सीधा निष्कर्षण होता है। इसलिए, सेवा क्षेत्र के लेखांकन में खनन को सम्मिलित नहीं किया जाता।

5. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
राजस्थान की आर्थिक संरचना में सेवा क्षेत्र का योगदान अब कृषि और उद्योग दोनों क्षेत्रों से अधिक हो चुका है, जो एक विकसित अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण का संकेत है। यद्यपि राज्य का औद्योगिक आधार बढ़ रहा है, लेकिन यह कहना तकनीकी रूप से त्रुटिपूर्ण है कि औद्योगिक आधार पूर्णतः सेवा-उन्मुख है या यह सेवा क्षेत्र की सफलता का एकमात्र कारण है। सेवा क्षेत्र की वृद्धि के पीछे पर्यटन जैसे स्वतंत्र कारक प्रभावी रहे हैं।

6. (2) पर्यटन और आतिथ्य
राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता और समृद्ध ऐतिहासिक विरासत के कारण पर्यटन और आतिथ्य उद्योग यहाँ के सेवा क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक चालक रहा है। यह उद्योग न केवल राज्य को वैश्विक स्तर पर एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है, बल्कि यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से स्थानीय आबादी के लिए रोजगार के विशाल अवसर भी सृजित करता है। ऐतिहासिक किलों और पारंपरिक कलाओं ने इस क्षेत्र को सशक्त बनाया है।

7. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट रणनीतियां अपनाई गई हैं। 'पधारो म्हारे देस' राज्य का सुप्रसिद्ध पारंपरिक स्वागत नारा है। वर्ष 2016 में पुनर्ब्रांडिंग हेतु 'जाने क्या दिख जाए' अभियान शुरू किया गया था। पर्यटन इकाई नीति का मुख्य उद्देश्य निजी निवेश को आकर्षित करना है। वहीं, मुख्यमंत्री पर्यटन उद्योग संबल योजना कोविड-19 महामारी के संकट के पश्चात पर्यटन उद्यमियों को वित्तीय राहत प्रदान करने के लिए प्रारंभ की गई थी।

8. (1) औद्योगिक इकाइयों के समान लाभ प्राप्त करने हेतु इसे "उद्योग" का दर्जा प्राप्त है।
राजस्थान सरकार ने राज्य की अर्थव्यवस्था में पर्यटन के महत्व को देखते हुए इसे पूर्ण 'उद्योग' का दर्जा प्रदान किया है। इस निर्णय के परिणामस्वरूप, अब पर्यटन क्षेत्र से जुड़ी इकाइयों को औद्योगिक दरों पर बिजली शुल्क और अन्य सरकारी रियायतें प्राप्त होती हैं। यह नीति निवेश को प्रोत्साहित करने और राज्य में आतिथ्य सुविधाओं के विस्तार में सहायक रही है। यह क्षेत्र शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का प्रमुख माध्यम है।

9. (3) स्थानीय क्षेत्रों में गुणक प्रभाव (multiplier effect) के माध्यम से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार को बढ़ावा देना।
राजस्थान में पर्यटन और रोजगार के मध्य एक गहरा और सकारात्मक संबंध विद्यमान है। पर्यटन क्षेत्र अपनी प्रकृति के कारण 'गुणक प्रभाव' उत्पन्न करता है, जहाँ एक पर्यटक के आगमन से हस्तशिल्प, परिवहन, होटल और खाद्य सेवाओं जैसे कई संबद्ध क्षेत्रों में मांग बढ़ती है। इससे न केवल होटलों में प्रत्यक्ष नौकरियां मिलती हैं, बल्कि स्थानीय कारीगरों और मार्गदर्शकों (गाइडों) के लिए भी व्यापक स्वरोजगार के अवसर निरंतर उत्पन्न होते हैं।

10. (2) केवल I, II और IV
राजस्थान में पर्यटन एक श्रम-प्रधान क्षेत्र है जो विभिन्न सामाजिक वर्गों को बड़े पैमाने पर आजीविका प्रदान करता

मल्टी-स्पेशलिटी अस्पतालों का उच्च संकेंद्रण है।
कारण (R): निजी प्रदाता बेहतर बुनियादी ढांचे, विशेषज्ञ पेशेवरों की उपलब्धता और मरीजों की उच्च भुगतान क्षमता के कारण शहरी केंद्रों को वरीयता देते हैं।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान के 'स्वास्थ्य का अधिकार' ढांचे की विशिष्ट विशेषता नहीं है?
(1) निर्दिष्ट सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं पर निःशुल्क बाह्य रोगी विभाग (OPD) सेवाओं का अधिकार।
(2) आपातकालीन स्थिति में बिना पूर्व भुगतान के उपचार प्रदान करने हेतु निजी अस्पतालों की बाध्यता।
(3) मेडिको-लीगल जटिलताओं के मामले में प्रत्येक निवासी को उपचार से मना किए जाने का अधिकार।
(4) स्वास्थ्य सेवा से वंचित मरीजों हेतु शिकायत निवारण तंत्र की स्थापना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. राजस्थान की सेवा अर्थव्यवस्था पर निजी शिक्षा क्षेत्र के प्रभाव का सबसे उपयुक्त वर्णन क्या है?
(1) शुल्क संरचना को सामर्थ्य से परे रखकर सकल नामांकन अनुपात (GER) को सीमित करना।
(2) निजी विस्तार के माध्यम से सरकारी विद्यालयों की आवश्यकता को समाप्त करना।
(3) उच्च और तकनीकी क्षेत्रों की उपेक्षा करते हुए केवल प्रारंभिक शिक्षा पर ध्यान देना।
(4) रोजगार, बुनियादी ढांचे और संबद्ध सहायक सेवाओं के माध्यम से एक उप-अर्थव्यवस्था का निर्माण करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. राजस्थान में निजी संस्थानों और कोचिंग उद्योग की तीव्र वृद्धि से जुड़े निम्नलिखित मुद्दों पर विचार कीजिए:
I. छात्रों के मध्य बढ़ता मनोवैज्ञानिक तनाव और मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियां।
II. मध्यम वर्गीय परिवारों पर उच्च वित्तीय बोझ।
III. शिक्षा का व्यावसायीकरण जिससे गुणवत्ता मानकों में भिन्नता आई है।
IV. कृषि उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. हाल के वर्षों में, निजी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के विस्तार के कारण राजस्थान में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (GER) में क्या प्रवृत्ति देखी गई है?
(1) निरंतर गिरावट क्योंकि छात्र विदेश जाना पसंद करते हैं।
(2) एक ऊर्ध्वगामी प्रवृत्ति, जिससे एक बड़े जनसांख्यिकीय वर्ग हेतु पहुंच में सुधार हुआ है।
(3) कठिन प्रवेश बाधाओं के कारण स्थिरता।
(4) विशेष रूप से छात्राओं के नामांकन में भारी गिरावट।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. राजस्थान के एक छोटे शहर में कोचिंग संस्थानों की स्थापना के पश्चात हॉस्टल, टिफिन सेंटर और स्टेशनरी की दुकानों में भारी उछाल आता है। यह परिदृश्य किस आर्थिक अवधारणा का उदाहरण है?
(1) वि-औद्योगीकरण (De-industrialization)
(2) शिक्षा-पर्यटन (Edu-tourism) और इसका गुणक प्रभाव
(3) प्रतिभा पलायन (Brain drain)
(4) प्राथमिक क्षेत्र का प्रभुत्व
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. एक विशिष्ट कोचिंग हब के विकास के चरणों पर विचार कीजिए:
I. संबद्ध उद्योगों (हॉस्टल, परिवहन) का उदय।
II. राष्ट्रीय परीक्षाओं में स्थानीय शिक्षकों की प्रारंभिक सफलता।
III. अखिल भारतीय विपणन के साथ मेगा कॉर्पोरेट कोचिंग ब्रांडों की स्थापना।
IV. छोटे स्तर पर स्थानीय शिक्षण (tutoring)।
निम्नलिखित में से कौन सा इन चरणों का तार्किक कालानुक्रमिक क्रम है?
(1) IV, II, I, III
(2) II, IV, III, I
(3) IV, III, I, II
(4) II, I, IV, III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. कोटा की अर्थव्यवस्था कोचिंग उद्योग पर अत्यधिक निर्भर है। यदि वहां छात्रों के आगमन में भारी गिरावट आती है, तो इसका तत्काल नकारात्मक प्रभाव क्या होगा?
(1) स्थानीय नगर निगमों के राजस्व में वृद्धि।
(2) विनिर्माण इकाइयों का स्वतः ही तीव्र विस्तार।
(3) स्थानीय रियल एस्टेट, आतिथ्य और खुदरा क्षेत्रों में भारी मंदी।
(4) भूजल स्तर में वृद्धि।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. सूची-I (कोटा में संबद्ध क्षेत्र) को सूची-II (सेवा की प्रकृति) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (संबद्ध क्षेत्र)

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. राजस्थान में संगठित खुदरा व्यापार के विकास को बढ़ावा देने वाले कारकों पर विचार कीजिए:

I. मध्यम वर्ग की बढ़ती प्रयोज्य आय (disposable income)।
II. डिजिटल भुगतान प्रणालियों की बढ़ती पहुंच।
III. पारंपरिक असंगठित खुदरा व्यापार पर सरकार द्वारा पूर्ण प्रतिबंध।
IV. बदलती उपभोक्ता जीवनशैली और एक ही स्थान पर खरीदारी की वरीयता।
V. टियर-1 और टियर-2 शहरों में शॉपिंग मॉल का विस्तार।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, IV और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. राजस्थान में खुदरा व्यापार क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: कुल खुदरा बाजार में असंगठित क्षेत्र की हिस्सेदारी संगठित क्षेत्र की तुलना में अधिक बनी हुई है।
कथन II: ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म का ग्रामीण राजस्थान के असंगठित खुदरा प्रारूपों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I सही है
(2) केवल कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) न तो कथन I और न ही कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

39. राजस्थान में असंगठित खुदरा क्षेत्र की विशेषताओं में से कौन सा विकल्प असंगत (odd one out) है?
(1) कम पूंजी की आवश्यकता
(2) कार्य के लचीले घंटे
(3) व्यक्तिगत ग्राहक संबंध
(4) केंद्रीकृत आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. राजस्थान में खुदरा प्रारूपों (retail formats) के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस - डिजिटल खुदरा प्रारूप
(2) किराना दुकान - संगठित खुदरा प्रारूप
(3) डिपार्टमेंटल स्टोर चेन - असंगठित खुदरा प्रारूप
(4) साप्ताहिक हाट / मंडी - कॉर्पोरेट खुदरा प्रारूप
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. सूची-I (स्वास्थ्य सेवा पहल) को सूची-II (मुख्य विशेषताएं) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (स्वास्थ्य सेवा पहल)
A. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना
B. आरजीएचएस (RGHS)
C. स्वास्थ्य का अधिकार अधिनियम
D. निरोगी राजस्थान अभियान

सूची II: (मुख्य विशेषताएं)
i. विशेष रूप से राज्य सरकार के कर्मचारियों और पेंशनभोगियों हेतु स्वास्थ्य बीमा
ii. कानूनी अधिकार के रूप में निवासियों हेतु स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता सुनिश्चित करना
iii. एक निर्दिष्ट सीमा तक कैशलेस उपचार प्रदान करने वाली सार्वभौमिक बीमा योजना
iv. जीवनशैली संबंधी बीमारियों और जागरूकता पर केंद्रित निवारक स्वास्थ्य अभियान

कूट:
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. राजस्थान में स्वास्थ्य सेवाओं के संदर्भ में, पिछले दो दशकों में निजी क्षेत्र की वृद्धि का मुख्य रुझान क्या रहा है?
(1) शहरी केंद्रों में मल्टी-स्पेशलिटी और सुपर-स्पेशलिटी अस्पतालों का तीव्र विस्तार।
(2) ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे का पूर्ण प्रतिस्थापन।
(3) चिकित्सा सेवाओं को विशेष रूप से केवल पारंपरिक आयुर्वेदिक उपचारों तक सीमित करना।
(4) परामर्श शुल्क पर सरकारी प्रतिबंधों के कारण निजी निवेश में गिरावट।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. राजस्थान में निजी स्वास्थ्य सेवाओं के तीव्र विकास के कारणों पर विचार कीजिए:

I. उन्नत चिकित्सा प्रौद्योगिकियों और विशिष्ट देखभाल की बढ़ती मांग।
II. स्वास्थ्य क्षेत्र में निजी निवेश को प्रोत्साहित करने वाली सरकारी नीतियां।
III. राज्य द्वारा सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (PHCs) को पूर्णतः बंद कर देना।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जयपुर और जोधपुर जैसे प्रमुख शहरों में निजी

NODIA

(5) प्रश्न अनुत्तरित

59. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान में परिवहन क्षेत्र के लिए एक बड़ी बाधा नहीं माना जाता है?
(1) मरुस्थलीय क्षेत्रों में सड़कों के रखरखाव की उच्च लागत।
(2) विरल आबादी वाले आदिवासी और रेगिस्तानी क्षेत्रों में अंतिम मील कनेक्टिविटी का अभाव।
(3) राज्य सार्वजनिक परिवहन निगम द्वारा सामना किया जाने वाला वित्तीय घाटा।
(4) सड़क यातायात को कम करने वाले प्राकृतिक अंतर्देशीय जलमार्गों की प्रचुरता।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

60. राजस्थान में सड़क नेटवर्क के वर्गीकरण का सही पदानुक्रमित क्रम (उच्चतम से निम्नतम यातायात और प्रशासन स्तर) क्या है?
(1) राष्ट्रीय राजमार्ग → राज्य राजमार्ग → मुख्य जिला सड़कें → ग्रामीण सड़कें
(2) राज्य राजमार्ग → राष्ट्रीय राजमार्ग → ग्रामीण सड़कें → मुख्य जिला सड़कें
(3) मुख्य जिला सड़कें → राज्य राजमार्ग → राष्ट्रीय राजमार्ग → ग्रामीण सड़कें
(4) राष्ट्रीय राजमार्ग → मुख्य जिला सड़कें → राज्य राजमार्ग → ग्रामीण सड़कें
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. राजस्थान में रसद (logistics) क्षेत्र के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) बंदरगाहों से सीधा जुड़ाव न होने के कारण राज्य में किसी लॉजिस्टिक्स पार्क का अभाव है।
(2) वेयरहाउसिंग पूर्णतः केंद्र सरकार द्वारा नियंत्रित है और निजी भागीदारी वर्जित है।
(3) राज्य ने आपूर्ति श्रृंखला बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने हेतु लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को 'उद्योग' का दर्जा दिया है।
(4) राज्य के सेवा क्षेत्र के GSDP में लॉजिस्टिक्स की हिस्सेदारी एक प्रतिशत से भी कम है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

62. राजस्थान में रसद और वेयरहाउसिंग क्षेत्र से संबंधित निम्नलिखित घटकों पर विचार कीजिए:
I. इनलैंड कंटेनर डिपो (ICDs)
II. मल्टी-मोडल लॉजिस्टिक्स पार्क (MMLPs)
III. कोल्ड चेन स्टोरेज सुविधाएं
IV. गहरे समुद्र के बंदरगाह (Deep Sea Ports)
उपर्युक्त में से कौन से घटक राजस्थान में उपस्थित हैं अथवा विकसित किए जा रहे हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. कौन सी प्रमुख राष्ट्रीय बुनियादी ढांचा परियोजना राजस्थान से होकर गुजरती है, जो इसके लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला क्षेत्र को अत्यधिक बढ़ावा देती है?
(1) वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (WDFC)
(2) ईस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (EDFC)
(3) भारतमाला सागरमाला लिंक
(4) राष्ट्रीय अंतर्देशीय जलमार्ग 1
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर (DMIC) से राजस्थान में लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन की अपेक्षा है।
कारण (R): DMIC संरेखण का लगभग 39% राजस्थान से होकर गुजरता है, जिससे लॉजिस्टिक्स हब के निर्माण में सहायता मिलती है।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. एक कंपनी उत्तर और पश्चिम भारत में आपूर्ति हेतु केंद्रीकृत वितरण केंद्र स्थापित करना चाहती है। राजस्थान में वेयरहाउसिंग हब स्थापित करना क्यों सही रणनीति होगी?
(1) क्योंकि यह नेटवर्क पूर्णतः हवाई परिवहन पर निर्भर है।
(2) एनसीआर (NCR) और गुजरात की सीमा से लगे रणनीतिक स्थान तथा WDFC के कारण पारगमन समय में कमी।
(3) क्योंकि राजस्थान ने सभी आयातित विलासिता वस्तुओं पर शून्य कर लगाया है।
(4) क्योंकि आधुनिक वेयरहाउसिंग के लिए भूमि की आवश्यकता नहीं होती है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. राजस्थानी भाषा की सामग्री हेतु मीडिया और मनोरंजन क्षेत्र के समक्ष सबसे प्रमुख चुनौती क्या है?
(1) संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता का अभाव, जिससे राज्य का संरक्षण और मुद्रीकरण सीमित होता है।
(2) राष्ट्रीय टेलीविजन नेटवर्कों पर क्षेत्रीय सामग्री का अत्यधिक प्रतिनिधित्व।
(3) सेंसर बोर्ड द्वारा क्षेत्रीय बोलियों में फिल्म निर्माण पर पूर्ण कानूनी प्रतिबंध।
(4) राज्य की संस्कृति में लोक संगीत की ऐतिहासिक अनुपस्थिति।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Downloaded from www.pdf.tube

A. मेस और टिफिन सेंटर
B. पीजी और हॉस्टल आवास
C. प्रिंट और स्टेशनरी सेवाएं
D. मनोवैज्ञानिक परामर्श केंद्र

सूची II: (सेवा की प्रकृति)

i. शैक्षणिक सामग्री और परीक्षण पत्र सहायता
ii. छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण का समाधान
iii. बाहरी छात्रों के लिए दैनिक पोषण संबंधी आवश्यकताएं
iv. अस्थायी आबादी के लिए आवास और रियल एस्टेट उपयोगिता

कूट:

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. कोटा में जनसांख्यिकीय आवक के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।

कथन I: कोचिंग हब मुख्य रूप से केवल राजस्थान की सीमाओं के भीतर के छात्रों को आकर्षित करता है।

कथन II: बाहरी छात्रों का आगमन स्थानीय उपभोग पैटर्न को महत्वपूर्ण रूप से परिवर्तित कर देता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल कथन I सही है
(2) केवल कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) न तो कथन I और न ही कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. कोचिंग हब के रूप में कोटा के आर्थिक महत्व के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।

(1) यह असंगठित खुदरा और खाद्य क्षेत्रों के लिए एक प्रमुख उत्प्रेरक है।
(2) यह कोचिंग संस्थानों के संचालन हेतु पूर्णतः सरकारी सब्सिडी पर निर्भर है।
(3) यह स्थानीय परिवहन और ऑटो-रिक्शा अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है।
(4) यह स्थानीय लोगों हेतु प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के पर्याप्त अवसर सृजित करता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

55. कोचिंग हब के रूप में कोटा के विकास के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों पर विचार कीजिए:

I. स्थानीय प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि।
II. स्वच्छता जैसे शहरी बुनियादी ढांचे पर अत्यधिक दबाव।
III. छात्र आवश्यकताओं को पूरा करने वाली स्थानीय गिग इकोनॉमी (gig economy) का उदय।
IV. जिले में युवा बेरोजगारी का पूर्ण उन्मूलन।
V. छात्रों के तनाव प्रबंधन हेतु राज्य द्वारा विनियामक दिशानिर्देशों का निर्माण।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) I, II, III और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. राजस्थान में सड़क घनत्व की तुलना राष्ट्रीय औसत सड़क घनत्व से कैसे की जाती है?

(1) विशाल भौगोलिक क्षेत्र और विरल आबादी के कारण राजस्थान का घनत्व कम है।
(2) समतल मैदानी इलाकों के कारण यह राष्ट्रीय औसत से अधिक है।
(3) यह राष्ट्रीय औसत के बिल्कुल बराबर बना हुआ है।
(4) आक्रामक वित्तपोषण के कारण यह सभी भारतीय राज्यों में सर्वाधिक है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. सूची-I (परिवहन बुनियादी ढांचा) को सूची-II (प्राधिकरण/योजना) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (बुनियादी ढांचा)

A. राष्ट्रीय राजमार्ग
B. राज्य राजमार्ग
C. ग्रामीण सड़कें
D. सार्वजनिक सड़क परिवहन

सूची II: (प्राधिकरण/योजना)

i. पीएमजीएसवाई (PMGSY)
ii. आरएसआरटीसी (RSRTC)
iii. एनएचएआई (NHAI)
iv. पीडब्ल्यूडी (PWD)

कूट:

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

58. राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम (RSRTC) की पहलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. महिलाओं, वरिष्ठ नागरिकों और छात्रों को रियायती यात्रा प्रदान करना।
II. प्रदूषण कम करने हेतु प्रमुख मार्गों पर इलेक्ट्रिक बसें संचालित करना।
III. सभी लाभदायक अंतरराज्यीय मार्गों का विदेशी कंपनियों को पूर्ण निजीकरण करना।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III

III. कृषि उत्पादकता में पर्याप्त वृद्धि।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. राजस्थान में भौगोलिक भू-भाग और दूरसंचार सेवाओं के मध्य प्राथमिक कार्य-कारण संबंध क्या है?
(1) समतल मरुस्थलीय क्षेत्र रेडियो तरंगों को परावर्तित करते हैं, जिससे टावरों की आवश्यकता नहीं होती।
(2) रेत के टीले प्राकृतिक बिजली उत्पन्न करते हैं जिससे मोबाइल सिग्नल बढ़ते हैं।
(3) पश्चिमी क्षेत्रों में उच्च वर्षा अक्सर भूमिगत केबलों को क्षति पहुंचाती है।
(4) विषम भू-भाग और विरल जनसंख्या के कारण लागत बढ़ती है, जिससे नेटवर्क कवरेज बाधित होता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. राजस्थान सरकार द्वारा प्रारंभ किए गए 'जन सूचना पोर्टल' का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) नागरिकों को वार्षिक आयकर रिटर्न दाखिल करने की सुविधा देना।
(2) आरटीआई (RTI) आवेदनों के बिना जनता को योजनाओं का विवरण स्वतः उपलब्ध कराना।
(3) राज्य सरकार की भर्तियों हेतु अनिवार्य जॉब पोर्टल के रूप में कार्य करना।
(4) निजी कंपनियों को सामान बेचने हेतु एक मंच प्रदान करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. राजस्थान में ई-मित्र (e-Mitra) नेटवर्क की विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. यह सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल पर आधारित है।
II. यह सरकारी (G2C) और निजी (B2C) दोनों प्रकार की सेवाएँ देता है।
III. यह राज्य के केवल शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध है।
IV. यह बिल भुगतान, प्रमाण पत्र जारी करने और बैंकिंग सेवाओं की सुविधा देता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. सूची-I (ई-गवर्नेंस पोर्टल) को सूची-II (प्राथमिक कार्य) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (पोर्टल)
A. राजस्थान संपर्क
B. राज-काज
C. एसएसओ (SSO)
D. ई-धरती
सूची II: (कार्य)
i. भू-अभिलेख और नामांतरण की जानकारी
ii. एकीकृत सार्वजनिक शिकायत निवारण तंत्र
iii. विभिन्न सरकारी सेवाओं तक पहुँचने हेतु एकल पहचान
iv. सरकारी फाइलों और अवकाश प्रबंधन हेतु इलेक्ट्रॉनिक कार्यप्रवाह
कूट:
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

79. एक नागरिक आवेदन प्रक्रिया के बिना अपने वार्ड में वितरित राशन का विवरण जानना चाहता है। इस हेतु कौन सी पहल उपयुक्त है?
(1) जन सूचना पोर्टल
(2) ई-मित्र प्लस कियोस्क
(3) राज ई-वॉल्ट
(4) शाला दर्पण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. राजस्थान में ई-मित्र के माध्यम से सामान्यतः निम्नलिखित में से कौन सी सेवा प्रदान नहीं की जाती है?
(1) बिजली और पानी के बिल जमा करना
(2) न्यायिक वारंट और अदालती निर्णय जारी करना
(3) मूल निवास प्रमाण पत्र हेतु आवेदन
(4) विश्वविद्यालय परीक्षा शुल्क जमा करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

81. राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) की स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(1) 1956
(2) 1978
(3) 1989
(4) 2001
(5) प्रश्न अनुत्तरित

82. RTDC के कार्यों के संबंध में निम्नलिखित पर विचार कीजिए:
I. बजट होटल और मोटल का प्रबंधन।
II. पैकेज टूर और दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आयोजन।
III. 'पैलेस ऑन व्हील्स' जैसी विलासितापूर्ण ट्रेनों का संचालन।
IV. पर्यटन स्थलों पर नौकायन और कैफेटेरिया सुविधा प्रदान करना।
V. विदेशी पर्यटकों को अंतरराष्ट्रीय पासपोर्ट जारी करना।

Click Here to Buy book on Amazon

67. राजस्थान के उभरते डिजिटल मनोरंजन रुझानों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प असंगत (odd one out) है?
(1) क्षेत्रीय ओटीटी (OTT) प्लेटफॉर्म (जैसे स्टेज)
(2) स्थानीय बोलियों में यूट्यूब व्लॉगिंग
(3) फड़ वाचन/पारंपरिक कथावाचन
(4) सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग
(5) प्रश्न अनुत्तरित

68. डिजिटल मीडिया और राजस्थानी सामग्री के विकास को बढ़ावा देने वाले कारकों पर विचार कीजिए:
I. किफायती स्मार्टफोन की बढ़ती पहुंच।
II. ग्रामीण क्षेत्रों में सुलभ मोबाइल डेटा।
III. अपनी संस्कृति से जुड़ने की इच्छा रखने वाले प्रवासी राजस्थानी।
IV. हाइपर-लोकल ओटीटी (OTT) प्लेटफॉर्म का प्रारंभ।
V. हिंदी और अंग्रेजी सामग्री पर सरकार द्वारा लगाया गया प्रतिबंध।
उपर्युक्त कारकों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. राजस्थान में मीडिया और मनोरंजन क्षेत्र के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) स्टेज ऐप (Stage App) - राजस्थानी सामग्री हेतु ओटीटी प्लेटफॉर्म
(2) राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति - फिल्म निर्माताओं को सब्सिडी प्रदान करना
(3) संविधान की आठवीं अनुसूची - वर्तमान में राजस्थानी भाषा इसमें सम्मिलित है
(4) घूमर / कालबेलिया - पारंपरिक प्रदर्शन कलाएं
(5) प्रश्न अनुत्तरित

70. मीडिया में राजस्थानी भाषा की स्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: डिजिटल प्लेटफॉर्म ने कलाकारों को राजस्थानी कॉमेडी और संगीत का मुद्रीकरण करने हेतु एक नया माध्यम प्रदान किया है।
कथन II: राज्य सरकार राजस्थानी भाषा में सिनेमा के निर्माण को पूर्णतः प्रतिबंधित करती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I सही है
(2) केवल कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) न तो कथन I और न ही कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. राजस्थान में ग्रामीण टेली-घनत्व (tele-density) की तुलना इसके शहरी टेली-घनत्व से किस प्रकार की जाती है?
(1) ग्रामीण टेली-घनत्व शहरी टेली-घनत्व से काफी अधिक है।
(2) ग्रामीण और शहरी टेली-घनत्व बिल्कुल बराबर हैं।
(3) ग्रामीण क्षेत्रों ने दूरसंचार सेवाओं को पूर्णतः बंद कर दिया है।
(4) बुनियादी ढांचे की चुनौतियों के कारण ग्रामीण टेली-घनत्व शहरी क्षेत्र से काफी कम है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. सूची-I (दूरसंचार पहल) को सूची-II (मुख्य विशेषताएं) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (दूरसंचार पहल)
A. भारतनेट (BharatNet)
B. राजनेट (RajNET)
C. मुफ्त स्मार्टफोन योजना
D. सार्वजनिक वाई-फाई हॉटस्पॉट
सूची II: (मुख्य विशेषताएं)
i. महिला सशक्तिकरण और डिजिटल पहुंच को लक्षित करने वाली पहल
ii. सभी ग्राम पंचायतों को ब्रॉडबैंड से जोड़ने की राष्ट्रीय परियोजना
iii. राज्य सरकार के विभागों हेतु मल्टी-मोड कनेक्टिविटी ढांचा
iv. प्रमुख बस स्टैंडों और अस्पतालों में इंटरनेट की सुविधा
कूट:
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

73. राजस्थान में ग्रामीण दूरसंचार कनेक्टिविटी की चुनौतियों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) मरुस्थलीय इलाकों में ऑप्टिकल फाइबर बिछाने की उच्च लागत।
(2) विद्युत समस्याओं के कारण दूरदराज के गांवों में टावर संचालन में बाधा।
(3) कंपनियां प्रति उपयोगकर्ता उच्च राजस्व के कारण ग्रामीण क्षेत्रों को प्राथमिकता देती हैं।
(4) अरावली की ऊबड़-खाबड़ भौगोलिक स्थिति के कारण नेटवर्क कवरेज में बाधा।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. ग्रामीण राजस्थान में खराब दूरसंचार कनेक्टिविटी के प्रभावों पर विचार कीजिए:
I. ई-मित्र जैसी ई-गवर्नेंस सेवाओं तक पहुँचने में बाधा।
II. डिजिटल भुगतान और प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) में विलंब।

91. राजस्थान में सेवा क्षेत्र की चुनौतियों के संबंध में विचार कीजिए।
कथन I: सेवा क्षेत्र का विकास जयपुर, जोधपुर और उदयपुर जैसे कुछ शहरी केंद्रों में केंद्रित है।
कथन II: यह शहरी संकेंद्रण सभी आदिवासी और रेगिस्तानी जिलों में समान विकास सुनिश्चित करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I सही है
(2) केवल कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) न तो कथन I और न ही कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

92. राजस्थान के सेवा क्षेत्र में कौशल अंतराल (skill gap) का प्राथमिक परिणाम क्या है?
(1) आईटी पेशेवरों की अत्यधिक आपूर्ति।
(2) रिक्तियों के बावजूद स्नातकों में उच्च बेरोजगारी।
(3) सेवा क्षेत्र की नौकरियों का कृषि में अनिवार्य हस्तांतरण।
(4) असंगठित क्षेत्र की प्रति व्यक्ति आय में स्वतः वृद्धि।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

93. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान के सेवा क्षेत्र हेतु बुनियादी ढांचे की बड़ी बाधा नहीं माना जाता है?
(1) ग्रामीण क्षेत्रों में अपर्याप्त डिजिटल कनेक्टिविटी।
(2) कुछ क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति में बाधा।
(3) भारी मशीनरी के निर्यात हेतु विशाल समुद्री बंदरगाहों का अभाव।
(4) छोटे जिलों में पर्याप्त परिवहन केंद्रों का अभाव।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

94. राजस्थान में कौशल विकास पहलों के संबंध में सही कथन है:
(1) केवल पारंपरिक कृषि श्रमिकों हेतु तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करना।
(2) आईटीआई (ITI) को सेवा क्षेत्र के पाठ्यक्रम देने से रोकना।
(3) पूर्णतः अंतरराष्ट्रीय निजी एनजीओ (NGO) पर निर्भर रहना।
(4) कौशल प्रशिक्षण अथवा इंटर्नशिप पूरा करने की शर्त पर भत्ते प्रदान करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

95. टियर-3 शहरों में कार्यालय खोलने हेतु कंपनियों को प्रोत्साहित करना किस रणनीति का हिस्सा है?
(1) आर्थिक विकास का विकेंद्रीकरण
(2) आयात प्रतिस्थापन
(3) केंद्रीयकरण
(4) वि-औद्योगीकरण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

96. राजस्थान में "मेडिकल टूरिज्म" को किस प्रकार सर्वोत्तम रूप से परिभाषित किया गया है?
(1) चिकित्सा सम्मेलनों में भाग लेने हेतु यात्रा करना।
(2) किफायती, गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा देखभाल और पर्यटन अनुभवों हेतु राजस्थान की यात्रा करना।
(3) ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टरों का सरकार द्वारा प्रायोजित परिवहन।
(4) अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पार दवाओं का व्यावसायिक परिवहन।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

97. ऐतिहासिक हवेलियों को विरासत होटलों में परिवर्तित करने की नीति किसमें सहायता करती है?
(1) स्थानीय आबादी के शहरी प्रवासन में।
(2) रोजगार सृजन और संपत्तियों के संरक्षण में।
(3) निजी संपत्तियों को सरकारी कार्यालय बनाने में।
(4) संपत्तियों का केंद्र सरकार को अनिवार्य हस्तांतरण करने में।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

98. जोधपुर से यूरोप के ग्राहकों हेतु डिजिटल अकाउंटिंग सेवा प्रदान करना किस अवसर का उदाहरण है?
(1) डिजिटल सेवा और नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग (KPO) निर्यात
(2) ई-कॉमर्स खुदरा व्यापार
(3) भारी बुनियादी ढांचा रसद
(4) विरासत फिल्म पर्यटन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

99. राजस्थान में मेडिकल टूरिज्म के संबंध में गलत कथन है:
(1) जयपुर ऑर्थोपेडिक और कार्डिएक सेवाओं के केंद्र के रूप में उभरा है।
(2) आयुर्वेद और योग वेलनेस टूरिज्म में मूल्य जोड़ते हैं।
(3) यह केवल घरेलू मरीजों तक सीमित है; विदेशियों का उपचार प्रतिबंधित है।
(4) विश्व स्तरीय निजी अस्पतालों की उपलब्धता इस क्षेत्र को बढ़ावा देती है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

100. राजस्थान के सेवा क्षेत्र में भविष्य के विकास हेतु किस उप-क्षेत्र को सबसे उपयुक्त 'इंजन' माना जाता है?
(1) गहरे समुद्र में खनन
(2) अंतर्देशीय जलमार्ग शिपिंग
(3) पारंपरिक शारीरिक कृषि कटाई
(4) आईटी (IT), आईटीईएस (ITeS) और डिजिटल अर्थव्यवस्था सेवाएँ
(5) प्रश्न अनुत्तरित

उपर्युक्त में से कौन से RTDC के सही कार्य हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

83. RTDC की स्थिति के संबंध में कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: RTDC ने वित्तीय चुनौतियों का सामना किया है, जिससे इसकी कुछ संपत्तियों को पट्टे पर देना पड़ा है।
कथन II: RTDC पूर्णतः संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन द्वारा वित्तपोषित है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I सही है
(2) केवल कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) न तो कथन I और न ही कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

84. RTDC होटल और उसके स्थान के सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) होटल गणगौर - उदयपुर
(2) होटल मूमल - जयपुर
(3) होटल शिखर - बीकानेर
(4) होटल खादिम - अजमेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

85. भारतीय रेलवे और RTDC के सहयोग से संचालित विलासितापूर्ण ट्रेनों में से कौन सी राजस्थान सर्किट के बाहर संचालित होती है?
(1) पैलेस ऑन व्हील्स
(2) रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स
(3) डेक्कन ओडिसी
(4) हेरिटेज ऑन व्हील्स
(5) प्रश्न अनुत्तरित

86. राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति, 2022 के संबंध में सही कथन है:
(1) यह अनिवार्य करती है कि फिल्मों में केवल स्थानीय अभिनेता ही हों।
(2) यह राजस्थान में शूटिंग करने वाले निर्माताओं को वित्तीय सब्सिडी प्रदान करती है।
(3) यह ऐतिहासिक किलों में ओटीटी सामग्री की शूटिंग को प्रतिबंधित करती है।
(4) यह फिल्म निर्माताओं के लाभ का आधा हिस्सा राज्य को देना अनिवार्य बनाती है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

87. फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन का लाभ लेने हेतु चरणों का सही तार्किक क्रम क्या है?
I. सत्यापन हेतु नोडल एजेंसी को अंतिम फिल्म प्रस्तुत करना।
II. सिंगल-विंडो क्लीयरेंस के माध्यम से शूटिंग अनुमति का आवेदन।
III. राज्य द्वारा वित्तीय प्रोत्साहन का वितरण।
IV. राजस्थान में स्वीकृत स्थलों पर वास्तविक शूटिंग।
कूट:
(1) II, IV, I, III
(2) I, II, IV, III
(3) II, I, IV, III
(4) IV, II, I, III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

88. सूची-I (शूटिंग स्थल) को सूची-II (जिलों) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (स्थल)
A. मेहरानगढ़ किला
B. आमेर किला
C. कुंभलगढ़ किला
D. सैम सैंड ड्यून्स
सूची II: (जिले)
i. जैसलमेर
ii. राजसमंद
iii. जयपुर
iv. जोधपुर
कूट:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

89. फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति के तहत राज्य के स्मारकों पर शूटिंग हेतु किस शुल्क में छूट प्रदान की जाती है?
(1) उपकरणों पर जीएसटी (GST) की पूर्ण छूट।
(2) राष्ट्रीय राजमार्ग टोल के भुगतान से छूट।
(3) राज्य के स्वामित्व वाले स्मारकों पर दैनिक शूटिंग शुल्क से छूट।
(4) नगर निगम के संपत्ति करों से छूट।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

90. फिल्म पर्यटन को बढ़ावा देने का सबसे उपयुक्त दीर्घकालिक आर्थिक लाभ क्या है?
(1) 'डेस्टिनेशन ब्रांडिंग' जिससे पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होती है।
(2) शहरी गरीबी का तत्काल पूर्ण उन्मूलन।
(3) अर्थव्यवस्था का कृषि से पूर्णतः फिल्म विनिर्माण में बदलाव।
(4) ऐतिहासिक किलों के रखरखाव लागत में कमी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Downloaded from www.pdf.tube

है। यह ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण और स्थानीय विरासत को संजोने के लिए आवश्यक आर्थिक आधार तैयार करता है। पर्यटन के विकास से दूरदराज के क्षेत्रों में सड़क और बिजली जैसे बुनियादी ढांचे में सुधार होता है। साथ ही, यह हस्तशिल्प और लोक कलाओं के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

11. (4) नीलगिरी सर्किट
राजस्थान सरकार ने पर्यटन को व्यवस्थित ढंग से विकसित करने के लिए राज्य को विभिन्न पर्यटन परिपथों (सर्किट) में विभाजित किया है। मरु, मेवाड़ और ब्रज-मेवात परिपथ राज्य की भौगोलिक और सांस्कृतिक विशेषताओं पर आधारित प्रमुख क्षेत्र हैं। इसके विपरीत, नीलगिरी परिपथ दक्षिण भारत के राज्यों, मुख्य रूप से तमिलनाडु और कर्नाटक के भौगोलिक क्षेत्र से संबंधित है। अतः राजस्थान के पर्यटन परिपथों के संदर्भ में नीलगिरी परिपथ पूर्णतः असंगत और बाहरी विकल्प है।

12. (2) भारत के घरेलू पर्यटक
राजस्थान के पर्यटन क्षेत्र में राजस्व और संख्या दोनों ही दृष्टियों से घरेलू पर्यटकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि राज्य में आने वाले कुल पर्यटकों में भारत के विभिन्न राज्यों से आने वाले घरेलू पर्यटकों की हिस्सेदारी अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की तुलना में बहुत अधिक है। धार्मिक पर्यटन और पारिवारिक यात्राओं के कारण घरेलू पर्यटकों का निरंतर आगमन राज्य की स्थानीय अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करता है।

13. (1) I, II, III, IV
राजस्थान में घरेलू पर्यटकों के आगमन के ऐतिहासिक स्वरूप का विश्लेषण करने पर जयपुर अपनी राजधानी होने और बेहतर संपर्क (कनेक्टिविटी) के कारण शीर्ष स्थान पर रहता है। इसके पश्चात धार्मिक महत्व के कारण अजमेर और अपनी झीलों के लिए प्रसिद्ध उदयपुर का स्थान आता है। प्रतापगढ़ जैसे जिलों में भौगोलिक स्थिति और सीमित प्रचार के कारण पर्यटकों की आवक तुलनात्मक रूप से न्यूनतम रहती है। अतः यह भौगोलिक क्रम बिल्कुल सही है।

14. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
राजस्थान के पर्यटन उद्योग में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों श्रेणियों के पर्यटकों का विशिष्ट महत्व है। घरेलू पर्यटक अपनी विशाल संख्या के कारण पर्यटन राजस्व का एक स्थिर और बड़ा आधार तैयार करते हैं। दूसरी ओर, अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या भले ही कम हो, लेकिन उनकी प्रति व्यक्ति व्यय करने की क्षमता और लंबी अवधि का प्रवास राज्य के लिए बहुमूल्य विदेशी मुद्रा अर्जित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होता है।

15. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
राजस्थान में अंतरराष्ट्रीय पर्यटक संख्या में कम होने के बावजूद उच्च विदेशी मुद्रा अर्जित करने का प्रमुख स्रोत हैं, क्योंकि उनका औसत खर्च घरेलू पर्यटकों की तुलना में अधिक होता है। हालांकि, यह तर्क गलत है कि वे विरासत संपत्तियों से बचते हैं; वास्तव में, विदेशी पर्यटक राजस्थान की ऐतिहासिक विरासत और राजसी होटलों के अनुभव के लिए ही मुख्य रूप से आकर्षित होते हैं। वे अक्सर पारंपरिक और उच्च श्रेणी की सेवाओं को प्राथमिकता देते हैं।

16. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास हेतु कई विशिष्ट केंद्रों की स्थापना की गई है। महिंद्रा वर्ल्ड सिटी जयपुर में स्थित एक प्रमुख विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) है। फिनटेक पार्क को वित्तीय प्रौद्योगिकी कंपनियों हेतु जयपुर में विकसित किया गया है। साइबर पार्क जोधपुर में सूचना प्रौद्योगिकी गतिविधियों का मुख्य केंद्र है। भामाशाह टेक्नो हब, जो जयपुर में स्थित है, स्टार्टअप्स को सहायता प्रदान करने वाला देश का सबसे बड़ा उद्भवन (इनक्यूबेशन) केंद्र है।

NODIA

17. (2) दक्षता बढ़ाने हेतु डिजाइन की गई बीपीओ (BPO) और केपीओ (KPO) जैसी आईटी-निर्भर सेवाएँ।
सूचना प्रौद्योगिकी सक्षम सेवाएँ (ITeS) उन सेवाओं को संदर्भित करती हैं जो तकनीक का उपयोग करके किसी संगठन की परिचालन दक्षता में सुधार करती हैं। इसमें मुख्य रूप से व्यापार प्रक्रिया बाह्यस्रोत (BPO), ज्ञान प्रक्रिया बाह्यस्रोत (KPO) और डेटा प्रविष्टि जैसी गतिविधियां शामिल हैं। ये सेवाएँ इंटरनेट और संचार माध्यमों पर निर्भर होती हैं और राजस्थान में युवाओं के लिए रोजगार सृजन का एक आधुनिक माध्यम बनकर उभरी हैं, विशेषकर प्रमुख शहरी केंद्रों में।

18. (1) जयपुर
राजस्थान की राजधानी जयपुर सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित हुई है। अपनी बेहतर भौगोलिक स्थिति, दिल्ली से निकटता और आधुनिक बुनियादी ढांचे के कारण इसने कई बड़े बहुराष्ट्रीय निगमों को आकर्षित किया है। यहाँ स्थित विशेष आर्थिक क्षेत्र और सूचना प्रौद्योगिकी पार्क वैश्विक स्तर की सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। कुशल मानव संसाधन की उपलब्धता ने भी जयपुर को देश के महत्वपूर्ण तकनीकी केंद्रों की श्रेणी में सुदृढ़ किया है।

19. (2) I, II, IV और V
राजस्थान में सूचना प्रौद्योगिकी विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इसमें समर्पित आईटी पार्कों की स्थापना के साथ स्टार्टअप्स के लिए 'आई-स्टार्ट' जैसी महत्वाकांक्षी पहल शामिल है। भामाशाह टेक्नो हब जैसे केंद्रों ने नवाचार को गति दी है और आईटी दिवस के आयोजन से निवेशकों का विश्वास बढ़ा है। हालांकि, इन कंपनियों को श्रम कानूनों से पूर्ण छूट नहीं दी गई है, वे राज्य के नियामक ढांचे के अंतर्गत कार्य करती हैं।

20. (4) आईटी कंपनियों हेतु अपने 100% सॉफ्टवेयर उत्पादों का निर्यात करना अनिवार्य करना।
राजस्थान की सूचना प्रौद्योगिकी नीतियां मुख्य रूप से निवेश प्रोत्साहन और अनुकूल वातावरण बनाने पर केंद्रित हैं। सरकार आईटी पार्कों हेतु रियायती दरों पर भूमि, बिजली शुल्क में छूट और बड़ी परियोजनाओं के लिए विशेष पैकेज जैसे प्रोत्साहन

76. (2) आरटीआई (RTI) आवेदनों के बिना जनता को योजनाओं का विवरण स्वतः उपलब्ध कराना।
राजस्थान सरकार द्वारा शुरू किया गया 'जन सूचना पोर्टल' ई-गवर्नेंस के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम है। इसका प्राथमिक उद्देश्य शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही लाना है। यह पोर्टल नागरिकों को सूचना का अधिकार (RTI) के तहत आवेदन किए बिना ही विभिन्न सरकारी योजनाओं, लाभार्थियों की सूची और विभागों के कार्यों का विवरण स्वतः ही उपलब्ध कराता है। इससे आम आदमी को सरकारी जानकारी प्राप्त करने के लिए दफ्तरों के चक्कर नहीं काटने पड़ते और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में भी काफी मदद मिलती है।

77. (1) केवल I, II और IV
राजस्थान में ई-मित्र नेटवर्क सार्वजनिक-निजी भागीदारी का एक सफल मॉडल है, जो नागरिकों को एक ही छत के नीचे सैकड़ों सेवाएँ प्रदान करता है। इसमें बिजली-पानी के बिलों का भुगतान, विभिन्न प्रमाण पत्र जारी करना और बैंकिंग सेवाएँ शामिल हैं। यह न केवल सरकारी (G2C) बल्कि कुछ निजी (B2C) सेवाएँ भी देता है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ई-मित्र केवल शहरों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका जाल राज्य के लगभग प्रत्येक गाँव और ग्राम पंचायत तक फैला हुआ है, जो इसे ग्रामीण सशक्तिकरण का साधन बनाता है।

78. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
राजस्थान की विभिन्न डिजिटल प्रणालियाँ विशिष्ट प्रशासनिक कार्यों हेतु डिजाइन की गई हैं। 'राजस्थान संपर्क' जनता की शिकायतों के निवारण का केंद्रीकृत पोर्टल है। 'राज-काज' सरकारी कार्यालयों में फाइलों और प्रक्रियाओं को डिजिटल बनाकर इलेक्ट्रॉनिक कार्यप्रवाह सुनिश्चित करता है। एसएसओ (SSO) आईडी नागरिकों को एक ही उपयोगकर्ता नाम और कूटशब्द से कई सरकारी सेवाओं तक पहुँचने की सुविधा प्रदान करती है। 'ई-धरती' पोर्टल मुख्य रूप से भू-अभिलेखों के आधुनिकीकरण और नामांतरण की प्रक्रिया को ऑनलाइन और पारदर्शी बनाने के लिए समर्पित है।

79. (1) जन सूचना पोर्टल
यदि कोई नागरिक बिना किसी जटिल आवेदन प्रक्रिया के अपने क्षेत्र में राशन वितरण या किसी अन्य सार्वजनिक योजना की वास्तविक स्थिति जानना चाहता है, तो 'जन सूचना पोर्टल' उसके लिए सबसे उपयुक्त विकल्प है। यह पोर्टल सरकार द्वारा दी जाने वाली विभिन्न सुविधाओं और लाभार्थियों के डेटा को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करता है। इसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति घर बैठे यह देख सकता है कि उसके वार्ड में कितना राशन आया और किन लोगों को वितरित किया गया, जो सूचना के अधिकार को वास्तविक शक्ति प्रदान करता है।

80. (2) न्यायिक वारंट और अदालती निर्णय जारी करना
ई-मित्र केंद्र आम नागरिकों के दैनिक जीवन से जुड़ी नागरिक सेवाओं को सुगम बनाने के लिए बनाए गए हैं। यहाँ से बिजली, पानी और मोबाइल के बिल जमा किए जा सकते हैं, साथ ही मूल निवास और जाति प्रमाण पत्र जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेजों के लिए आवेदन भी किया जा सकता है। छात्र अपनी विश्वविद्यालय परीक्षा शुल्क भी यहाँ जमा कर सकते हैं। हालांकि, न्यायिक वारंट जारी करना या अदालती निर्णय देना पूरी तरह से न्यायपालिका का विशेषाधिकार है, अतः ये संवेदनशील कानूनी कार्य ई-मित्र के माध्यम से संपन्न नहीं किए जा सकते।

81. (2) 1978
राजस्थान राज्य में पर्यटन की अपार संभावनाओं को देखते हुए और इसके व्यावसायिक विकास एवं प्रबंधन हेतु राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) की स्थापना वर्ष 1978 में की गई थी। निगम ने 1 अप्रैल 1979 से अपना वास्तविक कार्य शुरू किया। इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य राज्य में आने वाले पर्यटकों को आवास, भोजन और परिवहन जैसी उच्च स्तरीय सुविधाएँ प्रदान करना था। तब से RTDC राजस्थान को एक अंतरराष्ट्रीय पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित करने के लिए सरकार की एक प्रमुख वाणिज्यिक संस्था बनी हुई है।

82. (1) I, II, III और IV
राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) राज्य में पर्यटन के अनुभव को समृद्ध बनाने के लिए विविध कार्य करता है। यह विभिन्न जिलों में होटलों और मोटलों का संचालन करता है, पर्यटकों के लिए विशेष पैकेज टूर आयोजित करता है और विश्व प्रसिद्ध 'पैलेस ऑन व्हील्स' जैसी लक्जरी ट्रेनों के प्रबंधन में भागीदारी निभाता है। इसके अलावा, झीलों में नौकायन और पर्यटन स्थलों पर जलपान गृहों की सुविधा भी इसके कार्यों में शामिल है। हालांकि, पासपोर्ट जारी करना पूर्णतः केंद्र सरकार का कार्य है, जो RTDC के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता।

83. (1) केवल कथन I सही है
राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) पिछले कुछ वर्षों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा और परिचालन लागतों के कारण वित्तीय चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन समस्याओं के समाधान हेतु सरकार ने कुछ अनुपयोगी या घाटे में चल रही संपत्तियों को सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) के तहत पट्टे पर देने का निर्णय लिया है। इसके विपरीत, यह कथन पूरी तरह गलत है कि निगम संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन द्वारा वित्तपोषित है। RTDC मुख्य रूप से राज्य सरकार के समर्थन और अपनी सेवाओं से प्राप्त राजस्व पर ही निर्भर करता है।

84. (4) होटल खादिम - अजमेर
राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) के होटल राज्य के प्रमुख पर्यटन शहरों में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। इनमें 'होटल खादिम' अजमेर में स्थित है, जो तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। इसके विपरीत, अन्य विकल्पों में त्रुटियाँ हैं; उदाहरण के लिए 'होटल मूमल' जैसलमेर में स्थित है और 'होटल गणगौर' जयपुर में अपनी सेवाएँ प्रदान करता है। ये होटल पर्यटकों को उचित मूल्य पर राजस्थानी आतिथ्य का अनुभव कराने के उद्देश्य से राज्य के रणनीतिक स्थलों पर बनाए गए हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

जन धन योजना के तहत करोड़ों नए खाते खोले गए हैं, जिसने वित्तीय समावेशन को नई दिशा दी है। माइक्रो-एटीएम और पॉइंट-ऑफ-सेल मशीनों ने बैंकिंग को सुविधाजनक बनाया है। हालांकि, निजी बैंकों के ग्रामीण संचालन पर कोई प्रतिबंध नहीं है, बल्कि उन्हें भी इसमें योगदान हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।

31. (1) ग्रामीण-से-शहरी प्रवासन की उच्च दर और औद्योगिक विस्तार।
जयपुर, जोधपुर और कोटा जैसे प्रमुख राजस्थानी शहरों में स्थावर संपदा (रियल एस्टेट) और निर्माण क्षेत्र की तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण तेजी से होता शहरीकरण है। बेहतर रोजगार के अवसरों और आधुनिक सुविधाओं की तलाश में ग्रामीण आबादी का शहरों की ओर पलायन बढ़ रहा है। साथ ही, औद्योगिक गलियारों और शैक्षणिक संस्थानों के विस्तार ने आवासीय और व्यावसायिक संपत्तियों की मांग को अभूतपूर्व रूप से बढ़ाया है। बुनियादी ढांचे में सुधार ने इस वृद्धि को बल दिया है।

32. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान में शहरी नियोजन और नियमन हेतु एक सुव्यवस्थित ढांचा मौजूद है। रेरा (RERA) एक नियामक संस्था है जो घर खरीदारों के अधिकारों की रक्षा और पारदर्शिता सुनिश्चित करती है। किफायती आवास नीति का लक्ष्य समाज के कमजोर वर्गों को सस्ते घर उपलब्ध कराना है। यूआईटी (UIT) विभिन्न शहरों में स्थानीय निकाय के रूप में बुनियादी ढांचे का प्रबंधन करती है। जेडीए (JDA) जयपुर के नियोजित और आधुनिक विकास के लिए उत्तरदायी मुख्य एजेंसी के रूप में कार्य करती है।

33. (2) द्वितीयक क्षेत्र
आर्थिक गतिविधियों के वर्गीकरण में निर्माण क्षेत्र का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यद्यपि यह स्थावर संपदा (रियल एस्टेट) और सेवा क्षेत्र से निकटता से जुड़ा हुआ है, लेकिन सांख्यिकीय गणना के अनुसार निर्माण को 'द्वितीयक क्षेत्र' के अंतर्गत रखा जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसमें कच्चे माल को भौतिक संरचनाओं जैसे भवनों, सड़कों और पुलों में बदलने की प्रक्रिया शामिल है। सकल राज्य घरेलू उत्पाद के लेखांकन में यह क्षेत्र बुनियादी ढांचा क्षमता का मुख्य सूचक है।

34. (2) भूमि रूपांतरण अनुमोदन → भवन योजना अनुमोदन → रेरा पंजीकरण → पूर्णता प्रमाण पत्र
राजस्थान में किसी भी बड़ी स्थावर संपदा परियोजना को शुरू करने के लिए एक निश्चित प्रक्रिया अनिवार्य है। सबसे पहले कृषि या अन्य भूमि का आवासीय अथवा व्यावसायिक उपयोग हेतु रूपांतरण कराया जाता है। इसके बाद स्थानीय प्राधिकरण से भवन मानचित्र का अनुमोदन प्राप्त किया जाता है। परियोजना की बिक्री शुरू करने से पहले रेरा के तहत पंजीकरण कराना अनिवार्य होता है। अंत में, निर्माण कार्य पूरा होने पर गुणवत्ता मानकों की जांच के पश्चात पूर्णता प्रमाण पत्र जारी किया जाता है।

35. (3) शहरी विस्तार राजस्थान के सभी 50 जिलों में समान रूप से वितरित है।
राजस्थान में शहरीकरण और स्थावर संपदा (रियल एस्टेट) का विकास सभी जिलों में एक समान नहीं है। शहरी विस्तार मुख्य रूप से जयपुर, जोधपुर, कोटा और उदयपुर जैसे बड़े केंद्रों और औद्योगिक क्षेत्रों के आसपास ही संकेंद्रित है। राज्य के सुदूर और मरुस्थलीय जिलों में विकास की दर तुलनात्मक रूप से धीमी है। सरकार मुख्यमंत्री जन आवास योजना जैसी पहलों के माध्यम से इस असंतुलन को दूर करने का प्रयास कर रही है, लेकिन वर्तमान वितरण में व्यापक असमानता स्पष्ट है।

36. (4) विशिष्ट कर और कॉर्पोरेट कानूनों के तहत पंजीकृत लाइसेंस प्राप्त संस्थाओं द्वारा संचालन।
राजस्थान में "संगठित खुदरा" क्षेत्र उन व्यापारिक गतिविधियों को संदर्भित करता है जो औपचारिक रूप से पंजीकृत होती हैं और स्थापित कॉर्पोरेट कानूनों के अंतर्गत संचालित की जाती हैं। इसमें शॉपिंग मॉल, हाइपरमार्केट और आधुनिक स्टोर श्रृंखलाएं शामिल हैं जो लाइसेंस प्राप्त होती हैं और नियमित लेखांकन प्रणाली का पालन करती हैं। यह क्षेत्र असंगठित विक्रेताओं से भिन्न है क्योंकि इसमें आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, निश्चित मूल्य निर्धारण और औपचारिक रोजगार ढांचे जैसी आधुनिक व्यापारिक विशेषताएँ मौजूद होती हैं।

37. (1) I, II, IV और V
राजस्थान में संगठित खुदरा व्यापार के विकास के पीछे कई सामाजिक-आर्थिक कारक प्रभावी हैं। मध्यम वर्ग की बढ़ती आय और डिजिटल भुगतान की सुगमता ने खरीदारी के अनुभव को बदल दिया है। उपभोक्ता अब एक ही छत के नीचे गुणवत्तापूर्ण सामान और मनोरंजन चाहते हैं, जिससे शॉपिंग मॉल की लोकप्रियता बढ़ी है। हालांकि, सरकार ने पारंपरिक असंगठित किराना दुकानों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया है, बल्कि वे अभी भी बाजार का एक बड़ा हिस्सा और सह-अस्तित्व बनाए हुए हैं।

38. (1) केवल कथन I सही है
राजस्थान के खुदरा बाजार में आज भी असंगठित क्षेत्र, जैसे स्थानीय किराना दुकानें और छोटे विक्रेता, अपनी व्यापक पहुँच और व्यक्तिगत संबंधों के कारण प्रभुत्व रखते हैं। यद्यपि संगठित खुदरा तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन कुल बाजार हिस्सेदारी में असंगठित क्षेत्र अभी भी आगे है। दूसरी ओर, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स ने पारंपरिक व्यापार प्रारूपों को प्रभावित किया है। अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोग ऑनलाइन खरीदारी कर रहे हैं, जिससे स्थानीय खुदरा विक्रेताओं के समक्ष कड़ी प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हुई है।

NODIA

39. (4) केंद्रीकृत आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन
राजस्थान का असंगठित खुदरा क्षेत्र अपनी विशिष्ट कार्यप्रणाली के लिए जाना जाता है, जिसमें बहुत कम शुरुआती पूंजी की आवश्यकता होती है और कार्य के घंटे लचीले होते हैं। दुकानदार अक्सर अपने ग्राहकों के साथ व्यक्तिगत और उधार संबंध बनाए रखते हैं। इसके विपरीत, केंद्रीकृत आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और परिष्कृत इन्वेंट्री नियंत्रण 'संगठित खुदरा'

कर रहा है। निगम महिलाओं, छात्रों और वरिष्ठ नागरिकों को यात्रा के किराए में महत्वपूर्ण रियायतें प्रदान करता है, जो इसके सामाजिक दायित्व का हिस्सा है। साथ ही, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए अब प्रमुख मार्गों पर इलेक्ट्रिक बसों का संचालन भी शुरू किया गया है। हालांकि, निगम के सभी लाभदायक मार्गों का विदेशी कंपनियों को पूर्ण निजीकरण करने का कोई निर्णय नहीं लिया गया है।

59. (4) सड़क यातायात को कम करने वाले प्राकृतिक अंतर्देशीय जलमार्गों की प्रचुरता।
राजस्थान एक शुष्क राज्य है जहाँ बारहमासी नदियों और प्राकृतिक गहरे अंतर्देशीय जलमार्गों का अभाव है। इसलिए, जलमार्गों द्वारा सड़क यातायात को कम करने की कोई संभावना यहाँ नहीं है। इसके विपरीत, राज्य के परिवहन क्षेत्र को मरुस्थलीय क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण की उच्च लागत, विरल आबादी वाले इलाकों में संपर्क (कनेक्टिविटी) की समस्या और राज्य परिवहन निगम के वित्तीय घाटे जैसी वास्तविक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यहाँ संपूर्ण परिवहन व्यवस्था मुख्य रूप से सड़क और रेल नेटवर्क पर निर्भर है।

60. (1) राष्ट्रीय राजमार्ग → राज्य राजमार्ग → मुख्य जिला सड़कें → ग्रामीण सड़कें
राजस्थान में सड़क नेटवर्क को उनके महत्व, यातायात के दबाव और प्रशासनिक नियंत्रण के आधार पर एक व्यवस्थित पदानुक्रम में विभाजित किया गया है। इस क्रम में राष्ट्रीय राजमार्ग शीर्ष पर होते हैं जो बड़े शहरों और अन्य राज्यों को जोड़ते हैं। इसके बाद राज्य राजमार्ग आते हैं जो जिलों को आपस में जोड़ते हैं। मुख्य जिला सड़कें जिले के भीतर महत्वपूर्ण केंद्रों को जोड़ती हैं, और अंत में ग्रामीण सड़कें आती हैं जो गाँवों को मुख्य मार्गों से जोड़कर अंतिम मील कनेक्टिविटी सुनिश्चित करती हैं।

61. (3) राज्य ने आपूर्ति श्रृंखला बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने हेतु लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को 'उद्योग' का दर्जा दिया है।
राजस्थान सरकार ने राज्य को एक प्रमुख व्यापारिक हब बनाने के उद्देश्य से लॉजिस्टिक्स (रसद) और वेयरहाउसिंग क्षेत्र को 'उद्योग' का दर्जा प्रदान किया है। इस कदम से रसद क्षेत्र की इकाइयों को रियायती दरों पर भूमि, कम बिजली शुल्क और विभिन्न कर लाभ प्राप्त होते हैं। यद्यपि राजस्थान की सीमा समुद्र से नहीं लगती, फिर भी यहाँ इनलैंड कंटेनर डिपो के माध्यम से निर्यात और आयात की कुशल व्यवस्था की गई है। निजी निवेश को प्रोत्साहित करने से राज्य की आपूर्ति श्रृंखला क्षमता में वृद्धि हुई है।

62. (1) केवल I, II और III
राजस्थान एक पूर्णतः भू-आबद्ध राज्य है, इसलिए यहाँ गहरे समुद्र के बंदरगाह होना भौगोलिक रूप से संभव नहीं है। हालांकि, राज्य ने अपनी लॉजिस्टिक्स क्षमता बढ़ाने के लिए कई इनलैंड कंटेनर डिपो, मल्टी-मोडल लॉजिस्टिक्स पार्क और कोल्ड चेन स्टोरेज सुविधाओं का विकास किया है। ये बुनियादी ढांचे राज्य के निर्यातकों को समुद्री बंदरगाहों तक आसान पहुँच प्रदान करते हैं। डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के विकास के साथ, इन रसद केंद्रों का महत्व और भी बढ़ गया है, जो राजस्थान को उत्तर भारत का प्रमुख हब बना रहे हैं।

63. (1) वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (WDFC)
वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (WDFC) एक अत्यंत महत्वपूर्ण राष्ट्रीय बुनियादी ढांचा परियोजना है, जिसका एक बड़ा हिस्सा राजस्थान से होकर गुजरता है। यह कॉरिडोर विशेष रूप से मालगाड़ियों के लिए बनाया गया है, जो राज्य के औद्योगिक उत्पादों को गुजरात और महाराष्ट्र के बंदरगाहों तक बहुत कम समय में पहुँचाने में सक्षम बनाता है। इस परियोजना ने राजस्थान के लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाया है, जिससे यहाँ निवेश बढ़ा है और उद्योगों के लिए परिवहन लागत और समय में भारी कमी आई है।

64. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर (DMIC) राजस्थान के आर्थिक भविष्य के लिए एक गेम-चेंजर के रूप में देखा जा रहा है। इस कॉरिडोर की कुल लंबाई का लगभग 39% हिस्सा राजस्थान के विभिन्न जिलों से होकर गुजरता है, जो राज्य को औद्योगिक और रसद गतिविधियों का केंद्र बनाने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है। इस गलियारे के आसपास स्मार्ट शहरों और मल्टी-मोडल लॉजिस्टिक्स हब के विकास से न केवल परिवहन क्षमता बढ़ेगी, बल्कि यह राज्य के सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों में रोजगार के लाखों नए अवसर भी पैदा करेगा।

65. (2) एनसीआर (NCR) और गुजरात की सीमा से लगे रणनीतिक स्थान तथा WDFC के कारण पारगमन समय में कमी।
राजस्थान की भौगोलिक स्थिति इसे उत्तर और पश्चिम भारत के बाजारों के बीच एक आदर्श सेतु बनाती है। दिल्ली-एनसीआर और गुजरात के बंदरगाहों के बीच स्थित होने के कारण यहाँ वेयरहाउसिंग हब स्थापित करना रणनीतिक रूप से लाभदायक है। वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर की उपलब्धता से माल की आवाजाही तेज और सस्ती हो गई है। पारगमन समय में कमी और आधुनिक लॉजिस्टिक्स सुविधाओं के विस्तार ने राजस्थान को बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियों और वितरण केंद्रों के लिए एक पसंदीदा गंतव्य के रूप में स्थापित कर दिया है।

66. (1) संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता का अभाव, जिससे राज्य का संरक्षण और मुद्रीकरण सीमित होता है।
राजस्थानी भाषा और इसकी सामग्री के व्यापक विकास के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा इसे भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में आधिकारिक मान्यता न मिलना है। इस मान्यता के अभाव के कारण राजस्थानी सिनेमा और साहित्य को राष्ट्रीय स्तर पर आवश्यक वित्तीय प्रोत्साहन, संरक्षण और व्यापक मुद्रीकरण के अवसर प्राप्त नहीं हो पाते हैं। यद्यपि राज्य स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं, परंतु संवैधानिक मान्यता मिलने से क्षेत्रीय मीडिया और मनोरंजन उद्योग को एक नई पहचान और वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने की शक्ति प्राप्त होगी।

67. (3) फड़ वाचन/पारंपरिक कथावाचन
वर्तमान डिजिटल युग में राजस्थान के मनोरंजन क्षेत्र में क्षेत्रीय ओटीटी प्लेटफॉर्म, यूट्यूब व्लॉगिंग और सोशल मीडिया

Downloaded from www.pdf.tube

49. (2) शिक्षा-पर्यटन (Edu-tourism) और इसका गुणक प्रभाव
राजस्थान के किसी शहर में शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना से जो आर्थिक विकास होता है, उसे 'शिक्षा-पर्यटन' के गुणक प्रभाव के रूप में समझा जा सकता है। जब बड़ी संख्या में छात्र बाहर से आते हैं, तो वे स्थानीय स्तर पर आवास, भोजन और स्टेशनरी जैसी सेवाओं की मांग पैदा करते हैं। इससे एक छोटी सी शैक्षणिक गतिविधि एक बड़े आर्थिक चक्र में बदल जाती है, जिससे स्थानीय निवासियों की आय और रोजगार में स्वतः वृद्धि होती है। कोटा इसके लिए श्रेष्ठ उदाहरण है।

50. (1) IV, II, I, III
एक कोचिंग हब का विकास आमतौर पर एक क्रमिक प्रक्रिया है। इसकी शुरुआत छोटे स्तर पर स्थानीय शिक्षकों द्वारा शिक्षण से होती है। जब इन शिक्षकों के छात्र राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करते हैं, तो उस क्षेत्र की ख्याति बढ़ती है। इसके बाद बाहरी छात्रों के लिए आवास और भोजन जैसे संबद्ध उद्योगों का उदय होता है। अंत में, उस क्षेत्र की क्षमता और ब्रांड वैल्यू को देखते हुए बड़े कॉर्पोरेट कोचिंग ब्रांड अपने मेगा सेंटर और व्यापक विपणन के साथ वहां स्थापित होते हैं।

51. (3) स्थानीय रियल एस्टेट, आतिथ्य और खुदरा क्षेत्रों में भारी मंदी।
कोटा की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा वहां के कोचिंग उद्योग पर टिका हुआ है। यदि छात्रों के आगमन में किसी कारणवश कमी आती है, तो इसका सीधा और तत्काल प्रभाव वहां के स्थावर संपदा (रियल एस्टेट) क्षेत्र पर पड़ेगा क्योंकि हॉस्टल और पीजी खाली हो जाएंगे। इसके अलावा, छात्रों को भोजन उपलब्ध कराने वाले मेस, स्थानीय परिवहन और छोटी खुदरा दुकानों के राजस्व में भी भारी गिरावट आएगी। यह स्थिति सेवा क्षेत्र के किसी एक उप-क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता के जोखिम को दर्शाती है।

52. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
कोटा का कोचिंग तंत्र विभिन्न सहायक सेवाओं के समन्वय से संचालित होता है। मेस और टिफिन सेंटर हज़ारों बाहरी छात्रों की दैनिक पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। पीजी और हॉस्टल आवास अस्थायी छात्र आबादी के लिए एक विशाल आवासीय बुनियादी ढांचा प्रदान करते हैं। प्रिंट और स्टेशनरी सेवाएँ अध्ययन सामग्री के निरंतर वितरण हेतु अनिवार्य हैं। हाल के वर्षों में, छात्रों के बढ़ते तनाव को देखते हुए मनोवैज्ञानिक परामर्श केंद्रों की भूमिका भी उनके कल्याण हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है।

53. (2) केवल कथन II सही है
कोटा का कोचिंग हब केवल राजस्थान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे भारत से छात्रों को आकर्षित करता है, जो इसे एक राष्ट्रीय शैक्षणिक केंद्र बनाता है। देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले इस विशाल छात्र समूह के कारण स्थानीय उपभोग पैटर्न में महत्वपूर्ण बदलाव आते हैं। खाद्य आदतों, फैशन और तकनीक की मांग बाहरी छात्रों की प्राथमिकताओं के अनुसार ढल जाती है। यह जनसांख्यिकीय आवक स्थानीय बाजार को विविधता प्रदान करती है और नए प्रकार के व्यापारिक अवसरों को जन्म देती है।

54. (2) यह कोचिंग संस्थानों के संचालन हेतु पूर्णतः सरकारी सब्सिडी पर निर्भर है।
कोटा में कोचिंग उद्योग मुख्य रूप से निजी क्षेत्र के निवेश और उद्यमशीलता पर आधारित है, न कि सरकारी सब्सिडी पर। यह क्षेत्र स्थानीय लोगों को बड़ी संख्या में प्रत्यक्ष रोजगार और ऑटो-रिक्शा, मेस तथा आवास जैसी सेवाओं के माध्यम से अप्रत्यक्ष आजीविका प्रदान करता है। सरकार सब्सिडी देने के बजाय एक नियामक की भूमिका निभाती है, ताकि छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। कोटा का यह आर्थिक मॉडल पूरी तरह से बाजार की मांग और शैक्षणिक परिणामों द्वारा संचालित होता है।

NODIA

55. (1) I, II, III और V
कोटा में कोचिंग हब के विकास ने स्थानीय प्रति व्यक्ति आय में उल्लेखनीय वृद्धि की है और छात्र आवश्यकताओं को पूरा करने वाली एक सक्रिय गिग इकोनॉमी को जन्म दिया है। हालांकि, इस तीव्र जनसंख्या वृद्धि ने शहर के स्वच्छता और परिवहन जैसे बुनियादी ढांचे पर भारी दबाव डाला है। छात्रों की भलाई के लिए राज्य सरकार ने विनियामक दिशानिर्देश भी जारी किए हैं। यद्यपि इसने रोजगार के अवसर दिए हैं, लेकिन यह कहना अतिशयोक्ति होगी कि इसने युवा बेरोजगारी को पूर्णतः समाप्त कर दिया है।

56. (1) विशाल भौगोलिक क्षेत्र और विरल आबादी के कारण राजस्थान का घनत्व कम है।
राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जिसका एक बड़ा हिस्सा थार मरुस्थल और अरावली पर्वत श्रृंखला के अंतर्गत आता है। राज्य के विशाल भौगोलिक विस्तार और दूरदराज के क्षेत्रों में विरल जनसंख्या घनत्व के कारण यहाँ प्रति वर्ग किलोमीटर सड़क घनत्व राष्ट्रीय औसत की तुलना में कम बना हुआ है। मरुस्थलीय इलाकों में सड़कों के निर्माण और उनके रखरखाव की लागत भी अधिक होती है, जो सड़क नेटवर्क के सघन विस्तार के मार्ग में एक प्रमुख भौगोलिक और आर्थिक चुनौती है।

57. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान में परिवहन बुनियादी ढांचे का प्रबंधन विभिन्न स्तरों पर किया जाता है। राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास और रखरखाव भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) द्वारा किया जाता है। राज्य राजमार्गों की जिम्मेदारी राज्य के सार्वजनिक निर्माण विभाग (PWD) की होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों का जाल प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) के माध्यम से बिछाया गया है। सार्वजनिक बस परिवहन सेवाओं के संचालन के लिए राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम (RSRTC) एक प्रमुख नोडल संस्था के रूप में कार्य करती है।

58. (1) केवल I और II
राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम (RSRTC) सार्वजनिक सेवा और आधुनिकीकरण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास

की प्रमुख विशेषताएं हैं। छोटे असंगठित विक्रेता आमतौर पर स्थानीय थोक विक्रेताओं पर निर्भर होते हैं और उनमें बड़े कॉर्पोरेट लॉजिस्टिक्स नेटवर्क का अभाव होता है।

40. (1) ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस - डिजिटल खुदरा प्रारूप
खुदरा व्यापार के विभिन्न प्रारूपों का वर्गीकरण उनकी परिचालन विधि पर आधारित होता है। ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस पूरी तरह से इंटरनेट पर आधारित होते हैं, अतः वे डिजिटल खुदरा प्रारूप का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। इसके विपरीत, स्थानीय किराना दुकानें असंगठित क्षेत्र का हिस्सा हैं, जबकि विभागीय स्टोर श्रृंखलाएं संगठित खुदरा की श्रेणी में आती हैं। साप्ताहिक हाट और मंडियाँ पारंपरिक और अनौपचारिक व्यापार के केंद्र हैं, जो स्थानीय सामुदायिक आवश्यकताओं और मौसमी आपूर्ति के आधार पर संचालित होते हैं।

41. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान ने स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में कई ऐतिहासिक पहल की हैं। मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना सभी परिवारों को कैशलेस इलाज प्रदान करती है। आरजीएचएस विशेष रूप से राज्य कर्मियों और पेंशनभोगियों के लिए एक व्यापक स्वास्थ्य योजना है। स्वास्थ्य का अधिकार अधिनियम पारित करके राजस्थान निवासियों को अनिवार्य स्वास्थ्य सेवाओं की कानूनी गारंटी देने वाला देश का पहला राज्य बना है। निरोगी राजस्थान अभियान जागरूकता और निवारक स्वास्थ्य देखभाल के माध्यम से बीमारियों को रोकने पर केंद्रित है।

42. (1) शहरी केंद्रों में मल्टी-स्पेशलिटी और सुपर-स्पेशलिटी अस्पतालों का तीव्र विस्तार।
पिछले दो दशकों में राजस्थान के स्वास्थ्य क्षेत्र में निजी निवेश में भारी उछाल आया है। इसका सबसे प्रमुख रुझान जयपुर, जोधपुर और कोटा जैसे बड़े शहरों में अत्याधुनिक मल्टी-स्पेशलिटी अस्पतालों की स्थापना है। ये संस्थान उन्नत चिकित्सा तकनीकों और विशेषज्ञ सेवाओं की मांग को पूरा करते हैं। यद्यपि सरकार सार्वजनिक बुनियादी ढांचे को मजबूत कर रही है, लेकिन निजी क्षेत्र ने विशिष्ट देखभाल और जटिल शल्य चिकित्सा सेवाओं के क्षेत्र में अपनी एक महत्वपूर्ण पहचान बनाई है।

43. (1) केवल I और II
राजस्थान में निजी स्वास्थ्य सेवाओं की तेज वृद्धि के मुख्य कारण बढ़ती स्वास्थ्य जागरूकता और विशिष्ट चिकित्सा सेवाओं के लिए लोगों की अपेक्षाएं हैं। राज्य सरकार की नीतियां भी सार्वजनिक-निजी भागीदारी और निवेश प्रोत्साहनों के माध्यम से इस विस्तार का समर्थन करती हैं। हालांकि, यह धारणा गलत है कि राज्य ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को बंद कर दिया है; वास्तव में, सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक स्वास्थ्य नेटवर्क को और अधिक विस्तारित और सुदृढ़ करने पर निरंतर कार्य कर रही है।

44. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के प्रमुख शहरी केंद्रों में निजी सुपर-स्पेशलिटी अस्पतालों का संकेंद्रण एक रणनीतिक व्यावसायिक निर्णय का परिणाम है। इन शहरों में न केवल उन्नत चिकित्सा उपकरणों और विशेषज्ञ डॉक्टरों के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा उपलब्ध है, बल्कि यहाँ मरीजों की बड़ी संख्या और उनकी बेहतर भुगतान क्षमता भी मौजूद है। शहरी वातावरण निजी प्रदाताओं को निवेश पर शीघ्र लाभ और परिचालन सुगमता प्रदान करता है। यही कारण है कि बड़े शहरों में निजी चिकित्सा सुविधाओं का घनत्व अधिक है।

45. (3) मेडिको-लीगल जटिलताओं के मामले में प्रत्येक निवासी को उपचार से मना किए जाने का अधिकार।
राजस्थान के 'स्वास्थ्य का अधिकार' अधिनियम का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को बिना किसी बाधा के गरिमापूर्ण स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करना है। इसमें सरकारी संस्थानों में मुफ्त ओपीडी और आईपीडी सेवाओं के साथ आपातकालीन स्थिति में निजी अस्पतालों द्वारा बिना पूर्व भुगतान के इलाज की बाध्यता शामिल है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस कानून के तहत किसी भी मरीज को मेडिको-लीगल जटिलता के आधार पर इलाज देने से मना नहीं किया जा सकता। यह अधिनियम स्वास्थ्य सेवाओं को एक कानूनी अधिकार बनाता है।

46. (4) रोजगार, बुनियादी ढांचे और संबद्ध सहायक सेवाओं के माध्यम से एक उप-अर्थव्यवस्था का निर्माण करना।
राजस्थान की सेवा अर्थव्यवस्था में निजी शिक्षा क्षेत्र का योगदान शिक्षण तक सीमित नहीं है। इसने एक विशाल सहायक उप-अर्थव्यवस्था को जन्म दिया है, जिसमें हॉस्टल प्रबंधन, परिवहन और खानपान जैसी सेवाएँ शामिल हैं। निजी संस्थानों और कोचिंग केंद्रों के विस्तार से प्रत्यक्ष शैक्षणिक रोजगार के साथ-साथ लाखों अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। इसने विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों के भौतिक बुनियादी ढांचे के विकास को गति दी है और राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की है।

47. (3) केवल IV
राजस्थान में निजी शिक्षण संस्थानों और कोचिंग उद्योग के विस्तार के साथ कई सामाजिक और आर्थिक चुनौतियां भी उभरी हैं। छात्रों पर अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक दबाव और मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएं एक गंभीर मुद्दा बन गई हैं। साथ ही, शिक्षा के व्यावसायीकरण से मध्यम वर्गीय परिवारों पर आर्थिक बोझ बढ़ा है। हालांकि, इस शैक्षणिक वृद्धि का कृषि उत्पादन में होने वाली वृद्धि से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है, क्योंकि ये दोनों अर्थव्यवस्था के पूर्णतः भिन्न क्षेत्रों से संबंधित हैं।

48. (2) एक ऊर्ध्वगामी प्रवृत्ति, जिससे एक बड़े जनसांख्यिकीय वर्ग हेतु पहुंच में सुधार हुआ है।
राजस्थान में निजी विश्वविद्यालयों और तकनीकी कॉलेजों के व्यापक विस्तार के कारण उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (GER) में निरंतर सुधार देखा गया है। शैक्षणिक संस्थानों की संख्या बढ़ने से अब युवाओं के पास स्थानीय स्तर पर ही शिक्षा के विविध विकल्प उपलब्ध हैं। इससे विशेष रूप से उन क्षेत्रों के छात्रों को लाभ हुआ है जो पहले उच्च शिक्षा के लिए बड़े महानगरों में जाने में असमर्थ थे। यह रुझान राज्य के मानव संसाधन के विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध हो रहा है।

Click Here to Buy book on Amazon

इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग जैसे आधुनिक और डिजिटल माध्यम तेजी से उभर रहे हैं। ये सभी इंटरनेट और आधुनिक तकनीक पर आधारित हैं। इसके विपरीत, फड़ वाचन एक पारंपरिक लोक कला और कथावाचन की प्राचीन पद्धति है, जो मौखिक परंपरा और हस्तशिल्प पर आधारित है। हालांकि इसका सांस्कृतिक महत्व बहुत अधिक है, परंतु यह डिजिटल मीडिया के आधुनिक तकनीकी रुझानों की श्रेणी में एक असंगत विकल्प है।

68. (1) I, II, III और IV
राजस्थान में डिजिटल सामग्री के प्रसार के पीछे किफायती स्मार्टफोन और सस्ते मोबाइल डेटा की उपलब्धता प्रमुख कारक हैं। ग्रामीण क्षेत्रों तक इंटरनेट की पहुँच ने स्थानीय कलाकारों को अपने दर्शकों से सीधे जुड़ने का अवसर दिया है। विदेशों में बसे प्रवासी राजस्थानी अपनी संस्कृति से जुड़े रहने के लिए क्षेत्रीय सामग्री की निरंतर मांग करते हैं। हाइपर-लोकल ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने इस सामग्री को व्यवस्थित रूप दिया है। सरकार किसी अन्य भाषा की सामग्री पर प्रतिबंध नहीं लगाती, बल्कि सभी भाषाएँ डिजिटल स्पेस में मौजूद रहती हैं।

69. (3) संविधान की आठवीं अनुसूची - वर्तमान में राजस्थानी भाषा इसमें सम्मिलित है
राजस्थान के मनोरंजन और सांस्कृतिक क्षेत्र के संदर्भ में विभिन्न युग्मों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि 'स्टेज ऐप' वास्तव में राजस्थानी सामग्री का ओटीटी प्लेटफॉर्म है और पर्यटन नीति फिल्म सब्सिडी प्रदान करती है। घूमर और कालबेलिया विश्व प्रसिद्ध पारंपरिक नृत्य हैं। हालांकि, यह जानकारी गलत है कि राजस्थानी भाषा संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित है। वर्तमान में राजस्थानी भाषा को इस अनुसूची में शामिल करने की मांग लंबे समय से लंबित है, जो इसके आधिकारिक विकास को प्रभावित करती है।

70. (1) केवल कथन I सही है
डिजिटल क्रांति ने राजस्थानी कलाकारों के लिए आय के नए स्रोत खोल दिए हैं। अब कलाकार यूट्यूब, सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से अपनी कॉमेडी, संगीत और लोक कलाओं का मुद्रीकरण आसानी से कर पा रहे हैं। दूसरी ओर, यह कथन पूर्णतः गलत है कि राज्य सरकार राजस्थानी सिनेमा को प्रतिबंधित करती है। इसके विपरीत, राजस्थान सरकार 'राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति' जैसी योजनाओं के माध्यम से स्थानीय भाषा की फिल्मों के निर्माण और शूटिंग को सब्सिडी एवं अन्य लाभ देकर सक्रिय रूप से प्रोत्साहित कर रही है।

71. (4) बुनियादी ढांचे के चुनौतियों के कारण ग्रामीण टेली-घनत्व शहरी क्षेत्र से काफी कम है।
राजस्थान में दूरसंचार सेवाओं का विस्तार असमान है। शहरी क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा और उच्च आबादी के कारण टेली-घनत्व बहुत अधिक है। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में यह काफी कम है। इसका मुख्य कारण राज्य का कठिन भौगोलिक भू-भाग, जैसे विशाल रेगिस्तान और अरावली पर्वतमाला है, जहाँ टावर लगाना और ऑप्टिकल फाइबर बिछाना अत्यंत खर्चीला और कठिन कार्य है। कम आय स्तर और विरल आबादी भी दूरसंचार कंपनियों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश को शहरी क्षेत्रों की तुलना में कम आकर्षक बनाती है।

72. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान में डिजिटल कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए कई स्तरों पर कार्य किया जा रहा है। भारतनेट एक राष्ट्रीय परियोजना है जो सभी ग्राम पंचायतों को हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड से जोड़ती है। राजनेट राज्य सरकार का अपना एकीकृत नेटवर्क है जो विभिन्न विभागों के बीच डेटा साझाकरण सुगम बनाता है। मुफ्त स्मार्टफोन योजना का उद्देश्य महिलाओं को डिजिटल रूप से सशक्त बनाना और सरकारी सेवाओं तक उनकी पहुँच बढ़ाना है। इसके साथ ही, सार्वजनिक स्थलों पर वाई-फाई हॉटस्पॉट के माध्यम से इंटरनेट की सुविधा प्रदान की जा रही है।

73. (3) कंपनियां प्रति उपयोगकर्ता उच्च राजस्व के कारण ग्रामीण क्षेत्रों को प्राथमिकता देती हैं।
ग्रामीण दूरसंचार विस्तार में कई बाधाएं हैं, जिनमें मरुस्थलीय क्षेत्रों में केबल बिछाने की उच्च लागत और दूरदराज के इलाकों में बिजली की अनियमित आपूर्ति शामिल है। अरावली की पर्वत श्रृंखलाएं भी सिग्नल कवरेज में भौगोलिक बाधा उत्पन्न करती हैं। यह धारणा गलत है कि कंपनियाँ ग्रामीण क्षेत्रों को प्राथमिकता देती हैं; वास्तव में, ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति उपयोगकर्ता औसत राजस्व (ARPU) शहरी क्षेत्रों की तुलना में काफी कम होता है। इसलिए, निजी कंपनियाँ अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विस्तार में निवेश करने से संकोच करती हैं।

74. (1) केवल I और II
राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में कमजोर दूरसंचार कनेक्टिविटी का सीधा प्रभाव सार्वजनिक सेवाओं की सुलभता पर पड़ता है। इससे ई-मित्र जैसे केंद्रों पर डिजिटल सेवाओं के वितरण में बाधा आती है और नागरिकों को पेंशन या छात्रवृत्ति जैसे प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) प्राप्त करने में देरी का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, डिजिटल भुगतान प्रणालियों के उपयोग में भी समस्या आती है। हालांकि, दूरसंचार कनेक्टिविटी की कमी का कृषि उत्पादकता में वृद्धि से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है, बल्कि यह किसानों के लिए सूचना प्राप्ति को कठिन बनाता है।

75. (4) विषम भू-भाग और विरल जनसंख्या के कारण लागत बढ़ती है, जिससे network coverage बाधित होता है।
राजस्थान की विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियां दूरसंचार नेटवर्क के विस्तार को सीधे प्रभावित करती हैं। विशाल थार मरुस्थल और विरल रूप से बसे गाँवों के कारण कंपनियों को कम ग्राहकों के लिए अधिक संख्या में टावर लगाने पड़ते हैं, जिससे प्रति ग्राहक परिचालन लागत बढ़ जाती है। साथ ही, रेत के टीलों और पहाड़ी इलाकों में भौतिक बुनियादी ढांचे का रखरखाव भी चुनौतीपूर्ण होता है। यही कारण है कि पश्चिमी और सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में नेटवर्क की गुणवत्ता और कवरेज शहरी मैदानी क्षेत्रों की तुलना में अक्सर बाधित रहता है।

Downloaded from www.pdf.tube

94. (4) कौशल प्रशिक्षण अथवा इंटर्नशिप पूरा करने की शर्त पर भत्ते प्रदान करना।
राजस्थान सरकार ने युवाओं को सेवा क्षेत्र की चुनौतियों हेतु तैयार करने के लिए कौशल विकास को रोजगार योजनाओं से जोड़ा है। मुख्यमंत्री युवा संबल योजना जैसी पहलों के तहत बेरोजगार युवाओं को भत्ता प्रदान किया जाता है, लेकिन इसके लिए कौशल प्रशिक्षण लेना या किसी विभाग में इंटर्नशिप पूरी करना अनिवार्य है। यह नीति युवाओं को केवल आर्थिक सहायता देने के बजाय उन्हें कार्य अनुभव प्रदान करने और उनके कौशल को उद्योग के मानकों के अनुरूप ढालने पर केंद्रित है, जिससे उनकी भविष्य में रोजगार प्राप्त करने की क्षमता बढ़ती है।

95. (1) आर्थिक विकास का विकेंद्रीकरण
राजस्थान सरकार की रणनीति अब बड़े शहरों के साथ-साथ छोटे शहरों में भी व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देने की है। कंपनियों को इन शहरों में अपने कार्यालय खोलने हेतु प्रोत्साहित करना 'आर्थिक विकास के विकेंद्रीकरण' का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे बड़े शहरों पर जनसंख्या का दबाव कम होता है और स्थानीय युवाओं को उनके ही गृह क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। यह रणनीति राज्य के संतुलित क्षेत्रीय विकास और ग्रामीण-शहरी अंतर को कम करने के दीर्घकालिक लक्ष्य की दिशा में एक प्रभावी कदम है।

96. (2) किफायती, गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा देखभाल और पर्यटन अनुभवों हेतु राजस्थान की यात्रा करना।
राजस्थान में "मेडिकल टूरिज्म" एक उभरता हुआ क्षेत्र है, जहाँ लोग स्वास्थ्य उपचार के साथ-साथ पर्यटन का आनंद लेते हैं। जयपुर और जोधपुर जैसे शहरों में उपलब्ध विश्व स्तरीय चिकित्सा सुविधाएँ और विशेषज्ञ डॉक्टर बाहरी मरीजों को आकर्षित करते हैं। उपचार की लागत विकसित देशों की तुलना में यहाँ कम है। जब मरीज इलाज के बाद राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत और स्थलों का भ्रमण करते हैं, तो यह चिकित्सा और पर्यटन का एक अनूठा संगम बन जाता है, जिससे राज्य की आय और प्रतिष्ठा बढ़ती है।

97. (2) रोजगार सृजन और संपत्तियों के संरक्षण में।
राजस्थान की 'विरासत होटल' (Heritage Hotel) नीति पुरानी हवेलियों और किलों को संरक्षित करने की एक सफल पहल है। निजी मालिकों को अपनी ऐतिहासिक संपत्तियों को होटलों में बदलने की अनुमति देकर सरकार ने उनके रखरखाव के लिए आवश्यक राजस्व का स्रोत सुनिश्चित किया है। इससे न केवल ये ऐतिहासिक भवन नष्ट होने से बचते हैं, बल्कि स्थानीय स्तर पर बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर भी पैदा होते हैं। यह नीति राजस्थान की ऐतिहासिक पहचान को बनाए रखते हुए उसे एक लाभप्रद आर्थिक संसाधन में बदलने में सहायक सिद्ध हुई है।

98. (1) डिजिटल सेवा और नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग (KPO) निर्यात
जोधपुर जैसे शहर से इंटरनेट के माध्यम से विदेशी ग्राहकों को वित्तीय लेखांकन या डेटा विश्लेषण जैसी विशेषज्ञ सेवाएँ प्रदान करना 'नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग' (KPO) का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह दर्शाता है कि भौगोलिक दूरियां अब व्यापार में बाधा नहीं हैं। राजस्थान के कुशल पेशेवर उच्च मूल्य वाली डिजिटल सेवाएँ प्रदान कर विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहे हैं। यह रुझान राज्य के सेवा क्षेत्र के निर्यात में वृद्धि कर रहा है और राजस्थान को एक वैश्विक ज्ञान-आधारित सेवा केंद्र के रूप में विकसित होने के नए अवसर प्रदान कर रहा है।

99. (3) यह केवल घरेलू मरीजों तक सीमित है; विदेशियों का उपचार प्रतिबंधित है।
राजस्थान में मेडिकल टूरिज्म के संबंध में यह धारणा पूर्णतः गलत है कि यहाँ विदेशियों का इलाज प्रतिबंधित है। वास्तव में, राजस्थान के निजी अस्पताल सक्रिय रूप से अंतरराष्ट्रीय मरीजों का स्वागत करते हैं और उन्हें उच्च स्तरीय सेवाएँ प्रदान करते हैं। जयपुर जैसे शहर विशेष रूप से हृदय रोग और हड्डी रोग के इलाज के केंद्रों के रूप में उभरे हैं। आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा जैसी सेवाएँ भी विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। राज्य सरकार इस क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने हेतु निरंतर प्रयासरत है।

100. (4) आईटी (IT), आईटीईएस (ITeS) और डिजिटल अर्थव्यवस्था सेवाएँ
राजस्थान के सेवा क्षेत्र के भविष्य के विकास के लिए सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और डिजिटल अर्थव्यवस्था को सबसे शक्तिशाली 'इंजन' माना जाता है। कृषि और पारंपरिक उद्योगों की अपनी सीमाएँ हैं, लेकिन डिजिटल सेवाओं में असीमित विस्तार की क्षमता है। स्टार्टअप्स के लिए बढ़ता समर्थन, फिनटेक पार्कों का विकास और बढ़ती इंटरनेट पहुँच इस क्षेत्र को गति दे रही है। यह न केवल उच्च-गुणवत्ता वाले रोजगार सृजित करेगा, बल्कि शासन में पारदर्शिता लाने और राज्य को आधुनिक ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में भी अग्रणी भूमिका निभाएगा।

www.nodia.in

NODIA

85. (3) डेक्कन ओडिसी
विलासितापूर्ण ट्रेनों के संचालन में राजस्थान और भारतीय रेलवे का सहयोग विश्व प्रसिद्ध है। 'पैलेस ऑन व्हील्स', 'रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स' और 'हेरिटेज ऑन व्हील्स' मुख्य रूप से राजस्थान के विभिन्न किलों और ऐतिहासिक शहरों को कवर करती हैं। इसके विपरीत, 'डेक्कन ओडिसी' एक ऐसी लक्ज़री ट्रेन है जो मुख्य रूप से महाराष्ट्र के पर्यटन स्थलों और कोंकण क्षेत्र को कवर करती है। यद्यपि इसका मानक ऊँचा है, परंतु यह राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) के प्राथमिक राजस्थान-केंद्रित परिपथ (सर्किट) का हिस्सा नहीं है।

86. (2) यह राजस्थान में शूटिंग करने वाले निर्माताओं को वित्तीय सब्सिडी प्रदान करती है।
राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति, 2022 का मुख्य उद्देश्य फिल्म निर्माताओं को राज्य की ओर आकर्षित करना है ताकि यहाँ के पर्यटन को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा मिल सके। इस नीति के तहत, राजस्थान में अपनी फिल्मों की शूटिंग करने वाले निर्माताओं को वित्तीय सब्सिडी और स्टाम्प ड्यूटी में छूट जैसे प्रोत्साहन दिए जाते हैं। यह नीति फिल्म निर्माण की प्रक्रिया को सुगम बनाकर न केवल स्थानीय रोजगार सृजित करती है, बल्कि भविष्य में फिल्मों के माध्यम से राज्य के स्थलों की ब्रांडिंग भी सुनिश्चित करती है।

87. (1) II, IV, I, III
फिल्म पर्यटन नीति के तहत लाभ प्राप्त करने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया निर्धारित है। सबसे पहले निर्माताओं को एकल खिड़की प्रणाली (सिंगल-विंडो सिस्टम) के माध्यम से शूटिंग की अनुमति हेतु आवेदन करना होता है। अनुमति मिलने के बाद, वास्तविक शूटिंग राज्य के स्वीकृत स्थलों पर संपन्न की जाती है। शूटिंग पूरी होने के पश्चात, सब्सिडी के सत्यापन हेतु तैयार फिल्म को नोडल एजेंसी के समक्ष प्रस्तुत करना होता है। अंत में, सभी शर्तों की पूर्ति सुनिश्चित होने के बाद राज्य सरकार द्वारा प्रोत्साहन राशि का वितरण किया जाता है।

88. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान के कई ऐतिहासिक स्थल फिल्म निर्माताओं के पसंदीदा शूटिंग गंतव्य रहे हैं। जोधपुर का प्रसिद्ध मेहरानगढ़ किला अपनी भव्यता के लिए जाना जाता है। जयपुर में स्थित आमेर किला ऐतिहासिक फिल्मों की शूटिंग का केंद्र रहा है। राजसमंद जिले में स्थित कुंभलगढ़ किला अपनी विशाल दीवारों के कारण प्रसिद्ध है। जैसलमेर के सैम सैंड ड्यून्स (रेत के टीले) मरुस्थलीय दृश्यों के फिल्मांकन के लिए विश्व भर में लोकप्रिय हैं। ये सभी स्थल राजस्थान को एक वैश्विक फिल्म गंतव्य के रूप में मजबूती से स्थापित करते हैं।

89. (3) राज्य के स्वामित्व वाले स्मारकों पर दैनिक शूटिंग शुल्क से छूट।
फिल्म निर्माताओं को राजस्थान की ओर आकर्षित करने के लिए सरकार ने शूटिंग की लागत कम करने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण वित्तीय रियायतें दी हैं। राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति के अंतर्गत, राज्य के पुरातत्व विभाग के नियंत्रण वाले स्मारकों और ऐतिहासिक स्थलों पर फिल्म की शूटिंग के लिए लिए जाने वाले दैनिक शुल्क को पूर्णतः माफ कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त, निर्माताओं को सुरक्षा और अन्य प्रशासनिक प्रक्रियाओं में भी प्राथमिकता दी जाती है, जिससे राजस्थान में बड़े बजट की फिल्मों का फिल्मांकन करना अब काफी किफायती हो गया है।

90. (1) 'डेस्टिनेशन ब्रांडिंग' जिससे पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होती है।
फिल्म पर्यटन का सबसे बड़ा और दीर्घकालिक लाभ 'डेस्टिनेशन ब्रांडिंग' के रूप में उभरता है। जब कोई लोकप्रिय फिल्म या वेब सीरीज राजस्थान के खूबसूरत किलों और संस्कृति को दिखाती है, तो वह दर्शकों के मन में उस स्थान को देखने की तीव्र इच्छा जागृत करती है। इससे भविष्य में पर्यटकों के आगमन में भारी वृद्धि होती है, जिसे 'सिनेमा प्रेरित पर्यटन' कहा जाता है। यह प्रक्रिया स्थानीय व्यापार, परिवहन और आतिथ्य क्षेत्र को निरंतर नई ऊर्जा प्रदान करती है और राज्य की वैश्विक छवि को सुदृढ़ करती है।

91. (1) केवल कथन I सही है
राजस्थान के सेवा क्षेत्र का विकास वर्तमान में भौगोलिक रूप से असंतुलित है। अधिकांश आईटी कंपनियाँ, उच्च स्तरीय अस्पताल और बड़े शॉपिंग मॉल जयपुर, जोधपुर और उदयपुर जैसे विकसित शहरी केंद्रों तक ही सीमित हैं। यह शहरी संकेंद्रण ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों के निवासियों के लिए गुणवत्तापूर्ण सेवाओं और रोजगार के अवसरों तक पहुँच को कठिन बनाता है। राज्य के सभी जिलों में समान आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए सरकार अब छोटे शहरों में बुनियादी ढांचे के विस्तार पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

92. (2) रिक्तियों के बावजूद स्नातकों में उच्च बेरोजगारी।
राजस्थान के सेवा क्षेत्र में कौशल अंतराल एक गंभीर चुनौती है। इसका अर्थ यह है कि शैक्षिक संस्थानों से निकलने वाले स्नातकों के पास वे व्यावहारिक और तकनीकी कौशल नहीं होते जिनकी मांग आधुनिक सेवा उद्योग, जैसे आईटी और वित्तीय सेवाओं में होती है। परिणामस्वरुप, बाजार में रोजगार के अवसर और रिक्तियां होने के बावजूद, उपयुक्त कौशल की कमी के कारण बड़ी संख्या में युवा बेरोजगार रह जाते हैं। यह स्थिति शिक्षा प्रणाली और उद्योग की आवश्यकताओं के बीच तालमेल की कमी को स्पष्ट रूप से उजागर करती है।

93. (3) भारी मशीनरी के निर्यात हेतु विशाल समुद्री बंदरगाहों का अभाव।
सेवा क्षेत्र, विनिर्माण क्षेत्र के विपरीत, मुख्य रूप से ज्ञान और सूचना पर आधारित होता है। इसलिए, विशाल समुद्री बंदरगाहों का अभाव राजस्थान के सेवा क्षेत्र के विकास में कोई बड़ी भौतिक बाधा नहीं है, क्योंकि सेवा निर्यात डिजिटल माध्यमों से होता है। हालांकि, सेवा क्षेत्र के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की कमी, बिजली की अनियमितता और छोटे जिलों में आधुनिक परिवहन तथा कार्यालय स्थलों का अभाव वास्तविक बुनियादी ढांचागत चुनौतियां हैं। सेवा अर्थव्यवस्था के फलने-फूलने के लिए मुख्य रूप से डिजिटल कनेक्टिविटी अनिवार्य है।

Click Here to Buy book on Amazon

प्रदान करती है। हालांकि, राज्य सरकार इन कंपनियों पर अपने 100% उत्पादों का निर्यात करने की कोई अनिवार्य शर्त नहीं लगाती है। कंपनियाँ घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में सेवाएँ देने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

21. (3) इनक्यूबेशन, फंडिंग और मेंटरशिप सहायता के माध्यम से स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना।
राजस्थान सरकार की 'आई-स्टार्ट' पहल राज्य में नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए शुरू की गई है। इसका प्राथमिक उद्देश्य नए स्टार्टअप्स को एक एकीकृत मंच प्रदान करना है, जहाँ उन्हें विशेषज्ञ मार्गदर्शन, आवश्यक वित्तीय सहायता (फंडिंग) और उद्भवन (इनक्यूबेशन) जैसी सुविधाएँ मिल सकें। यह कार्यक्रम युवाओं को रोजगार खोजने के बजाय रोजगार सृजित करने हेतु प्रेरित करता है, जिससे राज्य के तकनीकी विकास को नई ऊर्जा प्राप्त होती है।

22. (2) राज-काज (Raj-Kaj) - सरकारी अधिकारियों के लिए एकीकृत इलेक्ट्रॉनिक कार्यक्षेत्र
राजस्थान सरकार ने प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता लाने के लिए विभिन्न डिजिटल पोर्टल विकसित किए हैं। 'राज-काज' एक ऐसा एकीकृत मंच है जो सरकारी अधिकारियों के लिए इलेक्ट्रॉनिक कार्यक्षेत्र के रूप में कार्य करता है, जिसमें फाइलों का निपटान और अवकाश प्रबंधन डिजिटल रूप से होता है। राज-नेट संपर्क (कनेक्टिविटी) हेतु है, राज-ईसाइन डिजिटल हस्ताक्षर के लिए है और ई-मित्र आम नागरिकों को विविध सार्वजनिक सेवाएँ प्रदान करने वाला एक विस्तृत नेटवर्क है।

23. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान की डिजिटल पहलों का उद्देश्य सुशासन और नागरिक सुविधा बढ़ाना है। जन आधार योजना 'एक नंबर, एक कार्ड, एक पहचान' के माध्यम से परिवारों को सरकारी लाभ प्रदान करती है। राज ई-वॉल्ट नागरिकों को अपने महत्वपूर्ण दस्तावेजों को सुरक्षित डिजिटल रूप में संग्रहीत करने की सुविधा देता है। राजस्थान संपर्क पोर्टल जनता की शिकायतों के निवारण हेतु समर्पित है। जन सूचना पोर्टल सरकारी योजनाओं की जानकारी पारदर्शी रूप से सार्वजनिक करता है।

24. (1) केवल I और II
राजस्थान सरकार ने डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत करने हेतु महत्वपूर्ण निवेश किया है। 'राज-मेघ' राज्य का अपना क्लाउड और डेटा सेंटर वातावरण है जो विभिन्न विभागों को सुरक्षित डेटा भंडारण की सुविधा प्रदान करता है। 'राज-नेट' एक विशाल नेटवर्क है जिसका उद्देश्य ग्राम पंचायत स्तर तक उच्च गति की संपर्क सुविधा (कनेक्टिविटी) सुनिश्चित करना है। इसके विपरीत, 'राज-वाई-फाई' पहल का लक्ष्य सार्वजनिक स्थलों पर भी इंटरनेट की आसान पहुँच उपलब्ध कराना है।

25. (3) राज-नेट बुनियादी ढांचे द्वारा प्रदान की गई कनेक्टिविटी के साथ ई-बाजार (E-Bazaar) पोर्टल का उपयोग।
डिजिटल अर्थव्यवस्था ने दूरदराज के क्षेत्रों के उद्यमियों के लिए नए द्वार खोले हैं। राजस्थान का ई-बाजार पोर्टल एक ऐसा मंच है जो स्थानीय कारीगरों को बिना किसी भौतिक दुकान के अपने उत्पादों को ऑनलाइन प्रदर्शित करने और बेचने की अनुमति देता है। जब इसे राज-नेट जैसे मजबूत कनेक्टिविटी नेटवर्क के साथ जोड़ा जाता है, तो एक ग्रामीण उद्यमी सीधे वैश्विक ग्राहकों तक पहुँच सकता है। यह पहल मध्यस्थों को हटाकर स्थानीय आय बढ़ाने में सहायक है।

26. (1) केवल कथन I सही है
राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में 'बैंक मित्र' या व्यावसायिक प्रतिनिधियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ये प्रतिनिधि बैंकिंग सेवाओं को सीधे लोगों के घर तक पहुँचाकर अंतिम मील तक पहुँच सुनिश्चित करते हैं। हालांकि, राज्य की विशाल भौगोलिक स्थिति और विरल जनसंख्या के कारण यह कहना गलत होगा कि प्रत्येक ग्रामीण परिवार के एक किलोमीटर के दायरे में एक भौतिक बैंक शाखा उपलब्ध है। कई क्षेत्रों में लोग डिजिटल बैंकिंग पर निर्भर हैं।

NODIA

27. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के मरुस्थलीय जिलों में बैंकिंग नेटवर्क का विस्तार एक जटिल चुनौती बना हुआ है। यहाँ जनसंख्या घनत्व अत्यंत कम है और दूरियां बहुत अधिक हैं, जिससे पारंपरिक बैंक शाखाओं का संचालन आर्थिक रूप से कठिन हो जाता है। इसके साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय साक्षरता की कमी के कारण लोग डिजिटल सेवाओं को अपनाने में संकोच करते हैं। यही कारण है कि इन कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में पूर्ण वित्तीय समावेशन प्राप्त करना अभी भी एक बड़ी बाधा है।

28. (2) बैंक ऑफ बड़ौदा
राजस्थान में बैंकिंग गतिविधियों के समन्वय और राज्य की विकास प्राथमिकताओं के साथ उनके संरेखण के लिए राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (SLBC) एक महत्वपूर्ण मंच है। राजस्थान के संदर्भ में, बैंक ऑफ बड़ौदा इस समिति के संयोजक बैंक के रूप में कार्य करता है। इसका मुख्य कार्य विभिन्न बैंकों, सरकारी विभागों और भारतीय रिजर्व बैंक के बीच तालमेल बैठाना है ताकि कृषि ऋण और वित्तीय समावेशन जैसे लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सके।

29. (3) स्वयं सहायता समूहों (SHG) का सुदृढ़ीकरण और क्षेत्रीय सूक्ष्म वित्त नेटवर्क का लाभ उठाना।
राजस्थान में सीमांत और छोटे किसानों के लिए ऋण की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु स्वयं सहायता समूहों और सूक्ष्म वित्त संस्थानों का जाल बिछाना सबसे प्रभावी रणनीति है। ये समूह स्थानीय स्तर पर बचत और ऋण की आदत विकसित करते हैं, जिससे उन किसानों को वित्तीय सहायता मिलती है जो पारंपरिक बैंकों की जटिल कागजी कार्रवाई पूरी नहीं कर पाते। क्षेत्रीय सूक्ष्म वित्त नेटवर्क के माध्यम से ऋण का वितरण आसान होता है, जो ग्रामीण आर्थिक सशक्तिकरण के लिए अनिवार्य है।

30. (1) केवल I, II और III
राजस्थान में ग्रामीण बैंकिंग को सशक्त बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। राजस्थान मरुधरा ग्रामीण बैंक जैसे क्षेत्रीय बैंकों ने अपनी पहुँच का विस्तार किया है। प्रधानमंत्री

अध्याय 15
राजस्थान में ऊर्जा अवसंरचना

1. हाल के आकलनों के अनुसार, राजस्थान में स्थापित ऊर्जा क्षमता के सामान्य अवलोकन को निम्नलिखित में से कौन सा कथन सर्वाधिक सटीक रूप से दर्शाता है?
(1) जलविद्युत परियोजनाएं अब कुल स्थापित क्षमता में प्राथमिक और सबसे बड़ी हिस्सेदारी रखती हैं।
(2) राज्य की कुल स्थापित क्षमता में अब सौर और पवन जैसी नवीकरणीय ऊर्जा, तापीय ऊर्जा से अधिक हो गई है।
(3) राज्य पूरी तरह से केंद्रीय क्षेत्र के आवंटन पर निर्भर है और इसका अपना कोई राज्य-स्वामित्व वाला उत्पादन नहीं है।
(4) कोयला आधारित तापीय ऊर्जा आधार भार (बेस लोड) के लिए एकमात्र योगदानकर्ता बनी हुई है और इसमें हरित ऊर्जा का कोई प्रवेश नहीं है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. राजस्थान में ऊर्जा परिदृश्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान में भारत के सभी राज्यों में सौर ऊर्जा की सर्वाधिक स्थापित क्षमता है।
II. कम उत्पादन के कारण उच्च मांग के घंटों (पीक ऑवर्स) के दौरान राज्य बिजली का शुद्ध आयातक है।
III. तापीय ऊर्जा आधार-भार ग्रिड स्थिरता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहती है।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और III
(2) केवल I और II
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. राजस्थान के ऊर्जा क्षेत्र के संदर्भ में, राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (RVUNL) का प्राथमिक कार्य क्या है?
(1) अंतिम उपभोक्ताओं की सभी श्रेणियों को बिजली के व्यापक वितरण की देखरेख करना।
(2) राज्य में बिजली शुल्क निर्धारित करने के लिए उत्तरदायी नियामक निकाय के रूप में कार्य करना।
(3) राज्य के स्वामित्व वाली सभी बिजली उत्पादन सुविधाओं और संयंत्रों का विकास और संचालन करना।
(4) नवीकरणीय ऊर्जा विकास को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीकृत नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): पिछले दशक में राजस्थान की कुल स्थापित क्षमता में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी में तीव्र वृद्धि देखी गई है।
कारण (R): पश्चिमी राजस्थान की स्थलाकृतिक और जलवायु परिस्थितियाँ, जो उच्च सौर विकिरण और बंजर भूमि की उपलब्धता की विशेषता रखती हैं, बड़े पैमाने पर सौर परियोजना स्थापनाओं के अत्यधिक अनुकूल हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. राजस्थान के वर्तमान ऊर्जा परिदृश्य के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) राजस्थान ने अपने इच्छित गैर-विद्युतीकृत जनगणना गांवों का 100% विद्युतीकरण प्राप्त कर लिया है।
(2) राज्य अतिरिक्त नवीकरणीय ऊर्जा के निर्यात के लिए अंतरराज्यीय पारेषण प्रणाली का व्यापक उपयोग करता है।
(3) नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन क्षेत्र में निजी क्षेत्र की भागीदारी पूर्णतः प्रतिबंधित है।
(4) बायोमास ऊर्जा ग्रामीण ऊर्जा संरचना का एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण हिस्सा है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्रमुख तापीय ऊर्जा संयंत्र)
A. सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन
B. छबड़ा सुपर थर्मल पावर प्लांट
C. कालीसिंध थर्मल पावर स्टेशन
D. कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन
सूची II: (राजस्थान के जिले)
i. बारां
ii. कोटा
iii. श्रीगंगानगर

Downloaded from www.pdf.tube

(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. RREC के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह पूरी तरह से निजी संस्था के रूप में कार्य करता है जो राज्य के नियंत्रण से स्वतंत्र है।
(2) यह नवीकरणीय परियोजनाओं की निगरानी करता है और संबंधित राज्य नीतियां तैयार करता है।
(3) यह विशेष रूप से राज्य में बड़े पैमाने पर जलविद्युत परियोजनाओं के विकास पर ध्यान केंद्रित करता है।
(4) यह जयपुर शहर में आवासीय उपभोक्ताओं को बिजली वितरित करने के लिए उत्तरदायी निकाय है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड (RRECL) का मुख्यालय कहाँ स्थित है?
(1) जोधपुर
(2) बीकानेर
(3) अजमेर
(4) जयपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (डिस्कॉम)
A. जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
B. अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
C. जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
D. कोटा शहर में बिजली वितरण (फ्रेंचाइजी)
सूची II: (अधिकार क्षेत्र के जिले)
i. बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर
ii. भीलवाड़ा, नागौर, सीकर
iii. अलवर, भरतपुर, दौसा
iv. CESC लिमिटेड
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. वर्ष 2000 में पूर्व राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड (RSEB) का विखंडन मुख्य रूप से किस अवधारणा से प्रेरित था?
(1) ऊर्जा क्षेत्र की सभी गतिविधियों को एक एकीकृत कमान के तहत केंद्रित करना।
(2) राज्य के संपूर्ण बिजली बुनियादी ढांचे के पूर्ण निजीकरण की योजना को लागू करना।
(3) परिचालन दक्षता में सुधार के लिए उत्पादन, पारेषण और वितरण को अलग करना।
(4) केवल शहरी औद्योगिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए ग्रामीण विद्युतीकरण कार्यक्रमों को समाप्त करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. राजस्थान में बिजली वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. JdVVNL तीनों डिस्कॉम में सर्वाधिक जिलों को कवर करता है।
II. JdVVNL अत्यधिक मरुस्थल बहुल पश्चिमी जिलों में कार्य करता है, जिससे बुनियादी ढांचे की लागत अधिक होती है।
III. डिस्कॉम मुख्य रूप से राजस्थान ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड (RUVNL) के माध्यम से बिजली खरीदते हैं।
IV. राजस्थान में वितरण नेटवर्क को लंबी पारेषण लाइनों और विरल जनसंख्या घनत्व जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
V. राजस्थान के डिस्कॉम ने पिछले एक दशक में लगातार भारी शुद्ध लाभ दर्ज किया है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और V
(2) केवल I और II
(3) केवल III और IV
(4) II, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

59. निम्नलिखित में से कौन सा जिला अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (AVVNL) के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता है?
(1) उदयपुर
(2) चित्तौड़गढ़
(3) झुंझुनू
(4) जोधपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): राजस्थान डिस्कॉम ने कोटा, भरतपुर और बीकानेर जैसे शहरों में वितरण फ्रेंचाइजी मॉडल का प्रयोग किया है।
कारण (R): फ्रेंचाइजी मॉडल को तकनीकी और वाणिज्यिक हानियों को कम करने, बिलिंग दक्षता में सुधार करने और निजी क्षेत्र की विशेषज्ञता के माध्यम से ग्राहक सेवा बढ़ाने के लिए पेश किया गया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. बिजली पारेषण के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड (RVPNL) राज्य में हाई-वोल्टेज पारेषण नेटवर्क (132 kV

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

14. अपवाद को पहचानें। निम्नलिखित सभी राजस्थान में प्रमुख कोयला या लिग्नाइट आधारित तापीय ऊर्जा परियोजनाएं हैं, सिवाय:
(1) गिरल तापीय ऊर्जा परियोजना
(2) बरसिंगसर तापीय ऊर्जा स्टेशन
(3) भद्रेश (राज वेस्ट) पावर प्रोजेक्ट
(4) रामगढ़ गैस तापीय ऊर्जा स्टेशन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस स्रोत से अपनी शीतलन जल आवश्यकताओं को पूरा करता है?
(1) कोटा बैराज के माध्यम से चंबल नदी
(2) बीसलपुर बांध
(3) जवाई बांध
(4) माही बजाज सागर बांध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (परमाणु रिएक्टर प्रकार/परियोजनाएं)
A. RAPS इकाइयाँ 1 और 2
B. RAPS इकाइयाँ 7 और 8
C. RAPS में प्रयुक्त ईंधन
D. RAPS में प्रयुक्त मंदक
सूची II: (विशेषताएं/स्थान)
i. भारी जल
ii. प्राकृतिक यूरेनियम
iii. पुरानी पीढ़ी के क्षमता मॉडल (100-200 मेगावाट)
iv. स्वदेशी 700 मेगावाट दाबित भारी जल रिएक्टर
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. रावतभाटा स्थित राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन (RAPS) निम्नलिखित में से किस रिएक्टर तकनीक पर कार्य करता है?
(1) क्वथनांक जल रिएक्टर (BWR)
(2) दाबित भारी जल रिएक्टर (PHWR)
(3) तीव्र प्रजनक रिएक्टर (FBR)
(4) हल्का जल रिएक्टर (LWR)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन (RAPS) रणनीतिक रूप से चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा में स्थित है।
कारण (R): चंबल नदी पर राणा प्रताप सागर बांध से प्रचुर मात्रा में जल की उपलब्धता परमाणु रिएक्टरों की शीतलन आवश्यकताओं के लिए आवश्यक है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. रावतभाटा में राजस्थान परमाणु ऊर्जा परियोजना (RAPP) में नई विकसित इकाइयों 7 और 8 की व्यक्तिगत क्षमता क्या है?
(1) 220 मेगावाट प्रत्येक
(2) 500 मेगावाट प्रत्येक
(3) 700 मेगावाट प्रत्येक
(4) 1000 मेगावाट प्रत्येक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. राजस्थान की परमाणु ऊर्जा क्षमता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. RAPS भारत में निर्मित पहला वाणिज्यिक परमाणु ऊर्जा स्टेशन है।
II. RAPS की स्थापना कनाडा के तकनीकी सहयोग से की गई थी।
III. बांसवाड़ा को राजस्थान में एक नए परमाणु ऊर्जा संयंत्र के लिए स्थल के रूप में प्रस्तावित किया गया है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) I, II और III
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. संयुक्त जलविद्युत परियोजनाओं और उनमें राजस्थान की हिस्सेदारी के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही युग्म है?
(1) भाखड़ा नांगल परियोजना - राजस्थान और गुजरात
(2) माही बजाज सागर परियोजना - राजस्थान और मध्य प्रदेश
(3) चंबल घाटी परियोजना - राजस्थान और मध्य प्रदेश
(4) ब्यास परियोजना - राजस्थान और उत्तर प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. राजस्थान की राज्य सीमाओं के भीतर सीमित घरेलू जलविद्युत उत्पादन क्षमता का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) कठोर पर्यावरणीय नियम और नीतियां जो किसी भी बांध निर्माण को रोकती हैं।
(2) बारहमासी नदियों का अभाव और सामान्यतः शुष्क से अर्ध-शुष्क जलवायु परिस्थितियाँ।
(3) जलविद्युत क्षेत्र में राज्य सरकार द्वारा अपर्याप्त पूंजी निवेश।
(4) आधुनिक सौर ऊर्जा की तुलना में जलविद्युत तकनीक की उच्च सापेक्ष लागत।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

उपयोग को पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?

(1) I, II और IV
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. राजस्थान में सौभाग्य योजना से DDUGJY (दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना) को अलग करने वाले गलत कथन की पहचान करें:

(1) DDUGJY ने ग्राम-स्तर के विद्युत बुनियादी ढांचे और फीडर पृथक्करण पर ध्यान केंद्रित किया।
(2) सौभाग्य ने घरेलू स्तर पर अंतिम छोर तक पहुंच (लास्ट-माइल कनेक्टिविटी) पर ध्यान केंद्रित किया।
(3) DDUGJY विशेष रूप से केवल शहरी नगर पालिका क्षेत्रों के लिए निर्मित की गई थी।
(4) दोनों योजनाओं का उद्देश्य राज्य की समग्र विद्युतीकरण स्थिति में सुधार करना था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. कौन सा केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम राजस्थान सहित राज्यों में प्रमुख ग्रामीण विद्युतीकरण योजनाओं के वित्तपोषण और निगरानी के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है?

(1) पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (PGCIL)
(2) रूरल इलेक्ट्रीफिकेशन कॉर्पोरेशन (REC) लिमिटेड
(3) सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (SECI)
(4) नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन (NTPC)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. राजस्थान के ऊर्जा क्षेत्र की चुनौतियों के संदर्भ में, AT&C हानियों का क्या अर्थ है?

(1) औसत पारेषण और वाणिज्यिक हानियाँ
(2) वार्षिक शुल्क और संग्रह हानियाँ
(3) उन्नत तकनीकी और उपभोक्ता हानियाँ
(4) सकल तकनीकी और वाणिज्यिक हानियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. हाल के सुधारों से पहले राजस्थान में डिस्कॉम की खराब वित्तीय स्थिति की व्याख्या करने वाला सबसे प्रत्यक्ष कार्य-कारण संबंध कौन सा है?

(1) रियायती कृषि आपूर्ति और उच्च AT&C हानियों के कारण ऋण बढ़ता गया।
(2) सौर ऊर्जा पर अत्यधिक निर्भरता के कारण भारी लाभ हुआ जिसे करों से बचने के लिए छिपाया गया।
(3) उच्च औद्योगिक शुल्क के कारण सभी उद्योग पूर्णतः बंद हो गए और राजस्व शून्य हो गया।
(4) स्मार्ट मीटरों के व्यापक उपयोग के कारण उपभोक्ताओं ने बिजली का उपयोग करना बंद कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

73. राजस्थान में उदय (UDAY) योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. उदय योजना में शामिल होने वाले प्रथम राज्यों में राजस्थान एक था।
II. योजना का उद्देश्य डिस्कॉम के वित्तीय और परिचालन में सुधार करना था।
III. उदय के तहत, राज्य सरकार ने डिस्कॉम के 75% ऋण को अपने ऊपर ले लिया।
IV. उदय ने ऋण चुकाने के लिए राज्य सरकार के बॉन्ड जारी करना अनिवार्य किया।
V. उदय के बाद, राजस्थान डिस्कॉम ने तुरंत स्थायी रूप से शून्य AT&C हानियाँ प्राप्त कर लीं।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?

(1) I, II, IV और V
(2) II, III, IV और V
(3) I, II, III और IV
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. उदय योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा काफी ऋण अपने ऊपर लेने के बावजूद, राजस्थान डिस्कॉम के लिए कौन सी चुनौती अभी भी बनी हुई है?

(1) आपूर्ति की औसत लागत (ACS) और प्राप्त औसत राजस्व (ARR) के बीच निरंतर अंतर।
(2) राज्य की सीमाओं के भीतर किसी भी घरेलू जलविद्युत का उत्पादन करने में असमर्थता।
(3) ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में निजी उपभोक्ताओं का पूर्ण अभाव।
(4) केंद्रीय क्षेत्र के ग्रिड नेटवर्क से बिजली खरीदने पर प्रतिबंध।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. अपवाद को पहचानें। निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान बिजली वितरण नेटवर्क में उच्च AT&C हानियों का प्राथमिक कारण नहीं है?

(1) बिजली चोरी और बिना मीटर वाले कनेक्शन।
(2) विरल आबादी की सेवा करने वाली लो-टेंशन (LT) लाइनों की अत्यधिक लंबाई।
(3) कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में अक्षम बिलिंग और खराब संग्रह दक्षता।
(4) राज्य पारेषण केबलों में कुशल सुपरकंडक्टिंग सामग्री का उपयोग।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. राजस्थान में स्मार्ट मीटरों की व्यापक स्थापना वर्तमान में किस प्रमुख केंद्र सरकार की योजना के तहत की जा रही है?

(1) पीएम कुसुम (PM KUSUM)
(2) संशोधित वितरण क्षेत्र योजना (RDSS)
(3) उज्ज्वला योजना
(4) पीएम आवास योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

उपरोक्त में से कौन सा कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) II, III और IV
(3) केवल IV और V
(4) केवल III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. राजस्थान में भारत की सर्वाधिक सौर विकिरण क्षमता होने का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) थार मरुस्थल से निकटता और कर्क रेखा के पास इष्टतम स्थिति।
(2) राज्य सीधे भूमध्य रेखा पर स्थित है जहाँ सूर्य की किरणें सदैव लंबवत होती हैं।
(3) राज्य में विशाल उच्च ऊंचाई वाले पठार हैं जो भौतिक रुप से सूर्य के अधिक निकट हैं।
(4) राज्य में तीव्र मानसूनी वर्षा होती है जो वायुमंडलीय धूल को लगातार साफ करने में सहायता करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (सौर शब्दावली)
A. फोटोवोल्टिक
B. केंद्रित सौर ऊर्जा
C. सौर विकिरण
D. सोलर पार्क
सूची II: (राजस्थान के लिए प्रासंगिकता)
i. किसी दिए गए क्षेत्र तक पहुँचने वाली सौर विकिरण की मात्रा, जो पश्चिमी राजस्थान में सर्वाधिक है।
ii. सूर्य के प्रकाश का सीधे बिजली में रुपांतरण, जिसका व्यापक रूप से भड़ला में उपयोग किया जाता है।
iii. बिजली उत्पादन के लिए ऊष्मा उत्पन्न करने हेतु सूर्य के प्रकाश को केंद्रित करने के लिए दर्पणों/लेंसों का उपयोग करता है।
iv. सौर ऊर्जा उत्पादन परियोजनाओं के विकास के लिए केंद्रित क्षेत्र।
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. राजस्थान में औसत सौर विकिरण लगभग निम्नलिखित में से किस सीमा में है?
(1) 3.0 - 4.0 kWh/m2/दिन
(2) 4.5 - 5.0 kWh/m2/दिन
(3) 5.5 - 6.5 kWh/m2/दिन
(4) 7.5 - 8.5 kWh/m2/दिन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. सौर ऊर्जा के लिए पश्चिमी राजस्थान की स्थितियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह क्षेत्र कम लागत पर समतल, अविकसित भूमि का विशाल विस्तार प्रदान करता है।
II. इस क्षेत्र में अत्यधिक सघन आबादी है जो बड़े बिजली संयंत्रों के लिए तत्काल स्थानीय खपत प्रदान करती है।
III. इस क्षेत्र में बार-बार धूल भरी आंधियां चलती हैं जो सौर पैनल की दक्षता को अस्थायी रुप से कम कर सकती हैं।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल I और II
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

35. राजस्थान की सौर क्षमता के संबंध में गलत कथन की पहचान करें:
(1) जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर के पश्चिमी जिले राज्य के सौर ऊर्जा केंद्र हैं।
(2) उत्पादन को विकेंद्रीकृत करने के लिए राज्य के शहरी क्षेत्रों में छतों पर सौर प्रणालियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।
(3) राजस्थान की सौर नीति केवल राज्य के स्वामित्व वाली सार्वजनिक इकाइयों को सौर उत्पादन संयंत्र स्थापित करने की अनुमति देती है।
(4) उच्च पारेषण हानियाँ एक चुनौती है जिसे ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर परियोजना के माध्यम से संबोधित किया जा रहा है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. भड़ला सोलर पार्क के विकासात्मक चरणों को उनके कार्यान्वयन के सही क्रम में व्यवस्थित करें:
I. भड़ला चरण-III (1000 मेगावाट)
II. भड़ला चरण-I (65 मेगावाट)
III. भड़ला चरण-IV (500 मेगावाट)
IV. भड़ला चरण-II (680 मेगावाट)
(1) II, IV, I, III
(2) I, II, III, IV
(3) II, I, IV, III
(4) IV, II, III, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. भड़ला सोलर पार्क की कुल स्थापित क्षमता लगभग कितनी है, जो इसे विश्व का सबसे बड़ा सौर पार्क बनाती है?
(1) 1,500 मेगावाट
(2) 2,245 मेगावाट
(3) 3,500 मेगावाट
(4) 5,000 मेगावाट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (भड़ला सोलर पार्क चरण)
A. चरण II

B. चरण III
C. चरण IV
D. नोडल एजेंसी

सूची II: (विकास एजेंसियां/संयुक्त उद्यम)
i. सौर्य ऊर्जा कंपनी ऑफ राजस्थान लिमिटेड
ii. राजस्थान सोलर पार्क डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड
iii. अडानी रिन्यूएबल एनर्जी पार्क राजस्थान लिमिटेड
iv. राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. भड़ला सोलर पार्क मॉडल की सफलता मुख्य रूप से "प्लग-एंड-प्ले" अवधारणा पर आधारित है। ऊर्जा बुनियादी ढांचे के संदर्भ में इसका क्या तात्पर्य है?
(1) सौर पैनलों को बिना ग्रिड एकीकरण के सीधे आसपास के उपभोक्ता घरों से जोड़ा जाता है।
(2) विदेशी निवेशक राजस्थान में बिजली पैदा करते हैं और इसे सीधे अंतरराष्ट्रीय पारेषण ग्रिड से जोड़ते हैं।
(3) सोलर पार्क मानवीय हस्तक्षेप के बिना उन्नत रोबोटिक्स का उपयोग करके पूर्णतः संचालित होता है।
(4) सरकार सभी बुनियादी ढांचे के साथ विकसित भूमि प्रदान करती है, जिससे विकासकर्ता केवल संयंत्र स्थापित कर सकें।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. भड़ला सोलर पार्क के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राजस्थान के फलोदी जिले में स्थित है।
II. यह लगभग 14,000 एकड़ के कुल क्षेत्रफल में विस्तृत है।
III. पार्क को एक केंद्र सरकार की एजेंसी द्वारा एकल, एकीकृत चरण में विकसित किया गया था।
IV. इसने प्रतिस्पर्धी बोली के माध्यम से भारत में कुछ सबसे कम सौर ऊर्जा टैरिफ प्राप्त किए हैं।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. राजस्थान की पहली पवन ऊर्जा परियोजना कहाँ स्थापित की गई थी?
(1) देवगढ़ (प्रतापगढ़)
(2) बीठड़ी (जोधपुर)
(3) अमर सागर (जैसलमेर)
(4) फलोदी (जोधपुर)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में प्रमुख पवन फार्मों के संकेंद्रण का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) सघन वनों या ऊंचे पर्वतों से मुक्त उच्च वेग वाले पवन गलियारे।
(2) इन क्षेत्रों में उच्च जनसंख्या घनत्व जिससे तत्काल स्थानीय बिजली की मांग उत्पन्न होती है।
(3) सरकारी सब्सिडी संरचनाएं जो विशेष रूप से पश्चिमी सीमावर्ती जिलों के लिए उपलब्ध हैं।
(4) कई मौसमी झीलों की उपस्थिति जो महत्वपूर्ण वायुमंडलीय दबाव अंतर प्रदान करती हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. राजस्थान में पवन ऊर्जा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता के मामले में राजस्थान भारत में प्रथम स्थान पर है।
II. पवन और हाइब्रिड ऊर्जा नीति 2019 में शुरू की गई थी।
III. जैसलमेर को प्रायः राज्य की 'पवन ऊर्जा राजधानी' कहा जाता है।
IV. सुजलॉन जैसे निजी क्षेत्र के खिलाड़ियों ने राज्य में पवन फार्म स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभाई है।
V. पवन ऊर्जा उत्पादन मौसमी परिवर्तनों के बिना पूरे वर्ष पूरी तरह से सुसंगत रहता है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन गलत है/हैं?
(1) केवल II और III
(2) केवल III और IV
(3) I, II और V
(4) केवल I और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): राजस्थान सरकार पवन-सौर हाइब्रिड परियोजनाओं को व्यापक बढ़ावा देती है।
कारण (R): एक ही स्थान पर पवन और सौर उत्पादन को मिलाने से भूमि के उपयोग का अनुकूलन होता है और ग्रिड आपूर्ति संतुलित होती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. राजस्थान में एक प्रमुख पवन ऊर्जा पार्क और उसके संबंधित जिले का प्रतिनिधित्व करने वाले सही युग्म की पहचान करें:
(1) देवगढ़ - बीकानेर
(2) बीठड़ी - बाड़मेर
(3) सोडा बंधन - जैसलमेर
(4) हर्ष पर्वत - अलवर

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. राजस्थान में बायोमास ऊर्जा उत्पादन संयंत्रों के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाने वाला प्रमुख कृषि अवशेष कौन सा है?
(1) गन्ने की खोई
(2) चावल की भूसी
(3) गेहूं का डंठल
(4) सरसों की भूसी (जूलीफ्लोरा सहित)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. राजस्थान में बायोमास ऊर्जा पहल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बायोमास ऊर्जा परियोजनाएं कृषि अपशिष्ट की बिक्री के माध्यम से किसानों को आय का एक अतिरिक्त स्रोत प्रदान करती हैं।
II. आपूर्ति श्रृंखला की विसंगतियों और फसल अवशेषों की मौसमी उपलब्धता के कारण बायोमास संयंत्रों को परिचालन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
III. बायोमास ऊर्जा को राज्य नीति के तहत कड़ाई से एक अनवीकरणीय ऊर्जा स्रोत के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (बायोमास ऊर्जा परियोजनाएं)
A. पदमपुर बायोमास संयंत्र
B. रंगपुर बायोमास संयंत्र
C. खातौली बायोमास संयंत्र
D. चंदेरिया बायोमास संयंत्र
सूची II: (जिले)
i. टोंक
ii. कोटा
iii. चित्तौड़गढ़
iv. श्रीगंगानगर
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. राजस्थान में ग्रामीण ऊर्जा पहल के संदर्भ में, बायोगैस संयंत्रों को बढ़ावा देने का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) दूरदराज और विरल आबादी वाले ग्रामीण क्षेत्रों में सभी उच्च-वोल्टेज पारेषण लाइनों को बदलना।
(2) जैविक अपशिष्ट को घरों के लिए स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन और खाद में बदलना।
(3) पड़ोसी राज्यों में औद्योगिक केंद्रों को निर्यात के लिए मेगावाट-स्तर की बिजली उत्पन्न करना।
(4) सभी भारी कृषि मशीनरी और ट्रैक्टरों को पूरी तरह से स्थानीय रूप से उत्पादित बायोगैस पर चलाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. राजस्थान में बायोमास ऊर्जा उत्पादन के लिए सामान्यतः उपयोग किए जाने वाले ईंधन के स्रोतों में से विषम को चुनें:
(1) लिग्नाइट कोयला
(2) जूलीफ्लोरा (विलायती बबूल)
(3) सरसों की डंठल
(4) कपास की डंठल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड (RRECL) का गठन निम्नलिखित में से किन दो संस्थाओं के विलय से हुआ था?
(1) राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड (RSEB) और राजस्थान ऊर्जा विकास एजेंसी (REDA)
(2) राजस्थान विद्युत प्रसारण निगम और राजस्थान विद्युत उत्पादन निगम
(3) राजस्थान ऊर्जा विकास एजेंसी (REDA) और राजस्थान राज्य विद्युत निगम लिमिटेड (RSPCL)
(4) ऊर्जा दक्षता ब्यूरो और राजस्थान राज्य विद्युत निगम लिमिटेड
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

52. राजस्थान में ऊर्जा क्षेत्र के संस्थानों के सही क्रमिक विकास का चयन करें:
(1) RSEB का विखंडन → RVPNL/RVUNL/डिस्कॉम का गठन → RRECL का गठन
(2) RRECL का गठन → RSEB का विखंडन → REDA का गठन
(3) REDA का गठन → RSEB का विखंडन → RRECL का गठन
(4) RSEB का विखंडन → REDA का गठन → RRECL का गठन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम (RREC) के कार्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) के लिए राज्य नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है।
II. यह तापीय ऊर्जा संयंत्रों के बिजली शुल्क को विनियमित करने के लिए उत्तरदायी है।
III. यह ऊर्जा दक्षता ब्यूरो के तहत ऊर्जा संरक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा देता है।
IV. यह नवीकरणीय ऊर्जा विकासकर्ताओं के लिए एकल खिड़की स्वीकृति प्रणाली की सुविधा प्रदान करता है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III

23. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (जलविद्युत परियोजनाएं)
A. भाखड़ा नांगल
B. चंबल घाटी
C. माही बजाज सागर
D. ब्यास परियोजना
सूची II: (राजस्थान के भागीदार राज्य)
i. मध्य प्रदेश
ii. गुजरात
iii. पंजाब और हरियाणा
iv. पंजाब और हिमाचल प्रदेश
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. माही बजाज सागर जलविद्युत परियोजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह बांसवाड़ा जिले में माही नदी पर स्थित है।
II. इस परियोजना से उत्पन्न बिजली राजस्थान और गुजरात के बीच समान रूप से साझा की जाती है।
III. उत्पन्न जलविद्युत का 100% राजस्थान द्वारा उपयोग किया जाता है।
IV. इसे मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों को लाभ पहुँचाने के लिए निर्मित किया गया था।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) I, III और IV
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. राजस्थान को भाखड़ा नांगल संयुक्त जलविद्युत परियोजना से बिजली का एक निश्चित प्रतिशत हिस्सा प्राप्त होता है। इस परियोजना में राजस्थान का हिस्सा लगभग कितना है?
(1) 15.2%
(2) 25.5%
(3) 45.0%
(4) 50.0%
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. राजस्थान में सौर ऊर्जा के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: राजस्थान वर्तमान में कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के मामले में भारत में अग्रणी स्थान पर है।
कथन II: इस क्षमता को प्राप्त करने के लिए राज्य बड़े पैमाने के सौर पार्कों के स्थान पर मुख्य रूप से घरों की छतों पर सौर प्रणालियों पर निर्भर है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): राजस्थान को सौर ऊर्जा के विकास के लिए भारत का सबसे अनुकूल राज्य माना जाता है।
कारण (R): राजस्थान में देश का सर्वाधिक सौर विकिरण प्राप्त होता है, जहाँ वर्ष में औसतन 300-330 साफ धूप वाले दिन होते हैं, साथ ही यहाँ कृषि के अयोग्य बंजर भूमि के विशाल क्षेत्र उपलब्ध हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. राज्यों को उनकी स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के अवरोही क्रम (घटते क्रम) में सही क्रम में चुनें:
(1) गुजरात, राजस्थान, कर्नाटक, तमिलनाडु
(2) राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु
(3) कर्नाटक, राजस्थान, गुजरात, तमिलनाडु
(4) राजस्थान, कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. राजस्थान में सौर पार्कों और सौर ऊर्जा परियोजनाओं के विकास के लिए किस राज्य एजेंसी को नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया गया है?
(1) राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड (RVPNL)
(2) राजस्थान विद्युत नियामक आयोग (RERC)
(3) राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड (RRECL)
(4) ऊर्जा दक्षता ब्यूरो, राजस्थान शाखा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. राजस्थान में सौर ऊर्जा पहल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पीएम कुसुम योजना स्टैंडअलोन सौर कृषि पंपों की स्थापना को बढ़ावा देती है।
II. राज्य सरकार कुसुम योजना के तहत कृषि भूमि पर सौर परियोजनाएं स्थापित करने की अनुमति देती है।
III. भड़ला सोलर पार्क राज्य का एकमात्र स्वीकृत सौर पार्क है।
IV. राजस्थान सौर ऊर्जा नीति का उद्देश्य विकेंद्रीकृत सौर ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा देना है।
V. सौर परिवर्तनशीलता को संतुलित करने के लिए राज्य कोयला आयात करने के लिए भारी सब्सिडी प्रदान करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

और ऊपर) का संचालन करता है।
कथन II: RVPNL ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू उपभोक्ताओं को सीधे बिजली की आपूर्ति करता है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. RVPNL द्वारा राजस्थान में कार्यान्वित की जा रही "ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर" परियोजना मुख्य रूप से किसके लिए तैयार की गई है?
(1) राज्य ऊर्जा विभाग के सभी कर्मियों के लिए पर्यावरण अनुकूल कार्यालय भवनों का निर्माण करना।
(2) राज्य की सभी हाई-वोल्टेज पारेषण लाइनों के किनारे वृक्षारोपण करना।
(3) मौजूदा सभी कोयला आधारित संयंत्रों को आधुनिक परमाणु ऊर्जा संयंत्रों से बदलना।
(4) नवीकरणीय ऊर्जा (सौर और पवन) को राष्ट्रीय ग्रिड तक पहुँचाना (निकासी करना)।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. राजस्थान में बिजली पारेषण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बिजली प्रणाली के एकीकृत संचालन को सुनिश्चित करने के लिए RVPNL द्वारा राज्य भार प्रेषण केंद्र (SLDC) का प्रबंधन किया जाता है।
II. राजस्थान गुजरात, मध्य प्रदेश और पंजाब के साथ अंतर-राज्यीय पारेषण लाइनें साझा करता है।
III. RVPNL नेटवर्क में पारेषण हानियाँ, डिस्कॉम नेटवर्क में वितरण हानियों की तुलना में अधिक हैं।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (राजस्थान में ऊर्जा संस्थाएं)
A. RERC
B. RUVNL
C. RVPNL
D. RVUNL
सूची II: (प्राथमिक कार्य)
i. बिजली उत्पादन
ii. बिजली पारेषण
iii. थोक बिजली व्यापार और खरीद
iv. नियामक देखरेख और शुल्क निर्धारण
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. राजस्थान में एक प्रमुख पारेषण बुनियादी ढांचा परियोजना और उसकी वित्तपोषण एजेंसी का प्रतिनिधित्व करने वाले सही युग्म की पहचान करें:
(1) स्मार्ट ग्रिड पहल - विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)
(2) ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर (राज्य के भीतर) - KfW विकास बैंक (जर्मनी)
(3) ग्रामीण विद्युतीकरण लाइनें - अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)
(4) तापीय संयंत्र उन्नयन - यूनेस्को (UNESCO)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

66. राजस्थान में लागू प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य) का मूल उद्देश्य क्या था?
(1) अंतिम छोर तक पहुंच के माध्यम से सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण।
(2) राज्य के प्रत्येक पंजीकृत घर के लिए 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली प्रदान करना।
(3) मौजूदा सभी कृषि पंपों को आधुनिक सौर ऊर्जा संचालित पंप तकनीक में बदलना।
(4) विभिन्न जिलों में सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के लिए स्मार्ट मीटरिंग अनिवार्य करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. सौभाग्य जैसी ग्रामीण विद्युतीकरण योजनाओं के तहत, थार मरुस्थल में अत्यधिक दूरस्थ और दुर्गम बस्तियों (ढाणियों) का विद्युतीकरण कैसे किया गया?
(1) किसी भी पर्यावरणीय हस्तक्षेप को रोकने के लिए हाई-वोल्टेज भूमिगत केबल बिछाकर।
(2) स्थानीय जल स्रोतों के पास छोटे पैमाने के जल-विद्युत बांध बनाकर।
(3) स्टैंडअलोन ऑफ-ग्रिड सौर फोटोवोल्टिक (SPV) प्रणालियों के माध्यम से।
(4) घरों को मौजूदा ग्रिड कनेक्टिविटी वाले शहरी केंद्रों में स्थानांतरित करके।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. राजस्थान में सौभाग्य योजना के कार्यान्वयन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने उन ग्रामीण और शहरी दोनों घरों को लक्षित किया जिनके पास बिजली की पहुंच नहीं थी।
II. सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना 2011 के तहत पहचाने गए घरों को मुफ्त बिजली कनेक्शन प्रदान किए गए।
III. गैर-गरीब घरों को किस्तों में देय रियायती लागत पर कनेक्शन प्रदान किए गए।
IV. योजना ने विद्युतीकरण के लिए सौर ऊर्जा प्रणालियों के

iv. झालावाड़
(1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. राजस्थान में कोयला आधारित तापीय ऊर्जा संयंत्र मुख्य रूप से राज्य को आवंटित निम्नलिखित में से किस स्व-उपयोग (कैप्टिव) कोयला ब्लॉक से अपना कोयला प्राप्त करते हैं?
(1) तालचर कोयला ब्लॉक, ओडिशा के अंगुल जिले में स्थित
(2) झरिया कोयला ब्लॉक, झारखंड के धनबाद जिले में स्थित
(3) सिंगरौली कोयला ब्लॉक, मध्य प्रदेश के सीधी जिले में स्थित
(4) परसा ईस्ट और कांता बासन (PEKB) कोयला ब्लॉक, छत्तीसगढ़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. राजस्थान में सुपरक्रिटिकल तापीय ऊर्जा तकनीक के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: सुपरक्रिटिकल तापीय ऊर्जा संयंत्र पानी के क्रांतिक बिंदु से ऊपर के तापमान और दबाव पर कार्य करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उच्च दक्षता प्राप्त होती है।
कथन II: सूरतगढ़ और छबड़ा तापीय ऊर्जा संयंत्रों ने अपने हालिया विस्तार चरणों में सुपरक्रिटिकल इकाइयों को सम्मिलित किया है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. राजस्थान में तापीय ऊर्जा उत्पादन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान की कुल स्थापित क्षमता में तापीय ऊर्जा का पूर्ण हिस्सा है।
II. बाड़मेर और बीकानेर जिलों में लिग्नाइट आधारित बिजली संयंत्र कार्यरत हैं।
III. कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन राज्य का पहला बड़ा कोयला आधारित संयंत्र था।
IV. राज्य किसी भी केंद्रीय क्षेत्र के तापीय आवंटन पर निर्भर नहीं है।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और IV
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. हाल ही में छबड़ा पावर प्लांट में शुरू की गई सुपरक्रिटिकल तापीय इकाइयों का पुरानी सब-क्रिटिकल इकाइयों की तुलना में लाभ का सबसे अच्छा वर्णन कौन सा विकल्प करता है?
(1) वे प्रति इकाई उत्पादन में कम कोयले की खपत करते हैं, जिससे कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन कम होता है।
(2) वे पारंपरिक कोयले के स्थान पर अत्यधिक समृद्ध यूरेनियम ईंधन स्रोतों का उपयोग करते हैं।
(3) वे उच्च रखरखाव लागत की आवश्यकता के साथ कम संयंत्र भार कारक बनाए रखते हैं।
(4) वे शीतलन प्रणाली के लिए पानी का उपयोग किए बिना स्वतंत्र रूप से बिजली उत्पन्न करते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख तापीय ऊर्जा स्टेशनों को उनकी पहली इकाइयों के चालू होने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन
II. कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन
III. कालीसिंध थर्मल पावर स्टेशन
IV. छबड़ा थर्मल पावर स्टेशन
(1) II, I, IV, III
(2) I, II, III, IV
(3) II, IV, I, III
(4) I, IV, II, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. निम्नलिखित में से किस तापीय ऊर्जा संयंत्र को राजस्थान के पहले "सुपर" थर्मल पावर स्टेशन का दर्जा दिया गया था?
(1) छबड़ा सुपर थर्मल पावर प्लांट
(2) सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन
(3) गिरल लिग्नाइट थर्मल पावर स्टेशन
(4) कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह श्रीगंगानगर जिले में स्थित है।
II. यह पूरी तरह से प्राकृतिक गैस पर संचालित होता है।
III. इसे इंदिरा गांधी नहर से पानी की आपूर्ति प्राप्त होती है।
IV. इसका संचालन राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (RVUNL) द्वारा किया जाता है।
V. इसमें सब-क्रिटिकल और सुपरक्रिटिकल दोनों उत्पादन इकाइयाँ हैं।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

77. राजस्थान में स्मार्ट मीटरिंग पहल की एक प्रमुख विशेषता 'पूर्व-भुगतान' (प्री-पेड) स्मार्ट मीटर की शुरुआत है। डिस्कॉम को इससे क्या लाभ होता है?
(1) यह उन्नत तकनीक के माध्यम से हाई-वोल्टेज लाइनों में पारेषण हानियों को समाप्त करता है।
(2) यह उपभोक्ता के परिसर में सौर सेल का उपयोग करके स्वचालित रूप से बिजली उत्पन्न करता है।
(3) यह अग्रिम राजस्व संग्रह सुनिश्चित करता है, जिससे भुगतान न होने की समस्या हल हो जाती है।
(4) यह ग्रिड को संतुलित करने के लिए उपभोक्ताओं को केवल रात के दौरान बिजली का उपयोग करने के लिए बाध्य करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (ऊर्जा योजनाएं)
A. RDSS
B. UDAY
C. Saubhagya
D. PM-KUSUM
सूची II: (राजस्थान में मुख्य उद्देश्य)
i. ऋण अपने ऊपर लेकर डिस्कॉम का वित्तीय कायाकल्प
ii. स्मार्ट मीटरिंग और बुनियादी ढांचे के उन्नयन के माध्यम से AT&C हानियों में कमी
iii. कृषि पंपों का सौरकरण
iv. सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. राजस्थान में स्मार्ट मीटरिंग के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: स्मार्ट मीटर मैन्युअल मीटर रीडिंग की आवश्यकता के बिना डिस्कॉम को सीधे वास्तविक समय ऊर्जा उपयोग डेटा भेजते हैं।
कथन II: स्मार्ट मीटर की तैनाती से मीटर के साथ छेड़छाड़ और बाईपास को रोककर वाणिज्यिक हानियों को काफी कम करने की संभावना है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. डिस्कॉम के आधुनिकीकरण और स्मार्ट मीटरिंग बुनियादी ढांचे से संबंधित तकनीकी प्रणालियों में से विषम को चुनें:
(1) उन्नत मीटरिंग बुनियादी ढांचा (AMI)
(2) केंद्रित सौर ऊर्जा (CSP)
(3) पर्यवेक्षी नियंत्रण और डेटा अधिग्रहण (SCADA)
(4) एंटरप्राइज रिसोर्स प्लानिंग (ERP) बिलिंग सिस्टम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

81. राजस्थान में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम, 2001 के प्रावधानों को समन्वयित और लागू करने के लिए कौन सी संस्था राज्य नामित एजेंसी (SDA) के रूप में कार्य करती है?
(1) ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE)
(2) राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड (RRECL)
(3) राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (RSPCB)
(4) राजस्थान विद्युत नियामक आयोग (RERC)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

82. BEE ढांचे के तहत एक औद्योगिक सुविधा में निम्नलिखित ऊर्जा संरक्षण हस्तक्षेपों को उनके कार्यान्वयन के तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. ऊर्जा संरक्षण उपायों का कार्यान्वयन
II. ऊर्जा लेखापरीक्षा का संचालन करना
III. ऊर्जा बचत का मापन और सत्यापन
(1) I, II, III
(2) II, I, III
(3) III, I, II
(4) II, III, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

83. राजस्थान में ऊर्जा संरक्षण भवन संहिता (ECBC) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह केवल दूरदराज के गांवों में निर्मित व्यक्तिगत आवासीय घरों के लिए अनिवार्य है।
(2) यह सभी सरकारी कार्यालयों में तापदीप्त बल्बों के अधिकतम उपयोग को प्रोत्साहित करता है।
(3) यह बड़े व्यावसायिक भवनों के लिए न्यूनतम प्रदर्शन मानक निर्धारित करता है।
(4) यह किसी भी नए सरकारी भवन में एयर कंडीशनिंग के उपयोग को पूर्णतः प्रतिबंधित करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. उन्नत ऊर्जा दक्षता के लिए राष्ट्रीय मिशन के तहत PAT योजना राजस्थान के किस विशिष्ट क्षेत्र को लक्षित करती है?
(1) छोटे पैमाने के कुटीर उद्योग जैसे स्थानीय मृदा शिल्प और पारंपरिक बुनाई इकाइयाँ।
(2) प्रमुख शहरी नगर पालिका क्षेत्रों के भीतर स्थित घरेलू आवास।
(3) विकेंद्रीकृत सौर ऊर्जा प्रणालियों पर निर्भर कृषि पंप।
(4) सीमेंट और तापीय ऊर्जा जैसे ऊर्जा-गहन उद्योगों में नामित उपभोक्ता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. राजस्थान के कृषि क्षेत्र में ऊर्जा संरक्षण पहल का प्राथमिक फोकस क्या है?
(1) वर्ष 2030 तक सभी डीजल ट्रैक्टरों को आधुनिक

ये कंपनियां अपनी बिजली की थोक खरीद राजस्थान ऊर्जा विकास निगम के माध्यम से करती हैं। लंबी वितरण लाइनें और विद्युत चोरी जैसी समस्याएं अभी भी राज्य के ऊर्जा क्षेत्र हेतु गंभीर चिंता का विषय बनी हुई हैं।

59. (4) जोधपुर
अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड का अधिकार क्षेत्र राज्य के मध्य और दक्षिणी भागों में विस्तृत है। इसमें उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और झुंझुनू जैसे जिले सम्मिलित हैं जहाँ यह विद्युत वितरण और रखरखाव का कार्य करता है। इसके विपरीत, जोधपुर जिला और इसके निकटवर्ती मरुस्थलीय क्षेत्र जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के अंतर्गत आते हैं। यह विभाजन भौगोलिक सुगमता और प्रशासनिक नियंत्रण को सुदृढ़ करने हेतु किया गया है ताकि उपभोक्ताओं को बिजली संबंधी सेवाएं बिना किसी विलंब के प्राप्त हो सकें।

60. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान के कतिपय चयनित शहरों में वितरण फ्रेंचाइजी मॉडल को अपनाया गया है ताकि सरकारी डिस्कॉम के वित्तीय बोझ को कम किया जा सके। इस मॉडल के अंतर्गत, निजी कंपनियों को विशिष्ट क्षेत्रों में विद्युत वितरण, बिलिंग और राजस्व संग्रह का उत्तरदायित्व सौंपा जाता है। निजी क्षेत्र की विशेषज्ञता का उपयोग करने का मुख्य लक्ष्य बिजली चोरी न्यूनतम करना, तकनीकी त्रुटियों को त्वरित सुधारना और बिलिंग की सटीकता बढ़ाना है। इससे अंततः उपभोक्ता संतुष्टि में वृद्धि होती है और राजस्व संग्रह सुधरता है।

61. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड का मुख्य उत्तरदायित्व उत्पादन संयंत्रों से उच्च वोल्टेज बिजली को वितरण केंद्रों तक प्रेषित करना है। यह कंपनी 132 किलोवाट और उससे अधिक के वृहद पारेषण नेटवर्क का संचालन और रखरखाव करती है। यद्यपि, यह घरेलू उपभोक्ताओं को सीधे बिजली विक्रय नहीं करती है। उपभोक्ताओं तक अंतिम रूप से बिजली पहुँचाने और बिलिंग का कार्य डिस्कॉम द्वारा संपादित होता है। प्रसारण निगम ग्रिड की स्थिरता और राज्य भर में निर्बाध विद्युत प्रवाह का आधार है।

62. (4) नवीकरणीय ऊर्जा (सौर और पवन) को राष्ट्रीय ग्रिड तक पहुँचाना (निकासी करना)।
ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर राजस्थान की एक महत्वाकांक्षी बुनियादी ढांचा परियोजना है। चूँकि राज्य में सौर और पवन ऊर्जा का वृहद उत्पादन होता है, अतः इस बिजली को सुरक्षित रूप से पारेषण ग्रिड में एकीकृत करना अनिवार्य है। यह कॉरिडोर विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा केंद्रों को राष्ट्रीय ग्रिड से जोड़ने हेतु निर्मित किया गया है। इसके माध्यम से राजस्थान अपनी अतिरिक्त हरित बिजली को अन्य राज्यों तक कुशलतापूर्वक प्रेषित कर सकता है, जिससे न केवल राजस्व प्राप्त होता है बल्कि देश के कार्बन उत्सर्जन में भी कमी आती है।

63. (1) केवल I और II
राजस्थान का पारेषण तंत्र राज्य भार प्रेषण केंद्र के माध्यम से निरंतर विद्युत की मांग और आपूर्ति को संतुलित करता है। राज्य का ग्रिड नेटवर्क पड़ोसी राज्यों जैसे गुजरात, पंजाब और मध्य प्रदेश के साथ एकीकृत है, जिससे आपात स्थिति में बिजली का विनिमय संभव होता है। उच्च वोल्टेज पारेषण के दौरान होने वाली विद्युत हानियाँ वितरण नेटवर्क की तुलना में अत्यंत कम होती हैं। यह आधुनिक और एकीकृत पारेषण प्रणाली राजस्थान को ऊर्जा के क्षेत्र में एक सुदृढ़ कड़ी के रूप में स्थापित करती है।

64. (2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान के ऊर्जा क्षेत्र में विभिन्न संस्थाएं विशिष्ट भूमिकाओं का निर्वहन करती हैं। उत्पादन निगम बिजली संयंत्रों का संचालन करता है, जबकि प्रसारण निगम उच्च वोल्टेज लाइनों द्वारा बिजली प्रेषित करता है। ऊर्जा विकास निगम का कार्य विभिन्न स्रोतों से थोक में बिजली क्रय करना और डिस्कॉम को उपलब्ध कराना है। नियामक आयोग विद्युत दरें निर्धारित करने और संपूर्ण क्षेत्र की कार्यप्रणाली की निगरानी करने वाला सर्वोच्च निकाय है। यह संस्थागत ढांचा राज्य की विद्युत व्यवस्था को सुचारु और पारदर्शी बनाता है।

65. (2) ग्रीन Energy कॉरिडोर (राज्य के भीतर) - KfW विकास बैंक (जर्मनी)
राजस्थान में पारेषण नेटवर्क के आधुनिकीकरण और ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर के निर्माण हेतु अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सहायता प्राप्त की गई है। जर्मनी का के.एफ.डब्ल्यू. विकास बैंक इस परियोजना हेतु रियायती ऋण और तकनीकी सहायता प्रदान कर रहा है। इस सहयोग का मुख्य उद्देश्य नवीकरणीय ऊर्जा की निकासी हेतु एक सुदृढ़ और स्मार्ट ग्रिड बुनियादी ढांचा निर्मित करना है। यह अंतरराष्ट्रीय साझेदारी राजस्थान की वैश्विक मानकों के अनुरूप एक विश्वसनीय और पर्यावरण अनुकूल बिजली पारेषण प्रणाली विकसित करने की प्रतिबद्धता दर्शाती है।

66. (1) अंतिम छोर तक पहुंच के माध्यम से सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण।
प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य) का मुख्य लक्ष्य राजस्थान के प्रत्येक घर तक विद्युत पहुँच सुनिश्चित करना था। इस योजना के अंतर्गत उन वंचित परिवारों को लक्षित किया गया जिनके पास बिजली का कनेक्शन उपलब्ध नहीं था। यह पहल केवल गांवों के विद्युतीकरण तक सीमित नहीं थी, बल्कि व्यक्तिगत घरों को ग्रिड से जोड़ने पर केंद्रित थी। इस मिशन ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जीवन स्तर को उन्नत करने और सामाजिक-आर्थिक विकास को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

67. (3) स्टैंडअलोन ऑफ-ग्रिड सौर फोटोवोल्टिक (SPV) प्रणालियों के माध्यम से।
थार मरुस्थल की जटिल भौगोलिक परिस्थितियों और विरल बस्तियों के कारण प्रत्येक घर तक पारंपरिक बिजली लाइनें पहुँचाना अत्यंत चुनौतीपूर्ण था। सौभाग्य योजना के अंतर्गत ऐसी सुदूर 'ढाणियों' हेतु सौर ऊर्जा को समाधान के रूप में

Click Here to Buy book on Amazon

ii. अगले दिन वितरण के लिए बिजली का व्यापार।
iii. 11 दिन पहले तक के वितरण के लिए बिजली का व्यापार।
iv. नवीकरणीय ऊर्जा के लिए विशेष ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म जो डिस्कॉम को RPO लक्ष्य पूरा करने में सहायता करता है।

(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. निम्नलिखित में से किस नियामक नीति ने अन्य राज्यों को नवीकरणीय ऊर्जा निर्यात करने की राजस्थान की क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाया?
(1) राज्य के भीतर उत्पादित सौर ऊर्जा पर भारी निर्यात शुल्क लगाना।
(2) यह अनिवार्य करना कि सौर ऊर्जा का 100% राज्य के भीतर ही उपभोग किया जाना चाहिए।
(3) निजी नवीकरणीय विकासकर्ताओं द्वारा राष्ट्रीय ग्रिड के उपयोग पर प्रतिबंध लगाना।
(4) सौर और पवन परियोजनाओं के लिए ISTS शुल्क की छूट।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

95. राजस्थान के बिजली निर्यात तंत्र के संबंध में गलत कथन की पहचान करें:
(1) राज्य से बाहर बिजली ले जाने के लिए PGCIL द्वारा निर्मित राष्ट्रीय ग्रिड नेटवर्क का उपयोग किया जाता है।
(2) इंडियन एनर्जी एक्सचेंज (IEX) जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से बिजली व्यापार सुगम बनाया जाता है।
(3) राजस्थान भौगोलिक रूप से पृथक है और एक स्थानीय ग्रिड पर संचालित होता है जो उत्तरी क्षेत्रीय ग्रिड से कटा हुआ है।
(4) ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर अंतरराज्यीय गंतव्यों तक अतिरिक्त नवीकरणीय ऊर्जा की निकासी में सहायता करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

96. राजस्थान सौर ऊर्जा नीति 2019 द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 तक प्राप्त किया जाने वाला कुल सौर ऊर्जा क्षमता लक्ष्य क्या है?
(1) 15,000 मेगावाट
(2) 20,000 मेगावाट
(3) 30,000 मेगावाट
(4) 50,000 मेगावाट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. राजस्थान सौर ऊर्जा नीति 2019 के अनुसार, 30 GW सौर क्षमता लक्ष्य में से किस श्रेणी को सबसे बड़ा लक्ष्य (24 GW) आवंटित किया गया था?
(1) विकेंद्रीकृत सौर परियोजनाएं
(2) उपयोगिता या ग्रिड-स्केल सौर पार्क
(3) सौर रूफटॉप परियोजनाएं
(4) कुसुम के तहत सौर पंप
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

98. राजस्थान की ऊर्जा नीति के संदर्भ में नवीकरणीय खरीद दायित्व (RPO) के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: RPO यह अनिवार्य करता है कि सभी डिस्कॉम और स्व-उपभोग बिजली उपभोक्ताओं को अपनी बिजली का एक निश्चित न्यूनतम प्रतिशत नवीकरणीय स्रोतों से खरीदना होगा।
कथन II: राजस्थान अपने विशाल सौर और पवन ऊर्जा उत्पादन के कारण अपने RPO लक्ष्यों को सरलता से पूरा करता है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

99. अपवाद को पहचानें। निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान सौर ऊर्जा नीति 2019 के तहत परिभाषित एक स्पष्ट लक्ष्य श्रेणी नहीं है?
(1) सौर रूफटॉप (4 GW)
(2) उपयोगिता-स्तर के सौर पार्क (24 GW)
(3) सौर ऊर्जा संचालित विमानन (1 GW)
(4) वितरित सौर प्रणालियाँ (1 GW)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान के वर्तमान ऊर्जा नीति ढांचे के दीर्घकालिक दृष्टिकोण को सर्वाधिक उपयुक्त रूप से दर्शाता है?
(1) स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए सभी सौर संयंत्रों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना और कोयला आधारित बिजली पर वापस लौटना।
(2) सभी बिजली उत्पादन का निजीकरण करना और विद्युतीकरण में किसी भी सरकारी हस्तक्षेप को रोकना।
(3) केवल आयातित परमाणु तकनीक पर ध्यान केंद्रित करना और घरेलू नवीकरणीय संसाधनों की उपेक्षा करना।
(4) ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए कार्बन-न्यूट्रल और स्वच्छ ऊर्जा के अग्रणी निर्यातक के रूप में परिवर्तित होना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

20. (4) केवल II और III
राजस्थान में परमाणु ऊर्जा का विकास कनाडा के तकनीकी सहयोग से प्रारंभ हुआ था। रावतभाटा स्थित स्टेशन देश के प्रमुख ऊर्जा केंद्रों में से एक है। भविष्य की बढ़ती ऊर्जा मांग को देखते हुए सरकार ने बांसवाड़ा जिले को नवीन परमाणु ऊर्जा संयंत्र की स्थापना हेतु संभावित स्थल के रूप में चयनित किया है। यद्यपि आर.ए.पी.एस. एक महत्वपूर्ण केंद्र है, किंतु भारत का प्रथम व्यावसायिक परमाणु स्टेशन महाराष्ट्र के तारापुर में स्थापित किया गया था, न कि राजस्थान में।

21. (3) चंबल घाटी परियोजना - राजस्थान और मध्य प्रदेश
चंबल घाटी परियोजना राजस्थान और मध्य प्रदेश की एक अत्यंत महत्वपूर्ण संयुक्त बहुउद्देशीय योजना है। इस परियोजना के अंतर्गत गांधी सागर, राणा प्रताप सागर और जवाहर सागर जैसे बांधों का निर्माण किया गया है, जहाँ से दोनों राज्यों को समान अनुपात में बिजली और सिंचाई का लाभ प्राप्त होता है। यह सहयोगात्मक मॉडल अंतर-राज्यीय संसाधनों के कुशल प्रबंधन का श्रेष्ठ उदाहरण है। इसके माध्यम से उत्पादित जलविद्युत सस्ती और पर्यावरण के पूर्णतः अनुकूल होती है।

22. (2) बारहमासी नदियों का अभाव और सामान्यतः शुष्क से अर्ध-शुष्क जलवायु परिस्थितियाँ।
राजस्थान की भौगोलिक स्थिति और जलवायु जलविद्युत उत्पादन हेतु गंभीर चुनौतियां उत्पन्न करती हैं। राज्य का अधिकांश भू-भाग शुष्क है और यहाँ केवल चंबल जैसी सीमित नदियाँ ही हैं जिनमें वर्ष भर जल प्रवाहित रहता है। जलविद्युत हेतु आवश्यक ऊँचाई और निरंतर जल प्रवाह का अभाव राज्य में बड़े बांधों के निर्माण को सीमित करता है। यही कारण है कि राजस्थान अपनी जलविद्युत आवश्यकताओं हेतु पड़ोसी राज्यों एवं हिमालयी क्षेत्रों की संयुक्त परियोजनाओं पर निर्भर रहता है।

23. (4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान अपनी ऊर्जा सुरक्षा हेतु अनेक अंतर-राज्यीय जलविद्युत परियोजनाओं में भागीदार है। भाखड़ा नांगल परियोजना में पंजाब और हरियाणा के साथ साझेदारी है, जबकि चंबल घाटी परियोजना मध्य प्रदेश के साथ संयुक्त रूप से संचालित है। माही बजाज सागर परियोजना में गुजरात के साथ सहयोग है और ब्यास परियोजना में पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश भागीदार हैं। इन संयुक्त प्रयासों से राजस्थान को अपनी भौगोलिक सीमाओं के बाहर उत्पादित जलविद्युत का एक निश्चित हिस्सा नियमित प्राप्त होता है।

24. (1) I, III और IV
माही बजाज सागर परियोजना बांसवाड़ा जिले में स्थित है और यह मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों के आर्थिक विकास हेतु निर्मित की गई थी। इस परियोजना की विशिष्ट विशेषता यह है कि इससे उत्पादित समस्त जलविद्युत का उपभोग केवल राजस्थान द्वारा ही किया जाता है, जबकि सिंचाई के लाभ गुजरात के साथ साझा किए जाते हैं। यह परियोजना स्थानीय कृषि को समृद्ध करने और क्षेत्र में स्वच्छ ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण है।

25. (1) 15.2%
भाखड़ा नांगल परियोजना उत्तर भारत की एक वृहद बहुउद्देशीय योजना है जिसमें राजस्थान, पंजाब और हरियाणा प्रमुख साझेदार हैं। एक पारस्परिक समझौते के अंतर्गत, इस परियोजना से उत्पादित होने वाली कुल विद्युत में से राजस्थान को लगभग 15.2% हिस्सा आवंटित किया गया है। यह बिजली आपूर्ति राज्य के उत्तरी जिलों की कृषि और औद्योगिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहायक होती है। अंतर-राज्यीय सहयोग का यह मॉडल राजस्थान को बाह्य जल संसाधनों का लाभ प्रदान करता है।

26. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
राजस्थान वर्तमान में कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता की दृष्टि से भारत का अग्रणी राज्य है। राज्य की इस विशाल सफलता का मुख्य आधार विस्तृत भू-भाग पर विकसित किए गए वृहद सौर पार्क हैं, न कि केवल घरों की छतों पर स्थापित प्रणालियाँ। भड़ला जैसे मेगा सौर पार्कों ने राजस्थान को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित किया है। यद्यपि छतों पर सौर ऊर्जा को भी निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है, किंतु कुल उत्पादन में उपयोगिता-स्तर की परियोजनाओं का हिस्सा सर्वाधिक है।

27. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान में सौर ऊर्जा के विकास की अपार संभावनाओं का मुख्य कारण यहाँ की विशिष्ट प्राकृतिक दशाएं हैं। राज्य में वर्ष भर प्राप्त होने वाली प्रचुर धूप और न्यून बादलों वाले दिनों की संख्या सौर पैनलों की उच्चतम कार्यक्षमता सुनिश्चित करती है। इसके अतिरिक्त, पश्चिमी राजस्थान में उपलब्ध विशाल और सस्ती बंजर भूमि बड़े पैमाने पर सौर संयंत्रों की स्थापना हेतु आदर्श आधार प्रदान करती है। इन्हीं भौगोलिक लाभों के कारण राजस्थान सौर ऊर्जा निवेश हेतु श्रेष्ठ गंतव्य बना है।

28. (2) राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु
भारत के नवीकरणीय ऊर्जा परिदृश्य में राजस्थान अपनी विशाल सौर क्षमता के कारण शीर्ष स्थान पर आसीन है। राज्य सरकार की अनुकूल नीतियों और निजी क्षेत्र के व्यापक निवेश के कारण राजस्थान ने गुजरात और कर्नाटक जैसे राज्यों को पीछे छोड़ दिया है। वर्तमान में राजस्थान प्रथम स्थान पर है, जिसके पश्चात क्रमशः गुजरात, कर्नाटक और तमिलनाडु का स्थान आता है। यह नेतृत्व राज्य की ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि है जो स्वच्छ भविष्य को दर्शाती है।

NODIA

29. (3) राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड (RRECL)
राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड राज्य में सौर, पवन और बायोमास जैसे गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों को प्रोत्साहित करने वाली प्रमुख संस्था है। इसे सौर पार्कों के विकास और नवीकरणीय परियोजनाओं की निगरानी हेतु नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया गया है। यह निगम निवेशकों को सहायता प्रदान करने, परियोजना पंजीकरण करने और राज्य की अक्षय ऊर्जा नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने का कार्य करता है। इसकी सक्रिय भूमिका से ही राजस्थान नवीकरणीय ऊर्जा में अग्रणी बना है।

10. (1) वे प्रति इकाई उत्पादन में कम कोयले की खपत करते हैं, जिससे कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन कम होता है।
छबड़ा संयंत्र की नवीन सुपरक्रिटिकल इकाइयाँ पारंपरिक संयंत्रों की तुलना में अधिक कुशल हैं। ये इकाइयाँ समान मात्रा में बिजली उत्पादन हेतु काफी कम कोयले का उपयोग करती हैं, जिससे परिचालन व्यय कम हो जाता है। कम कोयला जलने के परिणामस्वरुप वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य हानिकारक गैसों का उत्सर्जन भी न्यूनतम होता है। यह तकनीक ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

11. (1) II, I, IV, III
राजस्थान में तापीय ऊर्जा विकास का एक व्यवस्थित कालक्रम रहा है। सर्वप्रथम कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन की स्थापना की गई थी, जिसके पश्चात सूरतगढ़ में बड़ी इकाइयों का परिचालन प्रारंभ हुआ। इसके उपरांत छबड़ा थर्मल पावर स्टेशन ने विद्युत उत्पादन शुरु किया और नवीनतम प्रमुख परियोजनाओं में झालावाड़ स्थित कालीसिंध थर्मल पावर स्टेशन सम्मिलित है। यह विकास क्रम राज्य की बढ़ती औद्योगिक और घरेलू बिजली मांग को पूर्ण करने हेतु सरकार के निरंतर प्रयासों को प्रदर्शित करता है।

12. (2) सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन
श्रीगंगानगर जिले में स्थित सूरतगढ़ विद्युत संयंत्र को राजस्थान के प्रथम सुपर थर्मल पावर स्टेशन होने का गौरव प्राप्त है। "सुपर" का दर्जा उन संयंत्रों को प्रदान किया जाता है जिनकी कुल स्थापित क्षमता 1000 मेगावाट या उससे अधिक होती है। इस केंद्र ने राज्य में वृहद स्तर पर विद्युत उत्पादन की आधारशिला रखी और कृषि प्रधान उत्तरी राजस्थान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्तमान में यहाँ सब-क्रिटिकल और सुपरक्रिटिकल दोनों प्रकार की इकाइयाँ कार्यरत हैं।

13. (3) I, III, IV and V
श्रीगंगानगर स्थित सूरतगढ़ थर्मल पावर स्टेशन का संचालन राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड द्वारा किया जाता है। यह संयंत्र पूर्णतः कोयले पर आधारित है और इसे अपनी शीतलन आवश्यकताओं हेतु इंदिरा गांधी नहर से जल प्राप्त होता है। यहाँ पुरानी सब-क्रिटिकल इकाइयों के साथ अब आधुनिक सुपरक्रिटिकल उत्पादन इकाइयाँ भी क्रियान्वित हैं। यह केंद्र राजस्थान की कुल बिजली उत्पादन क्षमता में बहुत बड़ा योगदान देता है और राज्य के विद्युत ग्रिड को मजबूती प्रदान करता है।

14. (4) रामगढ़ गैस तापीय ऊर्जा स्टेशन
जैसलमेर में स्थित रामगढ़ विद्युत स्टेशन मुख्य रुप से प्राकृतिक गैस का उपयोग कर बिजली उत्पन्न करता है। इसके विपरीत, गिरल और बरसिंगसर संयंत्र स्थानीय लिग्नाइट कोयले पर आधारित हैं, जबकि भद्रेश परियोजना बाड़मेर के लिग्नाइट भंडार का उपयोग करती है। गैस आधारित संयंत्रों की विशेषता उनकी त्वरित परिचालन क्षमता और कोयला संयंत्रों की तुलना में अल्प प्रदूषण है। यह संयंत्र पश्चिमी राजस्थान के स्थानीय गैस संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करने हेतु स्थापित किया गया था।

15. (1) कोटा बैराज के माध्यम से चंबल नदी
कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन रणनीतिक रूप से चंबल नदी के तट पर स्थापित है। तापीय विद्युत संयंत्रों को भाप निर्माण और मशीनों को ठंडा रखने हेतु भारी मात्रा में जल की आवश्यकता होती है। यह संयंत्र अपनी समस्त जल आवश्यकताओं की पूर्ति कोटा बैराज से करता है। जल की निरंतर उपलब्धता और निकटवर्ती रेलवे नेटवर्क द्वारा कोयले की सुगम आपूर्ति ने इस स्थान को वृहद स्तर पर बिजली उत्पादन हेतु राजस्थान का सबसे उपयुक्त स्थल बनाया है।

16. (2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन में विभिन्न प्रकार के रिएक्टर कार्यरत हैं। आर.ए.पी.एस. की प्रारंभिक इकाइयाँ पुरानी तकनीक और अल्प क्षमता वाली थीं, जबकि नवीन इकाइयाँ 700 मेगावाट के स्वदेशी दाबित भारी जल रिएक्टरों पर आधारित हैं। इन रिएक्टरों में प्राकृतिक यूरेनियम का उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता है और भारी जल न्यूट्रॉन की गति को नियंत्रित करने हेतु मंदक के रूप में प्रयुक्त होता है। यह स्टेशन देश की परमाणु ऊर्जा सुरक्षा में विशेष स्थान रखता है।

17. (2) दाबित भारी जल रिएक्टर (PHWR)
रावतभाटा में स्थापित परमाणु ऊर्जा संयंत्र दाबित भारी जल रिएक्टर तकनीक पर आधारित है। इस तकनीक में प्राकृतिक यूरेनियम का उपयोग ईंधन के रूप में और भारी जल का प्रयोग शीतलक एवं मंदक दोनों रूपों में किया जाता है। यह प्रणाली भारत के त्रि-चरण परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का मुख्य स्तंभ है। यह तकनीक अपनी उच्च सुरक्षा मानकों और स्वदेशी संसाधनों के अनुकूल होने के कारण राजस्थान के इस प्रमुख परमाणु केंद्र के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी गई थी।

18. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के सुरक्षित संचालन हेतु निरंतर शीतलन एक अनिवार्य प्रक्रिया है, जिसके लिए प्रचुर जल आपूर्ति की आवश्यकता होती है। चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा में परमाणु स्टेशन की स्थापना इसीलिए की गई क्योंकि यहाँ चंबल नदी पर निर्मित राणा प्रताप सागर बांध से वर्ष भर जल उपलब्ध रहता है। जल की इसी उपलब्धता और क्षेत्र की स्थिर भूगर्भीय संरचना ने इसे परमाणु बिजली उत्पादन हेतु भारत के सर्वाधिक उपयुक्त और सफल स्थलों में सम्मिलित किया है।

19. (3) 700 मेगावाट प्रत्येक
रावतभाटा परमाणु ऊर्जा स्टेशन के विस्तार के अंतर्गत नवीन स्थापित की जा रही इकाइयों 7 और 8 की उत्पादन क्षमता 700 मेगावाट प्रति इकाई है। ये इकाइयाँ पूर्णतः स्वदेशी तकनीक पर आधारित दाबित भारी जल रिएक्टर हैं। इनके पूर्ण परिचालन से राजस्थान की कुल परमाणु ऊर्जा क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। बड़ी क्षमता वाली ये आधुनिक इकाइयाँ न केवल राज्य की विद्युत न्यूनता को दूर करेंगी, अपितु कार्बन मुक्त ऊर्जा उत्पादन के लक्ष्यों को भी सुदृढ़ता प्रदान करेंगी।

Click Here to Buy book on Amazon

इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों से बदलना।
(2) क्षेत्रीय संसाधनों के संरक्षण के लिए भूजल निष्कर्षण को पूरी तरह से रोकना।
(3) अक्षम कृषि पंप सेटों को ऊर्जा-कुशल स्टार-रेटेड पंप सेटों के साथ अपग्रेड करना।
(4) ऊर्जा की खपत को समाप्त करने के लिए पूर्णतः हस्तचालित खेती प्रथाओं को अपनाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

86. बिजली उत्पादन के संदर्भ में, हरित हाइड्रोजन को निम्नलिखित में से किस प्रक्रिया द्वारा परिभाषित किया गया है?
(1) मानक स्टीम मीथेन रिफॉर्मिंग का उपयोग करके प्राकृतिक गैस से हाइड्रोजन पृथक करना।
(2) नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करके वैद्युत अपघटन (इलेक्ट्रोलिसिस) के माध्यम से जल को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करना।
(3) उच्च दबाव वाले वातावरण में हाइड्रोजन निकालने के लिए कोयले का गैसीकरण।
(4) जैविक अपशिष्ट के अपघटन के दौरान उत्सर्जित हाइड्रोजन को संचित करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

87. राजस्थान हरित हाइड्रोजन नीति 2023 के तहत, वर्ष 2030 तक हरित हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता के लिए राज्य का लक्ष्य क्या है?
(1) 500 किलोटन प्रति वर्ष
(2) 1,000 किलोटन प्रति वर्ष
(3) 2,000 किलोटन प्रति वर्ष
(4) 5,000 किलोटन प्रति वर्ष
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. राजस्थान में हरित हाइड्रोजन उत्पादन के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: राजस्थान हरित हाइड्रोजन उत्पादन का केंद्र बनने के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।
कथन II: राज्य में विशाल अप्रयुक्त नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता है, जो वैद्युत अपघटन के लिए आवश्यक सस्ती और प्रचुर बिजली प्रदान कर सकती है।
उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. हाइड्रोजन के प्रकार को उसके ऊर्जा स्रोत के साथ सुमेलित करने वाले सही युग्म की पहचान करें:
(1) ग्रे हाइड्रोजन - परमाणु ऊर्जा का उपयोग करके उत्पादित
(2) ब्लू हाइड्रोजन - केवल पवन ऊर्जा का उपयोग करके उत्पादित
(3) ग्रीन हाइड्रोजन - नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करके उत्पादित
(4) पिंक हाइड्रोजन - कार्बन कैप्चर के बिना कोयले का उपयोग करके उत्पादित
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

90. निवेश आकर्षित करने के लिए राजस्थान हरित हाइड्रोजन नीति के तहत सामान्यतः निम्नलिखित में से कौन सा प्रोत्साहन दिया जाता है?
(1) हाइड्रोजन उत्पादन में उपयोग की जाने वाली नवीकरणीय ऊर्जा के लिए पारेषण और व्हीलिंग शुल्क पर छूट।
(2) सभी नए संयंत्र स्थापना परियोजनाओं के लिए उपजाऊ कृषि भूमि का निःशुल्क आवंटन।
(3) अगले 50 वर्षों के लिए सभी राज्य और केंद्रीय आयकर की पूर्ण छूट।
(4) हरित स्थापनाओं के लिए किसी भी पर्यावरणीय स्वीकृति आवश्यकताओं का निषेध।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. राजस्थान ऐतिहासिक रूप से किस क्षेत्र में भारी क्षमता वृद्धि के कारण शुद्ध बिजली निर्यातक बन गया है?
(1) परमाणु ऊर्जा
(2) लिग्नाइट तापीय ऊर्जा
(3) बायोमास ऊर्जा
(4) सौर और पवन ऊर्जा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

92. राजस्थान के ग्रिड में सौर ऊर्जा का भारी समावेश दिन के समय अपने चरम पर होता है। निम्नलिखित में से कौन सा सबसे संभावित प्रभाव का वर्णन करता है?
(1) राजस्थान अतिरिक्तता से बचने के लिए अपने सभी तापीय संयंत्रों को स्थायी रूप से बंद कर देता है।
(2) राजस्थान दिन के दौरान अतिरिक्त बिजली का निर्यात करता है और शाम के उच्च मांग समय के दौरान आयात करता है।
(3) सौर ओवर-वोल्टेज के कारण राज्य में दिन के दौरान लगातार बिजली गुल होती है।
(4) पड़ोसी राज्यों को अत्यधिक निश्चित दरों पर सौर ऊर्जा खरीदने के लिए बाध्य किया जाता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पावर मार्केट तंत्र)
A. डे-अहेड मार्केट
B. टर्म-अहेड मार्केट
C. रीयल-टाइम मार्केट
D. ग्रीन टर्म-अहेड मार्केट
सूची II: (विवरण)
i. वितरण से ठीक 1 घंटा पहले बिजली का व्यापार, जो ग्रिड संतुलन में सहायता करता है।

30. (4) केवल III और V
राजस्थान में केवल भड़ला ही नहीं, अपितु फतेहगढ़, नोख और फलौदी जैसे अनेक अन्य सौर पार्क भी विकसित किए जा रहे हैं। राज्य की नीतियां सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने हेतु निर्मित हैं, न कि कोयला आयात पर किसी प्रकार की सहायता प्रदान करने हेतु। पीएम कुसुम योजना के माध्यम से किसानों को अपनी अनुपयोगी भूमि पर सौर संयंत्र लगाने और सौर पंपों के उपयोग हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। राज्य का उद्देश्य विकेंद्रीकृत उत्पादन बढ़ाकर स्थानीय बिजली उपलब्धता सुनिश्चित करना है।

31. (1) थार मरुस्थल से निकटता और कर्क रेखा के पास इष्टतम स्थिति।
राजस्थान की भौगोलिक अवस्थिति सौर ऊर्जा उत्पादन हेतु अत्यंत अनुकूल है। कर्क रेखा राज्य के दक्षिणी भाग से गुजरती है, जिससे यहाँ सूर्य की किरणें अधिकांश समय सीधी पड़ती हैं। थार मरुस्थल की निकटता के कारण यहाँ शुष्क मौसम रहता है और वायुमंडल में आर्द्रता कम होती है, जिससे सौर विकिरण बिना किसी अवरोध के धरातल तक पहुँचता है। इन प्राकृतिक कारकों के कारण राजस्थान में प्रति वर्ग मीटर सौर ऊर्जा प्राप्त करने की क्षमता संपूर्ण देश में सर्वाधिक है।

32. (2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
सौर ऊर्जा क्षेत्र में विभिन्न तकनीकों का अनुप्रयोग किया जाता है। फोटोवोल्टिक प्रणाली सूर्य के प्रकाश को सीधे विद्युत में परिवर्तित करती है, जिसका उपयोग अधिकांश सौर पार्कों में होता है। केंद्रित सौर ऊर्जा तकनीक में दर्पणों द्वारा ऊष्मा उत्पन्न कर बिजली बनाई जाती है। राजस्थान का पश्चिमी क्षेत्र उच्चतम सौर विकिरण प्राप्त करता है, जो इसे इन परियोजनाओं हेतु आदर्श बनाता है। सौर पार्कों के माध्यम से सरकार एक ही स्थान पर बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराकर उत्पादन सुगम बनाती है।

33. (3) 5.5 - 6.5 kWh/m^2/दिन
राजस्थान में सौर ऊर्जा की तीव्रता वैश्विक स्तर पर सौर उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र बनाती है। राज्य में औसत सौर विकिरण लगभग 5.5 से 6.5 किलोवाट घंटा प्रति वर्ग मीटर प्रति दिन के मध्य दर्ज किया जाता है। विकिरण का यह उच्च स्तर विशेषतः पश्चिमी जिलों में पाया जाता है जहाँ वर्ष के 325 से अधिक दिन आकाश स्वच्छ रहता है। यह प्रचुर प्राकृतिक संसाधन राज्य को न्यूनतम लागत पर अधिकतम सौर बिजली उत्पन्न करने की अद्वितीय क्षमता प्रदान करता है।

34. (1) केवल I और III
पश्चिमी राजस्थान का क्षेत्र सौर ऊर्जा उत्पादन हेतु दो प्रमुख लाभ प्रदान करता है। प्रथम, यहाँ वृहद स्तर पर समतल और सस्ती बंजर भूमि उपलब्ध है जहाँ हजारों एकड़ में सौर पैनल स्थापित किए जा सकते हैं। द्वितीय, यहाँ सौर विकिरण की तीव्रता बहुत अधिक है। यद्यपि ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली धूल भरी आंधियां एक चुनौती हैं क्योंकि वे पैनलों पर धूल जमा कर देती हैं, जिससे अस्थाई रूप से उत्पादन क्षमता प्रभावित होती है और नियमित सफाई आवश्यक हो जाती है।

35. (3) राजस्थान की सौर नीति केवल राज्य के स्वामित्व वाली सार्वजनिक इकाइयों को सौर उत्पादन संयंत्र स्थापित करने की अनुमति देती है।
राजस्थान की सौर ऊर्जा नीति अत्यंत उदार है और इसमें निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाता है। अधिकांश वृहद सौर संयंत्र अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय निजी कंपनियों द्वारा विकसित एवं संचालित हैं। जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर जैसे पश्चिमी जिले अब सौर ऊर्जा के मुख्य केंद्र बन चुके हैं। सरकार शहरी क्षेत्रों में छतों पर सौर पैनल लगाने और ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर के माध्यम से पारेषण हानियों को कम करने हेतु निरंतर कार्य कर रही है।

36. (1) II, IV, I, III
भड़ला सोलर पार्क का विकास विभिन्न चरणों में योजनाबद्ध रूप से किया गया था। सर्वप्रथम प्रथम चरण में 65 मेगावाट की क्षमता स्थापित की गई, जिसके पश्चात द्वितीय चरण में 680 मेगावाट का विस्तार हुआ। इसके उपरांत तृतीय चरण में 1000 मेगावाट की वृहद क्षमता जोड़ी गई और अंततः चतुर्थ चरण के अंतर्गत 500 मेगावाट का कार्य पूर्ण हुआ। इस क्रमिक विकास ने तकनीकी चुनौतियों को समझने और बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने में सहायता की, जिससे यह विश्व का सबसे बड़ा सौर पार्क बना।

37. (2) 2,245 मेगावाट
जोधपुर जिले में स्थित भड़ला सोलर पार्क अपनी विशाल उत्पादन क्षमता के कारण वैश्विक स्तर पर विख्यात है। इसकी कुल स्थापित क्षमता लगभग 2245 मेगावाट है, जो इसे विश्व के सबसे बड़े सौर ऊर्जा परिसरों में सम्मिलित करती है। यह पार्क हजारों एकड़ शुष्क भूमि पर विस्तृत है और इसमें अनेक निजी तथा सरकारी कंपनियों की उत्पादन इकाइयाँ कार्यरत हैं। इस वृहद परियोजना ने राजस्थान को हरित ऊर्जा के वैश्विक मानचित्र पर एक प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया है।

38. (2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
भड़ला सोलर पार्क का विकास विभिन्न संयुक्त उद्यमों और सरकारी संस्थाओं के माध्यम से संपन्न हुआ है। राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम नोडल एजेंसी के रूप में इस संपूर्ण परियोजना की देखरेख करता है। पार्क के विभिन्न चरणों को राजस्थान सोलर पार्क डेवलपमेंट कंपनी, सौर्य ऊर्जा कंपनी और अडानी रिन्यूएबल जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा विकसित किया गया है। यह सार्वजनिक-निजी भागीदारी का एक सफल उदाहरण है, जिसने जटिल बुनियादी ढांचागत कार्यों को समय पर पूर्ण कर निवेश आकर्षित किया है।

39. (4) सरकार सभी बुनियादी ढांचे के साथ विकसित भूमि प्रदान करती है, जिससे विकासकर्ता केवल संयंत्र स्थापित कर सकें।
"प्लग-एंड-प्ले" मॉडल का मुख्य उद्देश्य निवेशकों हेतु सौर संयंत्र स्थापना की प्रक्रिया को सरल और त्वरित बनाना है। इसके अंतर्गत राज्य सरकार पूर्व में ही भूमि अधिग्रहित करती है और वहां विद्युत निकासी हेतु उप-स्टेशन, सड़कें तथा जल जैसी आवश्यक सुविधाएं विकसित कर देती है। निजी विकासकर्ताओं को केवल अपने सौर पैनल और संबंधित उपकरण स्थापित

Downloaded from www.pdf.tube

करने होते हैं। इससे परियोजनाओं के क्रियान्वयन में लगने वाला समय और प्रशासनिक बाधाएं न्यूनतम हो जाती हैं, जिससे राज्य में निवेश बढ़ता है।

40. (1) I, II और IV
भड़ला सोलर पार्क फलौदी जिले में अवस्थित है और यह लगभग 14,000 एकड़ के विशाल भू-भाग में फैला हुआ है। इस पार्क का विकास विभिन्न चरणों में अनेक एजेंसियों द्वारा किया गया है। यहाँ की एक प्रमुख उपलब्धि सौर ऊर्जा की अत्यंत प्रतिस्पर्धी दरें हैं, जो भारत के न्यूनतम शुल्क में सम्मिलित हैं। इस परियोजना ने आधुनिक तकनीक और अनुकूल नीतियों के समन्वय से बिजली की कीमतों को कम करने और अक्षय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने में बड़ी सफलता प्राप्त की है।

41. (3) अमर सागर (जैसलमेर)
राजस्थान में पवन ऊर्जा के व्यावसायिक उत्पादन का सूत्रपात जैसलमेर जिले के अमर सागर से हुआ था। यहाँ राज्य की प्रथम पवन ऊर्जा परियोजना स्थापित की गई थी, जिसने पश्चिमी राजस्थान की तीव्र पवन गति को विद्युत में परिवर्तित करने की दिशा में प्रथम चरण बढ़ाया। अमर सागर की सफलता के पश्चात ही राज्य के अन्य क्षेत्रों जैसे प्रतापगढ़ और जोधपुर में भी पवन फार्म विकसित किए गए। यह ऐतिहासिक परियोजना राजस्थान को नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में मील का पत्थर है।

42. (1) सघन वनों या ऊंचे पर्वतों से मुक्त उच्च वेग वाले पवन गलियारे।
जैसलमेर और बाड़मेर जिलों की भौगोलिक परिस्थिति पवन ऊर्जा उत्पादन हेतु सर्वश्रेष्ठ है। थार मरुस्थल का यह भाग विस्तृत और खुला क्षेत्र है, जहाँ वायु प्रवाह में अवरोध उत्पन्न करने वाले सघन वन या उच्च पर्वत नहीं हैं। यहाँ प्रवाहित होने वाली तीव्र और निरंतर हवाएं पवन चक्कियों के टर्बाइन घुमाने हेतु आवश्यक गति प्रदान करती हैं। इन प्राकृतिक पवन गलियारों की पहचान ने इस क्षेत्र को भारत के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पवन ऊर्जा उत्पादन केंद्रों में परिवर्तित कर दिया है।

43. (4) केवल I और V
राजस्थान पवन ऊर्जा उत्पादन में राष्ट्र के शीर्ष राज्यों में सम्मिलित है, यद्यपि सौर ऊर्जा की तुलना में इसकी स्थिति परिवर्तनशील रहती है। पवन ऊर्जा का उत्पादन पूर्णतः सुसंगत नहीं होता क्योंकि यह वायु की गति और मौसम पर निर्भर करता है। राज्य सरकार ने 2019 में एक एकीकृत पवन और हाइब्रिड नीति जारी की है। जैसलमेर अपने विशाल पवन फार्मों के कारण राज्य की पवन ऊर्जा राजधानी कहलाता है, जहाँ निजी क्षेत्र ने वृहद स्तर पर टर्बाइन स्थापित किए हैं।

44. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान सरकार सौर और पवन ऊर्जा के संयुक्त उपयोग, जिसे हाइब्रिड मॉडल कहा जाता है, को सक्रियता से प्रोत्साहित कर रही है। इसका मुख्य लाभ यह है कि एक ही भूमि खंड पर सौर पैनल और पवन चक्कियां दोनों स्थापित की जा सकती हैं, जिससे संसाधनों का इष्टतम उपयोग होता है। चूँकि सौर ऊर्जा दिवस में और पवन ऊर्जा प्रायः रात्रि में अधिक प्रभावी होती है, अतः इनका सम्मिश्रण ग्रिड को अधिक संतुलित और निरंतर विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने में सहायक होता है।

45. (3) सोडा बंधन - जैसलमेर
राजस्थान के विभिन्न जिलों में पवन ऊर्जा परियोजनाओं का निरंतर विस्तार हुआ है। जैसलमेर जिले में स्थित सोडा बंधन एक प्रमुख पवन ऊर्जा पार्क है, जहाँ वृहद संख्या में पवन चक्कियां क्रियान्वित हैं। अन्य स्थानों जैसे प्रतापगढ़ में देवगढ़ और जोधपुर में बीठड़ी में भी महत्वपूर्ण पवन फार्म संचालित हैं। ये परियोजनाएं राज्य की स्वच्छ ऊर्जा क्षमता बढ़ाने और सुदूर मरुस्थलीय क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास के साथ-साथ स्थानीय रोजगार के अवसर सृजित करने में सहायक सिद्ध हो रही हैं।

46. (4) सरसों की भूसी (जूलीफ्लोरा सहित)
राजस्थान एक प्रमुख कृषि प्रधान राज्य है, जहाँ सरसों का उत्पादन वृहद स्तर पर होता है। सरसों की कटाई के उपरांत शेष रहने वाली भूसी और डंठल बायोमास ऊर्जा उत्पादन हेतु प्राथमिक कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इसके अतिरिक्त, राज्य के बंजर क्षेत्रों में प्रचुरता से उगने वाले विलायती बबूल (जूलीफ्लोरा) का उपयोग भी ईंधन के रूप में किया जाता है। ये स्रोत ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने और अपशिष्ट से ऊर्जा निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

47. (1) केवल I और II
बायोमास ऊर्जा परियोजनाएं राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में दोहरे लाभ प्रदान करती हैं। ये कृषकों को उनके कृषि अवशेषों के विक्रय हेतु एक बाजार उपलब्ध कराती हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है। यद्यपि इन संयंत्रों के संचालन में मुख्य चुनौती कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करना है, क्योंकि फसल अवशेष केवल विशिष्ट मौसम में उपलब्ध होते हैं। बायोमास को राज्य की नीतियों के अंतर्गत एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत माना जाता है क्योंकि यह जैविक सामग्री का उपयोग करता है।

48. (2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
राजस्थान में बायोमास संयंत्रों का संजाल विभिन्न कृषि क्षेत्रों में विस्तृत है। पदमपुर बायोमास संयंत्र श्रीगंगानगर जिले में अवस्थित है, जबकि रंगपुर संयंत्र कोटा जिले में कार्यरत है। खातौली परियोजना टोंक जिले में स्थित है और चंदेरिया संयंत्र चित्तौड़गढ़ जिले के औद्योगिक क्षेत्र को ऊर्जा प्रदान करता है। ये संयंत्र स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कृषि अपशिष्ट का उपयोग कर बिजली उत्पन्न करते हैं, जिससे पर्यावरण प्रदूषण में कमी आती है और स्थानीय विद्युत मांग की पूर्ति सुनिश्चित होती है।

49. (2) जैविक अपशिष्ट को घरों के लिए स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन और खाद में बदलना।
राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में बायोगैस संयंत्रों को प्रोत्साहित करना एक महत्वपूर्ण सामुदायिक पहल है। इन संयंत्रों का मुख्य उद्देश्य पशुओं के गोबर और अन्य जैविक कचरे का वैज्ञानिक विधि से उपयोग करना है। इससे ग्रामीण परिवारों

NODIA

को भोजन पकाने हेतु धुआं रहित और स्वच्छ ईंधन प्राप्त होता है, जिससे महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार होता है। साथ ही, बायोगैस उत्पादन के पश्चात बचा अवशेष उच्च गुणवत्ता वाली जैविक खाद के रूप में कृषि उत्पादकता बढ़ाने में अत्यंत उपयोगी होता है।

50. (1) लिग्नाइट कोयला
बायोमास ऊर्जा उत्पादन हेतु मुख्य रूप से जैविक और पुनर्चक्रण योग्य स्रोतों जैसे सरसों की डंठल, जूलीफ्लोरा और कपास के अवशेषों का उपयोग किया जाता है। इसके विपरीत, लिग्नाइट कोयला एक जीवाश्म ईंधन है जो भूमि के भीतर से खनन द्वारा प्राप्त किया जाता है और इसे तापीय ऊर्जा की श्रेणी में रखा जाता है। बायोमास संयंत्रों का लक्ष्य गैर-जीवाश्म अपशिष्ट को बिजली में परिवर्तित करना है, जो पर्यावरण की दृष्टि से कोयला आधारित उत्पादन की तुलना में अधिक टिकाऊ विकल्प है।

51. (3) राजस्थान ऊर्जा विकास एजेंसी (REDA) और राजस्थान राज्य विद्युत निगम लिमिटेड (RSPCL)
राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड का गठन अगस्त 2002 में दो विशिष्ट संस्थाओं के विलय द्वारा किया गया था। इसमें राजस्थान ऊर्जा विकास एजेंसी, जो नवीकरणीय ऊर्जा के प्रचार का कार्य करती थी, और राजस्थान राज्य विद्युत निगम लिमिटेड सम्मिलित थे। इस विलय का मुख्य उद्देश्य राज्य में अक्षय ऊर्जा संबंधी समस्त गतिविधियों को एक ही संस्था के अधीन लाना था। इससे प्रशासनिक दक्षता बढ़ी और सौर तथा पवन ऊर्जा परियोजनाओं के त्वरित क्रियान्वयन हेतु एक सुदृढ़ मंच तैयार हुआ।

52. (3) REDA का गठन → RSEB का विखंडन → RRECL का गठन
राजस्थान में ऊर्जा संस्थानों का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया रही है। सर्वप्रथम नवीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहित करने हेतु 'रेडा' का गठन हुआ। तत्पश्चात विद्युत क्षेत्र में व्यापक सुधार लाने हेतु वर्ष 2000 में राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड का विखंडन किया गया, जिससे उत्पादन, पारेषण और वितरण हेतु पृथक कंपनियां बनीं। अंततः 2002 में रेडा और आर.एस.पी.सी.एल. के विलय से राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम का गठन हुआ, जो वर्तमान में अक्षय ऊर्जा क्षेत्र की मुख्य नोडल एजेंसी के रूप में कार्यरत है।

53. (3) I, III और IV
राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम राज्य में नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। यह संस्था न केवल सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाओं हेतु एकल खिड़की स्वीकृति प्रदान करती है, बल्कि ऊर्जा संरक्षण कार्यक्रमों और दक्षता सुधार पहलों को भी क्रियान्वित करती है। यद्यपि विद्युत दरों का निर्धारण करना इसका उत्तरदायित्व नहीं है, क्योंकि यह कार्य स्वतंत्र नियामक आयोग द्वारा संपादित किया जाता है। निगम का मुख्य ध्यान स्वच्छ ऊर्जा विकास और सतत भविष्य पर केंद्रित है।

54. (2) यह नवीकरणीय परियोजनाओं की निगरानी करता है और संबंधित राज्य नीतियां तैयार करता है।
राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम राज्य सरकार के अधीन एक महत्वपूर्ण निकाय है जो अक्षय ऊर्जा क्षेत्र हेतु नीतिगत ढांचा तैयार करता है। यह निगम सौर, पवन और बायोमास परियोजनाओं हेतु दिशानिर्देश जारी करता है और निजी निवेशकों हेतु अनुकूल वातावरण सृजित करता है। यह उत्पादन संयंत्रों की कार्यप्रणाली की सतत निगरानी भी करता है। वितरण या जलविद्युत के विपरीत, इसका विशिष्ट कार्य केवल गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों का विकास और संरक्षण करना है ताकि राज्य हरित ऊर्जा में अग्रणी बना रहे।

55. (4) जयपुर
राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड का मुख्य प्रशासनिक कार्यालय राज्य की राजधानी जयपुर में स्थित है। यहाँ से निगम संपूर्ण राज्य में विस्तृत सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाओं का समन्वय और प्रभावी प्रबंधन करता है। जयपुर में अवस्थित होने के कारण यह सरकार के ऊर्जा विभाग और अन्य नियामक निकायों के साथ मिलकर नीति निर्माण और क्रियान्वयन में सक्षम है। यह मुख्यालय राज्य में नवीकरणीय ऊर्जा निवेश को आकर्षित करने और हितधारकों के साथ संवाद हेतु केंद्रीय केंद्र के रूप में कार्य करता है।

56. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान में विद्युत वितरण का कार्य तीन मुख्य सरकारी कंपनियों और कुछ निजी फ्रेंचाइजी द्वारा संपन्न होता है। जयपुर डिस्कॉम अलवर, भरतपुर और दौसा जैसे पूर्वी जिलों को कवर करता है, जबकि अजमेर डिस्कॉम भीलवाड़ा, नागौर और सीकर जैसे मध्य क्षेत्रों में सेवाएं प्रदान करता है। जोधपुर डिस्कॉम के पास बीकानेर, बाड़मेर और जैसलमेर जैसे विशाल पश्चिमी जिले हैं। कोटा शहर में वितरण का कार्य निजी क्षेत्र की सी.ई.एस.सी. लिमिटेड द्वारा फ्रेंचाइजी मॉडल के अंतर्गत कुशलतापूर्वक प्रबंधित किया जा रहा है।

57. (3) परिचालन दक्षता में सुधार के लिए उत्पादन, पारेषण और वितरण को अलग करना।
वर्ष 2000 में राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड का विखंडन विद्युत क्षेत्र में व्यापक सुधारों की दिशा में एक क्रांतिकारी चरण था। इसका मुख्य उद्देश्य एक विशाल संस्था के प्रशासनिक बोझ को कम करना और कार्यों में विशेषज्ञता लाना था। उत्पादन, पारेषण और वितरण के कार्यों को पृथक कंपनियों में विभक्त करने से जवाबदेही बढ़ी और वित्तीय प्रबंधन सुदृढ़ हुआ। इस पृथक्करण ने बिजली चोरी रोकने, तकनीकी हानियों को न्यूनतम करने और उपभोक्ता सेवाओं को अधिक बेहतर और कुशल बनाने का मार्ग प्रशस्त किया।

58. (1) केवल I और V
जोधपुर डिस्कॉम राजस्थान का विशालतम वितरण क्षेत्र है जो मरुस्थलीय जिलों को कवर करता है, किंतु इसे विरल जनसंख्या के कारण बुनियादी ढांचे की उच्च लागत का सामना करना पड़ता है। राज्य की समस्त वितरण कंपनियां वर्तमान में भारी वित्तीय घाटे और ऋण की चुनौती से जूझ रही हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) राज्य की कुल स्थापित क्षमता में अब सौर और पवन जैसी नवीकरणीय ऊर्जा, तापीय ऊर्जा से अधिक हो गई है।
राजस्थान के ऊर्जा क्षेत्र में विगत वर्षों में अभूतपूर्व परिवर्तन आए हैं। राज्य ने अपनी विशाल सौर और पवन ऊर्जा क्षमता का अत्यंत कुशलता से उपयोग किया है, जिससे कुल स्थापित क्षमता में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी बहुत बढ़ी है। वर्तमान में राज्य की कुल ऊर्जा क्षमता में सौर और पवन का योगदान पारंपरिक कोयला आधारित तापीय ऊर्जा से अधिक हो गया है, जो राजस्थान के स्वच्छ ऊर्जा की ओर सफल गमन को दर्शाता है।

2. (1) केवल I और III
राजस्थान वर्तमान में संपूर्ण भारत में सौर ऊर्जा उत्पादन में प्रथम स्थान पर है और इसकी स्थापित क्षमता अन्य राज्यों की अपेक्षा सर्वाधिक है। ग्रिड की स्थिरता बनाए रखने और निरंतर आधार-भार प्रदान करने हेतु तापीय विद्युत संयंत्र अभी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यद्यपि मांग में वृद्धि होने पर अंतर-राज्यीय ग्रिड से सहायता प्राप्त की जाती है, परंतु राज्य निरंतर अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाकर आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है।

3. (3) राज्य के स्वामित्व वाली सभी बिजली उत्पादन सुविधाओं और संयंत्रों का विकास और संचालन करना।
राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड राज्य सरकार की एक प्रमुख संस्था है। इसका मुख्य उत्तरदायित्व प्रदेश के भीतर विभिन्न विद्युत उत्पादन केंद्रों का विकास, प्रचालन और रखरखाव करना है। इसके अंतर्गत तापीय, जलविद्युत और गैस आधारित संयंत्र सम्मिलित हैं। यह निगम राज्य की निरंतर बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु नई उत्पादन परियोजनाओं की योजना बनाने और उन्हें प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने में केंद्रीय भूमिका का निर्वहन करता है।

4. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
पश्चिमी राजस्थान का भू-भाग अपनी विशिष्ट भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों के कारण सौर ऊर्जा उत्पादन हेतु अत्यंत अनुकूल है। यहाँ वर्ष भर रहने वाली तीव्र सूर्य की किरणों और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध अनुपयोगी बंजर भूमि ने वृहद स्तर पर सौर पार्कों की स्थापना को सुगम बनाया है। इन्हीं अनुकूल भौगोलिक कारकों के कारण पिछले एक दशक में राज्य की कुल स्थापित ऊर्जा क्षमता में नवीकरणीय स्रोतों का अनुपात अत्यंत तीव्र गति से बढ़ा है।

5. (3) नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन क्षेत्र में निजी क्षेत्र की भागीदारी पूर्णतः प्रतिबंधित है।
राजस्थान की ऊर्जा नीतियों के अंतर्गत नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में निजी निवेश को व्यापक प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है। अधिकांश बड़े सौर और पवन ऊर्जा संयंत्र निजी विकासकर्ताओं द्वारा ही स्थापित और संचालित किए जा रहे हैं। राज्य ने अपने समस्त गांवों का शत-प्रतिशत विद्युतीकरण पूर्ण कर लिया है और अतिरिक्त ऊर्जा के अंतरराज्यीय पारेषण हेतु आधुनिक ग्रिड प्रणाली का उपयोग कर रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में बायोमास ऊर्जा का लघु हिस्सा भी महत्वपूर्ण है।

6. (2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
राजस्थान के प्रमुख तापीय विद्युत संयंत्र विभिन्न जिलों में रणनीतिक रूप से स्थित हैं। सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन श्रीगंगानगर जिले में स्थापित है, जबकि छबड़ा संयंत्र बारां जिले में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। कालीसिंध तापीय विद्युत स्टेशन झालावाड़ जिले में और कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन कोटा जिले में चंबल नदी के तट पर स्थित है। ये संयंत्र राज्य की आधार-भार विद्युत आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु निरंतर बिजली उत्पादन करते हैं।

NODIA

(4) परसा ईस्ट और कांता बासन (PEKB) कोयला ब्लॉक, छत्तीसगढ़
राजस्थान के कोयला आधारित तापीय विद्युत संयंत्रों को ईंधन की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु छत्तीसगढ़ राज्य में विशिष्ट कोयला खदानें आवंटित की गई हैं। सरगुजा जिले में स्थित परसा ईस्ट और कांता बासन ब्लॉक से उत्पादित कोयला रेल मार्ग द्वारा राजस्थान के विभिन्न संयंत्रों तक पहुँचाया जाता है। अपनी स्वयं की कोयला खदानों पर निर्भरता से राज्य को ईंधन की कीमतों में स्थिरता और विद्युत उत्पादन में निरंतरता बनाए रखने में सहायता मिलती है।

8. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
सुपरक्रिटिकल तकनीक में जल को अत्यधिक उच्च दबाव और तापमान पर गर्म किया जाता है, जिससे वह सीधे भाप में परिवर्तित हो जाता है। इस आधुनिक प्रक्रिया से विद्युत उत्पादन की दक्षता बढ़ती है और कोयले की खपत में कमी आती है। राजस्थान में सूरतगढ़ और छबड़ा जैसे विशाल तापीय विद्युत संयंत्रों ने अपनी नवीन उत्पादन इकाइयों में इसी तकनीक को अपनाया है। इससे पर्यावरण प्रदूषण कम करने और किफायती दर पर बिजली पैदा करने में सहायता मिलती है।

9. (3) केवल I और IV
राजस्थान में विद्युत की कुल स्थापित क्षमता में तापीय ऊर्जा के साथ सौर, पवन और जलविद्युत का भी बड़ा अनुपात है। राज्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु केंद्र सरकार के परमाणु और तापीय विद्युत आवंटन पर भी निर्भर है। बाड़मेर और बीकानेर में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध लिग्नाइट कोयले का उपयोग स्थानीय बिजली संयंत्रों में किया जाता है। कोटा थर्मल पावर स्टेशन राज्य की प्रारंभिक बड़ी कोयला आधारित परियोजनाओं में से एक है, जो अब भी महत्वपूर्ण है।

अपनाया गया। यहाँ व्यक्तिगत घरों में स्वतंत्र सौर फोटोवोल्टिक प्रणालियाँ और बैटरियाँ स्थापित की गईं, जिससे उन्हें रात्रि में प्रकाश और बुनियादी विद्युत सुविधाएं प्राप्त हो सकीं। इस नवाचार ने मरुस्थलीय क्षेत्रों में विद्युतीकरण की समस्या का एक स्थायी और हरित समाधान प्रदान किया है।

68. (4) I, II और III
सौभाग्य योजना ने राजस्थान में घरेलू विद्युतीकरण हेतु एक समावेशी दृष्टिकोण अपनाया। इसमें आर्थिक रूप से दुर्बल परिवारों को पूर्णतः निःशुल्क कनेक्शन प्रदान किए गए, जबकि अन्य परिवारों को अल्प और सुगम किस्तों पर बिजली से जोड़ा गया। योजना के अंतर्गत ग्रिड कनेक्टिविटी और सौर ऊर्जा दोनों विकल्पों का उपयोग किया गया ताकि कोई भी घर प्रकाश से वंचित न रहे। इस पहल ने न केवल घरों को रोशन किया, अपितु सुदूर क्षेत्रों में शिक्षा और संचार के नवीन अवसर भी सृजित किए।

69. (3) DDUGJY विशेष रूप से केवल शहरी नगर पालिका क्षेत्रों के लिए निर्मित की गई थी।
दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के विद्युत बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने हेतु प्रारंभ की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य कृषि और गैर-कृषि कार्यों हेतु पृथक विद्युत फीडर निर्मित करना था ताकि दोनों क्षेत्रों को आवश्यकतानुसार बिजली प्राप्त हो सके। इसके विपरीत, सौभाग्य योजना का ध्यान अंतिम उपभोक्ता के घर तक कनेक्शन पहुँचाने पर केंद्रित था। ये दोनों योजनाएं एक-दूसरे की पूरक थीं और इनका लक्ष्य राज्य के प्रत्येक कोने में विश्वसनीय बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना था।

70. (2) रूरल इलेक्ट्रीफिकेशन कॉर्पोरेशन (REC) लिमिटेड
ग्रामीण विद्युतीकरण निगम लिमिटेड केंद्र सरकार की एक प्रमुख संस्था है जो राजस्थान सहित संपूर्ण देश में विद्युत परियोजनाओं के वित्तपोषण का कार्य करती है। यह सौभाग्य और दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु मुख्य नोडल एजेंसी है। आर.ई.सी. न केवल वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराती है, अपितु परियोजनाओं की प्रगति की निगरानी और गुणवत्ता सुनिश्चित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी सहायता से ही राजस्थान के सुदूर क्षेत्रों में बिजली ग्रिड का विस्तार हुआ है।

71. (4) सकल तकनीकी और वाणिज्यिक हानियाँ
विद्युत वितरण क्षेत्र में ए.टी. एंड सी. हानियाँ एक महत्वपूर्ण प्रदर्शन सूचक हैं। ये हानियाँ दो प्रकार की होती हैं: प्रथम, तकनीकी हानियाँ जो पारेषण और वितरण लाइनों में ऊष्मा के रूप में विद्युत क्षय के कारण होती हैं। द्वितीय, वाणिज्यिक हानियाँ जो बिजली चोरी, दोषपूर्ण मीटरिंग और बिल भुगतान न होने के कारण होती हैं। राजस्थान के डिस्कॉम हेतु इन हानियों को न्यूनतम करना एक बड़ी चुनौती है क्योंकि ये सीधे कंपनियों की वित्तीय स्थिति और विद्युत दरों को प्रभावित करती हैं।

72. (1) रियायती कृषि आपूर्ति और उच्च AT&C हानियों के कारण ऋण बढ़ता गया।
राजस्थान में वितरण कंपनियों के वित्तीय संकट का प्राथमिक कारण कृषि क्षेत्र को प्रदत्त भारी सब्सिडी और बिजली की चोरी है। कृषि हेतु अत्यंत न्यून दरों पर बिजली उपलब्ध कराने से डिस्कॉम के राजस्व और लागत के मध्य विशाल अंतराल उत्पन्न हो जाता है। इसके अतिरिक्त, तकनीकी न्यूनताओं और बिलिंग त्रुटियों के कारण होने वाली ए.टी. एंड सी. हानियाँ इस घाटे को और अधिक बढ़ा देती हैं। इस संचयी ऋण के कारण कंपनियों को बुनियादी ढांचा निवेश और ब्याज भुगतान में गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

73. (3) I, II, III और IV
उदय योजना को डिस्कॉम की वित्तीय स्थिति में सुधार हेतु एक व्यापक समाधान के रूप में प्रस्तुत किया गया था। राजस्थान इस योजना को अपनाने वाले अग्रणी राज्यों में सम्मिलित था। इसके अंतर्गत राज्य सरकार ने डिस्कॉम के कुल ऋण का 75% हिस्सा स्वयं ग्रहण कर उसे राज्य बांड में परिवर्तित कर दिया। इससे कंपनियों के ब्याज बोझ में उल्लेखनीय कमी आई। यद्यपि योजना का लक्ष्य परिचालन दक्षता सुधारना और घाटे को कम करना था, किंतु पूर्णतः शून्य हानि प्राप्त करना अभी भी एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य है।

74. (1) आपूर्ति की औसत लागत (ACS) और प्राप्त औसत राजस्व (ARR) के बीच निरंतर अंतर।
उदय योजना द्वारा ऋण भार कम होने के उपरांत भी राजस्थान के डिस्कॉम को दैनिक परिचालन में राजस्व न्यूनता का सामना करना पड़ता है। बिजली क्रय करने और उसे उपभोक्ताओं तक पहुँचाने की कुल लागत (ACS), उपभोक्ताओं से प्राप्त होने वाले औसत राजस्व (ARR) से अधिक बनी हुई है। यह वित्तीय अंतराल मुख्य रूप से उच्च वितरण हानियों और रियायती विद्युत दरों के कारण है। जब तक यह अंतराल समाप्त नहीं होता, वितरण कंपनियां पूर्णतः आत्मनिर्भर और लाभकारी स्थिति में नहीं आ सकेंगी।

NODIA

75. (4) राज्य पारेषण केबलों में कुशल सुपरकंडक्टिंग सामग्री का उपयोग।
राजस्थान में उच्च विद्युत हानियों के पीछे अनेक तकनीकी और मानवीय कारण विद्यमान हैं। मरुस्थलीय क्षेत्रों में अत्यंत लंबी वितरण लाइनें बिछानी पड़ती हैं, जिससे बिजली का क्षय अधिक होता है। साथ ही, कतिपय क्षेत्रों में बिजली की सीधी चोरी और बिना मीटर वाले कनेक्शन राजस्व को क्षति पहुँचाते हैं। इसके विपरीत, सुपरकंडक्टिंग जैसी आधुनिक और कुशल सामग्री का उपयोग हानियों को न्यूनतम करने हेतु किया जाता है, न कि उन्हें बढ़ाने हेतु। सरकार अब इन समस्याओं के समाधान हेतु तकनीकी सहायता ले रही है।

76. (2) संशोधित वितरण क्षेत्र योजना (RDSS)
संशोधित वितरण क्षेत्र योजना केंद्र सरकार की एक नवीन पहल है जिसका उद्देश्य राजस्थान के विद्युत वितरण क्षेत्र में आमूल-चूल परिवर्तन लाना है। इस योजना के अंतर्गत राज्य भर में लाखों स्मार्ट मीटर स्थापित किए जा रहे हैं ताकि विद्युत

खपत की सटीक निगरानी सुनिश्चित हो सके। यह योजना न केवल मीटरिंग पर ध्यान केंद्रित करती है, बल्कि पुराने तारों को प्रतिस्थापित करने और सब-स्टेशनों के आधुनिकीकरण हेतु भी वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इसका अंतिम लक्ष्य बिजली चोरी रोकना और सेवा में सुधार करना है।

77. (3) यह अग्रिम राजस्व संग्रह सुनिश्चित करता है, जिससे भुगतान न होने की समस्या हल हो जाती है।
स्मार्ट मीटरिंग में प्री-पेड सुविधा का समावेश डिस्कॉम हेतु अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकता है। इसमें उपभोक्ताओं को मोबाइल रिचार्ज की भांति पूर्व में भुगतान करना होता है, तभी उन्हें बिजली प्राप्त होती है। इससे डिस्कॉम को बिजली आपूर्ति से पूर्व ही राजस्व प्राप्त हो जाता है, जिससे नकदी प्रवाह बेहतर होता है। यह व्यवस्था बिल भुगतान न होने के कारण होने वाले बकाया और कानूनी विवादों को पूर्णतः समाप्त कर देती है। साथ ही, उपभोक्ता भी अपनी खपत के प्रति अधिक जागरूक होकर बिजली बचत करते हैं।

78. (4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के ऊर्जा क्षेत्र में सुधार हेतु विभिन्न योजनाएं विशिष्ट उद्देश्यों पर केंद्रित हैं। आर.डी.एस.एस. योजना स्मार्ट मीटरिंग द्वारा वितरण हानियों को कम करने हेतु है। उदय योजना का प्राथमिक कार्य डिस्कॉम के ऋण को कम कर उन्हें वित्तीय रूप से पुनर्जीवित करना था। सौभाग्य योजना ने प्रत्येक घर तक विद्युत कनेक्शन पहुँचाने का कार्य संपन्न किया, जबकि पीएम कुसुम योजना के माध्यम से कृषि पंपों को सौर ऊर्जा से जोड़कर किसानों को आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। ये प्रयास सम्मिलित रूप से ऊर्जा क्षेत्र को सशक्त बनाते हैं।

79. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
स्मार्ट मीटर विद्युत वितरण प्रणाली में पारदर्शिता और दक्षता लाने का एक आधुनिक समाधान हैं। ये मीटर संचार तकनीक द्वारा सीधे डिस्कॉम के सर्वर को डेटा प्रेषित करते हैं, जिससे रीडिंग हेतु घर-घर जाने की आवश्यकता नहीं रहती। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ये मीटर किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ या अनधिकृत उपयोग की त्वरित सूचना प्रदान करते हैं, जिससे बिजली चोरी पर प्रभावी नियंत्रण लगता है। इससे बिलिंग की सटीकता बढ़ती है और उपभोक्ताओं को उनके वास्तविक उपयोग का सही बिल प्राप्त होता है।

80. (2) केंद्रित सौर ऊर्जा (CSP)
डिस्कॉम के आधुनिकीकरण हेतु अनेक डिजिटल प्रणालियों का अनुप्रयोग किया जाता है। ए.एम.आई. तकनीक स्मार्ट मीटरों से डेटा एकत्र करती है, जबकि स्काडा प्रणाली ग्रिड के दूरस्थ नियंत्रण और निगरानी में सहायता करती है। ई.आर.पी. सिस्टम बिलिंग और उपभोक्ता प्रबंधन को व्यवस्थित करता है। इसके विपरीत, केंद्रित सौर ऊर्जा बिजली उत्पादन की एक तकनीक है जिसका उपयोग सौर पार्कों में किया जाता है, न कि वितरण नेटवर्क के प्रबंधन में। यह उत्पादन तकनीक और वितरण बुनियादी ढांचे के मध्य स्पष्ट विभाजन को दर्शाता है।

81. (2) राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड (RRECL)
राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम न केवल सौर और पवन ऊर्जा के विकास हेतु उत्तरदायी है, अपितु यह राज्य में ऊर्जा संरक्षण हेतु भी मुख्य नोडल एजेंसी है। ऊर्जा दक्षता ब्यूरो के निर्देशों के अंतर्गत, यह निगम बिजली बचत हेतु जागरूकता अभियान संचालित करता है और उद्योगों तथा भवनों में ऊर्जा दक्षता मानकों को प्रभावी ढंग से लागू करता है। ऊर्जा संरक्षण अधिनियम 2001 के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु यह निगम राज्य सरकार और विभिन्न हितधारकों के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है।

82. (2) II, I, III
किसी भी औद्योगिक इकाई में ऊर्जा की बचत करने हेतु एक वैज्ञानिक और व्यवस्थित प्रक्रिया अपनाई जाती है। सर्वप्रथम ऊर्जा लेखापरीक्षा (ऑडिट) संपन्न की जाती है ताकि यह ज्ञात हो सके कि ऊर्जा का अपव्यय कहाँ हो रहा है। तत्पश्चात, ऑडिट रिपोर्ट के आधार पर आवश्यक तकनीकी सुधार और ऊर्जा बचत के उपाय क्रियान्वित किए जाते हैं। अंत में, इन उपायों से वास्तविक रूप में कितनी बिजली की बचत हुई है, उसका सटीक मापन और सत्यापन किया जाता है। यह दृष्टिकोण उद्योगों की उत्पादन लागत कम करने में सहायक है।

83. (3) यह बड़े व्यावसायिक भवनों के लिए न्यूनतम प्रदर्शन मानक निर्धारित करता है।
ऊर्जा संरक्षण भवन संहिता एक महत्वपूर्ण नीति है जो भविष्य के शहरी बुनियादी ढांचे को टिकाऊ बनाने हेतु तैयार की गई है। यह संहिता विशेष रूप से वृहद वाणिज्यिक परिसरों, मॉल और कार्यालय भवनों हेतु निर्माण मानक निर्धारित करती है ताकि वे न्यूनतम बिजली का उपयोग करें। इसमें दीवारों का इन्सुलेशन, प्राकृतिक प्रकाश का इष्टतम उपयोग और कुशल वातानुकूलन प्रणालियाँ सम्मिलित हैं। इन मानकों का अनुपालन करने से न केवल बिजली के बिल कम होते हैं, बल्कि पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव भी न्यूनतम होते हैं।

84. (4) सीमेंट और तापीय ऊर्जा जैसे ऊर्जा-गहन उद्योगों में नामित उपभोक्ता।
परफॉर्म अचीव एंड ट्रेड (PAT) योजना राजस्थान के उन बड़े उद्योगों को लक्षित करती है जो उत्पादन प्रक्रिया में अत्यधिक बिजली का उपभोग करते हैं। इसमें सीमेंट कारखाने और बिजली उत्पादन संयंत्र जैसे क्षेत्र सम्मिलित हैं जिन्हें 'नामित उपभोक्ता' कहा जाता है। सरकार इन इकाइयों हेतु ऊर्जा खपत कम करने के विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित करती है। जो उद्योग अपने लक्ष्य से अधिक बचत करते हैं, उन्हें ऊर्जा बचत प्रमाण पत्र प्रदान किए जाते हैं, जिनका व्यापार किया जा सकता है। यह योजना दक्षता हेतु बाजार आधारित प्रोत्साहन प्रदान करती है।

85. (3) अक्षम कृषि पंप सेटों को ऊर्जा-कुशल स्टार-रेटेड पंप सेटों के साथ अपग्रेड करना।
राजस्थान का कृषि क्षेत्र बिजली का एक वृहद उपभोक्ता है, जहाँ पुराने पंपों के कारण ऊर्जा का भारी अपव्यय होता है। ऊर्जा संरक्षण प्रयासों के अंतर्गत, सरकार किसानों को पुराने पंपों के स्थान पर आधुनिक स्टार-रेटेड पंप सेट स्थापित करने

Downloaded from www.pdf.tube

हेतु प्रोत्साहित और सहायता कर रही है। ये नवीन पंप समान मात्रा में जल निष्कर्षण हेतु काफी कम बिजली की खपत करते हैं। इससे न केवल डिस्कॉम पर भार कम होता है, बल्कि किसानों का विद्युत व्यय भी घटता है और भूजल का अधिक जिम्मेदारी से उपयोग सुनिश्चित होता है।

86. (2) नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करके वैद्युत अपघटन (इलेक्ट्रोलिसिस) के माध्यम से जल को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करना।
हरित हाइड्रोजन भविष्य का एक स्वच्छ ईंधन है जिसे बिना किसी कार्बन उत्सर्जन के उत्पादित किया जाता है। इसकी प्रक्रिया में सौर या पवन जैसी नवीकरणीय ऊर्जा से प्राप्त बिजली का उपयोग कर जल के अणुओं को विभाजित किया जाता है। इस प्रक्रिया में केवल हाइड्रोजन और ऑक्सीजन मुक्त होते हैं, जिससे पर्यावरण को कोई क्षति नहीं पहुँचती। यह तकनीक उद्योगों और भारी परिवहन को कार्बन मुक्त बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी चरण है। राजस्थान अपनी विशाल सौर क्षमता के कारण हरित हाइड्रोजन उत्पादन का आदर्श केंद्र बन सकता है।

87. (3) 2,000 किलोटन प्रति वर्ष
राजस्थान सरकार ने अपनी महत्वाकांक्षी हरित हाइड्रोजन नीति 2023 के माध्यम से इस उभरते क्षेत्र में अग्रणी नेतृत्व का लक्ष्य रखा है। राज्य का लक्ष्य वर्ष 2030 तक प्रति वर्ष 2000 किलोटन हरित हाइड्रोजन उत्पादन की क्षमता विकसित करना है। इसके लिए सरकार निजी निवेश आकर्षित करने और आवश्यक बुनियादी ढांचा विकसित करने पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रही है। यह लक्ष्य न केवल राज्य की औद्योगिक क्षमता बढ़ाएगा, बल्कि राजस्थान को वैश्विक स्तर पर स्वच्छ ईंधन के प्रमुख निर्यातक के रूप में स्थापित करेगा।

88. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
हरित हाइड्रोजन के उत्पादन में सर्वाधिक लागत नवीकरणीय बिजली की होती है, और राजस्थान इस दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। राज्य में सौर और पवन ऊर्जा का अपार भंडार उपलब्ध है, जिससे सस्ती बिजली प्राप्त की जा सकती है। इसके अतिरिक्त, यहाँ उपलब्ध विस्तृत भूमि और भविष्य में बढ़ने वाली औद्योगिक मांग इसे एक उत्कृष्ट केंद्र बनाती है। प्राकृतिक संसाधनों और अनुकूल सरकारी नीतियों के इस समन्वय ने राजस्थान को हरित हाइड्रोजन क्षेत्र में निवेश हेतु भारत के सर्वाधिक पसंदीदा स्थलों में सम्मिलित किया है।

89. (3) ग्रीन हाइड्रोजन - नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करके उत्पादित
हाइड्रोजन के विभिन्न प्रकारों का वर्गीकरण उनके उत्पादन की विधि और प्रयुक्त ऊर्जा स्रोत के आधार पर किया जाता है। जब हाइड्रोजन का उत्पादन सौर, पवन या जलविद्युत जैसी अक्षय ऊर्जा का उपयोग कर किया जाता है, तो उसे हरित हाइड्रोजन कहते हैं क्योंकि इसमें शून्य कार्बन उत्सर्जन होता है। इसके विपरीत, कोयले से निर्मित हाइड्रोजन को ग्रे और प्राकृतिक गैस से कार्बन कैप्चर के साथ निर्मित हाइड्रोजन को नीला कहा जाता है। हरित हाइड्रोजन अपनी प्रदूषण मुक्त प्रकृति के कारण ऊर्जा संक्रमण का सबसे महत्वपूर्ण भाग है।

90. (1) हाइड्रोजन उत्पादन में उपयोग की जाने वाली नवीकरणीय ऊर्जा के लिए पारेषण और व्हीलिंग शुल्क पर छूट।
निवेशकों को आकर्षित करने हेतु राजस्थान सरकार हरित हाइड्रोजन क्षेत्र में अनेक आकर्षक प्रोत्साहन प्रदान कर रही है। इसमें सर्वाधिक प्रमुख लाभ सौर और पवन ऊर्जा को उत्पादन संयंत्र तक प्रेषित करने हेतु पारेषण और व्हीलिंग शुल्कों में दी जाने वाली वृहद छूट है। इसके अतिरिक्त, भूमि आवंटन में प्राथमिकता और जल के उपयोग संबंधी रियायतें भी प्रदान की जा रही हैं। ये वित्तीय लाभ उत्पादन लागत कम करने में सहायक हैं, जिससे राजस्थान का हरित हाइड्रोजन उत्पाद वैश्विक बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी बन जाता है।

91. (4) सौर और पवन ऊर्जा
राजस्थान ऐतिहासिक रूप से बिजली की न्यूनता वाला राज्य रहा है, किंतु सौर और पवन ऊर्जा क्षेत्र में आई क्रांति ने इस स्थिति को परिवर्तित कर दिया है। राज्य की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता अब उसकी स्वयं की मांग से अधिक हो गई है, विशेषकर दिवस के समय जब सौर विकिरण उच्चतम होता है। इस अधिशेष उत्पादन के कारण राजस्थान अब पड़ोसी राज्यों को बिजली निर्यात करने की स्थिति में आ गया है। हरित ऊर्जा में यह बढ़त राज्य की आर्थिक स्थिति सुधारने और भारत के स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों में बड़ा योगदान दे रही है।

92. (2) राजस्थान दिन के दौरान अतिरिक्त बिजली का निर्यात करता है और शाम के उच्च मांग समय के दौरान आयात करता है।
सौर ऊर्जा की प्रचुरता के कारण राजस्थान का ग्रिड एक विशिष्ट प्रतिरूप का अनुसरण करता है। दोपहर के समय जब सौर उत्पादन अपने चरमोत्कर्ष पर होता है, राज्य के पास आवश्यकता से अधिक बिजली होती है, जिसे बिजली एक्सचेंजों द्वारा अन्य राज्यों को विक्रय किया जाता है। यद्यपि, सूर्यास्त के पश्चात जब सौर उत्पादन शून्य हो जाता है और घरेलू मांग में वृद्धि होती है, तब राज्य को अपनी आवश्यकता पूर्ण करने हेतु तापीय संयंत्रों या अंतर-राज्यीय ग्रिड से बिजली लेनी पड़ती है। यह संतुलन बनाए रखना ग्रिड प्रबंधन की मुख्य चुनौती है।

93. (3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
बिजली के बाजार में मांग और आपूर्ति के अनुसार विभिन्न ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं। 'डे-अहेड' मार्केट में अगले दिन हेतु सौदे होते हैं, जबकि 'टर्म-अहेड' में कई दिन पूर्व की योजना बनाई जाती है। 'रीयल-टाइम' मार्केट अल्प समय के नोटिस पर ग्रिड को संतुलित करने हेतु प्रयुक्त होता है। विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा हेतु 'ग्रीन टर्म-अहेड' बाजार निर्मित किया गया है, जहाँ राजस्थान अपनी सौर और पवन बिजली उन संस्थाओं को विक्रय कर सकता है जिन्हें अपने हरित ऊर्जा लक्ष्यों को पूर्ण करना होता है।

NODIA

सूची I: (हवाई अड्डा)
A. जयपुर हवाई अड्डा
B. नाल हवाई अड्डा
C. किशनगढ़ हवाई अड्डा
D. महाराणा प्रताप हवाई अड्डा
सूची II: (परिचालन स्थिति/प्रकार)
i. अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा
ii. नागरिक परिक्षेत्र के साथ सैन्य एयरबेस
iii. उड़ान योजना के तहत ग्रीनफील्ड हवाई अड्डा
iv. दक्षिण राजस्थान की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला घरेलू हवाई अड्डा
सही कूट चुनिए:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. राजस्थान में दूरसंचार बुनियादी ढांचे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान का समग्र टेली-घनत्व भारत के राष्ट्रीय टेली-घनत्व औसत से अधिक है।
II. रिलायंस जियो ने राजस्थान में पहली 5G सेवा नाथद्वारा से शुरू की।
III. राज्य में ग्रामीण मोबाइल संयोजकता सुधारने के लिए यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड (USOF) का उपयोग किया जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. पीएम गति शक्ति पहल के संदर्भ में, राष्ट्रीय मास्टर प्लान में आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचे के कितने इंजन पहचाने गए हैं?
(1) पांच
(2) सात
(3) नौ
(4) ग्यारह
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. प्रस्तावित जयपुर मेट्रो चरण 2 मार्ग किन दो प्रमुख बिंदुओं के बीच संयोजकता प्रदान करने के लिए नियोजित है?
(1) मानसरोवर से बड़ी चौपड़
(2) ट्रांसपोर्ट नगर से अजमेर रोड
(3) दुर्गापुरा से सिंधी कैंप
(4) सीतापुरा से अंबाबाड़ी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. राजस्थान में पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन तथ्यात्मक रूप से सही है?
(1) इस गलियारे का सबसे लंबा हिस्सा गुजरात राज्य से गुजरता है, राजस्थान से नहीं।
(2) इस गलियारे की कुल लंबाई का लगभग 39 प्रतिशत हिस्सा राजस्थान से होकर गुजरता है।
(3) राजस्थान में इस गलियारे का वित्तपोषण मुख्य रूप से विश्व बैंक द्वारा किया जा रहा है।
(4) यह गलियारा केवल वार्षिक त्योहारों के दौरान यात्री ट्रेनों को संचालित करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
कथन (A): उड़ान योजना के तहत राजस्थान में क्षेत्रीय हवाई संपर्क का विस्तार काफी हद तक मौजूदा राज्य सरकार की हवाई पट्टियों के उन्नयन पर निर्भर रहा है।
कारण (R): राजस्थान के हर जिले में पूर्णतः नए ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे बनाना अत्यधिक पूंजी प्रधान है और इसके लिए व्यापक भूमि अधिग्रहण की आवश्यकता होती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सामान्य दिनों में अपनी सभी वातानुकूलित लक्जरी बसों में महिलाओं को निःशुल्क यात्रा प्रदान करता है।
II. यह गुजरात, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे पड़ोसी राज्यों के लिए अंतर-राज्य बस सेवाएं संचालित करता है।
III. 'ब्लू लाइन' बसें इस निगम का प्रीमियम विद्युत बेड़ा हैं।
IV. मानक निगम बसों में वरिष्ठ नागरिकों को रियायती यात्रा प्रदान की जाती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) I और III
(2) II और IV
(3) I, II और III
(4) III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. राजस्थान के निम्नलिखित रेलवे स्टेशनों में से उनके क्षेत्रीय रेलवे संबद्धता के आधार पर विषम को पहचानिए।
(1) कोटा जंक्शन
(2) जयपुर जंक्शन
(3) जोधपुर जंक्शन

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 16

परिवहन एवं संचार अवसंरचना

NODIA

1. राजस्थान में राज्य राजमार्गों के विकास और रखरखाव के लिए मुख्य रूप से कौन सी एजेंसी उत्तरदायी है?
(1) भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण
(2) सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्थान सरकार
(3) राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम
(4) सीमा सड़क संगठन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. राजस्थान में सड़क घनत्व राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। इस कम घनत्व के लिए निम्नलिखित में से कौन सा भौगोलिक कारण सबसे उपयुक्त है?
(1) विशाल थार मरुस्थल की उपस्थिति और पश्चिमी क्षेत्रों में कम जनसंख्या घनत्व
(2) सड़क अवसंरचना को नष्ट करने वाली बाढ़ की उच्च आवृत्ति
(3) दक्षिणी जिलों में शहरी केंद्रों का अत्यधिक जमाव
(4) अरावली में सड़क निर्माण को रोकने वाले सख्त पर्यावरण नियम
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत, मैदानी क्षेत्रों में नई संयोजकता के लिए पात्र असंबद्ध बसावट की मूल परिभाषा क्या है?
(1) 1000 और उससे अधिक जनसंख्या वाली बसावट
(2) 500 और उससे अधिक जनसंख्या वाली बसावट
(3) 250 और उससे अधिक जनसंख्या वाली बसावट
(4) 100 और उससे अधिक जनसंख्या वाली बसावट
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. सूची I में राजस्थान से गुजरने वाले प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्गों (नवीन क्रमांकन) को सूची II में उनके प्रमुख संपर्क मार्गों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (राष्ट्रीय राजमार्ग)
A. एनएच 62
B. एनएच 27
C. एनएच 48
D. एनएच 52
सूची II: (प्रमुख संपर्क मार्ग)
i. दिल्ली-जयपुर-उदयपुर-मुंबई
ii. पूर्व-पश्चिम गलियारा (पोरबंदर से सिलचर)
iii. जोधपुर के रास्ते पंजाब सीमा से गुजरात सीमा तक
iv. जयपुर के रास्ते संगरूर (पंजाब) से अंकोला (कर्नाटक) तक
सही कूट चुनिए:
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. राजस्थान के सड़क नेटवर्क के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान में भारत के राष्ट्रीय राजमार्गों का सबसे लंबा नेटवर्क है।
II. राज्य राजमार्गों का वित्तपोषण पूरी तरह से केंद्रीय सड़क कोष द्वारा किया जाता है।
III. राजस्थान राज्य राजमार्ग विकास परियोजना विश्व बैंक द्वारा समर्थित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे राजस्थान के कई जिलों से होकर गुजरता है। निम्नलिखित में से कौन सा जिला इस एक्सप्रेसवे के अंतर्गत नहीं आता है?
(1) अलवर
(2) उदयपुर
(3) दौसा
(4) सवाई माधोपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

7. पूर्वी समर्पित माल ढुलाई गलियारा और पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा दोनों का लक्ष्य भारत में माल की आवाजाही में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना है। निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थान से गुजरने वाले गलियारे की सही पहचान करता है?
(1) राजस्थान से केवल पूर्वी समर्पित माल ढुलाई गलियारा गुजरता है।
(2) पूर्वी और पश्चिमी दोनों समर्पित माल ढुलाई गलियारे राजस्थान में एक-दूसरे को काटते हैं।
(3) समर्पित माल ढुलाई गलियारों में से कोई भी राजस्थान से नहीं गुजरता है।

40. राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम बस सेवाओं की निम्नलिखित श्रेणियों को उनके प्रति किलोमीटर यात्री किराए के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. साधारण
II. सुपर लक्जरी (वोल्वो/स्कैनिया)
III. एक्सप्रेस
IV. एसी स्लीपर
सही क्रम चुनिए:
(1) I, III, IV, II
(2) I, IV, III, II
(3) III, I, IV, II
(4) I, III, II, IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. राजस्थान में आईटी पार्कों के विकास की देखरेख मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस राज्य एजेंसी द्वारा की जाती है?
(1) राजस्थान वित्त निगम
(2) राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड
(3) राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम
(4) स्थानीय निकाय विभाग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. दूरसंचार बुनियादी ढांचे के संदर्भ में, उच्च गति मोबाइल ब्रॉडबैंड प्रदान करने के लिए राजस्थान के शहरी क्षेत्रों में शुरुआती 5G रोलआउट के दौरान किस फ्रीक्वेंसी बैंड को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गई थी?
(1) 700 मेगाहर्ट्ज बैंड
(2) 3.5 गीगाहर्ट्ज (C-बैंड)
(3) 26 गीगाहर्ट्ज (mmWave)
(4) 900 मेगाहर्ट्ज बैंड
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में ब्रॉड गेज रेलवे नेटवर्क का एक अपवाद है, जो अभी भी मुख्य रूप से विरासत या विशिष्ट क्षेत्रीय पहुंच के लिए आंशिक रूप से नैरो/मीटर गेज पर संचालित हो रहा है?
(1) पूर्वी राजस्थान के जिलों की सेवा करने वाली जयपुर से सवाई माधोपुर ब्रॉड गेज लाइन
(2) पश्चिमी राज्य के प्रमुख मरुस्थलीय केंद्रों को जोड़ने वाली जोधपुर से जैसलमेर लाइन
(3) यात्री और भारी माल ढुलाई दोनों के लिए उपयोग की जाने वाली बीकानेर से सूरतगढ़ लाइन
(4) मारवाड़ जंक्शन से मावली जंक्शन लाइन जो अभी भी गैर-ब्रॉड गेज पर संचालित है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. सूची I में पीएम गति शक्ति पोर्टल्स/टूल्स को सूची II में राजस्थान में उनके अनुप्रयोग के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पोर्टल/टूल)
A. BISAG-N
B. NMP पोर्टल
C. LDB (लॉजिस्टिक्स डेटा बैंक)
D. ई-वे बिल
सूची II: (अनुप्रयोग)
i. मालगाड़ी कंटेनर की आवाजाही की ट्रैकिंग
ii. भू-स्थानिक मानचित्रण और स्थानिक योजना
iii. बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म
iv. माल के अंतर्राज्यीय सड़क परिवहन की निगरानी
सही कूट चुनिए:
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. जयपुर मेट्रो के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राजस्थान की पहली रैपिड ट्रांजिट प्रणाली है।
II. परियोजना पूरी तरह से केंद्र सरकार द्वारा बिना किसी राज्य के योगदान के वित्तपोषित की गई थी।
III. इसमें एलिवेटेड (उन्नत) और भूमिगत खंड शामिल हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. राजस्थान में राष्ट्रीय राजमार्गों और राज्य राजमार्गों के बीच उनके प्रशासनिक नियंत्रण के संबंध में मौलिक अंतर क्या है?
(1) राष्ट्रीय राजमार्ग रीको द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं, जबकि राज्य राजमार्ग सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीन होते हैं।
(2) राष्ट्रीय राजमार्ग केवल समुद्री बंदरगाहों को जोड़ते हैं, जबकि राज्य राजमार्ग राज्य की राजधानियों को जिलों से जोड़ते हैं।
(3) राज्य राजमार्ग केवल यात्री यातायात की अनुमति देते हैं, जबकि राष्ट्रीय राजमार्ग केवल माल यातायात के लिए उपयोग किए जाते हैं।
(4) राष्ट्रीय राजमार्ग केंद्रीय मंत्रालय के अधीन हैं, जबकि राज्य राजमार्ग राज्य सरकार के अधीन हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. राजस्थान में महिला मुखियाओं को निःशुल्क स्मार्टफोन और इंटरनेट संयोजकता प्रदान करने के लिए कौन सी योजना शुरु की गई है?
(1) इंदिरा गांधी मुफ्त स्मार्टफोन योजना
(2) राजीव गांधी डिजिटल कनेक्टिविटी योजना
(3) मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना
(4) भामाशाह संचार क्रांति योजना

Downloaded from www.pdf.tube

(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-ii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. राजस्थान में उड़ान (UDAN) योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका उद्देश्य राज्य के असेवित और अल्पसेवित हवाई अड्डों को जोड़ना है।
II. सीटों के एक निश्चित प्रतिशत के लिए किराया सीमित किया गया है।
III. इस योजना के तहत किशनगढ़ हवाई अड्डे को वाणिज्यिक उड़ानों के लिए क्रियाशील किया गया था।
IV. राज्य सरकारें इस योजना के तहत कोई वित्तीय या ढांचागत सहायता प्रदान नहीं करती हैं।
V. यह योजना विशेष रूप से राजस्थान से अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्रा पर केंद्रित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, IV और V
(4) I, II, III और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम राज्य में प्राथमिक सार्वजनिक बस संचालक है। इसकी स्थापना कब हुई थी?
(1) 1 अक्टूबर 1956
(2) 1 अक्टूबर 1964
(3) 15 अगस्त 1972
(4) 26 जनवरी 1980
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. जयपुर मेट्रो चरण 1 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह मानक गेज पटरियों पर संचालित होती है।
(2) संपूर्ण चरण 1 गलियारा पूरी तरह से भूमिगत है।
(3) चरण 1A मानसरोवर को चांदपोल से जोड़ता है।
(4) चरण 1B ने नेटवर्क का विस्तार बड़ी चौपड़ तक किया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. भारतनेट का लक्ष्य ग्राम पंचायतों को ब्रॉडबैंड संयोजकता प्रदान करना है। राजस्थान में, इस परियोजना का दूसरा चरण राज्य के नेतृत्व वाले मॉडल के तहत लागू किया जा रहा है। इसे निष्पादित करने वाले राज्य-विशिष्ट नेटवर्क का नाम क्या है?
(1) राजनेट (RajNet)
(2) राजब्रॉडबैंड (RajBroadband)
(3) ई-मित्र नेट (E-Mitra Net)
(4) मरुनेट (MaruNet)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. राजस्थान में सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल बुनियादी ढांचे के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) भामाशाह स्टेट डेटा सेंटर - जोधपुर
(2) फिनटेक पार्क - उदयपुर
(3) राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस टेक्नोलॉजी (R-CAT) - जयपुर
(4) राजस्थान में प्रथम 5G लॉन्च - अजमेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. राजस्थान के निम्नलिखित रेलवे स्टेशनों का उत्तर से दक्षिण की ओर भौगोलिक दृष्टि से सही क्रम चुनिए।
(1) बीकानेर, जोधपुर, अजमेर, उदयपुर
(2) जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, अजमेर
(3) बीकानेर, अजमेर, जोधपुर, उदयपुर
(4) अजमेर, बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. राजस्थान में रेलवे लाइनों का मीटर गेज से ब्रॉड गेज में परिवर्तन किस राष्ट्रीय परियोजना का हिस्सा है?
(1) प्रोजेक्ट ब्रॉड ट्रैक
(2) स्वर्णिम चतुर्भुज रेलवे
(3) प्रोजेक्ट यूनिगेज
(4) भारतमाला परियोजना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

22. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: राजस्थान में 5G सेवाओं की शुरुआत स्मार्ट कृषि में इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) के अनुप्रयोग को बढ़ाएगी।
कथन II: 5G नेटवर्क 4G नेटवर्क की तुलना में अति-न्यून विलंबता और उच्च डेटा गति प्रदान करते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे से दिल्ली और जयपुर के बीच यात्रा के समय में काफी कमी आने की उम्मीद है। राजस्थान में कौन सा इंटरचेंज जयपुर को इस एक्सप्रेसवे से जोड़ता है?
(1) किशनगढ़
(2) शाहपुरा
(3) कोटपूतली
(4) दौसा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. सूची I में राजस्थान के हवाई अड्डों को सूची II में उनकी संबंधित परिचालन स्थिति/प्रकार के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

(4) राजस्थान से केवल पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा गुजरता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे के कार्यान्वयन से परिवहन के साधनों में महत्वपूर्ण बदलाव की उम्मीद है। राजस्थान में इस परियोजना का सबसे प्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) गलियारे के साथ नए औद्योगिक केंद्रों और लॉजिस्टिक्स पार्कों का विकास
(2) एनएच 48 पर सड़क माल यातायात का पूर्ण उन्मूलन
(3) उत्तर पश्चिम रेलवे क्षेत्र के सभी मार्गों के लिए यात्री ट्रेन किराए में कमी
(4) सभी कृषि मंडियों का तत्काल रेलवे स्टेशनों पर स्थानांतरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
कथन (A): राजस्थान में रेलवे घनत्व असमान है, पश्चिमी भागों में पूर्वी भागों की तुलना में बहुत विरल नेटवर्क है।
कारण (R): राजस्थान का पश्चिमी क्षेत्र कठोर मरुस्थलीय भूभाग और कम जनसंख्या घनत्व वाला है, जिससे रेलवे निर्माण और आर्थिक व्यवहार्यता चुनौतीपूर्ण हो जाती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. उत्तर पश्चिम रेलवे ज़ोन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका मुख्यालय जयपुर में स्थित है।
II. इसमें कुल चार मंडल शामिल हैं: जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और अजमेर।
III. कोटा रेलवे मंडल उत्तर पश्चिम रेलवे के अधिकार क्षेत्र में आता है।
IV. इसकी स्थापना वर्ष 2002 में हुई थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान के संदर्भ में 'पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान' के प्राथमिक उद्देश्य का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(1) सभी ग्राम पंचायतों को निःशुल्क उच्च गति इंटरनेट संयोजकता और डिजिटल साक्षरता प्रदान करना
(2) प्रमुख शहरों में नए अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे बनाकर विशेष रूप से क्षेत्रीय विमानन को बढ़ावा देना
(3) वर्ष 2030 तक राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम की सभी डीजल बसों को आधुनिक पर्यावरण अनुकूल विद्युत बसों से बदलना
(4) विभागीय अवरोधों को समाप्त करना और बुनियादी ढांचा संयोजकता के लिए मल्टी-मॉडल योजना का उपयोग करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. राजस्थान के एक प्रमुख विमानन केंद्र, जयपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे को आधिकारिक तौर पर अंतरराष्ट्रीय दर्जा किस वर्ष प्रदान किया गया था?
(1) 2000
(2) 2005
(3) 2010
(4) 2014
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. राजस्थान के निम्नलिखित क्षेत्रीय हवाई अड्डों में से कौन सा भारतीय वायु सेना बेस के भीतर स्थित एक नागरिक परिक्षेत्र है?
(1) किशनगढ़ हवाई अड्डा
(2) महाराणा प्रताप हवाई अड्डा, उदयपुर
(3) जोधपुर हवाई अड्डा
(4) कोटा हवाई अड्डा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. सूची I में राजस्थान की सेवा करने वाले रेलवे मंडलों को सूची II में उनके संबंधित क्षेत्रीय मुख्यालयों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (रेलवे मंडल)
A. जयपुर मंडल
B. कोटा मंडल
C. बीकानेर मंडल
D. रतलाम मंडल (दक्षिण राजस्थान के कुछ हिस्सों की सेवा करने वाला)
सूची II: (क्षेत्रीय मुख्यालय)
i. जबलपुर
ii. जयपुर
iii. मुंबई (चर्चगेट)
iv. जयपुर
सही कूट चुनिए:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii

Click Here to Buy book on Amazon

(4) बीकानेर जंक्शन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. निम्नलिखित में से कौन प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 'ग्रामीण सड़कों' श्रेणी की सटीक परिभाषा है?
(1) विभिन्न जिला मुख्यालयों और प्रशासनिक खंडों को राज्य की राजधानी से जोड़ने वाली सड़कें
(2) अन्य जिला सड़कें (ODR) और ग्राम सड़कें जो विभिन्न बसावटों तक बुनियादी पहुंच प्रदान करती हैं
(3) ग्रामीण पंचायतों और छोटे कृषि ग्राम समूहों से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग
(4) विशेष रूप से कृषि माल और भारी वाहन परिवहन के लिए निर्मित चार-लेन एक्सप्रेसवे
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. राजस्थान से गुजरने वाले निम्नलिखित राष्ट्रीय राजमार्गों में से कौन सा दिल्ली और मुंबई को जोड़ने वाले 'स्वर्णिम चतुर्भुज' के हिस्से के रूप में प्रसिद्ध है?
(1) एनएच 21
(2) एनएच 48
(3) एनएच 52
(4) एनएच 27
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. सूची I में राजस्थान के डिजिटल बुनियादी ढांचे और आईटी परियोजनाओं को सूची II में उनके प्रमुख कार्यों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (परियोजना का नाम)
A. ई-मित्र
B. राज ई-वॉल्ट
C. राज ई-साइन
D. राजनेट
सूची II: (प्रमुख कार्य)
i. डिजिटल दस्तावेज़ सत्यापन और भंडारण
ii. मल्टी-मोड ग्रामीण संयोजकता नेटवर्क
iii. इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर एकीकरण प्लेटफॉर्म
iv. एकल खिड़की नागरिक सेवा वितरण
सही कूट चुनिए:
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. राजस्थान में सड़क बुनियादी ढांचे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्य में ग्रामीण सड़कों की कुल लंबाई राज्य राजमार्गों की कुल लंबाई से अधिक है।
II. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना चरण III मुख्य रूप से मौजूदा ग्रामीण सड़क नेटवर्क के उन्नयन पर केंद्रित है।
III. राजस्थान सरकार रखरखाव के वित्तपोषण के लिए इन सड़कों पर अतिरिक्त टोल वसूलती है।
IV. भारतमाला परियोजना में पश्चिमी राजस्थान में सीमावर्ती और अंतरराष्ट्रीय संयोजकता सड़कों का विकास शामिल है।
V. राजस्थान में प्रति 100 वर्ग किमी सड़कों का घनत्व केरल की तुलना में अधिक है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और IV
(2) II, III और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. राजस्थान का कौन सा शहर डिजिटल बुनियादी ढांचे और वित्तीय सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए राज्य के पहले प्रमुख फिनटेक पार्क की मेजबानी के लिए जाना जाता है?
(1) उदयपुर
(2) जोधपुर
(3) कोटा
(4) जयपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. राजस्थान में विमानन के संदर्भ में, निम्नलिखित में से हवाई अड्डे और शहर का कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) डबोक हवाई अड्डा - उदयपुर
(2) सांगानेर हवाई अड्डा - जयपुर
(3) रातानाडा हवाई अड्डा - बीकानेर
(4) उत्तरलाई हवाई अड्डा - बाड़मेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. राजस्थान में भारतनेट परियोजना के कार्यान्वयन का लक्ष्य ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क बनाना है। इस योजना के तहत ग्राम पंचायतों के लिए आमतौर पर न्यूनतम बैंडविड्थ क्षमता का लक्ष्य क्या है?
(1) 10 एमबीपीएस
(2) 100 एमबीपीएस
(3) 1 जीबीपीएस
(4) 10 जीबीपीएस
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. 2021 में सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल के तहत जयपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का प्रबंधन और संचालन एक निजी संस्था को सौंप दिया गया था। वर्तमान में कौन सा कॉर्पोरेट समूह इसका प्रबंधन करता है?
(1) जीएमआर ग्रुप
(2) टाटा ग्रुप
(3) रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर
(4) अडानी ग्रुप
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

94. (4) सौर और पवन परियोजनाओं के लिए ISTS शुल्क की छूट।
अंतर-राज्यीय पारेषण प्रणाली (ISTS) शुल्क की छूट ने राजस्थान के नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र को वृहद प्रोत्साहन दिया है। केंद्र सरकार की इस नीति के कारण राजस्थान में उत्पादित सौर और पवन बिजली को बिना किसी अतिरिक्त पारेषण शुल्क के देश के किसी भी भाग में प्रेषित किया जा सकता है। इससे राजस्थान की बिजली अन्य राज्यों हेतु अत्यंत सस्ती और आकर्षक हो गई है। इस नीति ने बड़े विकासकर्ताओं को राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में मेगा परियोजनाएं स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित किया है क्योंकि उनका बाजार अब संपूर्ण भारत है।

95. (3) राजस्थान भौगोलिक रूप से पृथक है और एक स्थानीय ग्रिड पर संचालित होता है जो उत्तरी क्षेत्रीय ग्रिड से कटा हुआ है।
राजस्थान की विद्युत व्यवस्था पूर्णतः राष्ट्रीय ग्रिड के साथ एकीकृत है, जो इसे देश के किसी भी हिस्से के साथ ऊर्जा साझा करने की अनुमति प्रदान करती है। राज्य उत्तरी क्षेत्रीय ग्रिड का एक अभिन्न अंग है और पारेषण निगम के माध्यम से अंतर-राज्यीय पारेषण लाइनों से सुदृढ़ रूप से जुड़ा हुआ है। बिजली का व्यापार इंडियन एनर्जी एक्सचेंज जैसे आधुनिक मंचों पर पारदर्शी रूप से संपन्न होता है। ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर की स्थापना ने इस कनेक्टिविटी को और अधिक मजबूत किया है, जिससे अतिरिक्त बिजली की सुगम निकासी संभव हुई है।

96. (3) 30,000 मेगावाट
राजस्थान सौर ऊर्जा नीति 2019 राज्य हेतु एक दूरदर्शी दस्तावेज है जिसने सौर ऊर्जा उत्पादन हेतु महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं। इस नीति का मुख्य उद्देश्य वित्तीय वर्ष 2024-25 तक राज्य की कुल स्थापित सौर क्षमता को बढ़ाकर 30,000 मेगावाट तक पहुँचाना है। यह विशाल लक्ष्य राजस्थान की अपार सौर क्षमता का उपयोग करने और इसे 'भारत के सौर केंद्र' के रूप में स्थापित करने की सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति को प्रदर्शित करता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति से राज्य के राजस्व और रोजगार के अवसरों में भारी वृद्धि होगी।

97. (2) उपयोगिता या ग्रिड-स्केल सौर पार्क
राजस्थान की सौर नीति के 30 गीगावाट के कुल लक्ष्य में सर्वाधिक हिस्सेदारी उपयोगिता-स्तर की वृहद परियोजनाओं या सौर पार्कों को प्रदान की गई है। इसके लिए 24 गीगावाट का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जो मुख्य रूप से बड़े निजी और सार्वजनिक निवेश के माध्यम से प्राप्त किया जाना है। ये विशाल सौर पार्क पैमाने की मितव्ययिता प्रदान करते हैं, जिससे बिजली उत्पादन की लागत न्यूनतम होती है। शेष लक्ष्य सौर रूफटॉप और कृषि क्षेत्र के सौरकरण जैसे विकेंद्रीकृत माध्यमों से पूर्ण करने की व्यापक योजना बनाई गई है।

98. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
नवीकरणीय खरीद दायित्व (RPO) एक नियामक तंत्र है जो बिजली वितरण कंपनियों और वृहद उपभोक्ताओं हेतु अपनी कुल खपत का एक निश्चित हिस्सा अक्षय ऊर्जा से क्रय करना अनिवार्य बनाता है। चूँकि राजस्थान में सौर और पवन ऊर्जा का उत्पादन प्रचुर है, अतः यहाँ के डिस्कॉम न केवल अपने लक्ष्यों को सुगमता से पूर्ण करते हैं, अपितु अतिरिक्त हरित बिजली अन्य राज्यों को भी विक्रय करते हैं। यह नीति पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं की वित्तीय व्यवहार्यता सुनिश्चित करने में भी अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

NODIA

99. (3) सौर ऊर्जा संचालित विमानन (1 GW)
राजस्थान सौर ऊर्जा नीति 2019 ने सौर ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित करने हेतु स्पष्ट श्रेणियां निर्मित की हैं, जिसमें वृहद सौर पार्क, छतों पर सौर पैनल और विकेंद्रीकृत प्रणालियाँ सम्मिलित हैं। यद्यपि विमानन क्षेत्र में सौर ऊर्जा के प्रयोग की संभावनाएं वैश्विक स्तर पर अन्वेषित की जा रही हैं, किंतु राजस्थान की वर्तमान नीति में 'सौर ऊर्जा संचालित विमानन' हेतु कोई विशिष्ट 1 गीगावाट का लक्ष्य निर्धारित नहीं किया गया है। नीति का प्राथमिक ध्यान ग्रिड आपूर्ति हेतु बिजली उत्पादन पर केंद्रित है ताकि जनसाधारण को लाभ प्राप्त हो सके।

100. (4) ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए कार्बन-न्यूट्रल और स्वच्छ ऊर्जा के अग्रणी निर्यातक के रूप में परिवर्तित होना।
राजस्थान का दीर्घकालिक ऊर्जा दृष्टिकोण पर्यावरण अनुकूलता और पूर्ण आत्मनिर्भरता पर केंद्रित है। राज्य अपनी प्रचुर नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का उपयोग कर न केवल अपनी बढ़ती घरेलू और औद्योगिक मांग को पूर्ण करना चाहता है, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर स्वच्छ ऊर्जा के प्रमुख निर्यातक के रूप में उभरने का लक्ष्य रखता है। यह नीति भविष्य में कार्बन उत्सर्जन कम करने, सतत आर्थिक विकास को गति देने और जलवायु परिवर्तन की वैश्विक चुनौतियों का सामना करने हेतु तैयार की गई है, जिससे राज्य एक नवीन पहचान बना सकेगा।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. राजस्थान में विमानन क्षेत्र के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) जैसलमेर हवाई अड्डा विशेष रूप से अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक उड़ानों की सेवाएं प्रदान करता है।
(2) राजस्थान में वर्तमान में केवल एक ही परिचालन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है।
(3) बीकानेर हवाई अड्डे पर कोई अनुसूचित वाणिज्यिक उड़ान नहीं है और यह पूरी तरह से परित्यक्त है।
(4) जोधपुर हवाई अड्डा पूरी तरह से भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के स्वामित्व और संचालन में है, जिसका कोई सैन्य जुड़ाव नहीं है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
कथन (A): हाल के वर्षों में राजस्थान में, विशेष रूप से जयपुर में डेटा केंद्रों की स्थापना में तीव्र वृद्धि देखी गई है।
कारण (R): राजस्थान में भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं का जोखिम अपेक्षाकृत कम है और आईटी बुनियादी ढांचे के लिए अनुकूल राज्य नीतियां उपलब्ध हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. राजस्थान से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्गों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. एनएच 27 देश के पूर्वी और पश्चिमी छोरों को जोड़ता है और दक्षिण राजस्थान से होकर गुजरता है।
II. राजस्थान में राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई 5,000 किमी से कम है।
III. एनएच 11 (पुरानी नंबरिंग) जैसलमेर को बीकानेर और आगे पूर्व से जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण मार्ग है।
IV. भारतमाला परियोजना तटीय राज्यों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए राजस्थान को पूरी तरह से छोड़ देती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) I और III
(2) II और IV
(3) I, II और III
(4) III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना (NHDP) का पूर्व-पश्चिम गलियारा राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले से होकर गुज़रता है?
(1) जयपुर, दौसा, भरतपुर
(2) जोधपुर, नागौर, सीकर
(3) उदयपुर, चित्तौड़गढ़, कोटा
(4) बीकानेर, चूरू, झुंझुनू
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. पीएम गति शक्ति के तहत मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी की अवधारणा को लागू करते हुए, राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन सी परियोजना सड़क, रेल और लॉजिस्टिक्स बुनियादी ढांचे के एकीकरण का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(1) सीमावर्ती जिले बाड़मेर में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत एक नए ग्रामीण सड़क नेटवर्क का निर्माण
(2) जयपुर और जोधपुर शहरों के बीच एक नई सीधी वाणिज्यिक उड़ान सेवा की शुरुआत
(3) उदयपुर और अहमदाबाद शहरों के बीच रेलवे ट्रैक का पूर्ण गेज परिवर्तन
(4) किशनगढ़ औद्योगिक केंद्र में एक मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क का विकास
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: राज्य राजमार्ग जिला मुख्यालयों को राज्य की राजधानी और राष्ट्रीय राजमार्गों से जोड़ने वाले प्राथमिक नेटवर्क का निर्माण करते हैं।
कथन II: राजस्थान राज्य राजमार्ग अधिनियम इन राजमार्गों की घोषणा, निर्माण और रखरखाव को नियंत्रित करता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. सूची I में जयपुर मेट्रो के चरणों को सूची II में उनके टर्मिनल स्टेशनों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (चरण)
A. चरण 1A
B. चरण 1B
C. चरण 1C
D. चरण 1D
सूची II: (टर्मिनल स्टेशन)
i. चांदपोल से बड़ी चौपड़
ii. बड़ी चौपड़ से ट्रांसपोर्ट नगर
iii. मानसरोवर से अजमेर रोड चौराहा
iv. मानसरोवर से चांदपोल

Click Here to Buy book on Amazon

(5) अनुत्तरित प्रश्न

85. जयपुर मेट्रो के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड सिस्टम के साथ पूरी तरह से एकीकृत है।
II. इसकी मानक गेज पटरियां भारतीय रेलवे की ब्रॉड गेज पटरियों से पूरी तरह अलग हैं।
III. इसके संचालन के लिए आवश्यक बिजली पूरी तरह से इसके स्टेशन की छतों पर स्थित सौर ऊर्जा संयंत्रों से प्राप्त की जाती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

86. राजस्थान में उड़ान योजना के तहत क्षेत्रीय हवाई संपर्क का निम्नलिखित में से कौन सा एक अपवाद है?
(1) बीकानेर
(2) माउंट आबू
(3) किशनगढ़
(4) जैसलमेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

87. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत, राजस्थान में ग्रामीण सड़कों के निर्माण के लिए वित्तपोषण वर्तमान में केंद्र सरकार और राज्य सरकार के बीच किस अनुपात में साझा किया जाता है?
(1) 100:0
(2) 90:10
(3) 60:40
(4) 50:50
(5) अनुत्तरित प्रश्न

88. राजस्थान के परिवहन विभाग द्वारा उपयोग किए जाने वाले 'वाहन' और 'सारथी' डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) क्रमशः राज्य में वाहन पंजीकरण और ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने का प्रबंधन करना
(2) सभी निगम बसों और लक्जरी कोचों के वास्तविक समय के स्थान और गति की निगरानी करना
(3) पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे पर माल भाड़े को विनियमित और मॉनिटर करना
(4) उन्नत कैमरा सिस्टम का उपयोग करके राज्य राजमार्गों पर स्वचालित रूप से सभी टोल एकत्र करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

89. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
कथन (A): फास्टैग प्रणाली के कार्यान्वयन ने राजस्थान में राष्ट्रीय राजमार्गों पर सड़क परिवहन की दक्षता में काफी सुधार किया है।
कारण (R): फास्टैग रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन तकनीक का उपयोग करता है जिससे स्वचालित टोल कटौती संभव होती है, जिससे टोल प्लाजा पर प्रतीक्षा समय कम हो जाता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

90. राजस्थान में सार्वजनिक परिवहन प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम की स्थापना सड़क परिवहन अधिनियम, 1950 के तहत की गई थी।
II. यह निगम केवल राजस्थान की भौगोलिक सीमाओं के भीतर संचालित होता है।
III. जयपुर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड जयपुर में सिटी बसों का संचालन करती है।
IV. राजस्थान सरकार निगम बसों में छात्रों को रियायत प्रदान करती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, III और IV
(2) केवल I और II
(3) केवल III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

91. दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के निर्माण में वन्यजीव शमन उपाय शामिल हैं। राजस्थान के किस प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य को यह रणनीतिक रूप से बायपास करता है या अंडरपास प्रदान करता है?
(1) भरतपुर में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
(2) अलवर जिले में स्थित सरिस्का टाइगर रिजर्व
(3) जैसलमेर और बाड़मेर के पश्चिमी जिलों में स्थित डेजर्ट नेशनल पार्क
(4) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान और मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व वन्यजीव गलियारा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

92. बढ़ते यात्री यातायात के कारण जयपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की टर्मिनल क्षमता चिंता का विषय रही है। विस्तारित उड़ान संचालन को संभालने के लिए हाल ही में किस टर्मिनल को पुनर्गठित/नवीनीकृत किया गया था?
(1) टर्मिनल 1

नवाचार केंद्र स्थापित करना
(3) जयपुर जैसे प्रमुख शहरों में शहरी पारगमन के लिए आधुनिक विद्युत बसों की खरीद करना
(4) बसावट संयोजकता में सुधार के लिए ग्रामीण सड़क नेटवर्क और पुलों का विकास करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. पीएम गति शक्ति ढांचे के तहत, राजस्थान में बुनियादी ढांचा संपत्तियों के स्थानिक मानचित्रण को एक एकीकृत पोर्टल में जोड़ा गया है। यह किस मूल सिद्धांत को प्रत्यक्ष रुप से संबोधित करता है?
(1) विभिन्न लाइन विभागों में असंगठित योजना की समस्या को समाप्त करना
(2) सभी निजी परिवहन ऑपरेटरों के लिए विभिन्न सब्सिडी और प्रोत्साहनों को अधिकतम करना
(3) सभी राष्ट्रीय राजमार्गों की भौतिक लंबाई और संरेखण जटिलता को कम करना
(4) प्रमुख हवाई अड्डा प्रबंधन और संचालन को ग्राम पंचायतों को विकेंद्रीकृत करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. सूची I में राजस्थान के प्रमुख जंक्शनों को सूची II में उनकी विशिष्ट रेलवे विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (रेलवे जंक्शन)
A. जयपुर जंक्शन
B. जोधपुर जंक्शन
C. कोटा जंक्शन
D. अजमेर जंक्शन
सूची II: (विशिष्ट विशेषता)
i. दिल्ली-मुंबई मुख्य ब्रॉड गेज विद्युतीकृत मार्ग पर प्रमुख पड़ाव
ii. उत्तर पश्चिम रेलवे का क्षेत्रीय मुख्यालय
iii. थार मरुस्थल क्षेत्र के रेल यातायात के लिए प्रमुख जंक्शन
iv. यहाँ ब्रिटिश काल की विशाल लोकोमोटिव और कैरिज कार्यशालाएं स्थित हैं
सही कूट चुनिए:
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. राजस्थान में ब्रॉडबैंड और इंटरनेट संयोजकता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारतनेट का लक्ष्य सभी ग्राम पंचायतों को ब्रॉडबैंड तक गैर-भेदभावपूर्ण पहुंच प्रदान करना है।
II. नियामक प्रतिबंधों के कारण राजस्थान के ग्रामीण बाजारों में निजी दूरसंचार ऑपरेटरों की उपस्थिति शून्य है।
III. राज्य की डिजिटल पहलों के तहत राजस्थान में विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर निःशुल्क वाई-फाई हॉटस्पॉट बनाए गए हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. राजस्थान में राज्य राजमार्गों के विस्तार में अक्सर पीपीपी मॉडल का उपयोग किया जाता है। इस संदर्भ में पीपीपी का क्या अर्थ है?
(1) पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप
(2) पब्लिक पॉलिसी प्लानिंग
(3) प्राइवेट प्रोजेक्ट प्रोक्योरमेंट
(4) पंचायत-प्राइवेट पार्टनरशिप
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. राजस्थान में (सभी श्रेणियों सहित) कुल सड़क लंबाई लगभग कितनी है?
(1) 1 लाख किमी से कम
(2) 1 लाख किमी और 2 लाख किमी के बीच
(3) 2.5 लाख किमी और 3 लाख किमी के बीच
(4) 5 लाख किमी से अधिक
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. राजस्थान से गुजरने वाले 'ग्रीनफील्ड' दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे की विशेषता क्या है?
(1) यह विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों को जोड़ने वाले 4-लेन अविभाजित राजमार्ग के रूप में संचालित होता है
(2) यह कृषि ट्रैक्टरों, धीमी गति वाले वाहनों और दोपहिया वाहनों की निःशुल्क आवाजाही की अनुमति देता है
(3) यह विशेष रूप से राजस्थान के निवासियों के लिए डिजाइन की गई एक टोल-फ्री सड़क है
(4) इसे 8-लेन प्रवेश-नियंत्रित ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे परियोजना के रूप में डिजाइन किया गया है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
कथन (A): प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत ग्रामीण सड़कों के निर्माण ने राजस्थान में ग्रामीण गरीबी को कम करने में प्रत्यक्ष रुप से योगदान दिया है।
कारण (R): बेहतर ग्रामीण संयोजकता कृषि उपज के लिए बाजारों तक सुगम पहुंच, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को सुनिश्चित करती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

(2) ब्लूटूथ लो एनर्जी
(3) सेल ब्रॉडकास्ट सिस्टम (CBS)
(4) नियर फील्ड कम्युनिकेशन (NFC)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

100. पीएम गति शक्ति के तहत राजस्थान में एक नए मल्टी-मॉडल ट्रांसपोर्ट हब के एकीकृत नियोजन में शामिल निम्नलिखित चरणों को व्यवस्थित कीजिए:

I. विभागों के बीच परियोजना निष्पादन समयसीमा का तालमेल
II. BISAG-N पोर्टल का उपयोग करके मौजूदा उपयोगिताओं का मानचित्रण
III. औद्योगिक केंद्रों तक संयोजकता में कमियों की पहचान
IV. एकीकृत परियोजना के लिए अंतिम मंजूरी और बजट आवंटन

सही क्रम चुनिए:
(1) III, II, I, IV
(2) II, III, I, IV
(3) III, I, II, IV
(4) I, II, III, IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

www.nodia.in

NODIA

(1) राजस्थान अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण
(2) कोई नहीं, क्योंकि राजस्थान में वाणिज्यिक परिवहन के लिए नौगम्य अंतर्देशीय जलमार्गों का अभाव है।
(3) राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम
(4) राइट्स लिमिटेड (RITES Ltd.)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. शहर के यातायात को कम करने के लिए, राजस्थान सरकार ने रिंग रोड का प्रस्ताव दिया है। राज्य में सबसे प्रमुख और कार्यात्मक रिंग रोड परियोजना किस शहर को घेरती है?
(1) उदयपुर
(2) जोधपुर
(3) जयपुर
(4) कोटा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. राजस्थान के निम्नलिखित में से किस रेलवे स्टेशन को हाल ही में आधुनिक हवाई अड्डे जैसी सुविधाओं और विश्व स्तरीय वास्तुकला के साथ पुनर्विकसित किया गया था?
(1) जैसलमेर
(2) आबू रोड
(3) सूरतगढ़
(4) गांधीनगर जयपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. गांधीनगर जयपुर रेलवे स्टेशन भारतीय रेलवे नेटवर्क में एक अनूठा स्थान रखता है। वह क्या है?
(1) पूरी तरह से महिला कर्मचारियों द्वारा प्रबंधित भारत का पहला प्रमुख गैर-उपनगरीय स्टेशन
(2) पूरी तरह से नवीकरणीय सौर ऊर्जा स्रोतों द्वारा संचालित भारत का पहला स्टेशन
(3) राजस्थान राज्य का एकमात्र रेलवे स्टेशन जहाँ उच्च गति वाली बुलेट ट्रेनें संचालित होती हैं
(4) वह स्टेशन जो पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे के तहत केवल माल यातायात को संभालता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. राजस्थान में निम्नलिखित प्रमुख संचार बुनियादी ढांचा विकासों का सबसे पुराने से नवीनतम तक सही क्रम चुनिए:
(1) ई-मित्र की शुरुआत → भामाशाह स्टेट डेटा सेंटर का उद्घाटन → 5G का वाणिज्यिक लॉन्च
(2) भामाशाह स्टेट डेटा सेंटर का उद्घाटन → ई-मित्र की शुरुआत → 5G का वाणिज्यिक लॉन्च
(3) 5G का वाणिज्यिक लॉन्च → ई-मित्र की शुरुआत → भामाशाह स्टेट डेटा सेंटर का उद्घाटन
(4) ई-मित्र की शुरुआत → 5G का वाणिज्यिक लॉन्च → भामाशाह स्टेट डेटा सेंटर का उद्घाटन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

81. अहमदाबाद-उदयपुर रेलवे लाइन का गेज परिवर्तन राजस्थान को कौन सा प्रमुख आर्थिक लाभ प्रदान करता है?
(1) दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर वर्तमान में मौजूद भारी यात्री यातायात के बोझ में कमी
(2) मेवाड़ क्षेत्र और गुजरात के औद्योगिक केंद्रों के बीच ब्रॉड गेज संयोजकता
(3) यात्रियों के लिए एक समर्पित हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर का तत्काल संचालन
(4) गुजरात के सभी प्रमुख बंदरगाहों और जयपुर के बीच निर्बाध माल आवाजाही
(5) अनुत्तरित प्रश्न

82. निम्नलिखित में से कौन 'राजनेट' पहल का सटीक वर्णन करता है?
(1) ग्राम पंचायत स्तर तक वॉयस, वीडियो और डेटा प्रदान करने वाला मल्टी-मोड नेटवर्क
(2) केवल उपग्रह संचार नेटवर्क जिसका उपयोग विशेष रूप से क्षेत्रीय आपदा प्रबंधन के लिए किया जाता है
(3) आंतरिक संचार नेटवर्क जिसका उपयोग विशेष रूप से राजस्थान राज्य पुलिस बल द्वारा किया जाता है
(4) सार्वजनिक परिवहन के विभिन्न साधनों के लिए राज्य के स्वामित्व वाला राइड-हेलिंग एप्लिकेशन प्लेटफॉर्म
(5) अनुत्तरित प्रश्न

83. राजस्थान में कौन सा हवाई अड्डा तकनीकी रूप से भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा प्रबंधित एक नागरिक परिक्षेत्र है, लेकिन भारतीय वायु सेना स्टेशन के रनवे से संचालित होता है?
(1) महाराणा प्रताप हवाई अड्डा, उदयपुर
(2) जयपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा
(3) जैसलमेर हवाई अड्डा
(4) किशनगढ़ हवाई अड्डा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

84. सूची I में प्रमुख एक्सप्रेसवे/राजमार्गों को सूची II में राजस्थान के उन प्राथमिक शहरों के साथ सुमेलित कीजिए जिन्हें वे जोड़ते हैं और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (एक्सप्रेसवे/राजमार्ग)
A. एनएच 48
B. दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे
C. अमृतसर-जामनगर एक्सप्रेसवे
D. एनएच 27
सूची II: (प्रमुख शहर जिन्हें जोड़ा गया)
i. दौसा, सवाई माधोपुर, कोटा
ii. जयपुर, अजमेर, उदयपुर
iii. हनुमानगढ़, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर
iv. बारां, कोटा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर
सही कूट चुनिए:
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii

Click Here to Buy book on Amazon

सही कूट चुनिए:
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. शहरी राजस्थान में 5G के रोलआउट के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें 4G की तुलना में मोबाइल टावरों और स्मॉल सेल के सघन नेटवर्क की आवश्यकता होती है।
II. यह दूरस्थ सर्जरी के लिए उपयुक्त अल्ट्रा-रिलायबल लो लेटेंसी संचार की सुविधा प्रदान करता है।
III. 5G के लिए स्पेक्ट्रम राजस्थान में राज्य ऑपरेटरों को पूरी तरह से निःशुल्क आवंटित किया गया है।
IV. 5G फिक्स्ड वायरलेस एक्सेस के माध्यम से हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड फाइबर कनेक्शन के विकल्प के रूप में कार्य करता है।
V. 5G तकनीक विशेष रूप से मानक तांबे के तार के बुनियादी ढांचे पर निर्भर करती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और IV
(2) II, III और V
(3) I, IV और V
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. राजस्थान में डेटा केंद्रों सहित आईटी और ई-गवर्नेंस नीतियों की योजना बनाने और उन्हें लागू करने के लिए मुख्य रूप से कौन सा राज्य निकाय उत्तरदायी है?
(1) सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग
(2) राजस्थान नॉलेज कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(3) राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम
(4) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. राजस्थान में रेलवे नेटवर्क के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) उत्तर पश्चिम रेलवे ज़ोन का गठन उत्तर और पश्चिम रेलवे के मंडलों को अलग करके किया गया था।
(2) थार एक्सप्रेस ने ऐतिहासिक रूप से राजस्थान के माध्यम से भारत और पाकिस्तान के बीच अंतरराष्ट्रीय रेल संपर्क की सुविधा प्रदान की।
(3) राजस्थान में वर्तमान में भारत में गैर-विद्युतीकृत ब्रॉड-गेज रेलवे मार्गों का उच्चतम प्रतिशत है।
(4) जयपुर और जोधपुर जैसे प्रमुख जंक्शनों से संचालित होने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस सेवाएं शुरु की गई हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा उत्तर प्रदेश के दादरी को पश्चिमी तट के किस प्रमुख बंदरगाह से जोड़ता है?
(1) जवाहरलाल नेहरु पोर्ट ट्रस्ट (JNPT)
(2) कांडला बंदरगाह
(3) मुंद्रा बंदरगाह
(4) पिपावाव बंदरगाह
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस टेक्नोलॉजी की स्थापना किस क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए की गई है?
(1) उन्नत कृषि और जैविक खेती तकनीकों का विकास और कार्यान्वयन
(2) क्षेत्रीय क्षेत्रों के लिए व्यापक विमानन प्रबंधन और पेशेवर पायलट प्रशिक्षण
(3) संरचनात्मक रेलवे ट्रैक इंजीनियरिंग, रखरखाव और आधुनिक सिग्नलिंग प्रणाली
(4) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग सहित अत्याधुनिक आईटी तकनीकें
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. राजस्थान में सार्वजनिक परिवहन के निम्नलिखित साधनों को उनके विशिष्ट कालानुक्रमिक परिचय के आधार पर, सबसे पुराने से नवीनतम तक व्यवस्थित कीजिए:
I. राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम इंटर-सिटी बसें
II. जयपुर मेट्रो चरण 1A
III. वंदे भारत एक्सप्रेस (रेलवे)
IV. उड़ान योजना के तहत आंतरिक घरेलू उड़ानें
सही क्रम चुनिए:
(1) I, II, IV, III
(2) I, IV, II, III
(3) II, I, IV, III
(4) I, II, III, IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

61. राजस्थान में समर्पित माल ढुलाई गलियारे को लागू करने का सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय लाभ निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) नई रेलवे पटरियों के साथ मरुस्थलीकरण और मृदा अपरदन की प्रत्यक्ष रोकथाम
(2) मार्ग के किनारे कई कृत्रिम झीलों और वर्षा जल संचयन इकाइयों का निर्माण
(3) माल ढुलाई का सड़क से रेल पर स्थानांतरण, जिससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में काफी कमी आती है
(4) संवेदनशील अरावली क्षेत्र के भीतर शोर और प्रकाश प्रदूषण का पूर्ण उन्मूलन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. नाबार्ड द्वारा प्रबंधित 'ग्रामीण बुनियादी ढांचा विकास कोष' (RIDF) का उपयोग राजस्थान सरकार द्वारा अक्सर निम्नलिखित में से किसके लिए किया जाता है?
(1) उड़ान के तहत संचालित सभी क्षेत्रीय एयरलाइनों के लिए विमानन ईंधन लागत पर सब्सिडी देना
(2) शहरी क्षेत्रों में विभिन्न सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी पार्क और

(2) टर्मिनल 2
(3) टर्मिनल 3
(4) टर्मिनल 4
(5) अनुत्तरित प्रश्न

93. जयपुर मेट्रो चरण 1B की एक प्रमुख विशेषता सावधानीपूर्वक भूमिगत सुरंग बनाना था। यह सुरंग किस ऐतिहासिक क्षेत्र में बनाई गई थी?
(1) जयपुर शहर के बाहरी इलाके में स्थित जल महल झील क्षेत्र के नीचे
(2) पहाड़ी की चोटी पर स्थित ऐतिहासिक आमेर किले और महल परिसर के नीचे
(3) परकोटा क्षेत्र के नीचे, विशेष रूप से चांदपोल से बड़ी चौपड़ तक
(4) जयपुर के राम निवास बाग में अल्बर्ट हॉल संग्रहालय भवन के नीचे
(5) अनुत्तरित प्रश्न

94. सूची I में परिवहन और संचार योजनाओं को सूची II में राजस्थान में उनके प्राथमिक लक्ष्यों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (योजना)
A. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना
B. पीएम गति शक्ति
C. उड़ान योजना
D. भारतनेट
सूची II: (प्राथमिक लक्ष्य)
i. टियर-2 और टियर-3 शहरों में हवाई यात्री
ii. बारहमासी सड़कों की आवश्यकता वाली ग्रामीण बसावटें
iii. ब्रॉडबैंड संयोजकता की आवश्यकता वाली ग्राम पंचायतें
iv. एकीकृत नियोजन की आवश्यकता वाले बुनियादी ढांचा मंत्रालय
सही कूट चुनिए:
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

95. राजस्थान में डिजिटल बुनियादी ढांचे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान ने नवाचार को बढ़ावा देने के लिए आईस्टार्ट प्लेटफॉर्म स्थापित किया है।
II. राज्य स्वामित्व योजना के तहत गांवों के मानचित्रण के लिए ड्रोन का उपयोग करता है।
III. 2023 तक राजस्थान के 100% सरकारी स्कूलों में स्मार्ट वर्चुअल क्लासरूम उपलब्ध हैं।
IV. जयपुर रीको द्वारा विकसित समर्पित आईटी पार्कों की मेजबानी करता है।
V. राज्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को बढ़ावा देने के लिए एक समर्पित नीति है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल III
(2) I और II
(3) IV और V
(4) I, III और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

96. समर्पित माल ढुलाई गलियारे से जुड़े कुछ खंडों पर भारतीय रेलवे द्वारा शुरु की गई 'रोल-ऑन रोल-ऑफ' (Ro-Ro) सेवा का प्राथमिक परिचालन लाभ क्या है?
(1) यात्री अपनी कारों को सीधे विशेष ट्रेन कोचों में चला सकते हैं
(2) ईंधन बचाने और भीड़भाड़ कम करने के लिए लदे हुए ट्रकों को सीधे फ्लैट वैगनों पर ले जाया जाता है
(3) यह ट्रेनों को अलग-अलग गेज पटरियों पर चलने की अनुमति देता है
(4) यह सीधे पाइपलाइन से रेल वैगन तक कच्चे तेल की लोडिंग को सक्षम बनाता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

97. राजस्थान में 5G सेवाओं का विस्तार किस ई-गवर्नेंस अनुप्रयोग की दक्षता में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और तत्काल सुधार करेगा?
(1) दैनिक मौसम और कृषि अपडेट के लिए बुनियादी स्वचालित एसएमएस अलर्ट
(2) टेलीमेडिसिन सेवाओं के लिए वास्तविक समय में हाई-डेफिनिशन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग
(3) सभी भौतिक भूमि अभिलेखों की तीव्र डिजिटल छपाई और सत्यापन
(4) यांत्रिक सिंचाई जल पंपों की रिमोट निगरानी और संचालन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

98. राजस्थान के सड़क नेटवर्क के संदर्भ में 'राज्य राजमार्ग' को निम्नलिखित में से कौन सबसे सटीक रूप से परिभाषित करता है?
(1) जिला मुख्यालयों और शहरों को राष्ट्रीय राजमार्गों से जोड़ने वाली मुख्य सड़कें
(2) राज्य की राजधानी को सभी पड़ोसी राज्यों की राजधानियों से जोड़ने वाली सड़कें
(3) ग्रामीण बसावटों को प्राथमिक कृषि मंडी केंद्रों से जोड़ने वाली स्थानीय सड़कें
(4) विशेष रूप से उच्च गति वाणिज्यिक माल यातायात के लिए डिजाइन किए गए आधुनिक एक्सप्रेसवे
(5) अनुत्तरित प्रश्न

99. राजस्थान में आपदा प्रबंधन के साथ दूरसंचार क्षेत्र का एकीकरण आपातकालीन अलर्ट भेजने के लिए किस तकनीक का उपयोग करता है?
(1) पॉइंट-टू-पॉइंट प्रोटोकॉल

NODIA

9. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान में रेलवे नेटवर्क का विस्तार भौगोलिक विषमताओं और क्षेत्रीय भिन्नताओं के कारण काफी असमान है। पश्चिमी क्षेत्र में थार मरुस्थल की कठिन परिस्थितियाँ और विरल जनसंख्या घनत्व रेलवे पटरियाँ बिछाने की निर्माण लागत को अत्यधिक बढ़ा देते हैं। कम जनसंख्या के कारण इन रेल मार्गों पर आर्थिक व्यवहार्यता भी चुनौतीपूर्ण होती है, जिसके कारण पूर्वी राजस्थान की तुलना में यहाँ रेलवे जाल काफी विरल है। प्रतिकूल जलवायु और रेत के टीलों की गतिशीलता रेलवे अवसंरचना के स्थायी विकास और नियमित संचालन में निरंतर बाधा उत्पन्न करती है।

10. (2) केवल III
उत्तर पश्चिम रेलवे मंडल का मुख्यालय जयपुर में स्थित है और इसकी विधिवत स्थापना 1 अक्टूबर 2002 को की गई थी। इस रेल मंडल के अंतर्गत चार प्रमुख मंडल जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और अजमेर शामिल हैं। कोटा रेलवे मंडल वर्तमान में पश्चिम मध्य रेलवे मंडल के अधिकार क्षेत्र में आता है जिसका मुख्यालय मध्य प्रदेश के जबलपुर में स्थित है। अतः कोटा मंडल का उत्तर पश्चिम रेलवे के अंतर्गत होना तथ्यात्मक रूप से त्रुटिपूर्ण है। यह मंडल राजस्थान के एक बड़े हिस्से की रेलवे आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करता है।

11. (4) विभागीय अवरोधों को समाप्त करना और बुनियादी ढांचा संयोजकता के लिए मल्टी-मॉडल योजना का उपयोग करना
प्रधानमंत्री गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान का मुख्य लक्ष्य विभिन्न बुनियादी ढांचा मंत्रालयों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना है। यह योजना सरकारी विभागों के बीच मौजूद कार्यशील अवरोधों को दूर कर महत्वपूर्ण परियोजनाओं के एकीकृत नियोजन पर विशेष ध्यान केंद्रित करती है। मल्टी-मॉडल संयोजकता के माध्यम से सड़कों, रेलवे, विमानन और जलमार्गों को आपस में जोड़कर माल और लोगों की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित की जाती है। यह डिजिटल प्लेटफॉर्म भू-स्थानिक मानचित्रण का उपयोग कर बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की कुशलता और पारदर्शिता को निरंतर बढ़ाता है।

12. (2) 2005
जयपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, जिसे सांगानेर हवाई अड्डे के नाम से भी जाना जाता है, राजस्थान का सबसे प्रमुख विमानन केंद्र है। इसे आधिकारिक तौर पर वर्ष 2005 में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का प्रतिष्ठित दर्जा प्रदान किया गया था। यह दर्जा मिलने के पश्चात यहाँ से खाड़ी देशों और अन्य प्रमुख अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों के लिए सीधी विमान सेवाएं प्रारंभ हुई थीं। यह हवाई अड्डा राज्य के पर्यटन और व्यापार को वैश्विक स्तर पर जोड़ने में अत्यंत सहायक रहा है। वर्तमान में यहाँ आधुनिक यात्री सुविधाओं और विस्तारित रनवे की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है।

13. (3) जोधपुर हवाई अड्डा
राजस्थान में कुछ हवाई अड्डे ऐसे हैं जहाँ नागरिक उड्डयन और सैन्य संचालन एक ही परिसर से संचालित किए जाते हैं। जोधपुर हवाई अड्डा भारतीय वायु सेना के एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामरिक बेस के भीतर स्थित है, जहाँ नागरिक उड़ानों के लिए एक समर्पित नागरिक परिक्षेत्र बनाया गया है। यहाँ रनवे और हवाई यातायात नियंत्रण का प्रबंधन मुख्य रूप से वायु सेना द्वारा ही किया जाता है। नागरिक यात्री उड़ानों का संचालन भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के माध्यम से निर्धारित समय और सुरक्षा नियमों के कड़े अधीन रहकर किया जाता है।

14. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान में रेलवे का संपूर्ण संचालन विभिन्न क्षेत्रीय मुख्यालयों द्वारा प्रबंधित मंडलों में विभाजित किया गया है। जयपुर और बीकानेर मंडल उत्तर पश्चिम रेलवे के अधीन हैं जिसका मुख्यालय जयपुर में है। कोटा मंडल पश्चिम मध्य रेलवे का हिस्सा है जिसका मुख्यालय जबलपुर में स्थित है। दक्षिण राजस्थान के कुछ हिस्सों को रेल सेवा प्रदान करने वाला रतलाम मंडल पश्चिम रेलवे के अधिकार क्षेत्र में आता है जिसका मुख्यालय मुंबई में है। यह सुव्यवस्थित ढांचा राज्य में रेल परिवहन के कुशल संचालन और नियमित रखरखाव को सुनिश्चित करता है।

15. (1) I, II और III
उड़े देश का आम नागरिक योजना का मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय हवाई संपर्क को सुगम और किफायती बनाना है। इस योजना के तहत किशनगढ़ जैसे अल्पसेवित हवाई अड्डों को सक्रिय किया गया है ताकि आम जनता को हवाई यात्रा की सुलभ सुविधा मिल सके। योजना के अंतर्गत सीटों के एक निश्चित भाग के लिए हवाई किराए की अधिकतम सीमा निर्धारित की गई है। राज्य सरकारें इस पहल में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए हवाई अड्डों के लिए आवश्यक भूमि और अन्य बुनियादी सहायता प्रदान करती हैं, जिससे घरेलू पर्यटन को बढ़ावा मिलता है।

16. (2) 1 अक्टूबर 1964
राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम की स्थापना सड़क परिवहन निगम अधिनियम 1950 के वैधानिक प्रावधानों के तहत 1 अक्टूबर 1964 को की गई थी। यह निगम राज्य के भीतर और पड़ोसी राज्यों के साथ सुरक्षित, कुशल और किफायती बस सेवाएं प्रदान करने के लिए पूर्णतः उत्तरदायी है। अपनी स्थापना के समय से ही इसने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच परिवहन की दूरी को पाटने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान में निगम के पास विभिन्न श्रेणियों की बसों का विशाल बेड़ा है जो प्रतिदिन लाखों यात्रियों को अपनी सेवा देता है।

17. (2) संपूर्ण चरण 1 गलियारा पूरी तरह से भूमिगत है।
जयपुर मेट्रो का प्रथम चरण मानसरोवर से बड़ी चौपड़ तक विस्तृत है और इसमें उन्नत तथा भूमिगत दोनों प्रकार के मार्ग खंड शामिल हैं। चरण 1-ए मानसरोवर से चांदपोल तक मुख्य रूप से ऊंचे एलिवेटेड मार्ग पर संचालित होता है, जबकि चरण 1-बी में चांदपोल से बड़ी चौपड़ तक का मार्ग पूरी तरह से भूमिगत निर्मित किया गया है। यह मेट्रो प्रणाली मानक गेज पटरियों का उपयोग करती है और शहर के सबसे व्यस्त व्यावसायिक क्षेत्रों से होकर गुजरती है। अतः संपूर्ण प्रथम चरण को पूरी तरह भूमिगत बताना तकनीकी रूप से सर्वथा गलत है।

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्थान सरकार
राजस्थान में राज्य राजमार्गों के विकास, विस्तार और नियमित सुदृढ़ीकरण की प्राथमिक जिम्मेदारी सार्वजनिक निर्माण विभाग की होती है। यह विभाग संपूर्ण राज्य की सड़क अवसंरचना के निर्माण हेतु नवीन नीतिगत ढांचे तैयार करता है। ये राजमार्ग विभिन्न जिला मुख्यालयों को परस्पर जोड़ने और राष्ट्रीय राजमार्गों तक पहुंच प्रदान करने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। विभाग गुणवत्ता नियंत्रण और सुरक्षा मानकों का कठोरता से पालन सुनिश्चित करते हुए परिवहन व्यवस्था को अत्यंत सुगम और सुरक्षित बनाता है।

2. (1) विशाल थार मरुस्थल की उपस्थिति और पश्चिमी क्षेत्रों में कम जनसंख्या घनत्व
राजस्थान का विशाल भौगोलिक हिस्सा थार मरुस्थल के अंतर्गत आता है, जहाँ प्रतिकूल विषम परिस्थितियों के कारण सड़क निर्माण करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है। पश्चिमी जिलों में जनसंख्या का विरल घनत्व और दूर-दराज की बिखरी बसावटें सड़क जाल के विस्तार को आर्थिक रूप से काफी कठिन बनाती हैं। रेतीले धोरों के निरंतर स्थानांतरण और कठोर जलवायु के कारण निर्मित सड़कों का नियमित रखरखाव भी प्रभावित होता है। ये सभी कारक सामूहिक रूप से राज्य के सड़क घनत्व को राष्ट्रीय औसत से कम रखते हैं।

3. (2) 500 और उससे अधिक जनसंख्या वाली बसावट
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का मुख्य उद्देश्य असंबद्ध ग्रामीण बसावटों को बारहमासी पक्की सड़क संयोजकता प्रदान करना है। मैदानी क्षेत्रों में इस योजना के अंतर्गत उन राजस्व ग्रामों को प्राथमिकता दी जाती है जिनकी जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 500 या उससे अधिक है। पहाड़ी, जनजातीय और मरुस्थलीय क्षेत्रों के लिए इस जनसंख्या मानदंड को घटाकर 250 व्यक्तियों की आबादी तक सीमित किया गया है। यह महत्वपूर्ण योजना ग्रामीण अर्थव्यवस्था को शहरी बाजारों और आवश्यक सेवाओं से जोड़ने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई है।

4. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्गों के नवीन क्रमांकन के अनुसार राष्ट्रीय राजमार्ग 62 पंजाब सीमा से बीकानेर और जोधपुर के रास्ते सिरोही तक विस्तृत है। राष्ट्रीय राजमार्ग 27 प्रसिद्ध पूर्व-पश्चिम गलियारे का अभिन्न हिस्सा है जो पोरबंदर को सिलचर से जोड़ता है। राष्ट्रीय राजमार्ग 48 दिल्ली, जयपुर, उदयपुर और मुंबई के बीच सबसे प्रमुख संपर्क मार्ग है। राष्ट्रीय राजमार्ग 52 पंजाब के संगरूर से जयपुर होते हुए कर्नाटक के अंकोला तक जाता है, जो राज्य के परिवहन और व्यापार का प्रमुख आधार है।

5. (2) केवल III
राजस्थान में राज्य राजमार्गों के नियोजित विकास के लिए विभिन्न बाह्य सहायता प्राप्त परियोजनाओं का प्रभावी संचालन किया जाता है। राजस्थान राज्य राजमार्ग विकास परियोजना को विश्व बैंक द्वारा आवश्यक तकनीकी और वित्तीय सहयोग प्रदान किया गया है। राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई के मामले में राजस्थान देश के शीर्ष राज्यों में शामिल है, लेकिन यह वर्तमान में प्रथम स्थान पर नहीं है। राज्य राजमार्गों का वित्तपोषण राज्य सरकार द्वारा स्वयं के संसाधनों और विभिन्न वित्तीय संस्थानों के माध्यम से किया जाता है, न कि केवल केंद्रीय कोष से।

6. (2) उदयपुर
दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे भारत की एक अत्यंत महत्वाकांक्षी बुनियादी ढांचा परियोजना है जो राजस्थान राज्य के सात प्रमुख जिलों से होकर गुजरती है। इस मार्ग के अंतर्गत अलवर, भरतपुर, दौसा, सवाई माधोपुर, टोंक, बूंदी और कोटा जिले सम्मिलित हैं। उदयपुर जिला राज्य के सुदूर दक्षिणी भाग में स्थित होने के कारण इस विशिष्ट एक्सप्रेसवे के संरेखण का हिस्सा नहीं है। यह एक्सप्रेसवे दिल्ली और मुंबई के बीच यात्रा के समय को कम करने के साथ ही पूर्वी राजस्थान के औद्योगिक विकास को नई गति प्रदान करेगा।

NODIA

7. (4) राजस्थान से केवल पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा गुजरता है।
भारत में माल की तीव्र आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए समर्पित माल ढुलाई गलियारों का निर्माण किया जा रहा है। राजस्थान के व्यापक भौगोलिक विस्तार से केवल पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा गुजरता है, जो उत्तर प्रदेश के दादरी को मुंबई के जवाहरलाल नेहरू बंदरगाह से जोड़ता है। पूर्वी गलियारा मुख्य रूप से लुधियाना से पश्चिम बंगाल के दनकुनी तक विस्तृत है और राजस्थान की सीमाओं को स्पर्श नहीं करता है। पश्चिमी गलियारा राजस्थान के अलवर, जयपुर, अजमेर और पाली जैसे महत्वपूर्ण औद्योगिक जिलों से होकर गुजरता है।

8. (1) गलियारे के साथ नए औद्योगिक केंद्रों और लॉजिस्टिक्स पार्कों का विकास
पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे के माध्यम से राजस्थान को देश के प्रमुख बंदरगाहों तक तीव्र पहुंच प्राप्त होगी। इससे राज्य के आर्थिक परिदृश्य में व्यापक सकारात्मक बदलाव आने की प्रबल संभावना है, क्योंकि इस मार्ग के साथ रणनीतिक स्थानों पर एकीकृत रसद पार्क विकसित किए जा रहे हैं। औद्योगिक गलियारों और विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना से रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। रेल के माध्यम से भारी माल की सुगम आवाजाही उद्योगों के लिए रसद लागत को कम करेगी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देगी।

(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. राजस्थान में नागरिक उड्डयन बुनियादी ढांचे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उदयपुर हवाई अड्डे का नाम महाराणा प्रताप के नाम पर रखा गया है।
II. जयपुर हवाई अड्डा वाइड-बॉडी अंतरराष्ट्रीय विमानों को संभालने में सक्षम है।
III. राज्य में जोधपुर के पश्चिम में कोई नागरिक उड्डयन सुविधा नहीं है।
IV. बीकानेर हवाई अड्डा उड़ान योजना के तहत नियमित अनुसूचित वाणिज्यिक यात्री उड़ानें संचालित करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) I और II
(2) केवल III
(3) II और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. माल यातायात हैंडलिंग के संदर्भ में, राजस्थान का कौन सा रेलवे मार्ग राज्य के दक्षिणी खनन क्षेत्रों से जस्ता और रॉक फॉस्फेट के परिवहन के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है?
(1) बीकानेर से जोधपुर
(2) जयपुर से दिल्ली
(3) जैसलमेर से बाड़मेर
(4) उदयपुर से चित्तौड़गढ़/कोटा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. निम्नलिखित में से कौन सी राज्य की पहल कई ई-गवर्नेंस सेवाओं तक पहुंच के लिए सिंगल साइन-ऑन (SSO) पहचान प्रदान करके निवासियों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने का लक्ष्य रखती है?
(1) राजएसएसओ (RajSSO)
(2) राजनेट (RajNet)
(3) ई-मित्र गेटवे
(4) भामाशाह आईडी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. राजस्थान में राष्ट्रीय राजमार्गों के लिए पारंपरिक नियोजन और आधुनिक 'पीएम गति शक्ति' मास्टर प्लानिंग के बीच मौलिक अंतर क्या है?
(1) पारंपरिक नियोजन के लिए परियोजना अनुमोदन हेतु किसी वैधानिक पर्यावरणीय मंजूरी की आवश्यकता नहीं थी
(2) पारंपरिक मार्ग प्रमुख शहरों और महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्रों को पूरी तरह से छोड़ देते थे
(3) पारंपरिक नियोजन अलग-थलग किया जाता था; गति शक्ति विभिन्न क्षेत्रों में नियोजन को एकीकृत करती है
(4) गति शक्ति राज्य राजमार्गों पर केंद्रित है जबकि पारंपरिक नियोजन राष्ट्रीय राजमार्गों के लिए था
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. सूची I में राजस्थान के जिलों को सूची II में पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे संरेखण में उनके महत्व के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (जिला)
A. अलवर
B. अजमेर
C. सीकर
D. जयपुर
सूची II: (विशेषता)
i. सीधे गलियारे के प्राथमिक मार्ग पर स्थित है और इसमें प्रमुख क्रॉसिंग स्टेशन हैं
ii. गलियारा इसके रेवाड़ी-फुलेरा खंड से होकर गुजरता है
iii. गलियारा फुलेरा जंक्शन के पास इस जिले से होकर गुजरता है
iv. गलियारे में किशनगढ़ जंक्शन संरेखण जैसा प्रमुख बुनियादी ढांचा शामिल है
सही कूट चुनिए:
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. राजस्थान में दूरसंचार परिदृश्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भामाशाह स्टेट डेटा सेंटर राज्य के डिजिटल डेटा के लिए एक केंद्रीकृत भंडार के रूप में कार्य करता है।
II. राज्य में 5G रोलआउट से राज्य के उभरते AR/VR पर्यटन अनुप्रयोगों को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।
III. थार मरुस्थल के 100% भौगोलिक क्षेत्र तक मोबाइल संयोजकता पहुँचती है।
IV. ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाना सड़क निर्माण के साथ पूरी तरह से स्वतंत्र और असंगठित है।
V. ग्रामीण राजस्थान में टेली-घनत्व वर्तमान में शहरी राजस्थान की तुलना में अधिक है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II, III और V
(3) केवल I, IV और V
(4) केवल I, II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. कौन सा राज्य संचालित परिवहन निगम मुख्य रूप से राजस्थान के अंतर्देशीय जल परिवहन को संभालता है?

Click Here to Buy book on Amazon

18. (1) राजनेट (RajNet)
राजस्थान सरकार ने भारतनेट परियोजना के द्वितीय चरण को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए राजनेट नामक एक व्यापक नेटवर्क स्थापित किया है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्राम पंचायत स्तर तक उच्च गति वाली ब्रॉडबैंड संयोजकता सुनिश्चित करना है। राजनेट एक मल्टी-मोड प्लेटफॉर्म के रूप में कार्य करता है जिसमें उपग्रह, वायरलेस और ऑप्टिकल फाइबर के माध्यम से कनेक्टिविटी प्रदान की जाती है। यह बुनियादी ढांचा ई-गवर्नेंस सेवाओं, डिजिटल साक्षरता और ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी के त्वरित प्रसार के लिए एक मजबूत आधार स्तंभ के रूप में कार्य करता है।

19. (3) राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस टेक्नोलॉजी (R-CAT) - जयपुर
राजस्थान में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचार के लिए जयपुर में राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस टेक्नोलॉजी की स्थापना की गई है। यह संस्थान युवाओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स और डेटा विश्लेषण जैसी उभरती आधुनिक प्रौद्योगिकियों में विशेष प्रशिक्षण प्रदान करता है। भामाशाह स्टेट डेटा सेंटर जयपुर में स्थित है, न कि जोधपुर में। फिनटेक पार्क भी जयपुर में ही विकसित किया जा रहा है ताकि वित्तीय प्रौद्योगिकी क्षेत्र के स्टार्टअप और प्रतिष्ठित कंपनियों को एक एकीकृत और सशक्त पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान किया जा सके।

20. (3) बीकानेर, अजमेर, जोधपुर, उदयपुर
भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान के प्रमुख रेलवे स्टेशनों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही अनुक्रम बीकानेर, अजमेर, जोधपुर और फिर उदयपुर है। बीकानेर राज्य के उत्तरी भाग में मरुस्थलीय क्षेत्र में स्थित है, जबकि अजमेर मध्य राजस्थान का प्रमुख केंद्र माना जाता है। जोधपुर पश्चिम-मध्य क्षेत्र के अंतर्गत आता है और उदयपुर राज्य के सुदूर दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है। यह क्रम राज्य की विविध भू-आकृतियों और रेलवे संरेखण के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के बीच परिवहन की मजबूत कनेक्टिविटी को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

21. (3) प्रोजेक्ट यूनिगेज
भारतीय रेलवे द्वारा वर्ष 1992 में प्रोजेक्ट यूनिगेज की शुरुआत की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य देश भर में अलग-अलग गेज पटरियों को एक समान ब्रॉड गेज में परिवर्तित करना था। राजस्थान में इस परियोजना के तहत मीटर गेज और नैरो गेज लाइनों का व्यापक रूप से परिवर्तन किया गया है ताकि निर्बाध रेल परिवहन सुनिश्चित हो सके। इससे माल ढुलाई की क्षमता में भारी वृद्धि हुई है और लंबी दूरी की ट्रेनों के संचालन में आने वाली तकनीकी बाधाएं दूर हुई हैं। यह परियोजना राज्य की रेलवे संयोजकता के आधुनिकीकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

22. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
5जी तकनीक चौथी पीढ़ी के नेटवर्क की तुलना में अत्यधिक तीव्र डेटा गति और न्यूनतम विलंबता प्रदान करती है, जो भविष्य के डिजिटल नवाचारों के लिए अनिवार्य है। राजस्थान में इसकी शुरुआत से कृषि क्षेत्र में इंटरनेट ऑफ थिंग्स उपकरणों का उपयोग सुगम होगा, जिससे किसान वास्तविक समय में मृदा नमी और फसल स्वास्थ्य की सटीक निगरानी कर सकेंगे। चूंकि उच्च गति और कम विलंबता उन्नत सेंसर और स्वायत्त प्रणालियों के संचालन हेतु आधारभूत आवश्यकताएं हैं, इसलिए कथन द्वितीय प्रथम कथन के लिए एक सटीक व्याख्या प्रस्तुत करता है।

NODIA

23. (4) दौसा
दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे का जयपुर-दौसा-ललसोट खंड राजस्थान में इस विशाल बुनियादी ढांचा परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जयपुर शहर को इस मुख्य एक्सप्रेसवे से जोड़ने के लिए दौसा में एक रणनीतिक इंटरचेंज प्रदान किया गया है। यह इंटरचेंज जयपुर से आने वाले यात्रियों को एक्सप्रेसवे पर सुगम प्रवेश और निकास की सुविधा देता है। इससे जयपुर और दिल्ली के बीच यात्रा का समय घटकर अब लगभग आधा रह गया है। यह संयोजकता न केवल यात्रा को तेज बनाती है बल्कि क्षेत्रीय व्यापार और पर्यटन को भी प्रोत्साहित करती है।

24. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
जयपुर हवाई अड्डा राजस्थान का एकमात्र पूर्ण अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है जो वैश्विक स्तर पर विमान सेवाएं संचालित करता है। बीकानेर का नाल हवाई अड्डा एक सामरिक सैन्य एयरबेस है जिसमें नागरिक उड़ानों के लिए एक समर्पित नागरिक परिक्षेत्र शामिल है। किशनगढ़ हवाई अड्डे को उड़ान योजना के तहत एक ग्रीनफील्ड परियोजना के रूप में विकसित किया गया है ताकि अजमेर क्षेत्र को बेहतर हवाई कनेक्टिविटी प्रदान की जा सके। उदयपुर का महाराणा प्रताप हवाई अड्डा एक प्रमुख घरेलू हवाई अड्डा है जो दक्षिण राजस्थान के पर्यटन और व्यावसायिक यातायात की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

25. (2) केवल II और III
राजस्थान में 5जी सेवाओं की औपचारिक शुरुआत रिलायंस जियो द्वारा राजसमंद जिले के नाथद्वारा से की गई थी, जो राज्य के लिए एक महत्वपूर्ण डिजिटल मील का पत्थर है। ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल और इंटरनेट कनेक्टिविटी को सशक्त बनाने के लिए केंद्र सरकार के यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड का प्रभावी उपयोग किया जाता है। हालांकि राज्य का टेली-घनत्व निरंतर बढ़ रहा है, लेकिन भौगोलिक विशालता और मरुस्थलीय क्षेत्रों के कारण यह हमेशा राष्ट्रीय औसत से ऊपर नहीं रहता है। राज्य में डिजिटल बुनियादी ढांचे का विस्तार वर्तमान में सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

26. (2) सात
प्रधानमंत्री गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के तहत आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचे के सात मुख्य इंजनों की पहचान की गई है। इन इंजनों में सड़क, रेलवे, हवाई अड्डे, बंदरगाह, सार्वजनिक परिवहन, जलमार्ग और लॉजिस्टिक्स बुनियादी ढांचा शामिल हैं। ये सातों क्षेत्र मिलकर देश की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने और बुनियादी ढांचे के एकीकृत विकास के लिए कार्य करते हैं। राजस्थान में भी इन इंजनों के माध्यम से

44. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
प्रधानमंत्री गति शक्ति के अंतर्गत बिसाग-एन संस्थान भू-स्थानिक मानचित्रण और स्थानिक नियोजन में तकनीकी सहयोग प्रदान करता है। एनएमपी पोर्टल एक एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म है जो विभिन्न बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के डेटा को एक स्थान पर लाता है। लॉजिस्टिक्स डेटा बैंक मालगाड़ियों और कंटेनरों की आवाजाही की रीयल-टाइम ट्रैकिंग सुनिश्चित करता है। ई-वे बिल प्रणाली सड़क परिवहन के माध्यम से माल की अंतर्राज्यीय आवाजाही की निगरानी के लिए उपयोग की जाती है। ये सभी उपकरण सामूहिक रूप से राजस्थान में लॉजिस्टिक्स और परिवहन की दक्षता बढ़ाने के लिए डिजाइन किए गए हैं।

45. (2) केवल I और III
जयपुर मेट्रो राजस्थान की प्रथम रैपिड ट्रांजिट प्रणाली है जिसने शहरी परिवहन के आधुनिक स्वरूप को राज्य में प्रस्तुत किया है। इस परियोजना में शहर की भौगोलिक और ऐतिहासिक आवश्यकताओं को देखते हुए उन्नत और भूमिगत दोनों तरह के खंड निर्मित किए गए हैं। यह परियोजना पूरी तरह केंद्र सरकार द्वारा वित्तपोषित नहीं है, बल्कि इसमें राज्य सरकार का भी महत्वपूर्ण वित्तीय योगदान और प्रबंधन शामिल है। जयपुर मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन द्वारा संचालित यह प्रणाली सुरक्षित, प्रदूषण मुक्त और समयबद्ध यात्रा का एक विश्वसनीय विकल्प प्रदान करती है।

46. (4) राष्ट्रीय राजमार्ग केंद्रीय मंत्रालय के अधीन हैं, जबकि राज्य राजमार्ग राज्य सरकार के अधीन हैं।
राष्ट्रीय राजमार्गों का प्रशासनिक और वित्तीय नियंत्रण केंद्र सरकार के सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के पास होता है, जबकि राज्य राजमार्ग पूरी तरह से राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। राष्ट्रीय राजमार्गों का मुख्य उद्देश्य देश के विभिन्न राज्यों की राजधानियों और महत्वपूर्ण बंदरगाहों को जोड़ना है। इसके विपरीत, राज्य राजमार्ग राज्य के भीतर जिलों और महत्वपूर्ण शहरों को एक-दूसरे से और राष्ट्रीय राजमार्गों से जोड़ने का कार्य करते हैं। इनके रखरखाव और विकास की जिम्मेदारी संबंधित सरकारों के सार्वजनिक निर्माण विभागों की होती है।

47. (1) इंदिरा गांधी मुफ्त स्मार्टफोन योजना
राजस्थान सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण और डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देने के लिए 'इंदिरा गांधी मुफ्त स्मार्टफोन योजना' शुरु की गई है। इस योजना के अंतर्गत परिवार की महिला मुखियाओं को मुफ्त स्मार्टफोन के साथ इंटरनेट संयोजकता और कॉलिंग की सुविधा प्रदान की जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को सरकारी योजनाओं की जानकारी तक आसान पहुंच सुनिश्चित करना और उन्हें डिजिटल रूप से साक्षर बनाना है। यह पहल ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच डिजिटल अंतराल को कम करने और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

48. (2) राजस्थान में वर्तमान में केवल एक ही परिचालन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है।
राजस्थान में वर्तमान में केवल जयपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा ही एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ से नियमित रुप से अनुसूचित अंतरराष्ट्रीय यात्री उड़ानें संचालित होती हैं। जोधपुर, उदयपुर, किशनगढ़ और बीकानेर जैसे अन्य हवाई अड्डे मुख्य रुप से घरेलू नागरिक उड़ानों की सेवा प्रदान करते हैं। जैसलमेर हवाई अड्डा घरेलू पर्यटन के लिए महत्वपूर्ण है और यह मुख्य रुप से एक नागरिक परिक्षेत्र के रुप में कार्य करता है। बीकानेर हवाई अड्डा भी उड़ान योजना के तहत सक्रिय है और वहाँ से वाणिज्यिक उड़ानें संचालित की जा रही हैं, जो क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाती हैं।

49. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान, विशेष रुप से जयपुर, डेटा केंद्रों की स्थापना के लिए एक पसंदीदा गंतव्य के रुप में उभरा है क्योंकि यहाँ भूकंप जैसी गंभीर प्राकृतिक आपदाओं का जोखिम अन्य क्षेत्रों की तुलना में काफी कम है। डेटा केंद्रों को सुरक्षित और स्थिर भौगोलिक स्थितियों की आवश्यकता होती है, जो राजस्थान प्रदान करता है। इसके साथ ही, राज्य सरकार की अनुकूल सूचना प्रौद्योगिकी नीतियां और रियायतें निवेशकों को आकर्षित करती हैं। अतः कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण स्पष्ट रुप से बताता है कि राज्य में डेटा केंद्रों की वृद्धि क्यों हो रही है।

50. (2) II और IV
राजस्थान में राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई 5,000 किलोमीटर से काफी अधिक है और यह देश के शीर्ष राज्यों में से एक है। भारतमाला परियोजना में राजस्थान को पूरी तरह से नहीं छोड़ा गया है, बल्कि इसके तहत राज्य के पश्चिमी सीमावर्ती जिलों में सामरिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सड़कों का व्यापक जाल बिछाया जा रहा है। एनएच 27 पूर्व-पश्चिम गलियारे का हिस्सा है और दक्षिण राजस्थान से गुजरता है। अतः कथन द्वितीय और चतुर्थ तथ्यात्मक रुप से गलत हैं, जो इस प्रश्न का सही उत्तर बनाते हैं।

51. (3) उदयपुर, चित्तौड़गढ़, कोटा
पूर्व-पश्चिम गलियारा राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना का एक प्रमुख हिस्सा है जो राजस्थान के दक्षिणी जिलों से होकर गुजरता है। यह गलियारा राज्य में सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बूंदी, कोटा और बारां जिलों को आपस में जोड़ता है। यह मार्ग पोरबंदर को सिलचर से जोड़ने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग 27 का अभिन्न हिस्सा है। इस गलियारे के निर्माण से राजस्थान के दक्षिणी भाग में औद्योगिक गतिविधियों और माल के परिवहन में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को एक नई और सकारात्मक गति मिली है।

52. (4) किशनगढ़ औद्योगिक केंद्र में एक मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क का विकास
प्रधानमंत्री गति शक्ति के तहत मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी का मुख्य उद्देश्य सड़क, रेल और अन्य परिवहन साधनों को एकीकृत करना है। किशनगढ़ में लॉजिस्टिक्स पार्क का विकास इसका उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि यह सड़क और रेलवे नेटवर्क के संगम पर स्थित है। यह केंद्र माल के भंडारण, प्रसंस्करण और

Downloaded from www.pdf.tube

सड़क योजना का तीसरा चरण मुख्य रूप से ग्रामीण कृषि मंडियों और उच्च माध्यमिक स्कूलों को जोड़ने वाली मौजूदा सड़कों के उन्नयन पर केंद्रित है। भारतमाला परियोजना के तहत राज्य के पश्चिमी सीमावर्ती जिलों में सामरिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है। हालांकि, राजस्थान का सड़क घनत्व केरल जैसे घनी आबादी वाले राज्यों की तुलना में विस्तार के कारण कम है।

36. (4) जयपुर
राजस्थान की राजधानी जयपुर को राज्य के पहले प्रमुख फिनटेक पार्क की मेजबानी करने के लिए चुना गया है। यह पार्क वित्तीय प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों, स्टार्टअप्स और आईटी पेशेवरों को विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचा और एक अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करने के लिए विकसित किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य जयपुर को उत्तर भारत के एक प्रमुख वित्तीय और तकनीकी केंद्र के रूप में वैश्विक स्तर पर स्थापित करना है। इस पहल से राज्य में भारी निवेश आकर्षित होगा और डिजिटल सेवाओं व रोजगार के क्षेत्र में व्यापक वृद्धि होने की संभावना है।

37. (3) रातानाडा हवाई अड्डा - बीकानेर
राजस्थान में हवाई अड्डों के नाम और उनकी भौगोलिक स्थिति के संदर्भ में रातानाडा हवाई अड्डा जोधपुर जिले में स्थित है, न कि बीकानेर में। बीकानेर में स्थित हवाई अड्डे को नाल हवाई अड्डे के रूप में जाना जाता है। डबोक हवाई अड्डा उदयपुर में स्थित है जिसे महाराणा प्रताप हवाई अड्डा भी कहा जाता है और सांगानेर हवाई अड्डा जयपुर में स्थित है जो राज्य का मुख्य अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है। बाड़मेर में स्थित उत्तरलाई हवाई अड्डा एक महत्वपूर्ण सैन्य एयरबेस है जो सामरिक दृष्टि से राज्य में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

38. (2) 100 एमबीपीएस
भारतनेट परियोजना के तहत राजस्थान की ग्राम पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क से जोड़कर डिजिटल रूप से सशक्त बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक ग्राम पंचायत के लिए आमतौर पर न्यूनतम 100 एमबीपीएस की बैंडविड्थ क्षमता सुनिश्चित की जाती है। यह उच्च गति इंटरनेट संयोजकता ग्रामीण क्षेत्रों में ई-गवर्नेंस सेवाओं, टेली-शिक्षा और टेली-मेडिसिन के सुचारु संचालन के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस बुनियादी ढांचे के माध्यम से ग्रामीण जनसंख्या को डिजिटल अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा से जोड़ा जा रहा है, जिससे सामाजिक-आर्थिक विकास के नए द्वार खुले हैं।

39. (4) अडानी ग्रुप
सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल के तहत जयपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के प्रबंधन और संचालन की जिम्मेदारी अडानी समूह को सौंपी गई है। यह समझौता भारत सरकार की विमानन नीति के तहत हवाई अड्डों के आधुनिकीकरण और परिचालन दक्षता बढ़ाने के विशिष्ट उद्देश्य से किया गया था। अडानी समूह अब हवाई अड्डे की यात्री सुविधाओं, टर्मिनल विकास और गैर-वैमानिकी सेवाओं के रखरखाव की पूरी देखरेख करता है। यह बदलाव निजी क्षेत्र की विशेषज्ञता और निवेश को विमानन बुनियादी ढांचे में शामिल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है जिससे सेवा गुणवत्ता में सुधार की अपेक्षा है।

40. (1) I, III, IV, II
राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम की बस सेवाओं का किराया उनकी उपलब्ध सुविधाओं और गति के आधार पर भिन्न होता है। सबसे कम किराया 'साधारण' श्रेणी की बसों का होता है जो सभी स्थानीय स्टॉप पर रुकती हैं। इसके बाद 'एक्सप्रेस' श्रेणी आती है जो केवल चुनिंदा स्टेशनों पर ही रुकती है। 'एसी स्लीपर' बसों का किराया और भी अधिक होता है क्योंकि वे लंबी दूरी और आरामदायक यात्रा प्रदान करती हैं। 'सुपर लक्जरी' (जैसे वोल्वो और स्कैनिया) बसें उच्चतम श्रेणी में आती हैं और इनका यात्री किराया सबसे अधिक निर्धारित किया गया है।

41. (3) राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम
राजस्थान में आईटी पार्कों और औद्योगिक क्षेत्रों के नियोजित विकास के लिए 'रीको' मुख्य नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। यह निगम सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा जैसे भूमि आवंटन, बिजली और जल आपूर्ति को सुनिश्चित करता है। रीको ने जयपुर, जोधपुर और अन्य प्रमुख शहरों में समर्पित आईटी पार्क विकसित किए हैं ताकि बड़ी तकनीकी कंपनियों को आकर्षित किया जा सके। राज्य में निवेश प्रोत्साहन और औद्योगिक नीति के सफल क्रियान्वयन में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो राजस्थान को एक डिजिटल हब बनाने में सहायता करती है।

42. (2) 3.5 गीगाहर्ट्ज़ (C-बैंड)
राजस्थान के शहरी क्षेत्रों में 5जी सेवाओं के प्रारंभिक विस्तार के दौरान 3.5 गीगाहर्ट्ज़ फ्रीक्वेंसी बैंड, जिसे 'सी-बैंड' भी कहा जाता है, को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। यह बैंड उच्च डेटा गति और पर्याप्त कवरेज रेंज के बीच एक आदर्श संतुलन प्रदान करता है, जो घनी आबादी वाले क्षेत्रों के लिए सबसे उपयुक्त है। 5जी तकनीक की क्षमताओं जैसे अल्ट्रा-फास्ट डाउनलोडिंग और स्ट्रीमिंग को प्रभावी बनाने में यह मिड-बैंड स्पेक्ट्रम निर्णायक भूमिका निभाता है। दूरसंचार ऑपरेटरों ने व्यापक शहरी नेटवर्क स्थापित करने के लिए इसी फ्रीक्वेंसी पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है।

43. (4) मारवाड़ जंक्शन से मावली जंक्शन लाइन जो अभी भी गैर-ब्रॉड गेज पर संचालित है
राजस्थान में रेलवे नेटवर्क के व्यापक आधुनिकीकरण और प्रोजेक्ट यूनिगेज की सफलता के बावजूद मारवाड़ जंक्शन से मावली जंक्शन तक का रेल मार्ग एक अनूठा अपवाद बना हुआ है। यह मार्ग अभी भी नैरो या मीटर गेज के कुछ हिस्सों पर संचालित होता है और मुख्य रूप से अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण विरासत रेल पर्यटन के लिए जाना जाता है। कामलीघाट और गोरम घाट जैसे सुरम्य खंडों से गुजरने वाली यह लाइन पर्यटकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। राज्य के अन्य अधिकांश रेल मार्गों का ब्रॉड गेज में परिवर्तन पूर्ण हो चुका है।

NODIA

रेलगाड़ियों पर स्थानांतरित करना है। रेल परिवहन सड़क परिवहन की तुलना में अधिक ऊर्जा कुशल होता है और प्रति टन माल ढोने पर बहुत कम कार्बन उत्सर्जन करता है। इससे न केवल सड़कों पर भीड़भाड़ कम होती है, बल्कि वायु प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी प्रभावी रुप से कमी आती है। यह परियोजना सतत विकास लक्ष्यों और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने में अत्यंत सहायक है।

62. (4) अवसंरचना विकास के लिए ग्रामीण सड़क नेटवर्क और पुलों का विकास करना
नाबार्ड द्वारा प्रबंधित ग्रामीण बुनियादी ढांचा विकास कोष का उपयोग राजस्थान में मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के भौतिक ढांचे को मजबूत करने के लिए किया जाता है। राज्य सरकार इस कोष से प्राप्त ऋण का उपयोग ग्रामीण सड़कों के निर्माण, पुलों के विकास और सिंचाई परियोजनाओं को पूरा करने के लिए करती है। ये निवेश ग्रामीण बसावटों की मुख्य सड़कों तक पहुंच सुनिश्चित करते हैं, जिससे कृषि उत्पादों का विपणन आसान होता है। यह निधि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उत्थान और जीवन स्तर में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण वित्तीय स्रोत है।

63. (1) विभिन्न लाइन विभागों में असंगठित योजना की समस्या को समाप्त करना
प्रधानमंत्री गति शक्ति ढांचे के तहत बुनियादी ढांचा संपत्तियों का एकीकृत स्थानिक मानचित्रण विभागों के बीच अलग-थलग काम करने की प्रवृत्ति को दूर करता है। इससे विभिन्न मंत्रालयों और राज्य विभागों को एक ही पोर्टल पर परियोजनाओं की स्थिति देखने और समन्वय करने की सुविधा मिलती है। उदाहरण के लिए, सड़क निर्माण के तुरंत बाद पाइपलाइन बिछाने के लिए सड़क खोदे जाने जैसी समस्याओं को नियोजित समन्वय के माध्यम से रोका जा सकता है। यह दृष्टिकोण संसाधनों के अपव्यय को कम करता है और महत्वपूर्ण परियोजनाओं को समय पर पूरा करने में मदद करता है।

64. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
जयपुर जंक्शन उत्तर पश्चिम रेलवे का क्षेत्रीय मुख्यालय होने के साथ-साथ एक व्यस्ततम रेलवे स्टेशन है। जोधपुर जंक्शन थार मरुस्थल क्षेत्र के रेल यातायात के प्रबंधन के लिए मुख्य केंद्र के रूप में कार्य करता है। कोटा जंक्शन दिल्ली-मुंबई के प्रमुख विद्युतीकृत रेल मार्ग पर स्थित है और माल व यात्री दोनों यातायात के लिए महत्वपूर्ण है। अजमेर जंक्शन अपने ऐतिहासिक महत्व के साथ-साथ ब्रिटिश काल की विशाल लोकोमोटिव और कैरिज कार्यशालाओं के लिए प्रसिद्ध है। ये जंक्शन राजस्थान के रेल परिवहन ढांचे के मजबूत और आधारभूत स्तंभ हैं।

65. (3) केवल I और III
भारतनेट परियोजना राजस्थान की सभी ग्राम पंचायतों तक ब्रॉडबैंड पहुंच सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अंतराल कम हो रहा है। राज्य सरकार ने अपनी डिजिटल नीतियों के तहत विभिन्न सार्वजनिक स्थानों और कार्यालयों में मुफ्त वाई-फाई हॉटस्पॉट की सुविधा प्रदान की है। यह कहना गलत है कि ग्रामीण बाजारों में निजी ऑपरेटरों की उपस्थिति शून्य है, क्योंकि कई निजी कंपनियां ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दे रही हैं। राज्य में डिजिटल बुनियादी ढांचे का विकास सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के सक्रिय योगदान से हो रहा है।

66. (1) Public-Private Partnership
राजस्थान में राज्य राजमार्गों के विस्तार और आधुनिकीकरण के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। इसमें सरकार और निजी कंपनियां मिलकर परियोजनाओं का वित्तपोषण, निर्माण और संचालन करती हैं। यह मॉडल राज्य सरकार के वित्तीय बोझ को कम करता है और निजी क्षेत्र की दक्षता और आधुनिक तकनीक का लाभ उठाने में मदद करता है। इस भागीदारी के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाली सड़कों का तेजी से निर्माण संभव हुआ है। टोल संग्रह की व्यवस्था अक्सर इसी मॉडल के तहत निजी निवेशकों को लागत वसूली के लिए दी जाती है।

67. (3) 2.5 लाख किमी और 3 लाख किमी के बीच
राजस्थान में कुल सड़क लंबाई, जिसमें राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य राजमार्ग, जिला सड़कें और ग्रामीण सड़कें शामिल हैं, वर्तमान में लगभग 2.75 लाख किलोमीटर से अधिक है। पिछले कुछ वर्षों में सड़क नेटवर्क के विस्तार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, विशेष रुप से ग्रामीण क्षेत्रों में। यह विस्तृत जाल राज्य के सुदूरतम गांवों को मुख्य आर्थिक केंद्रों से जोड़ता है। सड़क घनत्व बढ़ाने के लिए सरकार विभिन्न केंद्रीय और राज्य स्तरीय योजनाओं के माध्यम से निरंतर निवेश कर रही है, जो राज्य के सर्वांगीण आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है।

68. (4) इसे 8-लेन प्रवेश-नियंत्रित ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे परियोजना के रूप में डिजाइन किया गया है
दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे एक आधुनिक ग्रीनफील्ड परियोजना है जो राजस्थान से गुजरती है। इसे 8-लेन प्रवेश-नियंत्रित मार्ग के रूप में डिजाइन किया गया है, जिसका अर्थ है कि इसमें केवल निर्दिष्ट स्थानों से ही प्रवेश और निकास संभव है। यह एक्सप्रेसवे उच्च गति वाले वाहनों के लिए समर्पित है और सुरक्षा कारणों से इस पर धीमी गति वाले वाहनों का प्रवेश वर्जित है। यह परियोजना दिल्ली और मुंबई के बीच की दूरी को कम करने के साथ ही आधुनिक रसद सुविधाओं और यात्रियों के लिए विश्व स्तरीय यात्रा अनुभव प्रदान करती है।

69. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण ने गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है क्योंकि बेहतर संयोजकता किसानों को अपनी उपज मंडियों तक जल्दी पहुँचाने में मदद करती है। इससे उन्हें फसलों का बेहतर मूल्य मिलता है और परिवहन लागत में कमी आती है। इसके अतिरिक्त, पक्की सड़कें शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और रोजगार के अवसरों तक पहुंच को सुगम बनाती हैं, जिससे ग्रामीण आबादी के जीवन स्तर में सुधार होता है। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और संयोजकता के ये प्रत्यक्ष लाभ ही गरीबी कम करने का मुख्य आधार हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

कुशल परिवहन के लिए एक एकीकृत मंच प्रदान करता है। यहाँ से संगमरमर और अन्य औद्योगिक उत्पादों को देश के विभिन्न हिस्सों में भेजने के लिए विभिन्न परिवहन साधनों का समन्वय किया जाता है, जिससे रसद लागत में कमी आती है।

53. (2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं है।
राज्य राजमार्गों का प्राथमिक कार्य जिला मुख्यालयों को राज्य की राजधानी और राष्ट्रीय राजमार्गों से जोड़ना है, जो राज्य के आंतरिक परिवहन की रीढ़ बनाते हैं। राजस्थान राज्य राजमार्ग अधिनियम इन सड़कों के कानूनी ढांचे, निर्माण और रखरखाव की प्रक्रियाओं को विनियमित करने के लिए बनाया गया है। यद्यपि दोनों कथन स्वतंत्र रूप से सही हैं, लेकिन अधिनियम का अस्तित्व केवल सड़कों की परिभाषा या उनके नेटवर्क गठन का एकमात्र कारण नहीं है। अधिनियम एक प्रशासनिक व्यवस्था है, जबकि नेटवर्क का गठन परिवहन आवश्यकताओं का परिणाम है।

54. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
जयपुर मेट्रो का चरण 1-ए मानसरोवर से चांदपोल तक के प्रारंभिक मार्ग को कवर करता है। चरण 1-बी इस मार्ग को भूमिगत रूप से चांदपोल से बड़ी चौपड़ तक विस्तारित करता है। चरण 1-सी के तहत बड़ी चौपड़ से ट्रांसपोर्ट नगर तक के विस्तार की योजना है। चरण 1-डी मानसरोवर स्टेशन को अजमेर रोड चौराहे से जोड़ने वाला एक छोटा लिंक मार्ग है। यह सुव्यवस्थित विस्तार जयपुर शहर के विभिन्न प्रमुख आवासीय और व्यावसायिक क्षेत्रों के बीच प्रभावी मेट्रो कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए चरणबद्ध तरीके से किया गया है।

55. (1) I, II और IV
5जी नेटवर्क को प्रभावी बनाने के लिए स्मॉल सेल और सघन मोबाइल टावरों के जाल की आवश्यकता होती है, क्योंकि इसकी तरंगें कम दूरी तक यात्रा करती हैं। यह तकनीक अल्ट्रा-लो लेटेंसी प्रदान करती है, जो टेली-सर्जरी और स्वायत्त वाहनों जैसे संवेदनशील अनुप्रयोगों के लिए अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त, 5जी फिक्स्ड वायरलेस एक्सेस के माध्यम से उन क्षेत्रों में उच्च गति इंटरनेट प्रदान कर सकता है जहाँ फाइबर केबल बिछाना कठिन है। 5जी का स्पेक्ट्रम आवंटन केंद्र सरकार द्वारा नीलामी के माध्यम से किया जाता है, न कि पूर्णतः निःशुल्क।

56. (1) सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग
राजस्थान में सूचना प्रौद्योगिकी, डेटा केंद्रों के विकास और ई-गवर्नेंस नीतियों के निर्माण के लिए सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग मुख्य नोडल निकाय है। यह विभाग राज्य की डिजिटल बुनियादी ढांचा परियोजनाओं जैसे राजनेट, राज ई-वॉल्ट और स्टेट डेटा सेंटर के सफल क्रियान्वयन की देखरेख करता है। डिजिटल राजस्थान के विजन को साकार करने के लिए विभाग विभिन्न विभागों के तकनीकी उन्नयन और नागरिक केंद्रित सेवाओं के डिजिटल वितरण का प्रबंधन करता है। इसका मुख्य उद्देश्य शासन में पारदर्शिता और दक्षता लाना है।

57. (3) राजस्थान में वर्तमान में भारत में गैर-विद्युतीकृत ब्रॉड-गेज रेलवे मार्गों का उच्चतम प्रतिशत है।
राजस्थान में हाल के वर्षों में रेलवे विद्युतीकरण का कार्य अत्यंत तीव्र गति से किया गया है, जिसके कारण गैर-विद्युतीकृत मार्गों का प्रतिशत लगातार कम हुआ है। यह कहना गलत है कि यहाँ गैर-विद्युतीकृत मार्गों का उच्चतम प्रतिशत है। उत्तर पश्चिम रेलवे ने अपने लगभग सभी प्रमुख मार्गों का विद्युतीकरण पूर्ण कर लिया है। थार एक्सप्रेस और वंदे भारत जैसी आधुनिक ट्रेनें राज्य की रेल सेवा का महत्वपूर्ण हिस्सा रही हैं। विद्युतीकरण से ट्रेनों की गति बढ़ी है और पर्यावरण प्रदूषण में प्रभावी रूप से कमी आई है।

58. (1) जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (JNPT)
पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा एक विशाल रेल कॉरिडोर है जो उत्तर प्रदेश के दादरी को महाराष्ट्र के जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट से जोड़ता है। यह गलियारा राजस्थान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह राज्य के औद्योगिक क्षेत्रों को सीधे भारत के सबसे बड़े कंटेनर बंदरगाह से जोड़ता है। 1,500 किलोमीटर से अधिक लंबे इस मार्ग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा राजस्थान से गुजरता है। इसके माध्यम से राज्य के निर्यातकों को वैश्विक बाजारों तक पहुँचने के लिए एक तेज और विश्वसनीय परिवहन साधन प्राप्त होता है, जो व्यापार बढ़ाता है।

59. (4) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग सहित अत्याधुनिक आईटी तकनीकें
जयपुर में स्थापित राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस टेक्नोलॉजी का प्राथमिक उद्देश्य राज्य के युवाओं को भविष्य की तकनीकों में दक्ष बनाना है। यह केंद्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, क्लाउड कंप्यूटिंग और बिग डेटा एनालिटिक्स जैसे उन्नत क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाला प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह संस्थान वैश्विक तकनीकी कंपनियों के सहयोग से संचालित होता है ताकि छात्रों को उद्योग की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार कौशल प्राप्त हो सके। यह पहल राजस्थान को एक प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी हब के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

60. (1) I, II, IV, III
राजस्थान में सार्वजनिक परिवहन के साधनों का विकास क्रमबद्ध तरीके से हुआ है। राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम की स्थापना 1964 में हुई थी, जो सबसे पुरानी सेवा है। इसके बाद 2015 में जयपुर मेट्रो चरण 1-ए का संचालन शुरू हुआ। क्षेत्रीय हवाई संपर्क को बढ़ावा देने वाली उड़ान योजना के तहत आंतरिक उड़ानें इसके बाद प्रारंभ हुईं। सबसे नवीनतम विकास वंदे भारत एक्सप्रेस जैसी उच्च गति वाली ट्रेनों की शुरुआत है। यह कालानुक्रमिक क्रम राज्य में परिवहन सुविधाओं के आधुनिकीकरण और विस्तार की ऐतिहासिक यात्रा को दर्शाता है।

61. (3) माल ढुलाई का सड़क से रेल पर स्थानांतरण, जिससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में काफी कमी आती है
समर्पित माल ढुलाई गलियारे का सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय लाभ माल परिवहन को भारी ट्रकों से हटाकर विद्युत चालित

Downloaded from www.pdf.tube

किया गया है। यह राज्य के अन्य प्रमुख स्टेशनों के लिए भविष्य के पुनर्विकास की एक उत्कृष्ट मिसाल पेश करता है।

79. (1) पूरी तरह से महिला कर्मचारियों द्वारा प्रबंधित भारत का पहला प्रमुख गैर-उपनगरीय स्टेशन
गांधीनगर जयपुर रेलवे स्टेशन भारतीय रेलवे के इतिहास में एक अनूठी मिसाल कायम करता है क्योंकि यह पूरी तरह से महिला शक्ति द्वारा संचालित किया जाता है। स्टेशन मास्टर से लेकर सुरक्षा कर्मी और टिकट जांचकर्ता तक, यहाँ का सारा प्रबंधन महिलाओं के हाथों में है। यह महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह स्टेशन दिल्ली-जयपुर मुख्य रेल मार्ग पर स्थित है और अपनी विशिष्ट कार्य संस्कृति व स्वच्छता के लिए पहचाना जाता है। यह उपलब्धि राजस्थान के सामाजिक-प्रशासनिक सुधारों का एक अत्यंत गौरवशाली उदाहरण है।

80. (1) ई-मित्र की शुरुआत → भामाशाह स्टेट डेटा सेंटर का उद्घाटन → 5G का वाणिज्यिक लॉन्च
राजस्थान में संचार बुनियादी ढांचे का विकास चरणबद्ध तरीके से हुआ है। सबसे पहले ई-मित्र सेवा की शुरुआत की गई ताकि नागरिकों को डिजिटल माध्यम से सरकारी सेवाएं मिल सकें। इसके बाद, डिजिटल डेटा के सुरक्षित भंडारण के लिए जयपुर में अत्याधुनिक भामाशाह स्टेट डेटा सेंटर का उद्घाटन किया गया। सबसे अंत में, राज्य में उच्च गति इंटरनेट युग की शुरुआत करते हुए 5जी सेवाओं का वाणिज्यिक लॉन्च हुआ। यह क्रम राजस्थान की डिजिटल परिवर्तन यात्रा और तकनीकी प्रगति को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है और भविष्य की राह दिखाता है।

81. (2) मेवाड़ क्षेत्र और गुजरात के औद्योगिक केंद्रों के बीच ब्रॉड गेज संयोजकता
अहमदाबाद-उदयपुर रेल मार्ग का गेज परिवर्तन मेवाड़ क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए एक मील का पत्थर है। पहले इस मार्ग पर मीटर गेज होने के कारण माल और यात्रियों को ट्रेन बदलनी पड़ती थी, जिससे समय और लागत बढ़ती थी। अब ब्रॉड गेज होने से उदयपुर और दक्षिण राजस्थान के जिले सीधे अहमदाबाद और गुजरात के बंदरगाहों से जुड़ गए हैं। इससे क्षेत्र के संगमरमर, खनिज और हस्तशिल्प उद्योगों को नया वैश्विक बाजार मिला है और पर्यटन क्षेत्र को भी निर्बाध रेल कनेक्टिविटी का सीधा लाभ प्राप्त हुआ है।

82. (1) ग्राम पंचायत स्तर तक वॉयस, वीडियो और डेटा प्रदान करने वाला मल्टी-मोड नेटवर्क
राजनेट राजस्थान सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है जो राज्य के सुदूरतम ग्रामीण क्षेत्रों तक डिजिटल कनेक्टिविटी सुनिश्चित करती है। यह एक एकीकृत मल्टी-मोड नेटवर्क है जो ग्राम पंचायतों को वॉयस, वीडियो और डेटा सेवाएं प्रदान करने के लिए उपग्रह और स्थलीय तकनीकों का उपयोग करता है। इसके माध्यम से ई-गवर्नेंस, वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग और ऑनलाइन शिक्षा की सुविधाएं गाँवों तक पहुँचती हैं। राजनेट डिजिटल राजस्थान के सपने को साकार करने के लिए एक मजबूत संचार आधार प्रदान करता है, जिससे सरकारी कामकाज में पारदर्शिता और गति आती है।

83. (3) जैसलमेर हवाई अड्डा
जैसलमेर हवाई अड्डा भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा प्रबंधित एक महत्वपूर्ण नागरिक परिक्षेत्र है जो भारतीय वायु सेना के सामरिक एयरबेस के भीतर स्थित है। यहाँ नागरिक उड़ानों के लिए अलग टर्मिनल और सुविधाएं उपलब्ध हैं, लेकिन विमानों के उड़ान भरने और उतरने के लिए वायु सेना के रनवे का उपयोग किया जाता है। इस व्यवस्था के कारण यहाँ सुरक्षा नियम अत्यंत कड़े होते हैं और उड़ानों का समय वायु सेना के परिचालन के साथ समन्वयित किया जाता है। यह हवाई अड्डा थार मरुस्थल के पर्यटन के लिए मुख्य प्रवेश द्वार है।

84. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
राष्ट्रीय राजमार्ग 48 जयपुर, अजमेर और उदयपुर जैसे प्रमुख शहरों को जोड़ते हुए राज्य का मुख्य व्यावसायिक गलियारा बनाता है। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे का संरेखण दौसा, सवाई माधोपुर और कोटा जिलों से होकर गुजरता है। अमृतसर-जामनगर एक्सप्रेसवे राज्य के पश्चिमी जिलों जैसे हनुमानगढ़, बीकानेर और बाड़मेर को जोड़ता है जो सीमावर्ती क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय राजमार्ग 27 दक्षिण राजस्थान के कोटा, चित्तौड़गढ़ और उदयपुर जिलों के बीच संयोजकता प्रदान करता है। यह नेटवर्क राजस्थान के सर्वांगीण भौगोलिक और आर्थिक विकास को सुनिश्चित करता है।

85. (1) केवल I और II
जयपुर मेट्रो आधुनिक तकनीक से सुसज्जित है और इसे नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड के साथ एकीकृत किया गया है ताकि यात्री एक ही कार्ड से विभिन्न परिवहन सेवाओं का उपयोग कर सकें। यह प्रणाली मानक गेज पटरियों पर चलती है, जो भारतीय रेलवे की पारंपरिक ब्रॉड गेज लाइनों से तकनीकी रूप से अलग और शहरी मेट्रो के लिए उपयुक्त हैं। हालांकि मेट्रो स्टेशनों पर सौर ऊर्जा का उपयोग बिजली की खपत को कम करने के लिए किया जाता है, लेकिन यह कहना कि इसका संपूर्ण संचालन केवल सौर ऊर्जा से होता है, तकनीकी रूप से पूर्ण सत्य नहीं है।

86. (2) माउंट आबू
उड़ान योजना का मुख्य लक्ष्य देश के असेवित और अल्पसेवित क्षेत्रों को हवाई नेटवर्क से जोड़ना है। राजस्थान में बीकानेर, जैसलमेर और किशनगढ़ जैसे शहरों को इस योजना के माध्यम से नियमित वाणिज्यिक उड़ानों से जोड़ा गया है ताकि पर्यटन और क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा मिल सके। माउंट आबू राजस्थान का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल है, लेकिन वर्तमान में यहाँ कोई ऐसा परिचालन हवाई अड्डा नहीं है जो उड़ान योजना के तहत अनुसूचित वाणिज्यिक सेवाओं के लिए सक्रिय हो। निकटतम हवाई अड्डा उदयपुर या अहमदाबाद है जो इस गंतव्य की सेवा करते हैं।

NODIA

70. (2) केवल III
राजस्थान में विमानन सुविधाओं का विस्तार जोधपुर के पश्चिम में भी उपलब्ध है, जिसमें जैसलमेर हवाई अड्डा एक प्रमुख केंद्र है। जैसलमेर हवाई अड्डा घरेलू उड़ानों के माध्यम से पर्यटकों को पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र तक सीधी पहुंच प्रदान करता है। उदयपुर का हवाई अड्डा महाराणा प्रताप को समर्पित है और जयपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा बड़े विमानों को संभालने की क्षमता रखता है। बीकानेर में भी उड़ान योजना के तहत अनुसूचित उड़ानें संचालित हो रही हैं। अतः यह कहना कि जोधपुर के पश्चिम में कोई विमानन सुविधा उपलब्ध नहीं है, तथ्यात्मक रूप से गलत है।

71. (3) उदयपुर, चित्तौड़गढ़, कोटा
राजस्थान का दक्षिणी भाग खनिजों से समृद्ध है और उदयपुर-चित्तौड़गढ़-कोटा रेलवे मार्ग इन खनिजों के परिवहन के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी है। उदयपुर क्षेत्र से जस्ता और रॉक फॉस्फेट जैसे महत्वपूर्ण खनिजों का खनन किया जाता है, जिन्हें इसी रेल मार्ग के माध्यम से प्रसंस्करण इकाइयों और औद्योगिक केंद्रों तक पहुँचाया जाता है। यह मार्ग भारी माल यातायात को संभालने के लिए अच्छी तरह से विकसित और विद्युतीकृत है। खनिजों के कुशल परिवहन से राज्य के राजस्व और औद्योगिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण और स्थायी योगदान मिलता है।

72. (1) राजएसएसओ (RajSSO)
राजस्थान सरकार की राजएसएसओ पहचान निवासियों के लिए एक एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म है। इसके माध्यम से नागरिक केवल एक यूज़र आईडी और पासवर्ड का उपयोग करके सरकार की विभिन्न ऑनलाइन सेवाओं और पोर्टल्स तक पहुंच सकते हैं। यह प्रणाली सेवाओं के वितरण को सरल बनाती है और उपयोगकर्ताओं को बार-बार पंजीकरण करने की आवश्यकता से मुक्ति देती है। यह डिजिटल सशक्तिकरण की दिशा में एक प्रभावी कदम है जो शासन में पारदर्शिता सुनिश्चित करता है और नागरिकों के बहुमूल्य समय व श्रम की बचत करता है, जिससे दक्षता बढ़ती है।

73. (3) पारंपरिक नियोजन अलग-थलग किया जाता था; गति शक्ति विभिन्न क्षेत्रों में नियोजन को एकीकृत करती है
पारंपरिक बुनियादी ढांचा नियोजन में विभिन्न विभाग जैसे सड़क, रेलवे और जल संसाधन स्वतंत्र रूप से कार्य करते थे, जिससे समन्वय की कमी और परियोजनाओं में देरी होती थी। इसके विपरीत, प्रधानमंत्री गति शक्ति एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाती है जहाँ सभी बुनियादी ढांचा क्षेत्रों की योजनाओं को एक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर साझा किया जाता है। इससे परियोजनाओं का संरेखण बेहतर होता है और बाधाओं की पहचान पहले ही कर ली जाती है। यह एकीकृत मास्टर प्लान संसाधनों के कुशल उपयोग और त्वरित परियोजना पूर्णता को सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया है।

74. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे के संरेखण में अलवर जिले का रेवाड़ी-फुलेरा खंड शामिल है जो एक प्रमुख औद्योगिक गलियारा है। अजमेर जिले में किशनगढ़ जंक्शन के पास महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा विकसित किया गया है। सीकर जिले से यह गलियारा सीधे मार्ग पर गुजरता है जहाँ कई क्रॉसिंग स्टेशन बनाए गए हैं। जयपुर जिले में यह गलियारा फुलेरा जंक्शन के माध्यम से अपनी पहुंच बनाता है, जो उत्तर और दक्षिण राजस्थान के रेल यातायात का मुख्य संगम है। ये जिले इस गलियारे के माध्यम से सीधे वैश्विक व्यापार से जुड़ते हैं।

75. (1) केवल I और II
भामाशाह स्टेट डेटा सेंटर जयपुर में स्थित है और यह राज्य के सभी डिजिटल डेटा और ई-गवर्नेंस अनुप्रयोगों के लिए एक सुरक्षित केंद्रीय भंडार के रूप में कार्य करता है। 5जी सेवाओं के आने से राजस्थान के पर्यटन क्षेत्र में संवर्धित वास्तविकता और आभासी वास्तविकता जैसे नवाचारों को बल मिलेगा, जिससे पर्यटकों को नया अनुभव प्राप्त होगा। हालांकि, थार मरुस्थल की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण अभी भी शत-प्रतिशत क्षेत्र में मोबाइल पहुंच नहीं है। सड़क निर्माण और केबल बिछाने में समन्वय लाने के लिए अब एकीकृत प्रयास किए जा रहे हैं।

76. (2) कोई नहीं, क्योंकि राजस्थान में वाणिज्यिक परिवहन के लिए नौगम्य अंतर्देशीय जलमार्गों का अभाव है।
राजस्थान एक स्थलरुद्ध राज्य है और यहाँ की नदियाँ मुख्य रूप से मौसमी हैं, जिनमें वर्ष भर जल का पर्याप्त प्रवाह नहीं रहता है। इस कारण राज्य में वाणिज्यिक माल या यात्री परिवहन के लिए उपयुक्त नौगम्य अंतर्देशीय जलमार्गों का पूर्णतः अभाव है। यद्यपि पर्यटन के लिए कुछ झीलों में नौकायन की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन वह वृहद स्तर पर परिवहन की श्रेणी में नहीं आता है। वर्तमान में राज्य अपनी सभी परिवहन आवश्यकताओं के लिए पूरी तरह से सड़क, रेल और हवाई यातायात के बुनियादी ढांचे पर ही निर्भर है।

77. (3) जयपुर
राजस्थान की राजधानी जयपुर में शहर के भीतर यातायात के दबाव और भारी वाहनों की भीड़भाड़ को कम करने के लिए एक विस्तृत रिंग रोड परियोजना विकसित की गई है। यह रिंग रोड शहर के बाहरी हिस्सों को जोड़ती है और राष्ट्रीय राजमार्गों से आने वाले यातायात को शहर के मुख्य भाग में प्रवेश किए बिना गुजरने का सीधा रास्ता प्रदान करती है। इस परियोजना के कार्यान्वयन से जयपुर के भीतर यात्रा के समय में कमी आई है और प्रदूषण के स्तर को नियंत्रित करने में भी मदद मिली है। यह आधुनिक शहरी नियोजन का एक महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा है।

78. (4) गांधीनगर जयपुर
गांधीनगर जयपुर रेलवे स्टेशन को हाल ही में भारतीय रेलवे द्वारा एक मॉडल स्टेशन के रूप में पुनर्विकसित किया गया है। यहाँ यात्रियों को हवाई अड्डे के स्तर की आधुनिक सुविधाएं जैसे उन्नत प्रतीक्षालय, आधुनिक सूचना प्रणाली और विश्व स्तरीय वास्तुकला प्रदान की गई है। इस स्टेशन का नवीनीकरण न केवल यात्री सुविधाओं को बढ़ाने के लिए किया गया है, बल्कि इसे एक हरित और ऊर्जा कुशल स्टेशन के रूप में भी स्थापित

Click Here to Buy book on Amazon

95. (1) केवल III
राजस्थान ने डिजिटल नवाचार के लिए आईस्टार्ट प्लेटफॉर्म और गाँवों के मानचित्रण के लिए ड्रोन तकनीक जैसी आधुनिक पहलों को अपनाया है। जयपुर में आईटी पार्कों का विकास तकनीकी क्षेत्र के निवेश को आकर्षित करता है। यद्यपि राज्य सरकार शिक्षा के डिजिटलकरण के लिए प्रतिबद्ध है और कई स्कूलों में वर्चुअल क्लासरूम स्थापित किए गए हैं, लेकिन यह कहना कि 2023 तक शत-प्रतिशत स्कूलों में ये सुविधाएं उपलब्ध हैं, एक तथ्यात्मक अतिशयोक्ति है। बुनियादी ढांचे का पूर्ण विस्तार अभी भी प्रगति पर है। अतः कथन तृतीय गलत होने के कारण सही उत्तर है।

96. (2) ईंधन बचाने और भीड़भाड़ कम करने के लिए लदे हुए ट्रकों को सीधे फ्लैट वैगनों पर ले जाया जाता है
रो-रो सेवा एक आधुनिक लॉजिस्टिक्स समाधान है जहाँ माल से लदे ट्रकों को सीधे रेलवे के विशेष फ्लैट वैगनों पर लादकर लंबी दूरी तक ले जाया जाता है। इसका प्राथमिक लाभ यह है कि इससे ट्रकों द्वारा सड़क पर खपत होने वाले ईंधन की भारी बचत होती है और राजमार्गों पर भीड़भाड़ व प्रदूषण कम होता है। गंतव्य स्टेशन पर पहुँचने के बाद ट्रक सीधे वैगन से नीचे उतरकर अंतिम स्थान तक माल पहुँचा सकते हैं। यह सेवा परिवहन के सड़क और रेल माध्यमों का एक कुशल और पर्यावरण-अनुकूल समन्वय प्रस्तुत करती है।

97. (2) टेलीमेडिसिन सेवाओं के लिए वास्तविक समय में हाई-डेफिनिशन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग
5जी तकनीक की उच्च डेटा गति और अत्यंत कम विलंबता टेली-मेडिसिन क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाएगी। इसके माध्यम से सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के मरीज बिना किसी देरी के बड़े शहरों के विशेषज्ञों के साथ हाई-डेफिनिशन वीडियो कॉल पर परामर्श ले सकेंगे। 5जी के कारण बिना किसी अंतराल के वास्तविक समय में डेटा और इमेज साझा करना संभव होगा, जो सटीक निदान और आपातकालीन उपचार के लिए आवश्यक है। यद्यपि अन्य डिजिटल सेवाएं भी सुधरेंगी, लेकिन स्वास्थ्य सेवाओं में इसका प्रभाव सबसे अधिक जीवन-रक्षक और तत्काल महसूस किया जाएगा, जो एक बड़ी उपलब्धि है।

98. (1) जिला मुख्यालयों और शहरों को राष्ट्रीय राजमार्गों से जोड़ने वाली मुख्य सड़कें
राज्य राजमार्ग राजस्थान के सड़क नेटवर्क की महत्वपूर्ण कड़ी हैं जो राज्य के भीतर विभिन्न जिला मुख्यालयों और महत्वपूर्ण शहरों को आपस में जोड़ते हैं। इनका एक मुख्य कार्य राज्य के प्रमुख केंद्रों को राष्ट्रीय राजमार्गों के साथ एकीकृत करना है ताकि माल और यात्रियों की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित हो सके। ये सड़कें राज्य के आर्थिक विकास में धमनियों की तरह कार्य करती हैं। इनका निर्माण और रखरखाव पूरी तरह से राज्य सरकार के सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीन होता है। यह ग्रामीण सड़कों और राष्ट्रीय राजमार्गों के बीच एक मजबूत सेतु का कार्य करती हैं।

99. (3) सेल ब्रॉडकास्ट सिस्टम (CBS)
आपदा प्रबंधन के दौरान आपातकालीन अलर्ट भेजने के लिए राजस्थान में सेल ब्रॉडकास्ट सिस्टम का उपयोग किया जाता है। यह तकनीक मोबाइल नेटवर्क ऑपरेटरों को एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के सभी मोबाइल उपकरणों पर एक साथ संदेश भेजने की अनुमति देती है, चाहे वे डिवाइस व्यस्त हों या नहीं। यह साधारण संदेश सेवा की तुलना में अधिक प्रभावी है क्योंकि इसे नेटवर्क की भीड़भाड़ प्रभावित नहीं करती है। इस प्रणाली के माध्यम से बाढ़, भूकंप या अन्य आपदाओं की स्थिति में नागरिकों को तत्काल चेतावनी देकर जान-माल की हानि को न्यूनतम किया जा सकता है।

100. (1) III, II, I, IV
प्रधानमंत्री गति शक्ति के तहत किसी भी परिवहन हब के नियोजन का सही क्रम सबसे पहले आर्थिक केंद्रों तक संयोजकता में मौजूद कमियों की पहचान करना है। इसके बाद, बिसाग-एन पोर्टल का उपयोग करके मौजूदा बुनियादी ढांचे और उपयोगिताओं का डिजिटल मानचित्रण किया जाता है। तीसरे चरण में, विभिन्न संबंधित विभागों के बीच परियोजना के कार्यान्वयन की समयसीमा का तालमेल बिठाया जाता है ताकि कार्य में दोहराव न हो। अंत में, एकीकृत योजना के लिए औपचारिक मंजूरी और आवश्यक बजट का आवंटन किया जाता है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण परियोजना की सफलता को सुनिश्चित करता है।

NODIA

87. (3) 60:40
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत ग्रामीण सड़कों के निर्माण और उन्नयन के लिए वित्तीय संसाधनों का साझाकरण केंद्र और राज्यों के बीच एक निर्धारित अनुपात में होता है। राजस्थान जैसे सामान्य श्रेणी के राज्यों के लिए यह अनुपात 60:40 है, जहाँ 60 प्रतिशत राशि केंद्र सरकार द्वारा और 40 प्रतिशत राशि राज्य सरकार द्वारा प्रदान की जाती है। यह साझा वित्तपोषण मॉडल सुनिश्चित करता है कि राज्य भी बुनियादी ढांचे के विकास में सक्रिय भागीदारी निभाएं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में बारहमासी सड़कों के निर्माण में तेजी आई है और संसाधनों का उचित आवंटन हुआ है।

88. (1) क्रमशः राज्य में वाहन पंजीकरण और ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने का प्रबंधन करना
'वाहन' और 'सारथी' राष्ट्रीय स्तर के डिजिटल प्लेटफॉर्म हैं जिनका उपयोग राजस्थान का परिवहन विभाग सेवाओं के केंद्रीकरण के लिए करता है। 'वाहन' पोर्टल का उपयोग वाहनों के पंजीकरण, फिटनेस प्रमाण पत्र और कर भुगतान से संबंधित सभी कार्यों के प्रबंधन के लिए किया जाता है। वहीं 'सारथी' पोर्टल ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने, नवीनीकरण और शिक्षार्थी लाइसेंस की प्रक्रियाओं को ऑनलाइन संचालित करता है। इन प्लेटफॉर्म्स ने आरटीओ कार्यालयों में मानवीय हस्तक्षेप को कम किया है और पारदर्शिता के साथ-साथ नागरिक सुविधाओं में व्यापक और प्रभावी सुधार किया है।

89. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
फास्टैग ने राजस्थान के राष्ट्रीय राजमार्गों पर यात्रा को सुगम और तेज बना दिया है क्योंकि यह आरएफआईडी तकनीक के माध्यम से चलते हुए वाहनों से स्वचालित टोल कटौती सक्षम करता है। इससे टोल प्लाजा पर वाहनों की लंबी कतारें कम हो गई हैं, जिससे ईंधन की बचत और यात्रा के समय में कमी आती है। यह डिजिटल भुगतान प्रणाली न केवल दक्षता बढ़ाती है बल्कि टोल संग्रह में पारदर्शिता भी सुनिश्चित करती है। अतः कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण स्पष्ट रूप से बताता है कि तकनीक कैसे परिवहन दक्षता और यात्री सुविधा में व्यापक सुधार करती है।

90. (1) I, III और IV
राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम की स्थापना 1964 में सड़क परिवहन अधिनियम के तहत की गई थी। निगम की बसें न केवल राजस्थान में बल्कि पड़ोसी राज्यों के लिए भी अंतर-राज्यीय सेवाएं प्रदान करती हैं। जयपुर शहर के भीतर बस सेवाओं का प्रबंधन जयपुर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड द्वारा किया जाता है। निगम छात्रों, वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगजनों को यात्रा में महत्वपूर्ण रियायतें प्रदान करता है ताकि सार्वजनिक परिवहन अधिक समावेशी बन सके। यह कहना कि निगम केवल राजस्थान की सीमाओं के भीतर सीमित है, तथ्यात्मक रूप से पूर्णतः गलत है।

91. (4) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान और मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व वन्यजीव गलियारा
दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के निर्माण में पर्यावरण और वन्यजीव संरक्षण का विशेष ध्यान रखा गया है। राजस्थान में यह एक्सप्रेसवे रणथंभौर और मुकुंदरा हिल्स के बीच के महत्वपूर्ण वन्यजीव गलियारों से गुजरता है। वन्यजीवों की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए यहाँ एशिया के पहले पशु ओवरपास और अंडरपास निर्मित किए गए हैं। यह रणनीतिक उपाय सड़क दुर्घटनाओं में वन्यजीवों की मृत्यु को रोकने और उनके प्राकृतिक आवास को विभाजित होने से बचाने के लिए किया गया है। यह आधुनिक बुनियादी ढांचे और प्रकृति के बीच संतुलन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

92. (1) टर्मिनल 1
जयपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर बढ़ते यात्री यातायात के दबाव को कम करने के लिए टर्मिनल 1 को आधुनिक सुविधाओं के साथ पुनर्गठित और नवीनीकृत किया गया है। यह टर्मिनल पहले बंद था, लेकिन अब इसे अंतरराष्ट्रीय और कुछ विशिष्ट घरेलू उड़ानों के संचालन के लिए फिर से सक्रिय किया गया है। इससे टर्मिनल 2 पर भीड़ कम हुई है और यात्रियों को अधिक स्थान व बेहतर सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं। विस्तार की इस योजना में चेक-इन काउंटरों की संख्या बढ़ाना और सुरक्षा जांच प्रणालियों को अत्याधुनिक बनाना शामिल है, जिससे यात्री अनुभव सुधरेगा।

93. (3) परकोटा क्षेत्र के नीचे, विशेष रूप से चांदपोल से बड़ी चौपड़ तक
जयपुर मेट्रो चरण 1-बी का निर्माण तकनीकी दृष्टि से चुनौतीपूर्ण था क्योंकि इसमें जयपुर के ऐतिहासिक 'परकोटा' क्षेत्र के नीचे सुरंग बनाना शामिल था। यह सुरंग चांदपोल से बड़ी चौपड़ तक विस्तृत है, जो यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का हिस्सा है। निर्माण के दौरान ऐतिहासिक संरचनाओं और विरासत भवनों की सुरक्षा के लिए अत्याधुनिक 'टनल बोरिंग मशीनों' का उपयोग किया गया और निरंतर निगरानी रखी गई। यह परियोजना आधुनिक शहरी परिवहन को ऐतिहासिक विरासत के साथ सफलतापूर्वक एकीकृत करने का एक अद्वितीय और वैश्विक स्तर का उदाहरण पेश करती है।

94. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का मुख्य लक्ष्य असंबद्ध ग्रामीण बसावटों को बारहमासी सड़कों से जोड़ना है। प्रधानमंत्री गति शक्ति मास्टर प्लान विभिन्न बुनियादी ढांचा मंत्रालयों के बीच एकीकृत नियोजन और समन्वय सुनिश्चित करता है। उड़ान योजना टियर-2 और टियर-3 शहरों में आम नागरिकों के लिए हवाई यात्रा को सुलभ और किफायती बनाती है। भारतनेट परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य सभी ग्राम पंचायतों तक उच्च गति वाली ब्रॉडबैंड संयोजकता पहुँचाना है। ये सभी योजनाएं मिलकर राजस्थान के भौतिक और डिजिटल बुनियादी ढांचे को निरंतर मजबूत करने का कार्य करती हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

परिवहन प्रणालियों के बीच समन्वय स्थापित कर औद्योगिक और सामाजिक विकास को एक नई और प्रभावशाली दिशा प्रदान की जा रही है।

27. (4) सीतापुरा से अंबाबाड़ी
जयपुर मेट्रो के प्रस्तावित द्वितीय चरण के तहत सीतापुरा को अंबाबाड़ी से जोड़ने की विस्तृत योजना है। यह कॉरिडोर शहर के उत्तर-दक्षिण हिस्से को कवर करेगा और टोंक रोड जैसे अत्यंत व्यस्ततम मार्गों से होकर गुजरने वाला है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य शहर में यातायात के बढ़ते दबाव को कम करना और यात्रियों को एक सुरक्षित व तीव्र परिवहन विकल्प प्रदान करना है। चरण 2 के कार्यान्वयन से जयपुर के औद्योगिक क्षेत्रों और प्रमुख आवासीय बस्तियों के बीच कनेक्टिविटी में व्यापक सुधार होने की प्रबल उम्मीद है, जो शहरी विकास हेतु महत्वपूर्ण है।

28. (2) इस गलियारे की कुल लंबाई का लगभग 39 प्रतिशत हिस्सा राजस्थान से होकर गुजरता है।
पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा भारत की एक महत्वपूर्ण रेल अवसंरचना परियोजना है जिसमें राजस्थान का बहुत बड़ा भौगोलिक योगदान है। इस गलियारे की कुल लंबाई का लगभग 39 प्रतिशत हिस्सा राजस्थान राज्य के विभिन्न जिलों से होकर गुजरता है, जो इसे राज्य के आर्थिक विकास का प्रमुख इंजन बनाता है। यह गलियारा पूरी तरह से मालगाड़ियों के संचालन के लिए समर्पित है और इसका वित्तपोषण मुख्य रूप से जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी द्वारा किया जा रहा है। यह परियोजना राज्य के औद्योगिक और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाली है।

29. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान में क्षेत्रीय हवाई संपर्क को बढ़ाने के लिए उड़ान योजना के तहत राज्य की मौजूदा हवाई पट्टियों का आधुनिकीकरण किया गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि नए ग्रीनफील्ड हवाई अड्डों के निर्माण में अत्यधिक पूंजी निवेश और बड़े पैमाने पर भूमि अधिग्रहण जैसी जटिलताएं शामिल होती हैं। मौजूदा बुनियादी ढांचे का उन्नयन करना अधिक किफायती और समय की बचत करने वाला विकल्प है। अतः कारण, कथन की सटीक व्याख्या करता है क्योंकि वित्तीय और प्रशासनिक सीमाएं राज्य को मौजूदा संसाधनों के अधिकतम उपयोग के लिए सदैव प्रेरित करती हैं।

30. (1) I और III
राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम कुछ विशेष त्योहारों पर महिलाओं को निःशुल्क यात्रा की सुविधा प्रदान करता है, लेकिन यह सभी सामान्य दिनों में वातानुकूलित लक्जरी बसों के लिए लागू नहीं होता है। निगम द्वारा संचालित 'ब्लू लाइन' बसें मध्यम दूरी की सेवाओं के लिए हैं और इन्हें प्रीमियम विद्युत बेड़े के रूप में नहीं पहचाना जाता है। निगम पड़ोसी राज्यों को नियमित सेवाएं देता है और वरिष्ठ नागरिकों को रियायती दर पर यात्रा की सुविधा प्रदान करता है। अतः कथन प्रथम और तृतीय तथ्यात्मक रूप से गलत होने के कारण इस प्रश्न का उत्तर हैं।

31. (1) कोटा जंक्शन
राजस्थान के प्रमुख रेलवे स्टेशनों में कोटा जंक्शन अपनी क्षेत्रीय संबद्धता के कारण अन्य से भिन्न है। जयपुर, जोधपुर और बीकानेर जंक्शन उत्तर पश्चिम रेलवे मंडल के अंतर्गत आते हैं जिसका मुख्यालय जयपुर में स्थित है। इसके विपरीत, कोटा जंक्शन पश्चिम मध्य रेलवे मंडल का हिस्सा है जिसका मुख्यालय मध्य प्रदेश के जबलपुर में है। यह वर्गीकरण भारतीय रेलवे के प्रशासनिक और क्षेत्रीय विभाजन पर आधारित है। कोटा एक अत्यंत महत्वपूर्ण जंक्शन है जो दिल्ली-मुंबई मुख्य रेल मार्ग पर स्थित है, लेकिन इसका प्रशासनिक नियंत्रण अलग मंडल के अधीन है।

32. (2) अन्य जिला सड़कें (ODR) और ग्राम सड़कें जो विभिन्न बसावटों तक बुनियादी पहुंच प्रदान करती हैं
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के दिशा-निर्देशों के अनुसार ग्रामीण सड़कों में मुख्य रूप से 'अन्य जिला सड़कें' और 'ग्राम सड़कें' सम्मिलित होती हैं। इनका प्राथमिक कार्य असंबद्ध ग्रामीण बस्तियों को बारहमासी सड़क नेटवर्क के माध्यम से नजदीकी बाजार केंद्रों और मुख्य जिला सड़कों से जोड़ना है। यह श्रेणी राष्ट्रीय या राज्य राजमार्गों से भिन्न है क्योंकि इसका मुख्य ध्यान अंतिम छोर तक की कनेक्टिविटी प्रदान करना है। ग्रामीण विकास मंत्रालय इस योजना के माध्यम से गांवों के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण और बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच को सुनिश्चित करता है।

NODIA

33. (2) एनएच 48
राष्ट्रीय राजमार्ग 48 भारत के प्रसिद्ध 'स्वर्णिम चतुर्भुज' परियोजना का एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है जो दिल्ली और मुंबई जैसे बड़े महानगरों को जोड़ता है। राजस्थान में यह राजमार्ग अलवर, जयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और उदयपुर जैसे प्रमुख शहरों से होकर गुजरता है। यह राज्य की आर्थिक जीवन रेखा के रूप में कार्य करता है और भारी औद्योगिक व यात्री यातायात का प्रबंधन करता है। इस राजमार्ग का पुराना नंबर एनएच 8 था जिसे बाद में संशोधित कर 48 कर दिया गया। यह मार्ग राज्य के व्यापारिक गलियारे को राष्ट्रीय स्तर पर जोड़ता है।

34. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-iv
राजस्थान की प्रमुख डिजिटल पहलों में ई-मित्र एकल खिड़की के माध्यम से विभिन्न नागरिक सेवाएं प्रदान करता है। राज ई-वॉल्ट नागरिकों को डिजिटल रूप से अपने महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों को संग्रहीत और सत्यापित करने की सुविधा देता है। राज ई-साइन एक सुरक्षित प्लेटफॉर्म है जो इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षरों के एकीकरण को सक्षम बनाता है। राजनेट एक व्यापक मल्टी-मोड नेटवर्क है जो ग्राम पंचायत स्तर तक ग्रामीण संयोजकता को सुदृढ़ बनाता है। ये परियोजनाएं सामूहिक रूप से राज्य में ई-गवर्नेंस के ढांचे को मजबूत करती हैं और सरकारी सेवाओं को आम जनता के लिए सुलभ बनाती हैं।

35. (1) I, II और IV
राजस्थान में ग्रामीण सड़कों का भौगोलिक विस्तार राज्य राजमार्गों की तुलना में काफी अधिक है, जो ग्रामीण संयोजकता पर सरकार के विशेष ध्यान को दर्शाता है। प्रधानमंत्री ग्राम

अध्याय 17
ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज

1. राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था अपनी आजीविका और आय सृजन के लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस संयोजन पर अत्यधिक निर्भर है?
(1) बड़े पैमाने पर विनिर्माण और वाणिज्यिक सेवाएं
(2) कृषि और पशुपालन
(3) खनन और संगठित खुदरा व्यापार
(4) हथकरघा बुनाई और मत्स्य पालन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. राजस्थान में मनरेगा के कार्यान्वयन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह योजना विशेष रूप से निजी ठेकेदारों के माध्यम से कार्यों के निष्पादन का आदेश देती है।
(2) यह एक वित्तीय वर्ष में ग्रामीण परिवार को 100 दिनों के मजदूरी रोजगार की गारंटी देती है।
(3) मजदूरी का भुगतान कड़ाई से कार्य के माप पर आधारित 'कार्य के आधार पर दर' के आधार पर किया जाता है।
(4) यह जल संरक्षण संरचनाओं जैसी टिकाऊ ग्रामीण संपत्तियों के निर्माण पर जोर देती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. राजस्थान में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत, प्रति इकाई सहायता की लागत केंद्र और राज्य सरकारों के बीच निम्नलिखित में से किस अनुपात में साझा की जाती है?
(1) 50:50
(2) 60:40
(3) 75:25
(4) 90:10
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के कार्यान्वयन से ग्रामीण राजस्थान में कई सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं। निम्नलिखित में से किसे इस योजना का प्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव माना जाता है?
(1) सभी असंबद्ध बसावटों में ग्रामीण गरीबी का पूर्ण उन्मूलन
(2) सभी सीमांत किसानों को नकद सहायता का सीधा हस्तांतरण
(3) सभी ग्रामीण परिवारों को निःशुल्क कृषि उपकरण प्रदान करना
(4) बाजार तक बेहतर पहुंच और परिवहन लागत में कमी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. ग्रामीण राजस्थान में जल जीवन मिशन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका लक्ष्य प्रत्येक ग्रामीण परिवार को कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन प्रदान करना है।
II. यह पूरी तरह से एक केंद्रीकृत योजना के रूप में कार्य करती है जिसमें ग्राम पंचायत या स्थानीय समुदाय की कोई भूमिका नहीं है।
III. जल गुणवत्ता की निगरानी और सर्वेक्षण इस मिशन के अभिन्न अंग हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के तहत राजस्थान को खुले में शौच मुक्त घोषित किया गया था। वर्तमान में राज्य में कार्यान्वित किए जा रहे 'ओडीएफ प्लस' चरण का मुख्य फोकस क्या है?
(1) प्रत्येक ग्रामीण परिवार में दूसरे शौचालय का निर्माण करना
(2) गांवों में ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन
(3) ग्रामीण परिवारों को निःशुल्क बिजली प्रदान करना
(4) ग्रामीण स्वच्छता सुविधाओं को शहरी केंद्रों में स्थानांतरित करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

7. ग्रामीण विद्युतीकरण और ऊर्जा पहुंच की पहल ने राजस्थान के गांवों को बदल दिया है। निम्नलिखित में से कौन सा ग्रामीण ऊर्जा पहुंच के विस्तार का एक मान्यता प्राप्त उद्देश्य नहीं है?
(1) ग्रामीण कारीगरों और व्यावसायिक गतिविधियों के लिए कार्य के घंटों का विस्तार करना
(2) प्रकाश और खाना पकाने के लिए पारंपरिक जैव-भार पर निर्भरता कम करना
(3) दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य और शैक्षिक परिणामों में सुधार करना
(4) सिंचाई के लिए कृषि पंप सेटों के उपयोग में कमी लाना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. राजस्थान में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन और स्वयं सहायता समूह के गठन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह ग्रामीण गरीब महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक एकत्रीकरण को बढ़ावा देता है।
II. यह कार्यक्रम ऋण उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए

Click Here to Buy book on Amazon

विकल्पों की कमी के कारण मजबूरन पलायन।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. सूची I में मुख्य अवधारणाओं को सूची II में उनके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
A. लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण
B. ई-ग्राम
C. ओडीएफ प्लस
D. सामाजिक अंकेक्षण
सूची II:
i. स्वच्छता बनाए रखना
ii. सत्ता का हस्तांतरण
iii. समुदाय के नेतृत्व में सत्यापन
iv. डिजिटल सशक्तिकरण
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. राजस्थान की कृषि अर्थव्यवस्था में कृषि और पशुपालन के एकीकरण के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(1) सभी शुष्क क्षेत्रों में कृषि को पशुपालन से पूरी तरह स्वतंत्र माना जाता है।
(2) राज्य की कुल कृषि सकल घरेलू उत्पाद में पशुधन का योगदान 5% से काफी कम है।
(3) मिश्रित खेती जलवायु अनिश्चितताओं के विरुद्ध जोखिम कम करने की रणनीति प्रदान करती है।
(4) राज्य सरकार किसानों को फसल उगाने पर पशु रखने से कड़ाई से प्रतिबंधित करती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. मनरेगा योजना और निष्पादन की निम्नलिखित प्रक्रियाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
A. श्रम बजट का अनुमोदन
B. जॉब कार्ड जारी करना
C. कार्य की मांग
D. कार्यों का निष्पादन
E. सामाजिक अंकेक्षण
(1) B, C, A, D, E
(2) B, A, C, D, E
(3) A, B, C, D, E
(4) C, B, A, D, E
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. राजस्थान में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत शौचालयों के निर्माण के लिए भी वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस सहायता को निम्नलिखित में से किस योजना के साथ अभिसरण किया गया है?
(1) राष्ट्रीय स्वजल धारा कार्यक्रम
(2) मनरेगा ग्रामीण रोजगार योजना
(3) राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन
(4) स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: यह योजना ग्रामीण सड़क निर्माण में हरित प्रौद्योगिकियों और स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों के उपयोग को अनिवार्य बनाती है।
कथन II: इस योजना के तहत सड़कों का निर्माण मुख्य रूप से राज्य की राजधानियों को प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्गों से जोड़ने के लिए किया जाता है।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है और कथन I गलत है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. जल जीवन मिशन के कार्यान्वयन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें ग्राम जल और स्वच्छता समितियों का गठन शामिल है।
II. एक प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में जलजनित रोगों में कमी लाना है।
III. मिशन का पूरा वित्तीय बोझ ग्राम पंचायत द्वारा वहन किया जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. राजस्थान में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) व्यवहार परिवर्तन संचार मिशन के एक मूलभूत स्तंभ के रूप में है।
(2) ग्रामीण क्षेत्रों में जैव-अपघटनीय और अजैव-अपघटनीय कचरे का सुरक्षित प्रबंधन करना।
(3) शौचालय निर्माण के लिए पात्र परिवारों को वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है।
(4) ग्रामीण शौचालय बनाने के लिए शहरी ठेकेदारों पर पूर्ण निर्भरता।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. राजस्थान में ग्रामीण ऊर्जा पहुंच कार्यक्रम अक्षय ऊर्जा के एकीकरण की पुरजोर वकालत करते हैं। राज्य में विकेंद्रीकृत ग्रामीण ऊर्जा परियोजनाओं के लिए कौन सा अक्षय स्रोत सबसे प्रचुर मात्रा में उपयोग किया जाता है?

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. पंचायतों को शक्तियों का हस्तांतरण '3Fs' से जुड़ा है। निम्नलिखित में से कौन इन '3Fs' की सही पहचान करता है?
(1) वित्त, कृषि और वानिकी
(2) कोष, कार्य और कार्मिक
(3) स्वतंत्रता, बंधुत्व और कोष
(4) कार्य, सुविधाएं और मताधिकार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. भारतीय संविधान का कौन सा अनुच्छेद पंचायतों और नगर पालिकाओं द्वारा तैयार की गई योजनाओं को समेकित करने के लिए जिला योजना समिति के गठन का आदेश देता है?
(1) अनुच्छेद 243G
(2) अनुच्छेद 243I
(3) अनुच्छेद 243ZD
(4) अनुच्छेद 243ZE
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि विकास में क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिए तैयार की गई थी। राजस्थान में, इस निधि के उपयोग का प्राथमिक तंत्र क्या था?
(1) स्थानीय निकायों द्वारा विकेंद्रीकृत योजना के माध्यम से पहचाने गए महत्वपूर्ण विकासात्मक अंतराल को भरना।
(2) किसी भी महत्वपूर्ण स्थानीय हितधारक के सुझाव के बिना विशेष रूप से राज्य सरकार द्वारा प्रबंधन।
(3) केवल ग्रामीण स्वास्थ्य विभाग के कर्मियों के वेतन और प्रशासनिक लागतों के लिए आवंटन।
(4) विशेष रूप से भूमिहीन कृषि मजदूरों के लिए प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण योजना के रूप में कार्य करना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. राजस्थान में ग्रामीण-शहरी प्रवास पर्यावरणीय और आर्थिक कारकों से काफी प्रभावित है। निम्नलिखित में से किसे मुख्य रूप से ऐसे प्रवास के लिए 'प्रतिकर्ष कारक' माना जाता है?
(1) प्रमुख शहरी क्षेत्रों में स्थित शैक्षणिक संस्थानों की उच्च गुणवत्ता।
(2) बड़े महानगरों में उन्नत विशिष्ट स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता।
(3) बार-बार पड़ने वाला सूखा और घटती कृषि उत्पादकता।
(4) विभिन्न शहरी विनिर्माण और औद्योगिक इकाइयों में रोजगार के बढ़ते अवसर।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. सूची I में ग्रामीण चुनौतियों को सूची II में संबंधित हस्तक्षेपों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
A. जल की कमी
B. ग्रामीण बेरोजगारी
C. खराब सड़क संपर्क
D. अपर्याप्त आवास
सूची II:
i. मनरेगा
ii. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना
iii. जल जीवन मिशन
iv. प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. निम्नलिखित में से कौन सा संबद्ध कृषि क्षेत्र गंभीर सूखे के समय राजस्थान के ग्रामीण परिवारों को उच्चतम लचीलापन प्रदान करता है?
(1) बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक अंतर्देशीय मत्स्य पालन
(2) शहरी निर्यात बाजारों के लिए गहन पुष्प कृषि
(3) पशुपालन और पशुधन पालन
(4) रेशम उत्पादन के लिए संगठित रेशम कीट पालन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में त्रि-स्तरीय पंचायती राज संस्थाओं के सही पदानुक्रमित क्रम (उच्चतम स्तर से निम्नतम स्तर तक) को दर्शाता है?
(1) जिला परिषद, ग्राम पंचायत, पंचायत समिति
(2) जिला परिषद, पंचायत समिति, ग्राम पंचायत
(3) पंचायत समिति, जिला परिषद, ग्राम पंचायत
(4) ग्राम पंचायत, पंचायत समिति, जिला परिषद
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

23. प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: लाभार्थियों का चयन पूरी तरह से 2002 की बीपीएल सूची पर आधारित है।
कथन II: लाभार्थियों के चयन में एसईसीसी 2011 से प्राप्त आवास अभाव मापदंडों को शामिल किया गया है।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है और कथन I गलत है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के मुख्य उद्देश्यों के तहत सड़क संपर्क के लिए पात्र होने हेतु मैदानी ग्रामीण क्षेत्रों में बसावटों के लिए न्यूनतम जनसंख्या सीमा क्या है?
(1) 100 व्यक्ति
(2) 250 व्यक्ति
(3) 500 व्यक्ति

(4) 1000 व्यक्ति
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. स्वजल धारा योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह ग्रामीण जलापूर्ति परियोजनाओं में सामुदायिक भागीदारी पर जोर देती है।
II. समुदाय को पूंजीगत लागत का एक निश्चित प्रतिशत योगदान करना आवश्यक है।
III. संचालन और रखरखाव की जिम्मेदारियां विशेष रूप से राज्य सरकार के पास रहती हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. ग्राम स्तर पर निम्नलिखित में से कौन सी समिति मुख्य रूप से व्यवहार परिवर्तन सुनिश्चित करने और ओडीएफ स्थिति की निरंतरता की निगरानी के लिए जिम्मेदार है?
(1) ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण समिति
(2) क्षेत्रीय बुनियादी ढांचा विकास के लिए जिला योजना समिति
(3) जैव विविधता संरक्षण के लिए संयुक्त वन प्रबंधन समिति
(4) प्राथमिक विद्यालय की निगरानी के लिए ग्राम पंचायत शिक्षा समिति
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. राजस्थान में लागू ग्रामीण विद्युतीकरण पहलों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) इसका विस्तार कृषि पंप सेटों को ऊर्जावान बनाने तक है।
(2) ऑफ-ग्रिड दूरदराज के गांवों के लिए विकेंद्रीकृत वितरित उत्पादन का उपयोग किया जाता है।
(3) इसका लक्ष्य सभी गैर-विद्युतीकृत घरों को अंतिम छोर तक बिजली कनेक्शन प्रदान करना है।
(4) विद्युतीकरण ने तापीय विद्युत संयंत्रों पर राज्य की निर्भरता को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह आवंटन-आधारित रणनीति से मांग-आधारित रणनीति में परिवर्तित हो गया है।
II. यह आजीविका प्रशिक्षण के लिए विशेष रूप से ग्रामीण गरीब परिवारों के पुरुष सदस्यों को लक्षित करता है।
III. राज्य स्तर पर कार्यान्वयन का प्रबंधन राज्य ग्रामीण आजीविका मिशनों द्वारा किया जाता है।
IV. यह स्वयं सहायता समूहों को ग्राम संगठनों और संकुल स्तर के संघों में संगठित करने को बढ़ावा देता है।
V. यह वित्तीय समावेशन को एक मुख्य घटक के रूप में शामिल करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. राजस्थान में स्वयं सहायता समूह आंदोलन के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा स्वयं सहायता समूह के मानक सिद्धांतों के अनुरुप नहीं है?
(1) पारस्परिक सामाजिक और आर्थिक लाभ के लिए व्यक्तियों का स्वैच्छिक संघ।
(2) एक साझा कोष बनाने के लिए सभी सदस्यों से बचत का नियमित संग्रह।
(3) संपार्श्विक और भारी संपत्ति के आधार पर ऋण देना।
(4) लोकतांत्रिक आंतरिक कार्यप्रणाली और समय पर ऋण वसूली के लिए समूह के दबाव का उपयोग।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. सूची I में पंचायती राज निकायों को सूची II में उनके प्रमुखों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
A. ग्राम पंचायत
B. पंचायत समिति
C. जिला परिषद
D. ग्राम सभा
सूची II:
i. प्रधान
ii. सरपंच
iii. प्रमुख
iv. सरपंच द्वारा अध्यक्षता
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. राजस्थान में त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान करें।
(1) पंचायत समिति - खंड स्तर
(2) जिला परिषद - ग्राम स्तर
(3) ग्राम पंचायत - जिला स्तर
(4) ग्राम सभा - राज्य स्तर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

32. कथन (A): राजस्थान में ग्राम सभाओं के पास सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए योजनाओं, कार्यक्रमों और परियोजनाओं को मंजूरी देने की शक्ति है।
कारण (R): 73वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम ने राज्य विधायिकाओं को ग्राम सभाओं को ग्राम स्तर पर स्वशासन की संस्थाओं के रूप में कार्य करने के लिए आवश्यक शक्तियां प्रदान करने का अधिकार दिया है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. राजस्थान पंचायती राज अधिनियम के तहत, प्रत्येक पंचायत का कार्यकाल, यदि पहले भंग न किया गया हो, कितने वर्षों के लिए निर्धारित है?
(1) 3 वर्ष
(2) 4 वर्ष
(3) 5 वर्ष
(4) 6 वर्ष
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. राजस्थान में मनरेगा कार्यों के सामाजिक अंकेक्षण के मुख्य उद्देश्य का वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सबसे अच्छी तरह करता है?
(1) सार्वजनिक कार्यों की अभियांत्रिकी गुणवत्ता और वित्तीय पारदर्शिता का सामुदायिक मूल्यांकन।
(2) आगामी वित्तीय वर्ष के लिए कुल राज्य बजट आवंटन का निर्धारण करना।
(3) अप्रयुक्त या अधिशेष निधि को सीधे केंद्र सरकार के खजाने में वापस स्थानांतरित करना।
(4) सरपंच के व्यक्तिगत बैंक खातों और निजी वित्तीय रिकॉर्ड का अंकेक्षण करना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. राजस्थान में 1959 के नागौर प्रयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने स्वतंत्र भारत में पंचायती राज व्यवस्था की औपचारिक शुरुआत की।
II. यह अशोक मेहता समिति की सिफारिशों पर आधारित था।
III. इसने स्थानीय स्वशासन की त्रि-स्तरीय प्रणाली को लागू किया।
IV. इस पहल का उद्देश्य लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण सुनिश्चित करना था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. राजस्थान में पंचायतों को कोष, कार्य और कार्मिकों के हस्तांतरण के संबंध में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) संविधान की 11वीं अनुसूची में पंचायतों को सौंपने के लिए 29 विषयों की सूची है।
(2) राज्य वित्त आयोग स्थानीय निकायों को कर राजस्व के वितरण की सिफारिश करते हैं।
(3) क्षेत्रीय विभाग अक्सर कार्मिकों पर नियंत्रण बनाए रखते हैं, जिससे हस्तांतरण में चुनौतियां पैदा होती हैं।
(4) यह एक स्थिर प्रक्रिया है जो बिना किसी बदलाव के सभी भारतीय राज्यों में एक समान है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. जिला योजना समिति संरचनात्मक रूप से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की योजनाओं को एकीकृत करने का कार्य करती है। जिला योजना समिति सदस्यों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा किसके बीच से चुना जाता है?
(1) राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाले संसद सदस्य और विधानसभा सदस्य।
(2) राज्य सचिवालय के प्रशासनिक विंग में कार्यरत नामित वरिष्ठ नौकरशाह।
(3) जिले में जिला परिषद और नगर पालिकाओं के निर्वाचित सदस्य।
(4) विभिन्न अंतरराष्ट्रीय वित्त पोषण एजेंसियों और वैश्विक विकासात्मक गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान के विशिष्ट जिलों में पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि लागू करने के पीछे के तर्क की सही रूपरेखा प्रस्तुत करता है?
(1) लगातार लक्ष्य से अधिक उपज प्राप्त करने वाले कृषि रूप से समृद्ध जिलों के लिए पुरस्कार।
(2) ऐतिहासिक अभाव वाले जिलों के लिए बुनियादी ढांचे के अंतराल को पाटने हेतु वित्तीय संसाधन।
(3) विशेष रूप से विदेशी निवेश के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्र स्थापित करने हेतु वित्त पोषण।
(4) जिला परिषदों से राज्य की राजधानी के कार्यालयों को प्रशासनिक शक्तियों का सीधा हस्तांतरण।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. राजस्थान में ग्रामीण-शहरी प्रवास के संदर्भ में, "संकटपूर्ण प्रवास" शब्द मुख्य रूप से किसे संदर्भित करता है?
(1) उच्च शिक्षा की डिग्री हासिल करने वाले ग्रामीण युवाओं द्वारा स्वेच्छा से किया गया प्रवास।
(2) ग्रामीण कारीगरों का विशेष रूप से अपने हस्तशिल्प निर्यात करने के लिए शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरण।
(3) पशुपालकों का मौसमी आवागमन जो केवल ग्रामीण क्षेत्रीय सीमाओं के भीतर होता है।
(4) कठोर पर्यावरणीय परिस्थितियों, फसल खराब होने और

NODIA

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. राजस्थान में जिला परिषद की संरचना के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) जिले के परिभाषित क्षेत्रीय निर्वाचन क्षेत्रों से सीधे निर्वाचित सदस्य।
(2) जिले के क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले विधानसभा सदस्य पदेन सदस्य के रूप में।
(3) जिले के भीतर सभी पंचायत समितियों के प्रधान जो सदस्य के रूप में कार्य करते हैं।
(4) जिला परिषद के अध्यक्ष का चुनाव सीधे वयस्क मतदाताओं द्वारा किया जाता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. कथन (A): राजस्थान में ग्राम सभा जमीनी स्तर पर विधायी निकाय के रूप में कार्य करती है।
कारण (R): यह ग्राम पंचायत के खातों के वार्षिक विवरण और अंकेक्षण रिपोर्टों की समीक्षा करके उसे जवाबदेह बनाती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. राजस्थान पंचायती राज अधिनियम के अनुसार, यदि किसी व्यक्ति के दो से अधिक बच्चे हैं तो वह पंचायत चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य है। इस नियम के तहत तीसरे बच्चे के जन्म के लिए कट-ऑफ तिथि क्या है?
(1) 27 नवंबर, 1995
(2) 2 अक्टूबर, 1994
(3) 1 जनवरी, 2000
(4) 15 अगस्त, 1993
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. राजस्थान में ग्राम स्तर पर प्रशिक्षित संसाधन व्यक्तियों की तैनाती करके सामाजिक अंकेक्षण प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए कौन सी प्रशासनिक इकाई उत्तरदायी है?
(1) सामाजिक अंकेक्षण निदेशालय
(2) राज्य लोक सेवा आयोग
(3) भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक का कार्यालय
(4) केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. 1959 में पंचायती राज की शुरुआत के लिए नागौर के चयन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह भौगोलिक रूप से राजस्थान के केंद्र में था।
II. उस समय इसका औद्योगिक आधार अत्यधिक विकसित था।
III. यह जमीनी स्तर के लोकतंत्र के परीक्षण के लिए उपयुक्त एक विशिष्ट ग्रामीण कृषि परिवेश का प्रतिनिधित्व करता था।
IV. नेतृत्व का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में लोकतांत्रिक मूल्यों के गहरे एकीकरण को दर्शाना था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. राजस्थान में पंचायती राज संस्थाओं को कार्मिकों के हस्तांतरण में जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं को पंचायतों के अनुशासनात्मक नियंत्रण में रखना शामिल है। राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन सा कार्मिक आमतौर पर ग्राम पंचायत के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है?
(1) जिला पुलिस अधीक्षक
(2) ग्राम विकास अधिकारी
(3) मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी
(4) उप-खंड अधिकारी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. जिला योजना समिति के कार्यों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा 'विषम' है?
(1) पंचायतों और नगर पालिकाओं के बीच साझा हित के मामले
(2) स्थानिक योजना और जल संसाधनों का साझाकरण
(3) राष्ट्रीय आयकर का प्रत्यक्ष मूल्यांकन और संग्रह
(4) स्थानीय निकायों द्वारा तैयार की गई योजनाओं को समेकित करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. राजस्थान में स्थानीय शासन संरचनाओं पर पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि का प्राथमिक प्रभाव क्या था?
(1) स्थानीय योजना प्रक्रिया में ग्राम सभा की मूलभूत भूमिका को कम कर दिया।
(2) वित्तीय नियंत्रण को निर्वाचित प्रतिनिधियों से केवल स्थानीय नौकरशाहों को स्थानांतरित कर दिया।
(3) ऐतिहासिक रूप से पिछड़े जिलों में जिला परिषदों के पूर्ण विघटन का कारण बना।
(4) सहभागी, विकेंद्रीकृत विकास योजनाएं बनाने के लिए स्थानीय निकायों को प्रोत्साहित किया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. राजस्थान में ग्रामीण-शहरी प्रवास के कारण होने वाला जनसांख्यिकीय बदलाव ग्रामीण क्षेत्रों को कैसे प्रभावित करता है?

Click Here to Buy book on Amazon

(1) सौर ऊर्जा
(2) पवन ऊर्जा
(3) भूतापीय ऊर्जा
(4) ज्वारीय ऊर्जा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. राजस्थान में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ढांचे से संबंधित निम्नलिखित घटकों पर विचार कीजिए:
I. सार्वभौमिक सामाजिक लामबंदी
II. सूक्ष्म उद्यमों को बढ़ावा देना
III. सामुदायिक निवेश सहायता कोष का प्रावधान
IV. विशेष रूप से पूंजी-प्रधान भारी उद्योगों को बढ़ावा देना
V. निरंतर क्षमता निर्माण
उपरोक्त में से कौन से राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के सही घटक हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) I, II, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. स्वयं सहायता समूह आंदोलन के संदर्भ में, 'बैंक मित्र' या 'बैंक सखी' का प्राथमिक कार्य क्या है?
(1) निजी संस्थानों से बड़े कॉर्पोरेट ऋणों के लिए प्राथमिक गारंटर के रूप में कार्य करना।
(2) बैंक शाखा और ग्रामीण स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के बीच लेनदेन की सुविधा प्रदान करना।
(3) जिला परिषद के आंतरिक वित्तीय खातों और अभिलेखों का प्रबंधन करना।
(4) ग्रामीण विकास पर राज्य सरकार के समग्र वित्तीय व्यय का अंकेक्षण करना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. सूची I में पंचायती राज समितियों को सूची II में उनकी प्रासंगिकता के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
A. बलवंत राय मेहता
B. अशोक मेहता
C. 73वां संशोधन
D. पेसा अधिनियम 1996
सूची II:
i. संवैधानिक दर्जा
ii. अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार
iii. द्वि-स्तरीय
iv. त्रि-स्तरीय
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. राजस्थान में ग्रामीण स्थानीय सरकार की संस्थागत संरचना के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा 'विषम' है?
(1) ग्राम पंचायत
(2) पंचायत समिति
(3) नगर निगम
(4) जिला परिषद
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. कथन (A): राजस्थान में राज्य निर्वाचन आयोग पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव कराता है।
कारण (R): भारत का संविधान स्वतंत्र और निष्पक्ष स्थानीय निकाय चुनाव सुनिश्चित करने के लिए एक स्वतंत्र राज्य निर्वाचन आयोग के गठन का आदेश देता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

53. राजस्थान पंचायती राज अधिनियम के अनुसार, पंचायत समिति की अधिशासी शक्ति निम्नलिखित में से किस प्रशासनिक अधिकारी में निहित है?
(1) मुख्य कार्यकारी अधिकारी
(2) उप-खंड मजिस्ट्रेट
(3) खंड विकास अधिकारी
(4) ग्राम विकास अधिकारी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. राजस्थान में मनरेगा के सामाजिक अंकेक्षण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह विशेष रूप से स्वतंत्र और प्रमाणित चार्टर्ड अकाउंटेंट फर्मों द्वारा किया जाता है।
(2) सामाजिक अंकेक्षण के निष्कर्षों पर ग्राम सभा में चर्चा की जानी चाहिए।
(3) राज्य मंत्री व्यक्तिगत रूप से हर गांव में सामाजिक अंकेक्षण करते हैं।
(4) यह पूरी तरह से खंड-स्तरीय प्रशासनिक सहायता कर्मचारियों की दैनिक उपस्थिति पर केंद्रित है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. राजस्थान में पंचायती राज के ऐतिहासिक संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का उद्घाटन करने वाला राजस्थान पहला राज्य था।
II. इस प्रणाली की स्थापना राजस्थान पंचायत समिति और जिला परिषद अधिनियम, 1959 के तहत की गई थी।
III. आंध्र प्रदेश ने 1959 में पंचायती राज व्यवस्था शुरू करने में राजस्थान का अनुसरण किया।
IV. इस पहल ने पारंपरिक ग्राम परिषदों को बिना किसी एकीकरण के पूरी तरह से दरकिनार कर दिया।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. राजस्थान में पंचायतों को शक्तियों के हस्तांतरण का मूल्यांकन 'कार्यों' के हस्तांतरण के आधार पर किया जाता है। इस संदर्भ में, 'कार्यों' का विशेष रूप से अर्थ है:
(1) 11वीं अनुसूची में सूचीबद्ध विषय जो स्थानीय सरकारों को सौंपे गए हैं।
(2) कानून प्रवर्तन के लिए राज्य पुलिस कर्मियों की भर्ती और प्रशिक्षण।
(3) राष्ट्रीय स्तर के संसदीय आम चुनावों का संचालन और प्रबंधन।
(4) उच्च शिक्षा और राज्य विश्वविद्यालयों का समग्र प्रशासन और वित्त पोषण।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. पंचायतों और नगर पालिकाओं द्वारा तैयार की गई योजनाओं को जिले के विकास योजना प्रारूप में समेकित करने के लिए कौन सा प्राधिकरण उत्तरदायी है?
(1) राज्य योजना बोर्ड
(2) जिला कलेक्टर कार्यालय
(3) जिला योजना समिति
(4) जिला परिषद सचिवालय
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि का उद्देश्य विकास को गति देना था। राजस्थान में, किसी जिले के लिए इस निधि का उपयोग करने की एक आवश्यक पूर्व शर्त क्या थी?
(1) जिला योजना समिति द्वारा एक विकेंद्रीकृत जिला योजना तैयार करना।
(2) केंद्र सरकार को एक व्यापक निर्यात-प्रोत्साहन रणनीति प्रस्तुत करना।
(3) कम से कम तीन प्रमुख ग्रामीण सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का निजीकरण।
(4) जिले को आधिकारिक रूप से पूरी तरह से सूखा-मुक्त घोषित करना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. ग्रामीण-शहरी प्रवास का परिणाम अक्सर ग्रामीण राजस्थान में 'कृषि का महिलाकरण' होता है। इस अवधारणा का मुख्य अर्थ क्या है?
(1) कानून द्वारा राज्य में केवल महिला सदस्यों को कृषि भूमि रखने की अनुमति है।
(2) कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा प्रत्येक डिग्री में महिला उम्मीदवारों के लिए सभी सीटें आरक्षित करना।
(3) विशेष रूप से वैश्विक सौंदर्य प्रसाधन उद्योग के लिए लक्षित विशिष्ट फसलों की शुरुआत।
(4) पुरुषों के काम के लिए शहरों की ओर पलायन करने पर महिलाओं द्वारा खेती का कार्य संभालना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. सूची I में विकास योजनाओं को सूची II में उनके प्राथमिक फोकस क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
A. मनरेगा
B. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना
C. प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण
D. स्वजल धारा
सूची II:
i. ग्रामीण कनेक्टिविटी
ii. मजदूरी रोजगार
iii. सामुदायिक जल
iv. ग्रामीण आवास
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. राजस्थान की कृषि अर्थव्यवस्था में, कौन सा विशिष्ट क्षेत्र भूमिहीन और सीमांत किसानों को महत्वपूर्ण पूरक आय और पोषण सुरक्षा प्रदान करता है?
(1) बड़े पैमाने पर औद्योगिक खनन
(2) सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं
(3) डेयरी और पशुपालन
(4) भारी धातु विनिर्माण इकाइयाँ
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. पंचायती राज व्यवस्था में शामिल निम्नलिखित कर्मियों को ग्राम स्तर से जिला स्तर तक सही आरोही प्रशासनिक क्रम में व्यवस्थित करें:
A. मुख्य कार्यकारी अधिकारी
B. ग्राम विकास अधिकारी
C. खंड विकास अधिकारी
(1) C, B, A
(2) B, C, A
(3) A, B, C
(4) B, A, C
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के तहत लाभार्थियों के चयन के पात्रता मानदंडों में से 'विषम' विकल्प की पहचान करें।
(1) वे परिवार जिनके सदस्यों की आय उच्चतम कर श्रेणी से ऊपर है।
(2) वे परिवार जो वर्तमान में बिना किसी स्थायी आश्रय के रह रहे हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

(3) वे व्यक्ति जो बेसहारा हैं और मुख्य रूप से भिक्षा पर जीवित हैं।
(4) वे व्यक्ति जिनकी कानूनी रूप से हाथ से मैला ढोने वालों के रूप में पहचान की गई है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. निम्नलिखित में से कौन सा कथन ग्रामीण राजस्थान में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के सामाजिक-आर्थिक परिणाम को सही ढंग से उजागर करता है?
(1) शहरी श्रम बाजारों तक आसान पहुंच के कारण विद्यालय नामांकन दरों में कमी।
(2) निवारक और उपचारात्मक स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच में सुधार।
(3) स्थानीय संस्कृतियों को संरक्षित करने के उद्देश्य से कड़ाई से सीमित अंतर-ग्राम संवाद।
(4) विभिन्न नकदी फसलों की ओर उत्पादन को स्थानांतरित करने से किसानों को हतोत्साहित करना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. स्वजल धारा दिशा-निर्देशों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह योजना कड़ाई से ऊपर से नीचे के प्रशासनिक दृष्टिकोण पर कार्य करती है।
II. पेयजल संपत्तियों का स्वामित्व ग्राम पंचायत के पास होता है।
III. इसका उद्देश्य समुदायों को अपनी जलापूर्ति की योजना बनाने, लागू करने और बनाए रखने के लिए सशक्त बनाना है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. राजस्थान में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के तहत "दोहरे गड्ढे वाले पोर-फ्लश शौचालय" की अवधारणा को दृढ़ता से बढ़ावा दिया जाता है क्योंकि:
(1) यह मानव उत्सर्जन को वहीं पर मूल्यवान कृषि खाद में बदल देता है।
(2) इसे निरंतर यांत्रिक रूप से खाली करने की आवश्यकता होती है।
(3) यह व्यक्तिगत शौचालयों को सीधे प्रमुख नदी और झील प्रणालियों से जोड़ता है।
(4) यह ग्रामीण उपयोग के लिए वर्तमान में उपलब्ध सबसे महंगी स्वच्छता तकनीक है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. राजस्थान में ग्रामीण विद्युतीकरण के विस्तार का निम्नलिखित में से किस कृषि परिणाम के साथ गहरा संबंध है?
(1) कई वर्षों तक गहन खेती के माध्यम से मिट्टी के पोषक तत्वों की तत्काल कमी।
(2) सर्दियों में विभिन्न रबी फसलों के कुल खेती क्षेत्र में भारी कमी।
(3) विद्युत पंप सेटों के माध्यम से मशीनीकरण और विश्वसनीय सिंचाई में वृद्धि।
(4) पारंपरिक जैविक खेती का रासायनिक खेती में पूर्ण प्रतिस्थापन।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

68. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की निगरानी और मूल्यांकन ढांचे से संबंधित निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
I. स्वयं सहायता समूह सदस्यों द्वारा सहभागी निगरानी
II. प्रबंधन सूचना प्रणाली का उपयोग
III. ऋण संपर्क के लिए स्वयं सहायता समूहों की नियमित ग्रेडिंग
IV. तीसरे पक्ष के बाहरी मूल्यांकन का पूर्ण अपवर्जन
V. सामाजिक अंकेक्षण
उपरोक्त में से कौन से सही तत्व हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. राजस्थान के महिला स्वयं सहायता समूहों ने सामाजिक-आर्थिक संकटों के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ग्रामीण क्षेत्रों में इन समूहों द्वारा की जाने वाली एक प्राथमिक सामूहिक उद्यम गतिविधि क्या है?
(1) बड़े पैमाने पर भारी औद्योगिक मशीनरी संयंत्रों का संचालन करना।
(2) अंतरराष्ट्रीय यात्रा के लिए वाणिज्यिक एयरलाइंस स्थापित करना।
(3) स्थानीय हस्तशिल्प, मसालों और गैर-काष्ठ वन उत्पादों का विपणन करना।
(4) वैश्विक बाजारों पर विदेशी मुद्रा व्यापार का संचालन करना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. सूची I में पंचायतों पर संवैधानिक अनुच्छेदों को सूची II में उनके प्रावधानों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
A. अनुच्छेद 243A
B. अनुच्छेद 243D
C. अनुच्छेद 243K
D. अनुच्छेद 243I
सूची II:
i. चुनाव
ii. राज्य वित्त आयोग
iii. ग्राम सभा
iv. सीटों का आरक्षण

पात्र स्वयं सहायता समूहों को परिक्रामी निधि प्रदान करता है।

III. इसका लक्ष्य स्वयं सहायता समूह नेटवर्क में प्रत्येक ग्रामीण गरीब परिवार की कम से कम एक महिला सदस्य को शामिल करना है।

IV. स्वयं सहायता समूहों को ऋण के जाल में फंसने से बचाने के लिए बैंक संपर्क को हतोत्साहित किया जाता है।

V. क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण इस मिशन के प्रमुख घटक हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) केवल I और III
(2) केवल II और V
(3) केवल IV
(4) केवल I, II, III और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. राजस्थान में मुख्य रूप से राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (राजीविका) द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूह आंदोलन का मुख्य परिणाम निम्नलिखित में से क्या रहा है?

(1) ग्रामीण ऋण प्रणालियों का केंद्रीकरण
(2) स्थानीय शासन में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या में कमी
(3) वित्तीय समावेशन और महिला सशक्तिकरण
(4) अनौपचारिक साहूकारों पर ग्रामीण महिलाओं की बढ़ती निर्भरता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. सूची I में राजस्थान की डिजिटल पहलों को सूची II में उनके मुख्य उद्देश्यों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (डिजिटल पहल)

A. ई-पंचायत
B. ई-मित्र
C. राजनेट
D. राज वाई-फाई

सूची II: (उद्देश्य)

i. एकीकृत नेटवर्क
ii. स्वचालन
iii. नागरिक सेवाएं
iv. निःशुल्क इंटरनेट

(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में वर्तमान में कार्यरत त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है?

(1) ग्राम पंचायत (ग्राम स्तर), पंचायत समिति (खंड स्तर) और जिला परिषद (जिला स्तर)
(2) ग्राम सभा (ग्राम स्तर), ग्राम पंचायत (खंड स्तर) और जिला परिषद (जिला स्तर)
(3) ग्राम पंचायत (ग्राम स्तर), जिला परिषद (खंड स्तर) और राज्य वित्त आयोग (जिला स्तर)
(4) वार्ड सभा (ग्राम स्तर), ग्राम पंचायत (जिला स्तर) और जिला योजना समिति (राज्य स्तर)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. कथन (A): ग्राम सभा को ग्रामीण राजस्थान में सहभागी शासन की आधारभूत संस्था माना जाता है।

कारण (R): ग्राम सभा में गांव के वे सभी वयस्क निवासी शामिल होते हैं जिनके नाम निर्वाचन नामावली में दर्ज हैं।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. राजस्थान पंचायती राज अधिनियम, 1994 के प्रावधानों के तहत, एक वर्ष में ग्राम सभा की बैठकें आयोजित करने की अनिवार्य आवृत्ति क्या है?

(1) वर्ष में कम से कम दो बार
(2) वर्ष में कम से कम तीन बार
(3) वर्ष में कम से कम चार बार
(4) वर्ष में कम से कम छह बार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. राजस्थान ने सामाजिक अंकेक्षण के संस्थागतकरण में अग्रणी भूमिका निभाई। निम्नलिखित में से कौन सा जिला ऐतिहासिक रूप से उन जमीनी स्तर के अभियानों के लिए जाना जाता है जिनके कारण मनरेगा में सामाजिक अंकेक्षण तंत्र की स्थापना हुई?

(1) जयपुर
(2) जोधपुर
(3) उदयपुर
(4) भीलवाड़ा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. राजस्थान में पंचायती राज व्यवस्था के ऐतिहासिक उद्घाटन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसका उद्घाटन 2 अक्टूबर, 1959 को किया गया था।

II. उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु द्वारा किया गया था।

III. समारोह राजस्थान के नागौर जिले में आयोजित हुआ था।

IV. इसने तत्काल पूरे भारत में पंचायतों को पूर्ण संवैधानिक दर्जा प्रदान कर दिया।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I, II और III

Click Here to Buy book on Amazon

(1) काम के लिए युवाओं के पलायन के कारण एक वृद्ध जनसांख्यिकीय प्रोफाइल तैयार होना।
(2) स्थानीय कृषि क्षेत्रों के लिए युवा, कुशल श्रम की उपलब्धता में वृद्धि।
(3) छोटे ग्रामीण ढाणियों और गांवों में भारी अधिक जनसंख्या और भीड़भाड़ होना।
(4) सभी प्रमुख ग्रामीण और रेगिस्तानी क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति भूमि जोत के आकार में कमी आना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. सूची I में कार्यान्वयन की चुनौतियों को सूची II में उनके प्रभाव क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
A. मजदूरी में देरी
B. इंटरनेट की समस्याएं
C. ग्रिड स्थिरता
D. अभिजात वर्ग का आधिपत्य
सूची II:
i. डिजिटल गांव
ii. ग्राम सभा
iii. ग्रामीण विद्युतीकरण
iv. मनरेगा
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

81. राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए पशुपालन महत्वपूर्ण है। किस विशिष्ट पशु को पारंपरिक रूप से "रेगिस्तान का जहाज" कहा जाता है और यह कृषि-पशुपालक समुदायों की आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?
(1) मारवाड़ी घोड़ा
(2) ऊंट
(3) चोकला भेड़
(4) सिरोही बकरी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

82. पंचायती राज व्यवस्था में शामिल निम्नलिखित कर्मियों को ग्राम स्तर से जिला स्तर तक सही आरोही प्रशासनिक क्रम में व्यवस्थित करें:
A. मुख्य कार्यकारी अधिकारी
B. ग्राम विकास अधिकारी
C. खंड विकास अधिकारी
(1) C, B, A
(2) B, C, A
(3) A, B, C
(4) B, A, C
(5) अनुत्तरित प्रश्न

83. ग्रामीण राजस्थान में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण का कार्यान्वयन संपूर्ण निगरानी के लिए एक ऑनलाइन मंच का उपयोग करता है। इस प्रबंधन सूचना प्रणाली का नाम क्या है?
(1) नरेगासॉफ्ट
(2) स्वच्छता पोर्टल
(3) आवाससॉफ्ट
(4) ई-पंचायत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

84. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना निर्मित ग्रामीण सड़कों के लिए एक विशिष्ट रखरखाव अवधि अनिवार्य बनाती है। इस योजना के तहत नियमित रखरखाव अनुबंध की अवधि कितनी है?
(1) 1 वर्ष
(2) 3 वर्ष
(3) 5 वर्ष
(4) 10 वर्ष
(5) अनुत्तरित प्रश्न

85. जल जीवन मिशन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह स्रोत स्थिरता के उपायों जैसे पुनर्भरण और पुन: उपयोग पर जोर देता है।
II. धूसर जल प्रबंधन मिशन का एक अभिन्न अंग है।
III. यह आंगनवाड़ी केंद्रों जैसे सार्वजनिक संस्थानों को नल कनेक्शन प्राप्त करने से बाहर रखता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

86. राजस्थान में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के सफल परिणाम को मापने के लिए उपयोग किया जाने वाला प्राथमिक संकेतक निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) राज्य क्षेत्र के भीतर बनाए गए नए महानगरों की कुल संख्या।
(2) सुरक्षित स्वच्छता सुविधाओं के उपयोग और पहुंच में वृद्धि।
(3) विभिन्न जिला केंद्रों को जोड़ने के लिए निर्मित राज्य राजमार्गों की कुल लंबाई।
(4) ऊर्जा उत्पादन के लिए चालू किए गए तापीय विद्युत संयंत्रों की संख्या।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

87. राजस्थान में ग्रामीण विद्युतीकरण के प्रत्यक्ष लाभों में से 'विषम' की पहचान करें।
(1) ग्राम प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के संचालन में सुधार।
(2) स्कूली बच्चों के लिए सायंकाल के समय पढ़ाई के घंटों में वृद्धि।
(3) कृषि मशीनरी चलाने की क्षमता में वृद्धि।

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) कृषि और पशुपालन
राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की नींव कृषि और पशुपालन के सुदृढ़ समन्वय पर आधारित है। राज्य की विषम जलवायु परिस्थितियों और अनिश्चित वर्षा के कारण, यहाँ के ग्रामीण परिवार फसल उत्पादन के साथ-साथ पशुधन पर अत्यधिक निर्भर रहते हैं। पशुपालन न केवल अतिरिक्त आय प्रदान करता है, बल्कि अकाल के समय एक सुरक्षा कवच के रूप में भी कार्य करता है। यह संयोजन ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका की स्थिरता और आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

2. (1) यह योजना विशेष रूप से निजी ठेकेदारों के माध्यम से कार्यों के निष्पादन का आदेश देती है।
मनरेगा योजना के तहत पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए कार्यों के निष्पादन में निजी ठेकेदारों की भूमिका को पूरी तरह से प्रतिबंधित किया गया है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाना और उन्हें प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करना है। कार्यों का प्रबंधन और क्रियान्वयन ग्राम पंचायतों द्वारा स्थानीय श्रमिकों के माध्यम से किया जाता है। यह प्रक्रिया बिचौलियों को हटाकर मजदूरी का सीधा लाभ सीधे पात्र परिवारों तक पहुँचाना सुनिश्चित करती है।

3. (2) 60:40
प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत पात्र परिवारों को पक्का घर बनाने के लिए दी जाने वाली वित्तीय सहायता में केंद्र और राज्य का अंशदान पूर्व-निर्धारित होता है। राजस्थान जैसे मैदानी राज्यों में यह वित्तीय भार 60:40 के अनुपात में साझा किया जाता है। इसका अर्थ है कि कुल इकाई लागत का 60 प्रतिशत केंद्र सरकार वहन करती है, जबकि शेष 40 प्रतिशत राज्य सरकार द्वारा प्रदान किया जाता है। यह सहयोग ग्रामीण बेघरों को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करता है।

4. (4) बाजार तक बेहतर पहुंच और परिवहन लागत में कमी
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का ग्रामीण राजस्थान में व्यापक आर्थिक प्रभाव पड़ा है। बारहमासी सड़कों के निर्माण से गाँवों की बाजारों तक सुगम पहुंच सुनिश्चित हुई है। इससे कृषि उत्पादों और पशुधन के परिवहन में लगने वाला समय और व्यय काफी कम हो गया है। बाजार से बेहतर जुड़ाव के कारण किसानों को अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त होता है, जो ग्रामीण समृद्धि को बढ़ावा देता है। यह योजना ग्रामीण वाणिज्यिक गतिविधियों के विस्तार में अत्यंत सहायक रही है।

5. (2) केवल I और III
जल जीवन मिशन का प्राथमिक लक्ष्य प्रत्येक ग्रामीण घर तक क्रियाशील घरेलू नल कनेक्शन पहुँचाना है। यह मिशन केवल सरकारी आपूर्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें स्थानीय समुदाय और ग्राम पंचायतों की भागीदारी अनिवार्य है। जल की गुणवत्ता की नियमित निगरानी और सर्वेक्षण इस योजना के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं ताकि स्वच्छ पेयजल सुनिश्चित किया जा सके। यह एक विकेंद्रीकृत दृष्टिकोण है जहाँ समुदाय स्वयं अपनी जल प्रणालियों के प्रबंधन और रखरखाव में सक्रिय भूमिका निभाता है।

6. (2) गांवों में ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन
स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण के ओडीएफ प्लस चरण का मुख्य उद्देश्य खुले में शौच मुक्त स्थिति को स्थायी बनाना और गांवों में समग्र स्वच्छता सुनिश्चित करना है। इस चरण में गांवों में ठोस कचरा प्रबंधन और तरल अपशिष्ट प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसका लक्ष्य ग्रामीण परिवेश को स्वच्छ बनाना और अपशिष्ट के वैज्ञानिक निपटान के माध्यम से स्वास्थ्य सुधार करना है। यह पहल गांवों को 'आदर्श ओडीएफ प्लस' गांवों के रूप में विकसित करने हेतु प्रेरित करती है।

7. (4) सिंचाई के लिए कृषि पंप सेटों के उपयोग में कमी लाना
ग्रामीण ऊर्जा पहुंच का विस्तार मुख्य रूप से कृषि और घरेलू जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए किया जाता है। विद्युतीकरण का एक बड़ा उद्देश्य कृषि पंप सेटों को ऊर्जावान बनाकर सिंचाई सुविधाओं को विश्वसनीय बनाना है, न कि उनके उपयोग को कम करना। ऊर्जा की उपलब्धता से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य और शिक्षा की स्थिति बेहतर होती है और आर्थिक गतिविधियों के लिए कार्य के घंटे बढ़ते हैं। यह परंपरागत ईंधन पर निर्भरता कम कर पर्यावरणीय सुरक्षा में योगदान देता है।

(3) केवल IV
राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत स्वयं सहायता समूहों को वित्तीय रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए बैंकों के साथ उनके जुड़ाव को प्रोत्साहित किया जाता है। बैंक ऋण के माध्यम से महिलाएं अपनी सूक्ष्म उद्यम गतिविधियां प्रारंभ कर सकती हैं और निर्धनता के चक्र से बाहर निकल सकती हैं। मिशन का उद्देश्य महिलाओं को संगठित करना, उनकी बचत को बढ़ावा देना और उन्हें औपचारिक वित्तीय प्रणालियों से जोड़ना है। बैंक ऋण को हतोत्साहित करना मिशन के मूलभूत सिद्धांतों के पूर्णतः विपरीत है।

9. (3) वित्तीय समावेशन और महिला सशक्तिकरण
राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद के माध्यम से संचालित स्वयं सहायता समूह आंदोलन ने ग्रामीण महिलाओं के जीवन में व्यापक परिवर्तन किया है। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण स्तर पर प्रभावी वित्तीय समावेशन हुआ है, जहाँ महिलाएं अब औपचारिक बैंकिंग और ऋण सुविधाओं का लाभ उठा रही हैं। इस आंदोलन ने महिलाओं में आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर उन्हें सामाजिक और

NODIA

I. राजस्थान ने व्यवस्था के प्रबंधन के लिए एक अलग पंचायती राज विभाग का गठन किया।
II. दशकों से पंचायती राज संस्थाओं का मूल्यांकन और सुधार करने के लिए क्रमिक राज्य समितियां बनाई गईं।
III. इस प्रणाली ने बिना किसी ठहराव के त्रुटिहीन रुप से कार्य किया।
IV. 73वें संशोधन ने एक समान संवैधानिक अधिदेश प्रदान किया जिसने राज्य के पंचायती राज ढांचे को मजबूत किया।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

96. राजस्थान में पंचायती राज संस्थाओं को वास्तविक शक्तियों का हस्तांतरण मुख्य रुप से किसके अपर्याप्त हस्तांतरण के कारण एक चुनौती बना हुआ है?
(1) सभी ग्रामीण बस्तियों के नागरिकों को सार्वभौमिक चुनावी अधिकार।
(2) अबाध वित्तीय संसाधन और स्वायत्त कराधान शक्तियां।
(3) ग्राम स्तर पर आपराधिक अपराधों के विचारण की न्यायिक शक्तियां।
(4) स्वतंत्र राज्य विदेश नीति बनाने और लागू करने की शक्ति।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

97. राजस्थान में जिला योजना समिति के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) इसकी अध्यक्षता जिला परिषद के प्रमुख द्वारा की जाती है।
(2) इसके लिए आवश्यक है कि इसके 100% सदस्य सीधे मुख्यमंत्री द्वारा नामित हों।
(3) यह उपलब्ध स्थानिक और प्राकृतिक संसाधनों पर विचार करते हुए विकास योजना का प्रारुप तैयार करती है।
(4) यह जिले के भीतर ग्रामीण-शहरी विकास के अंतर को पाटने के लिए कार्य करती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

98. लक्षित ग्रामीण वित्त पोषण के लिए पिछड़ेपन की पहचान करने हेतु उपयोग किए जाने वाले निम्नलिखित मापदंडों को संरचनात्मक कारणों से मानव विकास परिणामों के क्रम में व्यवस्थित करें:
A. संपर्क
B. निवेश की कमी
C. बेरोजगारी/गरीबी
D. पोषण/शिक्षा
(1) A, B, C, D
(2) D, C, B, A
(3) B, A, D, C
(4) C, D, A, B
(5) अनुत्तरित प्रश्न

99. ग्रामीण राजस्थान से शहरी केंद्रों की ओर उच्च पुरुष बाह्य-प्रवास का एक महत्वपूर्ण परिणाम क्या है?
(1) सभी सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों में ग्रामीण और शहरी संपत्ति का तत्काल सामान्यीकरण।
(2) मौसमी प्रवासियों की वापसी के कारण शहरी जनसंख्या में भारी गिरावट।
(3) घर और कृषि गतिविधियों के प्रबंधन के लिए महिलाओं पर बढ़ा हुआ बोझ।
(4) उपलब्ध श्रम की कमी के कारण ग्रामीण कृषि गतिविधियों का पूरी तरह बंद होना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

100. सूची I में ग्रामीण विकास चुनौतियों को सूची II में राजस्थान के प्रमुख संदर्भों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
A. सूखा
B. जल की कमी
C. संपर्क
D. क्षमता निर्माण
सूची II:
i. भूजल स्तर में गिरावट
ii. मरुस्थलीय बसावटें
iii. मानसून की विफलता
iv. प्रतिनिधियों का प्रशिक्षण
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

निवास छोड़ने पर विवश करती हैं। राज्य की भौगोलिक स्थिति के कारण यहाँ बार-बार पड़ने वाला सूखा और कृषि उत्पादन में अनिश्चितता इसके प्रमुख कारण हैं। घटती कृषि उत्पादकता और जल की कमी ग्रामीण समुदायों के लिए आर्थिक संकट उत्पन्न करती है, जिससे वे वैकल्पिक रोजगार की खोज में शहरों की ओर पलायन करने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

20. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
ग्रामीण चुनौतियों के समाधान के लिए सरकार विभिन्न लक्षित योजनाएं संचालित कर रही है। जल की भारी कमी को दूर करने के लिए जल जीवन मिशन के तहत नल से जल पहुँचाया जा रहा है। ग्रामीण बेरोजगारी की समस्या का समाधान मनरेगा के माध्यम से 100 दिनों का गारंटीकृत रोजगार देकर किया जाता है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना गांवों को मुख्य मार्गों से जोड़ती है, जबकि प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के माध्यम से बेघर परिवारों को पक्के मकान उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

21. (3) पशुपालन और पशुधन पालन
राजस्थान में पशुपालन केवल एक पूरक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह सूखे जैसी कठिन परिस्थितियों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ है। जब अनियमित वर्षा के कारण फसलें विफल हो जाती हैं, तब पशुधन से प्राप्त होने वाली आय ग्रामीण परिवारों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है। पशुपालन के माध्यम से दुग्ध, ऊन और मांस का उत्पादन जारी रहता है, जो परिवारों को पोषण और नकदी दोनों सुनिश्चित करता है। यह क्षेत्र कृषि की तुलना में जलवायु जोखिमों के प्रति अधिक सुदृढ़ है।

22. (2) जिला परिषद, पंचायत समिति, ग्राम पंचायत
राजस्थान की त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का ढांचा एक स्पष्ट पदानुक्रम का अनुसरण करता है। इस प्रणाली में जिला स्तर पर 'जिला परिषद' शीर्ष निकाय के रूप में कार्य करती है, जो जिले की योजनाओं और नीतियों का समन्वय करती है। मध्यवर्ती स्तर पर 'पंचायत समिति' होती है जो खंड विकास की उत्तरदायित्व संभालती है। सबसे निचले स्तर पर 'ग्राम पंचायत' होती है जो सीधे ग्रामीणों से जुड़ी होती है। यह संरचना प्रशासन को कुशलतापूर्वक जमीनी स्तर तक पहुँचाती है।

23. (2) कथन II सही है और कथन I गलत है।
प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण में लाभार्थियों का चयन एक अत्यंत वैज्ञानिक और पारदर्शी प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। अब यह केवल पुरानी गरीबी रेखा की सूची पर निर्भर नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना 2011 के आंकड़ों का उपयोग किया जाता है। इन आंकड़ों के आधार पर उन परिवारों की पहचान की जाती है जो वास्तव में आवास के अभाव का सामना कर रहे हैं। इस पद्धति ने अपात्र लोगों को हटाकर सबसे गरीब और जरुरतमंदों तक लाभ पहुँचाना सुनिश्चित किया है।

24. (3) 500 व्यक्ति
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों को पक्की सड़कों से जोड़ने के लिए जनसंख्या मापदंड निर्धारित किए गए हैं। मैदानी क्षेत्रों में ऐसी बसावटें जिनकी जनसंख्या 500 या उससे अधिक है, वे इस योजना के तहत सड़क संपर्क के लिए पात्र मानी जाती हैं। पहाड़ी, रेगिस्तानी और जनजातीय क्षेत्रों के लिए यह सीमा कम करके 250 व्यक्ति रखी गई है। इस नीति का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि ग्रामीण आबादी का एक बड़ा हिस्सा मुख्य आर्थिक केंद्रों और मंडियों से जुड़ सके।

25. (1) केवल I और II
स्वजल धारा योजना ग्रामीण पेयजल आपूर्ति के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सुधारवादी कदम थी। यह योजना पूरी तरह से समुदाय के नेतृत्व में कार्यान्वित की जाती है, जहाँ स्थानीय लोगों को योजना बनाने और उसे लागू करने का अधिकार होता है। इसके तहत समुदाय को परियोजना की कुल पूंजीगत लागत का 10 प्रतिशत हिस्सा स्वयं वहन करना होता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि निर्मित संपत्तियों के संचालन और नियमित रखरखाव की जिम्मेदारी भी पूरी तरह से स्थानीय समुदाय या पंचायत की होती है।

26. (1) ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण समिति
ग्राम स्तर पर स्वच्छता की स्थिति को बनाए रखने और लोगों के व्यवहार में स्थायी परिवर्तन लाने में 'ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण समिति' की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह समिति ओडीएफ स्थिति की निरंतरता की निगरानी करती है और सुनिश्चित करती है कि सभी ग्रामीण शौचालयों का नियमित उपयोग करें। इसके अतिरिक्त, यह समिति गांव में स्वच्छता अभियानों का नेतृत्व करती है और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर जागरूकता फैलाती है। यह सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से स्वच्छ परिवेश सुनिश्चित करने का प्रयास करती है।

27. (4) विद्युतीकरण ने तापीय विद्युत संयंत्रों पर राज्य की निर्भरता को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है।
राजस्थान में ग्रामीण विद्युतीकरण का व्यापक विस्तार हुआ है, जिसमें घरों को बिजली देने और कृषि पंपों को चलाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। दुर्गम क्षेत्रों में सौर ऊर्जा जैसे विकेंद्रीकृत स्रोतों का उपयोग किया जा रहा है, लेकिन इससे तापीय विद्युत संयंत्रों पर निर्भरता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। आधारभूत भार के लिए राज्य अब भी तापीय और अन्य पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर है। विद्युतीकरण का लक्ष्य अंतिम छोर तक पहुंच सुनिश्चित करना है, न कि उत्पादन स्रोतों को प्रतिस्थापित करना।

28. (2) केवल I, III, IV और V
राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एक गतिशील कार्यक्रम है जो अब मांग-आधारित रणनीति पर केंद्रित है। इसमें ग्रामीण महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों और उनके संघों में संगठित कर उन्हें सशक्त बनाया जाता है। वित्तीय समावेशन और क्षमता निर्माण इसके मुख्य घटक हैं जो महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों के लिए तैयार करते हैं। यह मिशन राज्य स्तर पर समर्पित राज्य ग्रामीण आजीविका मिशनों द्वारा प्रबंधित किया

NODIA

आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है। अब महिलाएं स्थानीय शासन और सामुदायिक विकास में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

10. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान में डिजिटल पहलों का उद्देश्य ग्रामीण शासन और सेवा वितरण को आधुनिक बनाना है। ई-पंचायत के माध्यम से पंचायत कार्यों का स्वचालन सुनिश्चित किया जाता है, जिससे पारदर्शिता बढ़ती है। ई-मित्र केंद्रों द्वारा नागरिकों को विभिन्न सरकारी सेवाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध कराई जाती हैं। राजनेट राज्य भर में एक एकीकृत नेटवर्क बुनियादी ढांचा प्रदान करता है, जबकि राज वाई-फाई पहल ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक स्थानों पर निःशुल्क इंटरनेट कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए कार्यान्वित की जा रही है।

11. (1) ग्राम पंचायत (ग्राम स्तर), पंचायत समिति (खंड स्तर) और जिला परिषद (जिला स्तर)
राजस्थान में त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था सत्ता के विकेंद्रीकरण का मुख्य आधार है। इस संरचना में ग्राम स्तर पर 'ग्राम पंचायत' प्राथमिक इकाई है। खंड स्तर पर 'पंचायत समिति' एक मध्यवर्ती कड़ी के रूप में कार्य करती है जो विभिन्न पंचायतों की योजनाओं का समन्वय करती है। शीर्ष स्तर पर 'जिला परिषद' जिले के समग्र ग्रामीण विकास की निगरानी और योजना बनाती है। यह पदानुक्रम लोकतांत्रिक प्रशासन को जमीनी स्तर तक पहुँचाने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ है।

12. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ग्राम सभा ग्रामीण राजस्थान में प्रत्यक्ष लोकतंत्र की सबसे शक्तिशाली और आधारभूत संस्था है। इसमें गांव के उन सभी वयस्क निवासियों को सम्मिलित किया जाता है जिनके नाम मतदाता सूची में दर्ज होते हैं। यह संस्था स्थानीय स्तर पर विकास योजनाओं के अनुमोदन और निगरानी के लिए उत्तरदायी है। क्योंकि इसमें गांव के सभी पात्र नागरिक प्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं, इसलिए इसे सहभागी शासन का सर्वोत्तम उदाहरण माना जाता है। यह पंचायत की जवाबदेही सुनिश्चित करती है।

13. (1) वर्ष में कम से कम दो बार
राजस्थान पंचायती राज अधिनियम, 1994 के कानूनी प्रावधानों के अनुसार, प्रत्येक ग्राम पंचायत के लिए एक वर्ष में ग्राम सभा की न्यूनतम दो बैठकें आयोजित करना अनिवार्य है। हालांकि, प्रभावी शासन के लिए राज्य सरकार अक्सर महत्वपूर्ण अवसरों पर अधिक बैठकों के आयोजन का सुझाव देती है। इन बैठकों का मुख्य उद्देश्य बजट पर चर्चा करना, पात्र लाभार्थियों की पहचान करना और विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा करना है। यह ग्रामीण भागीदारी का अनिवार्य माध्यम है।

14. (4) भीलवाड़ा
राजस्थान का भीलवाड़ा जिला ऐतिहासिक रूप से सामाजिक जवाबदेही और पारदर्शिता के आंदोलनों का केंद्र रहा है। विशेष रूप से जिले की विजयनगर और अन्य तहसीलों में हुए जमीनी संघर्षों ने मनरेगा जैसी योजनाओं में सामाजिक अंकेक्षण की अवधारणा को जन्म दिया। इन जन आंदोलनों ने यह सिद्ध किया कि जब समुदाय स्वयं कार्यों का अंकेक्षण करता है, तो भ्रष्टाचार कम होता है। इसी आधार पर पूरे देश में मनरेगा के तहत सामाजिक अंकेक्षण को अनिवार्य कानूनी प्रक्रिया बनाया गया।

15. (1) केवल I, II और III
स्वतंत्र भारत में त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का ऐतिहासिक शुभारंभ 2 अक्टूबर, 1959 को राजस्थान के नागौर जिले में हुआ था। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु ने इस प्रणाली का उद्घाटन कर लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की नींव रखी थी। हालांकि, उस समय इसे संवैधानिक दर्जा प्राप्त नहीं था; यह 1992 के 73वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम के माध्यम से प्राप्त हुआ। इस पहल ने ग्रामीण भारत में स्वशासन और लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के एक नए युग का सूत्रपात किया था।

16. (2) कोष, कार्य और कार्मिक
पंचायती राज संस्थाओं का वास्तविक सशक्तिकरण तीन महत्वपूर्ण स्तंभों पर निर्भर करता है, जिन्हें '3Fs' के रूप में जाना जाता है। इसमें 'कोष' का अर्थ स्थानीय निकायों को पर्याप्त वित्तीय संसाधनों का हस्तांतरण है। 'कार्य' से तात्पर्य संविधान की 11वीं अनुसूची में वर्णित 29 विषयों और उत्तरदायित्वों को सौंपना है। 'कार्मिक' का अर्थ उन सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों का हस्तांतरण है जो इन कार्यों को क्रियान्वित करेंगे। इन तीनों के पूर्ण हस्तांतरण के बिना प्रभावी स्वशासन संभव नहीं है।

17. (3) अनुच्छेद 243ZD
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 243ZD प्रत्येक जिले में एक 'जिला योजना समिति' के गठन का अनिवार्य प्रावधान करता है। इस समिति का मुख्य कार्य जिले की पंचायतों और नगर पालिकाओं द्वारा तैयार की गई विकास योजनाओं को समेकित करना है। यह समिति पूरे जिले के लिए एक एकीकृत विकास योजना प्रारूप तैयार करती है जिसमें ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के साझा हितों का ध्यान रखा जाता है। यह अनुच्छेद जिला स्तर पर विकेंद्रीकृत योजना निर्माण प्रक्रिया को संवैधानिक आधार प्रदान करता है।

18. (1) स्थानीय निकायों द्वारा विकेंद्रीकृत योजना के माध्यम से पहचाने गए महत्वपूर्ण विकासात्मक अंतराल को भरना।
पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि का प्राथमिक उद्देश्य उन क्षेत्रों में क्षेत्रीय विषमता को दूर करना था जो विकास के मानकों में पीछे रह गए थे। राजस्थान में इस निधि का उपयोग स्थानीय स्तर पर पहचाने गए महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के अंतराल को भरने के लिए किया गया। इस प्रक्रिया में पंचायतों और स्थानीय निकायों द्वारा तैयार की गई विकेंद्रीकृत योजनाओं को प्राथमिकता दी गई। यह निधि लचीले संसाधन प्रदान करती थी ताकि स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार विशिष्ट परियोजनाओं को पूरा किया जा सके।

19. (3) बार-बार पड़ने वाला सूखा और घटती कृषि उत्पादकता।
राजस्थान में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन के लिए 'प्रतिकर्ष कारक' वे नकारात्मक स्थितियां हैं जो लोगों को अपना

Downloaded from www.pdf.tube

56. (1) 11वीं अनुसूची में सूचीबद्ध विषय जो स्थानीय सरकारों को सौंपे गए हैं।
पंचायती राज के संदर्भ में 'कार्यों' के हस्तांतरण का अर्थ उन उत्तरदायित्वों और शक्तियों से है जो संविधान की 11वीं अनुसूची में सूचीबद्ध हैं। इस अनुसूची में कुल 29 विषय सम्मिलित हैं, जैसे कृषि, भूमि सुधार, लघु सिंचाई, ग्रामीण आवास और पेयजल। राज्य सरकारें धीरे-धीरे इन विषयों से संबंधित योजना बनाने और उन्हें लागू करने की शक्तियां पंचायतों को सौंपती हैं। यह हस्तांतरण इसलिए महत्वपूर्ण है ताकि स्थानीय समस्याएं स्थानीय स्तर पर ही सुलझाई जा सकें और विकास योजनाएं अधिक प्रभावी बन सकें।

57. (3) जिला योजना समिति
जिला योजना समिति एक संवैधानिक निकाय है जिसका प्राथमिक उत्तरदायित्व जिले के समग्र विकास के लिए एक समेकित योजना तैयार करना है। यह समिति ग्रामीण क्षेत्रों की ग्राम पंचायतों और शहरी क्षेत्रों की नगर पालिकाओं द्वारा बनाई गई पृथक योजनाओं को एकत्रित करती है। यह जिले के संसाधनों, पर्यावरण और बुनियादी ढांचे की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए एक एकीकृत विकास प्रारुप तैयार करती है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि जिले के ग्रामीण और शहरी विकास के बीच बेहतर समन्वय और सामंजस्य बना रहे।

58. (1) जिला योजना समिति द्वारा एक विकेंद्रीकृत जिला योजना तैयार करना।
पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि के तहत वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए राजस्थान के संबंधित जिलों को एक अनिवार्य प्रशासनिक प्रक्रिया का पालन करना पड़ता था। इसमें जिला योजना समिति द्वारा एक व्यापक और विकेंद्रीकृत जिला योजना का निर्माण करना सम्मिलित था। यह योजना जमीनी स्तर की आवश्यकताओं और स्थानीय प्राथमिकताओं को दर्शाती थी। केवल इस योजना के आधार पर ही निधि का आवंटन किया जाता था ताकि विकास कार्यों में पारदर्शिता रहे और धन का उपयोग उन क्षेत्रों में हो जहाँ इसकी सर्वाधिक आवश्यकता है।

59. (4) पुरुषों के काम के लिए शहरों की ओर पलायन करने पर महिलाओं द्वारा खेती का कार्य संभालना।
राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों से बेहतर मजदूरी की खोज में पुरुषों का बड़े पैमाने पर शहरों की ओर पलायन होता है। इसके परिणामस्वरूप, गांवों में कृषि प्रबंधन और शारीरिक श्रम की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं के कंधों पर आ जाती है, जिसे 'कृषि का महिलाकरण' कहा जाता है। महिलाएं अब न केवल घर संभालती हैं, बल्कि बुवाई, सिंचाई और कटाई जैसे सभी कृषि कार्यों का नेतृत्व भी करती हैं। यह प्रवृत्ति ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की बढ़ती आर्थिक भूमिका और उनके बढ़ते कार्यभार को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

60. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
ग्रामीण विकास की सफलता विभिन्न योजनाओं के सटीक कार्यान्वयन पर निर्भर करती है। मनरेगा मुख्य रूप से ग्रामीण परिवारों को मजदूरी रोजगार की गारंटी देकर आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का केंद्र बिंदु गांवों को बारहमासी सड़क नेटवर्क से जोड़कर परिवहन सुगम बनाना है। प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण बेघरों को सुरक्षित और पक्का घर प्रदान करने पर केंद्रित है। स्वजल धारा जैसी योजनाएं सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से पेयजल की उपलब्धता और जल प्रबंधन सुनिश्चित करने का कार्य करती हैं।

NODIA

61. (3) डेयरी और पशुपालन
राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में डेयरी और पशुपालन क्षेत्र भूमिहीन मजदूरों और सीमांत किसानों के लिए जीवन रेखा के समान है। जिन लोगों के पास खेती के लिए पर्याप्त भूमि नहीं है, उनके लिए दुधारु पशुओं का पालन आय का प्राथमिक और विश्वसनीय स्रोत बन जाता है। यह क्षेत्र न केवल दैनिक नकद आय प्रदान करता है, बल्कि ग्रामीण परिवारों की पोषण सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। सहकारी डेयरी नेटवर्क के विस्तार ने इस क्षेत्र को और अधिक लाभकारी और संगठित बना दिया है।

62. (2) B, C, A
पंचायती राज संस्थाओं का प्रशासनिक ढांचा निचले स्तर से ऊपर की ओर एक स्पष्ट क्रम में व्यवस्थित है। सबसे प्राथमिक स्तर पर 'ग्राम विकास अधिकारी' (VDO) होता है जो ग्राम पंचायत के कार्यों का प्रबंधन करता है। इसके ऊपर खंड स्तर पर 'खंड विकास अधिकारी' (BDO) पंचायत समिति के प्रशासनिक कार्यों का नेतृत्व करता है। जिले के सर्वोच्च स्तर पर 'मुख्य कार्यकारी अधिकारी' (CEO) तैनात होता है जो जिला परिषद के समस्त कार्यक्रमों और कर्मियों का समन्वय और पर्यवेक्षण करता है।

63. (1) वे परिवार जिनके सदस्यों की आय उच्चतम कर श्रेणी से ऊपर है।
प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण का लक्ष्य समाज के सबसे कमजोर और वंचित वर्गों को आवास प्रदान करना है। इसलिए, उच्च आय वाले परिवार या वे सदस्य जो आयकरदाता हैं, इस योजना के लाभ से स्वतः बाहर हो जाते हैं। पात्रता मानदंडों में बेघर परिवारों, निराश्रितों, हाथ से मैला ढोने वालों और आदिम जनजातीय समूहों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। यह बहिष्करण मानदंड यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी संसाधनों का लाभ केवल उन लोगों को मिले जो वास्तव में आर्थिक रूप से असमर्थ हैं।

64. (2) निवारक और उपचारात्मक स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच में सुधार।
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत निर्मित सड़कों ने ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं के परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया है। पक्की सड़कों के कारण एम्बुलेंस और अन्य वाहन अब दूर-दराज के गांवों तक सुगमता से पहुँच सकते हैं, जिससे आपातकालीन चिकित्सा सहायता समय पर उपलब्ध हो पाती है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण निवासी अब नियमित स्वास्थ्य जांच के लिए शहरी अस्पतालों तक सरलता से जा सकते हैं। बेहतर कनेक्टिविटी ने स्वास्थ्य कर्मियों की गांवों में पहुंच

जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य निर्धन परिवारों को संगठित कर उनकी आजीविका के स्रोतों को टिकाऊ बनाना है।

29. (3) संपार्श्विक और भारी संपत्ति के आधार पर ऋण देना।
स्वयं सहायता समूहों का मूलभूत सिद्धांत बिना किसी भौतिक संपार्श्विक या भारी संपत्ति की मांग के ऋण प्रदान करना है। ये समूह आपसी विश्वास, नियमित बचत और सदस्यों के बीच सामूहिक गारंटी के आधार पर कार्य करते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य उन निर्धनों को वित्तीय सहायता देना है जिनकी पहुँच औपचारिक बैंकों तक नहीं है। यहाँ ऋण वितरण का आधार व्यक्ति की संपत्ति नहीं, बल्कि समूह की आंतरिक बचत और सदस्यों की ईमानदारी होती है। यह प्रणाली स्वरोजगार को बढ़ावा देती है।

30. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
पंचायती राज संस्थाओं के विभिन्न स्तरों पर निर्वाचित प्रतिनिधियों के विशिष्ट पदनाम निर्धारित हैं। ग्राम पंचायत के मुखिया को 'सरपंच' कहा जाता है, जो स्थानीय विकास का नेतृत्व करता है। मध्यवर्ती खंड स्तर पर पंचायत समिति के प्रमुख को 'प्रधान' के रूप में जाना जाता है। जिला स्तर पर सर्वोच्च पद 'जिला प्रमुख' का होता है। इसके अतिरिक्त, ग्राम सभा की बैठकों की अध्यक्षता भी सामान्यतः सरपंच द्वारा ही की जाती है। यह संरचना स्पष्ट प्रशासनिक और नेतृत्व उत्तरदायित्व सुनिश्चित करती है।

31. (1) पंचायत समिति - खंड स्तर
राजस्थान की पंचायती राज व्यवस्था में प्रत्येक स्तर का एक विशिष्ट भौगोलिक और प्रशासनिक क्षेत्र होता है। 'पंचायत समिति' खंड स्तर पर कार्य करती है और विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की मुख्य इकाई है। इसी प्रकार, 'ग्राम पंचायत' केवल ग्राम स्तर तक सीमित होती है और 'जिला परिषद' पूरे जिले के लिए उत्तरदायी होती है। 'ग्राम सभा' गांव के सभी पंजीकृत मतदाताओं का समूह है, जो स्थानीय स्तर पर कार्य करती है। यह त्रि-स्तरीय विभाजन प्रभावी स्थानीय स्वशासन सुनिश्चित करता है।

32. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ग्राम सभा राजस्थान में सहभागी लोकतंत्र की सर्वोच्च इकाई है जिसे सामाजिक और आर्थिक विकास की योजनाओं को मंजूरी देने का संवैधानिक अधिकार है। 73वें संविधान संशोधन ने राज्य सरकारों को यह अनिवार्य किया कि वे ग्राम सभाओं को प्रभावी स्वशासन के लिए आवश्यक शक्तियां प्रदान करें। ग्राम सभा न केवल योजनाओं का चयन करती है, बल्कि पंचायतों द्वारा किए गए कार्यों की निगरानी और अंकेक्षण भी करती है। यह प्रत्यक्ष भागीदारी स्थानीय प्रशासन को जवाबदेह और पारदर्शी बनाने का मुख्य साधन है।

33. (3) 500 व्यक्ति
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के मैदानी क्षेत्रों में कार्यान्वयन हेतु निर्धारित मापदंडों के अनुसार, 500 या उससे अधिक की आबादी वाली सभी असंबद्ध बसावटों को पक्की सड़कों से जोड़ा जाना आवश्यक है। रेगिस्तानी, जनजातीय और पहाड़ी क्षेत्रों के लिए यह सीमा कम करके 250 व्यक्तियों की आबादी निर्धारित की गई है। यह नीतिगत निर्णय दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाली ग्रामीण आबादी को मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था और आवश्यक सामाजिक सेवाओं से जोड़ने के उद्देश्य से लिया गया है।

34. (1) सार्वजनिक कार्यों की अभियांत्रिकी गुणवत्ता और वित्तीय पारदर्शिता का सामुदायिक मूल्यांकन।
मनरेगा में सामाजिक अंकेक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ स्वयं लाभार्थी और स्थानीय समुदाय किए गए कार्यों का निरीक्षण करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सार्वजनिक धन का उपयोग समुचित रूप से हुआ है और निर्मित संपत्तियों की गुणवत्ता मानकों के अनुरूप है। यह प्रक्रिया वित्तीय अभिलेखों की सार्वजनिक समीक्षा करती है और अनियमितताओं को उजागर करती है। यह तंत्र न केवल भ्रष्टाचार को रोकता है, बल्कि ग्रामीणों में उनके अधिकारों और सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता भी बढ़ाता है।

35. (2) केवल I, III और IV
राजस्थान के नागौर में 1959 में हुई शुरुआत ने भारत में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के एक नए अध्याय का प्रारंभ किया। यह पहल बलवंत राय मेहता समिति की सिफारिशों पर आधारित थी, जिसने त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का सुझाव दिया था। इसका मुख्य लक्ष्य शासन की शक्तियों को जनता के हाथों में सौंपना और ग्रामीण विकास में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना था। हालांकि इसने एक सुदृढ़ नींव रखी, लेकिन पंचायतों को पूर्ण संवैधानिक सुरक्षा बहुत बाद में 1992 के संशोधन से मिली।

36. (4) यह एक स्थिर प्रक्रिया है जो बिना किसी बदलाव के सभी भारतीय राज्यों में एक समान है।
पंचायतों को शक्तियों और संसाधनों का हस्तांतरण एक निरंतर चलने वाली और गतिशील प्रक्रिया है, जो अलग-अलग राज्यों में उनकी राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रशासनिक क्षमता के अनुसार भिन्न होती है। भारत के सभी राज्यों में यह प्रक्रिया एक समान नहीं है; कुछ राज्यों ने अधिक शक्तियां हस्तांतरित की हैं जबकि अन्य अभी भी इस दिशा में प्रयासरत हैं। वित्तीय स्वायत्तता और कर्मचारियों पर नियंत्रण के मामले में राज्यों के बीच काफी असमानता देखी जाती है। यह एक विकसित होती हुई शासन प्रणाली है।

37. (3) जिले में जिला परिषद और नगर पालिकाओं के निर्वाचित सदस्य।
जिला योजना समिति की लोकतांत्रिक प्रकृति को बनाए रखने के लिए इसके सदस्यों का एक बड़ा हिस्सा निर्वाचित प्रतिनिधियों के बीच से चुना जाता है। इस समिति के कम से कम चार-पांचवें सदस्य जिले की ग्रामीण पंचायतों और शहरी नगर पालिकाओं के निर्वाचित सदस्यों द्वारा अपने बीच से ही चुने जाते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि जिले की विकास योजनाओं में स्थानीय लोगों की वास्तविक आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं का प्रतिबिंब हो। निर्वाचित सदस्यों की यह भागीदारी विकेंद्रीकृत योजना निर्माण को प्रभावी बनाती है।

Click Here to Buy book on Amazon

38. (2) ऐतिहासिक अभाव वाले जिलों के लिए बुनियादी ढांचे के अंतराल को पाटने हेतु वित्तीय संसाधन।
पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि कार्यक्रम को विशेष रूप से उन जिलों की सहायता के लिए तैयार किया गया था जो विकास के विभिन्न सामाजिक और आर्थिक संकेतकों में पीछे थे। इस निधि का मुख्य तर्क यह था कि नियमित योजनाओं के अतिरिक्त इन पिछड़े जिलों को अतिरिक्त वित्तीय सहायता दी जाए ताकि वे अपने बुनियादी ढांचे के अभाव को दूर कर सकें। यह कार्यक्रम क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने और विकास की मुख्यधारा में पिछड़ गए क्षेत्रों को समान अवसर प्रदान करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण था।

39. (4) कठोर पर्यावरणीय परिस्थितियों, फसल खराब होने और विकल्पों की कमी के कारण मजबूरन पलायन।
संकटपूर्ण प्रवास एक ऐसी स्थिति है जहाँ ग्रामीण लोग स्वेच्छा से नहीं, बल्कि विवशता में अपने घरों को छोड़ते हैं। राजस्थान के संदर्भ में, यह अक्सर बार-बार आने वाले अकाल, जल स्रोतों के सूखने और कृषि उत्पादन के पूरी तरह ठप हो जाने के कारण होता है। जब स्थानीय स्तर पर जीवन निर्वाह के सभी साधन समाप्त हो जाते हैं, तब परिवार जीवित रहने के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं। यह प्रवास अक्सर असुरक्षित होता है और प्रवासियों के सामाजिक-आर्थिक जीवन को गंभीर रूप से प्रभावित करता है।

40. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
ग्रामीण विकास की सफलता विभिन्न योजनाओं के सटीक कार्यान्वयन पर निर्भर करती है। मनरेगा मुख्य रूप से ग्रामीण परिवारों को मजदूरी रोजगार की गारंटी देकर आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का केंद्र बिंदु गांवों को बारहमासी सड़क नेटवर्क से जोड़कर परिवहन सुगम बनाना है। प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण बेघरों को सुरक्षित और पक्का घर प्रदान करने पर केंद्रित है। स्वजल धारा जैसी योजनाएं सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से पेयजल की उपलब्धता और जल प्रबंधन सुनिश्चित करने का कार्य करती हैं।

41. (3) मिश्रित खेती जलवायु अनिश्चितताओं के विरुद्ध जोखिम कम करने की रणनीति प्रदान करती है।
राजस्थान में कृषि और पशुपालन का एकीकरण केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक जोखिम प्रबंधन रणनीति है। यहाँ के किसान अक्सर 'मिश्रित खेती' अपनाते हैं, जहाँ फसल उत्पादन और पशुधन पालन साथ-साथ किया जाता है। यदि कम वर्षा के कारण फसलें बर्बाद हो जाती हैं, तो पशुधन किसानों को वैकल्पिक आय और भोजन प्रदान कर आर्थिक संकट से बचाता है। यह एकीकृत दृष्टिकोण ग्रामीण परिवारों के लचीलेपन को बढ़ाता है और विषम परिस्थितियों में भी उनकी आजीविका को निरंतरता प्रदान करता है।

42. (2) B, A, C, D, E
मनरेगा के कार्यान्वयन की एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है जो पारदर्शिता सुनिश्चित करती है। सबसे पहले पात्र परिवारों को जॉब कार्ड जारी किए जाते हैं। इसके बाद, संभावित कार्यों की योजना बनाकर ग्राम सभा द्वारा श्रम बजट का अनुमोदन किया जाता है। जब श्रमिक कार्य की मांग करते हैं, तब उन्हें काम आवंटित किया जाता है और कार्यों का वास्तविक निष्पादन प्रारंभ होता है। अंत में, किए गए कार्यों की गुणवत्ता और वित्तीय पारदर्शिता की जांच के लिए ग्राम सभा में सामाजिक अंकेक्षण आयोजित किया जाता है।

43. (4) स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण
प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत घर के निर्माण के साथ-साथ स्वच्छ वातावरण सुनिश्चित करने के लिए 'स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण' के साथ प्रभावी अभिसरण किया गया है। इस व्यवस्था के तहत, आवास के लाभार्थी को शौचालय निर्माण के लिए पृथक से वित्तीय प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है। यह समन्वय न केवल लाभार्थियों पर आर्थिक बोझ कम करता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक नया निर्मित घर अनिवार्य रूप से स्वच्छता सुविधाओं से लैस हो। यह एकीकृत दृष्टिकोण ग्रामीण स्वास्थ्य और गरिमा को बढ़ावा देता है।

44. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना अब पर्यावरण के अनुकूल सड़क निर्माण तकनीकों को बढ़ावा देने पर विशेष बल दे रही है। इसमें स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों और अपशिष्ट जैसे प्लास्टिक और फ्लाई-ऐश का उपयोग कर 'हरित सड़कों' के निर्माण को प्रोत्साहित किया गया है। यह योजना राज्य की राजधानियों को जोड़ने के लिए नहीं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों की असंबद्ध बसावटों को नजदीकी बारहमासी सड़कों और मंडियों से जोड़ने के लिए बनाई गई है। यह ग्रामीण कनेक्टिविटी में सुधार लाने का एक समर्पित राष्ट्रीय प्रयास है।

NODIA

45. (1) केवल I और II
जल जीवन मिशन का कार्यान्वयन सहभागी शासन के सिद्धांतों पर आधारित है, जिसमें 'ग्राम जल और स्वच्छता समितियों' का गठन एक अनिवार्य कदम है। इन समितियों के माध्यम से स्थानीय समुदाय अपनी जल प्रणालियों के प्रबंधन में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। मिशन का एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक उद्देश्य पेयजल की गुणवत्ता सुनिश्चित करके ग्रामीण क्षेत्रों में जलजनित बीमारियों के प्रसार को कम करना है। वित्तीय रूप से, इस मिशन का बोझ केवल पंचायतों पर नहीं है; इसमें केंद्र और राज्य सरकारों की प्रमुख भागीदारी होती है।

46. (4) ग्रामीण शौचालय बनाने के लिए शहरी ठेकेदारों पर पूर्ण निर्भरता।
स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण की सफलता का मुख्य आधार स्थानीय सामुदायिक भागीदारी और स्व-निर्माण की भावना है। इस मिशन के तहत व्यक्तिगत शौचालयों के निर्माण के लिए परिवारों को स्वयं उत्तरदायित्व लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, न कि शहरी ठेकेदारों पर निर्भर रहने के लिए। व्यवहार परिवर्तन संचार के माध्यम से लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जाता है। अपशिष्ट प्रबंधन और सुरक्षित तकनीक का उपयोग इस मिशन के अभिन्न अंग हैं जो ग्रामीण परिवेश को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने का लक्ष्य रखते हैं।

47. (1) सौर ऊर्जा
राजस्थान अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए देश के सबसे अनुकूल क्षेत्रों में से एक है। यहाँ वर्ष के अधिकांश दिनों में प्रचुर मात्रा में सूर्य का प्रकाश उपलब्ध रहता है, जो इसे विकेंद्रीकृत ग्रामीण ऊर्जा परियोजनाओं के लिए एक आदर्श स्रोत बनाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में सौर पंप, सौर स्ट्रीट लाइट और घरों के लिए सौर ऊर्जा प्रणालियों का व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है। यह नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत न केवल पर्यावरण के अनुकूल है, बल्कि दूर-दराज के ऑफ-ग्रिड क्षेत्रों में भी ऊर्जा पहुंच सुनिश्चित करता है।

48. (1) केवल I, II, III और V
राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एक व्यापक निर्धनता उन्मूलन ढांचा है जो ग्रामीण निर्धनों के 'सार्वभौमिक सामाजिक लामबंदी' पर केंद्रित है। यह मिशन सूक्ष्म उद्यमों को बढ़ावा देकर और स्वयं सहायता समूहों को 'सामुदायिक निवेश सहायता कोष' प्रदान करके आर्थिक सशक्तिकरण करता है। मिशन का मुख्य जोर पूंजी-प्रधान भारी उद्योगों पर नहीं, बल्कि स्थानीय स्तर पर आधारित टिकाऊ आजीविका के अवसरों पर है। निरंतर क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया जाता है।

49. (2) बैंक शाखा और ग्रामीण स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के बीच लेनदेन की सुविधा प्रदान करना।
स्वयं सहायता समूह आंदोलन में 'बैंक मित्र' या 'बैंक सखी' एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है। यह सामान्यतः उसी समुदाय की एक शिक्षित महिला होती है जो समूह के सदस्यों को बैंकिंग प्रक्रियाओं को समझने और लेनदेन करने में सहायता करती है। वह बैंक शाखा और ग्रामीणों के बीच की दूरी को कम करती है, जिससे महिलाओं के लिए ऋण प्राप्त करना और बचत जमा करना सरल हो जाता है। यह भूमिका वित्तीय समावेशन को प्रभावी बनाने और ग्रामीण महिलाओं में बैंकिंग आदतों को विकसित करने में अत्यंत सहायक है।

50. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
भारत में पंचायती राज के विकास में विभिन्न समितियों और कानूनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बलवंत राय मेहता समिति ने त्रि-स्तरीय व्यवस्था का सुझाव दिया, जबकि अशोक मेहता समिति ने द्वि-स्तरीय मॉडल की वकालत की। 73वें संवैधानिक संशोधन ने इन संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा और सुरक्षा प्रदान की। पेसा अधिनियम 1996 विशेष रूप से अनुसूचित क्षेत्रों के लिए बनाया गया था, जो वहां की पारंपरिक ग्राम सभाओं को सशक्त बनाता है। यह ऐतिहासिक क्रम पंचायती राज के क्रमिक सुदृढ़ीकरण को दर्शाता है।

51. (3) नगर निगम
राजस्थान में स्थानीय स्वशासन के दो पृथक ढांचे हैं: ग्रामीण और शहरी। ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद ग्रामीण स्थानीय सरकार अर्थात पंचायती राज संस्थाओं का भाग हैं। इसके विपरीत, 'नगर निगम' शहरी स्थानीय स्वशासन की एक संस्था है जो बड़े महानगरों के प्रशासन के लिए उत्तरदायी होती है। चूँकि नगर निगम शहरी क्षेत्रों से संबंधित है और शेष तीनों ग्रामीण संरचना से जुड़े हैं, इसलिए यह इस समूह में विषम या भिन्न है।

NODIA

52. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राज्य निर्वाचन आयोग एक स्वतंत्र संवैधानिक निकाय है जिसका मुख्य उत्तरदायित्व पंचायती राज संस्थाओं के स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराना है। भारतीय संविधान के प्रावधानों के तहत, यह सुनिश्चित करने के लिए कि स्थानीय निकायों के चुनाव समय पर और बिना किसी राजनीतिक हस्तक्षेप के हों, इस आयोग का गठन अनिवार्य किया गया है। राजस्थान में भी यही आयोग मतदाता सूची तैयार करने और चुनाव प्रक्रिया के प्रबंधन के लिए पूरी तरह उत्तरदायी है। यह स्थानीय लोकतंत्र की पवित्रता बनाए रखने के लिए अनिवार्य संस्था है।

53. (3) खंड विकास अधिकारी
राजस्थान की पंचायती राज व्यवस्था में प्रशासनिक कार्यों के प्रभावी निष्पादन के लिए प्रत्येक स्तर पर एक मुख्य अधिकारी नियुक्त किया जाता है। पंचायत समिति के स्तर पर, समस्त कार्यकारी और प्रशासनिक शक्तियां 'खंड विकास अधिकारी' (BDO) में निहित होती हैं। यह अधिकारी पंचायत समिति द्वारा लिए गए निर्णयों को लागू करने और विकास योजनाओं के पर्यवेक्षण के लिए उत्तरदायी होता है। वह निर्वाचित प्रतिनिधियों और सरकारी तंत्र के बीच एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक कड़ी के रूप में कार्य करता है जो विकास कार्यों की गति सुनिश्चित करता है।

54. (2) सामाजिक अंकेक्षण के निष्कर्षों पर ग्राम सभा में चर्चा की जानी चाहिए।
मनरेगा के तहत सामाजिक अंकेक्षण की प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण भाग ग्राम सभा में होने वाली सार्वजनिक चर्चा है। ऑडिट दल द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट को पूरे गांव के सामने पढ़ा जाता है, जहाँ ग्रामीण कार्य की गुणवत्ता, मजदूरी के भुगतान और रिकॉर्ड की शुद्धता पर अपनी राय देते हैं। यह प्रक्रिया अधिकारियों और निर्वाचित प्रतिनिधियों को सीधे जनता के प्रति जवाबदेह बनाती है। यदि कोई अनियमितता पाई जाती है, तो उसे ग्राम सभा के समक्ष स्वीकार कर सुधारात्मक कदम उठाए जाते हैं।

55. (1) केवल I, II और III
राजस्थान को स्वतंत्र भारत में आधुनिक पंचायती राज व्यवस्था के प्रणेता होने का गौरव प्राप्त है। राज्य ने 1959 में अपनी विशिष्ट विधायी व्यवस्था के माध्यम से त्रि-स्तरीय प्रणाली को सफलतापूर्वक लागू किया, जिसका अनुसरण शीघ्र ही आंध्र प्रदेश ने भी किया। इस पहल का मुख्य उद्देश्य औपनिवेशिक प्रशासनिक ढांचे के स्थान पर लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को बढ़ावा देना था। हालांकि नई व्यवस्था ने प्रशासन में आधुनिकता लाई, लेकिन इसने स्थानीय परंपराओं को पूरी तरह दरकिनार नहीं किया, बल्कि उन्हें एक औपचारिक सरकारी ढांचे में एकीकृत किया।

(4) शहरी यातायात की भीड़भाड़ में वृद्धि।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

88. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सुनिश्चित करता है कि एससी/एसटी जैसे कमजोर वर्गों का स्वयं सहायता समूहों में पर्याप्त प्रतिनिधित्व हो।
II. यह कृषि और गैर-कृषि क्षेत्रों के माध्यम से आजीविका को बढ़ावा देता है।
III. कार्यान्वयन मॉडल बिना किसी स्थानीय लचीलेपन के सभी राज्यों में पूरी तरह से एक समान है।
IV. यह स्वयं सहायता समूह मॉडल को बड़े पैमाने पर लागू करने के लिए सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों का उपयोग करता है।
V. यह मौजूदा गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के साथ जुड़ाव को प्रोत्साहित करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

89. राजस्थान में महिला स्वयं सहायता समूहों के कामकाज में "पंचसूत्र" शब्द पर अक्सर जोर दिया जाता है। यह संदर्भित करता है:
(1) सभी लघु किसानों द्वारा उगाई जाने वाली पांच प्रकार की कृषि फसलें।
(2) स्वयं सहायता समूह प्रबंधन के पांच सिद्धांत जिनमें नियमित बैठकें और बचत शामिल हैं।
(3) सरकार द्वारा विशेष वित्त पोषण के लिए चुने गए पांच विशिष्ट ग्रामीण जिले।
(4) पंचायती राज के भीतर ग्रामीण प्रशासन के पांच पदानुक्रमित स्तर।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

90. सूची I में ग्रामीण शासन की विशेषताओं को सूची II में उनके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
A. वार्ड सभा
B. ग्राम सभा
C. पंचायत समिति
D. जिला परिषद
सूची II:
i. वार्ड के मतदाता
ii. गांव के मतदाता
iii. मध्यवर्ती स्तर
iv. शीर्ष स्तर
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

91. सामान्य प्रावधानों के अनुसार राजस्थान में ग्राम सभा की बैठक के लिए गणपूर्ति (कोरम) कौन बनाता है?
(1) कुल सदस्यों के आधे
(2) कुल सदस्यों का दसवां हिस्सा (1/10)
(3) कुल सदस्यों का एक तिहाई (1/3)
(4) कुल सदस्यों का दो-तिहाई (2/3)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

92. कथन (A): ई-ग्राम पहल के कार्यान्वयन ने राजस्थान में ग्राम पंचायतों के कामकाज में पारदर्शिता बढ़ाई है।
कारण (R): ई-ग्राम स्थानीय अभिलेखों को डिजिटल बनाता है, वित्तीय लेखांकन को स्वचालित करता है और पंचायत के प्रस्तावों तक सार्वजनिक पहुंच प्रदान करता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

93. राजस्थान पंचायती राज अधिनियम के अनुसार, पंचायती राज संस्थाओं में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित करने की शक्ति किसमें निहित है?
(1) मंत्री की सलाह पर कार्य करने वाले राजस्थान के राज्यपाल।
(2) राज्य प्राधिकारी का प्रतिनिधित्व करने वाले जिला कलेक्टर।
(3) संवैधानिक प्रावधानों के आधार पर राज्य सरकार।
(4) भारत का निर्वाचन आयोग।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

94. मनरेगा में सामाजिक अंकेक्षण तंत्र के संस्थागतकरण से ग्रामीण राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन सा प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है?
(1) सभी ग्रामीण स्थानीय निकायों और विकेंद्रीकृत शासन संरचनाओं का उन्मूलन।
(2) सभी ग्रामीण सार्वजनिक कार्यों और सामुदायिक विकास पहलों का निजीकरण।
(3) अंकेक्षण और वित्तीय समीक्षा प्रक्रियाओं में सामुदायिक भागीदारी पर प्रतिबंध।
(4) मस्टर रोल अनियमितताओं का पता लगाना और दुरुपयोग की गई निधि की वसूली।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

95. 1959 के नागौर प्रयोग के बाद राजस्थान में पंचायती राज के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

Downloaded from www.pdf.tube

बढ़ाकर टीकाकरण और अन्य निवारक सेवाओं को भी प्रभावी बनाया है।

65. (2) केवल II और III
स्वजल धारा योजना का मुख्य दर्शन केंद्रीकृत प्रशासन के स्थान पर सामुदायिक सशक्तिकरण पर आधारित है। यह योजना समुदायों को अपनी पेयजल परियोजनाओं के नियोजन, कार्यान्वयन और प्रबंधन की पूरी जिम्मेदारी सौंपती है। इस व्यवस्था के तहत निर्मित सभी संपत्तियों का स्वामित्व और नियंत्रण ग्राम पंचायतों के पास रहता है, जो यह सुनिश्चित करती हैं कि जलापूर्ति निरंतर और स्वच्छ बनी रहे। यह दृष्टिकोण जल प्रबंधन में लोगों की भागीदारी को बढ़ावा देता है और यह सुनिश्चित करता है कि योजनाएं स्थानीय जरूरतों के अनुरूप हों।

66. (1) यह मानव उत्सर्जन को वहीं पर मूल्यवान कृषि खाद में बदल देता है।
ग्रामीण राजस्थान में दोहरे गड्ढे वाले पोर-फ्लश शौचालय की तकनीक सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है क्योंकि यह पर्यावरण के अनुकूल और किफायती है। इसमें दो गड्ढे होते हैं जिनका उपयोग बारी-बारी से किया जाता है। जब एक गड्ढा भर जाता है, तो उसे बंद कर दिया जाता है और समय के साथ उसमें जमा मल प्राकृतिक रूप से अपघटित होकर सुरक्षित खाद में बदल जाता है। यह खाद कृषि के लिए अत्यंत पोषक होती है और इसे बिना किसी स्वास्थ्य जोखिम के खेतों में उपयोग किया जा सकता है।

67. (3) विद्युत पंप सेटों के माध्यम से मशीनीकरण और विश्वसनीय सिंचाई में वृद्धि।
राजस्थान में ग्रामीण विद्युतीकरण के व्यापक प्रसार का सर्वाधिक सकारात्मक प्रभाव कृषि क्षेत्र पर पड़ा है। बिजली की उपलब्धता ने किसानों को डीजल पंपों के महंगे विकल्प से मुक्त कर सस्ते विद्युत पंप सेटों के उपयोग की सुविधा दी है। इससे न केवल सिंचाई की लागत कम हुई है, बल्कि खेतों तक पानी पहुँचाना भी अधिक सुगम और विश्वसनीय हो गया है। परिणामस्वरूप, सिंचित भूमि के क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है और किसान अब वर्ष भर में एक से अधिक फसलें उगाने में सक्षम हुए हैं।

68. (1) केवल I, II, III और V
राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एक पारदर्शी और परिणाम-उन्मुख निगरानी ढांचे का उपयोग करता है। इसमें स्वयं सहायता समूह के सदस्यों द्वारा सहभागी निगरानी को महत्व दिया जाता है, जहाँ वे स्वयं अपनी प्रगति का आकलन करते हैं। एक सुदृढ़ 'प्रबंधन सूचना प्रणाली' का उपयोग आंकड़ों के वास्तविक समय में विश्लेषण के लिए किया जाता है। नियमित श्रेणीकरण और सामाजिक अंकेक्षण यह सुनिश्चित करते हैं कि समूहों को उनकी कार्यक्षमता के आधार पर ऋण और वित्तीय सहायता प्राप्त हो। यह बहुस्तरीय निगरानी तंत्र मिशन की सफलता सुनिश्चित करता है।

69. (3) स्थानीय हस्तशिल्प, मसालों और गैर-काष्ठ वन उत्पादों का विपणन करना।
राजस्थान में महिला स्वयं सहायता समूहों ने स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके छोटे उद्यमों के माध्यम से अपनी पहचान बनाई है। ये समूह मुख्य रूप से पारंपरिक हस्तशिल्प, घर पर बने शुद्ध मसालों, पापड़, अचार और वनों से प्राप्त होने वाले उत्पादों जैसे शहद और गोंद के प्रसंस्करण और विपणन में सक्रिय हैं। यह सामूहिक आर्थिक गतिविधि महिलाओं को घर के पास ही रोजगार के अवसर प्रदान करती है और उनकी आय में वृद्धि करती है। इसके माध्यम से राजस्थान की पारंपरिक कला और उत्पादों को व्यापक बाजार मिल रहा है।

70. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
भारतीय संविधान का भाग 9 पंचायतों से संबंधित विभिन्न अनुच्छेदों के माध्यम से उनके कार्यों को स्पष्ट करता है। अनुच्छेद 243A ग्राम सभा की शक्तियों और कार्यों को परिभाषित करता है। अनुच्छेद 243D विभिन्न वर्गों और महिलाओं के लिए सीटों के आरक्षण को अनिवार्य बनाता है। पंचायतों के चुनाव की जिम्मेदारी अनुच्छेद 243K के तहत राज्य निर्वाचन आयोग को सौंपी गई है, जबकि अनुच्छेद 243I स्थानीय निकायों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा के लिए राज्य वित्त आयोग के गठन का प्रावधान करता है।

71. (4) जिला परिषद के अध्यक्ष का चुनाव सीधे वयस्क मतदाताओं द्वारा किया जाता है।
राजस्थान में जिला परिषद की संरचना में निर्वाचित और पदेन दोनों प्रकार के सदस्य होते हैं। इसमें जिले के क्षेत्रीय निर्वाचन क्षेत्रों से सीधे निर्वाचित सदस्य, क्षेत्र के विधायक और सांसद, तथा सभी पंचायत समितियों के प्रधान सम्मिलित होते हैं। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जिला परिषद के अध्यक्ष, जिसे 'जिला प्रमुख' कहा जाता है, का चुनाव सीधे जनता द्वारा नहीं किया जाता। बल्कि, जिला परिषद के निर्वाचित सदस्य अपने मध्य से ही बहुमत द्वारा जिला प्रमुख का चुनाव करते हैं। यह एक अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रक्रिया है।

72. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ग्राम सभा को ग्रामीण शासन की 'विधायिका' माना जाता है क्योंकि यह पंचायत की कार्यप्रणाली पर सीधा नियंत्रण रखती है। यह संस्था न केवल नई योजनाओं का प्रस्ताव करती है, बल्कि पिछली अवधि के व्ययों और अंकेक्षण रिपोर्टों की गहन समीक्षा भी करती है। ग्राम सभा के माध्यम से ग्रामीण अपने प्रतिनिधियों से कार्यों का विवरण मांग सकते हैं, जिससे पंचायत के कामकाज में पारदर्शिता और जवाबदेही बनी रहती है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि सार्वजनिक धन का उपयोग गांव की वास्तविक भलाई के लिए हो।

73. (1) 27 नवंबर, 1995
राजस्थान में पंचायती राज संस्थाओं के चुनावों के लिए एक विशिष्ट योग्यता नियम लागू है, जिसे जनसंख्या नियंत्रण को प्रोत्साहित करने के लिए बनाया गया है। इस नियम के अनुसार, यदि किसी व्यक्ति के 27 नवंबर, 1995 के पश्चात तीसरे बच्चे का जन्म हुआ है, तो वह पंचायत चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य

NODIA

16. शहरी स्थानीय निकायों द्वारा स्वयं का राजस्व उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सी एक प्रमुख प्रशासनिक चुनौती है?
(1) स्थानीय निकायों को कर अधिरोपित करने की अनुमति देने वाले संवैधानिक प्रावधानों का अभाव
(2) संपत्ति कर का त्रुटिपूर्ण मूल्यांकन और निम्न संग्रह दक्षता
(3) अत्यधिक कुशल संपत्ति कर मूल्यांकन प्रणालियों पर अति-निर्भरता
(4) नागरिक सुविधाओं के लिए उपयोगकर्ता शुल्क लगाने पर वैधानिक प्रतिबंध
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. राजस्थान में स्थानीय निकायों के स्वयं के राजस्व स्रोत के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) पंचायतों के पास राज्य विधानमंडल द्वारा अधिकृत कुछ पथकर और शुल्क अधिरोपित करने की शक्ति है।
(2) राज्य की अनुमति के बिना अपने अधिकार क्षेत्र में नए आयकर प्रारंभ करने की स्वायत्त शक्ति।
(3) जलापूर्ति और स्वच्छता के लिए उपयोगकर्ता शुल्क शहरी स्थानीय निकायों के स्व-स्रोत राजस्व का एक घटक है।
(4) संपत्ति कर शहरी स्थानीय निकायों के लिए राजस्व का एक महत्वपूर्ण संभावित स्रोत है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. स्थानीय निकायों को 15वें वित्त आयोग के अनुदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने स्थानीय निकायों के लिए बद्ध (tied) और अबद्ध (untied) दोनों अनुदानों की अनुशंसा की।
II. बद्ध अनुदान मुख्य रूप से पेयजल और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के लिए आवंटित किए गए थे।
III. इसने छावनी बोर्डों (Cantonment Boards) को किसी भी वित्तीय अनुदान प्राप्त करने से पूर्णतः बाहर रखा।
IV. अनुदानों का उद्देश्य बुनियादी सेवाओं को प्रदान करने के लिए स्थानीय निकायों की क्षमता को सुदृढ़ करना था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. स्थानीय निकायों को प्रदान किए जाने वाले बद्ध (tied) और अबद्ध (untied) अनुदानों के बीच सबसे उपयुक्त अंतर क्या है?
(1) बद्ध अनुदान शहरी निकायों के लिए हैं, जबकि अबद्ध अनुदान विशेष रूप से ग्रामीण निकायों के लिए हैं।
(2) बद्ध अनुदानों के लिए स्थानीय निकाय से मिलान निधि की आवश्यकता होती है, जबकि अबद्ध अनुदान स्वायत्त व्यय की शक्ति प्रदान नहीं करते हैं।
(3) बद्ध अनुदान विशिष्ट क्षेत्रों के लिए होते हैं, जबकि अबद्ध अनुदान निकाय के विवेक पर स्थानीय रूप से पहचानी गई आवश्यकताओं के लिए होते हैं।
(4) बद्ध अनुदान व्यपगत (non-lapsable) नहीं होते हैं, जबकि अबद्ध अनुदान वित्तीय वर्ष के अंत में व्यपगत हो जाते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. स्थानीय निकायों के लिए अबद्ध (untied) अनुदानों का महत्व मुख्य रूप से किसमें निहित है?
(1) केंद्र सरकार की योजनाओं का कठोर अनुपालन सुनिश्चित करना
(2) स्थानीय निकायों की अंकेक्षण और जवाबदेही आवश्यकताओं को कम करना
(3) स्वयं के राजस्व सृजन की आवश्यकता को समाप्त करना
(4) स्थानीय स्वायत्तता और नियोजन के विकेंद्रीकरण को बढ़ाना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. स्थानीय निकायों के क्षमता निर्माण (Capacity building) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: स्थानीय निकायों के लिए हस्तांतरित निधियों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने हेतु वित्तीय प्रबंधन में क्षमता निर्माण आवश्यक है।
कथन II: आधुनिक लेखा सॉफ्टवेयर और उचित अंकेक्षण मानक स्थानीय निकायों की वित्तीय क्षमता बढ़ाने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरण हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I सही है
(2) केवल कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) न तो कथन I और न ही कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. स्थानीय निकाय वित्त के अंकेक्षण और जवाबदेही से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. समय पर अंकेक्षण होना कुछ प्रदर्शन अनुदान (performance grants) प्राप्त करने के लिए एक अनिवार्य शर्त है।
II. भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG) स्थानीय निकाय अंकेक्षण के लिए तकनीकी मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करते हैं।
III. सामाजिक अंकेक्षण (Social audit) एक ऐसा तंत्र है जिसका उपयोग विशेष रूप से शहरी स्थानीय निकायों के लिए किया जाता है, पंचायतों के लिए नहीं।
IV. स्थानीय निकायों की अंकेक्षण रिपोर्ट को कभी भी राज्य विधानमंडल के समक्ष रखने की आवश्यकता नहीं होती है।
V. राज्य स्तर पर स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग स्थानीय निकायों का प्राथमिक वैधानिक अंकेक्षण करते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

सीधे ग्रामीणों और सरपंच के साथ कार्य करता है। खंड स्तर पर 'खंड विकास अधिकारी' कई ग्राम पंचायतों के कार्यों का पर्यवेक्षण और समन्वय करता है। पदानुक्रम में शीर्ष पर जिला परिषद में 'मुख्य कार्यकारी अधिकारी' (CEO) होता है, जो पूरे जिले के ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के लिए उत्तरदायी होता है और राज्य सरकार के साथ समन्वय स्थापित करता है।

83. (3) आवाससॉफ्ट
प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के कार्यान्वयन में पूर्ण पारदर्शिता और वास्तविक समय की निगरानी सुनिश्चित करने के लिए 'आवाससॉफ्ट' नामक एक उन्नत प्रबंधन सूचना प्रणाली का उपयोग किया जाता है। यह ऑनलाइन मंच लाभार्थियों के पंजीकरण, उनकी पात्रता के सत्यापन, किस्तों के भुगतान और घरों के निर्माण की प्रगति को ट्रैक करने की सुविधा प्रदान करता है। इसमें प्रत्येक चरण पर भू-चिह्नित (जियो-टैग्ड) चित्र अपलोड करना अनिवार्य है, जिससे फर्जीवाड़े की संभावना समाप्त हो जाती है और योजना की दक्षता और जवाबदेही बढ़ जाती है।

84. (3) 500 व्यक्ति
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत मैदानी क्षेत्रों में स्थित ऐसी ग्रामीण बसावटों को प्राथमिकता दी जाती है जिनकी जनसंख्या 500 या उससे अधिक है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि निर्मित सड़कें दीर्घकाल तक टिकाऊ रहें, योजना के अनुबंधों में 5 वर्ष की अनिवार्य रखरखाव अवधि सम्मिलित की गई है। इस अवधि के दौरान ठेकेदार को सड़क की मरम्मत और देखभाल की जिम्मेदारी लेनी होती है। यह नीतिगत प्रावधान ग्रामीण संपत्तियों की गुणवत्ता बनाए रखने और सार्वजनिक धन के सदुपयोग को सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

85. (1) केवल I और II
जल जीवन मिशन केवल जल की आपूर्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जल स्रोतों के संरक्षण और 'धूसर जल' (ग्रे वाटर) के पुन: उपयोग पर भी समान ध्यान देता है। इसके तहत वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण के माध्यम से स्रोत की स्थिरता सुनिश्चित की जाती है। मिशन का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि घरों के साथ-साथ सभी सार्वजनिक संस्थानों, जैसे स्कूलों और आंगनवाड़ी केंद्रों में भी अनिवार्य रूप से नल का जल उपलब्ध हो। यह समग्र दृष्टिकोण ग्रामीण स्वच्छता और स्वास्थ्य में व्यापक सुधार लाता है।

86. (2) सुरक्षित स्वच्छता सुविधाओं के उपयोग और पहुंच में वृद्धि।
स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण की वास्तविक सफलता केवल निर्मित शौचालयों की संख्या से नहीं, बल्कि उनके निरंतर उपयोग और सुरक्षित स्वच्छता तक ग्रामीण आबादी की पहुंच से मापी जाती है। मुख्य संकेतक यह है कि क्या लोग खुले में शौच की प्रवृत्ति को त्यागकर शौचालय का उपयोग कर रहे हैं। इसके साथ ही, अपशिष्ट प्रबंधन और परिवेश की स्वच्छता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। व्यवहार परिवर्तन और सामुदायिक स्वास्थ्य में सुधार इस मिशन के सबसे विश्वसनीय और दीर्घकालिक परिणाम माने जाते हैं जो इसकी सफलता को प्रमाणित करते हैं।

87. (4) शहरी यातायात की भीड़भाड़ में वृद्धि।
ग्रामीण विद्युतीकरण के लाभ मुख्य रूप से ग्रामीण जीवन के सुधार तक सीमित हैं और इनका शहरी यातायात की भीड़भाड़ से कोई सीधा सकारात्मक संबंध नहीं है। बिजली पहुँचने से गाँवों में शिक्षा के लिए सायंकाल में प्रकाश उपलब्ध होता है, स्वास्थ्य केंद्रों में उपकरणों का संचालन सुगम होता है और कृषि कार्यों में मशीनीकरण बढ़ता है। यह गाँवों में लघु उद्योगों को भी प्रोत्साहित करता है, जिससे स्थानीय रोजगार सृजित होता है। विद्युतीकरण का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच जीवन स्तर के अंतर को कम करना है।

88. (2) केवल I, II, IV और V
राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एक समावेशी कार्यक्रम है जो अनुसूचित जाति, जनजाति और अन्य कमजोर वर्गों की महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में प्राथमिकता के साथ सम्मिलित करता है। यह मिशन कृषि के साथ-साथ गैर-कृषि आधारित आजीविका के विविध अवसर प्रदान करता है। इसकी सफलता का मुख्य आधार 'सामुदायिक संसाधन व्यक्ति' हैं जो स्थानीय स्तर पर समूहों को प्रशिक्षित और प्रेरित करते हैं। यह मिशन लचीला है और राज्यों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार अपनी रणनीतियों को अनुकूलित करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

89. (2) स्वयं सहायता समूह प्रबंधन के पांच सिद्धांत जिनमें नियमित बैठकें और बचत शामिल हैं।
स्वयं सहायता समूहों की कार्यकुशलता और अनुशासन बनाए रखने के लिए "पंचसूत्र" का पालन अनिवार्य माना जाता है। इसमें पांच मूलभूत नियम सम्मिलित हैं: नियमित बैठकें करना, सदस्यों द्वारा नियमित बचत करना, समूह के भीतर आपसी आंतरिक ऋण प्रदान करना, समय पर ऋण की वसूली सुनिश्चित करना और पारदर्शी बही-खाता संधारण करना। इन सिद्धांतों का दृढ़ता से पालन करने वाले समूहों को ही बैंकों से वित्तीय सहायता और सरकारी अनुदान प्राप्त करने के लिए पात्र माना जाता है। यह समूहों की आर्थिक स्थिरता को सुदृढ़ करता है।

NODIA

90. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान में स्थानीय स्वशासन की संरचना विभिन्न स्तरों पर नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित करती है। 'वार्ड सभा' सबसे निचला स्तर है जिसमें केवल संबंधित वार्ड के मतदाता सम्मिलित होते हैं। 'ग्राम सभा' में पूरे गांव के पंजीकृत मतदाता होते हैं और यह जमीनी स्तर पर निर्णय लेने वाली सर्वोच्च संस्था है। 'पंचायत समिति' खंड स्तर पर एक मध्यवर्ती प्रशासनिक कड़ी के रूप में कार्य करती है। 'जिला परिषद' पूरे जिले के लिए सर्वोच्च संस्था है जो जिले के विकास कार्यों की योजना और निगरानी करती है।

91. (2) कुल सदस्यों का दसवां हिस्सा (1/10)
ग्राम सभा की बैठकों की वैधता सुनिश्चित करने के लिए गणपूर्ति (कोरम) का होना आवश्यक है। राजस्थान के पंचायती राज प्रावधानों के अनुसार, बैठक प्रारंभ करने के लिए ग्राम सभा के कुल सदस्यों के कम से कम दसवें हिस्से (1/10) की उपस्थिति अनिवार्य है। यदि कोरम पूरा नहीं होता है, तो बैठक स्थगित

अध्याय 18
राज्य वित्त आयोग एवं राजकोषीय विकेंद्रीकरण

1. भारत के संविधान के किस अनुच्छेद के तहत पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा के लिए राज्य वित्त आयोग का गठन किया जाता है?
   (1) अनुच्छेद 243G
   (2) अनुच्छेद 243H
   (3) अनुच्छेद 243I
   (4) अनुच्छेद 243K
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

2. कौन सा संवैधानिक प्रावधान नगरपालिकाओं (शहरी स्थानीय निकायों) की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करने के लिए राज्य वित्त आयोग को अधिदेशित करता है?
   (1) अनुच्छेद 243P
   (2) अनुच्छेद 243W
   (3) अनुच्छेद 243X
   (4) अनुच्छेद 243Y
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

3. राज्य वित्त आयोग की संरचना और नियुक्ति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: राज्य वित्त आयोग का गठन राज्य के राज्यपाल द्वारा किया जाता है।
   कथन II: आयोग की संरचना, सदस्यों के रूप में नियुक्ति के लिए आवश्यक योग्यताएं और उनके चयन की विधि राज्य विधानमंडल द्वारा विधि के माध्यम से निर्धारित की जाती है।
   उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
   (1) केवल कथन I सही है
   (2) केवल कथन II सही है
   (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
   (4) न तो कथन I और न ही कथन II सही है
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

4. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान राज्य वित्त आयोग के विचारार्थ विषयों (Terms of Reference) का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
   (1) संघ और राज्य स्तरों के बीच शुद्ध कर प्राप्तियों के व्यापक ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज वितरण की अनुशंसा करना
   (2) विभिन्न स्थानीय निकायों में केंद्र प्रायोजित योजनाओं के क्रियान्वयन और राजकोषीय प्रभाव की निगरानी करना
   (3) प्रतिवर्ष पंचायतों और नगरपालिकाओं के खातों का औपचारिक वैधानिक अंकेक्षण और निरीक्षण करना
   (4) राज्य और स्थानीय निकायों के बीच, तथा स्थानीय निकायों के मध्य राज्य करों के वितरण के सिद्धांतों की अनुशंसा करना
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

5. सूची I में दिए गए संवैधानिक अनुच्छेदों को सूची II में दिए गए उनके संबंधित प्रावधानों के साथ सुमेलित कीजिए:
   सूची I: (संवैधानिक अनुच्छेद)
   A. अनुच्छेद 243I
   B. अनुच्छेद 243Y
   C. अनुच्छेद 280
   D. अनुच्छेद 243H
   सूची II: (प्रावधान)
   i. केंद्रीय वित्त आयोग का गठन
   ii. पंचायतों की कर अधिरोपित करने की शक्ति और निधियां
   iii. नगरपालिकाओं की वित्तीय स्थिति की समीक्षा
   iv. पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा
   (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
   (2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
   (3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
   (4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

6. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य वित्त आयोग का निर्धारित कार्य नहीं है?
   (1) स्थानीय निकायों को सौंपे जाने वाले करों, शुल्कों, पथकरों और फीसों के निर्धारण की अनुशंसा करना
   (2) स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग के सदस्यों की नियुक्ति करना
   (3) राज्य की संचित निधि से स्थानीय निकायों को सहायता अनुदान की अनुशंसा करना
   (4) स्थानीय निकायों की वित्तीय स्थिति में सुधार के लिए आवश्यक उपायों की अनुशंसा करना
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

7. राजकोषीय हस्तांतरण के संदर्भ में, "ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण" (Vertical Devolution) शब्द का क्या अर्थ है?
   (1) पंचायती राज संस्थाओं के विभिन्न स्तरों के बीच आवंटित निधियों का वितरण
   (2) केंद्र सरकार से राज्य सरकारों को अनुदान का वितरण
   (3) जिलों में जनसंख्या घनत्व के आधार पर निधियों का आवंटन
   (4) राज्य सरकार से स्थानीय निकायों को राज्य के विभाज्य कर पूल के हिस्से का आवंटन

Downloaded from www.pdf.tube

लिए प्रभावी जल प्रबंधन अनिवार्य है। जल की न्यूनता का एक बड़ा कारण भूजल स्तर में निरंतर आ रही गिरावट है, जिसे रोकने के लिए पुनर्भरण तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। मरुस्थलीय क्षेत्रों में दूर-दराज की बसावटों तक सड़क और परिवहन संपर्क पहुँचाना एक कठिन कार्य है। इन बाधाओं को दूर करने के लिए प्रतिनिधियों का निरंतर क्षमता निर्माण आवश्यक है।

www.nodia.in

NODIA

माना जाता है। यह कट-ऑफ तिथि कानून के प्रभावी होने का समय है, और इसके बाद परिवार के आकार में वृद्धि को चुनावी भागीदारी के लिए एक बाधा के रूप में रखा गया है।

74. (1) सामाजिक अंकेक्षण निदेशालय
राजस्थान में मनरेगा और अन्य ग्रामीण विकास योजनाओं के पारदर्शी अंकेक्षण के लिए एक समर्पित 'सामाजिक अंकेक्षण निदेशालय' की स्थापना की गई है। यह निदेशालय ग्राम स्तर पर सामाजिक अंकेक्षण की पूरी प्रक्रिया की योजना बनाने और उसे सुगम बनाने के लिए उत्तरदायी है। इसके मुख्य कार्यों में स्वतंत्र सामाजिक लेखा परीक्षकों और प्रशिक्षित संसाधन व्यक्तियों की नियुक्ति करना सम्मिलित है जो बिना किसी प्रशासनिक दबाव के निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करते हैं। यह संस्थागत ढांचा ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रष्टाचार रोकने और जवाबदेही बढ़ाने के लिए अनिवार्य है।

75. (2) केवल I, III और IV
1959 में पंचायती राज के उद्घाटन के लिए नागौर का चयन इसके विशिष्ट ग्रामीण चरित्र और राजस्थान के हृदय में भौगोलिक स्थिति के कारण किया गया था। यह क्षेत्र किसी बड़े औद्योगिक आधार के स्थान पर एक जीवंत कृषि समाज का प्रतिनिधित्व करता था, जहाँ सामुदायिक जीवन के गहरे मूल्य विद्यमान थे। नेतृत्व का उद्देश्य यह संदेश देना था कि सत्ता का विकेंद्रीकरण सबसे पहले उन लोगों तक पहुँचना चाहिए जो मिट्टी से जुड़े हैं। यह चयन लोकतांत्रिक मूल्यों को ग्रामीण परिवेश में गहराई से स्थापित करने का एक प्रतीकात्मक प्रयास था।

76. (2) ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत के दैनिक प्रशासनिक कार्यों और योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए 'ग्राम विकास अधिकारी' (VDO) की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। यह कार्मिक सीधे ग्राम पंचायत के नियंत्रण में कार्य करता है और सरपंच के साथ मिलकर विकास कार्यों का निष्पादन सुनिश्चित करता है। ग्राम विकास अधिकारी ग्राम सभा की बैठकों का अभिलेख रखने, बजट तैयार करने और सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों की सूची प्रबंधित करने के लिए उत्तरदायी होता है। वह ग्राम स्तर पर सरकार और जनता के बीच मुख्य प्रशासनिक सेतु है।

77. (3) राष्ट्रीय आयकर का प्रत्यक्ष मूल्यांकन और संग्रह
जिला योजना समिति का मुख्य कार्य स्थानीय विकास और विकेंद्रीकृत नियोजन से संबंधित है, जिसमें आयकर जैसे राष्ट्रीय करों का संग्रह सम्मिलित नहीं है। यह समिति मुख्य रूप से पंचायतों और नगर पालिकाओं के बीच समन्वय स्थापित करने, साझा संसाधनों जैसे जल और स्थानिक योजना के प्रबंधन और एकीकृत विकास प्रारूप तैयार करने के लिए उत्तरदायी है। इसका उद्देश्य संसाधनों का कुशल वितरण और शहरी-ग्रामीण असंतुलन को कम करना है। आयकर प्रशासन पूर्णतः केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र और केंद्रीय राजस्व विभाग का विषय है।

78. (4) सहभागी, विकेंद्रीकृत विकास योजनाएं बनाने के लिए स्थानीय निकायों को प्रोत्साहित किया।
पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि ने राजस्थान में स्थानीय शासन को वित्तीय रूप से अधिक स्वायत्त और योजनाबद्ध बनाया। इस निधि की एक अनिवार्य शर्त यह थी कि धन का उपयोग केवल उन्हीं परियोजनाओं के लिए किया जाएगा जिन्हें स्थानीय समुदायों ने अपनी विकेंद्रीकृत योजनाओं में सम्मिलित किया है। इससे पंचायतों और जिला परिषदों में स्वयं अपनी समस्याओं को पहचानने और उनके समाधान के लिए योजना बनाने की संस्कृति विकसित हुई। इसने न केवल बुनियादी ढांचे का विकास किया, बल्कि स्थानीय प्रतिनिधियों की नियोजन क्षमता को भी सुदृढ़ता प्रदान की।

79. (1) काम के लिए युवाओं के पलायन के कारण एक वृद्ध जनसांख्यिकीय प्रोफाइल तैयार होना।
ग्रामीण राजस्थान से शहरी क्षेत्रों की ओर युवाओं का निरंतर पलायन गाँवों के जनसांख्यिकीय ढांचे को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। जब युवा और कुशल श्रमिक रोजगार की खोज में बाहर चले जाते हैं, तो गाँवों में मुख्य रूप से बुजुर्ग, महिलाएं और बच्चे ही शेष रह जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में एक 'वृद्ध जनसांख्यिकीय प्रोफाइल' तैयार हो जाता है, जिससे कृषि और अन्य स्थानीय गतिविधियों के लिए शारीरिक श्रम की न्यूनता हो जाती है। यह सामाजिक संरचना और पारंपरिक ग्रामीण जीवन को गहराई से प्रभावित करता है।

80. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
ग्रामीण विकास में विभिन्न चुनौतियों का समाधान विशिष्ट पहलों के माध्यम से किया जाता है। मनरेगा में समय पर मजदूरी भुगतान सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। डिजिटल गाँव की परिकल्पना इंटरनेट कनेक्टिविटी और तकनीकी साक्षरता पर निर्भर करती है। ग्रामीण विद्युतीकरण के साथ ग्रिड की स्थिरता और निरंतर बिजली आपूर्ति बनाए रखना आवश्यक है। ग्राम सभाओं में अक्सर 'अभिजात वर्ग के आधिपत्य' की समस्या देखी जाती है, जहाँ प्रभावशाली लोग निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं, जिसे रोकने के लिए पारदर्शिता अनिवार्य है।

81. (2) ऊंट
राजस्थान की मरुस्थलीय पारिस्थितिकी में ऊंट का स्थान अद्वितीय है, जिसे अपनी शारीरिक विशेषताओं के कारण "रेगिस्तान का जहाज" कहा जाता है। यह पशु विषम तापमान और जल की न्यूनता में भी जीवित रह सकता है, जिससे यह थार मरुस्थल के पशुपालकों के लिए आजीविका का मुख्य साधन बना हुआ है। ऊंट का उपयोग परिवहन, कृषि कार्यों और दुग्ध उत्पादन के लिए किया जाता है। राज्य सरकार ने इसके सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व को देखते हुए इसे 'राज्य पशु' का दर्जा प्रदान किया है।

82. (2) B, C, A
पंचायती राज के सुचारू संचालन के लिए एक त्रि-स्तरीय प्रशासनिक पदानुक्रम निर्मित किया गया है। ग्राम पंचायत स्तर पर 'ग्राम विकास अधिकारी' प्राथमिक प्रशासनिक इकाई है जो

Click Here to Buy book on Amazon

(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. हस्तांतरण (Devolution) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण स्थानीय निकायों को हस्तांतरित किए जाने वाले राज्य करों के कुल हिस्से को निर्धारित करता है।

II. क्षैतिज हस्तांतरण (Horizontal Devolution) व्यक्तिगत पंचायतों और शहरी स्थानीय निकायों के बीच आवंटन का सूत्र निर्धारित करता है।

III. क्षैतिज हस्तांतरण में राज्य वित्त आयोग की कोई भूमिका नहीं होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. पंचायतों और शहरी स्थानीय निकायों के बीच क्षैतिज हस्तांतरण सामान्यतः कुछ भारित मानदंडों पर आधारित होता है। राज्य वित्त आयोगों द्वारा प्राथमिक मानदंड के रूप में सामान्यतः किसका उपयोग किया जाता है?

(1) जिले की साक्षरता दर
(2) क्षेत्र का औद्योगिक उत्पादन
(3) स्थानीय निकाय की जनसंख्या
(4) स्थानीय निकाय में निर्वाचित प्रतिनिधियों की संख्या
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, कथन (A) और कारण (R)। नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।

कथन (A): राज्य वित्त आयोग राज्य की संचित निधि से पंचायतों को सहायता अनुदान के सिद्धांतों की अनुशंसा करता है।

कारण (R): सहायता अनुदान मुख्य रूप से स्थानीय निकायों के लिए स्वयं के सभी राजस्व संग्रह की आवश्यकताओं को समाप्त करने के लिए निर्मित किए गए हैं।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. राज्य वित्त आयोग द्वारा स्थानीय निकायों को अनुशंसित सहायता अनुदान का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

(1) संपत्ति कर के संग्रह को पूर्णतः प्रतिस्थापित करना
(2) राज्य निर्वाचन आयोग के चुनावी व्ययों का वित्तपोषण करना
(3) विधानसभा सदस्यों के मासिक वेतन और भत्तों का प्रावधान करना
(4) राजकोषीय अंतर (fiscal gap) को पाटना और बुनियादी नागरिक सेवाओं की आपूर्ति में सहायता करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान राज्य वित्त आयोग के अध्यक्षों के सही कालानुक्रमिक अनुक्रम को दर्शाता है?

(1) के.के. गोयल - हीरा लाल देवपुरा - माणिक चंद सुराणा - बी.डी. कल्ला
(2) के.के. गोयल - माणिक चंद सुराणा - हीरा लाल देवपुरा - बी.डी. कल्ला
(3) हीरा लाल देवपुरा - के.के. गोयल - बी.डी. कल्ला - माणिक चंद सुराणा
(4) बी.डी. कल्ला - के.के. गोयल - हीरा लाल देवपुरा - माणिक चंद सुराणा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. राजस्थान के प्रथम राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष कौन थे?

(1) हीरा लाल देवपुरा
(2) बी.डी. कल्ला
(3) के.के. गोयल
(4) प्रद्युम्न सिंह
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. निम्नलिखित में से कौन सा सामान्यतः पंचायतों के लिए स्वयं का राजस्व स्रोत (own source revenue) नहीं है?

(1) संपत्ति कर
(2) वृत्तिक कर (Professional tax)
(3) ग्रामीण हाट-बाजारों पर शुल्क
(4) सीमा शुल्क (Customs duty)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. सूची I में दिए गए राजस्थान के राज्य वित्त आयोगों को सूची II में दिए गए उनके संबंधित अध्यक्षों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (राज्य वित्त आयोग)

A. प्रथम SFC
B. द्वितीय SFC
C. चतुर्थ SFC
D. छठा SFC

सूची II: (अध्यक्ष)

i. बी.डी. कल्ला
ii. के.के. गोयल
iii. प्रद्युम्न सिंह
iv. हीरा लाल देवपुरा

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

कर दी जाती है और नई तिथि पर आयोजित की जाती है। इस नियम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि स्थानीय विकास के निर्णय केवल कुछ लोगों द्वारा नहीं, बल्कि समुदाय के एक उचित प्रतिनिधित्व द्वारा लिए जाएं।

92. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ई-ग्राम पहल ने राजस्थान में ग्राम पंचायतों के प्रशासनिक कार्यों में आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का समावेश किया है। इसके माध्यम से पंचायतों के वित्तीय लेन-देन, बैठकों के प्रस्ताव और अन्य महत्वपूर्ण अभिलेखों को डिजिटल रूप में सार्वजनिक पोर्टल पर उपलब्ध कराया जाता है। यह डिजिटल सशक्तिकरण न केवल कार्यप्रणाली को तीव्र बनाता है, बल्कि आम नागरिकों को पंचायत के कार्यों की जानकारी तक सीधी पहुंच प्रदान कर पारदर्शिता भी बढ़ाता है। यह भ्रष्टाचार को कम करने और जवाबदेही सुनिश्चित करने का प्रभावी समाधान है।

93. (3) संवैधानिक प्रावधानों के आधार पर राज्य सरकार।
पंचायती राज संस्थाओं में समाज के पिछड़े वर्गों और महिलाओं की उचित भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई है। भारतीय संविधान के 73वें संशोधन के अधिदेश के अनुसार, राज्य सरकार के पास अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिलाओं के लिए सीटें और अध्यक्ष पद आरक्षित करने की शक्ति है। आरक्षण का प्रतिशत इन वर्गों की जनसंख्या के अनुपात पर आधारित होता है। महिलाओं के लिए राजस्थान में अब 50 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण नेतृत्व में महिलाओं की सक्रिय भूमिका को प्रोत्साहित करना है।

94. (4) मस्टर रोल अनियमितताओं का पता लगाना और दुरुपयोग की गई निधि की वसूली।
मनरेगा में सामाजिक अंकेक्षण तंत्र के संस्थागतकरण ने ग्रामीण राजस्थान में जवाबदेही की संस्कृति को सुदृढ़ किया है। इस प्रक्रिया के माध्यम से मस्टर रोल में होने वाली हेराफेरी, 'छद्म श्रमिकों' की उपस्थिति और धन के दुरुपयोग की घटनाओं को प्रभावी ढंग से उजागर किया गया है। पकड़ी गई अनियमितताओं के आधार पर दोषी व्यक्तियों से धन की वसूली की जाती है और उनके विरुद्ध दंडात्मक कार्रवाई की जाती है। इस तंत्र ने न केवल सार्वजनिक धन की बचत की है, बल्कि ग्रामीणों में यह विश्वास भी जगाया है कि वे व्यवस्था पर नियंत्रण रख सकते हैं।

95. (2) केवल I, II और IV
राजस्थान में पंचायती राज का विकास 1959 के नागौर प्रयोग के पश्चात निरंतर सुधारों के दौर से गुजरा है। राज्य ने इस व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के लिए एक समर्पित पंचायती राज विभाग निर्मित किया और समय-समय पर गिरधारी लाल व्यास जैसी समितियों का गठन कर इसके ढांचे में सुधार किया। हालांकि 73वें संवैधानिक संशोधन ने इसे और अधिक शक्ति प्रदान की, लेकिन यह यात्रा चुनौतियों से भरी रही है; इसे वित्तीय संकटों और राजनीतिक हस्तक्षेप का सामना करना पड़ा है। यह प्रणाली निरंतर सुदृढ़ीकरण की ओर अग्रसर है।

96. (2) अबाध वित्तीय संसाधन और स्वायत्त कराधान शक्तियां।
पंचायतों को वास्तव में स्वशासन की इकाई बनाने में सबसे बड़ी चुनौती 'वित्तीय स्वायत्तता' की कमी है। हालांकि उन्हें कार्य और कर्मचारी सौंपे गए हैं, लेकिन वे अब भी धन के लिए केंद्र और राज्य सरकार के अनुदानों पर अत्यधिक निर्भर हैं। अपनी स्वयं की आय सृजित करने और कराधान की स्वायत्त शक्तियां न होने के कारण पंचायतें स्वतंत्र रूप से विकास योजनाएं लागू करने में असमर्थ रहती हैं। जब तक स्थानीय स्तर पर पर्याप्त वित्तीय संसाधनों का हस्तांतरण नहीं होगा, तब तक लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का लक्ष्य पूर्णतः प्राप्त करना कठिन है।

97. (2) इसके लिए आवश्यक है कि इसके 100% सदस्य सीधे मुख्यमंत्री द्वारा नामित हों।
जिला योजना समिति एक लोकतांत्रिक संस्था है जिसके सदस्यों का चयन नामांकन के स्थान पर निर्वाचन प्रक्रिया द्वारा किया जाता है। इसके अधिकांश सदस्य (न्यूनतम 80 प्रतिशत) जिले की ग्रामीण पंचायतों और शहरी निकायों के निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा अपने मध्य से चुने जाते हैं। मुख्यमंत्री द्वारा इसमें शत-प्रतिशत नामांकन का कोई प्रावधान नहीं है; हालांकि राज्य सरकार कुछ विशेषज्ञों को नामित कर सकती है। यह समिति जिले के सर्वांगीण विकास के लिए एक व्यापक प्रारूप तैयार करती है, जिसकी अध्यक्षता जिला प्रमुख द्वारा की जाती है।

NODIA

98. (1) A, B, C, D
पिछड़ेपन की पहचान और लक्षित ग्रामीण वित्त पोषण के लिए एक संरचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाता है। सर्वप्रथम सड़कों और परिवहन जैसे 'संपर्क' के अभाव को देखा जाता है, जो विकास के लिए निवेश की कमी का मुख्य कारण बनता है। इसके परिणामस्वरूप बेरोजगारी और निर्धनता का स्तर बढ़ता है, जो अंततः मानव विकास परिणामों जैसे शिक्षा और पोषण को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है। इसी क्रम में संसाधनों का आवंटन किया जाता है ताकि सबसे पहले बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ कर निर्धनता के चक्र को तोड़ा जा सके।

99. (3) घर और कृषि गतिविधियों के प्रबंधन के लिए महिलाओं पर बढ़ा हुआ बोझ।
ग्रामीण क्षेत्रों से पुरुषों के भारी बाह्य-प्रवास का सर्वाधिक गहरा सामाजिक और आर्थिक प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है। पुरुषों की अनुपस्थिति में महिलाओं को न केवल अपने घरेलू उत्तरदायित्व निभाने पड़ते हैं, बल्कि कृषि कार्यों, पशुपालन और वित्तीय प्रबंधन की पूरी जिम्मेदारी भी उठानी पड़ती है। इस 'दोहरे कार्यभार' के कारण महिलाओं का शारीरिक और मानसिक तनाव बढ़ जाता है। हालांकि इसने महिलाओं को अधिक निर्णय लेने की शक्ति और आर्थिक भूमिका प्रदान की है, लेकिन साथ ही उनके विश्राम के लिए समय अत्यंत न्यून हो गया है।

100. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान के ग्रामीण विकास में विभिन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए विशिष्ट संदर्भों की आवश्यकता होती है। सूखा अक्सर मानसून की विफलता का परिणाम होता है, जिसके

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) III और IV
(3) II और V
(4) IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. राजस्थान में पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों का वैधानिक अंकेक्षण करने की प्राथमिक जिम्मेदारी किस पर है?
(1) केंद्रीय सतर्कता आयोग
(2) राज्य वित्त आयोग
(3) वित्त मंत्रालय, भारत सरकार
(4) स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. राज्य वित्त आयोग की अनुशंसाओं और वास्तविक क्रियान्वयन के बीच निरंतर अंतराल के कारण स्थानीय निकायों पर निम्नलिखित में से कौन सा प्रभाव पड़ता है?
(1) राजकोषीय तनाव और नागरिक सेवाओं की आपूर्ति में विलंब
(2) स्वायत्त कार्यात्मक शक्तियों में वृद्धि
(3) पूंजीगत व्यय खातों में अधिशेष (surplus)
(4) केंद्रीय वित्त आयोग के हस्तांतरण में कमी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. सूची I में दिए गए राजस्व स्रोतों को सूची II में उनसे संबंधित सक्षम प्राधिकारी के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (राजस्व स्रोत)
A. निगम कर
B. कृषि भूमि राजस्व
C. संपत्ति कर (गृह कर)
D. बाजार शुल्क (मंडी/हाट)
सूची II: (सक्षम प्राधिकारी)
i. केंद्र सरकार
ii. राज्य सरकार
iii. शहरी स्थानीय निकाय
iv. पंचायती राज संस्थाएं
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. राज्य वित्त आयोग अंतर-जिला राजकोषीय असमानताओं को कम करने का प्रयास कैसे करता है?
(1) क्षैतिज हस्तांतरण सूत्र में पिछड़ेपन और प्रति व्यक्ति आय की दूरी को अधिक महत्व (weightage) देकर
(2) सभी जिलों में समान जनसंख्या अनिवार्य करके
(3) सभी कर शक्तियों को केंद्र सरकार को हस्तांतरित करके
(4) केवल सर्वाधिक विकसित जिलों तक अनुदान को सीमित करके
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. स्थानीय निकाय वित्तीय शब्दावली के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) विभाज्य पूल (Divisible Pool) - केवल स्थानीय निकायों द्वारा एकत्र किया गया कुल राजस्व
(2) ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण - PRIs और ULBs के बीच विभाजित निधियों का अनुपात
(3) स्व-स्रोत राजस्व - केंद्र प्रायोजित योजनाओं के माध्यम से प्राप्त निधि
(4) क्षैतिज हस्तांतरण - व्यक्तिगत स्थानीय निकाय इकाइयों के बीच हस्तांतरित निधियों का सूत्र-आधारित वितरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. स्थानीय निकायों के लिए व्यय के निम्नलिखित प्रमुख शीर्षों पर विचार कीजिए:
I. वेतन का भुगतान और प्रशासनिक व्यय
II. मार्ग प्रकाश (Street lighting) और स्वच्छता जैसी मुख्य नागरिक सेवाओं का प्रावधान
III. रक्षा खरीद और सीमा सुरक्षा
उपर्युक्त में से कौन से व्यय शीर्ष स्थानीय निकायों के लिए मान्य हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. स्थानीय निकायों के लिए प्रदर्शन अनुदान (Performance grants) को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित किया गया है:
(1) वित्तीय वर्ष के प्रारंभ में दिए गए निश्चित बिना शर्त अनुदान
(2) प्राकृतिक आपदाओं के दौरान जारी की गई आपातकालीन निधि
(3) अंकेक्षित खातों या बेहतर कर संग्रह दक्षता जैसे सुधारों से जुड़े प्रोत्साहन-आधारित हस्तांतरण
(4) राज्य सरकार द्वारा प्रदान किए गए ऋण जिन्हें ब्याज सहित लौटाया जाना चाहिए
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, कथन (A) और कारण (R)। नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): प्रदर्शन अनुदान स्थानीय निकायों को उनके राजस्व संग्रह में सुधार करने और अंकेक्षित खाते बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु निर्मित किए गए हैं।
कारण (R): प्रदर्शन अनुदान सभी पंचायतों के बीच उनके वित्तीय प्रबंधन अभ्यासों की परवाह किए बिना समान रूप से वितरित किए जाते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।

Click Here to Buy book on Amazon

(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. स्थानीय निकायों को राजकोषीय हस्तांतरण ढांचे से जुड़ी एक प्रमुख चुनौती निम्नलिखित में से कौन सी है?
(1) बद्ध अनुदानों पर अत्यधिक निर्भरता जिससे स्थानीय प्राथमिकताएं और स्वायत्तता सीमित हो जाती है
(2) स्व-स्रोत राजस्व का अत्यधिक सृजन जिससे अधिशेष निधि हो जाती है
(3) ग्राम पंचायतों को दी गई अप्रतिबंधित ऋण लेने की शक्तियां
(4) स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग का पूर्ण उन्मूलन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. राजकोषीय हस्तांतरण प्रक्रिया के निम्नलिखित चरणों को सही तार्किक अनुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. स्थानीय निकायों को निधियों का वास्तविक हस्तांतरण
II. राज्य वित्त आयोग का गठन
III. राज्य विधानमंडल के समक्ष 'की गई कार्रवाई का विवरण' (ATR) प्रस्तुत करना
IV. SFC द्वारा राज्य करों के विभाज्य पूल का निर्धारण
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?
(1) II, IV, III, I
(2) II, III, IV, I
(3) IV, II, III, I
(4) II, IV, I, III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. राज्य अनुदानों पर स्थानीय निकायों की भारी निर्भरता का प्रतिकूल परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) यह स्थानीय कर संग्रह की दक्षता में सुधार करता है
(2) यह उनकी राजकोषीय स्वायत्तता को कम करता है और नियोजन को अनिश्चित बनाता है
(3) यह उच्च प्रदर्शन अनुदान आवंटन की गारंटी देता है
(4) यह स्थानीय शासन में राजनीतिक हस्तक्षेप को कम करता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. 15वें वित्त आयोग की अनुशंसाओं के संदर्भ में, ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकायों के बीच अनुदान का वितरण सामान्यत: किस पर आधारित होता है?
(1) ग्रामीण और शहरी जनसंख्या का अनुपात और क्षेत्रफल के लिए कुछ भार (weightage)
(2) जनसांख्यिकी की परवाह किए बिना समान वितरण
(3) कड़ाई से पंजीकृत मतदाताओं की संख्या
(4) पिछले वर्ष की राजस्व संग्रह दक्षता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. सूची I में दिए गए शब्दों को सूची II में उनके अर्थ के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (शब्द)
A. विचारार्थ विषय (Terms of Reference)
B. विभाज्य पूल (Divisible Pool)
C. राज्य की संचित निधि
D. की गई कार्रवाई का विवरण (ATR)
सूची II: (अर्थ)
i. वह निधि जिससे स्थानीय निकायों को सहायता अनुदान दिया जाता है
ii. वह कार्यक्षेत्र और दिशानिर्देश जिसके भीतर SFC को कार्य करना चाहिए
iii. SFC की अनुशंसाओं पर सरकार की प्रतिक्रिया
iv. साझा करने के लिए उपलब्ध कुल राज्य कर राजस्व
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. राजस्थान के प्रथम राज्य वित्त आयोग ने स्थानीय निकायों को राज्य के शुद्ध कर राजस्व का कितना प्रतिशत आवंटित करने की अनुशंसा की थी?
(1) 2.18%
(2) 5.50%
(3) 7.18%
(4) 10.00%
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. राजस्थान में हस्तांतरण ढांचे के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: क्रमिक राज्य वित्त आयोगों ने राज्य के विभाज्य पूल में स्थानीय निकायों की प्रतिशत हिस्सेदारी में शनैः-शनैः वृद्धि की है।
कथन II: क्षैतिज वितरण के मानदंडों में प्रदर्शन और वित्तीय प्रबंधन जैसे तत्वों को सम्मिलित करने के लिए परिवर्तन किया गया है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

38. राज्य वित्त आयोग को नियंत्रित करने वाले नियमों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्यपाल प्रत्येक पांच वर्ष में या उससे पूर्व राज्य वित्त आयोग का गठन करते हैं।
II. राज्य का विधानमंडल विधि द्वारा इसके सदस्यों के लिए आवश्यक योग्यताएं निर्धारित कर सकता है।
III. SFC की अनुशंसाएं राज्य सरकार पर विधिक रूप से

आबद्धकारी होती हैं।
IV. SFC अपनी रिपोर्ट सीधे भारत के राष्ट्रपति को सौंपता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I, II और IV
(4) III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. अनुच्छेद 243I के तहत राज्य वित्त आयोग द्वारा की गई प्रत्येक अनुशंसा को, उस पर की गई कार्रवाई के व्याख्यात्मक ज्ञापन के साथ, राज्य के विधानमंडल के समक्ष कौन रखवाता है?
(1) मुख्यमंत्री
(2) राज्य के वित्त मंत्री
(3) विधानसभा अध्यक्ष
(4) राज्यपाल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. भारत के संविधान के अनुसार राज्य वित्त आयोग के गठन के लिए मानक समयावधि क्या है?
(1) प्रत्येक 3 वर्ष
(2) प्रत्येक 4 वर्ष
(3) प्रत्येक 5 वर्ष
(4) प्रत्येक 6 वर्ष
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. राज्य वित्त आयोग के संदर्भ में 'की गई कार्रवाई का विवरण' (ATR) क्या दर्शाता है?
(1) कर न चुकाने वालों के विरुद्ध स्थानीय निकायों द्वारा की गई कार्रवाई
(2) SFC सदस्यों के विरुद्ध की गई अनुशासनात्मक कार्रवाई
(3) SFC की अनुशंसाओं पर राज्य सरकार की स्वीकृति या अस्वीकृति
(4) स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग द्वारा हल की गई अंकेक्षण आपत्तियां
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. निम्नलिखित कार्यों पर विचार कीजिए और पहचानिए कि इनमें से कौन से कार्य राज्य वित्त आयोग द्वारा किए जाते हैं:
I. पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करना
II. राज्य करों की शुद्ध प्राप्तियों के वितरण की अनुशंसा करना
III. नगरपालिकाओं को सहायता अनुदान के लिए सिद्धांतों का निर्धारण करना
IV. स्थानीय निकायों की वित्तीय स्थिति में सुधार के उपाय सुझाना
V. जिला परिषदों का दैनिक वित्तीय अंकेक्षण करना
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. राज्य-स्थानीय राजकोषीय संबंधों में "विभाज्य पूल" (Divisible Pool) को निम्नलिखित में से कौन परिभाषित करता है?
(1) राज्य द्वारा प्राप्त कुल केंद्रीय अनुदान
(2) सभी स्थानीय निकायों के स्वयं के राजस्व का योग
(3) विशेष रूप से शहरी निकायों द्वारा उपयोगकर्ता शुल्क के माध्यम से एकत्र की गई निधि
(4) राज्य के अपने स्वयं के कर राजस्व का वह हिस्सा जो स्थानीय निकायों के साथ साझा करने के लिए पात्र है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. व्यक्तिगत स्थानीय निकायों के बीच क्षैतिज हस्तांतरण की अनुशंसा करते समय, राज्य वित्त आयोग विभिन्न मानदंडों का उपयोग करते हैं। निम्नलिखित में से कौन सा एक सामान्यतः स्वीकृत मानदंड है?
(1) स्थानीय निकाय के निर्वाचित प्रमुख की राजनीतिक संबद्धता
(2) स्थानीय निकाय का जनसांख्यिकीय स्वरुप और भौगोलिक क्षेत्रफल
(3) राष्ट्रीय राजधानी से स्थानीय निकाय की दूरी
(4) जिले में संचालित केंद्र प्रायोजित योजनाओं की संख्या
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. सूची I में दिए गए हस्तांतरण भार (weightage) मानदंडों को सूची II में उनके प्राथमिक तर्क के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (हस्तांतरण भार मानदंड)
A. जनसंख्या
B. क्षेत्रफल
C. आय की दूरी/पिछड़ापन
D. कर प्रयास/प्रदर्शन
सूची II: (प्राथमिक तर्क)
i. निर्धन क्षेत्रों को अधिक प्रदान करके समानता सुनिश्चित करता है
ii. आवश्यक सेवा वितरण के पैमाने को संबोधित करता है
iii. बेहतर स्व-स्रोत राजस्व संग्रह को प्रोत्साहित करता है
iv. विरल क्षेत्रों में सेवा प्रावधान की उच्च लागत की भरपाई करता है
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. राज्य वित्त आयोग द्वारा अनुशंसित सहायता अनुदान कहाँ से वितरित किया जाता है?
(1) भारत की आकस्मिकता निधि (Contingency Fund of India)
(2) राज्य का लोक लेखा (Public Account of the

Downloaded from www.pdf.tube

लोग निवास करते हैं, वहां बुनियादी सेवाओं और नागरिक सुविधाओं की आपूर्ति हेतु अधिक वित्तीय संसाधनों का आवंटन हो। राज्य वित्त आयोग क्षैतिज हस्तांतरण के सूत्र में जनसंख्या को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं ताकि न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित हो सके। यह मानदंड सेवा वितरण की आवश्यकता का सीधा सूचक है।

10. (3) A सही है लेकिन R गलत है
राज्य वित्त आयोग राज्य की संचित निधि से पंचायतों को दी जाने वाली सहायता अनुदान के सिद्धांतों की अनुशंसा करता है। हालांकि, यह धारणा गलत है कि सहायता अनुदान स्थानीय निकायों के स्वयं के राजस्व संग्रह की आवश्यकता को समाप्त करने के लिए हैं। इसके विपरीत, अनुदान का उद्देश्य स्थानीय निकायों के संसाधनों का पूरक बनना है। स्वयं के राजस्व संग्रह की प्रक्रिया स्थानीय स्वायत्तता और जवाबदेही के लिए आवश्यक है, जिसे अनुदान द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता।

11. (4) राजकोषीय अंतर (fiscal gap) को पाटना और बुनियादी नागरिक सेवाओं की आपूर्ति में सहायता करना
स्थानीय निकायों को प्रदान किए जाने वाले सहायता अनुदान का मुख्य उद्देश्य उनके व्यय दायित्वों और सीमित राजस्व स्रोतों के बीच के राजकोषीय अंतर को कम करना है। यह वित्तीय सहायता पंचायतों और नगरपालिकाओं को पेयजल, स्वच्छता, प्रकाश और सड़क रखरखाव जैसी आवश्यक नागरिक सेवाएं प्रदान करने में सक्षम बनाती है। यह सुनिश्चित करता है कि संसाधनों की कमी के कारण बुनियादी विकास कार्य बाधित न हों और स्थानीय स्तर पर जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सके।

12. (1) के.के. गोयल - हीरा लाल देवपुरा - माणिक चंद सुराणा - बी.डी. कल्ला
राजस्थान में राज्य वित्त आयोगों का गठन एक निश्चित क्रम में किया गया है। कृष्ण कुमार गोयल ने प्रथम आयोग की अध्यक्षता करते हुए आधारभूत ढांचे का निर्माण किया। इसके पश्चात द्वितीय आयोग के अध्यक्ष हीरा लाल देवपुरा नियुक्त हुए। तृतीय आयोग का नेतृत्व माणिक चंद सुराणा ने किया, जिन्होंने वितरण सूत्रों को परिष्कृत किया। चतुर्थ आयोग की कमान बी.डी. कल्ला को सौंपी गई। यह कालानुक्रमिक अनुक्रम राज्य में स्थानीय वित्त व्यवस्था के क्रमिक विकास की प्रक्रिया को दर्शाता है।

13. (3) के.के. गोयल
राजस्थान में पंचायती राज व्यवस्था को वित्तीय रूप से सशक्त बनाने हेतु प्रथम राज्य वित्त आयोग का गठन 1994 में किया गया था। कृष्ण कुमार गोयल को इस ऐतिहासिक आयोग का प्रथम अध्यक्ष नियुक्त किया गया। उनके नेतृत्व में आयोग ने राज्य के राजस्व में स्थानीय निकायों की हिस्सेदारी निर्धारित करने हेतु प्राथमिक दिशा-निर्देश और वितरण के सिद्धांत तैयार किए। इस आयोग की अनुशंसाओं ने ही राजस्थान में स्थानीय निकायों के लिए एक संस्थागत राजकोषीय हस्तांतरण तंत्र की नींव रखी थी।

14. (4) सीमा शुल्क (Customs duty)
पंचायतों के पास सीमित कर शक्तियां होती हैं जिनमें मुख्य रूप से संपत्ति कर, पशु कर और स्थानीय मेलों पर लगने वाले शुल्क शामिल होते हैं। वृत्तिक कर भी राज्यों द्वारा पंचायतों को सौंपा जा सकता है। इसके विपरीत, सीमा शुल्क पूर्णतः केंद्र सरकार के क्षेत्राधिकार का विषय है जो अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर लगाया जाता है। स्थानीय निकायों का इस पर कोई अधिकार नहीं होता। अतः यह पंचायतों के स्वयं के राजस्व स्रोत की श्रेणी में सम्मिलित नहीं है।

NODIA

15. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान के विभिन्न राज्य वित्त आयोगों के अध्यक्षों का मिलान उनके कार्यकाल के अनुसार महत्वपूर्ण है। प्रथम आयोग की अध्यक्षता के.के. गोयल ने की थी, जबकि द्वितीय आयोग का नेतृत्व हीरा लाल देवपुरा द्वारा किया गया था। चतुर्थ आयोग के अध्यक्ष के रूप में बी.डी. कल्ला ने अपनी सेवाएं प्रदान की थीं। वर्तमान में छठे राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष पद पर प्रद्युम्न सिंह कार्यरत हैं। यह मिलान राजस्थान में स्थानीय वित्तीय नियोजन के नेतृत्व और ऐतिहासिक विकासक्रम को प्रदर्शित करता है।

16. (2) संपत्ति कर का त्रुटिपूर्ण मूल्यांकन और निम्न संग्रह दक्षता
शहरी स्थानीय निकायों के लिए राजस्व सृजन में सबसे बड़ी प्रशासनिक बाधा संपत्ति कर के प्रबंधन से जुड़ी है। संपत्तियों का सटीक मूल्यांकन न होना और वसूली की कमजोर प्रक्रिया राजस्व को काफी सीमित कर देती है। पर्याप्त आंकड़ों और कुशल मूल्यांकन प्रणालियों के अभाव में कर की मांग और वास्तविक संग्रह के बीच एक बड़ा अंतराल बना रहता है। यह चुनौती स्थानीय निकायों की वित्तीय आत्मनिर्भरता के मार्ग में प्रमुख अवरोधक मानी जाती है, जिसे दूर करना आवश्यक है।

17. (2) राज्य की अनुमति के बिना अपने अधिकार क्षेत्र में नए आयकर प्रारंभ करने की स्वायत्त शक्ति
स्थानीय निकायों के पास कर लगाने की शक्तियां राज्य विधानमंडल द्वारा प्रदत्त कानूनों तक ही सीमित होती हैं। पंचायतों और नगरपालिकाओं को आयकर जैसे प्रत्यक्ष कर लगाने की कोई संवैधानिक स्वायत्तता प्राप्त नहीं है, क्योंकि यह शक्ति केवल केंद्र सरकार के पास सुरक्षित है। हालांकि, वे राज्य द्वारा अधिकृत पथकर और शुल्क लगा सकते हैं। अतः बिना राज्य की अनुमति के स्वयं अपनी इच्छा से नए कर, विशेषकर आयकर, प्रारंभ करना उनके क्षेत्राधिकार से पूर्णतः परे है।

18. (2) I, II और IV
15वें वित्त आयोग ने स्थानीय निकायों हेतु बद्ध और अबद्ध अनुदानों की नवीन व्यवस्था लागू की है। बद्ध अनुदान पेयजल और स्वच्छता जैसी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के लिए निश्चित किए गए हैं, जबकि अबद्ध अनुदान निकायों को वित्तीय स्वायत्तता प्रदान करते हैं। आयोग ने इन अनुदानों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर सेवा वितरण क्षमता को सुदृढ़ करने का लक्ष्य रखा है। हालांकि, आयोग ने छावनी बोर्डों को अनुदानों से बाहर नहीं रखा है, बल्कि उनके लिए भी विशिष्ट प्रावधान किए हैं।

(4) अनुशंसित हस्तांतरण में मनमानी कटौती स्थानीय स्तर के नियोजन को गंभीर रूप से बाधित करती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. सूची I में दिए गए अनुदान के प्रकारों को सूची II में उनकी विशिष्ट विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अनुदान का प्रकार)
A. बद्ध अनुदान (Tied Grants)
B. अबद्ध अनुदान (Untied Grants)
C. प्रदर्शन अनुदान (Performance Grants)
D. विशेष श्रेणी अनुदान (Special Category Grants)
सूची II: (विशेषता)
i. विशिष्ट वित्तीय या प्रशासनिक मानदंडों को पूर्ण करने पर जारी किए जाते हैं
ii. विशिष्ट, पूर्व-निर्धारित राष्ट्रीय या राज्य प्राथमिकताओं के लिए उपयोग किए जाते हैं
iii. स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर विवेकाधीन व्यय के लिए प्रदान किए जाते हैं
iv. विशिष्ट भौगोलिक या जनसांख्यिकीय चुनौतियों का सामना करने वाले स्थानीय निकायों को दिए जाते हैं
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. क्षैतिज हस्तांतरण सूत्र में आय की दूरी (income distance) या विकासात्मक सूचकांकों के उपयोग से निम्नलिखित में से कौन सा प्रभाव पड़ता है?
(1) राजकोषीय रूप से निर्बल जिलों को अधिक संसाधन हस्तांतरित करके समानीकरण (equalization) सुनिश्चित करता है
(2) सर्वाधिक संपन्न जिलों की राजकोषीय क्षमता को असंगत रूप से बढ़ाता है
(3) कुल विभाज्य पूल के आकार को कम करता है
(4) शहरी क्षेत्रों में स्व-स्रोत राजस्व की आवश्यकता को समाप्त करता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. एक विशिष्ट ग्राम पंचायत की प्रमुख व्यय प्राथमिकताओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा एक विषम है?
(1) ग्राम की आंतरिक सड़कों का रख-रखाव
(2) ग्रामीण पेयजल का प्रावधान
(3) राज्य परिवहन बसों का संचालन
(4) ग्रामीण स्वच्छता प्रणालियों का रख-रखाव
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. स्थानीय निकायों द्वारा प्रदर्शन अनुदान प्राप्त करने से सामान्यतः जुड़ी निम्नलिखित शर्तों पर विचार कीजिए:
I. पूर्व वर्षों के अंकेक्षित खातों को प्रस्तुत करना
II. स्व-स्रोत राजस्व संग्रह में वृद्धि
III. संपत्ति कर नियमों की अधिसूचना (ULBs के लिए)
IV. ग्राम सभा का उन्मूलन
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, III और IV
(3) I, II और III
(4) II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. स्थानीय निकायों को निधियों के अपर्याप्त हस्तांतरण का सबसे प्रत्यक्ष परिणाम क्या होता है?
(1) सभी नागरिक कार्यों के लिए निजी क्षेत्र के वित्तपोषण पर निर्भरता में वृद्धि
(2) स्थानीय निकाय की पूर्ण परिचालन स्वतंत्रता
(3) राज्य-स्तरीय नियोजन आयोगों का उन्मूलन
(4) एक 'बिना वित्तपोषण वाले अधिदेश' (unfunded mandate) का निर्माण जहां स्थानीय निकायों के पास उत्तरदायित्व तो हैं परंतु पर्याप्त धन का अभाव है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. राज्य वित्त आयोग की रिपोर्ट औपचारिक रूप से किसे सौंपी जाती है?
(1) भारत के राष्ट्रपति
(2) राज्य के राज्यपाल
(3) राज्य के मुख्यमंत्री
(4) राज्य विधानमंडल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अनुच्छेद 243I पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा के लिए राज्य वित्त आयोग का प्रावधान करता है।
कथन II: अनुच्छेद 280 के तहत केंद्रीय वित्त आयोग को पंचायतों के संसाधनों की पूरक सहायता के लिए राज्य की संचित निधि को बढ़ाने के उपायों की अनुशंसा करना आवश्यक है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. राजस्थान के प्रथम राज्य वित्त आयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका गठन वर्ष 1995 में किया गया था।
II. इसका कार्यकाल 1995-2000 की अवधि के लिए था।
III. के.के. गोयल इसके अध्यक्ष थे।
IV. इसने राज्य के शुद्ध कर राजस्व का 2.18% स्थानीय निकायों को हस्तांतरित करने की अनुशंसा की थी।
V. इसने अपने हस्तांतरण में शहरी स्थानीय निकायों को पूर्णतः उपेक्षित कर दिया था।

Click Here to Buy book on Amazon

State)
(3) प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष
(4) राज्य की संचित निधि (Consolidated Fund of the State)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. पंचायतों के स्वयं के राजस्व स्रोत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: इसमें संपत्ति कर, वाहन कर और बाजारों पर शुल्क से उत्पन्न राजस्व सम्मिलित है।
कथन II: एक सुदृढ़ स्व-स्रोत राजस्व आधार राज्य सरकार पर पंचायतों की राजकोषीय निर्भरता को कम करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. शहरी स्थानीय निकायों द्वारा स्वयं का राजस्व उत्पन्न करने में आने वाली निम्नलिखित चुनौतियों पर विचार कीजिए:
I. संपत्ति मूल्यांकन की पुरातन पद्धतियां
II. उच्च अनुपालन लागत और जटिल प्रशासनिक प्रक्रियाएं
III. प्रचुर मात्रा में अबद्ध राज्य अनुदानों की उपलब्धता जिससे कर लगाने का प्रोत्साहन कम हो जाता है
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. निम्नलिखित में से कौन स्थानीय निकाय द्वारा "अबद्ध अनुदान" (untied grant) के उपयोग का एक उदाहरण है?
(1) स्वच्छ भारत मिशन के तहत विशिष्ट रूप से शौचालयों के निर्माण पर व्यय करना
(2) ग्राम सभा द्वारा पारित प्रस्ताव के आधार पर ग्राम पुस्तकालय का निर्माण करना
(3) 15वें वित्त आयोग द्वारा अधिदेशित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए निधियों का उपयोग करना
(4) जल जीवन मिशन के लिए राज्य के मिलान हिस्से (matching share) को प्रदान करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, कथन (A) और कारण (R)। नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): अबद्ध अनुदान स्थानीय स्वशासी सरकारों की कार्यात्मक स्वायत्तता को बढ़ाते हैं।
कारण (R): अबद्ध अनुदान स्थानीय निकायों को केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित योजनाबद्ध दिशानिर्देशों के अनुसार ही धन व्यय करने के लिए विवश करते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

51. निम्नलिखित में से कौन सा उपाय वित्तीय प्रबंधन में स्थानीय निकायों के क्षमता निर्माण के लिए सर्वोत्तम दृष्टिकोण है?
(1) राज्य सचिवालय में सभी वित्तीय शक्तियों का केंद्रीकरण करना
(2) स्थानीय निकायों को अनिवार्य वार्षिक अंकेक्षण से छूट देना
(3) अधिकारियों के लिए 'द्वि-प्रविष्टि' (double-entry) लेखांकन प्रणालियों और आधुनिक ई-गवर्नेंस उपकरणों पर नियमित प्रशिक्षण
(4) स्थानीय निकायों द्वारा स्वयं का कोई भी राजस्व एकत्र करने पर प्रतिबंध लगाना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. हस्तांतरित निधियों के लिए राज्य सरकार से पंचायती राज संस्थाओं के निम्नतम स्तर तक वित्तीय प्रवाह के सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) राज्य सरकार → पंचायत समिति → जिला परिषद → ग्राम पंचायत
(2) राज्य सरकार → जिला परिषद → पंचायत समिति → ग्राम पंचायत
(3) राज्य सरकार → ग्राम पंचायत → पंचायत समिति → जिला परिषद
(4) राज्य सरकार → जिला परिषद → ग्राम पंचायत → पंचायत समिति
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. स्वयं समुदाय के सदस्यों द्वारा स्थानीय निकाय के व्यय और निष्पादन के मूल्यांकन की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(1) वैधानिक अंकेक्षण (Statutory Audit)
(2) आंतरिक अंकेक्षण (Internal Audit)
(3) सामाजिक अंकेक्षण (Social Audit)
(4) न्यायालयिक अंकेक्षण (Forensic Audit)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. SFC अनुशंसाओं और क्रियान्वयन के बीच के अंतराल के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) राज्य प्रायः SFC की अनुशंसाओं को स्वीकार कर लेते हैं लेकिन समय पर धन जारी करने में विफल रहते हैं।
(2) संविधान में राज्य को बिना किसी परिवर्तन के 30 दिनों के भीतर सभी SFC अनुशंसाओं को लागू करना आवश्यक है।
(3) राज्य सरकार का राजकोषीय दबाव हस्तांतरण में विलंब का एक सामान्य कारण है।

नहीं है।

(3) A सही है लेकिन R गलत है।

(4) A गलत है लेकिन R सही है।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. स्थानीय निकायों के क्षमता निर्माण में निर्वाचित प्रतिनिधियों और पदाधिकारियों का प्रशिक्षण सम्मिलित है। राजस्थान में, पंचायती राज पदाधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए मुख्य रूप से कौन सा शीर्ष संस्थान उत्तरदायी है?

(1) एचसीएम राजस्थान राज्य लोक प्रशासन संस्थान

(2) राजस्थान पुलिस अकादमी

(3) राजस्व मंडल, अजमेर

(4) इंदिरा गांधी पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास संस्थान

(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. स्थानीय निधि अंकेक्षण रिपोर्टिंग के निम्नलिखित चरणों को सही तार्किक अनुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग द्वारा अंकेक्षण का संचालन

II. अंकेक्षण रिपोर्ट तैयार करना और जारी करना

III. अंकेक्षण आपत्तियों पर स्थानीय निकाय द्वारा प्रतिक्रिया और अनुपालन

IV. राज्य विधानमंडल के लिए वार्षिक अंकेक्षण रिपोर्ट का संकलन

निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?

(1) I, III, II, IV

(2) I, II, III, IV

(3) II, I, III, IV

(4) I, II, IV, III

(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. वित्तीय प्रबंधन में जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए, राजस्थान सहित पूरे भारत में ग्राम पंचायतों द्वारा किस लेखांकन और ई-गवर्नेंस सॉफ्टवेयर का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है?

(1) ई-खजाना

(2) ई-मित्र

(3) ई-ग्रामस्वराज

(4) पे-मैनेजर

(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. राज्य-स्थानीय वित्त के संदर्भ में, "राजकोषीय अंतर" (fiscal gap) शब्द क्या दर्शाता है?

(1) स्थानीय निकाय की व्यय आवश्यकताओं और उसकी स्वयं की राजस्व जुटाने की क्षमता के बीच का अंतर

(2) राज्य की राजधानी और जिला मुख्यालय के बीच की भौतिक दूरी

(3) राज्य वित्त आयोग के गठन में समय का विलंब

(4) केंद्रीय अनुदान और राज्य अनुदान के बीच का अंतर

(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. सूची I में दी गई हस्तांतरण शब्दावली को सूची II में उनके सही अर्थ के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (हस्तांतरण शब्दावली)

A. ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण (Vertical Devolution)

B. क्षैतिज हस्तांतरण (Horizontal Devolution)

C. सहायता अनुदान (Grants-in-aid)

D. स्व-स्रोत राजस्व (Own Source Revenue)

सूची II: (अर्थ)

i. जनसंख्या और क्षेत्रफल के आधार पर पंचायतों और शहरी स्थानीय निकायों के बीच आवंटन

ii. स्थानीय निकाय द्वारा सीधे एकत्र किए गए कर और शुल्क

iii. विशिष्ट व्यय आवश्यकताओं या राजकोषीय अंतराल को पूर्ण करने के लिए वित्तीय सहायता

iv. राज्य से स्थानीय निकायों को समग्र रूप से हस्तांतरित राज्य करों का हिस्सा

(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii

(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii

(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii

(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i

(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

76. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थान राज्य वित्त आयोगों में स्वामित्व (Royalty) के संबंध में देखी गई अनुशंसा पद्धति की सही पहचान करता है?

(1) खनन स्वामित्व का 100% ग्राम पंचायतों को हस्तांतरित किया जाता है।

(2) स्थानीय पंचायती राज संस्थाओं के साथ साझा किए गए गौण खनिजों (minor minerals) से स्वामित्व का एक विशिष्ट प्रतिशत

(3) स्वामित्व केवल संघ के विभाज्य पूल का हिस्सा होता है।

(4) स्थानीय निकायों को खनिज स्वामित्व का कोई भी हिस्सा प्राप्त करने से प्रतिबंधित किया गया है।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. निम्नलिखित में से कौन सा सामान्यतः एक शहरी स्थानीय निकाय की वैध व्यय प्राथमिकताओं का अपवाद है?

(1) ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और स्वच्छता

(2) शहरी सार्वजनिक उद्यानों का रख-रखाव

(3) उच्च शिक्षा विश्वविद्यालयों का रख-रखाव

(4) मार्ग प्रकाश का प्रावधान

(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. राजस्थान में अंतर-जिला राजकोषीय असमानताओं का कारण बनने वाले निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:

I. प्राकृतिक संसाधनों और उद्योगों का असमान वितरण

II. जनसंख्या घनत्व और भू-भाग में भिन्नता

III. स्थानीय प्रशासनिक और कर संग्रह दक्षता में अंतर

IV. SFC द्वारा अबद्ध अनुदानों का समान आवंटन

उपर्युक्त में से कौन से कारक असमानताओं के वास्तविक

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. राजस्थान में पंचायती राज अधिनियम के प्रावधानों के तहत, पंचायतों को कर, शुल्क, पथकर और फीस अधिरोपित करने, एकत्र करने और विनियोजित करने के लिए कौन अधिकृत करता है?
(1) विधि द्वारा राज्य विधानमंडल
(2) राज्य निर्वाचन आयोग
(3) केंद्रीय वित्त आयोग
(4) नीति आयोग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. कौन सा कथन क्रमिक SFC के माध्यम से राजस्थान में हस्तांतरण ढांचे के विकास का सही वर्णन करता है?
(1) राज्य के राजस्व में स्थानीय निकायों की हिस्सेदारी लगातार कम हुई है।
(2) तदर्थ (ad-hoc) अनुदान प्रणाली से राज्य कर पूल के सूत्र-आधारित प्रतिशत हिस्सेदारी की ओर परिवर्तन।
(3) प्रथम SFC के बाद से क्षैतिज हस्तांतरण के मानदंड स्थिर रहे हैं।
(4) प्रदर्शन अनुदानों को पूर्णतः समाप्त कर दिया गया है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. सूची I में दिए गए राजस्थान राज्य वित्त आयोगों को सूची II में दिए गए उनके संबंधित गठन वर्षों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (राजस्थान राज्य वित्त आयोग)
A. प्रथम SFC
B. द्वितीय SFC
C. चतुर्थ SFC
D. छठा SFC
सूची II: (गठन वर्ष)
i. 1995
ii. 1999
iii. 2011
iv. 2021
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. जब राज्य वित्त आयोग ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण सूत्र निर्धारित करता है, तो विभाज्य पूल में सामान्यतः क्या सम्मिलित नहीं होता है?
(1) कर संग्रह की लागत
(2) राज्य वस्तु एवं सेवा कर (SGST)
(3) राज्य उत्पाद शुल्क
(4) मुद्रांक शुल्क और पंजीकरण शुल्क
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. शहरी स्थानीय निकायों में वार्षिक किराया मूल्य (ARV) से इकाई क्षेत्र पद्धति (Unit Area Method) की ओर संक्रमण एक ऐसा सुधार है जिसका प्राथमिक उद्देश्य है:
(1) नगरपालिका के भौगोलिक क्षेत्र को कम करना
(2) संपत्ति कर प्रणाली को पूर्णतः समाप्त करना
(3) संपत्ति कर के निर्धारण और संग्रह को तर्कसंगत बनाना और उसमें सुधार करना
(4) नगरपालिका निर्वाचनों के लिए चुनावी कोटे की गणना करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. स्थानीय निकायों के लिए 15वें वित्त आयोग की अनुशंसाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने अनिवार्य किया कि अनुदान का एक हिस्सा पेयजल, वर्षा जल संचयन और स्वच्छता से जुड़ा होना चाहिए।
II. इसने अनंतिम और अंकेक्षित खातों की ऑनलाइन उपलब्धता जैसी प्रवेश-स्तरीय शर्तों की अनुशंसा की।
III. इसने सुझाव दिया कि यदि राज्य सरकारें राज्य वित्त आयोगों का गठन करने में विफल रहती हैं, तो सभी अनुदान रोक दिए जाएं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. हाल के 15वें वित्त आयोग के दिशानिर्देशों के अनुसार, 2021-26 की अवधि के लिए ग्रामीण स्थानीय निकायों के लिए बुनियादी (अबद्ध) अनुदान और बद्ध अनुदान के बीच सामान्यतः अनिवार्य अनुपात क्या है?
(1) 20% बुनियादी और 80% बद्ध
(2) 100% बुनियादी और 0% बद्ध
(3) 40% बुनियादी और 60% बद्ध
(4) 10% बुनियादी और 90% बद्ध
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, कथन (A) और कारण (R)। नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): भारत में स्थानीय निकाय राजकोषीय हस्तांतरण और राज्य अनुदानों पर उच्च स्तर की निर्भरता प्रदर्शित करते हैं।
कारण (R): स्थानीय निकायों के स्व-स्रोत राजस्व संग्रह तंत्र अत्यधिक कुशल हैं और अधिशेष धन उत्पन्न करते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या

Downloaded from www.pdf.tube

86. क्षैतिज हस्तांतरण के संदर्भ में, "प्रति व्यक्ति आय की दूरी" (Per Capita Income Distance) मानदंड का उपयोग क्या सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है?
(1) कि उच्च प्रति व्यक्ति आय वाले क्षेत्रों को अधिक धन प्राप्त हो
(2) यह सुनिश्चित करना कि कम प्रति व्यक्ति आय वाले क्षेत्रों को राजकोषीय अंतराल को पाटने के लिए उच्च हिस्सा मिले
(3) कि निधियां केवल राजधानी से भौगोलिक दूरी के आधार पर आवंटित की जाएं
(4) कि शून्य आय सृजन वाले स्थानीय निकायों को कोई धन न मिले
(5) अनुत्तरित प्रश्न

87. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान के छठे राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष हैं?
(1) किरण माहेश्वरी
(2) बी.डी. कल्ला
(3) अशोक लाहिड़ी
(4) प्रद्युम्न सिंह
(5) अनुत्तरित प्रश्न

88. ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज वितरण पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ऊर्ध्वाधर वितरण राज्य से स्थानीय निकायों को हस्तांतरित किए जाने वाले संसाधनों की मात्रा निर्धारित करता है।
II. क्षैतिज वितरण एक विशिष्ट सूत्र के आधार पर विभिन्न स्थानीय निकायों के बीच ऊर्ध्वाधर पूल को आवंटित करता है।
III. ऊर्ध्वाधर वितरण केवल केंद्रीय वित्त आयोग द्वारा निर्धारित किया जाता है, SFC द्वारा नहीं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

89. शहरी स्थानीय निकायों द्वारा संपत्ति कर संग्रह की चुनौतियों में निम्नलिखित में से कौन सा एक विषम है?
(1) व्यापक छूटों के कारण संकुचित कर आधार
(2) संपत्ति मूल्यों का कम मूल्यांकन
(3) पूर्णतः वस्तुनिष्ठ इकाई क्षेत्र पद्धति (Unit Area Method) का परिचय
(4) कंप्यूटरीकृत संपत्ति पंजी का अभाव
(5) अनुत्तरित प्रश्न

90. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, कथन (A) और कारण (R)। नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): राज्य वित्त आयोग राज्य-स्थानीय वित्त के 'संतुलन चक्र' के रूप में कार्य करता है।
कारण (R): यह सुनिश्चित करता है कि राज्य स्थानीय निकायों के अपने स्वयं के राजस्व के आधार पर उनके केंद्रीय हस्तांतरण में आनुपातिक रूप से कटौती करे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

91. केंद्रीय वित्त आयोग संविधान के किस अनुच्छेद के तहत पंचायतों और नगरपालिकाओं के संसाधनों की पूरक सहायता के लिए अनुदान की अनुशंसा करता है?
(1) अनुच्छेद 275
(2) अनुच्छेद 280
(3) अनुच्छेद 243I
(4) अनुच्छेद 243G
(5) अनुत्तरित प्रश्न

92. राज्य वित्त आयोग (SFC) के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. यह एक संवैधानिक निकाय है।
II. इसकी प्रकृति अर्द्ध-न्यायिक (quasi-judicial) है।
III. यह स्थानीय निकायों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करता है।
IV. यह केंद्र सरकार द्वारा एकत्र किए जाने वाले पथकर को निर्धारित करता है।
V. इसकी अनुशंसाएं परामर्शी प्रकृति की होती हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

93. निम्नलिखित में से कौन स्थानीय निकायों के लिए एक सुदृढ़ क्षमता निर्माण ढांचे का सही वर्णन करता है?
(1) विशेष रूप से संविदात्मक श्रम की भर्ती पर ध्यान केंद्रित करना
(2) स्थानीय निकायों को सभी कार्यों को गैर-सरकारी संगठनों को आउटसोर्स करने के लिए प्रोत्साहित करना
(3) निरंतर प्रशिक्षण, आईटी बुनियादी ढांचे की तैनाती, और मानकीकृत लेखांकन नियमावली स्थापित करना
(4) राज्य निर्वाचन आयोग की भूमिका को समाप्त करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

94. राजस्थान में स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग (LFAD) मुख्य रूप से राज्य सरकार के किस विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है?

कारण हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. प्रोत्साहन-आधारित हस्तांतरण (प्रदर्शन अनुदान) सर्वाधिक प्रभावी तब होता है जब:
(1) जब इसे अंकेक्षित खातों और बढ़े हुए कर संग्रह प्रदर्शन जैसे सत्यापन योग्य परिणामों से जोड़ा जाता है
(2) यह बुनियादी अबद्ध अनुदानों को पूर्णतः प्रतिस्थापित कर देता है
(3) यह स्थानीय निकाय के प्रदर्शन की परवाह किए बिना समान रूप से वितरित किया जाता है
(4) यह पूर्णतः स्थानीय संसद सदस्य द्वारा नियंत्रित होता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. राज्य वित्त आयोगों (SFCs) के समक्ष आने वाली सीमाओं के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) SFC प्रायः विलंबित गठन और अपर्याप्त कर्मचारी सहायता से जूझते हैं।
(2) राज्य सरकारें संवैधानिक रूप से बिना किसी बहस के SFC की सभी अनुशंसाओं को स्वीकार करने के लिए आबद्ध हैं।
(3) अनुभवजन्य अनुशंसाएं करने के लिए प्रायः स्थानीय निकायों के सुदृढ़ वित्तीय आंकड़ों की कमी होती है।
(4) स्वीकृत अनुशंसाओं का बार-बार लागू न होना SFC की प्रभावशीलता को कम करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

81. अनुच्छेद 243Y के अनुप्रयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह अनुच्छेद 243I के तहत गठित राज्य वित्त आयोग को नगरपालिकाओं की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करने का भी आदेश देता है।
कथन II: यह SFC को राज्य और नगरपालिकाओं के बीच करों की शुद्ध प्राप्तियों के वितरण को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों की अनुशंसा करने में सक्षम बनाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल कथन I
(2) केवल कथन II
(3) कथन I और कथन II दोनों
(4) न तो कथन I और न ही कथन II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

82. पंचायतों के लिए राजस्व के निम्नलिखित संभावित स्रोतों पर विचार कीजिए:
I. राज्य करों में हिस्सा
II. राज्य सरकार से सहायता अनुदान
III. केंद्रीय वित्त आयोग अनुदान
IV. जल और स्वच्छता पर उपयोगकर्ता शुल्क
V. ग्रामीण बुनियादी ढांचे में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)
उपर्युक्त कथनों में से कौन से पंचायतों के लिए राजस्व के मानक स्रोतों का प्रतिनिधित्व करते हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

83. राज्य के वे वित्तीय संसाधन जिनसे SFC की अनुशंसाओं के तहत स्थानीय निकायों को धन हस्तांतरित किया जाता है, किसमें रखे जाते हैं?
(1) राज्य की आकस्मिकता निधि (Contingency Fund of the State)
(2) राज्य स्थानीय निकाय कोष
(3) राज्य की संचित निधि (Consolidated Fund of the State)
(4) मुख्यमंत्री राहत कोष
(5) अनुत्तरित प्रश्न

84. राज्य वित्त आयोग की रिपोर्ट प्राप्त होने पर राज्यपाल से क्या कार्रवाई अपेक्षित है?
(1) इसे सीधे केंद्रीय वित्त आयोग को अग्रेषित करना
(2) विधायी समीक्षा के बिना इसे आधिकारिक राजपत्र में प्रकाशित करना
(3) राज्य के बजट के अनुरूप अनुशंसाओं को संशोधित करना
(4) रिपोर्ट को एक व्याख्यात्मक कार्रवाई ज्ञापन के साथ राज्य विधानमंडल के समक्ष रखवाना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

85. सूची I में दिए गए स्थानीय निकायों को सूची II में उनके विशिष्ट अधिकृत कर/शुल्क क्षेत्र के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (स्थानीय निकाय)
A. ग्राम पंचायत
B. पंचायत समिति
C. जिला परिषद
D. नगर निगम
सूची II: (अधिकृत कर/शुल्क क्षेत्र)
i. प्रमुख शहरी संपत्ति कर
ii. ग्रामीण क्षेत्रों के लिए मुद्रांक शुल्क पर अधिभार
iii. ग्रामीण मेलों और बाजारों पर शुल्क
iv. संक्रमणकालीन ग्रामीण क्षेत्रों में जल और मार्ग प्रकाश पर कर
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (3) अनुच्छेद 243I
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 243I पंचायतों की वित्तीय स्थिति सुदृढ़ करने हेतु राज्य वित्त आयोग के गठन का प्रावधान करता है। राज्यपाल प्रत्येक पांच वर्ष की समाप्ति पर इस आयोग की नियुक्ति करता है। यह आयोग पंचायतों की वित्तीय स्थिति की व्यापक समीक्षा करता है और राज्य द्वारा एकत्रित करों के न्यायसंगत वितरण के सिद्धांतों पर महत्वपूर्ण अनुशंसाएं शासन को प्रस्तुत करता है, जिससे स्थानीय स्वशासन सशक्त हो सके।

2. (4) अनुच्छेद 243Y
संविधान का अनुच्छेद 243Y शहरी स्थानीय निकायों अर्थात नगरपालिकाओं की वित्तीय स्थिति की समीक्षा हेतु राज्य वित्त आयोग को अधिदेशित करता है। यह अनुच्छेद स्पष्ट करता है कि अनुच्छेद 243I के तहत गठित आयोग ही नगरपालिकाओं की वित्तीय आवश्यकताओं का आकलन करेगा। आयोग नगरपालिकाओं को हस्तांतरित किए जाने वाले करों, शुल्कों और सहायता अनुदान के वितरण के सिद्धांतों की अनुशंसा राज्यपाल को करता है ताकि शहरी प्रशासन वित्तीय रूप से सुदृढ़ बने।

3. (2) केवल कथन II सही है
संविधान के प्रावधानों के अनुसार राज्य विधानमंडल को यह विशिष्ट शक्ति दी गई है कि वह विधि बनाकर राज्य वित्त आयोग की संरचना निर्धारित करे। इसके अतिरिक्त आयोग के सदस्यों की नियुक्ति हेतु आवश्यक योग्यताओं और उनके चयन की प्रक्रिया का निर्धारण भी राज्य विधानमंडल के विधायी क्षेत्राधिकार में आता है। यह लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया में राज्यों की स्वायत्तता और संस्थागत ढांचे की सुदृढ़ता को सुनिश्चित करने वाला एक अनिवार्य संवैधानिक उपबंध है।

4. (4) राज्य और स्थानीय निकायों के बीच, तथा स्थानीय निकायों के मध्य राज्य करों के वितरण के सिद्धांतों की अनुशंसा करना
राज्य वित्त आयोग के विचारार्थ विषय मुख्य रूप से राज्य के राजस्व संसाधनों के न्यायोचित बंटवारे पर केंद्रित होते हैं। इसका प्राथमिक उत्तरदायित्व उन सिद्धांतों का निर्धारण करना है जिनके माध्यम से राज्य द्वारा वसूले गए करों और शुल्कों की शुद्ध प्राप्तियों को राज्य सरकार और स्थानीय निकायों के बीच विभाजित किया जा सके। इसके साथ ही यह विभिन्न स्तरों की पंचायतों और नगरपालिकाओं के मध्य संसाधनों के ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज वितरण का मार्ग प्रशस्त करता है।

5. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
संविधान के विभिन्न अनुच्छेद स्थानीय और केंद्रीय वित्त व्यवस्था को परिभाषित करते हैं। अनुच्छेद 243I पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा हेतु राज्य वित्त आयोग का प्रावधान करता है, जबकि अनुच्छेद 243Y यही कार्य नगरपालिकाओं के लिए सुनिश्चित करता है। अनुच्छेद 280 के अंतर्गत केंद्रीय वित्त आयोग का गठन किया जाता है। अनुच्छेद 243H पंचायतों को कर लगाने की शक्ति और उनकी निधियों से संबंधित प्रावधानों को स्पष्ट करता है, जो उनकी वित्तीय स्वायत्तता हेतु महत्वपूर्ण हैं।

6. (2) स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग के सदस्यों की नियुक्ति करना
राज्य वित्त आयोग का मुख्य कार्य स्थानीय निकायों की वित्तीय सुदृढ़ता हेतु नीतिगत अनुशंसाएं करना है, न कि प्रशासनिक नियुक्तियां करना। स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग के सदस्यों की नियुक्ति करना राज्य सरकार के कार्यकारी क्षेत्राधिकार का हिस्सा है। आयोग का ध्यान मुख्य रूप से करों के आवंटन, सहायता अनुदान के निर्धारण और स्थानीय निकायों की आर्थिक स्थिति सुधारने के उपायों पर रहता है। प्रशासनिक पदों पर नियुक्तियां इसके संवैधानिक अधिदेश की सीमा से पूर्णतः बाहर होती हैं।

7. (4) राज्य सरकार से स्थानीय निकायों को राज्य के विभाज्य कर पूल के हिस्से का आवंटन
राजकोषीय संघवाद के अंतर्गत ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से राज्य सरकार अपने स्वयं के कर राजस्व के एक निश्चित हिस्से को स्थानीय निकायों को वितरित करती है। यह तंत्र संसाधनों के अंतर-स्तरीय प्रवाह को व्यवस्थित करता है ताकि पंचायतों और नगरपालिकाओं के पास अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करने हेतु पर्याप्त वित्तीय साधन उपलब्ध हों। यह राज्य और स्थानीय शासन के बीच वित्तीय असंतुलन को प्रभावी ढंग से कम करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

8. (1) I और II
ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण के माध्यम से राज्य करों के विभाज्य पूल से स्थानीय निकायों को दिए जाने वाले कुल संसाधनों का प्रतिशत निर्धारित किया जाता है। इसके विपरीत, क्षैतिज हस्तांतरण वह सूत्र है जो यह तय करता है कि विभिन्न स्थानीय निकायों के बीच इस आवंटित धनराशि का वितरण किस आधार पर होगा। राज्य वित्त आयोग इन दोनों प्रक्रियाओं में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि क्षैतिज हस्तांतरण में राज्य वित्त आयोग की कोई भूमिका नहीं होती।

9. (3) स्थानीय निकाय की जनसंख्या
स्थानीय निकायों के बीच संसाधनों के वितरण हेतु जनसंख्या को सबसे विश्वसनीय और प्राथमिक मानदंड माना जाता है। जनसंख्या का आधार यह सुनिश्चित करता है कि जहां अधिक

NODIA

(1) ग्रामीण विकास विभाग
(2) स्थानीय स्वशासन विभाग
(3) गृह विभाग
(4) वित्त विभाग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

95. सूची I में दिए गए आयोगों/संस्थाओं को सूची II में उनके प्राथमिक कार्य क्षेत्र के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (आयोग/संस्था)

A. केंद्रीय वित्त आयोग
B. राज्य वित्त आयोग
C. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG)
D. स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग

सूची II: (कार्य क्षेत्र)

i. स्थानीय अंकेक्षण के लिए तकनीकी मार्गदर्शन और सहायता
ii. PRI और ULB खातों का वैधानिक अंकेक्षण
iii. संघ-राज्य राजकोषीय संबंध और स्थानीय निकाय अनुदान अनुशंसाएं
iv. राज्य-स्थानीय राजकोषीय संबंध और हस्तांतरण

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

96. राज्य वित्त आयोगों के गठन में विलंब के कारण होने वाला एक सामान्य प्रशासनिक प्रभाव क्या है?

(1) केंद्रीय वित्त आयोग राज्य को होने वाले सभी हस्तांतरण रोक देता है।
(2) स्थानीय निकायों को राजस्व प्रवाह और तदर्थ अनुदान आवंटन में अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है।
(3) स्थानीय निकायों को स्वतः ही राज्य आयकर लगाने की शक्ति प्राप्त हो जाती है।
(4) राज्यपाल पंचायतों का प्रत्यक्ष वित्तीय नियंत्रण संभाल लेते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

97. निम्नलिखित में से कौन सा सामान्यतः स्थानीय निकायों के लिए प्रदर्शन अनुदान प्राप्त करने की पात्रता शर्त नहीं है?

(1) अंकेक्षित खातों को सार्वजनिक क्षेत्र में रखना
(2) सत्तारूढ़ दल के लिए अनिवार्य राजनीतिक रैलियां आयोजित करना
(3) स्व-स्रोत राजस्व में वृद्धि प्रदर्शित करना
(4) संपत्ति कर के लिए न्यूनतम दरों (floor rates) की अधिसूचना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

98. स्थानीय निकाय व्यय के लिए निम्नलिखित प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर विचार कीजिए:

I. जलापूर्ति प्रतिष्ठानों के लिए विद्युत बिलों का भुगतान
II. ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों का संचालन और रख-रखाव
III. विशाल बहु-विशेषज्ञता राज्य अस्पतालों का निर्माण
IV. निर्वाचित प्रतिनिधियों को मानदेय और भत्ते

उपर्युक्त में से कौन से कथन स्थानीय निकायों की सही व्यय प्राथमिकताओं की पहचान करते हैं?

(1) I, II और IV
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

99. एक SFC रिपोर्ट के जीवनचक्र चरणों को सही तार्किक अनुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. राज्य सरकार द्वारा व्याख्यात्मक ज्ञापन तैयार करना
II. राज्यपाल को रिपोर्ट सौंपना
III. स्थानीय निकायों के साथ SFC का परामर्श और डेटा संकलन
IV. राज्य विधानमंडल में रिपोर्ट प्रस्तुत करना

निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?

(1) III, II, I, IV
(2) III, I, II, IV
(3) II, III, I, IV
(4) III, II, IV, I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

100. राज्य वित्त आयोग के माध्यम से राजकोषीय हस्तांतरण का अंतिम उद्देश्य सर्वोत्तम रुप से किस रुप में वर्णित है?

(1) राज्य और केंद्र से स्थानीय निकायों की पूर्ण वित्तीय स्वतंत्रता बनाना
(2) देनदारियों को हस्तांतरित करके राज्य सरकार के राजकोषीय घाटे को कम करना
(3) जिला प्रशासन की नौकरशाही मशीनरी का वित्तपोषण करना
(4) स्थानीय स्वशासी सरकारों को उनके संवैधानिक अधिदेश को प्रभावी ढंग से निभाने के लिए संसाधनों के साथ सशक्त बनाना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

19. (3) बद्ध अनुदान विशिष्ट क्षेत्रों के लिए होते हैं, जबकि अबद्ध अनुदान निकाय के विवेक पर स्थानीय रूप से पहचानी गई आवश्यकताओं के लिए होते हैं।
अनुदानों के बीच का प्राथमिक अंतर उनके उपयोग की स्वतंत्रता में निहित है। बद्ध अनुदानों का उपयोग केवल पूर्व-निर्धारित विशिष्ट कार्यों जैसे जलापूर्ति या स्वच्छता प्रबंधन के लिए ही किया जा सकता है। इसके विपरीत, अबद्ध अनुदान स्थानीय निकायों को यह लचीलापन प्रदान करते हैं कि वे अपनी विशिष्ट स्थानीय समस्याओं और प्राथमिकताओं के अनुसार धन का व्यय कर सकें। यह व्यवस्था स्थानीय नियोजन में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और विवेकशीलता को महत्वपूर्ण बढ़ावा देती है, जिससे जमीनी विकास सुनिश्चित होता है।

20. (4) स्थानीय स्वायत्तता और नियोजन के विकेंद्रीकरण को बढ़ाना
अबद्ध अनुदानों का सर्वाधिक महत्व स्थानीय निकायों को निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करने में है। जब पंचायतों और नगरपालिकाओं को बिना किसी पूर्व-निर्धारित शर्त के धन प्राप्त होता है, तो वे अपनी ग्राम सभाओं के माध्यम से वास्तविक स्थानीय आवश्यकताओं को प्राथमिकता दे सकते हैं। यह स्वायत्तता नीचे से ऊपर की ओर नियोजन की प्रक्रिया को सुदृढ़ करती है। इससे स्थानीय स्वशासन की संस्थाएं केवल कार्यान्वयन एजेंसी न रहकर वास्तविक नीति-निर्माता और प्रभावी प्रशासक के रूप में उभरती हैं।

21. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
स्थानीय निकायों के लिए केवल धन का हस्तांतरण पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस धन के कुशल प्रबंधन हेतु क्षमता निर्माण भी अपरिहार्य है। कर्मचारियों और निर्वाचित प्रतिनिधियों को वित्तीय नियोजन और लेखांकन में प्रशिक्षित करना आवश्यक है ताकि संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग हो सके। आधुनिक सॉफ्टवेयर और पारदर्शी अंकेक्षण मानकों को अपनाना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। ये उपकरण न केवल वित्तीय दक्षता बढ़ाते हैं बल्कि भ्रष्टाचार को रोकने और सार्वजनिक जवाबदेही सुनिश्चित करने में भी सहायक होते हैं।

22. (2) III और IV
स्थानीय निकायों में जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक अंकेक्षण एक शक्तिशाली उपकरण है, जिसका उपयोग पंचायतों में व्यापक रूप से किया जाता है। संवैधानिक रूप से स्थानीय निकायों की अंकेक्षण रिपोर्ट को राज्य विधानमंडल के पटल पर रखना अनिवार्य होता है। समय पर अंकेक्षण पूरा करना अब प्रदर्शन अनुदान प्राप्त करने की एक पूर्व-शर्त बन गया है। राज्य स्तर पर स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग इन निकायों के प्राथमिक वैधानिक अंकेक्षण हेतु पूर्णतः उत्तरदायी होता है, जो वित्तीय अनुशासन बनाए रखता है।

23. (4) स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग
राजस्थान में पंचायती राज संस्थाओं और नगर निकायों के खातों की नियमित जांच और वैधानिक अंकेक्षण करने का प्राथमिक दायित्व स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग का है। यह विभाग वित्त विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है और यह सुनिश्चित करता है कि सार्वजनिक धन का व्यय निर्धारित नियमों के अनुसार ही किया जाए। इसकी वार्षिक रिपोर्ट राज्य की वित्तीय पारदर्शिता का आधार बनती है। यह विभाग स्थानीय निकायों में वित्तीय अनुशासन बनाए रखने के लिए एक प्रहरी के रूप में कार्य करता है।

24. (1) राजकोषीय तनाव और नागरिक सेवाओं की आपूर्ति में विलंब
राज्य वित्त आयोग की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन में होने वाली देरी स्थानीय निकायों के बजट पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। जब हस्तांतरित की जाने वाली राशि समय पर नहीं मिलती, तो निकायों को गंभीर राजकोषीय तनाव का सामना करना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप जलापूर्ति, सफाई और सड़कों के रखरखाव जैसे आवश्यक नागरिक कार्य प्रभावित होते हैं। समयबद्ध संसाधनों के अभाव में स्थानीय निकाय अपने विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में असमर्थ हो जाते हैं, जिससे अंततः आम जनता की कठिनाइयां बढ़ जाती हैं।

NODIA

25. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
भारतीय राजकोषीय ढांचे में कर शक्तियों का स्पष्ट विभाजन किया गया है। निगम कर पूर्णतः केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में आता है, जबकि कृषि भूमि राजस्व का प्रबंधन राज्य सरकारों द्वारा किया जाता है। स्थानीय स्तर पर, शहरी संपत्तियों पर कर वसूलने का अधिकार नगर निकायों को प्राप्त है। ग्रामीण क्षेत्रों में लगने वाले बाजार शुल्क का प्रबंधन पंचायती राज संस्थाओं द्वारा किया जाता है। यह व्यवस्था संसाधनों के विकेंद्रीकरण और संबंधित प्रशासनिक स्तरों की कार्यक्षमता को बढ़ाने हेतु निर्मित की गई है।

26. (1) क्षैतिज हस्तांतरण सूत्र में पिछड़ेपन और प्रति व्यक्ति आय की दूरी को अधिक महत्व (weightage) देकर
राज्य वित्त आयोग क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने के लिए हस्तांतरण सूत्र में समानीकरण के सिद्धांतों का उपयोग करता है। आयोग पिछड़ेपन, बुनियादी ढांचे की कमी और प्रति व्यक्ति आय में अंतर जैसे मानकों को अधिक महत्व देता है। ऐसा करने से आर्थिक रूप से कमजोर और संसाधनों की कमी वाले जिलों को अधिक वित्तीय सहायता प्राप्त होती है। यह रणनीति सुनिश्चित करती है कि सभी क्षेत्रों का संतुलित विकास हो सके और निर्धन निकायों के पास बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने हेतु पर्याप्त संसाधन हों।

27. (4) क्षैतिज हस्तांतरण - व्यक्तिगत स्थानीय निकाय इकाइयों के बीच हस्तांतरित निधियों का सूत्र-आधारित वितरण
स्थानीय वित्त व्यवस्था में 'क्षैतिज हस्तांतरण' वह पद्धति है जिसके माध्यम से राज्य भर की विभिन्न पंचायतों और नगरपालिकाओं के बीच कुल आवंटित राशि को बांटा जाता है। इसमें जनसंख्या, क्षेत्रफल और पिछड़ापन जैसे मानदंडों का उपयोग किया जाता है। अन्य विकल्प जैसे विभाज्य पूल या ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण अलग अवधारणाएं हैं। क्षैतिज हस्तांतरण का मुख्य लक्ष्य विभिन्न स्थानीय इकाइयों के बीच राजकोषीय समानता सुनिश्चित करना है, ताकि कोई भी क्षेत्र विकास की मुख्यधारा से पीछे न रहे।

46. (4) राज्य की संचित निधि (Consolidated Fund of the State)
स्थानीय निकायों को प्रदान किए जाने वाले सभी संवैधानिक सहायता अनुदान राज्य की संचित निधि से ही प्राप्त होते हैं। संविधान का अनुच्छेद 243I और 243Y स्पष्ट रूप से राज्य वित्त आयोग को यह अनुशंसा करने का निर्देश देते हैं कि संचित निधि से स्थानीय निकायों को किस प्रकार सहायता दी जाए। राज्य सरकार द्वारा एकत्र किए गए सभी कर और राजस्व इसी निधि में जमा होते हैं, जो स्थानीय प्रशासन के वित्तीय पोषण का प्राथमिक और स्थायी संवैधानिक स्रोत मानी जाती है।

47. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
स्थानीय निकायों की वास्तविक स्वायत्तता उनके स्वयं के राजस्व सृजन की क्षमता पर निर्भर करती है। संपत्ति कर, वाहन कर और स्थानीय बाजारों से होने वाली आय पंचायतों और नगर निकायों को स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। जब निकायों के पास अपना स्वयं का कोष होता है, तो उनकी राज्य सरकार के अनुदानों पर निर्भरता कम हो जाती है, जिससे वे अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार विकास कार्य कर सकते हैं। यह वित्तीय आत्मनिर्भरता स्थानीय लोकतंत्र को जमीनी स्तर पर सशक्त और जवाबदेह बनाने हेतु अपरिहार्य है।

48. (4) I, II और III
शहरी निकायों के स्वयं के राजस्व सृजन में कई गंभीर बाधाएं मौजूद हैं। पुरातन मूल्यांकन पद्धतियां संपत्ति कर की वास्तविक क्षमता को कम कर देती हैं। इसके साथ ही, जटिल प्रशासनिक प्रक्रियाएं नागरिकों के लिए कर भुगतान को कठिन बनाती हैं और संग्रह की लागत को बढ़ा देती हैं। एक अन्य चुनौती 'राजकोषीय शिथिलता' है, जहां प्रचुर मात्रा में मिलने वाले अनुदान निकायों को स्वयं के कर वसूलने के प्रयासों से विमुख कर देते हैं। ये सभी कारक मिलकर स्थानीय निकायों की आत्मनिर्भरता को बाधित करते हैं।

49. (2) ग्राम सभा द्वारा पारित प्रस्ताव के आधार पर ग्राम पुस्तकालय का निर्माण करना
अबद्ध अनुदानों की सबसे बड़ी विशेषता उनका लचीलापन है। इनका उपयोग किसी विशिष्ट सरकारी योजना के दायरे से बाहर, स्थानीय स्तर पर पहचानी गई आवश्यकताओं के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई ग्राम पंचायत अपने विवेक से पुस्तकालय बनाने का निर्णय लेती है, तो वह इसके लिए अबद्ध निधियों का उपयोग कर सकती है। इसके विपरीत, स्वच्छता के लिए मिलने वाले अनुदान प्रायः बद्ध होते हैं, जिनका उपयोग केवल उन्हीं क्षेत्रों में करना अनिवार्य होता है जिनके लिए वे आवंटित हैं।

50. (3) A सही है लेकिन R गलत है
अबद्ध अनुदान वास्तव में स्थानीय सरकारों की कार्यात्मक स्वायत्तता को सुदृढ़ करते हैं क्योंकि वे बिना किसी पूर्व-निर्धारित शर्त के व्यय की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। यह तर्क निराधार है कि ये अनुदान निकायों को केंद्र सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार व्यय के लिए विवश करते हैं। इसके विपरीत, बद्ध अनुदानों में ऐसे कड़े दिशानिर्देश होते हैं। अबद्ध अनुदानों का उद्देश्य ही यह है कि स्थानीय निकाय अपनी विशिष्ट समस्याओं के समाधान हेतु स्वयं योजनाएं बनाएं और उन्हें क्रियान्वित करें, जो विकेंद्रीकरण की मूल भावना है।

51. (3) अधिकारियों के लिए 'द्वि-प्रविष्टि' (double-entry) लेखांकन प्रणालियों और आधुनिक ई-गवर्नेंस उपकरणों पर नियमित प्रशिक्षण
स्थानीय निकायों के वित्तीय प्रबंधन में सुधार हेतु क्षमता निर्माण सबसे प्रभावी दृष्टिकोण है। कर्मियों को आधुनिक लेखांकन पद्धति और सूचना प्रौद्योगिकी उपकरणों में प्रशिक्षित करने से वित्तीय पारदर्शिता और सटीकता बढ़ती है। यह प्रशिक्षण न केवल त्रुटियों को कम करता है बल्कि वास्तविक समय में वित्तीय रिपोर्टिंग को भी संभव बनाता है। शक्तियों का केंद्रीकरण या अंकेक्षण से छूट जैसे उपाय जवाबदेही को कमजोर करते हैं, जबकि कौशल विकास स्थानीय प्रशासन को आत्मनिर्भर और आधुनिक कार्य संस्कृति की ओर ले जाता है।

52. (2) राज्य सरकार → जिला परिषद → पंचायत समिति → ग्राम पंचायत
राजस्थान में हस्तांतरित निधियों का प्रवाह एक व्यवस्थित त्रि-स्तरीय प्रशासनिक ढांचे के माध्यम से होता है। राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत निधियां सर्वप्रथम जिला स्तर पर जिला परिषदों को हस्तांतरित की जाती हैं। वहां से ये निधियां खंड स्तर पर संबंधित पंचायत समितियों को भेजी जाती हैं और अंततः क्रियान्वयन के प्राथमिक स्तर, यानी ग्राम पंचायतों तक पहुंचती हैं। यह पदानुक्रमित प्रवाह सुनिश्चित करता है कि निधियों के वितरण पर प्रत्येक स्तर पर निगरानी रखी जा सके और धन का आवंटन सिद्धांतों के अनुसार हो।

53. (3) सामाजिक अंकेक्षण (Social Audit)
सामाजिक अंकेक्षण लोकतांत्रिक जवाबदेही का एक अत्यंत प्रभावी तंत्र है। इसमें समुदाय के लोग स्वयं स्थानीय निकाय द्वारा किए गए व्यय, कार्यों की गुणवत्ता और परिणामों का सार्वजनिक रूप से मूल्यांकन करते हैं। यह प्रक्रिया भ्रष्टाचार को रोकने, पारदर्शिता बढ़ाने और यह सुनिश्चित करने में सहायक है कि विकास योजनाओं का लाभ वास्तविक लाभार्थियों तक पहुंचे। पारंपरिक अंकेक्षणों के विपरीत, यह जनता को सीधे शासन प्रक्रिया से जोड़ता है और स्थानीय निकायों को सीधे अपने नागरिकों के प्रति उत्तरदायी बनाने का कार्य करता है।

54. (2) संविधान में राज्य को बिना किसी परिवर्तन के 30 दिनों के भीतर सभी SFC अनुशंसाओं को लागू करना आवश्यक है।
संविधान में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जो राज्य सरकार को राज्य वित्त आयोग की सभी अनुशंसाओं को बिना किसी परिवर्तन के या 30 दिनों जैसी निश्चित समय सीमा के भीतर लागू करने के लिए विवश करता हो। वास्तव में, आयोग की अनुशंसाएं केवल परामर्शकारी प्रकृति की होती हैं और राज्य सरकार अपनी वित्तीय स्थिति के आधार पर उन्हें स्वीकार या संशोधित करने के लिए स्वतंत्र है। हालांकि, सरकार को अपनी कार्रवाई का विवरण विधानमंडल में प्रस्तुत करना अनिवार्य है, लेकिन 30 दिन की बाध्यता का कोई नियम नहीं है।

Click Here to Buy book on Amazon

37. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
राजस्थान में हस्तांतरण ढांचे का विकास निरंतर प्रगतिशील रहा है। समय के साथ क्रमिक राज्य वित्त आयोगों ने स्थानीय निकायों की बढ़ती जिम्मेदारियों को देखते हुए विभाज्य पूल में उनकी प्रतिशत हिस्सेदारी को बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त, संसाधनों के वितरण के तरीके में भी गुणात्मक सुधार हुआ है। अब केवल जनसंख्या या क्षेत्रफल ही नहीं, बल्कि वित्तीय प्रबंधन और कर संग्रह में किए गए प्रयासों जैसे प्रदर्शन मानकों को भी वितरण सूत्र में शामिल किया गया है। यह विकास स्थानीय निकायों को कुशल बनाता है।

38. (1) I और II
राज्य वित्त आयोग का गठन प्रत्येक पांच वर्ष में राज्यपाल द्वारा किया जाता है, जो एक संवैधानिक अनिवार्यता है। इसके सदस्यों की योग्यताओं और चयन प्रक्रिया का निर्धारण करने का अधिकार राज्य विधानमंडल के पास है। हालांकि, आयोग की अनुशंसाएं सरकार के लिए केवल परामर्शी प्रकृति की होती हैं और इन्हें मानने के लिए सरकार बाध्य नहीं है। इसके अलावा, आयोग अपनी रिपोर्ट राज्यपाल को सौंपता है, न कि सीधे राष्ट्रपति को। अतः केवल प्रथम दो कथन ही संवैधानिक रूप से सटीक हैं।

39. (4) राज्यपाल
संवैधानिक प्रक्रिया के अनुसार, राज्य वित्त आयोग अपनी विस्तृत रिपोर्ट और अनुशंसाएं राज्य के राज्यपाल को प्रस्तुत करता है। राज्यपाल का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि वह इस रिपोर्ट को, सरकार द्वारा तैयार किए गए 'व्याख्यात्मक कार्रवाई ज्ञापन' के साथ, राज्य विधानमंडल के सदन के पटल पर रखवाए। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि आयोग के सुझावों पर सार्वजनिक रूप से चर्चा हो और सरकार की प्रतिक्रिया पारदर्शी बनी रहे। यह तंत्र लोकतांत्रिक जवाबदेही और वित्तीय पारदर्शिता के सिद्धांतों को सुदृढ़ करता है।

40. (3) प्रत्येक 5 वर्ष
भारतीय संविधान के अनुच्छेद 243I के प्रावधानों के तहत, राज्य वित्त आयोग का गठन एक नियमित अंतराल पर होना अनिवार्य है। राज्यपाल को यह अधिकार और जिम्मेदारी दी गई है कि वे प्रत्येक पांच वर्ष की समाप्ति पर या उससे पहले एक नए आयोग का गठन करें। यह पांच वर्षीय चक्र स्थानीय निकायों के वित्तीय नियोजन और संसाधनों के हस्तांतरण में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए निर्धारित किया गया है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि स्थानीय निकायों की बदलती आर्थिक आवश्यकताओं की नियमित समीक्षा होती रहे।

41. (3) SFC की अनुशंसाओं पर राज्य सरकार की स्वीकृति या अस्वीकृति
'की गई कार्रवाई का विवरण' एक महत्वपूर्ण आधिकारिक दस्तावेज है जो राज्य वित्त आयोग की रिपोर्ट के साथ विधानमंडल में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें राज्य सरकार यह स्पष्ट करती है कि उसने आयोग की किन अनुशंसाओं को स्वीकार किया है और किन्हें अस्वीकार कर दिया है। यदि किसी सुझाव को नहीं माना गया है, तो उसके कारणों का भी उल्लेख करना आवश्यक होता है। यह दस्तावेज स्थानीय निकायों के प्रति सरकार की वित्तीय प्रतिबद्धता और नीतिगत दृष्टिकोण को औपचारिक रूप से अभिव्यक्त करने का माध्यम है।

42. (2) I, II, III और IV
राज्य वित्त आयोग के पास स्थानीय शासन को वित्तीय रूप से सशक्त बनाने के व्यापक उत्तरदायित्व हैं। यह पंचायतों और नगरपालिकाओं की आर्थिक स्थिति की समीक्षा करता है और राज्य करों के बंटवारे के सिद्धांतों की अनुशंसा करता है। इसके साथ ही, यह संचित निधि से स्थानीय निकायों को दिए जाने वाले सहायता अनुदान के नियम तय करता है और वित्तीय सुधार हेतु उपाय सुझाता है। हालांकि, जिला परिषदों का दैनिक वित्तीय अंकेक्षण करना इसका कार्य नहीं है, क्योंकि यह दायित्व स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग का है।

43. (4) राज्य के अपने स्वयं के कर राजस्व का वह हिस्सा जो स्थानीय निकायों के साथ साझा करने के लिए पात्र है
'विबीज्य पूल' राजकोषीय हस्तांतरण का वह आधार है जिसमें से स्थानीय निकायों को उनका हिस्सा दिया जाता है। इसमें राज्य सरकार द्वारा स्वयं एकत्र किए गए करों, जैसे राज्य उत्पाद शुल्क और मुद्रांक शुल्क की शुद्ध प्राप्तियां शामिल होती हैं। राज्य वित्त आयोग यह निर्धारित करता है कि इस कुल कोष का कितना प्रतिशत पंचायतों और नगरपालिकाओं को हस्तांतरित किया जाना चाहिए। यह पूल सुनिश्चित करता है कि स्थानीय निकायों को राज्य की समृद्धि में एक न्यायसंगत और निश्चित वित्तीय हिस्सेदारी प्राप्त हो सके।

44. (2) स्थानीय निकाय का जनसांख्यिकीय स्वरूप और भौगोलिक क्षेत्रफल
संसाधनों के न्यायसंगत क्षैतिज वितरण हेतु राज्य वित्त आयोग वस्तुनिष्ठ और पारदर्शी मानदंडों का चयन करते हैं। जनसंख्या का आकार सेवा वितरण की मांग को दर्शाता है, जबकि भौगोलिक क्षेत्रफल सेवा प्रदान करने की लागत को प्रभावित करता है। इन दोनों कारकों को संतुलित भार देकर वितरण सूत्र तैयार किया जाता है। राजनीतिक संबद्धता या योजनाओं की संख्या जैसे कारक वितरण के आधार नहीं होते। यह पद्धति सुनिश्चित करती है कि धन का आवंटन किसी पक्षपात के बिना वास्तविक विकास आवश्यकताओं के आधार पर हो।

45. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
हस्तांतरण के प्रत्येक मानदंड के पीछे एक विशिष्ट तर्क होता है। जनसंख्या सेवा वितरण के पैमाने को निर्धारित करती है, जबकि क्षेत्रफल विरल आबादी वाले क्षेत्रों में उच्च सेवा लागत की भरपाई करता है। आय की दूरी या पिछड़ापन उन क्षेत्रों को अधिक संसाधन प्रदान करता है जिनकी वित्तीय क्षमता कमजोर है, जिससे समानता सुनिश्चित होती है। कर प्रयास का मानदंड उन निकायों को प्रोत्साहित करता है जो स्वयं के राजस्व संग्रह में सुधार करते हैं। यह मिलान दक्षता और न्याय के संतुलन को दर्शाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

64. (2) तदर्थ (ad-hoc) अनुदान प्रणाली से राज्य कर पूल के सूत्र-आधारित प्रतिशत हिस्सेदारी की ओर परिवर्तन।
राजस्थान में हस्तांतरण ढांचे का विकास एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है। पहले स्थानीय निकायों को सरकार की इच्छा पर तदर्थ अनुदान दिए जाते थे, जिनमें अनिश्चितता का अभाव था। क्रमिक राज्य वित्त आयोगों के माध्यम से अब एक स्थिर प्रणाली विकसित हो गई है, जहां राज्य के कर राजस्व का एक निश्चित प्रतिशत सूत्र के आधार पर दिया जाता है। यह परिवर्तन स्थानीय निकायों को वित्तीय स्थिरता और पूर्वानुमान की शक्ति प्रदान करता है, जिससे वे भविष्य की विकास योजनाओं का बेहतर नियोजन कर सकते हैं।

65. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान राज्य वित्त आयोगों का गठन एक व्यवस्थित पांच-वर्षीय चक्र का अनुसरण करता है। प्रथम आयोग का गठन 1994 में हुआ, जिसके बाद द्वितीय आयोग 1999 में स्थापित किया गया। चतुर्थ आयोग का गठन 2011 में हुआ और वर्तमान छठा आयोग 2021 में कार्यशील हुआ। यह मिलान राज्य में स्थानीय वित्त व्यवस्था के संस्थागत सुदृढ़ीकरण के चरणों को स्पष्ट करता है। प्रत्येक नया आयोग पूर्व के अनुभवों के आधार पर वितरण सूत्रों और वित्तीय अनुशंसाओं को अधिक परिष्कृत और समसामयिक बनाने का निरंतर प्रयास करता है।

66. (1) कर संग्रह की लागत
ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण के लिए 'विभाज्य पूल' का निर्धारण करते समय केवल करों की 'शुद्ध प्राप्तियों' पर विचार किया जाता है। इसका तात्पर्य है कि कुल कर राजस्व में से उसे एकत्र करने पर होने वाले प्रशासनिक व्यय या लागत को घटा दिया जाता है। जो राशि शेष बचती है, उसे ही राज्य और स्थानीय निकायों के बीच साझा किया जाता है। राज्य वस्तु एवं सेवा कर, उत्पाद शुल्क और मुद्रांक शुल्क इस पूल के घटक हैं। कर संग्रह की लागत को साझा योग्य निधि में शामिल न करना मानक अभ्यास है।

67. (3) संपत्ति कर के निर्धारण और संग्रह को तर्कसंगत बनाना और उसमें सुधार करना
शहरी निकायों में 'इकाई क्षेत्र पद्धति' का उद्देश्य संपत्ति कर प्रणाली को अधिक पारदर्शी और सरल बनाना है। पुरानी 'एनुअल रेंटल वैल्यू' पद्धति में अक्सर मूल्यांकन मनमाना और व्यक्तिपरक होता था, जिससे भ्रष्टाचार की गुंजाइश रहती थी। नई इकाई क्षेत्र पद्धति संपत्तियों के स्थान, उपयोग और क्षेत्रफल के आधार पर कर का एक निश्चित मानक निर्धारित करती है। इससे करदाताओं के लिए गणना करना आसान हो जाता है और नगर निकायों की कर संग्रह दक्षता में सुधार होता है, जिससे उनके स्वयं के राजस्व में वृद्धि होती है।

68. (4) I, II और III
15वें वित्त आयोग ने स्थानीय निकायों के वित्तीय पोषण में कड़े सुधारों को शामिल किया है। आयोग ने अनिवार्य किया है कि अनुदानों का एक बड़ा हिस्सा स्वच्छता और पेयजल जैसे महत्वपूर्ण बुनियादी कार्यों से जुड़ा हो। इसके साथ ही, पारदर्शिता सुनिश्चित करने हेतु खातों की ऑनलाइन उपलब्धता को एक प्रवेश-स्तरीय शर्त बनाया गया है। आयोग ने राज्यों पर दबाव बनाने के लिए यह भी स्पष्ट किया है कि यदि वे समय पर राज्य वित्त आयोगों का गठन नहीं करते, तो उन्हें मिलने वाले अनुदान रोके जा सकते हैं।

69. (3) 40% बुनियादी और 60% बद्ध
15वें वित्त आयोग ने 2021-26 की अवधि के लिए ग्रामीण स्थानीय निकायों के अनुदान ढांचे में महत्वपूर्ण बदलाव किया है। अब कुल अनुदान का 40% हिस्सा 'बुनियादी अनुदान' के रूप में दिया जाता है, जो अबद्ध होता है और पंचायतें इसे अपनी स्थानीय जरुरतों पर खर्च कर सकती हैं। शेष 60% हिस्सा 'बद्ध अनुदान' होता है, जिसे विशेष रूप से पेयजल आपूर्ति और स्वच्छता जैसे राष्ट्रीय प्राथमिकताओं वाले कार्यों के लिए आरक्षित किया गया है। यह अनुपात स्थानीय स्वायत्तता और राष्ट्रीय लक्ष्यों के बीच संतुलन बनाता है।

70. (3) A सही है लेकिन R गलत है
भारत में स्थानीय निकाय वित्तीय रुप से राज्य और केंद्र से मिलने वाले अनुदानों पर अत्यधिक निर्भर हैं, क्योंकि उनके स्वयं के राजस्व स्रोत बहुत सीमित हैं। हालांकि, यह कारण बिल्कुल गलत है कि उनके स्वयं के राजस्व संग्रह तंत्र कुशल हैं। वास्तविकता इसके विपरीत है; स्थानीय निकायों के कर संग्रह तंत्र में गंभीर खामियां हैं और वे अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। इस अक्षमता के कारण ही उन्हें अपनी व्यय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बाहरी हस्तांतरणों पर निर्भर रहना पड़ता है।

71. (4) इंदिरा गांधी पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास संस्थान
राजस्थान में पंचायती राज संस्थाओं के निर्वाचित प्रतिनिधियों और अधिकारियों के क्षमता निर्माण हेतु 'इंदिरा गांधी पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास संस्थान' नोडल संस्था है। जयपुर स्थित यह संस्थान स्थानीय सुशासन, वित्तीय प्रबंधन और सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। इसका मुख्य उद्देश्य पंचायती राज पदाधिकारियों को उनके कानूनी अधिकारों और दायित्वों के प्रति जागरुक करना है ताकि वे ग्रामीण विकास का कुशल नेतृत्व कर सकें और लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को सफल बना सकें।

72. (2) I, II, III और IV
स्थानीय निधि अंकेक्षण की प्रक्रिया एक सुव्यवस्थित क्रम का पालन करती है। सर्वप्रथम विभाग द्वारा निकायों के खातों का विस्तृत अंकेक्षण किया जाता है। इसके पश्चात एक औपचारिक अंकेक्षण रिपोर्ट तैयार कर जारी की जाती है। फिर स्थानीय निकायों को इन आपत्तियों पर अपनी प्रतिक्रिया देने और सुधारात्मक अनुपालन करने का अवसर मिलता है। अंततः सभी निकायों की रिपोर्टों को संकलित कर वार्षिक विवरण के रुप में राज्य विधानमंडल के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। यह प्रक्रिया वित्तीय अनियमितताओं को रोकने में सहायक होती है।

NODIA

55. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
स्थानीय निकायों को मिलने वाले विभिन्न अनुदान विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। बद्ध अनुदान पेयजल और स्वच्छता जैसी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के लिए निश्चित होते हैं, जबकि अबद्ध अनुदान विवेकाधीन व्यय की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। प्रदर्शन अनुदान सुधारों को पूरा करने पर प्रोत्साहन के रूप में दिए जाते हैं। विशेष श्रेणी के अनुदान उन क्षेत्रों को मिलते हैं जो चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करते हैं। यह मिलान दर्शाता है कि किस प्रकार वित्तीय संसाधनों को विविध आवश्यकताओं के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है।

56. (1) राजकोषीय रूप से निर्बल जिलों को अधिक संसाधन हस्तांतरित करके समानीकरण (equalization) सुनिश्चित करता है
आय की दूरी या विकासात्मक सूचकांकों का उपयोग राजकोषीय न्याय सुनिश्चित करने का एक सशक्त माध्यम है। यह मानदंड उन जिलों की पहचान करता है जो आर्थिक रूप से पिछड़े हैं और जिनके पास स्वयं के राजस्व स्रोत अत्यंत सीमित हैं। ऐसे क्षेत्रों को हस्तांतरण सूत्र में अधिक भार देकर अतिरिक्त संसाधन प्रदान किए जाते हैं। इससे राज्य भर में बुनियादी नागरिक सेवाओं के स्तर में होने वाली असमानता कम होती है और निर्बल क्षेत्रों को अन्य विकसित क्षेत्रों के समान विकास के अवसर प्राप्त होते हैं।

57. (3) राज्य परिवहन बसों का संचालन
ग्राम पंचायतों के कार्यों का दायरा मुख्य रूप से ग्रामीण स्तर की बुनियादी नागरिक सुविधाओं तक ही सीमित होता है। आंतरिक सड़कों का रखरखाव, पेयजल की व्यवस्था और स्वच्छता प्रबंधन उनकी अनिवार्य प्राथमिकताओं में शामिल हैं। इसके विपरीत, राज्य परिवहन बसों का संचालन एक व्यापक स्तर का कार्य है जो सामान्यतः राज्य सड़क परिवहन निगम के क्षेत्राधिकार में आता है। पंचायतों के पास बस बेड़े के प्रबंधन और अंतर-जिला परिवहन सेवाओं के संचालन हेतु न तो वित्तीय क्षमता होती है और न ही संवैधानिक अधिदेश।

58. (3) I, II और III
प्रदर्शन अनुदान प्राप्त करने के लिए स्थानीय निकायों को वित्तीय और प्रशासनिक सुदृढ़ता प्रदर्शित करनी होती है। इसमें पिछले वर्षों के खातों का समय पर अंकेक्षण पूरा करना और स्वयं के राजस्व संग्रह में वृद्धि दिखाना अनिवार्य शर्तें हैं। इसके साथ ही, शहरी निकायों के लिए संपत्ति कर की दरों को अधिसूचित करना भी एक महत्वपूर्ण मानक है। ग्राम सभा का उन्मूलन जैसी शर्तें पूरी तरह से असंवैधानिक हैं क्योंकि ग्राम सभा पंचायती राज का मूल आधार है। अतः केवल प्रथम तीन शर्तें ही प्रदर्शन अनुदान हेतु मान्य हैं।

59. (4) एक 'बिना वित्तपोषण वाले अधिदेश' (unfunded mandate) का निर्माण जहां स्थानीय निकायों के पास उत्तरदायित्व तो हैं परंतु पर्याप्त धन का अभाव है
जब राज्य सरकार स्थानीय निकायों को दायित्व तो सौंप देती है लेकिन उनके लिए आवश्यक धन हस्तांतरित नहीं करती, तो इसे 'बिना वित्तपोषण वाला अधिदेश' कहा जाता है। यह स्थिति स्थानीय निकायों को पंगु बना देती है क्योंकि उनके पास सफाई और जलापूर्ति जैसी आवश्यक सेवाएं देने की जिम्मेदारी तो होती है, पर उन्हें पूरा करने के लिए वित्तीय साधन नहीं होते। संसाधनों के इस अभाव के कारण स्थानीय स्वशासन का उद्देश्य विफल हो जाता है और जनता की बुनियादी जरूरतों की अनदेखी होने लगती है।

60. (2) राज्य के राज्यपाल
राज्य वित्त आयोग एक संवैधानिक निकाय है और इसकी रिपोर्ट सौंपने की प्रक्रिया भी संवैधानिक रूप से निर्धारित है। आयोग के अध्यक्ष और सदस्य अपनी विस्तृत रिपोर्ट, जिसमें अनुशंसाएं और समीक्षा शामिल होती है, औपचारिक रूप से राज्य के राज्यपाल को सौंपते हैं। राज्यपाल इस रिपोर्ट के प्राप्त होने के पश्चात इसे राज्य सरकार को भेजते हैं ताकि सरकार इस पर अपनी प्रतिक्रिया और कार्रवाई का विवरण तैयार कर सके। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि आयोग सीधे संवैधानिक प्रमुख के प्रति उत्तरदायी बना रहे।

61. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
भारतीय संविधान में स्थानीय निकायों की वित्तीय सुदृढ़ता हेतु दो-स्तरीय सुरक्षा कवच प्रदान किया गया है। अनुच्छेद 243I राज्य स्तर पर राज्य वित्त आयोग के माध्यम से पंचायतों की वित्तीय समीक्षा सुनिश्चित करता है। इसके पूरक के रूप में, अनुच्छेद 280 के तहत केंद्रीय वित्त आयोग का यह दायित्व है कि वह राज्य वित्त आयोग की अनुशंसाओं के आधार पर राज्य की संचित निधि को बढ़ाने के उपाय सुझाए। ये दोनों अनुच्छेद मिलकर स्थानीय निकायों के लिए वित्तीय संसाधनों के सतत और न्यायसंगत प्रवाह की व्यवस्था करते हैं।

62. (2) I, II, III और IV
राजस्थान के प्रथम राज्य वित्त आयोग का गठन वर्ष 1994 में के.के. गोयल की अध्यक्षता में किया गया था। इस आयोग ने राज्य के शुद्ध कर राजस्व का 2.18% हिस्सा स्थानीय निकायों को देने की महत्वपूर्ण अनुशंसा की थी। यह कहना गलत है कि इसने शहरी निकायों की उपेक्षा की थी; वास्तव में, आयोग ने ग्रामीण और शहरी दोनों निकायों के बीच संसाधनों के वितरण का एक संतुलित ढांचा तैयार किया था। आयोग की इन अनुशंसाओं ने राज्य में राजकोषीय हस्तांतरण के एक नए युग का सूत्रपात किया था।

63. (1) विधि द्वारा राज्य विधानमंडल
पंचायतों की कर लगाने की शक्तियां पूर्णतः राज्य विधानमंडल की विधायी इच्छा पर निर्भर करती हैं। संविधान के अनुच्छेद 243H के तहत, केवल राज्य का विधानमंडल ही कानून बनाकर पंचायतों को विशिष्ट करों और शुल्कों को लगाने और वसूलने का अधिकार प्रदान कर सकता है। राज्य निर्वाचन आयोग या नीति आयोग जैसी संस्थाओं के पास ऐसी कोई विधायी शक्ति नहीं है। यह प्रावधान सुनिश्चित करता है कि स्थानीय कराधान व्यवस्था राज्य के व्यापक कानूनी ढांचे और नागरिकों के हितों के अनुरूप विनियमित बनी रहे।

Click Here to Buy book on Amazon

राज्यपाल को सौंपता है। इसके पश्चात, राज्य सरकार प्रत्येक अनुशंसा पर अपनी प्रतिक्रिया के रूप में एक 'व्याख्यात्मक ज्ञापन' तैयार करती है। अंत में, रिपोर्ट और सरकार का ज्ञापन दोनों ही राज्य विधानमंडल में चर्चा और स्वीकृति के लिए रखे जाते हैं। यह क्रम लोकतांत्रिक पारदर्शिता सुनिश्चित करता है।

100. (4) स्थानीय स्वशासी सरकारों को उनके संवैधानिक अधिदेश को प्रभावी ढंग से निभाने के लिए संसाधनों के साथ सशक्त बनाना
राज्य वित्त आयोग के माध्यम से किए जाने वाले राजकोषीय हस्तांतरण का अंतिम उद्देश्य जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को वित्तीय रूप से जीवंत बनाना है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि पंचायतों और नगरपालिकाओं के पास अपने संवैधानिक उत्तरदायित्वों को पूरा करने हेतु पर्याप्त और स्वायत्त संसाधन उपलब्ध हों। वित्तीय सशक्तिकरण के बिना स्थानीय शासन का विचार केवल एक प्रशासनिक औपचारिकता बनकर रह जाएगा। अतः यह तंत्र विकेंद्रीकृत शासन व्यवस्था को वास्तविक अर्थों में क्रियाशील और नागरिकों के प्रति उत्तरदायी बनाने का मुख्य माध्यम है।

NODIA

73. (3) ई-ग्रामस्वराज
'ई-ग्रामस्वराज' भारत सरकार के पंचायती राज मंत्रालय द्वारा विकसित एक एकीकृत पोर्टल है जिसका उपयोग राजस्थान सहित पूरे देश में किया जा रहा है। यह सॉफ्टवेयर ग्राम पंचायतों को उनकी विकास योजनाओं के नियोजन, लेखांकन और निगरानी के लिए एक एकल मंच प्रदान करता है। इसके माध्यम से पंचायतों के वित्तीय लेनदेन को ऑनलाइन देखा जा सकता है, जिससे पारदर्शिता बढ़ती है और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगता है। यह डिजिटल उपकरण ग्राम पंचायतों के आधुनिक वित्तीय प्रबंधन की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है।

74. (1) स्थानीय निकाय की व्यय आवश्यकताओं और उसकी स्वयं की राजस्व जुटाने की क्षमता के बीच का अंतर
'राजकोषीय अंतर' वह आर्थिक स्थिति है जहां स्थानीय निकायों के पास सौंपे गए कार्यों को पूरा करने के लिए स्वयं के पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध नहीं होते। पंचायतों और नगरपालिकाओं को स्वच्छता और पेयजल जैसे कई सार्वजनिक उत्तरदायित्व दिए गए हैं, लेकिन उनके कर लगाने के अधिकार अत्यंत संकुचित हैं। इस खाई को पाटने के लिए ही राज्य वित्त आयोगों द्वारा ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण और सहायता अनुदान की अनुशंसा की जाती है। यह अंतर स्थानीय शासन की वित्तीय निर्भरता का मुख्य सूचक है।

75. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
राजकोषीय हस्तांतरण के तंत्र को समझने के लिए इन शब्दों का अर्थ जानना आवश्यक है। ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण राज्य से स्थानीय निकायों को मिलने वाले कुल राजस्व हिस्से को दर्शाता है। क्षैतिज हस्तांतरण विभिन्न निकायों के बीच संसाधनों के वितरण का सूत्र है। सहायता अनुदान विशिष्ट वित्तीय कमियों को पूरा करने वाली मदद है, जबकि स्व-स्रोत राजस्व वह धन है जिसे निकाय सीधे अपनी शक्तियों से एकत्र करते हैं। यह मिलान स्थानीय वित्त व्यवस्था के ढांचे को स्पष्ट करता है कि किस प्रकार संसाधनों का वितरण होता है।

76. (2) स्थानीय पंचायती राज संस्थाओं के साथ साझा किए गए गौण खनिजों (minor minerals) से स्वामित्व का एक विशिष्ट प्रतिशत
राजस्थान में राज्य वित्त आयोगों ने स्थानीय निकायों के संसाधनों को बढ़ाने के लिए खनिज रॉयल्टी के बंटवारे की अनुशंसा की है। विशेष रूप से गौण खनिजों के खनन से प्राप्त होने वाले राजस्व का एक निश्चित हिस्सा उन ग्राम पंचायतों और पंचायत समितियों के साथ साझा किया जाता है जिनके क्षेत्रों में खनन कार्य संचालित होते हैं। यह व्यवस्था स्थानीय निकायों को अपने प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का वित्तीय लाभ प्रदान करती है, जिससे वे अपने क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास हेतु अतिरिक्त निवेश कर सकते हैं।

77. (3) उच्च शिक्षा विश्वविद्यालयों का रख-रखाव
नगर निकायों की व्यय प्राथमिकताएं अनिवार्य रूप से शहरी जीवन की बुनियादी नागरिक आवश्यकताओं जैसे ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, मार्ग प्रकाश और उद्यानों के रखरखाव तक सीमित होती हैं। उच्च शिक्षा और विश्वविद्यालयों का प्रबंधन एक व्यापक विषय है, जिसका उत्तरदायित्व सामान्यतः राज्य या केंद्र सरकार के उच्च शिक्षा विभागों के पास होता है। नगरपालिकाओं के पास इतने बड़े संस्थानों के शैक्षणिक और प्रशासनिक संचालन हेतु न तो विशेषज्ञता होती है और न ही आवश्यक बजटीय संसाधन। अतः यह उनकी मानक प्राथमिकताओं में नहीं है।

78. (2) I, II और III
जिलों के बीच वित्तीय असमानता के पीछे कई ठोस कारण मौजूद हैं। कुछ जिलों में खनिज संसाधनों और उद्योगों की प्रचुरता से राजस्व अधिक मिलता है, जबकि अन्य क्षेत्रों में इनका अभाव होता है। इसके अतिरिक्त, रेगिस्तानी भू-भाग और निम्न जनसंख्या घनत्व सेवा वितरण की लागत को बढ़ा देते हैं। स्थानीय प्रशासन की कार्यक्षमता और कर वसूली के प्रयासों में अंतर भी इस असमानता को गहरा करता है। राज्य वित्त आयोग द्वारा अनुदानों का वितरण इन असमानताओं को कम करने के लिए सूत्र-आधारित किया जाता है।

79. (1) जब इसे अंकेक्षित खातों और बढ़े हुए कर संग्रह प्रदर्शन जैसे सत्यापन योग्य परिणामों से जोड़ा जाता है
प्रदर्शन अनुदान का मूल उद्देश्य स्थानीय निकायों को सुधार की दिशा में प्रेरित करना है। इनकी प्रभावशीलता तभी सुनिश्चित होती है जब वे मापने योग्य परिणामों पर आधारित हों। जब निकायों को पता होता है कि अतिरिक्त धन प्राप्त करने के लिए उन्हें अपने खातों का समय पर अंकेक्षण कराना होगा या अपने कर संग्रह में सुधार करना होगा, तो वे अपनी कार्यप्रणाली को बेहतर बनाते हैं। यह व्यवस्था स्थानीय स्वशासन में पारदर्शिता, दक्षता और राजकोषीय अनुशासन की संस्कृति को स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है।

80. (2) राज्य सरकारें संवैधानिक रूप से बिना किसी बहस के SFC की सभी अनुशंसाओं को स्वीकार करने के लिए आबद्ध हैं।
राज्य वित्त आयोग की सीमाओं के संबंध में यह कथन गलत है कि उनकी अनुशंसाएं सरकार पर बाध्यकारी हैं। संवैधानिक रूप से, आयोग की भूमिका केवल परामर्शी है। राज्य सरकारें आयोग के सुझावों को स्वीकार करने, संशोधित करने या अस्वीकार करने का अधिकार रखती हैं, बशर्ते उन्हें इसके कारणों का विवरण विधानमंडल में देना पड़े। इसके अलावा, आयोगों को प्रायः समय पर गठन न होने और डेटा की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनकी रिपोर्टों की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं।

81. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
अनुच्छेद 243Y शहरी स्थानीय निकायों के वित्तीय सुदृढ़ीकरण हेतु एक महत्वपूर्ण संवैधानिक स्तंभ है। यह स्पष्ट करता है कि अनुच्छेद 243I के तहत गठित राज्य वित्त आयोग का यह अनिवार्य कार्य होगा कि वह नगरपालिकाओं की आर्थिक स्थिति की भी समीक्षा करे। इसके तहत आयोग राज्य के विभाज्य कर पूल से नगरपालिकाओं के हिस्से का निर्धारण करने वाले सिद्धांतों को प्रतिपादित करता है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि शहरी क्षेत्रों में विकास की मांगों को पूरा

Downloaded from www.pdf.tube

28. (1) I और II
स्थानीय निकायों के व्यय मुख्य रूप से स्थानीय नागरिक सुविधाओं और प्रशासनिक कार्यों तक सीमित होते हैं। इसमें कर्मचारियों का वेतन, कार्यालय व्यय, स्वच्छता प्रबंधन और पेयजल आपूर्ति जैसे प्राथमिक कार्य शामिल हैं। रक्षा खरीद और सीमा सुरक्षा जैसे विषय पूर्णतः राष्ट्रीय महत्व के हैं और केंद्र सरकार के क्षेत्राधिकार में आते हैं। स्थानीय निकायों की कार्यसूची में इन राष्ट्रीय रक्षा कार्यों का कोई स्थान नहीं होता। अतः केवल वेतन, प्रशासन और नागरिक सेवाएं ही उनके लिए वैध व्यय शीर्ष हैं।

29. (3) अंकेक्षित खातों या बेहतर कर संग्रह दक्षता जैसे सुधारों से जुड़े प्रोत्साहन-आधारित हस्तांतरण
प्रदर्शन अनुदान स्थानीय निकायों को उनके कार्य निष्पादन में सुधार करने के लिए प्रेरित करने वाला एक वित्तीय तंत्र है। ये अनुदान स्वतः प्राप्त नहीं होते, बल्कि कुछ पूर्व-निर्धारित शर्तों को पूरा करने पर निर्भर करते हैं। उदाहरण के लिए, समय पर अंकेक्षण पूरा करना, स्वयं के राजस्व में वृद्धि करना या डिजिटल रिकॉर्ड बनाए रखना इसके आधार हो सकते हैं। यह व्यवस्था स्थानीय निकायों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती है और उन्हें अधिक पारदर्शी तथा कुशल बनाने की दिशा में प्रोत्साहित करती है।

30. (3) A सही है लेकिन R गलत है
प्रदर्शन अनुदान का मुख्य उद्देश्य स्थानीय निकायों को बेहतर वित्तीय अनुशासन और राजस्व संग्रह के लिए प्रोत्साहित करना है। हालांकि, यह तर्क गलत है कि ये अनुदान सभी पंचायतों के बीच समान रूप से वितरित किए जाते हैं। इसके विपरीत, प्रदर्शन अनुदान केवल उन्हीं निकायों को दिए जाते हैं जो विशिष्ट मानकों और सुधारों की शर्तों को सफलतापूर्वक पूरा करते हैं। जो निकाय वांछित प्रदर्शन नहीं करते, वे इस अतिरिक्त वित्तीय लाभ से वंचित रह जाते हैं। यही इस सुधार प्रक्रिया का मूल आधार है।

31. (1) बद्ध अनुदानों पर अत्यधिक निर्भरता जिससे स्थानीय प्राथमिकताएं और स्वायत्तता सीमित हो जाती है
स्थानीय निकायों के लिए राजकोषीय हस्तांतरण में एक बड़ी समस्या बद्ध अनुदानों का बढ़ता बोझ है। जब अधिकांश धनराशि पूर्व-निर्धारित सरकारी योजनाओं के लिए आरक्षित होती है, तो स्थानीय निकायों के पास अपनी विशिष्ट क्षेत्रीय आवश्यकताओं पर खर्च करने के लिए बहुत कम लचीलापन बचता है। यह स्थिति उनकी स्वायत्तता को कम करती है और उन्हें केवल एक कार्यान्वयन एजेंसी बना देती है। स्थानीय प्राथमिकताओं की अनदेखी होने से विकेंद्रीकृत नियोजन की भावना कमजोर पड़ती है, जो लोकतांत्रिक शासन हेतु चुनौती है।

32. (1) II, IV, III, I
राजकोषीय हस्तांतरण की प्रक्रिया एक सुव्यवस्थित क्रम का अनुसरण करती है। सर्वप्रथम राज्यपाल द्वारा राज्य वित्त आयोग का गठन किया जाता है। इसके पश्चात आयोग राज्य करों के विभाज्य पूल का निर्धारण कर अपनी संस्तुतियां प्रस्तुत करता है। राज्य सरकार इन अनुशंसाओं पर 'की गई कार्रवाई का विवरण' विधानमंडल के समक्ष प्रस्तुत करती है। अंततः स्वीकृत सिद्धांतों के आधार पर स्थानीय निकायों को वित्तीय निधियों का वास्तविक हस्तांतरण सुनिश्चित किया जाता है। यह व्यवस्थित प्रक्रिया वित्तीय पारदर्शिता को सुदृढ़ करती है।

33. (2) यह उनकी राजकोषीय स्वायत्तता को कम करता है और नियोजन को अनिश्चित बनाता है
जब स्थानीय निकाय अपने संचालन के लिए मुख्य रूप से राज्य अनुदानों पर निर्भर होते हैं, तो उनकी आत्मनिर्भरता कम हो जाती है। यह निर्भरता उन्हें राज्य सरकार के निर्णयों और कोष की उपलब्धता के प्रति संवेदनशील बनाती है। यदि अनुदान समय पर नहीं मिलता, तो स्थानीय विकास कार्य और भविष्य का नियोजन अनिश्चित हो जाता है। साथ ही, यह स्थिति निकायों को स्वयं के राजस्व स्रोत विकसित करने से हतोत्साहित करती है। अंततः यह निर्भरता स्थानीय स्वशासन की स्वायत्त निर्णय लेने की क्षमता को कमजोर करती है।

34. (1) ग्रामीण और शहरी जनसंख्या का अनुपात और क्षेत्रफल के लिए कुछ भार (weightage)
15वें वित्त आयोग ने ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकायों के बीच अनुदानों के वितरण हेतु एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाया है। वितरण का आधार मुख्य रूप से संबंधित क्षेत्रों की जनसंख्या के अनुपात को बनाया गया है ताकि सेवा वितरण की मांग को पूरा किया जा सके। इसके साथ ही, भौगोलिक क्षेत्रफल को भी महत्व दिया जाता है क्योंकि बड़े और विरल क्षेत्रों में नागरिक सुविधाएं प्रदान करना अधिक खर्चीला होता है। यह संयुक्त पद्धति सुनिश्चित करती है कि संसाधनों का आवंटन न्यायपूर्ण हो।

35. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजकोषीय शब्दावली के सही अर्थ समझना आवश्यक है। 'विचारार्थ विषय' आयोग के कार्यक्षेत्र को परिभाषित करते हैं। 'विभाज्य पूल' वह कुल राशि है जिसे स्थानीय निकायों के साथ साझा किया जाना है। 'राज्य की संचित निधि' वह मुख्य कोष है जिससे सहायता अनुदान वितरित किया जाता है। 'की गई कार्रवाई का विवरण' सरकार द्वारा आयोग की रिपोर्ट पर लिए गए निर्णयों का आधिकारिक दस्तावेज है। यह मिलान राज्य और स्थानीय निकायों के बीच होने वाले संपूर्ण वित्तीय लेनदेन की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

36. (1) 2.18%
राजस्थान के प्रथम राज्य वित्त आयोग ने, जिसकी अध्यक्षता के.के. गोयल ने की थी, राज्य के शुद्ध कर राजस्व के वितरण हेतु एक प्रारंभिक आधार निर्धारित किया था। आयोग ने अनुशंसा की थी कि राज्य के शुद्ध कर राजस्व का 2.18% हिस्सा पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों को हस्तांतरित किया जाना चाहिए। हालांकि यह प्रतिशत बाद के आयोगों की तुलना में कम था, लेकिन इसने राज्य की आय में स्थानीय निकायों की एक निश्चित और अधिकारपूर्ण हिस्सेदारी सुनिश्चित करने की महत्वपूर्ण परंपरा का शुभारंभ किया।

NODIA

कटौती के लिए है। इसके विपरीत, आयोग का उद्देश्य स्थानीय निकायों के संसाधनों के आधार को सुदृढ़ करना और उनकी वित्तीय क्षमता को बढ़ाना है। यह स्थानीय वित्तीय स्वायत्तता को बढ़ावा देने वाला एक संवैधानिक सुरक्षा तंत्र है।

91. (2) अनुच्छेद 280
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 280 केंद्रीय वित्त आयोग के गठन और कार्यों को परिभाषित करता है। वर्ष 1992 के संशोधनों के पश्चात, इस आयोग को एक नया उत्तरदायित्व सौंपा गया है। इसके तहत आयोग को यह अनुशंसा करनी होती है कि राज्य वित्त आयोग की सिफारिशों के आधार पर राज्यों की संचित निधि को कैसे बढ़ाया जाए ताकि पंचायतों और नगरपालिकाओं को पूरक वित्तीय सहायता मिल सके। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि स्थानीय निकायों के विकास हेतु केंद्रीय संसाधनों का भी समुचित प्रवाह बना रहे।

92. (1) I, II, III और V
राज्य वित्त आयोग एक संवैधानिक निकाय है जिसका अधिदेश अनुच्छेद 243I के तहत निर्धारित है। यह स्थानीय निकायों की आर्थिक स्थिति की गहन समीक्षा करता है और करों के बंटवारे हेतु अनुशंसाएं देता है। अपनी कार्यप्रणाली में यह आंकड़ों का विश्लेषण करता है, जिससे इसकी प्रकृति अर्द्ध-न्यायिक हो जाती है। हालांकि इसकी अनुशंसाएं सरकार के लिए परामर्शी होती हैं, पर लोकतांत्रिक व्यवस्था में इनका अत्यधिक महत्व है। यह केंद्र द्वारा वसूले जाने वाले पथकर को निर्धारित नहीं करता, क्योंकि वह विषय केंद्रीय क्षेत्राधिकार में आता है।

93. (3) निरंतर प्रशिक्षण, आईटी बुनियादी ढांचे की तैनाती, और मानकीकृत लेखांकन नियमावली स्थापित करना
स्थानीय निकायों को प्रभावी बनाने के लिए एक व्यापक क्षमता निर्माण ढांचा अपरिहार्य है। निर्वाचित प्रतिनिधियों और कर्मचारियों का नियमित प्रशिक्षण उन्हें वित्तीय नियमों और सुशासन की बारीकियों से अवगत कराता है। सूचना प्रौद्योगिकी और आधुनिक सॉफ्टवेयर का उपयोग पारदर्शिता बढ़ाता है। साथ ही, मानकीकृत लेखांकन विधियों को अपनाने से अंकेक्षण प्रक्रिया सरल और त्रुटिरहित हो जाती है। ये सभी तत्व मिलकर स्थानीय निकायों को एक उत्तरदायी और दक्ष प्रशासनिक इकाई के रूप में विकसित करते हैं, जो सुशासन का आधार है।

94. (4) वित्त विभाग
राजस्थान में स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग सीधे वित्त विभाग के प्रशासनिक और नीतिगत नियंत्रण में कार्य करता है। यह विभाग राज्य सरकार का वह मुख्य अंग है जो यह सुनिश्चित करता है कि पंचायती राज संस्थाओं और शहरी निकायों द्वारा खर्च किया गया प्रत्येक रुपया कानून और वित्तीय नियमों के अनुसार हो। वित्त विभाग के अधीन होने से इसे आवश्यक स्वतंत्रता और अधिकार प्राप्त होते हैं, जिससे यह स्थानीय निकायों के खातों की निष्पक्ष जांच कर सके। इसकी रिपोर्टें राज्य की समग्र वित्तीय जवाबदेही को बनाए रखने में सहायक होती हैं।

95. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
विभिन्न वित्तीय संस्थाओं के कार्यक्षेत्र परस्पर पूरक और स्पष्ट हैं। केंद्रीय वित्त आयोग संघ-राज्य संबंधों और स्थानीय अनुदानों की रूपरेखा तैयार करता है। राज्य वित्त आयोग राज्य और स्थानीय निकायों के मध्य प्रत्यक्ष वित्तीय वितरण को देखता है। भारत का नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक स्थानीय निकायों के अंकेक्षण हेतु तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करता है, जबकि स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग वास्तविक वैधानिक अंकेक्षण का कार्य करता है। यह मिलान राजकोषीय संघवाद में पारदर्शिता और जवाबदेही के विभिन्न स्तरों को प्रदर्शित करता है।

96. (2) स्थानीय निकायों को राजस्व प्रवाह और तदर्थ अनुदान आवंटन में अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है।
राज्य वित्त आयोग के गठन में देरी का सबसे सीधा प्रभाव स्थानीय वित्तीय नियोजन पर पड़ता है। जब आयोग समय पर नहीं होता, तो संसाधनों के वितरण का कोई स्पष्ट और वैज्ञानिक आधार नहीं रह जाता। इसके परिणामस्वरूप, राज्य सरकारें अपनी सुविधानुसार तदर्थ अनुदान जारी करती हैं, जिससे निकायों के पास धन के प्रवाह में निरंतरता और पूर्वानुमान का अभाव हो जाता है। यह अनिश्चितता स्थानीय निकायों को लंबी अवधि की विकास योजनाएं बनाने से रोकती है और उन्हें अपने दैनिक कार्यों हेतु राज्य पर निर्भर बना देती है।

97. (2) सत्तारूढ़ दल के लिए अनिवार्य राजनीतिक रैलियां आयोजित करना
प्रदर्शन अनुदान प्राप्त करने की शर्तें पूरी तरह से प्रशासनिक और वित्तीय सुधारों पर आधारित होती हैं। इसमें खातों का सार्वजनिक अंकेक्षण कराना, स्वयं के राजस्व में वृद्धि करना और संपत्ति कर के लिए कानूनी ढांचे को अधिसूचित करना जैसे पारदर्शी मानदंड शामिल हैं। राजनीतिक गतिविधियों या रैलियों का आयोजन इन शर्तों का हिस्सा कभी नहीं हो सकता क्योंकि यह लोकतांत्रिक सिद्धांतों और संवैधानिक शुचिता के विरुद्ध है। प्रदर्शन अनुदान का एकमात्र लक्ष्य स्थानीय शासन की दक्षता, जवाबदेही और वित्तीय सुदृढ़ता को बढ़ावा देना है।

98. (1) I, II और IV
स्थानीय निकायों के व्यय का प्राथमिक केंद्र नागरिक सेवाओं का सुचारु संचालन है। इसमें जलापूर्ति प्रणालियों के बिजली बिलों का भुगतान और कचरा प्रबंधन जैसे स्वच्छता कार्य सबसे महत्वपूर्ण हैं। निर्वाचित प्रतिनिधियों को मानदेय देना भी प्रशासनिक व्यय का हिस्सा है। बड़े और विशिष्ट अस्पतालों का निर्माण करना उनके दायरे से बाहर है, क्योंकि यह कार्य राज्य सरकार के स्वास्थ्य विभाग का है। स्थानीय निकायों की भूमिका प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों तक ही सीमित रहती है। अतः केवल प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ कथन ही सही प्राथमिकताएं हैं।

99. (1) III, II, I, IV
राज्य वित्त आयोग की रिपोर्ट का जीवनचक्र एक तार्किक प्रशासनिक प्रक्रिया का पालन करता है। प्रक्रिया की शुरुआत डेटा संकलन और स्थानीय निकायों के साथ परामर्श से होती है। इन तथ्यों के आधार पर आयोग अपनी रिपोर्ट तैयार कर

Click Here to Buy book on Amazon

करने के लिए नगरपालिकाओं को राज्य के राजस्व में हिस्सेदारी मिले।

82. (2) I, II, III और IV
पंचायतों के राजस्व का ढांचा बहुआयामी है, जिसमें राज्य करों का हिस्सा और राज्य सरकार से मिलने वाले सहायता अनुदान प्राथमिक स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त, केंद्रीय वित्त आयोग द्वारा अनुशंसित अनुदान भी उनकी वित्तीय क्षमता को बढ़ाते हैं। स्थानीय स्तर पर, पंचायतें जल और बाजारों पर उपयोगकर्ता शुल्क लगाकर अपना स्वयं का राजस्व जुटा सकती हैं। ग्रामीण बुनियादी ढांचे में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश वर्तमान में पंचायतों के लिए कोई मानक राजस्व स्रोत नहीं है। अतः प्रथम चार कारक ही उनके वित्तीय ढांचे का प्रतिनिधित्व करते हैं।

83. (3) राज्य की संचित निधि (Consolidated Fund of the State)
राज्य वित्त आयोग की अनुशंसाओं के अनुसार स्थानीय निकायों को दी जाने वाली सभी वित्तीय निधियां राज्य की संचित निधि से ही प्रदान की जाती हैं। यह निधि राज्य सरकार की सभी आय और राजस्व का मुख्य कोष है। संविधान के अनुच्छेद 243I और 243Y के तहत संचित निधि से सहायता अनुदान के सिद्धांतों का निर्धारण आयोग द्वारा किया जाता है। यह संवैधानिक व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि स्थानीय निकायों को मिलने वाला धन विधिसम्मत हो, जिससे पंचायती राज और नगर निकायों के वित्तीय आधार को स्थायित्व प्राप्त होता है।

84. (4) रिपोर्ट को एक व्याख्यात्मक कार्रवाई ज्ञापन के साथ राज्य विधानमंडल के समक्ष रखवाना
राज्य वित्त आयोग की रिपोर्ट पर राज्यपाल की भूमिका संवैधानिक रूप से परिभाषित है। रिपोर्ट प्राप्त करने के पश्चात राज्यपाल इसे राज्य सरकार को भेजते हैं। सरकार का यह दायित्व है कि वह प्रत्येक अनुशंसा पर अपनी प्रतिक्रिया तैयार करे, जिसे 'व्याख्यात्मक कार्रवाई ज्ञापन' कहा जाता है। अंततः राज्यपाल इस संपूर्ण दस्तावेज को राज्य विधानमंडल के सदन में प्रस्तुत करवाते हैं। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि आयोग की सिफारिशों पर विधायकों द्वारा व्यापक चर्चा हो सके और स्थानीय वित्तीय मामलों में लोकतांत्रिक पारदर्शिता बनी रहे।

85. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
स्थानीय निकायों की कर शक्तियां उनके कार्यक्षेत्र के अनुसार विभाजित हैं। ग्राम पंचायतें ग्रामीण मेलों और हाटों पर शुल्क वसूलती हैं, जबकि पंचायत समितियां जल और मार्ग प्रकाश कर लगा सकती हैं। जिला परिषदों को अक्सर मुद्रांक शुल्क पर अधिभार जैसी शक्तियां प्राप्त होती हैं। शहरी क्षेत्रों में नगर निगमों के पास संपत्ति कर राजस्व का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत होता है। यह मिलान स्पष्ट करता है कि किस प्रकार विभिन्न स्तरों के स्थानीय निकायों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप अलग-अलग कर क्षेत्राधिकार आवंटित किए गए हैं।

86. (2) यह सुनिश्चित करना कि कम प्रति व्यक्ति आय वाले क्षेत्रों को राजकोषीय अंतराल को पाटने के लिए उच्च हिस्सा मिले
'प्रति व्यक्ति आय की दूरी' समानीकरण के सिद्धांत पर आधारित एक महत्वपूर्ण मानदंड है। यह दर्शाता है कि किसी स्थानीय निकाय की औसत आय राज्य के सबसे संपन्न निकाय की तुलना में कितनी कम है। जिन क्षेत्रों में यह दूरी अधिक होती है, वहां विकास की आवश्यकताएं ज्यादा और संसाधन कम होते हैं। अतः राज्य वित्त आयोग ऐसे पिछड़े क्षेत्रों को वितरण सूत्र में अधिक भार देता है। यह रणनीति सुनिश्चित करती है कि संसाधनों का प्रवाह निर्धन क्षेत्रों की ओर अधिक हो ताकि क्षेत्रीय आर्थिक असमानताओं को कम किया जा सके।

87. (4) प्रद्युम्न सिंह
राजस्थान में छठे राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष के रूप में प्रद्युम्न सिंह को नियुक्त किया गया है। उनके नेतृत्व में यह आयोग वर्ष 2021 से 2026 की अवधि के लिए स्थानीय निकायों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करने और संसाधनों के हस्तांतरण हेतु अनुशंसाएं करने का कार्य कर रहा है। आयोग का मुख्य ध्यान स्थानीय निकायों की वित्तीय आत्मनिर्भरता बढ़ाने और पंचायती राज संस्थाओं तथा नगर निकायों के बीच राज्य के कर राजस्व के न्यायोचित बंटवारे पर है। उनका प्रशासनिक अनुभव आयोग के कार्य संचालन में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

NODIA

88. (1) I और II
राजकोषीय हस्तांतरण के दो प्रमुख आयाम हैं: ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज। ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण यह तय करता है कि राज्य के कुल राजस्व का कितना प्रतिशत हिस्सा सामूहिक रूप से स्थानीय निकायों को दिया जाना चाहिए। इसके पश्चात, क्षैतिज वितरण एक निर्धारित सूत्र के माध्यम से इस कुल हिस्से को प्रत्येक पंचायत और नगरपालिका के बीच बांटता है। यह कथन गलत है कि ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण केवल केंद्रीय आयोग द्वारा तय होता है; राज्य स्तर पर राज्य वित्त आयोग ही इन दोनों प्रकार के वितरणों के लिए मुख्य संस्तुति प्रदाता होता है।

89. (3) पूर्णतः वस्तुनिष्ठ इकाई क्षेत्र पद्धति (Unit Area Method) का परिचय
शहरी निकायों में 'इकाई क्षेत्र पद्धति' का लागू होना कर संग्रह की चुनौती नहीं है, बल्कि यह एक सुधारात्मक उपाय है। अन्य कारक जैसे व्यापक कर छूट, संपत्तियों का कम मूल्यांकन और डिजिटल डेटाबेस का अभाव कर राजस्व बढ़ाने के मार्ग में वास्तविक चुनौतियां हैं। इकाई क्षेत्र पद्धति तो इन समस्याओं के समाधान के रूप में लाई गई है ताकि मूल्यांकन प्रक्रिया को पारदर्शी और त्रुटिहीन बनाया जा सके। अतः यह सुधारों का हिस्सा है, न कि संग्रह की प्रक्रिया में आने वाली प्रशासनिक कठिनाई का।

90. (3) A सही है लेकिन R गलत है
राज्य वित्त आयोग वास्तव में राज्य और स्थानीय निकायों के बीच वित्तीय संबंधों को संतुलित करने वाले चक्र के रूप में कार्य करता है। यह सुनिश्चित करता है कि स्थानीय निकायों को उनके उत्तरदायित्वों के अनुसार पर्याप्त धन मिले। हालांकि, यह कारण बिल्कुल गलत है कि यह केंद्रीय हस्तांतरण में

अध्याय 19
राजस्थान में शिक्षा

1. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल साक्षरता दर कितनी थी?
(1) 60.41 प्रतिशत
(2) 66.11 प्रतिशत
(3) 74.04 प्रतिशत
(4) 79.19 प्रतिशत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. 2011 की जनगणना के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थान में साक्षरता में लैंगिक अंतराल को सटीक रूप से दर्शाता है?
(1) पुरुष साक्षरता दर 79.2 प्रतिशत और महिला साक्षरता 52.1 प्रतिशत है, जो लगभग 27.1 प्रतिशत का अंतर दर्शाती है।
(2) पुरुष साक्षरता दर 82.1 प्रतिशत और महिला साक्षरता 54.3 प्रतिशत है, जो लगभग 27.8 प्रतिशत का अंतर दर्शाती है।
(3) पुरुष साक्षरता दर 74.0 प्रतिशत और महिला साक्षरता 52.1 प्रतिशत है, जो लगभग 21.9 प्रतिशत का अंतर दर्शाती है।
(4) पुरुष साक्षरता दर 79.2 प्रतिशत और महिला साक्षरता 61.4 प्रतिशत है, जो लगभग 17.8 प्रतिशत का अंतर दर्शाती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. 2011 की जनगणना में राजस्थान के उस जिले की पहचान करें जहाँ न्यूनतम कुल साक्षरता दर दर्ज की गई थी।
(1) सिरोही
(2) प्रतापगढ़
(3) जालौर
(4) बांसवाड़ा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. राजस्थान में शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम के क्रियान्वयन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम आधिकारिक तौर पर 2011 में अधिसूचित किए गए थे।
II. यह अधिनियम 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की गारंटी देता है।
III. यह अधिनियम निजी गैर-सहायता प्राप्त विद्यालयों में कमजोर वर्ग के बच्चों के लिए 25 प्रतिशत आरक्षण अनिवार्य करता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

5. राजस्थान के राजकीय विद्यालयों में लागू की गई पीएम पोषण योजना का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित में से क्या है?
(1) माध्यमिक विद्यालय के मेधावी छात्रों को निःशुल्क डिजिटल टैबलेट प्रदान करना
(2) यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी बालिकाएं विद्यालय जाएं, अभिभावकों को वित्तीय सहायता देना
(3) बच्चों के पोषण में सुधार करना और छात्रों की निरंतर उपस्थिति सुनिश्चित करना
(4) सभी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च-तकनीकी स्मार्ट कक्षाओं और प्रयोगशालाओं का निर्माण करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. राजस्थान में प्रारंभिक शिक्षा के संदर्भ में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) और शुद्ध नामांकन अनुपात (एनईआर) के बीच मौलिक अंतर क्या है?
(1) जीईआर केवल शहरी क्षेत्रों पर लागू होता है, जबकि एनईआर विशेष रूप से ग्रामीण विद्यालयों के लिए है।
(2) जीईआर एक स्तर के सभी छात्रों की गणना करता है, जबकि एनईआर केवल आयु-उपयुक्त समूह की गणना करता है।
(3) जीईआर राजकीय नामांकन को मापता है, जबकि एनईआर निजी विद्यालय के छात्रों के आंकड़ों का मूल्यांकन करता है।
(4) जीईआर केवल छात्र डेटा को ट्रैक करता है, जबकि एनईआर लड़कों और लड़कियों दोनों का समान रूप से विवरण रखता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): मध्याह्न भोजन योजना ने राजस्थान के प्रारंभिक विद्यालयों में उपस्थिति और प्रतिधारण दर में सुधार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
कारण (R): यह योजना राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में नामांकित सभी छात्रों को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें और

(1) 150 मिली
(2) 250 मिली
(3) 200 मिली
(4) 100 मिली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. कोटा में कोचिंग उद्योग से जुड़े निम्नलिखित परिणामों पर विचार कीजिए:

I. महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष स्थानीय रोजगार का सृजन
II. स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान देने वाले देश भर के छात्रों का आगमन
III. छात्र मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक दबाव पर बढ़ती चिंताएं
IV. संस्थानों को विनियमित करने के लिए 'राजस्थान कोचिंग दिशानिर्देश' जारी करना
V. प्रत्येक नामांकित छात्र का आईआईटी या एम्स में प्रवेश की गारंटी

कौन से कथन कोटा के कोचिंग पारिस्थितिकी तंत्र की सटीक वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं?

(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. राजस्थान के निम्नलिखित मेडिकल कॉलेजों को उनकी स्थापना के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

I. रवींद्र नाथ टैगोर (आरएनटी) मेडिकल कॉलेज, उदयपुर
II. सवाई मान सिंह (एसएमएस) मेडिकल कॉलेज, जयपुर
III. सरदार पटेल (एसपी) मेडिकल कॉलेज, बीकानेर
IV. जवाहरलाल नेहरू (जेएलएन) मेडिकल कॉलेज, अजमेर

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:

(1) II, I, III, IV
(2) II, III, I, IV
(3) III, II, IV, I
(4) II, III, IV, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. राजस्थान में महिला उच्च शिक्षा के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं।

कथन I: पिछले दशक में राजस्थान में उच्च शिक्षा में बालिकाओं के सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई है।

कथन II: बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना जैसी पहल शुरू की गई है।

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. राजस्थान में शैक्षिक योजनाओं और उनके संबंधित प्रावधानों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।

(1) देवनारायण छात्रा स्कूटी योजना – अति पिछड़ा वर्ग (एमबीसी) की बालिकाओं के लिए
(2) गार्गी पुरस्कार – कक्षा 10 में 75% अंक लाने पर दिया जाने वाला पुरस्कार
(3) आपकी बेटी योजना – विशेष रूप से निजी विद्यालयों में पढ़ने वाली बालिकाओं के लिए
(4) इंदिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार – बोर्ड परीक्षाओं में विशिष्ट श्रेणियों के टॉपर्स को दिया जाता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीवीबी) को आवासीय विद्यालयों के रूप में स्थापित करने के पीछे मौलिक कारण क्या है?

(1) दूरी या आर्थिक बाधाओं का सामना करने वाली बालिकाओं के लिए सुरक्षित अधिगम वातावरण प्रदान करना
(2) सशस्त्र बलों में शामिल होने वाले छात्रों के लिए गहन शारीरिक प्रशिक्षण प्रदान करना
(3) यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक छात्र प्रभावी ढंग से कई विदेशी भाषाएं सीख सके
(4) राज्य स्वास्थ्य आपात स्थितियों के दौरान अस्थायी चिकित्सा क्वारंटीन केंद्रों के रूप में कार्य करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को उनकी पुरुष साक्षरता दर के आधार पर सही बढ़ते क्रम में चुनें।

(1) प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, सिरोही, जालौर
(2) जालौर, सिरोही, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़
(3) प्रतापगढ़, सिरोही, जालौर, बांसवाड़ा
(4) बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, जालौर, सिरोही
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. सूची I में डिजिटल शिक्षा पहलों को सूची II में उनके विशिष्ट विवरणों के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: (डिजिटल पहल)

A. शाला संबलन
B. ई-कक्षा
C. स्माइल (SMILE)
D. दीक्षा (DIKSHA)

सूची II: (विवरण)

i. शिक्षा विभाग और वेदांता द्वारा यूट्यूब पर निःशुल्क डिजिटल कक्षाएं
ii. शिक्षकों के लिए डिजिटल बुनियादी ढांचा प्रदान करने वाला राष्ट्रीय मंच

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs, you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams, being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

IV. शहरी सीमावर्ती विद्यालयों में आरटीई मानकों से अधिक उच्च शिक्षक-छात्र अनुपात
V. प्राथमिक स्तर पर व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रयोगशालाओं की अत्यधिक प्रचुरता

कौन से कथन वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में वास्तविक चुनौतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को उनकी कुल साक्षरता दर के अनुसार सही अवरोही क्रम में चुनिए।
(1) कोटा, जयपुर, झुंझुनू, सीकर
(2) जयपुर, कोटा, सीकर, झुंझुनू
(3) कोटा, झुंझुनू, जयपुर, सीकर
(4) झुंझुनू, कोटा, जयपुर, सीकर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. उच्च शिक्षा के संदर्भ में, राजस्थान का कौन सा राज्य विश्वविद्यालय मुख्य रूप से तकनीकी और इंजीनियरिंग शिक्षा पर केंद्रित है?
(1) जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय
(2) राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय
(3) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
(4) गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा लागू किए गए शाला दर्पण पोर्टल का सबसे सटीक विवरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) महाविद्यालय के प्राध्यापकों के वार्षिक वेतन को ट्रैक करने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक वित्तीय पोर्टल
(2) राजकीय विद्यालयों, छात्रों और कर्मचारियों के वास्तविक समय के डेटा के लिए एक ऑनलाइन मंच
(3) राज्य विश्वविद्यालय के शोध पत्रों और शोध प्रबंधों को संग्रहीत करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक डिजिटल भंडार
(4) छात्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर की चिकित्सा प्रवेश परीक्षा के लिए पंजीकरण करने का एक पोर्टल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. राजस्थान में लागू 'पढ़ना लिखना अभियान' के तहत कार्यात्मक साक्षरता प्रदान करने के लिए प्राथमिक लक्षित आयु वर्ग क्या है?
(1) 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के असाक्षर
(2) 6 से 14 वर्ष के बीच के बच्चे
(3) केवल 15 से 25 वर्ष के बीच के विद्यालय से बाहर रहने वाले युवा
(4) विशेष रूप से 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुसार, विद्यालयी शिक्षा की वर्तमान 10+2 संरचना को संशोधित किया जाना है। निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में अपनाई जा रही नई शिक्षणशास्त्रीय संरचना का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) 5+4+3+3
(2) 4+3+3+5
(3) 5+3+3+4
(4) 3+5+3+4
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. सूची I में राजस्थान के विश्वविद्यालयों को सूची II में उनके संबंधित स्थानों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विश्वविद्यालय)
A. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय
B. जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय
C. महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय
D. गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय
सूची II: (स्थान)
i. जोधपुर
ii. बीकानेर
iii. अजमेर
iv. बांसवाड़ा
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

21. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए राजस्थान में चयनित हिंदी माध्यम के राजकीय विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में बदलने के लिए कौन सी योजना शुरु की गई थी?
(1) स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूल योजना
(2) डॉ. बी.आर. अंबेडकर एक्सीलेंस स्कूल योजना
(3) महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय योजना
(4) दीनदयाल उपाध्याय मॉडल स्कूल योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. राजस्थान में मुख्यमंत्री बाल गोपाल योजना के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) यह योजना राजकीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक पढ़ने वाले छात्रों को दूध प्रदान करती है।
(2) दूध की लागत पीएम पोषण योजना के तहत पूरी तरह से केंद्र सरकार द्वारा वहन की जाती है।
(3) इस पोषण योजना के तहत वितरण के लिए दुग्ध पाउडर उत्पादों को संसाधित और उपयोग किया जाता है।

(4) सीकर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. निम्नलिखित में से कौन सा घटक समग्र शिक्षा अभियान ढांचे का हिस्सा नहीं है?
(1) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (रमसा)
(2) राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रूसा)
(3) सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए)
(4) शिक्षक शिक्षा (टीई)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. 2011 की जनगणना के अनुसार, 60 प्रतिशत से कम कुल साक्षरता दर वाले जिलों की स्थिति के आधार पर निम्नलिखित में से विषम का चयन करें।
(1) जालौर
(2) प्रतापगढ़
(3) सिरोही
(4) अजमेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. सूची I में राजस्थान के शैक्षिक संस्थानों के प्रकारों को सूची II में उनकी विशिष्ट विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (संस्थान)
A. स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूल
B. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय
C. शार्दुल स्पोर्ट्स स्कूल
D. औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई)
सूची II: (विशेषता)
i. व्यावसायिक और कौशल-आधारित शिल्प प्रशिक्षण पर केंद्रित
ii. शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉकों में सीबीएसई संबद्ध अंग्रेजी माध्यम विद्यालय
iii. बीकानेर में स्थित खेलकूद और खेलों पर केंद्रित विशेष विद्यालय
iv. हाशिए पर रहने वाले समुदायों की बालिकाओं के लिए आवासीय विद्यालय
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. आरबीएसई सहित सभी स्कूल बोर्डों में मूल्यांकन को मानकीकृत करने के लिए एनईपी 2020 के तहत प्रस्तावित राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र 'परख' (PARAKH) का पूर्ण रूप क्या है?
(1) उच्च शिक्षा प्रणालियों हेतु ज्ञान का प्राथमिक मूल्यांकन, रेटिंग एवं विश्लेषण
(2) शैक्षणिक समीक्षा एवं ज्ञान मूल्यांकन तथा विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के लिए कार्यक्रम
(3) समग्र विकास हेतु ज्ञान का प्रदर्शन मूल्यांकन, समीक्षा एवं विश्लेषण
(4) वैश्विक मानव संसाधन विकास हेतु ज्ञान का प्रदर्शन एवं रेटिंग मूल्यांकन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. राजस्थान में कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) यह योजना विशेष रूप से केवल सामान्य श्रेणी की बालिकाओं तक ही सीमित है।
(2) यह योजना मेधावी छात्राओं को निःशुल्क और नई स्कूटी प्रदान करती है।
(3) इसका उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों तक महिलाओं की पहुंच में सुधार करना और उसे सुगम बनाना है।
(4) अनिवार्य न्यूनतम प्रतिशत के साथ कक्षा 12 उत्तीर्ण करने वाली बालिकाएं आवेदन करने की पात्र हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ जैसे जनजातीय बहुल जिलों में राजस्थान के पूर्वी जिलों की तुलना में सामान्यतः कम साक्षरता दर क्यों दिखाई देती है?
(1) इन जनजातीय जिलों के भीतर सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों का पूर्ण अभाव
(2) इन क्षेत्रों में निजी शिक्षा प्रदाताओं पर सख्त सरकारी नियम
(3) अंतरराष्ट्रीय सीमाओं से निकटता जो नियमित विद्यालय कार्यप्रणाली को बाधित करती है
(4) भौगोलिक पृथकता, बिखरी हुई बसावट और सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. राजस्थान में केंद्रीय विश्वविद्यालयों और राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय किशनगढ़, अजमेर में स्थित है।
II. आईआईटी जोधपुर और आईआईएम उदयपुर राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों के रूप में कार्य कर रहे हैं।
III. एमएनआईटी बीकानेर में स्थित एक प्रमुख इंजीनियरिंग संस्थान है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. शैक्षिक संकेतक और राजस्थान के लिए उसके संबंधित सटीक आंकड़े (2011 की जनगणना) के सही सुमेलित जोड़े की पहचान करें।
(1) कुल साक्षरता दर – 79.19%
(2) शहरी साक्षरता दर – 61.44%
(3) महिला साक्षरता दर – 52.12%

Click Here to Buy book on Amazon

B. शिक्षा दर्शन
C. ई-कक्षा
D. दीक्षा (DIKSHA)
सूची II: (माध्यम)
i. दूरदर्शन पर टेलीविजन प्रसारण
ii. आकाशवाणी के माध्यम से रेडियो प्रसारण
iii. राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण और संसाधन पोर्टल
iv. यूट्यूब पर डिजिटल वीडियो सामग्री
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. हाल ही में राजस्थान में 'विद्यालय युक्तिकरण' या 'विद्यालय एकीकरण' शब्द का प्रमुखता से प्रयोग किया गया था। इसका प्राथमिक कारण और प्रभाव क्या था?
(1) बेहतर संसाधन उपयोग के लिए कम नामांकन वाले विद्यालयों को हब विद्यालयों में मिलाना।
(2) नामांकन के समग्र स्तर को कम करने के लिए बालिकाओं और बालकों को अलग-अलग विद्यालय भवनों में करना।
(3) कुल वार्षिक सरकारी व्यय को कम करने के लिए सभी राजकीय विद्यालयों को निजी संस्थाओं में बदलना।
(4) सभी माध्यमिक छात्रों के लिए शाम की कक्षाएं अनिवार्य करना, जिसके परिणामस्वरूप ड्रॉपआउट दर बढ़ी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. निम्नलिखित में से कौन सा चिकित्सा विश्वविद्यालय पूरे राजस्थान में राजकीय और निजी मेडिकल कॉलेजों के लिए संबद्ध विश्वविद्यालय के रूप में कार्य करता है?
(1) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय
(2) राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय (आरयूएचएस)
(3) मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एमएनआईटी)
(4) वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. 2011 की जनगणना के आधार पर राजस्थान में महिला साक्षरता के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) राजस्थान में महिला साक्षरता दर महिलाओं के राष्ट्रीय औसत से कम थी।
(2) ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता शहरी क्षेत्रों की महिला साक्षरता दर से अधिक थी।
(3) जालौर जिले में पूरे राज्य के किसी भी जिले की तुलना में सबसे कम महिला साक्षरता दर दर्ज की गई।
(4) राजस्थान राज्य के लिए कुल महिला साक्षरता दर 52.1 प्रतिशत थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. राजस्थान में लागू की जा रही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ढांचे से संबंधित निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) पर जोर
II. कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत
III. राज्य विद्यालय मानक प्राधिकरण (एसएसएसए) की स्थापना
IV. निर्देश के माध्यम के रूप में सभी स्थानीय भाषाओं का उन्मूलन
V. समग्र बहुआयामी प्रगति पत्र के माध्यम से छात्र प्रगति की ट्रैकिंग
कौन से कथन एनईपी 2020 के सही प्रावधानों का प्रतिनिधित्व करते हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. भारत और राजस्थान में लागू निम्नलिखित प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रमों को उनके प्रारंभ होने के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. पढ़ना लिखना अभियान
II. राष्ट्रीय साक्षरता मिशन
III. नव भारत साक्षरता कार्यक्रम (एनआईएलपी)
IV. साक्षर भारत
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) II, IV, I, III
(2) II, I, IV, III
(3) IV, II, I, III
(4) I, II, IV, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

36. राजस्थान में शिक्षा क्षेत्र के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं।
कथन I: राजस्थान में उच्च शिक्षा स्तर पर सकल नामांकन अनुपात (जीईआर), प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर जीईआर की तुलना में काफी कम है।
कथन II: सामाजिक-आर्थिक बाधाओं के कारण बड़ी संख्या में छात्र माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद कार्यबल में शामिल हो जाते हैं या पढ़ाई छोड़ देते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले में सर्वाधिक पुरुष साक्षरता दर दर्ज की गई?
(1) कोटा
(2) जयपुर
(3) झुंझुनू

(4) यह विशिष्ट योजना शिशु और बाल पोषण में सुधार के व्यापक ढांचे के तहत संचालित होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प पीएम पोषण योजना के तहत प्राथमिक कक्षाओं के लिए प्रति बच्चा प्रतिदिन अनिवार्य पोषण मानक को सही ढंग से दर्शाता है?
(1) 700 कैलोरी और 20 ग्राम प्रोटीन
(2) 600 कैलोरी और 18 ग्राम प्रोटीन
(3) 300 कैलोरी और 8 ग्राम प्रोटीन
(4) 450 कैलोरी और 12 ग्राम प्रोटीन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. राजस्थान में तकनीकी शिक्षा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान तकनीकी शिक्षा बोर्ड (बीटीईआर) जोधपुर में स्थित है।
II. बीटीईआर इंजीनियरिंग और गैर-इंजीनियरिंग व्यवसायों में डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के लिए परीक्षा आयोजित करने के लिए उत्तरदायी है।
III. राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय (आरटीयू) केवल पॉलिटेक्निक महाविद्यालयों को संबद्धता प्रदान करता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. एक आवेदक राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्र में एक बीपीएल परिवार से संबंधित है और अपनी पुत्री के लिए एक निजी गैर-सहायता प्राप्त विद्यालय में कक्षा 1 में प्रवेश चाहता है। आरटीई अधिनियम का कौन सा प्रावधान सीधे इस प्रवेश को निःशुल्क सुलभ बनाता है?
(1) धारा 12(1)(c)
(2) धारा 16
(3) धारा 21
(4) धारा 25
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (आरबीएसई) की स्थापना किस वर्ष हुई थी?
(1) 1949
(2) 1957
(3) 1961
(4) 1973
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): राजस्थान के निजी तकनीकी संस्थानों में प्रतिवर्ष इंजीनियरिंग की एक महत्वपूर्ण संख्या में सीटें रिक्त रह जाती हैं।
कारण (R): तकनीकी संस्थानों में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम और उद्योग की वर्तमान कौशल आवश्यकताओं के बीच एक निरंतर अंतराल बना हुआ है, जो छात्रों की रोजगार क्षमता को प्रभावित करता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. कोटा में प्रतियोगी परीक्षा कोचिंग उद्योग के संकेंद्रण का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) कोटा राजस्थान की प्रशासनिक राजधानी के रूप में कार्य करता है, जिससे सरकारी संसाधनों तक पहुंच सुलभ हो जाती है।
(2) कई वर्षों में एक विशेष संकाय पारिस्थितिकी तंत्र और प्रतिस्पर्धी सहकर्मी वातावरण की स्थापना।
(3) राज्य सरकार सभी इंजीनियरिंग और मेडिकल उम्मीदवारों को विशेष रूप से कोटा में अध्ययन करने के लिए अनिवार्य करती है।
(4) कोटा वर्तमान में देश में सर्वाधिक केंद्रीय विश्वविद्यालयों और मेडिकल कॉलेजों की मेजबानी करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. राजस्थान में स्माइल (सोशल मीडिया इंटरफेस फॉर लर्निंग एंगेजमेंट) कार्यक्रम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे कोविड-19 महामारी के दौरान शिक्षा की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए शुरू किया गया था।
II. अध्ययन सामग्री और वीडियो लिंक व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से छात्रों और अभिभावकों के साथ साझा किए गए थे।
III. इसने पारंपरिक बोर्ड परीक्षाओं को स्थायी रूप से ऑनलाइन ओपन-बुक सिस्टम से पूरी तरह बदल दिया।
IV. इसने गृहकार्य वितरण और मूल्यांकन के लिए शिक्षकों को सीधे छात्रों से जोड़ा।
कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. सूची I में राजस्थान की शैक्षिक डिजिटल पहलों को सूची II में उनके प्राथमिक माध्यमों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (पहल)
A. शिक्षा वाणी

Downloaded from www.pdf.tube

(4) ग्रामीण साक्षरता दर – 79.68%
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. प्राथमिक छात्रों के लिए विद्यालयी बस्तों का बोझ कम करने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा उठाया गया सबसे उपयुक्त कदम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) सभी प्राथमिक स्तर के छात्रों को महंगे लैपटॉप वितरित करना
(2) मानक गणित और भाषा को छोड़कर अन्य सभी विषयों को समाप्त करना
(3) बच्चों के लिए नियमित विद्यालय उपस्थिति को पूरी तरह से स्वैच्छिक बनाना
(4) शनिवार को 'नो बैग डे' पहल लागू करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): राजस्थान में निजी विद्यालयों में आरटीई 25 प्रतिशत कोटे के क्रियान्वयन को प्रशासनिक और वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।
कारण (R): राज्य सरकार द्वारा निजी विद्यालयों को शुल्क की प्रतिपूर्ति में देरी के कारण कुछ विद्यालय प्रबंधन समितियों में अनिच्छा पैदा हुई है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. प्राथमिक विद्यालयों (कक्षा 1 से 5) के लिए आरटीई अधिनियम के तहत अनिवार्य मानदंडों में निम्नलिखित में से कौन सा एक अपवाद है?
(1) प्रत्येक 30 छात्रों के लिए कम से कम एक शिक्षक
(2) सभी नामांकित छात्रों के लिए अनिवार्य बोर्डिंग सुविधा
(3) एक शैक्षणिक वर्ष में न्यूनतम 200 कार्य दिवस
(4) एक शैक्षणिक वर्ष में न्यूनतम 800 निर्देश घंटे
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. राजस्थान में 'मुख्यमंत्री निःशुल्क यूनिफॉर्म वितरण योजना' के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले कक्षा 1 से 8 तक के छात्रों पर लागू होती है।
II. सरकार सीधे छात्रों को सिले हुए यूनिफॉर्म सेट प्रदान करती है।
III. इसका उद्देश्य अभिभावकों पर वित्तीय बोझ को कम करना और विद्यालय नामांकन बढ़ाना है।
IV. सिलाई शुल्क के लिए एक निश्चित राशि छात्र के बैंक खाते में स्थानांतरित की जाती है।
कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. सूची I में राजस्थान के आधिकारिक निकायों को सूची II में उनके प्राथमिक शैक्षिक अधिदेशों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (आधिकारिक निकाय)
A. आरएससीईआरटी (RSCERT)
B. आरबीएसई (RBSE)
C. रूसा (RUSA)
D. डीटीई (DTE)
सूची II: (अधिदेश)
i. उच्च शिक्षा का वित्तपोषण और गुणात्मक सुधार
ii. विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम निर्माण और शैक्षणिक सहायता
iii. तकनीकी शिक्षा संस्थानों का प्रशासन
iv. माध्यमिक और उच्च माध्यमिक परीक्षाओं का संचालन
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. पीएम श्री योजना के संदर्भ में, राजस्थान में इसका प्राथमिक अनुप्रयोग क्या है?
(1) हर जिले में नवीन और पूर्ण रूप से क्रियाशील केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापित करना
(2) उनके वार्षिक राजस्व में सुधार के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले राजकीय विद्यालयों का निजीकरण करना
(3) मौजूदा राजकीय विद्यालयों को एनईपी 2020 सिद्धांतों के अनुकरणीय विद्यालयों में अपग्रेड करना
(4) सभी राज्य बोर्ड विद्यालयों को निजी आईसीएसई बोर्ड मानकों में बदलना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. राजस्थान में उच्च शिक्षा अवसंरचना के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(1) राजस्थान में राज्य के भीतर कोई भी क्रियाशील डीम्ड विश्वविद्यालय नहीं है।
(2) राजस्थान में राज्य विश्वविद्यालय अब पूरी तरह से विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित हैं।
(3) महाविद्यालय स्वायत्त हैं और बिना किसी विश्वविद्यालय संबद्धता के डिग्री प्रदान करते हैं।
(4) राज्य में राज्य विधान के तहत स्थापित कई निजी विश्वविद्यालय हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. राजस्थान में मुख्यमंत्री बाल गोपाल योजना के तहत उच्च प्राथमिक कक्षाओं (6 से 8) के छात्र के लिए प्रतिदिन कितना दूध निर्धारित है?

NODIA

विद्यालयी वेशभूषा प्रदान करती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. ग्रामीण राजस्थान में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर लड़कियों के बीच उच्च ड्रॉपआउट दर का सबसे प्रमुख कारण निम्नलिखित में से किसे माना जाता है?
(1) कम उम्र में विवाह, घरेलू उत्तरदायित्व और विद्यालय से दूरी
(2) जटिल विज्ञान विषयों को पढ़ने में शैक्षणिक अभिरुचि की कमी
(3) राजकीय शिक्षकों द्वारा दिया गया अत्यधिक कार्यभार और गृहकार्य
(4) उच्च गुणवत्ता वाले अंग्रेजी माध्यम शिक्षण की अनुपलब्धता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. राजस्थान में गार्गी पुरस्कार योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह उन बालिकाओं को दिया जाता है जो कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करती हैं।
II. पुरस्कार राशि कक्षा 11 और कक्षा 12 में दो समान किस्तों में वितरित की जाती है।
III. इसका उद्देश्य बालिकाओं को उच्च माध्यमिक स्तर पर अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करना है।
IV. यह विशेष रूप से अंग्रेजी माध्यम के निजी विद्यालयों में पढ़ने वाली बालिकाओं के लिए उपलब्ध है।
कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. सूची I में दी गई शैक्षिक योजनाओं को सूची II में उनके प्राथमिक लक्षित समूहों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (योजना)
A. आपकी बेटी योजना
B. मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति
C. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय
D. देवनारायण छात्रा स्कूटी योजना
सूची II: (लक्षित समूह)
i. अति पिछड़ा वर्ग (एमबीसी) की मेधावी बालिकाएं
ii. बीपीएल परिवारों की बालिकाएं जिनके माता-पिता का निधन हो गया है
iii. कॉलेज के प्रथम वर्ष के मेधावी छात्र
iv. वंचित समूहों की विद्यालय से बाहर रहने वाली बालिकाएं
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. राजस्थान में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीवीबी) के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) इनकी स्थापना मुख्य रूप से उच्च प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं के लिए आवासीय शैक्षिक सुविधाएं प्रदान करने के लिए की गई थी।
(2) केजीवीबी में कम से कम 75 प्रतिशत सीटें एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक समुदायों की बालिकाओं के लिए आरक्षित हैं।
(3) राजस्थान में केजीवीबी को चरणबद्ध तरीके से कक्षा 12 तक क्रमोन्नत किया गया है।
(4) ये गैर-आवासीय विद्यालय हैं जो विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बालकों के लिए हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. राजस्थान में माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ में, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (आरबीएसई) की प्राथमिक भूमिका क्या है?
(1) क्षेत्रीय डिग्री प्रदान करने वाले महाविद्यालयों को औपचारिक संबद्धता प्रदान करना
(2) माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तरों के लिए बोर्ड परीक्षाएं आयोजित करना
(3) सभी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के लिए स्थायी शिक्षण स्टाफ की भर्ती करना
(4) राज्य के विश्वविद्यालयों के लिए सामान्य उच्च शिक्षा नीति का प्रारूप तैयार करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में निम्नलिखित में से किस जिले की महिला साक्षरता दर सर्वाधिक है?
(1) जयपुर
(2) झुंझुनू
(3) कोटा
(4) सीकर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. राजस्थान में विद्यालयी शिक्षा अवसंरचना के सामने आने वाली निम्नलिखित चुनौतियों पर विचार कीजिए:
I. दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में विषय-विशिष्ट शिक्षकों की कमी
II. कई प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं के लिए अनुपयुक्त क्रियाशील शौचालय
III. डिजिटल कक्षाओं के लिए विश्वसनीय बिजली और इंटरनेट कनेक्टिविटी का अभाव

Click Here to Buy book on Amazon

iii. व्हाट्सएप के माध्यम से दैनिक वीडियो सामग्री साझा करने वाला सोशल मीडिया इंटरफेस
iv. विद्यालय के बुनियादी ढांचे और शिक्षक उपलब्धता के अवलोकन के लिए पोर्टल
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. राजस्थान में उच्च शिक्षा संस्थान के प्रकार के आधार पर निम्नलिखित में से विषम का चयन करें।
(1) बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस (बिट्स), पिलानी
(2) वनस्थली विद्यापीठ
(3) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
(4) जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. शिक्षा निदेशालय, राजस्थान द्वारा कौन सी मासिक पत्रिका प्रकाशित की जाती है, जो शैक्षिक गतिविधियों और लेखों के लिए आधिकारिक संचार चैनल है?
(1) शिक्षा दर्पण
(2) विद्यार्थी विकास
(3) ज्ञान दर्शन
(4) शिविरा पत्रिका
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. निम्नलिखित में से कौन सा कार्य राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (आरबीएसई) के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता है?
(1) राज्य द्वारा संचालित तकनीकी विश्वविद्यालयों के लिए कुलपतियों की नियुक्ति करना
(2) कक्षा 9 से 12 के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें निर्धारित करना
(3) माध्यमिक और उच्च माध्यमिक बोर्ड परीक्षा आयोजित करना
(4) राज्य द्वारा निर्देशित होने पर राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (रीट) आयोजित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. राजस्थान में प्रौढ़ शिक्षा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण (एसएलएमए) साक्षरता कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की देखरेख करता है।
II. नव भारत साक्षरता कार्यक्रम का उद्देश्य बुनियादी साक्षरता के साथ महत्वपूर्ण जीवन कौशल प्रदान करना है।
III. प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम 10 वर्ष की आयु से शुरू होने वाले व्यक्तियों को लक्षित करते हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. राजस्थान में लागू राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रुसा) का सबसे उपयुक्त प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) राजकीय महाविद्यालय के छात्रों को रियायती दर पर मध्याह्न भोजन प्रदान करना
(2) निर्धारित मानकों को सुनिश्चित करके संस्थागत गुणवत्ता में सुधार करना
(3) पूरे राज्य में सभी राजकीय डिग्री महाविद्यालयों का निजीकरण करना
(4) माध्यमिक स्तर की शिक्षा को सभी के लिए पूरी तरह से निःशुल्क और अनिवार्य बनाना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. राजस्थान में तकनीकी शिक्षा के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं।
कथन I: राजस्थान में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) मुख्य रुप से तत्काल रोजगार के लिए व्यावसायिक प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।
कथन II: पॉलिटेक्निक महाविद्यालय इंजीनियरिंग और गैर-इंजीनियरिंग क्षेत्रों में डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, जो आईटीआई और डिग्री-स्तरीय इंजीनियरिंग महाविद्यालयों के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
कथन (A): राजस्थान सरकार ने प्रत्येक जिले में एक राजकीय मेडिकल कॉलेज खोलने की योजना बनाकर चिकित्सा शिक्षा अवसंरचना का विस्तार किया है।
कारण (R): इस विस्तार का उद्देश्य चिकित्सा पेशेवरों की कमी को दूर करना और पूरे राज्य में स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में सुधार करना है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

68. चिकित्सा या तकनीकी विश्वविद्यालय और राजस्थान में उसके स्थान के सही सुमेलित जोड़े की पहचान करें।
(1) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय – जयपुर
(2) राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय – जोधपुर
(3) राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय – अजमेर
(4) बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय – बीकानेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. राजस्थान की विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. दूरदराज और रेगिस्तानी क्षेत्रों में शिक्षकों के पदों का रिक्त रहना
II. ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच अधिगम परिणामों में असमानता
III. माध्यमिक से उच्च माध्यमिक स्तर तक छात्रों की 100 प्रतिशत संक्रमण दर
IV. आधुनिक शिक्षण के लिए विद्यालयों में अपर्याप्त डिजिटल बुनियादी ढांचा
कथनों का कौन सा संयोजन चुनौतियों को सटीक रूप से दर्शाता है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. सूची I में राजस्थान के शैक्षिक हब को सूची II में उनकी परिभाषित शैक्षणिक विशेषता के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (शैक्षिक हब)
A. कोटा
B. पिलानी
C. जोधपुर
D. जयपुर
सूची II: (विशेषता)
i. आईआईटी, एनएलयू और एम्स जैसे प्रमुख राष्ट्रीय संस्थानों की मेजबानी
ii. प्रतियोगी प्रवेश परीक्षा कोचिंग का प्रमुख केंद्र
iii. उत्कृष्ट इंजीनियरिंग और विज्ञान शिक्षा संस्थान के लिए मान्यता प्राप्त
iv. राजकीय और निजी विश्वविद्यालयों का सबसे बड़ा संकेंद्रण
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. कोटा में कोचिंग संस्थानों को विनियमित करने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा जारी दिशानिर्देशों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) वे छात्र की क्षमता का आकलन करने के लिए प्रवेश से पहले एक अनिवार्य एप्टीट्यूड टेस्ट अनिवार्य करते हैं।
(2) वे छात्रों को विश्राम देने के लिए रविवार को कक्षाएं आयोजित करने पर रोक लगाते हैं।
(3) वे छात्रों के तनाव प्रबंधन के लिए नियमित मनोवैज्ञानिक परामर्श सत्रों को प्रोत्साहित करते हैं।
(4) वे कोचिंग संस्थानों के लिए प्रत्येक छात्र को प्रतिष्ठित कॉलेजों में प्रवेश की गारंटी देना आवश्यक बनाते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

72. निःशुल्क डिजिटल शिक्षा देने के लिए 'ई-कक्षा' पहल शुरु करने हेतु किस कॉर्पोरेट इकाई ने शिक्षा विभाग, राजस्थान के साथ भागीदारी की?
(1) केयर्न ऑयल एंड गैस (वेदांता)
(2) रिलायंस फाउंडेशन
(3) टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज
(4) इन्फोसिस फाउंडेशन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. राजस्थान में कोविड-19 महामारी के दौरान 'शिक्षा वाणी' के उपयोग का कारण और प्रभाव क्या था?
(1) उच्च इंटरनेट पहुंच ने छात्रों को यूट्यूब वीडियो देखने के लिए प्रेरित किया।
(2) शिक्षकों की कमी के कारण राज्य को सभी विद्यालयी संचालन बंद करने पड़े।
(3) ग्रामीण डिजिटल अंतराल के कारण छात्र अधिगम की निरंतरता हेतु रेडियो प्रसारण का सहारा लिया गया।
(4) आरटीई अधिनियम के लिए भौतिक कक्षाओं की आवश्यकता के कारण सरकार ने प्रसारण पर रोक लगा दी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. राजस्थान में पीएम पोषण योजना के क्रियान्वयन के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. यह बालवाटिका और कक्षा 1 से 8 तक पढ़ने वाले बच्चों को कवर करता है।
II. खाद्यान्न भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) द्वारा आवंटित किया जाता है।
III. भोजन पकाने की लागत केंद्र और राज्य के बीच 60:40 के अनुपात में साझा की जाती है।
IV. सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए 'तिथि भोजन' को बढ़ावा दिया जाता है।
V. सप्ताह में एक बार आधिकारिक मेनू में पैकेट बंद स्नैक्स को शामिल किया जाता है।
कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शिक्षणशास्त्रीय संरचना में प्रस्तावित विद्यालयी शिक्षा के चरणों के सही क्रम का चयन करें।
(1) प्रारंभिक, बुनियादी, मध्य, माध्यमिक
(2) बुनियादी, प्रारंभिक, मध्य, माध्यमिक
(3) बुनियादी, मध्य, प्रारंभिक, माध्यमिक
(4) प्रारंभिक, मध्य, बुनियादी, माध्यमिक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. राजस्थान के नव भारत साक्षरता कार्यक्रम में 'अक्षर साथियों' या स्वयंसेवक शिक्षकों की क्या भूमिका है?
(1) वे राजकीय विश्वविद्यालयों में पढ़ाने वाले पूर्ण वेतनभोगी सरकारी व्याख्याता हैं।
(2) वे अवैतनिक स्वयंसेवक हैं जो असाक्षरों को बुनियादी साक्षरता प्रदान करते हैं।
(3) वे धनी परिवारों द्वारा नियुक्त निजी शिक्षक हैं।
(4) वे शाला दर्पण पोर्टल के रखरखाव के लिए उत्तरदायी तकनीकी कर्मचारी हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राजस्थान में इसके क्रियान्वयन के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं।
कथन I: एनईपी 2020 के अनुसार कम से कम कक्षा 5 तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या स्थानीय भाषा होगी।
कथन II: राजस्थान सरकार ने इस अधिदेश का पालन करने के लिए सभी महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों को बंद कर दिया है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में शिक्षा क्षेत्र के सामने आने वाली एक मान्यता प्राप्त चुनौती नहीं है?
(1) उच्च माध्यमिक विद्यालयों में जाने वाली बालिकाओं के बीच उच्च ड्रॉपआउट दर
(2) दूरदराज के रेगिस्तानी क्षेत्रों में अपर्याप्त छात्र-शिक्षक अनुपात
(3) ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों तक पहुंच को प्रभावित करने वाला डिजिटल अंतराल
(4) पेयजल जैसी बुनियादी विद्यालयी अवसंरचना का लगभग 100 प्रतिशत अति-संतृप्ति होना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को उनकी कुल साक्षरता दर के आरोही क्रम में व्यवस्थित करें:
I. बांसवाड़ा
II. प्रतापगढ़
III. जालौर
IV. सिरोही
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) III, IV, II, I
(2) IV, III, I, II
(3) III, I, II, IV
(4) I, III, IV, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. सूची I में शैक्षिक शब्द संक्षेपों को सूची II में उनके पूर्ण रुपों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (शब्द संक्षेप)
A. CWSN
B. OOSC
C. PTR
D. DIET
सूची II: (पूर्ण रुप)
i. छात्र-शिक्षक अनुपात (Pupil-Teacher Ratio)
ii. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (District Institute of Education and Training)
iii. विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (Children With Special Needs)
iv. विद्यालय से बाहर रहने वाले बच्चे (Out of School Children)
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

81. निम्नलिखित में से कौन सी प्रवृत्ति 2001 और 2011 की जनगणना के बीच राजस्थान में महिला साक्षरता दर का सबसे उपयुक्त वर्णन करती है?
(1) आधुनिक शैक्षिक सुविधाओं की कमी के कारण इसमें काफी गिरावट आई।
(2) यह 43.9 प्रतिशत से बढ़कर 52.1 प्रतिशत हो गई, जो सकारात्मक प्रगति का संकेत है।
(3) यह पूरे दशक के दौरान शून्य वृद्धि के साथ स्थिर रही।
(4) यह देश में सर्वाधिक होने के लिए पुरुष साक्षरता दर से आगे निकल गई।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

82. राजस्थान में लागू की जा रही पीएम श्री विद्यालय योजना का पूर्ण रुप क्या है?
(1) पीएम स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया (PM Schools for Rising India)
(2) प्राइम मिनिस्टर स्कीम फॉर हायर रिसर्च इंस्टीट्यूट
(3) पीएम शिक्षा और रोजगार इनिशिएटिव
(4) प्राइम मिनिस्टर सिस्टम फॉर रुरल हेरिटेज इंस्टीट्यूशंस
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

जो छात्रों को जटिल विषयों को समझने में सहायता करता है। इसके साथ ही, देश भर से आए मेधावी छात्रों के बीच का स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मक माहौल एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र तैयार करता है जो सफलता हेतु प्रेरक है। बेहतर आवासीय सुविधाएं और समर्पित अध्ययन वातावरण भी छात्रों को यहाँ आने हेतु प्रोत्साहित करते हैं।

29. (3) केवल I, II और IV
स्माइल कार्यक्रम कोविड-19 महामारी के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयोग था। इसका उद्देश्य लॉकडाउन के समय छात्रों की पढ़ाई में निरंतरता बनाए रखना था। व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से प्रतिदिन शैक्षणिक वीडियो और अध्ययन सामग्री साझा की जाती थी, जिससे छात्र घर बैठे पढ़ाई कर सकें। इस कार्यक्रम ने शिक्षकों को सीधे छात्रों से जोड़ने और उनके गृहकार्य के मूल्यांकन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि, इसने बोर्ड परीक्षाओं को स्थायी रूप से ऑनलाइन प्रणाली में नहीं बदला, बल्कि यह एक वैकल्पिक व्यवस्था थी।

30. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान में डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है। 'शिक्षा वाणी' कार्यक्रम आकाशवाणी के माध्यम से रेडियो पर शैक्षणिक सामग्री प्रसारित करता है। 'शिक्षा दर्शन' दूरदर्शन के माध्यम से टेलीविजन पर दृश्य-श्रव्य पाठ प्रदान करता है। 'ई-कक्षा' यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध एक डिजिटल भंडार है जिसमें सभी कक्षाओं के वीडियो उपलब्ध हैं। वहीं, 'दीक्षा' एक राष्ट्रीय पोर्टल है जो शिक्षकों के प्रशिक्षण और डिजिटल संसाधनों के लिए एक व्यापक मंच के रूप में कार्य करता है।

31. (1) बेहतर संसाधन उपयोग के लिए कम नामांकन वाले विद्यालयों को हब विद्यालयों में मिलाना।
विद्यालय युक्तिकरण या एकीकरण की नीति राजस्थान सरकार द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता और संसाधनों के कुशल प्रबंधन हेतु अपनाई गई थी। इसके अंतर्गत बहुत कम नामांकन वाले प्राथमिक या उच्च प्राथमिक विद्यालयों को समीपवर्ती बड़े और बेहतर सुविधायुक्त 'हब' विद्यालयों में मिला दिया गया। इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना, बुनियादी ढांचे का बेहतर उपयोग करना और छात्रों को एक प्रतिस्पर्धी शैक्षिक वातावरण प्रदान करना था। हालांकि, इस कदम से कुछ दूरदराज के क्षेत्रों में पहुँच संबंधी चिंताएं भी उभरी थीं।

32. (2) राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय (आरयूएचएस)
जयपुर में स्थित राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय राज्य का एकमात्र प्रमुख चिकित्सा विश्वविद्यालय है। यह संपूर्ण राजस्थान में संचालित होने वाले सभी राजकीय और निजी मेडिकल, डेंटल, नर्सिंग और फार्मेसी महाविद्यालयों हेतु संबद्धता प्रदान करने वाले केंद्रीय निकाय के रूप में कार्य करता है। विश्वविद्यालय चिकित्सा शिक्षा हेतु मानक पाठ्यक्रम तैयार करता है और विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी डिग्रियों हेतु परीक्षाएं आयोजित करता है। राज्य की स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली हेतु योग्य पेशेवर तैयार करने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और आधारभूत है।

33. (2) ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता शहरी क्षेत्रों की महिला साक्षरता दर से अधिक थी।
जनगणना 2011 के आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि राजस्थान में महिला साक्षरता की स्थिति शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में काफी भिन्न है। शहरी क्षेत्रों में महिला साक्षरता दर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में काफी अधिक दर्ज की गई थी, इसलिए यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि ग्रामीण महिला साक्षरता अधिक थी। राज्य की कुल महिला साक्षरता दर 52.1 प्रतिशत रही, जो राष्ट्रीय औसत से काफी पीछे है। जालौर जिला महिला साक्षरता के मामले में सबसे निचले पायदान पर रहा, जहाँ विशेष प्रयासों की आवश्यकता सदैव बनी रहती है।

34. (1) केवल I, II, III और V
राजस्थान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों को प्रभावी ढंग से लागू किया जा रहा है। इसमें बचपन की देखभाल और शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है तथा कक्षा 6 से ही व्यावसायिक कौशल विकसित करने की योजना है। राज्य विद्यालय मानक प्राधिकरण की स्थापना का उद्देश्य सभी विद्यालयों हेतु समान मापदंड तय करना है। छात्रों की प्रगति को केवल अंकों तक सीमित न रखकर एक समग्र प्रगति पत्र के माध्यम से आंका जाएगा। नीति में स्थानीय भाषाओं के उपयोग को भी विशेष रूप से प्रोत्साहित किया गया है।

NODIA

35. (1) II, IV, I, III
प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रमों का विकास भारत में एक व्यवस्थित क्रम में हुआ है। सर्वप्रथम 1988 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की शुरुआत हुई थी। इसके पश्चात 2009 में 'साक्षर भारत' कार्यक्रम लागू किया गया। हाल के वर्षों में 'पढ़ना लिखना अभियान' के माध्यम से असाक्षरों को लक्षित किया गया और वर्तमान में 'नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' संचालित है जो 2022 से 2027 की अवधि हेतु है। यह कालानुक्रमिक क्रम देश में पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए विभिन्न प्रयासों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

36. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
राजस्थान में शिक्षा के आंकड़े बताते हैं कि प्रारंभिक स्तर पर नामांकन तो बहुत अधिक है, लेकिन उच्च शिक्षा तक पहुँचते-पहुँचते इसमें भारी गिरावट आती है। इसका मुख्य कारण राज्य की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियां हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कई छात्र माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात परिवार की आय बढ़ाने हेतु कार्यबल में सम्मिलित होने के लिए विवश हो जाते हैं। आर्थिक कठिनाइयों और उच्च शिक्षा के अवसरों की कमी के कारण बड़ी संख्या में विद्यार्थी अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं।

37. (3) झुंझुनू
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के झुंझुनू जिले में सर्वाधिक पुरुष साक्षरता दर दर्ज की गई थी। झुंझुनू की पुरुष

i. पोषण और विद्यालयी उपस्थिति में सुधार
ii. डिजिटल विद्यालय प्रबंधन और पारदर्शिता
iii. ड्रॉपआउट रोकने और बोझ कम करने के लिए वित्तीय सहायता
iv. बालिकाओं के बीच शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करना

(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. 10 वर्ष की आयु का एक बालक जो कभी विद्यालय नहीं गया, आरटीई अधिनियम के तहत राजस्थान के एक राजकीय विद्यालय में प्रवेश चाहता है। अधिनियम के अनुसार उसे किस कक्षा में प्रवेश दिया जाना चाहिए?

(1) कक्षा 1, क्योंकि प्रत्येक छात्र के लिए बुनियादी शिक्षा अनिवार्य है।
(2) कक्षा 8, प्रारंभिक शिक्षा की समाप्ति सुनिश्चित करने के लिए।
(3) प्रवेश से इनकार कर दिया जाएगा क्योंकि बालक प्रवेश की आयु पार कर चुका है।
(4) आयु-उपयुक्त कक्षा में, मुख्यधारा में लाने हेतु विशेष प्रशिक्षण के प्रावधान के साथ।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

92. एनईपी 2020 के अनुसार शिक्षा के चरणों के संबंध में सही सुमेलित जोड़े की पहचान करें।

(1) प्रारंभिक चरण (Preparatory Stage) – 11 से 14 वर्ष की आयु
(2) बुनियादी चरण (Foundational Stage) – 3 से 8 वर्ष की आयु
(3) मध्य चरण (Middle Stage) – 8 से 11 वर्ष की आयु
(4) माध्यमिक चरण (Secondary Stage) – 18 से 21 वर्ष की आयु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. राजस्थान के राजकीय विद्यालयों में मध्याह्न भोजन के नियमित प्रावधान में निम्नलिखित में से कौन सा एक अपवाद है?

(1) यह वर्ष के नियमित विद्यालयी कार्य दिवसों के दौरान प्रदान किया जाता है।
(2) यह सूखा प्रभावित घोषित क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान प्रदान किया जाता है।
(3) सभी कार्य दिवसों में निजी गैर-सहायता प्राप्त विद्यालयों के छात्रों को भोजन का प्रावधान।
(4) यह राजकीय संस्थानों में कक्षा 1 से 8 तक के छात्रों को प्रदान किया जाता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. राजस्थान में उच्च और तकनीकी शिक्षा के नियमन में शामिल निम्नलिखित संस्थाओं पर विचार कीजिए:

I. कॉलेज शिक्षा विभाग
II. राजस्थान तकनीकी शिक्षा बोर्ड (बीटीईआर)
III. राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (आरएससीईआरटी)
IV. राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय (आरटीयू)
V. राज्य अधिनियमों के तहत स्थापित निजी विश्वविद्यालय

कौन सी संस्थाएं सीधे उच्च या तकनीकी शिक्षा क्षेत्र में शामिल हैं?

(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

95. राजस्थान में शिक्षा का मार्गदर्शन करने वाली निम्नलिखित ऐतिहासिक राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों को उनके कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

I. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई) - 1986
II. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) - 2020
III. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई) - 1968
IV. कार्य योजना (पीओए) - 1992

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:

(1) III, I, IV, II
(2) I, III, IV, II
(3) III, I, II, IV
(4) I, IV, III, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

96. राजस्थान के शिक्षा क्षेत्र में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) प्रवृत्तियों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।

(1) प्राथमिक स्तर पर जीईआर सामान्यतः माध्यमिक स्तर की तुलना में अधिक होता है।
(2) राजस्थान में उच्च शिक्षा के लिए जीईआर, प्रारंभिक शिक्षा के जीईआर की तुलना में अधिक है।
(3) जैसे ही छात्र उच्च प्राथमिक से उच्च माध्यमिक स्तर पर जाते हैं, महिला जीईआर में गिरावट आती है।
(4) निःशुल्क साइकिल और स्कूटी जैसे हस्तक्षेपों का उद्देश्य महिला जीईआर में सुधार करना है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. राजस्थान के किस शहर में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय (एनएलयू) स्थित है?

(1) जयपुर
(2) जोधपुर
(3) उदयपुर
(4) अजमेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

98. राजस्थान में समावेशी शिक्षा के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं।

कथन I: राजस्थान में समग्र शिक्षा के तहत समावेशी शिक्षा

Downloaded from www.pdf.tube

मेधावी बालिकाओं को उच्च माध्यमिक स्तर तक अपनी पढ़ाई जारी रखने हेतु आर्थिक संबल प्रदान करना है।

10. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान की विभिन्न शैक्षिक योजनाएं विशिष्ट लक्षित समूहों के उत्थान हेतु समर्पित हैं। 'आपकी बेटी' योजना उन निर्धन परिवारों की बालिकाओं की सहायता करती है जिन्होंने अपने माता-पिता को खो दिया है। मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति मेधावी छात्रों को आर्थिक सहायता देती है। कस्तूरबा गांधी विद्यालय वंचित समूहों की ड्रॉपआउट बालिकाओं हेतु आवासीय सुविधा प्रदान करते हैं। इसी प्रकार, देवनारायण योजना अति पिछड़ा वर्ग की छात्राओं को आवागमन हेतु स्कूटी प्रदान कर उनके शैक्षिक मनोबल को बढ़ाती है।

11. (4) ये गैर-आवासीय विद्यालय हैं जो विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बालकों के लिए हैं।
कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय मुख्य रूप से समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों की बालिकाओं हेतु स्थापित आवासीय शिक्षण संस्थान हैं। इनका उद्देश्य उन बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ना है जो विभिन्न कारणों से विद्यालय नहीं जा पातीं। यह कहना अनुचित है कि ये केवल बालकों हेतु या गैर-आवासीय हैं, क्योंकि इनकी पूरी संरचना ही बालिकाओं के सुरक्षित आवास और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर केंद्रित है। वर्तमान में इन विद्यालयों को कक्षा 12 तक क्रमोन्नत कर दिया गया है।

12. (2) माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तरों के लिए बोर्ड परीक्षाएं आयोजित करना
राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राज्य में विद्यालयी शिक्षा के मानकों को विनियमित करने वाली सर्वोच्च संस्था है। इसका प्राथमिक उत्तरदायित्व कक्षा 10 और 12 की वार्षिक बोर्ड परीक्षाओं का कुशलतापूर्वक आयोजन करना और परिणाम घोषित करना है। बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम का निर्धारण और शैक्षिक गुणवत्ता सुनिश्चित करने के प्रयास भी किए जाते हैं। यह बोर्ड अजमेर में स्थित है और राज्य भर के हजारों संबद्ध विद्यालयों के लिए एक महत्वपूर्ण नियामक और मार्गदर्शक निकाय के रूप में कार्य करता है।

13. (3) कोटा
राजस्थान में कोटा जिला साक्षरता के क्षेत्र में अग्रणी स्थान रखता है और 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ महिला साक्षरता दर सर्वाधिक दर्ज की गई थी। कोटा की महिला साक्षरता दर लगभग 65.9 प्रतिशत थी, जो राज्य के अन्य जिलों की तुलना में काफी बेहतर है। शिक्षा नगरी के रूप में विख्यात कोटा में उपलब्ध शैक्षिक वातावरण और संसाधनों ने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के अधिक अवसर प्रदान किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ के साक्षरता आंकड़े सदैव उत्कृष्ट रहे हैं।

14. (1) केवल I, II, III और IV
राजस्थान की विद्यालयी शिक्षा प्रणाली को कई बुनियादी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में विषय विशेषज्ञ शिक्षकों की कमी और बालिकाओं हेतु स्वच्छ शौचालयों का अभाव नामांकन को प्रभावित करता है। डिजिटल शिक्षा के दौर में बिजली की अनिश्चित आपूर्ति और इंटरनेट की धीमी गति भी एक बड़ी बाधा है। इसके साथ ही, शहरी क्षेत्रों में आरटीई मानकों के विपरीत अत्यधिक छात्र संख्या और शिक्षकों की कमी जैसी समस्याएं भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मार्ग में कठिनाइयां उत्पन्न करती हैं।

15. (1) कोटा, जयपुर, झुंझुनू, सीकर
राजस्थान के जिलों को उनकी कुल साक्षरता दर के आधार पर अवरोही क्रम में व्यवस्थित करने पर कोटा शीर्ष स्थान पर आता है। कोटा की साक्षरता दर लगभग 76.6 प्रतिशत है, जिसके पश्चात जयपुर 75.5 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर है। झुंझुनू 74.1 प्रतिशत के साथ तीसरे और सीकर 71.9 प्रतिशत के साथ चौथे स्थान पर स्थित है। यह क्रम राज्य के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में शैक्षिक जागरुकता और सुविधाओं के बेहतर प्रसार को स्पष्ट रूप से परिलक्षित करता है।

16. (2) राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय
कोटा में स्थित राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय राज्य का प्रमुख संस्थान है जो तकनीकी और इंजीनियरिंग शिक्षा के विकास हेतु समर्पित है। यह विश्वविद्यालय प्रदेश के विभिन्न इंजीनियरिंग और प्रबंधन महाविद्यालयों को संबद्धता प्रदान करता है और तकनीकी पाठ्यक्रमों हेतु मानक निर्धारित करता है। राज्य में कुशल इंजीनियरों और तकनीकी विशेषज्ञों को तैयार करने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह संस्थान शोध और नवाचार को बढ़ावा देकर राज्य की औद्योगिक प्रगति में निरंतर अपना बहुमूल्य योगदान दे रहा है।

17. (2) राजकीय विद्यालयों, छात्रों और कर्मचारियों के वास्तविक समय के डेटा के लिए एक ऑनलाइन मंच
शाला दर्पण पोर्टल राजस्थान शिक्षा विभाग की एक क्रांतिकारी डिजिटल पहल है जो विद्यालय प्रबंधन में पारदर्शिता और दक्षता लाती है। इस ऑनलाइन मंच के माध्यम से सभी सरकारी विद्यालयों, वहां पढ़ने वाले छात्रों और कार्यरत शिक्षकों का विस्तृत विवरण वास्तविक समय में उपलब्ध रहता है। यह पोर्टल स्थानांतरण, उपस्थिति, प्रगति रिपोर्ट और विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन की निगरानी में सहायक है। इसके उपयोग से प्रशासनिक कार्यों में तीव्रता आई है और अभिभावक भी आवश्यक सूचनाएं सुगमता से प्राप्त कर सकते हैं।

18. (1) 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के असाक्षर
पढ़ना लिखना अभियान का मुख्य उद्देश्य उन प्रौढ़ व्यक्तियों को साक्षर बनाना है जिनकी आयु 15 वर्ष या उससे अधिक है और जो शिक्षा के प्राथमिक अवसर से वंचित रह गए थे। इस कार्यक्रम के अंतर्गत उन्हें बुनियादी साक्षरता, अंकज्ञान और कार्यात्मक कौशल प्रदान किया जाता है। इसका लक्ष्य समाज के पिछड़े और असाक्षर वर्गों को सशक्त बनाकर उन्हें देश की विकास प्रक्रिया में सम्मिलित करना है। यह अभियान सामाजिक परिवर्तन और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक अत्यंत सराहनीय और आवश्यक कदम है।

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) 66.11 प्रतिशत
जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थान की कुल साक्षरता दर 66.11 प्रतिशत दर्ज की गई थी। इसमें पुरुष साक्षरता दर 79.19 प्रतिशत और महिला साक्षरता दर 52.12 प्रतिशत रही। राज्य की यह साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत की तुलना में काफी कम है। शैक्षिक स्तर में सुधार हेतु राज्य सरकार विभिन्न नीतियां और जागरूकता कार्यक्रम संचालित कर रही है ताकि प्रदेश का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके और साक्षरता के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

2. (1) पुरुष साक्षरता दर 79.2 प्रतिशत और महिला साक्षरता 52.1 प्रतिशत है, जो लगभग 27.1 प्रतिशत का अंतर दर्शाती है।
राजस्थान में साक्षरता के आंकड़ों में पुरुषों और महिलाओं के बीच एक बड़ा अंतराल विद्यमान है। जनगणना 2011 के अनुसार पुरुष साक्षरता दर 79.2 प्रतिशत जबकि महिला साक्षरता दर केवल 52.1 प्रतिशत थी। यह 27.1 प्रतिशत का अंतर राज्य के शैक्षिक क्षेत्र में व्याप्त लैंगिक असमानता को स्पष्ट करता है। इस विशाल अंतर को कम करने के लिए सरकार द्वारा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने और महिला सशक्तिकरण हेतु विशेष प्रयास एवं योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

3. (3) जालौर
वर्ष 2011 की आधिकारिक जनगणना रिपोर्ट के अनुसार जालौर राजस्थान में न्यूनतम कुल साक्षरता दर वाला जिला है। जालौर की कुल साक्षरता दर मात्र 54.9 प्रतिशत दर्ज की गई थी। इस जिले में विशेषकर महिला साक्षरता की स्थिति अत्यंत चिंताजनक रही है। इस पिछड़ेपन का मुख्य कारण प्रतिकूल सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियां और कठिन भौगोलिक संरचना है। साक्षरता के इस स्तर को सुधारने के लिए प्रशासन द्वारा वर्तमान में कई सघन शैक्षिक अभियान और जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

4. (1) केवल I और II
राजस्थान में निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम आधिकारिक तौर पर वर्ष 2011 में लागू किए गए थे। यह अधिनियम राज्य के 6 से 14 वर्ष की आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा की गारंटी देता है। यद्यपि निजी विद्यालयों में 25 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान प्रभावी है, परंतु यहाँ मुख्य बल नियमों की अधिसूचना और अनिवार्य शिक्षा की आयु सीमा पर है, जो प्राथमिक शिक्षा की नींव को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

5. (3) बच्चों के पोषण में सुधार करना और छात्रों की निरंतर उपस्थिति सुनिश्चित करना
राजकीय विद्यालयों में संचालित पीएम पोषण योजना का मुख्य ध्येय छात्रों के स्वास्थ्य और पोषण स्तर को बेहतर बनाना है। इस योजना के माध्यम से विद्यार्थियों को पौष्टिक गरम भोजन उपलब्ध कराया जाता है जिससे कुपोषण की समस्या का समाधान हो सके। पोषण के अतिरिक्त यह योजना विद्यालयों में छात्रों के नामांकन को बढ़ाने और उनके विद्यालय छोड़ने की दर को कम करने में भी अत्यंत सहायक सिद्ध हुई है। यह बच्चों की शारीरिक और मानसिक वृद्धि हेतु महत्वपूर्ण पहल है।

6. (2) जीईआर एक स्तर के सभी छात्रों की गणना करता है, जबकि एनईआर केवल आयु-उपयुक्त समूह की गणना करता है।
शिक्षा प्रणाली में सकल नामांकन अनुपात अर्थात जीईआर किसी विशिष्ट शैक्षिक स्तर पर नामांकित छात्रों की कुल संख्या को दर्शाता है, जिसमें आयु सीमा का बंधन नहीं होता। इसके विपरीत, शुद्ध नामांकन अनुपात अर्थात एनईआर केवल उसी आयु वर्ग के बच्चों की गणना करता है जो उस कक्षा या स्तर हेतु आधिकारिक तौर पर निर्धारित हैं। यह अंतर शिक्षा की पहुँच और आयु-उपयुक्त नामांकन की सटीकता को समझने में नीति निर्माताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

7. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
मध्याह्न भोजन योजना ने राजस्थान के सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों की उपस्थिति और नियमितता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भोजन के आकर्षण और पोषण सुरक्षा के कारण छात्र विद्यालय आने हेतु प्रोत्साहित होते हैं। हालांकि, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें और विद्यालयी वेशभूषा प्रदान करने की योजनाएं अलग कार्यक्रमों का हिस्सा हैं और वे सीधे तौर पर मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत नहीं आती हैं। अतः इस योजना का मुख्य आधार केवल पोषण और उपस्थिति सुधार ही माना जाता है।

8. (1) कम उम्र में विवाह, घरेलू उत्तरदायित्व और विद्यालय से दूरी
ग्रामीण राजस्थान में माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं के विद्यालय छोड़ने के पीछे कई गहरे सामाजिक कारण विद्यमान हैं। अल्पायु में विवाह की प्रथा और घरेलू कार्यों में सहयोग करने का उत्तरदायित्व बालिकाओं की शिक्षा में बड़ी बाधा बनता है। इसके अतिरिक्त, उच्च शिक्षा हेतु विद्यालयों का निवास स्थान से अधिक दूर होना और सुरक्षित परिवहन साधनों का अभाव भी एक प्रमुख कारक है। इन चुनौतियों के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा का ग्राफ माध्यमिक स्तर पर गिर जाता है।

9. (1) केवल I, II और III
गार्गी पुरस्कार योजना राजस्थान में बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने का एक उत्कृष्ट माध्यम है। यह पुरस्कार उन छात्राओं को प्रदान किया जाता है जो कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षाओं में 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक अर्जित करती हैं। इसकी पुरस्कार राशि दो चरणों में कक्षा 11 और 12 में नियमित अध्ययन जारी रखने पर दी जाती है। इस पहल का मूल उद्देश्य

Click Here to Buy book on Amazon

की पढ़ाई से मुक्त कर व्यावहारिक ज्ञान देने की दिशा में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ है। इससे छात्रों में विद्यालय के प्रति रुचि और उत्साह में वृद्धि हुई है।

47. (1) A and R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत निजी विद्यालयों में 25 प्रतिशत निःशुल्क प्रवेश की प्रक्रिया को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। निजी विद्यालय संचालकों में अक्सर शुल्क प्रतिपूर्ति में होने वाले विलंब के कारण असंतोष देखा जाता है। राज्य सरकार द्वारा समय पर भुगतान न होने से विद्यालय प्रबंधन समितियों को आर्थिक संचालन में कठिनाई होती है, जो अंततः इस कल्याणकारी योजना के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती है। इन प्रशासनिक और वित्तीय बाधाओं को दूर करना सरकार की प्राथमिकता है।

48. (2) सभी नामांकित छात्रों के लिए अनिवार्य बोर्डिंग सुविधा
शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत प्राथमिक विद्यालयों हेतु कई कड़े मानदंड निर्धारित हैं। इसमें 30 छात्रों पर एक शिक्षक का अनुपात, वर्ष में कम से कम 200 कार्य दिवस और 800 शिक्षण घंटे अनिवार्य किए गए हैं। हालांकि, यह अधिनियम सामान्य प्राथमिक विद्यालयों हेतु सभी छात्रों को अनिवार्य बोर्डिंग या आवासीय सुविधा देने का कोई प्रावधान नहीं करता है। आवासीय सुविधाएं केवल विशेष श्रेणियों जैसे कस्तूरबा गांधी विद्यालयों या दुर्गम क्षेत्रों के विशिष्ट केंद्रों हेतु ही आरक्षित रखी गई हैं।

49. (2) केवल I, III और IV
मुख्यमंत्री निःशुल्क यूनिफॉर्म वितरण योजना के अंतर्गत राजकीय विद्यालयों के कक्षा 1 से 8 तक के सभी विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जाता है। सरकार छात्रों को यूनिफॉर्म हेतु बिना सिला हुआ कपड़ा प्रदान करती है। इसके साथ ही, यूनिफॉर्म की सिलाई हेतु एक निर्धारित राशि सीधे छात्रों के बैंक खातों में हस्तांतरित की जाती है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य निर्धन परिवारों पर पड़ने वाले वित्तीय बोझ को कम करना और सभी बच्चों में समानता की भावना जागृत कर उन्हें नियमित विद्यालय आने हेतु प्रेरित करना है।

50. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान के विभिन्न शैक्षिक निकाय विशिष्ट कार्यों हेतु उत्तरदायी हैं। आरएससीईआरटी उदयपुर में स्थित है और स्कूली शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम और शोध का कार्य करता है। आरबीएसई माध्यमिक परीक्षाओं के संचालन का नियामक है। रूसा योजना के माध्यम से उच्च शिक्षा संस्थानों को बुनियादी ढांचे में सुधार हेतु वित्तीय सहायता दी जाती है। वहीं, तकनीकी शिक्षा निदेशालय अर्थात डीटीई राज्य में पॉलिटेक्निक और अन्य तकनीकी संस्थानों के सुचारू प्रशासन और गुणवत्ता नियंत्रण की देखरेख करने वाला मुख्य विभाग है।

51. (3) मौजूदा राजकीय विद्यालयों को एनईपी 2020 सिद्धांतों के अनुकरणीय विद्यालयों में अपग्रेड करना
राजस्थान में पीएम श्री योजना का कार्यान्वयन मौजूदा सरकारी विद्यालयों को 'आदर्श विद्यालयों' के रूप में विकसित करने हेतु किया जा रहा है। इन विद्यालयों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप आधुनिक बुनियादी ढांचे, स्मार्ट कक्षाओं और कौशल विकास केंद्रों से सुसज्जित किया जाएगा। इनका उद्देश्य अन्य विद्यालयों हेतु मार्गदर्शन प्रदान करना और एक उत्कृष्ट शिक्षण वातावरण तैयार करना है। यह योजना राज्य की स्कूली शिक्षा को भविष्य की आवश्यकताओं के अनुसार आधुनिक और समावेशी बनाने की दिशा में एक बड़ा निवेश है।

52. (4) राज्य में राज्य विधान के तहत स्थापित कई निजी विश्वविद्यालय हैं।
राजस्थान में उच्च शिक्षा का परिदृश्य अत्यंत विस्तृत है और यहाँ राज्य विधानसभा द्वारा पारित अधिनियमों के माध्यम से कई निजी विश्वविद्यालय स्थापित किए गए हैं। ये विश्वविद्यालय विभिन्न व्यावसायिक और पारंपरिक पाठ्यक्रमों का संचालन करते हैं। राज्य में सरकारी विश्वविद्यालयों के साथ-साथ निजी क्षेत्र की यह भागीदारी उच्च शिक्षा तक पहुँच को बढ़ाने में सहायक रही है। हालांकि, इन सभी संस्थानों को नियामक निकायों के मानकों का पालन करना अनिवार्य है ताकि शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों के हितों का संरक्षण सुनिश्चित हो सके।

53. (3) 200 मिली
मुख्यमंत्री बाल गोपाल योजना के अंतर्गत कक्षा 6 से 8 तक के प्रत्येक छात्र हेतु प्रतिदिन 200 मिलीलीटर दूध का प्रावधान निर्धारित किया गया है। कक्षा 1 से 5 के छोटे बच्चों के लिए यह मात्रा 150 मिलीलीटर तय की गई है। इस योजना के माध्यम से बच्चों को आवश्यक प्रोटीन और कैल्शियम प्रदान कर उनके शारीरिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ किया जाता है। विद्यालय में नियमित दूध वितरण से छात्रों की उपस्थिति में सुधार हुआ है और यह उनके समग्र पोषण स्तर को बढ़ाने में एक प्रभावी कदम सिद्ध हुआ है।

54. (1) केवल I, II, III और IV
कोटा का कोचिंग उद्योग राज्य की अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान देता है, जिससे हजारों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त होता है। देश भर से छात्रों के आने से स्थानीय पर्यटन और आवास क्षेत्र को बढ़ावा मिलता है। हालांकि, बढ़ते शैक्षणिक दबाव के कारण छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव एक गंभीर चिंता का विषय है। इसी को ध्यान में रखते हुए सरकार ने कोचिंग संस्थानों हेतु सख्त दिशानिर्देश जारी किए हैं। प्रवेश की कोई भी शत-प्रतिशत गारंटी केवल एक व्यावसायिक दावा हो सकती है।

55. (2) II, III, I, IV
राजस्थान में चिकित्सा शिक्षा का विकास ऐतिहासिक संस्थानों की स्थापना के साथ हुआ है। सवाई मान सिंह मेडिकल कॉलेज जयपुर राज्य का सबसे पुराना और प्रतिष्ठित संस्थान है। इसके पश्चात बीकानेर में सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज और उदयपुर में रवींद्र नाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज की स्थापना हुई। अजमेर

NODIA

19. (3) 5+3+3+4
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत स्कूली शिक्षा के ढांचे में मूलभूत परिवर्तन करते हुए पुरानी 10+2 प्रणाली के स्थान पर 5+3+3+4 की नई संरचना अपनाई गई है। इसमें 5 वर्ष का बुनियादी चरण, 3 वर्ष का प्रारंभिक चरण, 3 वर्ष का मध्य चरण और 4 वर्ष का माध्यमिक चरण सम्मिलित है। यह नई शिक्षणशास्त्रीय व्यवस्था बच्चों के संज्ञानात्मक विकास और कौशल आधारित शिक्षा पर केंद्रित है। राजस्थान में भी इस नवीन संरचना को चरणबद्ध तरीके से लागू करने हेतु आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।

20. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान के विभिन्न विश्वविद्यालय अलग-अलग शहरों में स्थित होकर उच्च शिक्षा के केंद्र बने हुए हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर में अपनी सेवाएं दे रहा है। जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर में स्थित एक प्रतिष्ठित संस्थान है। महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय बीकानेर क्षेत्र की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। वहीं, गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय बांसवाड़ा में स्थित है, जो मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में उच्च शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु कार्यरत है।

21. (3) महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय योजना
राजस्थान सरकार ने राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने हेतु महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय योजना प्रारंभ की है। इसके तहत चयनित हिंदी माध्यम के विद्यालयों को आधुनिक सुविधाओं से युक्त अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में परिवर्तित किया गया है। इस पहल का उद्देश्य निर्धन और मध्यम वर्ग के परिवारों के बच्चों को निःशुल्क गुणवत्तापूर्ण अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करना है। वर्तमान में यह योजना अत्यधिक लोकप्रिय हो रही है और अभिभावकों का निरंतर विश्वास जीत रही है।

22. (2) दूध की लागत पीएम पोषण योजना के तहत पूरी तरह से केंद्र सरकार द्वारा वहन की जाती है।
मुख्यमंत्री बाल गोपाल योजना राजस्थान सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है जिसका उद्देश्य राजकीय विद्यालयों के बच्चों को पोषण प्रदान करना है। इस योजना के अंतर्गत कक्षा 1 से 8 तक के छात्रों को पाउडर से तैयार दूध वितरित किया जाता है। इस योजना का पूरा वित्तीय भार मुख्य रूप से राज्य सरकार द्वारा वहन किया जाता है, न कि यह केंद्र की पीएम पोषण योजना का पूर्ण हिस्सा है। यह कार्यक्रम बच्चों में कुपोषण को दूर करने और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु संचालित है।

23. (4) 450 कैलोरी और 12 ग्राम प्रोटीन
पीएम पोषण योजना के तहत प्राथमिक कक्षाओं अर्थात कक्षा 1 से 5 के प्रत्येक बच्चे हेतु निश्चित पोषण मानक निर्धारित किए गए हैं। इन मानकों के अनुसार, दैनिक भोजन में न्यूनतम 450 कैलोरी ऊर्जा और 12 ग्राम प्रोटीन का समावेश अनिवार्य है। उच्च प्राथमिक स्तर के लिए यह मानक और भी अधिक होता है। इन निर्धारित मानकों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बढ़ते बच्चों को उनकी शारीरिक और मानसिक वृद्धि हेतु आवश्यक न्यूनतम पोषक तत्व विद्यालय में ही सुगमता से प्राप्त हो सकें।

24. (1) केवल I और II
राजस्थान तकनीकी शिक्षा बोर्ड अर्थात बीटीईआर जोधपुर में स्थित है और यह राज्य में डिप्लोमा स्तर की तकनीकी शिक्षा हेतु नियामक संस्था है। बीटीईआर विभिन्न इंजीनियरिंग और गैर-इंसीनियरिंग विषयों में डिप्लोमा पाठ्यक्रमों हेतु परीक्षाएं आयोजित करता है और प्रमाण पत्र प्रदान करता है। हालांकि, राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा में स्थित है और वह मुख्य रूप से डिग्री स्तर के इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों और महाविद्यालयों को संबद्धता प्रदान करने का कार्य करता है, न कि केवल पॉलिटेक्निक संस्थानों तक सीमित है।

25. (1) धारा 12(1)(c)
शिक्षा का अधिकार अधिनियम की धारा 12(1)(c) एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रावधान है जो निजी गैर-सहायता प्राप्त विद्यालयों को बाध्य करता है कि वे अपनी प्रवेश स्तर की कक्षा में 25 प्रतिशत सीटें समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के बच्चों हेतु आरक्षित रखें। इस नियम के तहत निर्धन परिवारों और अन्य पात्र समूहों के बच्चों को इन प्रतिष्ठित विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। राजस्थान में इस प्रावधान को प्रभावी ढंग से लागू करने हेतु ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से प्रवेश प्रक्रिया संचालित की जाती है।

26. (2) 1957
राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की स्थापना 4 दिसंबर 1957 को राजस्थान माध्यमिक शिक्षा अधिनियम के तहत की गई थी। प्रारंभ में इसका मुख्यालय जयपुर में था, जिसे वर्ष 1961 में अजमेर स्थानांतरित कर दिया गया। यह बोर्ड राज्य में माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा को नियंत्रित करने और परीक्षाओं के संचालन हेतु उत्तरदायी है। अपनी स्थापना के पश्चात से ही इस बोर्ड ने राज्य की स्कूली शिक्षा प्रणाली को व्यवस्थित करने और छात्रों के मूल्यांकन के मानकों को ऊंचा उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

27. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के निजी तकनीकी संस्थानों में बड़ी संख्या में सीटों का रिक्त रहना एक गंभीर चुनौती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि वर्तमान में इन संस्थानों के पाठ्यक्रम और उद्योगों की वास्तविक आवश्यकताओं के बीच गहरा अंतराल है। शैक्षणिक कौशल और व्यावहारिक अनुभव की कमी के कारण स्नातकों की रोजगार क्षमता प्रभावित होती है, जिससे छात्र इन पाठ्यक्रमों की ओर कम आकर्षित होते हैं। इस समस्या के समाधान हेतु कौशल आधारित शिक्षा और उद्योग-अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

28. (2) कई वर्षों में एक विशेष संकाय पारिस्थितिकी ecosystem और प्रतिस्पर्धी सहकर्मी वातावरण की स्थापना।
कोटा का प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु वैश्विक केंद्र बनना अचानक नहीं हुआ, बल्कि यह दशकों के संचयी प्रयासों का परिणाम है। यहाँ अनुभवी शिक्षकों का एक विशाल तंत्र विकसित हुआ है

NODIA

83. राजस्थान में उनके प्राथमिक लक्षित लाभार्थियों के आधार पर निम्नलिखित योजनाओं में से विषम का चयन करें।
(1) गार्गी पुरस्कार
(2) आपकी बेटी योजना
(3) मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना
(4) कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2011 के प्रावधानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें राज्य सरकार और स्थानीय प्राधिकारियों के उत्तरदायित्वों का विवरण है।
II. यह विद्यालय खोलने के लिए पड़ोसी सीमाओं के निर्धारण की प्रक्रिया प्रदान करता है।
III. यह अनुशासन के लिए छात्रों को शारीरिक दंड और मानसिक उत्पीड़न की अनुमति देता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. छात्र-शिक्षक अनुपात (पीटीआर) के लिए शिक्षा का अधिकार (आरटीई) मानकों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) प्राथमिक कक्षाओं (1 से 5) के लिए निर्धारित पीटीआर 30:1 है।
(2) उच्च प्राथमिक कक्षाओं (6 से 8) के लिए निर्धारित पीटीआर 35:1 है।
(3) 60 से कम छात्रों वाले प्राथमिक विद्यालयों के लिए प्रधानाध्यापक को पीटीआर में शामिल किया जाता है।
(4) यदि प्राथमिक कक्षाओं में नामांकन 200 से अधिक हो जाता है, तो पीटीआर 40:1 से अधिक नहीं होना चाहिए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

86. ग्रामीण राजस्थान के राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों की रिक्तियों का प्रत्यक्ष प्रभाव क्या है?
(1) यह राज्य के बजट में अधिशेष बनाता है।
(2) बहु-स्तरीय शिक्षण जहाँ एक शिक्षक एक साथ कई कक्षाओं का प्रबंधन करता है।
(3) यह छात्रों को एक-दूसरे को पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे साक्षरता सुधरती है।
(4) यह केंद्र सरकार को ग्रामीण स्कूलों का प्रबंधन लेने के लिए विवश करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

87. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): राजस्थान में समग्र शिक्षा के तहत माध्यमिक विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण एक प्राथमिकता है।
कारण (R): व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को रोजगार योग्य कौशल से लैस करती है, जिससे वे नौकरी के लिए तैयार होते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. राजस्थान में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं।
कथन I: राजस्थान में प्राथमिक स्तर पर सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) प्रायः 100 प्रतिशत से अधिक हो जाता है।
कथन II: जीईआर में एक विशेष स्तर में नामांकित कम उम्र और अधिक उम्र के बच्चे शामिल होते हैं, जिससे अनुपात 100 प्रतिशत से अधिक हो सकता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. राजस्थान में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीवीबी) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. केजीवीबी टाइप-I कक्षा 6 से 8 तक की आवश्यकताओं को पूरा करता है।
II. केजीवीबी टाइप-III कक्षा 6 से 12 तक की आवश्यकताओं को पूरा करता है।
III. केजीवीबी की आवर्ती लागत केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा साझा की जाती है।
IV. ये विशेष रूप से शहरी महानगरीय क्षेत्रों में स्थापित किए गए हैं।
कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

90. सूची I में राजस्थान की राजकीय शैक्षिक योजनाओं को सूची II में उनके व्यापक उद्देश्यों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (योजना)
A. मुख्यमंत्री निःशुल्क यूनिफॉर्म योजना
B. मुख्यमंत्री बाल गोपाल योजना
C. गार्गी पुरस्कार
D. शाला दर्पण
सूची II: (उद्देश्य)

Downloaded from www.pdf.tube

साक्षरता दर लगभग 86.9 प्रतिशत थी, जो राज्य के औसत और अन्य जिलों से काफी अधिक है। इस जिले की उत्कृष्ट स्थिति यहाँ की सुदृढ़ शैक्षिक परंपरा और भारतीय सेना में सेवा करने हेतु शिक्षित होने की प्रबल इच्छा को दर्शाती है। शिक्षा के प्रति उच्च सामाजिक जागरुकता ने झुंझुनू को पुरुष साक्षरता के क्षेत्र में राज्य में शीर्ष स्थान पर बनाए रखा है।

38. (2) राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रुसा)
समग्र शिक्षा अभियान स्कूली शिक्षा हेतु एक एकीकृत कार्यक्रम है जो पूर्व-प्राथमिक से लेकर कक्षा 12 तक विस्तृत है। इसमें पूर्ववर्ती सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान और शिक्षक शिक्षा जैसे घटकों को समाहित किया गया है। इसके विपरीत, राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान एक पृथक केंद्रीय प्रायोजित योजना है जो विशेष रूप से महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों जैसे उच्च शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता सुधारने और वित्तपोषण पर केंद्रित है। अतः रुसा स्कूली शिक्षा के समग्र शिक्षा ढांचे का हिस्सा नहीं है।

39. (4) अजमेर
राजस्थान के विभिन्न जिलों की साक्षरता दर में काफी विविधता पाई जाती है। जालौर, प्रतापगढ़ और सिरोही जैसे जिले उन क्षेत्रों में सम्मिलित हैं जहाँ साक्षरता दर अपेक्षाकृत कम है और जनगणना 2011 में ये 60 प्रतिशत के आंकड़े से नीचे रहे थे। इसके विपरीत, अजमेर जिला साक्षरता के मामले में काफी उन्नत रहा है और यहाँ की कुल साक्षरता दर 60 प्रतिशत से कहीं अधिक है। इस प्रकार, अजमेर साक्षरता के मानकों के आधार पर निम्न साक्षरता वाले जिलों के समूह से अलग एक विशिष्ट स्थान रखता है।

40. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
राजस्थान के विभिन्न संस्थान विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूल पिछड़े ब्लॉकों में अंग्रेजी माध्यम की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं। कस्तूरबा गांधी विद्यालय पिछड़े वर्ग की बालिकाओं को आवासीय सुविधा के साथ पढ़ाते हैं। बीकानेर स्थित शार्दुल स्पोर्ट्स स्कूल खेल प्रतिभाओं को तराशने हेतु विख्यात है। औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान अर्थात आईटीआई युवाओं को विभिन्न शिल्पों में व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार के योग्य बनाते हैं। यह विविधता राज्य के संतुलित शैक्षिक विकास और कौशल निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाती है।

41. (3) समग्र विकास हेतु ज्ञान का प्रदर्शन मूल्यांकन, समीक्षा एवं विश्लेषण
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत मूल्यांकन प्रणाली में सुधार हेतु 'परख' केंद्र की स्थापना का प्रस्ताव है। इसका पूर्ण रूप 'परफॉरमेंस असेसमेंट, रिव्यु, एंड एनालिसिस ऑफ़ नॉलेज फॉर होलिस्टिक डेवलपमेंट' है। यह केंद्र देश भर के विभिन्न स्कूल बोर्डों के बीच मूल्यांकन मानकों में एकरुपता लाने और छात्रों के समग्र विकास को मापने हेतु नए मापदंड निर्धारित करेगा। इसका मुख्य उद्देश्य परीक्षा के भय को कम करना और रटने की पद्धति के स्थान पर समझ और कौशल पर आधारित मूल्यांकन को बढ़ावा देना है।

42. (1) यह योजना विशेष रुप से केवल सामान्य श्रेणी की बालिकाओं तक ही सीमित है।
कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना राजस्थान सरकार की एक समावेशी पहल है जो विभिन्न श्रेणियों की मेधावी बालिकाओं को लाभान्वित करती है। इसमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक समुदायों की छात्राओं को विशेष प्राथमिकता दी जाती है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह केवल सामान्य श्रेणी तक सीमित है। योजना का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करना और उन्हें घर से महाविद्यालय तक आने-जाने हेतु परिवहन की सुरक्षित सुविधा उपलब्ध कराना है।

43. (4) भौगोलिक पृथकता, बिखरी हुई बसावट और सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन
बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ जैसे दक्षिणी जिलों में साक्षरता दर कम होने के पीछे जटिल भौगोलिक और सामाजिक कारण उत्तरदायी हैं। इन क्षेत्रों की पहाड़ी बनावट और घरों की अत्यधिक बिखरी हुई बसावट के कारण विद्यालयी पहुँच एक बड़ी चुनौती बनी रहती है। इसके साथ ही, सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों में आजीविका की चिंताएं शिक्षा पर भारी पड़ती हैं। इन जनजातीय क्षेत्रों में साक्षरता बढ़ाने हेतु सरकार अब स्थानीय भाषा और आवासीय सुविधाओं वाले विद्यालयों के माध्यम से विशेष प्रयास कर रही है।

44. (1) केवल I और II
राजस्थान में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर के कई संस्थान स्थापित हैं। राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय अजमेर जिले के किशनगढ़ में स्थित है जो शोध और अकादमिक उत्कृष्टता का केंद्र है। इसी प्रकार, जोधपुर में स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और उदयपुर में स्थित भारतीय प्रबंधन संस्थान राज्य के गौरव हैं। हालांकि, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एमएनआईटी) बीकानेर में नहीं बल्कि जयपुर में स्थित है। ये संस्थान राज्य के युवाओं को विश्व स्तरीय शिक्षा और अनुसंधान के अवसर प्रदान कर रहे हैं।

45. (3) महिला साक्षरता दर – 52.12%
जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थान के शैक्षिक संकेतकों में महिला साक्षरता दर 52.12 प्रतिशत दर्ज की गई थी, जो एक सटीक आंकड़ा है। इसी जनगणना में राज्य की कुल साक्षरता दर 66.11 प्रतिशत रही थी। ग्रामीण और शहरी साक्षरता दरों में भी काफी अंतर पाया गया था। साक्षरता के इन आधिकारिक आंकड़ों का उपयोग राज्य सरकार अपनी भविष्य की नीतियों के निर्माण और कमजोर क्षेत्रों की पहचान करने हेतु करती है ताकि शैक्षिक असमानता को प्रभावी ढंग से दूर किया जा सके।

46. (4) शनिवार को 'नो बैग डे' पहल लागू करना
राजस्थान सरकार ने स्कूली बच्चों के मानसिक और शारीरिक बोझ को कम करने हेतु 'नो बैग डे' की एक अनूठी पहल प्रारंभ की है। इसके तहत प्रत्येक शनिवार को छात्र बिना बस्ते के विद्यालय जाते हैं और विभिन्न सह-शैक्षणिक गतिविधियों, खेलों और कौशल आधारित कार्यों में भाग लेते हैं। यह कदम बच्चों के रचनात्मक विकास को प्रोत्साहित करने और उन्हें रटने

NODIA

का उद्देश्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सीडब्लूएसएन) को नियमित पड़ोसी विद्यालयों में एकीकृत करना है।
कथन II: समग्र शिक्षा सीडब्लूएसएन के लिए संसाधन कक्षों और विशेष शिक्षकों के प्रावधान को हतोत्साहित करती है।

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

99. राजस्थान में एनईपी 2020 के तहत प्रस्तावित राज्य विद्यालय मानक प्राधिकरण (एसएसएसए) का प्राथमिक अधिदेश क्या है?

(1) आरबीएसई को प्रतिस्थापित करना और सभी बोर्ड परीक्षाएं आयोजित करना
(2) उच्च शिक्षा और व्यावसायिक संस्थानों के लिए पाठ्यपुस्तकों को छापना
(3) राजकीय और निजी विद्यालयों के लिए गुणवत्ता मानक स्थापित करने वाला एक राज्यव्यापी निकाय
(4) राज्य के सभी शिक्षकों के बैंक खातों में सीधे वेतन वितरित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. सूची I में राजस्थान के शिक्षा क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियों को सूची II में उनके संबंधित संकेतकों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (चुनौती)

A. उच्च ड्रॉपआउट दर
B. निम्न अधिगम परिणाम
C. शिक्षकों की कमी
D. लैंगिक असमानता

सूची II: (संकेतक)

i. राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनएएस) में निम्न प्रदर्शन स्कोर
ii. पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच महत्वपूर्ण अंतराल
iii. कक्षा 8 से कक्षा 9 में छात्र नामांकन में भारी गिरावट
iv. आरटीई मानकों से अधिक उच्च छात्र-शिक्षक अनुपात (पीटीआर)

(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

में जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज की स्थापना इनके पश्चात की अवधि में हुई। यह कालानुक्रमिक विकास राज्य में चिकित्सा सुविधाओं और विशेषज्ञों की बढ़ती मांग को पूरा करने हेतु सरकार के चरणबद्ध प्रयासों को स्पष्ट करता है।

56. (4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
राजस्थान में पिछले कुछ वर्षों में महिला साक्षरता और उच्च शिक्षा में नामांकन के आंकड़ों में निरंतर सुधार देखा गया है। सरकार की प्रोत्साहन योजनाओं जैसे कालीबाई भील स्कूटी योजना और विभिन्न छात्रवृत्तियों के कारण अब अधिक बालिकाएं उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु आगे आ रही हैं। ये योजनाएं परिवहन की बाधाओं को दूर करती हैं और बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देती हैं। अतः यह कहना कि उच्च शिक्षा में बालिकाओं का नामांकन घट रहा है, वर्तमान प्रवृत्तियों के अनुसार पूर्णतः तथ्यहीन और निराधार है।

57. (3) आपकी बेटी योजना – विशेष रूप से निजी विद्यालयों में पढ़ने वाली बालिकाओं के लिए
राजस्थान में 'आपकी बेटी' योजना मुख्य रूप से राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाली उन बालिकाओं हेतु है जो बीपीएल परिवारों से संबंधित हैं और जिनके माता-पिता में से किसी एक या दोनों का निधन हो गया है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह निजी विद्यालयों हेतु है। इसके विपरीत, गार्गी पुरस्कार और देवनारायण स्कूटी योजना जैसी अन्य योजनाएं शैक्षणिक योग्यता और विशिष्ट समुदायों के आधार पर बालिकाओं को प्रोत्साहित करती हैं। इन सभी योजनाओं का साझा लक्ष्य बालिका शिक्षा में आने वाली आर्थिक बाधाओं को दूर करना है।

58. (1) दूरी या आर्थिक बाधाओं का सामना करने वाली बालिकाओं के लिए सुरक्षित अधिगम वातावरण प्रदान करना
कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों को आवासीय बनाने का मूल उद्देश्य उन बालिकाओं को एक स्थिर और सुरक्षित वातावरण देना है जो सामाजिक या आर्थिक कारणों से नियमित शिक्षा से वंचित रह गई थीं। कई बार ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं हेतु विद्यालय बहुत दूर होते हैं, जिससे सुरक्षा और आवागमन की समस्या उत्पन्न होती है। आवासीय सुविधा होने से बालिकाएं बिना किसी बाहरी बाधा के अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर पाती हैं। यह व्यवस्था महिला साक्षरता बढ़ाने और बाल विवाह जैसी कुरीतियों को रोकने में भी सहायक है।

59. (1) प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, सिरोही, जालौर
जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थान के दक्षिणी जिलों में पुरुष साक्षरता दर अपेक्षाकृत कम पाई गई है। यदि इन जिलों को पुरुष साक्षरता के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित करें, तो प्रतापगढ़ सबसे निचले स्तर पर आता है, जिसके पश्चात क्रमशः बांसवाड़ा, सिरोही और जालौर का स्थान आता है। इन क्षेत्रों में जनजातीय जनसंख्या की अधिकता और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण शिक्षा के प्रसार में कई बाधाएं रही हैं। हालांकि, वर्तमान में विशेष सरकारी हस्तक्षेपों के माध्यम से इन जिलों में सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं।

60. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
राजस्थान की डिजिटल पहलें शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को समाहित करती हैं। शाला संबलन ऐप का उपयोग विद्यालयों के निरीक्षण और वहां की सुविधाओं के आकलन हेतु किया जाता है। ई-कक्षा यूट्यूब चैनल वेदांता के सहयोग से कक्षा 1 से 12 तक का पाठ्यक्रम डिजिटल रूप में उपलब्ध कराता है। स्माइल कार्यक्रम के माध्यम से व्हाट्सएप का उपयोग कर पढ़ाई जारी रखी गई थी। दीक्षा पोर्टल शिक्षकों के व्यावसायिक विकास और डिजिटल शिक्षण सामग्री हेतु एक राष्ट्रीय स्तर का मंच है जो राज्य में व्यापक रूप से उपयोग होता है।

61. (3) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर राज्य का एक प्रमुख सार्वजनिक विश्वविद्यालय है, जिसकी स्थापना 1947 में हुई थी। इसके विपरीत, बिट्स पिलानी और वनस्थली विद्यापीठ निजी तौर पर स्थापित प्रतिष्ठित संस्थान हैं जिन्हें 'डीम्ड' विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त है। जैन विश्व भारती भी एक विशिष्ट श्रेणी का शोध और शिक्षण संस्थान है। इस समूह में राजस्थान विश्वविद्यालय अपने राजकीय स्वरूप और व्यापक संबद्धता के कारण अन्य निजी या मानद संस्थानों से पृथक है। यह राज्य के सबसे पुराने और बड़े उच्च शिक्षा केंद्रों में से एक है।

62. (4) शिविरा पत्रिका
शिविरा पत्रिका राजस्थान शिक्षा विभाग की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और आधिकारिक मासिक पत्रिका है। यह पत्रिका न केवल शिक्षकों और शिक्षा अधिकारियों हेतु मार्गदर्शक का कार्य करती है, बल्कि इसमें राज्य की नई शैक्षिक नीतियों, नवाचारों और महत्वपूर्ण आदेशों का विस्तृत विवरण भी होता है। इसमें प्रकाशित लेख शिक्षकों के ज्ञानवर्धन और कक्षा शिक्षण में सुधार हेतु सहायक होते हैं। शिविरा का उपयोग राज्य भर के राजकीय विद्यालयों में शैक्षिक कैलेंडर के रूप में भी किया जाता है, जिससे समस्त गतिविधियों में एकरूपता बनी रहती है।

63. (1) राज्य द्वारा संचालित तकनीकी विश्वविद्यालयों के लिए कुलपतियों की नियुक्ति करना
राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अर्थात आरबीएसई की शक्तियां और कार्य मुख्य रूप से स्कूली शिक्षा तक ही सीमित हैं। बोर्ड का मुख्य कार्य पाठ्यक्रम निर्धारण और बोर्ड परीक्षाओं का सफल आयोजन सुनिश्चित करना है। तकनीकी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की नियुक्ति और उच्च शिक्षा की नीतियों का निर्धारण राज्य सरकार और कुलाधिपति (राज्यपाल) के क्षेत्राधिकार में आता है। आरबीएसई का तकनीकी शिक्षा या विश्वविद्यालयों के प्रशासनिक नियुक्तियों में कोई प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं होता है। इसका कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से कक्षा 9 से 12 तक सीमित है।

64. (1) केवल I और II
राजस्थान में प्रौढ़ शिक्षा के क्रियान्वयन हेतु राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण नोडल संस्था के रूप में कार्य करता है। नव भारत साक्षरता कार्यक्रम जैसी नवीनतम पहलें न केवल बुनियादी साक्षरता बल्कि डिजिटल साक्षरता और जीवन

NODIA

100. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv

राजस्थान के शिक्षा क्षेत्र की चुनौतियां विभिन्न संकेतकों के माध्यम से स्पष्ट होती हैं। उच्च ड्रॉपआउट दर का पता कक्षा 8 के पश्चात नामांकन में आई भारी कमी से चलता है। निम्न अधिगम परिणामों की पुष्टि राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण जैसे मूल्यांकन करते हैं। शिक्षकों की कमी को आरटीई मानकों से अधिक छात्र-शिक्षक अनुपात के रूप में देखा जा सकता है। लैंगिक असमानता पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच विद्यमान बड़े अंतर से प्रमाणित होती है। इन चुनौतियों का समाधान राज्य के विकास हेतु अत्यंत अनिवार्य है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

था। ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ इंटरनेट और स्मार्टफोन्स की न्यूनता थी, वहां रेडियो एक सुलभ और प्रभावी माध्यम सिद्ध हुआ। आकाशवाणी के माध्यम से प्रसारित होने वाले इन पाठों ने यह सुनिश्चित किया कि दूरदराज के गांवों में रहने वाले विद्यार्थी भी अपनी शिक्षा अनवरत जारी रख सकें। यह पहल दर्शाती है कि विपरीत परिस्थितियों में पारंपरिक संचार माध्यमों का उपयोग कर शिक्षा को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाया जा सकता है।

74. (1) केवल I, II, III और IV
पीएम पोषण योजना राजकीय विद्यालयों में बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा हेतु एक व्यापक ढांचा प्रदान करती है। इसके अंतर्गत खाद्यान्न का आवंटन एफसीआई द्वारा किया जाता है और लागत केंद्र तथा राज्य के बीच 60:40 के अनुपात में साझा की जाती है। सामुदायिक जुड़ाव हेतु 'तिथि भोजन' जैसी परंपराओं को प्रोत्साहित किया जाता है जहाँ लोग उत्सवों पर बच्चों को भोजन कराते हैं। यह योजना बालवाटिका से लेकर कक्षा 8 तक के छात्रों के पोषण और नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने में अत्यंत सफल रही है।

75. (2) बुनियादी, प्रारंभिक, मध्य, माध्यमिक
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने स्कूली शिक्षा को चार चरणों में विभाजित किया है। सर्वप्रथम 'बुनियादी' चरण आता है जो खेल-आधारित शिक्षा पर केंद्रित है। इसके पश्चात 'प्रारंभिक' चरण में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान विकसित किया जाता है। 'मध्य' चरण में विषयों की समझ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बल दिया जाता है और अंत में 'माध्यमिक' चरण छात्रों को भविष्य के करियर हेतु तैयार करता है। यह क्रमिक व्यवस्था बच्चों के मानसिक विकास के अनुरूप शिक्षा को अधिक प्रभावी और आनंदमय बनाती है।

76. (2) वे अवैतनिक स्वयंसेवक हैं जो असाक्षरों को बुनियादी साक्षरता प्रदान करते हैं।
नव भारत साक्षरता कार्यक्रम में 'अक्षर साथियों' की भूमिका सामुदायिक सेवा की एक अनूठी मिसाल है। ये समाज के शिक्षित व्यक्ति, सेवानिवृत्त कर्मचारी या युवा छात्र होते हैं जो पूर्णतः स्वयंसेवक के रूप में बिना किसी पारिश्रमिक के अपने आस-पास के असाक्षर लोगों को पढ़ाते हैं। वे साक्षरता केंद्रों का संचालन करते हैं और वयस्कों को पढ़ना, लिखना और बुनियादी गणना करना सिखाते हैं। उनकी निस्वार्थ सेवा राज्य में पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करने और सामाजिक चेतना जागृत करने में अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी है।

77. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बच्चों के प्रारंभिक वर्षों में मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा देने की वकालत करती है ताकि उनकी बुनियादी समझ सुदृढ़ हो सके। हालांकि, राजस्थान सरकार ने इस नीति के साथ तालमेल बिठाते हुए अंग्रेजी माध्यम की मांग को पूरा करने हेतु महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय भी संचालित किए हैं। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय बंद कर दिए गए हैं। राज्य सरकार भाषाई विविधता और वैश्विक कौशल के बीच एक संतुलित शैक्षिक वातावरण बनाने का निरंतर प्रयास कर रही है।

78. (4) पेयजल जैसी बुनियादी विद्यालयी अवसंरचना का लगभग 100 प्रतिशत अति-संतृप्ति होना
राजस्थान में शिक्षा क्षेत्र को कई वास्तविक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें बालिकाओं के बीच उच्च ड्रॉपआउट दर, शिक्षकों की कमी और डिजिटल अंतराल प्रमुख हैं। यद्यपि पेयजल और अन्य बुनियादी सुविधाओं हेतु निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन यह कहना कि इनका 100 प्रतिशत समाधान हो चुका है, धरातलीय वास्तविकता से परे है। आज भी कई विद्यालयों में पेयजल और शौचालयों के सुचारु रखरखाव एवं उपलब्धता में सुधार की गुंजाइश है। बुनियादी ढांचे का पूर्ण संतृप्ति स्तर अभी भी एक लक्ष्य बना हुआ है।

79. (1) III, IV, II, I
जनगणना 2011 के आंकड़ों के आधार पर यदि हम राजस्थान के न्यूनतम साक्षरता वाले जिलों को बढ़ते क्रम में व्यवस्थित करें, तो जालौर सबसे निचले स्थान पर है। इसके पश्चात क्रमशः सिरोही, प्रतापगढ़ और फिर बांसवाड़ा का स्थान आता है। जालौर की साक्षरता दर 54.9 प्रतिशत थी, जबकि बांसवाड़ा की 56.3 प्रतिशत दर्ज की गई थी। साक्षरता का यह न्यून स्तर इन क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति जागरूकता और पहुँच बढ़ाने हेतु विशेष योजनाओं एवं सरकारी हस्तक्षेपों की आवश्यकता को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

80. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग होने वाले शब्द संक्षेप विशिष्ट श्रेणियों को परिभाषित करते हैं। सीडीडब्ल्यूएसएन (CWSN) उन बच्चों हेतु प्रयुक्त होता है जिन्हें विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। ओओएससी (OOSC) विद्यालय से बाहर रह गए बच्चों को दर्शाता है जिन्हें मुख्यधारा में लाना अनिवार्य है। पीटीआर (PTR) छात्रों और शिक्षकों के बीच के अनुपात को बताता है, जो शिक्षा की गुणवत्ता का मापदंड है। डाइट (DIET) जिला स्तर पर शिक्षकों के प्रशिक्षण और शोध कार्यों हेतु उत्तरदायी प्राथमिक संस्थान के रूप में कार्य करता है।

81. (2) यह 43.9 प्रतिशत से बढ़कर 52.1 प्रतिशत हो गई, जो सकारात्मक प्रगति का संकेत है।
राजस्थान में 2001 से 2011 के दशक के दौरान महिला साक्षरता में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। साक्षरता दर 43.9 प्रतिशत से बढ़कर 52.1 प्रतिशत तक पहुँच गई, जो राज्य में बालिका शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता और सरकारी योजनाओं की सफलता को दर्शाती है। यद्यपि यह दर अभी भी राष्ट्रीय औसत से कम है, परंतु इस निरंतर बढ़त ने राज्य के सामाजिक ताने-बाने में सकारात्मक बदलाव की नींव रखी है। वर्तमान में शिक्षा के प्रति बदलते दृष्टिकोण ने महिलाओं हेतु नए विकास मार्ग खोले हैं।

NODIA

कौशल प्रदान करने पर भी केंद्रित हैं। प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम आमतौर पर 15 वर्ष या उससे अधिक आयु के उन लोगों को लक्षित करते हैं जो औपचारिक शिक्षा से वंचित रह गए हैं। यह कहना कि ये 10 वर्ष की आयु से प्रारंभ होते हैं, त्रुटिपूर्ण है क्योंकि उस आयु के बच्चे आरटीई के दायरे में आते हैं।

65. (2) निर्धारित मानकों को सुनिश्चित करके संस्थागत गुणवत्ता में सुधार करना
राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान अर्थात रूसा का प्राथमिक लक्ष्य राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों की समग्र गुणवत्ता को बढ़ाना है। यह योजना महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को अनुसंधान, नवाचार और बुनियादी ढांचे के विकास हेतु रणनीतिक वित्तपोषण प्रदान करती है। रूसा के माध्यम से पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं और स्मार्ट कक्षाओं का आधुनिकीकरण किया जाता है ताकि छात्रों को वैश्विक स्तर की शिक्षा प्राप्त हो सके। इसका उद्देश्य निजीकरण करना नहीं, बल्कि सरकारी संस्थानों को इतना सशक्त बनाना है कि वे शैक्षिक मानकों पर उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें।

66. (2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
राजस्थान की तकनीकी शिक्षा प्रणाली में आईटीआई और पॉलिटेक्निक दोनों की महत्वपूर्ण भूमिकाएं हैं। आईटीआई विभिन्न शिल्पों में व्यावहारिक कौशल प्रदान कर छात्रों को तत्काल रोजगार हेतु तैयार करते हैं। दूसरी ओर, पॉलिटेक्निक महाविद्यालय तीन वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करते हैं जो गहन इंजीनियरिंग ज्ञान और व्यावसायिक प्रशिक्षण के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करते हैं। ये संस्थान राज्य के औद्योगिक विकास हेतु आवश्यक कुशल कार्यबल और तकनीशियन तैयार करने में आधारभूत ढांचा प्रदान करते हैं, जिससे तकनीकी शिक्षा का विस्तार संभव होता है।

67. (1) A and R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान सरकार ने 'प्रत्येक जिले में एक मेडिकल कॉलेज' की नीति के माध्यम से चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व विस्तार किया है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य राज्य के दूरदराज के क्षेत्रों में योग्य डॉक्टरों की उपलब्धता सुनिश्चित करना और स्थानीय स्तर पर उन्नत स्वास्थ्य सेवाएं पहुँचाना है। नए मेडिकल कॉलेजों की स्थापना से न केवल चिकित्सा की सीटों में वृद्धि हुई है, बल्कि उनसे संबद्ध अस्पतालों के माध्यम से आम जनता को बेहतर और सस्ती उपचार सुविधाएं भी उपलब्ध हो रही हैं। यह स्वास्थ्य सुरक्षा की दिशा में एक बड़ा कदम है।

68. (4) बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय – बीकानेर
बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय की स्थापना पश्चिमी राजस्थान में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु बीकानेर में ही की गई है। इसके विपरीत, राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय जयपुर में और आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर में स्थित है। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय अजमेर में नहीं बल्कि कोटा में स्थित है। ये विश्वविद्यालय अपने-अपने क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के मानकों को बनाए रखने और शोध कार्यों को प्रोत्साहित करने हेतु उत्तरदायी हैं। स्थान की यह स्पष्टता राज्य के विकेंद्रीकृत शैक्षिक ढांचे को समझने में सहायक सिद्ध होती है।

69. (2) केवल I, II और IV
राजस्थान की स्कूली शिक्षा को कई जटिल चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। दूरदराज के मरुस्थलीय क्षेत्रों में शिक्षकों के रिक्त पद और शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों के बीच सीखने के स्तर में बड़ा अंतर गुणवत्ता को प्रभावित करता है। आधुनिक तकनीक हेतु आवश्यक डिजिटल बुनियादी ढांचे का अभाव भी एक बड़ी समस्या है। इसके विपरीत, माध्यमिक से उच्च माध्यमिक स्तर तक 100 प्रतिशत छात्र संक्रमण की बात वास्तविक नहीं है, क्योंकि आर्थिक और सामाजिक कारणों से इस स्तर पर बड़ी संख्या में छात्र नियमित पढ़ाई छोड़ देते हैं।

70. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान के विभिन्न शहर अपनी विशिष्ट शैक्षिक पहचान रखते हैं। कोटा देश भर में प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग हेतु प्रसिद्ध है। पिलानी बिट्स जैसे उच्च स्तरीय इंजीनियरिंग संस्थान हेतु जाना जाता है। जोधपुर में राष्ट्रीय स्तर के संस्थान जैसे आईआईटी, एम्स और एनएलयू स्थित हैं। राजधानी जयपुर राज्य में विश्वविद्यालयी शिक्षा और प्रशासनिक केंद्रों का सबसे बड़ा केंद्र है। यह क्षेत्रीय विशिष्टता राज्य को एक विविध और समृद्ध शैक्षिक मानचित्र प्रदान करती है, जहाँ प्रत्येक क्षेत्र की अपनी एक विशेष अकादमिक महत्ता है।

71. (4) वे कोचिंग संस्थानों के लिए प्रत्येक छात्र को प्रतिष्ठित कॉलेजों में प्रवेश की गारंटी देना आवश्यक बनाते हैं।
राजस्थान सरकार द्वारा जारी कोचिंग दिशानिर्देशों का मुख्य उद्देश्य छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करना और उनके तनाव को कम करना है। इन नियमों के तहत रविवार को अवकाश अनिवार्य किया गया है और मनोवैज्ञानिक परामर्श की सुविधा देना आवश्यक है। प्रवेश से पूर्व योग्यता परीक्षा का प्रावधान भी छात्रों के सही मार्गदर्शन हेतु किया गया है। हालांकि, कोई भी नियम प्रवेश की शत-प्रतिशत गारंटी नहीं देता, क्योंकि यह पूर्णतः छात्र की मेहनत पर निर्भर है। ऐसे किसी भी भ्रामक दावे को सरकार हतोत्साहित करती है।

72. (1) केयर्न ऑयल एंड गैस (वेदांता)
'ई-कक्षा' पहल राजस्थान में डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में एक सफल सार्वजनिक-निजी भागीदारी का उदाहरण है। इस परियोजना हेतु वेदांता समूह की इकाई केयर्न ऑयल एंड गैस ने राज्य शिक्षा विभाग के साथ सहयोग किया है। इस साझेदारी के माध्यम से कक्षा 1 से 12 तक के पूरे पाठ्यक्रम को उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो के रूप में तैयार किया गया है, जो यूट्यूब और अन्य माध्यमों पर निःशुल्क उपलब्ध है। यह पहल उन छात्रों हेतु विशेष रूप से वरदान सिद्ध हुई है जिनके पास महंगे निजी संसाधनों तक पहुँच नहीं है।

73. (3) ग्रामीण डिजिटल अंतराल के कारण छात्र अधिगम की निरंतरता हेतु रेडियो प्रसारण का सहारा लिया गया।
कोविड-19 के दौरान राजस्थान में 'शिक्षा वाणी' कार्यक्रम का उपयोग डिजिटल विभाजन को पाटने हेतु किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

91. (4) आयु-उपयुक्त कक्षा में, मुख्यधारा में लाने हेतु विशेष प्रशिक्षण के प्रावधान के साथ।
शिक्षा का अधिकार अधिनियम का एक महत्वपूर्ण प्रावधान यह है कि यदि कोई बच्चा कभी विद्यालय नहीं गया, तो उसे उसकी आयु के अनुसार उचित कक्षा में प्रवेश दिया जाएगा। 10 वर्ष की आयु के बालक को कक्षा 5 में प्रवेश मिलना चाहिए, क्योंकि वह उसकी आयु के अनुकूल है। पिछड़े हुए पाठ्यक्रम को पूर्ण करने हेतु अधिनियम में 'विशेष प्रशिक्षण' की व्यवस्था है, ताकि वह बालक अपनी कक्षा के अन्य साथियों के शैक्षिक स्तर तक पहुँच सके। यह नियम बच्चों को हीन भावना से बचाकर शिक्षा की मुख्यधारा में जोड़ता है।

92. (2) बुनियादी चरण (Foundational Stage) – 3 से 8 वर्ष की आयु
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की नई संरचना में 'बुनियादी चरण' सबसे प्रारंभिक और महत्वपूर्ण अवस्था है, जो 3 से 8 वर्ष तक के बच्चों को कवर करती है। इसमें 3 वर्ष की पूर्व-प्राथमिक शिक्षा और कक्षा 1 व 2 को सम्मिलित किया गया है। इस चरण का मुख्य उद्देश्य खेल-कूद और खोज आधारित गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के मस्तिष्क का विकास करना और उनमें पढ़ने-लिखने की सुदृढ़ नींव रखना है। यह आयु वर्ग सीखने हेतु अत्यंत संवेदनशील होता है, इसलिए यहाँ विशेष शिक्षण पद्धतियों का उपयोग किया जाता है।

93. (3) सभी कार्य दिवसों में निजी गैर-सहायता प्राप्त विद्यालयों के छात्रों को भोजन का प्रावधान।
मध्याह्न भोजन योजना मुख्य रूप से राजकीय और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों हेतु ही है। निजी गैर-सहायता प्राप्त विद्यालयों के छात्र इस सरकारी योजना के लाभार्थी नहीं होते हैं। यह योजना उन राजकीय संस्थानों में कक्षा 1 से 8 तक के छात्रों को कवर करती है जहाँ पोषण की अधिक आवश्यकता है। अकाल या सूखे की स्थिति में ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान भी भोजन देने का प्रावधान है ताकि बच्चों के पोषण स्तर में गिरावट न आए। यह योजना सामाजिक समानता का एक प्रमुख स्तंभ है।

94. (1) केवल I, II, IV और V
राजस्थान में उच्च और तकनीकी शिक्षा के प्रबंधन हेतु एक व्यवस्थित प्रशासनिक ढांचा है। कॉलेज शिक्षा विभाग सामान्य स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा की देखरेख करता है। तकनीकी शिक्षा बोर्ड (बीटीईआर) और तकनीकी विश्वविद्यालय (आरटीयू) क्रमशः डिप्लोमा और डिग्री स्तर की तकनीकी शिक्षा को विनियमित करते हैं। निजी विश्वविद्यालय भी राज्य विधान के अधीन उच्च शिक्षा का विस्तार कर रहे हैं। हालांकि, आरएससीईआरटी का कार्यक्षेत्र केवल स्कूली शिक्षा के शोध तक ही सीमित है, उच्च शिक्षा में इसकी कोई प्रत्यक्ष भूमिका नहीं है।

95. (1) III, I, IV, II
भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों का विकास स्वतंत्र भारत की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप हुआ है। प्रथम नीति 1968 में कोठारी आयोग की अनुशंसाओं पर आई थी। इसके पश्चात 1986 में दूसरी व्यापक शिक्षा नीति लागू हुई, जिसे 1992 में 'कार्य योजना' के माध्यम से संशोधित किया गया। इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों को पूरा करने हेतु अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की गई है। यह कालक्रम शिक्षा के सार्वभौमिकरण से लेकर कौशल और नवाचार आधारित आधुनिक शिक्षा तक की विकास यात्रा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

96. (2) राजस्थान में उच्च शिक्षा के लिए जीईआर, प्रारंभिक शिक्षा के जीईआर की तुलना में अधिक है।
राजस्थान के शैक्षिक आंकड़े एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत करते हैं जहाँ प्रारंभिक शिक्षा में तो लगभग सभी बच्चे नामांकित होते हैं, लेकिन उच्च शिक्षा तक पहुँचते-पहुँचते यह संख्या बहुत कम हो जाती है। अतः यह कहना कि उच्च शिक्षा का जीईआर प्रारंभिक शिक्षा से अधिक है, पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्रों और विशेष रूप से बालिकाओं में माध्यमिक स्तर के पश्चात पढ़ाई छोड़ने की प्रवृत्ति उच्च शिक्षा के नामांकन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। सरकार अब प्रोत्साहन योजनाओं द्वारा इस अंतराल को पाटने का प्रयास कर रही है।

97. (2) जोधपुर
राजस्थान का प्रतिष्ठित राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय अर्थात एनएलयू जोधपुर में स्थित है। यह देश के प्रमुख कानून शिक्षण संस्थानों में से एक है, जो कानूनी शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में वैश्विक मानक स्थापित कर रहा है। यहाँ से निकले स्नातक न्यायपालिका और सामाजिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जोधपुर को राज्य की 'न्यायिक राजधानी' के रूप में जाना जाता है क्योंकि यहाँ राजस्थान उच्च न्यायालय की मुख्य पीठ भी स्थित है, जो इस शहर को कानूनी शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र बनाती है।

98. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
समावेशी शिक्षा का मूल उद्देश्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित करना है। इसके तहत उन्हें पृथक विद्यालयों में न भेजकर सामान्य विद्यालयों में अन्य बच्चों के साथ पढ़ने का अवसर दिया जाता है। समग्र शिक्षा अभियान इन बच्चों की सहायता हेतु संसाधन कक्षों, सहायक उपकरणों और विशेष शिक्षकों की नियुक्ति को प्रोत्साहित करता है, न कि उन्हें हतोत्साहित। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि शारीरिक या मानसिक रूप से भिन्न बच्चे भी सम्मान के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकें।

99. (3) राजकीय और निजी विद्यालयों के लिए गुणवत्ता मानक स्थापित करने वाला एक राज्यव्यापी निकाय
राज्य विद्यालय मानक प्राधिकरण अर्थात एसएसएसए की स्थापना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक प्रमुख सिफारिश है। इसका उद्देश्य राज्य के सभी विद्यालयों, चाहे वे सरकारी हों या निजी, हेतु एक पारदर्शी और स्वतंत्र नियामक ढांचा तैयार करना है। यह प्राधिकरण विद्यालयों के बुनियादी ढांचे, शिक्षकों की योग्यता और सीखने के परिणामों हेतु न्यूनतम मानक निर्धारित करेगा। इससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा और प्रशासनिक जवाबदेही बढ़ेगी। यह निकाय आरबीएसई के पूरक के रूप में कार्य करेगा, न कि उसे प्रतिस्थापित करने हेतु।

Downloaded from www.pdf.tube

82. (1) पीएम स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया (PM Schools for Rising India)
पीएम श्री योजना का पूरा नाम 'पीएम स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया' है। यह केंद्र सरकार की एक नवीन पहल है जिसके तहत देश भर के चुनिंदा विद्यालयों को आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के केंद्रों के रूप में विकसित किया जा रहा है। राजस्थान में भी इन स्कूलों का चयन कर उन्हें नई शिक्षा नीति के अनुरूप तैयार किया जा रहा है। इन विद्यालयों में स्मार्ट कक्षाओं, आधुनिक विज्ञान प्रयोगशालाओं और खेल सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है ताकि ये अन्य राजकीय विद्यालयों हेतु एक आदर्श के रूप में कार्य कर सकें।

83. (3) मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना
राजस्थान सरकार की विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों के आधार पर तुलना करने पर मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना एक विशिष्ट स्थान रखती है। जहाँ गार्गी पुरस्कार, आपकी बेटी योजना और कालीबाई स्कूटी योजना विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण पर केंद्रित हैं, वहीं अनुप्रति कोचिंग योजना मेधावी छात्र और छात्राओं दोनों हेतु है जो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। इस योजना का मुख्य उद्देश्य आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रतिष्ठित सेवाओं हेतु निःशुल्क कोचिंग सुविधा प्रदान करना है।

84. (1) केवल I और II
राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2011 राज्य में आरटीई के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु विस्तृत मार्गरेखा प्रदान करते हैं। इनमें सरकार के दायित्वों, पड़ोस के विद्यालय की परिभाषा और प्रवेश की प्रक्रियाओं का स्पष्ट उल्लेख है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ये नियम किसी भी प्रकार के शारीरिक दंड या मानसिक उत्पीड़न को पूरी तरह प्रतिबंधित करते हैं। बाल अधिकारों के संरक्षण हेतु एक सुरक्षित और भयमुक्त वातावरण प्रदान करना इन नियमों का एक मूल और अनिवार्य उद्देश्य है।

85. (3) 60 से कम छात्रों वाले प्राथमिक विद्यालयों के लिए प्रधानाध्यापक को पीटीआर में शामिल किया जाता है।
आरटीई अधिनियम के तहत छात्र-शिक्षक अनुपात के कड़े नियम हैं। प्राथमिक स्तर पर 30 छात्रों पर एक शिक्षक का मानक तय है। यदि छात्रों की संख्या 150 से अधिक हो जाती है, तो विद्यालय में एक पूर्णकालिक प्रधानाध्यापक का होना अनिवार्य है, जिसे सामान्य शिक्षक अनुपात में नहीं गिना जाता। अतः 60 से कम छात्रों वाले विद्यालयों में प्रधानाध्यापक को सामान्य पीटीआर में सम्मिलित करना नियमों के अनुरूप नहीं है। ये मानक यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक छात्र को शिक्षक का पर्याप्त ध्यान प्राप्त हो सके।

86. (2) बहु-स्तरीय शिक्षण जहाँ एक शिक्षक एक साथ कई कक्षाओं का प्रबंधन करता है।
ग्रामीण क्षेत्रों के राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों के कारण 'बहु-स्तरीय शिक्षण' एक सामान्य विवशता बन गई है। ऐसी स्थिति में एक ही शिक्षक को एक साथ दो या तीन पृथक कक्षाओं के छात्रों को एक ही कक्ष में बिठाकर पढ़ाना पड़ता है। इससे न केवल शिक्षक पर कार्य का भार बढ़ता है, बल्कि छात्रों के सीखने की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। पाठ्यक्रम को समय पर और गहराई से पूर्ण करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। यह समस्या ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक पिछड़ेपन का एक प्रमुख कारण है।

87. (1) A and R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में समग्र शिक्षा अभियान के तहत माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा को जोड़ना एक दूरदर्शी कदम है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रखकर उन्हें व्यावहारिक कौशलों में पारंगत करना है। इससे वे भविष्य में अपनी रुचि के अनुसार स्वरोजगार या विशिष्ट नौकरियों हेतु सक्षम बन सकेंगे। शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने से न केवल बेरोजगारी कम होगी, बल्कि यह राज्य की आर्थिक प्रगति में भी सहायक सिद्ध होगा। छात्रों की कौशल क्षमता का विकास ही आत्मनिर्भरता की सच्ची नींव है।

88. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
सकल नामांकन अनुपात अर्थात जीईआर की गणना करते समय किसी विशेष स्तर पर नामांकित सभी छात्रों की कुल संख्या देखी जाती है। राजस्थान में प्राथमिक स्तर पर जीईआर अक्सर 100 प्रतिशत से ऊपर चला जाता है, जिसका कारण देर से विद्यालय प्रारंभ करने वाले या आयु से अधिक उम्र के बच्चों का प्राथमिक कक्षाओं में नामांकन होना है। यह आंकड़ा व्यापक पहुँच को तो दर्शाता है, परंतु इससे यह भी स्पष्ट होता है कि कई बच्चे अपनी आयु के अनुसार सही कक्षा में नहीं हैं। यह विसंगति नामांकन की सांख्यिकीय गणना का आधार है।

89. (1) केवल I, II और III
कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय वंचित समुदायों की बालिकाओं को शिक्षा के अवसर प्रदान करने हेतु विभिन्न श्रेणियों में संचालित हैं। टाइप-I विद्यालय कक्षा 6 से 8 तक हेतु हैं, जबकि अब राज्य में टाइप-III विद्यालयों का विस्तार कक्षा 12 तक किया गया है ताकि शिक्षा की निरंतरता बनी रहे। इन विद्यालयों के संचालन का व्यय केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा निर्धारित अनुपात में वहन किया जाता है। ये संस्थान ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में बालिका साक्षरता बढ़ाने हेतु एक प्रभावी आवासीय मॉडल के रूप में उभरे हैं।

90. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-ii
राजस्थान की प्रत्येक शैक्षिक योजना एक विशिष्ट लक्ष्य के साथ तैयार की गई है। निःशुल्क यूनिफॉर्म योजना अभिभावकों के आर्थिक बोझ को कम कर नामांकन बढ़ाती है। बाल गोपाल योजना दूध वितरण के माध्यम से पोषण और उपस्थिति में सुधार लाती है। गार्गी पुरस्कार बालिकाओं में उच्च शैक्षणिक प्रदर्शन की स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करता है। वहीं, शाला दर्पण पोर्टल संपूर्ण विद्यालयी डेटा को ऑनलाइन उपलब्ध कराकर शासन में पारदर्शिता और सुशासन सुनिश्चित करता है। ये सभी पहलें मिलकर राज्य के शैक्षिक वातावरण को सुदृढ़ बनाती हैं।

NODIA

अध्याय 20
राजस्थान में स्वास्थ्य

1. स्वास्थ्य एवं जनसांख्यिकीय रिपोर्टिंग में प्रयुक्त शिशु मृत्यु दर (IMR) को निम्नलिखित में से कौन परिभाषित करता है?
(1) किसी दिए गए वर्ष में प्रति 10,000 जीवित जन्मों पर शिशु मृत्यु की संख्या
(2) किसी दिए गए वर्ष में प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर शिशु मृत्यु की संख्या
(3) प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु की संख्या
(4) किसी दिए गए वर्ष में मृत जन्मों सहित प्रति 1,000 कुल जन्मों पर शिशु मृत्यु की संख्या
(5) प्रश्न अनुत्तरित

2. सूची I में दिए गए स्वास्थ्य संकेतकों को सूची II में उनकी संबंधित मानक मापन इकाइयों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (स्वास्थ्य संकेतक)
A. शिशु मृत्यु दर
B. मातृ मृत्यु अनुपात
C. कुल प्रजनन दर
D. जीवन प्रत्याशा
सूची II: (मापन की इकाइयाँ)
i. प्रति महिला बच्चों की औसत संख्या
ii. वर्ष
iii. प्रति 1,00,000 जीवित जन्म
iv. प्रति 1,000 जीवित जन्म
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

3. पिछले दशक में राजस्थान में मातृ मृत्यु अनुपात (MMR) की सामान्य प्रवृत्ति क्या रही है?
(1) स्वास्थ्य हस्तक्षेपों के कार्यान्चयन के बावजूद यह स्थिर रही है
(2) इसमें तीव्र गिरावट आई है और वर्तमान में यह राष्ट्रीय औसत से कम है
(3) इसमें निरंतर गिरावट आई है, हालांकि यह अभी भी राष्ट्रीय औसत से अधिक है
(4) सभी जिलों में मातृ मृत्यु की बेहतर रिपोर्टिंग के कारण इसमें वृद्धि हुई है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

4. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राजस्थान के सभी परिवारों को स्वास्थ्य बीमा सुरक्षा प्रदान करती है।
II. बाह्य रोगी विभाग (OPD) सेवाओं को इस योजना से पूरी तरह बाहर रखा गया है।
III. लाभार्थी सूचीबद्ध सरकारी और निजी दोनों अस्पतालों में निःशुल्क उपचार प्राप्त कर सकते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

5. भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना के मानदंडों के तहत, एक मानक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHC) गैर-जनजातीय/मैदानी क्षेत्रों में कितनी जनसंख्या की सेवा के लिए अभिकल्पित किया गया है?
(1) 30,000
(2) 50,000
(3) 80,000
(4) 1,20,000
(5) प्रश्न अनुत्तरित

6. राजस्थान में जनसांख्यिकीय संक्रमण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) राज्य कुल प्रजनन दर में क्रमिक गिरावट का अनुभव कर रहा है।
(2) राजस्थान ने सभी जिलों में 2.1 की प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन दर प्राप्त कर ली है।
(3) जन्म दर में गिरावट से पहले मृत्यु दर में गिरावट आई थी।
(4) बेहतर स्वास्थ्य अवसंरचना ने जीवन प्रत्याशा बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

7. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जननी सुरक्षा योजना (JSY) ग्रामीण राजस्थान में संस्थागत प्रसव की दर बढ़ाने में अत्यधिक प्रभावी रही है।
कारण (R): JSY गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य सुविधाओं में प्रसव के लिए प्रोत्साहित करने हेतु सशर्त नकद सहायता प्रदान करती है।

Click Here to Buy book on Amazon

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

8. राजस्थान सरकार ने किस वर्ष मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना प्रारंभ की थी?
(1) 2008
(2) 2011
(3) 2014
(4) 2018
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. राजस्थान में पोषण अभियान के कार्यान्वयन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका उद्देश्य अवरुद्ध विकास (स्टंटिंग), अल्पपोषण और रक्तअल्पता (एनीमिया) को कम करना है।
II. यह विशेष रूप से किशोर लड़कों और वयस्क पुरुषों को लक्षित करता है।
III. आंगनवाड़ी कार्यकर्ता इसके जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
IV. प्रौद्योगिकी और व्यवहार परिवर्तन संचार (BCC) इस मिशन के प्रमुख घटक हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. राजस्थान में क्षय रोग (टीबी) नियंत्रण के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: राज्य सरकार टीबी के भार को कम करने के लिए राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (NTEP) लागू करती है।
कथन II: निक्षय पोषण योजना पंजीकृत टीबी रोगियों को पोषण सहायता के लिए प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) प्रदान करती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. निम्नलिखित में से कौन ग्रामीण राजस्थान में स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के लिए एक प्रमुख चुनौती है?
(1) उप-स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर विशेषज्ञ चिकित्सकों की अत्यधिक आपूर्ति
(2) एक अत्यधिक अनुकूल चिकित्सक-रोगी अनुपात जो वित्तीय संसाधनों पर दबाव डालता है
(3) ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाओं का अत्यधिक निजीकरण
(4) चिकित्सा पेशेवरों की दूरस्थ और जनजातीय क्षेत्रों में सेवा करने के प्रति अनिच्छा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

12. सूची I में गैर-संचारी रोगों (NCDs) को सूची II में उनके प्राथमिक परिवर्तनीय जोखिम कारकों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (गैर-संचारी रोग)
A. हृदय रोग
B. टाइप 2 मधुमेह
C. जीर्ण फुफ्फुसीय अवरोधक रोग (COPD)
D. मुख का कैंसर
सूची II: (परिवर्तनीय जोखिम कारक)
i. तंबाकू चबाना
ii. आहार में उच्च शर्करा और शारीरिक निष्क्रियता
iii. धूम्रपान और घरेलू वायु प्रदूषण
iv. उच्च ट्रांस-फैट सेवन और उच्च रक्तचाप
(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं (ASHA) का स्वीकृत कार्य नहीं है?
(1) गर्भवती महिलाओं को संस्थागत प्रसव के लिए प्रेरित करना
(2) टीकाकरण अभियानों में सहायता करना
(3) ग्राम स्तर पर लघु शल्य चिकित्सा प्रक्रियाएं करना
(4) पोषण और स्वच्छता के बारे में जागरुकता उत्पन्न करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. राजस्थान में आयुष्मान भारत पीएम-जेएवाई (PM-JAY) योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह प्रति परिवार प्रति वर्ष 5 लाख रुपये की स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करती है।
II. यह योजना पूर्णतः राजस्थान राज्य सरकार द्वारा वित्तपोषित है।
III. इसका उद्देश्य स्वास्थ्य पर होने वाले अत्यधिक व्यक्तिगत व्यय को कम करना है।
IV. लाभार्थियों की पहचान सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना (SECC) 2011 के आधार पर की जाती है।
V. इसे राज्य की अपनी स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के साथ एकीकृत किया गया है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V

(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. उनके प्राथमिक लक्षित जनसांख्यिकीय समूह के आधार पर निम्नलिखित स्वास्थ्य हस्तक्षेपों में से भिन्न को पहचानें।
(1) राष्ट्रीय अंधता नियंत्रण कार्यक्रम
(2) जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम
(3) मुख्यमंत्री राजश्री योजना
(4) प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. राजस्थान में मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) निवास से जाँच केंद्रों तक निःशुल्क एम्बुलेंस सेवाएं प्रदान करना
(2) सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं में रोगियों को निःशुल्क नैदानिक जाँच उपलब्ध कराना
(3) निजी अस्पतालों को निःशुल्क शल्य चिकित्सा उपकरण उपलब्ध कराना
(4) केवल राज्य सरकार के कर्मचारियों के लिए एमआरआई स्कैन पर सब्सिडी देना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प ग्रामीण राजस्थान में सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना के सही पदानुक्रमित अनुक्रम (न्यूनतम जनसंख्या कवरेज से अधिकतम तक) को दर्शाता है?
(1) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, उप-स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, जिला अस्पताल
(2) उप-स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, जिला अस्पताल
(3) उप-स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, जिला अस्पताल
(4) सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, उप-स्वास्थ्य केंद्र, जिला अस्पताल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. गर्भवती महिलाओं में रक्तअल्पता (एनीमिया) के निरंतर उच्च प्रसार का सर्वाधिक संभावित प्रभाव क्या होगा?
(1) मातृ मृत्यु दर में वृद्धि
(2) कुल प्रजनन दर में कमी
(3) चिकित्सक-रोगी अनुपात में वृद्धि
(4) गैर-संचारी रोगों में कमी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. निम्नलिखित में से कौन सा कारक राजस्थान में चिकित्सा पर्यटन की बढ़ती क्षमता की सर्वोत्तम व्याख्या करता है?
(1) आवश्यक जेनेरिक दवाओं का राज्य में व्यापक दवा निर्माण
(2) सभी विदेशी नागरिकों के लिए अत्यधिक रियायती सार्वजनिक परिवहन की उपलब्धता
(3) गुणवत्तापूर्ण निजी स्वास्थ्य सेवा के साथ विरासत पर्यटन का संगम
(4) संपूर्ण राज्य में प्रमुख संचारी रोगों का पूर्ण उन्मूलन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन लिमिटेड (RMSCL) की स्थापना मुख्य रुप से किस उद्देश्य से की गई थी?
(1) निजी मेडिकल कॉलेजों के लिए शुल्क संरचना का राज्यव्यापी विनियमन
(2) ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों के लिए चिकित्सकों और नर्सों की भर्ती एवं तैनाती
(3) राज्य भर के जिला अस्पतालों का दैनिक प्रशासनिक प्रबंधन
(4) दवाओं और उपकरणों के लिए केंद्रीकृत खरीद एजेंसी के रुप में कार्य करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) के दिशा-निर्देशों के अनुसार, जनजातीय और पहाड़ी क्षेत्रों में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC) के लिए कितनी जनसंख्या को कवर करना अनिवार्य है?
(1) 10,000
(2) 20,000
(3) 30,000
(4) 50,000
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. सूची I में स्वास्थ्य योजनाओं को सूची II में उनके प्राथमिक उद्देश्यों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (स्वास्थ्य योजनाएं)
A. जननी सुरक्षा योजना
B. पोषण अभियान
C. आयुष्मान भारत
D. मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना
सूची II: (उद्देश्य)
i. स्वास्थ्य बीमा कवरेज
ii. आवश्यक दवाओं तक सार्वभौमिक पहुँच
iii. संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना
iv. कुपोषण और अवरुद्ध विकास (स्टंटिंग) में कमी
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. राजस्थान में बढ़ते रोग भार के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा रोग और उसका वर्गीकरण सही सुमेलित है?
(1) मलेरिया - गैर-संचारी रोग
(2) क्षय रोग (टीबी) - आनुवंशिक रोग
(3) मधुमेह - संचारी रोग
(4) उच्च रक्तचाप - गैर-संचारी रोग
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Downloaded from www.pdf.tube

24. राजस्थान में कोविड-19 प्रतिक्रिया के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. "भीलवाड़ा मॉडल" ने अपनी कठोर नियंत्रण और स्क्रीनिंग रणनीतियों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त की।
II. राज्य सरकार कोविड-19 टीकाकरण के लिए पूर्णतः निजी अस्पतालों पर निर्भर थी।
III. लक्षणात्मक रोगियों का पता लगाने के लिए आशा (ASHA) और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा घर-घर जाकर सर्वेक्षण किया गया।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. बाल्यकाल के कुपोषण के संदर्भ में "अवरुद्ध विकास" (स्टंटिंग) शब्द को निम्नलिखित में से कौन सही ढंग से परिभाषित करता है?
(1) ऊँचाई के सापेक्ष कम वजन
(2) आयु के सापेक्ष कम वजन
(3) आयु के सापेक्ष कम ऊँचाई
(4) आयु के सापेक्ष कम हीमोग्लोबिन स्तर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) के तहत, राजस्थान में 'स्टेट हेल्थ सोसाइटी' (राज्य स्वास्थ्य समिति) की प्राथमिक भूमिका क्या है?
(1) NHM गतिविधियों का राज्य स्तरीय नियोजन और कार्यान्वयन
(2) शहरी केंद्रों के लिए विशिष्ट निजी चिकित्सा व्यवसायियों की सीधी भर्ती
(3) स्थानीय संचारी रोग के प्रकोप के लिए टीकों का वृहद स्तर पर निर्माण
(4) अन्य राज्यों को उच्च-स्तरीय चिकित्सा उपकरण और नैदानिक उपकरणों का निर्यात
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): राजस्थान बीमारियों के दोहरे भार का सामना कर रहा है, जो संचारी और गैर-संचारी दोनों रोगों के उच्च प्रसार द्वारा परिभाषित है।
कारण (R): तीव्र शहरीकरण और जीवनशैली में परिवर्तन से गैर-संचारी रोग बढ़ रहे हैं, जबकि कम विकसित ग्रामीण क्षेत्रों में संक्रामक रोग बने हुए हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. एक गाँव में एक सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता मानसून के दौरान जलजनित रोगों के उच्च प्रसार को देखता है। जमीनी स्तर पर ओआरएस और जिंक जैसी बुनियादी दवाओं को वितरित करने के लिए किस अवसंरचना घटक को तुरंत सक्रिय किया जाना चाहिए?
(1) जिला अस्पताल
(2) उप-स्वास्थ्य केंद्र / आशा (ASHA) कार्यकर्ता
(3) राज्य स्वास्थ्य निदेशालय
(4) मेडिकल कॉलेज अस्पताल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

29. राजस्थान में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. मानसिक स्वास्थ्य की अवसंरचना शहरी केंद्रों में अत्यधिक केंद्रित है।
II. सामाजिक कलंक और जागरुकता की कमी मानसिक स्वास्थ्य देखभाल प्राप्त करने में महत्वपूर्ण बाधा बनी हुई है।
III. जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के साथ एकीकृत करना है।
IV. राजस्थान के प्रत्येक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में एक समर्पित पूर्णकालिक मनोचिकित्सक है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

30. राजस्थान के जनसांख्यिकीय संकेतकों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) पिछले कुछ दशकों में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में निरंतर वृद्धि हुई है।
(2) कुल प्रजनन दर में गिरावट आई है लेकिन यह भारत के दक्षिणी राज्यों की तुलना में अधिक बनी हुई है।
(3) संस्थागत प्रसव योजनाओं के कारण मातृ मृत्यु अनुपात में महत्वपूर्ण कमी आई है।
(4) रिकॉर्डिंग के बेहतर तरीकों के कारण शिशु मृत्यु दर में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. निःशुल्क दवा वितरण के राजस्थान मॉडल के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: इसे सरकारी अस्पतालों में आने वाले रोगियों के व्यक्तिगत व्यय को कम करने के लिए अभिकल्पित किया गया था।
कथन II: इस योजना को व्यापक रूप से सराहा गया है और इसने अन्य भारतीय राज्यों में इसी तरह की पहलों के लिए एक

रुपरेखा के रूप में कार्य किया है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. सूची I में स्वास्थ्य कर्मियों को सूची II में राजस्थान के स्वास्थ्य ढांचे में उनके प्राथमिक संचालन स्तर के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (स्वास्थ्य कर्मी)
A. मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (CMHO)
B. ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी (BCMO)
C. चिकित्सा अधिकारी प्रभारी (MOIC)
D. सहायक नर्स मिडवाइफ (ANM)
सूची II: (संचालन का स्तर)
i. उप-स्वास्थ्य केंद्र
ii. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र
iii. जिला स्तर
iv. ब्लॉक स्तर
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. ग्रामीण सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (CHCs) में विशेषज्ञ चिकित्सकों की कमी को दूर करने के लिए निम्नलिखित में से कौन सी सर्वाधिक उपयुक्त रणनीति है?
(1) प्रमुख शहरी केंद्रों के भीतर संचालित सभी निजी अस्पतालों को अनिवार्य रूप से बंद करना
(2) ग्रामीण चिकित्सकों के लिए वित्तीय प्रोत्साहन और आवासीय सुविधाएं प्रदान करना
(3) विशेषज्ञ चिकित्सकों को व्यवस्थित रूप से समुदाय-आधारित आशा (ASHA) कार्यकर्ताओं से प्रतिस्थापित करना
(4) राज्य के भीतर संचालित CHCs की कुल संख्या में उत्तरोत्तर कमी करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. राजस्थान में मातृ मृत्यु दर (MMR) को कम करने के उद्देश्य से निम्नलिखित हस्तक्षेपों पर विचार कीजिए:
I. नकद प्रोत्साहन के माध्यम से संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना।
II. जिला अस्पतालों में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य (MCH) विंग की स्थापना।
III. जटिल शल्य चिकित्सा करने के लिए पारंपरिक दाइयों को प्रशिक्षण देना।
IV. गर्भवती महिलाओं के लिए निःशुल्क परिवहन सेवा (104/108 एम्बुलेंस) का प्रावधान।
V. प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत प्रसव पूर्व जाँच।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता गलत है?
(1) यह पूर्व से विद्यमान बीमारियों को प्रथम दिन से कवर करती है।
(2) इसमें एक निर्दिष्ट अवधि के लिए अस्पताल में भर्ती होने से पूर्व और पश्चात के व्यय सम्मिलित हैं।
(3) प्रीमियम का भुगतान सभी लाभार्थियों द्वारा उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बावजूद अनिवार्य रूप से किया जाता है।
(4) सूचीबद्ध अस्पतालों में कैशलेस उपचार प्रदान किया जाता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के संदर्भ में ASHA का पूर्ण रूप क्या है?
(1) ऑक्जिलरी सोशल हेल्थ असिस्टेंट
(2) एक्रिडिटेड स्टेट हेल्थ असिस्टेंट
(3) एडवांस्ड सोशल हेल्थ एजेंसी
(4) एक्रिडिटेड सोशल हेल्थ एक्टिविस्ट
(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. राजस्थान में लागू की गई निम्नलिखित ऐतिहासिक स्वास्थ्य योजनाओं को उनके प्रारंभ के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना
II. मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना
III. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM)
IV. आयुष्मान भारत पीएम-जेएवाई (PM-JAY)
(1) III, II, IV, I
(2) II, III, I, IV
(3) III, IV, II, I
(4) II, I, III, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. सरकारी मानदंडों के अनुसार, एक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHC) की मानक शैय्या क्षमता (बिस्तर क्षमता) क्या है?
(1) 10 बिस्तर
(2) 30 बिस्तर
(3) 100 बिस्तर
(4) 500 बिस्तर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Click Here to Buy book on Amazon

55. जनजातीय जिलों में पोषण अभियान को लागू करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य क्या है?
(1) विशिष्ट मेडिकल कॉलेजों की कुल संख्या में तीव्र वृद्धि करना
(2) राज्यव्यापी चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अवसंरचना का विकास करना
(3) एक ही कैलेंडर वर्ष के भीतर डेंगू ज्वर का पूर्ण उन्मूलन
(4) बच्चों में गंभीर तीव्र कुपोषण (SAM) को कम करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. पिछले कुछ वर्षों में, राजस्थान सरकार ने प्रत्येक _______ में एक मेडिकल कॉलेज स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया है:
(1) ग्राम पंचायत
(2) ब्लॉक मुख्यालय
(3) जिला
(4) उप-स्वास्थ्य केंद्र
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. ग्रामीण स्तर से ऊपर की ओर रेफरल प्रवाह के सही क्रम में निम्नलिखित मातृ स्वास्थ्य देखभाल हस्तक्षेप स्तरों को व्यवस्थित करें:
I. सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (प्रथम रेफरल इकाई)
II. जिला अस्पताल
III. आशा / आंगनवाड़ी कार्यकर्ता
IV. उप-स्वास्थ्य केंद्र / प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र
(1) III, IV, I, II
(2) IV, III, I, II
(3) III, I, IV, II
(4) IV, I, II, III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

58. निम्नलिखित में से कौन सा स्वास्थ्य संकेतक और उसके भाजक का सही सुमेलित युग्म है?
(1) मातृ मृत्यु अनुपात - प्रति 1,00,000 जीवित जन्म
(2) शिशु मृत्यु दर - प्रति 1,00,000 जीवित जन्म
(3) कुल प्रजनन दर - प्रति 1,00,000 जीवित जन्म
(4) अशोधित मृत्यु दर - प्रति 10,000 जनसंख्या
(5) प्रश्न अनुत्तरित

59. निम्नलिखित में से कौन ग्रामीण क्षेत्रों में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में बाधा के रूप में मान्य नहीं है?
(1) प्रशिक्षित मनोचिकित्सकों और मनोवैज्ञानिकों की भारी कमी
(2) मानसिक बीमारियों से जुड़ा व्यापक सामाजिक कलंक
(3) मानसिक बीमारी के लिए अलौकिक कारणों में विश्वास और जागरूकता की कमी
(4) ब्लॉक स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य पुनर्वास केंद्रों की अत्यधिक बहुलता
(5) प्रश्न अनुत्तरित

60. तीव्र शहरीकरण और गैर-संचारी रोगों (NCDs) के बढ़ते भार के मध्य कार्य-कारण संबंध क्या है?
(1) शहरी नौकरियों में शारीरिक श्रम में वृद्धि जिससे पुराने जोड़ों के रोग होते हैं
(2) गतिहीन जीवन शैली और आहार परिवर्तन जिससे मधुमेह होता है
(3) स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच में कमी जिससे अचानक आनुवंशिक उत्परिवर्तन होते हैं
(4) संक्रामक रोगों का पूर्ण उन्मूलन, जिससे शहरों में केवल NCDs शेष रहते हैं
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना (एकीकृत योजना) को लागू करने के लिए कौन सी एजेंसी उत्तरदायी है?
(1) राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन लिमिटेड (RMSCL)
(2) चिकित्सा शिक्षा निदेशालय
(3) राजस्थान स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेंसी (RSHAA)
(4) राजस्थान लोक सेवा आयोग
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

62. सूची I में पोषण संबंधी कमी को सूची II में उसकी संबंधित स्वास्थ्य स्थिति के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (पोषण संबंधी कमी)
A. आयरन (लोह तत्व) की कमी
B. आयोडीन की कमी
C. विटामिन A की कमी
D. प्रोटीन-ऊर्जा कुपोषण
सूची II: (स्वास्थ्य स्थिति)
i. घेंघा
ii. रक्तअल्पता (एनीमिया)
iii. मरास्मस/क्वाशियोरकोर
iv. रतौंधी
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. निःशुल्क दवा योजना के राजस्थान मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली क्योंकि इसमें मुख्य रूप से:
(1) केंद्रीकृत खरीद और विकेंद्रीकृत सूचना प्रौद्योगिकी वितरण था
(2) भारत की पहली योजना थी जिसने पूर्णतः कैशलेस अंग प्रत्यारोपण की पेशकश की थी
(3) निजी फार्मेसियों को बिना किसी शुल्क के दवाएं वितरित करने के लिए बाध्य किया गया था
(4) यह परियोजना पूर्णतः विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वित्तपोषित और प्रबंधित थी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. उनके ग्रामीण/प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्रण के आधार पर निम्नलिखित स्वास्थ्य अवसंरचना इकाइयों में से भिन्न को पहचानें।
(1) उप-स्वास्थ्य केंद्र
(2) सुपर स्पेशलिटी मेडिकल कॉलेज अस्पताल
(3) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र
(4) सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. राजस्थान में स्वास्थ्य अवसंरचना से संबंधित निम्नलिखित चुनौतियों पर विचार कीजिए:
I. मरुस्थलीय जिलों में भौगोलिक विशालता और कम जनसंख्या घनत्व पहुँच को कठिन बनाता है।
II. दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में चिकित्सा कर्मचारियों की उच्च अनुपस्थिति।
III. जिला स्तर पर जेनेरिक दवाओं की अपर्याप्त आपूर्ति।
IV. सुविधाओं के अभाव के कारण कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सकों पर अत्यधिक निर्भरता।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. जनसंख्या स्वास्थ्य के संदर्भ में 'जनसांख्यिकीय संक्रमण' (Demographic Transition) को निम्नलिखित में से कौन परिभाषित करता है?
(1) उच्च जन्म/मृत्यु दर से निम्न जन्म/मृत्यु दर की ओर बदलाव
(2) आवधिक स्वास्थ्य संकटों के कारण शहरी से ग्रामीण जीवन की ओर जनसांख्यिकीय बदलाव
(3) बेहतर रोजगार के लिए क्षेत्रों के बीच चिकित्सा पेशेवरों का वृहद स्तर पर पलायन
(4) संपूर्ण स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों का सार्वजनिक स्वामित्व से निजी क्षेत्र में संक्रमण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. राजस्थान में जीवन प्रत्याशा के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) जन्म के समय महिला जीवन प्रत्याशा निरंतर पुरुष दर से कम दर्ज की जा रही है।
(2) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा पिछले बीस वर्षों में निरंतर गिरावट प्रदर्शित कर रही है।
(3) मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य हस्तक्षेपों से जीवन प्रत्याशा बढ़ रही है।
(4) ग्रामीण राजस्थान में जीवन प्रत्याशा शहरी क्षेत्रों की तुलना में काफी अधिक है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. सूची I में जनसांख्यिकीय संक्रमण के चरणों को सूची II में उनकी विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संक्रमण चरण)
A. चरण 1
B. चरण 2
C. चरण 3
D. चरण 4
सूची II: (विशेषताएं)
i. गिरती जन्म दर, निम्न मृत्यु दर
ii. उच्च जन्म दर, उच्च मृत्यु दर
iii. निम्न जन्म दर, निम्न मृत्यु दर
iv. उच्च जन्म दर, तेजी से गिरती मृत्यु दर
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. राजस्थान सरकार ने 'निरोगी राजस्थान' अभियान मुख्य रूप से किस लिए प्रारंभ किया?
(1) सभी सरकारी चिकित्सा जाँच केंद्रों का व्यवस्थित निजीकरण करना
(2) पंजीकृत वरिष्ठ नागरिकों के लिए पूर्ण वित्तपोषित विदेशी चिकित्सा यात्राओं का प्रावधान
(3) स्वास्थ्य जागरुकता और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देना
(4) लघु और सीमांत किसानों के लिए विशिष्ट कृषि उपकरणों पर सब्सिडी देना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

54. राजस्थान चिकित्सा, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग की संरचना के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. यह राज्य की स्वास्थ्य नीतियों को तैयार करता है।
II. यह राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के कार्यान्वयन की निगरानी करता है।
III. यह राज्य में निजी नैदानिक प्रतिष्ठानों को नियंत्रित करता है।
IV. इसका प्रशासनिक नेतृत्व शासन सचिव, स्वास्थ्य द्वारा किया जाता है।
V. यह बिना किसी निधि साझाकरण के केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय से स्वतंत्र रूप से कार्य करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

(4) 144
(5) प्रश्न अनुत्तरित

89. राजस्थान में राज्य और केंद्रीय स्वास्थ्य योजनाओं के एकीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आयुष्मान भारत को राज्य के मौजूदा स्वास्थ्य बीमा मॉडल के साथ एकीकृत किया गया था।
II. एकीकरण का उद्देश्य लाभार्थियों के दोहराव से बचना था।
III. केंद्रीय वित्त पोषण राज्य-विशिष्ट सभी लाभार्थियों के प्रीमियम को पूर्णतः कवर करता है।
IV. इसने मरीजों के लिए सूचीबद्ध निजी अस्पतालों के नेटवर्क का विस्तार किया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) II, III और IV
(3) I, II और III
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

90. जनजातीय क्षेत्रों में मलेरिया जैसे वेक्टर-जनित रोगों से निपटने के लिए सर्वाधिक प्रभावी दीर्घकालिक रणनीति निम्नलिखित में से कौन सी है?
(1) एकीकृत वेक्टर प्रबंधन और कीटनाशक उपचारित मच्छरदानी
(2) सभी स्वस्थ व्यक्तियों को उपचारात्मक दवाओं का व्यापक वितरण
(3) जनजातीय जनसंख्या को प्रमुख शहरी औद्योगिक केंद्रों में स्थानांतरित करना
(4) सभी पेयजल भंडारण पर कठोर कानूनी प्रतिबंध लगाना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

91. निम्नलिखित में से कौन सा कुछ जिलों में ऐतिहासिक रूप से उच्च कुल प्रजनन दर (TFR) का कारण नहीं है?
(1) पुरुष संतानों के लिए प्रचलित सामाजिक-सांस्कृतिक प्राथमिकता
(2) महिलाओं के लिए विवाह की अल्प आयु
(3) आधुनिक गर्भनिरोधक विधियों के बारे में जागरूकता की कमी और सीमित पहुँच
(4) उच्च महिला साक्षरता दर और औपचारिक कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

92. सूची I में संचारी रोगों को सूची II में विशिष्ट स्वास्थ्य हस्तक्षेपों/कार्यक्रमों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संचारी रोग)
A. क्षय रोग (टीबी)
B. कुष्ठ रोग
C. पोलियो
D. एचआईवी/एड्स
सूची II: (स्वास्थ्य हस्तक्षेप/कार्यक्रम)
i. पल्स पोलियो टीकाकरण
ii. डॉट्स (DOTS) रणनीति
iii. एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (ART)
iv. मल्टी-ड्रग थेरेपी (MDT)
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

93. ग्रामीण स्वास्थ्य वितरण प्रणाली के संबंध में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) का मौलिक अधिदेश क्या है?
(1) सार्वजनिक अस्पतालों को निजी भागीदारी के साथ व्यवस्थित रूप से प्रतिस्थापित करना
(2) शैक्षणिक उच्च चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान पर विशेष ध्यान देना
(3) निर्धन ग्रामीण जनसंख्या के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करना
(4) विदेशियों के लिए निःशुल्क अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा पर्यटन पैकेज का प्रावधान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

94. राजस्थान में स्वास्थ्य और पोषण के मूल्यांकन के लिए उपयोग किए जाने वाले निम्नलिखित संकेतकों पर विचार कीजिए:
I. संस्थागत जन्म दर।
II. बच्चों में टीकाकरण कवरेज।
III. महिलाओं में रक्तअल्पता का प्रसार।
IV. उन्नत न्यूरोसर्जरी पर जेब से होने वाला व्यक्तिगत व्यय।
V. बच्चों की पोषण स्थिति (अवरुद्ध विकास और कृशता)।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

95. आशा (ASHA) कार्यकर्ता की पात्रता और चयन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) उसके पास किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से औपचारिक चिकित्सा डिग्री (MBBS) होनी चाहिए।
(2) उसे उस गाँव की महिला निवासी होना चाहिए जहाँ उसे सेवा के लिए चुना गया है।
(3) उसे अधिमानतः विवाहित, विधवा या तलाकशुदा होना चाहिए।
(4) उसका चयन सामान्यतः स्थानीय ग्राम पंचायत के माध्यम से किया जाता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

96. राजस्थान में स्वास्थ्य सेवा वित्तपोषण के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के कार्यान्वयन का उद्देश्य

Downloaded from www.pdf.tube

64. राजस्थान में कुपोषण के आंकड़ों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हाल के वर्षों में 5 वर्ष से कम आयु के अवरुद्ध विकास (नाटे) बच्चों का अनुपात काफी बढ़ गया है।
II. प्रजनन आयु की महिलाओं में रक्तअल्पता (एनीमिया) का अत्यधिक प्रसार बना हुआ है।
III. केवल स्तनपान की प्रथाओं में सुधार देखा गया है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. गैर-संचारी रोगों (NCDs) के रूप में उनके वर्गीकरण के आधार पर निम्नलिखित रोगों में से भिन्न को पहचानें।
(1) हृदय रोग
(2) क्षय रोग (टीबी)
(3) जीर्ण श्वसन रोग
(4) कैंसर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. राजस्थान में स्वास्थ्य क्षेत्र की चुनौतियों के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: राज्य को विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में एक संतुलित चिकित्सक-रोगी अनुपात प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण चुनौती का सामना करना पड़ता है।
कथन II: अधिकांश चिकित्सा पेशेवर बेहतर अवसंरचना और रहने की स्थिति के कारण शहरी केंद्रों में पदस्थापना को प्राथमिकता देते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में उपचार के लिए सूचीबद्ध निजी अस्पताल सम्मिलित हैं।
कारण (R): संपूर्ण जनसंख्या की उन्नत तृतीयक देखभाल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए केवल सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना अपर्याप्त है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

68. किसी क्षेत्र की शिशु मृत्यु दर में गिरावट और गिरती प्रजनन दर के साथ-साथ बढ़ती जीवन प्रत्याशा के आधार पर, वह वर्तमान में जनसांख्यिकीय संक्रमण के किस चरण में है?
(1) प्रारंभिक विस्तार चरण
(2) उत्तरवर्ती विस्तार से निम्न स्थिर चरण
(3) उच्च स्थिर चरण
(4) गिरावट का चरण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. राजस्थान में सार्वजनिक स्वास्थ्य शासन के निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
I. स्टेट हेल्थ सोसाइटी (राज्य स्वास्थ्य समिति)
II. डिस्ट्रिक्ट हेल्थ सोसाइटी (जिला स्वास्थ्य समिति)
III. रोगी कल्याण समिति (RKS)
IV. ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण समिति (VHSNC)
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) के विकेंद्रीकृत संस्थागत ढांचे के संबंध में उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

70. राजस्थान में चिकित्सा पर्यटन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) राजस्थान आयुष चिकित्सा के माध्यम से कल्याण पर्यटन को बढ़ावा देता है।
(2) स्थानीय लोगों के लिए अस्पताल के बिस्तर आरक्षित रखने हेतु राज्य द्वारा आधिकारिक तौर पर चिकित्सा पर्यटन को हतोत्साहित किया जाता है।
(3) राज्य में आने वाले चिकित्सा पर्यटकों के मध्य जोड़ प्रत्यारोपण और हृदय संबंधी शल्य चिकित्सा लोकप्रिय हैं।
(4) जयपुर में विश्व स्तरीय निजी अस्पताल श्रृंखलाओं की उपस्थिति इस क्षेत्र को बढ़ावा देती है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC) के मुख्य कार्य का सर्वाधिक सटीक विवरण क्या है?
(1) जटिल मस्तिष्क की चोटों के लिए अत्यधिक विशिष्ट न्यूरोसर्जरी का प्रावधान
(2) विशेष रूप से एक चिकित्सा अनुसंधान और टीका प्रयोगशाला के रूप में कार्य करना
(3) पूरे जिले के लिए आवश्यक जेनेरिक दवाओं का वृहद स्तर पर निर्माण
(4) समुदाय और चिकित्सा अधिकारी के मध्य संपर्क का प्रथम बिंदु
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) किसी दिए गए वर्ष में प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर शिशु मृत्यु की संख्या
शिशु मृत्यु दर किसी क्षेत्र की स्वास्थ्य स्थिति का प्रमुख संकेतक है। यह प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर एक वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु की संख्या को दर्शाता है। यह आँकड़ा स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता और गुणवत्ता का मापन करता है। इस दर को कम करना किसी भी राज्य की प्राथमिक जनसांख्यिकीय प्राथमिकता होती है जो मातृ स्वास्थ्य से जुड़ी है।
यह संकेतक मुख्य रूप से पोषण, टीकाकरण और स्वच्छता जैसे कारकों पर निर्भर करता है। राजस्थान में इसके मापन के लिए नमूना पंजीकरण प्रणाली का उपयोग किया जाता है। एक स्वस्थ समाज के लिए इस दर का न्यूनतम होना अत्यंत आवश्यक है। यह प्रत्यक्ष रूप से प्रसव पूर्व देखभाल और संस्थागत प्रसव की उपलब्धता से संबंधित माना जाता है।

2. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
स्वास्थ्य संकेतकों का मापन विभिन्न मानक इकाइयों के माध्यम से किया जाता है जो जनसांख्यिकीय विश्लेषण में सहायक होते हैं। शिशु मृत्यु दर की गणना प्रति हजार जीवित जन्मों पर की जाती है, जबकि मातृ मृत्यु अनुपात को प्रति एक लाख जीवित जन्मों पर मापा जाता है। ये मानक इकाइयाँ विभिन्न क्षेत्रों के स्वास्थ्य परिणामों की तुलना करने के लिए एक विश्वसनीय आधार प्रदान करती हैं।
कुल प्रजनन दर एक महिला द्वारा अपने जीवनकाल में जन्म दिए जाने वाले बच्चों की औसत संख्या को दर्शाती है। जीवन प्रत्याशा का मापन वर्षों में किया जाता है, जो किसी व्यक्ति के जीवित रहने की संभावित औसत आयु को प्रकट करता है। इन सभी मापदंडों का सही सुमेलन स्वास्थ्य सेवाओं के प्रभावी मूल्यांकन और भविष्य की योजनाएं तैयार करने के लिए आवश्यक होता है।

3. (3) इसमें निरंतर गिरावट आई है, हालांकि यह अभी भी राष्ट्रीय औसत से अधिक है
राजस्थान में पिछले दशक के दौरान मातृ स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार से मातृ मृत्यु अनुपात में निरंतर गिरावट देखी गई है। विभिन्न सरकारी योजनाओं और संस्थागत प्रसव के प्रयासों ने इस सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यद्यपि यह गिरावट सकारात्मक है, फिर भी राजस्थान का वर्तमान मृत्यु अनुपात भारत के राष्ट्रीय औसत की तुलना में अब भी अधिक बना हुआ है।
इस चुनौती से निपटने के लिए राज्य सरकार दुर्गम क्षेत्रों में प्रसव पूर्व देखभाल और कुशल प्रसव सहायकों की उपलब्धता सुनिश्चित कर रही है। स्वास्थ्य क्षेत्र में निरंतर निवेश और जागरूकता अभियानों के माध्यम से इस अंतर को पाटने के प्रयास जारी हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार के लिए अभी और भी गहन प्रयासों की आवश्यकता है।

4. (3) केवल I और III
मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना राजस्थान सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है जो सभी परिवारों को व्यापक स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करती है। इस योजना के अंतर्गत लाभार्थी परिवार सरकारी और सूचीबद्ध निजी अस्पतालों में निःशुल्क उपचार प्राप्त कर सकते हैं। यह योजना गंभीर बीमारियों के इलाज में होने वाले भारी खर्च से निर्धन परिवारों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है।
योजना की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें अस्पताल में भर्ती होने से पूर्व और बाद के परामर्श एवं जाँच सेवाओं को भी शामिल किया गया है। इसके माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधाएँ सुलभ हो गई हैं। यह योजना स्वास्थ्य के अधिकार को धरातल पर उतारने और चिकित्सा सेवाओं के लोकतंत्रीकरण की दिशा में बड़ा कदम है।

5. (4) 1,20,000
भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना का निर्माण जनसंख्या के विशिष्ट मानदंडों के आधार पर किया गया है ताकि सेवाओं का समान वितरण सुनिश्चित हो सके। मैदानी और गैर-जनजातीय क्षेत्रों में एक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र 1,20,000 की जनसंख्या की सेवा हेतु स्थापित किया जाता है। यह केंद्र प्राथमिक और माध्यमिक स्वास्थ्य सेवाओं के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है।
सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषज्ञों की सेवाएं उपलब्ध कराने वाली पहली महत्वपूर्ण इकाई है। इसमें शल्य चिकित्सा, प्रसूति और बाल रोग जैसे विभिन्न विभागों के विशेषज्ञ उपलब्ध होते हैं। जनसंख्या के इन मानदंडों का पालन यह सुनिश्चित करता है कि स्वास्थ्य सुविधाएं जनता की पहुँच के भीतर बनी रहें और सरकारी चिकित्सा तंत्र पर अत्यधिक बोझ न पड़े।

6. (2) राजस्थान ने सभी जिलों में 2.1 की प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन दर प्राप्त कर ली है।
राजस्थान में जनसांख्यिकीय संक्रमण के विभिन्न चरण देखे जा रहे हैं, जहाँ जन्म और मृत्यु दर में धीरे-धीरे गिरावट आई है। राज्य ने कुल प्रजनन दर में क्रमिक सुधार किया है और कई जिलों ने प्रतिस्थापन स्तर प्राप्त कर लिया है। हालांकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि राज्य के सभी जिलों ने समान रूप से 2.1 की प्रजनन दर प्राप्त कर ली है।
कुछ पिछड़े और दूरस्थ जिलों में अभी भी सामाजिक-आर्थिक कारणों से प्रजनन दर निर्धारित लक्ष्य से अधिक बनी हुई है। बेहतर स्वास्थ्य अवसंरचना और शिक्षा के प्रसार ने जीवन प्रत्याशा बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राज्य सरकार परिवार नियोजन के माध्यम से सभी जिलों में प्रजनन दर को

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न अनुत्तरित

81. राजस्थान में गैर-संचारी रोगों (NCDs) के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: उच्च रक्तचाप और मधुमेह जैसे NCDs के लिए जनसंख्या-आधारित स्क्रीनिंग आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में आयोजित की जाती है।
कथन II: संचारी रोगों की तुलना में राज्य में वर्तमान में कुल मौतों में NCDs का अनुपात अधिक है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

82. सूची I में राजस्थान में कोविड-19 प्रबंधन के घटकों को सूची II में उनकी विशिष्ट विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (कोविड-19 प्रबंधन घटक)
A. भीलवाड़ा मॉडल
B. ई-संजीवनी
C. चिरंजीवी योजना
D. आरटी-पीसीआर (RT-PCR)
सूची II: (विशेषताएं)
i. टेलीमेडिसिन परामर्श
ii. कठोर नियंत्रण और गहन स्क्रीनिंग
iii. कोविड-19 उपचार को निःशुल्क सम्मिलित करना
iv. वायरस का पता लगाने के लिए नैदानिक परीक्षण
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

83. निम्नलिखित में से कौन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC) और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHC) के मध्य मुख्य अंतर की सही पहचान करता है?
(1) PHC शल्य चिकित्सा के लिए प्रथम रेफरल इकाई है, जबकि CHC प्राथमिक उपचार प्रदान करता है
(2) PHC 1,20,000 व्यक्तियों की सेवा करता है, जबकि CHC ठीक 30,000 को कवर करता है
(3) CHC विशेषज्ञ सेवाएं प्रदान करता है; PHC बुनियादी देखभाल प्रदान करता है
(4) CHC आशा कार्यकर्ताओं द्वारा संचालित होता है, जबकि विशेषज्ञ सभी ग्रामीण PHC का प्रबंधन करते हैं
(5) प्रश्न अनुत्तरित

84. राजस्थान में ग्रामीण स्वास्थ्य पहुँच की चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मरुस्थलीय क्षेत्रों में खराब सड़क संपर्क आपातकालीन चिकित्सा परिवहन में विलंब करता है।
II. पैरामेडिकल स्टाफ की अधिकता है लेकिन आशा कार्यकर्ताओं की भारी कमी है।
III. सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएं कभी-कभी महिलाओं की प्रजनन स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच को सीमित करती हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

85. हाल ही में राजस्थान विधानसभा द्वारा पारित "स्वास्थ्य का अधिकार अधिनियम" मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किसकी गारंटी देता है?
(1) सभी नागरिकों के लिए अनिवार्य निजी स्वास्थ्य बीमा
(2) गैर-निवासियों के उपचार से इनकार करने का चिकित्सकों का अधिकार
(3) पूर्व भुगतान के बिना नामित अस्पतालों में निःशुल्क आपातकालीन उपचार का अधिकार
(4) सभी निजी मेडिकल कॉलेजों का उन्मूलन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

86. ग्रामीण उप-स्वास्थ्य केंद्र में सामान्यतः पाए जाने वाले निम्नलिखित अवसंरचना घटकों में से भिन्न को पहचानें।
(1) बुनियादी आवश्यक दवाएं
(2) रक्त भंडारण इकाई
(3) शिशुओं के लिए वजन करने वाली मशीन
(4) टीकाकरण उपकरण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

87. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): शिशु मृत्यु दर (IMR) पारंपरिक रूप से शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है।
कारण (R): ग्रामीण क्षेत्रों में संस्थागत प्रसव की दर कम है, विशिष्ट नवजात देखभाल अपर्याप्त है, और आपातकालीन रेफरल परिवहन धीमा है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

88. एक जिले में अशोधित जन्म दर (CBR) 24 है और अशोधित मृत्यु दर (CDR) प्रति 1,000 जनसंख्या पर 6 है। उस जिले में जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर (प्रति 1,000) क्या है?
(1) 30
(2) 18
(3) 4

39. ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं में अल्पायु में विवाह और बार-बार गर्भधारण का प्रत्यक्ष सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रभाव क्या है?
(1) अल्पावधि में जनसांख्यिकीय लाभांश में वृद्धि
(2) शिशु मृत्यु दर में कमी
(3) समुदाय में संचारी रोगों का उन्मूलन
(4) उच्च मातृ मृत्यु दर और कम वजन वाले शिशु
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. राजस्थान के चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सेवा निदेशालय का मुख्यालय कहाँ स्थित है?
(1) जयपुर
(2) जोधपुर
(3) उदयपुर
(4) अजमेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. कौन सा राष्ट्रीय कार्यक्रम विशेष रूप से मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया को नियंत्रित करने का लक्ष्य रखता है?
(1) राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम (NLEP)
(2) संशोधित राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम (RNTCP)
(3) राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NVBDCP)
(4) राष्ट्रीय अंधता नियंत्रण कार्यक्रम (NPCB)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. सूची I में वेक्टर या कारक को सूची II में संबंधित संचारी रोग के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (वेक्टर/कारण)
A. मादा एनोफिलीज मच्छर
B. माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस
C. एडीज एजिप्टी मच्छर
D. दूषित जल/भोजन
सूची II: (रोग)
i. डेंगू
ii. हैजा
iii. मलेरिया
iv. क्षय रोग (टीबी)
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. निम्नलिखित में से कौन सा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) का घटक नहीं है?
(1) प्रजनन, मातृ, नवजात, बाल और किशोर स्वास्थ्य (RMNCH+A)
(2) स्वास्थ्य प्रणाली का सुदृढ़ीकरण
(3) संचारी और गैर-संचारी रोगों का नियंत्रण
(4) ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए कृषि ऋण पर सब्सिडी देना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. स्वास्थ्य अवसंरचना में आंगनवाड़ी केंद्रों की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे पोषण अभियान के तहत पूरक पोषण के लिए प्राथमिक वितरण केंद्र के रूप में कार्य करते हैं।
II. वे छोटे बच्चों को अनौपचारिक पूर्व-स्कूली शिक्षा प्रदान करते हैं।
III. वे ग्रामीण जनसंख्या के लिए प्रमुख तृतीयक देखभाल शल्य चिकित्सा केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल III
(3) केवल I और II
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. जनसांख्यिकीय दृष्टि से, यदि कोई क्षेत्र कार्यशील आयु की जनसंख्या के बड़े अनुपात के साथ-साथ गिरती हुई कुल प्रजनन दर का अनुभव करना जारी रखता है, तो वह किस घटना से लाभान्वित होने के लिए तैयार है?
(1) जनसांख्यिकीय घाटा
(2) जनसंख्या जाल
(3) जनसांख्यिकीय लाभांश
(4) प्रतिस्थापन स्थिरता
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत प्रति परिवार प्रति वर्ष प्रदान किया जाने वाला अधिकतम स्वास्थ्य बीमा कवर कितना है?
(1) 5 लाख रुपये
(2) 10 लाख रुपये
(3) 25 लाख रुपये
(4) 50 लाख रुपये
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना के प्रारंभ ने राजस्थान के सरकारी अस्पतालों में मरीजों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि की।
कारण (R): इस योजना ने बुनियादी नैदानिक जाँचों के लिए वित्तीय बाधा को दूर कर दिया, जिससे समाज के निर्धन वर्गों के लिए स्वास्थ्य सेवा अधिक सुलभ हो गई।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Downloaded from www.pdf.tube

निर्धनों के लिए अत्यधिक स्वास्थ्य देखभाल लागत को कम करना है।
कथन II: सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण स्वास्थ्य पर होने वाला व्यक्तिगत व्यय ऐतिहासिक रूप से शून्य रहा है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

97. राजस्थान में निम्नलिखित प्रशासनिक स्वास्थ्य इकाइयों को उनके भौगोलिक और प्रशासनिक अधिकार क्षेत्र के आकार के घटते क्रम में व्यवस्थित करें:
I. ब्लॉक मुख्य चिकित्सा कार्यालय
II. चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा निदेशालय
III. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र
IV. जिला स्वास्थ्य समिति
(1) II, IV, I, III
(2) IV, II, I, III
(3) II, I, IV, III
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

98. राजस्थान में स्वास्थ्य योजनाओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना - 2021 में प्रारंभ हुई
(2) मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना - 2011 में प्रारंभ हुई
(3) आयुष्मान भारत पीएम-जेएवाई (PM-JAY) - 2018 में प्रारंभ हुई
(4) राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन - 2014 में प्रारंभ हुआ
(5) प्रश्न अनुत्तरित

99. "ई-संजीवनी" प्लेटफॉर्म निम्नलिखित में से कौन सी सेवा प्रदान करता है?
(1) अस्पताल के बिस्तरों की ऑनलाइन खरीद
(2) मेडिकल कॉलेज उपस्थिति की डिजिटल ट्रैकिंग
(3) ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों को विशेषज्ञ चिकित्सकों से जोड़ने वाली टेली-परामर्श सेवाएं
(4) आशा कार्यकर्ताओं के लिए केंद्रीकृत बायोमेट्रिक उपस्थिति
(5) प्रश्न अनुत्तरित

100. मौजूदा उप-स्वास्थ्य केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में परिवर्तित करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लाभ क्या है?
(1) राजधानी में सभी स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं का व्यवस्थित केंद्रीकरण
(2) स्वास्थ्य देखभाल को केवल प्रजनन और मातृ स्वास्थ्य तक सीमित रखना
(3) सभी ग्रामीण स्वास्थ्य वितरण प्रणालियों का पूर्ण निजीकरण
(4) व्यापक प्राथमिक देखभाल, गैर-संचारी रोग स्क्रीनिंग और योग
(5) प्रश्न अनुत्तरित

www.nodia.in

NODIA

72. सूची I में संवेदनशील जनसांख्यिकीय समूह को सूची II में केंद्रित स्वास्थ्य हस्तक्षेप के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संवेदनशील जनसांख्यिकीय समूह)
A. गर्भवती महिलाएँ
B. शिशु (0-1 वर्ष)
C. किशोरियाँ
D. क्षय रोग (टीबी) के रोगी
सूची II: (स्वास्थ्य हस्तक्षेप)
i. निक्षय पोषण योजना
ii. साप्ताहिक आयरन और फोलिक एसिड अनुपूरण (WIFS)
iii. नियमित टीकाकरण (मिशन इंद्रधनुष)
iv. प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. पिछले दो दशकों में राजस्थान में मातृ स्वास्थ्य देखभाल की प्रवृत्ति का सर्वोत्तम वर्णन निम्नलिखित में से कौन करता है?
(1) संस्थागत प्रसव से घरेलू प्रसव की ओर बदलाव
(2) सुरक्षित प्रसव के अनुपात में स्थिरता
(3) घरेलू प्रसव से संस्थागत प्रसव की ओर बदलाव
(4) मातृ मृत्यु दर का पूर्ण उन्मूलन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. राजस्थान की निःशुल्क दवा योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में आवश्यक दवाओं की निःशुल्क उपलब्धता सुनिश्चित करती है।
II. खरीद के लिए RMSCL नोडल एजेंसी है।
III. यह बाह्य रोगी और साथ ही अंतः रोगी दोनों को कवर करती है।
IV. शल्य चिकित्सा सामग्री और टांकों को इस योजना से सख्ती से बाहर रखा गया है।
V. इसका उद्देश्य जेनेरिक दवाओं के तर्कसंगत उपयोग को बढ़ावा देना है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. निम्नलिखित में से कौन आयुष्मान भारत पहल का स्तंभ नहीं है?
(1) आयुष्मान आरोग्य मंदिर (HWCs)
(2) प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PM-JAY)
(3) व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल
(4) जिला अस्पतालों का निजीकरण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. स्वास्थ्य जनसांख्यिकी में, बच्चों के मध्य "कृशता" (वेस्टिंग) को किस रूप में परिभाषित किया गया है?
(1) आयु के सापेक्ष कम ऊँचाई
(2) ऊँचाई के सापेक्ष कम वजन
(3) आयु के सापेक्ष कम वजन
(4) वयस्कों के लिए कम बीएमआई (BMI)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में ब्लॉक स्तर से राज्य स्तर तक स्वास्थ्य प्रशासनिक अधिकारियों के सही पदानुक्रमित अनुक्रम को दर्शाता है?
(1) ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी → मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी → निदेशक (जन स्वास्थ्य)
(2) मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी → ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी → निदेशक (जन स्वास्थ्य)
(3) निदेशक (जन स्वास्थ्य) → मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी → ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी
(4) ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी → निदेशक (जन स्वास्थ्य) → मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. राजस्थान में गर्भवती महिलाओं और बच्चों के टीकाकरण की वास्तविक समय ट्रैकिंग के लिए मुख्य रूप से किस आईटी एप्लिकेशन का उपयोग किया जाता है?
(1) ई-औषधि
(2) ई-मित्र
(3) राजकाज
(4) पीसीटीएस (PCTS)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

79. निम्नलिखित में से कौन स्वास्थ्य सुविधा को सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में उसके मानक शैय्या क्षमता के साथ सही ढंग से सुमेलित करता है?
(1) उप-स्वास्थ्य केंद्र - 10 बिस्तर
(2) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र - 4 से 6 बिस्तर
(3) सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र - 100 बिस्तर
(4) जिला अस्पताल - 10 बिस्तर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. दूरस्थ क्षेत्रों में मातृ मृत्यु दर के संबंध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य-कारण संबंध क्या है?
(1) विशिष्ट ब्लड बैंकों की अत्यधिक उपलब्धता जिससे गंभीर संक्रमण होते हैं
(2) जटिलताओं की पहचान करने और प्रथम रेफरल इकाइयों तक पहुँचने में विलंब
(3) उच्च महिला साक्षरता दर जिसके कारण मातृ मृत्यु दर काफी अधिक है
(4) नकद प्रोत्साहन सीधे तौर पर प्रमुख चिकित्सा और स्वास्थ्य जटिलताओं का कारण बनते हैं

Click Here to Buy book on Amazon

संतुलित करने हेतु प्रयासरत है ताकि संतुलित जनसंख्या वृद्धि सुनिश्चित हो सके।

7. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जननी सुरक्षा योजना राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने में अत्यंत सफल सिद्ध हुई है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य प्रसव के दौरान होने वाली मातृ और शिशु मृत्यु दर में प्रभावी कमी लाना है। इसके लिए सरकार गर्भवती महिलाओं को सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों में प्रसव कराने पर एक निश्चित नकद सहायता राशि प्रदान करती है।
यह नकद प्रोत्साहन ग्रामीण परिवारों के लिए वित्तीय बाधाओं को दूर करता है और उन्हें सुरक्षित चिकित्सा सुविधाओं का उपयोग करने हेतु प्रेरित करता है। इस प्रकार, योजना की सहायता राशि और संस्थागत प्रसव की बढ़ती दर के बीच सीधा और सकारात्मक संबंध है। यही कारण है कि यह योजना मातृ स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार के लिए प्रभावी हस्तक्षेप मानी जाती है।

8. (2) 2011
राजस्थान सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाने के उद्देश्य से वर्ष 2011 में मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना का शुभारंभ किया था। इस योजना का मुख्य लक्ष्य सरकारी अस्पतालों में आने वाले सभी रोगियों को आवश्यक दवाएं बिना किसी शुल्क के उपलब्ध कराना है। इस पहल ने स्वास्थ्य पर होने वाले व्यक्तिगत व्यय को कम करने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। योजना के सफल क्रियान्वयन हेतु राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन लिमिटेड का गठन किया गया, जो दवाओं की खरीद और वितरण का कार्य करता है। इस मॉडल की सफलता को देखते हुए इसे भारत के कई अन्य राज्यों में भी अपनाया गया है। वर्तमान में इस योजना के अंतर्गत कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों की दवाएं भी निःशुल्क प्रदान की जा रही हैं।

9. (2) I, III और IV
राजस्थान में पोषण अभियान का मुख्य लक्ष्य बच्चों, किशोरियों और महिलाओं में कुपोषण एवं रक्तअल्पता को दूर करना है। इस मिशन के प्रभावी क्रियान्वयन में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की भूमिका महत्वपूर्ण है, जो जमीनी स्तर पर लाभार्थियों से जुड़ी होती हैं। यह अभियान तकनीकी हस्तक्षेप और व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से समाज में पोषण संबंधी व्यापक सुधार लाने का प्रयास करता है।
अभियान के अंतर्गत डिजिटल माध्यमों से लाभार्थियों की स्थिति की निरंतर निगरानी की जाती है। चूंकि यह मुख्य रूप से महिलाओं और बच्चों पर केंद्रित है, इसलिए इसमें पुरुषों को प्राथमिक लक्षित समूह के रूप में शामिल नहीं किया गया है। सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि उचित पोषण की जानकारी प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक सुलभता से पहुँचे।

10. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
राजस्थान सरकार राज्य से क्षय रोग के पूर्ण उन्मूलन हेतु राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम को पूर्ण निष्ठा के साथ लागू कर रही है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत रोगियों की शीघ्र पहचान, मुफ्त जाँच और संपूर्ण उपचार की सुविधा प्रदान की जाती है। इसके साथ ही सरकार ने रोगियों के पोषण हेतु 'निक्षय पोषण योजना' भी प्रारंभ की है।
निक्षय पोषण योजना के माध्यम से पंजीकृत टीबी रोगियों को उनके बैंक खातों में सीधे 500 रुपये की मासिक सहायता राशि प्रदान की जाती है। यह राशि उपचार के दौरान बेहतर पोषण सुनिश्चित करने के लिए दी जाती है क्योंकि स्वास्थ्यप्रद आहार टीबी के उपचार में महत्वपूर्ण होता है। इन समन्वित प्रयासों से राज्य में टीबी के मामलों में कमी आई है।

11. (4) चिकित्सा पेशेवरों की दूरस्थ और जनजातीय क्षेत्रों में सेवा करने के प्रति अनिच्छा
ग्रामीण राजस्थान में स्वास्थ्य सेवाओं के प्रभावी वितरण में प्रशिक्षित चिकित्सा पेशेवरों की कमी एक प्रमुख चुनौती है। विशेष रूप से दूरस्थ और जनजातीय क्षेत्रों में डॉक्टरों एवं विशेषज्ञों की भारी कमी बनी रहती है। कई चिकित्सा कर्मी बुनियादी सुविधाओं और अवसंरचना के अभाव के कारण इन क्षेत्रों में अपनी सेवाएं देने के प्रति अनिच्छुक रहते हैं, जिससे स्वास्थ्य सेवा बाधित होती है।
इस असंतुलन के कारण ग्रामीण आबादी को उपचार के लिए अक्सर बड़े शहरों की ओर जाना पड़ता है। हालांकि सरकार ने ग्रामीण सेवा को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष भत्ते और अनिवार्य सेवा नियम लागू किए हैं, फिर भी यह समस्या पूर्णतः हल नहीं हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य प्रणाली को सुदृढ़ करने हेतु चिकित्सा जनशक्ति का उचित वितरण अनिवार्य है।

12. (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
गैर-संचारी रोगों का बढ़ता बोझ प्रत्यक्ष रूप से मानवीय जीवनशैली और जोखिम कारकों से जुड़ा हुआ है। हृदय रोग प्रायः उच्च रक्तचाप और वसायुक्त भोजन के अधिक सेवन के कारण होते हैं, जबकि टाइप 2 मधुमेह का मुख्य कारण शारीरिक निष्क्रियता है। इन रोगों के प्रबंधन के लिए जीवनशैली में सकारात्मक बदलाव लाना सार्वजनिक स्वास्थ्य हेतु अत्यंत आवश्यक माना जाता है।
फेफड़ों से संबंधित गंभीर बीमारियाँ मुख्य रूप से धूम्रपान और घरेलू वायु प्रदूषण के कारण होती हैं। इसी प्रकार, मुख के कैंसर का प्राथमिक कारण तंबाकू का सेवन है। इन जोखिम कारकों की पहचान और नियंत्रण के माध्यम से गैर-संचारी रोगों के प्रसार को कम किया जा सकता है, जो आधुनिक जनस्वास्थ्य की एक बड़ी और निरंतर चुनौती बनी हुई है।

13. (3) ग्राम स्तर पर लघु शल्य चिकित्सा प्रक्रियाएं करना
मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता अर्थात 'आशा' ग्रामीण स्वास्थ्य प्रणाली में समुदाय और स्वास्थ्य केंद्रों के बीच सेतु का कार्य करती हैं। उनके मुख्य कार्यों में गर्भवती महिलाओं को अस्पतालों में प्रसव हेतु प्रेरित करना और बच्चों का नियमित टीकाकरण सुनिश्चित करना शामिल है। वे मुख्य रूप से परामर्शदाता और स्वास्थ्य उत्प्रेरक के रूप में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान करती हैं।
आशा कार्यकर्ताओं के पास कोई औपचारिक शल्य चिकित्सा प्रशिक्षण या चिकित्सकीय उपाधि नहीं होती है। इसलिए ग्राम

Downloaded from www.pdf.tube

52. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
जनसांख्यिकीय संक्रमण के विभिन्न चरण किसी समाज की आर्थिक और स्वास्थ्य प्रगति को दर्शाते हैं। प्रथम चरण में उच्च जन्म और मृत्यु दर के कारण जनसंख्या स्थिर रहती है, जबकि दूसरे चरण में मृत्यु दर गिरने से जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होती है। यह दूसरा चरण विकासशील समाजों की प्रमुख विशेषता है जहाँ स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार होता है लेकिन जन्म दर उच्च बनी रहती है।
तीसरे चरण में जागरूकता के कारण जन्म दर में गिरावट आने लगती है, जबकि मृत्यु दर निम्न स्तर पर स्थिर रहती है। चतुर्थ चरण एक विकसित समाज की स्थिति है जहाँ जन्म और मृत्यु दर दोनों न्यूनतम होते हैं और जनसंख्या पुनः स्थिर हो जाती है। इन चरणों का सही सुमेलन जनसांख्यिकीय विश्लेषण के लिए महत्वपूर्ण है, जिससे नीतियों को बेहतर दिशा मिलती है।

53. (3) स्वास्थ्य जागरूकता और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देना
राजस्थान सरकार ने 'निरोगी राजस्थान' अभियान का शुभारंभ राज्य के प्रत्येक नागरिक के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने की दृष्टि से किया है। इस अभियान का मूल मंत्र बीमारियों के उपचार के बजाय उनके निवारण पर केंद्रित है, जिसके लिए लोगों को जागरूक किया जाता है। इसके माध्यम से नागरिकों को उचित खान-पान और नियमित व्यायाम के लिए निरंतर प्रोत्साहित किया जाता है।
अभियान के अंतर्गत प्रत्येक गाँव और शहरी वार्ड में 'स्वास्थ्य मित्रों' का चयन किया गया है जो स्थानीय स्तर पर स्वास्थ्य शिक्षा का प्रचार-प्रसार करते हैं। यह पहल जनसंख्या के सभी वर्गों को उनके स्वास्थ्य के प्रति अधिक उत्तरदायी बनाने का प्रयास करती है। स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य सुधरता है, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों पर बीमारियों का बोझ भी कम होता है।

54. (1) I, II, III और IV
राजस्थान का चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्था का केंद्र बिंदु है, जो नीतियों के निर्माण और उनके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार है। यह विभाग राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत संचालित होने वाली विभिन्न केंद्रीय और राज्य स्तरीय योजनाओं की निगरानी करता है। इसके प्रशासनिक ढांचे का नेतृत्व शासन सचिव द्वारा किया जाता है, जो सरकार और निदेशालय के बीच कड़ी है।
विभाग केवल सार्वजनिक सेवाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राज्य में संचालित निजी नैदानिक संस्थानों और अस्पतालों को भी विनियमित करता है। यद्यपि यह राज्य की विशिष्ट आवश्यकताओं हेतु स्वतंत्र नीतियां बनाता है, फिर भी इसे केंद्र सरकार से वित्तीय सहायता और तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त होता है। इस समन्वय के माध्यम से ही राज्य में एक सशक्त स्वास्थ्य प्रशासन सुनिश्चित हो रहा है।

55. (4) बच्चों में गंभीर तीव्र कुपोषण (SAM) को कम करना
जनजातीय क्षेत्रों में पोषण अभियान का सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील लक्ष्य बच्चों में गंभीर तीव्र कुपोषण की स्थिति को समाप्त करना है। इन दुर्गम क्षेत्रों में गरीबी के कारण बच्चों को पर्याप्त पौष्टिक आहार नहीं मिल पाता, जिससे उनका स्वास्थ्य अत्यंत नाज़ुक हो जाता है। इस समस्या के समाधान हेतु सरकार विशेष पोषण शिविर और उपचार केंद्रों का नियमित संचालन करती है।
अभियान के माध्यम से बच्चों को पूरक आहार दिया जाता है और उनकी शारीरिक वृद्धि की निरंतर निगरानी की जाती है। माताओं को स्तनपान और सही पोषण के महत्व के बारे में शिक्षित करना भी इस कार्यक्रम का एक प्रमुख हिस्सा है। जब बच्चों की पोषण स्थिति में सुधार होता है, तो उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और बाल मृत्यु दर में कमी आती है।

NODIA

56. (3) जिला
राजस्थान सरकार ने राज्य की उच्च चिकित्सा शिक्षा और विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के लिए प्रत्येक जिले में एक मेडिकल कॉलेज स्थापित करने का संकल्प लिया है। इस दूरदर्शी नीति का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि निवासियों को विशेषज्ञ उपचार के लिए राजधानी की ओर न भागना पड़े। यह स्वास्थ्य सेवाओं के विकेंद्रीकरण की दिशा में एक बड़ा और प्रभावी कदम है।
जिलों में मेडिकल कॉलेजों की स्थापना से न केवल नए डॉक्टरों की संख्या बढ़ेगी, बल्कि जिला अस्पतालों की बुनियादी सुविधाओं और उपचार क्षमता में भी गुणात्मक सुधार होगा। इन कॉलेजों से जुड़े अस्पताल स्थानीय स्तर पर तृतीयक स्वास्थ्य सेवा प्रदान करेंगे, जिससे बड़े शहरों के अस्पतालों पर दबाव कम होगा। यह पहल राजस्थान को स्वास्थ्य क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगी।

57. (1) III, IV, I, II
मातृ स्वास्थ्य सेवाओं का रेफरल प्रवाह एक सुव्यवस्थित क्रम में कार्य करता है जो समुदाय से शुरु होकर विशेषज्ञ केंद्रों तक पहुँचता है। सबसे पहले आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता गाँव स्तर पर गर्भवती महिलाओं की पहचान कर उन्हें परामर्श प्रदान करती हैं। इसके बाद स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों के लिए महिला को उप-स्वास्थ्य केंद्र या प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर ले जाया जाता है।
यदि स्थिति जटिल होती है, तो उसे प्रथम रेफरल इकाई के रूप में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा जाता है जहाँ शल्य चिकित्सा की सुविधा होती है। उच्चतम स्तर की देखभाल और अत्यंत जटिल स्थितियों के प्रबंधन के लिए जिला अस्पताल अंतिम और सबसे बड़ा केंद्र होता है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक मरीज को बीमारी की गंभीरता के अनुसार समयबद्ध उपचार मिल सके।

58. (1) मातृ मृत्यु अनुपात - प्रति 1,00,000 जीवित जन्म
जनसांख्यिकीय संकेतकों का सही मापन करने के लिए विशिष्ट मानकों और इकाइयों का उपयोग किया जाता है। मातृ मृत्यु अनुपात एक ऐसा महत्वपूर्ण सूचकांक है जिसकी गणना प्रति 1,00,000 जीवित जन्मों के आधार पर की जाती है। यह अनुपात गर्भावस्था या प्रसव के दौरान होने वाली माताओं की मृत्यु की

20. (4) दवाओं और उपकरणों के लिए केंद्रीकृत खरीद एजेंसी के रूप में कार्य करना

राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन लिमिटेड की स्थापना राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक कुशल और पारदर्शी बनाने हेतु की गई थी। इस निगम का प्राथमिक उत्तरदायित्व सरकारी अस्पतालों के लिए आवश्यक दवाओं और उपकरणों की केंद्रीकृत खरीद करना है। यह सुनिश्चित करता है कि गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सामग्री न्यूनतम लागत पर और समयबद्ध तरीके से प्रत्येक स्वास्थ्य केंद्र तक पहुँच सके।

केंद्रीकृत प्रणाली होने के कारण खरीद प्रक्रिया में पारदर्शिता रहती है और दवाओं की गुणवत्ता पर बेहतर नियंत्रण रहता है। निगम द्वारा संचालित सॉफ्टवेयर के माध्यम से दवाओं के स्टॉक की निरंतर निगरानी की जाती है। यह संस्था मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा और जाँच योजनाओं के सफल संचालन की रीढ़ है, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करती है।

21. (2) 20,000

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के दिशा-निर्देशों के अनुसार स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना जनसंख्या के घनत्व और भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर की जाती है। जनजातीय, पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना के लिए 20,000 की जनसंख्या का मानक निर्धारित किया गया है। यह सामान्य क्षेत्रों के 30,000 के मानक से कम है ताकि कठिन परिस्थितियों में सेवा सुलभ हो।

इस कम जनसंख्या मानक का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि पिछड़े और दूरस्थ क्षेत्रों के लोगों को चिकित्सा सहायता हेतु लंबी दूरी तय न करनी पड़े। इन केंद्रों पर बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं के साथ-साथ टीकाकरण और परिवार कल्याण कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। सरकार इन क्षेत्रों में स्वास्थ्य पहुँच बढ़ाने के लिए विशेष निवेश करती है ताकि क्षेत्रीय असमानता दूर हो सके।

22. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii

विभिन्न स्वास्थ्य योजनाएं समाज की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न उद्देश्यों के साथ तैयार की जाती हैं। जननी सुरक्षा योजना का मुख्य लक्ष्य सुरक्षित संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना है, जबकि पोषण अभियान कुपोषण को दूर करने पर केंद्रित है। ये योजनाएं सामूहिक रूप से मातृ और शिशु मृत्यु दर को कम करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती हैं। आयुष्मान भारत योजना पात्र परिवारों को व्यापक स्वास्थ्य बीमा सुरक्षा प्रदान करती है ताकि वे गंभीर बीमारियों का उपचार करा सकें। वहीं मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना का उद्देश्य सरकारी अस्पतालों में आवश्यक दवाओं की सुलभता सुनिश्चित करना है। इन सभी योजनाओं का सही समन्वय राज्य की संपूर्ण स्वास्थ्य प्रणाली को सशक्त बनाता है और नागरिकों के व्यक्तिगत चिकित्सा व्यय को घटाता है।

23. (4) उच्च रक्तचाप - गैर-संचारी रोग

रोगों का वर्गीकरण उनकी प्रकृति और प्रसार के तरीकों के आधार पर संचारी और गैर-संचारी श्रेणियों में किया जाता है। उच्च रक्तचाप एक विशिष्ट गैर-संचारी रोग है जो एक व्यक्ति से दूसरे में नहीं फैलता बल्कि खराब जीवनशैली और तनाव के कारण उत्पन्न होता है। राजस्थान में जीवनशैली में बदलाव के साथ ऐसे रोगों का प्रसार तेजी से बढ़ना चिंताजनक है।

इसके विपरीत मलेरिया और क्षय रोग संचारी रोगों की श्रेणी में आते हैं क्योंकि ये सूक्ष्मजीवों के माध्यम से फैलते हैं। मधुमेह भी एक गैर-संचारी रोग है। रोगों की सही पहचान और वर्गीकरण सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों के निर्धारण और विशिष्ट उपचार रणनीतियों को तैयार करने के लिए अनिवार्य है। वर्तमान में स्वास्थ्य प्रणालियाँ इन दोनों रोगों के भार को संतुलित कर रही हैं।

24. (2) केवल I और III

राजस्थान में कोविड-19 महामारी के दौरान अपनाई गई रणनीतियों ने वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित किया, जिसमें भीलवाड़ा मॉडल की भूमिका प्रमुख थी। इस मॉडल के तहत कठोर पृथकवास, गहन सर्वेक्षण और संक्रमितों के संपर्कों की त्वरित पहचान पर जोर दिया गया था। इस कार्य में आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं के रूप में सक्रिय भागीदारी निभाई।

राज्य सरकार ने महामारी से निपटने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य तंत्र को सुदृढ़ किया और टीकाकरण के लिए सरकारी केंद्रों को मुख्य आधार बनाया। घर-घर जाकर किए गए सर्वेक्षणों से संदिग्ध रोगियों की पहचान समय पर संभव हो सकी, जिससे संक्रमण की दर को नियंत्रित करने में सहायता मिली। राजस्थान के इस आपदा प्रबंधन मॉडल की सराहना राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर की गई।

25. (3) आयु के सापेक्ष कम ऊँचाई

बाल कुपोषण के विभिन्न रूपों में 'अवरुद्ध विकास' या स्टंटिंग एक दीर्घकालिक पोषण संबंधी समस्या को दर्शाता है। इसे किसी बच्चे की आयु के अनुपात में उसकी ऊँचाई के कम होने के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह स्थिति प्रायः पर्याप्त पोषण की कमी और बार-बार होने वाले संक्रमणों का परिणाम होती है जो शारीरिक और मानसिक विकास को प्रतिकूल प्रभावित करती है।

स्टंटिंग का प्रभाव केवल बचपन तक सीमित नहीं रहता बल्कि यह भविष्य में व्यक्ति की कार्यक्षमता और सीखने की योग्यता को भी कम कर देता है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आँकड़ों में इस संकेतक का उपयोग पोषण स्थिति के मूल्यांकन हेतु किया जाता है। इसके निवारण के लिए प्रसव पूर्व देखभाल और जन्म के प्रारंभिक वर्षों में पोषण पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

26. (1) NHM गतिविधियों का राज्य स्तरीय नियोजन और कार्यान्वयन

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत स्थापित स्टेट हेल्थ सोसाइटी राजस्थान में स्वास्थ्य कार्यक्रमों के सुचारु संचालन के लिए उत्तरदायी मुख्य निकाय है। इसका प्राथमिक कार्य राज्य स्तर पर स्वास्थ्य योजनाओं की विस्तृत रूपरेखा तैयार करना और उनके क्रियान्वयन की निगरानी करना है। यह संस्था केंद्र

Click Here to Buy book on Amazon

39. (4) उच्च मातृ मृत्यु दर और कम वजन वाले शिशु
ग्रामीण क्षेत्रों में कम उम्र में विवाह और बार-बार गर्भधारण करना सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर चिंता का विषय है। कम उम्र में माँ बनने से महिला का शरीर प्रसव की जटिलताओं को सहन करने के लिए परिपक्व नहीं होता, जिससे मातृ मृत्यु का खतरा बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त, बार-बार गर्भधारण से माँ के शरीर में पोषक तत्वों की भारी कमी होती है।
ऐसी माताओं से जन्म लेने वाले शिशु प्रायः समय से पूर्व पैदा होते हैं और उनका वजन भी सामान्य से कम होता है। यह स्थिति शिशु मृत्यु दर बढ़ाने और बच्चों में कुपोषण की समस्या को जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा, विवाह की सही आयु और परिवार नियोजन के प्रति निरंतर जागरूकता अत्यंत आवश्यक है।

40. (1) जयपुर
राजस्थान में चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवाओं के सुचारु प्रशासन के लिए निदेशालय का मुख्यालय राज्य की राजधानी जयपुर में स्थित है। यह निदेशालय राज्य भर में स्वास्थ्य नीतियों के निर्माण, समन्वय और प्रभावी क्रियान्वयन के लिए जिम्मेदार मुख्य प्रशासनिक निकाय है। यहाँ से संपूर्ण राज्य की स्वास्थ्य अवसंरचना, टीकाकरण अभियानों और विभिन्न सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं की सूक्ष्म निगरानी की जाती है।
जयपुर स्थित यह मुख्यालय केंद्र सरकार और राज्य के विभिन्न जिलों के बीच एक संचार सेतु के रूप में कार्य करता है। यहाँ वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी और स्वास्थ्य विशेषज्ञ भविष्य की स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने की रणनीतियां तैयार करते हैं। राजधानी में स्थित होने के कारण इसे अन्य सरकारी विभागों के साथ समन्वय स्थापित करने में सुगमता रहती है, जो त्वरित निर्णय में सहायक है।

41. (3) राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NVBDCP)
मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया जैसी बीमारियाँ मच्छरों के माध्यम से फैलती हैं, जिन्हें चिकित्सा विज्ञान में 'वेक्टर' कहा जाता है। इन रोगों को नियंत्रित करने के लिए भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम संचालित किया जाता है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मच्छरों के प्रजनन स्थलों को नष्ट करना और समुदाय को बचाव के उपायों के प्रति जागरूक करना है।
इस मिशन के तहत कीटनाशकों का छिड़काव, मच्छरदानियों का वितरण और त्वरित निदान की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। यह कार्यक्रम विशेष रूप से मानसून के दौरान अधिक सक्रिय हो जाता है जब वेक्टर जनित रोगों के प्रसार की संभावना सर्वाधिक होती है। इन बीमारियों के भार को कम करके यह कार्यक्रम ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जनस्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

42. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
संचारी रोगों का प्रसार विभिन्न कारकों और माध्यमों पर निर्भर करता है, जिन्हें समझना उनके नियंत्रण के लिए आवश्यक है। मलेरिया मादा एनोफिलीज मच्छर के काटने से फैलता है, जबकि डेंगू का प्रसार एडीज एजिप्टी मच्छर के माध्यम से होता है। इन मच्छरों के प्रजनन को रोककर बीमारियों के खतरे को कम किया जा सकता है। सटीक पहचान स्वास्थ्य रणनीतियों का आधार बनती है।
क्षय रोग या टीबी बैक्टीरिया के कारण होता है, जो हवा के माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे में पहुँचता है। वहीं, हैजा जैसी बीमारियाँ मुख्य रूप से दूषित जल और भोजन के सेवन से उत्पन्न होती हैं। इन रोगों से बचाव के लिए स्वच्छता बनाए रखना, शुद्ध पेयजल का उपयोग करना और मच्छर नियंत्रण के प्रभावी उपाय अपनाना प्रत्येक नागरिक हेतु आवश्यक है।

43. (4) ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए कृषि ऋण पर सब्सिडी देना
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन एक व्यापक कार्यक्रम है जो भारत की स्वास्थ्य प्रणाली के समग्र सुधार हेतु समर्पित है। इसके मुख्य घटकों में प्रजनन, मातृ, नवजात और किशोर स्वास्थ्य के साथ-साथ संचारी एवं गैर-संचारी रोगों के नियंत्रण को प्राथमिकता दी गई है। मिशन का एक प्रमुख स्तंभ बुनियादी अवसंरचना को सुदृढ़ करना है ताकि प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ मिल सकें।
इस मिशन का प्राथमिक ध्यान केवल स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं और उनके प्रभावी वितरण पर केंद्रित है। इसमें ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए कृषि ऋण या सब्सिडी जैसे वित्तीय प्रावधान शामिल नहीं हैं, क्योंकि ये कार्य कृषि विभागों के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। एनएचएम का उद्देश्य स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार लाना और चिकित्सा क्षेत्र में कार्यरत जनशक्ति के कौशल विकास को बढ़ाना है।

44. (2) केवल II और III
आंगनवाड़ी केंद्र भारत के ग्रामीण स्वास्थ्य और पोषण ढांचे की सबसे छोटी और महत्वपूर्ण इकाई के रूप में कार्य करते हैं। इनका मुख्य कार्य छोटे बच्चों को पूरक पोषण प्रदान करना, गर्भवती महिलाओं की देखभाल और बच्चों को अनौपचारिक शिक्षा देना है। ये केंद्र पोषण अभियान के तहत कुपोषण को दूर करने के लिए जमीनी स्तर पर सूचना का मुख्य स्रोत हैं।
यह समझना आवश्यक है कि आंगनवाड़ी केंद्र केवल बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल और पोषण पर केंद्रित होते हैं। इनके पास शल्य चिकित्सा जैसी जटिल चिकित्सा सुविधाएं नहीं होती हैं। जटिल उपचार केवल बड़े अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों में ही संभव हैं। अतः इन्हें तृतीयक देखभाल केंद्रों के रूप में देखना सर्वथा गलत है, क्योंकि इनका कार्य क्षेत्र प्राथमिक सामुदायिक जागरूकता तक ही सीमित है।

45. (3) जनसांख्यिकीय लाभांश
जब किसी क्षेत्र की कुल प्रजनन दर में गिरावट आती है और कार्यशील आयु की जनसंख्या का अनुपात बढ़ता है, तो इस स्थिति को जनसांख्यिकीय लाभांश कहा जाता है। यह किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए विकास का सुनहरा अवसर है क्योंकि आश्रित आबादी की तुलना में कमाने वाले लोगों की संख्या अधिक होती है। इस स्थिति का लाभ उठाने हेतु युवाओं के स्वास्थ्य पर निवेश अनिवार्य है।

NODIA

और रिपोर्टिंग की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित एवं पारदर्शी बनाया जाता है।

33. (2) ग्रामीण चिकित्सकों के लिए वित्तीय प्रोत्साहन और आवासीय सुविधाएं प्रदान करना
ग्रामीण सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में विशेषज्ञों की कमी एक गंभीर समस्या है जिसे केवल प्रशासनिक आदेशों से हल नहीं किया जा सकता। इसके लिए चिकित्सकों को ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने हेतु प्रेरित करने के लिए आकर्षक वित्तीय प्रोत्साहन और आधुनिक आवासीय सुविधाएं देना आवश्यक है। जब कार्यस्थल पर बेहतर जीवन स्तर उपलब्ध होता है, तो विशेषज्ञ इन क्षेत्रों में सेवा हेतु प्रोत्साहित होते हैं।
विशेषज्ञों को आशा कार्यकर्ताओं से बदलना या निजी अस्पतालों को बंद करना इस समस्या का व्यावहारिक समाधान नहीं है। सरकार द्वारा ग्रामीण भत्तों में वृद्धि और करियर विकास के अवसर प्रदान करने जैसी रणनीतियां इस जनशक्ति की कमी को दूर करने में सहायक हो सकती हैं। ग्रामीण अवसंरचना के विकास से न केवल चिकित्सकों का मनोबल बढ़ता है, बल्कि स्थानीय जनता को भी गुणवत्तापूर्ण सेवा मिलती है।

34. (2) I, II, IV और V
मातृ मृत्यु दर में कमी लाना राजस्थान सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है, जिसके लिए बहुआयामी रणनीतियां अपनाई गई हैं। जननी सुरक्षा योजना के माध्यम से नकद प्रोत्साहन देकर महिलाओं को अस्पतालों में प्रसव हेतु प्रेरित किया जाता है। इसके अतिरिक्त, विशेष मातृ स्वास्थ्य विंग और निःशुल्क एम्बुलेंस सेवाएं प्रसव के दौरान होने वाले जोखिमों को न्यूनतम करती हैं।
प्रसव पूर्व नियमित जाँच और जोखिम वाले गर्भधारण की पहचान के लिए प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान भी प्रभावी भूमिका निभा रहा है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि जटिल शल्य क्रियाएं केवल प्रशिक्षित डॉक्टरों द्वारा ही की जानी चाहिए। इन सभी सरकारी प्रयासों के समन्वित प्रभाव से राज्य में मातृत्व स्वास्थ्य संकेतकों में निरंतर सुधार हो रहा है जो एक स्वस्थ भविष्य का सूचक है।

35. (3) प्रीमियम का भुगतान सभी लाभार्थियों द्वारा उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बावजूद अनिवार्य रूप से किया जाता है।
मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना अपनी समावेशी और उदार शर्तों के लिए जानी जाती है, जिसमें पहले से मौजूद बीमारियों को पहले दिन से कवर किया जाता है। योजना के तहत अस्पताल में भर्ती होने से पूर्व और बाद के खर्चों को भी शामिल किया गया है ताकि मरीजों पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ न पड़े। यह योजना कैशलेस उपचार की सुविधा प्रदान करती है।
प्रीमियम भुगतान के संबंध में यह कथन गलत है कि यह सभी के लिए अनिवार्य है; वास्तव में, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों और संविदा कर्मियों के लिए यह पूर्णतः निःशुल्क है। केवल वे परिवार जो किसी भी श्रेणी में शामिल नहीं हैं, उन्हें एक मामूली प्रीमियम का भुगतान करना होता है। इस लचीली नीति के कारण राजस्थान के अधिकांश परिवार स्वास्थ्य सुरक्षा के दायरे में शामिल हैं।

36. (4) एक्रिडिटेड सोशल हेल्थ एक्टिविस्ट
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत 'आशा' का तात्पर्य मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता से है, जो ग्रामीण स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं की रीढ़ मानी जाती हैं। ये महिलाएँ अपने गाँव की ही निवासी होती हैं और स्थानीय समुदाय के स्वास्थ्य की देखरेख में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। इनका चयन उनकी सामाजिक स्वीकार्यता और सेवा भावना के आधार पर ग्राम पंचायत द्वारा किया जाता है।
आशा कार्यकर्ताओं को स्वास्थ्य प्रणाली और ग्रामीण आबादी के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में प्रशिक्षित किया जाता है। वे मुख्य रूप से पोषण, स्वच्छता और प्रसव पूर्व देखभाल के प्रति जागरुकता फैलाने का कार्य करती हैं। उनकी उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है कि सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ गाँव के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। स्वास्थ्य सुधार में उनके योगदान को निरंतर सराहा जाता है।

37. (1) III, II, IV, I
राजस्थान में स्वास्थ्य सेवाओं के विकास का एक निश्चित कालानुक्रमिक इतिहास रहा है। सबसे पहले राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की शुरुआत हुई जिसने ग्रामीण ढांचे की नींव रखी। इसके पश्चात वर्ष 2011 में ऐतिहासिक मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना लागू की गई, जिसने चिकित्सा क्षेत्र में दवाओं की पहुँच को सर्वसुलभ बनाने की दिशा में कार्य किया। बाद के वर्षों में, केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2018 में आयुष्मान भारत योजना शुरु की गई ताकि गंभीर बीमारियों हेतु बीमा सुरक्षा प्रदान की जा सके। अंततः, राजस्थान सरकार ने स्वास्थ्य सुरक्षा के दायरे को और अधिक व्यापक बनाने हेतु मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना को लागू किया। इन योजनाओं के क्रमिक विकास ने राज्य की स्वास्थ्य प्रणाली को उत्तरोत्तर अधिक मजबूत बनाया है।

38. (2) 30 बिस्तर
सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ग्रामीण स्वास्थ्य पदानुक्रम में एक महत्वपूर्ण माध्यमिक स्तर की चिकित्सा इकाई के रूप में कार्य करता है। सरकारी मानदंडों के अनुसार, एक मानक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में रोगियों के लिए 30 बिस्तरों की व्यवस्था होना अनिवार्य है। यह क्षमता इसलिए निर्धारित की गई है ताकि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों से रेफर होकर आने वाले गंभीर मरीजों को भर्ती सुविधा मिल सके।
इन केंद्रों पर शल्य चिकित्सा, प्रसूति और आपातकालीन सेवाओं के लिए बुनियादी व्यवस्था उपलब्ध होती है। 30 बिस्तरों की यह क्षमता स्थानीय जनसंख्या की आवश्यकताओं और उपलब्ध विशेषज्ञ सेवाओं के बीच एक संतुलन स्थापित करती है। यदि मरीजों की संख्या इस सीमा से अधिक होती है, तो उन्हें आगे जिला अस्पतालों में रेफर कर दिया जाता है, जो उच्च स्तरीय उपचार प्रदान करते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

सरकार से प्राप्त निधियों के प्रबंधन और जिलों को आवंटन हेतु नोडल एजेंसी है।
सोसाइटी के माध्यम से विभिन्न स्वास्थ्य संकेतकों की समय-समय पर समीक्षा की जाती है ताकि आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाए जा सकें। यह सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता बढ़ाने और मातृ-शिशु मृत्यु दर जैसे लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न विभागों में समन्वय स्थापित करती है। राज्य की स्वास्थ्य नीति को प्रभावी ढंग से लागू करने में इस संस्था की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

27. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान वर्तमान में स्वास्थ्य के क्षेत्र में दोहरी चुनौती का सामना कर रहा है, जहाँ संचारी और गैर-संचारी दोनों प्रकार के रोगों का भार बढ़ रहा है। शहरीकरण के कारण बदलती जीवनशैली और तनाव मधुमेह तथा हृदय रोग जैसे रोगों को जन्म दे रहे हैं। ये बीमारियाँ शहरों में तेजी से फैल रही हैं और दीर्घकालिक उपचार की मांग करती हैं।
वहीं दूसरी ओर, ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में स्वच्छता के अभाव के कारण संक्रामक रोग अब भी एक बड़ी समस्या बने हुए हैं। इस दोहरी मार के कारण राज्य की स्वास्थ्य अवसंरचना पर भारी दबाव पड़ रहा है। अतः यह आवश्यक है कि सरकार इन दोनों समस्याओं से निपटने के लिए एकीकृत रणनीतियों पर काम करे ताकि राज्य में संपूर्ण स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

28. (2) उप-स्वास्थ्य केंद्र / आशा (ASHA) कार्यकर्ता
मानसून के दौरान जलजनित रोगों के प्रसार को रोकने के लिए स्थानीय स्तर पर त्वरित स्वास्थ्य हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है। गाँव के स्तर पर उप-स्वास्थ्य केंद्र और आशा कार्यकर्ता सबसे सुलभ इकाई हैं जो ओआरएस जैसी जीवन रक्षक दवाओं का वितरण कर सकते हैं। ये कार्यकर्ता समुदाय के सीधे संपर्क में होते हैं और आपातकालीन स्थिति में प्राथमिक उपचार हेतु प्रशिक्षित होते हैं।
गंभीर बीमारियों के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए घर-घर जाकर जागरूकता फैलाना और बुनियादी उपचार उपलब्ध कराना इन्हीं की प्राथमिक जिम्मेदारी है। जिला अस्पतालों तक पहुँचने में समय लग सकता है, इसलिए स्थानीय स्वास्थ्य ढांचा ही मानसून से जुड़ी बीमारियों के प्रबंधन में प्रभावी सिद्ध होता है। इनकी सक्रियता से संक्रमण को बड़े स्तर पर फैलने से पहले ही नियंत्रित किया जा सकता है।

29. (1) I, II और III
राजस्थान में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की वर्तमान स्थिति यह दर्शाती है कि अधिकांश विशेषज्ञ सुविधाएं और अवसंरचना बड़े शहरों में ही केंद्रित है। ग्रामीण क्षेत्रों में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की कमी और समाज में व्याप्त कलंक आज भी उपचार प्राप्त करने में बड़ी बाधा है। लोग अक्सर मानसिक समस्याओं को स्वीकार करने के बजाय उन्हें अनदेखा करना या सामाजिक उपहास से डरते हैं।
इन चुनौतियों के समाधान के लिए जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के माध्यम से सेवाओं को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के साथ जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। हालांकि, संसाधनों और मनोचिकित्सकों की कमी के कारण प्रत्येक केंद्र पर विशेषज्ञ उपलब्ध कराना अभी संभव नहीं हो पाया है। इस क्षेत्र में टेली-परामर्श और सामुदायिक शिक्षा के माध्यम से सुधार लाने हेतु निरंतर कार्य किया जा रहा है।

NODIA

30. (4) रिकॉर्डिंग के बेहतर तरीकों के कारण शिशु मृत्यु दर में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई है।
राजस्थान के जनसांख्यिकीय आँकड़ों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि पिछले कुछ दशकों में राज्य के स्वास्थ्य संकेतकों में सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के कारण जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में निरंतर सुधार हुआ है। इसके साथ ही, सरकारी प्रयासों और संस्थागत प्रसव के कारण मातृ मृत्यु अनुपात में भी उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है।
शिशु मृत्यु दर के मामले में, बेहतर रिकॉर्डिंग के दावों के विपरीत, वास्तव में इस दर में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई है। यद्यपि राजस्थान की कुल प्रजनन दर अभी भी कई राज्यों से अधिक है, लेकिन इसमें भी धीरे-धीरे कमी आ रही है। यह गिरावट शिक्षा के प्रसार और परिवार नियोजन सेवाओं की ग्रामीण पहुँच बढ़ने के कारण संभव हो पा रही है।

31. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
राजस्थान की मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना को सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम के रूप में देखा जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों में आने वाले गरीब और मध्यम वर्ग के रोगियों के चिकित्सा व्यय को कम करना है। इस योजना ने स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुलभ बनाया है, जिससे दवाओं के लिए लोगों पर आर्थिक बोझ नहीं पड़ता।
इस मॉडल की प्रभावशीलता के कारण राष्ट्रीय स्तर पर इसे व्यापक प्रशंसा मिली है। कई अन्य राज्यों ने राजस्थान के इस मॉडल का अध्ययन किया और अपने यहाँ इसी तरह की निःशुल्क दवा वितरण प्रणालियों को लागू किया है। यह योजना न केवल दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करती है, बल्कि जेनेरिक दवाओं के प्रति लोगों का विश्वास और राज्य की स्वास्थ्य साख भी बढ़ाती है।

32. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
राजस्थान के स्वास्थ्य प्रशासनिक ढांचे में विभिन्न पदों को उनके उत्तरदायित्व के स्तर के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी संपूर्ण जिले के स्वास्थ्य प्रबंधन हेतु जिम्मेदार होते हैं, जबकि ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी ब्लॉक स्तर पर योजनाओं का समन्वय करते हैं। यह पदानुक्रम सुनिश्चित करता है कि स्वास्थ्य नीतियों का क्रियान्वयन निचले स्तर तक प्रभावी हो।
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रशासनिक प्रमुख चिकित्सा अधिकारी प्रभारी होते हैं, जो स्थानीय चिकित्सा सेवाओं की देखरेख करते हैं। सबसे जमीनी स्तर पर सहायक नर्स मिडवाइफ उप-स्वास्थ्य केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण आबादी को सीधे बुनियादी सेवाएँ प्रदान करती हैं। इस व्यवस्थित संरचना के माध्यम से राज्य भर में स्वास्थ्य सेवाओं की निगरानी

यदि कार्यशील जनसंख्या स्वस्थ और कुशल होगी, तो वह उत्पादन और बचत में वृद्धि करके आर्थिक समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। राजस्थान जैसे राज्य वर्तमान में इसी जनसांख्यिकीय परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं, जहाँ बढ़ती युवा आबादी को रोजगार और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करना एक बड़ी चुनौती और अवसर दोनों है।

46. (3) 25 लाख रुपये
मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना राजस्थान के नागरिकों को गंभीर बीमारियों के उपचार हेतु उच्च वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने वाली एक महत्वाकांक्षी पहल है। इस योजना के अंतर्गत पात्र परिवारों को प्रति वर्ष 25 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा कवर उपलब्ध कराया जाता है। यह राशि परिवारों को गंभीर चिकित्सा स्थितियों में होने वाले भारी वित्तीय बोझ से बचाने में अत्यंत प्रभावी है।
इस योजना का विस्तार निरंतर किया गया है ताकि जटिल शल्य चिकित्सा और कैंसर जैसी बीमारियों का उपचार भी आम आदमी की पहुँच में हो सके। राज्य के सरकारी और सूचीबद्ध निजी अस्पतालों में यह सुविधा कैशलेस आधार पर प्रदान की जाती है। यह उच्च बीमा राशि राजस्थान के स्वास्थ्य क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम है जो स्वास्थ्य के अधिकार को सशक्त बनाता है।

47. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना के लागू होने के बाद राजस्थान के सरकारी अस्पतालों में मरीजों की आवक में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। इस वृद्धि का मुख्य कारण यह है कि उपचार के दौरान होने वाली महँगी जाँचें अब सरकार द्वारा मुफ्त में उपलब्ध कराई जा रही हैं। इससे उन गरीब परिवारों को बहुत राहत मिली है जो धन के अभाव में जाँच नहीं करा पाते थे।
नैदानिक जाँचों पर होने वाला खर्च चिकित्सा व्यय का एक बड़ा हिस्सा होता है और इस बाधा के हटने से स्वास्थ्य सेवाएं अधिक न्यायसंगत बन गई हैं। जब मरीजों को ज्ञात हुआ कि उन्हें जाँच के लिए कोई पैसा नहीं देना होगा, तो उनका सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली पर भरोसा और बढ़ा। यही कारण है कि यह योजना सफल और प्रभावी हस्तक्षेप मानी जाती है।

48. (2) सुपर स्पेशलिटी मेडिकल कॉलेज अस्पताल
स्वास्थ्य अवसंरचना को उनके कार्य और स्तर के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है ताकि विभिन्न आवश्यकताओं के लिए उचित उपचार मिल सके। उप-स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी चिकित्सा सेवा प्रदान करने के लिए स्थापित किए गए हैं। इन इकाइयों का मुख्य उद्देश्य स्थानीय आबादी को उनके निवास के निकट ही सुविधा उपलब्ध कराना है।
इसके विपरीत, सुपर स्पेशलिटी मेडिकल कॉलेज अस्पताल तृतीयक देखभाल की श्रेणी में आते हैं और इनका मुख्य केंद्रण शहरी क्षेत्रों में होता है। ये संस्थान जटिल रोगों के विशेषज्ञ उपचार, अनुसंधान और उच्च स्तरीय चिकित्सा शिक्षा के लिए समर्पित होते हैं। ग्रामीण इकाइयों की तुलना में इनकी कार्यप्रणाली और संसाधन अधिक व्यापक एवं तकनीकी होते हैं। अतः ये ग्रामीण केंद्रों से भिन्न हैं।

49. (1) I, II और IV
राजस्थान की स्वास्थ्य सेवाओं के सामने भौगोलिक और सामाजिक चुनौतियाँ एक बड़ी बाधा के रूप में खड़ी हैं। मरुस्थलीय क्षेत्रों में जनसंख्या का बिखराव और खराब सड़क संपर्क आपातकालीन स्थिति में अस्पताल पहुँचने को अत्यंत कठिन बना देता है। इसके साथ ही, दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में चिकित्सा कर्मियों की कमी भी सेवाओं की गुणवत्ता को प्रभावित करती है जिससे जनता को कठिनाई होती है।
सुविधाओं की कमी और सामाजिक मान्यताओं के कारण कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में लोग आज भी वैज्ञानिक उपचार के बजाय पारंपरिक विधियों पर निर्भर रहते हैं। हालांकि जेनेरिक दवाओं की आपूर्ति के लिए सुव्यवस्थित तंत्र मौजूद है, फिर भी भौगोलिक पहुँच की समस्या बरकरार है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार मोबाइल मेडिकल वैन और विशेष भत्तों के माध्यम से प्रयास कर रही है।

50. (1) उच्च जन्म/मृत्यु दर से निम्न जन्म/मृत्यु दर की ओर बदलाव
जनसांख्यिकीय संक्रमण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कोई समाज विकास के साथ अपनी जनसंख्या की प्रकृति में बदलाव महसूस करता है। इस प्रक्रिया में पहले उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर होती है, जो शिक्षा के प्रसार के साथ धीरे-धीरे कम होने लगती है। यह संक्रमण अंततः समाज को निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर की स्थिर स्थिति की ओर ले जाता है।
राजस्थान और भारत के अन्य राज्य वर्तमान में इस संक्रमण के विभिन्न चरणों से गुजर रहे हैं। मृत्यु दर में तेजी से गिरावट के कारण शुरू में जनसंख्या में उछाल आता है, जिसके बाद जन्म दर भी घटने लगती है। इस परिवर्तन को समझना स्वास्थ्य योजनाकारों के लिए बहुत आवश्यक है क्योंकि यह भविष्य की जनसंख्या संरचना और संसाधनों की मांग का पूर्वानुमान लगाने में सहायता करता है।

51. (3) मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य हस्तक्षेपों से जीवन प्रत्याशा बढ़ रही है।
राजस्थान में पिछले कुछ वर्षों में जीवन प्रत्याशा में सुधार एक सकारात्मक स्वास्थ्य संकेतक के रूप में उभरा है। इस वृद्धि का श्रेय मुख्य रूप से मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं में किए गए व्यापक सुधारों और टीकाकरण अभियानों को जाता है। जब शिशुओं और माताओं की मृत्यु दर में प्रभावी कमी आती है, तो इसका सीधा प्रभाव पूरी जनसंख्या की औसत आयु पर पड़ता है।
राज्य में बेहतर स्वच्छता, स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता और पोषण कार्यक्रमों ने भी लोगों के स्वास्थ्य स्तर को ऊपर उठाने में मदद की है। हालाँकि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच अभी भी अंतर विद्यमान है, लेकिन समग्र प्रवृत्ति ऊपर की ओर है। चिकित्सा विज्ञान की प्रगति और बीमारियों के समय पर निदान से अब लोग पहले की तुलना में अधिक लंबा जीवन जी रहे हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

स्तर पर किसी भी प्रकार की लघु या बड़ी शल्य चिकित्सा करना उनके कार्य क्षेत्र और अधिकार सीमा से बाहर है। उनका प्रशिक्षण केवल प्राथमिक उपचार, स्वास्थ्य परामर्श और सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन तक ही सीमित रखा गया है ताकि ग्रामीण स्वास्थ्य सुदृढ़ हो।

14. (2) I, III, IV और V
आयुष्मान भारत पीएम-जेएवाई योजना राजस्थान में परिवारों को प्रति वर्ष 5 लाख रुपये का स्वास्थ्य सुरक्षा कवच प्रदान करती है। इस योजना के लाभार्थियों की पहचान सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना के आँकड़ों के आधार पर की गई है। राजस्थान ने अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार इस केंद्रीय योजना को राज्य की अन्य स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के साथ एकीकृत किया है।
योजना का प्राथमिक उद्देश्य वंचित वर्गों के स्वास्थ्य पर होने वाले अत्यधिक व्यक्तिगत व्यय को कम करना और उन्हें गुणवत्तापूर्ण उपचार उपलब्ध कराना है। यह योजना केंद्र और राज्य सरकारों के साझा वित्तीय सहयोग से संचालित होती है। इसके तहत मरीजों को सूचीबद्ध निजी और सरकारी अस्पतालों में बिना किसी नकद भुगतान के विशेषज्ञ चिकित्सा सुविधा प्राप्त होती है।

15. (1) राष्ट्रीय अंधता नियंत्रण कार्यक्रम
स्वास्थ्य हस्तक्षेपों का वर्गीकरण अक्सर उनके लक्षित समूहों के आधार पर किया जाता है ताकि योजनाओं का लाभ संबंधित वर्ग तक पहुँचे। जननी शिशु सुरक्षा, मुख्यमंत्री राजश्री और प्रधानमंत्री मातृ वंदना जैसी योजनाएं प्रत्यक्ष रूप से मातृ एवं बाल स्वास्थ्य से जुड़ी हुई हैं। इनका मुख्य केंद्र बिंदु महिलाओं और नवजात शिशुओं का कल्याण एवं उनकी मृत्यु दर में सुधार करना है।
इसके विपरीत राष्ट्रीय अंधता नियंत्रण कार्यक्रम का दायरा अत्यंत व्यापक है और यह किसी विशेष आयु वर्ग या लिंग तक सीमित नहीं है। यह कार्यक्रम समाज के सभी वर्गों के व्यक्तियों में दृष्टि दोष के निवारण और उपचार के लिए संचालित किया जाता है। अतः लक्षित जनसांख्यिकीय समूह के आधार पर यह अन्य तीन योजनाओं से भिन्न श्रेणी में आता है।

16. (2) सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं में रोगियों को निःशुल्क नैदानिक जाँच उपलब्ध कराना
मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना का प्रमुख उद्देश्य राजस्थान के सभी नागरिकों को सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में आवश्यक नैदानिक सेवाएँ बिना किसी शुल्क के प्रदान करना है। इस योजना के माध्यम से मरीजों को विभिन्न महत्वपूर्ण जाँचों के लिए निजी प्रयोगशालाओं पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। इससे गरीब मरीजों पर पड़ने वाले आर्थिक बोझ में उल्लेखनीय कमी आई है।
जाँच सुविधाओं की सुलभता से रोगों का शीघ्र पता लगाना और सटीक उपचार प्रारंभ करना संभव हो गया है। यह योजना प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों से लेकर मेडिकल कॉलेजों तक प्रभावी है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और पहुँच में सुधार हुआ है। निःशुल्क दवा योजना के साथ मिलकर यह पहल राजस्थान के सार्वजनिक स्वास्थ्य मॉडल को सशक्त बनाती है।

17. (2) उप-स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, जिला अस्पताल
ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं का ढांचा एक त्रिस्तरीय प्रणाली पर आधारित है जो जनसंख्या के मानदंडों पर व्यवस्थित है। इस पदानुक्रम में सबसे निचले स्तर पर उप-स्वास्थ्य केंद्र होता है जो सबसे कम जनसंख्या को कवर करता है। इसके बाद प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और फिर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र आते हैं। यह व्यवस्था रेफरल प्रणाली को सुगम और प्रभावी बनाती है।
जिला अस्पताल इस पदानुक्रम में सर्वोच्च स्थान पर होता है और संपूर्ण जिले की जटिल चिकित्सा आवश्यकताओं के लिए मुख्य केंद्र के रूप में कार्य करता है। यह संरचना सुनिश्चित करती है कि बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं गाँव स्तर पर उपलब्ध हों, जबकि विशेषज्ञ उपचार के लिए बड़े केंद्रों का उपयोग किया जाए। इसके माध्यम से स्वास्थ्य संसाधनों का वितरण सटीक रूप से होता है।

18. (1) मातृ मृत्यु दर में वृद्धि
गर्भवती महिलाओं में रक्तअल्पता या एनीमिया एक गंभीर स्वास्थ्य स्थिति है जो प्रसव के दौरान जटिलताओं का कारण बन सकती है। शरीर में हीमोग्लोबिन की कमी से प्रसव के समय अत्यधिक रक्तस्राव होने का खतरा बढ़ जाता है, जो मातृ मृत्यु का एक प्रमुख कारण है। एनीमिया न केवल माँ के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि शिशु विकास को भी बाधित करता है।
यदि इस समस्या का समय पर उपचार न किया जाए, तो यह राज्य की मातृ मृत्यु दर में वृद्धि कर सकती है। इसके अतिरिक्त, एनीमिया से पीड़ित माताओं के बच्चों में कम वजन और संक्रमण का खतरा अधिक होता है। इसलिए सरकार द्वारा आयरन की गोलियों का वितरण तथा पोषण शिक्षा के माध्यम से इस समस्या को नियंत्रित करने के प्रयास जारी हैं।

19. (3) गुणवत्तापूर्ण निजी स्वास्थ्य सेवा के साथ विरासत पर्यटन का संगम
राजस्थान में चिकित्सा पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि यहाँ विश्व स्तरीय निजी अस्पताल और ऐतिहासिक पर्यटन स्थल दोनों उपलब्ध हैं। विदेशी पर्यटक यहाँ उच्च गुणवत्ता वाले उपचार के साथ-साथ राज्य की समृद्ध संस्कृति और विरासत का अनुभव प्राप्त करते हैं। यह अनूठा संगम राजस्थान को एक प्रमुख चिकित्सा गंतव्य के रूप में वैश्विक मानचित्र पर स्थापित करने में सहायक है।
राज्य में जटिल शल्य चिकित्साएं और वैकल्पिक उपचार पद्धतियां जैसे आयुर्वेद भी पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। आधुनिक चिकित्सा उपकरणों और अनुभवी डॉक्टरों की उपस्थिति के कारण यहाँ उपचार की लागत कई विकसित देशों की तुलना में काफी कम है। इस क्षेत्र के विकास से न केवल राजस्व में वृद्धि होती है, बल्कि राज्य की अवसंरचना को भी पहचान मिलती है।

NODIA

आवृत्ति को दर्शाता है और स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावशीलता का प्रमुख पैमाना है।
अन्य संकेतक जैसे शिशु मृत्यु दर की गणना प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर की जाती है, जबकि अशोधित मृत्यु दर को प्रति 1,000 जनसंख्या के आधार पर मापा जाता है। इन मानकों में भिन्नता होने के कारण इनका सही सुमेलन सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए अनिवार्य है। सही डेटा और मानकों का उपयोग ही स्वास्थ्य नीतियों के सटीक मूल्यांकन और सुधार में सहायक होता है।

59. (4) ब्लॉक स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य पुनर्वास केंद्रों की अत्यधिक बहुलता
ग्रामीण क्षेत्रों में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच के मार्ग में कई वास्तविक बाधाएं विद्यमान हैं जो मरीजों को उपचार से दूर रखती हैं। प्रशिक्षित मनोचिकित्सकों की भारी कमी और मानसिक बीमारियों के प्रति सामाजिक उपहास का डर प्रमुख समस्याएं हैं। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण समाज में मानसिक रोगों को अक्सर अंधविश्वास से जोड़कर देखा जाता है, जिससे लोग चिकित्सा परामर्श नहीं लेते।
यह कहना कि ब्लॉक स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य केंद्रों की अत्यधिक बहुलता है, पूर्णतः गलत है क्योंकि वास्तविकता इसके विपरीत है। अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे केंद्रों का अभाव है, जिसके कारण मरीजों को इलाज के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के लिए केंद्रों की संख्या बढ़ाना और सामाजिक कलंक मिटाना सरकार के लिए बड़ी चुनौती है।

60. (2) गतिहीन जीवन शैली और आहार परिवर्तन जिससे मधुमेह होता है
तीव्र शहरीकरण ने लोगों की जीवनशैली में आमूल-चूल परिवर्तन किए हैं, जिसके कारण गैर-संचारी रोगों के भार में चिंताजनक वृद्धि हुई है। शहरों में डेस्क जॉब और कम शारीरिक सक्रियता के कारण गतिहीन जीवनशैली बढ़ी है, जो मोटापे और उच्च रक्तचाप का मुख्य कारण है। इसके साथ ही, अधिक शर्करा युक्त आहार के सेवन से मधुमेह जैसी बीमारियाँ सामान्य होती जा रही हैं।
ग्रामीण जीवन की तुलना में शहरी क्षेत्रों में प्रदूषण और मानसिक तनाव भी अधिक होता है, जो हृदय रोगों के जोखिम को और बढ़ा देता है। यह स्थिति दर्शाती है कि स्वास्थ्य केवल चिकित्सा सुविधाओं पर निर्भर नहीं है, बल्कि हमारी दैनिक आदतों से भी गहराई से जुड़ा है। गैर-संचारी रोगों के इस बढ़ते खतरे को कम करने के लिए जन जागरूकता ही एकमात्र प्रभावी उपाय है।

61. (3) राजस्थान स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेंसी (RSHAA)
राजस्थान में एकीकृत स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन और प्रबंधन के लिए राजस्थान स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेंसी उत्तरदायी मुख्य संस्था है। यह एजेंसी आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना के संचालन की निगरानी करती है और लाभार्थियों को मिलने वाली सुविधाओं को सुनिश्चित करती है। इसका मुख्य कार्य अस्पतालों को सूचीबद्ध करना और दावों का निपटान करना है।
एजेंसी यह भी सुनिश्चित करती है कि योजना के अंतर्गत निर्धारित उपचार पैकेजों का लाभ पात्र परिवारों तक बिना किसी बाधा के पहुँचे। यह राज्य सरकार और बीमा कंपनियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है ताकि चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता बनी रहे। इस संस्था की सक्रियता से ही लाखों परिवारों को कैशलेस उपचार की सुविधा मिल पा रही है, जिससे सुरक्षा मिलती है।

62. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
शरीर के स्वस्थ विकास के लिए विभिन्न पोषक तत्वों की उचित मात्रा अनिवार्य है और उनकी कमी से विशिष्ट बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। आयरन की कमी से रक्तअल्पता या एनीमिया होता है, जो विशेष रूप से महिलाओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। आयोडीन की कमी थायराइड ग्रंथि को प्रभावित कर घेंघा रोग का कारण बनती है, जिससे मानसिक विकास अवरुद्ध हो सकता है।
इसी प्रकार, विटामिन ए की कमी से रतौंधी होती है जिससे कम रोशनी में देखने की क्षमता प्रभावित होती है। प्रोटीन और ऊर्जा की कमी से बच्चों में मरास्मस जैसे गंभीर कुपोषण के लक्षण दिखाई देते हैं। इन पोषण संबंधी कमियों को दूर करने के लिए सरकार विभिन्न फोर्टिफिकेशन कार्यक्रमों और अनुपूरक आहार योजनाओं का संचालन करती है ताकि सक्षम समाज का निर्माण हो।

63. (1) केंद्रीकृत खरीद और विकेंद्रीकृत सूचना प्रौद्योगिकी वितरण था
राजस्थान की निःशुल्क दवा योजना की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहना का मुख्य कारण इसकी अद्वितीय प्रबंधन प्रणाली है। इस मॉडल में दवाओं की खरीद एक केंद्रीकृत निकाय के माध्यम से की जाती है जिससे गुणवत्ता और कम लागत सुनिश्चित होती है। साथ ही, सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से दवाओं के वितरण और स्टॉक की निगरानी को विकेंद्रीकृत किया गया है।
'ई-औषधि' जैसे सॉफ्टवेयर की मदद से दवाओं की कमी या समाप्ति की वास्तविक समय की जानकारी प्राप्त करना संभव हो गया है। इस पारदर्शी तकनीक ने दवाओं की बर्बादी को कम किया है और उनकी उपलब्धता को शत-प्रतिशत सुनिश्चित किया है। यह मॉडल सिद्ध करता है कि आधुनिक तकनीक और प्रशासनिक इच्छाशक्ति से स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांतिकारी सुधार लाए जा सकते हैं।

64. (2) केवल II और III
राजस्थान में स्वास्थ्य और पोषण के आँकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि प्रजनन आयु की महिलाओं में रक्तअल्पता या एनीमिया की समस्या एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। हालांकि बच्चों में पोषण के स्तर में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है, लेकिन महिलाओं के स्वास्थ्य संकेतकों में और सुधार की आवश्यकता है। केवल स्तनपान की प्रथाओं में जागरूकता एक सकारात्मक संकेत है।
यह कहना कि हाल के वर्षों में नाटेपन के शिकार बच्चों का अनुपात काफी बढ़ गया है, गलत है क्योंकि सरकारी प्रयासों से इसमें गिरावट देखी गई है। पोषण अभियान और नियमित

NODIA

टीकाकरण कार्यक्रमों ने बच्चों के स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने में मदद की है। राज्य सरकार अब महिलाओं में एनीमिया को कम करने के लिए विशेष आयरन फोर्टिफिकेशन और आहार परामर्श कार्यक्रमों पर ध्यान दे रही है।

65. (2) क्षय रोग (टीबी)
रोगों को उनकी प्रकृति और संचरण के आधार पर अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित किया गया है जो उनके उपचार की दिशा तय करते हैं। हृदय रोग, कैंसर और श्वसन संबंधी पुरानी बीमारियाँ गैर-संचारी रोगों की श्रेणी में आती हैं क्योंकि ये एक व्यक्ति से दूसरे में नहीं फैलतीं। ये बीमारियाँ मुख्य रुप से पर्यावरणीय कारकों और जीवनशैली से प्रभावित होती हैं।
इसके विपरीत, क्षय रोग या टीबी एक संक्रामक या संचारी रोग है जो बैक्टीरिया के माध्यम से एक संक्रमित व्यक्ति से स्वस्थ व्यक्ति में हवा के द्वारा फैलता है। टीबी का उपचार एंटीबायोटिक दवाओं के निश्चित कोर्स से संभव है, जबकि गैर-संचारी रोगों को अक्सर जीवनभर प्रबंधित करना पड़ता है। इसलिए, संचरण की प्रकृति के आधार पर टीबी अन्य रोगों से भिन्न है।

66. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है
राजस्थान में स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण में एक बड़ा भौगोलिक असंतुलन विद्यमान है, विशेष रुप से दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टरों की भारी कमी है। अधिकांश चिकित्सा पेशेवर अपनी पदस्थापना शहरी क्षेत्रों में चाहते हैं क्योंकि वहां आधुनिक चिकित्सा अवसंरचना और बेहतर जीवन स्तर उपलब्ध होता है। यह प्रवृत्ति ग्रामीण क्षेत्रों में संतुलित चिकित्सक-रोगी अनुपात प्राप्त करने में बड़ी रुकावट है।
शहरों में बेहतर परिवहन, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता चिकित्सा कर्मियों को वहां रहने के लिए प्रेरित करती है। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण जनता को उपचार के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, जो उनके स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था दोनों पर भारी पड़ता है। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं और प्रोत्साहन योजनाओं को मजबूत करना अनिवार्य है।

67. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में निजी अस्पतालों को शामिल करना एक व्यावहारिक और रणनीतिक निर्णय है। राज्य की बढ़ती जनसंख्या और आधुनिक चिकित्सा की मांग को देखते हुए केवल सरकारी स्वास्थ्य ढांचा सभी को जटिल उपचार प्रदान करने में सक्षम नहीं है। निजी अस्पतालों के सहयोग से मरीजों के पास विशेषज्ञ डॉक्टरों तक पहुँचने के अधिक विकल्प उपलब्ध होते हैं।
यह सार्वजनिक-निजी भागीदारी यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी नागरिक केवल संसाधनों की कमी के कारण इलाज से वंचित न रहे। सरकार द्वारा निजी अस्पतालों को उनके खर्च की प्रतिपूर्ति की जाती है, जिससे मरीजों को उच्च स्तरीय सुविधाएँ बिना किसी नकद भुगतान के मिल पाती हैं। इस प्रकार, राज्य में एक व्यापक और सुदृढ़ स्वास्थ्य सुरक्षा कवच तैयार किया गया है।

68. (2) उत्तरवर्ती विस्तार से निम्न स्थिर चरण
जनसांख्यिकीय संक्रमण का उत्तरवर्ती विस्तार चरण उस स्थिति को दर्शाता है जहाँ स्वास्थ्य सेवाओं के प्रभाव से मृत्यु दर में भारी गिरावट आ जाती है। इसके साथ ही, बढ़ती जागरूकता और शिक्षा के कारण जन्म दर या प्रजनन दर में भी निरंतर कमी देखी जाने लगती है। जब शिशु मृत्यु दर घटती है, तो यह समाज की स्वास्थ्य और आर्थिक प्रगति का स्पष्ट सूचक है।
राजस्थान के कई क्षेत्र वर्तमान में इसी चरण की विशेषताओं को प्रदर्शित कर रहे हैं, जहाँ जनसंख्या वृद्धि की दर धीमी हो रही है। इस चरण में निम्न स्थिर स्थिति की ओर बढ़ने का अर्थ है कि समाज अब एक परिपक्व जनसांख्यिकीय संरचना प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर है। इस संक्रमण को सफल बनाने के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल की उपलब्धता सुनिश्चित करना प्राथमिकता होनी चाहिए।

69. (4) I, II, III और IV
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत राजस्थान में स्वास्थ्य सेवाओं के विकेंद्रीकृत प्रबंधन के लिए एक व्यापक संस्थागत ढांचा तैयार किया गया है। राज्य स्तर पर स्टेट हेल्थ सोसाइटी और जिला स्तर पर डिस्ट्रिक्ट हेल्थ सोसाइटी योजनाओं के सुचारु संचालन और वित्त पोषण की देखरेख करती हैं। इसके अतिरिक्त, अस्पतालों के प्रबंधन के लिए 'रोगी कल्याण समितियां' स्थानीय स्तर पर सक्रिय भूमिका निभाती हैं।
ग्रामीण स्तर पर सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए 'ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण समितियों' का गठन किया गया है जो स्थानीय समस्याओं का समाधान करती हैं। यह विकेंद्रीकृत ढांचा यह सुनिश्चित करता है कि निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्थानीय जनता की आवाज शामिल हो और सेवा वितरण में पारदर्शिता बनी रहे। इन संस्थाओं के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं को जवाबदेह बनाया जा रहा है।

70. (2) स्थानीय लोगों के लिए अस्पताल के बिस्तर आरक्षित रखने हेतु राज्य द्वारा आधिकारिक तौर पर चिकित्सा पर्यटन को हतोत्साहित किया जाता है।
राजस्थान में चिकित्सा पर्यटन को राज्य की अर्थव्यवस्था के एक उभरते हुए और महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में देखा जाता है। राज्य सरकार आयुष पद्धतियों, जैसे आयुर्वेद और योग के माध्यम से कल्याण पर्यटन को सक्रिय रुप से बढ़ावा देती है ताकि वैश्विक पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके। यहाँ के आधुनिक अस्पताल जटिल शल्य चिकित्साओं के लिए अपनी विशेषज्ञता हेतु प्रसिद्ध हैं।
यह कहना गलत है कि राज्य सरकार चिकित्सा पर्यटन को हतोत्साहित करती है; इसके विपरीत, इसे रोजगार सृजन और राजस्व का एक बड़ा स्रोत माना जाता है। जयपुर जैसे शहरों में निजी अस्पताल श्रृंखलाओं के विकास ने राजस्थान को अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा केंद्र के रूप में विकसित किया है। इसके बढ़ने से राज्य में स्वास्थ्य अवसंरचना का आधुनिकीकरण भी तेज होता है जिसका लाभ स्थानीय निवासियों को मिलता है।

Downloaded from www.pdf.tube

71. (4) समुदाय और चिकित्सा अधिकारी के मध्य संपर्क का प्रथम बिंदु
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं की रीढ़ है और यह स्थानीय समुदाय के लिए मुख्य चिकित्सा अधिकारी से जुड़ने का पहला औपचारिक स्थान है। इस केंद्र का प्राथमिक कार्य निवारक, उपचारात्मक और स्वास्थ्य संवर्धन सेवाएं प्रदान करना है। यहाँ सामान्य बीमारियों का इलाज, टीकाकरण और परिवार नियोजन जैसी महत्वपूर्ण सेवाएँ सुलभ कराई जाती हैं जो जनता की बुनियादी जरूरतें हैं।
यह केंद्र जटिल शल्य चिकित्साओं के लिए नहीं है, बल्कि यह सामान्य स्वास्थ्य समस्याओं के निदान और आगे के रेफरल के लिए एक द्वार का कार्य करता है। यहाँ कार्यरत स्वास्थ्य कर्मी ग्रामीण जनता को शिक्षित करते हैं और सरकारी योजनाओं को धरातल पर उतारते हैं। इस प्रकार, पीएचसी एक प्रभावी ग्रामीण स्वास्थ्य प्रणाली को बनाए रखने में सबसे प्रारंभिक और अनिवार्य भूमिका निभाता है।

72. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
संवेदनशील समूहों के लिए विशिष्ट स्वास्थ्य हस्तक्षेप उनके कल्याण और सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए तैयार किए गए हैं। गर्भवती महिलाओं के लिए प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत प्रसव पूर्व जाँच की सुविधा दी जाती है, जबकि शिशुओं के लिए नियमित टीकाकरण कार्यक्रम संचालित होता है। ये हस्तक्षेप बाल मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर को कम करने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।
किशोरियों के स्वास्थ्य के लिए साप्ताहिक आयरन और फोलिक एसिड अनुपूरण कार्यक्रम चलाया जाता है ताकि उनमें एनीमिया के खतरे को कम किया जा सके। इसी प्रकार, टीबी रोगियों के लिए निक्षय पोषण योजना के माध्यम से पोषण संबंधी वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इन केंद्रित कार्यक्रमों के क्रियान्वयन से ही समाज के सबसे कमजोर वर्गों तक स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावी पहुँच सुनिश्चित होती है।

73. (3) घरेलू प्रसव से संस्थागत प्रसव की ओर बदलाव
राजस्थान में पिछले दो दशकों के दौरान मातृ स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सामाजिक बदलाव देखा गया है। सरकारी प्रोत्साहन योजनाओं और अवसंरचना के विस्तार के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में अब घरेलू प्रसव के स्थान पर संस्थागत प्रसव को प्राथमिकता दी जा रही है। अस्पतालों में प्रसव कराने की इस प्रवृत्ति ने जटिलताओं और मृत्यु के जोखिम को काफी कम कर दिया है।
जननी सुरक्षा जैसी योजनाओं ने परिवारों को सुरक्षित चिकित्सा सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया है। इसके साथ ही, स्वास्थ्य कर्मियों और एम्बुलेंस सेवाओं की उपलब्धता ने अस्पताल पहुँचने को सुगम बनाया है। यह बदलाव न केवल चिकित्सा क्षेत्र की सफलता है, बल्कि यह ग्रामीण समाज की सोच में आए प्रगतिशील परिवर्तन और जागरूकता का भी प्रत्यक्ष प्रमाण है।

74. (1) I, II, III और V
राजस्थान की निःशुल्क दवा योजना सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में आने वाले सभी बाह्य और अंतः रोगी विभाग के मरीजों के लिए वरदान सिद्ध हुई है। इस योजना के तहत आवश्यक दवाओं की मुफ्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है। इसका उद्देश्य जेनेरिक दवाओं को बढ़ावा देना और चिकित्सा व्यय कम करना है।
योजना की व्यापकता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इसमें केवल दवाएं ही नहीं, बल्कि आवश्यक शल्य चिकित्सा सामग्री और टांकों को भी शामिल किया गया है। यह कहना गलत है कि शल्य सामग्री को योजना से बाहर रखा गया है, क्योंकि वास्तव में इनके वितरण से शल्य क्रियाओं की लागत में बड़ी गिरावट आई है। यह पहल स्वास्थ्य सेवा को समावेशी बनाती है।

75. (4) जिला अस्पतालों का निजीकरण
आयुष्मान भारत पहल भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को आधुनिक और सुलभ बनाने के लिए दो प्रमुख स्तंभों पर आधारित है। पहला स्तंभ आयुष्मान आरोग्य मंदिर हैं, जो प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल और बीमारियों के निवारण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना है, जो गरीब परिवारों को गंभीर बीमारियों हेतु स्वास्थ्य बीमा कवच प्रदान करती है।
इस महत्वाकांक्षी पहल का मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों को सुदृढ़ करना और नागरिकों के लिए मुफ्त स्वास्थ्य सेवाएँ सुनिश्चित करना है। इसमें जिला अस्पतालों का निजीकरण करने का कोई प्रावधान शामिल नहीं है, क्योंकि यह सरकारी स्वास्थ्य ढांचे को कमजोर कर सकता है। इसके बजाय, यह सार्वजनिक अस्पतालों की क्षमता बढ़ाने और उन्हें आधुनिक सुविधाओं से लैस करने का प्रयास करती है।

76. (2) ऊँचाई के सापेक्ष कम वजन
बाल कुपोषण के विश्लेषण में 'कृशता' या वेस्टिंग एक महत्वपूर्ण संकेतक है जो किसी बच्चे की वर्तमान पोषण स्थिति की तीव्रता को दर्शाता है। इसे बच्चे की ऊँचाई के अनुपात में उसके वजन के कम होने के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह स्थिति प्रायः हाल ही में हुई किसी बीमारी या भोजन की अचानक कमी के कारण उत्पन्न होती है जो जानलेवा हो सकती है।
वेस्टिंग कुपोषण का एक तीव्र रूप है जिसके लिए तत्काल चिकित्सा और पोषण संबंधी हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, स्टंटिंग दीर्घकालिक पोषण की कमी को दर्शाती है। बच्चों में वेस्टिंग की दर को कम करना सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए चुनौती है, क्योंकि यह सीधे तौर पर बाल मृत्यु दर से जुड़ी है। इसके लिए स्थानीय स्तर पर निरंतर पोषण निगरानी और आहार आवश्यक है।

NODIA

(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) इंदिरा रसोई योजना – महिलाओं के लिए मुफ्त स्मार्टफोन
(2) मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना – मुफ्त नैदानिक परीक्षण
(3) पालनहार योजना – किसान बिजली सब्सिडी
(4) भामाशाह योजना – युवा विकास कार्यक्रम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. इंदिरा रसोई योजना किस मुख्य संकल्प द्वारा निर्देशित है?
(1) कोई भूखा न सोये
(2) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
(3) जल है तो कल है
(4) शिक्षा सबका अधिकार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. सूची I (योजना) को सूची II (मुख्य हस्तक्षेप) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (योजना)
A. मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना
B. मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान
C. इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना
D. मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना
सूची II: (मुख्य हस्तक्षेप)
i. महिलाओं को मुफ्त स्मार्टफोन
ii. शहरी विक्रेता सहायता
iii. किसान बिजली सब्सिडी
iv. जल संरक्षण
कूट:
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. मानक सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के तहत निम्नलिखित में से किस समूह को विशेष रूप से लक्षित लाभार्थी के रूप में उल्लेखित नहीं किया गया है?
(1) वृद्ध नागरिक
(2) विधवाएं
(3) दिव्यांग व्यक्ति
(4) सक्षम शरीर वाले बेरोजगार युवा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना का उद्देश्य निम्नलिखित में से कौन-सा हस्तक्षेप प्रदान करके आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है?
(1) बड़ी कपड़ा मिलों को मुफ्त कच्चे माल का प्रावधान
(2) अन्य राज्यों से माल के आयात पर प्रतिबंध लगाना
(3) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए सुलभ ऋण और ब्याज सब्सिडी
(4) सभी रुग्ण औद्योगिक इकाइयों का प्रत्यक्ष राज्य अधिग्रहण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. निम्नलिखित योजनाओं पर विचार कीजिए:
I. मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना
II. राजस्थान मिशन 2030
III. अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना
IV. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना
निम्नलिखित में से कौन बुनियादी अस्तित्व से स्वास्थ्य, फिर आर्थिक आजीविका और अंत में व्यापक भविष्य की दृष्टि के तार्किक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) III, IV, I, II
(2) III, I, IV, II
(3) IV, III, I, II
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान युवा विकास प्रेरक कार्यक्रम से अपेक्षित मुख्य परिणाम का सटीक वर्णन करता है?
(1) राज्य के कुल कार्बन उत्सर्जन का उन्मूलन
(2) तीस वर्ष से कम आयु के सभी नागरिकों के लिए सार्वभौमिक बुनियादी आय
(3) हाल ही में स्नातक करने वालों को मुफ्त कृषि भूमि का वितरण
(4) कल्याणकारी कार्यक्रमों के लिए युवाओं के नेतृत्व वाला जागरूकता नेटवर्क
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह कृषि बिजली उपभोक्ताओं पर लागू होती है।
II. यह बिजली बिलों पर एक विशिष्ट मासिक अनुदान या सब्सिडी प्रदान करती है।
III. इसका उद्देश्य कृषि कार्यों को आर्थिक रूप से अधिक व्यवहार्य बनाना है।
IV. यह किसानों द्वारा बिजली बकाये के समय पर भुगतान को प्रोत्साहित करती है।
V. यह पिछले सभी कृषि बैंक ऋणों को पूरी तरह से माफ कर देती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल I, II, III और IV

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

83. (3) CHC विशेषज्ञ सेवाएं प्रदान करता है; PHC बुनियादी देखभाल प्रदान करता है
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था के दो अलग-अलग स्तर हैं जो विशेषज्ञता के आधार पर भिन्न होते हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बुनियादी चिकित्सा देखभाल, टीकाकरण और ओपीडी सेवाओं पर केंद्रित होता है जहाँ एक सामान्य चिकित्सा अधिकारी सेवाएँ प्रदान करता है। यह केंद्र गाँव के स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं की पहली सीढ़ी है।
इसके विपरीत, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र एक बड़ा केंद्र होता है जो शल्य चिकित्सा, स्त्री रोग और बाल रोग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ सेवाएँ प्रदान करता है। इसे 'प्रथम रेफरल इकाई' के रूप में भी जाना जाता है जहाँ जटिल मामलों के उपचार और भर्ती के लिए अधिक संसाधन उपलब्ध होते हैं। इन दोनों इकाइयों के बीच यह कार्यात्मक अंतर रेफरल प्रणाली को सुचारू बनाने के लिए अनिवार्य है।

84. (2) केवल I और III
राजस्थान के मरुस्थलीय और दूरस्थ क्षेत्रों में ग्रामीण स्वास्थ्य पहुँच के सामने कई बुनियादी बाधाएं विद्यमान हैं। खराब सड़क संपर्क और कठिन भौगोलिक परिस्थितियाँ आपातकालीन चिकित्सा एम्बुलेंसों को समय पर पहुँचने से रोकती हैं, जो अक्सर जानलेवा साबित होता है। इसके साथ ही, कई समुदायों में व्याप्त सामाजिक-सांस्कृतिक रुढ़ियाँ महिलाओं को समय पर प्रजनन स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करने से रोकती हैं।
यह कहना गलत है कि पैरामेडिकल स्टाफ की अधिकता है, क्योंकि वास्तविकता में राज्य को अभी भी प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों की कमी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार के लिए न केवल अवसंरचना को मजबूत करने की आवश्यकता है, बल्कि समुदायों के बीच जागरूकता फैलाकर सामाजिक बाधाओं को दूर करना भी आवश्यक है। मोबाइल मेडिकल वैन एक प्रभावी माध्यम है।

85. (3) पूर्व भुगतान के बिना नामित अस्पतालों में निःशुल्क आपातकालीन उपचार का अधिकार
राजस्थान में पारित स्वास्थ्य का अधिकार अधिनियम देश में अपनी तरह का पहला कानून है जो प्रत्येक नागरिक को चिकित्सा सेवाओं की कानूनी गारंटी देता है। इस अधिनियम का सबसे महत्वपूर्ण प्रावधान यह है कि आपातकालीन स्थिति में किसी भी रोगी को उपचार देने से मना नहीं किया जा सकता है। इसमें नामित अस्पतालों को बिना किसी अग्रिम भुगतान के मरीज का तत्काल उपचार करना अनिवार्य है।
यह कानून स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता को दर्शाता है और यह सुनिश्चित करता है कि धन की कमी किसी के जीवन के लिए बाधा न बने। आपातकालीन उपचार के दौरान होने वाले व्यय की प्रतिपूर्ति के लिए भी सरकारी तंत्र में विशिष्ट प्रावधान किए गए हैं। यह अधिनियम स्वास्थ्य सेवा को एक लाभ आधारित उद्योग के बजाय एक मौलिक मानवीय अधिकार के रूप में स्थापित करता है।

86. (2) रक्त भंडारण इकाई
ग्रामीण उप-स्वास्थ्य केंद्र स्वास्थ्य प्रणाली की सबसे प्राथमिक इकाई है जो बुनियादी निवारक सेवाएँ प्रदान करने के लिए अभिकल्पित की गई है। इन केंद्रों पर सामान्यतः टीकाकरण के उपकरण, बच्चों का वजन करने वाली मशीनें और कुछ अनिवार्य दवाएं उपलब्ध होती हैं। ये सुविधाएँ माताओं और बच्चों के स्वास्थ्य की प्रारंभिक निगरानी और प्राथमिक उपचार के लिए पर्याप्त मानी जाती हैं।
एक उप-स्वास्थ्य केंद्र की संसाधनों की सीमा को देखते हुए वहां रक्त भंडारण इकाई जैसी जटिल व्यवस्था होना संभव नहीं है। रक्त भंडारण के लिए निरंतर बिजली आपूर्ति और विशेषज्ञ तकनीशियनों की आवश्यकता होती है जो केवल बड़े अस्पतालों या सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में ही संभव है। अतः रक्त भंडारण सुविधा इस केंद्र के मानक अवसंरचना घटकों का हिस्सा नहीं है, जो इसकी प्रकृति को स्पष्ट करती है।

87. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में शिशु मृत्यु दर का शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक होना एक चिंताजनक तथ्य है जो स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच में अंतर को दर्शाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी कई प्रसव घरों में ही होते हैं जहाँ सुरक्षित परिस्थितियों का अभाव होता है, जिससे संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त, नवजात शिशुओं के लिए विशेषज्ञ देखभाल की कमी स्पष्ट है।
आपातकालीन स्थितियों में दूरस्थ गाँवों से विशेषज्ञ अस्पतालों तक पहुँचने में होने वाली देरी भी शिशुओं की जान जोखिम में डालती है। शहरी क्षेत्रों में बेहतर अस्पताल, त्वरित एम्बुलेंस सेवाएँ और उच्च स्तरीय नवजात देखभाल इकाइयाँ उपलब्ध होती हैं, जो मृत्यु दर को कम करने में सहायक हैं। अतः ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं और परिवहन नेटवर्क को सुदृढ़ करके ही इस खाई को पाटना संभव है।

88. (2) 18
जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर की गणना अशोधित जन्म दर और अशोधित मृत्यु दर के बीच के अंतर को निकाल कर की जाती है। यह संकेतक किसी क्षेत्र की जनसंख्या में होने वाली वास्तविक वृद्धि को बिना प्रवासन के प्रभाव के दर्शाता है। यदि किसी जिले की जन्म दर 24 है और मृत्यु दर प्रति हजार पर 6 है, तो वास्तविक शेष वृद्धि 18 प्राप्त होती है।
यह सांख्यिकीय आँकड़ा स्वास्थ्य योजनाकारों को भविष्य की जनसंख्या वृद्धि और तदनुसार आवश्यक संसाधनों के पूर्वानुमान में सहायता प्रदान करता है। 18 प्रति हजार की यह वृद्धि दर दर्शाती है कि समाज में मृत्यु दर पर नियंत्रण पाया जा चुका है, लेकिन जन्म दर अभी भी संतुलित होने की प्रक्रिया में है। जनसंख्या को स्थिर करने के लिए परिवार नियोजन के माध्यम से जन्म दर घटाना आवश्यक है।

89. (1) I, II और IV
राजस्थान में आयुष्मान भारत योजना और राज्य की स्वास्थ्य बीमा योजनाओं का एकीकरण स्वास्थ्य सेवाओं के लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम था। इस एकीकरण का मुख्य

NODIA

77. (1) ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी → मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी → निदेशक (जन स्वास्थ्य)

राजस्थान में स्वास्थ्य प्रशासन का ढांचा एक स्पष्ट पदानुक्रमित क्रम का पालन करता है जो जमीनी स्तर से राज्य मुख्यालय तक विस्तृत है। ब्लॉक स्तर पर ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी सभी स्वास्थ्य गतिविधियों के समन्वय के लिए जिम्मेदार होते हैं। जिला स्तर पर यह जिम्मेदारी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी की होती है, जो संपूर्ण स्वास्थ्य प्रबंधन करते हैं।

राज्य स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं के उच्चतम प्रशासनिक नेतृत्व के लिए निदेशक (जन स्वास्थ्य) का पद होता है। यह अधिकारी राज्य सरकार की नीतियों के क्रियान्वयन और जिलों को दिशा-निर्देश जारी करने के लिए उत्तरदायी है। यह सुव्यवस्थित पदानुक्रम सुनिश्चित करता है कि स्वास्थ्य सेवाओं की निगरानी में कोई बाधा न आए और सरकारी निर्देशों का पालन प्रत्येक स्तर पर प्रभावी ढंग से हो सके।

78. (4) पीसीटीएस (PCTS)

राजस्थान में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं की रीयल-टाइम निगरानी के लिए पीसीटीएस का उपयोग किया जाता है। यह एक अत्यंत प्रभावी ऑनलाइन सॉफ्टवेयर है जो प्रत्येक गर्भवती महिला और बच्चे के स्वास्थ्य रिकॉर्ड और टीकाकरण की स्थिति को डिजिटल रुप से ट्रैक करता है। इसके माध्यम से स्वास्थ्य कर्मी समय पर आवश्यक सेवाएँ प्रदान करने के लिए निरंतर सतर्क रहते हैं।

इस प्रणाली ने डेटा प्रबंधन में क्रांतिकारी बदलाव किया है, जिससे कागजी कार्रवाई कम हुई है और रिपोर्टिंग में सटीकता आई है। पीसीटीएस के माध्यम से जोखिम वाली गर्भधारण की पहचान करना आसान हो गया है, जिससे मातृ मृत्यु दर को कम करने में मदद मिलती है। यह तकनीकी पहल राजस्थान के स्वास्थ्य विभाग को आधुनिक बनाने के साथ स्वास्थ्य सुधार में सहायक साबित हुई है।

79. (2) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र - 4 से 6 बिस्तर

सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में विभिन्न स्तरों के स्वास्थ्य केंद्रों को उनकी सेवा क्षमता के आधार पर विशिष्ट शैय्या क्षमता प्रदान की गई है। एक मानक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में सामान्यतः चार से छह बिस्तरों की व्यवस्था होती है जो स्थानीय स्तर पर सामान्य प्रसव और प्राथमिक उपचार के लिए पर्याप्त होते हैं। यह छोटी क्षमता सुनिश्चित करती है कि बुनियादी भर्ती सुविधा सुलभ हो।

इसके विपरीत, उप-स्वास्थ्य केंद्र केवल एक ओपीडी इकाई के रूप में कार्य करते हैं और वहां सामान्यतः भर्ती की सुविधा नहीं होती। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में बिस्तरों की संख्या 30 होती है, जबकि जिला अस्पतालों में यह संख्या 100 से अधिक हो सकती है। इन मानदंडों का सही सुमेलन यह समझने में मदद करता है कि किस स्तर पर कितनी चिकित्सा क्षमता उपलब्ध है।

80. (2) जटिलताओं की पहचान करने और प्रथम रेफरल इकाइयों तक पहुँचने में विलंब

दूरस्थ क्षेत्रों में मातृ मृत्यु दर के उच्च होने का मुख्य कारण वह समय अंतराल है जिसे 'थ्री डिले मॉडल' के रूप में जाना जाता है। इसमें पहला विलंब जटिलता को पहचानने और निर्णय लेने में होता है, और दूसरा विलंब दुर्गम रास्तों के कारण अस्पताल पहुँचने में होता है। यदि समय पर परिवहन उपलब्ध न हो, तो मरीज की स्थिति गंभीर हो सकती है।

तीसरा विलंब अस्पताल पहुँचने के बाद उचित उपचार मिलने में होने वाली देरी है। ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में कुशल चिकित्सकों और आपातकालीन रेफरल सुविधाओं की कमी इस समस्या को और अधिक बढ़ा देती है। अतः मातृ मृत्यु को रोकने के लिए एम्बुलेंस सेवाओं को मजबूत करना और स्थानीय स्तर पर कुशल प्रसव सहायकों की उपस्थिति सुनिश्चित करना सबसे महत्वपूर्ण कदम है।

81. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं

राजस्थान में गैर-संचारी रोगों के बढ़ते खतरे को देखते हुए आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में जनसंख्या-आधारित स्क्रीनिंग पर विशेष जोर दिया जा रहा है। यहाँ आने वाले नागरिकों की उच्च रक्तचाप और मधुमेह जैसी बीमारियों के लिए नियमित जाँच की जाती है ताकि शुरुआती स्तर पर इलाज शुरू हो सके। यह निवारक दृष्टिकोण भविष्य में होने वाली गंभीर स्वास्थ्य जटिलताओं को कम करता है।

वर्तमान आँकड़ों के अनुसार, राज्य में संक्रामक रोगों की तुलना में अब गैर-संचारी रोगों के कारण होने वाली मौतों का अनुपात अधिक दर्ज किया जा रहा है। यह जनसांख्यिकीय बदलाव जीवनशैली में आए परिवर्तनों और बढ़ते शहरीकरण का परिणाम है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए स्वास्थ्य प्रणालियों को केवल उपचार तक सीमित न रहकर निवारक और जीवनशैली परामर्श को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

82. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv

राजस्थान में कोविड-19 महामारी के प्रबंधन के दौरान विभिन्न तकनीकी और प्रशासनिक घटकों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया गया। भीलवाड़ा मॉडल ने संक्रमण को रोकने के लिए कठोर नियंत्रण और गहन स्क्रीनिंग की रणनीति अपनाई, जिसने पूरे देश के लिए एक उदाहरण पेश किया। इसके साथ ही, ई-संजीवनी जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से टेलीमेडिसिन परामर्श सेवाएँ प्रदान की गईं जिससे लॉकडाउन में सहायता मिली।

मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के दायरे का विस्तार कर इसमें कोविड-19 के उपचार को भी शामिल किया गया, जिससे आम जनता को निजी अस्पतालों में भी निःशुल्क इलाज मिल सका। वायरस की पुष्टि के लिए आरटी-पीसीआर जाँचों के जाल को पूरे राज्य में फैलाया गया ताकि संक्रमितों का शीघ्र पता लग सके। इन समन्वित प्रयासों ने महामारी के प्रभाव को न्यूनतम किया।

Downloaded from www.pdf.tube

विवाहित या विधवा होना चाहिए ताकि वह स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशीलता से कार्य कर सके।
यह स्पष्ट है कि आशा कार्यकर्ता एक सामुदायिक स्वयंसेवक है न कि एक डॉक्टर, इसलिए उसके लिए एमबीबीएस की डिग्री होना अनिवार्य नहीं है। उनकी न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता आमतौर पर आठवीं या दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होना तय की गई है ताकि वे बुनियादी रिपोर्टिंग को समझ सकें। उनका मुख्य कार्य स्वास्थ्य परामर्श और टीकाकरण जैसे कार्यक्रमों में सहायता करना है, जिसके लिए डिग्री की आवश्यकता नहीं होती।

96. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
राजस्थान में स्वास्थ्य बीमा योजनाओं को लागू करने का मुख्य उद्देश्य गरीब परिवारों को महँगी चिकित्सा सेवाओं के कारण होने वाले वित्तीय संकट से बचाना है। ये योजनाएं निजी अस्पतालों में भी कैशलेस इलाज सुनिश्चित करती हैं, जिससे निर्धन वर्ग को उच्च स्तरीय स्वास्थ्य सेवा सुलभ होती है। यह पहल स्वास्थ्य क्षेत्र में वित्तीय समानता लाने और लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में प्रभावी है।
हालांकि यह कहना गलत होगा कि सरकारी अस्पतालों के कारण स्वास्थ्य पर होने वाला व्यक्तिगत व्यय ऐतिहासिक रूप से शून्य रहा है। सरकारी सुविधाओं में भी अक्सर मरीजों को कुछ महँगी दवाओं या जाँचों के लिए अपनी जेब से खर्च करना पड़ता था। व्यक्तिगत व्यय को कम करने की दिशा में अभी भी प्रयासों की आवश्यकता है, और निःशुल्क दवा जैसी योजनाएं इसी दिशा में एक सुधार हैं।

97. (2) IV, II, I, III
राजस्थान के स्वास्थ्य प्रशासनिक ढांचे को उनके अधिकार क्षेत्र और जनसंख्या कवरेज के आधार पर व्यवस्थित किया जा सकता है। सबसे बड़े स्तर पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा निदेशालय होता है जो संपूर्ण राज्य की स्वास्थ्य नीतियों की देखरेख करता है। इसके बाद जिला स्वास्थ्य समिति का स्थान आता है, जिसका अधिकार क्षेत्र एक संपूर्ण जिले तक सीमित होता है और वह प्रबंधन के लिए उत्तरदायी है।
पदानुक्रम में इसके नीचे ब्लॉक मुख्य चिकित्सा कार्यालय आता है, जो जिले के एक विशिष्ट ब्लॉक की स्वास्थ्य गतिविधियों का समन्वय करता है। सबसे सूक्ष्म स्तर पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र होता है, जो केवल कुछ गाँवों को अपनी चिकित्सा सेवाएं प्रदान करता है। यह व्यवस्थित संरचना सुनिश्चित करती है कि राज्य के उच्चतम स्तर से गाँव के अंतिम केंद्र तक स्वास्थ्य सेवाओं का प्रबंधन सुचारु रहे।

98. (3) आयुष्मान भारत पीएम-जेएवाई (PM-JAY) - 2018 में प्रारंभ हुई
भारत की स्वास्थ्य प्रणाली में आयुष्मान भारत योजना का प्रारंभ वर्ष 2018 में एक ऐतिहासिक घटना के रूप में हुआ था जिसने स्वास्थ्य सुरक्षा के दायरे को व्यापक बनाया। यह योजना दुनिया की सबसे बड़ी पूर्णतः सरकारी वित्तपोषित स्वास्थ्य बीमा योजना मानी जाती है जो करोड़ों परिवारों को लाभान्वित करती है। राजस्थान ने इसे अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार अपनाकर स्थानीय ढांचे के साथ एकीकृत किया है।
अन्य योजनाओं के वर्षों के संदर्भ में, मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना 2011 में शुरु हुई थी, जबकि चिरंजीवी योजना 2021 में लागू की गई। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की शुरुआत वर्ष 2005 में हुई थी जिसने ग्रामीण स्वास्थ्य की नींव रखी। इन वर्षों का सही ज्ञान स्वास्थ्य नीतियों के विकास और उनके प्रभाव को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है, जो राज्य की निरंतर प्रगति को दर्शाते हैं।

99. (3) ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों को विशेषज्ञ चिकित्सकों से जोड़ने वाली टेली-परामर्श सेवाएं
'ई-संजीवनी' प्लेटफॉर्म डिजिटल स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम है, जो सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों और विशेषज्ञ चिकित्सकों के बीच की दूरी को समाप्त करता है। यह एक टेलीमेडिसिन सेवा है जिसके माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर मौजूद डॉक्टर बड़े अस्पतालों के विशेषज्ञों से ऑनलाइन परामर्श प्राप्त कर सकते हैं। इसके माध्यम से मरीज को स्थानीय स्तर पर ही विशेषज्ञ सलाह मिल जाती है।
यह प्लेटफॉर्म न केवल समय और यात्रा के खर्च को बचाता है, बल्कि मरीजों को अनावश्यक रेफरल की परेशानी से भी मुक्ति दिलाता है। विशेष रूप से महामारी के दौरान और दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए यह सेवा जीवनदायिनी सिद्ध हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस प्रयोग ने राजस्थान जैसे विशाल भौगोलिक क्षेत्र वाले राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच को एक नए स्तर पर पहुँचाया है।

NODIA

100. (4) व्यापक प्राथमिक देखभाल, गैर-संचारी रोग स्क्रीनिंग और योग
आयुष्मान भारत मिशन के अंतर्गत मौजूदा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और उप-स्वास्थ्य केंद्रों को आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के रूप में उन्नत किया जा रहा है। इन केंद्रों का मुख्य उद्देश्य केवल मातृ स्वास्थ्य तक सीमित न रहकर व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करना है। इसमें उच्च रक्तचाप और मधुमेह जैसी बीमारियों की नियमित स्क्रीनिंग के साथ-साथ स्वस्थ जीवनशैली के लिए योग को भी जोड़ा गया है।
यह परिवर्तन स्वास्थ्य सेवाओं को समुदाय के और अधिक निकट लाने तथा निवारक स्वास्थ्य देखभाल पर ध्यान केंद्रित करने के लिए किया गया है। इन केंद्रों पर दवाओं की उपलब्धता और जाँच की सुविधाएं भी बढ़ाई गई हैं जिससे ग्रामीण आबादी को शहरों की ओर कम जाना पड़े। यह स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में एक समग्र और आधुनिक दृष्टिकोण की ओर बढ़ता हुआ महत्वपूर्ण कदम है।

अध्याय 21

राजस्थान सरकार की प्रमुख कल्याणकारी योजनाएं

1. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
   (1) शहरी क्लीनिकों में मुफ्त नैदानिक सेवाएँ प्रदान करना
   (2) परिवारों को व्यापक स्वास्थ्य बीमा प्रदान करना
   (3) कमजोर समूहों को रियायती खाद्यान्न की आपूर्ति करना
   (4) मातृत्व पोषण भत्ता प्रदान करना
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. पालनहार योजना विशेष रूप से निम्नलिखित में से किस लक्षित समूह के लिए बनाई गई है?
   (1) पारिवारिक वातावरण के भीतर अनाथ और निराश्रित बच्चों की सहायता
   (2) शहरी पथ विक्रेताओं और छोटे व्यापारियों के लिए वित्तीय ऋण
   (3) लघु और सीमांत किसानों के लिए बिजली सब्सिडी
   (4) बेरोजगार युवाओं के लिए कौशल प्रशिक्षण और व्यावसायिक मार्गदर्शन
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन मुख्यमंत्री राजश्री योजना का सही वर्णन करता है?
   (1) शहरी गरीबों के लिए रियायती गर्म और पौष्टिक भोजन
   (2) सूखा प्रवण गांवों में जल संरक्षण सुनिश्चित करना
   (3) बालिकाओं का कल्याण और सकारात्मक पालन-पोषण
   (4) परिवारों की महिला मुखियाओं को मुफ्त स्मार्टफोन का वितरण
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. भामाशाह योजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
   (1) यह वित्तीय समावेशन और प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण को बढ़ावा देती है।
   (2) यह महिलाओं को परिवार की पहचान का केंद्र बनाकर उन्हें सशक्त बनाती है।
   (3) इसने राजस्थान में एकीकृत पारिवारिक पहचान के लिए एक आधारभूत मॉडल के रूप में कार्य किया।
   (4) यह परिवार के सबसे बड़े पुरुष सदस्य को परिवार के वित्तीय मुखिया के रूप में पहचानती है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. सूची I (योजना) को सूची II (प्राथमिक फोकस) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
   सूची I: (योजना)
   A. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना
   B. पालनहार योजना
   C. मुख्यमंत्री राजश्री योजना
   D. भामाशाह योजना
   सूची II: (प्राथमिक फोकस)
   i. महिला परिवार की वित्तीय मुखिया के रूप में
   ii. बालिका कल्याण
   iii. अनाथ और निराश्रित बच्चों की देखभाल
   iv. स्वास्थ्य बीमा
   कूट:
   (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
   (2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
   (3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
   (4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. कल्याणकारी लाभों के वितरण को सुव्यवस्थित करने के लिए एकल पारिवारिक पहचान पत्र प्रणाली के रूप में कार्य करने हेतु कौन-सी योजना शुरु की गई थी?
   (1) राजस्थान मिशन 2030
   (2) जन आधार
   (3) अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना
   (4) मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में सहायता प्रदान करना है?
   (1) महिला किसानों को बीज और उर्वरकों की प्रत्यक्ष आपूर्ति
   (2) महिला मुखिया वाले परिवारों के लिए बिजली पर सब्सिडी देना
   (3) लड़कियों के लिए मुफ्त उच्च शिक्षा की सुविधा प्रदान करना
   (4) गर्भवती और धात्री महिलाओं के लिए पोषण संबंधी सहायता
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए:
   कथन (A): अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना कमजोर वर्गों की

Click Here to Buy book on Amazon

सहायता करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
कारण (R): इस योजना का उद्देश्य बुनियादी आहार संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अत्यधिक रियायती खाद्यान्न वितरित करना है।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. उस योजना की पहचान करें जो विशेष रूप से राज्य संचालित स्वास्थ्य सुविधाओं में रोगियों को मुफ्त दवाएं प्रदान करने पर केंद्रित है।
(1) मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना
(2) मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना
(3) मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना
(4) इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. इसका उद्देश्य मुफ्त नैदानिक सेवाएँ प्रदान करना है।
II. इसके तहत नागरिकों को प्रयोगशाला तक पहुँच के लिए मासिक प्रीमियम का भुगतान करना आवश्यक है।
III. यह स्वास्थ्य देखभाल पर होने वाले जेब से व्यय को कम करने की पहल का पूरक है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. इंदिरा रसोई योजना का प्राथमिक प्रावधान क्या है?
(1) स्थानीय किसानों के लिए रियायती कृषि बीज और उपकरण
(2) ग्रामीण महिलाओं को मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर वितरित करना
(3) दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में राज्य वित्त पोषित किराना स्टोर स्थापित करना
(4) शहरी गरीबों के लिए रियायती पौष्टिक भोजन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. वे वरिष्ठ नागरिकों को वित्तीय सहायता प्रदान करती हैं।
II. इनमें विधवाओं के लिए लक्षित प्रावधान शामिल हैं।
III. वे दिव्यांग व्यक्तियों को नियमित वित्तीय सहायता प्रदान करती हैं।
IV. वे विशेष रूप से शहरी नगरपालिका क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों के लिए उपलब्ध हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. कौन-सी योजना स्पष्ट रूप से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) क्षेत्र का समर्थन करने के लिए संरचित है?
(1) किसानों के लिए मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना
(2) शहरी गरीबों के लिए इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना
(3) मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना
(4) राजस्थान युवा विकास प्रेरक प्रशिक्षण कार्यक्रम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. राजस्थान युवा विकास प्रेरक कार्यक्रम का मुख्य एजेंडा क्या है?
(1) सभी कॉलेज स्नातकों के लिए मासिक बेरोजगारी भत्ता
(2) केवल विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए रियायती परिवहन
(3) पारंपरिक ग्रामीण कारीगरों के लिए किफायती व्यावसायिक ऋण
(4) राज्य की कल्याणकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार में युवाओं की भागीदारी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. सूची I (योजना) को सूची II (मुख्य विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (योजना)
A. जन आधार
B. इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना
C. अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना
D. मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना
सूची II: (मुख्य विशेषता)
i. रियायती खाद्यान्न
ii. मुफ्त दवा
iii. एकल परिवार पहचान पत्र
iv. मातृत्व पोषण
कूट:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

16. मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना को क्या प्रदान करके किसानों के वित्तीय बोझ को कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है?
(1) रियायती बीज, उर्वरक और कृषि उपकरण
(2) कृषि बिजली कनेक्शन पर बिजली सब्सिडी
(3) मोटे अनाजों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी
(4) कृषि मशीनरी चलाने के लिए मुफ्त डीजल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. निम्नलिखित में से कौन मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के केंद्रीय लक्ष्य का सटीक वर्णन करता है?
(1) प्रमुख अंतर-राज्यीय नदियों पर बड़े बांधों का निर्माण
(2) गांवों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जल संरक्षण
(3) शहरी झुग्गी निवासियों के लिए मुफ्त बोतलबंद पेयजल
(4) अलवणीकरण अपनाने वाले उद्योगों को वित्तीय ऋण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. निम्नलिखित योजनाओं पर विचार कीजिए। निम्नलिखित में से कौन-सा क्रम बालिकाओं के लिए शैशवावस्था से लेकर उच्च शिक्षा तक की लक्षित राज्य कल्याणकारी योजनाओं के तार्किक अनुक्रम का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(1) गार्गी पुरस्कार → पालनहार योजना → मुख्यमंत्री राजश्री योजना
(2) पालनहार योजना → गार्गी पुरस्कार → मुख्यमंत्री राजश्री योजना
(3) मुख्यमंत्री राजश्री योजना → पालनहार योजना → गार्गी पुरस्कार
(4) मुख्यमंत्री राजश्री योजना → गार्गी पुरस्कार → राजस्थान युवा विकास प्रेरक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) इसे शहरी गरीबों और पथ विक्रेताओं की सहायता के लिए डिज़ाइन किया गया है।
(2) यह सुलभ क्रेडिट लाइनों के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
(3) इसके लिए आवेदकों को कृषि भूमि को संपार्श्विक के रूप में गिरवी रखना आवश्यक है।
(4) इसका उद्देश्य छोटे शहरी व्यवसायों को उच्च ब्याज वाले निजी साहूकारों से बचाना है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. इसे डिजिटल विभाजन को कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
II. यह लाभार्थियों को एक मुफ्त स्मार्टफोन प्रदान करती है।
III. इस योजना की प्राथमिक लाभार्थी परिवारों की महिला मुखिया हैं।
IV. इसमें मुफ्त इंटरनेट कनेक्टिविटी की एक विशिष्ट अवधि शामिल है।
V. यह विशेष रूप से सरकारी कॉलेजों के पुरुष छात्रों पर लागू होती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना का मौलिक उद्देश्य क्या है?
(1) ग्रामीण छात्रों को मुफ्त अंतर्राष्ट्रीय उड़ान टिकट प्रदान करना
(2) बड़े पैमाने के उद्योगों के लिए माल ढुलाई परिवहन को सब्सिडी देना
(3) ग्रामीण परिवहन सहायता के माध्यम से कनेक्टिविटी बढ़ाना
(4) सभी ग्रामीण परिवारों को मुफ्त इलेक्ट्रिक वाहन वितरित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. गार्गी पुरस्कार और बालिका प्रोत्साहन योजनाएं मुख्य रूप से किस क्षेत्र की ओर उन्मुख हैं?
(1) मातृ स्वास्थ्य देखभाल और संस्थागत प्रसव का प्रोत्साहन
(2) बालिका शिक्षा प्रोत्साहन और शैक्षणिक उत्कृष्टता
(3) किशोरियों के लिए पोषण संबंधी सहायता
(4) महिला उद्यमियों के लिए वित्तीय ऋण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

23. राजस्थान मिशन 2030 क्या दर्शाता है?
(1) प्राकृतिक आपदा प्रबंधन के लिए एक तत्काल राहत कोष
(2) सभी संक्रामक रोगों को समाप्त करने के लिए एक स्वास्थ्य शासनादेश
(3) सिंचाई परियोजनाओं को पूरा करने के लिए एक विशेष ढांचा
(4) राज्य के लिए एक दीर्घकालिक विकास दृष्टि पत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. निम्नलिखित में से कौन-सी योजना मुख्य रूप से प्रत्यक्ष स्वास्थ्य क्षेत्र पर केंद्रित नहीं है?
(1) मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना
(2) मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना
(3) मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना
(4) मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. सूची I (योजना) को सूची II (लाभार्थी/फोकस) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (योजना)
A. इंदिरा रसोई योजना
B. सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं
C. मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना
D. राजस्थान युवा विकास प्रेरक
सूची II: (लाभार्थी/फोकस)
i. वृद्धावस्था, विधवा, दिव्यांगता
ii. शहरी गरीब
iii. युवा विकास
iv. एमएसएमई क्षेत्र
कूट:
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. पालनहार योजना के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन इसके अंतर्निहित सामाजिक दर्शन का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) पारिवारिक परिवेश में निराश्रित बच्चों के लिए राज्य का संरक्षण
(2) राज्य की सुविधाओं में अनाथ बच्चों की संस्थागत देखभाल
(3) राज्य कॉर्पोरेट घरानों को अनाथ बच्चों को कानूनी रूप से गोद लेने का आदेश देता है
(4) राज्य नाबालिग बच्चों की उपेक्षा करते हुए केवल वयस्कों के पुनर्वास पर ध्यान केंद्रित करता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. मुख्यमंत्री राजश्री योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
कथन I: इसका उद्देश्य कन्या भ्रूण हत्या को रोकना और लिंगानुपात में सुधार करना है।
कथन II: बालिका के जन्म, टीकाकरण और शैक्षिक चरणों से जुड़े कई स्तरों पर वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(2) कथन II सत्य है, लेकिन कथन I असत्य है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए:
कथन (A): भामाशाह योजना ने राज्य कल्याण वितरण के प्रतिमान को मौलिक रूप से बदल दिया।
कारण (R): इसने वयस्क महिला को परिवार का वित्तीय मुखिया नामित किया, और नकद लाभ सीधे उसके बैंक खाते में स्थानांतरित किए।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. निम्नलिखित में से कौन जन आधार कार्ड की उपयोगिता को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(1) स्थानीय निकाय चुनावों के लिए एक विशिष्ट पहचान पत्र
(2) अन्य राज्यों की यात्रा करने वाले ग्रामीण नागरिकों के लिए एक यात्रा दस्तावेज
(3) पारदर्शी कल्याण वितरण के लिए एक एकीकृत डेटाबेस
(4) यह पूरी तरह से एक चिकित्सा स्वास्थ्य रिकॉर्ड कार्ड है जो पिछली सर्जरी की जानकारी रखता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह मातृ और बाल अल्पपोषण की समस्या का समाधान करती है।
II. यह विशिष्ट मातृ स्वास्थ्य व्यवहारों से सीधे जुड़े नकद लाभ प्रदान करती है।
III. इसका उद्देश्य माता की उच्च शिक्षा के लिए वित्त पोषण करना है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. कौन-सी योजना समाज के आर्थिक रूप से वंचित वर्गों को रियायती खाद्यान्न का वितरण सुनिश्चित करती है?
(1) अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना
(2) इंदिरा रसोई योजना
(3) मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना
(4) राजस्थान मिशन 2030
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह रोगियों के जेब से होने वाले व्यय को काफी कम कर देती है।
II. यह सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में आवश्यक दवाएं निःशुल्क प्रदान करती है।
III. यह केवल गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों के लिए उपलब्ध है।
IV. यह दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए एक केंद्रीकृत खरीद प्रणाली पर निर्भर करती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

Click Here to Buy book on Amazon

उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि कोई भी पात्र परिवार बीमा लाभ से वंचित न रहे और डेटा में दोहराव न हो। इससे राज्य भर के मरीजों के लिए सूचीबद्ध निजी अस्पतालों के नेटवर्क का काफी विस्तार हुआ।

एकीकरण के माध्यम से प्रशासन को केंद्रीकृत किया गया जिससे दावों के निपटान और निगरानी की प्रक्रिया अधिक कुशल और पारदर्शी बन गई। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यद्यपि केंद्र सरकार महत्वपूर्ण वित्तीय सहायता प्रदान करती है, लेकिन सभी लाभार्थियों के प्रीमियम का पूरा बोझ केंद्र नहीं उठाता, बल्कि राज्य सरकार भी बड़ी हिस्सेदारी निभाती है। इस संयुक्त प्रयास से ही राजस्थान एक मॉडल राज्य बना है।

90. (1) एकीकृत वेक्टर प्रबंधन और कीटनाशक उपचारित मच्छरदानी

जनजातीय और पिछड़े क्षेत्रों में मलेरिया जैसे रोगों के उन्मूलन के लिए एक दीर्घकालिक और बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है। एकीकृत वेक्टर प्रबंधन के तहत मच्छरों के प्रजनन स्थलों को वैज्ञानिक तरीके से नष्ट किया जाता है और पर्यावरण को स्वच्छ रखा जाता है। इसके साथ ही, कीटनाशक उपचारित मच्छरदानियों का वितरण ग्रामीणों को रात के समय सुरक्षा प्रदान करने का एक प्रभावी और सस्ता उपाय है।

इन उपायों के साथ-साथ समुदाय की सक्रिय भागीदारी और स्वास्थ्य शिक्षा भी अनिवार्य है ताकि लोग स्वयं अपने परिवेश की स्वच्छता का ध्यान रख सकें। केवल उपचारात्मक दवाएं वितरित करने से बीमारी की पुनरावृत्ति को नहीं रोका जा सकता, जबकि मच्छरों पर नियंत्रण पाने से बीमारी के संचरण चक्र को स्थायी रूप से तोड़ा जा सकता है। यह निवारक दृष्टिकोण ही जनजातीय स्वास्थ्य हेतु स्थायी परिणाम प्रदान करता है।

91. (4) उच्च महिला साक्षरता दर और औपचारिक कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी

किसी क्षेत्र की कुल प्रजनन दर कई सामाजिक और आर्थिक कारकों से गहराई से प्रभावित होती है जिसमें शिक्षा और जागरूकता की भूमिका प्रमुख है। राजस्थान के कुछ जिलों में उच्च प्रजनन दर का मुख्य कारण लड़के की चाहत जैसी सामाजिक रूढ़ियाँ और गर्भनिरोधक विधियों के प्रति जानकारी का अभाव रहा है। साथ ही, कम उम्र में विवाह की प्रथा भी एक बड़ा कारण है।

इसके विपरीत, उच्च महिला साक्षरता दर और महिलाओं की कार्यबल में बढ़ती भागीदारी हमेशा प्रजनन दर को कम करने में सहायक सिद्ध हुई है। शिक्षित और कामकाजी महिलाएँ प्रायः परिवार नियोजन के महत्व को समझती हैं और विवाह की सही आयु के प्रति जागरूक होती हैं, जिससे प्रजनन दर में स्वतः गिरावट आती है। अतः यह कारक उच्च प्रजनन दर का कारण नहीं बल्कि इसे नियंत्रित करने का समाधान है।

92. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii

संचारी रोगों के उन्मूलन के लिए विशिष्ट चिकित्सा रणनीतियां और राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम अपनाए गए हैं जो उनके प्रसार को रोकने में प्रभावी हैं। क्षय रोग के लिए डॉट्स रणनीति का उपयोग किया जाता है, जबकि कुष्ठ रोग को मल्टी-ड्रग थेरेपी के माध्यम से पूरी तरह ठीक किया जा सकता है। ये रणनीतियां स्वास्थ्य प्रणालियों को रोगों के खिलाफ लड़ने के लिए सटीक दिशा प्रदान करती हैं।

पोलियो को जड़ से समाप्त करने के लिए पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान एक वैश्विक सफलता रही है। इसी प्रकार, एड्स के प्रबंधन के लिए एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी रोगियों के जीवन की गुणवत्ता सुधारने और संक्रमण की दर कम करने में सहायक है। इन सभी हस्तक्षेपों का सही सुमेलन यह दर्शाता है कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और सरकारी प्रयासों से इन घातक रोगों को नियंत्रित किया जा चुका है।

93. (3) निर्धन ग्रामीण जनसंख्या के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करना

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन का प्राथमिक अधिदेश भारत की स्वास्थ्य वितरण प्रणाली में क्रांतिकारी बदलाव लाना है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए। इस मिशन का मूल उद्देश्य समाज के निर्धन और वंचित वर्गों के लिए सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ सुनिश्चित करना है। यह मिशन बुनियादी अवसंरचना को सुदृढ़ करने और मातृ-शिशु स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार लाने हेतु योजनाएं तैयार करता है।

मिशन का ध्यान केवल अनुसंधान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जमीनी स्तर पर कार्य करने वाली आशा कार्यकर्ताओं और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को सशक्त बनाने के लिए समर्पित है। एनएचएम यह सुनिश्चित करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को अपनी बुनियादी बीमारियों के इलाज के लिए महंगे निजी अस्पतालों के चक्कर न लगाने पड़ें। इस प्रकार, यह मिशन स्वास्थ्य समानता को बढ़ावा देता है।

94. (1) I, II, III और V

राजस्थान में स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए कई महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक संकेतकों का सहारा लिया जाता है। इसमें संस्थागत जन्म दर और बच्चों का पूर्ण टीकाकरण कवरेज यह दर्शाता है कि स्वास्थ्य सेवाएँ कितनी प्रभावी ढंग से अंतिम व्यक्ति तक पहुँच रही हैं। इसके साथ ही, महिलाओं में एनीमिया और बच्चों में नाटेपन जैसे मानक पोषण सुरक्षा की तस्वीर पेश करते हैं।

ये संकेतक सरकार को उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करते हैं जहाँ सुधार की तत्काल आवश्यकता है और तदनुसार बजट का आवंटन किया जाता है। व्यक्तिगत चिकित्सा व्यय, विशेष रूप से उन्नत शल्य चिकित्सा पर, एक आर्थिक चिंता हो सकती है लेकिन यह बुनियादी पोषण का प्रत्यक्ष मानक नहीं माना जाता। इन सामूहिक संकेतकों के माध्यम से ही राज्य की संपूर्ण स्वास्थ्य प्रगति की निगरानी संभव है।

95. (1) उसके पास किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से औपचारिक चिकित्सा डिग्री (MBBS) होनी चाहिए।

आशा कार्यकर्ता की चयन प्रक्रिया उसकी समुदाय के भीतर जड़ों और प्रभावशीलता पर आधारित होती है। उसे उसी गाँव की निवासी महिला होना चाहिए ताकि वह स्थानीय भाषा को समझ सके और लोगों का विश्वास जीत सके। आशा का चयन ग्राम पंचायत द्वारा किया जाता है और अधिमानतः उसे

NODIA

(4) केवल II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. जल संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान का मुख्य तंत्र क्या है?
(1) उच्च क्षमता वाले इलेक्ट्रिक पंपों से लैस गहरे बोरवेल
(2) विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय वित्त पोषण के माध्यम से पाइप वाले पानी की आपूर्ति करना
(3) समुदाय के नेतृत्व वाली स्थानीय जल संचयन संरचनाएं
(4) गर्मियों के दौरान सभी कृषि जल उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. निम्नलिखित योजनाओं में से उनके प्राथमिक लक्षित भौगोलिक या जनसांख्यिकीय क्षेत्र के आधार पर भिन्न की पहचान कीजिए:
(1) मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना
(2) शहरी क्षेत्रों के लिए इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना
(3) नगरपालिका क्षेत्रों में भोजन उपलब्ध कराने वाली इंदिरा रसोई योजना
(4) शहरी पथ विक्रेता सहायता घटक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सबसे उपयुक्त है?
(1) भूमि रिकॉर्ड और संपत्ति के दस्तावेजों का डिजिटलीकरण
(2) यह सरकारी स्कूलों की सभी भौतिक पाठ्यपुस्तकों को ई-पुस्तकों से बदल देती है।
(3) यह प्रत्येक ग्राम पंचायत कार्यालय को मुफ्त ब्रॉडबैंड कनेक्शन प्रदान करती है।
(4) स्मार्टफोन और इंटरनेट के माध्यम से महिलाओं के लिए डिजिटल समावेशन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना किस प्राथमिक कमी को दूर करने का प्रयास करती है?
(1) प्रमुख औद्योगिक केंद्रों के बीच खराब हवाई संपर्क
(2) दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों को जोड़ने वाला सीमित सार्वजनिक परिवहन
(3) अत्यधिक आबादी वाले शहरी केंद्रों में अपर्याप्त पार्किंग स्थान
(4) औद्योगिक क्षेत्रों के लिए समर्पित माल गलियारों की अनुपस्थिति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सूची I (योजना) को सूची II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (योजना)
A. मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना
B. गार्गी पुरस्कार
C. राजस्थान मिशन 2030
D. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना
सूची II: (विवरण)
i. स्वास्थ्य बीमा कवरेज
ii. दीर्घकालिक राज्य विकास दृष्टि
iii. ग्रामीण परिवहन सहायता
iv. बालिका शिक्षा प्रोत्साहन
कूट:
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. बालिका प्रोत्साहन योजना महिला शैक्षणिक सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करके किस अन्य प्रमुख योजना की पूरक के रूप में कार्य करती है?
(1) मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना
(2) मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान
(3) इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना
(4) गार्गी पुरस्कार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित में से कौन आने वाले वर्षों में कई क्षेत्रों में व्यापक विकास के लिए एक लक्ष्य और मार्गदर्शिका निर्धारित करता है?
(1) राजस्थान मिशन 2030
(2) भामाशाह डिजिटल योजना
(3) जन आधार कार्ड प्रणाली
(4) पालनहार योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. निम्नलिखित कथन (A) and कारण (R) पर विचार कीजिए:
कथन (A): मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना ने स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच में काफी सुधार किया है।
कारण (R): यह एक सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा योजना के रूप में कार्य करती है, जिससे परिवार एक महत्वपूर्ण वित्तीय सीमा तक कैशलेस चिकित्सा उपचार प्राप्त कर सकते हैं।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. कल्याणकारी प्रशासन के संदर्भ में, "पालनहार" कौन है?
(1) ग्रामीण प्राथमिक स्कूलों में नियुक्त सरकारी शिक्षक
(2) राज्य सहायता से अनाथ बच्चे का पालन-पोषण करने वाला देखभालकर्ता
(3) जल संरक्षण परियोजनाओं के लिए तकनीकी लेखा

Downloaded from www.pdf.tube

99. मुख्यमंत्री राजश्री योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

I. यह बालिका की शैक्षिक प्रगति के अनुरूप संरचित वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

II. यह पहली किस्त को चिकित्सा सुविधा में जन्म से जोड़कर संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देती है।

III. यह गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों को बाहर रखती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. जन आधार प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

I. यह निवासियों के जनसांख्यिकीय डेटा के एकल संग्रह के रूप में कार्य करती है।

II. यह राज्य में प्रत्येक योजना के लिए अलग-अलग पहचान पत्र जारी करती है।

III. यह कल्याणकारी उद्देश्यों के लिए महिला को परिवार के मुखिया के रूप में मान्यता देती है।

IV. यह एक पारदर्शी ई-गवर्नेंस पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की सुविधा प्रदान करती है।

V. यह कागजी राशन रिकॉर्ड बनाए रखने की आवश्यकता को समाप्त करती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा कथन गलत है?

(1) केवल I और III
(2) केवल II
(3) केवल IV और V
(4) केवल I, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

(3) उच्च स्तरीय निजी मेडिकल कॉलेजों की स्थापना करना
(4) सटीक चिकित्सा निदान में आने वाली वित्तीय बाधा को कम करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित पर विचार कीजिए: कौन-सा तार्किक अनुक्रम बालिका से लेकर परिवार इकाई और अंत में विकासात्मक मार्ग तक समाज की इकाइयों को संबोधित करने वाली योजनाओं का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) मुख्यमंत्री राजश्री योजना → जन आधार → राजस्थान मिशन 2030
(2) जन आधार → राजस्थान मिशन 2030 → मुख्यमंत्री राजश्री योजना
(3) राजस्थान मिशन 2030 → जन आधार → मुख्यमंत्री राजश्री योजना
(4) मुख्यमंत्री राजश्री योजना → राजस्थान मिशन 2030 → जन आधार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. शहरी परिवेश में इंदिरा रसोई योजना का प्रत्यक्ष सामाजिक-आर्थिक प्रभाव क्या है?
(1) स्थानीय अचल संपत्ति बाजार की कीमतों में महत्वपूर्ण वृद्धि
(2) बहुराष्ट्रीय फास्ट-फूड निगमों के लिए उच्च लाभ
(3) कृषि सब्सिडी की आवश्यकता का उन्मूलन
(4) मजदूरों और बेघरों के लिए खाद्य असुरक्षा में कमी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. वे श्रम बाजार में भाग लेने में असमर्थ व्यक्तियों के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करती हैं।
II. वे मांग करती हैं कि पेंशन के लिए पात्र होने हेतु लाभार्थी कठिन शारीरिक श्रम करें।
III. वे समय-समय पर नकद हस्तांतरण प्रदान करती हैं।
IV. इनमें गंभीर दिव्यांगता वाले व्यक्तियों के लिए कवरेज शामिल है।
V. वे आदेश देती हैं कि लाभार्थी पेंशन की राशि को राज्य संचालित फंडों में निवेश करें।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और V
(3) केवल III और IV
(4) केवल I, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना के तहत सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSME) के लिए मुख्य रूप से क्या प्रावधान किया गया है?
(1) बड़ी औद्योगिक विनिर्माण इकाइयों को अनिवार्य रूप से बंद करना
(2) सभी श्रम कानूनों को पूरी तरह से समाप्त करना
(3) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए व्यावसायिक ऋणों पर ब्याज सब्सिडी
(4) सभी लघु उद्योगों को विशेष आर्थिक क्षेत्रों में स्थानांतरित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. राजस्थान युवा विकास प्रेरक के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(1) यह विशेष रूप से इंजीनियरिंग छात्रों को विदेशी छात्रवृत्ति प्रदान करती है।
(2) सभी बेरोजगार स्नातकोत्तरों के लिए प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण
(3) यह सरकारी कर्मचारियों के लिए एक स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना है।
(4) राज्य कल्याण जागरुकता के उत्प्रेरक के रूप में युवा प्रशिक्षण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना के बारे में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) इसे विशेष रूप से शहरी वाणिज्यिक बिजली उपभोक्ताओं के लिए डिज़ाइन किया गया है।
(2) यह बिजली बिलों पर मासिक सब्सिडी प्रदान करती है।
(3) यह खेती की परिचालन लागत को कम करती है।
(4) यह कृषि क्षेत्र को वित्तीय रूप से प्रोत्साहित करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के तहत निर्मित प्राथमिक बुनियादी ढांचे में शामिल हैं:
(1) प्रमुख राज्य एक्सप्रेसवे और स्वचालित टोल प्लाजा
(2) संरक्षण के लिए सूक्ष्म सिंचाई नेटवर्क और एनीकट
(3) सौर ऊर्जा पार्क और पवन ऊर्जा फार्म
(4) बड़े पैमाने पर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. सूची I (योजना) को सूची II (लक्षित क्षेत्र) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (योजना)
A. मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना
B. राजस्थान युवा विकास प्रेरक
C. मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना
D. मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान
सूची II: (लक्षित क्षेत्र)
i. युवा भागीदारी
ii. जल सुरक्षा
iii. कृषि ऊर्जा लागत
iv. एमएसएमई अर्थव्यवस्था
कूट:
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii

Click Here to Buy book on Amazon

(4) सरकारी अस्पतालों द्वारा अपनी आंतरिक प्रयोगशालाएं बंद करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

83. सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
कथन I: ये पेंशन उन लोगों के लिए एक गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करने के राज्य के दायित्व को मानती हैं जो आर्थिक रूप से सक्रिय नहीं हैं।
कथन II: विधवाएं और गंभीर दिव्यांग व्यक्ति इन नियमित नकद हस्तांतरणों के प्रमुख लाभार्थी हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(2) कथन II सत्य है, लेकिन कथन I असत्य है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना विशेष रूप से किसके लिए सहायता प्रदान नहीं करती है?
(1) व्यापार विस्तार के लिए धन की तलाश करने वाले सूक्ष्म उद्यम
(2) कार्यशील पूंजी की आवश्यकता वाली लघु स्तरीय विनिर्माण इकाइयां
(3) तकनीकी उन्नयन ऋण की आवश्यकता वाले मध्यम उद्यम
(4) बड़े बहुराष्ट्रीय निगमों के मुख्यालय का निर्माण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. सूची I (योजना श्रेणी) को सूची II (प्रतिनिधि योजना) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (योजना श्रेणी)
A. स्वास्थ्य बीमा
B. जल संरक्षण
C. ग्रामीण परिवहन
D. मातृ पोषण
सूची II: (प्रतिनिधि योजना)
i. इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना
ii. मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना
iii. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना
iv. मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान
कूट:
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

86. राजस्थान युवा विकास प्रेरक पहल सीधे तौर पर किसमें सुधार के लिए युवाओं की ऊर्जा पर निर्भर करती है?
(1) अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक खेलों में राज्य का प्रदर्शन
(2) कल्याणकारी नीतियों की अंतिम छोर तक पहुँच और जागरूकता
(3) उच्च उपज वाली किस्म के बीजों का उत्पादन
(4) प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की निर्माण गति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

87. मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना के सही उद्देश्य की पहचान करें।
(1) सभी शहरी घरों के लिए मुफ्त सौर पैनल स्थापना
(2) सीमांत किसानों को मुफ्त ट्रैक्टर की आपूर्ति
(3) किसानों के लिए घरेलू रसोई गैस पर सब्सिडी देना
(4) कृषि कार्यों के लिए उपयोग की जाने वाली बिजली पर सब्सिडी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए:
कथन (A): मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान जल प्रबंधन और स्थानीय वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देता है।
कारण (R): जल की कमी वाले क्षेत्रों में टिकाऊ ग्रामीण जल सुरक्षा प्राप्त करने के लिए विकेंद्रीकृत जल संरक्षण महत्वपूर्ण है।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म योजना और उसकी प्राथमिक जनसांख्यिकी को सटीक रूप से दर्शाता है?
(1) बालिका प्रोत्साहन – सरकारी संस्थानों में प्राथमिक विद्यालय की लड़कियां
(2) अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना – बड़े पैमाने के उद्योगपति
(3) इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना – शहरी पथ विक्रेता और शहरी गरीब
(4) गार्गी पुरस्कार – वरिष्ठ नागरिक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

90. मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह प्रदान किए गए स्मार्टफोन के लिए मासिक प्रीमियम वसूलती है।
II. यह उपकरण के प्राथमिक प्राप्तकर्ता के रूप में पुरुषों को लक्षित करती है।
III. यह इंटरनेट कनेक्टिविटी प्रावधानों की पूरी तरह उपेक्षा करती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III

(2) मुख्यमंत्री राजश्री योजना
(3) गार्गी पुरस्कार
(4) माताओं के लिए इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. सूची I (योजना) को सूची II (विशिष्ट लक्षित कार्रवाई) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (योजना)
A. इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना
B. मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना
C. मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना
D. गार्गी पुरस्कार
सूची II: (विशिष्ट लक्षित कार्रवाई)
i. महिलाओं के लिए डिजिटल विभाजन को कम करना
ii. शहरी पथ विक्रेताओं को ऋण प्रदान करना
iii. लड़कियों के बीच शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देना
iv. ग्रामीण क्षेत्रों में गतिशीलता बढ़ाना
कूट:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. जन आधार कार्ड का वैचारिक ढांचा स्थापित करता है कि:
(1) पंजीकरण केवल सबसे बड़े पुरुष सदस्य तक सीमित है
(2) कई सरकारी योजनाओं और सेवाओं के लिए एकल कार्ड
(3) निश्चित शुल्क के साथ अनिवार्य छह महीने की नवीनीकरण प्रक्रिया
(4) यह केवल शहरी नगरपालिका सीमाओं के भीतर मान्य है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना किस व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है?
(1) शहरी क्षेत्रों में जीवनशैली से संबंधित बीमारियों का उन्मूलन
(2) आनुवंशिक रूप से विरासत में मिली बीमारियों का इलाज
(3) पोषण के माध्यम से मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी
(4) जिला अस्पतालों में कॉस्मेटिक सर्जरी को बढ़ावा देना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. निम्नलिखित योजनाओं पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान युवा विकास प्रेरक
II. पालनहार योजना
III. इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना
IV. गार्गी पुरस्कार
निम्नलिखित में से कौन शिशुओं से लेकर युवाओं और अंत में शहरी आर्थिक कारकों को संबोधित करने वाली योजनाओं का सही क्रम दर्शाता है?
(1) II, IV, I, III
(2) II, I, IV, III
(3) IV, II, I, III
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

79. अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह शहरी संपन्न वर्ग को प्रीमियम विदेशी फल वितरित करती है।
(2) यह भुखमरी के विरुद्ध एक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करती है।
(3) यह पात्र लाभार्थियों को रियायती खाद्यान्न की गारंटी देती है।
(4) यह व्यापक गरीबी विरोधी रणनीतियों के अनुरूप है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. इंदिरा रसोई योजना के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह गर्म और पौष्टिक भोजन परोसती है।
II. लाभार्थियों को प्रति भोजन एक छोटी, रियायती टोकन राशि का भुगतान करना होता है।
III. यह विशेष रूप से ग्रामीण पंचायतों में संचालित होती है।
IV. यह स्थानीय गैर-सरकारी संगठनों और सामुदायिक संगठनों के सहयोग से चलती है।
V. यह लाभार्थियों को मुफ्त पांच सितारा होटल आवास प्रदान करती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और V
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

81. स्वास्थ्य देखभाल पहल के संदर्भ में, मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना के लिए राज्य को मौलिक रूप से किसकी आवश्यकता है?
(1) नए अस्पताल बनाने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी
(2) आवश्यक दवाओं की खरीद के लिए एक सुदृढ़ आपूर्ति श्रृंखला
(3) निजी क्लीनिकों को मुफ्त परामर्श देने के लिए विवश करना
(4) सभी नैदानिक सेवाओं को समाप्त करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

82. सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रबंधन पर मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना का प्रत्यक्ष सकारात्मक प्रभाव क्या है?
(1) वित्तीय कठिनाई के बिना समय पर चिकित्सा निदान
(2) निजी नैदानिक प्रयोगशालाओं द्वारा परीक्षण शुल्क में वृद्धि
(3) डॉक्टरों द्वारा वैज्ञानिक परीक्षणों पर निर्भरता समाप्त करना

परीक्षक
(4) मुफ्त दवाएं लिखने वाला स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. मुख्यमंत्री राजश्री योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह बालिका की शैक्षिक प्रगति के अनुरूप संरचित वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
II. यह पहली किस्त को चिकित्सा सुविधा में जन्म से जोड़कर संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देती है।
III. यह गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों को बाहर रखती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. भामाशाह योजना ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण थी क्योंकि यह भारत में निम्नलिखित में से किसके लिए शुरुआती बड़े पैमाने के हस्तक्षेपों में से एक थी?
(1) शून्य प्रतिशत ब्याज पर कृषि ऋण प्रदान करना
(2) शहरी छात्रों को स्मार्टफोन वितरित करना
(3) बायोमेट्रिक्स के माध्यम से महिला परिवार प्रमुखों को कल्याणकारी लाभ पहुँचाना
(4) राज्य-रियायती सामुदायिक रसोई स्थापित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. जन आधार प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह परिवारों के लिए "एक नंबर, एक कार्ड, एक पहचान" सिद्धांत सुनिश्चित करती है।
II. इसने प्रभावी रूप से पुरानी भामाशाह कार्ड प्रणाली का स्थान ले लिया।
III. यह नकद और गैर-नकद दोनों लाभों के वितरण की सुविधा प्रदान करती है।
IV. यह लाभार्थी ट्रैकिंग के लिए विशेष रूप से हस्तलिखित कागजी रजिस्टरों पर निर्भर करती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) यह विशेष रूप से मातृ पोषण की समस्या का समाधान करती है।
(2) यह सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में नकद प्रोत्साहन प्रदान करती है।
(3) यह उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए लक्षित है।
(4) यह जन्म के समय वजन और मातृ स्वास्थ्य सूचकांकों में सुधार करने के लिए कार्य करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना किसे मिटाने की रणनीति के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में कार्य करती है?
(1) शहरी यातायात भीड़भाड़
(2) भूख और गंभीर कुपोषण
(3) युवाओं में डिजिटल निरक्षरता
(4) भूजल की कमी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. सूची I (योजना) को सूची II (प्रदान की गई मुख्य सेवा) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (योजना)
A. मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना
B. मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना
C. इंदिरा रसोई योजना
D. सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं
सूची II: (प्रदान की गई मुख्य सेवा)
i. वृद्धावस्था, विधवा, दिव्यांगता के लिए वित्तीय सहायता
ii. शहरी गरीबों के लिए रियायती भोजन
iii. मुफ्त नैदानिक जाँच
iv. मुफ्त दवा वितरण
कूट:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना का एक वस्तुनिष्ठ विश्लेषण इंगित करता है कि इसकी प्राथमिक सफलता इसमें निहित है:
(1) सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों में जनता के विश्वास में वृद्धि
(2) सरकारी प्रयोगशालाओं के स्थान पर निजी दवा कंपनियों को बढ़ावा देना
(3) विशेष रूप से निजी क्लीनिकों के लिए दवाओं की कीमतों को कम करना
(4) ग्रामीण क्लीनिकों में डॉक्टरों की आवश्यकता को समाप्त करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना का स्पष्ट रूप से निम्नलिखित में से क्या उद्देश्य नहीं है?
(1) मुफ्त पैथोलॉजिकल और रेडियोलॉजिकल परीक्षण प्रदान करना
(2) गरीबों के लिए चिकित्सा निदान में होने वाली देरी को कम करना

Downloaded from www.pdf.tube

(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना के कार्यान्वयन का किस पर व्यापक प्रभाव पड़ने की उम्मीद है?
(1) अंतरिक्ष अन्वेषण अनुसंधान
(2) शहरी महानगरीय यातायात और भीड़ प्रबंधन
(3) उच्च प्रौद्योगिकी औद्योगिक पार्कों में विदेशी निवेश
(4) ग्रामीण स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा उपस्थिति और स्थानीय व्यापार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

92. गार्गी पुरस्कार के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह लड़कियों को अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए प्रोत्साहन के रूप में कार्य करता है।
II. यह उन परिवारों को दंडित करता है जो अपनी बेटियों को स्कूल नहीं भेजते हैं।
III. यह विशिष्ट बोर्ड परीक्षा स्तरों पर शैक्षणिक उपलब्धियों को मान्यता देता है।
IV. यह नकद पुरस्कार के बजाय दैनिक भोजन राशन प्रदान करता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. 'राजस्थान मिशन 2030' के नाम से जानी जाने वाली पहल की मूल प्रकृति क्या है?
(1) राज्य सरकार का वार्षिक वित्तीय बजट
(2) पिछली सरकारी योजनाओं की एक पूर्वव्यापी समीक्षा
(3) 2030 तक सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए भविष्योन्मुखी दृष्टि पत्र
(4) स्थानीय निकाय चुनावों के लिए उम्मीदवारों की सूची
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना की सफलता को किसके द्वारा सबसे अच्छा मापा जा सकता है?
(1) खोले गए नए इंजीनियरिंग कॉलेजों की संख्या
(2) ग्रामीण जलाशयों में संचित जल की मात्रा
(3) शहरी विक्रेताओं के लिए नए पंजीकरण की कुल संख्या
(4) अस्पताल में भर्ती होने के लिए जेब से होने वाले व्यय में कमी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

95. सूची I (महिलाओं/लड़कियों पर केंद्रित योजना) को सूची II (विशिष्ट उद्देश्य) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (महिलाओं/लड़कियों पर केंद्रित योजना)
A. भामाशाह योजना
B. मुख्यमंत्री राजश्री योजना
C. इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना
D. मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना
सूची II: (विशिष्ट उद्देश्य)
i. मुफ्त स्मार्टफोन के माध्यम से सशक्तिकरण
ii. महिलाओं को परिवार की वित्तीय मुखिया के रूप में सशक्त बनाना
iii. गर्भावस्था के दौरान मातृ पोषण सुनिश्चित करना
iv. बालिका के जन्म और शिक्षा को प्रोत्साहित करना
कूट:
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

96. पालनहार योजना की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वित्तीय सहायता इस शर्त पर प्रदान की जाती है कि:
(1) राज्य के बाहर एक आवासीय विद्यालय में नामांकन
(2) आंगनवाड़ी केंद्र या विद्यालय में नियमित उपस्थिति
(3) देखभालकर्ता अपने मताधिकार का त्याग करे
(4) बच्चा 10 वर्ष की आयु में स्थानीय उद्योगों में काम करना शुरू कर दे
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. निम्नलिखित में से कौन मुख्यमंत्री राजश्री योजना का अपेक्षित परिणाम नहीं है?
(1) बालिकाओं के लिए सकारात्मक वातावरण को बढ़ावा देना
(2) बालिकाओं को घरेलू कार्यों में सहायता के लिए विद्यालय छोड़ने हेतु प्रोत्साहित करना
(3) शिशु बालिका मृत्यु दर को कम करना
(4) विद्यालयों में लड़कियों के उच्च नामांकन को सुनिश्चित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

98. कल्याण के निम्नलिखित क्षेत्रों पर विचार कीजिए। कौन-सा विकल्प स्वास्थ्य से सामाजिक सुरक्षा, रोजगार सहायता और अंत में बुनियादी ढांचे तक के तार्किक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
I. मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना
II. मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना
III. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना
IV. सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं
(1) III, IV, II, I
(2) IV, III, I, II
(3) I, II, III, IV
(4) II, I, IV, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. कौन-सी योजना उसके प्राथमिक उद्देश्य के साथ सही सुमेलित है?
(1) इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना – शहरी पथ विक्रेताओं के लिए ब्याज मुक्त ऋण
(2) जन आधार – मुफ्त दवा वितरण
(3) पालनहार योजना – ग्रामीण परिवहन सहायता
(4) गार्गी पुरस्कार – दिव्यांग व्यक्तियों के लिए पेंशन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना का वैचारिक ढांचा स्मार्टफोन को किस रूप में मान्यता देता है?
(1) उच्च आय वाले समूहों के लिए आरक्षित विलासिता की वस्तु
(2) विशेष रूप से कॉर्पोरेट टेलीकॉम लाभ बढ़ाने का एक माध्यम
(3) डिजिटल साक्षरता और ई-गवर्नेंस तक पहुँचने का साधन
(4) शारीरिक स्वास्थ्य की निगरानी के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए:
कथन (A): मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना ग्रामीण आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
कारण (R): यह ग्रामीण आबादी की गतिशीलता को बढ़ाती है, जिससे उन्हें शहरी बाजारों, स्वास्थ्य सेवाओं और शैक्षणिक संस्थानों तक आसान पहुँच प्राप्त होती है।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. गार्गी पुरस्कार मुख्य रूप से किस आधार पर लड़कियों को दिया जाता है?
(1) अंतर्राष्ट्रीय खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन
(2) पेशेवर चिकित्सा डिग्री का सफल समापन
(3) विशिष्ट बोर्ड परीक्षाओं में उच्च शैक्षणिक उपलब्धि
(4) राज्य सांस्कृतिक उत्सवों में भागीदारी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. राजस्थान मिशन 2030 के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह अपना ध्यान पूरी तरह से केवल कृषि क्षेत्र तक सीमित रखता है।
II. यह राज्य को विभिन्न सामाजिक-आर्थिक सूचकांकों में अग्रणी बनाने की कल्पना करता है।
III. यह प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण के पक्ष में बुनियादी ढांचे के विकास की पूरी तरह उपेक्षा करता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना स्पष्ट रूप से किसे कवर नहीं करती है?
(1) व्यापक इनपेशेंट अस्पताल में भर्ती चिकित्सा व्यय
(2) गंभीर बीमारियों के लिए कैशलेस उपचार
(3) अस्पताल में भर्ती होने के साथ एकीकृत नैदानिक परीक्षण
(4) अस्पतालों के बाहर प्राकृतिक मृत्यु के लिए जीवन बीमा भुगतान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. पालनहार योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह निराश्रित बच्चों को राज्य संचालित अनाथालयों में रखती है।
II. यह बच्चे की शैक्षिक और पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए देखभालकर्ता को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
III. इसके लिए देखभालकर्ता का सरकारी कर्मचारी होना अनिवार्य है।
IV. यह बच्चे को पारिवारिक वातावरण में रखकर उसके सामाजिक-मनोवैज्ञानिक कल्याण को बढ़ावा देती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I और IV
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. निम्नलिखित में से कौन मुख्यमंत्री राजश्री योजना को परिभाषित करता है?
(1) सभी घरों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने की योजना
(2) स्वयं सहायता समूहों को ऋण देने वाला एक कार्यक्रम
(3) बालिकाओं के अस्तित्व, स्वास्थ्य और शिक्षा के लिए पहल
(4) वैज्ञानिक शहरी ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए नीति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. निम्नलिखित योजनाओं में से कौन-सी भिन्न है क्योंकि यह मुख्य रूप से महिलाओं या लड़कियों को अपने प्राथमिक फोकस के रूप में लक्षित नहीं करती है?
(1) मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) परिवारों को व्यापक स्वास्थ्य बीमा प्रदान करना
मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना राजस्थान सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है। इसका मुख्य लक्ष्य राज्य के सभी परिवारों को नकदी रहित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है। इसके अंतर्गत पात्र परिवारों को एक निश्चित राशि का स्वास्थ्य सुरक्षा कवच प्रदान किया जाता है। यह योजना गंभीर बीमारियों के उपचार में होने वाले भारी व्यय से परिवारों को सुरक्षा प्रदान कर गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता सुनिश्चित करती है।

2. (A) पारिवारिक वातावरण के भीतर अनाथ और निराश्रित बच्चों की सहायता
पालनहार योजना का मुख्य उद्देश्य अनाथ और निराश्रित बच्चों को उनके परिचितों या रिश्तेदारों के साथ रहकर पालन-पोषण और शिक्षा की सुविधा देना है। राज्य सरकार देखभाल करने वाले व्यक्ति को नियमित आर्थिक सहायता प्रदान करती है। इससे बच्चों को अनाथालयों के बजाय स्नेही पारिवारिक वातावरण मिलता है। यह योजना बच्चों के सर्वांगीण विकास और उनके सुरक्षित भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

3. (C) बालिकाओं का कल्याण और सकारात्मक पालन-पोषण
मुख्यमंत्री राजश्री योजना बालिकाओं के प्रति समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु प्रारंभ की गई है। इस योजना के माध्यम से राज्य सरकार बेटियों के जन्म से लेकर उनकी विद्यालयी शिक्षा पूर्ण होने तक विभिन्न चरणों में आर्थिक सहायता उपलब्ध कराती है। इसका मुख्य उद्देश्य कन्या भ्रूण हत्या को रोकना, लिंगानुपात में सुधार करना और बालिकाओं का शैक्षणिक सशक्तिकरण सुनिश्चित करना है। यह योजना बेटियों के समग्र विकास पर केंद्रित है।

4. (D) यह परिवार के सबसे बड़े पुरुष सदस्य को परिवार के वित्तीय मुखिया के रूप में पहचानती है।
भामाशाह योजना राजस्थान में महिला सशक्तिकरण और वित्तीय समावेशन की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल है। इस योजना की सबसे विशिष्ट विशेषता यह है कि यह परिवार की वयस्क महिला को ही घर का मुखिया मानती है। सरकारी लाभों की राशि सीधे महिला के बैंक खाते में हस्तांतरित की जाती है, जिससे उनकी निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि होती है। यह व्यवस्था पारंपरिक पुरुष प्रधान वित्तीय ढांचे को बदलकर महिलाओं को सशक्त बनाती है।

5. (A) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाएं विशिष्ट सामाजिक और आर्थिक लक्ष्यों को पूर्ण करने के लिए निर्मित हैं। चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करती है, जबकि पालनहार योजना अनाथ बच्चों की पारिवारिक देखभाल पर केंद्रित है। राजश्री योजना के माध्यम से बालिकाओं के कल्याण और शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है। भामाशाह योजना का आधारभूत लक्ष्य महिलाओं को परिवार की वित्तीय मुखिया बनाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना और लाभों का सीधा हस्तांतरण सुनिश्चित करना है।

6. (B) जन आधार
जन आधार योजना राजस्थान सरकार की एक एकीकृत पहचान प्रणाली है जो एक नंबर, एक कार्ड और एक पहचान के सिद्धांत पर आधारित है। इसका उद्देश्य राज्य के परिवारों को एक विशिष्ट पहचान पत्र प्रदान करना है ताकि सरकारी योजनाओं के लाभों को बिना किसी बाधा के सीधे लाभार्थियों तक पहुँचाया जा सके। यह प्रणाली डेटा प्रबंधन को सुव्यवस्थित करती है और कल्याणकारी प्रशासन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करती है।

7. (D) गर्भवती और धात्री महिलाओं के लिए पोषण संबंधी सहायता
इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना मुख्य रूप से गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के स्वास्थ्य और पोषण स्तर में सुधार हेतु संचालित है। इस योजना के अंतर्गत दूसरी संतान के जन्म पर भी लाभार्थियों को विभिन्न चरणों में वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इसका उद्देश्य मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम करना और जन्म के समय बच्चों के कम वजन की समस्या का समाधान करना है।

8. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना राज्य के वंचित और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए जीवन रक्षक के रूप में कार्य करती है। यह योजना समाज के उन तबकों को रियायती दरों पर आवश्यक खाद्यान्न उपलब्ध कराकर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है जो अपनी बुनियादी पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में अक्षम हैं। खाद्यान्न वितरण का यह तंत्र भुखमरी को रोकने और सार्वजनिक स्वास्थ्य बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

9. (C) मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना
मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना का मुख्य उद्देश्य राजकीय चिकित्सालयों में आने वाले रोगियों को आवश्यक औषधियाँ बिना किसी शुल्क के उपलब्ध कराना है। इस योजना ने स्वास्थ्य सेवाओं पर होने वाले व्यक्तिगत व्यय को अत्यंत कम कर दिया है। राज्य सरकार द्वारा दवाओं की निरंतर उपलब्धता के लिए एक कुशल वितरण प्रणाली विकसित की गई है। यह पहल निर्धन और मध्यम वर्ग के लिए उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है।

NODIA

10. (C) केवल I और III
मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना राजकीय स्वास्थ्य संस्थानों में निदान की सुविधा को सुलभ बनाती है। इसके अंतर्गत रोगियों को विभिन्न प्रयोगशाला परीक्षण और विकिरण संबंधी सेवाएँ बिना किसी शुल्क के प्रदान की जाती हैं। इस योजना का मुख्य उद्देश्य बीमारियों का समय पर पता लगाना और स्वास्थ्य उपचार के आर्थिक बोझ को न्यूनतम करना है। यह योजना निःशुल्क दवा योजना के पूरक के रूप में कार्य करती है जिससे चिकित्सा बेहतर होती है।

11. (D) शहरी गरीबों के लिए रियायती पौष्टिक भोजन
इंदिरा रसोई योजना का सफल संचालन 'कोई भूखा न सोए' के संकल्प के साथ किया जा रहा है। यह योजना मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों के जरूरतमंदों, श्रमिकों और बेघर लोगों को न्यूनतम मूल्य पर सम्मानपूर्वक बैठाकर ताजा और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराती है। स्थानीय निकायों और स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से यह सुनिश्चित किया जाता है कि भोजन की गुणवत्ता और स्वच्छता मानकों का कड़ाई से पालन हो।

12. (C) केवल I, II और III
सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं राज्य के उन नागरिकों को वित्तीय संबल प्रदान करती हैं जो अपनी आजीविका अर्जित करने में असमर्थ हैं। इसमें वृद्धजन, विधवाएं और दिव्यांग व्यक्ति प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं। यह सहायता नियमित मासिक नकद हस्तांतरण के रूप में दी जाती है ताकि लाभार्थी एक गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत कर सकें। ये योजनाएं ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में समान रूप से लागू हैं और सुरक्षा कवच प्रदान करती हैं।

13. (C) मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना
मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को आर्थिक शक्ति प्रदान करने हेतु निर्मित है। इसके अंतर्गत नए उद्यम स्थापित करने अथवा पुराने उद्योगों के विस्तार हेतु ऋण उपलब्ध कराया जाता है। राज्य सरकार इन ऋणों पर आकर्षक ब्याज अनुदान प्रदान करती है। यह पहल राज्य में निवेश को प्रोत्साहित करने, औद्योगिक विकास और नवीन रोजगार के अवसर सृजित करने में सहायक सिद्ध हो रही है।

14. (D) राज्य की कल्याणकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार में युवाओं की भागीदारी
राजस्थान युवा विकास प्रेरक कार्यक्रम का उद्देश्य राज्य सरकार की विभिन्न जन-कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जन-जन तक पहुँचाना है। इसमें शिक्षित युवाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें जागरूक दूतों के रूप में नियुक्त किया जाता है। ये युवा जमीनी स्तर पर जाकर लाभार्थियों को उनके अधिकारों और योजनाओं की पात्रता के विषय में शिक्षित करते हैं। यह कार्यक्रम युवाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करने के साथ शासन और जनता के मध्य सेतु बनाता है।

15. (A) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान में जन आधार प्रणाली संपूर्ण परिवार हेतु एक एकीकृत अंकीय पहचान सुनिश्चित करती है। मातृत्व पोषण योजना गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण प्रबंधन पर केंद्रित है। अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना के माध्यम से जरूरतमंद वर्गों को रियायती दरों पर अनाज उपलब्ध कराया जाता है। निःशुल्क दवा योजना राजकीय चिकित्सालयों में उपचार कराने वाले सभी नागरिकों को आवश्यक औषधियाँ मुफ्त प्रदान करती है। ये योजनाएं समाज के कल्याण हेतु समर्पित हैं।

16. (B) कृषि बिजली कनेक्शन पर बिजली सब्सिडी
मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना का प्राथमिक लक्ष्य किसानों के बिजली बिलों के आर्थिक बोझ को न्यूनतम करना है। इस योजना के अंतर्गत राज्य के ग्रामीण कृषि उपभोक्ताओं को प्रति माह एक निश्चित राशि का अतिरिक्त बिजली अनुदान प्रदान किया जाता है। यह सहायता सीधे किसानों के बैंक खातों में अथवा उनके बिलों में समायोजित की जाती है। इससे कृषि कार्यों की लागत कम होती है और किसानों की स्थिति सुदृढ़ होती है।

17. (B) गांवों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जल संरक्षण
मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान का मुख्य उद्देश्य राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों को जल प्रबंधन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना है। इसमें वर्षा जल संचयन की पारंपरिक और आधुनिक विधियों का प्रयोग कर भूजल स्तर को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। जनभागीदारी के माध्यम से तालाबों और टांकों का निर्माण एवं पुनरुद्धार किया जाता है। यह अभियान शुष्क क्षेत्रों में कृषि और पशुपालन हेतु जल की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करता है।

18. (D) मुख्यमंत्री राजश्री योजना → गार्गी पुरस्कार → राजस्थान युवा विकास प्रेरक
राजस्थान सरकार बालिकाओं और युवाओं के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न चरणों में योजनाएं संचालित करती है। जन्म के समय राजश्री योजना के माध्यम से आर्थिक सहायता दी जाती है। शिक्षा प्राप्ति के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर छात्राओं को गार्गी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। तत्पश्चात, स्नातक होने के बाद युवाओं को प्रशासन और विकास कार्यों से जोड़ने हेतु युवा विकास प्रेरक कार्यक्रम जैसी पहल की जाती है। यह क्रम विकास को प्रदर्शित करता है।

19. (C) इसके लिए आवेदकों को कृषि भूमि को संपार्श्विक के रूप में गिरवी रखना आवश्यक है।
इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना शहरी क्षेत्र के पथ विक्रेताओं, असंगठित सेवा क्षेत्र के कामगारों और बेरोजगार युवाओं को वित्तीय सहायता देने हेतु प्रारंभ की गई है। इस योजना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके अंतर्गत बिना किसी गारंटी अथवा सुरक्षा के ब्याज मुक्त ऋण प्रदान किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य छोटे व्यापारियों को साहूकारों के शोषण से मुक्त करना और स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है।

Downloaded from www.pdf.tube

20. (B) केवल I, II, III और IV
मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना का प्रमुख उद्देश्य राज्य में अंकीय विभाजन को समाप्त करना है। इस योजना के अंतर्गत जन आधार कार्ड धारक परिवारों की महिला मुखियाओं को निःशुल्क मोबाइल फोन वितरित किए जाते हैं। इन उपकरणों के साथ एक निश्चित अवधि हेतु मुफ्त इंटरनेट सेवा भी प्रदान की जाती है। यह पहल महिलाओं को सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने और अंकीय साक्षरता के माध्यम से सशक्त बनाने की दिशा में प्रभावी कदम है।

21. (C) ग्रामीण परिवहन सहायता के माध्यम से कनेक्टिविटी बढ़ाना
मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना का मौलिक उद्देश्य राज्य के दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक परिवहन की सुविधाओं का विस्तार करना है। यह योजना उन क्षेत्रों को मुख्य सड़कों और शहरों से जोड़ने का प्रयास करती है जहाँ नियमित बस सेवाओं का अभाव है। बेहतर परिवहन संपर्क से ग्रामीणों को उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य केंद्रों और बाजारों तक पहुँचने में सुगमता होती है। यह पहल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करती है।

22. (B) बालिका शिक्षा प्रोत्साहन और शैक्षणिक उत्कृष्टता
गार्गी पुरस्कार और बालिका प्रोत्साहन योजनाएं मुख्य रूप से छात्राओं के शैक्षणिक मनोबल को ऊँचा उठाने हेतु निर्मित हैं। ये पुरस्कार उन मेधावी छात्राओं को दिए जाते हैं जो बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट अंक अर्जित करती हैं। वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान कर राज्य सरकार बालिकाओं को उच्च शिक्षा जारी रखने हेतु निरंतर प्रेरित करती है। यह पहल समाज में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने और महिला साक्षरता दर में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण है।

23. (D) राज्य के लिए एक दीर्घकालिक विकास दृष्टि पत्र
राजस्थान मिशन 2030 राज्य सरकार की एक व्यापक और भविष्योन्मुखी योजना है। इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में गहन शोध और सुझावों के आधार पर राज्य को आगामी वर्षों में देश का अग्रणी प्रदेश बनाना है। यह दृष्टि पत्र शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और आधारभूत संरचना जैसे प्रमुख स्तंभों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह दस्तावेज आने वाले समय हेतु एक रणनीतिक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करता है जो सतत विकास सुनिश्चित करता है।

24. (A) मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना
राज्य सरकार की अधिकांश योजनाएं जन स्वास्थ्य को प्राथमिकता देती हैं, जैसे चिरंजीवी योजना, निःशुल्क दवा और जाँच योजनाएं। इसके विपरीत, मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना का पूर्ण ध्यान आर्थिक और औद्योगिक विकास पर केंद्रित है। यह योजना उद्यमियों को न्यून ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराकर सूक्ष्म और लघु उद्योगों को बढ़ावा देती है। इसका स्वास्थ्य क्षेत्र से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है, बल्कि यह आर्थिक समृद्धि का साधन है।

25. (B) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
इंदिरा रसोई योजना शहरी निर्धनों को सम्मानपूर्वक और रियायती भोजन उपलब्ध कराती है। सामाजिक सुरक्षा पेंशन वृद्धों, विधवाओं और दिव्यांगों को नियमित वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है। लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना का मुख्य केंद्र सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र को आर्थिक मजबूती देना है। युवा विकास प्रेरक कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को राज्य के विकास कार्यों और जागरूकता अभियानों से जोड़ा जाता है। ये योजनाएं समाज की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं।

26. (A) पारिवारिक परिवेश में निराश्रित बच्चों के लिए राज्य का संरक्षण
पालनहार योजना का सामाजिक दर्शन इस विचार पर आधारित है कि बच्चे का सर्वोत्तम विकास एक स्नेही पारिवारिक वातावरण में ही संभव है। संस्थागत देखभाल के स्थान पर, यह योजना अनाथ और निराश्रित बच्चों को उनके रिश्तेदारों अथवा समुदाय के मध्य रहने हेतु प्रोत्साहित करती है। राज्य द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सहायता यह सुनिश्चित करती है कि बच्चे की शिक्षा और पोषण संबंधी आवश्यकताएं निर्बाध रूप से पूर्ण हों।

NODIA

27. (C) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
मुख्यमंत्री राजश्री योजना एक बहुउद्देशीय पहल है जो बालिकाओं के जीवन चक्र के विभिन्न महत्वपूर्ण चरणों को सम्मिलित करती है। यह योजना जन्म के समय वित्तीय सहायता प्रदान कर संस्थागत प्रसव और बालिका के अस्तित्व को प्रोत्साहित करती है। तत्पश्चात, बालिका के टीकाकरण और शैक्षणिक प्रगति पर विभिन्न किस्तों में धनराशि दी जाती है। इससे न केवल लिंगानुपात में सुधार होता है, बल्कि बालिकाओं की शिक्षा और स्वस्थ भविष्य के प्रति जिम्मेदारी बढ़ती है।

28. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भामाशाह योजना ने कल्याणकारी लाभों के वितरण तंत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर स्थापित किया है। महिला को परिवार का मुखिया घोषित करके, इस योजना ने महिलाओं को घरेलू वित्तीय निर्णयों में सशक्त बनाया है। नकद लाभों का सीधे बैंक खातों में हस्तांतरण बिचौलियों को समाप्त करता है और पारदर्शिता को बढ़ावा देता है। इस मॉडल ने राज्य में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण और एकीकृत पहचान प्रणाली की नींव रखी, जिससे लक्षित पहुँच सुनिश्चित हुई।

29. (C) पारदर्शी कल्याण वितरण के लिए एक एकीकृत डेटाबेस
जन आधार कार्ड राज्य के निवासियों हेतु एक व्यापक और एकीकृत डेटाबेस का कार्य करता है। यह विभिन्न सरकारी लाभों और आवश्यक सेवाओं को एक ही मंच पर लाता है। इस एकल कार्ड के माध्यम से नकद और गैर-नकद लाभों का वितरण सुचारु रूप से किया जाता है। यह प्रणाली फर्जी लाभार्थियों को हटाने और वास्तविक लक्षित समूहों तक पहुँचने में सहायक है। यह अंकीय राजस्थान के स्वप्न को साकार करने हेतु अनिवार्य है।

90. (D) I, II और III
मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना के विषय में दिए गए तीनों कथन असत्य हैं। यह योजना मोबाइल फोन हेतु कोई मासिक शुल्क नहीं लेती है और न ही यह पुरुषों को लक्षित करती है। इसके विपरीत, यह योजना परिवार की महिला मुखिया को केंद्र में रखती है। इसमें इंटरनेट सेवा का भी स्पष्ट प्रावधान सम्मिलित है ताकि लाभार्थी बिना किसी अतिरिक्त व्यय के आधुनिक सेवाओं का उपयोग कर सकें। यह पहल महिलाओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाती है।

91. (D) ग्रामीण स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा उपस्थिति और स्थानीय व्यापार
मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना का प्रभाव ग्रामीण जीवन के प्रत्येक पहलू पर पड़ता है। सुलभ परिवहन सुविधाओं से ग्रामीण क्षेत्रों के मरीज समय पर चिकित्सालय पहुँच सकते हैं और छात्राओं की शिक्षण संस्थानों में उपस्थिति में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, स्थानीय लघु व्यापारियों को अपनी उपज बाजारों तक ले जाने में बड़ी सहायता प्राप्त होती है। इस प्रकार, यह योजना केवल वाहनों तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण विकास का आधार है।

92. (B) केवल II और IV
गार्गी पुरस्कार योजना एक सकारात्मक प्रोत्साहन प्रणाली है, जिसका उद्देश्य मेधावी छात्राओं को उनकी शैक्षणिक सफलता हेतु पुरस्कृत करना है। यह योजना नकद पुरस्कार प्रदान करती है, न कि खाद्य सामग्री। यह बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रेरित करने का एक प्रभावी माध्यम है। बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर प्रदान की जाने वाली यह सहायता छात्राओं के आत्मविश्वास को बढ़ाती है और उनके परिवारों को पढ़ाई जारी रखने हेतु प्रोत्साहित करती है।

93. (3) 2030 तक सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए भविष्योन्मुखी दृष्टि पत्र
राजस्थान मिशन 2030 की मूल प्रकृति एक रणनीतिक और व्यापक भविष्योन्मुखी दृष्टि पत्र की है। यह केवल एक वार्षिक बजट नहीं है, बल्कि एक दीर्घकालिक योजना है जो राज्य को समस्त विकास मानकों पर शीर्ष पर ले जाने का खाका तैयार करती है। इसमें विशेषज्ञों और नागरिकों के बहुमूल्य सुझाव सम्मिलित हैं। यह मिशन राज्य की आर्थिक वृद्धि, सामाजिक न्याय और सतत विकास हेतु एक मार्गदर्शिका प्रदान करता है ताकि राजस्थान एक आदर्श प्रदेश बन सके।

94. (D) अस्पताल में भर्ती होने के लिए जेब से होने वाले व्यय में कमी
मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना की सफलता इस तथ्य से प्रमाणित होती है कि इसने जनसामान्य के व्यक्तिगत चिकित्सा खर्चों में कितनी कमी की है। पूर्व में गंभीर बीमारियों के उपचार हेतु परिवार ऋण के जाल में फंस जाते थे, किंतु अब नकदी रहित चिकित्सा सुविधा ने इस भारी आर्थिक बोझ को अत्यंत कम कर दिया है। जब नागरिक बिना किसी वित्तीय चिंता के स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करते हैं, तो यह सामाजिक सुरक्षा सुदृढ़ होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

95. (A) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
भामाशाह योजना महिला को मुखिया बनाकर उसे वित्तीय निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करती है। राजश्री योजना बालिका के जन्म से लेकर उसकी शिक्षा तक एक सुरक्षित वातावरण निर्मित करती है। मातृत्व पोषण योजना गर्भावस्था के दौरान महिलाओं हेतु पोषण सहायता सुनिश्चित करती है। डिजिटल सेवा योजना निःशुल्क मोबाइल फोन के माध्यम से महिलाओं को आधुनिक सूचना क्रांति से जोड़ती है। ये समस्त योजनाएं महिलाओं को जीवन के विभिन्न पड़ावों पर सशक्त बनाने हेतु संचालित हैं।

96. (B) आंगनवाड़ी केंद्र या विद्यालय में नियमित उपस्थिति
पालनहार योजना के अंतर्गत आर्थिक सहायता प्राप्त करने हेतु एक अनिवार्य शर्त यह है कि बच्चे को औपचारिक शिक्षा के साथ जोड़ा जाए। बच्चे का आंगनवाड़ी केंद्र अथवा विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित होना आवश्यक है ताकि उसका समुचित विकास सुनिश्चित हो सके। यह शर्त न केवल बच्चे की बुनियादी शिक्षा की गारंटी देती है, बल्कि उसे बाल श्रम जैसी कुरीतियों से बचाकर एक उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर करती है।

97. (B) बालिकाओं को घरेलू कार्यों में सहायता के लिए विद्यालय छोड़ने हेतु प्रोत्साहित करना
मुख्यमंत्री राजश्री योजना का संपूर्ण ढांचा बालिकाओं को निरंतर शिक्षित करने और उन्हें विद्यालय में बनाए रखने हेतु निर्मित है। यह योजना विभिन्न चरणों में वित्तीय सहायता प्रदान कर परिवारों को प्रेरित करती है कि वे अपनी बेटियों को उच्च माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा अवश्य दिलाएं। यह विद्यालय छोड़ने को प्रोत्साहित नहीं करती, बल्कि इसका मूल उद्देश्य बाल विवाह और शिक्षा छोड़ने की दर को न्यूनतम करना है। यह बालिकाओं के कल्याण हेतु समर्पित है।

98. (A) III, IV, II, I
विकास की प्रक्रिया स्वास्थ्य सुरक्षा से प्रारंभ होकर आर्थिक अवसरों और बुनियादी ढांचे तक विस्तृत होती है। चिरंजीवी योजना चिकित्सा सुरक्षा सुनिश्चित करती है। सामाजिक सुरक्षा पेंशन असहायों को नियमित वित्तीय सहारा प्रदान करती है। लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना स्वरोजगार के नवीन अवसर प्रदान कर आर्थिक आत्मनिर्भरता लाती है। अंत में, ग्रामीण परिवहन योजना सुलभ आवागमन हेतु भौतिक बुनियादी ढांचे और ग्रामीण संपर्क को मजबूत करती है।

99. (A) केवल I और II
मुख्यमंत्री राजश्री योजना बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु एक प्रगतिशील योजना है। यह योजना बालिका के जन्म को राजकीय चिकित्सालयों में प्रोत्साहित करती है और तत्पश्चात स्कूली शिक्षा के विभिन्न पड़ावों पर नकद लाभ प्रदान करती है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह निर्धनता रेखा से नीचे के परिवारों को पृथक रखती है। इसका मुख्य उद्देश्य लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करना और बालिकाओं की शिक्षा एवं स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देना है।

Click Here to Buy book on Amazon

40. (C) केवल I, II, III और IV
मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना कृषि बिजली उपभोक्ताओं के वित्तीय बोझ को न्यूनतम करने हेतु लाई गई है। यह योजना मासिक अनुदान के माध्यम से किसानों के बिजली बिलों की राशि को कम करती है, जिससे कृषि कार्य अधिक लाभप्रद बनता है। यह योजना समय पर बिल भुगतान करने को भी प्रोत्साहित करती है ताकि विद्युत आपूर्ति सुचारु रहे। यह योजना पुराने बैंक ऋणों की माफी से संबंधित नहीं है, बल्कि चालू कृषि खर्चों में सहायता करती है।

41. (C) समुदाय के नेतृत्व वाली स्थानीय जल संचयन संरचनाएं
मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान का मुख्य तंत्र विकेंद्रीकृत जल संरक्षण है। इसमें भारी मशीनीकरण के स्थान पर स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी पर बल दिया जाता है। अभियान के अंतर्गत तालाबों और टांकों जैसी पारंपरिक जल संरचनाओं का निर्माण और पुनरुद्धार किया जाता है। वर्षा जल को स्थानीय स्तर पर संचित करके यह योजना न केवल पेयजल संकट का समाधान करती है बल्कि सिंचाई हेतु जल उपलब्धता सुनिश्चित कर कृषि को सहारा देती है।

42. (A) मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना
भौगोलिक दृष्टि से, इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना और इंदिरा रसोई योजना विशेष रूप से शहरी निकायों और नगरपालिका क्षेत्रों हेतु निर्मित की गई हैं। शहरी पथ विक्रेताओं की सहायता भी इसी शहरी श्रेणी के अंतर्गत आती है। इसके विपरीत, मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना का पूर्ण ध्यान ग्रामीण इलाकों में आवागमन की सुविधाओं को बेहतर बनाने पर केंद्रित है। अतः, अपने प्राथमिक कार्यक्षेत्र के आधार पर यह अन्य तीन योजनाओं से भिन्न है।

43. (D) स्मार्टफोन और इंटरनेट के माध्यम से महिलाओं के लिए digital समावेशन
मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना का सबसे उपयुक्त विवरण महिलाओं को आधुनिक सूचना तकनीक से जोड़ना है। इस योजना के माध्यम से महिलाओं को इंटरनेट सेवाओं के साथ निःशुल्क मोबाइल फोन प्रदान किए जाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य शासन की सेवाओं तक सीधी पहुँच स्थापित करना और महिलाओं को अंकीय रूप से साक्षर बनाना है। यह योजना सूचना की बाधाओं को दूर करती है और महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु आधुनिक तकनीक को माध्यम बनाती है।

44. (B) दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों को जोड़ने वाला सीमित सार्वजनिक परिवहन
मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन साधनों की कमी को दूर करना है। राजस्थान के अनेक दूरस्थ गांवों में सड़क संपर्क तो उपलब्ध है, किंतु सार्वजनिक वाहनों के अभाव में आवागमन में कठिनाई होती है। यह योजना निजी और सार्वजनिक सहयोग से ग्रामीण मार्गों पर वाहनों की उपलब्धता बढ़ाकर संपर्क को सुदृढ़ करती है। इससे ग्रामीणों का बहुमूल्य समय बचता है और उनका आर्थिक जुड़ाव शहरों के साथ सुगम होता है।

45. (A) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना ग्रामीण आवागमन की सुविधाओं में सुधार लाती है। गार्गी पुरस्कार छात्राओं को उनकी उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धियों हेतु प्रोत्साहित करता है। राजस्थान मिशन 2030 राज्य के विकास हेतु एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना परिवारों को चिकित्सा उपचार हेतु सुदृढ़ वित्तीय सुरक्षा कवच प्रदान करती है। ये सभी पहलें राज्य के सामाजिक और आर्थिक स्तंभों को मजबूत करने हेतु पूर्णतः प्रतिबद्ध हैं।

46. (D) गार्गी पुरस्कार
बालिका प्रोत्साहन योजना और गार्गी पुरस्कार दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं क्योंकि दोनों का साझा लक्ष्य बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना है। जहाँ गार्गी पुरस्कार माध्यमिक स्तर की मेधावी छात्राओं को प्रदान किया जाता है, वहीं बालिका प्रोत्साहन योजना उच्च माध्यमिक स्तर पर उनकी शैक्षणिक निरंतरता सुनिश्चित करती है। ये योजनाएं मिलकर राज्य में शिक्षा छोड़ने की दर को कम करने और बालिकाओं को शैक्षणिक रूप से सशक्त बनाने का सुदृढ़ ढांचा तैयार करती हैं।

47. (B) राजस्थान मिशन 2030
राजस्थान मिशन 2030 एक ऐसी पहल है जो वर्तमान समस्याओं के समाधान के साथ आने वाले वर्षों हेतु एक संपूर्ण विकास मॉडल प्रस्तुत करती है। यह योजना शिक्षा, स्वास्थ्य, निवेश और सामाजिक कल्याण जैसे विविध क्षेत्रों में राज्य की प्रगति हेतु महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित करती है। यह प्रशासन हेतु एक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करती है, जो सुनिश्चित करती है कि समस्त राजकीय प्रयास राज्य के सर्वांगीण उत्थान की एक साझा दृष्टि की ओर निर्देशित हों।

48. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना ने राज्य में चिकित्सा सेवाओं के परिदृश्य को परिवर्तित कर दिया है। यह योजना परिवारों को नकदी रहित उपचार की सुविधा प्रदान कर उन्हें गंभीर बीमारियों के दौरान वित्तीय संकट से बचाती है। इसकी व्यापकता और उच्च बीमा राशि यह सुनिश्चित करती है कि समाज का निर्धन व्यक्ति भी गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ सुगमता से प्राप्त कर सके। यह सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है।

49. (B) राज्य सहायता से अनाथ बच्चे का पालन-पोषण करने वाला देखभालकर्ता
पालनहार उस व्यक्ति को संबोधित किया जाता है जो अनाथ अथवा निराश्रित बच्चे की पूर्ण जिम्मेदारी लेता है और उसे अपने पास रखकर पालता है। यह देखभालकर्ता बच्चे का कोई निकट संबंधी अथवा परिचित हो सकता है। राज्य सरकार इस व्यक्ति को आर्थिक सहायता प्रदान करती है ताकि बच्चे के पालन-पोषण और शिक्षा में कोई वित्तीय बाधा न आए। यह अनूठी अवधारणा बच्चे को पारिवारिक प्रेम और सामाजिक सुरक्षा के मध्य विकसित करने पर आधारित है।

Downloaded from www.pdf.tube

Visit :
www.pdf.tube

Download PDFs For :

- ✓ MPPSC Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS 30 Sample Papers for Tier-II
- ✓ DSSSB TGT Chapterwise Question Bank
- ✓ DSSSB Sample Papers
- ✓ Chapterwise Question Bank
- ✓ JEE NEET Foundation
- ✓ Primary Classes Worksheets
- ✓ Olympiad Guide
- ✓ Sample Papers
- ✓ Previous Year CBSE Papers
- ✓ Previous JEE, NEET and CUET Papers

NODIA

Nodia Editions LLP

125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP ₹ 540.00

60. (B) केवल II और V
सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं का मूल सिद्धांत उन नागरिकों की सहायता करना है जो वृद्धावस्था अथवा दिव्यांगता के कारण कार्य करने में असमर्थ हैं। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि लाभार्थियों को कठिन शारीरिक श्रम करना अनिवार्य है। ये योजनाएं बिना किसी शर्त के नियमित नकद हस्तांतरण प्रदान करती हैं ताकि लाभार्थी अपनी दैनिक आवश्यकताओं को गरिमा के साथ पूर्ण कर सकें। ये प्रावधान राज्य द्वारा पूर्णतः वित्त पोषित सामाजिक सुरक्षा पहल हैं।

61. (C) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए व्यावसायिक ऋणों पर ब्याज सब्सिडी
मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत राज्य सरकार सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को वित्तीय मजबूती प्रदान करने हेतु ब्याज अनुदान का प्रावधान करती है। जब कोई उद्यमी नए व्यवसाय हेतु बैंक से ऋण लेता है, तो उस पर देय ब्याज का एक बड़ा भाग सरकार द्वारा वहन किया जाता है। इससे उद्यमियों पर ऋण अदायगी का बोझ कम होता है और राज्य में निवेश हेतु एक अनुकूल वातावरण निर्मित होता है।

62. (D) राज्य कल्याण जागरूकता के उत्प्रेरक के रूप में युवा प्रशिक्षण
राजस्थान युवा विकास प्रेरक कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षित युवाओं के कौशल का उपयोग राजकीय जागरूकता अभियानों में करना है। यह योजना युवाओं को प्रशिक्षित करती है ताकि वे समाज के विभिन्न वर्गों को राजकीय कल्याणकारी नीतियों के विषय में जानकारी प्रदान कर सकें। यह न तो कोई बेरोजगारी भत्ता है और न ही विदेशी छात्रवृत्ति, बल्कि यह युवाओं को प्रशासन के साथ जोड़कर उनमें नागरिक उत्तरदायित्व विकसित करने की एक प्रभावशाली पहल है।

63. (A) इसे विशेष रूप से शहरी वाणिज्यिक बिजली उपभोक्ताओं के लिए डिज़ाइन किया गया है।
मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना का ढांचा केवल कृषि उपभोक्ताओं और किसानों की आवश्यकताओं के अनुरूप निर्मित किया गया है। यह योजना शहरी अथवा व्यावसायिक बिजली बिलों पर प्रभावी नहीं होती है। इसका मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली विद्युत की लागत को आर्थिक अनुदान के माध्यम से कम करना है। यह किसानों को मासिक सहायता प्रदान कर उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम बनाती है और कृषि को लाभप्रद व्यवसाय के रूप में स्थापित करती है।

64. (B) संरक्षण के लिए सूक्ष्म सिंचाई नेटवर्क और एनीकट
मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान का ध्यान जल संरक्षण और सिंचाई हेतु स्थानीय आधारभूत संरचना के निर्माण पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत एनीकटों का निर्माण और सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों के विकास को प्राथमिकता दी जाती है। यह अभियान बड़े बांधों के स्थान पर लघु और प्रभावी जल संचयन ढांचों पर केंद्रित है जो सीधे किसानों के खेतों और ग्रामीण भूजल स्तर को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। यह टिकाऊ जल प्रबंधन हेतु महत्वपूर्ण है।

65. (A) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना उद्योग क्षेत्र को वित्तीय संबल प्रदान करती है। युवा विकास प्रेरक पहल युवाओं को जन-जागरूकता कार्यों में भागीदार बनाती है। किसान मित्र ऊर्जा योजना कृषि कार्यों हेतु प्रयुक्त बिजली की लागत को कम करती है। जल स्वावलंबन अभियान का लक्ष्य राज्य में दीर्घकालिक जल सुरक्षा और संरक्षण सुनिश्चित करना है। ये चारों योजनाएं राज्य के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय स्तंभों को सुदृढ़ करने हेतु एक समन्वित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं।

66. (A) इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना – शहरी पथ विक्रेताओं के लिए ब्याज मुक्त ऋण
इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना का प्राथमिक उद्देश्य शहरी क्षेत्र के छोटे व्यापारियों और रेहड़ी-पटरी वालों को ब्याज मुक्त ऋण प्रदान कर सहायता पहुँचाना है। अन्य विकल्प त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि जन आधार एक पहचान प्रणाली है और पालनहार अनाथ बच्चों हेतु है। शहरी क्रेडिट कार्ड योजना आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों हेतु बिना किसी गारंटी के पूंजी उपलब्ध कराकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक सशक्त प्रयास है।

67. (C) डिजिटल साक्षरता और ई-गवर्नेंस तक पहुँचने का साधन
मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना के अंतर्गत मोबाइल फोन को सशक्तिकरण के एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में देखा गया है। यह योजना मानती है कि आधुनिक उपकरणों के माध्यम से महिलाएं अंकीय रूप से साक्षर बन सकती हैं और विभिन्न शासन सेवाओं का लाभ प्राप्त कर सकती हैं। यह पहल अंकीय विभाजन को समाप्त करती है और सूचना के अधिकार को वास्तविक धरातल पर उतारकर महिलाओं को शासन की मुख्यधारा से जोड़ती है।

68. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुख्यमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक उत्थान हेतु एक अनिवार्य उत्प्रेरक है। जब ग्रामीण आबादी की गतिशीलता में वृद्धि होती है, तो उन्हें बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं, उच्च शिक्षा और रोजगार के अवसरों तक सुगम पहुँच प्राप्त होती है। परिवहन की सुगमता किसानों को अपनी उपज मंडियों तक ले जाने में सहायता करती है। इस प्रकार, सड़क संपर्क और वाहनों की उपलब्धता ग्रामीण विकास को गति प्रदान करती है।

69. (C) विशिष्ट बोर्ड परीक्षाओं में उच्च शैक्षणिक उपलब्धि
गार्गी पुरस्कार योजना पूर्णतः छात्राओं की शैक्षणिक योग्यता और उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन पर आधारित है। यह पुरस्कार उन मेधावी छात्राओं को दिया जाता है जो बोर्ड परीक्षाओं में निर्धारित अंकों से अधिक अंक अर्जित करती हैं। इसका उद्देश्य बालिकाओं के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना और उन्हें निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु प्रेरित करना है। यह वित्तीय प्रोत्साहन छात्राओं को अपनी उच्च शिक्षा के व्यय को वहन करने में सहायता करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

50. (A) केवल I और II
मुख्यमंत्री राजश्री योजना बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु एक प्रगतिशील योजना है। यह योजना बालिका के जन्म को राजकीय चिकित्सालयों में प्रोत्साहित करती है और तत्पश्चात स्कूली शिक्षा के विभिन्न पड़ावों पर नकद लाभ प्रदान करती है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह निर्धनता रेखा से नीचे के परिवारों को पृथक रखती है। इसका मुख्य उद्देश्य लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करना और बालिकाओं की शिक्षा एवं स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देना है।

51. (C) बायोमेट्रिक्स के माध्यम से महिला परिवार प्रमुखों को कल्याणकारी लाभ पहुँचाना
भामाशाह योजना भारत में वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में एक साहसिक प्रयोग थी। इसने प्रथम बार जैव-पहचान तकनीक का प्रयोग करके यह सुनिश्चित किया कि सरकारी लाभ बिना किसी रिसाव के सीधे वास्तविक लाभार्थी तक पहुँचें। महिला को परिवार का वित्तीय मुखिया बनाकर और लाभों को उसके खाते से जोड़कर, इस योजना ने न केवल भ्रष्टाचार को नियंत्रित किया बल्कि महिलाओं की आर्थिक स्थिति को भी सशक्त किया। यह आधुनिक वितरण प्रणाली का आधार है।

52. (C) केवल I, II और III
जन आधार प्रणाली एक नंबर, एक कार्ड और एक पहचान के विजन को साकार करती है। इसने पूर्ववर्ती भामाशाह कार्ड का स्थान ग्रहण कर लाभ वितरण प्रक्रिया को अधिक एकीकृत और सरल बना दिया है। यह प्रणाली पूर्णतः अंकीय और ऑनलाइन आधारित है, अतः लाभार्थी खोज हेतु कागजी रजिस्टरों पर इसकी निर्भरता का दावा असत्य है। यह नकद हस्तांतरण और राशन वितरण को पारदर्शी बनाने हेतु राज्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंकीय बुनियादी ढांचा है।

53. (C) यह उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए लक्षित है।
इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना का संपूर्ण ध्यान गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के पोषण संबंधी स्वास्थ्य में सुधार करने पर केंद्रित है। इसका मुख्य उद्देश्य जन्म के समय शिशुओं के वजन को संतुलित करना और मातृ स्वास्थ्य सूचकांकों को बेहतर बनाना है। इस योजना के अंतर्गत वित्तीय सहायता सीधे माताओं के बैंक खातों में हस्तांतरित की जाती है। यह स्कूली बच्चों हेतु नहीं, बल्कि गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करने वाली पहल है।

54. (B) भूख और गंभीर कुपोषण
अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना राज्य की निर्धनता उन्मूलन और सार्वजनिक स्वास्थ्य रणनीति का अभिन्न अंग है। इसका सीधा संघर्ष भूख और गंभीर कुपोषण जैसी सामाजिक समस्याओं से है। समाज के वंचित वर्गों को नियमित रूप से रियायती अनाज उपलब्ध कराकर यह योजना सुनिश्चित करती है कि कोई भी नागरिक भोजन के अभाव में भूखा न रहे। यह पहल समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की खाद्य सुरक्षा को राजकीय गारंटी के रूप में सुरक्षित करती है।

55. (A) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
निःशुल्क दवा योजना राजकीय स्वास्थ्य केंद्रों में मुफ्त औषधियाँ प्रदान करती है, जबकि निःशुल्क जाँच योजना के माध्यम से नैदानिक परीक्षण मुफ्त किए जाते हैं। इंदिरा रसोई योजना शहरी निर्धनों को कम मूल्य पर पौष्टिक भोजन सुलभ कराने हेतु विख्यात है। सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं बुजुर्गों, विधवाओं और दिव्यांगों को नियमित आर्थिक सहायता प्रदान कर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं। ये पहलें राज्य के जनकल्याणकारी और समावेशी स्वरुप को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं।

56. (A) सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों में जनता के विश्वास में वृद्धि
मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि इसने राजकीय स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति जनसामान्य के विश्वास को पुनः स्थापित किया है। मुफ्त और उच्च गुणवत्तापूर्ण दवाओं की सुलभता ने मरीजों को निजी चिकित्सालयों के भारी व्यय से बचाया है। इससे न केवल सरकारी अस्पतालों में मरीजों की संख्या में वृद्धि हुई है, बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच निर्धन और ग्रामीण समुदायों तक अधिक प्रभावी ढंग से हुई है। यह एक अनुकरणीय मॉडल है।

57. (C) उच्च स्तरीय निजी मेडिकल कॉलेजों की स्थापना करना
मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना का उद्देश्य राजकीय स्वास्थ्य प्रणालियों के अंतर्गत नैदानिक सेवाओं को सुलभ बनाना है। यह योजना प्रयोगशाला परीक्षणों को पूर्णतः मुफ्त बनाकर निर्धनों हेतु चिकित्सा उपचार को सस्ता बनाती है। इसका निजी मेडिकल कॉलेजों की स्थापना से कोई संबंध नहीं है। यह पहल सुनिश्चित करती है कि वित्तीय अभाव के कारण किसी रोगी का रोग निदान न रुके और उपचार की प्रक्रिया समय पर प्रारंभ हो सके।

NODIA

58. (A) मुख्यमंत्री राजश्री योजना → जन आधार → राजस्थान मिशन 2030
महत्वपूर्ण इकाइयों को संबोधित करने का तार्किक क्रम बालिका से प्रारंभ होकर संपूर्ण राज्य के भविष्य तक जाता है। मुख्यमंत्री राजश्री योजना व्यक्तिगत स्तर पर बालिका के जन्म और उसके विकास पर केंद्रित है। जन आधार कार्ड परिवार की इकाई को एक विशिष्ट पहचान और लाभ वितरण प्रणाली से एकीकृत करता है। अंत में, राजस्थान मिशन 2030 संपूर्ण राज्य हेतु एक व्यापक विकास लक्ष्य निर्धारित करता है। यह क्रम व्यक्तिगत कल्याण से सामूहिक उन्नति की ओर बढ़ता है।

59. (D) मजदूरों और बेघरों के लिए खाद्य असुरक्षा में कमी
शहरी क्षेत्रों में इंदिरा रसोई योजना का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव खाद्य असुरक्षा को समाप्त करना है। प्रतिदिन श्रम करने वाले मजदूरों और बेघर व्यक्तियों हेतु यह योजना सस्ती दर पर पौष्टिक भोजन का सहारा सिद्ध हुई है। यह उनके दैनिक जीवन के खर्चों को कम करती है और उन्हें भूख के भय से मुक्ति दिलाती है। सामाजिक स्तर पर, यह योजना सम्मानजनक भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित कर शहरी निर्धनों के जीवन स्तर को सुधारने में सहायक है।

80. (B) केवल III और V
इंदिरा रसोई योजना का सफल संचालन शहरी क्षेत्रों में किया जाता है ताकि वहाँ के जरूरतमंदों को रियायती भोजन प्राप्त हो सके। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह केवल ग्रामीण पंचायतों में संचालित होती है। यह योजना पूर्णतः पौष्टिक और रियायती भोजन के वितरण पर केंद्रित है। स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से यह सुनिश्चित किया जाता है कि भोजन स्वच्छ और गुणवत्तापूर्ण हो, जो शहरी निर्धनों को एक गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करने में सहायक है।

81. (B) आवश्यक दवाओं की खरीद के लिए एक सुदृढ़ आपूर्ति श्रृंखला
मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना की सफलता हेतु एक कुशल और पारदर्शी आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन अनिवार्य है। राज्य सरकार को यह सुनिश्चित करना होता है कि दवाओं की खरीद समय पर हो, उनकी गुणवत्ता मानकों के अनुरूप हो और वे समस्त स्वास्थ्य केंद्रों तक निर्बाध रूप से पहुँचें। एक सुदृढ़ वितरण नेटवर्क के अभाव में इस योजना का लाभ जनसामान्य तक पहुँचाना दुष्कर है। यह योजना प्रभावी रसद प्रबंधन का श्रेष्ठ उदाहरण है।

82. (A) वित्तीय कठिनाई के बिना समय पर चिकित्सा निदान
मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना का जन स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव यह है कि इससे बीमारियों का समय पर निदान संभव हो गया है। पूर्व में अनेक नागरिक व्यय के भय से आवश्यक जांच नहीं करवाते थे, जिससे रोग की गंभीरता बढ़ जाती थी। अब निःशुल्क परीक्षणों की उपलब्धता ने इस आर्थिक बाधा को हटा दिया है। इससे चिकित्सकों को भी सटीक निदान करने और प्रभावी उपचार योजना निर्मित करने में सहायता प्राप्त होती है।

83. (C) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं राज्य के कल्याणकारी स्वरूप की पुष्टि करती हैं। ये योजनाएं इस सिद्धांत को स्वीकार करती हैं कि वृद्धों, विधवाओं और दिव्यांगों को आर्थिक सहारा देना शासन का नैतिक दायित्व है। नियमित नकद हस्तांतरण इन नागरिकों को दूसरों पर निर्भरता कम करने और सम्मानपूर्वक जीवन जीने में सहायता प्रदान करता है। यह एक सुरक्षा कवच है जो समाज के कमजोर वर्गों को अत्यधिक निर्धनता से सुरक्षित निकालता है।

84. (D) बड़े बहुराष्ट्रीय निगमों के मुख्यालय का निर्माण
मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना का पूर्ण ध्यान सूक्ष्म, लघु और मध्यम स्तर के स्थानीय उद्यमों को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित है। यह योजना स्थानीय उद्यमियों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है ताकि वे अपना व्यवसाय सुदृढ़ कर सकें। इसका उद्देश्य बड़े बहुराष्ट्रीय निगमों को समर्थन देना नहीं है। यह योजना स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने और स्वरोजगार के माध्यम से राज्य के औद्योगिक आधार को व्यापक बनाने का कार्य करती है।

85. (A) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
मुख्यमंत्री चिरंजीवी योजना स्वास्थ्य बीमा के क्षेत्र में सुरक्षा प्रदान करती है। जल स्वावलंबन अभियान का कार्य जल संरक्षण के पारंपरिक स्रोतों को बढ़ावा देना है। ग्रामीण परिवहन योजना ग्रामीण निवासियों के आवागमन को सुगम बनाती है। मातृत्व पोषण योजना गर्भावस्था के दौरान माताओं के स्वास्थ्य और पोषण को सुनिश्चित करती है। ये समस्त योजनाएं नागरिकों के जीवन स्तर को सुधारने और उनके सुरक्षित भविष्य हेतु महत्वपूर्ण राजकीय प्रयास हैं।

86. (B) कल्याणकारी नीतियों की अंतिम छोर तक पहुँच और जागरुकता
राजस्थान युवा विकास प्रेरक पहल युवाओं की ऊर्जा का उपयोग जमीनी स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु करती है। इस कार्यक्रम के माध्यम से शासन यह सुनिश्चित करता है कि उसकी योजनाएं अत्यंत सरल भाषा में जनसामान्य तक पहुँचें। युवा उत्प्रेरक के रूप में नागरिकों को उनकी पात्रता और आवेदन प्रक्रियाओं के विषय में जानकारी प्रदान करते हैं। इससे योजनाओं की पारदर्शिता बढ़ती है और लाभ वास्तविक पात्र व्यक्ति तक पहुँचना सुनिश्चित होता है।

87. (D) कृषि कार्यों के लिए उपयोग की जाने वाली बिजली पर सब्सिडी
मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना का मुख्य उद्देश्य कृषि कार्यों में प्रयुक्त होने वाली विद्युत की लागत को सब्सिडी के माध्यम से कम करना है। राज्य सरकार किसानों के कृषि बिजली बिलों पर प्रति माह एक निश्चित अनुदान राशि प्रदान करती है, जिससे किसानों का आर्थिक भार कम हो जाता है। यह पहल कृषि क्षेत्र को प्रोत्साहित करने और किसानों की आय में वृद्धि करने हेतु की गई है। यह बिजली के कुशल उपयोग को बढ़ावा देती है।

88. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान राजस्थान जैसे शुष्क प्रदेश हेतु एक अनिवार्य आवश्यकता है। यह अभियान विकेंद्रीकृत जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन के माध्यम से दीर्घकालिक जल सुरक्षा सुनिश्चित करता है। राज्य में जल संसाधन सीमित हैं, अतः स्थानीय स्तर पर जल संचय करना ही स्थायी समाधान है। यह अभियान समुदायों को आत्मनिर्भर बनाता है और भूजल के पुनर्भरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे कृषि हेतु जल की उपलब्धता बनी रहती है।

89. (C) इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना – शहरी पथ विक्रेता और शहरी गरीब
इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना विशेष रूप से शहरी क्षेत्र के निर्धन वर्गों और रेहड़ी-पटरी वालों को लक्षित करती है जो अनौपचारिक ऋण स्रोतों पर निर्भर रहते हैं। यह युग्म पूर्णतः सटीक है। अन्य विकल्प त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि बालिका प्रोत्साहन स्कूली छात्राओं हेतु है और अन्नपूर्णा निर्धनों हेतु है। शहरी क्रेडिट कार्ड योजना छोटे व्यवसायों को पुनर्जीवित करने और उन्हें ब्याज मुक्त पूंजी उपलब्ध कराने का एक सशक्त माध्यम है।

Downloaded from www.pdf.tube

70. (C) केवल I और III
राजस्थान मिशन 2030 एक व्यापक विजन डॉक्यूमेंट है जो स्वास्थ्य, शिक्षा और उद्योग जैसे समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों को सम्मिलित करता है। यह योजना आधारभूत संरचना के विकास और नकद हस्तांतरण के मध्य संतुलन स्थापित कर राज्य के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करती है। यह कहना गलत है कि यह बुनियादी ढांचे की उपेक्षा करती है। इसका वास्तविक उद्देश्य राज्य को सामाजिक-आर्थिक सूचकांकों में शीर्ष पर पहुँचाने हेतु समावेशी मार्ग प्रशस्त करना है।

71. (D) अस्पतालों के बाहर प्राकृतिक मृत्यु के लिए जीवन बीमा भुगतान
मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना विशेष रूप से चिकित्सा उपचार और अस्पताल में भर्ती होने से संबंधित खर्चों को कवर करने हेतु निर्मित है। इसमें गंभीर बीमारियों का उपचार, जटिल शल्य चिकित्सा और आवश्यक नैदानिक परीक्षण सम्मिलित हैं। हालांकि, यह अस्पताल के बाहर होने वाली प्राकृतिक मृत्यु हेतु कोई जीवन बीमा राशि प्रदान नहीं करती है। इसका मुख्य कार्य बीमारी के दौरान होने वाले आर्थिक संकट से परिवार को सुरक्षा प्रदान करना है।

72. (A) केवल I और III
पालनहार योजना अनाथ बच्चों को संस्थागत अनाथालयों के स्थान पर स्नेही पारिवारिक वातावरण में पालने पर बल देती है। यह दावा करना त्रुटिपूर्ण है कि देखभालकर्ता का राजकीय कर्मचारी होना अनिवार्य है; कोई भी योग्य संबंधी पालनहार बन सकता है। यह योजना बच्चों के पोषण और शिक्षा को सुनिश्चित करने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इसका मूल उद्देश्य बच्चों का सामान्य सामाजिक विकास सुनिश्चित करना है ताकि वे सफल नागरिक बन सकें।

73. (C) बालिकाओं के अस्तित्व, health और शिक्षा के लिए पहल
मुख्यमंत्री राजश्री योजना राजस्थान में बालिकाओं के सर्वांगीण कल्याण हेतु एक सुदृढ़ ढांचा प्रदान करती है। यह योजना उनके जन्म के समय से ही अस्तित्व की सुरक्षा, नियमित टीकाकरण के माध्यम से स्वास्थ्य सुनिश्चित करने और स्कूली शिक्षा हेतु वित्तीय प्रोत्साहन देने का कार्य करती है। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में बालिकाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना और उन्हें आत्मनिर्भर नागरिक के रूप में विकसित होने के समान अवसर प्रदान करना है।

74. (A) मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना
राजश्री योजना, गार्गी पुरस्कार और मातृत्व पोषण योजना विशेष रूप से महिलाओं और बालिकाओं के कल्याण हेतु समर्पित हैं। इसके विपरीत, मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना का प्राथमिक ध्यान कृषि क्षेत्र के समस्त बिजली उपभोक्ताओं पर है। यह योजना मुख्य रूप से बिजली सब्सिडी के माध्यम से कृषि कार्यों की लागत को कम करने पर केंद्रित है, जो इसे अन्य महिला-केंद्रित सामाजिक कल्याणकारी योजनाओं से अलग एक विशिष्ट आर्थिक पहल के रूप में स्थापित करती है।

75. (A) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना शहरी पथ विक्रेताओं को सुलभ ऋण प्रदान कर आर्थिक संबल देती है। मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना का लक्ष्य महिलाओं को आधुनिक उपकरणों के माध्यम से अंकीय रूप से साक्षर करना है। ग्रामीण परिवहन योजना दूरस्थ इलाकों में आवागमन सुगम बनाकर सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देती है। गार्गी पुरस्कार बालिकाओं के मध्य शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करता है। ये समस्त योजनाएं समाज के विभिन्न तबकों की आवश्यकताओं को पूर्ण करती हैं।

NODIA

76. (B) कई सरकारी योजनाओं और सेवाओं के लिए एकल कार्ड
जन आधार प्रणाली का मूल विचार प्रशासनिक जटिलताओं को न्यूनतम करना और लाभार्थियों हेतु सेवाओं की पहुँच को सरल बनाना है। यह एक एकल कार्ड के रूप में कार्य करता है जिसका उपयोग राज्य की समस्त प्रमुख कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त करने हेतु किया जा सकता है। यह पृथक पहचान पत्रों की आवश्यकता को समाप्त कर एक केंद्रीकृत डेटाबेस प्रदान करता है। यह व्यवस्था पारदर्शिता को बढ़ावा देती है और सार्वजनिक सेवा वितरण में दक्षता लाती है।

77. (C) पोषण के माध्यम से मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी
इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में राज्य सरकार का एक महत्वपूर्ण निवेश है। यह योजना मानती है कि मातृ और शिशु मृत्यु दर को नियंत्रित करने हेतु गर्भावस्था के दौरान उचित पोषण अनिवार्य है। वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान कर राज्य सरकार माताओं को बेहतर खान-पान और नियमित चिकित्सा परीक्षण हेतु प्रेरित करती है। यह प्रतिबद्धता एक स्वस्थ और कुपोषण मुक्त पीढ़ी के निर्माण के व्यापक लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में कार्य करती है।

78. (A) II, IV, I, III
जीवन चक्र के आधार पर योजनाओं का तार्किक क्रम बचपन से प्रारंभ होकर आर्थिक गतिविधियों तक विस्तृत है। सर्वप्रथम पालनहार योजना अनाथ बच्चों की देखभाल सुनिश्चित करती है। शिक्षा के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु छात्राओं को गार्गी पुरस्कार प्रदान किया जाता है। तत्पश्चात, युवाओं को शासन से जोड़ने हेतु युवा विकास प्रेरक कार्यक्रम संचालित है। अंत में, शहरी आर्थिक सशक्तिकरण हेतु इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना पथ विक्रेताओं को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती है।

79. (A) यह शहरी संपन्न वर्ग को प्रीमियम विदेशी फल वितरित करती है।
अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना का प्राथमिक उद्देश्य समाज के निर्धनतम और वंचित वर्गों को बुनियादी खाद्यान्न सुलभ कराना है। यह योजना विलासिता की वस्तुओं के वितरण हेतु नहीं है, बल्कि इसका मुख्य लक्ष्य भुखमरी को रोकना और न्यूनतम पोषण स्तर को सुरक्षित करना है। यह राज्य की निर्धनता विरोधी नीतियों का एक सुदृढ़ हिस्सा है जो यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी परिवार अपनी आधारभूत खाद्य आवश्यकताओं से वंचित न रहे।

100. (B) केवल II

जन आधार प्रणाली की मुख्य विशेषता यह है कि यह 'एक नंबर, एक कार्ड और एक पहचान' के सिद्धांत पर आधारित है। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह प्रत्येक राजकीय योजना हेतु पृथक पहचान पत्र जारी करती है। वास्तव में, यह एकल कार्ड ही समस्त सरकारी लाभों और सेवाओं को प्राप्त करने हेतु पर्याप्त है। यह प्रणाली महिला को परिवार के मुखिया के रूप में मान्यता देकर उन्हें सशक्त बनाती है और पारदर्शी शासन विकसित करने में सहयोग करती है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

30. (A) केवल I और II
इंदिरा गांधी मातृत्व पोषण योजना का केंद्र बिंदु मातृ और शिशु स्वास्थ्य का संवर्धन है। यह योजना गर्भवती महिलाओं को उनके खान-पान और स्वास्थ्य परीक्षण हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से नकद प्रोत्साहन प्रदान करती है। इसका मुख्य लक्ष्य कुपोषण की दर को न्यूनतम करना और सुरक्षित प्रसव सुनिश्चित करना है। यद्यपि यह योजना माताओं के कल्याण हेतु समर्पित है, किंतु इसका प्राथमिक उद्देश्य उच्च शिक्षा का वित्तपोषण करना नहीं है।

31. (A) अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना
अन्नपूर्णा खाद्य सुरक्षा योजना का प्राथमिक कार्य समाज के आर्थिक रूप से कमजोर और वंचित वर्गों को सस्ता अनाज उपलब्ध कराना है। यह योजना राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत सम्मिलित परिवारों को पोषण सुरक्षा प्रदान करने हेतु राज्य सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके माध्यम से नियमित अंतराल पर खाद्यान्न का वितरण सुनिश्चित किया जाता है ताकि कोई भी परिवार भोजन की कमी के कारण कुपोषण का सामना न करे।

32. (B) केवल I, II और IV
मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना राजस्थान के समस्त नागरिकों के लिए उपलब्ध है। यह योजना राजकीय स्वास्थ्य केंद्रों में उपचार कराने वाले सभी मरीजों को आवश्यक औषधियाँ निःशुल्क प्रदान करती है। दवाओं की गुणवत्ता और निरंतर उपलब्धता बनाए रखने हेतु एक सुदृढ़ और केंद्रीकृत खरीद प्रणाली का उपयोग किया जाता है। इस ऐतिहासिक पहल ने स्वास्थ्य उपचार पर होने वाले भारी व्यक्तिगत व्यय को कम कर जनसामान्य को बड़ी राहत प्रदान की है।

33. (B) मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना – मुफ्त नैदानिक परीक्षण
मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना का एकमात्र लक्ष्य राजकीय चिकित्सालयों में उपचार प्राप्त करने वाले रोगियों को समस्त आवश्यक प्रयोगशाला परीक्षण निःशुल्क उपलब्ध कराना है। इसके विपरीत, अन्य विकल्प त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि इंदिरा रसोई भोजन से, पालनहार निराश्रित बच्चों से और भामाशाह वित्तीय सशक्तिकरण से संबंधित हैं। निःशुल्क जाँच योजना के अंतर्गत पैथोलॉजी और रेडियोलॉजी जैसी महत्वपूर्ण सेवाएँ सम्मिलित हैं, जो सटीक रोग निदान और बेहतर उपचार सुनिश्चित करती हैं।

34. (A) कोई भूखा न सोये
'कोई भूखा न सोये' का संकल्प इंदिरा रसोई योजना का आधार स्तंभ है। इस मानवीय दृष्टिकोण के साथ राज्य सरकार ने शहरी क्षेत्रों में रियायती भोजन केंद्रों की स्थापना की है। यह योजना सुनिश्चित करती है कि आर्थिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को भी दो समय का सम्मानजनक, स्वच्छ और पौष्टिक भोजन सुलभ हो सके। यह सामुदायिक सेवा और सामाजिक सुरक्षा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो शहरी खाद्य असुरक्षा का प्रभावी समाधान है।

35. (A) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना किसानों को बिजली बिलों पर राहत प्रदान करती है। जल स्वावलंबन अभियान ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण और भंडारण हेतु बुनियादी ढांचा निर्मित करता है। शहरी क्रेडिट कार्ड योजना पथ विक्रेताओं को ब्याज मुक्त ऋण प्रदान कर संबल देती है। डिजिटल सेवा योजना के अंतर्गत महिलाओं को मोबाइल फोन दिए जाते हैं ताकि वे सूचना तकनीक से जुड़ सकें। ये हस्तक्षेप राज्य के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

NODIA

36. (D) सक्षम शरीर वाले बेरोजगार युवा
सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं उन व्यक्तियों हेतु निर्मित हैं जो शारीरिक अथवा सामाजिक कारणों से अपनी आजीविका अर्जित करने में असमर्थ हैं। इसमें वृद्धजन, विधवाएं और गंभीर रूप से दिव्यांग व्यक्ति सम्मिलित हैं। सक्षम शरीर वाले बेरोजगार युवाओं को सामान्यतः इस श्रेणी की पेंशन में सम्मिलित नहीं किया जाता है; उनके हेतु कौशल विकास जैसी पृथक योजनाएं संचालित हैं। पेंशन योजनाओं का मूल उद्देश्य समाज के असहाय वर्गों को वित्तीय सुरक्षा देना है।

37. (C) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए सुलभ ऋण और ब्याज सब्सिडी
मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना का मुख्य केंद्र सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र का आर्थिक सुदृढ़ीकरण करना है। राज्य सरकार नए उद्योग स्थापित करने अथवा वर्तमान कार्यों के आधुनिकीकरण हेतु बैंकों से ऋण दिलाने में सहायता करती है। इन ऋणों पर सरकार द्वारा ब्याज अनुदान प्रदान किया जाता है, जिससे व्यापार संचालित करना सुगम हो जाता है। यह पहल आत्मनिर्भर राजस्थान के निर्माण और व्यापक स्तर पर रोजगार सृजन हेतु प्रभावी है।

38. (A) III, IV, I, II
विकास का तार्किक क्रम व्यक्ति की बुनियादी आवश्यकताओं से प्रारंभ होकर भविष्य के दृष्टिकोण तक जाता है। सर्वप्रथम अन्नपूर्णा योजना के माध्यम से खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है। तत्पश्चात चिरंजीवी योजना स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करती है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने हेतु लघु उद्योग प्रोत्साहन जैसा रोजगार समर्थन अनिवार्य है। अंत में, राजस्थान मिशन 2030 संपूर्ण राज्य के सर्वांगीण विकास के भविष्यवादी मार्गदर्शिका का प्रतिनिधित्व करता है।

39. (D) कल्याणकारी कार्यक्रमों के लिए युवाओं के नेतृत्व वाला जागरुकता नेटवर्क
राजस्थान युवा विकास प्रेरक कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य एक ऐसा संजाल तैयार करना है जो सरकारी योजनाओं और आम जनता के मध्य की दूरी को पाट सके। इस पहल से प्रशिक्षित युवा ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर नागरिकों को कल्याणकारी नीतियों के प्रति जागरुक करते हैं। इसका परिणाम यह होगा कि योजनाओं का लाभ अंतिम पात्र व्यक्ति तक सुगमता से पहुँचेगा और शासन में जनभागीदारी बढ़ेगी। यह युवाओं को सामाजिक उत्तरदायित्व हेतु तैयार करता है।